0152mN44
G6

0152mN44 2968
G6
Verma, Mahadevi, Ed.
Chand.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

0152m N44
G6

2968

3587

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
(LIBRARY)
JANGAMAWADIMATH, VARANASI

❁ ❁ ❁ ❁ ❁

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

JNANA MANDIR ... LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc. No. 3587

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

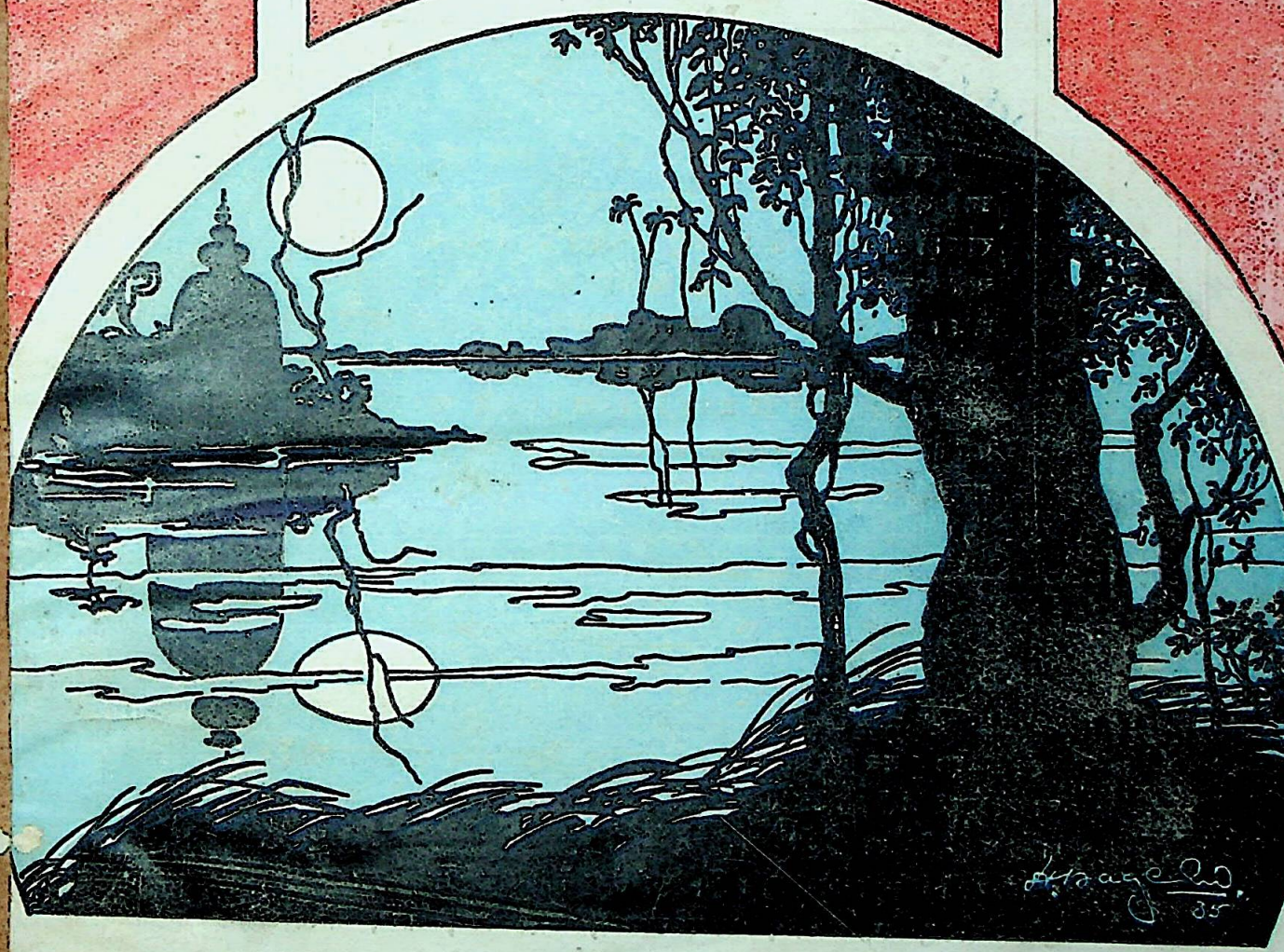

चाँद

अप्रैल
१९३६

सम्पादिका—महादेवी वर्मा, एम० ए०

Price -/1
मूल्य ।।=

अबलाओं का इन्साफ़

इस पुस्तक में हिन्दू-समाज में पाई जाने वाली कुप्रथाओं और उनके भीषण परिणामों का ऐसा चित्र खींचा गया है कि पाठक स्तम्भित रह जायँगे। हमारे घरों की विशुद्ध चरित्रा देवियाँ कैसे-कैसे अत्याचारों के कारण कुमार्गगामिनी होने को विवश होती हैं, यह इससे विदित होगा। यह पुस्तक कितने ही समय से अप्राप्य थी और सैकड़ों ग्राहक इसके लिए तकाज़े पर तकाज़े भेज रहे थे। उनके अनुरोध से थोड़ी सी संख्या में इसके मिलने का प्रबन्ध किया गया है। यदि आप निराश नहीं होना चाहते तो आज ही ऑर्डर भेजकर एक प्रति मँगा लीजिए, अन्यथा फिर पहले की भाँति हो पछताना पड़ेगा। मूल्य ३)

0152 mN14
1266.

हवाई कहानियाँ

इस पुस्तक के रचयिता हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री० जहूरबख़्श जी हैं। आपकी लिखी बालोपयोगी कहानियाँ कैसी रोचक और आकर्षक होती हैं, यह हिन्दी-पाठक भली-भाँति जानते हैं। आपके ऐसे कई संग्रह पहले भी प्रकाशित हो चुके हैं, जिनको लोगों ने बहुत पसन्द किया है। इस संग्रह में सोने का पानी, देवता का दान, सुखिया और दुखिया, सोनपरी, अशरफ़ सौदागर, बन्दरी बेगम, भाग्य, आँखों की दवा, हीरा और लाल, ठग की बेटी, भाग्यबल शीर्षक ११ कहानियाँ हैं, जो रोचकता में एक से एक बढ़ कर हैं। बालक-बालिकाएँ ऐसी कहानियों को बड़े चाव से पढ़ते हैं, जिससे पढ़ने का अभ्यास होने के साथ ही साथ उनकी ज्ञान-वृद्धि भी होती है। सभी कहानियाँ सुरुचिपूर्ण हैं। बालकों के लिए इससे अधिक उपयोगी और आकर्षक पुस्तक आपको कदाचित् ही मिल सकेगी। मूल्य २) रु०, स्थायी ग्राहकों से १॥)।

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, इलाहाबाद

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. ..... 2968 .....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अप्रैल

चाँद

१९३६

वार्षिक चन्दा ६॥)
छः माही चन्दा ३॥)

सम्पादिका :—महादेवी वर्मा, एम० ए०

विदेश का चन्दा ८॥)
इस अङ्क का मू० ॥=)

कम्पनी के डाइरेक्टर्स—

१—श्रीमान् राजा श्रीराम साहब, तालुक़ेदार और ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, मौरावाँ
२—रायबहादुर लाला प्रयागनारायण साहब, एम० एल० सी०; तालुक़ेदार और ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, मौरावाँ
३—श्री० विशुननाथ जी सक्सेना, बी० ए०, एल्-एल० बी०, एडवोकेट, इलाहाबाद
४—श्री० दरबारीलाल साहब, ज़मींदार और रईस, इलाहाबाद
५—पण्डित निरञ्जनलाल जी भार्गव, रईस और बैङ्कर, इलाहाबाद
६—श्री० नन्दगोपालसिंह सहगल, इलाहाबाद
७—पं० हीरालाल जी भार्गव, इलाहाबाद

मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर—
पं० निरञ्जनलाल जी भार्गव

जनरल मैनेजर—
श्री० नन्दगोपालसिंह सहगल

ऑडिटर्स :—मेसर्स जी० पी० जायसवाल एण्ड को०,
गवर्नमेण्ट डिप्लोमेड ऑडिटर्स, इलाहाबाद

प्रकाशक—चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदर्श-चित्रावली

चित्र-कला भी मनुष्य के मनोरञ्जन करने के लिए एक श्रेष्ठ साधन है। पर वास्तव में कला-युक्त तथा साथ ही सद्रुचि-सम्पन्न चित्र बड़ी कठिनाई से मिलते हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए ही हमने यह चित्रावली निकाली है, जिसे आप अपनी कन्याओं को भी निःसङ्कोच भाव से दे सकते हैं। छपाई और सुन्दरता के विषय में तो प्रशंसा करना ही व्यर्थ है। बड़े-बड़े जानकारों ने इसको मुद्रण-कला का एक अद्वितीय नमूना बतलाया है। मू० ४), स्थायी ग्रा० से ३)

जनरल मैनेजर—
चाँद प्रेस लि०, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ओरियन्टल

गवर्नमेण्ट सिक्योरिटी लाइफ़ एश्यूरेन्स कम्पनी, लिमिटेड

सन् १८७४ में संस्थापित — हेड ऑफ़िस—बम्बई

सन् १९३४ की रिपोर्ट का सारांश

नया कारबार	७,६२,४२,७६१	रु०
सालाना आमदनी	३,१४,०१,९७०	रु०
चालू पालिसियाँ	५४,२०,३८,५१८	रु०
अदा किये गये तमाम दावे (क्लेम्स)	१६,२९,८८,८१४	रु०
फ़ण्ड की बढ़ती	१५,५३,८८,८४३	रु०

ये आँकड़े ओरियन्टल की मज़बूती और लोकप्रियता का अच्छी तरह प्रकट करते हैं।

इस लोकप्रिय और उन्नतिशील भारतीय जीवन-बीमा कम्पनी में अपना बीमा कराने में देर न लगाइए, ज़्यादा हाल जानने के लिए इस पते पर लिखिए :—

मैनेजर—ओरियन्टल बिलिडिंग्स, बम्बई

अथवा

आर० जे० पीमेण्टा
ब्राञ्च सेक्रेटरी,
ओरियण्टल बिलिडिङ्ग
हज़रतगञ्ज, लखनऊ

एच० एन० दास
सेक्रेटरी सब-ब्राञ्च
२५-ए, कैनिङ्ग रोड
इलाहाबाद

ए० आर० मेहता
ऐक्टिङ्ग सेक्रेटरी सब-ब्राञ्च
११०, सिविल लाइन्स
बरेली

रिछपालचन्द
इन्सपेक्टर
हींग की मण्डी,
आगरा

पी० सी० लुइस
ब्राञ्च सेक्रेटरी
कचेहरी रोड,
अजमेर

बी० एन० भम्बरी
ऐक्टिंग ब्राञ्च सेक्रेटरी
महावीर जैन-भवन
चाँदनी चौक, दिल्ली

एन० सी० अस्टावन्स
इन्सपेक्टर
सदर बाज़ार
अम्बाला कैण्ट

एच० सी० खन्ना, ऐक्टिङ्ग इन्सपेक्टर, १३, सिविल लाइन्स, हाफ़िज़ हलीम का बँगला, कानपुर

अथवा

कम्पनी के नीचे लिखे किसी कार्यालय को—

कोयम्बटूर	लाहौर	रायपुर	मदुरा	कोलम्बो
राजशाही	अहमदाबाद	ढाका	मद्रास	राँची
नागपुर	माण्डले	रङ्गून	कालीकट	गौहाटी
रावलपिण्डी	बङ्गलोर	गुण्टूर	मरकारा	सिङ्गापुर
जलगाँव	मोम्बासा	सक्कर	बेजारी	जलपाईगोड़ी
त्रिचनापली	कलकत्ता	जबलपुर	पटना	त्रिवेन्द्रम
कराँची	कौलालमपुर	पूना	विज़ागापट्टम	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
९	हमारे देश में शिक्षा-प्रचार में कठिनाइयाँ	[श्री० त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०] ...	६४३
१०	स्वर्गीया चकोरी जी और उनका काव्य	[श्री० रामचन्द्र 'मधुवन'] ...	६४८
११	सरिते (कविता)	[श्री० 'नीरव'] ...	६५२
१२	देवदासी (कहानी)	[श्रीमती रत्नकुमारी, बी० ए०]	६५३
१३	हिन्दू-जीवन की समस्या	[श्री० नन्दकिशोर तिवारी]	६५६
१४	शब्द के पार (कविता)	[श्री० जगन्नाथ मिश्र गौड़ 'कमल' विद्यालङ्कार] ...	६६२
१५	पाश्चात्य शिक्षा का जीवन पर प्रभाव	[कुमारी विमल, विदुषी] ...	६६३
१६	अज्ञात (कविता)	[कुमारी शान्ति भार्गव, हिन्दी-प्रभाकर]	६६७
१७	पं० साहिगराम परसों के मिसिर	[श्री० रामविलास शर्मा, एम० ए०] ...	६६८
१८	भारतीय चित्रकला के इतिहास पर एक दृष्टि	[श्री० सतीशचन्द्र काला] ...	६७१
१९	दुर्बलता (कहानी)	[श्रीमती रत्नकुमारी देवी, काव्यतीर्थ]	६७७
२०	साकेत की ऊर्मिला	[आचार्य श्री० जानकी-वल्लभ शास्त्री]	६८२
२१	गीत (कविता)	[श्री० विनयकुमार]	६८५

❀ ❀ ❀

बिखरे फूल

२२	सिनेमा के इतिहास पर एक दृष्टि	[श्री० ब्रजेन्द्रप्रसाद पालीवाल, एम० एस्-सी०]	६८६
२३	वीराङ्गना कमला	[श्री० सीतलासहाय]	६८८
२४	हिन्दू-समाज में स्त्रियों का स्थान	[श्री० रामरत्न अवस्थी]	६८९
२५	बस	[श्री० भगवतीप्रसाद 'पान्थरी'] ...	६९२

डॉक्टर धनीराम प्रेम की क्रान्तिकारी रचना

नरभक्षी बकासुर

(अर्थात् बाल-विवाह)

यह पुस्तक हिन्दू-समाज में प्रचलित बाल-विवाह से होने वाले भयङ्कर अनर्थों का जीता-जागता चित्र है। पुस्तक के दो-चार पृष्ठ पढ़ते ही आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे और आपका हृदय काँपने लगेगा। इस राक्षस रूपी बाल-विवाह के कारण ऐसी-ऐसी जघन्य तथा हृदय-विदारक घटनाएँ आए दिन हुआ करती हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। विद्वान् लेखक ने ऐसी घटनाओं का चित्रण बड़ी सुन्दरतापूर्वक किया है। छोटी-छोटी दुध-मुँही बच्चियाँ किस प्रकार बलात् पत्नियाँ बनाई जातीं और गर्भवती हो जाने पर प्रसव के समय उनको किस नारकीय यन्त्रणा का सामना करके प्राण गँवाना पड़ता है, इसे पढ़ कर आप रोने लगेंगे। वास्तव में हिन्दू-समाज आज पतन की किस सीमा पर पहुँच चुका है, यह आप इस पुस्तक में देखिए। इसे प्राप्त करने के लिए शीघ्र ही ऑर्डर भेजिए, अन्यथा थोड़े ही दिनों में पुस्तक अप्राप्य हो जावेगी। मूल्य केवल ॥) है।

पता—जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
२६	शिकार	[ठाकुर श्रीनाथसिंह] ...	६९३
२७	वीणा (गद्य-काव्य)	[श्रीमती दुर्गेश-नन्दिनी]	६९४
२८	आन्ति (कविता)	[श्रीमती विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मञ्जु', प्रभाकर] ...	६९५
२९	कन्या के विदा के समय के कुछ गीत	[श्रीमती सीतादेवी 'प्रभाकर'; कुमारी लीला 'भूषण']	६९६
३०	गीत (कविता)	[श्रीमती विद्यावती 'कोकिल']	७०१
३१	नव-पल्लव	... ...	७०२
३२	संगीत-सुधा	[प्रो० एस० डी० आपटे]	७१०
३३	कॉङ्गरेस का अधिवेशन	... ...	७१३
३४	साहित्यिक अशिष्टता	... ...	७१३
३५	वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की दो बड़ी त्रुटियाँ		७१३
३६	उद्योग-धन्धे और सरकारी सहायता	...	७१५
३७	वर्णव्यवस्था का सुधार	... ...	७१७
३८	क्या ये ही साधु हैं ?	... ...	७१८
३९	महिला की सतीत्व-रक्षा के लिए बलिदान		७१८

रङ्ग-भूमि

चित्र-सूची

१—वंशी-स्वर (तिरङ्गा)

आर्ट पेपर पर रङ्गीन

२—मधु-प्रभात

३—चाँदनी

सादे

४—श्री० रामनारायण 'यादवेन्दु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०

५—स्वर्गीया 'चकोरी'

६—श्री० सतीशचन्द्र काला

७—श्रीमती रत्नकुमारी देवी, काव्यतीर्थ

८—स्वर्गीया कमला नेहरू

९—१८—भिन्न-भिन्न स्त्री-पुरुषों के चित्र तथा ग्रूप आदि—१० चित्र

जमुना

सब से सस्ता
नहाने का साबुन

ताज़गी देने वाला, सुगन्धित,
सब प्रकार से हानि रहित

शरीर के रङ्ग को सुन्दर करता है
और त्वचा को कोमल बनाता है।

बङ्गाल केमिकल :: :: कलकत्ता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विधवा - विवाह - मीमांसा

विधवा-विवाह का विषय अभी तक विवाद-ग्रस्त समझा जाता है। अब भी अधिकांश व्यक्ति इस विषय में हिचकिचाते जान पड़ते हैं। उनकी दृष्टि में यह कार्य शास्त्र-विरुद्ध है। अतएव पाप-पूर्ण है। ऐसे लोगों के भ्रम-निवारणार्थ यह अद्वितीय पुस्तक है। इसमें विद्वान लेखक ने वेद, स्मृतियों, पुराणों तथा अन्य युक्तियों से विधवा-विवाह की युक्तियुक्तता सिद्ध की है। विधवा-विवाह के विरुद्ध किये जाने वाले समस्त आक्षेपों का उत्तर भी दिया है। विधवा-विवाह के न होने से देश तथा समाज की जो अपार हानि हो रही है, उस पर भली प्रकार प्रकाश डाला है। सारांश यह कि इस समस्या पर हर एक पहलू से विचार किया गया है। बड़ी ही विद्वत्तापूर्ण पुस्तक है। कई रङ्गीन तथा सादे चित्र भी दिये गये हैं।

मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २।)

महात्मा ईसा

इस पुस्तक में महात्मा ईसा का जीवन-वृत्तान्त तथा उनके उपदेशों का सारांश निष्पक्ष भाव से प्रकट किया गया है। ईसा के सिद्धान्त वास्तव में मानव-चरित्र को उच्च बनाने वाले तथा हृदय को शान्ति देने वाले हैं, यह बात दूसरी है कि कालदोष से स्वयं उनके अनुयायी भी उनको भुला बैठे हैं और विपरीत आचरण करते हैं। बड़ी उच्च कक्षा की पुस्तक है। मू० २॥) रु०, स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

राष्ट्रीय गान

इस पुस्तक में चुने हुए राष्ट्रीय गानों का संग्रह किया गया है। सभी गाने भावपूर्ण तथा देश-भक्ति से ओतप्रोत हैं। ऐसे गानों का प्रभाव पाठकों के हृदय पर स्थायी रहता है। बालक-बालिकाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। मू० ।) स्थायी ग्राहकों से =)

मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड
इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री-बन्धु (रजिस्टर्ड)

स्त्रियों के मासिक धर्म सम्बन्धी तमाम रोगों की अचूक दवा

स्त्री-बन्धु

हर क़िस्म के प्रदर को जड़ से मिटा देती है

विस्तारपूर्वक जानने के लिए पत्र-व्यवहार करें

पता :—

सनीवियू फ़ारमेसी (रजिस्टर्ड)

सहारनपुर

एजेण्ट—किङ्ग एण्ड को०,

जॉन्स्टनगञ्ज, इलाहाबाद

घर बैठे

एक साल में अङ्गरेज़ी बोलना और लिखना सीखो। डेढ़ साल में मैट्रिक का अङ्गरेज़ी का ज्ञान हासिल करो। प्राथमिक कोर्स १ साल, उच्च कोर्स ६ महीना। एक आने का टिकट भेज कर विज्ञापन पत्रक मँगाइए।

पता—दि इङ्गलिश पोस्टल कोर्स ऑफ़िस, महाल, नागपुर

कचहरी में काम आने वाले हिन्दी में छपे क़ानून

८।) की पुस्तकें २।।।) में

ताज़ीरात हिन्द २), क़ानून फ़ौजदारी १।), दीवानी १।), कोर्टफ़ीस ।।।), पुलिस ।।), लगान १), पंचायत ।।), ख़ानदान मुश्तरका ।।), मदाख़लत बेजा मवेशी ।।), स्टॉक निकालने की ग़रज़ से कुल पुस्तकें २।।।) में। डाक-ख़र्च ।।।)

पता—दीन ब्रादर्स, अलीगढ़, नं० ६

Rs. 3/- } रेशमी चन्द्रप्रभा साड़ी { दाम ३)

लम्बाई ५ गज़, अर्ज़ ४५ इञ्च (Size 5 yds. × 45 in.)

मूल्यवान बनारसी साड़ियों से भी अधिक सुन्दर और सोफ़ियानी मनोहर नयनाभिराम शोभायुक्त साड़ी जिसके रङ्ग रूप और किनारी पल्लों की सजधज देखते ही बनती है, जिसको सभी प्रान्तों की स्त्रियों यहाँ तक कि उच्च शिक्षित लेडियों ने भी पसन्द किया है। जहाँ १ साड़ी जाती है वहाँ से माँग का ताँता लग जाता है। अधिक मंदी और व्यापारिक होड़ा-होड़ी के कारण यह मौक़ा आया कि हम २०) की जँचने वाली साड़ी ३) में देते हैं, अब ग़रीब से ग़रीब भी अपना शौक़ पूरा कर सकते हैं, विवाह-उत्सव, त्योहार व उपहार में देने की अपूर्व वस्तु है, सिर्फ़ मशहूर करने के लिए लागत से भी कम दाम में देते हैं, व्यापारियों का ऑर्डर न लेंगे, डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग ।।≡) होगा, दो या अधिक लेने से माफ़। जिस रङ्ग की चाहिए मँगावें, रङ्ग न लिखने से हम ख़ास चुने हुए रङ्ग की भेजेंगे।

पता—स्वदेशी सिल्क साड़ी स्टोर, विभाग (च), बलदेव बिल्डिङ्ग झाँसी, यू० पी० (Jhansi, U. P.)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़िज़ाब छोड़ो

इस तेल से बाल का पकना रुक कर पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना दाम वापस की शर्त लिखा लें। एक आध बाल पका हो तो ३) इससे अधिक पका हो तो ५) आधा से अधिक या कुल पका हो तो ६) रु० का तेल मँगा लें।

पता—बाल काला स्टोर्स,
पो० कनकी सिमरी (दरभङ्गा)

मुफ़्त ! सर्वोत्तम अवसर !!

एच० एल० एम० एस०; एच० एम० डी० आदि होमियो-आयुर, यूनानी डिगरियाँ नियमित पोस्टल ट्यूशन और परीक्षाओं द्वारा। डिगरी की कोई फ़ीस नहीं। होमियो मेटेरिया मेडिका ५) रु०, होमियो प्रैक्टिस ४) रु०। दो आने का टिकिट भेजिए। इण्डियन होमियोपैथिक इन्स्टीट्यूट, एण्ड सोसाइटी (रजिस्टर्ड) पो० साबरमती, अहमदाबाद, इण्डिया

रहस्यमयी

आजकल के ज़माने में ढोंग और दिखावट का दौरदौरा है। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र तो इसके लिए बदनाम थे ही, पर पाठकों को यह जान कर कदाचित आश्चर्य न होगा कि हमारा साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्र भी इससे बचा नहीं है। इस पुस्तक में आपको मालूम होगा कि किस प्रकार भ्रष्ट-चरित्र के और स्वार्थी लोग ढोंग और बातूनीपन के ज़ोर से जनता के नेता और सञ्चालक बन बैठते हैं और ऐसे लोगों का अन्तिम परिणाम क्या होता है। मूल्य केवल १॥) स्थायी ग्राहकों से १=)

यह हँसी-मज़ाक के छोटे चुटकुलों का संग्रह है। यद्यपि इस प्रकार के चुटकुलों का प्रचार आजकल बहुत बढ़ गया है और सभी पत्र-पत्रिकाओं में वे प्रकाशित होते रहते हैं, पर ऐसी चुनी हुई चीज़ें आपको कदाचित ही कहीं मिलेंगी। इसका प्रत्येक चुटकुला दिल की कली को खिला देने वाला है। गम्भीर कार्यों में परेशान रहने वालों के लिये यह पुस्तक परम मित्र का काम देगी। मूल्य केवल १) स्थायी ग्राहकों से ॥)

पता—जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लम्बी दाढ़ी

यह हिन्दी के हास्यरस-सम्राट श्री० जी० पी० श्रीवास्तव की सर्वाधिक प्रिय रचना है। इसकी लोकप्रियता के कारण ही अब तक इसके कई संस्करण हाथोंहाथ बिक चुके हैं।

पुस्तक में तिरंगे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं।

यह वह पुस्तक है कि हँसा-हँसा कर दोहरा करने के अलावा सामाजिक कुरीतियों का नग्न-स्वरूप पढ़ने वालों के सामने उपस्थित करती है। यही कारण है कि बच्चे से लेकर बूढ़े तक—स्त्री-पुरुष सभी पुस्तक पर जान देते हैं! आज ही मँगा लीजिए!!! मूल्य लागत मात्र केवल २॥) रु० रक्खा गया है।

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

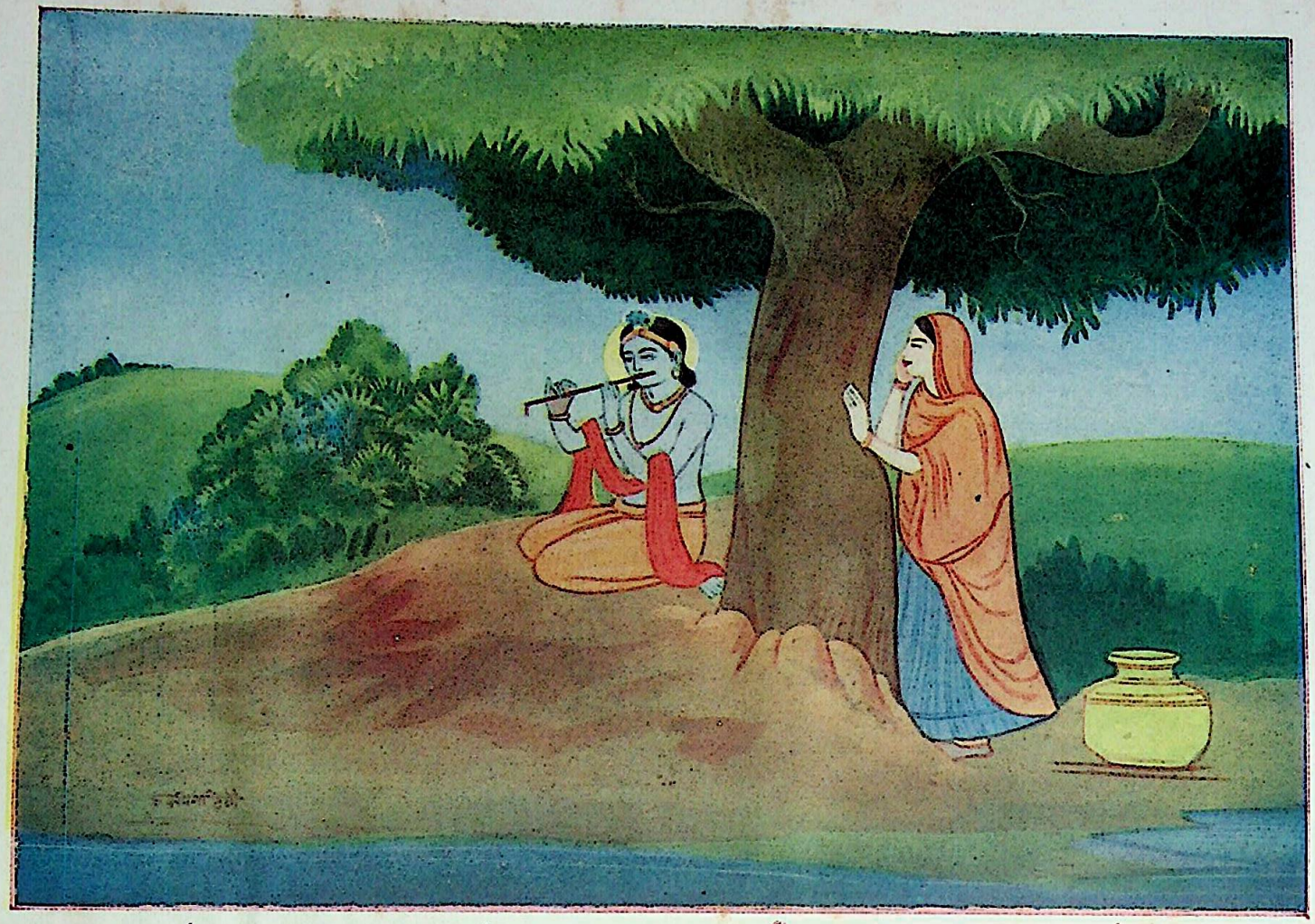

THE FINE ART PRINTING COTTAGE
ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आपके लाभ की बात ! आपके लाभ की बात !!

कुछ चुनी हुई पुस्तकें आधे मूल्य में !

'चाँद' के ग्राहकों के लिए विशेष रियायत !!

उत्तर न मिलने से १५ दिन बाद वी० पी० !!

निम्न-लिखित सूचना अवश्य पढ़ें :—

चाँद प्रेस लिमिटेड ने हिन्दी-जगत में आधुनिक युग के अनुकूल पुस्तक-प्रकाशन करके इस क्षेत्र की कैसी कायापलट कर दी है, यह सर्वविदित है। हमारी पुस्तकें विषय, भाव, भाषा और बाह्य सौन्दर्य—सब दृष्टियों से लोक-प्रिय सिद्ध हुई हैं और इसी का परिणाम है कि पुस्तकों का जैसा विराट और सर्वांगपूर्ण संग्रह हमारे कार्यालय में है वैसा कहीं और नहीं मिल सकता। हमको इस बात का गर्व है कि हमारा कार्यालय हिन्दी पुस्तकों का सर्वोत्तम प्राप्ति-स्थान है और देश के सभी माननीय व्यक्तियों की माँग की पूर्ति यही किया करता है। इसके उपलक्ष में हम भी समय-समय पर अपने प्रिय पाठकों को असाधारण सुविधाएँ प्रदान किया करते हैं, जो कि अन्यत्र मिल सकनी कठिन हैं। इस अवसर पर भी हम पाठकों को ऐसी ही एक नवीन सुविधा प्रदान करने को उद्यत हुए हैं।

हमारे प्रिय पाठकों को कदाचित् ज्ञात होगा कि कुछ समय पूर्व हमने कलकत्ते के सुप्रसिद्ध पुस्तक-व्यवसायी आर० डी० बाहिती का विशाल स्टॉक खरीद लिया था। बाहिती की पुस्तकों में भारतीय प्राचीन संस्कृति सम्बन्धी जैसे उत्तमोत्तम ग्रंथ सम्मिलित हैं, वैसे कहीं और मिल सकने कठिन ही नहीं, असम्भव हैं। जिन परमोज्ज्वल पौराणिक चरित्रों का अभी बहुत ही थोड़े पढ़े-लिखे व्यक्तियों को ज्ञान है, उन सब को सुलभ रूप में इन ग्रंथ-रत्नों में उपस्थित किया गया है। हमारी महिलाओं के लिए तो ये सभी पुस्तकें अमूल्य सम्पत्ति के सदृश हैं। इनसे उनको पार्वती, रुक्मिणी, मदालसा, चन्द्रकला, विपुला आदि भारत की उन महान सती-साध्वी महिलाओं के चरित्रों का ज्ञान होगा, जो उनके लिए सदैव आदर्श स्वरूप हैं और रहेंगे।

यद्यपि ये पुस्तकें पिछले दो-तीन वर्षों से हमारे यहाँ बिक रही हैं, पर किसी विशेष सूचना के अभाववश 'चाँद'-परिवार के थोड़े ही सदस्यों ने उनसे लाभ उठाया है। इसलिए अब हमने निश्चय किया है कि अपनी प्रकाशित अन्य पुस्तकों के समान इनको भी नियमित सेटों के रूप में,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुलभ मूल्य में पाठकों तक पहुँचाने की व्यवस्था की जाय। हम प्रायः अपनी पुस्तकों पर २५ अथवा ३३ सै० से अधिक कमीशन नहीं देते। पर इस अवसर पर नये पुराने सब ग्राहकों का ध्यान एक बार फिर इस संस्था की तरफ़ आकर्षित करने के विचार से हमने इन सेटों को आधे मूल्य में ही वितरण करने का निश्चय किया है। पाठकों को भली भाँति समझ लेना चाहिए कि इस प्रकार की सुविधा न तो हमेशा मिला करती है और न हम ही इसके लिए सदा समर्थ हो सकते हैं। इसलिए उनको अवश्य ही इससे लाभ उठाने की चेष्टा करनी चाहिए।

अपने नियमानुसार सबसे पहले इस योजना का लाभ हम अपनी पुस्तकों तथा 'चाँद' के स्थायी ग्राहकों को ही देंगे। इसी उद्देश्य से यह सूचना-पत्र आपकी सेवा में भेजा जा रहा है, ताकि आप तीनों सेटों में से कोई सेट पसन्द करके उसकी सूचना हमको दे दें। यदि आप अपने पसन्द के सेट की एक या दो पुस्तकों को बदलवाना चाहें तो हम उसके लिए भी सहर्ष तैयार हैं। यदि आपकी तरफ़ से पन्द्रह दिन के भीतर कोई सूचना प्राप्त न हुई तो हम स्वयं ही इन सेटों में से आपके उपयुक्त सेट चुनकर सेवा में वी० पी० द्वारा प्रेषित करेंगे। हमारा दृढ़ विश्वास है, इस दुर्लभ अवसर से लाभ उठाते हुए आप हमारी सेवा को स्वीकार करेंगे। यदि आप किसी कारणवश वी० पी० लेना न चाहें तो कृपया हमें अपने ग्राहक-नं० के साथ सूचना लौटती डाक से दे दें, ताकि वी० पी० रोक ली जावे, अन्यथा व्यर्थ में डाक-व्यय की हानि होगी।

सेट नं० १		सेट नं० २		सेट नं० ३	
दीर्घायु (स्वास्थ्य)	२॥)	स्वास्थ्य-रक्षक	२॥)	सूर्यकान्त (वेदान्त)	२)
समाज-कण्टक (उप०)	२॥)	मायापुरी (उप०)	२॥)	शैतानी फन्दा (उप०)	१॥)
शैतानी पञ्जा (उप०)	२॥)	शैतानी माया (उप०)	१॥)	सती पार्वती (जीव०)	२)
भारत का धार्मिक इतिहास	३)	सती रुक्मिणी (जीवनी)	२)	चन्द्रकला (पौ० उप०)	१॥)
सती चिन्ता (नाटक)	१॥)	कन्या-विक्रय (नाटक)	१॥)	सती मदालसा (,,)	१॥)
	१२)	मोरध्वज (नाटक)	१॥)	सती विपुला (,,)	२)
			१२)	कृष्ण सुदामा (नाटक)	१)
					१२)

विनीत,

नन्द गोपाल सहगल

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आपके लाभ की बात ! आपके लाभ की बात !!

घर बैठे मुफ़्त में पुस्तकें पढ़िये

'चाँद' के ग्राहक बनाने वालों को पुरस्कार की नई योजना

निम्न-लिखित सूचना अवश्य पढ़ें :—

इन दिनों हिन्दी-साहित्य और उसके पाठकों की संतोषजनक वृद्धि हो रही है। छोटे-छोटे स्थानों में भी अब अनेक पुस्तक-प्रेमी देखने में आते हैं। पर अपनी इस अभिलाषा की पूर्ति का सुभीता सबको नहीं होता। कितने ही व्यक्ति प्रबल इच्छा रहते हुए भी पुस्तकें प्राप्त कर सकने में असमर्थ रहते हैं। ऐसे पुस्तक-प्रेमियों के लिए हमने 'चाँद' के ग्राहक बनाकर पुस्तकें प्राप्त करने की एक नवीन योजना प्रस्तुत की है, जो निश्चय ही उनको बहुत पसन्द आयेगी।

इतना ही नहीं, सम्पन्न श्रेणी के लोगों के लिए भी यह योजना कई दृष्टियों से विशेष रूप से आकर्षक सिद्ध होगी। वे अपने इष्ट-मित्रों में सहज ही दस-पाँच ग्राहक बना सकते हैं। यह कार्य उनके लिए भार स्वरूप नहीं, वरन् एक मनोविनोद की भाँति होगा। साथ ही इसके लिए भेंट-स्वरूप उनको जो पुस्तकें प्राप्त होंगी वे अन्य पुस्तकों की अपेक्षा विशेष रूप से स्मरणीय होंगी।

इस योजना के अनुसार जो सज्जन 'चाँद' के वर्ष भर के अधिक से अधिक जितने ग्राहक बनाकर भेजेंगे उनको उतनी ही अधिक पुस्तकें भेंट स्वरूप दी जायँगी। कितने ग्राहक बनाने से कितनी पुस्तकें दी जायँगी, इसका हिसाब नीचे दिया जाता है:—

२	नवीन वार्षिक ग्राहक बनाने के लिए		३)	की पुस्तकें
३	,,	,,	४॥)	,,
४	,,	,,	६)	,,
५	,,	,,	८)	,,
६	,,	,,	१०)	,,
७	,,	,,	१२)	,,
८	,,	,,	१४)	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

९ नवीन वार्षिक ग्राहक बनाने के लिए १७) की पुस्तकें

१० ,, ,, ,, २०) ,,

ये पुस्तकें हमारी निजी प्रकाशित पुस्तकों में से भेजी जायँगी, जिनकी सूची सामने के पृष्ठ पर दी गई है। यदि कोई सज्जन बाहरी पुस्तकें चाहेंगे तो वे भी भेजी जा सकेंगी, पर वे २५ प्रतिशत कम मूल्य की मिलेंगी। अर्थात् यदि कोई १०) की हमारी प्रकाशित पुस्तकें पाने का हक़दार होगा तो बाहरी पुस्तकें ७॥) की दी जायँगी। पुस्तकें भेजने का व्यय कार्यालय देगा।

जो लोग 'चाँद' पढ़ना चाहते हैं, वे भी इस योजना के अनुसार अपनी इच्छा पूर्ण कर सकते हैं। जो सज्जन कम से कम वर्ष भर के पाँच ग्राहक बनाकर भेजेंगे उनको हम साल भर तक 'चाँद' बिना मूल्य देंगे।

ग्राहक बनाने वाले सज्जनों के सुभीते के लिये एक ऑर्डर फ़ार्म इसी सूचना के साथ लगा हुआ है। जितने भी ग्राहक वे बना सकें, उनके पते इसी में भर कर इसे हमारे पास लौटा देना चाहिए। यदि रुपया उनको मिल जाय तो उसे वे मनीऑर्डर द्वारा भेज दें। समस्त वी० पी० का रुपया वसूल हो जाने पर पुस्तकें या 'चाँद' उनकी सेवा में भेजा जायगा।

यह योजना केवल ३१ मई १९२६ तक के लिए है। आशा है 'चाँद'-प्रेमी सज्जन इस अवसर से अवश्य लाभ उठायेंगे।

विनीत,

नन्द गोपाल सहगल

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद प्रेस लिमिटेड द्वारा प्रकाशित उन पुस्तकों की सूची, जो ग्राहक बनाने वालों को पुरस्कार में दी जायँगी

स्फुलिङ्ग	... ...	२॥)	
समाज-कण्टक या मामा	... ...	२॥)	
दीर्घायु	... ...	२॥)	
पुनर्जीवन (टॉल्स्टाय)	... ...	५)	
व्यङ्ग चित्रावली	... ...	४)	
स्वास्थ्य-रक्षक	... ...	२॥।)	
सूर्यकान्त	... ...	२)	
भारत का धार्मिक इतिहास	...	३)	
अञ्जलि	... ...	॥।)	
विवाह-मन्दिर	... ...	१॥)	
सती-पञ्चरत्न	... ...	१)	
मायापुरी	... ...	२॥)	
सती मदालसा	... ...	१॥।)	
शैतानी माया	(,,)	१॥।)	
शैतानी पञ्जा	...	२॥)	
प्राणेश्वरी	...	॥।)	
चन्द्रकला	... ...	१॥)	
सती रुक्मिणी	... ...	२)	
नीच	... ...	१)	
कृष्ण-सुदामा	... ...	१)	
शैतानी फन्दा	... ...	१॥)	
व्रतकथा	... ...	१॥।)	
कन्या-विक्रय	... ...	१॥)	
सती चिन्ता	... ...	१॥)	
सती विपुला	... ...	२)	
मोरध्वज	... ...	१॥)	
देवी जोन	... ...	१॥)	
वल्लरी	...	२॥)	
स्त्री-रोग-विज्ञानम्	... ...	३)	
मृदुदल	... ...	२॥)	
विधवा-विवाह-मीमांसा	... ...	३)	
देवयानी	... ...	१)	
सती पार्वती	... ...	२)	
वीराङ्गना पन्ना	... ...	॥।)	
शैलकुमारी	... ...	२)	
देवताओं के ग़ुलाम	... ...	३)	
विवाह और प्रेम	... ...	२)	
घरेलू चिकित्सा	... ...	॥।)	
निर्वासिता	... ...	३)	
आशा पर पानी	... ...	॥=)	
बाल-रोग-विज्ञानम्	... ...	२॥)	
ग्रह का फेर	... ...	॥।)	
मालिका	... ...	४)	
राष्ट्रीय गान	... ...	।)	
देवदास	... ...	२)	
मानिक-मन्दिर	... ...	२॥)	
जननी-जीवन	... ...	१)	
नयन के प्रति	... ...	।=)	
गौरी-शङ्कर	... ...	॥=)	
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ	...	२)	
मनमोदक	... ...	॥।)	
मेहरुन्निसा	... ...	॥)	
सखाराम	... ...	१)	
नवीन दाम्पत्य जीवन में स्त्रियों के अधिकार	... ...	२॥)	
दुबे जी की चिट्ठियाँ	... ...	३)	
दक्षिण अफ्रिका के मेरे अनुभव	...	२॥)	
चुहल	... ...	१)	
महात्मा ईसा	... ...	२॥)	
प्राणनाथ		२॥)	
मणिमाला	...	३)	
चित्तौड़ की चिता	... ...	१॥)	
रहस्यमयी	... ...	१॥)	
लतखोरीलाल		४)	
ईसाई-बाला	... ...	॥।)	
पाक-चन्द्रिका	... ...	४)	
कायापलट	... ...	१॥)	
साहित्य का सपूत	... ...	१॥)	
मालती	... ...	३)	
शरीर और व्यायाम	... ...	२)	
मनोरञ्जक कहानियाँ	... ...	१॥)	
रजकण	...	२॥)	

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाहरी प्रकाशकों की कुछ पुस्तकें, जो हमारे यहाँ विक्रयार्थ सदा प्रस्तुत रहती हैं।

जेल-यात्रा	२)	लाल चिट्ठी	१।), २)	विचित्र जासूस	१)
जीवन और श्रम	१॥)	लेखन कला	॥)	विदुषी खन्ना	१॥)
भारत में बाइबिल	१॥)	कण्ठहार	३)	विलायती उल्लू	१॥)
महात्मा गाँधी	४॥)	खाद	१)	बालक श्रीकृष्ण	१)
आत्म विद्या	३)	खरा सोना	१)	चन्द्रकान्ता	१॥)
सम्राट् अशोक	३।)	खूनी सरपञ्च	॥।)	चन्द्रकान्ता सन्तति	७॥) सेट
बलिदान	१।)	खाजहाँ	१=), १॥=)	भूतनाथ २१ भाग	१६) सेट
हिन्दू जाति का स्वातन्त्र्य प्रेम	॥।=)	गिरवी का लड़का	।=)	भारतीय सम्पत्ति शास्त्र	५)
चाँद बाबी	१।)	गोलमाल	१=)	भूली बात	१)
स्वाधीन भारत	१)	चित्रमय रामायण	६)	अभिज्ञान शकुन्तला	१)
पञ्जाब केशरी रणजीतसिंह	१॥।)	चरित्रहीन	३॥)	अद्भुत आलाप	१)
अन्योक्ति कल्पद्रुम	१)	चण्डाल चौकड़ी	१॥।)	अकाली दर्शन	॥।)
प्रायश्चित	२)	चित्र काव्य	२)	अशान्त	॥)
चित्रलेखा	१॥।)	चित्राधार	१)	आफ़त की पुड़िया	१॥)
कपटी	१॥)	चीना सुन्दरी	१॥।)	उर्वशी	१)
मरदानी औरत	२)	चरित्र चिन्तन	१)	उद्भ्रान्त प्रेम	॥=)
चित्रमय श्रीकृष्ण	४)	चुम्बन मीमांसा	१)	कौतूहल भण्डार	१)
गङ्गा जमुनी	५)	जासूसी कुत्ता	१॥)	कसक	१)
अफ़लातून की सामाजिक व्यवस्था	२)	धन कुबेर	१॥।)	क्रान्ति की लपट	१)
मौलिकता	।)	अज्ञातवास	१)	कृष्णकान्त का वसीयतनामा	१)
भारतीय सभ्यता	१)	तिलक अलबम	१)	कुसुम संग्रह	१॥)
मि० व्यास की कथा	२॥)	नक़ली रानी	१।)	गुलदस्ता	१)
महाकवि नज़ीर	॥।)	निर्माल्य	१)	घर और बाहर	१।)
मायाविनी	२)	नरेन्द्र मोहिनी	१॥)	चीन की राज्यक्रान्ति	१॥)
मशरक़ी हूर	१)	निहार	१।)	चार्ली चेप्लेन	१)
मेघनाद बध	॥।)	प्रेम-पूर्णिमा	२)	जापान की राजनैतिक प्रगति	३॥=)
राजसिंह	१॥), २)	प्रेम पुजारी	१)	शंखनाद	॥।)
मञ्जरी	१।), १॥।)	पति मन्दिर	१॥=)	मिलन मन्दिर	२॥)
मृणालिनी	१)	वीर केशरी शिवाजी	४।)	पाँडे जी का पोथा	१)
मयंक मोहिनी	१)	विनाश की घड़ी	१॥)	खूनी तावीज़	१॥)
		प्रेम का पागल	२)	जीवन-ज्योति	१।)
		विजय किसकी ?	१॥)		

पता—जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्री० जनरल मैनेजर महोदय,

चाँद प्रेस, लिमिटेड

इलाहाबाद

ता०.....

प्रिय महोदय,

पुस्तक-प्रेमियों के लिए आपकी योजना पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। कृपया निम्न-लिखित.....पतों पर एक वर्ष के लिए 'चाँद'.....मास से भेजना आरम्भ कर दें। ६॥) रु० प्रति ग्राहक के हिसाब से वार्षिक चन्दा मनीऑर्डर से भेज रहा हूँ / वी० पी० भेज कर वसूल कर लें और सभी ग्राहकों के रुपये प्राप्त हो जाने पर अपनी घोषणा के अनुसार .....रु० की निम्न-लिखित पुस्तकें / एक साल के लिए 'चाँद' मेरे निम्नाङ्कित पते से भेज दें।

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

[कृपया उस ओर भी देखिए]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भेजी जाने वाली पुस्तकों के नाम

१ _____

२ _____

३ _____

४ _____

५ _____

६ _____

७ _____

८ _____

९ _____

१० _____

भवदीय

हस्ताक्षर _____

ग्राहक नं० _____

पूरा पता _____

_____

नोट—नाम और पते साफ़ होने चाहिए और साथ ही ग्राहक-नम्बर भी अवश्य लिखना चाहिए, ताकि कार्यवाही करने में कोई दिक़्क़त न हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

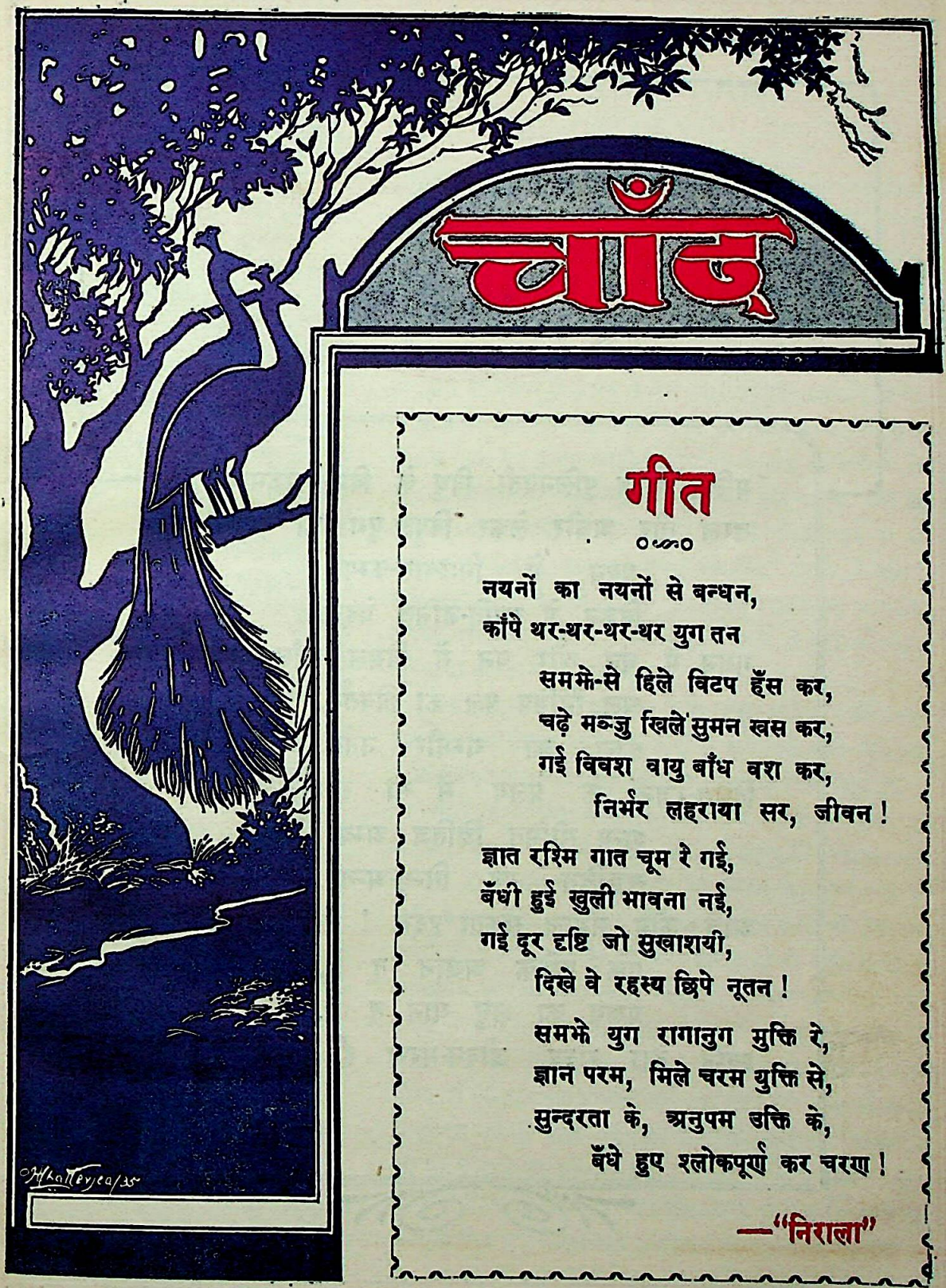

गीत

नयनों का नयनों से बन्धन,
काँपे थर-थर-थर-थर युग तन

समझे-से हिले विटप हँस कर,
चढ़े मञ्जु खिले सुमन खस कर,
गई विवश वायु बाँध वश कर,
निर्भर लहराया सर, जीवन!

ज्ञात रश्मि गात चूम रे गई,
बँधी हुई खुली भावना नई,
गई दूर दृष्टि जो सुखाशयी,
दिखे वे रहस्य छिपे नूतन!

समझे युग रागानुग मुक्ति रे,
ज्ञान परम, मिले चरम युक्ति से,
सुन्दरता के, अनुपम उक्ति के,
बँधे हुए श्लोकपूर्ण कर चरण!

—"निराला"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गीत

मलिन आज पुलिनवती विधु के बिना सुकुमार !
तरल तीर अधीर लेकर विपुल युग का भार !
पवन में निःश्वास-कम्पन,
विजन में स्मृति-जनित वेदन,
गगन में घन और घन में विमल आँसू-धार !
चल निमिष पल का विवर्तन,
काल का गम्भीर नर्तन,
दिवस-रजनी के प्रलय में सो रहा संसार !
शून्य सीमित क्षितिज अम्बर,
सङ्कुचित यह सिन्धु-अन्तर,
आज कौन सँभाल सकता हृदय ! तेरा प्यार ?
एक पथिक अजान तू है,
प्रणय का लघु गान तू है,
स्वप्न तेरा राज्य, जीवन-मरण ही शृङ्गार !

—'प्रभात'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारी समस्याएँ

(३)

शताब्दियों से हमारी सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार एकरूपिणी चली आ रही है कि अब हम उसका अस्तित्व भी भूल चले हैं, उसके बन्धनों की त्रुटियों और उनके परिहार की ओर ध्यान जाना तो दूर की बात है। कदाचित् परिहार की आवश्यकता भी नहीं थी, कारण नवीन परिस्थितियों में ही प्राचीन की अपूर्णता का अनुभव और उसे नवीन साधनों द्वारा अधिक सामञ्जस्यपूर्ण बनाने की इच्छा का जन्म हो सकता है। युगों से जब हमारे सामाजिक वातावरण पर परिवर्तन की छाया ही नहीं पड़ी, उसमें नव-जीवन का स्पन्दन होना ही रुक गया, तब सुविधा-असुविधा, पूर्णता-अपूर्णता भी अर्थहीन हो गईं। जीवित तथा चलते हुए व्यक्ति को मार्ग भी चाहिए, बैठने को छाँह भी चाहिए और लेटने, विश्राम करने के लिए स्थान की भी आवश्यकता होती है, परन्तु जो शव है उसे जिस अवस्था में जीवनी शक्ति छोड़ जाती है उसी में नष्ट होने तक या पुनर्जीवन पाने तक निश्चेष्ट पड़ा रहना पड़ता है; उसे जीवित व्यक्ति के लिए आवश्यक सुविधाओं का करना ही क्या है!

अब कुछ दिनों से पुनर्जीवन के जो चिह्न व्यक्तियों और उनके द्वारा समाज में दिखाई पड़ने लगे, उन्हीं के कारण हमें पहले-पहले युगों के उपरान्त, अपनी सामाजिक सुविधाओं-असुविधाओं का भान हुआ।

सारी सामाजिक व्यवस्थाओं का प्राण उसकी रूप-रेखा का आधार, समाज के प्रधान अङ्ग स्त्री तथा पुरुष का सामञ्जस्यपूर्ण सम्बन्ध ही है, जिसके बिना किसी भी समाज का ढाँचा बालू की भित्ति के समान ढह जाता है। वे दोनों यदि एक दूसरे को ठीक-ठीक समझ लें, अपनी-अपनी त्रुटियों और विशेषताओं को हृदयङ्गम कर लें तो समाज का स्वरूप सुन्दर हो जाता है, अन्यथा उसे कोई, दूसरे उपाय से भव्य तथा उपयोगी नहीं बना पाता। उस युग विशेष को छोड़ कर, जब स्त्रियाँ विद्वत्सभाओं में बैठने तथा शास्त्रार्थ करने योग्य भी थीं, अब तक सम्भवतः स्त्री तथा पुरुष यदि कभी तनिक भी निकट आ सके तो केवल पति-पत्नी के रूप में और उस सम्बन्ध में भी एक ने दूसरे को अधिकार द्वारा समझने का प्रयत्न किया। अन्य सम्बन्धों में या तो अत्यधिक श्रद्धा और संकोच का भाव रहा या उपेक्षा और अनादर का, जिसने स्त्री के स्वभाव को समझने ही न दिया।

वास्तव में स्त्री केवल पत्नी के रूप में ही समाज का अंग नहीं है, अतः उसे उसके भिन्न-भिन्न रूपों में व्यापक तथा सामान्य गुणों द्वारा ही समझना समाज के लिए आवश्यक तथा उचित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आज की हमारी सामाजिक परिस्थिति कुछ और ही है। स्त्री न घर का अलङ्कार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है न देवता की मूर्ति बनकर प्राण-प्रतिष्ठा चाहती है, कारण वह जान गई है कि एक का अर्थ अन्य की शोभा बढ़ाना तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाना है तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस पुजापे को देखते रहना है जिसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बाँट लेंगे। आज उसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष को चिनौती देकर अपनी शक्ति की परीक्षा देने का प्रण किया है और उसी में उत्तीर्ण होने को जीवन की चरम सफलता समझती है।

परन्तु क्या ऐसे जागृति के युग में भी समाज के उन आवश्यक अंगों में, जिन्हें शिक्षा के सुचारु साँचे में ढाला गया है, सामञ्जस्य उत्पन्न हो सका है? कदाचित् नहीं। प्रतिदिन हम जो सुनते तथा देखते रहते हैं उसे सुनते और देखते हुए कौन मान लेगा कि आज का हमारे समाज का वातावरण अधिक शान्ति और सामञ्जस्यमय हो सका है। स्त्री के लिए एक दुर्वह बन्धन घर में है और उससे असह्य दूसरा बाहर यह न मानना असत्य ही नहीं, अपने प्रति तथा समाज के प्रति अन्याय भी होगा। यह अस्वाभाविक स्थिति हमें तथा आगामी पीढ़ियों को कहाँ से कहाँ पहुँचा देगी, यह प्रश्न प्रायः मन में उठकर फिर उसी में विलीन हो जाता है, क्योंकि हम अपनी त्रुटियों को सम्मुख रख कर देखने का साहस ही अपने भीतर सञ्चित नहीं कर पाते। यदि कर पाते तो इनका दूर हो जाना भी अवश्यम्भावी था। स्त्रियों की अनेक समस्याओं का सुलझ पाना तो दूर की बात है, साधारण जीवन में उनके साथ कैसा शिष्टाचार उचित होगा, इसका निर्णय भी अब तक न हो सका। यदि रूढ़ियों का अवलम्ब लेनेवाली बहिनें गृहों में अनेक यन्त्रणाएँ रो-रोकर सह रही हैं तो बन्धनों को तोड़ फेंकने वाली विदुषियाँ बाहर असंख्य अपमानों का अविचल लक्ष्य बन कर उससे भी कठिन अग्निपरीक्षा में उत्तीर्ण होने की आशा में मिथ्या हँसी हँस रही हैं। १० फ़रवरी के चित्रपट में प्रकाशित श्री० माधवी, बी० ए० का चोली-रहित कुर्त्तन का कटुवापन लिए हुए 'हसीनाने जहाँ की मुश्किल' लेख इस दिशा की ओर निर्देश-मात्र करता है। उस पर बहुत चर्चा हो चुकी है, आवश्यक-अनावश्यक दोनों, परन्तु उस समस्या के समाधान विषयक व्यावहारिक उपाय मिल सकना उतना सहज नहीं है जितना प्रायः समझ लिया जाता है। इस समय का वातावरण इतना कुहराच्छन्न सा जान पड़ता है जिसमें गन्तव्य मार्ग ढूँढ़ लेने में समय तथा सावधानी दोनों की आवश्यकता है। इतने दीर्घ काल के उपरान्त अचानक ही युवक-युवतियों में, एकत्र होने का, एक दूसरे के सम्पर्क में आने का, सुयोग पाकर ऐसी किंकर्तव्य-विमूढ़ता जाग उठी है जो उन्हें कोई मार्ग, शिष्टाचार की कोई रूपरेखा, निश्चित नहीं करने देती। इसके समाधान के लिए, इस सम्बन्ध में अधिक सामञ्जस्य लाने के लिए न तो बहिन माधवी जी का बलप्रदर्शन वाला उपाय सहायक होगा न भाई जैनेन्द्र जी का स्त्री-पुरुष की भावना-हीन, Sex Consciousness रहित होकर अपने आपको समाज का अङ्गमात्र समझ लेना ही। एक मनुष्य से नीचे का उपाय है दूसरा उससे बहुत ऊपर का।

स्त्री की स्त्रीत्व की भावना तथा पुरुष की पुरुषत्व की भावना इस उच्छृङ्खल व्यवहार के लिए उत्तरदायिनी नहीं ठहराई जा सकती और उस चेतना को दूर कर सकना उसी प्रकार सम्भव है जिस प्रकार किसी वस्तु को उसके रङ्ग-रूप तथा अन्य इन्द्रियग्राह्य गुणों से रहित कर उसे उसके सारत्व में देखना। यह भी दार्शनिक का कार्य है और वह भी। सर्वसाधारण से यह आशा दुराशा ही सिद्ध होगी। इसके अतिरिक्त यह भी न भूलना उचित होगा कि जिस प्रकार इस भावना ने कभी-कभी पशुत्व को जागृत किया है उसी प्रकार कभी-कभी इसने मनुष्य को महान से महान त्याग की अन्तिम सीढ़ी तक भी पहुँचाया है। स्त्री स्त्रीत्व की सजग चेतना से समाज के वातावरण में अधिक से अधिक स्निग्धता ला सकती है और पुरुष इसी से अधिक से अधिक शक्ति। उसमें सामञ्जस्य लाने के लिए उन्हें गाड़ी के निर्जीव पहियों या चारपाई के पायों के समान अपने आपको समाज के अङ्गमात्र समझने की आवश्यकता नहीं है और न यह ज्ञान, ऐसी वीतराग जागृति सामूहिक रूप में सम्भव ही है। स्त्री या पुरुष की इस चेतना से हानि तब तक नहीं हो सकती जब तक उनमें सहयोगी के स्थान में भक्षक-भक्ष्य, भोगी-भोग्य का विकृत भाव नहीं आ जाता। इस भाव ने सदा से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारा अपकार किया है, करता जा रहा है और करेगा, यदि इसका विष हमारी नसों में बचपन से ही प्रविष्ट कर दिया जायगा। हमें ऐसे स्वस्थ युवक चाहिए जिनमें ज्वरा-क्रान्त की न बुझनेवाली, जल के स्वाद को विकृत कर देने वाली प्यास न हो, जो रोग का चिन्ह-मात्र है, वरन् स्वास्थ्य की आवश्यकता साधन तथा स्थान का ज्ञान हो, जो विकास का कारण है।

हम अपने समाज में कुछ बुरे, आचरण-भ्रष्ट व्यक्तियों पर दमन नीति का प्रयोग कर सकते हैं, अपनी बहिनों को उनके सम्पर्क से दूर रख सकते हैं, परन्तु यही उपाय हमारे शिक्षित, भविष्य के विधाता युवकों की अशिष्टता समझी जाने वाली शिष्टता का प्रतिकार न कर सकेगा।

इस अप्रिय वातावरण में एक दूसरे को दोष दे लेना बहुत सहज है और एक प्रकार से स्वाभाविक भी, क्योंकि स्वभाव से मनुष्य अपनी त्रुटियों का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने का इच्छुक नहीं होता।

वास्तव में यदि निरपेक्ष दृष्टि से तटस्थ की भाँति देखा जावे तो इस परिस्थिति के युगों से संगृहीत होते रहने वाले अनेक प्रकट-अप्रकट कारण जान पड़ेंगे, जिनकी सामूहिक शक्ति का परिणाम हमारे समाज में अनेक रूपिणी विकृति उत्पन्न करता जा रहा है।

हमारी संस्कृति में पहले भी जब महिलाएँ अधिक से अधिक उन्नतावस्था में थीं, जीवन की एक विशेष अवस्था में उनसे कितनी दूर रहने का आदेश दिया गया है, यह इसी से प्रकट हो जाता है कि ब्रह्मचारी का चित्र में स्त्री-दर्शन भी वर्ज्य तथा एकान्त में माता की सन्निकटता भी अनुचित मानी गई। भारत वैराग्यमय संयम-प्रधान देश है, अतः व्यक्ति को इस आदर्श तक पहुँचाने के लिए उसके और प्रमुख प्रलोभन स्त्री तथा स्वर्ण के बीच में जितनी ऊँची प्राचीर बना सकना सम्भव था, बना दी गई।

अवश्य ही इन सब के पीछे एक मनोवैज्ञानिक दृष्टि थी, एक सिद्धान्त था, परन्तु जब कालान्तर में हम उसे भूल गए तब जैसा कि प्रायः होता है, अर्थहीन प्रयोग की रक्षा, उसके लिए अनुपयुक्त वातावरण में भी दृढ़ता से करते रहे। भिन्न वातावरण में इस सिद्धान्त ने स्त्री-पुरुष के बीच में ऐसी अग्निमय रेखा खींच दी जिसके उस पार झाँकना कठिन तथा दुःसाहसपूर्ण कार्य हो गया। ऐसे अस्वाभाविक वातावरण में प्रत्येक बालक-बालिका को पल कर बड़ा होना पड़ता है और उनके अबोध मन में एक-दूसरे को जानने के कुतूहल के साथ-साथ जानने का अनौचित्य भी समाया रहता है। गृह और समाज दोनों उन्हें इतनी दूर रखना चाहते हैं जितनी दूर रह कर वे एक दूसरे को विचित्र स्वप्न-लोक की वस्तु समझने लगें। एक सङ्कीर्ण सीमा में निकट रहते हुए भी पिता-पुत्री, भाई-बहिन अपने चारों ओर मिथ्या सङ्कोच की ऐसी दृढ़ भित्ति खड़ी कर लेते हैं जिसे पार कर एक दूसरे के निकट पहुँच पाना, उनकी विभिन्नता-मयी प्रकृति को समझ लेना असम्भव हो जाता है; यही नहीं, समझने का प्रयास अनुचित और उस दूरी को और अधिक बढ़ाने की इच्छा स्तुत्य मानी जाने लगी है।

हमारे यहाँ सुशीला कन्या वही कही जायगी जो अपने भाई या पिता के सम्मुख मस्तक तक ऊँचा नहीं करती और सुशील पुत्र वही जो विवाह तक बहिन तथा अन्य सम्बन्धिनियों से बहुत दूर रहना जानता है। इसकी प्रतिक्रिया, लज्जा तथा क्षोभ से रुला देने वाली प्रतिक्रिया, हम बाहर के उन्मुक्त वातावरण में सम्पर्क में आने वाले युवक-युवतियों के व्यवहार में देखते हैं। गृह के वातावरण से निकल कर जब वे एक दूसरे को कुछ निकट से देखने का अवकाश तथा सुविधा पा लेते हैं तब उसके दो ही परिणाम सम्भव हैं—या तो वे एक दूसरे को स्वर्गीय वस्तु समझ कर निकट न आ सकें या जानने के कौतूहल में उस निर्धारित रेखा का उल्लङ्घन कर जावें। प्रायः होता दूसरा ही परिणाम है, परन्तु उसके लिए किसी को दोष देना व्यर्थ होगा। प्रायः युवकों के संस्कार उन्हें ऐसी समीपता का अनौचित्य बनाते रहते हैं तथा जानने की इच्छा आगे बढ़ाना नहीं रोकती, फलतः वे इस प्रकार अनदेखा कर देखना चाहते हैं जिसे हम अशिष्टता कहेंगे और जिसे देखने में अन्य पश्चिमीय देशों का युवक अपना अपमान समझेगा। युवतियाँ अल्प संख्या में ही स्वच्छन्दता से बाहर आती-जाती हैं, यह उन्हें और भी धृष्टता सिखाता है। अस्वाभाविक वातावरण के अतिरिक्त नैतिकता का अभाव भी इस दुरवस्था का कारण कहा जा सकता है। आदि से अन्त तक प्रायः बालकों को न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नैतिकता की शिक्षा ही मिलती है न उनके चरित्र के निर्माण की ओर ही ध्यान दिया जाता है, अतः हमें ऐसे युवक अल्प संख्या में मिलेंगे जिनके जीवन में अविचल सिद्धान्त, अटूट साहस, अदम्य वीरता तथा स्त्रियों के प्रति सम्मान एवं श्रद्धा का भाव हो और यह सत्य है कि जिस प्रकार वीरता मृत्यु को भी वरदान बना देने का सामर्थ्य रखती है उसी प्रकार कायरता जीवन को भी अभिशाप का रूप देने में समर्थ है। आपदग्रस्ता बहिन के सम्मान की रक्षा में मिट जाने वालों की संख्या नगण्य ही है, परन्तु अपनी कुचेष्टाओं से उसका अनादर करने वाले पग-पग पर मिलेंगे।

आधुनिक साहित्यिक वातावरण में भी विकृत प्रेम का विष इस प्रकार घुल गया है कि बेचारे विद्यार्थी को जीवन की शिक्षा की प्रत्येक घूँट के साथ उसे अपने रक्त में मिलाना ही पड़ता है। कहानियों का आधार, कविता का अवलम्ब, उपन्यासों का आश्रय, सब कुछ विकृत पार्थिव प्रेम ही है; जीवन-पुस्तक के और सारे अध्याय मानो नष्ट हो गये हैं, केवल यही परिच्छेद बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक पढ़ा जाने वाला है।

पत्र-पत्रिकाएँ भी स्त्रीमय होकर ही सफल होने का स्वप्न देखती हैं और चित्रपट वाक्पट के विषय में कुछ कहना व्यर्थ ही है। अतः बालक-बालिका ज्यों-ज्यों बढ़ते जाते हैं उनका उन्माद, किसी उपन्यास के नायक या नायिका का स्थान ग्रहण करने की इच्छा, वास्तविकता को अनदेखा कर देने की प्रवृत्ति भी उग्रतर होती जाती है। प्रायः युवकों की अस्वस्थ मनोवृत्ति के पीछे एक विस्तृत इतिहास छिपा रहता है जिसे बिना समझे हम इस मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं कर सकते।

अवश्य ही हमारी विवाहादि से सम्बन्ध रखने वाली अपूर्ण सामाजिक व्यवस्था भी इसके लिए उत्तरदायिनी ठहराई जा सकती है, परन्तु केवल उसी में सुधार होने से इन भावनाओं में सुधार न होगा। उसके लिए तो हमें एक नवीन वातावरण उत्पन्न करने की आवश्यकता होगी जिसमें हमारे बालक-बालिका वय के अनुसार जीवन का सर्वाङ्गीण ज्ञान प्राप्त कर स्वस्थ मनोवृत्तियों वाले युवक-युवती बन कर कार्यक्षेत्र में उतर सकें।

स्वप्न जीवन की मधुरता है तथा प्रणय उसकी शक्ति; परन्तु उनको यथार्थ समझ लेना जीवन की सञ्जीवनी जड़ी है, यह न भूलना चाहिए। क्या विकृत होकर अंगूर का प्राण को शीतल करने वाला मधुर रस भी तीखी मस्तिष्क को उत्तप्त कर उसमें उन्माद भर देनेवाली मदिरा नहीं हो जाता!

एक ही वातावरण में परिवर्द्धित होने के कारण बालिकाओं का मानसिक विकास भी विकृत हुए बिना नहीं रहता, परन्तु यह भी अधिकांश में सत्य है कि उनकी मनोवृत्ति, युवकों की मनोवृत्ति के समान ऐसे उद्धत उच्छृङ्खल रूप में अपना परिचय नहीं देती, चाहे उनका स्वभाव-सुलभ लज्जा इसका कारण हो चाहे अन्य सामाजिक बन्धन। परन्तु एक दोष उनका ऐसा है जिसकी ओट में युवक अपनी नैतिक दुर्बलता छिपाने का प्रयत्न करते रहते हैं और सम्भव है बहुत काल तक करते रहें। मनुष्य की वेषभूषा पर, उसके बाह्य आवरण पर, उसके व्यक्तित्व का वैसा ही आलोक पड़ता है जैसा ग्लोब पर दीप-शिखा का। प्रायः हम बाह्य रूप से आन्तरिक विशेषताओं की ओर जा सकते हैं, परन्तु इसके विपरीत पहले आन्तरिक गुणों को समझ लेना अधिकांश व्यक्तियों के लिए कठिन हो जाता है। बाह्य रूप से हम एक को संयमी तथा दूसरे को जीवन के लिए आवश्यक संयम से खिलवाड़ करने वाला उच्छृङ्खल व्यक्ति मान लेते हैं। इसके अतिरिक्त वेष का एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ता है। वेश्या संन्यासिनी के वेष में अपनी भावभङ्गी में वह नहीं व्यक्त कर सकती जो अपने वेष में कर सकेगी। हर एक वर्ण की, आश्रम की वेषभूषा चुनने में केवल विभिन्नता ही दृष्टि में नहीं रखी गई है उसका दूसरा तथा पहननेवाले के ऊपर पड़ने वाला अव्यक्त प्रभाव भी ध्यान में रखा गया है। आज जिस रूप में हमारी नवयुवती बहिनें पुरुष-समाज में आती जाती हैं, वह उनका भ्रान्त परिचय ही दे सकता है। किसी विद्यार्थिनी को जिज्ञासु विद्यार्थिनी मात्र समझ लेना कठिन सा हो उठा है, कारण वह जीवन की गम्भीरता से दूर उच्छृङ्खल तितली के रूप में घर से बाहर आती है और प्रायः दूसरों के आकर्षण का केन्द्र बनना बुरा नहीं समझती। नवयुवकों के विषय में भी यही सत्य है, परन्तु उसमें आकर्षण का गुण अपेक्षाकृत न्यून होने के कारण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उतनी हानि नहीं होती। बहिनें प्रश्न कर सकती हैं कि क्या दूसरों के लिए वे शृङ्गार छोड़ कर तपस्विनी बन कर घूमें। इस प्रश्न को कई दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। यदि यह सारा आडम्बर आत्मतुष्टि के लिए है तो घर की सीमा तक भी सीमित किया जा सकता है; बाहर स्थान तथा समय के अनुसार गाम्भीर्य से आया जावे। परन्तु यदि यहाँ की युवतियाँ जहाँ उनके भाइयों में दूषित मनोवृत्ति उत्पन्न हो गई है, उनकी असंख्य बहिनें आँसुओं से शृङ्गार कर रही हैं, जहाँ उन्हें बाहर, भूला हुआ आदर्श स्थापित करना है, भीतर जीर्ण सामाजिक बन्धनों को नवीन रूप देना है, अपने आपको श्रद्धा तथा आदर के योग्य प्रमाणित करना है, ऐसा शृङ्गार जो उनके मार्ग में बाधक होता है छोड़ दें तो क्या प्रलय हो जायगा?

यदि वे अपने आपको केवल 'हसीनाने जहाँ' समझती हैं तब तो उनका तस्वीर बना रहना अच्छा ही है, अन्यथा उन्हें अपने आपको बाधाओं के अनुरूप वीर कर्मण्य प्रमाणित करना ही पड़ेगा।

इसके अतिरिक्त उन्हें सदा यह ध्यान में न रखना चाहिए कि संसार के सारे पुरुष उन्हें कुदृष्टि से देखते या देखने का दुस्साहस कर सकते हैं। हमें प्रायः अपने विश्वास की छाया ही दूसरों में दिखाई पड़ने लगती है। जो स्वयं अपना आदर नहीं करना जानता वह दूसरों के सम्मुख अपने आपको आदर का पात्र प्रमाणित भी नहीं कर सकता, यह एकान्त सत्य है। हमारा आत्मविश्वास के साथ पुरुषों के सम्पर्क में आना तथा किसी की वास्तविक कुचेष्टा को सद्भाव से दूर करने का प्रयत्न किसी भी प्रकार के बलप्रदर्शन से अधिक स्तुत्य सिद्ध होगा। कोई दुश्चरित्र युवक एक भली विद्यार्थिनी का बहुत पीछा करता था। एक दिन उसने बड़ी करुणा से कहा—"मैं आपकी बड़ी बहिन हूँ। यदि आपको अपने पतन पर रोना नहीं आता तो मैं ही रोकर उसके लिए पश्चात्ताप करूँगी।" कहना नहीं होगा, कई वर्ष बाद साक्षात् होने पर उसी ने कर्मठ तथा सच्चरित्र व्यक्ति के रूप में उस महिला के पैर छूकर स्वीकार किया कि बहिन की भर्त्सना से ही वह मनुष्य हो सका है। परन्तु एक व्यक्ति में ऐसे आत्मिक परिवर्तन के लिए दूसरे की आत्मा में उससे सौ गुना आत्मिक बल चाहिए।

बहिन माधवी ने सत्य तो कहा है, परन्तु वह उनकी झुँझलाहट में रङ्गीन हो गया। उन्होंने जिस रूप में इस समस्या को देखा तथा सुलझाना चाहा है वह अधिक उपयोगी न होगा। हमारे तथा पुरुषों के सामञ्जस्यपूर्ण सम्बन्ध पर बहुत कुछ निर्भर है और उस उपाय से विकृति ही उत्पन्न होगी। आज हम उस विकृति के एक रूप से रो रहे हैं कल दूसरे से खिन्न होंगे, परन्तु वह सामञ्जस्य कहाँ मिलेगा जो समाज का जीवन है। हमारी सामाजिक तथा अन्य व्यवस्थाओं की रूपरेखा Weeping Philosopher ही निर्धारित कर सके हैं और उसके अनुसार निर्माण का कार्य कर्मण्य व्यक्तियों का रहा है। आज भी हमें अपने भविष्य को ढालने के लिए उन्हीं से साँचा माँगना होगा, इसमें सन्देह नहीं। पुरुष भी इस विषम मार्ग को सम बनाने में सहायक हो सकते हैं, यदि वे स्त्री की त्रुटियों की आलोचना के स्थान में उसकी कठिनाइयाँ देखने लगें। उनकी संकीर्णता ने ही बाहर आने वाली बहिनों को आवश्यकता से अधिक सतर्क कर दिया है। उन्हें पग-पग पर अशिष्ट अधिक मिलते हैं सज्जन कम, अतः धोखा खाने की सम्भावना उन्हें अनावश्यक कटु बना दे तो विशेष आश्चर्य्य की बात नहीं है।

कुछ महीने पहले स्थानीय 'हिन्दुस्तान' में एक लेख में एक महिला पर आक्षेप था कि उसने किसी शिष्ट महोदय के कन्धे पर अपना बिस्तर लाद दिया। सबसे अधिक विनोद की बात यह है कि उक्त महिला को अपनी अशिष्टता का रत्ती भर भी ज्ञान नहीं, न यह पता कि किसी को कुली के रहते हुए उनका बिस्तरा क्यों उठाना पड़ा। फिर यदि भीड़ में जल्दी में उक्त महानुभाव ने ऐसी सहायता कर ही दी तो उसे उनकी अशिष्टता के प्रचार का साधन क्यों बनाया! वे उनकी सगी बहिन होतीं तो क्या वे ऐसा ही करते? ऐसे व्यक्तियों के द्वारा स्त्री अत्यधिक सतर्क रहने पर बाध्य की जाती है और यह सजगता उसके बाह्य जीवन को अधिक कण्टकाकीर्ण बनाती जा रही है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय महासभा और देशी राज्य

[श्री० शंकरसहाय सकसेना, एम० ए० (इकान) एम० ए० (काम)]

भारतवर्ष में ४०० से अधिक देशी राज्य हैं, जिनमें देश की लगभग एक तिहाई जनसंख्या निवास करती है। यह राज्य देश के प्रत्येक भाग में फैले हुये हैं, किन्तु कहीं-कहीं अनेक देशी राज्य एक ही स्थान पर पाये जाते हैं। इन राज्यों के क्षेत्रफल, वार्षिक आय, तथा भौगोलिक परिस्थिति में कल्पनातीत अन्तर है। जहाँ इन राज्यों में हैदराबाद और मैसूर जैसे विशाल राज्य हैं, वहाँ दो-तीन गाँव वाले राज्य भी मौजूद हैं। इन बड़े और छोटे राज्यों के नरेशों की वंश-मर्यादा में, पगड़ी और साफ़े के पेंचों और रङ्गों में, तोपों की सलामी में, और अर्थहीन उपाधियों में भिन्नता हो सकती है, किन्तु स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता में, प्रजा की गाढ़ी कमाई को अपनी रङ्गरेलियों के लिए पानी की तरह बहाने में, और गौरांग प्रभुओं की चाटुकारिता करने में आश्चर्यजनक समानता दृष्टिगोचर होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो प्रत्येक राजा इन आवश्यक गुणों में एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने पर तुला हुआ है।*

देशी राज्यों की प्रजा जैसी दयनीय और पतित अवस्था में रहती है उसकी कल्पना भी वह लोग नहीं कर सकते, जिन्हें देशी राज्यों में रहने का अवसर नहीं मिला है। देशी राज्यों की प्रजा तो दासों की दास है। इस दुहरी दासता के भयङ्कर बोझ से अभागी प्रजा बुरी तरह पिसी जा रही है। कल्पना कीजिए, जहाँ सभा करने के लिए, पुस्तक-प्रकाशन के लिए आज्ञा मिलना कठिन हो, जहाँ लेखन और भाषण की स्वतंत्रता न हो वहाँ की प्रजा के कष्टों की कहानी संसार किस प्रकार जान सकता है। किसी भी स्वतंत्र मनोवृत्ति वाले स्त्री-पुरुष की अधिकांश देशी राज्यों में सम्पत्ति तथा इज्जत सुरक्षित नहीं है। आये-दिन जो अत्याचारों के दिल दहला देने वाले समाचार हमें सुनाई दे जाते हैं, वे होने वाले अत्याचारों के दशांश भी नहीं हैं।

देशी राज्यों की स्वेच्छाचारिता तथा निरंकुशता के कारण प्रजा इतनी भीरु और कायर बन गई है कि उस पर होने वाले अत्याचारों का विरोध करना तो दूर रहा, पत्रों में सूचना देने का भी कोई साहस नहीं करता। व्यक्तियों पर किये गए अत्याचारों को तो कोई जानता भी नहीं। हाँ, जब कभी अत्याचारों का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है, जो बाहरी संसार की आँख से छिपा नहीं रह सकता, तब हमें वहाँ के करुण क्रन्दन की दुख-भरी आवाज सुनाई दे जाती है। समाचार पत्र भी देशी राज्यों के विषय में बहुत सँभल कर लिखते हैं, क्योंकि प्रिंसेज प्रौटैक्शन ऐक्ट की तलवार उनकी गर्दन पर सर्वदा लटकती रहती है। देशी राज्यों में तो समाचार पत्र निकल ही नहीं सकते।

जब से बृटिश भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन ने जोर पकड़ा है, तब से देशी नरेश बहुत चौकन्ने हो गए हैं। वे जानते हैं कि बृटिश भारत में जो राष्ट्रीयता की प्रबल आँधी उठ खड़ी हुई है उससे देशी राज्य अछूते नहीं बच सकते। साथ ही वे यह भी जानते हैं कि यदि स्वतंत्रता की भावना उनकी प्रजा में जागृत हो गई तो उनकी निरंकुशता और स्वेच्छाचारिता का तो अन्त अवश्यम्भावी है, सम्भवतः उनका अस्तित्व भी खतरे में पड़ जावे। अस्तु, उन्होंने अपने राज्यों में लेखन और भाषण की स्वतंत्रता

---

* कुछ ऐसे भू-स्वामी और राजे भी हैं, जो इनके अपवाद हैं, किन्तु उनकी संख्या बहुत कम है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही नहीं दी, जिससे कि उनके राज्यों में ऐसी भावना जागृत हो सके। यही नहीं, यह राजे बृटिश भारत की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए तथा अपने विरुद्ध होने वाले आन्दोलन का विरोध करने के लिए किसी न किसी अखिल भारतीय संस्था को अपने हाथ में रखते हैं। यदि कोई राजा धार्मिकता का ढोंग बनाता है, तो कोई साहित्यिक होने का दावा करता है, तो तीसरा जातीय संस्थाओं के द्वारा अपनी रक्षा करना चाहता है। यह संस्थाएँ समय-समय पर अपने स्वामियों की प्रशंसा के गीत गाया करती हैं। जनता समझती है कि उक्त महाराजा आदर्श शासक होंगे, उनके राज्य में रामराज्य का अनुभव होता होगा, किन्तु जाकर देखिये, वहाँ की प्रजा का किस प्रकार शोषण हो रहा है। कुछ चतुर राजे अपनी थैली के द्वारा पत्रों को अपने विज्ञापन का साधन बनाते हैं और प्रिंसेज प्रोटैकशन ऐक्ट बनवा कर अपने विरुद्ध बृटिश भारत में आन्दोलन न होने देने की सुविधा तो उन्होंने प्राप्त कर ही ली है।

देशी नरेशों ने अपने अधिकारों को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए एक दिशा में और भी प्रयत्न किया है और उसमें वे सफल भी हुए हैं। भारत-सरकार का प्रधान कर्मचारी अर्थात् गवर्नर जनरल सम्राट् का प्रतिनिधि होने के कारण देशी राज्यों के ऊपर भी अङ्कुश रखता है। यदि कभी भविष्य में बृटिश भारत में होने वाला स्वातन्त्र्य युद्ध सफल होता और भारत को स्वतन्त्रता मिलती, तो उस समय गवर्नर जनरल व्यवस्थापिका सभा के लिए उत्तरदायी हो जाता और देशी नरेशों की नकेल भी प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में चली जाती। चतुर नरेशगण इस आने वाले राजनैतिक परिवर्तन के भयङ्कर परिणाम को समझते थे, अतः उन्होंने नरेन्द्र-मण्डल के द्वारा सङ्गठित रूप में पिछले पन्द्रह वर्षों में अपने प्रभुओं से तीन बातें स्वीकार कराने का भगीरथ-प्रयत्न किया है। वे तीन बातें निम्नलिखित हैं—(१) जब कभी बृटिश भारत को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन अधिकार दिया जावे, तब देशी राज्यों का सम्बन्ध गवर्नर जनरल से न होकर सीधे सम्राट् से अथवा उसके प्रतिनिधि से हो। (२) जब कभी सार्वभौम शक्ति और किसी देशी राज्य में किसी बात पर मतभेद हो तो उसका फ़ैसला निष्पक्ष न्यायालय से कराया जावे और उनकी सन्धियों को अक्षुण्ण रखा जावे। (३) देशों में आयात-कर से जो आय हो उसका कुछ भाग देशी राज्य को भी दिया जावे। बटलर कमेटी ने पहली और तीसरी बात तो स्वीकार करली, किन्तु दूसरी माँग को कठोरतापूर्वक ठुकरा दिया।

इसके उपरान्त सङ्घ-शासन की योजना तैयार हुई। उस समय तक देशी नरेशों में वर्ग-चैतन्य उत्पन्न हो चुका था; अपने अधिकारों को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए और समय पाकर उनको और भी बढ़ाने की युक्तियाँ वे सोच रहे थे। प्रकाण्ड राजनीतिज्ञ, प्रसिद्ध इतिहासज्ञ तथा धुरन्धर क़ानून के ज्ञाता नौकर रखे गए, जो नरेशों को इस विषय में परामर्श देते थे। करोड़ों रुपए व्यय करके देशी नरेशों ने इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञों के दिल में यह बात बिठला दी कि बिना देशी राज्यों की समस्या को हल किए भारत की शासन सम्बन्धी समस्या हल हो ही नहीं सकती। चतुर अङ्गरेज राजनीतिज्ञ भी देशी नरेशों को भारत की स्वतन्त्रता में रोड़ा बनाकर रखना चाहते थे। उन्होंने देशी नरेशों के महत्व को और भी बढ़ा दिया। राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स हुई। ब्रिटिश भारत के राजनैतिक नेताओं ने चकित होकर देखा कि राजाओं को अपनी ओर न मिलाने से सारा खेल ही बिगड़ जावेगा। अब देशी नरेशों की बन आई; वे सरकार और प्रजा के प्रतिनिधियों से अपने सहयोग का अधिक से अधिक मूल्य माँगने लगे। हमारे प्रतिनिधियों ने (जो सरकार द्वारा मनोनीत किए गए थे) देशी राज्यों की प्रजा के हितों का बलिदान करके नरेशों की माँगों को स्वीकार किया। उधर अङ्गरेज राजनीतिज्ञ भी नरेशों को प्रसन्न रखना चाहते थे, अतः देशी राज्यों की प्रजा को राजनैतिक अछूत समझ कर दोनों ओर से ठुकरा दिया गया। विशृङ्खल नरेशों का आज ऐसा सुदृढ़ सङ्गठन हो गया है कि उनके बराबर सङ्गठित वर्ग आज देश में कोई नहीं है। इसका फल यह हुआ कि उनका राजनैतिक प्रभाव इतना बढ़ गया कि उनके मन्त्रियों की सभा के एक प्रस्ताव ने अङ्गरेज राजनीति-विशारदों को इण्डिया बिल में संशोधन करने पर विवश किया।

इधर राजे तो इतने सुसङ्गठित हैं और उनके पास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साधन भी पर्याप्त हैं, उधर देशी राज्यों की निरीह पीड़ित प्रजा, जिसमें राजनैतिक जागृति भी नहीं हुई है, बिना किसी सहारे के अत्याचार सहन कर रही है। देशी राज्यों की प्रजा को यदि हमारे नेता अछूत समझ दुरदुरा न देते तो इन देशी राज्यों की प्रजा भी सङ्गठित होती और उसमें भी जीवन दृष्टिगोचर होता। तब न तो नरेश ही उस पर अत्याचार करने का साहस करते और स्वतन्त्रता संग्राम में देशी राज्यों की प्रजा भी वृटिश भारत के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर युद्ध करती। इस अक्षम्य उपेक्षा का एक और भी भयङ्कर परिणाम हुआ है। जीवन-रहित देशी राज्यों की प्रजा में अपने विलासी और निरङ्कुश राजाओं द्वारा अपनाये हुए दुर्गुण स्थायी रूप से प्रवेश कर गए हैं। दुर्व्यसन, व्यभिचार, चाटुकारिता, घूस, अपने से निर्बलों पर अत्याचार करना इत्यादि दुर्गुण जिस मात्रा में देशी राज्यों में पाये जाते हैं, उतने वृटिश भारत में नहीं हैं।

बहुत पहले ही कुछ देशी राज्यों की प्रजा के शुभ-चिन्तकों ने हमारी राष्ट्रीय महासभा का द्वार खटखटाया था और इस बात की प्रार्थना की थी कि कॉङ्गरेस देशी राज्यों के प्रश्न को भी अपने हाथ में ले। किन्तु कॉङ्गरेस ने देशी राज्यों की प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया। तब से बराबर कॉङ्गरेस के सामने देशी राज्यों का प्रश्न किसी न किसी रूप में आता रहा है, किन्तु अनुदार दल (Conservative Party) ने देशी राज्यों की निरीह प्रजा को सक्रिय सहायता देना स्वीकार नहीं किया। हाँ, अभी कुछ समय से दूसरे दल के अधिक शोर मचाने पर कॉङ्गरेस ने कुछ सहानुभूति-सूचक प्रस्ताव अवश्य पास किए हैं। उन प्रस्तावों का भावार्थ यह है कि कॉङ्गरेस को देशी राज्यों की प्रजा से पूर्ण सहानुभूति है। साथ ही वह देशी नरेशों से आशा करती है कि वे शीघ्र ही अपने राज्यों की प्रजा को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्रदान करेंगे। इस सीधे प्रस्ताव के आधार पर राष्ट्रीय महासभा के कर्णधार देशी राज्यों की प्रजा से यह कहना चाहते हैं कि राष्ट्रीय महासभा उनकी ओर से उदासीन नहीं है, यह कितने आश्चर्य की बात है।

यदि राष्ट्रीय महासभा की केवल इस पवित्र इच्छा से ही प्रजा का अत्याचारों से छुटकारा हो जाता, नरेश प्रजा को उसके अधिकार दे देते, और राम-राज्य का प्रादुर्भाव हो जाता, तो देश में राष्ट्रीय महासभा की आवश्यकता ही क्या थी; प्रस्ताव करने जैसा सरल कार्य तो हमारे नरम दल के नेता भी सुन्दरतापूर्वक कर सकते थे। खेद की बात तो यह है कि जिन लोगों का यह दृढ़ विश्वास है कि प्रस्ताव पास करने से तथा वैध आन्दोलन (Constitutional agitation) से भारतवर्ष को स्वतंत्रता नहीं मिल सकती वही लोग देशी राज्यों की प्रजा को अत्याचार से बचाने के लिए केवल प्रस्ताव पास करना पर्याप्त समझते हैं। इस प्रकार के प्रस्तावों से एक हज़ार वर्षों में भी देशी राज्यों की प्रजा को अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते। वास्तविक बात तो यह है कि अधिकांश नरेशों को यह भी ज्ञात नहीं है कि ऐसा कोई प्रस्ताव भी पास किया गया है।

कॉङ्गरेस की देशी राज्यों के प्रति वर्तमान नीति का समर्थन करते हुए उसके पदाधिकारियों ने तथा बड़े-बड़े कॉङ्गरेस नेताओं ने वर्तमान नीति को स्वीकार करने के निम्नलिखित कारण बतलाए हैं :—

(१) देशी राज्यों के नरेशों तथा उनकी प्रजा के स्वार्थ चाहे इस समय भिन्न दृष्टिगोचर होते हों, किन्तु वास्तव में वे एक हैं, अतः उनमें संघर्ष उत्पन्न नहीं करना चाहिए।

(२) देशी राज्यों की तो कोई समस्या ही नहीं है। जिस दिन भारत स्वतंत्र हुआ उसी दिन देशी राज्यों के नरेश ठीक रास्ते पर आ जावेंगे, और यदि ऐसा नहीं हुआ तो उनको ठीक रास्ते पर लाना कठिन न होगा। व्यर्थ में अभी से उनका विरोध करने का परिणाम यह होगा कि वे शासकों से मिल कर भारत की स्वतंत्रता में बाधक होंगे।

(३) राष्ट्रीय महासभा के पास न तो इतने साधन ही हैं और न इतनी शक्ति ही है कि वह देशी राज्यों की समस्या को हाथ में ले सके।

(४) राष्ट्रीय महासभा तो सारे देश की संस्था है, मजदूर पूँजीपति, किसान ज़मींदार, राजे और उनकी प्रजा सभी के लिए कॉङ्गरेस के द्वार खुले हुए हैं। कॉङ्गरेस का ध्येय सबको सङ्गठित करके देश को विजातियों की दासता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से स्वतन्त्र करना है, फिर भला वह किसी एक वर्ग के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कैसे कर सकती है।

श्री भूलाभाई देसाई जैसे कॉङ्गरेस नेता तो यहाँ तक कहते हैं कि देशी राज्यों की प्रजा तो स्वराज्य का उपभोग कर ही रही है, केवल कुछ राजनैतिक अधिकारों के मिलने भर की ही बात है। देशी राज्यों की प्रजा जिस प्रकार के स्वराज्य का उपभोग कर रही है, उसको श्री देसाई जी की अपेक्षा हम लोग, जो देशी राज्यों में रहते हैं अथवा रह चुके हैं, अधिक जानते हैं।

देखना यह है कि ऊपर लिखे हुए कारणों में तथ्य क्या है। यह जो बार-बार कहा जाता है कि देशी राज्यों की प्रजा तथा उनके नरेशों के स्वार्थ एक हैं, एक कल्पना की उड़ान मात्र है; इसमें व्यावहारिक तथ्य कुछ नहीं है। यदि उतने ही ऊँचे पर बैठ कर देखा जावे तो ब्रिटेन और भारत के स्वार्थ एक हैं; इटली और अबीसीनिया के स्वार्थ एक हैं और चीन, जापान के स्वार्थ भी एक हैं। फिर इसी सिद्धान्त को मान कर हम लोग चुप क्यों नहीं रहते और इङ्गलैण्ड की दासता का जुआ उतार फेंकने को क्यों व्याकुल हो रहे हैं। अबीसीनिया बिना खून बहाए दासता स्वीकार क्यों नहीं कर लेता! यदि ऊँचे उठ कर देखा जावे तो हर एक मनुष्य का स्वार्थ एक ही है, किन्तु फिर यह घोर अशान्ति क्यों है। धार्मिकता का घुट अधिक होने से अथवा प्रत्येक कार्य में धर्म का अड़ङ्गा लगाने के अभ्यस्त होने से हम भारतीयों में व्यावहारिकता की बड़ी कमी है। हमें देखना यह चाहिए कि व्यावहारिक सत्य क्या है। न तो इस समय और न सुदूर भविष्य में ही यह आशा की जा सकती है कि स्वेच्छाचारी राजे स्वयं उत्तर-दायित्वपूर्ण शासन-प्रणाली को स्वीकार करेंगे। यदि कुछ ऐसे शासक हों तो राष्ट्रीय महासभा का यह कर्तव्य होना चाहिए कि ऐसे नरेशों को उत्साहित करे और यदि उन पर किसी ओर से विपत्ति आने की सम्भावना हो तो उनकी भरसक सहायता करे और उन राज्यों की प्रजा को भी ऐसा करने को प्रोत्साहित करे। अच्छे शासकों के प्रति षड़यन्त्र कोई नहीं रचना चाहता, किन्तु यह मानी हुई बात है कि अधिकांश नरेशगण स्वयं प्रजा को अधिकार कदापि नहीं देंगे। क्या उनको इसी प्रकार स्वेच्छाचार करने दिया जावे?

दूसरा कारण अत्यन्त भ्रमोत्पादक है। यह उसी प्रकार है, जिस प्रकार एक आदमी एक गोले के चारों ओर घूम कर उसका सिरा ढूँढ़ना चाहे। कहा जाता है कि जिस दिन देश अङ्गरेजों की दासता से स्वतंत्र होगा उसी दिन हमारे देशी राज्यों के नरेश भी आदर्श शासक बन जावेंगे, क्योंकि उनकी सहायता करने वाली शक्ति देश में नहीं रहेगी, और उनकी स्वेच्छाचारिता क़ायम न रह सकेगी। ध्यान रहे, यदि देशी राज्यों की प्रजा को सङ्गठित नहीं किया गया और नरेशों ने अपने सङ्गठन को और भी सुदृढ़ बना लिया तो हमारी स्वतंत्रता को हमसे दूर रखने वाली एक नई भयंकर बाधा उपस्थित हो जावेगी। राजाओं को हमारे आन्दोलन के विरुद्ध खड़ा किया जावेगा! सङ्घ शासन की योजना इसी उद्देश्य को लेकर बनाई गई है। यदि थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जावे कि बृटिश भारत को स्वतंत्रता मिल भी गई, तो भी देशी राज्य तो गौरांग प्रभुओं की शक्ति के स्थायी केन्द्र बने ही रहेंगे। देशी राज्यों की समस्या को योंही छोड़ देना राष्ट्रीय महासभा की भयंकर भूल हुई है। होना तो यह चाहिए था कि देशी राज्यों की प्रजा में इतना बल होता और ऐसा सङ्गठन होता कि उनके शासक देश की इच्छाओं के विरुद्ध आचरण करते तो प्रजा उनको देश का साथ देने के लिए बाधित करती। किन्तु आज तो देशी राज्यों की प्रजा शासकों के अत्याचारों से स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर सकती।

राष्ट्रीय महासभा की निर्बलता की दुहाई देना बिल-कुल निराधार है। शक्ति तो उत्पन्न करनी पड़ती है। क्या जब महासभा का जन्म हुआ था, कोई जानता था कि वह इतनी शक्तिवान संस्था बन जावेगी। क्या आज भी राष्ट्रीय महासभा में इतनी शक्ति है कि वह देश को स्वतंत्रता दिलाने में समर्थ हो सकेगी। फिर इस सिद्धान्त के अनुसार तो राष्ट्रीय महासभा को शक्ति प्राप्त करने की आशा में निश्चेष्ट होकर बैठ जाना चाहिए। देशी राज्यों के प्रश्न को हाथ में लेने से महासभा की शक्ति और प्रभाव दोनों ही बढ़ जावेंगे।

अन्तिम दलील विचारणीय है। राष्ट्रीय महासभा के द्वार सबों के लिए खुले रहने चाहिए। यदि देशी राज्यों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के अधिपति कभी देश का साथ देने को तैयार हों, तो सहर्ष महासभा उनका स्वागत करे। निकट भविष्य में इस परिवर्तन की कोई आशा नहीं है। किन्तु राष्ट्रीय महासभा का यह तो अनिवार्य कर्तव्य है कि वह देश में एक वर्ग को दूसरे वर्ग पर अत्याचार करने से रोके। यदि ज़मींदार किसानों पर, पूँजीपति मज़दूरों पर, देशी राज्यों के शासक अपनी प्रजा पर अत्याचार करें तो क्या महासभा का पीड़ित वर्ग की सहायता करना कर्तव्य नहीं है?

अभी हाल में पूज्य राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी ने देशी राज्यों के प्रति महासभा की नीति के विषय में एक वक्तव्य दिया है, जिसमें उन्होंने इस प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि राष्ट्रीय महासभा इस ओर से उदासीन नहीं है। इस सम्बन्ध में उन्होंने सीकर और लोहारु-काण्डों की ओर सङ्केत भी किया है। ज्ञात नहीं, लोहारु में किस प्रकार समझौता कराने का प्रबन्ध किया गया, किन्तु सीकर में सम्भवतः श्री जमुनालालजी बजाज द्वारा किए गए प्रयत्न की ओर राष्ट्रपति का सङ्केत है। यह तो स्वयं राष्ट्रपति भी स्वीकार करेंगे कि कॉङ्गरेस का यह प्रयत्न पीड़ित प्रजा को न्याय नहीं दिला सका। यह तो वैसा ही हुआ कि पीटने वाले के उपरान्त पिटने वाले से कहा जाय कि "अच्छा इस समय अब तुमको और नहीं पीटा जावेगा।" व्यक्तिगत प्रयत्नों से यह समस्याएँ हल नहीं हो सकतीं।

हमारा यह मत कदापि नहीं है कि कॉङ्गरेस सब देशी राज्यों के नरेशों के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दे। हम जानते हैं कि कुछ नरेश ऊँचे दर्जे के देशभक्त, प्रजावत्सल और देश-हितैषी हैं; हम देशी नरेशों की दयनीय अवस्था से भी परिचित हैं। किस प्रकार भारतीय नरेशों को अपनी इच्छा के विरुद्ध बहुत से कार्य करने पड़ते हैं, यह किसी से छिपा नहीं है। किन्तु इस प्रकार के नरेश संख्या में बहुत कम हैं। ऐसे राज्यों में कॉङ्गरेस को नरेशों और प्रजा के सम्बन्ध को बनाए रखने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसे राज्यों की प्रजा में राजनैतिक जागृति होना अनिवार्य है। सङ्गठित प्रजा की शक्ति ऐसे प्रगतिशील नरेशों के लिए सबसे बड़ा बल सिद्ध होगी।

भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए, देशी राज्यों में होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए, तथा प्रगतिशील नरेशों के साथ सहयोग करने के लिए यह आवश्यक है कि देशी राज्यों की प्रजा एकता के सूत्र में बाँधी जावे और और उसमें राजनैतिक चैतन्य उत्पन्न किया जावे। यह कार्य राष्ट्रीय महासभा ही भलीभाँति कर सकती है।

राष्ट्रीय महासभा के इस ओर से उदासीन रहने के कारण बहुत से स्वार्थी लोगों ने देशी राज्यों की प्रजा को बहका कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना आरम्भ कर दिया है। कोई धार्मिक विद्वेष की भावना को भड़का कर आन्दोलन करता है, कोई जाति-द्वेष की अग्नि प्रज्ज्वलित करता है, तो कोई केवल इस उद्देश्य से किसी राजा के विरुद्ध आन्दोलन कि उसको उक्त राजा से अच्छी रक़म हाथ लग जावे। खेद है कि कुछ पत्रकार भी इस नीच कार्य में सम्मिलित हैं। किसी राजा अथवा जागीरदार के विरुद्ध कभी-कभी केवल इसलिए लेख लिखवाए जाते हैं कि उससे कुछ प्राप्ति हो जावे। कभी-कभी तो देशी राज्यों में कोई आन्दोलन केवल इसलिए खड़ा कर दिया जाता है कि क्योंकि कुछ लोगों का उससे हित-साधन होता है। सार्वजनिक जीवन की ऐसी पतित अवस्था देशी राज्यों में केवल इसलिए है कि वहाँ की प्रजा अन्धकार में है। न तो वहाँ कोई सुसंगठित संस्था ही है और न स्वार्थ त्याग करने वाले नेता ही हैं।

राष्ट्रीय महासभा की ओर से निराश होकर कतिपय देशी राज्यों के कार्यकर्ताओं ने देशी राज्य-परिषदें तथा स्टेट्स प्यूपिल कॉन्फ्रेन्स इत्यादि संस्थाओं को जन्म दिया है, किन्तु अभी तक न तो उनका दृढ़ संगठन ही हो सका है और न वह देशी राज्यों के प्रति अपनी एक निश्चित नीति ही बना सकी हैं। आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीय महासभा की आधीनता में यह संस्थाएँ कार्य करें। क्या हम आशा करें कि राष्ट्रीय महासभा के कर्णधार देश की एक तिहाई जन-संख्या को भी महासभा के नेतृत्व में संगठित करके, उनमें साहस, बल तथा स्वराज्य प्राप्त करने के लिए त्याग की भावना जागृत करेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्र-नायक पं० जवाहरलाल नेहरू

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

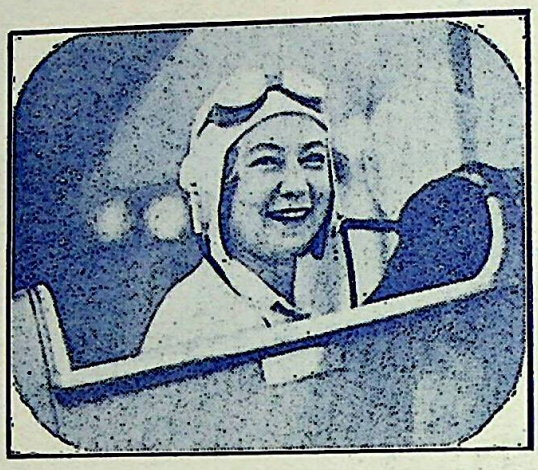

श्रीमती वी० इसाक्स—आपने वायुयान चलाने के भारतीय 'ए' लाइसेंस के लिए आवश्यकीय समस्त परीक्षाएँ सफलतापूर्वक पास कर ली हैं।

श्रीमती कमलादेवी प्रधान, बी० ए०—आप बहराइच के हाल ही में स्थापित लेडीज़ पर्दा क्लब की मंत्रिणी निर्वाचित की गई हैं।

श्रीमती पार्वती देवी डिडवानिया—आप देहली प्रान्त कॉङ्गरेस कमेटी की ओर से आल इण्डिया कॉङ्गरेस कमेटी की एकमात्र सदस्या निर्वाचित हुई हैं। ए० आई० सी० सी० में जाने वाली आप सर्वप्रथम मारवाड़ी महिला हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाम्पत्य जीवन सुखी कैसे बने ?

[श्री० रामनारायण 'यादवेन्दु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अभी उस दिन की बात है, मैंने देहली के 'हिन्दोस्तान टाइम्स' के एक अङ्क में यह पढ़ा कि कराची के डॉक्टर हिंगोरानी ने 'कॉरपोरेशन' में एक इस आशय का प्रस्ताव रखने की सूचना दी है कि उन सब अविवाहितों की आय पर कर लगाया जायगा, जिनकी मासिक आय १००) या इससे अधिक है और जिनकी अवस्था २५ वर्ष या इससे अधिक की है। 'डिक्टेटरशिप' के आविर्भाव से पूर्व फ्रान्स और जर्मनी में 'सन्तति - निग्रह' (Birth Control) का आन्दोलन चरम-सीमा को पहुँच चुका था। जन-संख्या में अद्भुत ह्रास और चारित्रिक पतन को देख बनितो मुसोलिनी और हर हिटलर ने फ्रान्स और जर्मनी में विवाहों को इसलिए प्रोत्साहन दिया कि जन-संख्या बढ़ जाय। इनके इस कार्य को आश्चर्यजनक नहीं कहा जा सकता। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि भारत में जहाँ १० वर्ष में ३॥ करोड़ मनुष्य बिना किसी प्रोत्साहन के बढ़ गये हैं और जहाँ बालविवाह का राज-रोग भारतीयों के समाज का एक कलङ्क बन गया है—ऐसे प्रस्ताव की आवश्यकता पड़ गई! जिस देश में ८,०१,८५२ ऐसी कन्याएँ हों, जिनका विवाह ५-५ वर्ष की आयु से पूर्व ही हो गया हो और ४,२६,२२६ बालक ऐसे हों जिनका विवाह ५ वर्ष की आयु से पूर्व ही हो गया हो, उस देश में २५ वर्ष के अविवाहित पर कर लगाने का प्रस्ताव कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं कहा जा सकता! हाँ, एक बात है, जिसका उल्लेख कर देना उचित होगा। इस प्रस्ताव का मन्तव्य है शिक्षित और संस्कृत वर्ग में विवाह को प्रोत्साहन देना और बाल-विवाह के जो आँकड़े ऊपर दिये गये हैं, वे शायद शिक्षित समाज के न हों।

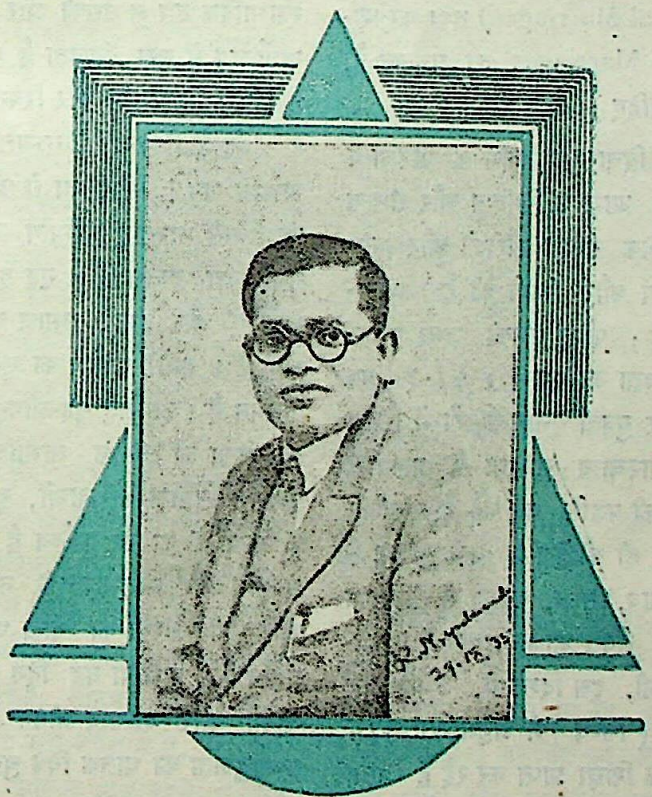

परन्तु इससे यह तो सिद्ध हो जाता है कि वर्तमान नव-युगीन युवक और युवतियों में विवाह और दाम्पत्य जीवन के प्रति अरुचि की भावना उत्पन्न होती जा रही है। विवाह को एक कृत्रिम बन्धन माना जाने लगा है। ऐसे भी नवयुवक मिलेंगे जो विवाह की अनावश्यकता को अनुभव करते हैं। परन्तु क्या विवाह की अनावश्यकता में विश्वास करने वाले नवयुवक संयमपूर्ण जीवन बिताने का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समर्थन करते हैं ? सत्य तो यह है कि ऐसे आधुनिक युवक विलासिता की सीमा का यहाँ तक अतिक्रमण कर चुके हैं कि वे दाम्पत्य जीवन के सुखों का भोग तो करने के लिए ललचाते हैं; परन्तु उसके उत्तरदायित्वों और कर्त्तव्यों के पालन करने के लिए तैयार नहीं। इस प्रकार की हीन मनोवृत्ति के युवकों ने पश्चिमी विचार-धारा के भँवर में पड़ कर यह विचार फैलाने शुरू कर दिये हैं कि विवाह एक अप्राकृतिक मानव-व्यवस्था है। प्रकृति में तो मुक्त या स्वतंत्र प्रेम का आदर्श है। अतः पशु-जगत के व्यवहार का अनुकरण ही मनुष्य का धर्म है; क्योंकि पशु प्रकृति के अधिक निकट है। मानव ने सभ्यता का ढोंग रच कर विवाह की प्रथा चला दी है। जिस प्रकार अमेरिका और यूरोप में प्रयोगात्मक (Trial Marriages) तथा कम्पेशनेट (Compassionate Marriages) का प्रचलन है, वैसा ही भारत में होना चाहिए।

निस्सन्देह इस प्रकार के विचार आजकल की पाश्चात्य शिक्षा-प्रणाली के फल हैं। आज के शिक्षित और संस्कृत वर्ग में (जिनमें सबसे अधिक संख्या कॉलेजों और यूनीवर्सिटियों के ग्रेजुएट पुरुष और स्त्रियों की है) बाल-विवाह की कुप्रथा नहीं है; परन्तु उसकी जगह युवक-युवती-विवाह का प्रचार बढ़ता जा रहा है। २५-३० वर्ष की अवस्था तक युवक और युवती यूनीवर्सिटियों में शिक्षा प्राप्त करते हैं और अब पाश्चात्य सभ्यता के प्रताप से सह-शिक्षा तो एक प्रकार की पद्धति बन गई है; इसलिए ऐसे युवक और युवती एक ही कॉलेज में बड़ी सुविधा से शिक्षा प्राप्त करते हैं। पञ्जाब, सिन्ध, बङ्गाल में सहशिक्षा (Co-education) का सबसे अधिक प्रचार है। गुजरात और हमारा प्रान्त भी, इस दिशा में, उन्नति कर रहा है। हैदराबाद कॉलेज (सिन्ध) में अनुमानतः १५० लड़कियाँ और २०० लड़के शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में प्रत्येक युवक छात्र को प्रेमी बनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। निस्सन्देह सहशिक्षा के दुरुपयोग के कारण कॉलेज प्रेम-नाटकशालाएँ बनते जा रहे हैं। हैदराबाद कॉलेज के एक छात्र ने 'कॉलेज मेगजीन' के अक्टूबर १९३५ के एक लेख में अपने मनोभाव इस प्रकार व्यक्त किये हैं :—

"मैं संसार, उसकी समस्याओं के सम्बन्ध में अधिक नहीं जानता; कारण कि समय अल्प है और कला-विज्ञान है विशाल। इसलिए मैंने अपना ध्येय बनाया है नारी का सर्वतोमुखी अध्ययन—नारी का, जो सृष्टि की सिरताज और समग्र सामाजिक, धार्मिक और मानसिक रचनाओं का आधार है। .....मेरे सामने कोई मार्क्स, कोई हीगल अपने मायावाद और आदर्शवाद के सिद्धान्तों की व्याख्या करने का साहस नहीं कर सकता। मैं आर्थिक Determinism में आस्था नहीं रखता; मेरे लिए प्रत्येक वस्तु Sex-Determinism है ..... मेरे लिए तो सब ज्योतिष-विज्ञान और फलित-ज्योतिष केवल मात्र स्त्री की व्याख्या करते हैं। .....मैं स्वतः स्वाभाविक रूप से उसकी ओर खिंच रहा हूँ। मुझे स्त्री के वार्तालाप में सुख मिलता है। उसकी गति मुझे पसन्द है। मुझे केश-पाश, और रिबन मन भाते हैं।"

यह है पाश्चात्य सभ्यता की देन सह-शिक्षा का अक्षम्य पाप! सहशिक्षा से और चाहे जितने काम हों, पर उससे भारतीय दाम्पत्य जीवन, गृह-जीवन के लिए सबसे बड़ा खतरा है। गृह हमारी आर्य-संस्कृति, हमारे आदर्शों और हमारे समाज की व्यवस्थाओं का आदि स्रोत है। हमारे समाज का भवन हमारे गृह-जीवन से ही शोभित है। इसलिए गृह-जीवन, गृह और दाम्पत्य जीवन की सुरक्षा की समस्या सामाजिक दृष्टि से अतीव महत्त्वपूर्ण है। समाज के नेताओं, सुधारकों और समाज-विज्ञान के आचार्यों का यह कर्त्तव्य है कि वे आर्य-सभ्यता, आर्य-संस्कृति और मातृ-पूजा के नाम पर अपनी इस पवित्र और पुनीत संस्था को वाह्य आक्रमणों से बचाने के लिए प्रयत्न करें, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब भारत के गृह-जीवन और दाम्पत्य-जीवन में अमेरिकन कटुता और उच्छृङ्खलता का घातक विष घुस कर उसे अशान्ति, दुःख और कलङ्क का जीवन बना देगा। जब गृह-जीवन का नाश हो जावेगा; उसकी संस्कृति का संहार हो जावेगा, तब रह ही क्या जावेगा। केवल विडम्बना का जीवन!

दाम्पत्य जीवन का आधार

विश्व-रचयिता ने इस विश्व में नर-नारी की रचना कर सृष्टि के विकास का शिलान्यास कर दिया। यदि केवल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुरुष की रचना की होती और उसके सहयोग के लिए नारी न पैदा की होती, तो आज विश्व की क्या गति होती इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। विश्वात्मा ने पशु और वनस्पति-जगत में भी नर-नारी के भेद की रचना कर सृष्टि-सञ्चालन के कार्य को जारी रखा है। वास्तव में मानव-जगत में नर-नारी की रचना के इस भेद का ही परिणाम है कि वे परस्पर एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। नर और नारी दोनों ही अपूर्ण हैं; अपनी इस अपूर्णता का परिहार करने के निमित्त ही वे एक दूसरे के प्रति प्रेम करते हैं। ब्रह्मा ने नर की रचना करते समय अपनी कला का—अपने कौशल का—पूर्ण विकास नहीं कर पाया था, परन्तु जब नारी की रचना की गयी तब उसकी कला सबसे अधिक सुन्दर रूप में व्यक्त हुई। पुरुष में ओज और शक्ति दी, तो नारी को सौन्दर्य और रूप का अनमोल रत्न दिया। पुरुष को विचार करने के लिए, विश्व की पहेलियों को सुलझाने वाला उर्वर मस्तिष्क प्रदान किया तो नारी को भावुकता और प्रेम से प्लावित हृदय। सार यह है कि जो गुण पुरुष के पास है, वह स्त्री के पास नहीं है और जो स्त्री के पास है, वह पुरुष के पास नहीं। इसीलिए तो पूर्णता-प्राप्ति के लिए दोनों के समन्वय की आवश्यकता है, दोनों का आनन्द और पूर्णता परस्पर एक दूसरे पर निर्भर है।

नारी में अनुपम सौन्दर्य है; मधुरता है, नवनीत-सी कोमलता है, दया है, परोपकारिता है और है आत्म-त्याग की पवित्र भावना। उसके पवित्र हृदय से पुनीत प्रेम का झरना अबाध गति से प्रवाहित होता रहता है। मानस उसमें निमज्जित होकर अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव करने लगता है। पुरुष शक्ति, साहस, वीरता, शान, और बल का स्रोत है। उसके पास मस्तिष्क है, पर वह हृदय-हीन नहीं। जीवन का आनन्द प्राप्त करने के लिए इन सभी मानवीय गुणों का सामञ्जस्य अपेक्षित है। इसी-लिए पुरुष नारी के प्रति आकर्षित होता है। उससे प्रेम कर अपने जीवन में पूर्णता की प्रतिष्ठा करना चाहता है। यही तो दाम्पत्य प्रेम का रहस्य है। जिसका फल होता है नव-जीवन-निर्माण। बस, यहाँ नारीत्व के विकास की चरम सीमा है। अब नारी सर्वोत्कृष्ट कलाकार के रूप में प्रगट होती है। मानवता की सबसे बड़ी शक्ति रचना-शक्ति है। नारी नव-जीवन की रचना करती है; इसमें उसका आत्म-त्याग उज्ज्वल रूप में प्रकट होता है। परन्तु नारी का यह रचना-कार्य पुरुष के प्रेम द्वारा ही पूर्ण होता है।

अतः यह निर्विवाद सिद्ध है कि पति-पत्नी के जीवन का आधार और प्रेरक शक्ति प्रेम—दाम्पत्य-प्रेम—ही है। जहाँ दाम्पत्य प्रेम का अभाव है, वहाँ दाम्पत्य-जीवन का वास्तविक सुख कहाँ?

पुरुष और नारी की विशिष्टताओं का जो उल्लेख ऊपर किया गया है, उससे यह तो स्पष्ट है कि पुरुष और स्त्री अपनी आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक अपूर्णताओं का परिहार करने के लिए सचेष्ट रहते हैं; अतः आत्मिक, मानसिक और शारीरिक—इन तीनों दृष्टियों से पुरुष और स्त्री में समन्वय (Harmony) की प्रतिष्ठा आवश्यक है। जब उनमें इस प्रकार की सामंजस्य-स्थिति उत्पन्न हो जायगी, तभी उनका सर्वतोन्मुखी विकास हो सकता है।

आर्य-संस्कृति में दाम्पत्य-प्रेम का प्रादुर्भाव विवाह के उपरान्त होता है। हम यहाँ उन गान्धर्व-विवाहों (Love marriages) का उल्लेख नहीं करेंगे, जो आज के अति उच्च शिक्षित वर्ग में प्रचलित हैं। ऐसे विवाह आर्य संस्कृति के सर्वथा विपरीत हैं। इसी कारण विवाह को सामाजिक जीवन में सबसे अधिक महत्व दिया गया है। इसके बाद कुमारी 'पत्नी' के गौरवपूर्ण पद की अधिकारिणी बन जाती है।

इसलिए दाम्पत्य-जीवन को सुखी बनाने के अभिलाषी पुरुष और स्त्री का यह कर्त्तव्य है कि वह बड़े विवेकपूर्वक अपने सहचर या सहचरी का चुनाव करे। जीवन-सहचर व जीवन-सङ्गिनी का निर्वाचन करते समय आत्मिक, मान-सिक गुणों और शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुन्दरता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। जो केवल मात्र रूप के माया-जाल में फँस कर विवाह कर लेते हैं, उन्हें यौवन ढल जाने के बाद दाम्पत्य-जीवन नीरस प्रतीत होने लगता है। यह याद रखना चाहिए कि रूप और यौवन एक विशेष वय में ही अपना चमत्कार दिखलाते हैं; उसके उपरान्त सौन्दर्य और रूप में क्षीणता आ जाती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उस समय यदि दम्पति केवल मात्र शारीरिक आकर्षण के लिए ही लालायित रहते हैं—और उनमें आत्मिक आकर्षण का भाव विद्यमान नहीं रहता, तो वे सहज ही प्रेम के स्थान में घृणा का बीज बो लेते हैं। आजकल जो युवक और युवतियाँ कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में सहशिक्षा प्राप्त करते हैं, वे क्षणिक मोह से विह्वल होकर गान्धर्व-विवाह कर लेते हैं, और उनका नाम रखा जाता है 'आदर्श विवाह'। समाचार-पत्रों में उनके चित्र छाप कर यह विज्ञापन किया जाता है कि—"यह आदर्श विवाह जाँत-पाँत तोड़ कर किया गया है।"

वर्तमान शिक्षा ने हमारे रीति-रिवाजों में बड़ा विचित्र परिवर्तन कर दिया है। यूनीवर्सिटी या कॉलेज में शिक्षा-प्राप्त युवक विवाह के व्यापार में पूरे बनियापन का परिचय देते हैं। जो युवक जितना अधिक शिक्षित है और जितना अधिक वेतन पाता है, वह कन्या के पिता से उतने ही अधिक रुपये दहेज के रूप में लेने की इच्छा करता है। क्या यह नैतिक पतन का लक्षण नहीं है? यदि अनपढ़ और अशिक्षित लोग दहेज के लिए इतने लालायित होते हैं, तो वह इसलिए कि उन्हें विवाह के महत्व का ज्ञान नहीं; वे अज्ञान हैं। परन्तु पाश्चात्य शिक्षा में पारङ्गत ग्रेजुएट यदि दहेज की बीमारी में ऐसी बुरी तरह ग्रसित हों, तो वास्तव में, यह चिन्तनीय है।

जैसा कि हमने प्रारम्भ में बतलाया है, सहशिक्षा के कारण युवक और युवतियों को विवाह-बन्धन में बँधे बिना ही अधिक निकट रहने के अवसर मिल जाते हैं, तब वे व्यर्थ में दाम्पत्य जीवन के गुरुतर भार को क्यों वहन करें? अत्यन्त शिक्षित समुदाय में युवतियाँ बहुत फ़ैशन की दासी बन जाती हैं। उनके व्यय बढ़ जाते हैं; नवीनतम फ़ैशन की साड़ियाँ, जम्पर, पिनें, हेयर पिन, सेण्ट, पॉमेड, लिपस्टिक (अधरों पर लालिमा लाने का रङ्ग), मोजे, जूते, पाउडर, क्रीम, हेयर-आयल, परफ़्यूम, और बहुमूल्य अप-टू-डेट फ़ैशन के नेकलेस (हार), ईयर-रिङ्ग, सोने की चूड़ियाँ इत्यादि रत्नाभूषण उनके नित्य-प्रति शृङ्गार के लिए चाहिए। यही कारण है कि सिन्ध प्रान्त में और पञ्जाब में बहुतेरे युवक विवाह के बन्धन में नहीं पड़ते। सिन्ध प्रान्त में अधिकांश शिक्षित युवतियाँ अविवाहित ही रहती हैं। इसका प्रथम कारण तो यह है कि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने की अभिलाषा करती हैं। वे २५ वर्ष की आयु या इससे भी अधिक अवस्था तक कॉलेजों में पढ़ती हैं! जब वे पढ़कर कॉलेज से बाहर निकलती हैं, तब उनके अभिभावकों के सामने दहेज की दानवी समस्या आ खड़ी होती है। एक 'सिविलियन' दहेज में ३००००) तीस हजार रुपए नक़द पाता है और ५०००) के वस्तु, आभूषण आदि। एक सामान्य ग्रेजुएट, जिसकी मासिक आमदनी १००) है, १००००) रुपए तक के मोल में बिकता है!! यदि युवती का रङ्ग साँवला हुआ या उसका शरीर स्थूल हुआ तो उसे अधिक दहेज देना पड़ेगा!! आजकल की आर्थिक मन्दी के समय में अनेकों अभिभावकों के सामने यह एक बड़ी विकट समस्या है। हाल की एक घटना है, जो इस प्रकार है। एक युवक का एक युवती से वाग्दान हो गया। युवक को उसके पिता से १५०००) मिले। इस वाग्दान के बाद एक दूसरी युवती के पिता ने १८०००) देने के लिए उस युवक से कहा! युवक ने मञ्जूर कर लिया। पहला वाग्दान अस्वीकार कर दिया!! कुछ समय के बाद युवक ने कहा कि दहेज में ५०००) और बढ़ा दिए जायँ, क्योंकि उसने ऐसा सुना है कि वाग्दत्ता कुमारी का चरित्र पवित्र नहीं है। कन्या के पिता ने समाज में निन्दा के भय से दहेज में वृद्धि कर दी!!!

हम समझते हैं कि यह युवक अपने अर्थ-शास्त्र के सिद्धान्तों का प्रयोग कर रहा है; वास्तव में, इस मन्दी के समय में यह व्यापार आर्थिक दृष्टि से बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ!

सिन्ध-प्रदेश में दहेज की इस भीषण प्रथा का नाश करने के लिए दो प्रयोग किए गए; परन्तु उनसे भी सफलता नहीं मिली। गान्धर्व-विवाहों के प्रोत्साहन और युवतियों को शिक्षित बनाने से यह पाप-प्रथा दूर हो जायगी, ऐसा सिन्धी लोगों का विचार था। इसी आशय से एक सिन्धी पिता ने एक युवक से अपनी युवती पुत्री का परिचय कराया। पिता ने उस युवक को अपनी पुत्री के साथ हर प्रकार की आज़ादी दे दी। सिनेमा, थियेटर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्लब, पार्क, वाटिका आदि में पुत्री युवक के साथ जाने लगी। पिता को यह आशा थी कि इस प्रकार उनका प्रेम गान्धर्व-विवाह का रूप ग्रहण कर लेगा। जब उस युवक से कहा गया कि "पुत्री से विवाह कर लो।" तो उसने उत्तर दिया—"मेरे पिता १००००) का दहेज लिए बिना विवाह करना नहीं चाहते।" युवक की युवती से प्रेम-लीला की चर्चा फैल चुकी थी। इसलिए ऐसी चरित्र-हीना से कौन युवक विवाह करता ? पिता को कड़ुवा घूँट पीना पड़ा। ऐसा विचार था कि पुत्रियों को शिक्षा देने से शायद, दहेज का प्रश्न न उठे, परन्तु जब शिक्षा का प्रसार अधिकाधिक होने लगा, तो शिक्षा विवाह के लिए कोई विशेष योग्यता न रह गई।

आदर्श दाम्पत्य जीवन

बालविवाह और गान्धर्व-विवाह--यह दोनों ही प्रकार के विवाह दाम्पत्य-जीवन को सुखी नहीं बना सकते। दाम्पत्य-जीवन का सुख भोगने के इच्छुक युवक और युवतियों को यह आवश्यक है कि वे क्रमशः २० और १६ वर्ष की अवस्था में पाणिग्रहण कर लें। विवाह के समय वर-कन्या के आत्मिक, मानसिक गुणों और शारीरिक स्वास्थ्य, रीति-नीति, आचार-विचार, गृह-कार्यों की दक्षता, स्वभाव की समानता, शील-सौन्दर्य, सदाचार आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। समान गुण, प्रकृति, स्वभाव और आदर्श के प्रेमी युवक और युवती में ही सम-वय स्थापित हो सकता है। संसार में निरपेक्ष समानता तो मिल नहीं सकती; परन्तु कुछ अंशों में समानता की प्राप्ति सम्भव है।

विवाह के उपरान्त दम्पतियों का यह कर्त्तव्य है कि वे पारस्परिक सामंजस्य (Mutual Adjustment & Harmony) स्थापित करने का सतत प्रयास करते रहें। जिन उपयोगी गुणों का एक में अभाव हो, उसके अभाव को दूर करने के लिए प्रेमपूर्वक दूसरे को प्रयत्न करना चाहिए। प्रत्येक दम्पति को परस्पर एक दूसरे के उपयोगी भाव, विचार और अनुभवों को ग्रहण करने के लिए सन्नद्ध रहना चाहिए। यदि पत्नी में कोई दोष है, तो पति का यह कर्त्तव्य है कि वह उस दोष की आलोचना किए बिना उसे दूर करने की कोशिश करे। इसी प्रकार पति में दोष, त्रुटि या अभाव होने पर पत्नी को अपना प्रयत्न आरम्भ करना चाहिए। पारस्परिक सामंजस्य की समस्या बहुत ही महत्वपूर्ण है; इसी के विवेकपूर्ण और समुचित समाधान पर दाम्पत्य-जीवन का आनन्द निर्भर है।

पति-पत्नी को परस्पर अपनी आत्मा, मन और शरीर में घनिष्ट सम्पर्क स्थापित कर उनके सामंजस्य-पूर्ण उत्कर्ष और विकास के लिए प्रयास करना चाहिए। जब तक आत्मा और मन का समुचित और घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित न हो जाय, तब तक दाम्पत्य-जीवन भयङ्कर अपराध है। जब पति-पत्नी की आत्मा और मन में एकता स्थापित हो जाती है, उस समय उनका सम्बन्ध आध्यात्मिक हो जाता है; फिर वह आजीवन के लिए सुदृढ़ और स्थायी हो जाता है; उनके जीवन में सम्बन्ध-विच्छेद का प्रश्न उपस्थित ही नहीं होता। परन्तु जो पति-पत्नी आत्मा और मन के मेल या एकता की कोई परवाह नहीं करते वे कुछ काल के उपरान्त परस्पर प्रेम की न्यूनता का अनुभव करने लगते हैं और उनमें विरक्ति का भाव पैदा हो जाता है। उनके पारस्परिक प्रेम में वृद्धि होने के स्थान में ह्रास होने लगता है और एक समय ऐसा आता है, जब वे एक दूसरे से असन्तुष्ट होने लगते हैं। दाम्पत्य-जीवन से असन्तुष्ट, दुःखी पति-पत्नी सम्बन्ध-विच्छेद के लिए व्याकुल हो जाते हैं; या गुप्त रूप से व्यभिचार में तल्लीन हो जाते हैं। इसका अन्तिम परिणाम होता है दाम्पत्य-कलह, दाम्पत्य सम्बन्धी अपराध, विवाह-विच्छेद, समाज में अपमान और मर्यादा-नाश।

सम्मिलित कुटुम्ब और दाम्पत्य-जीवन

सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा अति प्राचीन समय से हिन्दू-समाज में प्रचलित है। सम्मिलित हिन्दू कुटुम्ब (Joint Hindu family or Coparcenary) आर्य-संस्कृति की अपनी एक विशिष्टता है, जो किसी अन्य देश की संस्कृति में नहीं मिलती। यदि इतिहास का अवलोकन किया जाय तो यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि हिन्दू जाति की इस प्रथा ने आर्यों के पारिवारिक जीवन को विशुद्ध, पुनीत और त्यागपूर्ण बनाये रखा है। दाम्पत्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवन के उच्च आदर्शों और पवित्रता को सुरक्षित रखने का अधिक श्रेय इसी प्रथा को है। आज पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से सम्मिलित कुटुम्ब छिन्न-भिन्न होते जा रहे हैं। हमारे पारिवारिक जीवन से आध्यात्मिकता लुप्त होती जा रही है और उसके स्थान पर भौतिकवाद (Materialism) का एकछत्र शासन क़ायम होता जा रहा है। इसलिए परिवार में से त्याग, परोपकार, सहानुभूति, सहयोग और उदारता के भाव लुप्त होकर स्वार्थ, अहंभाव, स्पर्धा और ऐसे ही इतर अमानवीय भावों की अभिवृद्धि होती जा रही है।

इन सब पतन के लक्षणों के होते हुये भी अभी पारिवारिक जीवन का सर्वनाश नहीं हुआ। क़ानून और व्यवहार दोनों में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः दाम्पत्य-जीवन पर विचार करते समय पारिवारिक जीवन पर भी विचार कर लेना प्रासङ्गिक होगा। सम्मिलित कुटुम्ब में पिता, माता, चाचा, चाची, भाई, बहिन, ससुर, सास, देवरानी, जिठानी, ननद, भावज, जेठ, देवर आदि सम्बन्धी सम्मिलित होते हैं। पति-पत्नी को इनमें से प्रत्येक से अपना सम्बन्ध रखना पड़ता है। नवीन बधू अपने पति-गृह में आकर परिवार के इन सदस्यों से दाम्पत्य-जीवन सम्बन्धी अनेकों शिक्षाएँ ग्रहण करती है। अपने अभिभावकों, पूज्यों, वयोवृद्धों, समान वयस्क सहेलियों, सखियों के साथ कैसा आचरण करना चाहिए, जिससे वह सबका प्रेम प्राप्त कर सके—इस व्यवहार-शास्त्र का ज्ञान होना अतीव आवश्यक है। जो नव-बधू इस व्यवहार-शास्त्र से अनभिज्ञ रहती है, उसे अपनी ससुराल में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आजकल सास-बधू और ननद-भावज के परस्पर झगड़े इतने भयङ्कर रूप धारण करते जा रहे हैं कि जिनके कारण गृह-जीवन और गृह की शान्ति, आनन्द और वैभव सब दुखों के मूल बनते जाते हैं। अति उच्च संस्कृति के पुजारी परिवारों में तो सम्मिलित कुटुम्ब की शृङ्खला टूट चुकी है। उन परिवारों में युवक दम्पति-युगल अपने सम्बन्धियों से पृथक् होकर अपना दाम्पत्य-जीवन यापन करते हैं। मध्य श्रेणी के परिवारों में अभी सम्मिलित कुटुम्ब की प्रथा मौजूद है। परिवार में सास-बहू की दुःखद कलह वहाँ और भी भीषण रूप में दृष्टिगत होती है, जहाँ बधू आधुनिक शिक्षा में दीक्षित, नवीन प्रकाश के वातावरण में पोषित होती है और सास पुराने सङ्कीर्ण दक़ियानूसी विचारों की पोषिका होती है। प्रत्येक नवयुग की बात उसे मर्यादा-विरुद्ध प्रतीत होती है। ऐसे परिवार में प्राचीनता और नवीनता में अनवरत युद्ध होता रहता है। ऐसी ही कलहों के फल-स्वरूप पुत्र माँ-बाप से अलग हो जाते हैं। जो अलग नहीं हो सकते, वह दिन-रात गृह-कलह की अग्नि में सदैव धधकते रहते हैं। उनका दाम्पत्य-जीवन भार बन जाता है। आये-दिन ऐसी घटनाएँ भी देखी गयी हैं, जहाँ गृह-कलह के कारण पुत्र भीषण हत्याकाण्ड तक कर बैठते हैं; पिता, माता और बहिन की हत्याएँ की जाती हैं। बधू यातनाओं से मुक्ति पाने के लिये आत्म-हत्या तक कर लेती हैं।

यदि सास-बहू प्रेम-पूर्वक अपने आचार-विचारों में-व्यवहार में—मेल (Harmony), एकता और सामंजस्य करने के लिये प्रयत्नशील बन जायँ तो बहुतेरे व्यर्थ के झगड़ों का अन्त आसानी से हो सकता है। सास को चाहिए कि वह अपनी पुत्र-बधू को अपनी पुत्री के समान समझे, जैसा वह अपनी पुत्री से प्रेम का व्यवहार करती है, वैसा ही व्यवहार अपनी बधू से करे। तब कोई कारण नहीं कि बधू सास का अपनी माता के समान आदर न करेगी? नव-बधू का मानस-क्षितिज अति नवीन, अति पवित्र, और द्वेष-भावना-रहित होता है; इसलिये सास अपने पुराने अनुभवों और आप-बीतियों का लाभ उठाते हुये अपनी बधू के हृदय पर प्रेम की अमिट छाप लगा दे तो बधू उसके प्रेम का प्रतिदान उसके प्रति अटूट श्रद्धा और भक्ति के रूप में अवश्य देगी।

सास यदि कुछ विचार-शक्ति से काम ले तो यह प्रश्न बहुत जल्द हल हो जाय। यदि सास अपने जीवन—दाम्पत्य जीवन—के उस समय पर एक दृष्टि डाले, जब वह भी अपनी सास की बधू थी; वह उस समय के मनोभावों और सास के कठोर आचरण-जनित मनोव्यथाओं और मानसिक सन्तापों का विचार करे, तो उसे यह ज्ञात हो जायगा कि उसकी बधू का व्यवहार अनुचित नहीं है। जिस व्यथा से वह अपने दाम्पत्य-जीवन के प्रारम्भ में दुःखी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थी, वही दुःख आज उसकी वधू के सामने है। सास को चाहिए कि वह अपने को वधू की स्थिति में कल्पना करके अपने व्यवहार के औचित्य पर विचार करे। ऐसा करते समय उसे अपनी त्रुटि ज्ञात हो जायगी।

नवीन वधुओं को भी अपनी उच्च शिक्षा का अभिमान त्याग कर थोड़ी बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए। वधुओं का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वे अपनी सास के रूढ़िवादी, पुराने दकियानूसी विचारों को अपनी प्रेम-पूर्ण रीति-नीति से दूर करने का प्रयत्न करें। अनपढ़ सास को शिक्षित वधू एकदम मूर्खा और गँवार समझ कर बुरा व्यवहार न करे। सारांश यह है कि वधू में कुछ सहन-शक्ति होनी आवश्यक है। यह एक अपूर्व गुण है और पारिवारिक जीवन में इसकी सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है।

ऋग्वेद का निम्नलिखित मंत्र कितना सारगर्भित और महत्वपूर्ण है। विवाह-संस्कार के समय वर कहता है:—

ओं सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्वां भव ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु॥ मं० १०।७। सूत्र ८५।

"हे वरानने! तू मेरे पिता, जो तेरा श्वशुर है, में प्रीति करके सम्राज्ञी के समान पक्षपात छोड़ के प्रवृत हो; मेरी माता जो तेरी सास है उसमें प्रेमयुक्त होके उसी की आशा में प्रकाशमान रहा कर; मेरी बहन जो तेरी ननद है, उसमें भी प्रीतियुक्त हो; मेरे भाई जो तेरे देवर हैं उनमें भी प्रीति से प्रकाशमान हो—अधिकारयुक्त हो।"

यदि विदुषी सास अपनी वधू को गृह-लक्ष्मी का पद प्रदान कर दे, तो गृह-कलहों की उत्पत्ति ही न हो। परन्तु सास तो मरणासन्न होते हुये भी अपने गृह का सारा प्रबन्ध स्वयं करना चाहती हैं—ठीक वैसे ही जैसे सात समुद्र पार ह्वाइट-हाल में बैठा हुआ भारत-मंत्री हमारे देश के शासन-सूत्र का सञ्चालन करता है। इस अधिकार-लिप्सा के कारण ही अनावश्यक झगड़े पैदा होते रहते हैं। यदि वधुओं को कुछ 'स्वराज्य' प्राप्त हो जाय, तो हमारा पारिवारिक जीवन सामञ्जस्यपूर्ण तथा दाम्पत्य जीवन अधिक सफल हो सके।

परिवार के सदस्यों के साथ सम्यक् व्यवहार करके उनको सन्तुष्ट रखना नव-दम्पति-युगल के लिये एक समस्या है। इस समस्या को ऐसे सुन्दर ढंग से हल किया जाना चाहिए जिससे दाम्पत्य-जीवन दुःखी न बन जाय।

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई
की पुस्तकों के प्रयाग के लिए
सोल एजेण्ट :—
चाँद प्रेस लिमिटेड, २८ एडमॉन्स्टन रोड, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफ़न

[श्री० प्रेमचन्द]

झोंपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए हैं और अन्दर बेटे की जवान बीवी बुधिया प्रसव-वेदना से पछाड़ खा रही थी। रह-रह कर उसके मुँह से ऐसी दिल हिला देने वाली आवाज़ निकलती थी, कि दोनों कलेजा थाम लेते थे। जाड़ों की रात थी, प्रकृति सन्नाटे में डूबी हुई, सारा गाँव अन्धकार में लय हो गया था।

घीसू ने कहा—मालूम होता है, बचेगी नहीं। सारा दिन दौड़ते हो गया, जा देख तो आ।

माधव चिढ़ कर बोला—मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती? देख कर क्या करूँ?

"तू बड़ा बेदर्द है बे! साल भर जिसके साथ सुखचैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफ़ाई!"

"तो मुझसे तो उसका तड़पना और हाथ-पाँव पटकना नहीं देखा जाता।"

चमारों का कुनबा था और सारे गाँव में बदनाम। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम। माधव इतना कामचोर था कि आध घण्टे काम करता तो घण्टे भर चिलम पीता। इसलिए उन्हें कहीं मज़दूरी नहीं मिलती थी। घर में मुट्ठी भर भी अनाज मौजूद हो, तो उनके लिए काम करने की क़सम थी। जब दो-चार फ़ाक़े हो जाते तो घीसू पेड़ पर चढ़ कर लकड़ियाँ तोड़ लाता और माधव बाज़ार से बेच लाता। और जब तक वह पैसे रहते, दोनों इधर-उधर मारे-मारे फिरते। जब फ़ाक़े की नौबत आ जाती, तो फिर लकड़ियाँ तोड़ते या मज़दूरी तलाश करते। गाँव में काम की कमी न थी। किसानों का गाँव था, मेहनती आदमी के लिए पचास काम थे। मगर इन दोनों को लोग उसी वक़्त बुलाते, जब दो आदमियों से एक का काम पाकर भी सन्तोष कर लेने के सिवा और कोई चारा न होता। अगर दोनों साधु होते, तो उन्हें सन्तोष और धैर्य के लिए संयम और नियम की बिलकुल जरूरत न होती। यह तो इनकी प्रकृति थी। विचित्र जीवन था इनका! घर में मिट्टी के दो-चार बर्तनों के सिवा कोई सम्पत्ति नहीं। फटे-चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढाँके हुए जिए जाते थे। संसार की चिन्ताओं से मुक्त! क़र्ज़ से लदे हुए। गालियाँ भी खाते, मार भी खाते, मगर कोई भी ग़म नहीं। दीन इतने कि वसूली की बिलकुल आशा न रहने पर भी लोग इन्हें कुछ न कुछ क़र्ज़ दे देते थे। मटर-आलू की फ़सल में दूसरों के खेतों से मटर या आलू उखाड़ लाते और भूनभान कर खा लेते या दस-पाँच ऊख उखाड़ लाते और रात को चूसते। घीसू ने इसी आकाश-वृत्ति से साठ साल की उम्र काट दी और माधव भी सपूत बेटे की तरह बाप ही के पद-चिन्हों पर चल रहा था, बल्कि उसका नाम और भी उजागर कर रहा था। इस वक़्त भी दोनों अलाव के सामने बैठ कर आलू भून रहे थे, जो कि किसी के खेत से खोद लाए थे। घीसू की स्त्री का तो बहुत दिन हुए, देहान्त हो गया था। माधव का ब्याह पिछले साल हुआ था। जब से यह औरत आई थी, उसने इस ख़ानदान में व्यवस्था की नींव डाली थी। पिसाई करके या घास छील कर वह सेरभर आटे का इन्तज़ाम कर लेती थी और इन दोनों बे-ग़ैरतों का दोज़ख भरती रहती थी। जब से वह आई, यह दोनों और भी आलसी और आरामतलब हो गये थे। बल्कि कुछ अकड़ने भी लगे थे। कोई कार्य करने को बुलाता, तो निर्व्याज भाव से दुगुनी मज़दूरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माँगते। वही औरत आज प्रसव-वेदना से मर रही थी और यह दोनों शायद इसी इन्तज़ार में थे कि वह मर जाय, तो आराम से सोयें।

घीसू ने आलू निकाल कर छीलते हुए कहा—जाकर देख तो, क्या दशा है उसकी? चुड़ैल का फ़िसाद होगा, और क्या? यहाँ तो ओझा भी एक रुपया माँगता है।

माधव को भय था, कि वह कोठरी में गया, तो घीसू आलुओं का बड़ा भाग साफ़ कर देगा। बोला—मुझे वहाँ जाते डर लगता है।

"डर किस बात का है, मैं तो यहाँ हूँ ही!"

"तो तुम्हीं जाकर देखो न?"

"मेरी औरत जब मरी थी, तो मैं तीन दिन तक उसके पास से हिला तक नहीं, और फिर मुझसे लजायेगी कि नहीं? जिसका कभी मुँह नहीं देखा, आज उसका उघड़ा हुआ बदन देखूँ! उसे तन की सुध भी तो न होगी? मुझे देख लेगी तो खुलकर हाथ-पाँव भी न पटक सकेगी?"

"मैं सोचता हूँ, कोई बाल-बच्चा हो गया तो क्या होगा? सोंठ, गुड़, तेल, कुछ भी तो नहीं है घर में।"

"सब कुछ आ जायगा। भगवान दें तो। जो लोग अभी एक पैसा नहीं दे रहे हैं, वे ही कल बुलाकर रुपये देंगे। मेरे नौ लड़के हुए, घर में कभी कुछ न था; मगर भगवान ने किसी न किसी तरह बेड़ा पार ही लगाया।"

जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी, और किसानों के मुक़ाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी। हम तो कहेंगे, घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान् था और किसानों के विचार-शून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाज़ों की कुत्सित मण्डली में जा मिला था। हाँ, उसमें यह शक्ति न थी कि बैठकबाज़ों के नियम और नीति का पालन करता। इसलिए जहाँ उसकी मण्डली के और लोग गाँव के सरग़ना और मुखिया बने हुए थे, उस पर सारा गाँव उँगली उठाता था। फिर भी उसे यह तसकीन तो थी ही कि अगर वह फटेहाल है तो कम से कम उसे किसानों की-सी जाँ-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती? और उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेजा फ़ायदा तो नहीं उठाते।

दोनों आलू निकाल-निकाल कर जलते-जलते खाने लगे। कल से कुछ नहीं खाया था। इतना सब्र न था कि उन्हें ठंडा हो जाने दें। कई बार दोनों की जबानें जल गईं। छिल जाने पर आलू का बाहरी हिस्सा तो बहुत ज्यादा गर्म न मालूम होता; लेकिन दाँतों के तले पड़ते ही अन्दर का हिस्सा जबान और हलक़ और तालू को जला देता था और उस अङ्गारे को मुँह में रखने से ज्यादा ख़ैरियत इसी में थी कि वह अन्दर पहुँच जाय। वहाँ उसे ठण्डा करने के लिए काफ़ी सामान थे। इसलिए दोनों जल्द-जल्द निगल जाते। हालाँकि इस कोशिश में उनकी आँखों से आँसू निकल आते।

घीसू को उस वक़्त ठाकुर की बारात याद आई, जिसमें बीस साल पहले वह गया था। उस दावत में उसे जो तृप्ति मिली थी, वह उसके जीवन में एक याद रखने लायक़ बात थी, और आज भी उसकी याद ताज़ा थी। बोला—"वह भोज नहीं भूलता। तब से फिर उस तरह का खाना और भरपेट नहीं मिला। लड़की वालों ने सबको भरपेट पूड़ियाँ खिलाई थीं, सबको। छोटे-बड़े सबने पूड़ियाँ खाईं और असली घी की! चटनी, रायता, तीन तरह के सूखे साग, एक रसेदार तरकारी, दही, चटनी, मिठाई, अब क्या बताऊँ कि उस भोज में क्या स्वाद मिला। कोई रोक-टोक नहीं थी। जो चीज़ चाहो माँगो और जितना चाहो खाओ। लोगों ने ऐसा खाया, ऐसा खाया, किसी से पानी न पिया गया। मगर परोसने वाले हैं कि पत्तल में गर्म-गर्म गोल-गोल सुवासित कचौड़ियाँ डाले देते हैं। मना करते हैं कि नहीं चाहिए, पत्तल पर हाथ से रोके हुए हैं, मगर वह हैं कि दिये जाते हैं। और जब सबने मुँह धो लिया, तो पान-इलायची भी मिली। मगर मुझे पान लेने की कहाँ सुध थी। खड़ा न हुआ जाता था। चटपट जाकर अपने कम्बल पर लेट गया। ऐसा दिल-दरियाव था वह ठाकुर!"

माधव ने इन पदार्थों का मन ही मन मज़ा लेते हुए कहा—अब हमें कोई ऐसा भोज नहीं खिलाता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"अब कोई क्या खिलाएगा ? वह जमाना दूसरा था। अब तो सबको किफायत सूझती है। सादी-ब्याह में मत खर्च करो, क्रिया-कर्म में मत खर्च करो, पूछो, गरीबों का माल बटोर-बटोर कर कहाँ रखोगे ! बटोरने में तो कमी नहीं है। हाँ, खर्च में किफायत सूझती है।"

"तुमने एक बीस पूड़ियाँ खाई होंगी ?"

"बीस से ज्यादा खाई थीं !"

"मैं पचास खा जाता !"

"पचास से कम मैंने भी न खाई होंगी। अच्छा पट्ठा था। तू तो मेरा आधा भी नहीं है।"

आलू खाकर दोनों ने पानी पिया, और वहीं अलाव के सामने अपनी धोतियाँ ओढ़कर पाँव पेट में डाले सो रहे। जैसे दो बड़े-बड़े अजगर गेंडुलियाँ मारे पड़े हों।

और बुधिया अभी तक कराह रही थी।

२

सवेरे माधव ने कोठरी में जाकर देखा, तो उसकी स्त्री ठण्डी हो गई थी। उसके मुँह पर मक्खियाँ भिनक रही थीं। पथराई हुई आँखें ऊपर टँगी हुई थीं। सारी देह धूल से लथपथ हो रही थी। उसके पेट में बच्चा मर गया था।

माधव भागा हुआ घीसू के पास आया। फिर दोनों जोर-जोर से हाय-हाय करने और छाती पीटने लगे। पड़ोस वालों ने यह रोना-धोना सुना, तो दौड़े हुए आए और पुरानी मर्यादा के अनुसार इन अभागों को समझाने लगे।

मगर ज्यादा रोने-पीटने का अवसर न था। कफ़न की और लकड़ी की फ़िक्र करनी थी। घर में तो पैसा इस तरह गायब था, जैसे चील के घोंसले में मांस।

बाप-बेटे रोते हुए गाँव के ज़मींदार के पास गए। वह इन दोनों की सूरत से नफ़रत करते थे। कई बार इन्हें अपने हाथों से पीट चुके थे। चोरी करने के लिए, वादे पर काम पर न आने के लिए। पूछा—क्या है बे घिसुआ, रोता क्यों है ? अब तो तू कहीं दिखाई भी नहीं देता ! मालूम होता है, इस गाँव में रहना नहीं चाहता।

घीसू ने ज़मीन पर सिर रख कर आँखों में आँसू भरे हुए कहा—सरकार ! बड़ी विपत्ति में हूँ। माधव की घरवाली रात को गुजर गई। रात भर तड़पती रही सरकार। हम दोनों उसके सिरहाने बैठे रहे। दवा-दारू जो कुछ हो सका, सब कुछ किया, मुदा वह हमें दगा दे गई। अब कोई एक रोटी देने वाला भी न रहा मालिक ! तबाह हो गये। घर उजड़ गया। आपका गुलाम हूँ, अब आपके सिवा कौन उसकी मिट्टी पार लगाएगा। हमारे हाथ में तो जो कुछ था, वह सब तो दवा-दारू में उठ गया। सरकार ही की दया होगी तो उसकी मिट्टी उठेगी। आपके सिवा किसके द्वार पर जाऊँ !

जमींदार साहब दयालु थे। मगर घीसू पर दया करना काले कम्बल पर रङ्ग चढ़ाना था। जी में तो आया, कह दें, चल, दूर हो यहाँ से; यों तो बुलाने से भी नहीं आता, आज जब ग़रज़ पड़ी तो आकर खुशामद कर रहा है। हरामखोर कहीं का बदमाश ! लेकिन यह क्रोध या दण्ड का अवसर न था। जी में कुढ़ते हुए दो रुपए निकाल कर फेंक दिये। मगर सान्त्वना का एक शब्द भी मुँह से न निकाला। उसकी तरफ़ ताका तक नहीं। जैसे सिर का बोझ उतारा हो।

जब जमींदार साहब ने दो रुपये दिए, तो गाँव के बनिए महाजनों को इनकार का साहस कैसे होता। घीसू जमींदार के नाम का ढिंढोरा भी पीटना जानता था। किसी ने दो आने दिए, किसी ने चार आने। एक घण्टे में घीसू के पास पाँच रुपए की अच्छी रक़म जमा हो गई। कहीं से नाज मिल गया, कहीं से लकड़ी। और दोपहर को घीसू और माधव बाजार से कफ़न लाने चले। इधर लोग बाँस-बाँस काटने लगे।

गाँव की नर्म दिल स्त्रियाँ आ-आकर लाश को देखती थीं, और उसकी बेकसी पर दो बूँद आँसू गिरा कर चली जाती थीं।

३

बाजार में पहुँच कर घीसू बोला—लकड़ी तो उसे जलाने भर को मिल गई है, क्यों माधव !

माधव बोला—हाँ, लकड़ी तो बहुत है, अब कफ़न चाहिए।

"तो चलो, कोई हलका सा कफन ले लें।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"हाँ, और क्या! लाश उठते-उठते रात हो जायगी। रात को कफ़न कौन देखता है!"

"कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढाँकने को चीथड़ा भी न मिले उसे मरने पर नया कफन चाहिए।"

"कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है।"

"और क्या रखा रहता है? यही पाँच रुपए पहले मिलते, तो कुछ दवा-दारू कर लेते।"

दोनों एक दूसरे के मन की बात ताड़ रहे थे। बाज़ार में इधर-उधर घूमते रहे। कभी इस बजाज की दूकान पर गए, कभी उसकी दूकान पर। तरह-तरह के कपड़े, रेशमी और सूती देखे, मगर कुछ जँचा नहीं। यहाँ तक कि शाम हो गई। तब दोनों न जाने किस दैवी प्रेरणा से एक मधुशाला के सामने आ पहुँचे और जैसे किसी पूर्व-निश्चित व्यवस्था से अन्दर चले गये। वहाँ ज़रा देर तक दोनों असमंजस में खड़े रहे। फिर घीसू ने गद्दी के सामने जाकर कहा—साहु जी, एक बोतल हमें भी देना।

इसके बाद कुछ चिखौना आया, तली हुई मछलियाँ आईं और दोनों बरामदे में बैठकर शान्तिपूर्वक पीने लगे।

कई कुज्जियाँ ताबड़तोड़ पीने के बाद दोनों सरूर में आ गये।

घीसू बोला—कफन लगाने से क्या मिलता? आख़िर जल ही तो जाता? कुछ बहू के साथ तो न जाता।

माधव आसमान की तरफ़ देखकर बोला, मानो देवताओं को अपनी निष्पापता का साक्षी बना रहा हो—दुनिया का दस्तूर है, नहीं लोग बाँभनों को हजारों रुपये क्यों दे देते हैं। कौन देखता है, परलोक में मिलता है या नहीं!

"बड़े आदमियों के पास धन है, फूँकें! हमारे पास फूँकने को क्या है?"

"लेकिन लोगों को जवाब क्या दोगे? लोग पूछेंगे नहीं! कफन कहाँ है?"

घीसू हँसा—अबे कह देंगे कि रुपये कमर से खिसक गये। बहुत ढूँढ़ा, मिले नहीं। लोगों को विश्वास तो न आयेगा, लेकिन फिर वही रुपये देंगे।

माधव भी हँसा—इस अनपेक्षित सौभाग्य पर। बोला—बड़ी अच्छी थी बेचारी! मरी भी तो खूब खिला-पिला कर।

आधी बोतल से ज्यादा उड़ गई। घीसू ने दो सेर पूड़ियाँ मँगाईं। चटनी, अचार, कलेजियाँ। शराबखाने के सामने ही दूकान थी। माधव लपक कर दो पत्तलों में सारे सामान ले आया। पूरा डेढ़ रुपया खर्च हो गया। सिर्फ़ थोड़े से पैसे बच रहे।

दोनों इस वक़्त इस शान से बैठे हुए पूड़ियाँ खा रहे थे जैसे जंगल में कोई शेर अपना शिकार उड़ा रहा हो। न जवाबदेही का ख़ौफ़ था, न बदनामी की फ़िक्र। इन भावनाओं को उन्होंने बहुत पहले ही जीत लिया था।

घीसू दार्शनिक भाव से बोला—हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है, तो क्या उसे पुन्न न होगा?

माधव ने श्रद्धा से सिर झुकाकर तसदीक़ की—जरूर से जरूर होगा। भगवान, तुम अन्तर्यामी हो। उसे बैकुण्ठ ले जाना। हम दोनों हृदय से उसे आशीर्वाद दे रहे हैं। आज जो भोजन मिला वह कभी उम्र भर न मिला था।

एक क्षण के बाद माधव के मन में एक शंका जागी। बोला—क्यों दादा, हम लोग भी तो एक न एक दिन वहाँ जायँगे ही।

घीसू ने इस भोलेभाले सवाल का कुछ उत्तर न दिया। वह परलोक की बातें सोचकर इस आनन्द में बाधा न डालना चाहता था।

"जो वहाँ वह हम लोगों से पूछे कि तुमने हमें कफन क्यों नहीं दिया तो क्या कहोगे?"

"कहेंगे तुम्हारा सिर!"

"पूछेगी तो जरूर!"

"तू कैसे जानता है कि उसे कफन न मिलेगा? तू मुझे ऐसा गधा समझता है? साठ साल क्या दुनिया में घास खोदता रहा हूँ! उसको कफन मिलेगा और इससे बहुत अच्छा मिलेगा।"

माधव को विश्वास न आया। बोला—कौन देगा? रुपये तो तुमने चट कर दिये। वह तो मुझसे पूछेगी। उसकी माँग में तो सेंदुर मैंने डाला था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घीसू गर्म होकर बोला—मैं कहता हूँ, उसे कफन मिलेगा, तू मानता क्यों नहीं ?

"कौन देगा, बताते क्यों नहीं ?"

"वही लोग देंगे, जिन्होंने कि अबकी दिया। हाँ, अबकी रुपये हमारे हाथ न आयेंगे।"

ज्यों-ज्यों अँधेरा बढ़ता था और सितारों की चमक तेज होती थी, मधुशाला की रौनक भी बढ़ती जाती थी। कोई गाता था, कोई डींग मारता था, कोई अपने संगी के गले लिपटा जाता था। कोई अपने दोस्त के मुँह में कुल्हड़ लगाये देता था।

वहाँ के वातावरण में सरूर था, हवा में नशा। कितने तो यहाँ आकर एक चुल्लू में मस्त हो जाते थे। शराब से ज्यादा यहाँ की हवा उन पर नशा करती थी। जीवन की बाधाएँ यहाँ खींच लाती थीं और कुछ देर के लिए यह भूल जाते थे कि वे जीते हैं या मरते हैं। या न जीते हैं न मरते हैं।

और यह दोनों बाप-बेटे अब भी मजे ले-लेकर चुस्कियाँ ले रहे थे। सबकी निगाहें इनको ओर जमी हुई थीं। दोनों कितने भाग्य के बली हैं। पूरी बोतल बीच में है।

भरपेट खाकर माधव ने बची हुई पूड़ियों का पत्तल उठा कर एक भिखारी को दे दिया। जो खड़ा इनकी ओर भूखो आँखों से देख रहा था। और 'देने' के गौरव, आनन्द और उल्लास का अपने जीवन में पहली बार अनुभव किया।

घीसू ने कहा—ले जा, खूब खा और आशीर्वाद दे ! जिसकी कमाई है, वह तो मर गई। मगर तेरा आशीर्वाद उसे ज़रूर पहुँचेगा। रोयें-रोयें से आशीर्वाद दो, बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे हैं।

माधव ने फिर आसमान की तरफ़ देख कर कहा—वह बैकुण्ठ में जायगी दादा, बैकुण्ठ की रानी बनेगी।

घीसू खड़ा हो गया और जैसे उल्लास की लहरों में तैरता हुआ बोला—हाँ बेटा, बैकुण्ठ में जायगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं। मरते-मरते हमारी जिन्दगी की सब से बड़ी लालसा पूरी कर गई। वह न बैकुण्ठ में जायगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं। और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मन्दिरों में जल चढ़ाते हैं।

श्रद्धालुता का यह रंग तुरन्त ही बदल गया। अस्थिरता नशे की खासियत है। दुःख और निराशा का दौर हुआ।

माधव बोला—मगर दादा, बेचारी ने जिन्दगी में बड़ा दुख भोगा। कितना दुख झेल कर मरी।

वह आँखों पर हाथ रख कर रोने लगा, चीखें मार-मार कर।

घीसू ने समझाया—क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह माया-जाल से मुक्त हो गई। जंजाल से छूट गई। बड़ी भाग्यवान थी, जो इतनी जल्द माया-मोह के बन्धन तोड़ दिये।

और दोनों खड़े होकर गाने लगे—

"ठगिनी क्यों नैना झमकावे ! ठगिनी० !"

पियक्कड़ों की आँखें इनकी ओर लगी हुई थीं और यह दोनों अपने दिल में मस्त गाये जाते थे। फिर दोनों नाचने लगे। उछले भी, कूदे भी। गिरे भी, मटके भी। भाव भी बताये। अभिनय भी किये। और आखिर नशे से बदमस्त होकर वहीं गिर पड़े।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्ध्या

श्री० वीरेन्द्रकुमार

आज खुली सन्ध्या, वन वन में कैसी मलिन पीत उजियाली !
किस विरहिनि की सुख-सन्ध्या है यह तप से उज्ज्वल आली ?
शब्द-हीन पीली सन्ध्या-श्री से खिल उठी विमग्न बनाली।
सौध-झरोखे पर मीरा के, सखि, आये हैं क्या बनमाली ?
किस कुमारिका की पवित्र, शुचि बाँहों की यह हल्दी पीली ?
किस विधवा के मन-मन्दिर का दिव्य-मलिन आलोक री अली ?
किस तापस-कुमारि के मुख की शान्त-स्निग्ध छवि सोई वन-वन ?
चुप-चुप सर में उतर रहा यह किस गोपी का विरह-पूत मन ?
बन-किशोरि के अञ्चल में ढाँके दीपक की यह उजियाली !
'किस' मन के उल्लास सुखों से विह्वल उर निःशब्द बनाली ?
किन चरणों की पीली श्री से परसित सजल सजल मेरा तन ?
किसके नीरव नूपुर-रुनझुन से भर आया है सूनापन ?
सखि, अनन्त अलाप गान है मौन हो गया मेरे मन का !!!
उनके शत-शत चरण होगये एक-एक अणु मेरे तन का !!
आज रुलाई मेरे मन की इस सूने का प्राण होगई !!
कण-कण के नीरव अन्तर का चेतन, स्पन्दन गान होगई !!!
किसका है सन्ध्याभिसार सखि, उर के इस आलोक-क्षितिज पर ?
'वे' प्राणों को दुलराते हैं तम की अवगुण्ठन में ढक कर !!!
दूर बनान्तर में अनजाने सुन तो सखि वह कोयल बोली !
किसकी मृदुल-अँगुलियों ने इस उर की पीड़ा-निधियाँ खोली ?
यह अनन्त रागिणियाँ 'किस' की इन प्राणों में आज रुँध गईं ?
उर के अतल-अश्रु सागर की लहरों में वे आज बँध गईं !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक हिन्दी कहानियाँ

[श्री० ज्योतिप्रसाद मिश्र, 'निर्मल']

संसार के साहित्य में कहानी-साहित्य की जिस वेग के साथ उन्नति हो रही है, वह विशेष रूप से आश्चर्यजनक है। योरुपीय साहित्य में, जो साहित्य के अन्य विषयों से भी संपूर्ण है, कथात्मक साहित्य विशेषकर उन्नत अवस्था में है। इस समय रूस का साहित्य—विशेषतः उपन्यास और कहानी साहित्य—सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। टॉलस्टाय, तुर्गनेव चेखोव और गोर्की की रचनाओं की ख्याति अमर साहित्य में की जाती है तथा कहानी-कला में इन लेखकों का सर्वोपरि स्थान माना जाता है। फ्रान्स में मोपासा, अनातोले फ्रान्स, इङ्गलैण्ड में टामस हार्डी, गाल्सवर्दी, स्टीवेंसन और कानन डायल, अमेरिका में शेरवुड अण्डरसन, एडगर पो और वाशिंगटन इरविङ्ग एवं जर्मनी में थियोडोर कोरनर और ग्रिमब्रदर्स की कृतियाँ कहानी-साहित्य में अमर हैं। भारतवर्ष में भी महाकवि रवीन्द्र, शरदचन्द चट्टोपाध्याय का नाम संसार के कहानी कलाकारों में लिया जाता है। इन लेखकों की रचनाओं में मनुष्य की अनुभूतियों और भावों का वास्तविक, स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक चित्रण पाया जाता है। आधुनिक कहानी-कला का यही मर्म माना जाता है। इसी विचार का प्रभाव हिन्दी के आधुनिक कहानी साहित्य पर भी पड़ा है और तदनुरूप हिन्दी क्षेत्र में भी अन्य विषयों की अपेक्षा कहानी-कला की विशेष उन्नति हो रही है।

कहानी का प्रारम्भ

हिन्दी के आधुनिक युग में कहानी-कला का प्रारम्भ यद्यपि उन्नीसवीं सदी में हो गया था, परन्तु उसकी पुष्टि वर्तमान काल में विशेष रूप से हुई है। हिन्दी में जो कहानियाँ प्रारम्भिक समय में लिखी गई हैं, उनका उद्देश्य कथोपकथन द्वारा जन-साधारण का मनोरञ्जन करना ही रहा है। विशेषतः श्री गिरिजाकुमार घोष, जो 'लाला पार्वतीनन्दन' के नाम से कहानियाँ लिखा करते थे, वर्तमान कहानी साहित्य के जन्मदाता माने जा सकते हैं। यद्यपि श्रीयुत घोष के पहले भी कुछ गद्य-निर्माताओं ने साधारण कोटि की कहानियाँ लिखी थीं, किन्तु 'गल्प' या कहानी सुचारु रूप से लिखने वाले श्री गिरजाकुमार घोष ही थे। श्री गिरजाकुमार घोष बङ्गाली सज्जन थे, और उस समय भी बङ्गला साहित्य कहानी-साहित्य की दृष्टि से उन्नत अवस्था में था। श्रीयुत घोष ने सरस्वती के द्वारा इस कला में विशेषता उत्पन्न की और हिन्दी का कहानी साहित्य एक विशेष दिशा की ओर अग्रसर हुआ। काशी से प्रकाशित होने वाले 'इन्दु' के द्वारा भी कहानी साहित्य की उन्नति में विशेष सहायता पहुँची। शिक्षा का विस्तार ज्यों-ज्यों अधिक होने लगा, और अन्य भाषाओं की श्रेष्ठ कहानियाँ हिन्दी में अनुवादित हुईं, त्यों-त्यों इस कला की उन्नति में विशेष आकर्षण हुआ और कहानी लिखने के उद्देश्य में खासा परिवर्तन दीख पड़ा। उस समय के कहानी-लेखकों का उद्देश्य तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति का चित्र अङ्कित करना था। विधवा-विवाह, अछूतोद्धार, बाल-विवाह—यही प्रधान विषय थे। समाज की विशृङ्खलता को सीधे-सादे रूप में जनता के सामने रखना, और उससे शिक्षा ग्रहण कराना, साथ ही साथ मनोरञ्जन को वृद्धि कराना ही उनका मुख्य लक्ष्य रहा। कहना यों चाहिए कि शिक्षात्मक और उपदेशात्मक भावना का प्रचार ही इस काल की कहानियों या गल्पों का उद्देश्य रहा। किन्तु आधुनिक काल में अङ्गरेजी शिक्षा के प्रभाव तथा समाज की उन्नति के संसर्ग से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहानी साहित्य का विकास होता गया और उसका उद्देश्य केवल कथोपकथन, शिक्षा और उपदेश नहीं रह गया, वरन् मानवीय हृदय की परिस्थितियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करता हुआ इस पथ को प्रशस्त करने का अनवरत प्रयत्न हो रहा है।

अनूदित कहानियाँ

कहानी साहित्य के आधुनिक युग में अनुवादित ग्रन्थों द्वारा हिन्दी का भांडार भली भाँति भरा गया। रवि बाबू की कहानियाँ, शरद बाबू की कहानियाँ, चारुचन्द चैनर्जी, प्रभातचन्द्र चटर्जी जी की रचनाएँ हिन्दी में अनूदित हुईं। श्री० रूपनारायण पाण्डेय और बाबू रामचन्द्र वर्मा ने इस कार्य में विशेष उद्योग किया। अङ्गरेज़ी के जासूसी उपन्यासों के अनुवाद भी हिन्दी संसार में कुछ कल-कतिये लेखकों के द्वारा हुए और जन-साधारण में विस्मय और आश्चर्य की कथाओं का प्रचार हुआ। इससे हिन्दी के कहानी साहित्य की वृद्धि हुई। महाराष्ट्र के कतिपय लेखकों की कृतियों के अनुवाद भी उपस्थित हुए। इस प्रकार इन अनुवादित ग्रन्थों के द्वारा हिन्दी के कहानी साहित्य की वृद्धि में अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। किन्तु हिन्दी लेखकों का झुकाव कुछ काल के अनन्तर ही मौलिक रचनाओं की ओर अधिक गया और श्री० ज्वालादत्त शर्मा, श्री० प्रेमचन्द और श्री० विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक अपनी मौलिक कृतियों के द्वारा हिन्दी के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। सच पूछा जाय तो कहानियों का आधुनिक विकास और निर्माण, मौलिकता की दृष्टि से अभी थोड़े ही काल से प्रारम्भ होता है और यह हमारे साहित्य का सौभाग्य है कि उसकी इतनी जल्दी श्री-वृद्धि हुई है कि अब गर्वपूर्वक कहा जा सकता है कि हिन्दी संसार में भी संसार के कहानी साहित्य से टक्कर लेने वाले मौलिक लेखक वर्तमान हैं।

वर्तमान समय में कहानी साहित्य की श्री-वृद्धि बड़े वेग से हो रही है। कुछ वर्ष पहले हिन्दी में दो ही चार कहानी-लेखक ऐसे थे, जिन्होंने अपनी मौलिक कृतियों के द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त की, किन्तु इस समय प्रायः लेखकों का आकर्षण कहानी-रचना की ओर है, और अनेक उत्कृष्ट लेखकों का सहयोग हिन्दी को प्राप्त हो गया। इन लेखकों में पुरुष और स्त्री दोनों हैं। इन रचनाओं का दृष्टिकोण भी भावुकता की ओर अधिक आकर्षित है। मनोवैज्ञानिक और समाज का वास्तविक चित्रण करने में लेखक अपनी कला का प्रदर्शन करने लगे हैं। मनुष्य के अन्तर्जगत की अनुभूतियों के विश्लेषण और चित्रण में कुछ रचनाकारों ने सफलता भी प्राप्त की है और अन्य लेखकों का ध्यान भी पूर्ण रूप से उन्नत कहानियाँ लिखने की ओर आकर्षित होता जा रहा है।

श्रेणी-विभाजन

इस समय कहानी-लेखकों को हम तीन विभागों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम श्रेणी में उन लेखकों की गणना की जा सकती है, जिनका क्षेत्र केवल कहानी साहित्य है और जो अपनी रचनाओं की श्रेष्ठता और महत्व के कारण विशेष स्थान प्राप्त कर चुके हैं। दूसरी श्रेणी में उन लेखकों की गणना की जा सकती है, जिन्होंने साहित्य के अन्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त कर ली है, साथ ही कहानी-साहित्य के सृजन में भी उद्योग कर रहे हैं और अपनी सुन्दर कहानियों द्वारा इस क्षेत्र में भी अपना स्थान बनाते जा रहे हैं। तीसरी श्रेणी में उन लेखकों की गणना की जा सकती है, जो नवीन रूप से इस क्षेत्र में अवतीर्ण हो रहे हैं और भविष्य में इनकी रचनाओं से इस कला की विशेष उन्नति की आशा की जा रही है। चौथी श्रेणी में हम उन महिला-लेखिकाओं की गणना कर सकते हैं, जो आख्यायिका या कहानी लिखकर साहित्य का भाण्डार भर रही हैं। यद्यपि इनकी संख्या उँगलियों पर गिनने योग्य है, किन्तु कहानी-कला की वृद्धि में इनकी रचनाओं का सहयोग उन्नति-पथ का द्योतक है।

प्रथम श्रेणी में श्री प्रेमचंद, श्री ज्वालादत्त शर्मा, श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, श्री सुदर्शन, श्री चतुर-सेन शास्त्री, श्री चंडीप्रसाद 'हृदयेश', श्री विनोदशंकर व्यास, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', श्री जैनेन्द्रकुमार और श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार का नाम लेना अनुचित न होगा।

श्रीयुत प्रेमचंद

श्री प्रेमचंद जी वर्तमान हिन्दी के कहानी-संसार में ख्याति-प्राप्त हैं। प्रेमचंद जी पहले उर्दू के लेखक थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये जब यह हिन्दी-क्षेत्र में अवतीर्ण हुए तो उस समय इनकी भाषा पर उर्दू की विशेष छाप थी, किन्तु ज्यों-ज्यों हिन्दी के संपर्क में आते गये, त्यों-त्यों भाषा मँजती गई, और वह अपने शुद्ध और संस्कृत रूप में आ गई। किन्तु उर्दू की वह मुहावरेदानी, नज़ाक़त और नफ़ासत का पूर्ण प्रभाव वर्तमान रहा और अब भी वर्तमान है, जिसके कारण प्रेमचंद जी भाषा की भी दृष्टि से अधिक प्रिय हुए। उर्दू हिन्दी के चलते हुए वाक्यों और शब्दों का ऐसा सुन्दर सम्मिश्रण बहुत कम हिन्दी के लेखकों में पाया जाता है। ये अँगरेज़ी शिक्षा से पूर्ण और एक नई विचार-धारा को साथ लेकर इस क्षेत्र में आये। इसीलिए इनकी कहानियाँ केवल कथोपकथन से आधारित नहीं हुईं, वरन् चरित्र-चित्रण का दृष्टिकोण भी इनके सामने रहा। रूसी कहानी साहित्य इस समय संसार में सर्वोपरि है, उसमें जन-साधारण के विचार, रहन-सहन, वातावरण, आचार-व्यवहार का सहानुभूतिपूर्ण और स्वाभाविक चित्रण जागृत रूप में पाया जाता है। प्रेमचंद जी का भी प्रधान दृष्टिकोण, अपनी कहानियों के सृजन में, जन-साधारण का चित्रण ही है। इन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकार भी किया है। योरोपियन विचारों से यह प्रभावित अवश्य हुए हैं और इनकी अनेक कहानियों का बाह्य स्वरूप इसी प्रकार की प्रेरणा से निर्मित हुआ है, किन्तु आन्तरिक स्वरूप के अंकन में इन्होंने भारतीय संस्कृति और भारतीय आत्मा को सुरक्षित रखने की चेष्टा की है। यह हिन्दी के मौलिक कहानी-लेखक हैं। कुछ आलोचकों का मत है कि इन्होंने अङ्गरेज़ी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के उपन्यासों और कहानियों के आधार पर कुछ उपन्यास और कहानियाँ लिखी हैं। यह बात उस अंश तक ठीक मानी जा सकती है, जहाँ तक उसका सम्बन्ध विचार और भावना से है। लेखक ने संसार के प्रसिद्ध कहानी-लेखकों की रचनाएँ पढ़ी होंगी, और सम्भव है, उन ग्रन्थों और विचारों का प्रभाव उनकी रचना पर भी पड़ा हो, किन्तु यह कहना कि अन्य भाषा के ग्रन्थों की नक़ल करके प्रेमचन्द जी ने अपनी मौलिक रचना क़रार दी, सरासर अन्याय है। प्रेमचन्द जी ऐसे नहीं हैं कि वे इस प्रकार की साधारण बात को भी न समझ सकते।

कहानियों का विभाजन

श्री प्रेमचन्द जी ने अब तक लगभग ढाई सौ कहानियाँ लिखी होंगी। इन कहानियों को हम मुख्यतः चार विभागों में विभाजित कर सकते हैं—(१) राजनैतिक (२) सामाजिक (३) ऐतिहासिक (४) मनोवैज्ञानिक। इनकी लिखी हुई कहानी-पुस्तकों में प्रेम-पूर्णिमा, प्रेमपचीसी, सप्तसरोज आदि मुख्य हैं। 'प्रेमद्वादशी' में इनकी लिखी हुई उक्त विषयों के अनुरूप बारह कहानियाँ संगृहीत हैं और यही १२ कहानियाँ इनकी 'सर्वोत्तम कहानियाँ' मानी जाती हैं। प्रेमचन्द जी की कहानियों की विशेषता हम तीन रूपों में पाते हैं। पहला रूप कथोपकथन का है। प्रेमचन्द जी का कथोपकथन बड़ा ही आकर्षक और स्वाभाविक होता है। वे जब दो व्यक्तियों में वार्तालाप कराने लगते हैं तो उनकी हार्दिक सहानुभूति उन व्यक्तियों के साथ हो जाती है और वे अपने को उसी प्रकार के वातावरण में रखते हैं। वे समय का अधिक ध्यान रखते हैं। किस समय किस प्रकार का वार्तालाप ठीक होता है, इसको वे भली भाँति जानते हैं। दो पढ़े-लिखों की बातचीत का ढङ्ग ही निराला होता है, दो ग्रामीणों की बातचीत का रुख़ ही भिन्न होता है! दो सहेलियों की मधुर बातों का स्वाद ही निराला होता है। दूसरा रूप है चरित्र-चित्रण का। प्रेमचन्द जी चरित्र-चित्रण में अपनी प्रतिभा का सुन्दर विकास दिखलाते हैं। चरित्र-चित्रण में भारतीय संस्कृति की एक विशेष घुट रहती है। आदर्शवाद भी इनके चरित्र-चित्रण का अङ्ग होता है, साथ ही मनुष्य की स्वाभाविक अनुभूतियाँ तथा मन की गुत्थियाँ सुलझाने की, एक विशेष प्रवृत्ति इनकी रचना में पाई जाती है। इनकी कहानियों के पात्र और पात्री सांसारिक होते हैं और सांसारिकता से उनका सम्बन्ध एक सूत्र में बाँधते हुए, सम रूप में उन्हें उपस्थित करते हैं। लेखक कवि नहीं है, इसलिये कल्पना में उसे विश्वास शायद कम है, इसलिए कल्पना का सहारा वह नहीं लेता। कहानी सर्वसाधारण की वस्तु है। सर्व-साधारण के लिए कला की आवश्यकता वे समझते हैं, किन्तु वह कला दुरूह, आलङ्कारिक और कल्पनापूर्ण नहीं होती, वह सीधी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बात को सादे ढङ्ग से कहते हैं, उसे भावना और कल्पना के सहारे जटिल और दुरूह नहीं बनाते। तीसरा रूप है भावुकता का। प्रेमचन्द जी भावुक अवश्य हैं और भावुकता का स्वरूप हमें उनकी कहानियों में कहीं-कहीं दिखाई पड़ता है, किन्तु अधिक नहीं। इस प्रकार प्रेमचन्द जी की कहानियाँ आकर्षण, प्रभाव, व्यवहार और वर्णन की दृष्टि से अपना विशेष स्थान रखती हैं।

राजनैतिक

प्रेमचन्द जी ने सबसे अधिक ख्याति अपनी राजनैतिक कहानियों के द्वारा प्राप्त की है। उनकी राजनैतिक कहानियाँ, भारतीय स्वतन्त्रता से सम्बन्ध रखने वाले आन्दोलनों की प्रतिविम्ब हैं। यदि प्रेमचन्द जी की राजनैतिक कहानियाँ सामने रख ली जायँ, तो इस बात का निर्णय बड़ी सरलता से किया जा सकता है कि अमुक समय देश में अमुक आन्दोलन का प्राबल्य था। यही नहीं, इन आन्दोलनों का प्रभाव उनके विभिन्न उपन्यासों पर भी पूर्ण रूप से पड़ा है। 'सत्याग्रह' 'लाल-फ़ीता' 'पंचपरमेश्वर' 'धरना' आदि कितनी ही कहानियाँ हैं, जिनके द्वारा तत्कालीन प्रगति में सहायता तो पहुँची ही, साथ ही रचना की भी लोक-प्रियता बढ़ी। किसानों, ग़रीबों, अपाहिजों, दीन-दुखियों और मजदूरों का स्वाभाविक और सहानुभूतिपूर्ण चित्रण भारतीय कहानी-लेखकों की कृतियों में बहुत कम पाया जाता है। यह विशेषता रूसी कहानियों को प्राप्त है। इस दृष्टि से प्रेमचन्द जी हिन्दी के सर्व-प्रथम कहानीकार हैं, जिनके हृदय में देश के उन अभागों के प्रति सहानुभूति है, जिनका सम्बन्ध भारतीय संस्कृति से है। प्रेमचन्द जी गाँव के रहने वाले हैं, इसलिए किसानी रीति-नीति से वाक़िफ़ भी काफ़ी हैं। यही कारण है कि उनको जितना सच्चा और स्वाभाविक अनुभव वहाँ के वातावरण का है उतना अन्य कहानी-लेखकों को, जो शहर के रहने वाले हैं, हो ही नहीं सकता। स्वाभाविक अनुभव और कल्पना में बड़ा अन्तर है। इसी कारण किसानों, मजदूरों, दुखियों के जीवन का चित्रण वे बड़ी मार्मिकता के साथ कर सके हैं।

सामाजिक

सामाजिक कहानियाँ प्रेमचन्द जी की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। कहीं वे सुधारक के रूप में उपस्थित होते हैं, कहीं आदर्शवादी के रूप में। समाज की अवस्था विशृङ्खल है, उसमें अनवरत द्वन्द्व जारी है, ऊँच-नीच की भावना से साम्य भाव का लोप हो रहा है, गार्हस्थ्य जीवन संघर्ष-मय है। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, माता-पुत्री, सम्बन्धी, कुटुम्बी, मित्र के व्यावहारिक लोकाचार के सम्बन्ध में एक-रूपता और सुख के स्वर्गीय सौन्दर्य का लोप होता दीख पड़ता है। शिक्षा का विस्तार ज्यों-ज्यों होता जा रहा हैं, त्यों-त्यों समाज में सुधार तो अवश्य कुछ न कुछ हो रहा है, किन्तु एक आन्तरिक द्वन्द्व का उदय हो रहा है। भारतीय वातावरण में पश्चिमीय वातावरण के मिश्रण से समाज में एक विचित्र वातावरण उत्पन्न हो रहा है। प्रेमचन्द जी को समाज की उक्त भावनाओं का अच्छा अनुभव है। वे इसी भावना को लेकर कहानी-रचना में कला की घुट देते हुए अग्रसर हुए हैं। किस प्रकार के वातावरण से समाज विशृङ्खल हो रहा है, समाज को गिराने और उसे सुधार-पथ पर अग्रसर होने में किनके द्वारा बाधाएँ उपस्थित हो रही हैं, इन लोगों के चरित्र-अङ्कन में प्रेमचन्द जी ने विशेष दृष्टि डाली है। ऐसे अवसरों पर उन्हें हास्य और व्यङ्ग का भी सहारा लेना पड़ा है। इसके सिवा घरेलू वातावरण के स्वाभाविक कार्यों और परिस्थितियों का चित्रण उन्होंने बड़ी सुन्दरता के साथ किया है। उनका सिद्धान्त शायद इस बात के प्रचार में अधिक है कि भारतीय समाज में एकरूपता स्थापित हो, व्यक्तिगत विद्रोह नष्ट हो जाय और ऐसे समाज का निर्माण हो जिसमें भारतीयत्व हो। घरेलू सामाजिक परिस्थितियों के चित्रण में जिस खूबी के साथ प्रेमचन्द जी ने सफलता प्राप्त की है वह स्तुत्य है। आदर्शवादी भी वे अच्छे जान पड़ते हैं। सुधार-वाद के साथ-साथ आदर्शवाद भी उनकी कहानियों का दृष्टि-कोण है। राजनैतिक कहानियों से प्रेमचन्द जी की सामाजिक कहानियाँ स्थायी हैं और उनमें भारतीय संस्कृति के चित्रण की पर्याप्त सामग्री वर्तमान है। 'शान्ती' 'गृह-दाह' 'शङ्खनाद' 'बड़े घर की बेटी' 'दुर्गा का मन्दिर'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदि कहानियाँ उनकी कला को प्रदर्शित करती हैं। इन कहानियों की रचना में भी प्रेमचन्द जी सामयिकता का अधिक ध्यान रखते हैं। सामयिकता ही उनकी कहानियों का प्रधान गुण है। ऊँच-नीच की भावना के प्रेमचन्द जी विरोधी हैं, इसीलिए ऊँचों के अत्याचार वर्णन में उनकी लेखनी में काफ़ी ओज आ गया है, और शायद उच्च श्रेणी के कतिपय लोग उनसे रुष्ट भी हैं, साथ ही नीच और गिरे हुओं के उत्थान की ओर उनकी लेखनी बड़ी सहानुभूति के साथ अग्रसर हुई है, जिसमें जन-साधारण को विशेष आकर्षण है। इस प्रकार प्रेमचन्द जी ने समाज में साम्यभाव की स्थापना की ओर अधिक दृष्टि दी है और शायद उनका ध्येय भी यही है।

अन्य कहानियाँ

ऐतिहासिक कहानियाँ प्रेमचन्द जी ने बहुत थोड़ी लिखी हैं। 'सती सारन्धा' उनकी ऐतिहासिक कहानी है। ऐसा मालूम होता है कि ऐतिहासिक कहानियों को रचना की ओर उनका ध्यान कम है। 'शतरञ्ज के खिलाड़ी' कहानी में अवध के नवाब वाजिदअली शाह के समय की ऐयाशी का एक नमूना उपस्थित किया है, किन्तु हास्य की पुट इसमें अधिक है। मनोवैज्ञानिक कहानी प्रेमचन्द जी ने बहुत कम लिखी हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई 'आत्माराम' कहानी सर्वश्रेष्ठ है। आज संसार की कहानी-कला की परिभाषा, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मानी जाती है। इसलिए यदि हम यह कहें कि 'आत्माराम' कहानी प्रेमचन्द जी की सर्वश्रेष्ठ मौलिक कहानी है, तो अत्युक्ति न होगी। यों इनकी प्रायः कहानियों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की झलक दिखाई देती है। शायद इनका ख़याल है कि देश पराधीन है, अभी यहाँ सुधार की विशेष रूप से आवश्यकता है। इसलिए मनोवैज्ञानिक कहानियों की जन-साधारण को आवश्यकता नहीं है। इनका कहानी लिखने का उद्देश्य केवल कला नहीं है। वह कला के साथ उसे लौकिकता से परे नहीं रखना चाहते। इनकी कहानी का प्रधान झुकाव लौकिकता की ओर है और यदि वह कला पूर्ण भी हो जाय तो प्रसन्नता की बात है। किन्तु कला की प्रधानता यह अपनी रचना में नहीं देते। इनकी कला, कला के लिये नहीं होती, वरन् जन-साधारण के लिए होती है। यद्यपि यह युग 'कला' का है और कलापूर्ण रचना का महत्व भी अधिक माना जाता है, किन्तु कलात्मक वस्तु कला के पारखियों के लिये विशेष उपयुक्त है, जनता के लिये नहीं। इसीलिए प्रेमचन्द जी 'कला' की उतनी परवाह नहीं करते, जितनी वे जन-साधारण में सुन्दर भावना के प्रचार और उनके अन्धकार-पूर्ण जीवन में प्रकाश उत्पन्न करने की परवाह करते हैं। प्रेमचन्द जी का यह दृष्टिकोण बड़ा महत्वपूर्ण है। और यही कारण है कि आज वे कला को अपनी रचना में प्रधान स्थान न देते हुए भी प्रथम श्रेणी के कलाकार माने जाते हैं।

प्रेमचन्द जी वर्तमान हिन्दी संसार में कहानी-कला के विशेषज्ञ माने जाते हैं, इसीलिए आज उनकी कृतियाँ गुजराती, महाराष्ट्री, बङ्गला तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित हुई हैं। अङ्गरेज़ी में भी उनकी कहानियों के अनुवाद हुए हैं। किसी भी व्यक्ति की रचना में गुण-दोष दोनों होते हैं। यदि प्रेमचन्द जी की रचना में गुण की अधिकता है तो दोष भी हो सकते हैं, और भिन्न दृष्टिकोण से उनकी विवेचना करने का प्रत्येक को अधिकार है। किन्तु हिन्दी साहित्य के लिए, प्रेमचन्द ऐसे कुशल उपन्यास और कहानी-लेखक की रचनाएँ अन्य भाषा-भाषियों के साहित्य के सामने गौरव का विषय हैं।

(अपूर्ण)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारे देश में शिक्षा-प्रचार में कठिनाइयाँ

[श्री० त्रिवर्णीप्रसाद, बी० ए०]

समाज और देश की उन्नति उसके व्यक्तियों की मानसिक उन्नति पर निर्भर है और मानसिक उन्नति के लिए शिक्षा अनिवार्य है। किन्तु वर्त्तमान काल में मानसिक उन्नति के लिए ही नहीं, साधारण जीविका प्राप्त करने के लिए भी शिक्षा आवश्यक है।

हमारे देश की वर्तमान शिक्षाप्रणाली अत्यन्त दोषपूर्ण है और उससे उन आवश्यकताओं की पूर्ति बहुत कम अंशों में होती है, जिनकी पूर्त्ति शिक्षा का प्रधान उद्देश्य होना चाहिए। किन्तु इस दोषपूर्ण शिक्षा को भी प्राप्त करने के लिए हमारे देश के एक साधारण विद्यार्थी को जितनी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, उससे शिक्षा का नाम उपहासप्रद हो जाता है।

हमारा देश संसार के सभी देशों से ग़रीब है, यह एक प्रसिद्ध बात है। किन्तु हमारे ही देश में विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए सब से अधिक व्यय करना पड़ता है, यह भी एक जानी हुई बात है। अनेक देशों में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क हो गई है, किन्तु भारत के बच्चों को इसके लिए भी अपना पेट काट कर ख़र्च करना पड़ता है। जहाँ दूसरे देशों की सरकार प्रति विद्यार्थी आठ रुपए से लेकर सत्तरह रुपए तक ख़र्च करती है, हमारे देश में प्रति विद्यार्थी दो आना ख़र्च किया जाता है! अतः ३१ करोड़ की जन-संख्या वाले देश में केवल एक करोड़ बाइस लाख के लगभग बच्चे और नवयुवक स्कूल-कॉलेजों में दाख़िल हो सकें और केवल आठ प्रतिशत लोग ही शिक्षितों की गिनती में आ सकें, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है!

ग़रीबी हमारी शिक्षा के मार्ग में सब से बड़ी कठिनाई है। हमारे देश की आय प्रति व्यक्ति ६ पैसे प्रति दिन के लगभग है; अर्थात् एक व्यक्ति दो रुपए तेरह आने के लगभग प्रति मास प्राप्त करता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल प्राथमिक शिक्षा भी प्राप्त करना चाहे तो आठ आना के लगभग प्रति मास उसे व्यय करना पड़ेगा। मध्यम श्रेणी के लोग भी, जिन्हें नौकरी या खेती-बारी आदि जीविका के साधन प्राप्त हैं, स्कूलों की पढ़ाई का ख़र्च नहीं बर्दाश्त कर सकते! कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करना तो धनिकों का ही काम है!

शिक्षा-विभाग ने विद्यार्थियों की दरिद्रता की ओर कितना ध्यान दिया है, यह एक-दो उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगा। शिक्षा-विभाग की ओर से प्रत्येक साल पाठ्य पुस्तकों का चुनाव किया जाता है। कुछ वर्ष पहले पाठ्य पुस्तकें संख्या में थोड़ी थीं और वे बहुत दिनों तक क़ायम भी रहती थीं। पुस्तकें थोड़ी होने के कारण विद्यार्थी अच्छी तरह उन्हें पढ़ सकते थे और उनकी योग्यता भी अच्छी होती थी। पाठ्य पुस्तकें बहुत दिनों तक क़ायम रहने से विद्यार्थियों को यह लाभ होता था कि एक विद्यार्थी दूसरे की पढ़ी हुई पुस्तकें लेकर पढ़ सकता था और इस प्रकार पुस्तक ख़रीदने के ख़र्च से बच जाता था। किन्तु अब प्रत्येक साल पाठ्य पुस्तकों में कुछ न कुछ परिवर्तन होता ही रहता है, और इसका फल यह होता है कि एक बार की पढ़ी हुई पुस्तकें अन्य विद्यार्थियों के लिए बेकाम हो जाती हैं, और उन्हें नई पुस्तकें ख़रीदनी पड़ती हैं। दूसरा उदाहरण है फ़ीस में वृद्धि। हाई स्कूल के सब से निचले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दर्जे में कम से कम एक रुपया चार आना फ़ीस है। लाइब्रेरी, गेम (Game), पङ्खा, पानी आदि के लिए अलग लिया जाता है। ग़ैरहाज़िरी के लिए जुर्माना (Absence fine), बुरे आचरण के लिए जुर्माना (Misconduct fine) तथा परीक्षा की फ़ीस (Examination fees) से भी स्कूलों की छोटी-मोटी आमदनी हो जाती है, लेकिन ग़रीब लोगों का तो दिवाला निकल जाता है।

एक तो देश की ग़रीबी, दूसरे स्कूल कॉलेजों की भारी फ़ीस और उसके ऊपर से किताबों के मद में व्यय तथा स्कूल कॉलेजों की अन्य छोटी-मोटी फ़ीस ! पढ़ाने वालों की कमर ही टूट जाती है। कितने लोग इसी पढ़ाई के पीछे कङ्गाल बन जाते हैं, कितने बाप-दादों की जमीन-जायदाद बेंच कर दर-दर ठोकरें खाते फिरते हैं, इसका हद्दोहिसाब है ! फिर भी पढ़ाई समाप्त हो जाने पर जिस लड़के से यह आशा की जाती है कि वह खोई सम्पत्ति को फिर वापस लौटा लेगा और कुल का मुख उज्ज्वल करेगा, वही घर का भार-स्वरूप बन जाता है, नौकरी के सिवा और किसी काम के लायक़ नहीं रह जाता, और नौकरी आजकल कितनी दुष्प्राप्य है, यह कोई छिपी हुई बात नहीं है।

भारतीय बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी दूसरी कठिनाई स्कूल-कॉलेजों की कमी है। नीचे की तालिका से विदित हो जायगा कि पैंतीस करोड़ जनसंख्या वाले इस देश में कितनी शिक्षा-संस्थाएँ हैं :—

सरकार द्वारा स्वीकृत संस्थाएँ	संख्या
युनिवर्सिटियाँ	१६
साधारण कॉलेज	२४२
पेशों के कॉलेज	७१
हाई-स्कूल	२८३४
मिडिल स्कूल	६७५३
प्राइमरी स्कूल	२०१६८८
स्पेशल स्कूल	६१६०
सरकार द्वारा अस्वीकृत संस्थाएँ ...	३४२२२
	२५८०१६

यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि ऐसे कितने ही स्कूल कॉलेज हैं जिनसे साधारण जनता लाभ नहीं उठा सकती। यदि ऐसी संस्थाओं की भी संख्या रहने दें तो लगभग डेढ़ हज़ार व्यक्तियों के पीछे एक संस्था पड़ती है। लेकिन स्कूल कॉलेजों को छोड़ कर केवल प्राइमरी स्कूलों की ओर पाठकों को ज़रा ध्यान देना चाहिए। समूचे भारत में लगभग सात लाख गाँव हैं, और प्राइमरी स्कूलों की संख्या दो लाख से कुछ ही अधिक है, अर्थात् लगभग साढ़े तीन गाँव पीछे एक प्राइमरी स्कूल है ! शहर और गाँव दोनों को मिला कर लगभग प्रति दो हज़ार व्यक्तियों पर एक पाठशाला है ! यदि सरकार द्वारा अस्वीकृत संस्थाएँ और स्पेशल स्कूल अलग कर दिए जाँय तो हमारे देश में शिक्षा संस्थाओं की कमी और भी स्पष्ट हो जाती है !

असाधारण ग़रीबी का सामना करते हुए भी लोग अपने बच्चों को शिक्षित बनाना चाहते हैं। भारतवासियों पर यह कलङ्क नहीं लग सकता कि उन्हें शिक्षा की ओर अभिरुचि नहीं है। किन्तु शिक्षा उनकी पहुँच के बाहर है। गाँव के रहने वाले इतने समर्थ नहीं होते कि वे अपने लड़कों को पढ़ने के लिए शहर भेज सकें और शहर का ख़र्च बर्दाश्त कर सकें। यदि प्रत्येक गाँव में प्राइमरी स्कूल होता तो शायद यहाँ शिक्षितों की संख्या दूसरे देशों से इतनी कम न होती। जहाँ प्राइमरी पाठशालाओं की यह हालत है, वहाँ स्कूल-कॉलेजों की चर्चा व्यर्थ है।

यह तो हुई साधारण स्कूल-कॉलेजों की बात। अब ज़रा पेशा सिखलाने वाले स्कूल-कॉलेजों की ओर दृष्टि दौड़ाइए। समूचे भारत में इस तरह के केवल ७१ कॉलेज हैं ! ऊँट के मुँह में ज़ीरा ! आजकल तो साहित्य और विज्ञान सिखलाने वाले स्कूल-कॉलेजों की अपेक्षा पेशा सिखलाने वाले स्कूल-कॉलेजों की ही संख्या अधिक होनी चाहिए।

अक्सर गाँवों और शहरों के लोग शिक्षा-सम्बन्धी समस्या को हल करने के लिए स्कूल खोलने की कोशिश करते हैं, लेकिन बहुत कम हालतों में सफलता मिलती है। स्कूल खोल लेने पर भी उसका चलाना आसान काम नहीं है। प्रत्येक साल कितने ही नए स्कूल खुलते हैं और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कितने ही खुले हुए स्कूल द्रव्याभाव से बन्द हो जाते हैं। सरकार के पास तो बँधा हुआ बजट है, वह बजट से बाहर सहायता कैसे दे सकती है। और जनता इस आशा से स्कूल खोलती है कि शायद आगे चल कर सरकारी सहायता प्राप्त हो जाय या विद्यार्थियों की ही इतनी संख्या हो जाय कि उनकी फ़ीस के रुपए से ही स्कूल चलने लगे। लेकिन कभी-कभी दोनों ही बातों में निराशा का सामना करना पड़ जाता है। सरकार के रुपए तो सेना के खर्च के लिए और सिविलियनों की लम्बी तनख़्वाहों के लिए हैं। शिक्षा के लिए ऐसे ही क्या उस पर कम भार है। सच्ची बात तो यह है कि यदि भारतवासी यह चाहते हैं कि वे शिक्षा में किसी से पीछे न रहें तो यहाँ के धनवानों को उचित है कि वे अपने धन का सद्व्यय कर सरकार की शिक्षा सम्बन्धी चिन्ता दूर करें। जब तक स्वयं भारतवासी इस सम्बन्ध में त्याग न करेंगे, परिस्थिति नहीं सुधर सकती। शहरों में कितने ही ऐसे बड़े-बड़े धनिक हैं, जिनके लिए एक-दो स्कूलों का खर्च चलाना कठिन नहीं है।

सब से भारी आवश्यकता तो है प्राइमरी पाठशालाओं की। इन पाठशालाओं के चलाने में अधिक व्यय की भी जरूरत नहीं है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की सहायता तो हर हालत में नहीं प्राप्त हो सकती (क्योंकि उसे भी बजट का ख़्याल करना पड़ता है), लेकिन गाँव वाले यदि एक होकर पाठशाला चलाने पर तुल जाँय तो वे बिना किसी भारी कठिनाई के चला सकते हैं।

तीसरी और एक भारी कठिनाई परीक्षा सम्बन्धी है। साधारणतः बिना स्कूल-कॉलेज में पढ़े कोई परीक्षा में नहीं बैठ सकता। बिहार के मिडिल स्कूलों के लिए यह नियम है कि घर पर पढ़कर कोई आखिरी दर्जे में नाम नहीं लिखा सकता। सातवें वर्ग में नाम लिखाने के लिए छठा वर्ग पास करना ही होगा। मैट्रिक के लिए भी पहले ऐसा ही नियम था, किन्तु अब उसमें परिवर्तन किया गया है। फिर भी आठवें वर्ग का विद्यार्थी यदि स्कूल में पढ़ना छोड़ कर दो ही वर्ष के बाद मैट्रिक की परीक्षा में बैठना चाहे तो वह ऐसा नहीं कर सकता। परीक्षा में बैठने के लिए जितने दिनों तक उसे स्कूल में पढ़ना पड़ता उतने दिनों के बाद ही वह परीक्षा दे सकता है। कॉलेज की परीक्षाओं में तो और भी दिक्कतें हैं। मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद यदि कोई बिना कॉलेज में पढ़े आई० ए० की परीक्षा देना चाहे तो साधारण स्थिति में वह ऐसा नहीं कर सकता। हाँ, यदि वही व्यक्ति शिक्षक का काम करता है तो वह परीक्षा दे सकता है, लेकिन वह भी मैट्रिक पास करने के तीन वर्ष बाद ही। और बिना आई० ए० पास किए बी० ए० की परीक्षा नहीं दी जा सकती और न बिना बी० ए० पास किए एम० ए० की।

इन नियन्त्रणों से क्या लाभ है, यह समझ में नहीं आता। योग्यता परीक्षा पास करने से नहीं होती, वह तो अध्ययन पर निर्भर है। अतः कोई व्यक्ति एक-ब-एक बी० ए० या एम० ए० की परीक्षा भी पास कर सकता है। यदि यह कहा जाय कि बीच की परीक्षाएँ पास करना इसलिए अवश्यक है कि उन परीक्षाओं के लिए पढ़ाए जाने वाले विषयों का ज्ञान अनिवार्य्य है, तो यह भी ठीक नहीं जँचता। साधारणतः बचपन में सीखा हुआ गणित ही दैनिक जीवन में काम आता है। बीज-गणित या रेखागणित से कोई काम नहीं लेता और इसलिए अधिकांश विद्यार्थी व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करने पर इन विषयों को भूल से जाते हैं! इतिहास और भूगोल का ज्ञान अनिवार्य्य है, यह मानी हुई बात है, लेकिन छुटपन में इन विषयों का जो साधारण ज्ञान करा दिया जाता है, अधिकांश लोगों के लिए वही काफ़ी होता है और उतना ही काम भी आता है। परीक्षा पास करने के बाद लड़के इन विषयों को भी भूल जाते हैं। जिसे आवश्यकता होती है उसे नए सिरे से अध्ययन करना पड़ता है, क्योंकि परीक्षा के लिए कोई 'अध्ययन' नहीं करता। यदि इस सम्बन्ध में नियन्त्रण रखना आवश्यक ही हो, तो ऐसा नियम बनाया जा सकता है कि जो लोग बिना स्कूल में पढ़े कॉलेज की परीक्षा देना चाहें तो उन्हें उन विषयों में, जिन्हें वे कॉलेज की परीक्षा में नहीं लेना चाहते और जिनका ज्ञान आवश्यक है—साधारण ज्ञान की परीक्षा देनी पड़े। किन्तु यह नियम कि केवल शिक्षक ही बिना कॉलेज में पढ़े ऊँची परीक्षाएँ दे सकते हैं, अत्यन्त अनुचित है। अध्ययन केवल शिक्षकों की ही बपौती नहीं है, खेती करते हुए भी कोई अध्ययन कर सकता है। तब उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अध्ययन की जाँच करने में और उसके लिए सार्टिफ़िकेट देने में शिक्षा-विभाग को क्या हानि है। हाँ, यदि हानि है तो वह है आर्थिक, न कि शिक्षा सम्बन्धी! विद्यार्थी यदि घर पर ही पढ़ कर परीक्षाएँ देने लगेंगे तो स्कूल-कॉलेजों का चलना दूभर हो जाय और यूनिवर्सिटियों को भी धक्का लगे! यदि शिक्षा विभाग ने आर्थिक दृष्टि से ही इन नियन्त्रणों को क़ायम किया है तो यह नीचता है। हजारों-लाखों विद्यार्थी, जो स्वयं अध्ययन कर कॉलेजों की डिग्रियाँ हासिल कर सकते थे, इन नियन्त्रणों के कारण ऐसा करने से वञ्चित किए जाते हैं, और दूसरी ओर उनकी ग़रीबी कॉलेज में जाने से रोकती है। इन नियन्त्रणों के सम्बन्ध में मतभेद हो सकता है। यहाँ पर उनपर विचार करने के लिए स्थान नहीं है। सीधी बात यह है कि इन नियन्त्रणों ने बहुतों को कॉलेजों की डिग्रियाँ प्राप्त करने से रोक रक्खा है; और चूँकि अधिकांश लोग डिग्री के लिए ही पढ़ते हैं, इसलिए केवल ग़रीब विद्यार्थियों के ही मार्ग में नहीं, बल्कि उन लोगों के मार्ग में भी, जो कोई काम-धन्धा करते हुए पढ़ना चाहते हैं, ये बड़ी भारी बाधाएँ हैं।

पाठ्य पुस्तक सम्बन्धी व्यय तथा फ़ीस के सम्बन्ध में लिखा जा चुका है। ये भी हमारी शिक्षा-सम्बन्धी कठिनाइयों में से हैं। एक विषय के लिए कई पाठ्य पुस्तकें न चुनकर यदि एक ही पुस्तक चुनी जाती तो अच्छा था। पाठ्य पुस्तकों में प्रत्येक साल परिवर्त्तन की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता देखकर ही परिवर्त्तन किया जाना चाहिए। किन्तु आजकल तो पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन भी एक पेशा हो रहा है, जो ही चाहता है पाठ्य पुस्तकें लिखकर और शिक्षा विभाग से स्वीकृत कराकर रुपए कमाना चाहता है। लेखकों और प्रकाशकों के लिए यह भले ही लाभ की बात हो, लेकिन जनसाधारण की तो हानि ही होती है। बात यह है कि प्रत्येक स्कूल के अधिकारी शिक्षा विभाग द्वारा चुनी हुई अनेक पुस्तकों में से अपनी रुचि के अनुसार कोई एक पुस्तक चुन लेते हैं, और इस प्रकार किसी भी दो स्कूलों में पाठ्य पुस्तकों के सम्बन्ध में विभिन्नता हो सकती है। अब यदि एक स्कूल का विद्यार्थी साल के बीच ही में कारणवश किसी दूसरे स्कूल में नाम लिखाना चाहे तो सम्भव है कि उसे दूसरी पुस्तकें फिर शुरू से पढ़नी पड़ें और दोबारा खर्च करना पड़े! शोक है, पाठ्य पुस्तकों पर विचार करने वाले सदस्यगण इस सम्बन्ध में विचार नहीं करते और नाहक़ ग़रीब विद्यार्थियों का भार बढ़ाते हैं।

चौथी और अत्यन्त महत्वपूर्ण बात शिक्षा के सम्बन्ध में है। यह हर्ष की बात है कि अब पहले का समय नहीं रहा, जब हाई-स्कूल की निचली कक्षाओं में अङ्गरेज़ी में ही इतिहास और भूगोल रटना पड़ता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि सातवें वर्ग में मुझे अङ्गरेज़ी में ही भूगोल रटाया गया था जब कि मेरे क्लास का कोई भी विद्यार्थी अपना नाम भी शुद्ध-शुद्ध लिख सकने में असमर्थ था। पाँचवें वर्ग में हमें साल भर में सिकन्दर का भारत-आक्रमण विषयक वृत्तान्त रटाया गया था! परीक्षा में भी हमें रटी हुई बात ही लिखनी पड़ती थी, किन्तु हम समझ तो एक भी शब्द नहीं सकते थे! आजकल देशी भाषाओं को माध्यम का स्थान दिया जा रहा है। मैट्रिक क्लास तक इतिहास-भूगोल की शिक्षा देशी भाषाओं में होने लगी है। यदि कॉलेजों में भी देशी भाषाओं के ही माध्यम से शिक्षा दी जाय तो उच्च शिक्षा के प्रचार का मार्ग और सुगम हो जाय। अङ्गरेज़ी एक विदेशी भाषा होने के कारण सभी उसमें योग्यता नहीं प्राप्त कर सकते। अधिकांश विद्यार्थियों को इतिहास भूगोल आदि विषय अङ्गरेज़ी में पढ़ने में कठिनाई होती है। जिस बात को वे अपनी मातृभाषा में एक बार पढ़ कर समझ जाते और याद रखते उसे अङ्गरेज़ी में उन्हें कई बार पढ़ना पड़ता है और समझ जाने पर भी उसे व्यक्त करने में कठिनाई होती है। कॉलेज की परीक्षाओं में फ़ेल होने वाले अधिकांश विद्यार्थियों की असफलता का कारण कई अंशों में अङ्गरेज़ी का माध्यम होना ही है।

विद्यार्थियों को शिक्षा देने में उनकी रुचि का ख़्याल नहीं किया जाता। अनेक ऐसे विद्यार्थी हैं जिन्हें, गणित से रुचि नहीं है, किन्तु साहित्य की ओर उनका काफ़ी झुकाव है। कुछ विद्यार्थियों की स्वाभाविक रुचि गणित की ओर होती है, साहित्य समझने का उनमें माद्दा नहीं होता। किन्तु दोनों प्रकार के विद्यार्थियों को अरुचिकर विषयों में परिश्रम करना पड़ता है और इसका फल यह होता है कि जिस विषय में उनकी रुचि है उसमें भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह कुछ नहीं कर पाते। साहित्य की रुचि वाले विद्यार्थी को गणित में फ़ेल होने पर फिर उसी कक्षा में गणित समझने के लिए रुक जाना पड़ता है। विद्यार्थियों की रुचि का ख़्याल न करने से उनका समय और धन दोनों बर्बाद जाता है। बहुत से लड़के इन्हीं कारणों से विद्यार्थी जीवन में असफल होकर जीवन का कटु अनुभव प्राप्त करने के लिए बाध्य होते हैं। रुचि की ओर ध्यान न देने से ही हमारे देश के विद्यार्थी अधिकाधिक संख्या में फ़ेल होते हैं और उन पर भद्दा होने का दोष मढ़ा जाता है। यदि विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार ही विषयों का निर्वाचन करने का अवसर दिया जाता, तो उनके जीवन का कुछ और ही रूप होता।

शिक्षा विभाग में काम करने वाले यदि उपर्युक्त बाधाओं पर विचार कर आन्दोलन करें तो अधिकांश कठिनाइयों का मिट जाना कोई बड़ी बात नहीं है। हाँ, ग़रीबी की समस्या हल करना मुट्ठी भर आदमियों का काम नहीं है। लेकिन तो भी कॉलेज-स्कूलों में फ़ीस की कमी के लिए अन्दोलन कर इस समस्या को कुछ न कुछ हल किया जा सकता है। जहाँ सरकारी सहायता की आवश्यकता है, वहाँ आन्दोलन होना चाहिए। जहाँ धन की आवश्यकता है वहाँ देश के धनिकों से सहायता की अपील की जा सकती है। ग़रज़ यह कि शिक्षा का काफ़ी प्रचार होने के लिए उपर्युक्त कठिनाइयों का दूर होना अत्यावश्यक है।

* * *

आवश्यक निवेदन

हमें खेद है, बार-बार लिखने पर भी अधिकांश ग्राहक ग्राहिका पत्र-व्यवहार के समय अपना ग्राहक-नम्बर लिखना भूल जाते हैं, उनकी इस लापरवाही से कार्यालय की कितनी हानि होती है, उस पर वे ध्यान नहीं देते, इसका हमें बड़ा खेद है। पाठकों को यह साधारण-सी बात समझ लेना चाहिए कि, एक-एक नाम के बहुत हालतों में सैकड़ों ग्राहक हैं। आठ-दस हज़ार ग्राहकों में से बिना नम्बर के पता लगाना कितना कठिन है, यह ज़रा समझने की बात है।

फल यह होता है, ऐसे ग्राहकों के पत्रोत्तर में तथा उनके आदेशानुसार कार्यवाही करने में असाधारण विलम्ब हो जाता है। उधर वे ख़फ़ा होते हैं इधर हम परेशान! इस सूचना द्वारा हम एक बार फिर ग्राहकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं और उन्हें स्पष्ट बतला देना चाहते हैं कि, जो पत्र बिना ग्राहक-नम्बर के आवेंगे उनपर कोई ध्यान नहीं दिया जावेगा और यदि पता न बदला जा सका, इस कारण उन्हें 'चाँद' न मिला अथवा पत्रोत्तर न गया तो हम इसके लिए ज़िम्मेदार न होंगे। सूचनार्थ निवेदन है।

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीया चकोरी जी और उनका काव्य

[श्री० रामचन्द्र 'मधुवन']

वास्तव में काव्य व्याख्या या परिभाषा का विषय नहीं; उसका सच्चा आनन्द तो केवल उसके रसास्वादन द्वारा ही लिया जा सकता है, क्योंकि रसात्मक वाक्य ही काव्य कहलाता है। जब कवि के अन्तस्तल में भावनाओं, कल्पनाओं और अनुभूतियों की सच्ची छाप पड़ती है तो उसके हृदयस्थ भाव काव्य के रूप में स्वतः वहिर्गत होने लगते हैं। उनमें जीवन के जटिल रहस्यों का एक ऐसा मार्मिक उद्घाटन होता है, जो काव्य-रसिकों को एकबारगी तन्मनस्क कर देता है। ऐसा काव्यानन्द लेते समय सुरसिक और सच्चे प्रेमी-जनों की वास्तव में "गिरा अनैन नैन बिनु वाणी" वाली हालत हो जाती है। फिर उसकी परिभाषा कैसे सम्भव है? उसके लिए तो हार्दिक सरसता और गम्भीरता ही चाहिए। काव्य कवि की अन्तरात्मा की पुकार है। उसके जीवन की कमनीय अनुभूतियों का जीता-जागता इतिहास है। उसकी हृतन्त्री की झङ्कार है, जिससे प्रकृति का रोम-रोम चिरमुखरित है। कवि की अमर वाणी में वह सङ्गीत निहित है, जो हमारी अनुरागात्मक-वृत्ति का सम्बन्ध नैसर्गिक जगत के कण-कण से जोड़ना चाहता है। वास्तव में काव्य कवि की मनोरम भावनाओं का साकार स्वरूप है।

हिन्दी के वर्तमान काव्य के स्वरूप का नव-निर्माण हिन्दी साहित्य के लिए एक नई वस्तु है। इसमें कवि का हृदय वस्तु-जगत तक ही सीमित नहीं रहता; बल्कि एक ऐसे भाव-जगत में परिभ्रमित होता रहता है, जहाँ सदैव असीम आनन्द की मधुवर्षिणी धारा प्रवाहित होती रहती है। उसमें एक नवीन प्रकार का स्फुरण विशेष होता है, जो कवि के चिन्तनशील मस्तिष्क को स्थूल जगत से परे ऐसे भावमय सूक्ष्म संसार में पहुँचा देता है, जो सब प्रकार से आनन्द से ओत-प्रोत है। कल्पना और अनुभूति पर कला का रङ्ग चढ़ा कर उसी आनन्द का अभिव्यञ्जन वर्तमान कविता का लक्ष्य है।

इस काव्य-क्षेत्र के नवीन निर्माण में हमारे महिला-समाज ने आशातीत सफलता पाई है। कारण कि महिलाओं को भावुकता और कोमलता स्वाभाविक ही अधिक परिमाण में प्राप्त होती हैं, अतः नैसर्गिक और भौतिक जगत के भिन्न-भिन्न दृश्यों पर कल्पना और स्वानुभूतियों के द्वारा वे अपनी प्रतिभा का प्रकाश डालने में अधिक कृतकार्य हो सकती हैं। उनकी ममता और करुणा में सदैव उच्च कोटि के कवित्व का सञ्चरण विद्यमान रहता है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा द्वारा वे काव्य में जिस परिमाण में कमनीयता, मधुरता और ओज ला सकती हैं, उस परिमाण में पुरुष नहीं ला सकते।

यों तो कई माताओं और बहिनों ने वर्तमान काव्याङ्गण को अपनी सरस सुधा-धारा से सींचा है; किन्तु स्वर्गीया रामेश्वरी देवी 'चकोरी' की सुकुमार सूक्तियाँ बड़ी ही मार्मिक और सजीव हैं। अपने अनुभूत भावों को आप बड़ी ही सुन्दरता और सरलता से व्यक्त करती थीं। भाव और भाषा तथा कल्पना और कला का जितना मनोरम परिपाक आपके काव्य में हुआ है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं पाया जाता। आपने प्रणय-जन्य विषाद और वेदना का समुचित चित्र खींचने में बड़ी ही स्वाभाविकता और मार्मिकता का परिचय दिया है। आपने बड़ा ही अनुपम और गहरा हृदय पाया था और इसी से अपने काव्य में इतना मिठास और माधुर्य ला सकीं। अफ़सोस है कि हिन्दी की ऐसी उदीयमान् कवियित्री अकाल ही में काल-कवलित हो गईं। हिन्दी के लिए यह एक बड़े दुर्भाग्य की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बात है। यदि आप कुछ दिन और रहतीं तो अवश्य अपने काव्य द्वारा उच्च कोटि के सौन्दर्य्य की सृष्टि करतीं।

शैशव और यौवन की अभिसन्धि जीवन का साम्यवाद है। इस अवस्था में मनुष्य के हृदय में यौवनागम सम्बन्धी जिन मार्मिक भावों का क्रमशः विकास होता है, वे जीवन को एक उलझी हुई पहेली बना देते हैं। उनमें इतना मिठास और आकर्षण होता है, जो किसी भी सौन्दर्य-प्रेमी के हृदय को सरस और जिज्ञासु बनाये बिना नहीं रहता। चकोरी जी ने अपने यौवन सम्बन्धी कमनीय भावनाओं का ऐसे सुन्दर और कौतूहल-पूर्ण शब्दों द्वारा चित्रण किया है, जो काव्य-प्रेमियों को बरबस आत्म-विस्मृत कर देता है। शैशव के सुन्दर आँगन में किस प्रकार यौवन अज्ञात रूप से आकर एक भोले, नन्हे और चञ्चल मन को लज्जा से अभिभूत करके प्रणय का ज्ञान करवाता है, यह चकोरी जी के शब्दों में ही सुनिये—

कुछ कहो कहाँ से आये हो
मतवाली व्यापकता लेकर?
मरकत के प्याले में भर दी
किसकी मादकता लेकर?
शैशव के सुन्दर आँगन में
तुम चुपके से आ गये कहाँ?
भोले-भाले चंचल मन में
लज्जा-रस बरसा गये कहाँ?
ले गये चुरा किस हेतु कहो
वह जीवन शान्त तपस्वी का!
निष्कपट, अलौकिक, निर्विकार,
शुचि, सुन्दर, धीर, मनस्वी का!
उस छोटे से नन्दन बन में,
जिसमें न पुष्प थे, कलियाँ थीं;
थे भाव नहीं, आसक्ति न थी,
केवल प्रमोद रङ्ग-रलियाँ थीं!
लज्जा का अंजन लगा दिया
उन चपल हठीली आँखों में।
ले गये लूट स्वातन्त्र्य सौख्य
हे हठी लुटेरे लाखों में!

स्वर्गीया 'चकोरी'

नन्हें मन ने किस भाँति अचानक
आज प्रणय को पहचाना!
अभ्यन्तर में क्यों सुनती हूँ
पीड़ा काव्य था सिक्त गाना?

कितनी गम्भीर व्यापकता और तन्मयता है। यद्यपि इन लाइनों में न बाहरी सजधज और न किसी प्रकार का चमत्कार विशेष ही है, पर ये रसिकों के हृदय पर एक मीठा असर डालती हैं। वास्तव में यह आत्मा की सच्ची पुकार है, सौन्दर्य का वास्तविक स्वरूप है, सत्य का समात्मक भाव है। इसमें 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' वाला भाव सर्वथा ओत-प्रोत है। रस, अलङ्कार, छन्द अदि तो काव्य के वाह्य परिधान हैं। अपने हृदयस्थ रागात्मक भावों को सुन्दर से सुन्दर शब्दों द्वारा व्यक्त कर देने में ही काव्य का वास्तविक और सच्चा स्वरूप निहित है। वास्तव में इन शब्दों में चकोरी जी ने क़लम ही नहीं तोड़ दी; बल्कि अपने हृदय को निकाल कर रख दिया। जीवन के रहस्यमय पृष्ठों को जन-समुदाय के सामने खोल दिया। "नन्हें मन ने किस भाँति अचानक आज प्रणय को पहचाना" इन लाइनों का प्राण है! एक भोले और नन्हें से मन ने प्रणय को किस प्रकार पहचाना, कवियित्री के लिए यही एक समस्या है, जिसने जीवन को एक जटिल पहेली में उलझा दिया। सरल से हृदय में विविध प्रकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की अभिलाषाएँ इस प्रकार द्वन्द्व करने लगीं, जिसका फल कवित्रियी स्वयं ही नहीं जानतीं :—

"उस सरल हृदय में यह कैसा
अभिलाषाओं का द्वन्द्व हुआ !
उत्थान हुआ, या पतन हुआ,
दुःख हुआ कि आनन्द हुआ !"

जीवन इतना उन्माद-पूर्ण और भ्रान्त है कि उसे उत्थान और पतन अथवा सुख और दुख का तनिक भी ज्ञान नहीं। यहाँ तक कि भावनायें तक अज्ञात सी मालूम होती हैं। हाँ, यह अवश्य मालूम है कि यह मन किसी को अपनाना चाहता है और उसके लिए सदा उन्मत्त सिंधु की तरह उबला करता है :—

"उर अन्तर किसके मिलने को
अज्ञात भावनाएँ भर कर,
उन्मत्त सिन्धु सा उबल पड़ा
अपना लेने किसको बढ़ कर ?"

यौवन के उषाकाल में दम्पति का एक दूसरी ओर आकर्षित होना बड़ा ही मीठा और सरस होता है। उसमें एक विचित्र प्रकार की चुभने वाली उमङ्ग और जिज्ञासा होती है, जो मानव-हृदय को एकबारगी भावोन्माद से विह्वल कर देती है। अपनी इसी जिज्ञासा को चकोरी जी ने कितने सजीव और सुन्दर शब्दों में चित्रित किया है :—

"क्या है यह आकर्षण
कैसा है इसका इतिहास ?
आँखों के मिलते ही बढ़ती
क्यों आँखों की प्यास ?
अधर खोजते रहते अस्फुट
अधरों की मुसकान,
यौवन हाथ पसार माँगता
क्यों यौवन का दान ?"

किन्तु यह जिज्ञासा अधिक दिनों तक नहीं रहती। आकांक्षाओं की तृप्ति होते ही विरक्त भाव आ जाता है और उस समय हृदय अपने आप कहने लगता है :—

एक वासना है उसको सब क्यों करते हैं प्यार ?
अचिर-उमङ्ग जनित यह कैसा है कलुषित व्यापार !

यह अचिर-उमङ्ग से पैदा हुआ वासनामय प्यार वास्तव में एक कलुषित व्यापार मात्र है। इसमें स्थायी आनन्द नहीं है, यह तो और भी अनुताप पैदा करने वाला है, अतः आप इसकी संक्षिप्त परिभाषा करती हैं—

"इसी क्षणिक अस्पष्ट स्वप्न की परिभाषा है पाप,
जिसमें सीमित है ममता के जीवन का अनुताप!"

अतः मनुष्य को प्रतिपल याद रखना चाहिए कि—

"इस यौवन के उषा-काल में छिपी साँझ की बेला।"

वास्तव में इस विश्वविमोहन उषा-काल में प्रणय-जन्य आकर्षण मनुष्य के यौवन की उठती हुई उमङ्गों पर तुषार-पात कर देता है।

देखिए चकोरी जी इस विषय में क्या कहती हैं—

"किसने आज प्रणय-बन्धन को टूक-टूक कर डाला!
अरे! अरे! उसका दी किसने जीवन की यह ज्वाला!
आँसू नहीं हृदय के टुकड़े हैं या मूक निराशा!
स्वप्नों ने है हाय पिलाया मुझको विष का प्याला।
... ...
... ...
भोलेपन में उलझन समझा वह उपहास अनोखा!
कैसी थी वह जटिल पहेली कैसा निर्मम धोखा।"

इस अवस्था में मनुष्य अपने आप को भूल जाता है और उसी भ्रान्ति में अपना सारा अस्तित्व खो बैठता है। जब उसकी समस्त उमङ्गें कुचल दी जाती हैं, तब उसे सत्य का भान होता है और ऐसी दशा में कभी तो वह अपने भोलेपन पर तरस खाता है; कभी अपनी आत्मा और कलुषित कृत्यों को कोसता है और कभी समाज को हृदयहीन कह कर गालियाँ देता है—

"अरे द्रव्य-लोलुप समाज अविवेकी अत्याचारी!
कठिन रूढ़ियों में जकड़ी क्यों तेरी ममता सारी!"

पर अब क्या हो सकता है? जो जीवन अतीत की गोद में सो गया, जो अपने ही हाथों द्वारा कुचल दिया गया, जिसका पतन स्वयं के द्वारा ही हो चुका, उसके लिए तो यही कह कर सन्तोष करना पड़ेगा—

"अब न देखना पगली इस नश्वर यौवन का रङ्ग,
एक सुनहली छाया जिस पर हँसता रहे अनंग!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc No. 2968

चकोरी जी के काव्य में प्रणय-जन्य विषाद और वेदना की ऐसी मर्मविदारिणी कसक है, जो प्रतिपल मनुष्य की सुप्त पीड़ाओं और भावनाओं को जागृत करती रहती है। कालान्तर में वे ही पूर्व के प्रणयोद्भूत उपहास अभिशाप मालूम होने लगते हैं, जो जीवन की रही-सही अभिलाषाओं को भी दलित कर देते हैं। इसी अवस्था में विदित होता है कि वास्तव में 'सर्वस्व' बड़ी महँगी ही नहीं, बल्कि एक अमूल्य वस्तु है और ऐसी अमूल्य, जो एक बार खो जाने पर पुनः किसी भी प्रकार भी प्राप्त नहीं हो सकती। तभी तो चकोरी जी कहती हैं—

निर्दय अब न रुलाओ क्षण भर सोने दो यह पीड़ा,
भस्म भावनाओं को रहने दो न करो यह क्रीड़ा।
और माँगते हो फिर भी सर्वस्व बड़ा है मँहगा!
मोल ले सकोगे क्या मेरी अभिलाषाओं की माला?
तनिक सींचने दो आँखों के जल से सूनी घड़ियाँ!
रुको, पहिन लेने दो अभिलाषाओं की हथकड़ियाँ।

चकोरी जी की कुछ रचनाओं में राष्ट्रीयता भी कूट-कूट कर भरी है। उनसे मालूम होता है कि आपको देश के प्रति अनन्य अनुराग था और उसकी दासता की करुण वेदना आपको सर्वदा व्यथित करती रहती थी। आप लिखती हैं—

"अधिकारों की माँग दासता
का है भीषण पाप।
घात और प्रतिघात पतन
के कहलाते अभिशाप!"

संसार में दूसरों का दास बनकर रहना भी बड़ा भीषण पाप है। पतन के प्रतिघात वास्तव में अभिशाप हैं। चकोरी जी एक अबला होते हुए भी देश के नवयुवकों को कितना ओज-पूर्ण संदेश देती हैं:—

"दासता मिटा दो औ' भगा दो भाव भीरुता को,
भारत वसुन्धरा की वीरो हाँ बचालो लाज।
देश बलिवेदी पर मरना यही हो प्रण,
लेकर अहिंसा-अस्त्र रण के सजा दो साज।
कहर मचा दो आततायियों के झुण्डों पर,
कायर शिखण्डियों के गर्व पै गिरा दो गाज।
मोहिनी स्वराज्य ध्वनि गूँज उठे भारत में,
ऐसी रणभेरी नवयुवको बजा दो आज!"

वास्तव में नवयुवक ही देश के लिए प्रभात-कालीन अरुण के समान हैं। यदि वे ही निष्प्रभ होकर अपनी मुक्ति के लिये प्रयत्नशील न रहें तो अन्धकार अनिवार्य है। उनके जीवन का लक्ष्य तो एकमात्र यही होना चाहिए कि—

"हमारे प्राणों का सङ्गीत जगा दे
जीवन का उद्देश्य।"

चकोरी जी का प्रकृति के प्रति भी अटल अनुराग था। आपने प्रकृति के रङ्गीन रहस्यों का मनोरम चित्र खींच कर यह दिखला दिया कि एक कुशल कलाकार के अन्तर्चक्षु निखिल-निसर्ग के भिन्न-भिन्न दृश्यों को किस रूप में देखते हैं और उनकी पहुँच कहाँ तक है।

आते छिपे दृग मूँदते भानु के,
मेघ के छौने बड़े उत्पाती;
चञ्चला माँ तब दीपक लेकर,
रोष भरी उन्हें ढूँढ़ने आती;
झोली भरे सुर-सुन्दरियाँ,
राज मोतियों की झड़ी सी हैं लगाती;
ओलों के रूप में आते वही,
उन्हें वल्लरियाँ हिय-हार बनाती!
कहीं श्याम चँदोवा तना नभ में,
कहीं फ़र्श बिछा दी धरा ने अहा!
तरु-पल्लवों ने हरी शाल ली ओढ़,
हरे रङ्ग से गया विश्व नहा!
सजें वल्लरियों ने हरे परिधान,
कोई हरे तोरण बाँध रहा,
मलयानिल ने यह पावस आगम,
का सब से जा सँदेशा कहा!

सचमुच इन लाइनों में कवि-भावुकता का अपार प्रदर्शन हुआ है।

आपने कहीं-कहीं नायक और नायिकाओं के चित्र भी बड़े ही मनोरम और सुन्दर खींचे हैं और उनमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर बड़ी ही कलात्मक दृष्टि डाली है।

तात्पर्य यह है कि चकोरी जी की बहुमुखी प्रतिभा ने काव्य के लगभग सभी अङ्गों को थोड़ा-बहुत स्पर्श किया है। साथ ही आपकी शैली भी बहुत ही सरल और प्रसाद-गुण-पूर्ण है, उसमें भाव-प्राचुर्य और शब्द-सङ्गठन का सुन्दर समन्वय हुआ है। अभी तो आपकी आयु बहुत कम थी; परन्तु फिर भी इतने ही अल्प समय में आपने अपार आनन्द की सृष्टि की। प्रौढ़त्व को पहुँचकर वे न जाने क्या-क्या दे जातीं। अस्तु—

चकोरी जी ही के शब्दों में उनके काव्य-कुसुम रसिकों के लिए सचमुच चयन करने योग्य हैं।

सरिते !

[श्री० 'नीरव']

बहती चल सरिते बहती चल !
इन सघन वनों गिरि-शैलों में करती जग का मग मृदु समतल !

आए न विश्व की सीमा में फिर कोई करुणा की पुकार,
कितना जीवन सवेग सुखमय करदे यह संसृति में प्रसाद।
भरती कण कण में कौतूहल !

सुख-दुख के दोनों पुलिनों को प्रति क्षण छूता तेरा प्रवाह,
बहता जाता धीरे-धीरे कितना प्रशान्त कितना अथाह ?
इस तरल हृदय में कितना बल ?

मानव-स्वभाव को सिखला दे अपना उत्सुक उन्मत्त गान,
लहरों की ध्वनि से जाग पड़े भव का सोता अनुभव महान ;
तेरे स्वर में कितनी कलकल ?

नभ अश्रु-कणों से सञ्चित यह कितना वैभव यशराशि-रूप !
दुख-विकल-विन्दुओं से बनते कैसे सुख के मोती अनूप ?
मैं भी तो जानूँ वह कौशल !

❀ ❀ ❀

मैं अपने पथ की सीमा से जब लगूँ पूछने बार-बार,
बतला देना हँसते-हँसते क्षण भर में हो वारिधि अपार—
यह सतत मिलन कितना उज्ज्वल !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

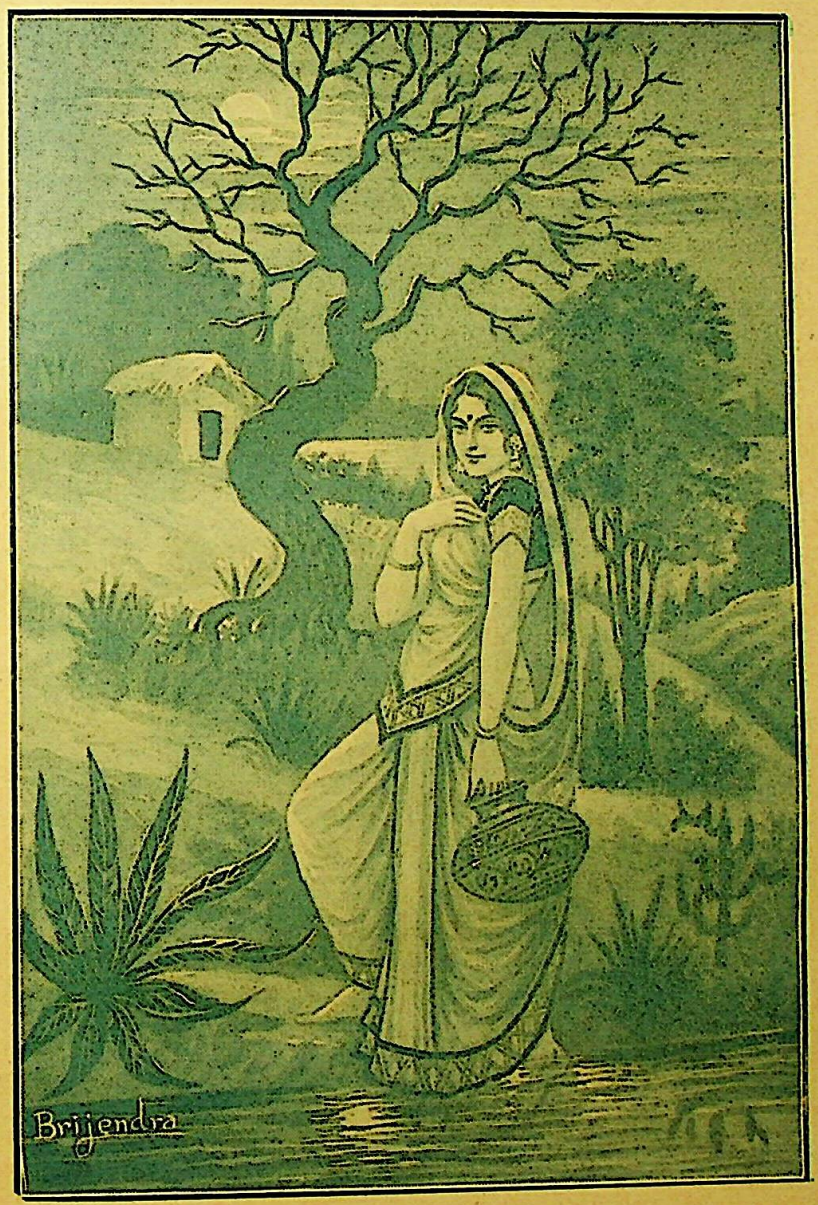

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीर और व्यायाम

इस पुस्तक में ऐसी विधियों का वर्णन किया गया है जिनसे मानव-शरीर का बाहरी और भीतरी प्रत्येक भाग स्वस्थ और मज़बूत बनता है। इसके लिए लेखक ने अन्य बातों के साथ योग सम्बन्धी आसनों का विस्तार-पूर्वक वर्णन किया है और बतलाया है कि उनके द्वारा किस प्रकार मनुष्य के स्वास्थ्य की आश्चर्यजनक उन्नति हो सकती है। मूल्य २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०,

चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

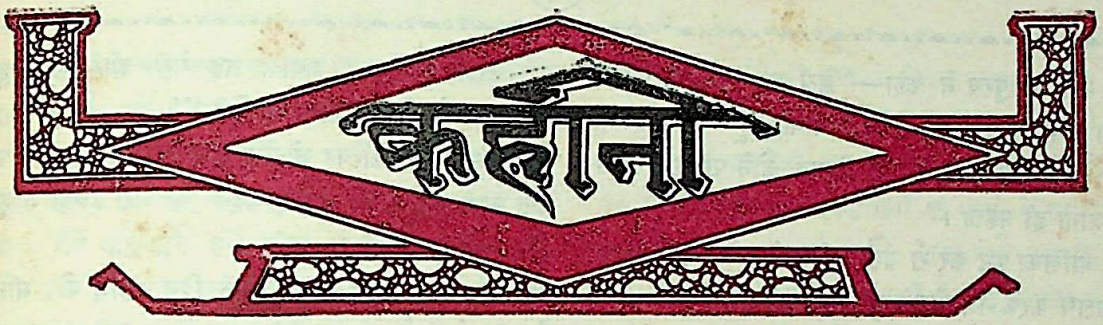

देवदासी

[श्रीमती रत्नकुमारी, बी० ए०]

जिस देवता की सेवा के लिए मैं समर्पित की गई थी, उनके विशाल मन्दिर की प्राचीरों को छूती हुई सी तरङ्गिणी कोशी बहती थी। उसके तट पर अवस्थित घने वृक्ष के नीचे बैठ कर उस पार देखते-देखते घण्टों बिता देना मुझे बड़ा अच्छा लगता था। मुझे स्मरण भी नहीं था, मैं कब वहाँ आई थी। मेरे माता-पिता कौन थे, जो मुझे स्नेहमय भाई-बहिन और परिजनों से छुड़ा कर यहाँ एकाकी और कलुषित जीवन बिताने को छोड़ गए थे। अब तो मैं प्रौढ़ होने आई थी, अतः मेरा काम केवल नई आई हुई देवदासियों को नृत्य-गान की शिक्षा देना मात्र रह गया था। प्रतिदिन मैं पूजार्थियों का आना-जाना देखती थी। उन लोगों का परिवार और आपस का स्नेह देख कर मेरे हृदय में चोट सी लगती थी। मेरा तो समस्त विश्व में होते हुए भी कोई नहीं था। मेरा भी कोई होता जिसे हृदय के पूरे आवेग से प्यार कर सकती। इस अभाव में मैं अपने हृदय के स्नेह को देव-सेवा के लिए आई हुई बालिकाओं की ओर लगाती थी। परन्तु वह स्नेह उतना गहरा नहीं हो पाता था, जितना मैं चाहती थी। वे बालिकाएँ कुछ दिन रो-गाकर सुस्त हो जाती थीं और फिर मन्दिर का जीवन उन्हें बिल्कुल अपने में तल्लीन कर लेता था।

एक दिन मेरे मन का विक्षोभ बहुत बढ़ गया था। मन्दिर के विशाल प्राङ्गण में भक्तों की भीड़ लगी थी। पुजारीगण दर्शन कराने में, चढ़ावा सँभालने में व्यस्त थे। मेरी दृष्टि इधर-उधर घूमती हुई प्राङ्गण के एक कोने में अटक गई। वहाँ पर एक भद्र पुरुष के पास खड़ी हुई वय-प्राप्त बालिका ने मेरा मन आकर्षित कर लिया। तेरह-चौदह वर्ष की अवस्था होगी। उसका और उसके साथी दोनों का ही मुख विषाद की छाया से युक्त था। मैं धीरे-धीरे एक ऐसे स्थान पर जाकर खड़ी हुई जहाँ से उन लोगों को स्पष्ट रूप से देख सकती थी। उनके मुख पर अन्य भक्तों का सा उल्लास नहीं था। मैंने कितनी ही दर्शनार्थ आई हुई बालिकाओं को देखा था, वे परम उल्लास से, चञ्चल नेत्रों से इधर-उधर देखती थीं। उनके हास्योज्ज्वल मुख, उनके मानसिक आनन्द और शान्ति के परिचायक होते थे। परन्तु उसके नेत्रों में मिश्रित विषाद की छाया थी, वह व्याकुल नेत्रों से पुजारियों को, मूर्ति को, देवदासियों को देखती थी और फिर उस पुरुष की ओर देखने लगती थी। उसका यह भाव देख कर मैं उलझन में पड़ गई। उन भद्र पुरुष ने मेरी ओर देखा, कुछ पास आकर वे बोले—"आप बता सकती हैं, प्रधान पुजारी जी से भेंट कब होगी?"

मैंने कहा—"कुछ देर ठहरिए, मैं कहला देती हूँ। वे पूजा से निवृत होकर मिल लेंगे।"

मैं वहाँ से चली आई। परन्तु बालिका का भयार्त मुख मेरे नेत्रों के आगे नाचता ही रहा। मैं जाकर उसी वृक्ष के नीचे बैठ गई। मालूम नहीं कितनी देर तक बैठी रही। किसी ने पीछे से पुकारा—"गोपा माँ!"

मैंने फिर कर देखा, वसु खड़ी थी, मैंने कहा—"क्यों बेटी?"

"तुमको पुजारी जी बुलाते हैं।"

मैंने आकर देखा, पुजारी जी उन्हीं दोनों के पास बैठे थे। बालिका के नेत्रों से आँसू गिर रहे थे। उसकी ओर दिखा कर वे बोले—"गोपा, यह नई देवदासी आई है, मैं तुम्हें सौंपता हूँ। इसे देव-सेवा के योग्य बनाना तुम्हारा काम है।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन भद्र पुरुष ने कहा—"बेटी जा, इन्हें ही अपनी माता समझना। सोच तो सही मीना, तू कब तक हमारे साथ रह सकती थी! वैसे भी विवाह होने पर तुझे पराये घर जाना ही पड़ता।"

बालिका फूट कर रो उठी। पिता ने उसे अपने कण्ठ से अलग करके नेत्र पोंछते हुए विदा ली।

बड़ी कठिनाई से मैं उसे अपनी कोठरी में लाई। उतनी बड़ी लड़की देवदासी के रूप में और कभी नहीं आई थी। इसलिए वह अधिक व्याकुल थी। घर, परिजन, मन्दिर का जीवन, सब उसे दुखी कर रहे थे।

मेरा स्नेह मीना से बहुत बढ़ गया। मैं उसे शिक्षा देती थी, ठीक माता की तरह। वह भी मुझसे बहुत स्नेह करने लगी थी। अपने माता-पिता, भाई-बहिन की बातें वह बड़े उल्लास से करती थी। मैं अब तक केवल कल्पना के भाई-बहिनों और परिजनों के बीच में विचरा करती थी। मीना के मुख से उसके घर वालों की बातें सुन कर मैं भी कुछ वास्तविकता का अनुभव करने लगी थी। एक दिन वह बोली—"गोपा माँ, मैं तो अब तक कब की यहाँ आ गई होती!"

"फिर आई क्यों नहीं बेटी?"

"दादा के मारे।"

"दादा के मारे?"

"हाँ, वे मेरे चचेरे भाई हैं, पर हमारे ही घर रहते हैं। वे कहते थे, मीना को देवदासी बना कर मन्दिर में मैं नहीं जाने दूँगा।"

"पर अब कैसे आने दिया?"

मीना ने लम्बी साँस भर कर कहा—"गोपा माँ, मेरे दुर्भाग्य से वे सत्याग्रही होकर जेल चले गए हैं, उसी बीच में पिता जी मुझे यहाँ कर गए।"

"अच्छा मीना, तुझसे क्या पिता जी को स्नेह नहीं है?"

"है क्यों नहीं माँ, पर वे विवश थे, अन्यथा देवता रुष्ट हो जाते। पर मैं सोचती हूँ, दादा छूटने पर मुझे लेने जरूर आएँगे।"

"पर अब तो तू जाने नहीं पायेगी।"

उसका मुँह उतर गया। वह मेरी ओर देखती हुई बोली—"मैं चोरी से भाग जाऊँगी।"

सरला बालिका का जो मेरे ऊपर विश्वास था, उस पर घात करके पुजारी जी से कुछ कहने की मेरी इच्छा न हुई और न मैंने कहा ही।

तीन-चार मास के बाद एक दिन रात्रि को मीना दौड़ती हुई आई। उसे अभी तक नाचना नहीं आया था, अतः वह बैठ कर सन्ध्या-आरती देखा करती थी, अन्य देवदासियाँ नृत्य करती थीं। उसने कहा—गोपा माँ!

"क्यों बेटी?"

"दादा आये हैं। मैंने उन्हें मन्दिर में देखा है।"

"अच्छा उन्होंने भी देखा है?"

"शायद नहीं गोपा माँ, मैं हाथ जोड़ती हूँ, तुम उन्हें मेरे पास बुला दो"—उसने बड़ी दीनतापूर्वक कहा।

मैं सोच में पड़ गई। कैसे उसकी इच्छा पूरी करूँ। मेरी न जाने क्यों प्रबल इच्छा थी कि उसे उस कलुषित वातावरण से निकलने में सहायता दूँ। मैंने कहा—"अच्छा चल मुझे दिखा दे।"

मीना ने दूर से मुझे दिखाया। अच्छी तरह पहचान कर मैंने मीना को अपनी कोठरी में जाने को कहकर एक पुजारी को बुलाया। मैंने कहा—"देवदत्त, वह खम्भे से लगा जो आदमी खड़ा है उसे मेरे पास बुला लाओ।"

मेरे पास बहुत से मनुष्य आया ही करते थे, अतः देवदत्त को कोई भी सन्देह न हुआ। वह वर्णन मैं नहीं कर सकती। वह अधीरता से द्वार की ओर देख रही थी। देवदत्त के आने की आहट पाकर मैं द्वार पर आ खड़ी हुई। वह अकेला ही था, मुझे देखकर बोला—"गोपा, वह नहीं आया। कहने लगा, मैं उन्हें नहीं जानता और पूछने लगा कि इधर कोई नई देवदासी तो नहीं आई है?"

"तुमने क्या कहा?"

"मुझे सन्देह हुआ कि वह मीना को खोज रहा है। मैंने नहीं कह दिया।"

मैंने देखा, मीना दम रोक कर यह सब सुन रही थी। क्षण भर में ही मैंने अपना मन स्थिर कर लिया और कहा—"तुम भी बड़े विचित्र हो देवदत्त। मैं जानती हूँ वह दिनकर है। वह सदा नई देवदासियों के लिए पूछ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करता है। मेरी वस्तु अब उसके मन से उतर गई है, इसीलिए वह मेरे पास नहीं आया। तुमने नहीं करके बुरा किया।"

वह सकुचा कर चला गया। मैं मीना को सान्त्वना देकर मन्दिर की ओर चली। मीना का भाई अब भी वहाँ था। मैंने धीरे-धीरे उसे मीना की उपस्थिति बता दी, और उसे दूसरे दिन नदी के किनारे वाले वृक्ष के नीचे आने को कहा। उसने कहा—"उपकारिणी माँ, तुम मीना को तैयार रखना। मैं उसे लेकर कल ही चला जाऊँगा।"

मैंने स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन संध्या होने पर मैं मीना को साथ लेकर घूमती-फिरती उस वृक्ष के नीचे जा पहुँची। अन्धकार हो जाने पर वह आया। मीना के नेत्रों से आँसू गिर रहे थे, आवेग के मारे उससे बोला नहीं जा रहा था। मैंने कहा—"तुम शीघ्रता से भागो। सीधे यहीं से नदी पार न करना। थोड़ी दूर चल कर जो घाट है, वहाँ से जाना निरापद होगा।"

परन्तु उस समय मैं नहीं जानती थी कि पुजारी जी को सन्देह हो गया है। देवदत्त ने उनसे कह दिया था। मेरे इतना कहते ही किसी ने मेरा नाम लेकर पुकारा। मैं जल्दी से उन लोगों को कहकर प्रांगण के द्वार पर खड़े पुजारी जी के पास आई। वे बोले—"यहाँ क्या कर रही हो? आज तुम्हारी शिष्याओं को सांध्य-आरती का नृत्य करना है। मीना को भी बुलाओ।"

पता नहीं क्यों उन्हें मुझ पर सन्देह न था कि मैंने उसे भगा दिया है। मैंने कहा—"वह मेरी कोठरी में है, अभी लेकर आती हूँ।"

वे चले गये। मैं भी इधर-उधर करती रही, जिससे देर हो जाने से वे लोग भाग सकें। पर अन्त में जाना ही पड़ा। वहाँ जाकर देखा, पुजारी जी व्यस्त से होकर इधर-उधर घूम रहे हैं। मुझे देख कर बोले—"गोपा, मीना कहाँ है?"

"पता नहीं, मेरी कोठरी में तो है। नहीं, शायद बाहर हो।"

मीना की खोज होने लगी। पुजारी जी बोले—"अभी-अभी महेश कह रहा था कि उसने मीना को एक मनुष्य के साथ जाते देखा है। पहले मैंने सोचा था, कोई और होगा, पर अब सोचता हूँ वही है। वह भाग गई है।"

न जाने कैसे मेरे मुख से निकल गया—"मैं नहीं जानती, शायद यह ठीक हो।"

यदि मैं कह देती, वह मेरी आज्ञा से ही गई है, तब सब शान्त हो जाता। देवदासियों का किसी के साथ उसके घर तक जाना या घूमने-फिरने जाना कोई आपत्तिजनक बात नहीं थी। परन्तु न जाने क्यों मैं वह बहाना न कर सकी। पुजारी जी मुझे, महेश और दो-चार अन्य मनुष्यों को लेकर उसे पकड़ने चले। महेश की दृष्टि बहुत समय से मीना पर थी, अतः वह बड़ी सरगर्मी दिखा रहा था। उसी के वाहन पर सब लोग चलने को तैयार हुए। मैंने सोचा, अब मीना की कुशल नहीं है। क्या करूँ, किसी तरह वह नदी पार हो जाती। मैंने किसी तरह घोड़े के शरीर में चुटकी काट ली। वह बिगड़ गया, उसे ठीक करने में कुछ समय लगा। सब लोग चल दिए। महेश रास्ता बताता गया। हम लोग जब वहाँ पहुँचे तब चाँदनी निकल आई थी। मैंने उत्सुकतापूर्वक नदी पर दृष्टि डाली। एक नौका तीन आरोहियों सहित किनारे से थोड़ी सी दूर पर दीख पड़ी। मेरा हृदय बैठने लगा। पुजारी जी जल्दी-जल्दी तीन-चार नावें लेकर उसके पीछे चले। आगे वाली नौका के अकेले मल्लाह ने बहुत जोर लगाया, परन्तु हम लोगों की नौकाएँ पल-पल में उसके निकट पहुँचती जा रही थीं। मुझे उनकी बातचीत स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ रही थी। वह युवक बोला—

"मीना, वे लोग आ पहुँचे।"

"हाँ दादा, देख रही हूँ।"

"मैं तुझे बचा नहीं सका मीना।"

"क्यों नहीं दादा, यह देखो।"

मैं देखती रही, एक क्षण में ही वह नाव पर से सरिता के गम्भीर जल में कूद पड़ी। मुझे ज्ञात नहीं, फिर क्या हुआ। मैं संज्ञाहीन हो गई। चेत आने पर अपने को मन्दिर में पाया। अब भी जब मैं उस वृक्ष के नीचे बैठ कर कोशी की तरङ्गों को देखती हूँ, तब मेरे कानों में वही वाक्य गूँज उठता है—"मीना, मैं तुझे बचा न सका।"*

* प्रयाग महिला विद्यापीठ द्वारा आयोजित महिला-गल्प-सम्मेलन में पठित।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दू-जीवन की समस्या

[श्री० नन्दकिशोर तिवारी]

विगत १७वीं फ़रवरी का दिन बङ्गाल प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा और समस्त बङ्गाली जनता के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और चिरस्मरणीय दिन रहेगा। उस दिन बङ्गाल प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा ने 'बेत मारने का बिल' (Whipping Bill) नामक एक बहुत ही उपयोगी बिल पास किया।

परन्तु इसके पहले कि उस अत्यन्त उपयोगी बिल तथा उसके लाभ की चर्चा की जाय, मैं बङ्गाल सरकार तथा उसके क़ानूनी सदस्य सर ब्रजेन्द्रलाल मित्र को साधुवाद दिये बिना नहीं रह सकता; कारण स्वयं बङ्गाल सरकार की प्रेरणा के द्वारा सर मित्र ने उस बिल को व्यवस्थापिका सभा में प्रस्ताव के रूप में उपस्थित किया था। कहना नहीं होगा कि बङ्गाल सरकार ने इस महत्वपूर्ण बिल को उपस्थित कर जिस दूरदर्शिता तथा लोक-कल्याण की भावना का परिचय दिया है, उसके लिए बङ्गाल ही नहीं, वरन् समस्त भारतवर्ष एवं संसार की समस्त मातृ-जाति चिर आभारी रहेगी।

सच बात तो यह है कि बङ्गाल आज दो शासनों के भार से दबा हुआ है और ये शासन प्रायः समानान्तर रेखाओं की भाँति एक दूसरे से पृथक् होते हुए भी साथ-साथ जा रहे हैं। एक शासन है भारत की अङ्गरेज़ी सरकार का और दूसरा आततायी गुण्डों का। बङ्गाल की छाती पर आज जहाँ पग-पग पर शक्तिशाली एवं वैभवपूर्ण ब्रिटिश सरकार की बहादुर सेना और पुलिस मौजूद है; वहाँ उसी अभागे बङ्गाल के सुन्दर उद्यान में आततायी गुण्डों का जाल सङ्गठित रूप से हर जगह बिछा हुआ है। परिस्थिति यहाँ तक भयानक हो गई है कि बङ्गाल सरकार को विवश होकर 'बेत मारने वाले बिल' का आश्रय लेना पड़ा। आये दिन बङ्गाल में स्त्रियों को बरगलाने, उनके साथ बलात्कार करने और बलपूर्वक अथवा फुसला कर उन्हें भगाने के अपराध जिस भाँति बढ़ रहे हैं, उनकी मर्मस्पर्शी, दारुण एवं रोमाञ्चकारी कहानियाँ सुन कर आत्मा सहसा काँप उठती है और 'पुरुषत्व' का उन्नत-मस्तक लज्जा से आप ही झुक जाता है।

> **हमारी अन्य समस्याओं के समान ही हिन्दू-नारियों की अपहरण-समस्या भी प्रतिदिन उग्र से उग्रतर होती जा रही है। तिवारी जी ने इस समस्या पर बहुत निरीक्षण के उपरान्त और जाँच-पड़ताल करके सप्रमाण तथा साधिकार लेखनी उठाई है। हमारा अनुरोध है कि पाठक मातृ-जाति के लिए इस अत्यावश्यकीय विषय को मनोयोगपूर्वक पढ़ें और अपने कर्तव्याकर्तव्य का निश्चय करें।**
>
> —सम्पा० 'चाँद'

बङ्गाल की जनता की, तथा व्यवस्थापिका सभा में, यह माँग वर्षों से थी कि मातृ-जाति के प्रति किये जाने वाले ऐसे जघन्य अपराधों को रोकने के निमित्त आततायी गुण्डों को जेल के साथ ही बेत मारने की भी सज़ा दी जानी चाहिए। बङ्गाल सरकार ने जनता और व्यवस्थापिका सभा की इस माँग पर लोकमत जानने के लिए सर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१९३३ में ही बङ्गाल के प्रत्येक डिवीजन के कमिश्नर के पास सर्कुलर भेज कर उनसे यह अनुरोध किया था कि इस सम्बन्ध में वे सरकारी तथा गैर सरकारी मत संग्रह करें। परिणाम-स्वरूप उसी साल सरकार इस निर्णय पर पहुँच चुकी थी कि स्त्रियों के प्रति किये जाने वाले इन नारकीय अपराधों के प्रतिकार के निमित्त जनता का अत्यधिक भाग इस पक्ष में है कि गुण्डों को जेल के साथ बेत मारे जाने का भी दण्ड दिया जाय।

इसी निर्णय के आधार पर उस दिन सरकार की ओर से व्यवस्थापिका सभा में यह बिल प्रस्ताव के रूप में उपस्थित किया गया और मुसलमान सदस्यों के उत्तेजना-पूर्ण विरोध के बाद भी पास हो गया। जिस रूप में यह बिल पास हुआ, उसके अनुसार भारतीय दण्ड-विधान (Indian Penal Code) की निम्नलिखित धाराओं के अभियुक्तों को जेल के साथ ही बेत मारने की भी सजा दी जायगी :—

(१) ३६६ धारा—विवाह आदि के लिए विवश करने के उद्देश्य से किसी स्त्री को भगाना या चुराना, जहाँ पर अपराध करने वाले एक से अधिक व्यक्ति हों।

(२) ३६६ क धारा—वेश्या-कर्म कराने के लिए अप्राप्त वयस्क बालिकाओं को प्राप्त करना।

(३) ३६६ ख धारा—विदेशों से वेश्या-कर्म के लिए स्त्री ले आना।

(४) ३६७ धारा—भारी चोट पहुँचाने, गुलाम बना कर रखने आदि के उद्देश्य से स्त्रियों को भगाना अथवा चुराना।

(५) ३७२ धारा—अप्राप्त वयस्क लड़की को वेश्या-कर्म कराने के लिए बेचना आदि।

३७३ धारा—वेश्या-कर्म आदि के उद्देश्य से अप्राप्त वयस्क लड़की खरीदना।

कहना नहीं होगा कि उपरोक्त धाराओं के नारकीय अपराधियों के लिए, उनके अपराधों की गुरुता की दृष्टि से, यह बिल सर्वथा उचित और उपयोगी है। आज समस्त भारत में आततायी गुण्डों के बहुत ही सुदृढ़ एवं सुसङ्गठित दल हैं, जिनका प्रधान कार्य स्त्रियों को भगा कर उनके क्रय-विक्रय का बाजार तेज़ रखना ही है। इस स्थान पर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि स्त्रियों के भगाने तथा उनके क्रय-विक्रय से मेरा आशय केवल हिन्दू-स्त्रियों से ही है; कारण मुसलमान स्त्रियाँ क्रय-विक्रय के लिए नहीं भगाई जातीं और यदि भगाई भी जाती हैं तो उनकी संख्या इतनी नगण्य है कि औसत के अनुसार हिन्दू-स्त्रियों के मुक़ाबले में उनका स्थान नहीं के बराबर ही है। दूसरी बात यह है कि हिन्दू-स्त्रियों के भगाए जाने के आवरण में अधिकांश मुसलमान गुण्डों की मज़हब-परस्ती है—वह मज़हबपरस्ती, जिसकी आग कुछ स्वार्थलोलुप साम्प्रदायिक मुसलमान नेताओं ने लगभग विगत पन्द्रह वर्षों से लगाई है! इस मज़हब-परस्ती का दुष्परिणाम यह हुआ है कि आज समस्त भारत में अधिकांश मुसलमानों के सामने एक बहुत महत्वपूर्ण कार्यक्रम हिन्दू-स्त्रियों को किसी प्रकार भगा, उन्हें इस्लाम धर्म में दीक्षित कर भारत की मुसलमान-आबादी को बढ़ाना है। विस्तार-भय से इस सम्बन्ध में यहाँ अधिक नहीं लिखा जा सकता। 'चाँद' के किसी आगामी अङ्क में सुविधानुसार मैं इस विषय पर प्रकाश डालने का यत्न करूँगा। अस्तु—

ऐसे तो साधारणतः समस्त भारत में और विशेषकर भारत के उन भागों में, जहाँ मुसलमानी आबादी अधिक है अथवा जहाँ मुस्लिम शासन के प्रभाव से हिन्दू-प्रजा पीड़ित है, हिन्दू-स्त्रियों के भगाने का बाज़ार बहुत गर्म है; परन्तु बङ्गाल और विशेषतः पूर्वीय बङ्गाल की अवस्था भयावह है। बङ्गाल की सुन्दर भूमि में आज गुण्डाराज का आतङ्क इस प्रकार दृढ़ और सङ्गठित रूप में है कि उसे मिटाने के लिए केवल बङ्गाल सरकार को ही नहीं, बङ्गाल के समस्त हिन्दुओं को ही नहीं, वरन् अखिल हिन्दू जाति को सतर्क रहना पड़ेगा। यद्यपि सीमाप्रान्त और पञ्जाब तथा सिन्ध में भी—जहाँ हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानी आबादी बहुत अधिक है—हिन्दू-जीवन सङ्कटों से खाली नहीं है, तथापि बङ्गाल की बात निराली है। बङ्गाल का हिन्दू-जीवन और बङ्गाली बहिनों का सतीत्व आज एक ज्वालामुखी पर्वत के ऊँचे शिखर पर है—उस ज्वालामुखी के शिखर पर जिसके एक ही तीव्र विस्फोट में बङ्गाल का समस्त हिन्दू-समाज एवं बङ्गाल की हिन्दू-सभ्यता विध्वस्त हो जायगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह बात ठीक है कि गुण्डों में मुसलमान और हिन्दू दोनों ही सम्मिलित हैं; पर हिन्दू-गुण्डों की नरक-पिपासा केवल काम-वासना तक ही सीमित है। इसके विपरीत मुसलमान गुण्डों के भीतर काम-पिपासा की ही नहीं, वरन् उससे भी अधिक 'मजहब-परस्ती' की प्रेरणा है। प्रायः सभी मुसलमान-गुण्डे हिन्दू-स्त्रियों को इसलिए भगाते हैं कि उनके द्वारा वे अपनी आबादी बढ़ायें। उनका ऐसा धार्मिक विश्वास है कि छल, कपट, धोखा अथवा किसी भी उचित-अनुचित उपाय से हिन्दू को मुसलमान बनाने में केवल सवाब ही सवाब है और यदि वे अपने जीवन में एक भी हिन्दू को मुसलमान बना सके तो उसके बदले स्वर्ग में उनके जीवन के समस्त अपराध ही माफ़ नहीं हो जायेंगे, वरन् 'हूर' और 'गिलमे' भी मिलेंगे। और सब से दुखद बात तो यह है कि उनके इस कार्य में उनके नेता, चाहे वे धार्मिक अथवा राजनैतिक किसी विचार के हों, सदा उनको शह देते रहे हैं। विस्तार-भय से इस सम्बन्ध में यहाँ अधिक नहीं लिखा जा सकता। यहाँ तो मेरा तात्पर्य केवल बङ्गाल की दशा का ही चित्रण करना है। अस्तु—

बङ्गाल में सङ्गठित 'गुण्डावाद' का जो आतङ्क है, उसका सहज ही अनुमान एक घटना से हो सकता है। उस दिन स्वर्गीय सम्राट् पञ्चम जॉर्ज की रजन्त-जयन्ती के अवसर पर जब कि सारे कलकत्ता नगर में पुलीस और सेना का विशेष रूप से प्रबन्ध था, एक ऐसी घटना घटी, जिसके स्मरण मात्र से रोमाञ्च हो आता है। घटना इस प्रकार है—एक युवती अपने पिता और परिवार वालों के साथ रजत जयन्ती का उत्सव देखने गई थी। वहाँ कुछ गुण्डे पहुँच गये। अपार जन-संख्या थी। पुलीस का भी पहरा था। गुण्डों ने उस युवती को घेर लिया। इतने में दो सज्जन और भी आये। गुण्डों से उनकी ठन गई। युवती के परिवार वाले और उक्त दोनों सज्जन एक ओर थे, गुण्डे दूसरी ओर। गुण्डों की संख्या अधिक थी। वे उस युवती को लेकर भाग गये। बहुत हो-हल्ला मचा। अन्त में सवार पुलीस के बहुत प्रयत्न से वह युवती तो पिता को मिल गई, पर पुलीस उन गुण्डों को गिरफ़्तार न कर सकी।

बृटिश साम्राज्य संसार का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य है। कहावत प्रसिद्ध है कि बृटिश साम्राज्य में सूर्य कभी नहीं डूबता। कलकत्ता बृटिश साम्राज्य का द्वितीय नगर है—वैभव और महानता, दोनों में। कलकत्ता भारत का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध नगर है। कलकत्ता भारत की शक्तिशाली बृटिश सरकार की सेना और पुलीस का एक बहुत बड़ा अड्डा है। फ़ोर्ट विलियम में फहराने वाला गगन-विचुम्बी बृटिश झण्डा साम्राज्य की शक्ति और वैभव का स्मारक है। सम्राट की रजत-जयन्ती के अवसर पर एक छोर से दूसरी छोर तक सर्वत्र ही सुचारु रूप से पैदल तथा घुड़सवार पुलीस के द्वारा गुथे हुए कलकत्ता की महान् नगरी के ऊपर जनसमूह में यदि पुलीस और सेना की नाक के नीचे गुण्डे पिता से पुत्री और भाई से बहिन छीन कर भाग सकते हैं और यदि पुलीस उन्हें गिरफ़्तार नहीं कर सकती तो यह केवल बङ्गाल सरकार के लिए ही नहीं, वरन् देश के समस्त मातृत्व और पितृत्व के लिए भी, लज्जा से सिर झुका लेने की बात है !!!

परन्तु बात यहीं तक समाप्त नहीं होती। यदि कलकत्ता में, जहाँ कि सरकार की समस्त शक्ति कुछ मिनटों में ही केन्द्रीभूत की जा सकती है, गुण्डों का इतना बड़ा सङ्गठन, शक्ति और प्रभाव है, तो उन देहातों की क्या दशा होगी जहाँ लोग धन, जन, शक्ति, प्रभाव इत्यादि से भरपूर नहीं हैं और जहाँ पुलिस अथवा सेना की सहायता शीघ्र नहीं प्राप्त हो सकती। संयुक्त-प्रान्त अथवा बिहार, बम्बई अथवा मद्रास प्रान्त के हिन्दुओं के लिए उस स्थिति को समझना ज़रा कठिन है। पूर्वीय बङ्गाल में अधिकांश गाँवों में हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों की आबादी बहुत अधिक है। कहीं-कहीं तो बीसों मील तक लगातार मुसलमानों की बस्तियाँ हैं और बीच में कहीं-कहीं हिन्दू हैं भी तो अल्प संख्या में। ऐसे स्थानों में तथा उन अधिकांश गाँवों में, जहाँ मुसलमान हिन्दुओं से केवल संख्या में ही अधिक नहीं, वरन् शारीरिक शक्ति और सङ्गठन में भी सब प्रकार से बढ़े-चढ़े हैं—अवस्था इतनी भयानक है जिसका वर्णन शक्ति के बाहर है। इन गाँवों में मुसलमान-गुण्डों के भिन्न-भिन्न सङ्गठित गिरोह हैं, जो रात के समय अपने हिन्दू-पड़ोसियों की स्त्रियों का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सतीत्व नष्ट करने के उद्देश्य से चक्कर देना आरम्भ कर देते हैं।

बङ्गाल में 'हिन्दू मिशन' नामक एक संस्था बहुत अच्छा कार्य कर रही है। बङ्गाली हिन्दुओं ने स्थान-स्थान पर हिन्दू-सभाएँ भी स्थापित की हैं। वे सभाएँ भी यथाशक्ति सन्तोषजनक कार्य कर रही हैं। फिर भी बङ्गाल में जिस सङ्गठन एवं जिस ठोस कार्य की आवश्यकता है, उसकी आंशिक पूर्त्ति भी नहीं हो रही है। जसोर जिले की हिन्दू-सभा के कुछ कार्यकर्त्ता एक गाँव में गये थे। उस गाँव के पास ही एक दूसरे गाँव का हिन्दू-नवयुवक उनसे मिलने गया और उनके सम्मुख एक बड़ी ही दुखद और मर्मस्पर्शी कहानी कही। उसका आशय यह था कि उस गाँव में केवल एक ही हिन्दू-परिवार है और शेष आबादी मुसलमानों की है। रात के समय गुण्डों का गिरोह नियमपूर्वक वहाँ दाव, भाला आदि घातक हथियारों से सुसज्जित होकर आता है और पति को घर से बाहर निकल जाने की आज्ञा दे देता है। अभागा पति प्राण के भय के मारे घर से बाहर हो जाता है और गुण्डे एक-एक कर उसके घर में प्रवेश कर उसकी स्त्री पर पाशविक अत्याचार करते हैं! यह घटना पिछले तीन वर्षों से हो रही थी।

हिन्दू-सभा के कार्यकर्त्ता उस अभागे पति से मिले। वह अपनी नारकीय अवस्था उनसे छिपाने का प्रयत्न करने लगा; कुछ तो गुण्डों के डर से और कुछ समाज के डर से। सब से दयनीय बात तो यह थी कि वह तथा उसके परिवार वाले गुण्डों के अत्याचार से पीड़ित होकर अपने उस नारकीय जीवन से त्राण पाने के लिए अपने पूर्वजों की भूमि—उस गाँव को छोड़ने के लिए तैयार थे; पर उन गुण्डों के डर से वे ऐसा भी नहीं कर सकते थे। गुण्डे उस स्त्री को अन्यत्र जाने देने के लिए तैयार न थे! यह कहानी किसी भी हिन्दू तथा भले और संभ्रान्त ईसाई अथवा मुसलमान के हृदय में एक टीस पैदा कर देगी! कोई भी भला मुसलमान अथवा ईसाई यदि इस घटना पर निष्पक्ष भाव से सोचे तो उसके रोंगटे खड़े हो जायँगे; पर यह अपने तरह की केवल एक ही कहानी नहीं है। बङ्गाल और विशेषकर पूर्वीय बङ्गाल में आज भी नित्य ऐसी असंख्य कहानियाँ घट रही हैं। वहाँ के अभागे हिन्दू पुलीस अथवा अदालत की शरण नहीं ले सकते। उनकी आँखों के सामने उनकी बहनों, उनकी माताओं, उनकी पुत्रियों और उनकी पत्नियों का अपमान हो रहा है—उनके सामने ही उनकी बहिनें और माताएँ उनके घरों से बलपूर्वक मुसलमान गुण्डों के द्वारा छीन ली जाती हैं, पर वे इसका प्रतिकार नहीं कर सकते!! कारण? कारण अनेकों हैं! कहीं तो समाज का भय है। कहीं अदालत की शरण लेने के लिए अर्थाभाव है। कहीं थाने के अधिकारी मुसलमान हैं और वे उनकी शिकायतों को केवल अनसुनी ही नहीं करते, वरन् प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से वे उन अभागे सन्तप्त हिन्दुओं को पुलीस तथा अदालत की शरण लेने में बाधा पहुँचाते हैं। दूसरे हिन्दुओं में आपस का सङ्गठन तो है नहीं; अन्य हिन्दू जब यह सोचते हैं कि उन्हें उन्हीं बहुसंख्यक मुसलमानों के बीच में रहना है तो वे अभागे जान और माल के भय के मारे मुसलमानों का ही साथ देना उचित समझते हैं। इस दशा में उन सताये गये हिन्दुओं को गवाहों की भी कठिनाई पड़ती है। ये सभी कारण हैं। पर इन सब कारणों से बड़ा कारण यह है कि यदि वे उन मुसलमान गुण्डों के विरुद्ध अदालत की शरण लें भी और अदालत के द्वारा कुछ गुण्डों को कुछ महीनों अथवा कुछ वर्षों के लिए जेल हो भी जाय, तब भी तो उनकी स्थिति में कोई अन्तर नहीं आता; कारण कतिपय व्यक्तियों के जेल जाने पर गुण्डा समाज कम तो नहीं होता। इसके विपरीत जब उन गुण्डों में अपने साथियों के दण्ड के कारण प्रतिकार की भावना जगेगी, तो उन अभागे सन्तप्त हिन्दुओं की जान, माल तथा आबरू और भी अधिक सङ्कट में पड़ जायगी। इस प्रश्न का एक दूसरा पहलू भी है! वह है उन अभागिनी अपहृता नारियों का। हिन्दुओं के विरुद्ध मुसलमान गुण्डों का इतना अच्छा सङ्गठन है कि एक बार कोई हिन्दू-स्त्री यदि उनके चङ्गुल में पड़ गई तो कदाचित् ही उस अभागिनी को सूर्य की रोशनी देखने को मिले। ऐसे दृष्टान्त कम नहीं हैं, जब कि अपहृता नारियों के सम्बन्धियों के अभियोग पर पुलिस बड़ी सरगर्मी से तलाश करने पर भी उन अभागिनियों का पता लगाने से असमर्थ रही।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसका कारण स्पष्ट है। बुरे से बुरा, कोई भी मुसलमान यदि किसी हिन्दू-स्त्री को चुपके से, बलपूर्वक अथवा किसी भी अनुचित उपाय से भगा ले जाता है, तो कुछ संभ्रान्त से संभ्रान्त मुसलमान भी उस स्त्री को छिपाने में तथा हर प्रकार से उस अभियुक्त को सहायता देने में बाज़ नहीं आते! तात्पर्य यह कि उनके गुण्डों के पापपूर्ण कार्य भी उनके धर्म के प्रश्न का रूप धारण कर लेते हैं। दूसरी बाधा यह है कि अधिकांश अपहृता नारियों को हिन्दू अपनी मूर्खता से स्वीकार ही नहीं करते। तीसरी बात यह है कि बङ्गाल में जहाँ ये बातें अधिकांश रूप में घटती हैं, वहाँ मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं की अपेक्षा इतनी अधिक है तथा गुण्डों का इतना ज़बरदस्त सङ्गठन है, और उस सङ्गठन को 'मज़हब' का इतना विषैला रूप दे दिया गया है कि यदि परिवार वालों ने उन अभागिनियों को अपना भी लिया तो गुण्डों को उन्हें पुनः बलपूर्वक भगाने में कुछ विशेष प्रयत्न और परिश्रम नहीं करना पड़ता। बात स्पष्ट है और वह यह कि किसी हिन्दू-स्त्री अथवा लड़के को भगाने में, किसी भी हिन्दू अथवा अन्य धर्मावलम्बी को मुसलमान बनाने में, हमारे अनेक मुसलमान भाई एक ही भावना, एक ही उद्देश्य रखते हैं। वह उद्देश्य है उचित अथवा अनुचित रूप से दूसरे धर्मावलम्बियों के मूल्य पर इस्लाम की अभिवृद्धि करना।

दो-एक उदाहरणों से बातें कुछ स्पष्ट हो जायँगी। एक गाँव में, जहाँ कि मुसलमानों की अपेक्षा हिन्दुओं की आबादी ही अधिक नहीं थी, वरन् जहाँ उनकी भीरुता भी मुसलमानों की अपेक्षा वृद्धि पर थी, एक घटना इस प्रकार घटी। एक परिवार में माँ, उसका नवयुवक पुत्र और उसकी नवविवाहिता पत्नी, कुल तीन प्राणी थे। माँ और बेटे घर से कुछ दूर पर काली बाड़ी में पूजा करने गये। लौटने पर जब बहू घर में न मिली तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। बहुत परेशानी के बाद गुण्डों ने उस अभागिनी पर पाशविक अत्याचार करके उसे सन्ध्या समय उसके घर पहुँचा दिया; पर उन्होंने उसे अपने घर वालों को पूरा सावधान करने के लिए कह दिया था कि यदि पुलीस को इस बात की ख़बर दी गई तो घर के सभी प्राणी मार डाले जायँगे। गुण्डों के आतङ्क के मारे वह बात वहीं दबा दी गई। एक दूसरे गाँव की बात है कि कुछ महिलाएँ अपने ही गाँव के एक विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के बाद अपने घरों को लौट रही थीं कि गुण्डे कुछ को लेकर भाग गये। एक के अतिरिक्त शेष थोड़ी देर के बाद ही भ्रष्ट कर लौटा दी गईं; पर वह 'एक' दो दिनों के बाद अर्ध-जीवित अवस्था में लौटाई गई। गुण्डे सभी उसी गाँव के और परिचित थे; पर पुलीस के कानों तक यह बात न जा सकी! जान, माल का भय था! पुलीस-थाना से दूर, उन देहातों में अभागी हिन्दू-जनता के लिए बृटिशराज से भी अधिक आतङ्क गुण्डाराज का है!! वहाँ गुण्डे ही उनकी जान, माल और आबरू के स्वामी हैं!!!

लगभग ढाई वर्ष पहले की बात है। समाज कल्याण-समिति (Social Welfare Institute) के कुछ कार्यकर्त्ता जसोर ज़िले के एक गाँव में पुलीस के साथ एक युवती का उद्धार करने गये। उस अभागिनी का नाम हेमन्तकुमारी था। अवस्था उसकी बीस वर्ष थी। इसके पहले भी वह मुसलमान गुण्डों के द्वारा दो बार बलपूर्वक भगायी जा चुकी थी। सबसे पहली बार भगाई जाने के समय उसकी अवस्था केवल तेरह वर्ष की थी। उस बार भगाने वाले गुण्डे पकड़े गये। उन पर मुक़दमा चला और उन्हें जेल की सज़ा मिली। दूसरी बार जब गुण्डों ने उसे बलपूर्वक भगाया तो दो दिनों के बाद वह इस शर्त पर लौटा दी गई कि उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई न की जायगी। यह उसके भगाये जाने का तीसरा अवसर था। पुलीस के साथ उक्त कार्यकर्त्ताओं ने उसका उद्धार किया सही, पर उस समय उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब कि उस अभागिनी युवती ने अपने बयान में स्वीकार किया—"मैंने अभियुक्तों के साथ अपनी इच्छा और स्वीकृति से अपना घर त्याग दिया है।" कार्यकर्त्ताओं के बहुत समझाने और पुनः अपने घर में जाने के लिए प्रार्थना करने पर, पहले तो वह बोली ही नहीं; पर पीछे घृणा और क्रोध से कहा—"आज से तीन दिन पहले तुम लोग कहाँ थे, जब कि मुसलमानों ने दिन-दहाड़े मुझे बलपूर्वक उस घर से निकाला था और जब मैं असहायावस्था में रो-रोकर सहायता के लिए चिल्ला रही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थी ? कायरो, तुम चले जाओ, यदि मैं पुनः तुम्हारे साथ तुम्हारे समाज में जाऊँगी तो मेरी फिर वही दशा होगी, जो तीन बार हो चुकी है। तुम लोगों में मेरी रक्षा करने की न तो इच्छा ही है और न शक्ति ही ! जब इन लोगों ने दो बार मुझे भगाया तो तुम लोगों ने तनिक भी विरोध नहीं किया। अब मैं तुम्हारे समाज से सम्बन्ध रख कर पुनः अपने व्यक्तित्व का ऐसा घोर अपमान कराना नहीं चाहती।"

कार्यकर्त्ताओं को अनेक प्रार्थनाओं पर हेमन्तकुमारी पुनः हिन्दू-समाज में न लौट सकी ! भारत के पच्चीस करोड़ हिन्दुओं को उस अभागिनी के उपर्युक्त शब्दों का महत्व समझना चाहिए और अपना मस्तक लज्जा से झुका लेना चाहिए ! हिन्दू जाति के लिए आज दो ही पथ हैं—या तो वह अपने मुँह में कालिख लगा कर भारत-सागर के अन्तस्तल में डूब जाय अथवा अपने सङ्गठन के द्वारा एक शरीर, एक वाणी, एक मन और एक प्राण होकर अपनी बहिनों और माताओं की रक्षा के लिए तैयार हो जाय। मातृजाति चाहे किसी समाज अथवा धर्म की हो, उसके प्रति सम्मान और आदर प्रकट करना ही हिन्दू-जीवन की आदि-प्रेरणा है। इस कल्याणमयी प्रेरणा को हमें विस्मरण नहीं करना चाहिए। साथ ही गुण्डों का तन, मन, धन से विरोध करना हो, उनके आतङ्क का शमन करना ही, मानव-धर्म है। देश अथवा समाज से गुण्डाराज का अन्त करना ही हमारा सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। गुण्डे चाहे हिन्दू हों अथवा मुसलमान, गुण्डे ही हैं और इस कारण देश और समाज के शत्रु हैं; परन्तु इस सम्बन्ध में आगे चल कर प्रकाश डाला जायगा।

हेमन्तकुमारी के गाँव की ही एक बालिका दूसरे गाँव में ब्याही गई थी। विवाह के थोड़े दिनों बाद ही वह विधवा हो गई। उसके विधवा होते ही उस गाँव के मुसलमान गुण्डों ने उससे अनुचित प्रस्ताव करना आरम्भ कर दिया। जब उसने उनके पापपूर्ण प्रस्तावों का विरोध किया तो उन्होंने उसके साथ बलात्कार करने तथा उसे भगा ले जाने का भय दिखलाया। लाचार होकर उसे अपने पिता के घर लौट आना पड़ा। परन्तु पिता के घर उसके सङ्कट और भी बढ़ गए। वहाँ उसे ससुर और पिता, दोनों के ही गाँवों के मुसलमान गुण्डों से अपने सतीत्व की रक्षा करने के निमित्त प्रयत्नशील होना पड़ा। जब उसके पिता ने पूर्व के अनुभवों से यह देखा कि वह अपनी पुत्री की आबरू नहीं बचा सकता है और कृष्णपक्ष में निश्चय रूप से मुसलमान गुण्डे रात के समय उसे बलपूर्वक भगा ले जायँगे तो उसने हिन्दू सभा के कार्यकर्त्ताओं से रक्षा की प्रार्थना की और बहुत ही कठिनाई से उन लोगों ने उस अभागिनी को उस गाँव से हटा कर कलकत्ते में आश्रय दिया।

बङ्गाल के अधिकांश गाँवों में, जहाँ हिन्दुओं से मुसलमानों की आबादी अधिक है, मुसलमान गुण्डे किसी भी हिन्दू युवती को विधवा होते ही अपनी जायदाद समझने लगते हैं और यदि उसके परिवार वाले उससे अभागिनी के सतीत्व की रक्षा के लिए उसे किसी सुरक्षित स्थान में ले जाना भी चाहें तो वे उन्हें ऐसा करने नहीं देते। यह कपोल-कल्पना नहीं है। यह बङ्गाल के हिन्दू-जीवन का वह भीषण एवं कटु सत्य है, जिसकी कल्पना मात्र से आत्मा काँप उठती है और मनुष्यता की छाती एक पीड़ा-जनित हाहाकार से भर उठती है !

तात्पर्य यह कि बङ्गाल की हिन्दू-बहिनों का सतीत्व आज घोर सङ्कट में है। बङ्गाल का सार्वजनिक जीवन ऐसी परिस्थितियों से गुज़र रहा है, जिसे यदि सरकार और जनता, दोनों ने ही नहीं सुधारा तो वह दिन दूर नहीं है जब कि बङ्गाल की बहिनों के रुदन की प्रतिध्वनियाँ भारत के कोने-कोने में जाग उठेंगी। बङ्गाल का हिन्दू-जीवन आज जिस विपत्ति-मार्ग से जा रहा है, यदि उसका प्रतिकार शीघ्र न हुआ तो कुछ ही समय में समस्त भारत का वायुमण्डल साम्प्रदायिक घृणा और विद्वेष से त्रस्त हो जायगा। वह वातावरण इतना उलझा हुआ होगा कि जिसको सुलझाकर शान्त करना सरकार और जनता, दोनों के ही लिए यदि असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य हो जायगा।

आज हज़ारों हेमन्तकुमारियों का सतीत्व सङ्कट में है। बङ्गाल के दैनिक पत्रों को उठाइए, नित्य ही हिन्दू-स्त्रियों के प्रति बलात्कार, उनके भगाए जाने की रोमाञ्चकारी कहानियाँ आपको मिलेंगी। वे कहानियाँ एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक दुखद और भीषण हैं, परन्तु केवल उन्हीं कहानियों से आपको बङ्गाल की वास्तविक परिस्थिति का परिचय नहीं मिलेगा। वे तो उन सैकड़ों कहानियों में दो-एक भूली-भटकी घटनाएँ हैं, जिन्हें किसी प्रकार पत्रों में प्रकाशित होने का अवसर मिला। बङ्गाली हिन्दुओं के सङ्कटों की वास्तविक कहानी तो बङ्गाली बहिनों की उन असंख्य सिसकियों में छिपी हैं, जो केवल हृदय से उठ कर प्राणों में छिप जाती हैं, जिन्हें सूर्य की किरणें नहीं देख पातीं और जिनके विज्ञापन का मूल्य उन अभागिनियों और उनके परिवार वालों के लिए अपने प्राणों से चुकाने की सम्भावनाओं का भय है !!

हिन्दू-जीवन की समस्या के भिन्न-भिन्न चित्रपट का यह केवल आंशिक रूप है। परन्तु यह पहेली उसकी अन्य पहेलियों की भाँति उलझी हुई है। केवल उलझी हुई नहीं—भीषण, दारुण, विषादमय, क्षोभजनित, मर्म-स्पर्शी, घृणास्पद और लोमहर्षक ! ये पहेलियाँ केवल स्थानीय एवं प्रान्तीय नहीं हैं। कुमारी अन्तरीप से लेकर काश्मीर और सिन्ध से लेकर आसाम तक बसने वाले हिन्दुओं को उन्नति और पतन तथा जीवन और मरण का प्रश्न एक ही है। उसे समस्त हिन्दुओं को एक ही मन, एक ही प्राण तथा एक ही दृष्टिकोण से देखना होगा। हमारी सारी बुराइयों, हमारे सारे पापों की जड़ एक ही है, उसकी औषधि भी एक ही है। इन सभी प्रश्नों पर 'चाँद' के आगामी अङ्कों में प्रकाश डालने का यत्न करूँगा !

शब्द के पार

श्री० जगन्नाथ मिश्र गौड़
'कमल' विद्यालङ्कार

करूँ अब सूनेपन से प्यार !
निशि-तम-आवृत चतुर्दिशाएँ, निभा-हीन संसार !

कोलाहल के पङ्खों पर चढ़
ले बसन्त का राग—
उषा रँगिणि चली गई
कलियाँ भूलीं अनुराग ;
भरी हुई है स्मृति-गीतों से
वीणा की झङ्कार !
करूँ अब सूनेपन से प्यार !

आया था क्रीड़ा करने अब
चलूँ छोड़ वन प्रान्त ;
गाऊँ बैठ जहाँ बसता है
जीवन का एकान्त !
समय-विहग उड़ मुझे खोजना
दूर शब्द के पार !
करूँ अब सूनेपन से प्यार !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाश्चात्य शिक्षा का जीवन पर प्रभाव

[कुमारी विमल, विदुषी]

आधुनिक समय में पाश्चात्य सभ्यता का आधिपत्य सम्पूर्ण जगत में स्थापित होता जा रहा है। पाश्चात्य सभ्यता का जन्म औद्योगिक क्रान्ति के साथ हुआ है। इसकी जन्मभूमि योरोप है।

योरोप तथा अमेरिका देश के निवासियों ने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अन्य जातियों की अपेक्षा विशेष रूप से उन्नति कर ली है और इस उन्नति से अनेक आशाएँ भी हैं। उनके आविष्कारों से संसार के सुखों की वृद्धि हुई है तथा उनसे मनुष्यों को लाभ हो रहा है। इन दोनों देशवासियों को अपनी इस उन्नति पर गर्व अधिक है। यद्यपि यह अक्षरशः सत्य है कि उन्होंने उन्नति की है। और अधिक की है; उन्होंने संसार के सम्मुख उपयोगी तथा आमोद-प्रमोद की सभी प्रकार की वस्तुएँ रक्खी हैं, परन्तु उनकी सभ्यता, जिस पर अन्य देश मुग्ध हो रहे हैं, और जिसके अनुकरण में ही अपना सौभाग्य और गौरव समझते हैं, वह सबके लिए कहाँ तक उपयुक्त तथा कल्याण-प्रद है, यह समझना तथा समझाना एक जटिल एवं कठिन समस्या है। यद्यपि वह अन्य देशों की अपेक्षा आगे अधिक बढ़ गए हैं, परन्तु क्या यह अक्षरशः सत्य है कि वह सभ्यता के पताका-वाहक हैं? यदि हम इससे सहमत हो जायँ तो इसका आशय यह कि हम 'सभ्यता' के अर्थ पूर्णतया नहीं समझते और इसीलिए 'सभ्यता' ऐसे विस्तृत तथा व्यापक शब्द को छोटी सी परिभाषा के सीमित बन्धन में बाँधने का प्रयत्न करते हैं।

सभ्यता का पूर्ण विकास उसी देश में हो सकता है, जहाँ मनुष्य अपनी रहन-सहन, आचार-विचार, धार्मिक, सामाजिक, मानसिक, आध्यात्मिक आदि सभी बातों पर विशेष रूप से विचार करे तथा इन सभी विचारों में उन्नति कर अपने जीवन को आनन्दमय तथा शान्तिपूर्ण बना सके। ऐसी स्थिति पर पहुँचने पर ही हम उस देश को सभ्य देश कहने के अधिकारी हो सकते हैं। इसके विपरीत जहाँ अशान्ति छाई हो, जीवन कलहपूर्ण तथा कष्टमय हो, जहाँ व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए पर्याप्त साधन न हो, जीवन दूषित तथा भ्रष्ट हो, उस समाज के मनुष्यों को असभ्य अथवा बर्बर कहना ही उपयुक्त होगा।

सभ्यता के अर्थ को पूर्णतया समझने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जायगा कि एक देश की सभ्यता सम्पूर्ण जगत् के लिए किस प्रकार से लाभप्रद तथा शान्तिप्रद हो सकती है। सभी देशों की सभ्यता में कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य होती है। यूरोप तथा अमेरिका की सभ्यता को 'आदर्श सभ्यता' न कहेंगे, क्योंकि आदर्श वही है जिससे कि सबको आनन्द व सुख मिले, पर प्रत्यक्ष तो यह दिखलाई देता है कि यूरोप स्वयं अपनी सभ्यता से कष्ट सह रहा है और वहाँ जीवन में अशान्ति छाई हुई है। जब वहाँ की सभ्यता अपने ही देश को सुखी नहीं कर सकती तो अन्य देशों के लिए किस प्रकार से हितकर हो सकती है! पर उनके विचारानुसार उनकी सभ्यता आदर्श है और सम्पूर्ण जगत में उनकी सभ्यता का ही प्रचार होना चाहिए। परन्तु किसी सभ्यता का प्रचार सम्पूर्ण जगत में उसी समय हो सकता है जब वह सभ्यता इतनी उदार हो कि उसके अपनाने में किसी भी व्यक्ति को साधारणतया सङ्कोच न हो। प्रेम-सहानुभूति के साम्राज्य ही में जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विश्व-बन्धुत्व का भाव जाग्रत होगा, तभी सम्पूर्ण जगत में एक सभ्यता का विकास तथा प्रचार होना सम्भव हो सकता है।

पाश्चात्य देशों में विज्ञान की विशेष उन्नति हुई है। यद्यपि उन्होंने विज्ञान द्वारा अनेक नवीन आविष्कार कर सुविधाएँ कर दी हैं। परन्तु जहाँ अधिक लाभ हुए हैं वहाँ अनेकों हानियाँ भी हुई हैं। इन यन्त्रों के आविष्कार हो जाने के कारण अनेक श्रमजीवियों की जीविका निर्वाह का प्रश्न जटिल हो गया है। जहाँ निर्धन अपने छोटे-छोटे धन्धों को कर अपना पेट पालते थे, अब इन आविष्कारों के कारण वे इन सुविधाओं से वञ्चित ही हैं। यद्यपि यन्त्रों से सुविधा हो गई है, परन्तु उससे मनुष्यों में आलस्य आ गया है। कृषक भी यन्त्रों द्वारा अपने कार्यों को करने के लिए इच्छुक हो रहे हैं। सभी देशों में साधारण जनता निर्धन है और धन पूँजीपतियों के पास एकत्रित हो रहा है।

जब से यूरोप का सम्पर्क भारत से हुआ है, पश्चिमीय सभ्यता का प्रभाव क्रमशः भारत पर पड़ रहा है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सभी पर पश्चिम की छाप पड़ रही है और समयानुसार यह प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है। हमारा गार्हस्थ्य जीवन भी पश्चिमीय सभ्यता के प्रभाव से वञ्चित न रह सका।

भारतीय गार्हस्थ्य जीवन आर्य-संस्कृति में एक विशेष स्थान रखता है। उसकी महत्ता सभी ने अङ्गीकार की है। सामाजिक जीवन इसी पर आधारित है।

गार्हस्थ्य जीवन में दो अपरिचित हृदय विवाह-सूत्र में जीवन भर के लिए बाँध दिए जाते हैं। मानव-जीवन का सबसे सरस एवं मधुर अंश वैवाहिक जीवन ही है। युवक व युवती के अपूर्ण जीवन तथा अतृप्त मन परस्पर मिल कर जिस पूर्णता तथा तृप्ति को प्राप्त करते हैं वह अद्भुत, अनुपम और सरस है।

यह सत्य है कि वैवाहिक जीवन सुखमय और नवीन सृष्टि का कारण होता है। नवीन प्रेमियों को कितना सुख मिलता है! अपरिचित हृदय कितनी शीघ्रता से परिचित हो जाते हैं। पर दुःख है—महान दुःख है कि इस सरस तथा मधुर जीवन में अब कितनी ही कड़वी घूँटें पीनी पड़ती हैं। सामाजिक कुरीतियों से कोमल मधुर जीवन पर नित्य ही कुठाराघात होता है। सामाजिक कुरीतियों के कारण हमारे वैवाहिक जीवन में अनेकों बाधाएँ आती हैं, जिससे अमृत तुल्य जीवन विष के समान हो जाता है। सुख के स्थान में दुःख का ही स्वागत करना होता है।

जिस वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर अनेकों युवक सुधर जाते थे और पवित्र जीवन व्यतीत करते थे, अब कुरीतियों के कारण अनेकों युवकों का चरित्र भ्रष्ट हो रहा है। अनेकों प्राणी व्याकुल तथा दुःखी हो आत्मघात कर लेते हैं। अशान्त जीवन होने के कारण समाज में अनेकों व्यभिचार हो रहे हैं। हम प्रत्यक्ष सब कुछ देखते हुए भी उसी पथ पर आँख मींच कर चले जा रहे हैं।

पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव हमारे युवक व युवतियों पर विशेष रूप से पड़ा है। युवतियों को इतनी स्वतन्त्रता न मिलने के कारण उन पर युवकों की अपेक्षा प्रभाव कम पड़ा है और इसीलिए दुर्भाग्य से अत्याचार सहने की वही अधिकारिणी हैं। आधुनिक समय में युवकों में शिक्षा का प्रचार अधिक है, क्योंकि बिना शिक्षा के उनको अपने जीवन निर्वाह का प्रश्न कठिन हो जाता है। युवक तो आधुनिक पश्चिमीय सभ्यता के रङ्ग में रँगे हुए हैं, परन्तु उनके पूर्वज अपनी प्राचीन रूढ़ियों को पीटने ही में अपना सौभाग्य समझते हैं।

संयम, आनन्द, शान्ति, सुख आदि प्राप्त करने के लिए ही विवाह का प्रचार हुआ था। गार्हस्थ्य जीवन को उत्तम बनाने के लिए ही स्त्री की आवश्यकता होती थी, परन्तु आधुनिक समय में विवाह करना एक सामाजिक बन्धन है, और आवश्यक है। संसार के अन्य कार्यों के अनुसार विवाह करना भी एक काम है। यदि समाज विवाह को जीवन का एक आवश्यक अङ्ग मानता है, तो उसके दोषों को दूर कर उसमें पवित्रता का सञ्चार करने का भार भी उसे ही स्वयं लेना चाहिए।

भारतीय सामाजिक कुरीतियों के कारण वैवाहिक जीवन अशान्तिपूर्ण हो गया है, जिससे कुछ युवक विवाह-प्रथा को घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं। पाश्चात्य देशों के सामाजिक जीवन में उन्हें महान सुख दिखलाई देता है। वहाँ युवक अपनी इच्छानुसार अपना जीवन-मित्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चुन लेते हैं। इस पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारतीय युवकों पर विशेष रूप से पड़ रहा है। उन्हें अपने देश के गार्हस्थ्य जीवन में अशान्ति दिखलाई देती है। इसीलिए भारतीय युवक इस पाश्चात्य प्रवाह में बहने के इच्छुक हैं और शान्ति तथा सुख प्राप्त करने का स्वप्न देखते हैं।

प्राचीन कुप्रथाओं के प्रति युवक-हृदयों में घृणा का भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। किसी भी आधुनिक शिक्षित युवक को यह न तो रुचिकर हो सकता है और न होना ही चाहिए कि उसके विवाह का भार प्राचीन प्रथा के अनुसार अयोग्य, साधारण नाई पर ही छोड़ दिया जाय। किन्तु आधुनिक युवकों को पाश्चात्य सभ्यता का पूर्णतया अनुकरण करना भी भारतीय परिस्थितियों में कदापि उचित नहीं है। श्रेय का मार्ग मध्य मार्ग होगा। जिससे विवाह ऐसे उत्तरदायित्व का भार अनुभवहीन युवक व युवतियों पर न होकर अनुभवी, शिक्षित, योग्य माता-पिता पर ही होना आवश्यक है।

आधुनिक स्त्रियों पर भी पश्चिमीय सभ्यता का प्रभाव पड़ रहा है जिससे उनमें परिवर्तन हो रहा है। यह प्रभाव प्रायः स्त्रियों के शिक्षित वर्ग तक ही सीमित है और वे ही प्राचीन बन्धनों को तोड़ कर समयानुसार आगे बढ़ रही हैं। पर्दा प्रथा परित्याग, उच्च शिक्षा की ओर प्रवृत्ति, स्वतन्त्र रहने की भावना, अधिकार-लिप्सा तथा विवाह सम्बन्धी आधुनिक विचार, सामाजिक कुरीतियों के प्रति स्वाभाविक घृणा, सभी शिक्षित स्त्रियों में दिखलाई देती हैं।

पर्दा प्रथा का प्रचार विशेष परिस्थितियों में हुआ था। यवनों के अत्याचारों से अपनी वधुओं तथा बालिकाओं की रक्षा के लिए ही हिन्दुओं ने पर्दे तथा बाल-विवाह का निर्माण किया था। इस पर्दे प्रथा से स्त्रियों के स्वास्थ्य को विशेष हानि हुई। इसका प्रभाव प्रत्यक्ष है। उनकी भावी सन्तति क्रमशः निर्बल होती जा रही है।

परिवर्तन तथा समयानुसार चलने ही में शान्ति व सुख है। स्त्रियाँ अनेकों वर्षों से बन्दी की भाँति बन्द हैं और आधुनिक समय में स्वतन्त्रता मिलने के कारण अनुचित उचित का विचार भी भूल गई हैं। यद्यपि पर्दे प्रथा को तिलाञ्जलि देना ही उचित है, परन्तु आधुनिक स्त्रियाँ पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर लज्जा को भी त्याग रही हैं, जो कदापि उचित नहीं।

आधुनिक स्त्रियाँ प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ने का प्रयत्न कर रही हैं। अभी सर्व-प्रथम उनको शिक्षा की विशेष आवश्यकता है, क्योंकि वे अन्धकार में रहने के कारण सामयिक परिवर्तनों आदि सभी बातों से वञ्चित रही हैं। उन्हें किसी प्रकार का भी ज्ञान नहीं है। स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध ऐसा अविच्छेद्य है कि एक के पतन से दूसरे का पतन निश्चित हो जाता है। क्योंकि गार्हस्थ्य जीवन का सच्चे रूप से भार गृहिणी पर ही होता है और सुख-दुःख, उत्थान-पतन सभी की अधिकारिणी विशेष रूप से वही होती है। इसलिए गृहिणी का सुयोग्य, शिक्षित होना परम आवश्यक है। यदि स्त्रियों की निरक्षरता को दूर करना हम अपना सर्व-प्रथम कर्तव्य समझ लें तो केवल स्त्रियों का ही उपकार व उद्धार न होगा, वरन् समस्त समाज का कल्याण होगा।

इस कार्य्य की उत्तमता प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में भ्रमण कर रही है। सुधारक तथा विद्वान इस प्रश्न पर विचार कर प्रयत्न कर रहे हैं। सफलता भी हो रही है।

स्त्री-शिक्षा के लिए अधिक धन की आवश्यकता होती है यह प्रत्यक्ष है। इसलिये कुछ मनुष्यों ने सहशिक्षा का प्रचार करने का विचार किया। आधुनिक समय में क्या सहशिक्षा भारतवासियों के लिए उपयुक्त हो सकती है? इसका निर्णय करने के लिए भारत की सामाजिक स्थिति का पूर्णतया अध्ययन करना परम आवश्यक होगा। भारत की सामाजिक स्थिति अन्य देशों से बिलकुल भिन्न है। अन्य देशों में जहाँ सह-शिक्षा का प्रचार है, अनेकों दुष्परिणाम देखने में आते हैं। भारत में जहाँ आचरण सम्बन्धी बातों का विशेष महत्व है, सह-शिक्षा कभी भी श्रेयस्कर सिद्ध न होगी। सह-शिक्षा का रोग पश्चिम से भारत में क्रमशः आ रहा है। उसका दुष्परिणाम भी जहाँ-तहाँ दिखलाई व सुनाई देता है। अतः सह-शिक्षा को अपनाना भारतवासियों के लिए कदापि उचित न होगा।

दुर्भाग्यवश भारतीय स्त्रियों पर पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव कुछ दिशाओं में अच्छा नहीं हो रहा है। भारतीय स्त्रियाँ पाश्चात्य स्त्रियों की स्वतन्त्रता, फ़ैशन,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आचार-विचार सभी के अनुकरण में अपना सौभाग्य समझती हैं। आधुनिक स्त्रियों की प्रबल इच्छा है कि वे पश्चिमीय स्त्रियों का इतना अनुकरण करें कि कुछ भिन्नता न रहे और वह प्रत्यक्ष पश्चिमीय स्त्री ही प्रतीत हों। परन्तु भारत की परिस्थिति इस योग्य नहीं है और न भारतीय सभ्यता के लिए यह उपयुक्त ही है।

भारत में क्रमशः विवाह सम्बन्धी बातों में अधिक परिवर्तन हो गया है। यहाँ पाश्चात्य देशों की भाँति सिविल मैरिज (Civil Marriage) का प्रचार हो रहा है। इस विवाह में केवल युवक व युवती को हस्ताक्षर करने पड़ते हैं। इसके लिए एक दफ़्तर नियुक्त है, जहाँ पर रजिस्टर में हस्ताक्षर करने के पश्चात् उनका पति-पत्नी का सम्बन्ध हो जाता है। जब उनको उस सम्बन्ध में शान्ति व सुख नहीं मिलता तब वह अपनी इच्छानुसार सम्बन्ध-विच्छेद कर सकते हैं। परन्तु इसमें नियमानुसार पति को अपनी सम्पत्ति का विशेष भाग अपनी त्यक्त पत्नी को देना पड़ता है। सिविल मैरिज का प्रचार भारत में इसी उद्देश्य से हो रहा है कि स्त्रियों पर अत्याचार न हो सके और उनके अधिकार सुरक्षित रह सकें। यदि वह पति द्वारा त्याग दी जावें तो उसके पश्चात् उन्हें कष्ट न उठाना पड़े। परन्तु पति-पत्नी का सम्बन्ध प्रेम का सम्बन्ध है, जहाँ पर प्रेम है वहाँ पर इस प्रकार के बन्धनों की तनिक भी आवश्यकता नहीं है।

आधुनिक भारतीय स्त्रियाँ, पाश्चात्य फ़ैशन का विशेष रूप से अनुकरण कर रही हैं। यद्यपि यह सत्य है कि आभूषणों का बहिष्कार सा हो रहा है, परन्तु जिन आभूषणों का प्रचार है वह अधिक मूल्यवान होते हैं। प्राचीन आभूषण एक प्रकार के सेविंग-बैङ्क थे, उनमें उनका धन सुरक्षित रहता था। अर्थ सम्बन्धी आवश्यकता पर उनका सदुपयोग किया जा सकता था। परन्तु आधुनिक आभूषणों में व्यय अधिक होता है। अर्वाचीन पतियों का अधिक धन पत्नियों को वेश-भूषा में व्यय हो जाता है। यदि अनुमान किया जाय तो ज्ञात होगा कि भारत का प्रचुर धन विदेश को सौन्दर्य-वर्धक पाउडर, क्रीम इत्यादि द्वारा जाता है। स्त्रियाँ बाह्य वस्तुओं से अपने वास्तविक सौन्दर्य को नष्ट कर कृत्रिम सुन्दरता लाने का सतत प्रयत्न करती हैं।

आधुनिक समय में सिनेमा का प्रचार संसार के प्रत्येक भाग में हो रहा है। भारत में भी इसका अधिक प्रचार है। सिनेमा से आर्थिक हानि हो रही है, यह प्रत्यक्ष ही है। अनेकों व्यक्ति पेट काट कर सिनेमा-हाल की ओर जाते हैं। उनको इसका तनिक भी विचार नहीं होता कि उनकी आर्थिक हानि कितनी हो रही है। वह प्रत्येक अच्छी बुरी फ़िल्म को देखते हैं, जिससे बुरा ही प्रभाव पड़ता है। मनुष्य पतन की ओर शीघ्र अग्रसर होता है और कुवृत्तियों का प्रभाव शीघ्र ही पड़ता है। यहीं तक नहीं, वरन् आधुनिक दाम्पत्य जीवन में अशान्ति होने का सिनेमा भी एक कारण है। युवक व युवती काल्पनिक दृश्यों को चित्रपट पर देखते हैं। कृत्रिम प्रेमियों की प्रेम-लीलाओं को देख कर वह स्वयं भी वैसा ही जीवन व्यतीत करने के इच्छुक हो उठते हैं। अपने गार्हस्थ्य अथवा दाम्पत्य जीवन में वह इससे वञ्चित रहते हैं, जिससे उनकी अशान्ति विशेष बढ़ जाती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह न समझ लेना चाहिए कि पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से भारतवासी केवल पतन की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। जीवन के कई विभागों में भारत-वासियों के जागृत हो जाने का कारण पश्चिमी सभ्यता ही है। किन्तु जहाँ पर भारतीय जनता ने पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण बिना समझे हुए करने का प्रयत्न किया है, वहीं से त्रुटि प्रारम्भ होती है। प्रत्येक देश की सभ्यता उसके भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक परिस्थितियों पर आधारित होती है। यह परिस्थितियाँ सभी देशों की भिन्न होती हैं। उसमें भिन्नता का होना असम्भव है। अतएव किसी जाति विशेष को दूसरे देशों की सभ्यता अपनाने के समय कोरा अनुकरण न करके विवेक बुद्धि से ही कार्य करना चाहिए। समयानुसार अपनी सभ्यता में कुछ परिवर्तन किया जा सकता है। परिवर्तन ही जीवन है। पर यह परिवर्तन उस सीमा तक न होना चाहिए, जिसमें अपनी सभ्यता नाम मात्र को हो और दूसरे की सभ्यता का पूर्ण प्रभाव।

यूरोप से सम्बन्ध होना भारत के लिए सौभाग्य की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बात है। कई दिशाओं में भारत उससे कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकता है, परन्तु प्रत्येक बात में उसे अपना गुरु मान लेना अपनी सभ्यता की महत्ता की ओर से आँखें मीचना ही है। साथ ही उसके सद्गुणों को न अपनाना अपनी सङ्कुचित दृष्टि दिखलाना ही होगा। अब वह समय आ गया है कि प्रत्येक देश अपनी सभ्यता से ऊँचे उठ कर दूसरे देशों की सभ्यता पर भी दृष्टिपात करे और क्षीर-नीर-विवेक द्वारा सद्गुणों को अपनाने तथा अपनी सभ्यता में आवश्यक परिवर्तन लाकर उसे जीवन प्रदान करे।

कुछ समय से भारतवर्ष में विवेक-बुद्धि के दर्शन होने लगे हैं। सुधारक मध्य मार्ग का अवलम्बन कर रहे हैं। सभी क्षेत्रों में समयानुसार उन्नति हो रही है, परन्तु विपक्ष भी कम प्रबल नहीं है। उसका प्रभाव दिन-प्रति-दिन हमारे हृदयों पर बढ़ता जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम विशेष सतर्क रह कर यूरोपीय सभ्यता के गुणों को अपनाकर भी अपनी आर्य संस्कृति को सुरक्षित रक्खें। ऐसा करने पर ही हमें अपने गार्हस्थ्य तथा सामाजिक जीवन में आनन्द की प्राप्ति होगी।

अज्ञात !

[कुमारी शान्ति भार्गव, हिन्दी-प्रभाकर]

सखि कैसा मधुमय कम्पन ?
यह कैसा अभिनव स्पन्दन ?

अरुणा के स्वर्णिम प्रकाश में,
सुमनों के मञ्जुल विकास में,
चारु-चन्द्र-चन्द्रिका हास में,
चक्रवाक की अमर प्यास में ;
लुटता लावण्य अहर्निशि,
किसका पा, नव अनुमोदन ?
कलियाँ कहतीं मन ही मन,
सखि कैसा मधुमय कम्पन ?

सान्ध्य वधू के अवगुण्ठन में,
प्रकृति-नटी के नव-नर्तन में,
ललित लालिमा नील गगन में,
कवियों के मधु-मिश्रित मन में ;
हँसता नीरव आकर्षण
किसका पा प्रिय परिरम्भण ?
मैं खोज फिरी वन उपवन
सखि कैसा मधुमय कम्पन ?

सखि कैसा अभिनव स्पन्दन ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पं० सालिगराम परसों के मिसिर

(जीवन-चित्र)

[श्री० रामविलास शर्मा, एम० ए०]

श्रीराम रोड पर थोक कपड़े के व्यापारियों की अनेक दूकानें हैं। पुलिस-चौकी से चलते हुए बाएँ हाथ को जिन दो दूकानों के साइनबोर्ड बाहर को त्रिकोणाकार निकले दिखाई देते हैं, उन्हीं में से दूसरी लाला शि.....की दूकान है। बरामदे को पार कर दूकान के ऊपर सबसे पहले खम्भे की आड़ लगाये बोरे पर आसन मारे बैठे हुए पं० सालिगराम परसों के मिसिर ही आपको दिखाई देंगे। उनके नाम के साथ 'परसों के मिसिर' जोड़ना आवश्यक है, क्योंकि सालिगराम अपने कुल के आगे वाला के सुकुल और चत्तू के तिवारी किसी की भी उच्चता टिकने नहीं देते। साँवला सा रङ्ग, सत्ताइस के उस पार और तीस के इस पार उम्र, खद्दर की मैली सी टोपी, जिसमें धरे पर धोने के कारण सिकुड़नें पड़ी हुईं और एक वैसा ही मिल के कपड़े का धारीदार कुरता, साधारणतः यही उनकी पोशाक है। बहुत जाड़ा पड़ने पर वह अपना एक कम्बल भी ओढ़ लेते हैं। बाईं जाँघ पर बायें हाथ का कुछ ज़ोर दिये, दाहिने से एक ओर की मूँछ कुछ ऊँची करते हुए सालिगराम न जाने श्रीराम रोड के उस पार किस अनन्त की ओर देखा और सोचा करते हैं। यदि किसी ने किसी रहस्यवादी कवि को न देख उसके कार्टून या किसी अण्ट-शण्ट समालोचक का लिखा उसका वर्णन ही पढ़ा हो, तो वह पं० जी को देख अवश्य ही कह उठे—"यह बस वही है!" धूल उड़ाती, पों-पों, कों-कों, सीपों-सीपों और अनेक अवर्णनीय शब्द करती मोटरें, टिन्-टिन् या अविराम गति से घनन्नन् घण्टी बजाती साइकिलें, गुमान भरे ताँगे और उन सबसे निम्न लखनऊ के दर्शनीय प्रातः-स्मरणीय इक्के, टिक-टिक, "चलना हुज़ूर" की घुकार; भक्त को माया की भाँति सालिगराम को सब कुछ भी नहीं लुभा सकता। सामने क़ब्र वाली पुल की दूकान में सदा भीड़ लगी रहती है; वह कुछ नहीं देखते हों, ऐसा भी नहीं। उनकी दृष्टि में कुछ ऐसी विचित्रता है कि वह ऊपर देखते हैं या नीचे, नज़दीक या दूर, कुछ देखते भी हैं या नहीं, कुछ भी दृढ़ता के साथ नहीं कहा जा सकता। सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी चरित्र-चित्रण-कला "ले कारास्टेयर" के लेखक ला ब्रुइयेर (La Bruyere) को यदि पं० सालिगराम सा मॉडेल मिल जाता तो न जाने वह उनके चमत्कारों का कितने चमत्कारिक ढङ्ग से वर्णन करता; शायद वह उसका मास्टर-पीस होता। मैं उस अभाव की पूर्ति करने चला होऊँ, ऐसा मेरा साहस नहीं। उनका थोड़ा सा परिचय मात्र उनकी विशेषताओं से अभिज्ञ संसार को दिया चाहता हूँ।

सात बरस पहले गाँव में खेती-बारी के सम्बन्ध में अपने बड़े भाई से लड़-झगड़ कर वह परदेश कमाने चले थे। लखनऊ में उनके जीजा थे; वहीं वह अपनी माँ के साथ आकर टिके। बचपन में उन्होंने ऐसी अनेक कहानियाँ सुनी थीं जिनमें सौतेली रानी का राजकुमार राज छोड़ परदेश कमाने चला था। लखनऊ में इसी दूकान पर वह पल्लेदार रखवा दिये गये। किसी मिठाई वाले, दूधवाले या जनरल मर्चेंट की दूकान में उनकी नौकरी क्यों नहीं लगी, कहना कठिन है। सालिगराम से जब पूछा गया—"क्या काम कर सकते हो?" तो बोले—"जब नौकरि करै चलेन तब मेहनत मजूरी जऊँ कइही, सबै करब।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब पूछा—"लोगे क्या?" तो बोले—"दुइ पैसा रोजु ल्याब।" सालिगराम की तनख़ाह आजकल सात रुपये है। पर दो पैसे और उससे बढ़ कर चार पैसे से अधिक उनके लिए कोई संख्या नहीं। सालिगराम का काम है फुटकर-दूकानदारों का कपड़ा अपनी दूकान से लेकर उनकी दूकानों तक पहुँचा देना। गाहकों ने मज़दूरी के दो-तीन या चार पैसे दिये तो वह प्रसन्न दूकान पर आकर बैठ जाते हैं। कहीं उसने इकन्नी-दुअन्नी दे दी तो वह क्रुद्ध हो, भौंह टेढ़ी कर दुर्वासा या परशुराम का मौन अवतार बन जाते हैं। बहुत पूछने पर अगर बोले भी तो सिपाही को एक पैसा देकर उस दूकानदार को थाने में बंद करा देने की धमकी देते हैं।

सालिगराम के चार पैसे से अधिक का मूल्य न आँक सकने के कारण दूकान के आदमियों को भी कभी-कभी बड़ी दिक़्क़तों का सामना करना पड़ता है। यदि पान मँगाने की जरूरत हुई और खाने वाले ज़्यादा हुए तो सालिगराम को तीन-चार बार रटा देना पड़ता है कि दो आने या दस पैसे के पान लाना। कहीं वह पान वाले की दूकान जाते-जाते भूल गये तो फिर दो ही पैसे के पान लेकर लौटेंगे। और ठीक पैसे न देकर उन्हें कहीं चौअन्नी अठन्नी दे दी गई तो बाक़ी पैसे भी वह अपनी ओर से माँग कर न लावेंगे; वही दे दे तो दे दे। इसी भाँति यदि सालिगराम से कहा जाय कि फलानी दूकान पर दस थान गिना आओ तो वह थान वहाँ तक ले जाने का वादा तो करते हैं, पर उन्हें गिनने का भार उसी पर छोड़ देते हैं।

लोगों का कहना है कि सालिगराम की जगह दूकान में दूसरा आदमी हो तो वह दिन में न जाने कितना कमाये, पर उन्हें कमाना आता ही नहीं। पहले तो वह अपनी मज़दूरी कम लेना पसंद करते हैं और फिर किसी दूकानदार ने कहीं कह दिया कि "दाम फिर ले जाना" तो सालिगराम अपने आप जाकर उससे माँगने के नहीं। उनमें स्वाभिमान का अंश औरों की अपेक्षा कुछ अधिक है। यदि पानवाले ने अपने आप पैसे लौटा कर न दिये तो सालिगराम को उन्हें फिर लेने उसके पास भेज देना साधारण मनुष्य का काम नहीं। उन्हें जो कहना-सुनना होता है, एक ही बार कह-सुन लेते हैं; यदि दूसरा उसके अनुसार काम न करे तो उस पर वह मन ही मन क्रुद्ध हो लेते हैं, पर उससे कुछ नहीं कहते। एक बार उन्हें दूकान से कुछ कपड़ा मुनीम जी के घर दे आने को दिया गया। सालिगराम ने दरवाज़े पर जाकर एक आवाज़ दी। भीतर से पूछा गया—'कौन है?' तो निरुत्तर। दरवाज़े पर प्रायः एक घन्टे बैठे रहे, पर जिस आदमी ने उनसे उनका नाम पूछने की ढिठाई की थी, उसे उन्होंने फिर बुलाना स्वीकार न किया। अन्त में वह दूकान लौट आए और कहा कि "वहाँ कोई दरवाज़ा ही न खोलता था।"

लखनऊ में इतने दिनों से रहते हुए भी जैसे औरों को होता है, उन्हें यहाँ की हवा नहीं लगी! उनका जीवन प्रायः उतना ही सङ्कुचित या विस्तृत है, जितना कि उनके यहाँ पहले पहल आने के दिन था। सड़क पार करते समय अब भी उन्हें पाँच से पन्द्रह मिनट तक जो न लग जाएँ, वह थोड़े। उसके जीवन से वह कभी परिचित नहीं हुए। मोटर वहाँ जब एक भी न हो, और साइकिल इक्के आदि भी काफ़ी दूर हों, तभी वह उसे एक सपाटे में पार करते हैं। लखनऊ में रहने का उन्होंने एक बार अवश्य उपयोग किया, अपने ब्याह में। जब इनको लोग देखने आते थे तब वह अपना एक पुराना रेशमी कुर्ता पहन और बहुत दिनों का गैरधुला गुलाबी साफ़ा बाँध कर दूकान के भीतर बैठ जाया करते थे, जिसमें वे यह न समझें कि वह कोई साधारण पल्लेदार हैं; उन्हें दूकान का ही कोई आदमी समझें। कभी-कभी लोग उनके इस अभ्यास का अनुचित उपयोग भी करते थे। "देखुआ आ रहे हैं"—कह देने पर वह भीतर जा बैठते और ग्राहकों का सामान ले जाने के नाम से टस से मस न होते। जब सालिगराम का ब्याह तै हो गया और एक दिन बारात इनकी ससुराल पहुँची तो साथ के लोगों ने इन्हें समझा दिया कि घर में लोग तुमसे मज़ाक़ करें तो कोई जवाब न देना। सालिगराम जब कलेवा करने गये तो साली-सलहजों और पास-पड़ोस की स्त्रियों ने इन्हें छेड़ना शुरू किया। पहले तो वह चुप, शायद पलङ्ग पर पल्थी मार अपने स्वाभाविक वीरासन से बाईं कोहनी का बायें पैर पर जोर दिए दाहिने से उस ओर की मूँछ कुछ ऊँची करते बैठे रहे, परन्तु जब उनकी सरगर्मी बहुत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ते देखी तो एक ही बार में उन्हें शान्त कर देने का विचार कर बोले—"जनती नहीं हौ, हम लखनऊ माँ रहित है, जहाँ इमामबाड़ा और बनारसी बाग हैं। हियाँ का बातैं करती हौ, हुँआ आवो तो तुमका जवाब देई।"

सालिगराम अपनी बातें छिपाना नहीं जानते। लोग जो पूछते हैं, वह बता देते हैं। उनके वैवाहिक जीवन का मौखिक आनन्द उनके मुँह से सभी दूकान वाले लूट चुके हैं। जब काम करते-करते जी ऊब जाता है तो किन्हीं निश्चित प्रहरों में पास-पड़ोस के लोग वहाँ आकर इकट्ठा हो जाते हैं। पैसे-पैसे की मटर व चाट ले-लेकर वे सब वहाँ खाते हैं और सालिगराम को छेड़-छेड़ कर उनकी बातें सुनते हैं। किस प्रकार पलङ्ग पर बैठे हुए वह उचक-उचक कर अपने चारों ओर देखते रहे, इस भय से कि कोई स्त्री उनका कुर्ता गलोचे में सी न दे, इसे सालिगराम अपने हाव-भाव, आकार-इङ्गितों से बड़ी कुशलतापूर्वक प्रकट करते हैं। सुनने वालों का आनन्द इससे और भी बढ़ जाता है। सालिगराम जब कलेवा करने चले तो उनके जीजा ने कह दिया था कि "खाओ" कहने पर झट से खाने न लगें। यह बताते हुए कि उस बात का स्मरण रख मण्डप के नीचे सबके लाख कहने पर उन्होंने किसी प्रकार भोजन न किया, वरन् सारी रात जीजा के ही खाना खाने के लिए कहने न आने तक चुपचाप बैठे रहे, वह ऐसे गम्भीर हो जाते हैं मानो अशोक के समय की बौद्ध-शिलाकारी का एक अनुपम नमूना हों। किन्तु खैर तभी तक है जब तक सब लोग उन्हीं की भाँति गम्भीर उनकी बातें सुना करें। यदि उनमें से किसी को हँसते उन्होंने देख लिया तो लाख बुलाने पर भी वह नहीं बकुरते। दूकान के दलाल, आते-जाते ग्राहक, सभी बिना सालिगराम से एक-दो बातें किये वहाँ से नहीं जाते। उनके इसी व्यवहार के कारण शायद वह साधारणतः कुछ रिसौंहें से भौंहें टेढ़ी किये 'मिलिट्री' मूड में बैठे रहते हैं।

श्रीराम रोड पर थोक कपड़े की दूकान पर बैठे ए सालिगराम चित्र की केन्द्र-मूर्ति के समान हैं; अन्य वस्तु तथा आकार चित्र के पश्चात् भाग में पड़े जैसे उन्हीं को उभार कर दिखाने के लिए हों। दूकान में सैकड़ों रुपये का माल आया-जाया करता है। एक से एक व्यापारी लि आते-जाते हैं, गद्दी पर बैठे मुनीमजी न जाने कितने रोकड़ नित्य मिलाते हैं, किन्तु उनमें से किसी का भी सालिगराम से अधिक मूल्य न हो। वहाँ जाते ही उन दृष्टि अटक कर रह जाती है। इसी भाँति संसार में बिने के समान रहते हुए उनके दिन कटते जाते हैं; शायद ज तक यह दूकान रहे तब तक वह भी रहें। केवल एक जीवन के इस सुख-प्रवाह में उच्छृङ्खलता उत्पन्न हुई जब उनकी माँ का स्वर्गवास हुआ था। सालिगराम माँ को बहुत प्यार करते थे। दूकान से तनख्वाह या की मेहनत-मजूरी का जो कुछ भी धेली-सूका मिलता, को ही देते। जब अन्तिम क्रिया कर दूकान आये किसी ने पूछा—"सालिगराम, अपनी माँ को फूँक आये माँ को, जो तुम्हें इतना प्यार करती थी?" सालि राम आँखों में आँसू भर अपने किये पर पछताते बोले—"हम तो न फूँकित रहै, मुला जीजा कहै लगे फूँकि दियो ताऊँ फूँकि दीन।" फिर पूछा—"जलने पहले कुछ कहा था माँ ने?" बोले—"साइद कहा तेइन मुला हम दूरि रही तौ सुनि नहीं पावा।"

सालिगराम को कोई सीधा, दया की वस्तु समझते हैं, कोई मूर्ख। मेरी समझ में अपने समय के बाहर उत्पन्न वह सतयुग की एक अमूल्य विभूति हैं, जिनका आज के लोगों के लिए मूल्य आँकना कठिन है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय चित्रकला के इतिहास पर एक दृष्टि

[श्री० सतीशचन्द्र काला]

सांसारिकता के साधारण वातावरण में सुखकारिता और सर्जीवता लाने के लिए मनुष्य ने ललित कलाओं का उत्पादन किया। सभ्यता के प्रसरण के साथ-साथ मनुष्य की रुचि इन कलाओं की ओर बढ़ती जा रही है। दैनिक जीवन-उपादानों की विभिन्नता ने उसकी अनुभूति को सम्पन्न कर दिया है। जीवन-चक्र को कर्मण्य रखने के लिए केवल उपयोगात्मक कलाओं में ही उसे सब साधन नहीं मिलते। कलाकार और विशेषकर भारतीय कलाकार भोगजीवन के परे एक और जीवन की उपस्थिति का अनुभव करता है। उसे यह जीवन 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' से ओत-प्रोत प्रतीत होता है। कभी वह उसमें केवल अप्रस्तुत वस्तुओं की योजना देखता है और कभी प्रस्तुत और अप्रस्तुत का सम्मिश्रण। परन्तु मनुष्य इस अवस्था को तभी प्राप्त होता है, जब वह सभ्यता की सुविधाओं में हिलोरें लेता रहता है। यह बात तो जगत-प्रसिद्ध है ही कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति बहुत पुरातन है। अतः हम यह अनुमान कर सकते हैं कि भारतीय चित्रकला बहुत पहिले प्रादुर्भूत हो गई होगी। भारतीय चित्रकला को हम चार भागों में विभाजित कर सकते हैं :—

(१) अजन्ता, बाग व रायपुर की चित्रकारी।
(२) मुग़ल-काल की चित्रकला।
(३) राजपूत-काल की चित्रकला।
(४) आधुनिक काल की चित्रकला।

भारतीय चित्रकला का ठीक आरम्भ कब से हुआ, यह प्रश्न अभी विवाद-ग्रस्त है। जितने भी प्राचीन काल के चित्र उपलब्ध हुए हैं, उनमें कहीं भी उनका निर्माण-काल नहीं लिखा गया है। किन्तु प्राचीन ग्रन्थों में कई स्थानों पर "चित्र-शालाओं" का ज़िक्र मिलता है, जिनसे विदित होता है कि प्राचीन काल में भी चित्रकला की ओर लोगों की रुचि थी। ५वीं व ७वीं शताब्दी में कई चीनी यात्री भारतवर्ष में आये थे। उन्होंने कई सुन्दर बौद्ध-चित्रों का वर्णन अपने लेखों में किया है। मि० स्मिथ के अनुसार ईसा से दूसरी शताब्दी पहिले भारतीय चित्रकला ख़ूब बढ़ी-चढ़ी थी।

अजन्ता के Fresco चित्रों की आयु ईसा से ६०० वर्ष पूर्व मानी गई है। ये चित्र हैदराबाद ज़िले के फ़रीदपुर नामक गाँव के निकट प्राप्त हुए हैं। यह स्थान बड़ा ही रमणीक है। इन गुफाओं में बने चित्र भिन्न-भिन्न कालों का परिचय देते हैं। मिसेज़ हिरेञ्जम का कहना है कि ये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्र ६ कालों में बाँटे जा सकते हैं।* चालुक्य वंश के राजाओं के काल के भी कई चित्र इन गुफाओं में बने हैं। इन चित्रों का विषय प्रायः महात्मा बुद्ध के जीवन की तथा जातक-कथाओं की घटनाएँ हैं। एक चित्र में दूत (embassy) का भी चित्रण है। कहा जाता है कि फ़ारस के बादशाह ख़ुशरू परवेज ने ६२६ में इसे दक्खिन के राजा के पास भेजा था।† सब से महत्वपूर्ण चित्र बरामदे के बायें कोने पर है। इस चित्र में बौद्ध धर्म की शिक्षा "जीवन-चक्र" (cycle of life) दिखलाया गया है।

कला की दृष्टि से ये चित्र बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इतने वर्ष बीतने पर भी वे अभी तक जैसे के तैसे हैं। हाँ, मनुष्यों तथा हैदराबाद स्टेट की लापरवाही से उनमें से कई चित्र नष्ट हो गये हैं।

मि० ग्रिफ़िथ इन चित्रों के विषय में लिखते हैं—"The work is admirable.....Some work may be compared with the work of Prompey. Here we have an art with life in it, human faces full of expression, lines drawn with grace and action."

दूसरे प्राचीन चित्र हमें उड़ीसा में मिलते हैं।‡ इन चित्रों में बौद्धधर्म की झलक मिलती है। इनका चित्रण भी अजन्ता की चित्रकला की ही तरह है। इसके अतिरिक्त ग्वालियर स्टेट के बाग नामक ग्राम की गुफाओं में भी कुछ चित्र मिले हैं। लापरवाही से कई चित्र नष्ट हो गए हैं, फिर भी जो कुछ चित्र अभी तक बचे हैं, उनमें बहुत उच्च ढङ्ग की कला है। इन चित्रों में जीवन उसी ढङ्ग से चित्रित किया गया है, जैसा कि अजन्ता की गुफाओं में। मि० स्मिथ की गणना के अनुसार इन चित्रों की आयु पहली व छठी शताब्दी है।

* Burlington Magazine.

† Fergusson.

‡History of fine Arts in India & Ceylon—V. A. Smith.

मुग़ल-काल

इसके बाद ६४२ से लेकर सन् १५२० तक चित्र कला का कोई भी चिन्ह ज्ञात नहीं। अकबर के काल में भारतीय चित्रकला का पुनरुद्धार हुआ। मुग़ल-काल के पहले चित्र Caligraphy के थे। इस काल के चित्रों में फ़ारस और राजपूत कला का मिश्रण है। चित्रकला के भी कई स्कूल (जैसे दिल्ली क़लम, जयपुर क़लम आदि) मुग़ल-काल में स्थापित हो गए थे। अकबर के पहले १५वीं शताब्दी में विज़ाद ने एक नये स्कूल की स्थापना की थी। इस सासेनिक कला की उत्पत्ति बौद्ध संस्कृति से हुई थी। मुग़ल-काल की कला के ५ पहलू थे* :—

(१) सजावट (Decoration)
(२) प्रकृति (nature)
(३) छोटी रेखाएँ (short lines)
(४) आखेट दृश्य (Hunting scenes)
(५) बहुत स्पष्ट (Too detailed)

मुग़ल-चित्रकला की उन्नति में अकबर, शाहजहाँ व जहाँगीर ने बड़ा प्रशंसनीय उद्योग किया। जहाँगीर ने अपनी पुस्तक "तुज़ुक-ए जहाँगीरी" में कई राजपूत चित्रकारों का ज़िक्र किया है। इस काल के चित्रकारों ने आदर्शवाद की ओर कम ध्यान दिया। आदर्शवाद के एक झीने आवरण को लाने का अवश्य इन चित्रकारों ने प्रयत्न किया। दरबारी दृश्य, बादशाहों का आखेट, युद्ध-प्रदर्शन आदि-आदि बातों तक ही इनकी सीमा परिमित थी। जीवन की गहनता व रहस्य के महत्व को इन चित्रकारों ने बहुत कम समझा। मि० कुमार स्वामी लिखते हैं :—Mohmaddan painting was concerned with camp life and courts, its pageantry and history.†

मुग़ल-चित्रकला की उत्पत्ति अकबर के काल (१५५६) में हुई और औरङ्गज़ेब के काल (१७०६) ई० तक इस स्कूल का एक प्रकार से लोप हो गया। जहाँगीर

*Percy Brown Indian painting.

†Mavell—Treatise on Indian painting.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ने पश्चिमी कला को अपनाया। इसके काल में कई विदेशी मूर्तिकार व चित्रकार भारतवर्ष में आये। पश्चिमी कला का बहुत प्रभाव इस काल के चित्रों पर पड़ा। अकबर ने छोटे-छोटे चित्रों को बनवाया और उन्हें पुस्तकों तथा अलबमों में लगवाया। १६वीं और १७वीं शताब्दी के कुछ चित्र बीकानेर स्टेट में पाये गये हैं। मुगल-काल में काश्मीर, बङ्गाल व पञ्जाब में हिन्दू स्कूल थे।*

मुगल-काल के प्रथम चित्र Inoniman शैली पर निर्भर थे। इनकी खूबी केवल सजावट व रङ्ग में है। प्राकृतिक दृश्यों का भी इन चित्रकारों ने खूब चित्रण किया। जहाँगीर प्राकृतिक वस्तुओं का बड़ा प्रेमी था, और उसने प्राकृतिक चित्रों को बहुत अपनाया। मुगल चित्रकला Conventional (रूढ़िगत) थी। कितने ही चित्रों में बादशाह हाथ में फूल व जवाहिरात लिये हुए हैं।

औरङ्गजेब ने कला की ओर कम ध्यान दिया। इससे अधिक महत्व उसने युद्ध को दिया। वह प्रायः युद्धों ही में रहता था। इस तरह कितने ही चित्रकारों ने उसके दर्बार को छोड़ दिया और हिन्दू-नरेशों व राजाओं के यहाँ शरण ली।

राजपूत-स्कूल

राजपूत चित्रकार दरबारियों में भी गिने जाते थे और धार्मिक गुरुओं में भी। औरङ्गजेब के काल में कितने ही चित्रकारों ने हिन्दू प्रतिष्ठित व्यक्तियों व नरेशों के यहाँ शरण ले ली थी। ग्रामीण जीवन से ये लोग विशेष प्रभावित हुए थे। शैव और वैष्णव धर्म की गाथाओं का परिचय भी इन्होंने अपनी कला में दिया है। इनके चित्रों में आत्म-संयम और विशुद्ध प्रेम का आभास मिलता है। बहुत से राजपूत चित्र तो रहस्यमय कहे जा सकते हैं।

संसार के इतिहास में किसी भी देश में धार्मिक भावों ने कला पर इतना आधिपत्य नहीं जमाया है, जितना कि भारतवर्ष में। यहाँ की प्रत्येक कला पर भारत की प्राचीन संस्कृति की छाप लगी है। कला में भावों का निरूपण करने में राजपूत चित्रकारों ने विशेष कुशलता दिखलाई है। इस काल की कला में महाभारत, गीता, रामायण व चंद्रमा का विशेष महत्व माना गया है।

राजपूत चित्रकला का स्वरूप प्राचीन Wall paintings के आधार पर है। १६ वीं शताब्दी में राजपूत कला बहुत बढ़-चढ़ चुकी थी। इस काल के मुख्य स्कूलों में जम्मू, राजस्थान और काँगड़ा (गढ़वाल) विशेष उल्लेखनीय हैं।

काँगड़ा-स्कूल जम्मू-स्कूल से विशेष बढ़ कर था। पहाड़ी चित्रकारों की कला में कविता और भावनाओं का सम्मिश्रण मिलता है। दुर्भाग्य से काँगड़ा स्कूल के बहुत कम चित्र आजकल प्राप्त हैं। काँगड़ा का क़िला १९०५ ई० में भूकंप से नष्ट हो गया है। जम्मू की चित्रकला में वह माधुर्य्य, बारीकी व सूक्ष्मता नहीं है, जो कि काँगड़ा-स्कूल के चित्रों में है।

काँगड़ा-स्कूल का सबसे बड़ा चित्रकार भोलाराम हुआ। २५ वर्ष पूर्व उसका नाम किसी को ज्ञात न था। इस चित्रकार का जन्म श्रीनगर गढ़वाल में सन् १७६० में हुआ और मृत्यु सन् १८३३ ई० में हुई। भोलाराम के विषय में मि० मुकुन्दीलाल बार-एट-लॉ ने बहुत लिखा है। राजपूत-कला का मुख्य विषय कृष्णलीला, भक्ति-भावनाएँ, पुराण तथा महाकाव्यों की घटनाएँ, अवतारों का स्वर्ग से पृथ्वी आना, आदि था। इन चित्रों से पता चलता है कि उस काल के लोगों का आध्यात्मिक जीवन बहुत ही उच्च था।

विश्व की प्रत्येक वस्तु में, बालकों के किलोल में, पत्तों की सरसराहट में, पशु-पक्षियों के स्वर में व सागर की लहरों में हमें एक प्रकार का संगीत सुनाई देता है। विश्व में सभी लोगों ने संगीत की व्याख्या शब्द रूप में की है, किन्तु संसार के इतिहास में भारतवर्ष ही ने पहिले पहले संगीत को चित्र-रूप में प्रदर्शित किया है। सैकड़ों राग-मालाएँ राजपूत-चित्रकारों ने चित्र-रूप में बनाई हैं। इस प्रकार के चित्रों की उत्पत्ति १८ वीं शताब्दी के लगभग हुई। रागमालाओं का चित्रण करने में वर्ष ६ भागों में विभाजित किया गया है। राग के कुटुम्ब हैं। (१) मालवा (२) श्रीराग (३) हिंडोला (४) वसंत (५) दीपिका (६) मेघ (७) भैरव। इन चित्रों में खूब बारीकी व तूलिका-

* Indian art and letters.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चातुर्य्य का सामञ्जस्य मिलता है। प्रत्येक चित्र के नीचे एक-एक कविता भी दी गई है। उदाहरणार्थ मार्गशीर्ष नामक चित्र के नीचे :—

मासन में हरिवंश कहत यामें सब कोऊ।
स्वारथ परमारथ न देत भारतमय दोऊ॥
केशव सरिता सरित फूल फूल सुगन्ध गुम।
कूजत कुञ्ज हंस कलित कल हंसिनी के सुर॥

दिन परम नरम शीत न गरम,
करम करम यह पाइयतु।
करु प्राणनाथ परदेश को,
मारगशिर मारग न चितु॥

प्रेम जीवन की मूल-प्रेरक शक्ति है। Anna Kingsford के शब्दों में प्रेम की महाशक्ति को व्यक्त करने में कलाकार, सच्चा कलाकार कहा जा सकता है। वर्तमान व प्राचीन हिन्दी साहित्य में "शृङ्गार" का अर्थ प्रेम की भावना से लगाया गया है। हिन्दी में शृङ्गार-सम्बन्धी हजारों कविताएँ रची गईं, यहाँ तक कि ब्रजभाषा के सभी कवियों ने "शृङ्गार" को अपनी कविता का विषय बनाया। जिस प्रकार विरह-काव्यों की कमी हिन्दी-साहित्य में नहीं, उसी प्रकार राजपूत-चित्रकला में भी "विरह-चित्रों" की कमी नहीं। उस काल के कवि व चित्रकारों ने राधा व कृष्ण ही के चरित्र से प्रेरणा ली। इस प्रकार के चित्र तीन भागों में विभाजित हैं* :—

(१) मान—
(२) मनोबल—
(३) प्रवास—

मान प्रेम का प्रथम भाव है। इस भाव में प्रेमिका व प्रेमी के हृदय में प्रेम का भाव उत्पन्न होता है। मनोबल एक प्रकार की प्रेम-क्रीड़ा के अन्तर्गत (जिसे की रूठना कहते हैं) है। प्रवास में प्रेमी के जाने के बाद प्रेमिका के विरह का वर्णन रहता है।

राजपूत चित्रों द्वारा उस काल के रीति तथा रस्मों का विशेष परिचय मिलता है। मि० Coomarswamy कहते हैं कि इन चित्रों के बिना वैष्णव व शैव सम्प्रदा के इतिहास अधूरे हैं।

आधुनिक काल

मुग़ल राज्य के अवसान पर भारतवर्ष में अँग्रेजों ने अपना आधिपत्य जमाया। पश्चिमी कला की कृत्रिमता भी हिन्दू-कला में आने लगी। इस दिशा में हमारे दे के चित्रकारों का सफ़ल होना जरा असम्भव था। प्रत्ये देश की कला उस देश की प्रवृत्तियों के अनुकूल होती है। सर्वोत्तम कला वही है, जिसकी ध्वनि एक सारे राष्ट्र के मुख से निकलती हो। और जिसकी शैली निराली हो। पश्चिमी प्रवृत्तियों को हम कभी भी अपनी कला में अङ्कि नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त भारतीय चित्रकला का स्तम्भ भी यूरोपीय चित्रकला के स्तम्भ से भिन्न है। पश्चिमी चित्रकारों की सूझ प्रायः बाह्य आडम्बरों तक ही पहुँची है। भारतीय चित्रकारों ने मनुष्य के अन्तर्तम में घुस कर उसकी मनोवृत्तियों का चित्रण किया है।

१९वीं शताब्दी के बाद भारतीय चित्रकला का दृष्टि-कोण बहुत विस्तृत हो जाता है। डॉ० अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने इसके बाद Bengal School of art की स्थापना की। यह स्कूल प्राचीन चित्रकला के आधार पर स्थापित किया गया है। आजकल के चित्रों में अवश्य कुछ मुग़ल-चित्रकला की झलक है। इन चित्रों में शुद्ध भारतीयता (Indianness) का आभास मिलता है। डॉ० अवनीन्द्रनाथ टैगोर पहले आयल-पेण्टिङ्ग बनाते थे किन्तु अब वे चित्र वाटर-कलर में बनाने लगे हैं।

यूरोपीय टेक्निक के अनुसार राजा रविवर्मा ने बहुत से चित्र बनाये। इनके चित्रों का विषय महाभारत रामायण व पुराणों की घटनाएँ थीं। इन चित्रों में रं को बहुत महत्व दिया गया है। देहाती लोगों में उनका बहुत प्रचार हुआ, किन्तु सभ्य समाज में ये चित्रकला की दृष्टि से नहीं, धार्मिक दृष्टि से स्थान पा सके। रविवर्मा के विषय में Mr. Coomarswamy लिखते हैं:— "There is a lack of Indian feeling in the treatment of sacred and epic Indian subjects and want of imagination." इस तरह पर इन चित्रों की बहुत समालोचना की गई है।

* Rajput painting—Coomarswamy.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस समय भारतवर्ष में Bombay School of Art, Bengal art, D:. Tagors' individual School तीन प्रमुख स्कूल हैं। Bombay School of art का ध्येय व शैली मि० Gladstone के इन शब्दों से विदित हो सकती है—The genuine distinctive and remarkable gift of Indian artists for decorative compositions, space filling and lineal design is evinced in their humblest patterns to-day as it was two thousand years ago in the mural paintings of Ajanta; and this faculty is the foundation on which the Bombay School of art has built up its liberal system of training.*

बङ्गाल स्कूल ऑफ़ आर्ट में खूबी यह है कि भावों का चित्रण सूक्ष्म रेखाओं द्वारा होता है। इस स्कूल के साथ ही Calcutta Oriental Society of Arts की स्थापना भी हुई। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने इस स्कूल को प्राचीन भारतीय चित्रकला के पहलुओं के आधार पर स्थापित किया। उनके सभी शिष्यों ने इन्हीं सिद्धान्तों का अनुकरण किया है। इस स्कूल के चित्रकारों ने भावों का निदर्शन करने में बड़ी कुशलता दिखलाई है।

बङ्गाल ही भारतवर्ष में एक ऐसा प्रांत है, जिसने कि विदेशी शासन के प्रभाव को अच्छी तरह समझा है। भारतवर्ष की दरिद्रता तथा विधवा-जीवन ने बङ्गाली चित्रकारों के ध्यान को अधिक आकर्षित किया है। रेखाओं द्वारा उन्होंने भारत के दुख, सुख, भावना, आशा तथा निराशा का बड़ा सुन्दर चित्रण किया है। संसार की नश्वरता ने भी उनके ध्यान को अधिक आकर्षित किया—इसका उदाहरण नंदलाल बोस का "जीवन-कण" नामक चित्र है। आजकल के कला-समालोचकों का कहना है कि "कला वह वस्तु है जिसमें कि जीवन की गहनता का परिचय हो"। हमारे बङ्गाल आर्ट में यह सिद्धान्त प्रमुख है। इस समय भारतवर्ष बेकारी, गरीबी, पराधीनता आदि-आदि समस्याओं से जकड़ा हुआ है। और जैसे कि कहा गया है। 'Style is the man himself' आधुनिक कला में भी इन्हीं समस्याओं द्वारा उत्पन्न भावनाओं का ठीक स्वरूप उतर गया है। यात्रा का अन्त (अवनीन्द्रनाथ टैगोर) उपासक भिक्षु (नंदलाल बोस) गृह-हीन माता (जे० गांगुली) आदि-आदि प्रसिद्ध चित्र इसी प्रभाव से प्रभावित हैं।

संसार के विभिन्न-राष्ट्रों की समस्याओं की ओर भारतवर्ष की सदैव सहानुभूति रही है। बङ्गाल-स्कूल के चित्रों में भी विश्व-बन्धुत्व की झलक धीरे-धीरे आ रही है। विश्व-जनीनता (Universality and desire for world consciousness) भी भारतीय चित्रकला में दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इस दिशा में महाकवि रवीन्द्रनाथ पग बढ़ा चुके हैं।

डॉ० रवीन्द्रनाथ टैगोर का एक अलग स्कूल है। आप संगीतज्ञ, कवि व दार्शनिक हैं। इन्हीं तीन धाराओं का सम्मिश्रण उनके चित्रों में है। मैंने शांति-निकेतन में उनके बनाये हुये बहुत से चित्र देखे थे। उनकी बैठक के कमरे में सभी चित्र उनके बनाये हुए हैं। डॉ० टैगोर की कला रेखांकन तक ही सीमित नहीं। उनका कथन है कि जब तक किसी रेखा में Rhythm नहीं; वह चित्र नहीं कहा जा सकता। साधारण मनुष्यों के लिए उनके चित्रों में कोई आकर्षण नहीं। उनकी कृतियों में उनके व्यक्तित्व की साफ़ झलक है। पश्चिमी देशों में उनके चित्रों का विशेष आदर हुआ है।

इधर जिस प्रकार हिन्दी-कविता में "हाला" और "प्याला" शब्द आने लगे हैं, उसी प्रकार भारतीय चित्र-कला पर भी उमरख़य्याम की रुबाइयों का—विशेषकर सूफ़ी मत का प्रभाव पड़ा है। असितकुमार हाल्दार, चगताई और भुवन वर्मा ने इस दिशा में क़दम रक्खे हैं। श्री० ठाकुरसिंह के चित्रों में "कला" कुछ भी नहीं। कारण, उनके प्राकृतिक चित्र अवश्य बहुत सुन्दर हैं। श्री० देवी-प्रसाद राय चौधरी भी आजकल के प्रमुख चित्रकारों में हैं। रङ्ग (colouring) में उन्होंने पाश्चात्य देशों का अनुकरण किया है। वे केवल चित्रकार ही नहीं, मूर्तिकला में भी विशेष योग्यता रखते हैं।

श्री शारदाचरण उकील के चित्रों की पश्चिमी देशों ने बहुत प्रशंसा की है। उकील ने रेखाङ्कन और भाव-

*Indian art and Bombay movement—by W. L. Gladstone.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यञ्जना में बड़ी कुशलता प्राप्त की है। इनके अतिरिक्त श्रीरामगोपाल विजयवर्गीय भी चित्रकला के क्षेत्र में विशेष ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। अभी तक वे अपने चित्रों में गहन विषयों को लाने में एक प्रकार से असफल से रहे हैं, किन्तु कुछ और अभ्यास के बाद, उनके चित्र अपने ढङ्ग के एक ही होंगे। आधुनिक वातावरण में रहते हुए भी एक चित्रकार श्रीयुत मनीन्द्रभूषण गुप्त का ध्यान फिर राजपूत-कला की शैली की ओर आकर्षित हुआ है। वे अपने चित्रों में राजपूत-कला की सजावट व भाव-व्यञ्जना को लाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

गत १० वर्षों में संसार के प्रत्येक देश ने Cubism नामक शैली को अपनाया है। इस शैली में सजावट को विशेष महत्व नहीं दिया गया है। पश्चिम में Cubic Style की कई इमारतें भी बन चुकी हैं। इस शैली के आधार पर भारतीय चित्रकारों ने भी अपने चित्र बनाने आरम्भ कर दिये हैं। Cubic शैली के चित्र श्री गजेन्द्रनाथ टैगोर के हैं।

भारतवर्ष में चित्रकला का पुनरुद्धार करने में डॉ० अवनीन्द्रनाथ टैगोर, कुमार स्वामी, ओ० सी० गांगुली, प्रोफ़ेसर हैवेल और मि० मुकुन्दीलाल ने बहुत प्रयत्न किया है।

भारतीय चित्रकला का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। कला की ओर मनुष्यों की प्रवृत्ति दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। संतोष का विषय है कि भारतीय चित्रकार अपनी कला द्वारा मैत्री, सहयोग और सहानुभूति प्रकट करने में सफल हुए हैं। यदि भारतवर्ष अपनी कला द्वारा विश्व-बन्धुत्व स्थापित करने में सहायक हो, तो इससे भारतीय कला का कल्याण होगा।

लेखकों से निवेदन

लेखक महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि लेख के साथ में पत्रोत्तर अथवा लेख लौटाने के लिए यथोचित टिकट रखना न भूलें। इसके बिना हम अनेक बार उनकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकने, जिससे उनको असन्तुष्ट होना पड़ता है। नवीन लेखकगण अगर अपनी रचना भेजने के पूर्व लेख के विषय की सूचना देकर हमारी स्वीकृति मँगा लें तो विशेष सुविधा रहेगी। विशेषतया कविताओं और कहानियों के सम्बन्ध में इस नियम का अधिक ध्यान रखना चाहिए। कविताओं की प्रतिलिपि अवश्य रखनी चाहिए।

इस समय हमारे पास बहुत सी अस्वीकृत रचनाएँ इकट्ठी हो गई हैं। उनके लेखकों को शीघ्र ही टिकट भेज कर वापस मँगा लेना चाहिए। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर लौटा सकना कठिन होगा।

—सम्पा० 'चाँद'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

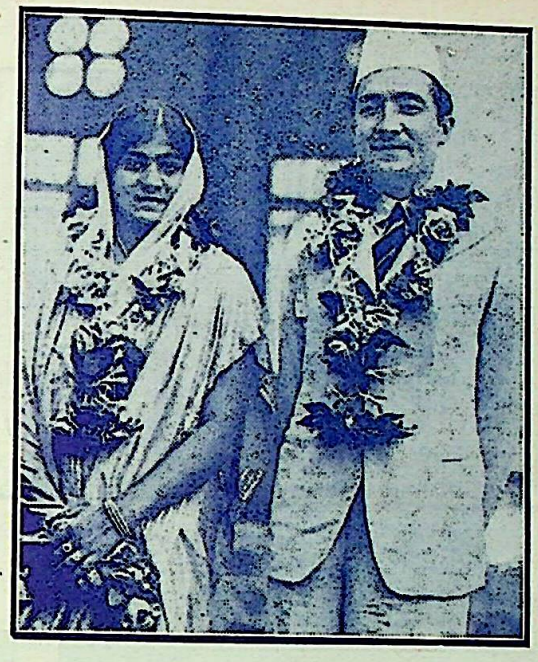

श्रीमती सोफ़िया सोमजी—आप कॉङ्गरेस की एक प्रमुख कार्यकर्त्री हैं। आपका शुभ विवाह हाल ही में डा० खान साहब के सुपुत्र श्री सैदुल्ला खाँ से हुआ है।

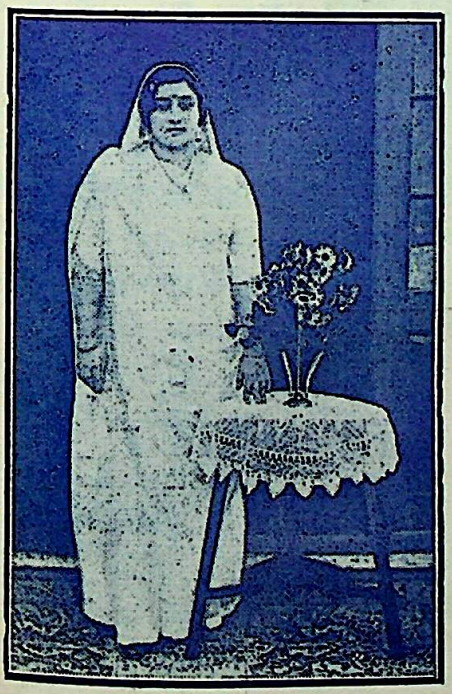

श्रीमती कुँवरानी तारा—आप नरसिंहगढ़ के दीवान ठाकुर जगदीशसिंह की धर्मपत्नी हैं। साहित्य-सेवा की विशेष रूप से अनुरागिनी हैं। आपकी कितनी ही कहानियाँ पत्रों में प्रकाशित हो चुकी हैं।

कुमारी कल्याणी मित्र—आप सङ्गीत में विशेष निपुण हैं और पबना सत्सङ्ग के अवसर पर होने वाले सङ्गीत-सम्मेलन में अपनी कला के लिए विशेष रूप से सम्मानित की गई थीं। आपकी आयु १२ वर्ष है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धन्य नहीं समझेगी ? मुझमें ऐसे गुण ही कौन से हैं ? फिर भी तुम्हारा मुझ पर इतना स्नेह है।"

"यह कोई मुझसे पूछे कि तुममें कौन से गुण हैं। क्या सुन्दरता ही सब कुछ है ! क्या बी० ए०, एम० ए० होने से ही सर्वगुण-सम्पन्नता आती है ? तुमने वह हृदय पाया है, जिसके सामने ये सब बातें तुच्छ हैं।"—उमाचरण ने उत्साह से कहा।

राधा के हृदय में पति के प्रति सभक्ति प्रेम का उबाल सा उठा। उमाचरण में उसे अनूठी सहृदयता ज्ञात हुई। क्षणभर नीरव रह कर वह बोल उठी—"शायद सुशील स्कूल से आ गया होगा। चलो, वह मुझे खोज रहा होगा।"

अपने एकमात्र पुत्र सुशील में उसके प्राण बसते थे। दोनों उठ खड़े हुए और मकान की ओर चल दिये।

२

उमाचरण के पिता अपने लाड़ले पुत्र के लिए लाखों की सम्पत्ति के साथ ही एक बहुत ही सुन्दर सजा हुआ संगमर्मर का विशाल भवन भी छोड़ गये थे जिसमें आजकल उमाचरण अपनी पत्नी राधा देवी व एकमात्र पुत्र सुशील के साथ निवास करते थे। भवन के आसपास बाग था, फल और फूलों से लदा हुआ। शहर में उमाचरण के इस भवन का नाम 'चाँदी का महल' प्रसिद्ध था। वास्तव में चाँदनी रात में इसकी शुभ्रता व कान्ति के सामने चाँदी भी हार मानती थी।

उमाचरण ग्रेजुएट न होते हुए भी योग्यता में उनसे अधिक थे और राधादेवी की सौन्दर्य की कमी को उनके सद्गुण पूरा करते थे। सुशील, दम्पति की एकमात्र हृदय-निधि था। गृह-कार्य्यों में व्यस्त राधा ने एकाएक बाग में भागा-दौड़ी होते देखी। उस दिन इतवार होने के कारण सुशील स्कूल न जाकर बाग में खेल रहा था। आशङ्का से राधा चञ्चल हो उठी। दासियों को देखने के लिए भेजा कि क्या बात है।

उसी समय सुशील को गोद में उठाये एक नौकर आ पहुँचा। सुशील के पैर के अँगूठे से खून की बूँदें टपक रही थीं। राधा व्यस्त होकर चीख उठी—

"क्या हुआ ? क्या हुआ ? कैसे यह चोट लगी ?"

नौकर जल्दी से बोल उठा—"जी नहीं। चोट नहीं है। इनके पैर में साँप ने डस लिया। लुका-छिपी खेलते हुए ये चम्पा के पेड़ पर चढ़े थे। वहीं एक काला नाग..."

नौकर की बात समाप्त होने के पूर्व ही राधा चीख कर बोली—"जल्दी डॉक्टर के यहाँ मोटर भेजो। गोपालचन्द्र के घर जाकर इसके बाबू जी को बुला लाओ। और भाई ! साँप का जहर उतारने वालों को जो कोई जानता हो, दौड़ कर बुला लाओ। हाय मेरे लाल !"

कई नौकर बेतहासा दौड़े। राधा ने सुशील को गोद में लिटा कर अपना अञ्चल फाड़ा और उसे सर्पदंश से कुछ दूर कस कर बाँध दिया। बालक तब तक होश में था। बोला—"माँ ! इतनी जोर से न कसो। वह बड़ा भारी नाग था। मेरा पैर उस पर पड़ गया। वह फुफकार कर मेरे पैर से लिपट गया।"

राधा के आँसू धुआँधार बह रहे थे। बालक को हृदय से लगाती हुई बोली—"वहाँ क्यों गये थे मेरे प्राण ! अब कैसी तबीयत है ?"

"पैर में कुछ चुनमुनाता है। माँ मुझे सोने दे।" राधा जानती थी कि नींद काहे की है—विष चढ़ रहा है। और भी विकल होकर नौकर से बोली—"वे अभी तक नहीं आये ! हाय मेरी तक़दीर ! हे विधाता, तू इसके बदले मुझे ले चल !"

बालक झपकियाँ ले रहा था। इसी समय मोटर का हार्न सुनाई दिया। उमाचरण घबड़ाये हुए दौड़ कर भीतर आये। उनके मित्र भी साथ थे। उमाचरण ने पुकारा—"सुशील बेटा !" परन्तु सुशील के नेत्र बन्द हो गये थे। राधा उसके सिर पर आँसू बरसा रही थी।

इसके बाद डॉक्टर आये। झाड़ने-फूँकने वाले आये। सबने अपनी शक्ति भर प्रयत्न किये। बात की बात में सैकड़ों रुपये उड़ गये, परन्तु सुशील के बन्द नेत्र फिर न खुल सके। कुछ ही देर में उसने संसार से बिदा ले ली।

उमाचरण चीख उठे। घर भर में कोहराम मच गया। परन्तु राधा निर्निमेष पुत्र का मुख देख रही थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब लोग शव को उसकी गोद से उटाने लगे तो वह विनती करती हुई दोनों हाथ जोड़ कर बोली—"मुझ पर दया करो। मेरे लाल को मुझसे न छीनो। जितना धन तुम्हें चाहिए, मैं दूँगी। लो यह लो।"

वह अपने आभूषण उतार-उतार कर फेंकने लगी। जब लोग सुशील के शव को उठा कर ले ही गये, तब वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी और बेहोश हो गई।

३

उमाचरण की गोद में राधा मूर्च्छित पड़ी थी। आस-पास डॉक्टर-वैद्यों का जमघट था। ६ घण्टे के होश में लाने के प्रयत्न का कोई फल न हुआ था। डॉक्टरों की राय से राधा के हृदय तथा मस्तिष्क दोनों पर विषम आघात हुआ था। होश में आने पर भी उसके मस्तिष्क के विकृत रहने की सम्भावना थी। उमाचरण के घाव पर यह कड़ी ठेस थी। बेचारे विकल हो-हो उठते थे।

अन्त में ३ घण्टे के उपचार से राधा ने आँखें तो खोलीं, परन्तु शून्य दृष्टि से चारों ओर देख कर फिर बन्द कर लीं। डॉक्टरों ने कुछ आशा दिलाई। कुछ देर बाद करवट बदल कर उसने फिर नेत्र खोले और उमाचरण की ओर देखा।

उमाचरण आँखें भरे हुए उसके पास गये और पूछा—"कैसी तबीयत है?"

राधा ने लाल-लाल नेत्रों से देख कर घूँसा उठाया और उमाचरण से बोली—"दुष्ट! पिशाच! सुशील को खाकर भी तेरा पेट न भरा?" फिर दोनों हाथों से नेत्र बन्द कर बोली—"जा! मैं तेरा मुँह देखना नहीं चाहती।" यह कहती-कहती बिस्तर पर औंधी लेट गई। उमाचरण ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से डॉक्टर को देखा। डॉक्टर ने बतलाया कि इसका मस्तिष्क खराब हो गया है।

इसके बाद उमाचरण ने राधा को ठीक करने के लिए कोई बात उठा न रखी। तरह-तरह के औषधि प्रयोग किये, परन्तु राधा फिर पहिले जैसी राधा न बन सकी। हजारों रुपये खर्च करने का कोई फल न हुआ।

राधा अपने पागलपन के प्रलाप में सदा ही सुशील का गान करती थी। उसे नहलाती, खिलाती तथा लोरी गाकर सुलाती। उमाचरण नित्य ही घण्टे दो घण्टे उसके पास बैठते और उसका पागलपन अश्रुपूर्ण नेत्रों से देखते रहते। सुशील के मरने के बाद उन्हें क्षण भर को भी शान्ति न मिली थी। दिन भर अपनी स्टेट का काम देख कर शाम को घर आते तो राधा की दशा देख कर उनका हृदय दूना व्यथित हो उठता। राधा के पागल होने के बाद उमाचरण की गृहस्थी का प्रबन्ध सब अस्त-व्यस्त हो गया था। एक की जगह दो खर्च होकर भी सुख नहीं मिलता था। नौकरों की सेवा में उन्हें कुछ आनन्द न आता। वे तो राधा जैसी गृहिणी की सेवा का स्वाद ले चुके थे। सदा ही एक प्रकार का अभाव खटका करता था। इसी प्रकार दो वर्ष व्यतीत हो गये।

४

"आज आप उदास सी दिखती हैं। क्या बात है?"

"योंही।"

"बिना कारण के तो कार्य नहीं होता।"

"कारण जान कर आप क्या करेंगे?"

"योग्य सेवा।"

उक्त वार्तालाप उमाचरण के अभिन्न मित्र के घर, उनकी बहिन रमा के साथ उमाचरण का हो रहा था। रमा कॉलेज की विद्यार्थिनी थी और आजकल उमाचरण की विचारशीलता की भक्त हो गई थी। रमा ज्योंही कॉलेज से आती उसी समय उमाचरण भी मित्र के घर पहुँच जाते। फिर मित्र और मित्र की बहिन के साथ चाय इत्यादि पीते और घन्टे दो घन्टे गपशप में बिता कर घर आते थे। आज अस्वस्थ होने के कारण रमा घर पर ही थी, परन्तु उमाचरण के वकील मित्र अभी कचहरी से न आये थे। आज उमाचरण नित्य की अपेक्षा जल्दी घर से निकल पड़े थे।

सहसा उमाचरण ने देखा कि बात करते-करते रमा के नेत्र भर आये हैं और बूँदें आँखों से गिरा ही चाहती हैं। वे और भी अधीर होकर रमा से बार-बार रोने का कारण पूछने लगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

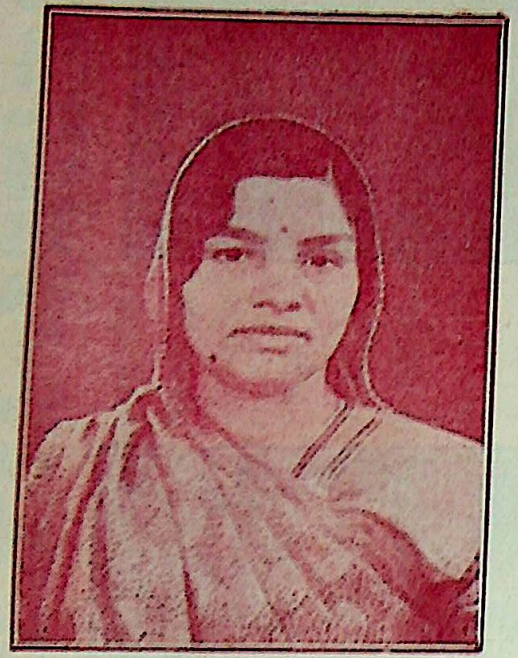

श्रीमती शान्तादेवी—आप मिर्जापुर के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की सदस्या मनोनीत की गई हैं।

मिस नीलिमा मुकर्जी—आप पटने की एक सुशिक्षित महिला हैं। इस समय बी० एस-सी० के लिए अध्ययन कर रही हैं। आपने योरोप-भ्रमण भी किया है और फ्रेंच तथा जर्मन भाषायें भली-भाँति बोल सकती हैं।

श्रीमती जी० नेरी—आप हाल ही में मङ्गलोर के लेडीज-क्लब के चेस टूर्नामेण्ट में विजयी हुई हैं, जिसके उपलक्ष में आपको एक कप प्रदान किया गया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(कहानी)

दुर्बलता

[श्रीमती रत्नकुमारी देवी, काव्यतीर्थ]

सावन का महीना था। आकाश मेघाच्छन्न था। बूँदों का उस समय नाम भी न था। बड़ी ऊमस थी। सन्ध्या के ५ बजे थे।

बाग़ में जूही की लताओं से बनाया हुआ एक लता-कुञ्ज था। कुञ्ज के बीच में बने हुए सङ्गमरमर के हौज़ के चारों ओर चार ही सङ्गमरमर की कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। लताओं में खूब जूही खिली हुई थी, जिसकी सुगन्धि से लता-भवन सुवासित हो रहा था।

कुर्सियों पर उमाचरण और उनकी पत्नी राधा बैठे बातें कर रहे थे। बातों के सिलसिले में राधा ने कहा—

"मेरी एक सखी का पत्र आया है, उसने इसी विषय में मेरी सम्मति पूछी है। आपकी क्या राय है?"

"मैं तो कहूँगा कि उनके पति को दूसरा विवाह कदापि न करना चाहिए।"

"सन्तान-प्राप्ति के लिए भी नहीं?"

"नहीं, ऐसा करने से दाम्पत्य जीवन का आदर्श भ्रष्ट होता है। मैं तो यह समझता हूँ कि उसके सामने सन्तति जैसी वस्तु का भी कोई मूल्य नहीं है।"—उमाचरण का कण्ठ-स्वर यह कहते-कहते और भी गम्भीर हो गया। राधा ने जिज्ञासा की—

"वंश के नाम की रक्षा कैसे होगी?"

"अपने सुकृत्यों से। मान लो दुष्ट सन्तति हो गई, तब तो और भी नाम डूब जावेगा। और यह कोई निश्चित बात नहीं है कि सन्तति सुशील ही होगी।"

"तो तुम्हारी राय में पुरुषों को दूसरा विवाह किसी भी दशा में न करना चाहिए?"

"किसी भी दशा में नहीं। पत्नी के मर जाने पर भी नहीं। मेरी राय में न तो पुरुष को अपना दूसरा विवाह करना चाहिए और न स्त्री को ही। तभी दाम्पत्य जीवन का आदर्श रह सकता है। तभी यह संसार स्वर्ग बन सकता है।"

"स्त्रियाँ तो कुछ इस आदर्श का पालन करती भी हैं, परन्तु पुरुष भी ऐसा कर सकते हैं, इसमें मुझे यथेष्ट सन्देह है। पुरुषों का विश्वास न करना चाहिए।"—यह कह कर राधा ने मुस्कराते हुए पति की ओर देखा। उमाचरण इस पर आपत्ति करते हुए बोले—"परन्तु तुम्हें ऐसा कहने का अवसर प्राप्त कैसे हुआ? क्या मेरे हृदय-सिंहासन पर केवल मात्र तुम्हारा ही अधिकार नहीं है?"

"मैं तुम्हारी बात नहीं कहती। संसार की बात कहती हूँ। तुम्हारे जैसा स्वामी पाकर कौन स्त्री अपने को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धन्य नहीं समझेगी ? मुझमें ऐसे गुण ही कौन से हैं ? फिर भी तुम्हारा मुझ पर इतना स्नेह है।"

"यह कोई मुझसे पूछे कि तुममें कौन से गुण हैं। क्या सुन्दरता ही सब कुछ है ! क्या बी० ए०, एम० ए० होने से ही सर्वगुण-सम्पन्नता आती है ? तुमने वह हृदय पाया है, जिसके सामने ये सब बातें तुच्छ हैं।"—उमाचरण ने उत्साह से कहा।

राधा के हृदय में पति के प्रति सभक्ति प्रेम का उबाल सा उठा। उमाचरण में उसे अनूठी सहृदयता ज्ञात हुई। क्षणभर नीरव रह कर वह बोल उठी—"शायद सुशील स्कूल से आ गया होगा। चलो, वह मुझे खोज रहा होगा।"

अपने एकमात्र पुत्र सुशील में उसके प्राण बसते थे। दोनों उठ खड़े हुए और मकान की ओर चल दिये।

२

उमाचरण के पिता अपने लाड़ले पुत्र के लिए लाखों की सम्पत्ति के साथ ही एक बहुत ही सुन्दर सजा हुआ संगमर्मर का विशाल भवन भी छोड़ गये थे जिसमें आजकल उमाचरण अपनी पत्नी राधा देवी व एकमात्र पुत्र सुशील के साथ निवास करते थे। भवन के आसपास बाग था, फल और फूलों से लदा हुआ। शहर में उमाचरण के इस भवन का नाम 'चाँदी का महल' प्रसिद्ध था। वास्तव में चाँदनी रात में इसकी शुभ्रता व कान्ति के सामने चाँदी भी हार मानती थी।

उमाचरण ग्रेजुएट न होते हुए भी योग्यता में उनसे अधिक थे और राधादेवी की सौन्दर्य की कमी को उनके सद्गुण पूरा करते थे। सुशील, दम्पति की एकमात्र हृदय-निधि था। गृह-कार्य्यों में व्यस्त राधा ने एकाएक बाग में भागा-दौड़ी होते देखी। उस दिन इतवार होने के कारण सुशील स्कूल न जाकर बाग में खेल रहा था। आशङ्का से राधा चञ्चल हो उठी। दासियों को देखने के लिए भेजा कि क्या बात है।

उसी समय सुशील को गोद में उठाये एक नौकर आ पहुँचा। सुशील के पैर के अँगूठे से खून की बूँदें टपक रही थीं। राधा व्यस्त होकर चीख उठी—

"क्या हुआ ? क्या हुआ ? कैसे यह चोट लगी ?"

नौकर जल्दी से बोल उठा—"जी नहीं। चोट नहीं है। इनके पैर में साँप ने डस लिया। लुका-छिपी खेलते हुए ये चम्पा के पेड़ पर चढ़े थे। वहीं एक काला नाग..."

नौकर की बात समाप्त होने के पूर्व ही राधा चीख कर बोली—"जल्दी डॉक्टर के यहाँ मोटर भेजो। गोपालचन्द्र के घर जाकर इसके बाबू जी को बुला लाओ। और भाई ! साँप का जहर उतारने वालों को जो कोई जानता हो, दौड़ कर बुला लाओ। हाय मेरे लाल !"

कई नौकर बेतहासा दौड़े। राधा ने सुशील को गोद में लिटा कर अपना अञ्चल फाड़ा और उसे सर्पदंश से कुछ दूर कस कर बाँध दिया। बालक तब तक होश में था। बोला—"माँ ! इतनी जोर से न कसो। वह बड़ा भारी नाग था। मेरा पैर उस पर पड़ गया। वह फुफकार कर मेरे पैर से लिपट गया।"

राधा के आँसू धुआँधार बह रहे थे। बालक को हृदय से लगाती हुई बोली—"वहाँ क्यों गये थे मेरे प्राण ! अब कैसी तबीयत है ?"

"पैर में कुछ चुनमुनाता है। माँ मुझे सोने दे।" राधा जानती थी कि नींद काहे की है—विष चढ़ रहा है। और भी विकल होकर नौकर से बोली—"वे अभी तक नहीं आये ! हाय मेरी तक़दीर ! हे विधाता, तू इसके बदले मुझे ले चल !"

बालक झपकियाँ ले रहा था। इसी समय मोटर का हार्न सुनाई दिया। उमाचरण घबड़ाये हुए दौड़ कर भीतर आये। उनके मित्र भी साथ थे। उमाचरण ने पुकारा—"सुशील बेटा !" परन्तु सुशील के नेत्र बन्द हो गये थे। राधा उसके सिर पर आँसू बरसा रही थी।

इसके बाद डॉक्टर आये। झाड़ने-फूँकने वाले आये। सबने अपनी शक्ति भर प्रयत्न किये। बात की बात में सैकड़ों रुपये उड़ गये, परन्तु सुशील के बन्द नेत्र फिर न खुल सके। कुछ ही देर में उसने संसार से विदा ले ली।

उमाचरण चीख उठे। घर भर में कोहराम मच गया। परन्तु राधा निर्निमेष पुत्र का मुख देख रही थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब लोग शव को उसकी गोद से उठाने लगे तो वह विनती करती हुई दोनों हाथ जोड़ कर बोली—"मुझ पर दया करो। मेरे लाल को मुझसे न छीनो। जितना धन तुम्हें चाहिए, मैं दूँगी। लो यह लो।"

वह अपने आभूषण उतार-उतार कर फेंकने लगी। जब लोग सुशील के शव को उठा कर ले ही गये, तब वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी और बेहोश हो गई।

३

उमाचरण की गोद में राधा मूर्च्छित पड़ी थी। आस-पास डॉक्टर-वैद्यों का जमघट था। ६ घण्टे के होश में लाने के प्रयत्न का कोई फल न हुआ था। डॉक्टरों की राय से राधा के हृदय तथा मस्तिष्क दोनों पर विषम आघात हुआ था। होश में आने पर भी उसके मस्तिष्क के विकृत रहने की सम्भावना थी। उमाचरण के घाव पर यह कड़ी ठेस थी। बेचारे विकल हो-हो उठते थे।

अन्त में ३ घण्टे के उपचार से राधा ने आँखें तो खोलीं, परन्तु शून्य दृष्टि से चारों ओर देख कर फिर बन्द कर लीं। डॉक्टरों ने कुछ आशा दिलाई। कुछ देर बाद करवट बदल कर उसने फिर नेत्र खोले और उमाचरण की ओर देखा।

उमाचरण आँखें भरे हुए उसके पास गये और पूछा—"कैसी तबीयत है?"

राधा ने लाल-लाल नेत्रों से देख कर घूँसा उठाया और उमाचरण से बोली—"दुष्ट! पिशाच! सुशील को खाकर भी तेरा पेट न भरा?" फिर दोनों हाथों से नेत्र बन्द कर बोली—"जा! मैं तेरा मुँह देखना नहीं चाहती।" यह कहती-कहती बिस्तर पर औंधी लेट गई। उमाचरण ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से डॉक्टर को देखा। डॉक्टर ने बतलाया कि इसका मस्तिष्क खराब हो गया है।

इसके बाद उमाचरण ने राधा को ठीक करने के लिए कोई बात उठा न रखी। तरह-तरह के औषधि प्रयोग किये, परन्तु राधा फिर पहिले जैसी राधा न बन सकी। हजारों रुपये खर्च करने का कोई फल न हुआ।

राधा अपने पागलपन के प्रलाप में सदा ही सुशील का गान करती थी। उसे नहलाती, खिलाती तथा लोरी गाकर सुलाती। उमाचरण नित्य ही घण्टे दो घण्टे उसके पास बैठते और उसका पागलपन अश्रुपूर्ण नेत्रों से देखते रहते। सुशील के मरने के बाद उन्हें क्षण भर को भी शान्ति न मिली थी। दिन भर अपनी स्टेट का काम देख कर शाम को घर आते तो राधा की दशा देख कर उनका हृदय दूना व्यथित हो उठता। राधा के पागल होने के बाद उमाचरण की गृहस्थी का प्रबन्ध सब अस्त-व्यस्त हो गया था। एक की जगह दो खर्च होकर भी सुख नहीं मिलता था। नौकरों की सेवा में उन्हें कुछ आनन्द न आता। वे तो राधा जैसी गृहिणी की सेवा का स्वाद ले चुके थे। सदा ही एक प्रकार का अभाव खटका करता था। इसी प्रकार दो वर्ष व्यतीत हो गये।

४

"आज आप उदास सी दिखती हैं। क्या बात है?"

"यों ही।"

"बिना कारण के तो कार्य नहीं होता।"

"कारण जान कर आप क्या करेंगे?"

"योग्य सेवा।"

उक्त वार्तालाप उमाचरण के अभिन्न मित्र के घर, उनकी बहिन रमा के साथ उमाचरण का हो रहा था। रमा कॉलेज की विद्यार्थिनी थी और आजकल उमाचरण की विचारशीलता की भक्त हो गई थी। रमा ज्योंही कॉलेज से आती उसी समय उमाचरण भी मित्र के घर पहुँच जाते। फिर मित्र और मित्र की बहिन के साथ चाय इत्यादि पीते और घन्टे दो घन्टे गपशप में बिता कर घर आते थे। आज अस्वस्थ होने के कारण रमा घर पर ही थी, परन्तु उमाचरण के वकील मित्र अभी कचहरी से न आये थे। आज उमाचरण नित्य की अपेक्षा जल्दी घर से निकल पड़े थे।

सहसा उमाचरण ने देखा कि बात करते-करते रमा के नेत्र भर आये हैं और बूँदें आँखों से गिरा ही चाहती हैं। वे और भी अधीर होकर रमा से बार-बार रोने का कारण पूछने लगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रमा ने अपना मुँह रूमाल से छिपा लिया और सिसकना आरम्भ किया। अब उमाचरण अपने को न रोक सके और रमा के पास जाकर उन्होंने उसके मुँह से रूमाल खींच लिया। रमा रोते-रोते मुस्करा उठी और तिरछी आँखों से उमाचरण की ओर देख कर बोली—"अच्छा।"

उसने अब अपने अञ्चल में मुँह लपेट लिया और फिर रोने लगी। उमाचरण को भी हठ सूझी। उन्होंने अब उसका अञ्चल मुख पर से खींचना आरम्भ किया। रमा अञ्चल छोड़ती न थी और उमाचरण उसे छुड़ा लेना चाहते थे। इसी खींचातानी में रमा की साड़ी फट गई तो उमाचरण ने "ओह!" कहते हुए उसका अञ्चल छोड़ दिया और कुर्सी पर बैठ गये। उनका मुख लज्जा से लाल हो रहा था। ऐसा ज्ञात होता था मानों उन्हें अपने इस कृत्य पर बड़ा पश्चात्ताप हो। रमा ने उमाचरण को उदास होकर बैठते देखा तो झट मुख पर से अञ्चल हटा लिया। उसके नेत्रों में आँसू थे, परन्तु ओठ मुस्करा रहे थे। बोली—"हार गये। अच्छा मैं अब बताये देती हूँ। भाई साहब मेरी शादी करना चाहते हैं और मैं मना करती हूँ। वे मानते नहीं। मेरा वश नहीं चलता, इसी से रोती।"

उमाचरण ने उसकी ओर देख कर आश्चर्य से पूछा—तो क्या आप शादी न करेंगी?

"करूँगी क्यों नहीं। परन्तु जिससे मेरी इच्छा होगी उससे करूँगी।"

यह कहते-कहते उसके कपोल अरुण हो गये और वह उठकर वहाँ से भाग गई। उसी समय रमा के भाई कचहरी से लौट आये। उमाचरण के कान तक लाल हो उठे। उनके मित्र का मुख गम्भीर हो गया था। उन्होंने बाहर से आते हुए कुछ बातें सुन ली थीं। उमाचरण को अब वहाँ बैठना भारी हो गया। इधर-उधर की कुछ बातें कर वे वहाँ से जल्दी गला छुड़ा कर घर आ गये।

५

उस दिन के बाद उमाचरण फिर मित्र के घर जाने या रमा से बात करने का साहस न कर सके। इसके साथ ही रमा के सौन्दर्य और अनूठी चञ्चलता को भूलने के प्रयत्न करने पर भी कृतकार्य न हो सके। प्रति क्षण उनके हृदय में कर्तव्य और प्रेम का द्वन्द छिपा रहता था। कर्तव्य उन्हें राधा की ओर और प्रेम रमा की ओर खींचता था। इस खींचातानी में उनके शरीर की दशा वैसी न रही। मुँह निकल आया। अपने कमरे में अकेले पड़े-पड़े कभी रोते कभी हँसते। एक पागल राधा थी दूसरे ये हो गये।

एक दिन उन्हें रमा के बी० ए० पास होने के उपलक्ष में दी जाने वाली पार्टी का निमन्त्रण मिला। कुछ सोच कर ये पार्टी में पहुँचे। खाना-पीना हो चुकने पर जब उमाचरण भी सबके साथ विदा होने लगे तो उनके मित्र उन्हें अपने कमरे में ले गए और कुर्सी पर बैठा कर बोले—"उमा! आजकल तो तुम आते ही नहीं। यह क्या सूरत बना रखी है?"

"तबियत ठीक नहीं रहती।"

"शारीरिक रोग है या मानसिक?"

उमाचरण चकित होकर मित्र का मुख देखने लगे। मित्र हँसते हुए बोले—"मैं तो उसी दिन समझ गया था। जब रमा रो रही थी। उसकी प्रतिज्ञा है कि वह तुम्हारे सिवाय किसी से विवाह न करेगी। उसने एक दिन स्वयं कह दिया है।"

"परन्तु मेरे तो स्त्री है। क्या तुम नहीं जानते। मैं कैसे.....।"—उमाचरण घबड़ा कर बोले।

मित्र महोदय ने उपेक्षा भाव से कहा—"रहने दो इन ढकोसलों को। तुम्हारी स्त्री पागल है। तुम्हारा उस पर तनिक भी प्रेम नहीं रह गया है। इसके सिवा आपको क्या अधिकार है कि किसी का जीवन यों नष्ट करें। विवाह तो तुम्हें करना ही होगा।"

उमाचरण की आत्मा निर्बल हो चुकी थी। वे कुछ भी न कह सके।

६

रमा ने उमाचरण के गृह में जैसे ही बधू के रूप में प्रवेश किया वैसे ही मानों 'चाँदी का महल' फिर चमक उठा। उनका घर स्वस्थ हो गया, शरीर स्वस्थ हो गया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और स्वस्थ हो गया मन। उन्हें पद-पद पर मालूम होने लगा कि राधा से रमा में कई विशेषताएँ हैं। राधा में बात करने का इतना सलीक़ा न था। वह वस्त्र इतने अच्छे ढङ्ग से नहीं पहिन सकती थी। उसमें हारमोनियम या सितार के साथ मधुर स्वर से गाकर मन को ताज़ा बनाने की इतनी शक्ति न थी। वह सुन्दरी न थी। पढ़ी-लिखी न थी। फिर उसमें था ही क्या, जिसकी याद अब उमाचरण को दुखित करती और अब तो राधा मनुष्य न थी, पशु थी। वह पागल थी! इन विचारों ने उनके सुख-मार्ग के कण्टकों को चुन-चुन कर दूर कर दिया। दोनों कभी सिनेमा जाते, कभी बाग़ में घूमते, कभी नदी में नाव चलाते और कभी-कभी रमा सितार बजा कर आधी-आधी रात तक उमाचरण को गाना सुनाती। और राधा—पगली राधा—अपने कमरे में क़ैद, अपने सुशील की याद में कभी हँसती कभी रोती। दोनों स्त्री-पुरुष कभी भूल कर भी उधर पैर न रखते।

उस दिन चैत्र की पूर्णिमा थी। ख़ूब चाँदनी खिली हुई थी। 'चाँदी का महल' मानो अमृत से नहा रहा था। रात के लगभग ११ बजे थे। महल के सामने दूध के लॉन में सङ्गमरमर के ताख़्त पर, दूध के समान श्वेत शय्या पर उमाचरण अधलेटे पड़े थे और रमा पास बैठी हुई सितार बजाती हुई मधुर स्वर से गा रही थी। चाँदनी मानों स्तब्ध होकर मधुर सङ्गीत-सुधा पी रही थी। रमा ने श्वेत जरी के वस्त्र पहिन रखे थे, जो रह-रह कर चमक उठते थे।

सहसा पद-शब्द हुआ। पगली राधा अपने कमरे से निकल कर एकदम उमाचरण के सम्मुख आकर खड़ी हो गई और बोली—"स्वामी! आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

रमा के हाथ से सितार छूटकर गिर पड़ा। वह थर-थर काँपने लगी।

उमाचरण एकदम उठ कर खड़े हो गये! राधा सामने ही खड़ी थी। उन्हें ज्ञात हुआ, मानों राधा पागल नहीं है। मानों वह उनसे कैफ़ियत तलब करने आई है। उन्हें पसीना आ गया। वे न तो उसे पकड़ ही सके और न ख़ुद सँभल ही सके। राधा फिर बोली—"पुरुषों का विश्वास न करना चाहिए।"

सहसा उसने काँपती हुई रमा की ओर देखा और भय से चिल्ला पड़ी—"हाय! हाय! यह कौन चुड़ैल आ गई। देखो! देखो! इसके कपड़ों में यह क्या चमक रहा है? हाय! ये तो चिनगारियाँ हैं। ये मुझे जला डालेंगी। मैं जाती हूँ। देवी! तू मुझे न खा।"

यह कहती हुई वह कुएँ की ओर दौड़ी। उमाचरण अचेत से वहीं खड़े रह गये। सामने ही कुछ दूर पर कुआँ था। राधा 'मुझे न पकड़' 'मुझे न पकड़' कहती हुई धड़ाम से कुएँ में गिर पड़ी।

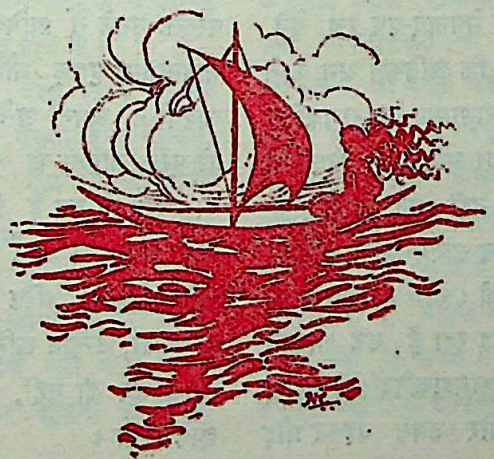

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साकेत की ऊर्मिला

[आचार्य श्री० जानकीवल्लभ शास्त्री]

माइकेल मधुसूदन की प्रभूत प्रतिभा से प्रसूत 'मेघनाद वध' वाल्मीकि और तुलसी को कल्पना में नहीं आ सकता था, यह एकान्त सत्य है; किन्तु वह अपनी मङ्गलमयी उदात्त-विशेषताओं के कारण नहीं, अपितु हेय-गुणों के आवश्यकताऽधिक विकासोल्लास से ही। आदि-कवि महर्षि वाल्मीकि तथा भक्त महाकवि तुलसी की लोक-मङ्गलोन्मुखी उज्ज्वल दृष्टि में निशाचरों का स्वरूप 'काला' ही मालूम पड़ता था, पर जिनका हृदय राक्षसों के प्रणय-चुम्बक की तरफ़ लौह होने के कारण जैसे, आप खिंच-खिंच जाता, और जिनकी दृष्टि अकारण पक्षपात-वश निशाचर-हृदय की उज्ज्वलता की तलाश में अपने स्वरूप को तपोमय बनाने के लिए बाध्य होती थी, उनका निर्मित मेघनाद-वध वाल्मीकि तुलसी के मस्तिष्क में कैसे आता? इसलिए उपेक्षणीयतया उन लोगों ने मेघनाद-वध नहीं रचा। आर्य-साहित्य के अभाग्य के कारण अगर वे भी वैसा करना चाहते, तो बिना विश्व-साहित्य के भाव-विनिमय किये ही मेघनाद-वध रच देते, और इसमें कहने की क्या बात है कि अविकल श्रम करते रहने पर भी मधुसूदन, वाल्मीकीय रामायण या रामचरित मानस नहीं लिख सकते थे। अगर भविष्य के विषय में कुछ कहना नास्तिकता का द्योतक नहीं होता, तो मैं मुक्त-कण्ठ से कह देता कि वैसी विश्वजनीन सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् रचना अब किसी की नहीं हो सकती। साथ ही वर्बरता का व्यञ्जक होने पर भी निस्सङ्कोच कह रहा हूँ, उन साक्षात् देव-रूप महाकवियों से आधुनिक महामहाकवियों की तुलना भी अधिक प्रशंसनीय नहीं, और उनसे बढ़कर प्रौढ़ मस्तिष्क सिद्ध करने का निष्पिद्र-यत्न तो घर वालों के निकट आत्मोत्कर्ष-प्रशंसा की तरह हास्यास्पद है।

विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ का 'उपेक्षिता' वाला निरूपण साहित्यिक जगत से शीघ्र ही उपेक्षित न होकर मौलिकता का रूप धारण करता जा रहा है, यह कोई साहित्यिक विकासात्मक विशेषता की बात नहीं है। हमारे साहित्य में उन उपेक्षिता (रवीन्द्र के शब्दों में) कही जाने वाली देवियों का अर्द्धस्फुरित चरित्र-चित्रण ही अधिक भाव-प्रवण और सुचारु समझा गया है। उस अर्द्ध-चित्रण के चन्द्र को आर्य-साहित्य ने अपने सर पर रक्खा है। भगवान् चन्द्रमौलि की तरह प्राचीन महाकवियों ने चन्द्र समझ-बूझ कर, उनके जीवन के उतने ही अंशों को प्रकाश में लाकर, उन्हें अमर कर दिया है, जिज्ञासुओं को क्षि प्रणयी बना दिया है। विहितसुरभि मुकुल को तरह चित्रण-कानन में उसकी (अर्द्ध-चित्रण की) चम साहित्यिक मधुपों के लिए क़तई कम आकर्षक नहीं वस्तुतः उतने से अधिक उनके जीवन की महाकाव्योपयु भावनात्मक पृथक् मौलिक सत्ता है भी नहीं। उन दो कवियों ने अपनी अतिशय सम्बद्ध कृतियों में प्रतिप की पूरी जीवनी का सङ्कलन करना अनावश्यक समझ था। सच तो यह है कि आधुनिक कवियों की तरह उन्हें किसी प्रकार (आर्ट पेपर पर छपा कर भी) ग्रन्थों का कलेवर बढ़ाना उद्दिष्ट न था। जिन्हें रामचरित्र चित्रि करना था, उन्होंने ऊर्मिला का विस्तृत चित्रण अप्रासङ्गि समझ कर ही नहीं, किन्तु अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रामचरित्र के साथ लक्ष्मण का जितना घना सम्बन्ध है, सीता-चरित्र के साथ ऊर्मिला का उसका अंश-मात्र भी नहीं है, फिर राम और सीता को नायक तथा नायिका बना कर लिखे जाने वाले महाकाव्य में लक्ष्मण की स्त्री ऊर्मिला का विरह-वर्णन करना कहाँ का पाण्डित्य होता? जिन्होंने यह दलील पेश की है कि 'सीता तो पति के साथ चल दी थी, पर ऊर्मिला घर में ही घुल-घुल मर रही थी, फिर उसका विरह-वर्णन सत्य होने के कारण अभिवाञ्छित क्यों नहीं है?' क्या मैं उनसे यह पूछने की धृष्टता कर सकता हूँ कि 'शतशः प्रार्थना करने पर भी जब राम ने लौटना स्वीकार न किया और भरत जी १४ वर्षों तक नन्दिग्राम में तपस्या में अविरत रहे, उस समय पतिप्राणा नववधू माण्डवी की भी वही दशा घर में न हुई होगी? लक्ष्मण राम की सेवा में साक्षात् तत्पर थे, पर भरत को तो वह सौभाग्य भी प्राप्त न था। उनकी माँ ने वैसा घोर कर्म कर डाला था, जिससे उन्हें लोगों के सामने आँखें उठाते भी लज्जा होती थी। और लक्ष्मण तो सब दिन लोक के प्यारे ही बने रह गए, राम के साथ रह कर। पर बेचारे भरत पर क्षण भर निरङ्कुश लोक ने दुर्भावना भी की थी, फिर उनकी (भरत की) मानसिक दशाओं का स्मरण कर नई-बहू का क्या हाल होगा? ऊर्मिला को तो इसलिए भी प्रसन्न होना था कि उसे उसके प्राणधन की तारीफें एक स्वर से सुनने का मौक़ा हमेशा मिलता था, पर करुणामयी माण्डवी को क्या अवलम्बन था, यही न कि वह कर्कशा सास की पुतोहू थी, उसके एकमात्र भरत ने भी कभी किसी काम में उससे कोई सलाह न ली थी और राम-लक्ष्मण के बराबर प्यार करने के पहले ही ननिहाल चल दिये थे।

उसी प्रकार कौशल्या की क्या दशा हुई होगी, जब कि सौत की वजह से उसे असमय वैधव्य-दुःख भोगना, और उस दुःख के एकमात्र सहारे राम को भी चौदह वर्षों के लिए घोर जङ्गल में भेजना पड़ा था। आह! महाराज जनक की लाड़ली, कुसुम सुकुमारा वधू सीता ऊँचे-नीचे पर्वत-कान्तारों और ऊबड़-खाबड़ कटीली ज़मीन में गिरती-पड़ती चढ़ती-उतरती चल रही थीं। उनके कोमल तलवे काँटों से छिद-छिद कर छलनी हो रहे थे, ख़ून का फ़व्वारा छूटता चलता था, उनकी याद की सहस्र-सहस्र सूचियाँ उसके हृदय में एक साथ चुभोई जा रही थीं। उसका लड़का जङ्गलों में मारा-मारा फिरता था और उसे राजमहल में क़ैद कर रक्खा गया था। क्या वह साँझ को चरागाह से लौटी वत्सोत्सुका गाय की तरह रँभाती और मूक करुण आह्वान-भरी चौदह वर्षों की उतनी लम्बी अवधि का एक-एक घण्टा गिन-गिन कर, तड़प-तड़प कर न रही होगी, फिर उसकी दिनचर्या का वर्णनाभाव क्यों नहीं खटकता?

और वह अभागिनी कैकेयी? जिसकी वजह से इतनी विपत्तियाँ खड़ी हुईं! हाय, जिसके आदर्श पुत्र ने भी वैसी माता से पैदा होने को कलङ्क माना, सारी प्रजा जिसे नीची निगाह से देख रही थी, क्या न चाहती होगी कि जल्द ही राम घर लौट आवें और मेरा कलङ्क धुला सा हो जाय! इतना ही नहीं, विपक्षी प्रधान पात्रों के विषय में भी पूर्ण-कथाएँ कहने को बाक़ी ही रह गईं। तब फिर ऊर्मिला ही क्यों? एक-एक की मानसिक तथा बाह्य अवस्थाओं की सम्पूर्ण वर्णना न होने के कारण सभी उपेक्षित हैं। पर यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो आवश्यकतानुसार सभी के अपेक्षित चरित्र अङ्कित हैं, और उससे ज़रा अधिक विस्तृत करने की वहाँ गुञ्जायश नहीं है।

इसीलिए प्रबल प्रतापी होने पर भी प्रतिपक्षी नायक का अपकृष्ट चरित्र अङ्कित किया जाता है। यदि कहीं उसके प्रभुत्व की कुछ उत्कृष्टताएँ बताई जाती हैं, तो वह सिर्फ़ इसलिए कि उससे चरितनायक की और अधिक उत्कृष्टता सिद्ध होती है। अर्थात् उतने बड़े पराक्रमी तथा साधनालंकृत को भी मेरे नायक ने धर दबाया, बस इतना ही व्यक्त करने के लिए। जिस प्रकार किसी मनुष्य के वर्णन की परिपूर्णता के लिए उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग की वर्णना अपेक्षित होती है, उसी प्रकार नायक के चरित्र की पूर्णता के लिए यथायोग्य उसके अङ्गों (पात्रों) का वर्णन कर दिया जाता है। पर जिस प्रकार 'हाथ' मनुष्य का अङ्ग ही है, मनुष्य नहीं, उसी प्रकार वह अङ्ग भी नायक नहीं हो सकते। और जिस प्रकार उस हाथ की परिपूर्ण वर्णना में सम्पूर्ण शक्ति का ह्रास कर देने पर भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य के वर्णन का विकास नहीं होता, उसी प्रकार उन-उन अङ्गों की विशद-विवेचना से नायक पूर्णतया चित्रित नहीं होता। साथ ही जिस प्रकार उस हाथ का अपेक्षाऽधिक वर्णन देख सहृदय कह उठता है, 'इसे तो थोड़े में समाप्त करना था, जब कि अङ्गों का पूर्ण वर्णन अभी बाक़ी है।' उसी प्रकार प्रति पात्रों के चित्रण की वृथा विशदता, सहृदयों को अखरने लगती है। 'यह वेपर की क्यों उड़ाई गई?' क्योंकि साङ्केतिक पात्रों से बहुत अधिक, नायक का वर्णन करना अवश्य आवश्यक है, ऐसी दशा में यथा-लिखित रूप में तो रामायण का कलेवर गधे की सवारी के लायक़ है, यद्यपि (अपनी विशेषता के कारण) विद्वानों के काँधे पर चलता है, फिर उन व्यर्थ वर्णनों को जोड़ देने पर मूर्खों के मस्तिष्क से भी ज्यादा भारी हो जाता!

इसलिए यह कहना कि जो बात वाल्मीकि या तुलसी के मस्तिष्क में न आई, वह रवीन्द्र और गुप्त के द्वारा आविष्कृत और परिवर्द्धित हुई है, सरासर अन्याय है। ऊर्मिला का विरह-वर्णन रामायण के लिए एकदम अना-वश्यक था, इसीलिए छोड़ दिया गया। अगर साकेत में उसी की प्रधानता में वैसा लिखा गया है, तो वह ठीक है, उसी प्रकार माण्डवी के लिए भी लिखा जा सकता है, पर इतने से ही वह लेखक वाल्मीकि व तुलसी से प्रौढ़ मस्तिष्क नहीं कहे जा सकते।

अब मैं यहाँ एक मनोवैज्ञानिक प्रश्न के द्वारा साकेत की ऊर्मिला के विरह-वर्णन को भी निरर्थक कहने की धृष्टता करना चाहता हूँ, आशा है आप इस पर गम्भीर विवेचन करेंगे। बात यह है कि "लक्ष्मण जो राम के साथ दास्य-भाव से रहे हैं। उन्हें अहर्निश जाग कर अखण्ड ब्रह्मचर्य-व्रत पालन करना तथा सांसारिक सभी विषय-वासनाओं से पृथक् रहना आवश्यक था, और इसी बल पर वही मेघनाद को मार सकते थे, राम नहीं। क्योंकि राम योगि-वेश होकर भी प्रियतमा के साथ थे, और थे 'साहित्यिक' सम्भोग शृङ्गारवान्। उसके विरह में वह पागल हो सकते थे, झाड़ी-झुरमुटों, पशु-पक्षियों और जङ्गल-पहाड़ों से पूछते फिरते थे—

हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी,
तुम देखी सीता मृगनयनी?

विचारने की बात है, वह योगिनी या तपस्विनी को नहीं ढूँढ़ रहे थे, किन्तु 'मृगनयनी' को। राम की तड़पन की अभिव्यक्ति सीता के—

तजऊँ देह करु बेगि उपाई,
दुसह विरह अब सहा न जाई।
पावकमय ससि स्रवत न आगी,
मानहुँ मोहि जानि हतिभागी।

में हुई है। उसी प्रकार—

"अपहृवानस्य जनाय यन्निजाम—
धीरतामस्य कृतं मनोभुवा
अबोधितज्जागरदुःखसाक्षिणी
निशा च शय्या च शशाङ्कोपला
विषयो मलयाहिमण्डली विषफूत्कारमयो मयोदितः
वत! कालकलत्रदिग्भवः पवनस्तद्विरहानलैधसा
प्रतिमासमसौ निशाकरः खग!
सङ्गच्छति यद्दिनाधिपम्
किमु तीव्रतरैस्ततः करै मर्म दाहाय स धैर्यतस्करैः।
—नैषध, १-२

में नल की जो मानसिक अवस्था चित्रित हुई है, दमयन्ती के विरह-वर्णन में—

अतितमा समपादि जलाशयं
स्मितलवस्मरणेऽपि तदाननम्
अजनि पङ्कुरपाङ्गनिजाङ्गण-
भ्रामकणेऽपि तदीक्षणखञ्जनः
स्फुटति हारमणौ मदनाष्मणा
हृदयमप्यनलङ्कृमदृग्यते
सखि! हताऽस्मि तदा यदि हृदयपि
प्रियतमः स मम व्यवधापितः

प्रतिफलित हुई है, और ऐसा होना ही आवश्यक था पर प्रेम, जैसा साकेत में चित्रित किया गया है, सांक रिकता से क़तई ख़ाली नहीं है। यहाँ मैं पूछना चाहता हूँ, जिसके विरह में ऊर्मिला तड़प-तड़प कर रातें बिताती थी, उसके रवच्छ हृदय पर उस ऐकान्तिक सत्य-प्रेम का कुछ असर नहीं पड़ता होगा? यदि नहीं, तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो वह ऊर्मिला का प्रेम कदापि सत्य नहीं हो सकता। और यदि हाँ, तब उस प्रणयरागिनी की मूर्छनूर्च्छना से लक्ष्मण को उन्मन होना अत्यन्त आवश्यक था। फिर क्षण-मात्र की ऊर्मिला विषयक जागृत प्रेमभावना, उन्मिषित वासना से, विचक्षण लक्ष्मण के विलक्षण दास्य भाव तथा अखण्ड व्रत को घोर धक्का पहुँच सकता था, चिरोन्मनस्कता की तो बात भी क्या की जाय? इसलिए सूक्ष्म निरीक्षण करने पर आप भी मेरे स्वर में स्वर मिला कर बोल उठेंगे। इसी मनोवैज्ञानिक असम्बद्धता तथा व्रत-विवेक पर विशेष ध्यान देकर वाल्मीकि और तुलसी ने अपनी-अपनी रामायण में अपनी संस्कृत संस्कृति तथा अप्रतिम प्रतिभा और आलोचनात्मक-दृष्टि का गम्भीर परिचय देते हुए ऊर्मिला का विरह-वर्णन नहीं किया है। इसलिए साकेत में ऊर्मिला के विरह-वर्णन में कवित्वशक्ति का वृहदुपयोग करने पर भी लक्ष्मण-चरित्र की कोई विचित्रता या उत्कृष्टता नहीं सिद्ध होती है और फलतः वह निरर्थक सा है।

मैं यह लिख कर कि "साकेत के प्रतिपात्र का चित्रण मुझे प्रायः शिथिल या असङ्गत जान पड़ता है," असंयत लेखनी वाले हिन्दी समालोचकों का कोपभाजन बनना नहीं चाहता। पर जिनकी प्रसन्नता के लिए सुकुमार सीता से (व्यर्थ समय न बर्बाद कर) कुछ 'कतवाया-बुनवाया' गया है उनके मान लेने भर से 'साकेत' का चित्रण सर्वमुख मान्य नहीं हो सकता। मैं शीघ्र ही 'साकेत' तथा उपेक्षिता-निबन्ध का विस्तृत विवेचन पाठकों की सेवा में समर्पित करूँगा।

गीत

[श्री० विनयकुमार]

यदि तुम इन प्राणों में होते?
ज्योतिर्मय! तुमसे मिलने को, बार-बार क्यों रोते?

वृन्तपात सोये हैं सुख से,
श्री समीर है मौन;
मेरी व्यथा तुम्हारे कानों,
हाँ, पहुँचाये कौन?

उर में ताप, शिशिर आहों में,
आँखों में पावस है;
कैसे कहूँ कि पूनो है जी,
प्राणों में मावस है!

उजली किरणों से अन्तर में, मधुर चाँदनी बोते!
यदि तुम इन प्राणों में होते?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिनेमा के इतिहास पर एक दृष्टि*

चित्रपट और वाकपट का इतिहास केवल २५ वर्ष की कहानी है। इस चौथाई शताब्दी पूर्व चलती-फिरती तस्वीरों के जन्म से किसी को भी यह विश्वास न था कि यह कभी संसार के आमोद की वस्तु भी हो सकेगी। परन्तु इस समय इसने अभूतपूर्व ख्याति और स्थान पैदा कर लिया है। प्रारम्भ के मैले, धुँधले और छोटे मकानों की तुलना आज किसी भी शहर के सुसज्जित सिनेमा और टॉकी भवनों से कीजिए, आँख फोड़नी लपलपाती अथवा टिमटिमाती हुई तसवीरों से वर्तमान सर्वांगपूर्ण फ़िल्मों का मुक़ाबिला कीजिए। उस समय उनके देखने के लिए किराये के दर्शक भी नसीब न होते थे, परन्तु आज प्रत्येक नगर और क़स्बे में वाइस्कोपों की धूम है, जो प्रतिदिन सहस्रों मनुष्यों को प्रमोदित करते रहते हैं।

जिस समय सिनेमा का जन्म हुआ था, उस समय पर्दे पर दिखलाने योग कहानियाँ थोड़ी ही थीं। अधिकतर ऐसी ही कहानियाँ अथवा नाटक होते थे, जो कि रङ्गमञ्च पर ही सफलतापूर्वक खेले जा सकें। परन्तु अब इस विषय का साहित्य ही अलग है, जिसकी वृद्धि बड़े वेग से हो रही है। सिनेमा के आविष्कारक रॉबर्ट पॉल (Robert Paul) तक को यह विदित न था कि कभी वह समय भी आवेगा जब कि मनुष्य पर्दे पर रङ्गमञ्च का मज़ा ले सकेंगे। प्रारंभ में सिनेमा का रूप केवल चलती हुई रेलगाड़ी, उड़ते हुए पक्षियों आदि की तसवीरों तक ही परिमित था, परन्तु हम देखते हैं कि आज वाकपट (Talkie) नाटक और चित्र का पूरा प्रतिद्वन्दी बना हुआ है, जिसमें उसे आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। १८९६ ई० में लन्दन के एक प्रसिद्ध व्यापारी ने रॉबर्ट पॉल से तसवीरों के दिखलाने का यन्त्र कार थोड़े से पौण्डों में ख़रीद लिया था और दोनों को यह विश्वास था कि सब खेल एक ही महीने में ठण्डा पड़ जायगा। परन्तु ईश्वर को कुछ और ही मञ्जूर था।

सिनेमा के आविष्कारक रॉबर्ट पॉल ने पहिला तसवीरों का "सैनिक का प्रेम" नामक खेल तैय्यार किया, जो एलेम्ब्रा थिएटर (Alhambra theatre, की छत पर तैय्यार किया गया था और उसी मकान के अन्दर प्रदर्शित भी किया गया।

इस इतिहास में सिनेमा के पात्रों का विवरण भी बड़ा मनोरञ्जक है। उस समय थिएटर के सभी अभिनेता और अभिनेत्रियाँ तसवीरों के खेल में काम करना अपना अपमान समझते थे। रङ्गमञ्च पर काम न रहने पर कुछ लोग नाम बदल कर एक-दो पार्ट खेल जाते थे, क्योंकि उस समय अभिनेताओं का और उनके नाम का बहुत थोड़ा मूल्य था। मशीन की चाल और तसवीरों की स्वच्छता सब कुछ थी। उस समय अभिनेत्रियों और अभिनेताओं को आलोकमय तारों (Stars) की उपमा न थी। उस समय एक ही पात्र को नायक का और अवसर आने पर सेवक, दोनों का अभिनय करना पड़ता था। पश्चिमी सिनेमा-जगत की सुन्दरियाँ मिस डोरिस पिकफ़ोर्ड और नोर्मा टाल्मेज को अपनी कौमारावस्था में बुढ़ियों का अभिनय तक करना पड़ा था। धन के लिए अथवा धन के अभाव में गुज़ारा करने के लिए ही हो

*Picture Show Annual के आधार पर—लेखक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाध्य होकर रङ्गमञ्च छोड़कर सिनेमा में आते थे। उस समय किसी को भी इसमें रुचि न थी। इसके अति उज्ज्वल भविष्य का किसी को पता न था।

डेविड ग्रिफ़िथ ने रङ्गमञ्च छोड़ कर जब चित्रपट में कार्य करना प्रारम्भ किया, तब उसे इसकी सफलता में भारी सन्देह था। स्वयं उनकी पत्नी ने अपनी पुस्तक 'When the movies were young' में लिखा है कि इस दम्पति में घण्टों सलाह होती थी कि ग्रिफ़िथ को चित्रपट छोड़कर थिएटर में फिर से ४० डॉलर प्रति सप्ताह की नौकरी कर लेना चाहिए अथवा नहीं। उस समय यह दोनों ५ डॉलर प्रति दिन पर काम कर रहे थे। ग्रिफ़िथ फालतू समय में चित्रपट के लिए कहानियाँ लिख कर कुछ और उपार्जन कर लेता था, परन्तु तिस पर भी इन दोनों की सम्मिलित आय ४० डॉलर कदाचित् ही पहुँचती थी! परन्तु यह लोग भाग्य-परीक्षा करते रहे। मिसेज़ ग्रिफ़िथ केवल इसी प्रतीक्षा में डटी रहीं कि शायद कभी मेरा पति डाइरेक्टर हो जाय। उनकी भावनाएँ दृढ़ थीं, मिसेज़ ग्रिफ़िथ की मनोवाञ्छा पूर्ण हुई। ग्रिफ़िथ महोदय सबसे प्रथम, सबसे चतुर और कदाचित् सबसे अधिक सफल डाइरेक्टर हुए।

वह समय भी ऐसा ही था। रङ्गमञ्च के पात्रों को भी बहुत थोड़ा वेतन मिलता था। जब मैरी पिकफ़ोर्ड को ग्रिफ़िथ ने २५ डॉलर प्रति सप्ताह पर रक्खा था तो उसने अन्य पात्रों की भाँति अपने को बड़ा कमाऊ समझा था। मैरी पिकफ़ोर्ड की उस अवस्था का और उसकी आज की आर्थिक दशा की तुलना कीजिए। इसी चित्रपट-व्यवसाय में उसने अटूट सम्पत्ति इकट्ठा कर डाली है।

जब ग्रिफ़िथ ने कहा कि मैं दो रीलों का एक कहानी तैयार करूँगा तो सब ने उसे पागल ही समझा, क्योंकि उस समय तक ऐसा प्रयास किसी ने न किया था और न दर्शक ही कोई लम्बा खेल देखने को तैयार होते थे! सभी खेल १००० फ़ीट लम्बी एक-एक रील के ही होते थे। लोग ग्रिफ़िथ के बनाए हुए इस दो रीलों वाले प्रथम फ़िल्म 'Enoch arden' को केवल इसी शर्त पर देखने को तैयार हुए कि आधा सोमवार को देखेंगे और आधा गुरुवार को। इससे अनुमान किया जा सकता है कि उस समय के चित्रपट कितने अरुचिकर और आकर्षक-हीन होते थे।

ग्रिफ़िथ की पहिली रचना को लोगों ने बेहद पसन्द किया और दोनों भागों को एक ही दिन में देखने का हठ करने लगे। यह पहिला ही अवसर था कि लोगों ने एक समय में २००० फ़ीट फ़िल्म देखा था और आज एक साधारण अङ्गरेज़ी फ़िल्म ६-७००० और भारतवर्षीय १०-१२००० तक से छोटी कदाचित् ही होती है। मानव-समाज की वाकपट और चित्रपट की ओर बढ़ी हुई मनोवृत्ति का इससे अधिक ज्वलन्त उदाहरण और क्या चाहिए?

जैसा पहिले कहा जा चुका है कि उस समय में अभिनय को कोई स्थान न था। प्रोग्राम के साथ प्रमुख पात्रों के नाम की आवश्यकता न होती थी। परन्तु जब धीरे-धीरे लोगों को सिनेमाओं की चाट लगी तब वे अपनी रुचि के अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के नाम जानने की इच्छा करने लगे। डाइरेक्टरों के पास पूछ-ताछ के पत्र आने लगे। उन्होंने सोच लिया कि इस भेद को गुप्त रखने में हानि ही है, अतः विज्ञापन के साथ फ़िल्म के प्रमुख-प्रमुख पात्रों का नाम भी सम्मिलित करना प्रारम्भ कर दिया। फ़्लोरेन्स टर्नर (Florence Turner) ने Vitagraph girl के नाम से बड़ी ख्याति पाई।

मिसेज़ ग्रिफ़िथ ने अपनी पुस्तक में एक बड़ी मनोरञ्जक घटना का उल्लेख किया है। ग्रिफ़िथ एक दिन बहुत उदास थे। कारण पूछने पर उन्होंने कहा—"आज मेरी पिकफ़ोर्ड के नाम २५ पत्र आये हैं। यदि उसे इसका पता लग जायगा तो वह अपनी वेतन-वृद्धि चाहेगी।" परन्तु यदि आज किसी अभिनेत्री को इतनी सी डाक आये तो उसे विश्वास हो जाय कि अब उसका चित्रपट में कार्य करना बेकार है। आज उसी मेरी पिकफ़ोर्ड के लिए एक पृथक् डाक-घर खुला हुआ है, जिसमें २५ क्लर्क उसके आये हुए पत्रों का उत्तर देते रहते हैं।

परन्तु जब से मूक चित्रपट ने बोलना सीखा है तब से वह और भी लोक-प्रिय हो गया है। अनेक विद्वानों को भय है कि कहीं वाकपटों की अधिकाधिक सफलता से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थिएटर और नाटकों का अस्तित्व ही न मिट जाय। वास्तव में इस आविष्कार को आशा से अधिक सफलता प्राप्त हुई है और आगे कितनी उन्नति होना सम्भव है, इसका अभी कोई अनुमान नहीं कर सकता।

—ब्रजेन्द्रप्रसाद पालीवाल, एम० एस्-सी०

❀ ❀ ❀

वीराङ्गना कमला

वीराङ्गना कमला देश की बलिवेदी पर नेहरू-कुटुम्ब की प्रियतम आहुति है। यह आहुति इस कुटुम्ब ने जान-बूझ कर, सोच-विचार कर कठोर हृदय से समर्पित की है। अगर पं० जवाहरलाल नेहरू देश के प्रति अपने कर्तव्यों की किंचित मात्र भी उपेक्षा कर सकते होते, तो कमला आज जीवित होतीं। कमला १९३५ के अन्त में विलायत जाने के बजाय १९३३ के अन्त में जा सकती थीं। किन्तु पं० जवाहरलाल के सामने समस्या थी—या तो वह देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकते थे या अपनी सहज भावनाओं का आदर करके अपनी स्त्री को जीवित रख सकते थे। यदि वह पहला मार्ग ग्रहण करते थे, अर्धाङ्गिनी का जीवन खतरे में पड़ता था। अगर दूसरे मार्ग पर चलते थे तो देश के प्रति अपने कर्तव्यों की अवहेलना होती थी। कठोर हृदय से जवाहरलाल ने अपना दूसरा मार्ग ग्रहण किया। स्त्री के स्वास्थ्य सुधारने के प्रयत्न में न पड़ कर १९३३ के आरम्भ में वह जेल चले गये। लोकोत्तर पुरुष ऐसा ही करते हैं। मृदुल स्वभाव जवाहर, जो किसी के प्रति कटुता नहीं रखते, ऐसा कठोर निर्णय करें। कवि ने सच कहा है—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि;
लोकोत्तराणाम् चेतांसि कोनु हि विज्ञातमर्हति।

१९३० में जिस समय महात्मा गाँधी ने नमक-सत्याग्रह का आन्दोलन आरम्भ किया था, पं० जवाहरलाल नेहरू और पं० मोतीलाल नेहरू दोनों सत्याग्रह आश्रम गये थे और दो-चार रोज वहाँ रहे थे। सायंकाल की प्रार्थना में गाँधी जी इस जमाने में कुछ न कुछ कहा करते थे। "मैंने एक महान यज्ञ का अनुष्ठान किया है।"—एक दिन वह प्रार्थना के बाद बोले थे—"इस यज्ञ में मैं अपनी पवित्रतम और प्रियतम चीज सबसे पहले भस्म करना चाहता हूँ, और अन्त में मैं स्वयं भस्म हो जाना चाहता हूँ।" गान्धी जी के इस संकेत को इस प्रार्थना-स्थल पर बहुतों ने सुना, किन्तु अमल किया जवाहरलाल ने। राष्ट्रीय महायज्ञ में उन्होंने पवित्रतम और अपनी प्रियतम चीज भस्म कर दी।

स्वतन्त्रता की हिंसात्मक लड़ाई में मृत्यु चटपट होती

स्वर्गीया कमला नेहरू

है, अहिंसात्मक युद्ध में शनैः शनैः। कमला नेहरू ने साल भर तक मृत्यु-शय्या पर शनैः शनैः प्राण दिये। समरस्थल में प्राण देने वाले योद्धा से कहीं ऊँचा स्थान रखता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमती कमला नेहरू का जन्म जुलाई १८०० में और विवाह १८१७ की वसन्त पञ्चमी को हुआ था। १८ वर्ष का वैवाहिक जीवन व्यतीत करके २८ फ़रवरी १८३६ को इनका शरीरान्त हुआ। १८ वर्ष के वैवाहिक जीवन में प्रथम चार वर्ष इनके वैवाहिक जीवन के तो स्वर्गीय थे और बाक़ी १५ वर्ष संन्यास-युक्त। विलायत से १८२७ में लौटने के बाद ही यह राजनीतिक क्षेत्र में आ गई थीं, किन्तु १८३० के आन्दोलन में अपनी निर्भीकता, सङ्गठन-कुशलता और उत्साह के कारण इन्होंने ख़ूब कीर्ति पाई। कॉङ्गरेस की वर्किङ्ग कमेटी की सदस्या चुनी गईं। सदा अपने कॉमरेड्स की पथ-प्रदर्शक और पति की अनुगामिनी रहीं।

कमला नेहरू समाज-सुधारक थीं। हिन्दू-समाज में स्त्रियों की पतितावस्था इन्हें बराबर खटकती थी। यदि इनका यह विश्वास न होता कि सामाजिक उन्नति राजनीतिक प्रगति की अनुचर है, तो आप इन्हें आजीवन सामाजिक कुप्रथाओं के ख़िलाफ़ घोर संग्राम करते हुए देखते।

कमला नेहरू भारत राष्ट्र की सबसे सुन्दरी देवी, नेहरू कुटुम्ब की लक्ष्मी और देश के नवयुवकों की हृदय-सम्राज्ञी थीं। शिष्टाचार-कला में यद्यपि अपने पति के समान प्रवीण नहीं थीं, किन्तु हृदय की उसी प्रकार निर्मल और स्वच्छ। विनय में अद्वितीय, गार्हस्थ्य जीवन में पश्चिमी सभ्यता के समस्त सद्गुणों का उनमें समावेश था। किन्तु भारतीय सभ्यता के अनुपम शील, सद्भाव और मर्यादा की यह आदर्श मूर्ति थीं।

आनन्द-भवन आज निस्तेज है। जवाहरलाल का हृदय वीरान हो गया है। भारतीय महिला राष्ट्र तो आज श्रीविहीन है।

कमला नेहरू सच्ची सौभाग्यवती थीं। पति की गोद में प्राण दिये। भारत-माता के लिए प्राण दिये। जब तक जीवित रहीं फूलों में रहीं, कमला के समान समाज ने इन्हें हृदय-कमल में स्थान दिया। मरीं तो सारा भारत विकल है। वास्तविक वीर गति पाई। ऐसी गति विरले ही किसी को मिलती है।

ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे। जवाहरलाल को उनकी विस्मृति प्रदान करे, और भारतीय राष्ट्र को कमला नेहरू की स्मृति उचित रूप से चिरस्थायी करने का दृढ़ संकल्प दे।

—सीतलासहाय

* * *

हिन्दू-समाज में स्त्रियों का स्थान

जब प्रकृति और समाज एक-दूसरे के विरोधी हो जाते हैं, तो बड़ा अनर्थ हो जाता है। आजकल हमारे भारतवर्ष की विदुषियों की भी दशा बड़ी शोचनीय हो रही है। पुरुष-समाज इस बात को भूल गया है कि स्त्री-संसार मानव-विचार का एक वृहद क्षेत्र है। उनकी स्थिति स्त्रियों ही पर निर्भर है। पुरुष समाज की दृष्टि में स्त्री-जाति केवल सन्तान उत्पन्न करने की एक मैशीन है। अपने स्वार्थ-साधन, अपनी कामुकता को शान्त करने की एक कल आदि विशेषताएँ सम्मुख रखकर ही उनको अब भी थोड़े बहुत रूप में आदर की दृष्टि से देखते हैं। नारी शक्ति को अभी तक पुरुष समाज ने समझ ही नहीं पाया। यदि ध्यानपूर्वक विचार किया जाय और पौराणिक इतिहास पर एक दृष्टि फेंकी जाय तो ज्ञात होगा कि प्राचीन काल में दुर्गा, जगदम्बा, अम्बालिका, महामाया, चण्डी, भवानी, सरस्वती, लक्ष्मी आदि जितने भी नाम मिलते हैं, वे सचमुच नारी शक्ति के ही नाना नाम और रूप हैं। जिस देश और जाति में इस जाति का आदर होता है, जहाँ इसका पूजन होता है, वहाँ सुख और शान्ति सदा निवास करती है। स्त्री-जाति का राज्य, प्रेम का राज्य है। स्त्री में प्रेम की समस्त विभूतियाँ छिपी रहती हैं, किन्तु पुरुष समाज, इनके बहुत ही समीप रहने के कारण, उन विभूतियों को कभी देखने की इच्छा ही नहीं करता। जिस पुरुष ने या जिस जाति ने इस शक्ति का तिरस्कार किया है, उसका सर्वनाश हो गया है।

समस्त देशों के नारी-इतिहास को मनन करने से विदित होता है कि अगर कोई प्राणी मनुष्य की विद्या में, उसके रहन-सहन में, उसके नित्य व्यवहार में अधिक भाग लेता है तो वह स्त्री-समाज ही है। प्राचीन समय के हिन्दू महात्माओं का तो कहना ही क्या है। आजकल के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पश्चिमी विद्वानों ने भी स्त्रियों की प्रशंसा में इतने गीत गाये हैं और ऐसा वर्णन किया है जिससे ज्ञात होता है कि सारे देशों के मनुष्यों के जीवन की प्रभुता और बड़प्पन की मूल स्त्रियाँ ही समझी गई हैं।

महाभारत के वन-पर्व में महाराज युधिष्ठिर मारकण्डेय महात्मा से स्त्रियों का वर्णन पूछते हुए कहते हैं कि स्त्रियाँ जो अपने पति के प्रेम में डूबी हुई हैं वह सदा सत्य बोलती हैं और दस मास गर्भ में धारण कर, बड़े कष्ट को सहन कर सन्तान-प्रसव करती हैं, इससे अधिक और क्या हो सकता है? महात्मा मारकण्डेय कहते हैं कि पिता से माता का स्थान बड़ा और महत्वपूर्ण होता है। माता ही पर पुरुष-जाति का बड़प्पन और गौरव निर्भर है। स्त्री अपने प्रभाव से पुरुष को निकम्मा, दम्भी और कायर बना सकती है तथा इन्हीं अवगुणों से पूर्ण मनुष्य को शक्तिशाली, पराक्रमी, चरित्रवान और विद्वान् आदि गुणों में परिवर्तित कर सकती है! स्त्रियाँ इतनी उत्तम शक्ति रखती हैं कि वह अपने उदर से बड़े-बड़े महात्माओं को उत्पन्न कर सकती हैं।

अगर स्पार्टा की माताएँ संसार भर में विख्यात हैं तो उसका कारण यही है कि वे अपने पुत्रों को वह शिक्षा और उपदेश देती थीं जिससे वे अपने प्राण से अधिक अपने देश का गौरव समझते थे, जिन्होंने अपने आपको मातृ-भूमि की रक्षा के लिए बलिदान कर दिया था।

मार्टिन साहब कहते हैं कि स्त्रियाँ स्वतन्त्र हों अथवा परतन्त्र, हुकूमत सब उन्हीं की है। क्योंकि वह मनुष्य-जीवन की प्रत्येक दिशा में अपना प्रभाव डालती हैं और उनके जीवन को अपने अनुकूल बना लेने में समर्थ होती हैं।

नेपोलियन ने एक बार भाषण देते हुए कहा था—कि आत्मिक, शारीरिक और मानसिक शक्तियों को उत्तेजना देने वाली स्त्रियाँ ही होती हैं, माता ही बच्चों को अच्छा या बुरा बना सकती है, और वे बच्चे ही बड़े होकर जाति के स्तम्भ होते हैं, अतएव देश, जाति और मनुष्य के बड़प्पन को चिर-जीवित रखने के लिए यह आवश्यक है कि स्त्रियों की पूजा की जाय और उनकी आराधना देवी की तरह की जाय।

किन्तु खेद है कि वर्तमान समय में स्त्रियों की दशा बड़ी ही शोचनीय हो रही है। स्त्रियों को कड़े परदे में रखना, उनकी शिक्षा का कोई समुचित प्रबन्ध न करना, उनको अबोध अवस्था ही में वधू बना देना, जोड़ी के औचित्य पर ध्यान न देकर उनका मनमाना विवाह कर देना ऐसी कितनी ही बातें हैं जो स्त्री-जाति को अन्धकार के गढ़ में गिरा रही हैं, उनकी प्राचीन महत्ता को नष्ट कर रही हैं और उन्हें अपने आदर्श से गिरा रही हैं। यह बातें ऐसी हैं, जो मानव प्रकृति के सर्वथा विरुद्ध है। इन्हीं बातों के कारण स्त्रियों की न शारीरिक उन्नति हो रही है और न मानसिक ही। पशुओं से भी गया बीता जीवन आज हमारी महिलाएँ व्यतीत कर रही हैं।

भारत के बुरे दिनों में जब चारों ओर से धर्म के शत्रु, देश के शत्रु, मान-मार्यादा के शत्रु, यवनों ने आक्रमण किया था, उस समय विदुषी आर्य-ललनाओं ने, वीर क्षत्राणियों ने, पतिभक्ता, कुल-कामिनियों ने किस प्रकार आर्यों की सहायता की और भारत-भूमि, हिन्दू-धर्म तथा अपने सतीत्व की रक्षा की, यह बात किस इतिहास-प्रेमी से छिपी है?

अपनी स्त्रियों के प्रति प्रेम, सतीत्व व कार्यपटुता में पूर्ण रूप से विश्वास कर जब-जब वीर क्षत्रिय हाथ में नङ्गी तलवार लेकर "हर-हर महादेव" का सिंहनाद करके असंख्य शत्रु-सेना पर सिंह की भाँति झपट कर, आक्रमण कर, परमधाम को सिधारे, तब अपने पतियों की मृत्यु के पश्चात् वीर क्षत्राणियाँ किस प्रकार अपनी सतीत्व-रक्षा के लिए जीते जी अग्नि में जल कर भस्म हो गईं, कौन ऐसा भारतवासी है जो इस घटना से परिचित नहीं है?

रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, अरगल की रानी, श्रीमती वायजाबाई सेंधिया, आदि वीर क्षत्राणियों की मार्मिक कथाएँ किसको ज्ञात नहीं? कौन ऐसा पुरुष है जिसका मस्तक इनकी कथाओं को पढ़ कर शर्म से नीचा न हो जाता हो? किन्तु आज, हिन्दू-महिलाओं की समस्या ही दूसरी है। उनके लिए आज दिन हिन्दू-समाज में कोई ऐसा साधन नहीं जिससे वे अपनी उन्नति कर सकें। बल्कि वे ही, भारतीय ललनाएँ जो किसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समय इसी देश के पुरुषों द्वारा प्रत्येक विषय में पूछी जाती थीं, जिनकी सम्मति लेकर कोई कार्य किया जाता था, जिनके सहयोग के बिना कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता था, जो पुरुषों द्वारा 'अर्धांगिनी' समझी जाती थीं, वही आज उन्हीं पुरुषों और समाज के द्वारा काल-चक्र में पड़ कर ठुकराई जा रही हैं, पद-दलित की जा रही हैं, उनके स्वास्थ्य और शिक्षा की अवहेलना की जा रही है, उन्हें 'कामुका' के नाम से पुकारा जा रहा है और उन्हें "चरित्र-भ्रष्टा" कह कर समाज से निकाला जा रहा है। पुरुष समाज का ख़्याल है कि वर्तमान समय में इस बढ़ते हुए व्यभिचार का सारा दोष स्त्रियों ही पर है। वे ही आजकल के दूषित वातावरण की नायिका समझी जा रही हैं। किन्तु यह कोई नहीं विचारता कि ये बेचारी दीना, मलीना, अबोध बालिकाएँ, तरुणी विधवाएँ, युवती, उद्वेलित यौवन की अदम्य लालसा, आशा, आकांक्षा, रूप-लावण्य लिए हुए भी संयमी हैं, स्थिर-प्रज्ञा हैं। उन पर व्यर्थ में दोषारोपण किया जाता है। मेरी समझ में तो अनेक युवक अपनी तरुणी स्त्री के रहते भी अदम्य कामवासना की विभीषिका में फँस कर पाप करते रहते हैं। इसके विपरीत हमारी बहिनों में एक भी ऐसी बहिन न मिलेगी जो इस प्रकार पाप-पङ्क में अकारण प्रसित हो जाय। क्या कारण है कि मनुष्य पाप करता हुआ भी पापी नहीं कहलाता। क्या बात है कि पुरुष को जगत का भय नहीं, लोक की दया नहीं, समाज का भय कराल मूर्ति बन कर उन्हें नहीं डराता? क्या कारण है कि समाज और धर्म का कालचक्र उनके ऊपर अपना प्रभाव नहीं रखता और क्या कारण है कि कोई पद-स्खलिता, दीना नारी समस्त जीवन पश्चात्तापाग्नि में जलती और तपती हुई भस्म भी हो जाय, समाज उसे क्षमा नहीं करता? इसका कारण केवल एक है कि वे समाज में अपना कोई मूल्य नहीं रखतीं। उनके थोड़े से अपराध का कहीं ठिकाना नहीं; चाहे वे पश्चात्ताप की अनल में तप कर स्वर्ण के समान चमक उठें, पर समाज की दृष्टि में वे पतिता ही समझी जायँगी।

जीवन-सर्वस्व स्वामी ही के साथ-साथ हिन्दू ललना क्या नहीं खो देती! सुख-सौभाग्य, मानाभिमान, गर्व-गौरव सभी कुछ उसका उसके पति के साथ चला जाता है! मैं मानता हूँ कि यौवन की तीव्र उत्तेजना से अमुक स्त्री का मन चञ्चल हो उठता होगा, श्रावण, भादों की भावुकतापूर्ण घोर निशा में 'पी कहाँ, पी कहाँ' की करुण पुकार से किसी विरहिणी का चित्त विरह-ताप से व्याकुल हो उठता होगा, किन्तु इसके अर्थ यह नहीं कि वह पापिनी है, व्यभिचारिणी है और विलासिता की मूर्ति है। पति के साथ ही स्त्री के हृदय से परमेश्वर उन प्राकृतिक प्रवृत्तियों का तो नाश कर नहीं देता, जो तरुणावस्था के स्वाभाविक चिह्न हैं, वे तो सभी चिह्न वर्तमान रहते ही हैं। सच बात तो यह है कि स्त्रियों को पथ-भ्रष्ट करने वाला पुरुष-समाज ही है। प्रथम तो उनको नाना प्रकार के कष्ट दे उनको अपने धर्म से विचलित कर देते हैं। अपमान ही को न सहन कर सकने के कारण आज दिन लाखों स्त्रियाँ घृणित वेश्यावृत्ति कर रही हैं। देश उन पर मुग्ध है, राजे-महाराजे उनके पैर चूमते हैं। समाज के ठेकेदार और आचार-विचार के एकमात्र बड़े-बड़े विद्वान और पण्डित उनके चरण-रज को मस्तक पर रखते हैं। बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ, वकील, डॉक्टर तथा सभी सम्प्रदाय के मनुष्य उनकी आराधना में सब कुछ खो देते हैं—यह है समाज का न्याय और उन बेचारी अबलाओं का प्रतिकार! वे धर्म खोकर सम्मान पाती हैं। कौन हिन्दू-गृह ऐसा है, जहाँ विधवा नारी का करुण-कलाप न गूँजता हो, तथा कितने माई के सपूत हैं, जो उन देवियों को पवित्रता की मूर्ति, संयम की देवी समझ कर उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते हैं? ऐसे पुरुषों के समाज को जब तक नृसिंह-रूप धारण कर नष्ट नहीं किया जाता, जब तक उनमें सुधार की भावना नहीं लाई जाती, जब तक नारी-जाति को वही पुरातन आदर और बड़प्पन नहीं दिया जाता, जब तक उन्हें परदे की कुरीति से छुटकारा नहीं दिलाया जाता, जब तक उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध नहीं किया जाता, तब तक हिन्दू जाति किसी प्रकार भी उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँच सकती। समाज को अपना दृष्टिकोण बदलना ही पड़ेगा।

—रामरत्न अवस्थी

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बस

तटिनी के तट पर उस पार आम्र की डाली पर बैठी कोयल—कुहुक उठी—उसके प्रवाह में मधुरता थी और करुण रागिनी। पहाड़ी के ढलवे से नीचे उतरते हुए मेरा हृदय आन्दोलित हो उठा, उस मनहर सङ्गीत में बहते हुए मैं चीख उठा·····बस।

धीरे-धीरे प्रसारित होती हुई छपा की शीतल छाया में सम्पूर्ण रागिनी लय हो गई—केवल पहाड़ी की गोद में क्षीण प्रतिध्वनि गूँज रही थी।

मैं तरङ्गिणी के पुलिन पर एक एकाकी चट्टान पर बैठ—गगन को निरखने लगा; तन्द्रिल उर में भावुकता चौंक कर जाग उठी। तारागण अपने क्षीण प्रकाश में जगमगाने लगे—उनमें अस्पष्ट आशा झलक रही थी—मैंने कहा·····बस।

तट पर एकान्त में उर्म्मियों से खेलती हुई—कुमुदिनी हँस पड़ी, शशि-किरणें क्षितिज को लाँघ कर उसे—गुदगुदा रही थीं—किन्हीं भावों में निमज्ज, मेरे मुख से एक ध्वनि मुखरित हो उठी—'सौन्दर्य'! छिः! सब क्षणिक है—बस।

सौन्दर्य, सङ्गीत, जीवन—नहीं मुझे कुछ भी इच्छित नहीं, कल्पना की मृगमरीचिका के पीछे पागल हुए मन शान्त हो·····बस।

आह, ये निराशा के वाक्य तब मेरे मस्तिष्क में आदर नहीं पा सकते थे। एक समय था, जब मैं भी कुंकुमी आशा की लाली में ऊषा सा खिल उठता था, और मेरा मृदु उर कोयल की तरङ्ग रागिनी में प्रभावित हो उठता था, किन्तु, छिः! वह स्वप्न था—स्वप्न—बस।

वह दिवस मुझे स्मरण है, और भली प्रकार—दूर; मुझसे कोसों दूर—प्राची के अरुण क्षितिज से कभी सहसा—उस अतीत की स्मृति मेरी ओर निरख कर हँस जाती है, और तुषारमयी पर्यंक में सोई हुई एकाकी वेदना पिघल उठती है।

गाएँ ममता से अपने बछड़ों की याद कर, रँभाती हुई, वन-मार्ग से धूल उड़ाती उतर रही थीं—ग्वाले उनके पीछे-पीछे, विश्राम का गीत गाते, मन्थर गति से झूमते आ रहे थे—कन्धों पर सूखी घास का बोझ था और·····बस।

सन्ध्या हो चली थी, मेरे नगर को घेरे हुई—गढ़वाल की गर्वीली वे उत्तुंग पहाड़ियाँ सूर्य को अपने पीछे—धकेल चली थीं। उसी समय जब लजाता हुआ पश्चिमा के मुख की गुलाबी धूल में दिया हुआ प्रथम नक्षत्र ऊँचे-ऊँचे आकाश में झलमलाया, वह आई थी। किन्तु, हा, वसन्त की वह प्रथम हिलोर ग्रीष्म की उष्णता से झुलस उठी।

वह तुतलाते झरने के आगे खड़ी थी—मस्तक पर गागरि लिए—वह पानी भरने आई थी। जुगनुओं के आलोक में उसके अधर खिल उठे। मैं भाग्य की देहली पर मस्तक टेके देख रहा था। उस शुभ्र मस्तक पर, वह स्वर्ण ताम्र की गागरि अवदात हिम के ललाट पर उषा सी सकुचा रही थी।

रात्रि शनैः-शनैः अपने विशाल काले अंचल को फैला चली·····अंधकार। आह, स्वप्न सी वह चल दी। मैं पागल हो उठा—किन्तु, वह तो स्वप्न था, स्वप्न·····बस।

मैंने उसे ढूँढ़ा—वन-वीथियों से कभी कोयल कुहुक उठती—मैं उसी ओर दौड़ पड़ता—वह कोकिला थी। भ्रम·····भ्रान्ति·····हृदय सन्न हो मूक हो उठता··· कोयल, उड़ जाती···और···बस।

सब शून्य हो गया—रजनी की अवगुंठिका विश्व को ढाँक चली। अधरों की वह अरुण रेखा, उनका वह प्रियतर तरल हास, अँधेरे में समा गया—केवल आसंकुल जुगनुओं के दीप का वह क्षीण आलोक—विदा होते हुए आदमी की तरह अन्तिम साँस भरता हुआ सहसा कभी प्रदीप्त हो उठता—वह धीरे-धीरे क्षीण होता जा रहा था।

चारों ओर पूर्ण अन्धकार छा गया—मृन्मय प्रकाश चुपके-चुपके धीरे से टिमटिमा रहा था।·····बस।

आह, ऐसा ही अन्धकारपूर्ण है अब मेरा हृदय और वैसा ही क्षीण प्रकाश।

× × ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहाड़ी के ऊपर से सरकती हुई सन्ध्या की शीतल पवन—दूर पुष्पित मधुवन के किसी कोने से, सेवती के कुसुमों की सौरभ में—मेरे बचपन की स्मृति को लपेट, धीरे से मेरे अन्तरतल में चुरा आती है।

आह, इसी सूर्यास्त के समय, अपने भाई के सङ्ग मैं खेलने जाया करता था, यही समय था, जब 'माँ' हम दोनों को जाते देख—प्रसन्न हो, सत्वर घर लौटने को कहती थी।

किन्तु किसे ज्ञात था—कुंकुमाक्त ऊषा का भाल—वेदना की कालिमा से पुत जायगा। क्षणिक हुआ वह सब। भाग्य की अभेद्य दीवाल बीच में खड़ी थी।

'माँ' के अधरों की वह मुस्कान—अधरों में ही अन्तर्हित हो चली।

कुसुम खिलते ही मुर्झा गया।

आह, अविस्मृति से आज भी कभी सहसा एक निष्प्रभ सङ्गीत की लय—क्षीण स्वर में गा उठती है।

जीवन एक बरसाती बुल्ले के सदृश है। मृतक ही शान्तिमय है·····बस।

—भगवतीप्रसाद 'पान्थरी'

* * *

शिकार

शिकार खेलना राजाओं, अमीरों और धनी-मानी व्यक्तियों का विनोद रहा है—साधारण जनता उससे सदैव दूर रही है। इस समय भारतवर्ष में ऊँचे दर्जे के सरकारी कर्मचारी और देशी नरेश लोग शिकार खेल कर अपना दिलबहलाव करते हैं। कहा यह जाता है कि उनके इस खेल से हिंसक जन्तुओं का नाश होता है और प्रजा की रक्षा होती है। हम यह मानने को तैयार नहीं हैं। हमने गाँवों में देखा है कि जब कोई शेर या चीता लागन हो जाता है तब न तो किसी राजा के दर्शन होते हैं और न किसी सरकारी अफ़सर के। बेचारे गाँव वाले अपने प्राणों को जोखिम में डाल कर लाठी-डंडों से उसका शिकार करते हैं। यह शिकार वे अपने किसी विनोद के लिए नहीं करते, अपनी रक्षा की आवश्यकता से प्रेरित होकर करते हैं। इससे यह सिद्ध है कि राजाओं आदि के शिकार से विरत हो जाने पर प्रजा का खतरा नहीं बढ़ सकता। वह अपना प्रबन्ध स्वयं कर लेगी। प्रजा की रक्षा शिकार खेलने का बहाना मात्र है। वास्तव में यह अत्यन्त अमानुषिक और निर्दय विनोद है और जो लोग ललित शब्दों में इसका वर्णन करते हैं, वे जन-समाज में यथेष्ट रूप से सम्मानित होते हैं, जो इस ज्ञान के युग के लिए एक आश्चर्य ही कहा जायगा।

हम अहिंसा परमोधर्मः के प्रचारक नहीं हैं। संसार के कल्याण के लिए जितने जीवों का वध आवश्यक हो वह बेशक किया जाय। परन्तु विनोद के लिए जीव-हत्या के हम विरोधी हैं। इससे मनुष्य की मनुष्यता को ठेस लगती है। और इस प्रकार की हत्याओं का रोचक वर्णन जनसमाज को निर्दय बनाने के अतिरिक्त और क्या अर्थ रख सकता है?

जो बकरा काटता है वह कसाई कहलाता है। परन्तु जो मचान पर बैठ कर खतरों से बिल्कुल सुरक्षित होकर गाफ़िल शेर पर गोली चलाता है उसे लोग बहादुर कहते हैं। खेद है कि कहने वाले यह नहीं सोचते कि उसने क्या बहादुरी की? अच्छा निशानेबाज़ होने पर कोई भी आदमी सुरक्षित स्थान से किसी पर गोली चला सकता है। इसमें उसकी कोई बहादुरी नहीं। जो इस कार्य को करते हैं, उन्हें पशु-बध-गृहों में नौकरी करनी चाहिए। वहाँ वे अपनी निर्दयता का अच्छा विकास कर सकेंगे।

एक बात और भी ध्यान देने की है। हिंसक जीवों का नाश मनुष्य के लिए हितकर नहीं हो सकता। जो ईश्वर में विश्वास रखते हैं और यह सोचते हैं कि ईश्वर ने संसार की सभी वस्तुओं की रचना मनुष्य के कल्याण के लिए की है, कम से कम उन्हें तो निरपराध हिंसक पशुओं को शिकारियों के घातक विनोद से बचाने का प्रयत्न करना चाहिए।

साँप एक हिंसक जन्तु है। परन्तु चूहों का नाश करके वह मनुष्य के कृषि की उनसे रक्षा करता है। शिकार-विरोधी एक अङ्गरेज लेखक का कहना है कि शेर और चीते उतने खतरनाक नहीं होते जितना कि लोग उन्हें समझते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। उस लेखक ने शेर और चीतों से भरे हज़ारों मील फैले घने जङ्गलों की यात्रा करके यह अनुभव किया है कि ये जानवर मनुष्यों पर वहीं हमला करते हैं जहाँ इन पर गोली चलाई जाती है। क्योंकि वहाँ वे मनुष्य को अपना शत्रु समझने लगते हैं।

जङ्गल के बीच में रहने वालों का अनुभव है कि शेर या चीते मनुष्य के निकट केवल पानी की तलाश में आते हैं। अगर बस्ती के बाहर उन्हें पानी मिल जाय तो वे बस्ती में नहीं आ सकते। उनकी आदत घने बनों में ही रहने की है।

एक दूसरे लेखक ने लिखा है कि एक बार एक शेर मेरे कुत्तों को मेरे बिस्तर के निकट तक दौड़ा लाया। परन्तु कमरे में प्रकाश देखकर और बाहर पानी पा जाने से वह तुरत वापस चला गया। एक डच का क़िस्सा तो यहाँ तक कहा जाता है कि उसने शेरों के एक झुण्ड को सिर्फ़ अपनी तिनके की टोपी घुमाकर भगा दिया था।

मगर और घड़ियाल हिंसक होते हुए भी एक अर्थ में उपयोगी हैं! बीमार या मृत्यु के निकट पहुँचे हुए पशु प्राण त्याग करने के लिए प्रायः पानी के निकट जाते हैं। वहाँ ये हिंसक जन्तु उन्हें समूचा निगल कर प्रकृति की सफ़ाई ही करते हैं।

कुछ भी हो, हमें सदैव यह सोचना चाहिए कि प्रकृति ने किसी वस्तु को व्यर्थ नहीं बनाया। ईश्वर की प्रत्येक रचना उपयोगी और संसार की सुन्दरता बढ़ाने वाली है। किसी के नष्ट करने का हमें अधिकार नहीं है। यह अप्रिय कार्य हम केवल वहीं कर सकते हैं, जहाँ हमें अपनी रक्षा करनी हो।

—श्रीनाथसिंह

वीणा

दुर्गेशनन्दिनी

आज वह अकेला ही वीणा बजा रहा है!

इस मधु-बेला में वह सङ्गीत को खो देना चाहता है।

यदि मैं उसकी बेगानी अँगुलियों के साथ ध्वनि में नाच उठूँ?

वह वीणा बजाना बन्द कर आकाश की ओर ताकता रह जाएगा

किसी को खोजने के लिए जिसके कारण वह मेरे साथ बजाना नहीं चाहता।

दूर पर जलते हुए तारों को देख वह अपनी आत्मा का सङ्गीत उनसे मिलाना चाहता है।

यदि मैं छोटी सी तारिका बन कर जलने बुझने लगूँ? तब भी वह एक असफल कलाकार ही रहेगा।

वह मेरी अन्तर-वीणा के तारों को पाकर बजाना बन्द कर देगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भ्रान्ति

[श्रीमती विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मञ्जु', साहित्य-रत्न]

छाया प्रकाश की यह नित यवनिका गिराना,
यों लालसा बढ़ा कर, फिर खेलना मिचौनी।
सीखा कहाँ था तुमने, जड़ को सचेत करना,
उसको सदा सजाना दे हार आँसुओं का!

सच देव तुम बड़े ही पक्के छली खिलाड़ी,
कण-कण उड़ा-उड़ा कर ब्रह्माण्ड को मिटाते।
रज-कण मिला-मिला कर, फिर विश्व को रचाते,
रविकर यथा सलिलकण फिर सब समेट लेते!

हम दौड़ते पकड़ने, तुम दूर भागते हो
हम दूर जा भटकते, पाते तुम्हें निकट ही?
जग पूछता अहर्निश तुम कौन हो पहेली?
मन्दिर व मस्जिदों को तेरा पता मिले क्या?

हैरान हम हैं तुमसे, पाएँ कहाँ तुम्हें अब—
कुछ भी न सोच पाते, तम में सदा अकेले!
इस प्राण और जग का अणु-अणु बना है प्यासा,
करुणा की बूँद ही कुछ, देती पता तुम्हारा।

इससे ही रो रहे हैं आओगे क्या कभी तुम?
इस ओर नाथ मेरे पद-पद्म क्या पड़ेंगे?
या भ्रम बना है यह भी, कुछ भी नहीं कहीं भी,
है कल्पना ही कोरी, कवियों की दौड़ झूठी?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कन्या के विदा समय के कुछ गीत

[श्रीमती सीतादेवी 'प्रभाकर'; कुमारी लीला 'भूषण']

कन्या की विदा का दृश्य कितना करुणाजनक होता है। उफ़! जिसे देखकर एक बार करुणा भी स्वयम् द्रवित हो उठती है। किसका हृदय कल्पना मात्र से ही नहीं सिहर उठता! किन्तु, पूर्णतया तो इसका अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकते हैं। जो माँ के कलेजे का टुकड़ा थी, पिता के नैनों की ज्योति थी और थी गृह का एक मुख्य अङ्ग, जिसने कभी उसी गृह में जन्म लिया था, उसी की धूल में लोट-लोट कर बड़ी हुई थी; जिस रङ्गमञ्च पर उसने अपने शैशव का अभिनय किया था, जहाँ वह नित्य ही अपनी बहिनों तथा सखियों के साथ मधुर वार्ताएँ किया करती तथा अपने भाइयों के साथ आमोद-प्रमोद किया करती थी, जहाँ अम्माँ की वात्सल्यमयी प्यार-भरी गोदी थी और था सरल दुलार, जहाँ के सभी व्यक्ति उसे यदि कोई पुत्रीवत् समझता था तो कोई भगिनीवत्, जहाँ पर नित्य ही अपने हास-परिहास के द्वारा आनन्द की मन्दाकिनी प्रवाहित किया करती थी, जहाँ सदैव ही वह सरस्वती की नाईं अपने कला-कौशल का प्रकाश किया करती थी और जहाँ के कण-कण में वह रम रही थी, जहाँ वह पक्षी के समान स्वच्छन्द विचरण किया करती थी, जब वहीं से उसे विदा लेनी पड़ती है तथा अन्य सब को उसे विदा करना पड़ता है, उस समय क्या पाषाण-हृदय भी द्रवित नहीं हो उठता? मनुष्य ही क्यों, पशु भी विह्वल हो उठते हैं और पक्षी भी। लताएँ अपने पीले-पीले पत्र आँसुओं की भाँति गिराने लगती हैं। गृह यद्यपि जड़ है, किन्तु वह भी कदाचित् उस अभाव को अनुभव किये बिना नहीं रह सकता, कदाचित् तभी तो उसके कण-कण में वह शून्यता मूर्तिमयी होकर विराजने लगती है। सचमुच इस विछोह की कोई उपमा नहीं, यह स्वयम् का स्वयम् ही उदाहरण है। वह माँ, जिसने इतने अधिक कष्ट झेलकर अपनी दुलारी बिटिया को पाला था, जिसे देख कर वह फूल उठती, जिसे वह यदि तनिक भी म्लान-मुखी देख पाती तो अपने स्नेहाञ्चल में छुपा लेती, उसके आँसू जिसके लिए असह्य थे, उसकी बोली में जिसके लिए कोकिल से भी अधिक मिठास था, जिसे बिट्टो, बिटिया कहते उसका मुँह सूख जाया करता, जिसके "अम्माँ" शब्द पर वह बलिहारी जाती थी, उसका क्या-क्या न न्योछावर हो जाता, उस पर उस समय उसी अपनी हृदय-सितारा नैनों की पुतली को जब वह एक अपरिचित व्यक्ति के हाथों में पूर्णतया सौंपती है, वही उसका सर्व प्रकार से स्वामी हो जाता है, चाहे उसे किसी भी प्रकार क्यों न रक्खे, तब क्या उसका हृदय विदीर्ण नहीं होने लगता! पन्द्रह-सोलह वर्ष तक लालन-पालन करने पर भी कुछ अधिकार नहीं रहता, उसका प्राङ्गण ज्यों का त्यों सूना रह जाता है, उस समय उसके हृदय पर क्या बीतती है, केवल मातृहृदय ही इसका अनुमान लगाने में समर्थ है। कैसी हिलोरें उठती हैं उसके हृदय में उसके लिए! यदि कहीं पति-गृह में दैव-कोप से व्यवहार भी अच्छा न मिले, फिर तो कहना ही क्या। अपने रत्न को अपने नैनों से धूल में मिलते हुए देखना पड़ता है, किन्तु उसे बचाने की शक्ति नहीं, यह विचार उस स्नेहमयी जननी के हृदय को कैसा नहीं बना देते!

वह पिता, जो जब भी गृह में प्रवेश करता, पहले उसका नाम लेकर पुकारा करता, जिसे निहारते ही वह चाहे कुछ भी करती हो "बाबू जी!" "बाबू जी!" करती दौड़ कर आती, उन्हें सदैव ही प्रेम से भोजन कराया करती थी, उन्हें सब वस्तुएँ ला-लाकर दिया करती, तथा अपनी बनाई हुई सब वस्तुएँ दिखलाती, जब अतिथि आते उनका स्वागत करती, जब वह चिन्तित होते, तब अपनी प्यारी-प्यारी बातों से उनका हृदय शान्त कर देती, जो प्रत्येक विषय पर मन्त्रणा देती थी, जब वह उसे—अपनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्यारी बिटिया को विलग कर दूसरों की कृपा पर छोड़ देते हैं, क्या उनका हृदय एक बार मर्मान्तक पीड़ा से रो नहीं उठता ?

जब वे प्यारे भाई-बहिन अपनी प्यारी बहिन को जाते देखते हैं, जिसके साथ-साथ वह खेला करते, हँसा करते, हास-परिहास किया करते थे और प्यार भरी लड़ाई किया करते थे, जिसके साथ-साथ वह खाया करते, पढ़ा करते थे, क्या उनका हृदय रो नहीं उठता ? क्या वे छोटे भाई-बहिन, जिन्हें वह लोरी गा-गाकर सुलाया करती, मल-मल नहलाया करती, उन्हें खिलौनों की भाँति, भाँति भाँति से सजाया करती, पढ़ाया करती, कहानियाँ सुनाया करती और अपने हाथ से खाना खिलाया करती, जब उससे लिपट जाते हैं, "हम नहीं जाने देंगे", "हम नहीं जाने देंगे" कह कर रोते हैं, उसकी गाड़ी को पकड़ लेते हैं और उसे जाते देख कर जोर-जोर से रोने लगते हैं, तब उस प्रथम बार अपने पितृगृह से जाती हुई बाला के नयन रक्त के आँसू नहीं बहाते ? वह सब इष्ट-मित्र, सम्बन्धी तथा अन्य सब परिवार के मनुष्यों को छोड़कर चली जाती है। जिस घर का वह जीवन-प्राण थी, जहाँ सब कुछ उसका था, उस दिन से वह उस घर की कोई नहीं रहती। केवल एक के लिए वह अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर देती है। विश्व में ऐसे आत्म-बलिदान का उदाहरण कहाँ मिलेगा। कोई भी आज तक इस दृश्य का ऐसा चित्रण न कर सका, जो वास्तव में उस समय के पूर्ण भावों से ओत-प्रोत हो।

यदि इसमें कुछ सफलता प्राप्त की है तो महाकवि कालिदास ने। "शकुन्तला" के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदा का दृश्य किसके हृदय को कुछ देर के लिए विह्वल नहीं बना देता ! किन्तु कदाचित् यह विषय स्त्रियों से ही अधिक सम्बन्ध रखता है। इसी कारण पुरुष इसकी गहराई को इतना न पा सके। हमें साहित्य में शकुन्तला के अतिरिक्त इसका वर्णन नहीं मिलता। गोस्वामी तुलसीदास के समान कवि-श्रेष्ठ भी इस पर भली प्रकार प्रकाश न डाल सके। परन्तु मैं चार ग्राम्य-गीत नीचे दूँगी, जो विदा के समय स्त्रियों के द्वारा गाये जाते हैं। कितनी सरलता है उनमें, वहाँ शब्दाडम्बर नहीं, अलङ्कार नहीं, उपमा नहीं, कल्पना की ऊँची उड़ान नहीं, किन्तु हृदय को खोल कर सीधी-सादी पंक्तियों में रख दिया गया है, जो हमारे मर्म-स्थल पर एकदम कठिन आघात करती हैं।

गढ़ छोड़ रकमण बाहर आई चौंरी[1] तो छाई मेरे वारने[3]
हे ओले तो बोले लादो गुड़ियाँ हे छोड़ी
छोड़ा सहेलियों का साथ हे !
हे ले क्यूँ ना जा लाड़ो ओले की गुड़ियाँ
छोड़ा बाबल का देशड़ा
हे नङ्गे तो पैरों तेरा बाबा भी भागा
नङ्गे तो पैरों तेरा बाबल भी भागा
नङ्गे तो पैरों तेरा भय्या भी भागा
साजन डोला थामियो
हे म्हारे तो घर की बेटी थारे घर की जी बाँदी[4]
हम थारे चिरवै[4] दार हे
हे थारे तो घर की बेटी म्हारे घर की जी राणी
हम थारे चिरवै दार हे।

देखिए, घर में वेदी[2] सुशोभित हो रही है, कन्या श्वसुरालय जाने के लिए अपने गृह से बाहर आती है, उस समय उसके पिता आदि उन गुड़ियों को, जिनसे वह नित्य खेला करती थी, इधर-उधर पड़ी हुई देखते हैं। उनका हृदय भर आता है और वे कहते हैं—"प्यारी बिट्टो, तूने कोने में अपनी गुड़ियों और खिलौनों को छोड़ दिया, और अपनी प्रिय सखियों का भी साथ छोड़ दिया।" आह ! कितना स्वाभाविक वर्णन है। क्या हमारे घरों में सब मिल-जुल कर लड़कियाँ कोने में ही बैठ कर गुड़ियाँ नहीं खेलतीं ? चाहे घर कितना ही विशाल क्यों न हो, किन्तु उनका प्रिय स्थान कोना ही है। आगे देखिए, कहा है, हाय मेरी लाड़ली बिटिया, तू इन्हें भी साथ ही क्यों नहीं ले जाती, हाय ! तूने पिता का देश भी छोड़ दिया।

यद्यपि कालिदास ने भी इसी भाव का उस समय वर्णन किया है। जिस समय मृगछौना शकुन्तला का अञ्चल पकड़ लेता है, उस समय कण्व ऋषि कहते हैं :—

दाभन तें मुख जाको छियौ जब तू दुहिता लखि पावत ही।
अपने करतें तिन धावन पे तूँ ही तेज हिंगोट लगावत ही।
जिहि पालन के हित धान समा नित मूठ ही मूठ खवावत ही।
मृगछौना सो क्यों पग तेरे तजे जेहि पूत लों लाड़ लड़ावत ही।

१—महल, २—वेदी, ३—घर, ४—सेवक।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसका हृदय उपर्युक्त सवैये को पढ़ कर द्रवित नहीं हो उठता, किन्तु 'ओले कोले पड़ी गुड़ियों' में क्या कम करुणा है? जब भी वे उसकी इधर-उधर बिखरी हुई वस्तुएँ देखेंगे तभी उसका स्मरण हृदय को विकल बना देगा।

तुलसीदास ने सीता की विदा का वर्णन इस प्रकार किया है :—

शुक सारिका जानकी जाए; कनक पिंजरन राखि पढ़ाए।
व्याकुल कहहिं कहाँ वैदेही; सुनि धीरज परिहरै न केही॥
हृदय लगाय कुँवरि सब लीन्ही; पतन सौंपि बिनती अति कीन्हीं।
सियहि विलोक धीरता भागी; रहे कहावत परम विरागी॥
लीन्ह राउ उर लाय जानकी; मिटी महा मरयद ज्ञान की॥

परन्तु फिर भी इसमें वह बात कहाँ जो ओले-कोले पड़ी गुड़ियों में है। कदाचित स्त्रियों से ही सम्बन्ध रखता हुआ विषय होने के कारण कोई भी इसकी गहराई तक न पहुँच सका।

उसका डोला चलते हुए देख कर एक बार पिता, बाबा, ताऊ, चाचा, भाई, मामा आदि सभी सम्बन्धी अपनी लाड़ली बिटिया से मिलने को विकल हो उठते हैं, उन्हें यह सुधि नहीं रहती कि पैरों में जूते भी हैं, अथवा नहीं। वह सब कुछ भूल जाते हैं, उनका हृदय आकुल हो जाता है, और वह भाग कर कहते हैं, "एक बार डोला रुका दो" उनका हृदय नहीं मानता, वह विनीत स्वर में कहते हैं—'हमारी दुलारी बेटी तुम्हारे घर की अनुचरी है, और हम भी तुम्हारे सेवक हैं……।"

तेरे बाबल घर अपना मैं चली हूँ सजन के देश रे।
सुन बाबल मेरे।
नंगे तो पैरे तेरा बाबल भागा साजन डोला थाम रे।
सुन…।
भइयों को दिये महल दुमहले
हमको दिया परदेश रे लखि बाबल मेरे।
काहे को ब्याही परदेश रे सुन बाबल मेरे॥
हम हैं रे बाबल चिड़िएँ मुँडेरे की
कंकर मारे उड़ जायँ रे; लखि……।
हम हैं रे बाबल चोरों की गऊएँ
जित हाँके हँक जाएँ रे, सुन बाबल मेरे।
सोना भी दिया बाबल रुपया भी दिया
एक न दीनी मेरे सिर की कंघी
सास ननद बोलें बोल रे, सुन बाबल मेरे॥

जो कन्या पहले आकुलता से अपने प्रिय-मिलन की प्रतीक्षा कर रही थी, वह इस समय नहीं रह सकती, कहती है—"हे पिता, मैं अपने पति के देश में जा रही हूँ।" यह सुनते ही उसके सब सम्बन्धी उस अपनी दुलारी, हृदय-तारा पुत्री, पौत्री, तथा बहिन से नंगे पैर मिलने के लिए दौड़ते हैं। और पुकारते हैं "ज़रा डोला रुका दो"। डोला रुका दिया जाता है। उस समय, वह मातृ-पितृ-वियोग से पीड़ित नवपरिणीता कहती है—"ए मेरे लक्षाधीश पिता तुमने भाइयों को तो ऊँची-ऊँची दुमञ्जिली अट्टालिकाएँ दीं, और हमें परदेश दिया।" आह! इस समय वह बाला न्याय की डोंडी पीट रही है, उसे भाई-बहिन में अन्तर नहीं दिखाई देता, जिन भाइयों के साथ उन्हीं जैसा बाल्य-काल बीता है, वही बात वह अब भी कह रही है, और पूछती है—"ऐ पिता, मेरा विवाह परदेश में क्यों कर दिया?" इसमें कितनी सरलता, कितनी मधुरता, कितना भोलापन कूट-कूट कर भर दिया है, जब उसको कुछ भी उत्तर नहीं मिलता तो वह विवश एवम् दुःखी होकर कहती है—"हे मेरे पिता, हम तो मुंडेर पर बैठी हुई चिड़िया के समान हैं, जो कंकरी मारने से उड़ जाती हैं, अर्थात् विवाह कर दिया हम चली गईं।" फिर कहती है—"ऐ पिता, हम तो चरने जाती हुई गऊओं के समान हैं। जिधर भी ले जाया जाता है चली जाती हैं अर्थात् किसी से भी हमारा ग्रन्थिबन्धन कर दो, हमें उसी के साथ जाना पड़ेगा।" कितने करुणा से पूर्ण हैं उसके यह वाक्य! पक्षी के समान, गऊ के समान वह अपनी विवशता का वर्णन करती है, उसका रोम-रोम रो रहा है इस प्रकार विलग होते हुए। फिर वह अपने श्वसुरालय जाती है। उस समय उसकी सास और ननद उसे कङ्घी न देने का उलहना देती हैं तब उसके हृदय में टीस सी उठती है और उसके मुख से निकल ही जाता है—"हे पिता, तुमने स्वर्ण दिया तथा रुपए आदि सभी वस्तुएँ दीं, केवल एक बाल सँवारने के लिए कङ्घी नहीं दी, मेरी सास-ननद व्यङ्ग-मय कटाक्ष करती हैं!" हाय! यद्यपि वह अपने पिता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदि सभी को छोड़ आई है, किन्तु अब भी पिता के यहाँ की बुराई उसके लिए असह्य है। उसका कोमल हृदय व्याकुल हो उठता है यह सुनकर। एक-एक पंक्ति में कितना करुण-रस छलक रहा है, किसका हृदय द्रवित न हो उठेगा!

हुआ नगर सब सूना बनो मेरी पाहुनिया रे।
दादी रानी ने ऐसे पाला जैसे घी की गागरिया रे।
ताई रानी ने ऐसे पाला जैसे घी की गागरिया रे।
बाबा राजा ने ऐसे निकाला जैसे जल की माछुलिया रे।
ताऊ राजा ने ऐसे निकाला जैसे जल की माछुलिया रे।

× × ×

कन्या का विवाह हो गया है, वह अपने श्वसुरालय चली जायगी। उसके वियोग की भावी आशङ्का से सारा नगर शून्य हो गया है। वह अब उसी नगर में, जो उसका अपना था, जहाँ उसने जन्म लिया था, अब तक उसका लालन-पालन हुआ था, वह आज वहीं के लिए एक मेहमान बन गई है। उस अपने गृह को, अपनी प्यारी अम्मा की गोदी, दादी की ममता, भाभी, ताई, चाची, मामी आदि के प्यार को छोड़ते हुए असह्य पीड़ा हो रही है, वह जल-विहीन मीन के समान तड़प रही है, उन सबके प्रेम-सरोवर में जो सफ़री के समान नित्य ही मग्न होकर डुबकियाँ लगाया करती थी, आज उसे उस सरोवर से विदा लेनी पड़ रही है, उसका हृदय भर-भर आता है और वह कहने लगती है—"हाय! मेरी दादी ने, प्यारी अम्मा ने, भाभी ने, चाची ने, ताई ने मुझे घृत की भरी गगरी के समान रक्खा था। घी की मटकी की तरह मेरी रक्षा की थी, किन्तु छटपटाती हुई मछली के समान मेरे बाबा जी, पिता जी, भय्या जी आदि सभी मुझे उनके प्रेम-वारि से पृथक् कर रहे हैं। सबको छोड़ते हुए बाला विह्वल हो उठती है। कालिदास ने शकुन्तला से विदा के समय कहलाया है—"अब मैं पिता की गोदी से अलग होकर मलयागिरि से न्यारी की हुई चन्दन-शाखा की भाँति परदेश में कैसे जीऊँगी? किन्तु इसमें वह करुणा कहाँ, जो जल से बिछुड़ी हुई तड़पती मछली को देखकर आती है, मछली छटपटाती है, विह्वल होती है। यद्यपि वृक्ष से कटते हुए शाखा को दुःख होता है, किन्तु क्या इतनी ही अधिक दर्शकों को भी उसे देखकर व्यथा होती है। वास्तव में एक ग्राम्य लड़की ने एक कन्या के हृदय का अच्छा निरूपण किया है, यद्यपि उसमें कल्पना नहीं, वाक्-चातुरी नहीं, किन्तु कितनी सरलता और सत्यता है इसमें!

तेरा तजिन सूना होय बाबुल तेरी धीय बिना।
मेरी बहू कातेंगी हे लाड़ो बेटी जाय घराँ॥
तेरा पैंडा रीता होय बाबल तेरी धीय बिना।
मेरी पोती भरेंगी हे के लाड़ो बेटी जाय घराँ॥
मैं तो गुड़ियाँ भूली हो कि बाबल तेरे आले में।
मेरी पोती खेलेंगी हे के लाड़ो बेटी जाय घराँ॥
तेरे गोबर बिछ रहा हो बाबल तेरी धीय बिना।
मेरी बहुएँ गेरेंगी हो के लाड़ो बेटी जाय घराँ॥
मेरा गड्डा अटक्यौ हो के बाबल तेरी गलियों में।
दोय ईंट कढ़वा दे हे के लाड़ो बेटी जाय घराँ॥
तुझे बाबल कौन कहे बाबल तेरी धीय बिना।
आँसू तो भर आए नैन के लाड़ो बेटी जाय घराँ॥

लड़की अपने श्वसुरालय जा रही है, किन्तु उस समय उसे स्मरण आता है उन सब कार्यों का, जिन्हें वह नित्य ही किया करती थी। यह स्मरण आते ही वह व्याकुल हो उठती है; उसके धैर्य्य का बाँध टूट जाता है और वह कहती है—"हे पिता मेरे बिना अब चर्खा कौन काता करेगा! वह सूना पड़ा रह जायेगा!" उसका पिता जब यह सुनता है तो वह बलात् अपने आँसुओं को रोक कर अपनी प्यारी बिटिया को ढाढ़स बँधाता हुआ कहता है—"प्यारी बिट्टी, अपने घर जाओ, तुम्हारे स्थान पर अब मेरी पुत्र-वधू काता करेगी।"

कन्या को फिर वह मार्ग स्मरण हो आता है, जिससे वह नित्य ही आया-जाया करती थी और वह कहती है—"पिता, मेरे बिना तुम्हारा मार्ग सूना हो जाएगा।"

"प्यारी, बेटी इसकी पूर्ति मेरी पोतियों के द्वारा होगी।"

फिर उसे अपनी उन गुड़ियों का स्मरण आता है, जिनसे वह खेला करती थी, वह कह उठती है—"हे पिता, मैं तो तुम्हारे आले में रक्खी हुई अपनी गुड़ियाँ भूल गई। हाय! अब उनसे कौन खेलेगा?"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"मेरी बिट्टी, जाओ, मेरी पोतियाँ ही अब इस न्यूनता की पूर्ति करेंगी।"

"पिता, तुम्हारे प्राङ्गण में अब गोबर तो बिखरा ही रह जायेगा, तुम्हारी प्यारी बेटी के बिना अब उसे कौन स्वच्छ करेगा?"

"बिट्टी, तू कुछ चिन्ता न कर। यह कार्य तेरी भाभी करेंगी।"

"मेरी गाड़ी पिता तुम्हारी गलियों में अटक रही है।"

"जा बिट्टी, अपने घर जा मैं मार्ग ठीक करा दूँगा।"

यह सुन कर पिता के शान्ति देने पर, धैर्य बँधाने पर, भी उसका हृदय नहीं रुक पाता, वह एक बार फिर कहती है—"पिता, तेरी प्यारी बिटिया के बिना तुझे पिता कह कर कौन पुकारेगा?"

यह सुन कर पिता का धैर्य लुप्त हो जाता है, वह किसी प्रकार भी अपने आँसुओं को नहीं रोक सकता, किन्तु फिर भी अपने हृदय पर पत्थर रख कर अश्रुपूर्ण दृष्टि से कहता है—"बिट्टी जा, अपने घर सुखी रहियो।"

किसका हृदय द्रवित न हो उठेगा यह पढ़ कर। कोई भी कवि आज तक इस दृश्य का इतना वास्तविक चित्र न अङ्कित कर सका होगा। पिता अपने उद्गारों को रोकने की कितनी ही चेष्टा करता है, किन्तु अन्त में वह निरुपाय हो जाता है। अपने हृदय के टुकड़े को इस प्रकार विलग करते हुए किसका हृदय नहीं रो उठता? कालिदास शकुन्तला के विदा के समय का चित्रण करने में बहुत सफल हुए हैं, उन्होंने कण्व के द्वारा कहलाया है:—

तैं आगे बोए सुता, पूजा हित नीवार।
सो उपजे हैं आय के, पर्ण-कुटी के द्वार।
इन्हें लखत कैसे सकूँ, अपनी व्यथा मिटाय।
तो बिछुरन से जो भई, मारे मन में आय॥

किन्तु गीत भी क्या कम हृदयग्राही है? एक पितृ-हृदय के लिए अपनी पुत्री के द्वारा पिता सम्बोधन कितना हृदयहारी है। उसके बिना सब कुछ हो सकता है, किन्तु उसके बिना उसके इस अभाव की पूर्ति कोई नहीं कर सकता है? उसकी यह तृषा उसके बिना कौन शांत कर सकता है। कालिदास ने व्यग्र शकुन्तला को ढाढ़स इस सवैये के द्वारा दिलवाया है:—

जब कन्त कुलीन बड़े यशवन्त की
जाय कै नारि कहाय है तू।
अति वैभव के नित कामन तें
छिनहू अवकास न पाय है तू।
दिशि पूरब जैसे दिनेश जने
सुत उत्तम वेगहि जाय है तू।
तब मोसे वियोग भए की विथा
मन में नहिं नेकहु लाय है तू॥

किन्तु क्या इसके द्वारा शकुन्तला के हृदय को सन्तोष हो सका होगा? क्या उसके हृदय में भी यह विचार उस ग्रामीण बाला के समान न उठे होंगे कि मेरे बिना मेरे पिता की फुलवाड़ी कौन सींचेगा, कौन प्रति-दिन उनकी पूजा की सामग्री सजाएगा। कौन उन्हें पिता कह कर पुकारेगा, किन्तु कवि यहाँ शकुन्तला का परितोष न कर सका।

अपना ही घर आज उस कन्या का कितना पराया हो जाता है। वह उसके एक कण को भी अपना नहीं समझ पाती। उसका यह प्रत्येक वस्तु को 'तेरी'-'तेरी' कहना किसके हृदय पर सहसा प्रभाव नहीं डालता?

ऐसा करुणा-जनक पृथकीकरण और कहाँ मिलेगा!

उपरोक्त चारों गीत जब ग्राम्य स्त्रियाँ रोती हुई दूल्हा में गाती हैं, तो एक बार पत्थर भी द्रवित हो उठते हैं। इन ग्राम्य गीतों पर महाकवि मिल्टन की कविता के विषय की यह उक्ति पूर्णतया चरितार्थ होती है।

"Poetry should be simple, sensuous and passionate."

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

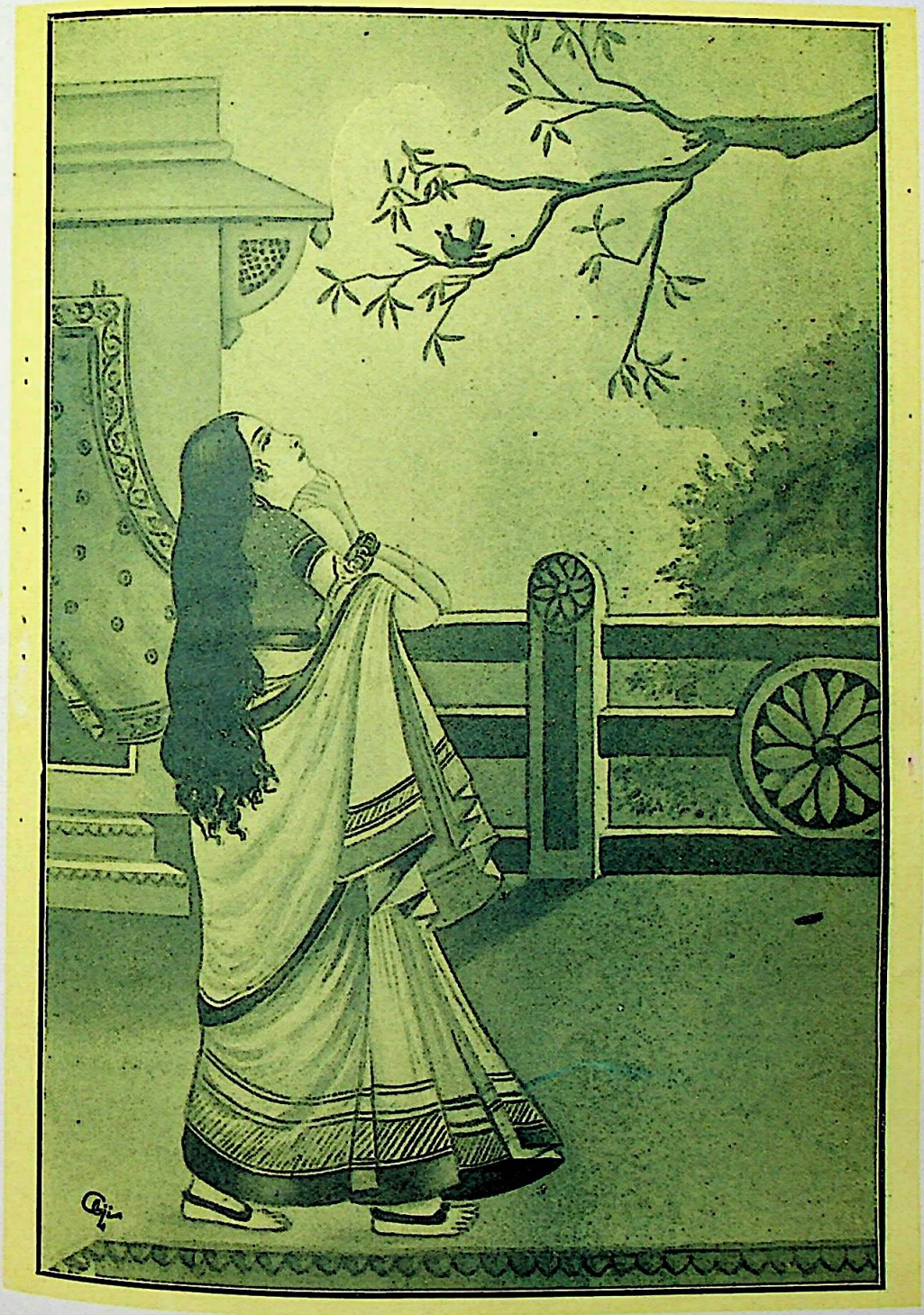

FINE ART PRINTING
COTTAGE
ALLAHABAD

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc No 3587

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़ूनी दाग़

ऐसा रोचक जासूसी उपन्यास बहुत समय से आपने न पढ़ा होगा। ख़ूनी दाग़ की भीषण करतूतों का वर्णन पढ़कर पाठक स्तम्भित रह जायँगे और उनकी उत्कण्ठा बराबर बढ़ती ही जायगी। दिलबहलाव की बड़ी अच्छी सामग्री है। मूल्य केवल १।); स्थायी ग्राहकों से ।।।=)

जनरल मैनेजर

चाँद प्रेस लि०, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गीत

श्रीमती विद्यावती 'कोकिल'

मैं फूली बन बन मधुबन
भूली सी प्रिय अपनापन !

मेरी पीड़ा रोती है
अपने उजड़े वैभव पर,
मेरा सौभाग्य मचलता
आशा के सूने पथ पर,
बह गए सजल आवाहन।

❀

डर रही सरल आकांक्षा
अपने ही सूनेपन में,
जल रही नवोढ़ा तृष्णा
अपनी वैधव्य अनिल में,
मैं मूक और बेसुध क्षण !

❀

प्रिय सिहर सिहर उठता तन,
रे पुलक पुलक उठता मन,
ऊषा संध्या का क्रम क्या
पल पल मद उन्मद नर्तन !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काव्याङ्गचन्द्रिका—लेखक पं० रघुवरदयाल 'मान'; प्रकाशक, विद्याभास्कर बुक-डिपो बनारस सिटी; मूल्य १॥=)

रस अलङ्कार तथा पिंगल काव्य के लिए आवश्यक होकर भी लक्षण ग्रन्थों की क्लिष्टता के कारण दुर्बोध से होते जा रहे हैं। प्राचीन संस्कृत लक्षण ग्रन्थ पद्यबद्ध थे और उन्हें कण्ठस्थ कर लेना ही उनमें पारङ्गत हो जाना था। उनके आधार पर लिखित हिन्दी-ग्रन्थ भी प्रायः कहीं-कहीं अस्पष्ट से हो जाते हैं। प्रसन्नता का विषय है कि प्रस्तुत पुस्तक उन दोषों से मुक्त है, जो लक्षण ग्रन्थों को अप्रिय तथा अरुचिकर बना देते हैं। इसकी धारावाहिक और सरल भाषा तथा विषयों की सहज बोधगम्य परिभाषाएँ विद्यार्थियों का काव्य-प्रवेश सुगम कर देंगी, ऐसी आशा है। उदाहरणों का चयन लेखक की सुरुचि का परिचायक है।

सारिका; लता—लेखक, श्री० आनन्दकुमार; प्रकाशक, प्रभात-साहित्य-कुटीर, आज़मगढ़।

प्रस्तुत दोनों पुस्तकें लेखक की स्फुट कविताओं का संग्रह हैं। उनमें प्रवाहमयी भाषा, सरल और सुबोध भाव तथा भावों की अभिव्यक्ति में कवित्व है, इसमें सन्देह नहीं। यदि दोनों संग्रहों की २१-२१ रचनाओं का एक ही संग्रह होता तो अच्छा होता, परन्तु हमारे नवयुवक कवि पुस्तकों की संख्या पर अधिक ध्यान देते हैं, जो कभी-कभी उनकी रचनाओं के एकत्र सौन्दर्य को बिखरा देती है। बड़ा कवि होना रचनाओं के स्थायित्व पर निर्भर है, पुस्तकों की संख्या पर नहीं। प्रस्तुत संग्रह संग्रहणीय है।

सुशीला—लेखक, श्री० सोमनाथ परिडत; प्रकाशक, हरिहर पुस्तक भण्डार, बनारस; मूल्य १।)

यह लेखक का एक सामाजिक समस्याओं से सम्बन्ध रखने वाला उपन्यास है। कहीं-कहीं शिथिलता अवश्य आगई है, परन्तु साधारणतः नायिका तथा नायक के चरित्र-चित्रण में पर्याप्त आकर्षण मिलता है। लेखक के उन्नत विचारों की छाया भी इस पर स्पष्ट है। आशा है, भविष्य में उनसे हिन्दी की अच्छी सेवा होगी।

१—भूमि—पृष्ठ-संख्या २००; मू० १॥)

२—जल और जुताई—पृष्ठ-संख्या ३१५; मू० २)

इन दोनों पुस्तकों के लेखक तथा प्रकाशक हैं चौधरी मुखत्यारसिंह वकील, बुढ़ाना दरवाज़ा, मेरठ शहर।

आप एक देश-प्रेमी तथा विद्वान व्यक्ति होने के साथ ही स्वयं ज़मींदार हैं और कृषि-कार्य का व्यावहारिक अनुभव रखते हैं। इसलिए आपने जहाँ इस पुस्तक में अंग्रेज़ी ग्रन्थों से नवीन वैज्ञानिक तथ्यों का समावेश किया है, वहाँ निजी अनुभव द्वारा स्थानीय परिस्थिति का पूरा ध्यान रख कर ऐसे मार्ग का निर्देश किया है, जिस पर चल सकना भारतीय कृषकों के लिए सम्भव है। पहली पुस्तक में विशेष रूप से भूमि की बनावट, उसकी क़िस्मों और उनके पहिचानने की विधियाँ लिखी हैं। दूसरी में कृषि के दो परमावश्यक अङ्ग सिंचाई और जुताई की विस्तारपूर्वक विवेचना की गई है और उन विधियों को बतलाया है जिनके द्वारा थोड़े परिश्रम से इस व्यवसाय की अवस्था

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत कुछ सुधार हो सकता है। पढ़े-लिखे किसानों को इनसे अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

विमोचन—लेखक, श्री० चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य; प्रकाशक, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास; पृष्ठ-संख्या ६२; मूल्य ।।)

इस पुस्तक में श्री० राजगोपालाचार्य के मद्यपान-निषेध के सम्बन्ध में लिखे गये लेखों और कहानियों का संग्रह है। मूल लेख एक तामिल भाषा के पत्र में लिखे गये थे, यह उन्हीं का सरल हिन्दी में अनुवाद है। श्री० राजगोपालाचार्य उत्कृष्ट श्रेणी के लेखक हैं और उनकी रचनाएँ अत्यन्त प्रभावशालिनी हैं। उनकी लेखन-शैली इतनी हृदयग्राही होती है कि पुस्तक हाथ से नहीं छूटती। देश-हित की दृष्टि से इस पुस्तक का अधिक से अधिक परिमाण में प्रचार होना चाहिए।

परलोक जीवन—लेखक, श्री० जगतनारायण, बी० एस-सी०; एफ़० टी० एस०; प्रकाशक, बिहार प्रान्तीय थियोसोफ़िकल फ़ेडरेशन, पटना; पृष्ठ-संख्या ४५; मू० ≡)

इस पुस्तक में थियोसोफ़ी के सिद्धान्तानुसार पारलौकिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है। आध्यात्मिक विषयों के प्रेमियों के पढ़ने योग्य है।

चाइनीज़ मेडिकल स्टोर

२८ अपोलो स्ट्रीट, फ़ोर्ट, बम्बई

इस अङ्क में चाइनीज़ मेडिकल स्टोर का जो विज्ञापन प्रकाशित किया जा रहा है, उसकी तरफ़ हम अपने पाठकों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं। यह स्टोर पिछले पाँच वर्षों से बम्बई में अपना कारबार ईमानदारी और सचाई के साथ करता आ रहा है और इस दरम्यान में उसने काफ़ी सफलता भी प्राप्त की है। इस बीच में उसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों की तरफ़ से अनगिनती प्रशंसापत्र मिले हैं, जो इस बात के प्रमाण हैं कि इसकी दवाओं से लोगों ने वास्तव में लाभ उठाया है और वे सचमुच ही गुणकारी हैं। यदि ऐसा न होता तो यह कठिन जान पड़ता है कि अनेक लोग पत्र और तार भेजकर बार-बार इसकी दवा को मँगाते। इस सम्बन्ध में पाठकों को इस बात का विश्वास हम दिला सकते हैं कि इस स्टोर की तरफ़ से जितने प्रशंसापत्र छापे गये हैं वे सब असली हैं और उनकी मूल प्रतियाँ स्टोर के प्रतिनिधि ने हमारे कार्यालय में लाकर दिखलाई थीं। हमने स्वयं इन पत्रों को देखा है और उनकी सत्यता में हमको किसी प्रकार का सन्देह नहीं। अभी तक इस दवा का विज्ञापन मुख्यतः गुजराती पत्रों में ही छपा करता था, जिससे अधिकांश प्रशंसा-पत्र उसी तरफ़ के रहने वाले लोगों से प्राप्त हुए हैं। आशा है, जब हिन्दी-भाषी पाठक भी इससे लाभ उठा कर स्टोर को प्रशंसा-पत्र प्रदान करेंगे, तब वे भी जनता के समक्ष उपस्थित किये जा सकेंगे।*—जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०

* यह विज्ञापन जून से मार्च १९३६ तक दस महीनों से 'चाँद' में छप रहा है। इस बीच में हमको क्लीनसीन गोल्ड टॉनिक पिल्स का व्यवहार करने वाले और उनसे लाभ उठाने वाले १०० हिन्दी-भाषी सज्जनों के प्रशंसा-पत्र बिना माँगे मिल चुके हैं। —मैनेजर, चाइनीज़ मेडिकल स्टोर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदि आपको बुरा मालूम हो तो क्षमा कीजियेगा, किन्तु आपके दिमागमें कील ठोंककर यह अच्छी तरह घुसानेकी जरूरत है कि:—

आप अपने पसीनेकी कमाई खरचनेके पहले और जिस किसी दवाको पेटमें डालनेके पहले जरा तो बुद्धिपूर्वक विचार करनेके लिये ठहरिये! व्यर्थ ही आंखें बन्द कर अपना धन और स्वास्थ्य क्यों नष्ट कर रहे हैं?

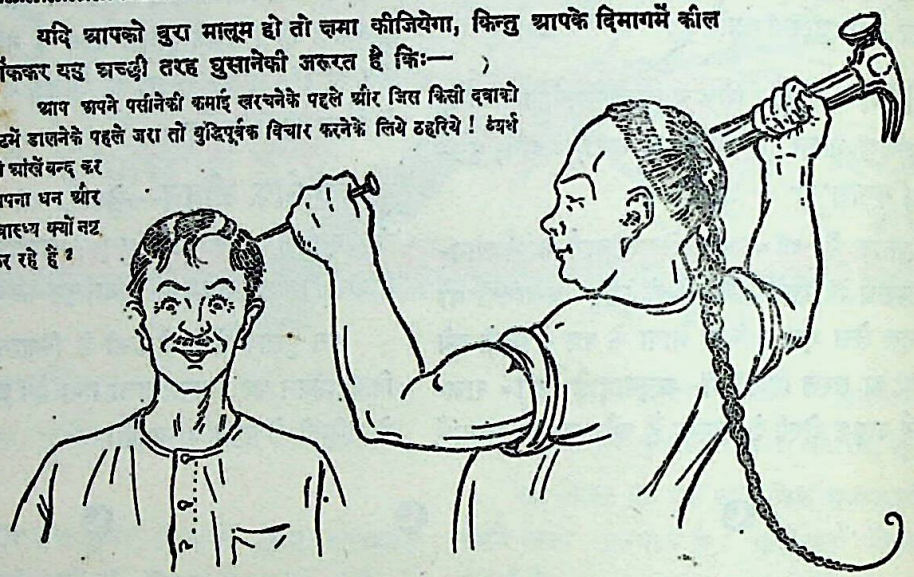

आजकल यह बात एक छोटेसे छोटा बच्चा भी समझ सकता है, कि भंग, अफीम, संखिया, पारा, कोचलेका चूर्ण तथा ऐसी ही अनेक विषैली और भयंकर मादक वस्तुओंको मिला, उनपर सोने चांदीके नकली वर्ख चढ़ा, टानिक पिल्स या ऐसे ही आडम्बरपूर्ण अन्यान्य नामोंसे उनका लम्बा चौड़ा विज्ञापन किया जाता है और इस प्रकार आपके पैसे छीन लिये जाते हैं। क्या आपने कभी यह जाननेकी चेष्टा की है, कि आपके यह पैसे व्यर्थ चले जाते हैं या उनसे कोई लाभ भी होता है? क्या आपने कभी उन दवाओंको किसी डॉक्टर, वैद्य या केमीकल एनेलाइजरके पास भेजकर उनकी रिपोर्ट प्राप्त की है या उसे पढ़ा है?

यदि आप कभी किसी जंगली हबशीको देखते हैं तो आपको आश्चर्य होता है कि १६ या १८ वर्ष की अवस्थामें यह मनुष्य पहलवानकी तरह हृष्टपुष्ट और बलिष्ठ कैसे बन जाता है? असल बात यह है कि उसे अपने जंगली भोजनके अलावा जंगल-की अनेक जड़ीबूटियां भी व्यवहार करनेका मौका मिलता है और उन्हीं अमूल्य चीजोंके कारण उसकी शारीरिक गठन, उसकी काठी, इतनी सुन्दर और मजबूत बन जाती है। ठीक इसी तरह

झीनसीन गोल्ड टानिक पिल्स

पुरुषोंको सांसारिक सुखकी असीम शक्ति, रुकावट और उत्साह देनेवाली अद्भुत चीज है। इसका खास गुण यह है, कि स्वप्नमें जानेवाली धातुको तो वह तुरन्त ही बन्द कर देती है। इसके अलावा यदि किसीके शुक्रकीट कमजोर हो जाते हैं या मर जाते हैं, तो पुनर्जीवन देकर यह उन्हें जीवित कर देती है। इसीलिये जिन पुरुषोंसे बच्चे नहीं होते, उनसे अवश्य बच्चे होने लगते हैं। तात्पर्य यह कि यह चीज सांसारिक सुख उपभोग करनेके लिये अत्यन्त उत्साह और बल देती है। कमजोर नसोंको मजबूत और बल-वान् बनाती है। साथ ही यह सब लाभ चिरस्थायी होता है। ४० वर्षसे अधिक उम्रवाले पुरुषोंके लिये तो यह दवा बहुत ही लाभ-दायक, उपयोगी और आवश्यक है।

मूल्य फी शीशी ४)
(डाकखर्च ।-))
दो शीशी ८)
(डाकखर्च माफ)

चाइनीज मेडीकल स्टोर, इलाहाबाद बैंकके सामने, तीन तल्ले पर २८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।

एजन्ट या एजन्सी कहीं है भी नहीं, न किसीको देना ही है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बम्बई, ता. १४-१-३२

मेसर्स चाइनीज़ मेडीकल स्टोर,
२८ एपोलो स्ट्रीट, कोट, बम्बई।

प्रिय महोदय,

"भीनसीन टानिक पिल्स" (गोल्ड कोटेड) का रासायनिक पृथक्करण करनेके लिये आपने मुझसे जो प्रार्थना की थी, तदनुसार मैंने आपके आफिसमें जाकर, समूचे स्टाकमेंसे उपरोक्त दवाकी कई शीशियां उठा ली थीं। साथ ही, आपसे उन गोलियोंके बनानेका नुस्खा भी मैंने ले लिया था।

लेबोरेटरीमें उपरोक्त गोलियोंको यथाविधि एनेलाइज़ करनेपर मुझे मालूम हुआ कि आपके नुस्खेके मुताबिक सभी चीजें उसमें मौजूद हैं। साथ ही मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि उनमें कोई भी विषैली चीज या रसायन नहीं है, जिससे उनके व्यवहार करनेवालेको जरा भी हानि हो।

इसके विपरीत मैंने देखा कि 'सच्ची जवानी' का हेडिङ्ग देकर विज्ञापनमें उन गोलियोंके जो गुण दिखाये गये हैं, वे बिलकुल ठीक हैं और वैसी सभी चीजें या औषधियां इस दवामें काफी तादादमें मौजूद हैं।

इस रिपोर्टको आप समाचारपत्रोंमें सहर्ष छपा सकते हैं।

भवदीय
डी. वी. पण्ड्या,
एम्.एस.सी.,
एल.एल. बी.
एनेलाइज़र

ડી.વી.પંડ્યા.
એમ.એસસી.
એલ.એલબી,
એનેલાઈઝર.

बम्बई ता. २९ जुलाई १९३३

मेसर्स चाइनीज़ मेडीकल स्टोर,
२८ एपोलो स्ट्रीट, कोट, बम्बई।

विषय—भीनसीन गोल्ड टानिक पिल्सका मेडीकल पृथक्करण।

प्रिय महोदय,

मुझे सूचित करते हुए हर्ष होता है, कि आपके स्टाकसे भीनसीन गोल्ड टानिक पिल्सकी जो दो शीशियां मैंने उठा ली थीं, उनकी गोलियोंका मैंने यथाविधि रासायनिक पृथक्करण किया। मुझे यह देखकर पूर्ण सन्तोष हुआ कि उन गोलियोंके नुस्खेमें जिन चीजोंका होना बतलाया गया है, वे उनमें काफी तादादमें मौजूद हैं। मुझे यह भी विश्वास हो गया है, कि इन चीजों में से कोई भी चीज गोलियोंके व्यवहार करनेवालेको हानि पहुँचानेवाली नहीं है।

मैं निरापद भावसे कह सकता हूं, कि इन गोलियोंका गुण देखते हुए, आप उनके विज्ञापनमें जो बातें लिखते हैं, वे सर्वथा उचित ही हैं।

इस रिपोर्टको आप समाचारपत्र या अन्यान्य विज्ञापनोंमें सहर्ष व्यवहार कर सकते हैं।

भवदीय
ए. के. धैर्यवान
एम्. एस. सी.
केमीकल एनेलाइज़र और
कन्सलटन्ट

ए. के. धैर्यवान
एम. एस. सी.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमान् जी० एम० ईसाणी (एम० ए०, एल्-एल्० बी०) महोदय

जो

पहले अहमदाबाद ज़िले के धोलका व धन्धूका प्रान्त के ज़िला डिप्टी कलेक्टर एवम् उसी विभाग के डिविज़नल मैजिस्ट्रेट और बाद को उत्तर विभाग ज़िला कोलाबा के डिप्टी कलेक्टर थे।

चाइनीज मेडीकल स्टोर

(२८, एपोलो स्ट्रीट, फ़ोर्ट बम्बई)

को पत्र लिखते हुए फ़रमाते हैं—

प्रिय महोदय,

विज्ञापन द्वारा प्रचारित की जाने वाली टानिक दवाओं को साधारण जन-समुदाय साधारणतः घृणा की दृष्टि से देखता है और वैसा करने के उचित कारण भी हैं।

परन्तु आपकी झीनसीन गोल्ड टानिक पिल्स के सम्बन्ध में मुझे विश्वास हो गया है कि इस दवा के लिए जो दावा किया जाता है, उससे कहीं अधिक गुण इसमें मौजूद हैं।

मैंने आपकी झीनसीन गोल्ड टानिक पिल्स अपने कई मित्रों को दी थी और मुझे सूचित करते हुए आनन्द होता है कि उन्हें आपकी दवा से ऐसा असाधारण लाभ हुआ है कि उन सबों ने वह दवा दुबारा मगाई है।

ऐसी अवस्था में, सर्वसाधारण को आपकी झीनसीन गोल्ड टानिक पिल्स व्यवहार करने की सिफ़ारिश करने में मुझे ज़रा भी सङ्कोच करने का कोई कारण नहीं दिखाई देता।

हस्ताक्षर
जी० एम० ईसाणी

भवदीय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाक-ताइ-यून

संसारमें जिस तरह सूर्यसे प्रकाश और गरमी, चन्द्रसे प्रकाश और शीतलता, गुड़से मधुरता और नमकसे क्षार मिलनेकी बात बिलकुल ठीक है,—जिस तरह यह नियम अटल और अचल है, जिस तरह एक ओर एक मिलकर दो होनेका सिद्धान्त बिलकुल सही है और जिस तरह इन सत्य बातोंके सामने किसी प्रकारकी कोई आपत्ति नहीं की जा सकती, उसी तरह—

पाक-ताइ-यून

स्त्रियोंको जानेवाले चाहे जिस प्रकारके पीले, चिकने या सफेद पानीको बन्द करनेकी अनमोल दवा है और इसके सामने भी किसी प्रकारकी कोई आपत्ति नहीं उठाई जा सकती।

साथ ही एक बात यह भी है, कि यह दवा खाई या पी नहीं जाती, सिर्फ बर्ती जाती है और इसकी एक ही शीशी चाहे जैसे पानी या स्रावको बन्द करनेके लिये काफी होती है।

मूल्य फी शीशी २॥)
डाक खर्च ।=)

चाइनीज़ मेडीकल स्टोर, २८ एपोलो स्ट्रीट, कोट, बम्बई।

एक नम्र निवेदन— बर्थ कन्ट्रोल या सन्ताननिग्रहकी अनेक दवाएं ऐसी होती हैं, कि जिनके व्यवहारसे स्त्रियोंके उस अंगमें स्पर्श-कातरता (स्पर्श तक बर्दाश्त न होना) और बेहद खुजली आदि शिकायतें पैदा हो जाती हैं, परन्तु यह "चीत-यूक-तान" ऐसे दोषोंसे सर्वथा रहित और विश्वासपात्र दवा है।

स्त्रियों पर आफत!

स्त्रियोंको बारंबार बच्चे होनेसे उनके शरीर और मनपर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है और उसका दुष्परिणाम अन्तमें समूचे परिवारको भोगना पड़ता है। इस हालतसे छुटकारा पानेके लिये

चीत-鈞育丸-यूक-तान

व्यवहार कीजिये, कि जिसके व्यवहारसे सन्तान बिलकुल होती ही नहीं। साथही शरीरमें ओज और शक्ति आती है तथा व्यवहारके समय आनन्द प्राप्त होता है।

१२ अदद की १ शीशीका मूल्य रु० ४)। डाकखर्च अलग।

चाइनीज़ मेडीकल स्टोर, २८ एपोलो स्ट्रीट, कोट, बम्बई।

सुइ-फन-सी (तरल)

यह एक ऐसी दवा है जो कि उम्र भर दाम्पत्य-जीवन में एक अति गूढ़ रहस्य-स्वरूप रह कर मन व प्राण को मिलन-मदिरा रूप आनन्द-सागर में नर व नारी दोनों को डाल देती है।

सुइ-फन-सी उन लोगों के लिए है जो किसी और तरह की चाहे जैसी भी दवा खाना पसन्द ही नहीं करते। पूर्ण विवरण के लिए पत्र-व्यवहार कीजिए। एक शीशी बहुत दिनों तक चलती है।

इस दवा की

चीन की राष्ट्रीय सरकार ने पृथक्करण करके रजिस्ट्री की है।
रजिस्टर नं० ९

ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने रजिस्ट्री की है।
रजिस्टर नं० २६०

गवर्नमेन्ट ऑफ़ फ़िलिपाइन आइलैण्ड्स ने इसे एनेलाइज़ और पास किया है।
लेबोरेटरी नं० २२३०३१

मूल्य एक शीशी का ६) रुपये। डाक-ख़र्च ।=)
विदेश के लिए रजिस्ट्री व डाक-ख़र्च समेत एक शीशी के १० शिलिङ्ग

चाइनीज़ मेडिकल स्टोर, २८, अपोलो स्ट्रीट, फ़ोर्ट, बम्बई १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सच्ची ताक़त के लिए—"झीनसीन गोल्ड टानिक पिल्स"

शुद्ध सोने में लपेटी हुई यह गोलियाँ ताक़त और जवानी के लिए अपूर्व हैं। मूल्य फ़ी शीशी ४), डाक-ख़र्च ।-) दो शीशी के ८) डाक-ख़र्च माफ़।

सुइ-फन-सी (तरल)—जो लोग अच्छी से अच्छी दवा भी खाना पसन्द नहीं करते उनके लिए यह केवल लगाने की दवा है। मूल्य फी शीशी ६) डाकख़र्च =)

मलहम—शक्ति और पौरुष प्राप्त करने के लिए यह मजहम अक्सीर है। मूल्य फी शीशी ५) डाकख़र्च ॥)

नये सूजाक के लिए—"साह लुम युन"—इन कैप्सूलों से नया सूजाक आराम होता है और शरीर में फैला हुआ विष दूर होता है। मूल्य फी शीशी ३) डाक-ख़र्च ॥)

पुराने से पुराने भयङ्कर सूजाक के लिए—"ची साह लुम"—यह चटनी पुराने से पुराने और हठीले सूजाक की सर्वोत्तम औषधि है। मूल्य फी शीशी ४) डाक-ख़र्च ॥)

सिफलिस, गरमी, आतशक के लिए—"ची मोय दुक"

चाहे जैसी सिफलिस, गरमी या आतशक की बीमारी ज़ख़्म या चकत्ते हों उन पर यह पीने की दवा अक्सीर है। मूल्य फी शीशी ३) डाक-ख़र्च ॥)

स्त्रियों के पुराने व कठिन से कठिन प्रदर के लिए—"पाक ताइ युन"

यह दवा स्त्रियों को खानी नहीं, सिर्फ़ व्यवहार करनी पड़ती है और पहले ही दिन से रोग को निर्मूल करना आरम्भ कर देती है। इसकी केवल एक ही शीशी काफ़ी होती है। मूल्य फी शीशी २॥) डाक-ख़र्च ॥)

स्त्रियों की ऋतु सम्बन्धी शिकायतों के लिए—'ची कींग की'

इन गोलियों से स्त्रियों की मासिक ऋतु सम्बन्धी समस्त शिकायतें, जैसे कि स्राव का अधिक या कम होना, तलपेट या कमर में दर्द आदि दूर होकर ऋतु पूर्ण रूप से नियमित बनता है, फलतः बन्ध्यत्व दूर होने में भी इनसे अपूर्व सहायता मिलती है। मूल्य प्रति शीशी ३॥) डाक-ख़र्च ॥)

सन्तान-निग्रह के लिए—'चीत युक तान'

इस दवा के व्यवहार से स्त्रियों के गर्भाशय को हानि पहुँचे बिना बड़ी आसानी से सन्तान-निग्रह होता है। मूल्य फ़ी शीशी ४) डाक-ख़र्च ।=)

दाद और उकौता के लिए—'ची लुन शीन'

यह लगाने की दवा पहले ही दिन से अपना असर दिखाती है और दाद को जड़मूल से आराम करती है। इससे दाग नहीं लगते। मूल्य फी शीशी ॥।) डाक-ख़र्च ।=)

संधिवात या गठिया की अपूर्व दवा—'ची फुंग सुप'

सन्धिवात और उससे सम्बन्ध रखने वाले रोग जैसे कि जोड़ों का दर्द, शरीर का अकड़ जाना, गरमी की बीमारी के कारण जोड़ों का दुखना आदि पर यह पीने की चमत्कारिक दवा है। पीने की दवा के साथ खाने की गोलियाँ भी भेजी जाती हैं, जो सन्धिवात को शीघ्रतापूर्वक आराम करने में सहायता पहुँचाती हैं। पीने की दवा और खाने की गोलियाँ दोनों की एक-एक शीशी का मूल्य १४) डाक-ख़र्च १)

चाइनीज़ मेडीकल स्टोर

इलाहाबाद बैंक के सामने।
२८, एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई
टेलीफोन नम्बर २७९३७

डाक-ख़र्च के लिए पाँच पैसे का टिकट भेज कर पूरा सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वरकार—
प्रो० एस० डी० आपटे

राग—दुर्गा
ताल—झपताल

शब्दकार—
'अज्ञात'

इस राग में गंधार और निषाद वर्जित है, इसलिये इसकी जाति ओडव है। इसका वादी स्वर धैवत और संवादी स्वर रिषभ है। इसका गाने का समय रात का है।

आरोहावरोह—सा रे म प ध सा। सा ध प म रे सा
पकड़—रे म प ध, म रे, धं सा

गीत

जयति श्री राधिके सकल सुख साधिके।
तरुण मणि नित्त नव तनु किशोरी॥
कृष्ण तनु लीन घन रूप की चातकी।
कृष्ण मुख हिम करन की चकोरी॥

स्थायी

(स्व० पं० विष्णुदिगंबर जी के लेखन पद्धति के अनुसार)

	प	म								सा		रे	म	म	
ध	म	प	ऽ	म	प	ध	प	ध	सा	ध	म	रे	रे	सा	|
						०			०			०	०		
ज	य	ति	-	श्री	-	-	रा	-	-	धि	के	-	-	-	
१		३					+				८				

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

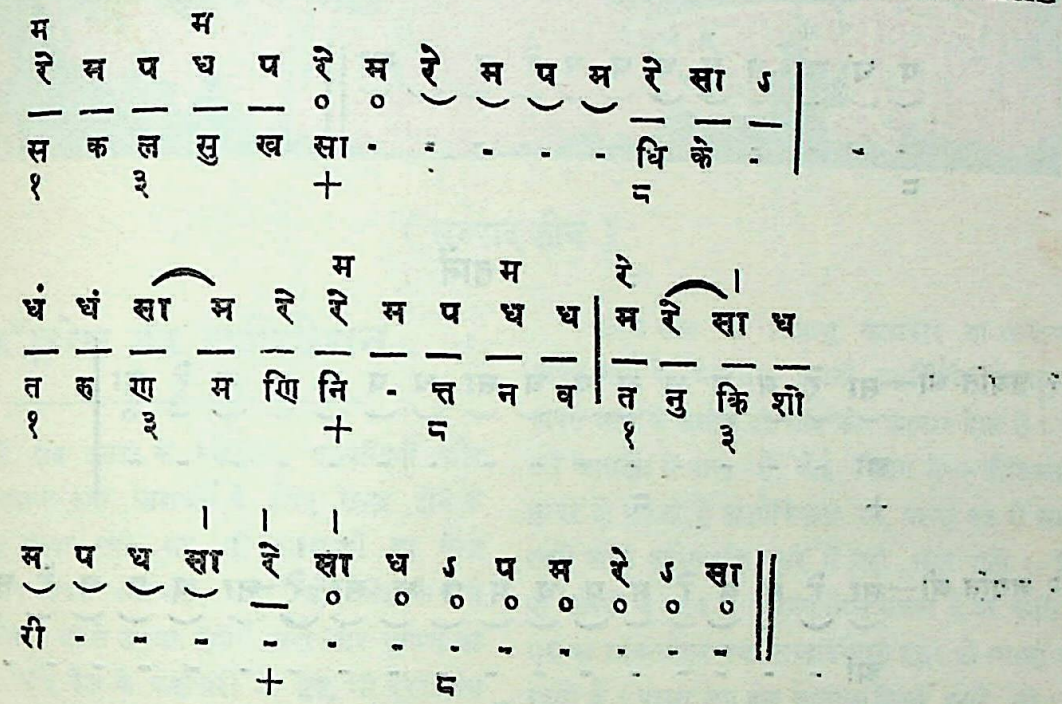

अन्तरा

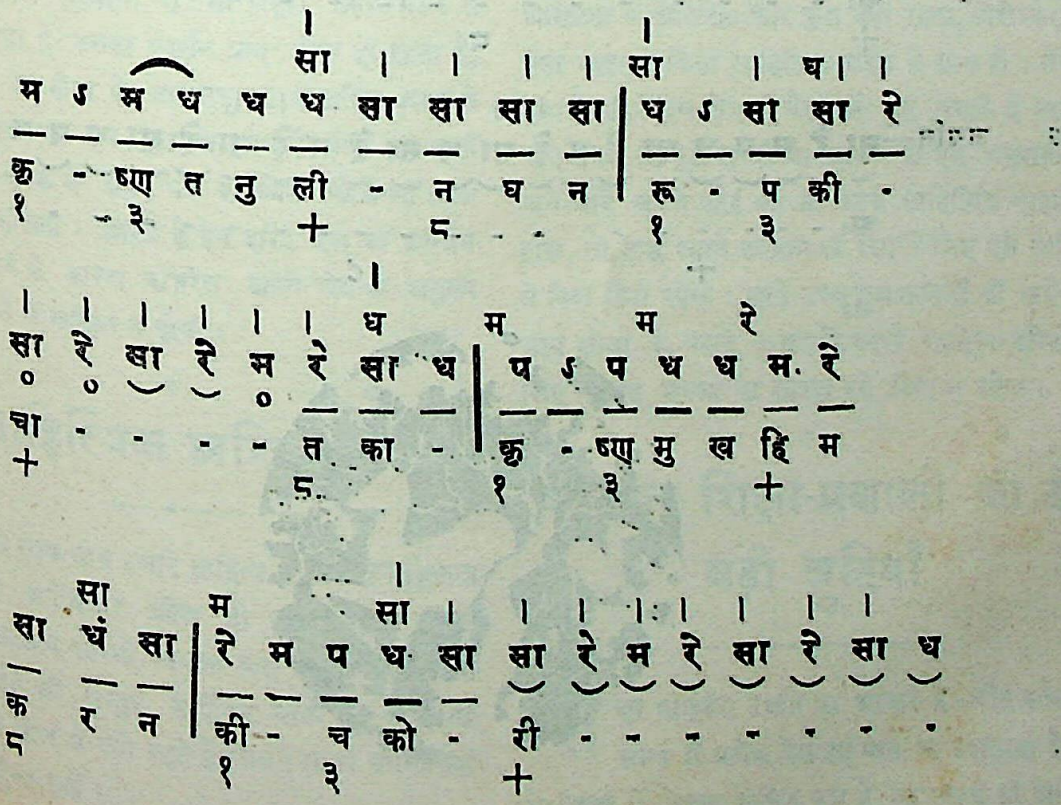

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प ध सा ध प ध प म रे म रे सा ||
- - - - - - - - - - - - -
८

तानें

१ जयति श्री—सा रे म प ध म प ध सा ध प ध प म रे सा
आ - - - - - - - - - - - - - - - -
+ ८

२ जयति श्री—सा रे म प रे म प ध म प ध सा रे सा ध प म रे सा
आ - - - - - - - - - - - - - - - - - -
+ ८

३ जयति श्री—सा रे म प ध सा रे म रे सा ध प म प ध प म रे सा
आ - - - - - - - - - - - - - - - - - -
+ ८

४ जयति—सा रे म प ध सा रे म रे सा ध सा रे म रे सा रे सा ध प म रे सा
आ -
+ ८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

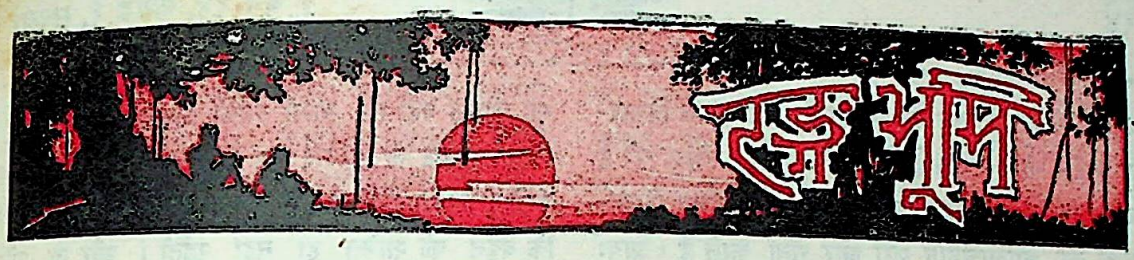

(सम्पादकीय)

कॉङ्गरेस का अधिवेशन

वैसे तो सब प्रकार के व्यक्तियों, दलबन्दियों और सिद्धान्त रूपी धाराओं के लिए समुद्र होने के कारण यह संस्था सारे राष्ट्र की आशाओं का केन्द्र है, उस पर सबके विश्वास, श्रद्धा और स्नेह के पात्र पं० जवाहरलाल जी से उसका संयोग स्वर्ण और सुगन्ध का संयोग है। यदि देश के कर्णधारों में कुछ भी दूरदर्शिता शेष रही होगी तो सारे भेद-भावों का जीवन इसके आगामी अधिवेशन तक ही सीमित रहेगा अन्यथा हम 'विनाश काले विपरीत बुद्धिः' की कहावत चरितार्थ करेंगे।

हमें अपनी दुरवस्था में भी बाहरी तड़क-भड़क से जो स्नेह रहा है उसका प्रदर्शन प्रायः होता ही रहता है, परन्तु खेद तब होता है जब राष्ट्र की वास्तविक दशा से परिचित संस्था भी इस संक्रामक रोग से नहीं बच पाती और चमक-दमक में प्रचुर धन का व्यय करके भी खिन्न होना नहीं सीखती। आशा है इस दरिद्र देश का अन्तिम अवलम्ब होने के कारण कॉङ्गरेस अपने ध्येय के अनुरूप वेष भी रखने में लज्जित न होगी।

* * *

साहित्यिक अशिष्टता

वृद्धि के साथ-साथ हमारे साहित्य में जिस उच्छृङ्खलता का अनधिकार प्रवेश हो गया है वह किसी समृद्धतम साहित्य को भी विषाक्त बना देने के लिए पर्याप्त है, परन्तु इससे भी सन्तुष्ट न होकर मानो हम नित्य नई अशिष्टता की खोज में लगे रहते हैं जिससे अन्य सहयोगियों को व्यथा पहुँचा सकें।

प्रत्येक सत्य का जिज्ञासु कलाकार या साहित्यकार अपने मार्ग के अनुसार, अपनी प्रकृति के अनुरूप और अपने भाव के समान ही सत्य को आकार देता है। कोई उसे आसक्ति में पाता है, कोई विराग में—लौकिकता भी सुन्दर हो सकती है अलौकिकता भी, परन्तु एक से सम्बन्ध रखने वाली अभिव्यक्ति दूसरे में नहीं समा पाती। प्रायः दो कवियों के भाव में सादृश्य मिल सकता है या कभी-कभी एक का भाव-सौष्ठव तथा शब्दविन्यास दूसरे को स्मरण आता रहता है। परन्तु जब हम जानकर किसी दूसरे की, दूसरे भावों को व्यक्त करने वाली पंक्ति विशेष लेकर उसे अपने भिन्न दृष्टिकोण से देखकर विकृत रूप देकर उसके विषय में भ्रान्ति उत्पन्न करने का प्रयत्न करने लगते हैं तब वह अशिष्टता के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहता, विशेषकर जब ऐसा व्यवहार किसी साहित्यिक बहिन के साथ हो। वैसे ही हमारी बहिनें इस क्षेत्र में पैर रखते हुए डरती हैं उस पर यदि उनके टूटे-फूटे शब्दों का आश्रय ले ऐसे अनुराग-राग गाये जाने लगेंगे और वह भी उनके साहित्यिक भाइयों के द्वारा, तो उन्हें अपने सम्मान की रक्षा के लिए ऐसे साहित्य से विदा लेनी पड़ेगी। छोटे उच्छृङ्खल बालकों को चाहे यह कार्य शोभा दे, परन्तु उत्तरदायित्वपूर्ण साहित्य-सेवियों के लिए तो यह लज्जा का कारण बने बिना न रहेगा।

* * *

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की दो बड़ी त्रुटियाँ

शिक्षा मानवीय उन्नति का आधार है और वर्तमान समय में प्रत्येक देश इस बात का उदाहरण है कि जो शिक्षा में जितना अधिक बढ़ा है वह उतनी ही अधिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सांसारिक सफलता प्राप्त कर सकता है। भारत के विचार-शील व्यक्ति भी इस सचाई को भली प्रकार समझ गये हैं और इसीलिए हम प्रायः अपने देश में प्रचलित शिक्षा-प्रणाली की आलोचनाएँ पढ़ा और सुना करते हैं। प्रायः सभी आलोचक इस बात को स्वीकार करते हैं कि भारत-वर्ष की शिक्षा-प्रणाली त्रुटिपूर्ण है और इसी कारण न तो यहाँ शिक्षा का अधिक प्रचार हो पाता है और न यहाँ के शिक्षित व्यक्ति जीवन-संग्राम में उचित रूप से भाग लेने के योग्य बन पाते हैं। इस शिक्षा-प्रणाली का एक अत्यन्त घातक परिणाम यह भी होता है कि शिक्षित और अशिक्षितों के बीच एक गहरी खाई खुद जाती है जिससे उनका पारस्परिक सहयोग अधिकांश में असम्भव हो जाता है। यह बात देशोन्नति की दृष्टि से घोर अवाञ्छनीय है। इसके साथ ही शिक्षा का दिन पर दिन मँहगा होता जाना, शिक्षालयों की ऊपरी तड़क-भड़क का निरन्तर बढ़ते जाना भी एक ऐसी बात है जो हमारे देश के एक बहुत बड़े भाग का उच्च शिक्षा के द्वार तक पहुँच सकना असम्भव बना देती है। इस सम्बन्ध में हाल ही में 'न्यू एजुकेशन फ़ेलोशिप' की बङ्गाल-शाखा के प्रथम सम्मेलन के अध्यक्ष महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अत्यन्त मार्मिक भाषा में निम्न-लिखित उद्गार प्रकट किये थे :—

"असभ्य देशों को यदि छोड़ दिया जाय तो भारत को छोड़ कर अन्य कहीं भी लिख-पढ़ सकने वालों की संख्या कुल जन-संख्या की ८ या १० प्रतिशत न होगी। ऐसे देश में बड़ी शान-शौक़त से शिक्षा-सम्मेलन करने में हमें शर्म आनी चाहिए। ऑक्सफ़ोर्ड और केम्ब्रिज में यूनिवर्सिटियाँ हैं। भारत के भी कितने ही नगरों में यूनिवर्सिटियाँ हैं, भारतीय यूनिवर्सिटियों की बाहरी तड़क-भड़क देखकर हम तुरन्त इस परिणाम पर पहुँच जाते हैं कि वे पश्चिमी यूनिवर्सिटियों ही के समान हैं, मानो यूनिवर्सिटियों का मतलब केवल भारी इमारतों और तड़क-भड़क ही से है। ऑक्सफ़ोर्ड और केम्ब्रिज का मतलब केवल ऊपरी शानबान से नहीं, बल्कि समस्त इङ्गलैण्ड से है। हमारी यूनिवर्सिटियों का अन्त तो उनकी चहार-दीवारी के भीतर ही हो जाता है। उनकी इस कमी का यह कारण नहीं कि अभी उनकी उम्र बहुत ही कम है। जिस बालक की लम्बाई कम हो उसकी चिन्ता हम नहीं करते ; चिन्ता तो हम उस बालक की करते हैं, जिसमें कि बढ़ने की शक्ति हो नहीं रहती। और तो और, जो वर्तमान शासन-व्यवस्था के साथ शिक्षा की इस प्रणाली को अपने साथ हमारे देश में लाए, वे भी कभी-कभी हमें ईंट और चूने की इमारतों ही में यूनिवर्सिटियों का महत्व मानने को कहा करते हैं। कुछ समय की बात है, मैंने किसी प्रान्त के गवर्नर को किसी यूनिवर्सिटी की नींव रखते समय यह कहते सुना था कि यूनिवर्सिटी की शिक्षा से केवल ज्ञान की प्राप्ति ही नहीं होती बल्कि वह ऐसी शिक्षा होती है जिसे कि उपयुक्त इमारतों में बैठ कर प्राप्त किया गया हो। उनके कथनानुसार शिक्षा-प्राप्ति का यह भी एक महत्वपूर्ण अङ्ग है और यूनिवर्सिटी की दीवारें भी उनमें बैठे हुए शिक्षकों से कम आवश्यक नहीं हैं। हमारी आपत्ति तो यह है कि जब हमारे पास इतना रुपया नहीं है कि तलवार लकड़ी से अधिक मूल्यवान पदार्थ की बनाई जाय तो म्यान फ़ौलाद की बनाना व्यर्थ ही है। पूर्वीय दृष्टिकोण के अनुसार जिस पात्र में अमृत रखा गया हो उसकी स्वयं अमृत से तुलना करने की आवश्यकता नहीं। ज्ञान के अमृत की लकड़ी या ईंटों के काम से तुलना करने का हम ख़याल भी नहीं कर सकते। जो स्वयं ही महान है उसकी महा-नता प्रदर्शित करने के लिए हमें किसी ऊपरी तड़क-भड़क की आवश्यकता नहीं है।"

सचमुच ही इस सम्बन्ध में विदेशों की नक़ल करके हमने भयंकर भूल की है। यह सच है कि इङ्गलैण्ड अमेरिका जैसे दो-चार देशों में शिक्षणालयों की ऊपरी शान में भी काफ़ी ख़र्च किया जाता है, पर वहाँ तत्व की बातों को भुलाया नहीं जाता। उनके पास इतने साधन हैं कि वे दोनों का यथोचित रीति से निर्वाह कर लेते हैं। पर भारत जैसे निर्धन देश में बाहरी तड़क-भड़क की तरफ़ आकर्षित होने का यह परिणाम होता है कि हमारे अल्प साधन उसी में लग जाते हैं और तत्व की बातों का नम्बर ही नहीं आता।

एक बात और भी इस शिक्षा-प्रणाली में अत्यन्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हानिकर है और वह है उच्च शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा होना। यह त्रुटि इतनी अधिक प्रत्यक्षतः हानिकर और अनौचित्यपूर्ण है कि कोई भी तर्कशील व्यक्ति उसका समर्थन नहीं कर सकता, देश-हितैषी व्यक्ति तो उसका विरोध वर्षों से कर रहे हैं। तो भी अभाग्यवश अभी तक उसका बहुत ही थोड़े अंशों में निराकरण हो सका है और हमारे बालकों और नवयुवकों को निरन्तर एक अनावश्यक दुःसह भार से दब कर अपना जीवन नष्ट करना पड़ रहा है। इस हानिकर प्रवृत्ति ने हमारी बुद्धि को ऐसा परिवर्तित कर दिया है कि सब कुछ जानते-बूझते हुए भी हम विदेशी भाषा के मोह-पाश से मुक्त होकर अपनी मातृ-भाषा को उपयुक्त स्थान नहीं दे सकते। इस हीन मनोवृत्ति का चित्र महाकवि रवीन्द्रनाथ ने अत्यन्त चुभती हुई भाषा में खींचा है। वे कहते हैं :—

"जिन लोगों ने अध्यापन का कार्य किया है वे जानते हैं कि कुछ बालक भाषाएँ पूरी तरह कभी नहीं सीख सकते। यदि अङ्गरेज़ी का अधूरा ज्ञान रहते हुए भी किसी तरह वे मेट्रिकुलेशन की परीक्षा पास कर लेते हैं तो आगे बढ़ना उनके लिए असम्भव हो जाता है। इसके कई कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि जिन लोगों की मातृ-भाषा बङ्गला है उनके लिए अङ्गरेज़ी का पूरा ज्ञान प्राप्त करने से अधिक मुश्किल बात कोई नहीं होती। इसके सिवाय अङ्गरेज़ी पढ़ने का अवसर बहुत ही कम लोगों को, और ग़रीबों को तो बिल्कुल ही नहीं, प्राप्त होता है। परन्तु क्या इसीलिए वे यूनिवर्सिटी की शिक्षा से भी वञ्चित कर दिए जायँ? इङ्गलैण्ड में पहले चोरी के लिए अपराधियों को फाँसी तक देने की व्यवस्था थी। क्या यूनिवर्सिटी के नियमों में चोरी करने में असफल होने के कारण और भी कड़ा कोई दण्ड देने का विधान होना आवश्यक है? क्योंकि किताब को रट कर उसकी भीतरी बातों को समझे बिना ही परीक्षा पास कर लेना चोरी ही तो है। क्या इसमें और परीक्षा के हाल में कपड़े के नीचे किताब छिपा कर ले जाने में कोई भेद है? परन्तु जो परीक्षा पास कर लेते हैं उनके सम्बन्ध में मुझे कुछ नहीं कहना। मैं तो उन लोगों के विषय में कहना चाहता हूँ, जो कि उनमें असफल हो जाते हैं। क्या इन लोगों के ज्ञान का पता लगाने के लिए कुछ कम शान-शौक़त के साधनों का उपयोग नहीं किया जा सकता, जिस तरह हावड़ा ब्रिज बन्द होने पर लोग देशी नावों पर बैठ कर भी नदी के पार जा सकते हैं।

हमारे देश में अन्य देशों के मुक़ाबले एक भेद सब से बड़ा है। स्वतन्त्र देश में विदेशी भाषा केवल वही लोग सीखते हैं, जो उसे अपने लिए आवश्यक समझते हैं। विदेशी भाषा सीखने की उन्हें अपने अन्य कार्यों के लिए ज़रूरत नहीं पड़ती, क्योंकि वहाँ का सब कारबार उनकी मातृभाषा ही में होता है। हमारे देश में सब काम अङ्गरेज़ी में होता है। इसलिए हमारे लिए अङ्गरेज़ी की केवल जानकारी रखना ही आवश्यक नहीं होता, बल्कि हमें अपने शासकों की तुष्टि के लिए पूरी जानकारी प्राप्त करनी होती है। यदि ऐसा हम न करेंगे तो हमें न तो शासकों से ही और न प्रजा से ही स्वीकृति मिलेगी। मैंने एक बार जर्मन दार्शनिक यूकेन का भाषण अङ्गरेज़ी में सुना था। उसे सुन कर मैं ताज्जुब में रह गया। परन्तु इस कारण यूकेन के सम्मान में कोई अन्तर न पड़ा। परन्तु ज़रा विचार कीजिए कि यदि वैसी ही अङ्गरेज़ी मेरी भी होती तो मेरा क्या हाल होता! अङ्गरेज़ी भाषा के उपयोग में ग़लती करने पर हमारे देश में जितनी हँसी होती है उतनी किसी अन्य बात पर नहीं होती। यह हँसी बड़ी ही दुखपूर्ण है और इसमें हमारी विदेशियों की ग़ुलामी की लज्जा मिली हुई है।"

क्या हम आशा करें कि अब भी हमारे देशवासी इस मोह-निद्रा से चैतन्य होंगे और शिक्षा-प्रणाली में उचित सुधार करके उसके अस्तित्व को सार्थक करेंगे। यदि ऐसा न हुआ तो शिक्षित होते हुए भी हमें अशिक्षितों से निकृष्ट समझा जायगा।

* * *

उद्योग-धन्धे और सरकारी सहायता

वर्तमान समय में उद्योग-धन्धों ने जैसा विशाल स्वरूप धारण कर लिया है और उनसे सार्वजनिक हित जिस प्रकार घनिष्ट रूप से सम्बद्ध हो गया है; उसके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारण उनका व्यक्तिगत-स्वरूप अनेकांश में तिरोहित होता जाता है और वे अधिकाधिक परिमाण में एक राष्ट्रीय-समस्या का रूप धारण करते जाते हैं। एक समय था जब कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अधीनस्थ उद्योग-धन्धे का पूर्णतया कर्ताधर्ता माना जाता था और उसकी उन्नति अवनति से दूसरे लोग प्रायः उदासीन रहते थे। पर अब अवस्था सर्वथा विपरीत हो गई है। उद्योग-धन्धों की उन्नति या अवनति पर अब राष्ट्रीय कल्याण की दृष्टि से विचार किया जाता है और यदि इस विषय में अवनति के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं तो सारा राष्ट्र चिन्तित हो उठता है। यही कारण है कि आजकल अधिकांश उन्नतिशील देशों की सरकारों ने अपने यहाँ के उद्योग-धन्धों का निरीक्षण करने और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें उचित सहायता देने के लिए स्वतन्त्र विभाग स्थापित कर रखे हैं। विशेषतया जब से संसार में व्यापारिक मन्दी की वृद्धि हुई है और अनेक व्यवसायों की स्थिति डाँवाडोल हो उठी है, तब से स्वाधीन देशों की सरकारें अपने देश के उद्योग-धन्धों की रक्षा के लिए अत्यन्त व्याकुल हो उठी हैं और भाँति-भाँति के उपायों का अवलम्बन कर रही हैं। इस सम्बन्ध में एक लेखक ने आँकड़े देकर सिद्ध किया है कि इङ्गलैण्ड, अमेरिका, जापान, रूस आदि सभी प्रमुख देश इस समय अपने उद्योग-धन्धों की रक्षा तथा वृद्धि के लिए विशेष रूप से व्यग्र हैं और इसके लिए अपरिमित धन व्यय कर रहे हैं। इङ्गलैण्ड की सरकार अपने यहाँ के जिस उद्योग को निर्बल अवस्था में देखती है उसे आर्थिक सहायता देती है और आवश्यक होने पर अपने हाथ में भी ले लेती है। सन् १९३४ ई० में जब वहाँ के फुटकर माल लादने वाले जहाजों की अवस्था विदेशी प्रतियोगिता के कारण सङ्कटापन्न हो गई थी तब सरकार ने लगभग तीन करोड़ रुपये देकर उनकी सहायता की। इसी प्रकार उसने 'कनार्ड स्टीम शिप कम्पनी', 'ब्रिटिश डाई स्टफ कम्पनी', 'होम ग्रोन शुगर कम्पनी' की व्यवस्था अपने हाथ में लेकर और करोड़ों की हानि सह कर उनकी रक्षा की है। अमेरिका ने इस नीति के द्वारा अपने उद्योग-धन्धों की इतनी उन्नति की है कि जहाँ कुछ समय पूर्व उद्योग-धन्धों द्वारा उत्पन्न होने वाली सामग्री का मूल्य कृषि द्वारा उत्पन्न होने वाली सामग्री के तुल्य था वहाँ अब वह उसका तिगुना है। हाल ही में जब व्यापार-सङ्कट के कारण अमेरिका के उद्योग-धन्धों की स्थिति विकट हो उठी थी तो वहाँ की जनता ने प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट को डिक्टेटरशिप के अधिकार दे दिये कि वे जिस प्रकार सम्भव हो इस अवस्था का सुधार करें। वहाँ इस कार्य के लिए अरबों रुपये खर्च हो चुके हैं। जापान का उदाहरण तो हमारी आँखों के सामने ही है और उसका प्रभाव भी हम स्वयं अनुभव कर रहे हैं। कुछ समय पूर्व जो देश सर्वथा पिछड़ा हुआ समझा जाता था और कृषि के अतिरिक्त जहाँ कोई भी महत्त्वपूर्ण आधुनिक ढङ्ग का उद्योग-धन्धा न था वही देश आज संसार के व्यापारिक क्षेत्र में हलचल मचा रहा है। वहाँ की इस उन्नति का श्रेय पूर्णतया वहाँ की सरकार ही को है। उसी ने लोगों को इस दिशा में प्रोत्साहित किया, उनको विदेश भेज कर इस विषय की शिक्षा दिलवाई और सब प्रकार से व्यवसाइयों को संरक्षण प्रदान किया। वर्तमान व्यापारिक सङ्कट के युग में ज्यों-ज्यों विदेश वाले चुङ्गी आदि बढ़ा कर जापानी माल का आयात रोकना चाहते हैं त्यों-त्यों सरकारी सहायता और संरक्षण के बल पर वहाँ के व्यवसाई अपने माल का दाम कम करते जाते हैं और आज जापानी माल हमारे देश के बाजारों में ऐसे भाव में बिक रहा है कि देखते हुए भी अपनी आँखों पर विश्वास नहीं होता। जब इन तमाम उदाहरणों से हम अपने देश की अवस्था और सरकार की कार्यवाही का मुक़ाबला करते हैं तो पृथ्वी-आकाश का सा अन्तर दृष्टिगोचर होता है। कदाचित् यहाँ की सरकार अभी इस देश को कृषि-प्रधान ही बनाए रखना चाहती है और इसीलिए यहाँ की औद्योगिक प्रगति अत्यन्त मन्द-गति से हो रही है। यहाँ का टेरिफ़ बोर्ड इस प्रकार फूँक-फूँक कर क़दम रखता है कि उसके द्वारा बहुत ही थोड़े व्यवसायों का भला हो पाता है। शेष व्यवसाय विदेशी प्रतियोगिता से किसी प्रकार लड़-झगड़ कर अपनी रक्षा कर सकें तो ख़ैर, अन्यथा अकाल में ही उनका अन्त हो जाता है। यही कारण है कि इतना समय व्यतीत हो जाने पर भी यह देश उद्योग-धन्धों की दृष्टि से, बाहर माल भेजना तो दूर रहा, स्वावलम्बी भी नहीं हो सका है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके फलस्वरूप हमको प्रतिवर्ष करोड़ों रुपया विदेश भेज देना पड़ता है और देश निरन्तर ग़रीब होता जाता है। इस अवस्था का सुधार तब तक कदापि नहीं हो सकता जब तक सरकार अपने वास्तविक कर्तव्य को न समझे और उसे सच्चे हृदय से पालन करने को तत्पर न हो।

* * *

वर्णव्यवस्था का सुधार

भारतीय समाज में सबसे अधिक विवादग्रस्त और साथ ही सब से अधिक महत्वपूर्ण समस्या वर्ण-व्यवस्था की है। यदि कुछ लोग इसे हिन्दू समाज की सब से बड़ी विशेषता और उसके इतने दीर्घकाल तक जीवित रहने का रहस्य बतलाते हैं तो कुछ उसे देश और समाज के लिए घातक और उनके पतन का प्रधान कारण कहते हैं। वास्तव में इस समस्या का निर्णय करना अत्यन्त कठिन है और कोई भी देश-हितैषी इस सम्बन्ध में उतावलेपन से काम लेना पसन्द नहीं करेगा, क्योंकि यह हिन्दू-समाज के जीवन-मरण का प्रश्न है। थोड़ी सी ग़लती हो जाने से भी समाज का घोर अहित हो सकता है। फिर यह भी स्पष्ट ही है कि ऐसे व्यक्तियों की संख्या अत्यन्त कम है जो इस विषय में सम्मति देने के अधिकारी हों। इस सम्बन्ध में केवल वे ही कुछ कह सकते हैं जिन्होंने प्राचीन और आधुनिक दोनों साहित्यों का पूर्ण रूप से अनुशीलन किया हो और उन पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया हो। सौभाग्य का विषय है, हमारे पास ही बाबू भगवानदास जी के रूप में एक ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो इस दुरूह प्रश्न की उपयुक्त मीमांसा करने के सर्वथा योग्य हैं। हाल ही में आपने एक विद्यालय के विद्यार्थियों के सम्मुख इस विषय पर अत्यन्त महत्वपूर्ण विचार प्रकट किए थे, जिनका सारांश इन शब्दों में दिया जा सकता है:—

"वर्णधर्म का उद्देश्य है समाज को सुव्यवस्थित रूप से सङ्गठित करना। रूस में क्रान्ति होने के पूर्व समाज को सङ्गठित करने का यही एकमात्र उपाय था। प्राचीन भारत की वर्णव्यवस्था और आज की रूस की सङ्गठन-व्यवस्था में बहुत अन्तर है। मनुष्य-स्वभाव मुख्यतः तीन प्रकार का होता है—ज्ञानप्रधान, कर्मप्रधान तथा कामनाप्रधान। इसीलिए मनु ने हिन्दू समाज को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया। सभी लोग समान नहीं हो सकते, क्योंकि सबकी प्रवृत्ति एक जैसी नहीं होती। संसार में पूर्ण समता असम्भव है। पेशे के मुताबिक़ ही समाज का विभाजन होना चाहिए। जब से हिन्दू समाज में जन्मना वर्ण पर ज़ोर दिया जाने लगा तभी से इस समाज का पतन आरम्भ हुआ।

रूस ने समाज के सङ्गठन में बहुतेरी भूलें कीं। पर उसने अपनी भूलों को मानने का साहस भी किया। उसने सबसे भारी भूल की धर्म को तिलाञ्जलि देकर। पर धर्म ऐसा विषय नहीं जो लुप्त हो सके। रूस में फिर धर्म की स्थापना होने लगी है। वहाँ फिर से सम्पत्ति पर व्यक्ति और परिवार का स्वत्व माना जाने लगा है। ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वृत्ति वाले लोग दुनिया भर में हैं और सब देशों में किसी न किसी रूप में वर्णव्यवस्था वर्तमान है। इङ्गलैण्ड में भी यह व्यवस्था है। वहाँ लॉर्ड सभा में ब्राह्मण तथा क्षत्रिय प्रतिनिधि हैं और कॉमन्स सभा में वैश्य तथा शूद्र प्रतिनिधि।

प्राचीन काल में द्विजाति के लोग जब गुरु के यहाँ शिक्षा प्राप्त कर लौटते थे, तब उनके लिए जीविका का क्रम स्थिर होता था। परन्तु आज जन्म से ही लोग जाति अपने साथ लाते हैं। आज भिखमङ्गा भी अपने को ब्राह्मण कहने का साहस करता है। हमारी शिक्षा-प्रणाली में बहुत बड़ा दोष यह है कि रूस और जापान की तरह हमारी शिक्षा के अनुसार हमारा पेशा निश्चित नहीं होता। विद्यालयों को चाहिए कि पेशे की योग्यता की जाँच करके व्यक्ति का वर्ण स्थिर कर दें। आज भारत के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सब का पतन हुआ है। अपने कर्म से तीनों ने भारत को कलङ्कित किया है। यहाँ की सरकार भी क्षत्रिय नहीं, बनियाँ बन बैठी है।"

यदि हम जोश और उतावलेपन को त्याग कर विचार-शीलता से काम लें तो हमको भगवानदास जी की सम्मति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में बहुत कुछ तथ्य दिखलाई देगा। इसमें सन्देह नहीं कि वर्तमान समय में जाति-प्रथा ने अत्यन्त हास्यास्पद रूप ग्रहण कर लिया है, हिन्दू-समाज चार वर्णों के स्थान में लगभग तीन हज़ार जातियों में विभक्त हो गया है, और इन विभेदों ने हिन्दू-समाज को अत्यन्त छिन्न-भिन्न और निर्बल बना दिया है, तो भी सहसा यह नहीं कहा जा सकता कि सब प्रकार के विभेदों को, जिनमें वर्णव्यवस्था भी सम्मिलित है एकदम समाप्त कर देना ही सामाजिक कल्याण का सर्वोत्तम उपाय है। यह भी सम्भव है कि बा० भगवानदास जी द्वारा निर्दिष्ट प्रणाली पर वर्णव्यवस्था का सुधार होने से समाज का अधिक हित हो सके। पर प्रश्न यह है कि यह किस प्रकार सम्भव होगा ?

* * *

क्या ये ही साधु हैं ?

समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि साधुओं के एक बड़े दल ने सीतापुर के चन्दौल गाँव में जाकर जलाने की लकड़ी माँगी और माँग की पूर्ति न होने पर क्रुद्ध होकर कितने ही घरों और खेतों में आग लगा दी। उन्होंने घरों में घुस कर लोगों को पीटा और लूटा भी। खण्डवा में भी एक साधू बाबा दल-बल सहित पुलिस से लड़ बैठे, जिससे दोनों तरफ़ के कितने ही लोगों को चोट लगी। इस तरह की घटनाएँ प्रायः सुनने में आया करती हैं, पर आश्चर्य है कि हिन्दू-समाज के अधिकांश व्यक्ति अब भी किसी साधु वेशधारी को देखते ही श्रद्धा से सर झुका देते हैं और उसकी सेवा-सत्कार करना बड़े पुण्य का कार्य समझते हैं। हमारी समझ में तो पेशेवर साधुओं का अस्तित्व समाज के लिए सब प्रकार से हानिकर ही है और इस प्रणाली का अन्त कर देने में ही जनता का हित है, पर यदि यह न हो सके तो कम से कम इनकी सेवा-सत्कार करने से पूर्व उनके गुण-अवगुणों को तो देख लेना चाहिए। तरह-तरह के दुर्गुणों से भरे और समाज में अशान्ति उत्पन्न करने वाले व्यक्तियों को साधू मानना और उनके प्रति श्रद्धा का भाव रखना सर्वथा विचार-शून्यता का लक्षण है।

* * *

महिला की सतीत्व-रक्षा के लिए बलिदान

घोषपाड़ा (बङ्गाल) का समाचार है कि एक बड़े मेले के अवसर पर कोई पेशावरी मुसलमान एक हिन्दू महिला का सतीत्व अपहरण करने की चेष्टा कर रहा था। इस दृश्य को आर्य-समाज के एक स्वयंसेवक शिवदत्त ने देखा और वे निकट पहुँच कर इसका प्रतिवाद करने लगे। मदान्ध पेशावरी ने छुरा निकाल कर आक्रमण किया, जिसके फल से उसी स्थान पर श्री० शिवदत्त की मृत्यु हो गई। इस सम्बन्ध में सबसे अधिक क्षोभ और लज्जा का विषय यह है कि जिस अवसर पर यह घटना घटी उस समय वहाँ ५० हज़ार से अधिक हिन्दू नामधारी व्यक्ति एकत्रित थे, पर एक शिवदत्त को छोड़ कर किसी का साहस इस जघन्य कृत्य का विरोध करने का न हुआ। इतना ही नहीं, शिवदत्त की सहायता को भी कोई आगे न बढ़ सका। ऐसे लोग यदि आजीवन अपमानित और लाञ्छित होते रहें तो क्या आश्चर्य है !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आज तुम्हारी
लिपस्टिक
तुम्हारी
'नेल पॉलिश'
से मिलनी ही चाहिए

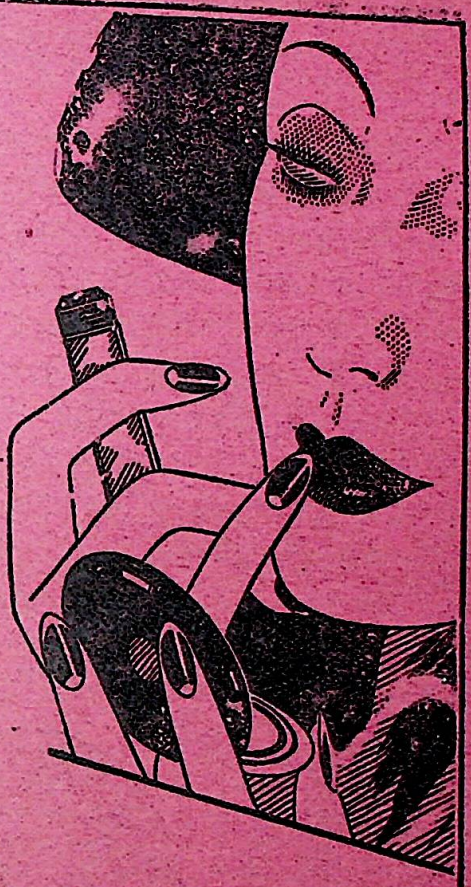

क्यूटेक्स आपकी सेवा में कितनी ही तरह की एक दूसरे से मिलती हुई लिपस्टिक और नेल पॉलिश उपस्थित करता है

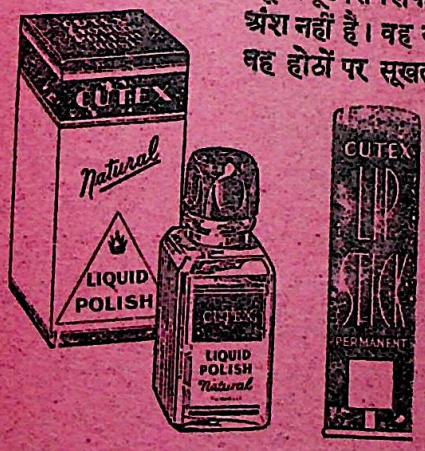

न्यू क्यूटेक्स लिपस्टिक चिकनी है पर उसमें तेल का सा अंश नहीं है। वह स्थायी है, उसका लगाना सहज है और वह होठों पर सूखती नहीं। क्यूटेक्स की रबी लिपस्टिक क्यूटेक्स की रबी नेल पॉलिश से बिलकुल मिलती है। क्यूटेक्स की कार्डिनल लिपस्टिक का रङ्ग क्यूटेक्स की कार्डिनल पॉलिश के सर्वथा समान है। क्यूटेक्स की कोरल लिपस्टिक ठीक क्यूटेक्स कोरल नेल पॉलिश के वर्ण की है। क्यूटेक्स की नेचुरल लिपस्टिक क्यूटेक्स नेचुरल, क्यूटेक्स मॉव और क्यूटेक्स रोज पॉलिशों का पूरी तरह साथ दे सकती है। होठों और नाखूनों के अग्रभाग को एक ही वर्ण का रखने वाले प्रथम लोगों में आप भी सम्मिलित हो जाइए!

क्यूटेक्स

AdNo.1—L

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्ररेखा

हिन्दी में छायावाद की कविताएँ विशेष रूप से पिछले दस-बारह वर्षों में ही लिखी जाने लगीं। इस थोड़े से समय में ही इनका प्रचार जिस प्रकार बढ़ गया है वह आश्चर्य-जनक है। पर इस सम्बन्ध में लोगों को एक खास शिकायत यह है कि छायावादी कविताएँ शीघ्र समझ में नहीं आतीं। पर यह दोष छायावाद का नहीं, वरन् उन अपरिपक्व कवियों का है जो बिना सोचे-समझे ही उसमें हाथ डाल देते हैं। वर्मा जी ने अपनी रचनाओं से छायावाद पर किये जाने वाले इस आक्षेप को सर्वथा निर्मूल सिद्ध कर दिया है। आपकी कविताओं में जहाँ एक ओर शब्दों, भाव तथा कल्पना की अनुपम छटा देखने में आती है, वहाँ दूसरी ओर प्रसाद-गुण भी पूर्ण मात्रा में पाया जाता है।

इन गुणों पर मुग्ध होकर इस वर्ष ओरछा राज्य की तरफ़ से मिलने वाला दो हज़ार रुपये का "देव-पुरस्कार" इसके लेखक को प्रदान किया गया है। यदि आप काव्य-प्रेमी हैं तो इस

लेखक—

श्री० रामकुमार वर्मा, एम० ए०
प्रोफ़ेसर इलाहाबाद यूनीवर्सिटी

अवसर पर न चूकिये और शीघ्र ही इसकी एक प्रति मँगा कर अवलोकन कीजिये। इसमें बहुसंख्यक दर्शनीय तिरंगे चित्र भी हैं। पुस्तक की सुन्दरता देख कर आप मुग्ध हो जायँगे।

शीघ्रता कीजिए, पुस्तक की माँग बहुत है। देर करने से दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य केवल लागत मात्र ३॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केसर की क्यारी

यह नागरी लिपि में उर्दू-कविताओं का सब से बड़ा संग्रह है। इसमें उर्दू के सभी नामी कवियों की सर्वोत्तम रचनाएँ टिप्पणी सहित दी गई हैं। बीसियों चित्र भी हैं, जिनमें से अनेक तो दुर्लभ हैं। इसके द्वारा उर्दू से सर्वथा अनजान व्यक्ति भी उसके साहित्य का रसास्वादन कर सकता है और उसका मर्मज्ञ बन सकता है। पुस्तक की छपाई-सफाई और जिल्दबन्दी दर्शनीय है। पुस्तक बहुत मोटे और बढ़िया 'फ़ेदरवेट' काग़ज़ पर छपी है। इसके संग्रहकर्ता उर्दू-संसार में सुप्रसिद्ध कविवर 'बिस्मिल' जी हैं। छः सौ पृष्ठ के पोथे का दाम ५) रु०; स्थायी ग्रा० से ३॥।)

नयन के प्रति

यह हिन्दी-संसार के सुपरिचित कविवर आनन्दीप्रसाद जी की रचना है। पुस्तक में नयनों को सम्बोधित करके देश की वर्तमान दुर्दशा पर शोकपूर्ण उद्गार प्रकट किये गये हैं। कविता अत्यन्त ओजस्वी तथा करुणापूर्ण है। मूल्य ।=); स्थायी ग्राहकों से ।)॥

गुदगुदी

हसी-मज़ाक़ के चुटकुलों का यह संग्रह इस विषय के मर्मज्ञ श्री० जी० पी० श्रीवास्तव ने किया है। इसलिए स्वभावतः इस पुस्तक का आसन इस विषय की अन्य पुस्तकों से कहीं ऊँचा है। प्रत्येक चुटकुला चुना हुआ है, मजाल नहीं कि आप पढ़ कर बिना खिलखिला कर हँसे रह सकें। मूल्य ॥); स्थायी ग्राहकों से ।=)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीर और व्यायाम

आजकल शारीरिक स्वास्थ्य को स्थिर रखने और उसकी उन्नति करने के सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। पर उनमें प्रायः नित्य-कर्म विधि और औषधियों के सिवा और कुछ नहीं होता। इसलिए इस पुस्तक के विद्वान् लेखक ने प्रत्येक अङ्ग को शक्तिशाली बनाने के लिए अलग-अलग व्यायाम बतलाये हैं। कहना न होगा कि ये व्यायाम अधिकांश में हमारे योगशास्त्र के आसन ही हैं, जिनके द्वारा प्राचीन-काल के भारतवासी बिना औषधि सेवन किये पूर्ण स्वस्थ बने रहते थे और आजकल की अपेक्षा कहीं हट्टे-कट्टे तथा शक्तिशाली होते थे। इन व्यायामों द्वारा प्रत्येक अङ्ग-प्रत्यङ्ग इच्छानुसार मजबूत, सुडौल और निरोग बन सकता है। यह प्रणाली पूर्णतया प्राकृतिक है, और इसमें एक पैसा भी नहीं खर्च करना पड़ता। इसके लेखक श्री० गणेशदत्त शर्मा, 'इन्द्र' हैं, जिनकी 'सन्तान-शास्त्र' पुस्तक हजारों मनुष्यों के जीवन को सुखमय बना चुकी है। पुस्तक में आसनों तथा मानवीय अङ्गों के क़रीब ६० चित्र भी दिये गये हैं, जिनसे हर एक विषय आसानी से समझा जा सकता है। इतनी उत्तम सामग्री तथा अनेक चित्रों से विभूषित पुस्तक का मूल्य २), स्था० ग्रा० से १॥) है। कृपया शीघ्र ही अपनी कॉपी मँगा लीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

कायापलट

यह नवीन युग की कहानियों का एक संग्रह है, जिसमें तीन बड़ी-बड़ी कहानियाँ दी गई हैं। इनमें से एक कहानी 'डॉक्टर जीकल और मिस्टर हाइड' नाम की है, जिसका अङ्गरेजी साहित्य में अत्यन्त उच्च स्थान समझा जाता है और जिसे लोग अत्यन्त चाव से पढ़ते हैं। इसमें एक रहस्यपूर्ण व्यक्ति के कायापलट करने की ऐसी अद्भुत कथा दी गई है, जिसे पढ़ कर आप जासूसी, तिलस्मी और जादू के उपन्यासों को भूल जायँगे। इसके सिवा 'ज्योत्स्ना' तथा 'मिश्र की रानी' दो और कहानियाँ दी गई हैं, जो ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर लिखी गई हैं। प्रत्येक कहानी भाषा और भाव की दृष्टि से अनुपम है, जिससे पाठक विविध भावों की तरङ्ग में गोते खाने लगेंगे। इस पुस्तक के लेखक हिन्दी-पाठकों के सुपरिचित श्री० शीतलासहाय जी हैं। पुस्तक बहुत बढ़िया काग़ज़ पर सुन्दरतापूर्वक छापी गई है। बाह्य आवरण और गेटअप की शोभा देखने ही योग्य है। मूल्य १॥) रु०

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राणनाथ

इसके लेखक हिन्दी पाठकों के सुपरिचित श्री० जी० पी० श्रीवास्तव हैं। आपकी रचना प्रधानतया हास्यरसमयी ही हुआ करती है, पर यह उससे भिन्न है। यह एक नये ढङ्ग का सामाजिक उपन्यास है। इसमें सामाजिक बुराइयों का ऐसे प्रभावशाली ढङ्ग से भण्डाफोड़ किया गया है कि पाठक स्वयमेव ही उनका शत्रु बन जाता है तथा उनको मिटाने की प्रतिज्ञा कर लेता है। पुस्तक कई बार छप कर बिक चुकी है। मूल्य २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

सखाराम

यह उपन्यास क्या है, वृद्ध-विवाह के भीषण परिणामों का जीता-जागता चित्र है। श्रीराम नाम के व्यक्ति का धन के लालच में पड़ कर अपनी कन्या का विवाह एक बुड्ढे से कर देना, युवती का जवानी के जोश में सत्पथ से डिग जाना तथा अपने पति के भाई सखाराम पर मोहित हो जाना, सखाराम की सच्चरित्रता, वृद्ध पति का पश्चात्ताप आदि अनेक रोचक विषय इसमें दिये गये हैं। पुस्तक बड़ी मनोरञ्जक तथा शिक्षाप्रद है। मू० १); स्था० ग्राह० से ।॥)

विवाह-मन्दिर

यह एक अत्यन्त उच्च श्रेणी का उपन्यास है। जो मनुष्य सांसारिक आपत्तियों के आक्रमण से दुःखी और निराश हो गये हैं; उनको इसके द्वारा बहुत कुछ सान्त्वना प्राप्त हो सकती है। इसमें बतलाया गया है कि विपत्ति-काल में मनुष्य को किस प्रकार स्थिर-चित्त, शान्त, सहिष्णु, वैर्यवान तथा धर्मनिष्ठ बन कर रहना चाहिए। बड़ी शिक्षाप्रद पुस्तक है। मूल्य १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ मासिक-पत्र

का ग्राहक बनना क्यों आवश्यक है ?

इसलिए कि—

(१) इसमें प्रतिमास उपयोगी विषयों पर धुरन्धर विद्वानों के लेख प्रकाशित होते हैं।

(२) सुप्रसिद्ध चित्रकारों के भावपूर्ण तथा कलायुक्त रङ्गीन तथा बहु-संख्यक सादे चित्र प्रकाशित होते हैं।

(३) समाज-सुधार का प्रधान समर्थक है। विधवा स्त्रियों और अछूतों के अधिकारों के लिए जन्म-समय से ही ज़ोरदार आन्दोलन करता आया है। किसी भी सामाजिक बुराई का भण्डाफोड़ करने में कभी पीछे क़दम नहीं रखता।

(४) इसकी नीति सदैव निष्पक्ष और निर्भयतापूर्ण रही है।

(५) छपाई-सफ़ाई दर्शनीय होती है। इस दृष्टि से यह हिन्दी पत्रों का मार्ग-प्रदर्शक है और आज भी सब से आगे बढ़ा हुआ है।

(६) सदैव नियत समय पर प्रकाशित होता है।

ऐसे सर्वगुण सम्पन्न पत्र के लिए वर्ष में ६॥) अथवा छः मास में ३॥) रु० ख़र्च करना कौन बड़ी बात है ?

आज ही ग्राहक बनिये !

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

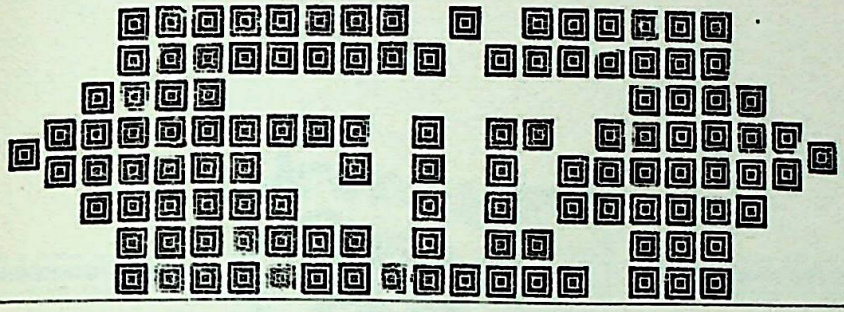

सचित्र सामाजिक मासिक पत्र

वर्ष १४, खण्ड १

नवम्बर सन् १९३५ से अप्रैल सन् १९३६ ई० तक

सम्पादिका—

श्रीमती महादेवी वर्मा, एम० ए०

प्रकाशक—

चाँद प्रेस, लिमिटेड

चन्द्रलोक—इलाहाबाद

वार्षिक चन्दा ६॥)] [छःमाही चन्दा ३॥)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Printed and Published for and on behalf of

THE CHAND PRESS, LIMITED

BY

SATYA BHAKTA

AT

THE FINE ART PRINTING COTTAGE

28, Edmonstone Road—Chandralok

ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१—गद्य

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	अक्षय तीज पर (कहानी)	श्रीमती तारा, नरसिंहगढ़	२२६
२	अङ्गरेज़ी साहित्य का सर्वप्रिय हास्य-रसावतार	श्रीमती राजकुमारी देवी मिश्रा	१११
३	अतृप्त (कहानी)	श्री० लक्ष्मीनाथ श्रीवास्तव	३५२
४	अन्तर्जातीय विवाह	श्रीमती जनककुमारी जुत्शी, एम० ए० ...	१४०
५	अर्ज़ी (कहानी)	श्रीमती शान्तिकुमारी	१४३
६	अमेरिका में मेरा गाँव	श्रीमती सेण्ट निहालसिंह	५८
७	आदर्श महिला	स्वर्गीया शान्तादेवी ज्ञानी	१०४
८	आधुनिक हिन्दी कहानियाँ	श्री० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ...	६३८
९	इटली का रणोन्माद	श्री० रामनारायण 'यादवेन्दु', बी० ए०, एल्-एल्० बी०	३०७
१०	इतिहास और सामाजिक सुधार ...	श्री० गोपाल दामोदर तामसकर, एम० ए० ...	३०२
११	उड़ीसा का महिला-समाज	श्री० जगदीशचन्द्र शास्त्री, काव्यतीर्थ ...	२६६
१२	उनसे (गद्य-काव्य)	श्रीमती योगमाया देवी	२६१
१३	एशिया का नारी-जागरण	श्रीमती रानी फूलकुँवरि साहबा	१२
१४	कन्या के विदा के समय के कुछ गीत ...	श्रीमती सीतादेवी 'प्रभाकर', कुमारी लीला 'भूषण'	६१६
१५	कफ़न (कहानी)	श्री० प्रेमचन्द	६३२
१६	काव्य-चिन्तन	श्री० शान्तिप्रिय द्विवेदी	५८५
१७	क्या समाज की प्रवृत्तियों पर साहित्य की प्रवृत्ति सम्भव है ?	श्रीमती मिथिलेशकुमारी श्रीवास्तव, विशारद ...	४६२
१८	कृष्णाबाई	सौ० कमलाबाई किबे	२८
१९	गद्य-गीत	राजकवि नॉगूची	२९६
२०	ग़रीब की आबरू (कहानी) ...	श्रीमती मङ्गलादेवी, बालूपुरी	९२
२१	ग्राम-सङ्गठन और स्त्रियाँ	श्री० डॉक्टर कैलाशनाथ काटजू	२४५
२२	घट का पट खोल	कुमारी कौशल्या, बी० ए०	१००
२३	चरखावाली जीवन	श्री० घनानन्द पन्त, बी० ए०, (ऑनर्स) ...	५६७

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
२४	चित्र-पट	श्रीमती दिनेशनन्दिनी	४११
२५	चोर (कहानी)	श्रीमती शिवरानी देवी	२०६
२६	जातियाँ किस प्रकार जीवित रहती हैं ? ...	श्री० लाला हरदयाल, एम० ए० ...	२२१
२७	जापान की प्राचीन राजधानी—क्योतो ...	श्रीयुत राहुल सांकृत्यायन	२१६
२८	जापान के औद्योगिक जीवन की एक झाँकी ...	श्री० नरेशप्रसाद बख़्शी	३२४
२९	जुआरी (कहानी)	श्री० राजनाथ राय, बी० एस्-सी० ...	३३७
३०	टॉलस्टॉय के जीवन पर एक दृष्टि ...	श्री० त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०	५४६
३१	डॉक्टर की पत्नी (कहानी)... ...	डॉक्टर धनीराम प्रेम	३१३
३२	तलाक़	श्री० मनमोहिनी ज़ुत्शी	८०
३३	दक्षिण अफ़्रीका में प्रवासी भारतवासियों की दुर्दशा	डॉक्टर रविप्रतापसिंह श्रीनेत	२०२
३४	दर्द की तसवीर (कहानी) ...	श्री० कृष्णवल्लभ प्रसाद नारायणसिंह ...	४३६
३५	दाम्पत्य प्रेम की साधना	श्री० रामनारायण 'यादवेन्दु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०	५३३
३६	दाम्पत्य जीवन सुखी कैसे बने ? ...	श्री० रामनारायण 'यादवेन्दु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०	६३५
३७	दुबे जी की चिट्ठी	श्री० विजयानन्द दुबे ... ३७२,	५३१
३८	दुर्बलता (कहानी)	श्रीमती रत्नकुमारी देवी, काव्यतीर्थ ...	६७७
३९	देवदासी (कहानी)	श्रीमती रत्नकुमारी, बी० ए०	६५३
४०	धर्म-तत्त्व	श्री० नन्दकिशोर तिवारी	४४४
४१	नरगिस (कहानी)	श्रीमती रत्नकुमारी देवी, काव्यतीर्थ ...	१२१
४२	नाभचो बकासुर	मिस एलीनोर राथबोन, एम० ए०, एल्-एल्० डी०, एम० पी०	२३१
४३	नव-पल्लव...	... २७५, ३८५, ४८६, ६००,	७०१
४४	नवीन विधान में स्त्रियों का स्थान ...	श्री० श्रीपतिसहाय, बी० ए०	४२१
४५	नाटक बनाम टॉकी	श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल-एल० बी०	५१०
४६	नारियों का स्थान	श्रीमती लक्ष्मीदेवी विद्याव्रत शास्त्री, धर्म-विशारदा	२१२
४७	नारी-तत्त्व	श्री० चतुरसेन शास्त्री	३२१
४८	पतन (कहानी)	श्रीमती कमलादेवी चौधरी	१०
४९	पं० सालिगराम परसों के मिसिर ...	श्री० रामविलास शर्मा, एम० ए० ...	६६८
५०	परदा	श्रीमती श्यामकुमारी नेहरू	१३१
५१	पिउ की बोली न बोल पपिहरा (कहानी) ...	श्रीमती उषा मित्रा	५२१
५२	प्रेम-तत्त्व	कुमारी सुभद्रा दत्त	३२८
५३	पाश्चात्य शिक्षा का जीवन पर प्रभाव ...	कुमारी विमल, विदुषी	६६१
५४	फ़रिश्ता (कहानी)	श्री० रामस्वरूप	४०१
५५	भारत-हितैषिणी श्रीमती एनी बेसेन्ट ...	... ...	५११
५६	भारत की भक्त महिलाएँ	कुमारी विमल, विदुषी	१२१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
५७	भारतीय महिला-आन्दोलन पर एक दृष्टि ...	श्रीमती मार्गरेट ई० कजिन्स ...	५३
५८	भारतीय नारी-आन्दोलन की कुछ प्रमुख नेत्रियों की विचार-धारा ...	... ...	७२
५९	भारतीय महिलाएँ और नागरिकता का अधिकार	श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर ...	८२
६०	भारतीय स्त्रियाँ और आधुनिक शिक्षा-प्रणाली ...	श्रीमती कौशल्या देवी मोहता, हिन्दी-भूषण	८८
६१	भारतीय नारियों का कर्तव्य	श्रीमती कैलाश श्रीवास्तव, एम० एल० सी०	११७
६२	भारतीय गार्हस्थ्य जीवन में स्त्री का स्थान ...	श्रीमती सीता, हिन्दी-प्रभाकर ...	३२१
६३	भारतीय महिलाओं की आलस्य-परवशता ...	श्रीमती यशवन्ती देवी द्विवेदी ...	३४७
६४	भारतीय चित्रकला के इतिहास पर एक दृष्टि ...	श्री० सतीशचन्द्र काला	६७१
६५	भावना, प्रेम और सौन्दर्य	श्री० गोविन्ददास 'भारतीय' ...	४२५
६६	महिलाओ आगे बढ़ो !	श्रीमती एल० आर० जुत्शी	१६३
६७	'मानस' में सीता	श्री० ऋषभदास जैन, एम० ए०	४५०-५३६
६८	मिथिला के सामाजिक जीवन की एक झाँकी ...	श्री० रामइकबाल सिंह 'राकेश' ...	४५५
६९	मिलन (कहानी)	श्री० विश्वम्भरनाथ शर्मा, कौशिक ...	५२५
७०	मीमी (कहानी)	श्रीमती तारा पाण्डेय	४२
७१	मीरा के गीति-काव्य की विशेषताएँ ...	श्री० गुरुप्रसाद टण्डन, एम० ए०, एल्०-एल्० बी०	२४०
७२	युग-धर्म का नव-निर्माण	श्री० नन्दकिशोर तिवारी	३४३
७३	राष्ट्रीय महासभा और देशी राज्य ...	श्री० शङ्करसहाय सक्सेना, एम० ए० (इकान) एम० ए० (कॉम)	६२०
७४	रूप की रानी (कहानी)	श्री० नन्दकिशोर तिवारी	५७१
७५	ला चन्दा (कहानी)	श्री० चतुरसेन शास्त्री	४१७
७६	लेट फ्लीज़ (एकांकी नाटक) ...	श्री० हरिहरप्रसाद मिश्र, एम० ए०, एल्-एल्० बी०	२४७
७७	वर्तमान स्त्री-शिक्षा-पद्धति का कुपरिणाम ...	श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित ...	७०
७८	विदुषी महिलाओं का कर्तव्य ...	श्रीमती हेमन्तकुमारी चौधरी ...	१३१
७९	विधवा की समाज में स्थिति	श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल, एम० ए०, बी० टी०	३४
८०	विवाह-समस्या	श्रीमती स्नेहलता, बी० ए० ...	४९
८१	विवाह-शिक्षा-समिति	डॉक्टर धनीराम प्रेम	५१४
८२	विश्व-वीणा	... ...	१६७-३७८
८३	वीणा (गद्य काव्य)	श्रीमती दुर्गेशनन्दिनी	६६४
८४	शुभ चिन्ह	श्री० कुँवर राजेन्द्रसिंह जी	४१२
८५	शिक्षितों की बेकारी का प्रश्न	श्री० शङ्करदयालु श्रीवास्तव, एम० ए० ...	५५६
८६	श्रीमती रत्नकुमारी जी काव्यतीर्थ की कविता ...	श्री० मङ्गलप्रसाद विश्वकर्मा, विशारद ...	४६५
८७	श्रीरामकुमार-वर्मा की 'चित्ररेखा' ...	कुमारी चन्द्रकला, बी० ए० ...	९५
८८	सङ्गीत-सुधा	प्रो० एस० डी० आपटे २८५, ३८३, ५००, ५१८, ७१०	
८९	साकेत की ऊर्मिला	श्री० जानकीवल्लभ शास्त्री	६८२
९०	सामाजिक विवाह में स्त्रियों का स्थान ...	श्रीमती उमा नेहरू	३८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
९१—सिक्के की नीति का अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण	...	श्री० ठाकुरप्रसाद सकसेना, बी० कॉम, एल्-एल्० बी० ...	... ३१।
९२—सौन्दर्य और कल्पना ...	...	श्री० शीतलप्रसादसिंह ...	... २१।
९३—स्त्रियों के कर्त्तव्य और पुरुषों के अधिकार	...	श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल, एम० ए०, बी० टी० ...	... १०६
९४—स्त्री-आन्दोलन का अन्तिम लक्ष्य	...	श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ...	... २१
९५—स्त्री जाति तथा सहशिक्षा ...	...	कुमारी उर्मिला शङ्करा, बी० ए०	... १०८
९६—स्वर्गीया चकोरी जी और उनका काव्य	...	श्री० रामचन्द्र 'मधुवन' ...	... ६१८
९७—स्वास्थ्य और सौन्दर्य ...	...	श्रीमती शान्तिकुमारी ...	... १६१
९८—हमारे देश में शिक्षा-प्रचार में कठिनाइयाँ	...	श्री० त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०	... ६३१
९९—हास्य-विनोद ...	...	श्री० ओ३म्प्रकाश शर्मा 'तरुण' विशारद	... २१।
१००—हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना	...	श्री० रामकुमार वर्मा, एम० ए०	... १६।
१०१—हिन्दू-जीवन की समस्या ...	...	श्री० नन्दकिशोर तिवारी ...	... ६१।

❀ ❀ ❀

अपनी बात

(सम्पादकीय)

१—साहित्य और उसमें स्त्रियों का स्थान	...	...	...	... ३
२—हमारी शृङ्खला की कड़ियाँ ...	...	...	...	१९३, २४।
३—हमारी समस्याएँ ...	...	...	...	४०३, ५०६, ६१८

❀ ❀ ❀

गृह-विज्ञान

१—कोष्ठबद्धता ...	...	श्रीयुत पुरुषोत्तमनारायण शर्मा	... ४८।
२—गुलाब का एक कोना ...	...	कुमारी सरला कपूर, बी० ए०	... ४८८
३—घरेलू दवाइयाँ ...	...	श्री० मैकूलाल राजवैद्य ...	... ४०१
४—दाँतों की रक्षा ...	...	श्रीमती शान्तादेवी ज्ञानी ...	... ४८।
५—नेत्र स्वस्थ रखने के उपाय ...	...	डॉक्टर आर० एस० अग्रवाल	... ४७०
६—पाक-शिक्षा ...	...	श्री० रा० प्र० ...	... ४७८
७—बच्चों का सूखा रोग ...	...	श्री० गणेशदत्त शर्मा "इन्द्र"	... ४१८
८—भुजाएँ, कलाई और उनका सौन्दर्य	...	श्री० बुद्धिसागर वर्मा, बी० ए०, एल-टी०	... ४७
९—सलाइयों की सुन्दर लेस ...	...	श्रीमती शकुन्तला देवी गुप्ता	...

❀ ❀ ❀

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बिखरे फूल

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	अनिश्चित अन्त	श्री० कुँवरबहादुर माथुर, बी० एस्-सी० ...	३५८
२	अविवाहित रहने वाली युवतियों के ध्येय ...	श्रीमती ज्ञानकुमारी झँवर	३५६
३	अञ्जलि	श्रीमती सुदक्षिणा वर्मा, एम० ए० ...	२५६
४	आधुनिक सौन्दर्य-प्रेम	कुमारी विद्या भार्गव	१६०
५	एक चित्र	कुमारी लीलावती देवी 'चकोरी' ...	३६३
६	क्या कन्याओं को शिक्षा देना हानिकर है ? ...	श्रीमती यशवन्ती देवी द्विवेदी ...	१४८
७	क्या पढ़-लिख कर लड़कियाँ कुमारी ही रहेंगी ?...	कुमारी अमृतलता, हिन्दी-प्रभाकर ...	१५७
८	कृष्णमूर्ति और उनका सन्देश ...	श्री० रामस्वरूप	२५२
९	ग्राम-कविता	श्री० पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव ...	५९०
१०	दूध में मिलावट	श्री० वृजेन्द्रप्रसाद पालीवाल, एम० एस-सी०, बी० एस्-सी०	२५६
११	धन-संग्रह के कुछ सरल तरीक़े ...	श्री० रमेशप्रसाद, बी० एस्-सी० ...	२५४
१२	धर्म के नाम पर अधर्म	श्री० सत्यदेव कर्नाटकी	३६४
१३	पाश्चात्य शिक्षा और हमारा जीवन ...	श्रीमती होमवती	१५२
१४	प्राचीन समय का महिला-समाज ...	श्रीमती सुन्दरकुमारी	३६१
१५	बस	श्री० भगवतीप्रसाद 'पान्थरी' ...	६६२
१६	बालकों का पहिनाव	श्री० दीनानाथ व्यास, विशारद ...	२६०
१७	भारतीय स्त्रियों का स्वास्थ्य और पुरुषों का प्रमाद	श्रीमती मित्रादेवी दीक्षित	१५४
१८	भारतीय स्त्रियों में अन्ध-विश्वास ...	श्रीमती शान्तिकुमारी, अग्रवाल-भूषण ...	१६१
१९	राजनीति और महिलाएँ	श्रीमती लक्ष्मी बहिन	१५६
२०	रीति-युग पर एक दृष्टि	श्रीमती रामदुलारी मिश्रा	१५८
२१	वन्दिनी कोकिल	श्री० ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, बी० ए० ...	४८०
२२	विवाह-समस्या	श्रीमती चन्द्रवती देवी	४७७
२३	वीराङ्गना कमला	श्री० सीतलासहाय	६८८
२४	शिकार	ठाकुर श्रीनाथसिंह	६६३
२५	समाचार-पत्र का वास्तविक स्वरूप ...	श्री० प्रेमनारायण अग्रवाल	४७५
२६	सहशिक्षा	कुमारी बसन्त साहनी	१५३
२७	सामाजिक उत्थान में स्त्री-शिक्षा की उपयोगिता	श्रीमती कृष्णरानी गर्ग	४७९
२८	सिनेमा के इतिहास पर एक दृष्टि ...	श्री० ब्रजेन्द्रप्रसाद पालीवाल, एम० एस्-सी०	६८६
२९	सोवियट रूस में खेल और तमाशे ...	श्रीयुत उमाशङ्कर	३६०
३०	स्त्रियों में आभूषण का रोग	कुमारी शान्तिदेवी अरोड़ा, विशारदा ...	१५०
३१	हमारे चित्रपट	श्रीमती कमलादेवी शर्मा	५९२
३२	हिन्दू समाज में स्त्रियों का स्थान ...	श्री० रामरत्न अवस्थी	६८६

❀ ❀ ❀

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ

रङ्ग-भूमि

सम्पादकीय

१	अछूत और धर्म-परिवर्तन	... ...	३६७
२	अन्तरिक्ष अन्वेषण	... ...	४००
३	अपनी बात	... ...	१६०
४	अबलाओं की शक्ति	... ...	२६०
५	अबीसीनिया की वीराङ्गनाएँ	...	१८३
६	अबीसीनिया का भविष्य	... ...	२६३
७	इराक़ में भारतवासी	... ...	२६१
८	उद्योग-धन्धे और सरकारी सहायता	...	७१५
९	कॉङ्गरेस और किसान-सङ्गठन	...	२९२
१०	कॉङ्गरेस का अधिवेशन	... ...	७१३
११	क्या ये ही साधु हैं ?	... ...	७१८
१२	गोरी जातियों का अहङ्कार	... ...	६१२
१३	गृह-उद्योगों का पुनरुद्धार	... ...	५०३
१४	जर्मनी का एक अनुकरणीय सुधार	...	६११
१५	जाग्रत महिला-समाज	... ...	२८८
१६	टर्की के चरण-चिन्हों पर फ़ारस	...	२८९
१७	दहेज़ प्रथा की बलि	... ...	६११
१८	देश में उद्योग-धन्धों की वृद्धि	...	३९९
१९	प्रलयकारी महायुद्ध की आशङ्का	...	३९६
२०	बिहार प्रान्तीय महिला-सम्मेलन	...	३९८
२१	बेकारी कमेटी की रिपोर्ट	... ...	५०२
२२	भारत में जापान का कवि-अतिथि	...	२८१
२३	भारत में मोटर का व्यवसाय	...	६११
२४	महिला-साहित्य-गोष्ठि	... ...	५५
२५	महिला-गल्प सम्मेलन	... ...	३११
२६	महिला की सतीत्व-रक्षा के लिए बलिदान		७१८
२७	मिस मेयो की नई करतूत	... ...	२७१
२८	युद्ध का मूल कारण	... ...	६७१
२९	लिपि सुधार का प्रश्न	... ...	६१९
३०	वर्ण-व्यवस्था का सुधार	... ...	७११
३१	वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की दो बड़ी त्रुटियाँ		७११
३२	श्रीमती कमला नेहरू का स्वास्थ्य	...	१८९
३३	श्री० देवधर का स्वर्गवास	... ...	२६९
३४	सम्राट् का स्वर्गवास	... ...	२८१
३५	सरकारी पद और जन-सेवा	... ...	२८१
३६	साम्यवाद और राष्ट्रीयता	... ...	२८१
३७	साहित्यिक अशिष्टता	... ...	७१९
३८	सीमा-प्रान्त में हिन्दी और गुरुमुखी का बहिष्कार	... ...	२१९
३९	हमारी सन्तानें	... ...	१८१
४०	हिन्दी की दो दिवंगत विभूतियाँ	...	३९९
४१	हिन्दी महिला गल्प-सम्मेलन	...	३९९

❀ ❀ ❀

२—पद्य

१	अज्ञात	... ...	कुमारी शान्ति भार्गव, हिन्दी-प्रभाकर ...
२	अन्तर्वेदना	... ...	श्रीमती विद्यावती 'सुधा' ...
३	अन्वेषण	... ...	श्री० विनयकुमार ... ...
४	अपनी झाँकी	....	श्री० 'सन्तोषी' ... ...
५	अपने अपराधी से	... ...	श्री० जनार्दनप्रसाद झा, 'द्विज', एम० ए० ...
६	अपराध	... ...	श्री० भवानीप्रसाद मिश्र ... ...
७	आकांक्षा	... ...	श्रीमती स्वर्णकीर्ति देवी ... ...
८	आत्म-सरित	... ...	श्रीमती विद्यावती 'कोकिल' ...
९	आँसू	... ...	श्रीमती दुलारी देवी माथुर ... ...
१०	आँसू	... ...	श्रीमती सरस्वती देवी पाण्डेय ...
११	उदधि	... ...	श्री० मदनमोहन मिहिर ...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१२	उषा	श्रीमती कमलेश्वरी देवी	९१
१३	उषा	श्रीमती निरुपमा देवी	५४५
१४	कली से	श्रीमती तोरणदेवी शुक्ल 'लली'	११
१५	क्रीड़ा-वन	श्री० जगन्नाथ मिश्र गौड़ "कमल" विद्यालंकार	३४२
१६	केसर की क्यारी	कविवर 'बिस्मिल' इलाहाबादी	३७६, ४८७
१७	कोकिल	श्री० ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, बी० ए०	३०६
१८	गीत	कुमारी शान्तिदेवी भार्गव, हिन्दी-प्रभाकर	१४२
१९	गीत	श्रीमती महादेवी वर्मा, एम० ए०	१६४
२०	गीत	श्री० रामविलास शर्मा	२५१
२१	गीत	श्रीमती विद्यावती 'कोकिल'	३२०
२२	गीत	श्री० 'प्रभात'	४०२
२३	गीत	श्रीमती विद्यावती 'कोकिल'	४४९
२४	गीत	श्री० जयशंकर 'प्रसाद'	५०७
२५	गीत	श्री० 'निर्वासित'	५०८
२६	गीत	श्री० 'प्रभात'	५२४
२७	गीत	श्री० गोविन्ददास 'भारतीय'	५६६
२८	गीत	श्रीमती महादेवी वर्मा, एम० ए०	५८४
२९	गीत	श्री० "निराला"	६१३
३०	गीत	श्री० 'प्रभात'	६१४
३१	गीत	श्री० विनयकुमार	६८५
३२	गीत	श्रीमती विद्यावती 'कोकिल'	७०१
३३	चन्द्र-विलास	श्रीमती विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मञ्जु'	१३५
३४	छाया	राजकवि नॉगूची	२९५
३५	जननी का जग	श्रीमती सत्यवती, हिन्दी-प्रभाकर	३७
३६	जीवन-गीत	श्रीमती तारादेवी पाण्डेय	२७
३७	देवाराधना	श्रीमती लक्ष्मीदेवी पाण्डेय 'भूषण'	५३२
३८	नागी-गान	श्रीमती शकुन्तलादेवी खरे	२७
३९	नाविक से	श्रीमती स्नेहलता सिनहा	१३९
४०	नैराश्य	कुमारी वागीशा देवी 'प्राज्ञ'	२८७
४१	पथ की भिखारिन	कुमारी सरस्वती देवी काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य	५७
४२	परित्यक्ता	कुमारी प्रेमकुमारी	१६२
४३	पहेली	श्रीमती होमवती	३३
४४	पुष्प के प्रति	कुमारी रूपकुमारी दर	६९
४५	पूजा	श्री० 'प्रभात'	१९१
४६	प्रथम-किरण	श्रीमती तोरनदेवी शुक्ल 'लली'	४०१
४७	प्रतिरोध	स्वर्गीया 'चकोरी'	१
४८	प्रकृति-सौन्दर्य	श्रीमती किशोरीदेवी चतुर्वेदी	४८
४९	प्रेम के अधिकारी	श्रीमती महाराजकुमारी दादू साहिबा, रीवाँ	१०७
५०	प्रेम-योगिनी	कुमारी प्रेमकुमारी 'प्रेम'	३१२

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
५१	प्यार	श्रीमती सरोजिनी मिश्र ...	११६
५२	भ्रान्ति	श्रीमती विष्णुकुमारी श्रीवास्तव	६६५
५३	मेरी नैया	कुमारी लीलावती देवी 'चकोरी'	१०७
५४	रजनी	कुमारी वागीशा देवी 'प्राज्ञ' ...	११०
५५	रामकहानी	श्री० पद्मकान्त मालवीय ...	२१५
५६	लालसा	श्री० 'सारथी'	२३३
५७	शब्द के पार ...	श्री० जगन्नाथ मिश्र गौड़ 'कमल' विद्यालंकार ...	६६२
५८	सन्देह	कुमारी राधिका चौहान ...	२८७
५९	सन्ध्या	श्री० वीरेन्द्रकुमार ...	६१०
६०	सरिते	श्री० 'नीरव'	६५२
६१	सुषमा	श्री० 'बच्चन'	२१६
६२	स्मृति	श्रीमती स्वरूपरानी गौड़, विदुषी ...	८७
६३	स्मृति-कण	श्री० भगवतीचरण वर्मा ...	४४१
६४	हृदयोद्गार... ...	श्रीमती सुन्दरकुमारी ...	१०२

❀ ❀ ❀

३—चित्र-सूची

१—तिरङ्गे

१—अभिज्ञान
२—आरती
३—क़ुरान
४—जीवन-दीप
५—बुद्ध और अम्बपाली
६—मोहन-वेणु
७—वंशी-स्वर
८—वात्सल्य
९—वासन्ती अभिसार

२—आर्ट पेपर पर रङ्गीन

१—चाँदनी
२—जीवन-सरिता
३—नव-विवाहिता
४—निराश्रित
५—प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०
६—मधु-प्रभात
७—ये तृण
८—विछोह
९—समर्पण
१०—सरिता-तट
११—स्नेह भरा उर
१२—स्मृति
१३—स्मृति-निधि

३—सादे

१—१२८—भिन्न-भिन्न स्त्री-पुरुषों के चित्र, ग्रुप तथा दृश्य आदि सम्बन्धी १२८ चित्र
१—३५—भिन्न भिन्न विषयों के कार्टून ३५ चित्र

———

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'चाँद' के प्रेमी तथा हमारी पुस्तक के पाठक नोट कर लें

क्या ?

अब तो अन्धे भी देखने लगे--कैसे ?

(१) श्री० बन्सीराम जी सुनार पो० झरिया (मानभूम) से ता० २८-१-३६ में लिखते हैं—"आपकी पुस्तक हम जैसे ग़रीबों के लिए यथार्थ में अद्भुत-भण्डार है। पृष्ठ ३५ पर दिए हुए निपट अन्धों के लिए अद्भुत प्रयोग नं० २ तैयार करके पचीसों आदमियों को दिया, असाधारण लाभ हुए, जो मनुष्य कुछ नहीं देख सकते थे अब तो पुस्तक पढ़ने लगे हैं। मुझे स्वयं भी कम दिखाई देता था, अब रात में भी पुस्तक आनन्द से पढ़ लेता हूँ। आपको हृदय से धन्यवाद निकलता है।"

(२) श्री० पूज्य पं० चन्द्रशेखर जी शर्मा, वैद्यराज, भूतपूर्व प्रिन्सिपल आयुर्वेद कॉलेज, ऋषिकुल (हरद्वार), प्रोफ़ेसर आयुर्वेद कॉलेज हिन्दू यूनिवर्सिटी (बनारस) वर्तमान प्रवर्तक चन्द्रशेखर फ़ार्मेसी (बीकानेर) ता० १३-१-३६ में लिखते हैं—"आपकी पुस्तक आरम्भ से अन्त तक ध्यानपूर्वक देखी, यथार्थ में आपने अद्भुत प्रयोग हृदय खोलकर रख दिए हैं, आजकल ऐसी पुस्तक की बहुत ही आवश्यकता थी, आपने इसको प्रकाशित करके जनता की भलाई का सराहनीय कार्य किया है।"

(३) श्री० सेठ सम्पतराज जी धारीवाल किशनगढ़ (राजपूताना) से ता० २८-१२-३५ में लिखते हैं—"पुस्तक यथार्थ में 'करामातों का ख़ज़ाना' ही है, यह सब अमूल्य अद्भुत प्रयोग यदि किसी दूसरे के पास होते तो प्रकट करने की जगह अपने साथ ही मरघट में ले जाता। लेखक महोदय को धन्य है, जो जनता की भलाई के लिए खोज कर रख दिये हैं।"

पाठकगण, इसी तरह के सैकड़ों प्रशंसा-पत्र इस थोड़े काल में ही प्राप्त हो चुके हैं। सब का यही कहना है कि यह पुस्तक नहीं, बल्कि नामर्दों को मर्द, बाँझों को सन्तान, रोगियों को निरोग और सर्प-विष के कारण प्रतिवर्ष हज़ारों प्राणियों को काल के मुख से बचाने वाली भारत के पूज्य महात्माओं की अद्भुत शक्ति का भण्डार है। एक सर्प विष वाले प्रयोग से ही प्रायः १० हज़ार प्राणियों को काल के गाल से बचाया जा चुका है तथा बाँझ वाले प्रयोगों से सैकड़ों सन्तानहीन घर आज सन्तान की ज्योति से जगमगा रहे हैं। इन सब अद्भुत प्रयोगों के अलावा कामरूप देश (आसाम), बङ्गाल और नैपाल की तराई में जादू और वशीकरण की अद्भुत लीलाएँ जो स्वयं लेखक के सामने घटीं और जिनसे आपको आश्चर्य ही नहीं, बल्कि एक अद्भुत शक्ति का ख़ज़ाना हाथ लगेगा और इस विद्या की सचाई शीशे की तरह प्रकट हो जावेगी। इस पर भी हमारी यह गारन्टी है, यदि किसी तरह से पुस्तक आपको नापसन्द हो तो ३ दिन देख कर वापिस कर सकते हैं। हम तुरन्त मूल्य लौटा देंगे, इससे बढ़कर और क्या सचाई होगी ? मूल्य नागरी ५) रु०, उर्दू ४) रु०, सजिल्द के ।।।) अधिक और डाक-महसूल ।।।) अलग। पृष्ठ-संख्या ४०० है। मूल्य मनीऑर्डर से पेशगी भेजने पर डाक-महसूल माफ़ होता है।

Please note and always remember the name of this wonderful book and try to get at once, otherwise you will have to wait for the 2nd edition. Postage free up to the Congress Session. Write at once.

आसामी बङ्गाली तिलस्मी राज या ख़ज़ाना-करामात

पता—मैनेजर, इण्डियन स्टोर्स, (१०) जेनरल मर्चेन्ट ऐण्ड बैंकर्स, शिलाँग (आसाम)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निम्न-लिखित ग्राहक-नम्बर के ग्राहकों के रुपये गत फ़रवरी तथा मार्च १९३६ मास में प्राप्त हुए हैं। ग्राहकों को चाहिए कि वे अपने नम्बर स्मरण रक्खें और पत्र-व्यवहार के समय अवश्य लिखा करें। बिना ग्राहक नम्बर के पत्रों की उचित कार्यवाही करना किसी दशा में सम्भव नहीं है :—

ग्राहक नं०	नाम	प्राप्त रक़म
३७१७१	श्रीयुत कमलाप्रसाद पाँडे, पो० भैरवगञ्ज जिला चम्पारन	६॥)
३७१७२	श्रीयुत रामराजसिंह, आरा शाहाबाद	३॥)
३७१७३	श्रीमती प्रेमदुलारी, मुलतान शहर ...	६)
३७१७४	श्रीयुत रामशरण शर्मा, जमालपूर ...	६॥)
३७९७५	श्रीयुत हरदयाल सरदना, भावलपुर स्टेट	३॥)
३७१७६	श्रीयुत बी० एस० मल सी० ई०, भावलपुर	,,
३७१७७	सरदार पं० रामरतन बी० ए०, पटियाला स्टेट	६॥)
३७१७८	बा० प्रेमसिंह, श्रीनगर काश्मीर ...	,,
३७१७९	बा० नन्दलाल विन्द्रा, गुजरानवाला	,,
३७९८०	श्रीयुत के० डी० गोयनका, पूना मिल्स लि मि० ...	६॥)
३७९८१	डा० जे० एन० मण्डल, ग्राम माधीपुरा	,,
३७१८२	श्रीयुत जमुनाप्रसाद भक्त, पो० कटिहार	,,
३७१८३	बा० रामप्रसादसिंह, पोस्ट झंझरपुर, दरभङ्गा	,,
३७१८४	श्रीयुत हेड मास्टर गञ्ज दुँदवारा ...	,,
३७१८५	मिस राज इन्द्रा दुलारी, पो० क्याउक्से	३॥)
३७१८६	बा० शत्रुजीतसिंह, हर्दी स्टेट ...	६॥)
३७१८७	कुँवरानी दयासिंह (कोहाट) ...	,,
३७१८८	श्रीमती कुँवरानी धनवन्तसिंह, रावलपिन्डी	,,
३७१८९	बी० एन० मित्रा, पो० अनीतमल ...	५)

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त रक़म
३७९९१	बा० रामदेव प्रसाद शर्मा, पो० खिजर सराय... ...	६॥)
३७१९२	कुमारी सिकेश्वरी देवी, सुलतानपुर	६॥)
३७९९३	बा० जगदीशप्रसाद निगम, लखनऊ	३॥)
३७१९४	बा० हरिहरप्रसाद सिंह, गया ...	६॥)
३७१९५	श्रीयुत आर० सी० हेडमास्टर, आरा ज़ि० स्कूल	६॥)
३७१९५ ए०	बा० शम्भूसिंह, देवरा इलाहाबाद	११)
३७१९६	श्रीमती विद्यावती, अम्बाला सिटी...	६॥)
३७१९७	श्रीयुत मानसिंह, उज्जैन ...	६॥)
३७१९८	श्रीयुत मोहनलाल पाँडे, पो० सुन्दरपुर	६॥)
३७९९९	श्रीयुत सेक्रेटरी श्री सुराना लायब्रेरी	२॥)
३८०००	श्रीमान् राजा त्रिम्बकराज बहादुर, हैदराबाद	६॥)
३८००१	श्रीयुत लालचन्द, बनारस ...	६॥)
३८००२	बा० हरवंशसिंह, इनछौली ...	,,
३८००३	पं० रघुबरदयाल, मुरादाबाद ...	६॥)
३८००४	सेठ श्रीकृष्ण दास मुरारिया, कानपुर	२॥)
३८००५	श्रीमती सरजू देवी, पो० अत्तार ...	६॥)
३८००६	मिस्टर शिवजी लाल संचूरा ...	,,
३८००७	ठाकुर रामअधार पो० मरहौरा ...	,,
३८००८	लाला किशुनदास शिमला ...	,,
३८००९	श्रीमती कैलाशकुमारी कपूरथला ...	६)
३८०१०	श्रीयुत ईश्वरचन्द्र जैन सनावद ...	६॥)
३८०११	श्रीयुत् शारदाप्रसाद, जि० लखीमपुर	,,
३८०१२	श्रीयुत हेडमास्टर, चाँदबाग देहरादून	,,
३८०१३	श्रीयुत् सिक्रेटरी, युवक पुस्तकालय, भागलपुर ...	२॥)
३८०१४	मिस्टर राधेगोपाल माथुर, नैनीताल	२॥)
३८०१५	कुमारी डे० शारदा पो० कौप ...	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त रक़म
३८०१६	श्रीयुत सेक्रेटरी कामन रूम, चाईबासा ज़िला स्कूल	३॥)
३८०१८	श्रीयुत सेक्रेटरी पब्लिक लायब्रेरी बनारस	५)
३८०१९	बाबू शिवमङ्गल सिनहा, पो० सुरजपुरा	६॥)
३८०२०	बा० सिद्धेश्वर प्रसाद, पटना ...	,,
३८०२१	बा० चन्द्रनारायण सिनहा, भागलपुर	,,
३८०२२	श्रीमती विन्देश्वरी देवी, गोंडा ...	,,
३८०२३	श्रीमती टी० एस० देवी जि० शाहाबाद	,,
३८०२५	श्रीमती कमलावती सिनहा, पो० बलरामपुर	११)
३८०२६	श्रीयुत सेक्रेटरी रेयाम इसपोर्टिङ्ग क्लब, दरभङ्गा	३॥)
३८०२७	श्रीयुत् सुपरिन्टेण्डेन्ट, पुलिस ट्रेनिङ्ग स्कूल, नागपुर	६॥)
३८०२८	पं० जयप्रकाश, जि० देहरादून ...	,,
३८०२९	एस० एम० कमलादेवी, राँची ...	२)
३८०३०	महाराज नाथूराम, दादू (सिंध) ...	६॥)
३८०३१	मेसर्स केवलदास जयचन्द, अलेप्पो	,,
३८०३२	श्रीयुत् प्राइवेट सिक्रेटरी महाराज देवास सीनियर, पाँडेचेरी ...	,,
३८०३२-ए०	श्रीयुत ठाकुर अभयनारायण अरसिया बाज़ार	,,
३८०३३	श्रीमती सौभाग्यवती शङ्कर नजीराबाद	,,
३८०३४	श्रीयुत् गोवरधनप्रसाद, बुलढाना ...	,,
३८०३४-ए०	मेसर्स नारायन साव, मङ्गलसाव तिनकी बाज़ार, नागपुर ...	,,
३८०३५	बा० आनन्दीप्रसाद, शहर निमच ...	,,
३८०३५-ए०	श्रीयुत् मदन राजसिंह, जोधपुर ...	,,
३८०३६	बा० रामप्रसाद रघुनन्दन प्रसाद, पटना	३॥)
३८०३७	बा० रामश्रौतार शर्मा, सहारनपुर ...	६॥)
३८०३८	श्रीयुत लादूलाल नादरजी, ज़िला धारगाँव	,,
३८०३९	श्रीयुत कृष्णा, देहली	,,
३८०४०	श्रीयुत ऑनरेरी सेक्रेटरी, बी० एन० रेलवे इण्डियन इन्स्टीट्यूट छिन्दवाड़ा	६॥)
३८०४१	पं० रणजीतसिंह, करौंची ...	६॥)
३८०४३	श्रीयुत सेक्रेटरी उमाशङ्कर, हाईस्कूल महाराज गञ्ज	६॥)
३८०४४	श्रीयुत कुशहरप्रसाद, उन्नाव ...	६)
३८०४५	श्रीयुत सेक्रेटरी, कमला वाचनालय, ग्वालियर	६॥)
३८०४६	श्रीयुत मैनेजर, सरस्वती पुस्तकालय, हिलसा	३॥)
३८०४७	श्रीयुत माधोप्रसाद, पटना ...	३॥)
३८०४८	श्रीयुत सेक्रेटरी, बिहार शरीफ़ ...	,,
३८०४९	मिस्टर गङ्गाप्रसाद पाण्डे, इलाहाबाद	६॥)
३८०५०	श्रीयुत सेक्रेटरी, इण्डियन इन्स्टीट्यूट बड़का ख़ाना	,,
३८०५१	श्रीयुत गुलाबधर बड़गइयाँ, बिलासपुर	,,
३८०५२	श्री० श्रीराम शर्मा, बुलन्दशहर ...	,,
३८०५३	बा० ईश्वरशरण, गाज़ीपुर ...	,,
३८०५४	बा० चेतनलाल जैन, भटिण्डा ...	,,
३८०५५	श्रीमती सुशीला देवी, न्यू देहली ...	,,
३८०५६	श्रीयुत मानिकचन्द, ईश्वर गञ्ज ...	३॥)
३८०५७	श्रीयुत रमाचल पाँडे, फ़ैज़ाबाद ...	६॥)
३८०५८	श्रीयुत प्रोप्राइटर, श्रावास्तवा मेडिकल-हाल, बाराबङ्की ...	३॥)
३८०५९	श्रीयुत् आनरेरी सेक्रेटरी, पब्लिक लायब्रेरी, अलवर	५॥)
३८०६०	श्रीयुत् मैनेजर जागीरमछन्द जि० भिण्ड	६॥)
३८०६१	श्रीयुत रामशरण दुबे, बी० ए०, जि० पूर्णिया	११)
३८०६२	श्रीयुत जी० आर० गोयल, जि० जलंधर	६॥)
३८०६३	बा० झूलनप्रसाद सिनहा, पो० पटुरही ...	,,
३८०६४	श्रीयुत हरनारायण रङ्गून, ...	,,
३८०६५	श्रीयुत शिवचरण, खैरागढ़ ...	६॥)
३८०६६	मिस्टर बी० डी० भाटिया गोरखपुर	,,
३८०६७	श्रीमती सुशीलादेवी, पटना ...	११)
३८०६८	श्रीमती सरला, पी० दत्त लाहौर ...	९॥)
३८०६९	बा० पुरुषोत्तमस्वरूप, सब-जज, गुजरानवाला	३॥)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्राहक नं०	नाम	प्राप्त रक़म
३८०७०	पं० रुद्रमणि त्रिपाठी, दूध की दुकान, बम्बई नं० २	६॥)
३८०७१	श्रीयुत् चिरौंजीलाल खेतान गूजरखेत, बम्बई।	,,
३८०७२	श्रीयुत प्रेमराजजी वैद्य, लाडनूँ ...	३॥)
३८०७३	श्रीयुत् पालाराम, ठीकेदार जि० सियालकोट	३॥)
३८०७४	बा० श्रीकृष्ण, कौन्सिल चेम्बर क्लब लखनऊ	६॥)
३८०७५	श्रीयुत् एस० आर० कपिला बी० ए०, एल-एल० बी० एडवोकेट; नैरोबी केनिया कालोनी	३॥।=)
३८०७६	श्रीयुत् सेक्रेटरी आर्य स्त्री समाज, नैरोबी (केनिया) ...	८॥)

निम्न-लिखित पुराने ग्राहक-नम्बर के ग्राहकों के रुपये फ़रवरी तथा मार्च १९३६ मास में प्राप्त हुए हैं :—

ग्रा०-नं०	प्राप्त रक़म	ग्रा०-नं०	प्राप्त रक़म
२००५३	६॥)	२४३९५	६॥)
२७७६४	,,	२४३०९	,,
३७१२१	,,	२४८९०	,,
१६९६८	,,	२४७९२	,,
२२१०३	,,	१६७२०	,,
२२४०९	,,	५०४९	५)
२४७०२	५॥)	३६३४८	४॥)
३६५३०	११)	२४६४३	६॥)
३६९२७	३॥)	१८३६४	११)
८१८१	३।=)	२६८८३	,,
२२१३०	११)	२२५९७	११)
२९७६१	११)	२२४२०	,,
७८२	,,	२७३३	,,
७८८१	,,	१२१४१	,,
३०१११	,,	२४५६५	६॥)
३६५४४	५)	३५५४७	३॥)
३६४९५	५॥)	३७१४	११)
१७८४	११)	१७७५	११)
१८५९३	,,	३०४०४	,,
३६९४९	३।)	३६९४९	३।)
३६९४९	३॥)	३६९४९	३॥

आ०-नं०	प्राप्त रक़म	आ०-नं०	प्राप्त रक़म	आ०-नं०	प्राप्त रक़म	आ०-नं०	प्राप्त रक़म
[illegible]	११)	३४५६६	११)	३६६-२	११)	२७७०४	११)
[illegible]	,,	११३४	,,	२१४५५	,,	२९१६९	,,
[illegible]	,,	१५५५	,,	३६६०३	,,	३६४५६	,,
[illegible]	,,	१७३७	,,	२६१६३	,,	२१६४०	,,
[illegible]	,,	२४६३	,,	३३६५०	,,	३४१२२	,,
[illegible]	,,	२७१४	,,	३४८७५	,,	३४१८७	,,
[illegible]	,,	५४३	,,	३४७४५	,,	३५२७२	,,
[illegible]	,,	३६८७	,,	३३८४३	,,	३३४७७	,,
[illegible]	,,	५०२१	,,	३३०७७	,,	१७००३	,,
[illegible]	,,	३१०४५	,,	५७८०	,,	५०३३	,,
[illegible]	,,	३०२८२	,,	५८५३	,,	६४२१	,,
[illegible]	,,	३२४६४	,,	७८१८	,,	७६३७	,,
[illegible]	,,	३४४२७	,,	६४६३	,,	६६६२	,,
[illegible]	,,	३४५६८	,,	६७१५	,,	९८१०	,,
[illegible]	,,	२०५२६	,,	१०१३४	,,	११०७२	,,
[illegible]	,,	१८४४६	,,	१२३१८	,,	१३१७१	,,
[illegible]	,,	१८८५३	,,	१३१६८	,,	१४२८७	,,
[illegible]	,,	१०७८१	,,	१४६३७	,,	१५६२७	,,
[illegible]	,,	२१६४८	,,	१७०१६	,,	१७४४	,,
[illegible]	,,	२७६०१	,,	१७०८२	,,	१४५२०	,,
[illegible]	,,	२८२५४	,,	१७६५०	,,	१७७१४	,,
[illegible]	,,	१६६७१	,,	१७८२७	,,	१७८६८	,,
[illegible]	,,	२८१६४	,,	१८०८४	,,	२३८२८	,,
[illegible]	,,	२६२९४	,,	२४४६८	,,	२५१९६	,,
[illegible]	,,	२०६००	,,	२५२०४	,,	२५५००	,,
[illegible]	,,	१६७८१	,,	२५५६२	,,	२५६१८	,,
[illegible]	,,	१८८५३	,,	२५६५३	,,	२५७०५	,,
[illegible]	,,	१८४४६	,,	२५७३६	,,	२५४५८	,,
[illegible]	,,	२६५२६	,,	२६४०४	,,	३०१२३	,,
[illegible]	,,	३६६६५	,,	३०४७५	,,	३२६४२	,,
[illegible]	,,	३६६४२	,,	३२५३७	,,	३२५४१	,,
[illegible]	,,	३६५२७	,,	३१८२	,,	३१६५८	,,
[illegible]	,,	६६५३२	,,	३४४२८	,,	६५१७	,,
[illegible]	,,	३६५७१	,,	४१५७	,,	९८७	,,
[illegible]	,,	२८१२३	,,	१७२६	,,	१७४८	,,
[illegible]	,,	३६६७३	,,	१८५७	,,	१६८०	,,
[illegible]	,,	३६६३६	,,	२५६६	,,	३७०६	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आ०-नं०	प्राप्त रक़म	आ०-नं०	प्राप्त रक़म	आ०-नं०	प्राप्त रक़म	आ० नं०	प्राप्त रक़म
३६५६	११)	४०७६	११)	४६०३	११)	१४८८	११)
४४२१	,,	६३७२	,,	१२६६	,,	१५७६	,,
६५७०	,,	७६३४	,,	१२६६२	,,	३६२४८	,,
६७०६	,,	११४२०	,,	३४४६६	,,	३७०२७	,,
१४६१०	,,	१५०१०	,,	३७०१५	,,	३६६१८	,,
१६७७८	,,	१६६७५	,,	३६७४२	,,	३६७०२	,,
१७१६१	,,	१७५६७	,,	३५६६६	,,	३५६५३	,,
१७६४६	,,	२३८४३	,,	३५४६१	,,	३५४४०	,,
२५६३७	,,	२६२३०	,,	३५०६७-ए	,,	३४९८०	,,
३३४७५	,,	३५६०२	,,	३४६१३	,,	३४६४७	,,
१३१८१	,,	३१३८०	,,	३३३१५	,,	३४७३६	,,
२६६७३	,,	३६७६८	,,	३४६५५	,,	३४८५१	,,
३५८८८	,,	३६०३४	,,	३४७५५	,,	३४६३२	,,
३५६४२	,,	२५५१२	,,	३४५९४	,,	३३१८६	,,
२५६३३	,,	२५०६६	,,	३४४२५	,,	३२१६०	,,
१५२०५	,,	१५०६२	,,	३१३३६	,,	३१२७५	,,
१२०५१	,,	३५३५६	,,	३१०५६	,,	३००६५	,,
११६०४	,,	३४७५१	,,	२५६८७	,,	२५५२६	,,
२४६६६	,,	१०६६६	,,	२४७३०	,,	२४१६१	,,
३४८०६	,,	३४०३६	,,	२३६६४	,,	१७६८२	,,
३४५४५	,,	३३१३३	,,	२३६६३	,,	१७८४३	,,
३६७२६	,,	३६२३२	,,	१६६९८	,,	१५२४४	,,
३५६७२	,,	३५९६८	,,	१३२५०	,,	१३०२६	,,
३६१४१	,,	३५८००	,,	११४८४	,,	१००:७	,,
३४५५८	,,	३२६०८	,,	१०३८६	,,	११२८३	,,
३६३६४	,,	२४८५१	,,	११२३८	,,	१११०६	,,
२२७८१	,,	१७१३८	,,	१००६६	,,	६८६६	,,
१५३३९	,,	१४१३४	,,	८५६७	,,	६६१८	,,
६३८८	,,	७६१२	,,	५८३५	,,	५५५७	,,
४२९७	,,	३५०४६	,,	४६५६	,,	४१५२	,,
३५२३७	,,	३४८६८	,,	३४३६	,,	२८६४	,,
३४८४६	,,	३३६६२	,,	१६५६	,,	१६०१	,,
३६२२८	,,	८२६४	,,	८३२	,,	७१५	,,
३०२५६	,,	२३२४७	,,	५२१	,,	१८५५७	,,
११२२५	,,	३१७०	,,	१६६५७	,,	१६८७१	,,
२६२०	,,	२६७३	,,	१६८८९	,,	२०३१८	,,
३१२०	,,	३८६३	,,	२१४४३	,,	२७४६७	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रा०-नं०	प्राप्त रक़म	प्रा०-नं०	प्राप्त रक़म	प्रा०-नं०	प्राप्त रक़म	प्रा०-नं०	प्राप्त रक़म
२७८१८	११)	२८१९४	११)	३३५४४	११)	३५०८८	११)
२८४१६	,,	२८६१२	,,	३६७१४	,,	३६८००	,,
२१४१६	,,	३२८४१	,,	२५८७३	,,	३५७२६	,,
३७०५५	,,	३६४०५	,,	३३०२६	,,	१८३४	,,
३७१०६	,,	३६२३२	,,	३५८६७	,,	३५१५३	,,
३७११६	,,	३४३१३	,,	९३१६	,,	१४१७२	,,
३५२७५	,,	३७३३६	,,	१६२६३	,,	१६८५४	,,
३१३५६	,,	३७१६५	,,	२५७४५	,,	२५१७	,,
३७४७८	,,	३७७५१	,,	२१४१६	,,	३४६०७	,,
२८४२४	,,	३५६३१	,,	३०७१२	,,	३०८२५	,,
३५१०५	,,	५२३	,,	३२५७८	,,	२१६४४	,,
१३००	,,	१८२२	,,	३०१२०	,,	३०१६५	,,
२८२६	,,	२८८६	,,	३७७०६	,,	३५८४७	,,
२६४६	,,	२३५००	,,	३७४६३	,,	२६८७८	,,
३१०७	,,	३६००	,,	२०११३	,,	२७७८२	,,
३६२७२	,,	७५४१	,,	२७१८६	,,	२८१५६	,,
३६०५८	,,	३६८२६	,,	२८७७५	,,	२६४६५	,,
३३१६४	,,	१३६८३	,,	३६५४६	,,	३६५२३	,,
१४७७८	,,	१७१८८	,,	२६६५६	,,	३६६७६	,,
१७७३३	,,	१८०१६	,,	३७२२६	,,	१८४४६	,,
३३६२७	,,	३६८५५	,,	१८६०६	,,	१६२४४	,,
३५०१६	,,	२५०५३	,,	२१६२८	,,	३७७०३	,,
२६१५८	,,	३०२६७	,,	३७६७८	,,	२८५०८	,,
३४७३३	,,	३३४८२	,,	३२८२६	,,	२८६०६	,,
३५२६२	,,	३४८२३	,,	२८७२०	,,	३६५८८	,,
१२७४	,,	३०४७७	,,	३७३०३	,,	३५७१३	,,
४१५१	,,	३५७६४	,,	२६६६८	,,	२०३६०	,,
१२६१०	,,	३६७८६	,,	२७४७७	,,	२८८६६	,,
१४४३३	,,	३६८६२	,,	२६३८५	,,	२६२८२	,,
१७७१८	,,	१६८२८	,,	३६२३०	,,	३५८५७	,,
३६८५४	,,	३७०००	,,	३५६०८	,,	३५६६७	,,
१४००	,,	१८०२४	,,	३५७४६	,,	३६८३८	,,
१४८७	,,	२५८३६	,,	३५१६३	,,	३५१०७	,,
११३३४	,,	२६२००	,,	३६०३२	,,	३६१५८	,,
१८०३	,,	३३६७५	,,	३६६५५	,,	११०६	६॥)
३१४८	,,	३४५६४	,,	१८०३४	,,	१८३३५	११)
	,,	१७३७०	,,	१८७३१	,,	१८७८६	,,
				१६६८२	,,	१९७२२	,,
				१६८७६	,,	२१७४६	,,
				२२०५८	,,	२६६५६	,,
				२७६०८	,,	२८३६७	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आ० नं०	प्राप्त रक्कम	आ०-नं०	प्राप्त रक्कम	आ०-नं०	प्राप्त रक्कम	आ०-नं०	प्राप्त रक्कम
२१६४३	११)	२८६६१	११)	३४६६६	११)	१४१५५	११)
२२१७७	,,	३६५२६	,,	४६५४	,,	३२६४६	,,
२६७६६	,,	२७३६७	,,	३४१२०	,,	३०३४६	,,
२७२२६	,,	२६३४२	,,	३२६०३	,,	२२९२३	,,
३६५२४	,,	३६६२८	,,	२६०६२	,,	२५५४१	,,
३७०५७	,,	३७०८२	,,	२६६६३	,,	३१०८५	,,
३७१२३	,,	३७४०६	,,	३७१०२	,,	३७२६७	,,
६८४	,,	७०६	,,	२६४६६	,,	६८६	,,
६३४	,,	६३५	,,	२८०६०	६॥)	५४६८	११)
११३८	,,	२१०५	,,	८१६५	११)	२५०६०	,,
२५३४	,,	३१०४	,,	३३५३०	,,	३०७७१	,,
४१५०	,,	६३६४	,,	३६११	,,	२२८७४	,,
४३६८	,,	४५४०	,,	२५०४६	,,	३५४६६	,,
६५०२	,,	५५६४	,,	३५०८८	,,	३५६२०	,,
८२६६	,,	६०३६	,,	३५९४५	,,	२५४०१	,,
१३४६४	,,	१४०६३	,,	३६१५१	,,	३६२५३	,,
१५४३८	,,	१५४७८	,,	३२५०४	,,	१७२७४	,,
१७२७०	,,	२४८४२	,,	३४६६०	,,	३४६३८	,,
२५३६३	,,	२७५६	,,	२५३३८	,,	१७१६६	,,
१७४७६	,,	२५२१६	,,			२६००६	,,
२१८२३	,,	२५०६३	,,	५५७७	,,	६६४४	,,
३०३५२	,,	३०३५०	,,	२५८७५	,,	२४१११	,,
२५१६१	,,	३०६३८	,,	३७०४३	,,	३४७७५	,,
३०४६९	,,	३०६७१	,,	३६८३०	,,	२५०४०	,,
३१०५१	,,	३०६५४	,,	१०८०४	,,	५८३०	,,
३२६५२	,,	३१५७३	,,	३१९६३	,,	३४८८६	,,
२५४२५	,,	३१३६१	,,	३२६२५	,,	१३८६८	,,
३१८५६	,,	३४१०३	,,	१६६३६	,,	६३८१	,,
३०१५८	,,	३०३३१	,,	२८०६	,,	३६५४७	,,
३०७३६	,,	३२६३३	,,	३८२०	,,	२५६०	,,
३२५६०	,,	३४५०	,,	८३१४	,,	३३५२६	,,
५७७०	,,	५७६६	,,	७२४०	,,	१४०१३	,,
५७६८	,,	५७६७	,,	३६७३१-ए०	,,	३६६२८	,,
३३८५५	,,	३४६७६	,,	३५६४४	,,	३६६१६	,,
३४६६०	,,	३४७७७	,,	१३५०१	,,	३४८८७	,,
३४७३०	,,	३४८०६	,,	१७०५३	,,	३०१९३	,,
३४६६१	,,	२५२४०	,,	५६२५	,,	२४२५	,,
९६१६	६॥)	१६५६५	,,	१४२६	,,	३१०७५	,,
१६२२१	११)	५६८२	,,	३०४५१	,,	१२०११	,,
३२४२०	,,	३२४३३	,,	३१२६५	,,	१९२१०	,,
१८३२०	,,	३७१६८	,,	२६४६२	,,	१८१५६	,,
२१६४०	,,	१८६६२	,,	३७३५४	,,	३६६६०	,,
१६७०१	,,	२०१७६	,,	३६५३६	,,	२०६२६	,,
३१००७	,,	३१७१३	,,	२७६११	,,	२७४५४	,,
३१३१६	,,	३५७२८	,,	२७६०६	,,	२६०१०	,,
३६२१४	,,	३४०८२	,,	२७८०९	,,	३७६५६	,,
२५५१९	,,	३१६६६	,,				

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc, No.....

यौवन की वेदी

[लेखक—सन्तान-शास्त्र के विद्वान् लेखक श्री० गणेशदत्त शर्मा, 'इन्द्र']

मनुष्य के जीवन में यौवन का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है, यह सभी विचारशील व्यक्ति स्वीकार करते हैं। यही वह समय है, जब उसकी विविध शक्तियों का विकास होने लगता है और वास्तव में मनुष्य नाम को चरितार्थ कर सकने योग्य बनता है। पर एक दृष्टि से यह समय अत्यन्त भयपूर्ण भी है। इस अवसर पर मनुष्य के भीतर एक ऐसा जोश पैदा होता है जो, उचित नियंत्रण से काम न लिया जाय तो, मनुष्य को विवेक-शून्य बनाकर पतन की तरफ़ प्रेरित करता है। इस प्रकार विचार करने से विदित होता है कि यौवन एक ऐसा परिवर्तन-काल है, जहाँ से मनुष्य परिस्थिति के अनुसार अभ्युदय अथवा पतन दोनों ही तरफ़ अग्रसर हो सकता है। ऐसे अवसर पर हमको किन बातों का ज्ञान होना आवश्यकीय है, किन उपायों से हम भयप्रद बातों से बच सकते हैं, यही इस पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय है। पुस्तक के योग्य और अनुभवी लेखक ने उन सभी बातों पर भरपूर प्रकाश डाला है, जिससे नवयुवक कुमार्गगामी बन जाते हैं और अन्त में अपने ही हाथों अपने जीवन का सत्यानाश कर डालते हैं। अप्राकृतिक मैथुन, स्वप्न-दोष, परस्त्री-गमन, वेश्यावृत्ति आदि जितने भयङ्कर दूषण इस समय समाज में पाये जाते हैं और उसे निर्वीर्य तथा निःशक्त बना रहे हैं उन सबका बड़ी संयत भाषा में वर्णन किया गया है। जो लोग अपना और अपनी भावी सन्तान का वास्तव में कल्याण चाहते हैं, उनको अवश्य ही इस पुस्तक का मनन करना चाहिए।

पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होगी और मूल्य लगभग ४) रु० होगा।

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर छप कर तैयार हो गई !

दिल की आग उर्फ़ दिल की आह

इसका प्लॉट बड़ा अद्भुत है और रचना-शैली ऐसी अनोखी है कि पुस्तक को एक बार हाथ में लेने पर जब तक समाप्त न हो जाय, तब तक छोड़ने को जी नहीं चाहता। यद्यपि सभी घटनायें सीधी-सादी और स्वाभाविक हैं, पर उन्हीं को ऐसा रहस्यपूर्ण बना दिया गया है कि पाठक ज्यों-ज्यों पुस्तक को पढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों उनकी उत्कण्ठा बढ़ती ही जाती है। चरित्र-चित्रण और भाव-प्रदर्शन की खूबियाँ देख कर आप दंग रह जायेंगे, और तारीफ़ यह है कि साहित्यिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, सामाजिक और सुधार, कोई भी विषय छूटने नहीं पाया।

मूल्य केवल ४) रु०

मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, इलाहाबाद

Printed and Published for and on behalf of the Chand Press, Limited, by Satya Bhushan at The Fine Art Printing Cottage, 26, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

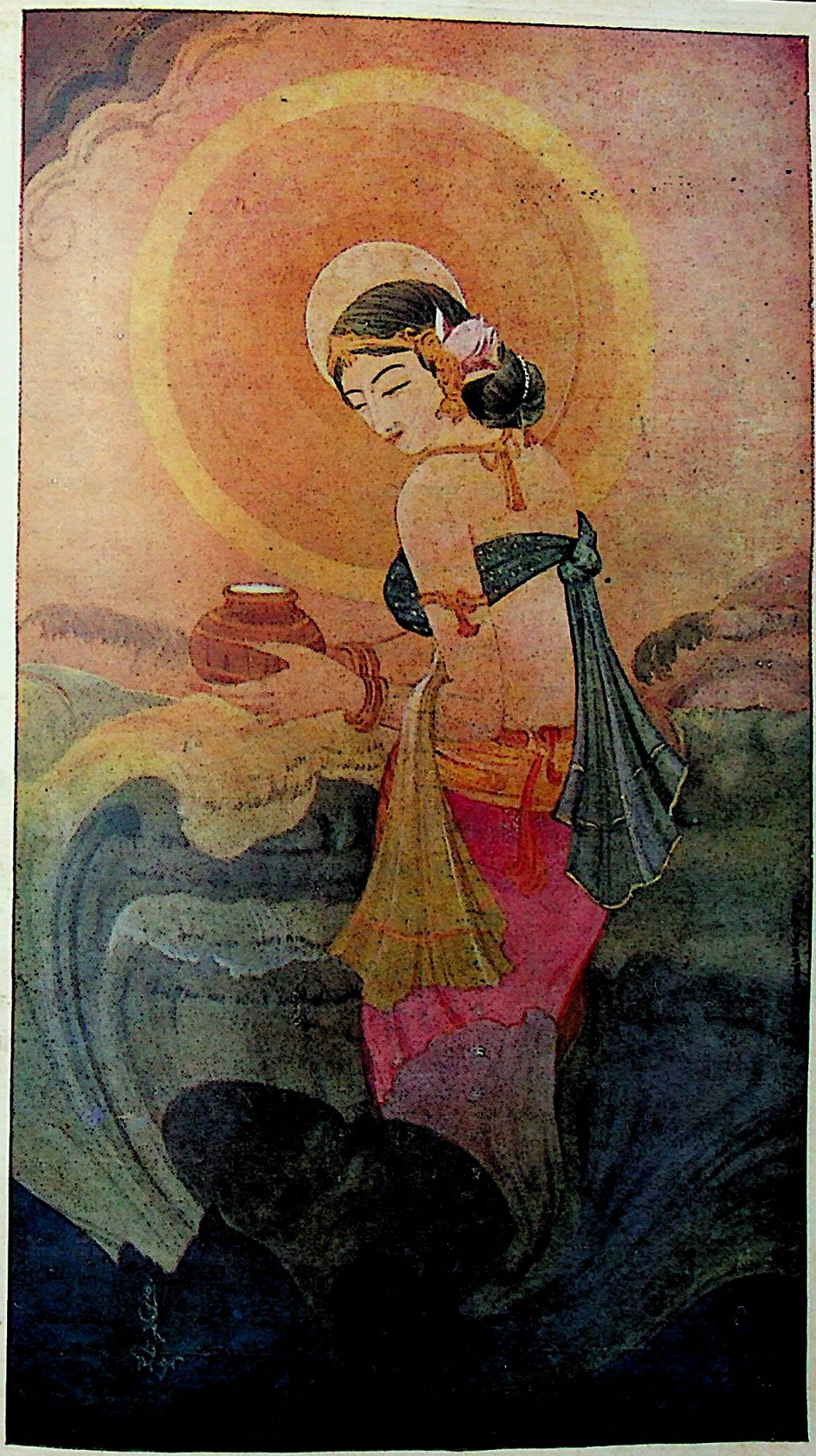

प्रकाशक—चाँद प्रेस, लिमिटेड
चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

फ़रवरी

१९३८

बालों को बढ़ाने वाले
३७ अमूल्य तत्त्वों द्वारा बने हुए
कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)
से
अपने बालों की रक्षा कीजिए!

सौ में निन्नानवे लोगों का ख्याल है कि बालों के लिए चाहे जैसा तेल लगाने से काम चल जाता है, पर यह भारी भूल है। इसे कम ही लोग जानते हैं कि जो तेल लगाया जाय, वह बालों को बढ़ाने वाला होना चाहिए। यदि उसमें बाल बढ़ाने वाले तत्त्व न हों, तो वह बिलकुल फ़ायदेमन्द नहीं होता, बल्कि ऐसा तेल लगाने से बालों को पोषण न मिलने के कारण बाल गिरने लगते हैं। परन्तु अभी भी यदि आपके बालों की जड़ें सावुत हैं तो कामिनिया ऑयल से बालों को नवजीवन प्राप्त हो सकता है। इस तेल के अमूल्य वनस्पतियुक्त तत्त्वों से बालों की निर्बल जड़ें सजीव बन जाती हैं और बाल गिरने बन्द हो जाते हैं।

मू० प्रति शी० १), ३ शी० २॥=), डाक-व्यय अलग

कामिनिया आयल
बालों का जीवन है।

इसके नियमित उपयोग से सुन्दर बालों से सिर भर जाता है।

केवल दो पैसे का टिकट भेज कर नमूने की शीशी मुफ़्त मँगा लेवें।

—•::•—

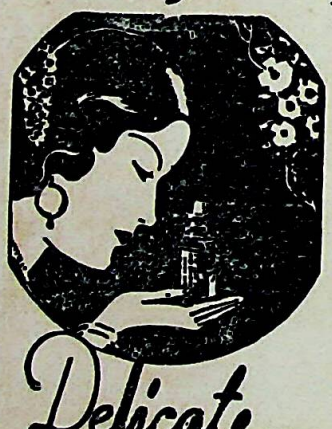

खुशबू का राजा **ओटो दिलबहार** (रजिस्टर्ड)

ओटो दिलबहार को खुशबू का राजा कहा जाता है, क्योंकि इसकी खुशबू के आगे दूसरे सेण्ट की खुशबू नहीं ठहरती। इसके दो-चार बूँद रूमाल या रुई में लगा देने से फूलों के गजरे की जैसी खुशबू फैल जाती है। एक बार इस्तेमाल करने से फिर हमेशा इसी को इस्तेमाल में लाते रहेंगे। मूल्य आधा औंस की शीशी २) रुपए, पाव औंस की शीशी १।), १ ड्राम की शीशी ।।।), डाक-व्यय पृथक्। नोट—दो आने के टिकट आने पर नमूना मुफ़्त भेजा जायगा।

कामिनिया स्नो (रजिस्टर्ड)

महासुगन्धित, अत्यन्त ठण्डा और शीतल करने वाला। मुख पर कान्ति लाता है। सो जाने के पूर्व या धूप में से आने के पश्चात् मुख पर लगाइए। मूल्य प्रति शीशी ।।।) बारह आने। डाक-व्यय पृथक्

नहाने के लिए खुशबूदार साबुन

कामिनिया ह्वाइट राज़ सोप—(रजिस्टर्ड), गुलाब के फूलों की मीठी खुशबू का साबुन।

कामिनिया सण्डल सोप—(रजिस्टर्ड), चन्दन की सुगन्ध का मनपसन्द साबुन।

३ बट्टी के १ बॉक्स का ।।।), डाक-खर्च अलग।

दो पैसे का टिकट भेजने पर किसी एक साबुन या स्नो का नमूना मुफ़्त भेजा जायगा।

सोल एजेण्ट—ही ऐङ्गलो इण्डियन ड्रग एण्ड केमिकल कम्पनी, ३८५ जुमा मसजिद, बम्बई नं० २

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फ़रवरी

१९३८

सम्पादिका—

महादेवी वर्मा, एम० ए०

मैनेजिंग एडीटर—

नन्दगोपालसिंह सहगल

मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर—

पं० निरञ्जनलाल भार्गव

जमरल मैनेजर—

नन्दगोपालसिंह सहगल

Price As. -/10/- इस अङ्क का मू० ॥=)

वर्ष १६
खण्ड १
संख्या ४
पूर्ण संख्या १८४

प्रकाशक :—

चाँद प्रेस, लिमिटेड

चन्द्रलोक—इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ६॥)
छःमाही मू० ३॥)
विदेश के लिए—
१ वर्ष का मू० ८॥)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१९३६ का नया व्यवसाय

दस करोड़ से ऊपर

इस सफलता का कारण जनता का विश्वास है

जीवन बीमा कराना अमीर और ग़रीब दोनों के लिए निस्सन्देह रुपया लगाने का सबसे अच्छा मार्ग है। आरम्भ ही से यह किसी भी व्यक्ति के आश्रितों को उतनी ही आर्थिक सहायता मिल सकने का निश्चय करा देता है, जितनी कि वह उनको अपने मरने के बाद देना चाहता है। इस तरह की सुमिता और किसी तरह रुपया लगाने से प्राप्त नहीं हो सकती।

जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, समझदार लोगों का एक बड़ा भाग 'ओरियन्टल' में बीमा करा रहा है, जैसा कि उसके कारोबार के विस्तार, उसकी मज़बूती और सुनिश्चितता से प्रकट होता है।

अतएव ओरियन्टल की बीमा पालिसी अवश्य लीजिए

ओरियन्टल

गवर्नमेण्ट सिक्योरिटी लाइफ़ एश्यूरेन्स कम्पनी, लिमिटेड

स्थापित १८७४ — हेड ऑफ़िस—बम्बई

पत्र-व्यवहार का पता :—आर० जे० पामेण्टा,
आश्व सेक्रेटरी, यूनाइटेड प्राविन्सेज़,
ओरियन्टल बिल्डिङ्ग, हज़रतगञ्ज, लखनऊ

समस्त भारत में शाखाएँ और प्रतिनिधि हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	इच्छा (कविता)	[प्रो० योने नॉगूची]	३६३
२	मेरी चिड़िया उड़ गई (गद्य-काव्य)	[श्रीमती दिनेशनन्दिनी]	३६४
३	लौट जाओ (गद्य-काव्य)	[श्रीमती दिनेश-नन्दिनी]	३६४
४	अपनी बात (सम्पादकीय)	...	३६५
५	शिक्षा का पुनः सङ्गठन	[श्री० गौरीशंकर अग्रवाल, एम० ए०, एल-एल० बी०, काशीपुर]	३६८
६	समाज में वैवाहिक जीवन का स्थान	[श्री० रामस्वरूप व्यास]	३७३
७	ज़मीन और खेती की समस्या	[श्री० राम-किशोर अग्रवाल, एम० ए०] ...	३७७
८	एक मित्र के रोज़नामचे के कुछ पृष्ठ (कहानी)	[श्रीमती रामेश्वरी नेहरू]	३८१
९	सजल गान (कविता)	[श्री० परमानन्द शुक्ल]	३८५
१०	जापान का स्त्री और बाल-समाज	[श्री० विष्णुदत्त शुक्ल]	३८६
११	मधुर बेला (कविता)	[श्री० ईश्वरलाल शर्मा 'रत्नाकर']	३९०

STAR TRADE MARK REGD.
स्टार ट्रेड मार्क

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि०

५० वर्ष से अधिक का सुप्रसिद्ध, अतुल्य देशी पेटेण्ट दवाओं का वृहत् भारतीय कार्यालय !
विभाग नं० (१५) पोस्ट-बक्स नं० ५५४, कलकत्ता

दन्त मञ्जन

इसके कुछ ही दिनों के व्यवहार से आप देखेंगी कि दाँतों की सुन्दरता कैसी बढ़ गई।

दन्त-रोग-नाशक सुगन्धित मञ्जन

का (Regd.)

सब जगह मिलता है।

इसके व्यवहार से दाँतों की जड़ मज़बूत होती है और दाँत मोती के समान चमकीले हो जाते हैं। पाइरिया, मसूड़ों का फूलना व उनसे पीप और ख़ून आना आदि रोग नष्ट होते हैं।

(१) इलाहाबाद के एजेण्ट—मेसर्स झाजी एण्ड सन्स, लक्ष्मी मन्दिर, भारती-भवन स्ट्रीट,
(२) बनारस शहर के सोल एजेण्ट—मेसर्स गोवर्धनदास मनोहरदास, बुलानाला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१२	गुप्त जी की पञ्चवटी	[श्रीमती जयन्ती-देवी पाण्डेय]	३९१
१३	पञ्जाब की जाग्रत महिलाएँ	[श्री० मोहन-सिंह सेंगर]	३९५
१४	जुन्हैया तैं उह कै बिपह जा (कहानी)	[श्रीमती बृजेशकुमारी लाल जी] ...	३९८
१५	स्नेह-स्मृति (कविता)	[श्री० बी० शर्मा]	४०१
१६	स्वराज्य और स्त्रियाँ	[श्री गणेशदत्त 'इन्द्र' आगर]	४०२
१७	समाजवाद	[श्री० उमाशंकर] ...	४०५
१८	घर-बाहर (कहानी)	श्री० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल']	४१०

* * *

बिखरे फूल

१९	बुन्देलखण्ड की स्त्रियों की वेश-भूषा	[श्री० गोवर्द्धनदास त्रिपाठी] ...	४१७
२०	तब के गाँव	[श्रीमती जलिताप्रसाद]	
२१	समाज के प्रति सदस्यों के कर्तव्य	[श्री० सुशील]	
२२	विचार-प्रवाह	[श्रीमती निर्मला क० पण्ड्या]	
२३	विधवा (कहानी)	[श्रीमती सुशीला भार्गव]	
२४	मोहेंजोदड़ो में कला और कौशल	[श्री० सतीशचन्द्र काला, बी० ए०] ...	

* * *

२५	गीत (कविता)	[श्री० ब्रह्मदेव] ...	
२६	नारी और प्रतिक्रिया	[श्री० सागरप्रसाद राय, विशारद]	
२७	पाठकों की लेखनी से	... ...	
२८	केसर की क्यारी (कविता)	[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]	

यौवन के आँसू

मनुष्य के जीवन में यौवन का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है, यह सभी विचारशील व्यक्ति स्वीकार करते हैं। यही वह समय है, जब उसकी विविध शक्तियों का विकास होने लगता है और वास्तव में मनुष्य नाम को चरितार्थ कर सकने योग्य बनता है! पर एक दृष्टि से यह समय अत्यन्त भयपूर्ण भी है। इस अवसर पर मनुष्य के भीतर एक ऐसा जोश पैदा होता है, जो उचित नियंत्रण से काम न लिया जाय तो, मनुष्य को विवेक-शून्य बनाकर पतन की तरफ प्रेरित करता है। इस प्रकार विचार करने से विदित होता है कि यौवन एक ऐसा परिवर्तन-काल है, जहाँ से मनुष्य परिस्थिति के अनुसार अभ्युदय अथवा पतन दोनों ही तरफ अग्रसर हो सकता है। ऐसे अवसर पर हमको किन बातों का ज्ञान होना आवश्यकीय है, किन उपायों से हम भयप्रद बातों से बच सकते हैं, यही इस पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय है। जो लोग अपना और अपनी भावी सन्तान का वास्तव में कल्याण चाहते हैं, उनको अवश्य ही इस पुस्तक का मनन करना चाहिए। पुस्तक का मूल्य ४)

जनरल मैनेजर—चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
९९	भारत की नाविक शक्ति	[श्री० नरसिंहराम शुक्ल]	४३६
१०	निशा-निमन्त्रण से (कविता)	[श्री० 'बच्चन']	४४०
११	छाया-पथ	[श्री० महेन्द्रकुमार] ...	४४१
१२	सङ्गीत-सुधा	[श्री० एस० डी० आप्टे]	४४३
१३	दुबे जी की चिट्ठी	[श्री० विजयानन्द दुबे]	४४५
१४	मेरा गान (कविता)	[स्वर्गीया प्रभादेवी माथुर]	४४९
१५	गृह-विज्ञान	[श्री० नारायणप्रसाद अरोड़ा]	४५०
१६	नव-पल्लव		४५२
१७	घातायन		४५५

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
	रङ्ग-भूमि		
३८	मिश्र की नारियाँ		४५७
३९	भारतीय गृह और सजावट		४५८
४०	समान अधिकार की माँग		४५९
४१	माता स्वरूपरानी नेहरू का स्वर्गवास ...		४६०
४२	स्वर्गीय शरत्चन्द्र चटर्जी		४६०

* * *

चित्र-सूची

१—सैनिक की वधू (तिरङ्गा)
२—१०—भिन्न-भिन्न स्त्रियों सम्बन्धी ९ चित्र
११-१४—रेलवे शिष्टाचार (कार्टून) ४ चित्र

हरेक घर में रखने योग्य पुस्तकें

(१) **मनोरञ्जक पहेलियाँ**—बुद्धिवर्धक दिल को खुश करने वाली। मूल्य =)

(२) **पाक-प्रकाश**—इसमें आजकल के अङ्गरेज़ी फ़ैशन के खाना बनाने का विटामिन्स सहित वर्णन है। पृष्ठ-संख्या १९४, मूल्य १) पोस्टेज ॥)। साप्ताहिक 'अर्जुन' सन् ३७ के ५ दिसम्बर में और 'लीडर' सन् ३७ के १९ फ़रवरी में इसकी समालोचना देखें।

(३) **बुनाई के नमूनों का मास्टर**—(सचित्र) इसमें २१ तसवीरें ५५ पोशाकें और ६४ नमूने बुनाइयों के दिए हैं। पृष्ठ-संख्या लगभग २०० मूल्य १।)। साप्ताहिक 'अर्जुन' ५ दिसम्बर सन् ३७ में और 'चाँद' सन् ३६ के अक्टूबर में इसकी समालोचना देखें।

(४) **घर का वैद**—(सचित्र) इसमें रोगों के कारण, लक्षण तथा इलाज, ३२ ब्लॉक, चार हज़ार देशी हकीमी नुस्ख़े तथा तरह-तरह के सुरमे बनाने की विधि और आजकल के नए ढङ्ग के आहार-विहारादि का विटामीन्स सहित वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ४०० मूल्य ४), एक किताब कमीशन काट कर २।॥) में पड़ेगी। पोस्टेज ॥), इसका राज-संस्करण ५) का है, वह कमीशन काटकर ३।) में दिया जायगा। 'लीडर' ५ अक्टूबर सन् ३७ और 'अर्जुन' सन् ३७ के २७ दिसम्बर तथा 'चाँद' माह जनवरी सन् ३८ में इसकी समालोचना देखें।

(५) **प्रेम-भजनावली**—पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य १), डाक-ख़र्च ॥)

(६) **शादी के वसन**—(कश्मीरी शादी के गीत) पृष्ठ-संख्या ९० मूल्य ॥', पोस्टेज ॥)

पुस्तकें मिलने का पता :—डॉक्टर राजेश्वरी शर्मा, मन्दिर श्यामसुन्दर, गऊघाट, मथुरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पका बाल स्थायी काला पैदा होगा

झूठा नहीं, सचाई के सबूत में सैकड़ों प्रशंसा-पत्र मिले हैं, फिर भी यदि विश्वास न हो तो दूना दाम वापस की शर्त लिखा लें। चौथाई से कम पका हो तो ४) रु०, इससे अधिक पका हो तो ७) रु० का तेल लें और खिज़ाब छोड़ दें।

हज़रा एण्ड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभङ्गा)

स्वामी विवेकानन्द

कृत

क़ी० ॥) **प्रेम-योग** पृष्ठ १७६

सुप्रसिद्ध Religion of Love का हिन्दी अनुवाद

श्रीरामकृष्ण आश्रम

नागपुर (सी० पी०)

---

५०) इनाम

"वर्थ-कन्ट्रोल" जो अधिक सन्तान होने से अस्वस्थ रहने के कारण अब सन्तान न चाहती हों या जो किसी भी कारण से सन्तान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे इसे महीने में सिर्फ़ दो तीन दिन सेवन करें। यह गर्भनिरोध की अकसीर औषधि है। औषधि सेवन करना बन्द करने पर फिर सन्तान होती है। १ वर्ष के औषधि का मूल्य २) औषधि नं० २ के सेवन से जन्म भर सन्तान नहीं होती। मूल्य २॥) "इन औषधियों से किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती" बेफ़ायदा साबित होने पर ५०) इनाम।

पता—श्री० सत्येन्द्रचन्द्र
पो० कतरीसराय, (गया)

क्या आप अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं?

यदि हाँ, तो हमारी कम्पनी की एजेन्सी लेने का अवसर न चूकिए। जिससे दरिद्र से दरिद्र आदमी भी अपना बीमा करा सके, हमने अपनी हाल की बीमा कराने की योजना में बिना डॉक्टरी परीक्षा के बीमा कराने की सुविधा दी है। मासिक प्रीमियम आठ आने से दो रुपए तक है। पॉलिसी लेने वाले को एक घड़ी, जिसकी तस्वीर इसी पृष्ठ पर दी गई है, मुफ़्त में दी जावेगी जिससे वह अपना प्रीमियम इकट्ठा कर सके तथा उसे ठीक-ठीक समय भी ज्ञात होता रहे।

विवरण के लिए लिखिए :—
दी गोल्ड मोहर प्रोविडेण्ड इन्सो० कं० लिमि०,
२२, अपोलो स्ट्रीट, फ़ोर्ट, बम्बई
(१९३० में स्थापित)
प्रमुख एजेण्ट—व्यापार क्रान्ति मण्डल,
सदर बाज़ार, मण्डलेश्वर

सफेद बाल काला

विवलिन केश तेल

उसे प्राकृतिक रङ्ग में ला देगा। खिज़ाब को फेंक दीजिए। मूल्य १॥), छोटी शीशी उन लोगों के लिए जिनका बाल हाल ही में पकना आरम्भ हुआ है। ३) रु० बड़ी शीशी उन लोगों के लिए, जिनका बाल ज़्यादा पक गया हो। ३ शीशी लेने से डाक-महसूल माफ़।

ALLAHABAD STOCKISTS :—
King & Co., Chemists,
26, Canning Road.

नई देहली के एजेण्ट—डॉ० चुन्नीलाल एण्ड सन्स
(एजेंसाज़) २९ बेयर्ड रोड
सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :—साइण्टेफ़िक पब्लिशिङ्ग कं०
(मेडिकल डिपा०) भवानीपुर, कलकत्ता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुफ़्त ! सर्वोत्तम अवसर !!

एच० एल० एम० एस०; एच० एम० डी० आदि होमियो-आथुर, यूनानी डिग्रियाँ, नियमित पोस्टल ट्यशन और परीक्षाओं द्वारा। डिग्री की कोई फ़ीस नहीं। होमियो मेटेरिया मेडिका ५) रु०, होमियो प्रेक्टिस ४) रु०। दो आने का टिकिट भेजिए। इण्डियन होमियोपैथिक इन्स्टीट्यूट एण्ड सोसायटी (गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड) पो० महुवा (काठियावाड़, इण्डिया)

SEX & LOVE

प्रेम-कला के ऊपर एक अङ्गरेज़ी की नई पुस्तक 'Art of Love' जिसमें प्रेम, रोमांस, कोर्टशिप, विवाह, यौवन-रक्षा, लव इमब्रेस, सेक्सुअल बीमारियाँ और उनके इलाज पर ख़ास Chapters हैं। ॥) के मनीऑर्डर या टिकट आने पर भेजी जाएगी।

ऐसे विद्यार्थियों की भी आवश्यकता है, जो डाक द्वारा होमियोपैथी पढ़ना या प्राइवेट तौर पर डिप्लोमा लेना चाहते हैं।

D. R. C. SAXENA,
Patiala (Punjab)

आटोमेटिक अलार्म पिस्तौल

बहुत बढ़िया स्टील की बनी। चोरों, डाकुओं और जङ्गली जानवरों को डराने के लिए बहुत ही कार-आमद। लायसेन्स की ज़रूरत नहीं है। यह एक साथ छः कारतूस चलाती है। आत्म-रक्षा और खेल के लिए बहुत काम की चीज़ है। यह छः इञ्च लम्बी और चार इञ्च ऊँची है। हर एक आदमी सहज में काम ले सकता है। इसे सर्कस वाले, चौकीदार और जङ्गल के अफ़सर काम में लाते हैं। क़ीमत १०० गोलियों के साथ २॥), गोलियाँ अलग लेने से ॥) की ५०, पोस्टेज ॥)

पता—दत्त एण्ड को० (सी)
१५।१ जयमित्र स्ट्रीट,
Po. Hatkhona (कलकत्ता), (सी)

सुन्दर बालों को देखकर ईर्षा मत करो। मल्सीफ़ाइड के उपयोग से आपके बाल भी सुन्दर हो जायँगे।

वाटकिन्स
मल्सीफ़ाइड
काकानट ऑयल शैम्पू

नई छोटी बोतल छः आने के टिकट पो० बॉ० ५११ बम्बई को भेज कर मँगा लें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जनता का अटल विश्वास

भारत

सन् १९३७ के आश्चर्य-जनक आंकड़े

२ करोड़ ५ लाख रुपए से अधिक का नवीन व्यवसाय।

२ करोड़ ७५ लाख से अधिक नया प्राप्त कारोबार।

वर्तमान नए प्रबन्ध के आधीन इस थोड़े समय में ही 'भारत' ने जो आश्चर्यजनक उन्नति की है, वह अपनी कहानी आप ही कह रही है।

भारत की यह प्रधानतम संस्था सावधानी से किन्तु अपूर्व वेग के साथ दिनोंदिन उन्नति कर रही है और सञ्चालकों को आशा है कि निकट भविष्य में ही यह कम्पनी जो उन्नति करेगी वह इस देश के व्यापारिक इतिहास में अपूर्व घटना होगी।

सन् १९३८ में

इस क्रान्ति की प्रतीक्षा कीजिए

भारत इन्श्योरैन्स कम्पनी लिमिटेड

हेड ऑफ़िस—भारत बिल्डिंग्ज़, लाहौर

पी० डी० खोसला, जनरल मैनेजर

ब्राञ्चें :

१. आगरा	९. बनारस	१७. देहली	२५. मदुरा	३३. कारवार (उत्तरी कनारा)
२. अजमेर	१०. बम्बई	१८. इर्नाकुलम	२६. मुलतान	३४. नैरोबी (पूर्वी अफ्रीका)
३. इलाहाबाद	११. कलकत्ता	१९. गौहाटी	२७. नागपुर	३५. रावलपिण्डी
४. अम्बाला	१२. कानपुर	२०. जलपाईगुरी	२८. नजीबाबाद	३६. सिकन्दराबाद (दक्षिण)
५. अमृतसर	१३. कोलम्बो	२१. कराची	२९. पटना	३७. शिलांग
६. आसनसोल	१४. कटक	२२. लाहौर ब्राञ्च	३०. पूना	३८. स्याजकोट
७. बङ्गलोर	१५. ढाका	२३. लखनऊ	३१. राजमुन्दरी	३९. सक्खर
८. बारीसाल	१६. देहरादून	२४. मद्रास	३२. रङ्गून	४०. सूरत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकम्बर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला सीतापूर

मुक़दमा नम्बर ४३९ सन् १९३६ ई०

तारीख पेशी सन् १९३ ई०

सैयद एजाजुल हसन खाँ वल्द सैयद जहरुलहसन खाँ साकिन खैराबाद मुहल्ला मियासराय परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापुर.....सायल

बनाम

१—नवाबजादह हैदरअली खाँ वल्द नवाब मिर्जा मुहम्मद सादिकअली खाँ साकिन मोहल्ला पोलागञ्ज सादिक मञ्जिल शहर लखनऊ, २—खानबहादुर सैयद एजाजुल हसन खाँ वल्द सैयद एजाजुल हसन खाँ साकिन मोहल्ला मिया सराय व ३—लाला रामनारायण वल्द मातादीन खत्री, ४—लाला गोविन्दप्रसाद वल्द गयाप्रसाद खत्री साकिनान मोहल्ला महेन्द्रो टोला व सबा खैराबाद परगना खैराबाद तहसील व जिला सीतापूर ५—अब्दुलजब्बार खाँ वल्द महबूब खाँ साकिन मोहल्ला मियासराय व ६—लाला विश्वनाथ वल्द भोलानाथ खत्री साकिन कस्बा लहरपुर मोहल्ला भटईटोला परगना लहरपुर तहसील व जिला सीतापुर ... फरीकसानियान

हरगाह कि जायदाद मुशरह जैल दरख्वास्त कुनिंदा व क़र्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत क़र्ज में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३ ई० में जाहिर की है लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुशर्रह जैल हासिल हो अन्दर मीयाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी की चुनी हुई उत्कृष्ट पुस्तकें

सौन्दरनन्द महाकाव्य—श्री महाकवि अश्वघोष कृत काव्य का कथा-सार। लेखक—श्री० रामदीन पाण्डेय, एम० ए०। मूल्य सजिल्द १) सादी ॥)

सुर सुन्दरी—सामाजिक शिक्षाप्रद उपन्यास। लेखक—पंडित मुरलीधर शर्मा। मू० १)

स्वामी विवेकानन्द—स्वामीजी की शिक्षाप्रद जीवनी तथा उनके राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक विचारों का संग्रह। मूल्य ।=)

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा—इस पुस्तक में स्वास्थ्य-साधन के नियमों और उपायों का बहुत सुन्दरतापूर्वक वर्णन किया गया है। लेखिका—श्रीमती हेमन्त कुमारी देवी भट्टाचार्य। मूल्य ॥=)

स्त्री-शिक्षा—स्त्रियों के लिए अत्यन्त उपयोगी तथा शिक्षाप्रद पुस्तक है। लेखक—पं० लेखराम, आर्य-पथिक। मूल्य ।=)

संयोगिता-हरण—इस नाटक में पृथ्वीराज की वीरता तथा संयोगिता-हरण की घटना बड़े मनोरंजक ढङ्ग से चित्रित की गई है। लेखक—बाबू हरिदास माणिक। मूल्य ॥)

स्वर्णबाई—शिक्षाप्रद जीवन-चरित्र अथवा सामाजिक उपन्यास। लेखक—बाबू रामकृष्ण वर्मा। मूल्य ।-)

संक्षिप्त शरीर-विज्ञान—इस पुस्तक के द्वारा आप शरीर की भीतरी बातों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। स्वास्थ्य-रक्षा के प्रेमियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।=)

सर्व-दर्शन सिद्धान्त संग्रह—दर्शन-शास्त्रों के महत्वपूर्ण सूत्र इसमें हिन्दी अर्थ सहित दिये गये हैं। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रेमियों के लिए बहुत लाभदायक पुस्तक है। लेखक श्री० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०। मूल्य केवल ॥)

सफलता और उसकी साधना के उपाय—मानव-जीवन में वास्तविक तथा निर्दोष सफलता किन उपायों से प्राप्त की जा सकती है इसका सुन्दर विवेचन इस पुस्तक में किया गया है। लेखक—श्री० रामचन्द्र वर्मा। मूल्य ।।।)

बालोपयोगी वीर्य रहस्य—वीर्य क्या वस्तु है तथा उसकी रक्षा से क्या लाभ हैं, और उसका उपयोग कब और कैसे करना चाहिए—इसका विस्तारपूर्वक वर्णन सरल भाषा में किया गया है। मूल्य =)॥

प्रेतनगर—भूत-प्रेतों के सम्बन्ध में अत्यन्त दिलचस्प १२ कहानियाँ। लेखक—श्री० मोहनलाल नेहरू। मूल्य ।=)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी की चुनी हुई उत्कृष्ट पुस्तकें

स्त्री-कवि-कौमुदी—हिन्दी-साहित्य की स्त्री-कवियों की रचनाओं तथा जीवन चरित्रों का संग्रह। लेखक श्री० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'। मूल्य ।)

सर्वस्व-समर्पण—उच्च कोटि का शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक। लेखिका—श्रीमती निरुपमा देवी। मूल्य रेशमी जिल्द ४॥), सादी ४)

स्वास्थ्य-साधन—स्वास्थ्य के सम्बन्ध में यह पुस्तक बहुत उत्तम है। मनुष्य शरीर के प्रत्येक अंगों को स्वस्थ रखने के उपाय इसमें बहुत सुन्दर ढङ्ग से बताये गये हैं। लेखक श्री० रामदास गौड़, एम० ए०। मूल्य सजिल्द ॥) सादी ३)

सिर का दर्द—सिर में होने वाले हर प्रकार के दर्द के कारण तथा उसके दूर करने के उपाय इस पुस्तक में विस्तार-पूर्वक लिखे गये हैं। लेखक—श्रीयुत वैद्य गणेश पांडुरंग शास्त्री। मूल्य ॥)

स्वाधीन भारत—महात्मा गाँधी द्वारा लिखित 'इण्डिन होमरूल' नामक अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद। मूल्य १)

सफलता की कुञ्जी—अमेरिका में दिए हुए स्वामी रामतीर्थ का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्याख्यान। विद्यार्थियों को सदाचारी तथा उनके विचारों को पवित्र बनाने वाली यह प्रसिद्ध पुस्तक है। मूल्य ।)

सरल गीता—श्रीमद्भगवत्गीता की सरल हिन्दी टीका। लेखक—पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे। मूल्य सजिल्द ॥।=), सादी १॥)

सामर्थ्य, समृद्धि और शान्ति—उच्चकोटि की आध्यात्मिक पुस्तक है। इसके पढ़ने से चित्त शान्त, स्वच्छ तथा विचार पवित्र हो जाते हैं। मूल्य सजिल्द का ।) सादी १॥)

साहसी चोर—अत्यंत रोचक और हृदयग्राही जासूसी उपन्यास। लेखक—पं० देवनाथ पाठक। मूल्य ॥)

सुवर्णकारी—इस पुस्तक में स्वर्ण धातु के सम्बन्ध की सभी बातों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। मूल्य ।)

सेवा-धर्म—सेवा-धर्म का महत्व कितना श्रेष्ठ है तथा मानव-जीवन में इसकी कितनी आवश्यकता है और बिना इस गुण के मनुष्य कितना हीन हो जाता है—इसका चित्रण मनोहर ढंग से इसमें मिलेगा। मूल्य १॥)

संभाषण—सप्तम संयुक्त प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन के सभापति का भाषण। लेखक—दुलारेलाल भार्गव। मूल्य सजिल्द ॥), सादी ।)

सहधर्मिणी—शिक्षाप्रद सचित्र सामाजिक उपन्यास। लेखक—श्री पंचकौड़ी दे। मूल्य ॥।)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी की चुनी हुई उत्कृष्ट पुस्तकें

मेरी तिब्बत यात्रा- तिब्बत के अनोखे रीति-रिवाज तथा यात्रा सम्बन्धी मनोरञ्जक वर्णन। लेखक—राहुल सांकृत्यायन। मूल्य ।।)

अपराजित अबीसीनिया- नर-हत्या और संहार-लीला का रोमांचकारी दृश्य और इटली अबीसीनिया की लड़ाई का आँखों देखा वर्णन। मूल्य १)

पतितों के देश में—शिक्षाप्रद तथा मनोरञ्जक उपन्यास। लेखक - रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी। मूल्य १)

वैज्ञानिक कहानियाँ—बच्चों के लिए बहुत रोचक तथा शिक्षाप्रद पुस्तक है। मूल्य ।)

संघर्ष—रूसी साहित्य के महान कलाकार इवान तुर्गनेव के सर्वोत्कृष्ट उपन्यास का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक—श्री० कृष्णवल्लभ द्विवेदी, बी० ए०। मूल्य सजिल्द २।) सादी २)

सम्राट् अशोक—उत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यास। महाराज अशोक के जीवन-चरित्र तथा शासन प्रबन्ध सम्बन्धी घटनाओं का विस्तृत वर्णन। लेखक—हरिभाऊ उपाध्याय। मूल्य सजिल्द ३) सादी २।।)

सुकवि-कौमुदी—हिन्दी के पुराने और नये सुप्रसिद्ध कवियों का परिचय। लेखक—पंडित रामनरेश त्रिपाठी। मूल्य ।।।)

सदाचार और नीति—चरित्र सुधारने के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। लेखक—पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी। मूल्य ।।।)

सत्य-हरिश्चन्द्र नाटक—(प्रस्तावना और टिप्पणी सहित) यह हिन्दी का प्रसिद्ध तथा श्रेष्ठ नाटक है। इसमें राजा हरिश्चन्द्र का अटल सत्य तथा उनकी करुण आपदाओं का वर्णन है मूल्य ।=)

सुन्दर विलास—दादूपंथी साधु श्री सुन्दरदास जी द्वारा लिखा हुआ सरल हिन्दी काव्य है यह ज्ञान का भण्डार है। मूल्य २।=)

सच्ची कहानियाँ—बालकों के पढ़ने तथा ज्ञान उठाने योग्य १७ सचित्र ऐतिहासिक कहानियाँ लेखक—पंडित नर्मदा प्रसाद मिश्र, बी० ए०। मूल्य ।।)

स्वर्ण प्रतिमा—शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास। लेखक - बाबू रामचन्द्र वर्मा। मूल्य सजिल्द २।) सादी २)

सन्ध्या-रहस्य—वैदिक सन्ध्या के रहस्यों तथा गूढ़ बातों पर विस्तृत और सरल भाषा में प्रकाश डाला गया है और मन्त्रों के अर्थ भी दिये गये हैं। लेखक—श्री चमूपति जी, एम० ए०। मूल्य ।=)

संसार के व्यवसाय का इतिहास—संसार के भिन्न भिन्न प्रकार के व्यवसायों का विस्तृत वर्णन। लेखक - श्री० हरिहरनाथ जी, बी० एल०। मूल्य ॥=)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैनिक की वधू

जिसकी मन में मूर्ति, निकट ही समुपस्थित वह अक्षत मौन !
पर चिन्ता से समय किसे है, पीछे फिर कर देखे कौन ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

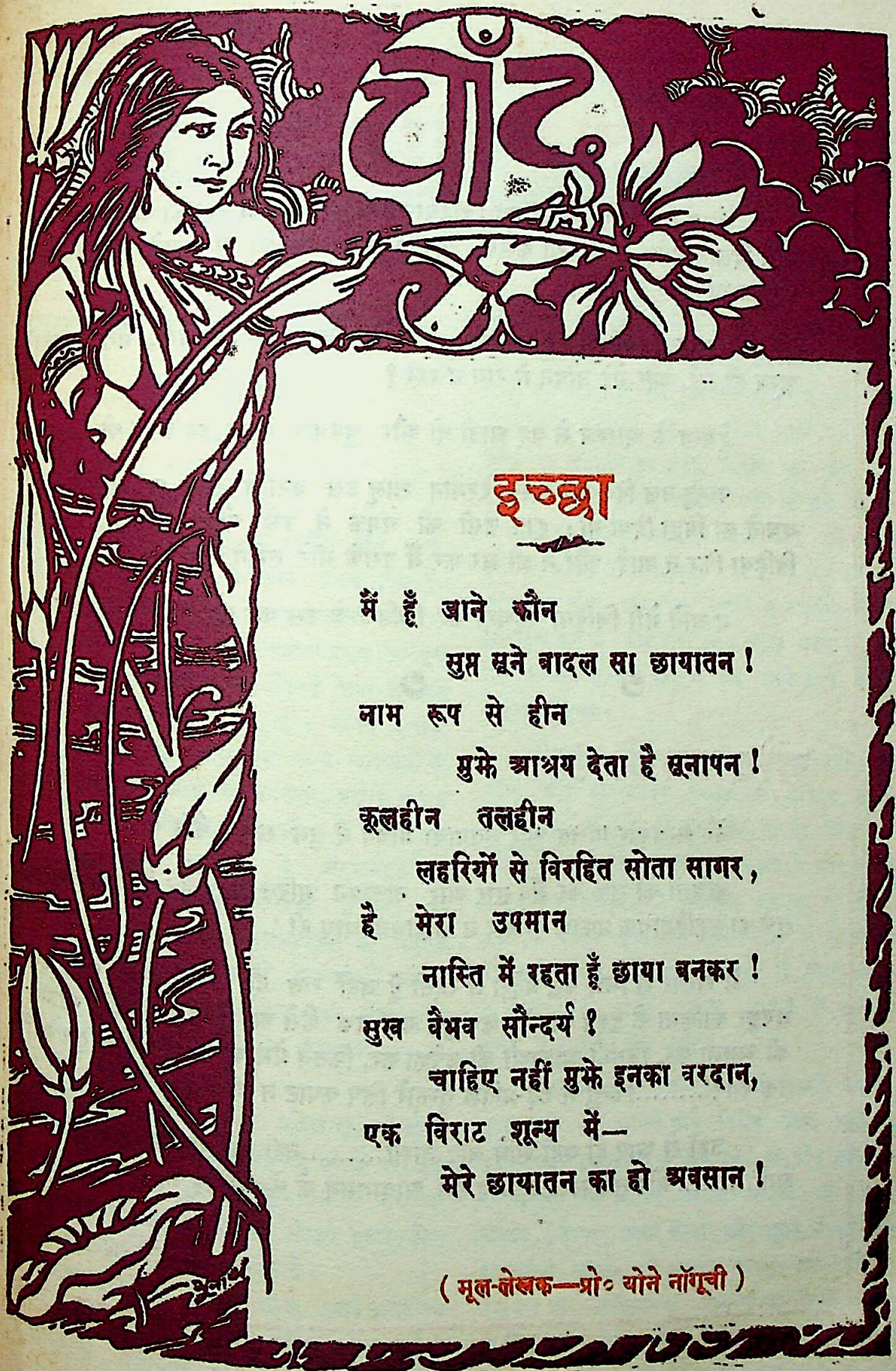

इच्छा

मैं हूँ जाने कौन
सुप्त सूने बादल सा छायातन !
नाम रूप से हीन
मुझे आश्रय देता है सूनापन !
कूलहीन तलहीन
लहरियों से विरहित सोता सागर,
है मेरा उपमान
नास्ति में रहता हूँ छाया बनकर !
सुख वैभव सौन्दर्य !
चाहिए नहीं मुझे इनका वरदान,
एक विराट शून्य में—
मेरे छायातन का हो अवसान !

(मूल-लेखक—प्रो० योने नॉगूची)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेरी चिड़िया उड़ गई !

नीरव-सन्ध्या सी सुन्दर वह चिड़िया उड़ गई, और मैं उसका वह अतीत की सुधि दिलाने वाला, झीनी सी कसक उपजाने वाला, आँखों में सपने बिछाने वाला आकुल गान न सुन सकी !

वह नन्हीं चिड़िया उड़ गई तब.....मेरी चेतना को ठेस लगी, मेरी कल्पना शून्य हो गई, और मेरे जीवन में राग न रहा ?

हेमन्त के आरम्भ से वह आती थी और चुपचाप गाकर उड़ जाती थी.....

परन्तु उस दिन मैंने अपना रेशमीन शालू उस कटीली डाल पर उसे शीत से बचाने को बिछा दिया था; हाय उसी की चमक ने उसे चौंका दिया.....मेरी चिड़िया फिर न आई, और न जी भर कर मैं उसके मीठे तराने ही सुन सकी !

न जाने मेरी चिड़िया चहचहा कर क्षितिज के उस पार कहाँ विलीन हो गई ?

लौट जाओ !

मेरे अन्धकार ग्रसित और मृतप्रायः जीवन में तुम सहसा कैसे आ गए ?

पक्षियों को मुक्त कर मैंने द्वार और वातायन मुद्रित कर लिए हैं, और यहाँ न सूर्य का स्फूर्तिदायक प्रकाश है और न सञ्जीवनी वायु ही !

मैं संसार से भिन्न उस प्रदेश में रहती हूँ जहाँ रात ही रात है फिर, हठी, इस भयङ्कर कालिमा के हृदय को भेद कर तुम यहाँ तक कैसे आ पहुँचे ? कितने सौजन्य की अवज्ञा कर, कितनी आज्ञाओं की उपेक्षा कर, कितने प्रेम की अवहेलना कर तुम यहाँ तक आए.....किन्तु मैं दृढ़-प्रतिज्ञ तुम्हारे लिए कपाट न खोलूँगी !

जहाँ से आए हो वहीं सीधे लौट जाओ.....नहीं तो यह नीरवता तुम्हें लील लेगी.....और तुम सदा के लिए इस आवागमन के फेर में पड़ जाओगे !!

—दिनेशनन्दिनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक नारी की स्थिति पर एक दृष्टि

(३)

हमारी संस्कृति ने शिक्षा को उपयोग और आदर दोनों ही दृष्टियों से प्रथम स्थान दिया है। समाज में जितने प्रकार के आदान-प्रदान सम्भव हो सके, उन सब में शिक्षा का आदान-प्रदान ही ऐसा विशिष्टतम माना गया जिससे देनेवाले तथा लेनेवाले की समान रूप से प्रतिष्ठा बढ़ती थी। जीवन के सभी क्षेत्रों ने, समाज के लिए आवश्यक अन्य व्यवसायों की तुलना में इसे गुरुतम समझ कर अपनाया, क्योंकि समाज के निर्माण और विकास, आदर्शों के प्रतिष्ठापन और सार्वजनिक कल्याण के अनुसन्धान का उत्तरदायित्व विशेष रूप से शिक्षितों के ऊपर ही रहता था। रहना भी स्वाभाविक है, क्योंकि सर्वसाधारण बौद्धिक विकास में अग्रगामियों का ही अनुसरण करता है। परन्तु प्रायः सभी विचारशील जानते हैं कि आधुनिक युग ने इस प्रमाणित सत्य को भी सन्दिग्ध बना दिया।

आज शिक्षा ने केवल पुरातन प्रतिष्ठा ही नहीं खोई, वह सामाजिक दृष्टि से अपनी उपयोगिता भी खो रही है। परिस्थितियों को देखते हुए यह आश्चर्य्य की बात नहीं है, क्योंकि स्वस्थ अवस्था में जो भोजन हमारे लिए अमृत है वही रोग में विष बन जाता है।

हमारी संस्कृति के ज्ञान से शून्य, हमारे सामाजिक विकास से अनभिज्ञ और हमारे जीवन को गहराई से अपरिचित जो शिक्षा हमें प्राप्त हो सकी उसने हमारे जीवन को एक नवीन साँचे में ढालने का प्रयत्न कर उसे विरूप कर डाला। पहले इस क्षेत्र में पुरुष ही अधिक से अधिक संख्या में आये, फलतः उन्हीं के बाह्य जीवन से परिवर्त्तन आरम्भ हुए। यदि वे अपने समाज और जीवन का अध्ययन कर उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिए परिवर्तन स्वीकार करते तो स्त्री के जीवन में स्वतः ही प्रगति उत्पन्न हो जाती और उसे असन्तुष्ट होने का कारण ही न मिलता। परन्तु वे स्वयं ही अपनी सांस्कृतिक और सामाजिक प्रगति से अनभिज्ञ थे, अतः सामूहिक रूप से कोई नया मार्ग ग्रहण करना न उनके लिए सम्भव हो सका और न उन्हें इतने आगे बढ़ने का साहस ही हुआ।

परिणामतः स्त्री का जीवन शताब्दियों पुराने जीर्ण और अनावश्यक बन्धनों से बोझिल ही होता गया। एक ही गृह में जीवन के जो दो भिन्न रूप हो गये थे वे न संयुक्त होकर चल सकते थे और न पृथक् होकर ठहर सकते थे। प्रतिकूल जलवायु में रोपे गये वृक्ष के समान पुरुष नई परिस्थिति में विकास की शक्ति खो बैठा और तृण-झाड़ियों से घिरी वनस्पति के समान स्त्री अपने असंख्य बन्धनों में कान्तिहीन होकर जीर्ण-शीर्ण होने लगी।

आधुनिक शिक्षा की ओर जो स्त्रियाँ अग्रसर हो सकीं उनके भी सामने कोई विशेष लक्ष्य नहीं था। पुरुष अपने एकाकीपन से थक रहा था और स्त्री उसकी स्वच्छन्दता का रहस्य जानना चाहती थी। स्त्री ने अग्रसर होने का प्रयत्न किया और पुरुष ने उसे अपने ही भावी जीवन की पूर्णता समझ कर शक्ति भर सहायता दी। शिक्षितों की न्यून संख्या जितने आश्चर्य का विषय है उससे कहीं अधिक आश्चर्य का विषय शिक्षा का अवश्यम्भावी परिणाम असन्तोष है, जो अभि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शाप की छाया के समान प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति के जीवन को दुरूह बना देता है। प्रत्येक शिक्षित का जीवन सुख की असंख्यक कल्पनाओं के साथ आरम्भ होता है, कर्तव्य-बोध के साथ नहीं, अतएव कुछ ही समय में या तो उसका जीवन, असफल कामनाओं से उत्पन्न निराशा से पूर्ण हो जाता है, या सफलता-जनित स्वार्थपरता से ओत-प्रोत हो उठता है। जीवन-पथ में वह अशिक्षितों से अधिक असहाय है क्योंकि उसके पास न अज्ञानी का अन्धविश्वास है और न विद्वान की अन्तर्दृष्टि। वह मनुष्यता की शिक्षा बिना पाये हुए ही असंख्य कामनाओं का विधाता बन बैठता है, जिससे असमय ही उसे निराशा आ घेरती है। ऐसी निराशा से उसकी सामाजिक उपयोगिता और कार्य करने की क्षमता बढ़ने के स्थान में घटने लगती है।

शिक्षिता स्त्री-समाज के लिए भी यही सत्य है। उनके लिए वह मार्ग दुर्गम है, जिस पर उनकी पूर्वजाएँ सरलतापूर्वक चल चुकी हैं और ऐसे मार्ग का अन्वेषण कठिन है जिसमें प्रेय और श्रेय का समन्वय हो सकता हो। वे भी केवल सुख का ध्येय सामने रख कर जीवन-पथ पर अग्रसर होती हैं और उस ध्येय तक न पहुँच सकने पर अपना सम्पूर्ण जीवन ही दुर्वह समझने लगती हैं। शिक्षा की समाप्ति पर उनके लिए केवल दो ही क्षेत्रों में स्थान रहता है, गृहजीवन और सार्वजनिक कार्य; परन्तु वे प्रायः इन दोनों ही में निराशा के पूर्व-चिन्ह देख लेती हैं। गृह में पुरुष कितना ही शिक्षित होने पर भी स्त्री के प्रति अपनी पुरातन भावना ही अक्षुण्ण रखना चाहता है। वह क्षण भर के लिए भी नहीं भूलता कि वह गृह का स्वामी है और स्त्री उसके लिए रमणी और भार्या ही हो सकती है। यह परम्परा-गत संस्कार इतने प्रबल होते हैं कि इनमें विश्वास न रखने वाले पुरुष भी अवसर आने पर अपने विश्वास के विरुद्ध आचरण करने से नहीं चूकते। स्त्री की जिस स्वाधीनता का पुरुष हृदय से समर्थन करता है, उसी का कार्य से समर्थन करते हुए वह प्रायः नहीं देखा जाता। उसकी इस दुर्बलता से शिक्षिता स्त्रियों की स्थिति और भी अधिक दयनीय हो उठी है, इसमें सन्देह नहीं। स्त्री की शिक्षा पुरुष के समान ही होती है, अतएव वह उसके प्राचीन संस्कारों को मिटाती हुई उसे सुखापेक्षी और असहिष्णु बनाये बिना नहीं रहती। ऐसी स्थिति में गृह में वैसा सामञ्जस्य मिलना कठिन ही नहीं असम्भव हो जाता है जिसके बिना जीवन जीवन नहीं रह जाता। पुरुष स्त्री में अन्ध-अनुगामिनीत्व न पाकर इसे अपनी अवज्ञा समझता है और स्त्री पुरुष के निकट समानता का व्यवहार न पाकर इसे अपने प्रति किया गया अन्याय समझती है।

दोनों ही पक्ष अपने दृष्टिकोण का समर्थन कर सकते हैं, परन्तु इससे शिक्षित दम्पति की समस्या हल नहीं हो सकती। गृह-जीवन के विकास के लिए जिस पारस्परिक त्याग की आवश्यकता होती है, उससे भलीभाँति परिचित हुए बिना स्त्री और पुरुष अपनी समस्या का समाधान पा सकेंगे, ऐसी सम्भावना भी नहीं है। स्त्री ने गृह की कठिनाइयाँ समझ कर ही सार्वजनिक क्षेत्र में भी अपनी क्षमता की परीक्षा की। उसका सुख का ध्येय तो ध्रुव था अतएव इस ध्येय के साथ रहने वाली त्रुटियों से वह रहित नहीं रही। कर्तव्य और साधना के ज्ञान के बिना सार्वजनिक हित का सम्पादन कितना सम्भव हो सकता है, इसपर विचार करने की उसने आवश्यकता नहीं समझी यह सत्य है; परन्तु यह न स्वीकार करना कि ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्त्री को सभी कार्यों में अभूतपूर्व सफलता मिली, स्त्री के प्रति अन्याय होगा। घर के समान बाहर भी पुरुष ने अपने जन्मगत संस्कारों के कारण स्त्री को दुर्बल ही समझा परन्तु इससे स्त्री में स्पर्धा का भाव अधिक बढ़ा। घर में जिस भाव ने विद्रोह को जन्म दिया था, बाहर उससे स्वस्थ प्रतियो-गिता ही उत्पन्न हुई जिससे स्त्री की क्षमता और शक्ति अधिक प्रकाश में आ सकी। फिर भी यह कहना कि आधुनिक स्त्री बाहर के कठिन संघर्ष में अधिक पूर्ण लगती है, उचित न होगा। वह वास्तव में उस निर्धनिता के समान है, जो विदेश में परिस्थिति के अनुसार अपनी शक्तियों का उपयोग करके भी घर को नहीं भूलता।

पुरुष के समान शिक्षित स्त्री ने भी किसी नवीन समाज की रूप-रेखा निर्धारित नहीं की, प्राचीन आदर्शों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में, अपनी संस्कृति और समय के अनुकूल कोई परिवर्तन करने का प्रयत्न नहीं किया और अपनी व्यक्तिगत सफलता या असफलता का सामाजिक मूल्य नहीं आँका। वास्तव में शिक्षिताएँ संख्या में इतनी न्यून थीं और उनकी परिस्थितियाँ इतनी भिन्न रहीं कि उनमें किसी वास्तविक उपादेयता के आधार पर कोई सङ्गठन कठिन था। जहाँ कहीं ऐसे सङ्गठन सम्भव हो सके वे वाह्य व्यवहार से ही सम्बन्ध रखते रहे। सामूहिक रूप से शिक्षित स्त्री, नवीन समाज को किस रूप में देखना चाहती है, इस पर उसने विचार कम किया, परन्तु व्यक्तिगत रूप से वह अपनी विशेष सुविधाओं का उपयोग करना अवश्य जान गई है। अनेक गृहों में आधुनिकता के वातावरण में पली हुई स्त्रियाँ हैं और अनेकों सार्वजनिक क्षेत्रों में भी उनकी संख्या कम नहीं, परन्तु वे सभी पुरुषों की भूलों को दोहरा रही हैं। कहीं गृह-जीवन की कठिनाइयाँ उन्हें सार्वजनिक क्षेत्रों में निर्वासित कर देती हैं और कहीं सार्वजनिक जीवन की नीरसता उन्हें गृह की सीमा में बाँध देती है।

कभी वे परिस्थितियों का अनुगमन करती हैं और कभी परिस्थितियों को उनकी इच्छानुसार बदलना पड़ता है। उनका लक्ष्य अनिश्चित, मार्ग दुरूह और शक्तियाँ अपरीक्षित हैं। ऐसी दशा में यदि उन्हें व्यक्तिगत स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ देखने का अवकाश नहीं मिलता तो इसके लिए केवल उन्हीं को दोषी ठहराना अनुचित होगा। उनकी प्रेरक शक्ति, अपनी स्थिति से विद्रोह और आदर्श, पाश्चात्य स्त्री ही रही, परिणामतः उन्होंने पुरुष के सहयोग से स्वतन्त्र हो जाने ही में अपनी स्वाधीनता समझी। इस प्रवृत्ति से समाज का कितना हित हो सकेगा, यह सोचने का स्त्री को न अवकाश था और न इच्छा। समाज ने इतनी शताब्दियों तक उसके अस्तित्व को अस्तित्व ही नहीं समझा, इसीसे अपनी सुविधा और स्वच्छन्दता के क्षण में स्त्री भी सामाजिक हित की ओर दृष्टिपात न कर सकी। परन्तु कोई भी सामाजिक प्राणी बहुत काल तक समाज के प्रति उपेक्षा का भाव रख कर सुखी नहीं हो सकता। आज की शिक्षित स्त्री भी अपने स्वच्छन्द जीवन में किसी संज्ञाहीन त्रुटि का अनुभव करने लगी है और वह समय दूर नहीं जब उसे अपनी स्वच्छन्दता भी बन्धन जान पड़ेगी।

जिन महिलाओं ने थोड़ी सी शिक्षा के साथ बहुत सी पाश्चात्य आधुनिकता मिलाकर अपने सम्पन्न गृह-जीवन की रूपरेखा निश्चित की, उनमें अधिकांश अपने जीवन को उपयोगी नहीं बना सकी हैं। उनके जीवन में वाह्य आडम्बर की इतनी अधिकता है कि उसके भार से जीवन की विकासोन्मुखी शक्ति भी क्षीण होती जा रही है और सम्भव है कि किसी दिन वे स्वस्थ जीवन का नाम भी भूल जावें। विलास जीवन की रुक्षता को स्निग्ध करने वाली वस्तु हो सकती है, परन्तु उससे जीवन की प्यास बुझा लेना सम्भव नहीं। वृक्ष जल से सींचा जाकर बढ़ता है, घृत से सींचा जाकर नहीं। इस श्रेणी की स्त्रियों के सामने आजीविका की समस्या नहीं है, अधिक शिक्षिताओं के समान उनके गृह में सङ्घर्ष भी नहीं है। वे यदि अपने अवकाश और धन का सदुपयोग कर सकें और जीवन को कौतुक मात्र समझना छोड़ सकें तो उनसे समाज का बहुत अधिक हित हो सकता है।

अधिक शिक्षा ने उनमें से झुकने की शक्ति नष्ट नहीं कर दी है और आवश्यकता ने उन्हें वाह्य सङ्घर्ष के लिए बाध्य नहीं किया है, यह सत्य है, परन्तु उनकी सुखोपजीवी वृत्ति और आडम्बरपूर्ण जीवन उन्हें संसार से परिचय प्राप्त करने का अवसर ही नहीं देता। वे जब तक अपने व्यक्तिगत जीवन से बाहर देखना न सीखेंगी तब तक उनका जीवन विनोद की वस्तु से अधिक मूल्य न रखेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिक्षा का पुनः सङ्गठन

[श्री० गौरीशङ्कर अग्रवाल एम० ए०, एल-एल० बी०]

"किसी राष्ट्र का सबसे बढ़कर महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा है।"

—दादाभाई नौरोजी

इस समय हमारे सामने सबसे महत्वपूर्ण और जटिल समस्या निरक्षर जनता में शिक्षा का प्रसार और ज्ञान की ज्योति दीपित करके अशिक्षा और अज्ञान के अन्धकार का निवारण करना है। शिक्षा का ध्येय प्रेसीडेण्ट बटलर के शब्दों में 'क्रमशः व्यष्टि का समष्टि से आध्यात्मिक सम्बन्ध ही स्थापित करना नहीं है' परन्तु यह 'जीवन में परम मानवी तत्व तथा जीवन-संग्राम के लिए उपयुक्त साधन और तदनन्तर सौख्य का मूल अथवा चरित्र का निर्माण-कर्ता और सभ्यता का निर्मायक है'। शिक्षा जीवन-ज्योति है। स्कूल और शिक्षा-संस्थाएँ ऐसे शक्ति-निकेतन हैं, जो सर्वव्यापी अज्ञानान्धकार, दरिद्रता एवं आपत्तियों को सर्वथा नष्ट करने में समर्थ हैं। अतएव प्रत्येक सभ्य शासन बच्चों को शिक्षा देना अपना सर्वप्रमुख कर्त्तव्य समझता है।

गत शत वर्षों का हमारे देश का शिक्षात्मक इतिहास जहाँ तक शिक्षोन्नति का सम्बन्ध है, अधिकांश शून्य होने के कारण बड़ा ही दुःखद और करुणोत्पादक है। गत शताब्दी के साक्षरों की संख्या जैसा कि तत्कालीन रिपोर्टों, शिक्षा-विशारदों और राजनीतिज्ञों, विशेषतः राजा राममोहनराय, मधुसूदनदत्त, मार्शमैन, वार्ड, एलेकजेण्डर डफ़, मैक्समूलर, एडम, मैटकाफ़ आदि के कथन और लेखों से अवगत होता है, केवल ६ से ८·७ प्रतिशत बढ़ी है। यदि हम शिक्षा-विधान, नीति और दृष्टिकोण को एकदम परिवर्तित, उन्नत और संशोधित न करें और आवश्यकता के अनुसार ही कायापलट करने वाले उपायों और साधनों की योजना न करें तो निरक्षर जनता को शिक्षित बनाने में कम से कम दो सौ वर्ष और लग जावेंगे।

हमारा देश जो एक समय सार्वजनिक शिक्षा में धुरीण, जगत्गुरु, आध्यात्मिक और बौद्धिक शिक्षा का पथप्रदर्शक और अपनी शिक्षा-संस्थाओं और प्रबन्ध के लिए दैदीप्यमान आदर्श था, वह अब किस प्रकार घोर निरक्षरता और अज्ञानान्धकार के इस गहरे गर्त में गिर पड़ा, इस पर यहाँ विचार न करते हुए हमें यह देखना है कि हमारी आधुनिक अवस्था क्या है, कहाँ तक हमने शिक्षा में उन्नति की है और इस दिशा में हमें क्या करना है।

नवीनतम उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार साक्षर लोगों (स्त्री एवं पुरुषों) की संख्या केवल प्रतिशत ८·७ है। हारटौग कमेटी रिपोर्ट (पृष्ठ ४५) के अनुसार सन् १८८१ से १९२२ तक अर्थात् ३० वर्ष अथवा एक पीढ़ी के बीच में साक्षर मनुष्यों की संख्या १३·० से केवल १४·१ प्रतिशत और साक्षर स्त्रियों की संख्या ०·७ से १·० तक बढ़ी है; साक्षर स्त्री और पुरुषों की संख्या एक साथ लेने से पता चलता है कि उनमें ७·० से ८·६ प्रतिशत वृद्धि हुई है, जो नवीनतम आँकड़ों से कुछ ही पीछे है। जब कि गत ६० ७० वर्षों में अन्य सभी सभ्य और उन्नत देशों में साक्षर मनुष्यों की संख्या ५, १० अथवा ६ प्रतिशत से बढ़कर ९६ या इससे भी अधिक हो गई है, यह अत्यन्त आश्चर्यजनक और दुःखद है कि हमारे अभागे देश में १००-१५० वर्षों के विस्तृत काल में जनता अथवा शासन के शिक्षोन्नति के लिए कथित कार्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रयत्न व भारी व्यय करने पर भी साक्षरों की संख्या २ या अधिक से अधिक २·५ प्रतिशत बढ़ी है।

सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार हमारे देश में २३९६९७५१ पुरुष और ४१६९१०५ स्त्रियाँ साक्षर थीं। यह संख्या सम्पूर्ण जन-संख्या का ८.३ प्रतिशत है और यदि १० वर्ष से अधिक आयु वाले लोगों की संख्या के हिसाब से विचार करें तो ११ प्रतिशत है, जब कि दस वर्ष से अधिक अवस्था वाले व्यक्तियों की संख्या इङ्गलैण्ड में ९२·५, फ्रांस में ९४·१, जर्मनी में ९९.१, अमेरिका में ९५·७, जापान में ९६·०, कनाडा में ९४.९ और आस्ट्रेलिया में ९८.७ प्रतिशत है। इस सम्बन्ध में पाश्चात्य सभ्य देशों में हम भारतवर्ष की तुलना केवल जूगोस्लेविया से ही कर सकते हैं। परन्तु क्या इससे सन्तोष किया जा सकता है? इसी रिपोर्ट से यह भी विदित होता है कि हमारे देश में प्रति १३७० व्यक्तियों के अनुपात से केवल एक स्कूल है और जनता के केवल ४·५७ प्रतिशत भाग को शिक्षा प्राप्त कर सकने की सुविधा है, जब कि अन्य देशों में यह सुविधा कई गुनी अधिक है। उदाहरणार्थ इङ्गलैण्ड में १८.८, जापान में १९ और अमेरिका में २३·७ प्रतिशत जन-संख्या के लिए स्कूलों की व्यवस्था की गई है। हमारे देश में शिक्षा के लिए लगभग २७ करोड़ रुपया व्यय होता है, जो प्रति विद्यार्थी २२·९ रुपया पड़ता है, जब कि यही व्यय जापान मे ५८, ब्रिटेन में १७२, कनाडा में १९९ और अमेरिका में २७५ रुपया है। यदि जन-संख्या की दृष्टि से देखा जाय तो भारतवर्ष में जहाँ प्रति व्यक्ति शिक्षा के लिए १ रुपये से भी कम व्यय किया जाता है, वहाँ जापान में ११, इङ्गलैण्ड में ३२.४, कनाडा में ४८ और अमेरिका में ६५ रुपया खर्च होता है।

इससे जो शिक्षा की अवस्था का पता चलता है, वह बहुत ही खेदजनक है। अवश्य ही शिक्षा-प्रणाली और नीति में अभाव तथा दोष हैं। रोग इतना पुराना है और अवस्था इतनी विषम है कि सुधार के लिए शिक्षोन्नति के आजकल के स्वीकृत और व्यवहृत उपायों में मौलिक परिवर्तन करने वाले साधनों की आवश्यकता है। आदर्श प्रस्तावों, ओजस्वी भाषणों और अन्य देशों की आधुनिक स्थिति के तुलनात्मक उदाहरणों से काम नहीं चलेगा, इङ्गलैण्ड, जर्मनी, अमेरिका, कनाडा, जापान और अन्य देशों ने, जो आज सभ्यता के शिखर पर हैं, अपने प्रयत्नों के द्वारा ९० से ९९ तक प्रतिशत जनता को शिक्षित बना दिया है अथवा दूसरे शब्दों में उनके साक्षरों की संख्या प्रतिशत हमारे निरक्षरों की संख्या के बराबर है।

यहाँ तक तो हुई समस्त भारत की बात, परन्तु हमारे संयुक्त प्रान्त की दशा भी इससे विशेष अच्छी नहीं है। अन्तिम मनुष्य-गणना के अनुसार अन्य बड़े प्रान्तों की अपेक्षा इस प्रान्त की दशा बहुत गिरी हुई है और इसके शिक्षितों की संख्या कुल भारत के साक्षरों की संख्या के अनुपात से ⅓ है। सन् १९३१ में यहाँ पर प्रति एक मील पीछे साक्षर मनुष्यों की संख्या जिनकी अवस्था ५ वर्ष या इससे ऊपर है ५५ थी। इसके विपरीत यही संख्या बङ्गाल में ११०, मद्रास में १०८, बम्बई में १०२ और मध्यप्रदेश और बरार में ६० थीं। यह सत्य है कि पिछले दस वर्षों में प्रान्त में इस शिक्षा की वृद्धि बहुत से दूसरे प्रान्तों की अपेक्षा अधिक रही है, तो भी पिछली मनुष्य-गणना की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा के द्वारा जनता का नगण्य अंश ही शिक्षित हुआ है।

आजकल प्रति सौ लड़के और लड़कियों में जो प्राथमिक स्कूलों में होने चाहिये, लगभग मद्रास में ३९, बम्बई में ३४, बङ्गाल में २९ और हमारे प्रान्त में केवल २१ उन स्कूलों में शिक्षा पाते हैं। ३१ मार्च सन् १९३६ को हमारे प्रान्त में ११८९२०४ विद्यार्थी प्राइमरी स्कूलों में, और इस कक्षा तक के ५७६७ विद्यार्थी मिडिल और १६५९० हाईस्कूलों में शिक्षा पाते थे। अर्थात् हमारे प्रान्त में जिसकी जन-संख्या ४ करोड़ ८४ लाख से कुछ अधिक है, प्राइमरी शिक्षा तक की कक्षाओं में केवल १२११५६१ शिक्षार्थी थे। इसका अर्थ यह है कि हमारे प्रान्त में कुल जन-संख्या का २·९ प्रतिशत बच्चे सब प्रकार के प्राइमरी स्कूलों में पढ़ते थे। मद्रास, बम्बई और बङ्गाल के यही आँकड़े, अनुपात और संख्या इससे लगभग ड्यौढ़े और दुगने हैं। यह सर्व-स्वीकृत और सम्मत है कि ६ से ११ वर्ष की आयु वाले बच्चों की संख्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें प्राइमरी स्कूलों में शिक्षा मिलनी चाहिये, कुल जन-संख्या का १४ प्रतिशत है। प्राथमिक शिक्षा-प्राप्ति की आयु के प्रतिशत बच्चों में केवल २१ स्कूलों में शिक्षा पाते हैं अथवा साधारणतः प्रत्येक बच्चे के साथ जो स्कूल में शिक्षा पाता, है लगभग चार ऐसे हैं जिन्हें शिक्षा नहीं मिलती। इस प्रान्त के तत्कालीन शिक्षा-डायरेक्टर श्री एच्० आर० हैरप (H. R. Harrop) के वक्तव्य के अनुसार, जो उन्होंने यू० पी० बेकारी की जाँच कमेटी को दिया है, हमारे प्रान्त में '६ वर्ष से ११ वर्ष की आयु के लगभग १८ लाख बालक और ३० लाख बालिकाएँ ऐसी हैं, जिनकी शिक्षा के लिए किसी प्रकार का कोई साधन नहीं है।' इस प्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-सचिव सर ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव जी ने भी शिक्षा कमेटियों के अध्यक्षों की प्रथम व द्वितीय कान्फ्रेंसों में, जो क्रमशः जनवरी सन् १९३५ और अगस्त सन् १९३६ में लखनऊ में हुईं अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए इन्हीं आँकड़ों की पुष्टि की है। इससे भी यही ज्ञात होता है कि अनिवार्य शिक्षा-प्राप्ति की आयु के ४८ लाख बच्चे ऐसे हैं, जिनकी शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं है और केवल लगभग १२ लाख बच्चे शिक्षा पा रहे हैं। इससे उपरोक्त निष्कर्ष और अनुपात का समर्थन होता है। बालक और बालिकाओं पर पृथक-पृथक विचार करने से पता चलता है कि स्कूलों में पढ़ने वाले लड़कों का अनुपात कुल जनसंख्या का ५·१ और लड़कियों का ०·८ है, प्रतिशत अर्थात् शिक्षा आयु के लड़के एक तिहाई से कुछ अधिक और लड़कियाँ अठारहवें हिस्से के लगभग स्कूलों में शिक्षा पाते हैं। अतः प्राथमिक शिक्षा-प्राप्ति की आयु के कुल बच्चों को शिक्षा देने के लिए वर्तमान शिक्षा सामग्री और साधन को किसी प्रकार साढ़े तीन-चार गुना अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है।

शिक्षा के क़ानून और उसके प्रयोग और परिणाम पर दृष्टिपात करने से यही विदित होता है कि उनसे अभीष्ट और लक्षित फल प्राप्त नहीं हुआ। यू० पी० प्राइमरी शिक्षा का क़ानून सन् १९२३ ई० में पास हुआ था, मगर १९२२ ई० तक किसी म्युनिस्पैलिटी ने उससे लाभ नहीं उठाया। इस समय तक ८५ में से ३६ म्युनिस्पैलिटियों में क़रीब अर्द्ध-संख्यक ने अपने समस्त नगर में और शेष ने विशेषकर बड़े नगरों के कुछ हिस्से में इस सिद्धान्त का महत्व हृदयङ्गम करके अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा आरम्भ कर दी है। यह योजना अधिकांश में चार वर्ष अथवा इससे भी अधिक समय से प्रचलित है और यह आशा हो सकती थी कि दशा सँभल जाय, किन्तु कहते हुए खेद होता है कि अभी तक स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। इन स्थानों में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा अभी तक शैशवावस्था में है और यदि इस इसी परिमाण में प्रयत्न करते रहें तो भी सन्तोषप्रद स्थिति प्राप्त और स्थायी होने में बहुत अधिक समय लग जावेगा। सन् १९२६ ई० में यू० पी० डिस्ट्रिक्ट बोर्ड प्राथमिक शिक्षा क़ानून के पास होने से शिक्षा का कार्यक्षेत्र विस्तृत होकर अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा का सिद्धान्त डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के इलाक़ों अर्थात् ग्रामों में लागू हो गया और इस समय ४८ में से २५ डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में कुछ में कुल भागों में लेकिन अधिकांश में कुछ भागों में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। परन्तु यहाँ पर भी किसी-किसी और विशेषकर सीतापुर के अतिरिक्त किसी जगह कोई विशेष उन्नति या सफलता नहीं हुई है। जिला बोर्डों में भी जितना व्यय किया गया है, उसके विचार से बहुत कार्य हुआ है और भविष्य के लिए मार्ग प्रायः बन्द है और कह दिया जाता है कि इस योजना के अधिक भागों में जारी करने के लिए धन नहीं है।

व्यय के आँकड़ों पर विचार करने से समस्या की जटिलता और स्थिति की गम्भीरता का बेहतर पता चलता है। हमारे प्रान्त में सन् १९३५-३६ में सब मदों से इसमें कुल ८७३१०५३ रुपये व्यय हुए, जिसका ब्यौरा निम्नलिखित है।

प्रान्तीय सरकार का व्यय	५८१३३३२	रुपये
डिस्ट्रिक्ट बोर्ड फ़ण्ड	१७९१९७३	,,
म्युनिसिपल फ़ण्ड	६३५०१७	,,
फ़ीस	३०८३३५	,,
अन्य मदों से	१८२६९६	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगभग १२१२००० विद्यार्थियों की शिक्षा का व्यय ८७ लाख ३१ हज़ार रुपये से कुछ अधिक है जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर करीब ७॥) व्यय होता है, जो कि दूसरे प्रान्तों के शिक्षा व्यय से तुलना करने पर बहुत ही कम है। बम्बई में प्रत्येक विद्यार्थी के ऊपर १८) व्यय होता है। इस कम खर्चे से मालूम होता है कि प्राथमिक शिक्षा को उपयुक्त आर्थिक सहायता नहीं मिल रही है। शिक्षा-विभाग के भूतपूर्व डायरेक्टर के कथनानुसार भी इस प्रान्त की "शिक्षोन्नति आर्थिक कमी के कारण रुकी पड़ी है।" आधुनिक शिक्षा-व्यय प्रति विद्यार्थी ७॥) प्रति वर्ष लेकर भी प्राथमिक शिक्षा में हरेक मद से सार्वभौम अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की स्कीम में क़रीब साढ़े चार करोड़ रुपये व्यय होंगे और उसमें गवर्नमेण्ट, डिट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिसिपल बोर्डों का भाग लगभग पचगुना होगा। शिक्षा वृद्धि की इस योजना के अन्तर्गत यू० पी० प्रान्तीन सरकार को प्राथमिक शिक्षा में कुल प्रान्तों के प्राथमिक शिक्षा पर सरकारी व्यय के आधे से अधिक खर्च करना पड़ेगा और डिस्ट्रिक्ट और म्युनिसिपल बोर्डों को अपनी समस्त आय का तिहाई से अधिक केवल इसी मद में व्यय करना होगा।

प्राथमिक शिक्षा के विवेचन का उपरोक्त विस्तृत ब्यौरा उपस्थित करने से यह सिद्ध होता है कि यदि वास्तव में हम बालकों के प्रति प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिए सचेत और तत्पर हैं, तो हमें अपने आर्थिक साधनों के अन्दर जहाँ तक सम्भव हो शीघ्र ही कोई नवीन विधान, नूतन रीति अथवा कोई हितकर नीति के निर्माण की परमावश्यकता है। हमें इस बात की प्रतीक्षा में निश्चिन्त बैठे रहने से काम नहीं चलेगा कि जादू की लकड़ी घुमाने से या विधाता की देन से प्राथमिक शिक्षा पर व्यय करने के लिए बहुत अधिक धन मिल जावेगा। वरन् इसके विपरीत इस बात का भय है कि विश्वव्यापी मन्दी और आर्थिक सङ्कट, जिसका प्रभाव कृषि-प्रधान देशों विशेषतः भारत में कृषि की पैदावारों की क़ीमतों में विशेष गिरावट होने, हमारी प्रान्तीय सरकार की आर्थिक दशा सन्तोषजनक न होने और म्युनिसिपैलिटियों और डिस्ट्रिक्ट-बोर्डों की आय में निरन्तर कमी होने के कारण उनके पास इतने पर्याप्त साधन नहीं हैं कि वे प्रति वर्ष प्राथमिक शिक्षा पर अधिकाधिक व्यय करने में समर्थ हो सकें। हमारा रोग पुराना और दुस्साध्य है, अतः उसके निवारण के उपाय भी उतने ही उग्र और उथल-पुथल मचाने वाले होने चाहिये, वरना भय यह है कि वे अभीष्ट प्रभाव दिखलाने में असफल रहेंगे।

हमारे जैसे किसी देश, जाति अथवा राष्ट्र के लिए जो साक्षर होने पर कटिबद्ध हो, अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की योजना के महत्व पर सन् १९३७ के इस समय में ज़ोर देना अनावश्यक है, क्योंकि केवल यही एकमात्र साधन है जिससे उद्देश्य सिद्ध हो सकता है। साक्षरता प्राथमिक शिक्षा का स्वाभाविक परिणाम है और जितना प्राथमिक शिक्षा का अधिक प्रचार होगा, उतना ही साक्षरता में वृद्धि होगी; आधुनिक शिक्षा-प्रणाली और नीति सर्वव्यापी निरक्षरता की समस्या के हल करने और ईप्सित फल की प्राप्ति में असफल रही और उससे जो आशाएँ की गई थीं, वह दुराशा मात्र सिद्ध हुईं। अब इनमें क्रान्तिकारी उथल-पुथल कर देने की अत्यावश्यकता है। सरकारी पदाधिकारी, शिक्षा-विशारद, राजनीतिज्ञ, कॉन्फ्रेंस, कमेटियाँ और एसोसियेशन सब की इस समय यही पुकार है कि वर्तमान प्रणाली का पुनःसङ्गठन और पुनर्निर्माण किया जाय। हमारे प्रान्त के तत्कालीन सहकारी डायरेक्टर शिक्षा विभाग श्री० आर० एस० वियर ने अपनी इस प्रान्त की सन् १९३८ की प्राथमिक शिक्षा की रिपर्ट (पैरे १९) (Report of Primary Education for Boys and Girls in U. P. 1934) में उपयुक्त ही कहा है कि "वर्तमान योजनाओं की कायापलट होनी चाहिये। स्कूलों के पुनःसङ्गठन की अनिवार्यरूपेण आवश्यकता है।" हमारे प्रान्त की बेकारी की जाँच कमेटी के सुयोग्य सदस्यों ने भी यही विचार प्रकट करते हुए अपनी रिपोर्ट (पृष्ठ १८६ पैरा ३२९) में लिखा है कि "हमने इस पूर्ण समस्या पर जितना अधिक विचार किया हमें उतना ही अधिक विश्वास होता गया कि अब समय आ गया है जब कि हमें अपनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समस्त शिक्षा नीति में संशोधन करना चाहिये।" स्वर्गीय जस्टिस रानाडे के समय से इसके लिए आन्दोलन हो रहा था, परन्तु सरकार ने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया था। अब सौभाग्यवश कॉङ्गरेस और गैरकॉङ्गरेसी प्रायः सभी प्रान्तीय सरकारों का ध्यान इस स्थिति की ओर आकृष्ट हुआ है और वे वर्तमान व्यवस्था की अकर्मण्यता और असमर्थता महसूस करके शिक्षा-प्रणाली के पुनर्निर्माण पर गम्भीरता से विचार कर रही हैं। इस कार्य के लिए कमेटियाँ, कमीशन और बोर्ड नियुक्त किये जा रहे हैं और सुविख्यात शिक्षा-विशारद शिक्षा-प्रणाली की नीति और आकार के पुनःसङ्गठन के निमित्त अपने-अपने प्रोग्राम पेश कर रहे हैं। हमारे देश के सर्वमान्य नेता महात्मा गाँधी जी ने भी शिक्षा को सार्वभौम उपयोगी और स्वावलम्बी बनाने की योजना प्रस्तुत की है। महात्मा जी की योजना के लिए यह कहना कि यह व्यावहारिक नहीं है, कठिन है; क्योंकि इनकी बहुत सी बातें आरम्भ में ऐसी ही मालूम होती थीं परन्तु अभी तक इसकी सफलता में शङ्का होती है क्योंकि संसार के किसी भी देश में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा स्वावलम्बी नहीं हो सकी है।

यह हर्ष का विषय है और इससे प्रत्यक्ष प्रकट होता है कि इस महत्वपूर्ण विषय में सुधार जो बहुत पहले हो जाने चाहिये थे, अब अवश्य होने वाले हैं और वे शुभस्य शीघ्रम् के अनुसार जितने शीघ्र हों उतना ही श्रेयस्कर है।

हम यथासम्भव आगामी लेखों में अनेक सभ्य, सम्पन्न, समुन्नत और प्रगतिशील देशों के व्यावहारिक और वास्तविक अनुभवों, कमेटियों, कमीशनों, नीतिज्ञों, शिक्षा-विशारदों और विशेषज्ञों की सूचनाओं और सिफ़ारिशों और अपने अनुभवों के आधार पर इन ऐसे अप्रिय किन्तु उपयोगी सुधार, सूचनाएँ और सिफ़ारिशें पेश करने का प्रयत्न करेंगे कि जिन्हें प्राथमिक शिक्षा के प्रबन्धक और बच्चों के भाग्य-विधाता यदि स्वीकृत और कार्यरूप में परिणत करें तो वे जनता में शिक्षा-प्रचार में और निरक्षरता-निवारण में अवश्य ही बड़ी सहायता पहुँचावेंगे। शिक्षा सुधार की वे सूचनाएँ और सिफ़ारिशें भले ही एकमात्र आदर्श और अन्तिम न हों और न समयाभाव अथवा विस्तारभय से उनकी सविस्तार योजना ही देना सम्भव हो सकेगा, किन्तु वे प्रयोगात्मक अवश्य होंगी।

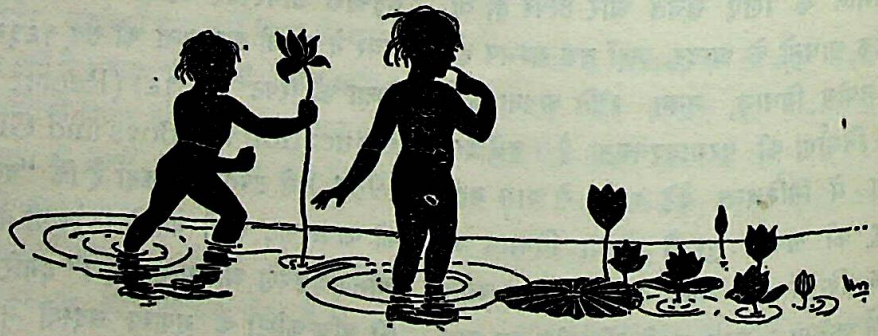

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समाज में विवाह-संस्था का स्थान

[श्री रामस्वरूप व्यास]

विवाह समाज का मुख्य अङ्ग है और यदि इसे सबसे प्रधान कहा जाय तो भी कोई अत्युक्ति न होगी। कितने ही समाजों में यह समाज की आधार-शिला है और इस बात का भी निर्णय करता है कि समाज का सङ्गठन किस प्रकार का होगा। परन्तु जब हम समाज और विवाह के सम्बन्ध के निर्णय करने का प्रयास करते हैं तब हमें यह देखना पड़ता है कि विवाह के द्वारा मनुष्य की किन इच्छाओं की, किन भावनाओं की तृप्ति होती है। जिस आवश्यकता ने विवाह की नींव डाली है वह सहवास की इच्छा है और इसी के द्वारा पूरित जाल पर समाज का अस्तित्व क़ायम है।

कुछ सामाजिक मनो-विज्ञान (Social Psychology) के विद्यार्थियों का मत है कि इस इच्छा के मूल में एक ही भावना है, परन्तु कुछ कहते हैं कि यह भिन्न भावनाएँ हैं। प्रो० फ्राइड (Freud) के मत में यह सहवास की भावना मूल में तो एक है परन्तु इसके दो भेद हो गये हैं जो एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। वह कहता है कि Erotic tendency प्राणियों को एक दूसरे के प्रति आकर्षित करती है और उनमें सम्बन्ध स्थापित करती है। जातीय सहवास की इच्छा इस विस्तृत इच्छा का एक भाग है—प्रो० गिन्सबर्ग का मत है कि सहवास की इच्छा, और जातीय (sex) इच्छाएँ भिन्न हैं। पहली इच्छा अपने से बाहर जाकर दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा है। इस प्रकार का आपस का सम्बन्ध मानसिक विकास के लिये आवश्यक है और मनुष्य के मन की मूल प्रवृत्तियों में से है। चाहे यह दोनों इच्छाएँ एक ही भावना के दो रूप हों या भिन्न, परन्तु इन्हीं दोनों के कारण विवाह समाज में स्थापित हो सका है। साधारणतया सभी की इच्छा किसी को अपना बना लेने या किसी का हो रहने की होती है। जीवन की अनेक परिस्थितियों में, दुख में, सुख में, मनुष्य को दूसरे प्राणी की सहायता और इससे भी अधिक उसकी सहानुभूति की आवश्यकता होती है। एक प्रकार से यह सहानुभूति उसे पुरुष से भी मिल सकती है, परन्तु प्रकृति तथा समाज ने पुरुष को जीवन में जो स्थान दिया है उसके कारण उसकी सहानुभूति की भावना कुण्ठित हो जाती है, क्योंकि सङ्घर्ष-क्षेत्र में उसे ही प्रधान भाग लेना पड़ता है। स्त्री का स्थान अधिक सुरक्षित होने के कारण तथा इस कारण भी कि उसे माता बनना पड़ता है, उसका हृदय अधिक सरस होता है और इसलिये वह पुरुष को अधिक सहानुभूति का दान कर सकती है।

परन्तु व्यक्तिगत जीवन की आवश्यकताओं के अतिरिक्त विवाह सामाजिक हित के विचार से भी उपयोगी है और सार्वजनिक हित-साधन का मार्ग बन सकता है। सबसे प्रथम विवाह एक कुटुम्ब का निर्माण करता है। दूसरे इसके द्वारा बच्चों के पालन-पोषण का भी अच्छा प्रबन्ध हो जाता है और जातीय जीवन पर इसके द्वारा एक प्रतिबन्ध लग जाता है। फ्राइड के अनुसार एक प्रकार से सहवास की इच्छा और जातीयता में—जैसी कि यह कौटुम्बिक सम्बन्ध में पाई जाती है—विरोध है। सांस्कृतिक आवश्यकताएँ सहवास की शक्ति की सहायता मनुष्य की सङ्घर्ष-शक्ति के दबाने के लिये चाहती है जिन्हें यदि यों ही छोड़ दिया जाय तो वह समाज को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नष्ट-भ्रष्ट कर देंगी। इसी कारण नियमों और परम्पराओं के रूप में सब जगह जातीय सम्बन्धों पर तिबन्ध लगे हैं।

प्रायः सभी समाजों में विवाह का मुख्य उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति माना जाता है। प्रकृति के कार्य को सुचारु रूप से चलाने में विवाह का बड़ा स्थान है। प्रत्येक समाज अपने को फला-फूला देखना चाहता है और वह चाहता है कि उसकी रक्षा करने के लिये पर्याप्त जन-संख्या हो। अनेक समाज जन-संख्या बढ़ाने के लिये विशेष मनोवृत्ति पैदा करते हैं, या इस प्रकार की परम्परा क़ायम करते हैं जिससे लोग अधिक से अधिक सन्तान पैदा करें। हिन्दुओं में ऐसी मान्यता दी गई कि बिना पुत्र के पिता को स्वर्ग में स्थान नहीं मिलता। यह मान्यता उस समय से आई है जब प्राचीन आर्यावर्त को बसाने के लिये, तथा आदि-निवासियों पर विजय पाने के लिये उन्हें अपनी जन-संख्या बढ़ाने की आवश्यकता थी। इसीका एक स्वरूप आज हमें मुसोलिनी के उन प्रयत्नों में देख पड़ता है जिनसे वह इटली वालों को अधिक से अधिक सन्तानों के उत्पन्न करने के लिये उत्साहित करता है, तथा इसी कारण हाल ही में रूस में विवाह-विच्छेद को अधिक कठिन बना दिया गया है।

विवाह संस्था का आरम्भ कब से हुआ इस विषय में कोई निश्चित मत नहीं मिलता। आरम्भ में जब मनुष्य छोटे-छोटे समूह बना कर रहता था तब सबसे बलवान मनुष्य ही सब वस्तुओं का—स्त्रियों का भी स्वामी होता था। एक से अधिक अर्थों में विवाह का सम्पत्ति के साथ घना सम्बन्ध है। स्त्री आरम्भ में एक सम्पत्ति के रूप में ही थी और जब जङ्गली जतियाँ दूसरी जातियों पर अधिकार करती थीं तो उनकी दूसरी वस्तुओं के साथ उनको स्त्रियों को भी ले जाती थीं और जब मनुष्य खेती करने लगा तब वह मजदूरी का काम अधिकतर स्त्रियों से लेता था और ग़ुलामों में स्त्रियाँ होती थीं। उस समय ही नहीं, इस समय भी अनेक देशों में ऐसी प्रथाएँ हैं जो इस ओर निर्देश करती हैं। हमारे यहाँ की कन्यादान की प्रथा का यही अर्थ होता है कि कन्या दान करने की वस्तु है। मार्क्स के मत को मानने वाले इतिहास-वेत्ताओं का मत है कि विवाह की सृष्टि सम्पत्ति के उत्तराधिकार को क़ायम रखने के लिये हुई और इसलिए भी विवाह का सम्पत्ति से अटूट सम्बन्ध है। विवाह का अपहरण से भी घनिष्ट सम्बन्ध बताया जाता है। ऊपर बताया ही जा चुका है कि किस प्रकार जङ्गली जातियों में स्त्रियाँ अपहरण करके लाई जाती थीं और विवाह की प्रथाओं में कहीं-कहीं अब भी अपहरण की घटना बरती जाती है। बाली में विवाह से पूर्व लड़की का अपहरण किया जाता है और हमारे यहाँ भी बारात ले जाने की प्रथा उस समय का अवशेष चिह्न है जब अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर हम विवाह के लिये स्त्रियों का अपहरण करने जाते थे।

विवाह अनेक प्रकार के होते हैं। एक वह जिसमें एक पुरुष का एक ही स्त्री के साथ में सम्बन्ध होता है। इस प्रकार के विवाह ईसाई जातियों में—यूरोप और अमेरिका में—प्रचलित हैं। दूसरे वह हैं जिनमें एक पुरुष एक से अधिक स्त्रियों से विवाह कर सकता है। इस प्रकार के विवाह की हिन्दू और मुस्लिम धर्मों में आज्ञा दी गई है। इसके अतिरिक्त एक प्रकार के विवाह वह हैं जिनमें एक ही स्त्री के अनेक पति होते हैं। इस प्रकार के विवाह का एक उदाहरण तो हमें द्रौपदी के पाँचों पाँडवों के साथ विवाह में मिलता है और आजकल भी हिमालय की पहाड़ी जातियों में कहीं-कहीं यह विवाह प्रचलित है। इसके अतिरिक्त विवाह में इस बात पर भी ध्यान दिया जाता है कि किस प्रकार से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। वह सम्बन्ध जो वर-कन्या पक्ष के लोगों की सम्मति से होता है वह अच्छी दृष्टि से देखा जाता है, और वह सम्बन्ध जो वर-कन्या बिना कर स्थापित कर लेते हैं उसे कहीं-कहीं अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता परन्तु वह सम्बन्ध जो अपहरण करके स्थापित किया जाता है सबसे बुरा समझा जाता है।

हमारे देश में प्राचीन काल से हिन्दुओं में जो विवाह की प्रथा प्रचलित है वह कई दृष्टि से विशेष ध्यान देने योग्य है। हिन्दू विवाह शरीर का सम्बन्ध नहीं माना जाता, वह तो आत्मा का सम्बन्ध है और क्योंकि आत्मा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमर है इसलिए विवाह का सम्बन्ध भी अटूट है, तथा इसी दृष्टि से यह भी माना जाता है कि पति के मर जाने पर भी उसका स्त्री के साथ सम्बन्ध बना रहता है। और इसी कारण जीवन भर वैधव्य-पालन तथा सती-प्रथा को श्लाघ्य समझा जाता है। हिन्दू विवाह में विच्छेद भी नहीं हो सकता। यहाँ उन कुरीतियों को गिनाना अनुचित न होगा जिनकी समय-समय पर सुधारकों ने कड़ी टीका की है। मुख्य उनमें बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह तथा विधवा-विवाह का न होना है। बाल-विवाह तथा वृद्ध-विवाह के विरुद्ध और विधवा-विवाह के पक्ष में आन्दोलन करते हुए हमें काफ़ी समय हो गया और इसके परिणाम स्वरूप इन बातों के विषय में समाज का दृष्टिकोण धीरे-धीरे बदलता जा रहा है परन्तु एक-दो प्रश्न हाल ही में विवाह के सम्बन्ध में उपस्थित हो गये हैं और वह हैं विवाह-विच्छेद तथा स्त्री-पुरुष का स्वयं अपने साथी ढूँढने का अधिकार। इन विषयों में जनमत धीरे-धीरे बदलेगा।

दूसरे देशों में विवाह शरीर का सम्बन्ध माना जाता है और साधारणतः जीवन भर का होता है। ईसाइयों के विवाह का मन्त्र यह है कि 'हम एक दूसरे के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हैं। जब तक मृत्यु, हमें अलग न कर दें' (until death do us part)। साधारणतः सब देशों में विवाह-विच्छेद हो सकता है।

प्रेम का आकर्षण विवाह का मुख्य अङ्ग होता है। प्रेम को जातीय आकर्षण से अलग किया जा सकता है या प्रेम जातीय आकर्षण का एक दूसरा रूप है इस विषय में चाहे लोगों के विभिन्न मत हो सकते हों परन्तु इस विषय में तो लोगों के दो मत नहीं कि विवाह को क़ायम रखने में प्रेम विशेष स्थान रखता है। कवियों के 'रोमांटिक' प्रेम या आध्यात्मिक भक्ति को छोड़ कर यदि हम देखें तो प्रेम का आकर्षण ही विवाह को सफल बनाता है। और सभी सामाजिक व्यवस्थाओं में प्रेम का थोड़ा बहुत स्थान होता है। जिन सामाजिक व्यवस्थाओं में व्यक्ति को प्रधानता दी जाती है वहाँ विवाह से पहिले प्रेम करने की स्वतन्त्रता दी जाती है, जैसा कि यूरोप में। परन्तु जिन व्यवस्थाओं में कुटुम्ब प्रधान होता है वहाँ व्यक्ति को इतनी अधिक स्वतंत्रता नहीं दी जाती जैसा कि हमारे यहाँ। साथ ही यह भी निश्चय है कि प्रेम कम हो जाने पर जहाँ सम्बन्ध-विच्छेद की अनुमति है, विवाह-सम्बन्ध टूटते हैं और जहाँ ऐसी आज्ञा नहीं वहाँ वैवाहिक जीवन कलहमय हो जाता है।

प्रेम का आकर्षण कुछ ऐसा होता है कि व्यक्ति के मन का इस पर कुछ प्रभुत्व नहीं होता। ऐसा नहीं होता कि यदि व्यक्ति चाहे तो प्रेम करे, चाहे न करे। हाँ, कुछ बाह्य कारण ऐसे हो सकते हैं जिनके कारण प्रेम उपज सकता है। स्त्री-सौंदर्य्य और यौवन में जो नैसर्गिक आकर्षण होता है उसके कारण प्रेम इनकी ओर खिंचता है और कहीं-कहीं प्रेम किसी के विशेष गुणों, दो व्यक्तियों या समानताओं के कारण होता है। इसलिये यदि स्त्री-पुरुष में सौंदर्य्य के अतिरिक्त स्वभाव और विचार की भी समानता हो तो वैवाहिक सम्बन्ध अधिक अटूट और आदर्श बन सकता है।

आधुनिक समय में कुछ विचार-धाराएँ इस प्रकार की चल गई हैं जिससे विवाह में भविष्य में बहुत परिवर्तन होने की सम्भावना है। इनमें प्रधान हैं स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता विषयक हलचल, परम्परा से चले आये हुए नतिक प्रतिबंधों की कमज़ोरी, तथा बहुत से व्यक्तिगत कर्तव्यों का राज्य के ऊपर चला जाना। पश्चिम में स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता का प्रश्न बहुत कुछ पनप चुका है और वहाँ पर आर्थिक रूप से स्वतंत्र स्त्री समाज का एक विशिष्ट अङ्ग बन चुकी है। वहाँ प्रत्येक स्त्री की शिक्षा कुछ ऐसी होती है कि आवश्यकता पड़ने पर वह अपनी जीविका उपार्जन कर सके, और अनेक लड़कियाँ अपने कुटुम्बियों की विवाह से पहले अर्थोपार्जन कर सहायता करती हैं। इस कारण पहिले जो स्त्रियाँ केवल आर्थिक कारणों के कारण विवाह करती थीं वह इससे मुक्त हो सकती हैं। स्त्रियों के आर्थिक स्वतंत्रता के पीछे यह बात छिपी हुई है कि उन्हें चाहे पुरुषों ने आजकल की व्यवस्था में जीवन-सङ्घर्ष से भले ही मुक्ति दी हो परन्तु साथ ही उन्होंने स्त्रियों को अपने खिलौने के समान भी तो बनाया। अब उनका स्वाभिमान जागृत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो गया है और वह इस अवस्था को पसन्द नहीं करतीं। इसी कारण उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में उतरने का निश्चय किया है क्योंकि वह समझती हैं कि बिना आर्थिक स्वतंत्रता के स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं हो सकता। और यही मनोवृत्ति विवाह-संस्था में विशाल रूपान्तर करने के लिये काफी है।

परम्परागत नैतिकता में भी न उतना विश्वास ही रहा है और न जातीय सम्बन्ध के विषय में पाप-पुण्य का दृष्टिकोण ही सर्वमान्य रहा है। आजकल के लोग कहते हैं कि केवल कुछ मन्त्रों के उच्चारण से ही कोई चीज पाप-पुण्य नहीं बनाई जा सकती। इस मान्यता पर कि आजकल की विवाह-संस्था का रूप स्वाभाविक है कितने ही आक्रमण हो चुके हैं। सुप्रसिद्ध विचारक बरट्रॉंड रसल का मत है कि विवाह-संस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है। वह जातीय सम्बन्ध और बाल-बच्चों की देख-रेख को दो विभागों में विभक्त करने के मत में हैं। जहाँ तक जातीय सम्बन्ध या प्रेम का प्रश्न है वहाँ तक तो वह स्त्री-पुरुष को पूरी स्वतन्त्रता देना चाहते हैं, परन्तु सन्तानोत्पत्ति के बाद वह बच्चों के लालन-पालन को प्रधानता देते हैं। हमारे यहाँ के भी एक प्रसिद्ध डॉक्टर कर्नल शोखे ने भी इस प्रकार का मन्तव्य दिया है कि जातीय जीवन की तुष्टि के लिये विवाह-संस्था अनुपयुक्त साबित हुई है और कितने दूसरे डॉक्टरों ने उनसे सहमति की है। और रूप तो इस क्षेत्र में व्यावहारिक रूप से काम कर रहा है। वहाँ के विशाल जन-समुदाय ने परम्परागत नैतिकता को बिलकुल छोड़ दिया है और विवाह की नैतिकता उनके लिये एक व्यक्तिगत प्रश्न हो गया है। यहाँ विवाह के बाहर भी जातीय सम्बन्ध बुरी दृष्टि से नहीं देखा जाता।

राज्य ने आजकल माता-पिता के बहुत से कर्तव्य अपने ऊपर ले लिये हैं। पहिले जिन बातों का प्रबन्ध माता-पिता को करना पड़ता था अब उन बातों का प्रबन्ध राज्य की ओर से होता है। बच्चों के स्वास्थ्य की देख-रेख तथा उनकी शिक्षा का प्रबन्ध तो सभी देश करते हैं परन्तु कहीं-कहीं तो राज्यों की ओर से बच्चों के पालन-पोषण का भी प्रबन्ध है। राज्य अधिक बच्चे वाले माँ-बाप को सहायता भी देता है।

इन सब कारणों से भविष्य का विवाह हमारे विवाह से भिन्न होगा। परन्तु चाहे कुछ भी हो, जब तक मनुष्य, मनुष्य है उसे दूसरे सहयोगी की इच्छा होगी और जातीय जीवन में एक सहयोगिनि की भी। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। चाहे विवाह का बाह्य रूप सामाजिक अवस्थाओं में परिवर्तन के कारण कितना ही बदल जाय, परन्तु यह सम्बन्ध मनुष्य की उन इच्छाओं की पूर्ति करता रहेगा जिनकी यह आज कर रहा है।

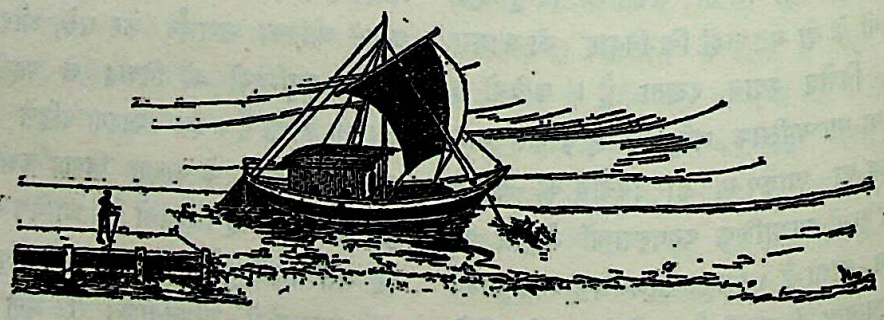

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़मीन और खेती की समस्या

[श्री० रामकिशोर प्रसाद अग्रवाल, एम० ए०]

भारत के दो तिहाई जन-संख्या की साधारण जीविका खेती से है। इस दो तिहाई जन-संख्या में वे लोग भी शामिल हैं जो खुद खेती नहीं करते, पर किसी न किसी तरह जमीन की आय पर ही जिन्दगी बसर करते हैं। उनमें वे लाग हैं जो जमीन के मालिक हैं और मालिक होने की हैसियत से लगान वसूल करते हैं अथवा बटाई प्रथा द्वारा पैदावार में कहीं आधे और कहीं आधे से भी अधिक के साझीदार हो जाते हैं, तथा खेत-मजदूर जो दूसरों के खेतों में मजूरी करते और मजूरी की आय पर ही जीवन-निर्वाह करते हैं। ३३ करोड़ की जन-संख्या में २२ करोड़ १६ लाख व्यक्ति ऐसे हैं जिनकी आय खेती से है। इस २२ करोड़ में १७ करोड़ ३१ लाख व्यक्ति खुद खेती करते हैं। १ करोड़ की आय खेती की ज़मीन के लगान से है और ३ करोड़ ७६ लाख खेत-मज़दूर हैं। इस प्रकार २३ करोड़ की संख्या में लगभग १ करोड़ ज़मींदार और बाक़ी २२ करोड़ किसान तथा खेत-मज़दूर हैं।

ज़मीन, काश्तकार और सरकार का सम्बन्ध भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न तरह का है। यह सम्बन्ध सारे देश में मुख्यतया तीन प्रकार का है जो ज़मींदारी, महालवारी और रैय्यतवारी प्रथा के नाम से पुकारा जाता है। रैय्यतवारी प्रथा बम्बई और मद्रास में प्रचलित है। इस प्रथा में सरकार और काश्तकारों के बीच, कोई तीसरा व्यक्ति नहीं रहता। रैय्यत ही ज़मीन के मालिक होते हैं और वे सीधे सरकार को टैक्स देते हैं। यह टैक्स सिद्धान्ततः ज़मींदारी प्रथा के समान ही सदा के लिये निश्चित है पर व्यवहार में ऐसा नहीं होता। १८५५-५६ के Madras Administration Report में रैय्यतवारी प्रथा की परिभाषा इस प्रकार की गई है :—

"Under the Rayatwari system, every registered holder of Land is recognised as its proprietor, and pays direct to government. The distinguishing feature of Rayatwari is the limitation in perpetuity of the demand of the state on the land"

अर्थात्—"रैय्यतवारी प्रथा में प्रत्येक व्यक्ति जिसके नाम में ज़मीन रजिस्ट्री है उसका मालिक समझा जाता है और सीधे सरकार को कर देता है। रैय्यतवारी प्रथा की विशेषता यह है कि ज़मीन से सरकार की आय सदा के लिये बँधी हुई है।" पर इसके विपरीत मद्रास और बम्बई में जब-जब नया बन्दोबस्त हुआ है टैक्स, उपज और गल्ले की क़ीमत के अनुसार बढ़ता ही गया है।

महालवारी प्रथा—संयुक्त प्रान्त तथा मध्य प्रदेश में पाई जाती है। इस प्रथा में दोनों ही तरीक़े पाये जाते हैं अर्थात् कहीं रैय्यतवारी जिसमें रैय्यत ही मालिक है और कहीं ज़मींदारी जिसमें रैय्यत ज़मींदारों को लगान देते हैं। भेद सिर्फ़ यह होता है कि रैय्यतवारी तथा ज़मींदारी प्रथा की तरह इसमें टैक्स सदा के लिये निश्चित नहीं है। यहाँ के ज़मींदारों और बङ्गाल, बिहार के ज़मींदारों में फ़र्क़ यह होता है कि बङ्गाल और बिहार के ज़मींदारों की जमा 'परमानेण्ट सेटलमेण्ट' द्वारा सदा के लिये बँध गई है, पर महालवारी प्रथा के अन्दर आने वाले ज़मींदारों की जमा हर साल, उपज और गल्ले की क़ीमत के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है।

ज़मींदारी प्रथा—बङ्गाल, बिहार, उड़ीसा और मद्रास के कुछ हिस्सों में भी प्रचलित है। इसमें सरकार को मिलने वाली रक़म सदा के लिये निश्चित कर दी गई है और ज़मींदारों को रैयतों के लगान घटाने-बढ़ाने का अबाध अधिकार दे दिया गया है। सरकार Perma-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

nent Settlement की शर्तों के अनुसार उनके इस अधिकार में हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

क्षेत्रफल के विचार से रैय्यतवारी प्रथा भारत के बहुत कम हिस्सों में है। अधिकांश हिस्सों में ज़मीदारी प्रथा ही प्रचलित है, जिनमें से कुछ में महालवारी सेटलमेण्ट होता है और कुछ में इस्तदमामी बन्दोबस्त है।

इसके अलावा पञ्जाब तथा सीमा-प्रान्त आदि में कई भिन्न-भिन्न प्रथाएँ हैं। कहीं गाँवों पर सामूहिक रूप से टैक्स है जिसे ग्राम-पञ्चायतें वसूल कर सरकार को दे देती हैं और कहीं स्वतन्त्र व्यक्ति जिनके अधिकार में कई गाँव हैं, सरकार को स्वतन्त्र रूप से टैक्स देते हैं।

खेती से आय

प्रोफ़ेसर के० टी० शाह और खम्बाटा की गणनानुसार सन् १९२१ में भारत की खेती की आय उस समय गल्ले की दर के अनुसार, कुल १२८८ करोड़ रुपये थी। इसमें खाद्य तथा अखाद्य सभी तरह की उपज शामिल है। खाद्य पदार्थों की उपज १०५२ करोड़ और अखाद्य पदार्थों की २३६ करोड़ है, जिसमें २५·६ करोड़ एकड़ भूमि लगी हुई थी। इस भूमि पर सरकार को ३१·९७ करोड़ रुपये टैक्स मिले। इस प्रकार प्रति एकड़ पर सरकार को १।)॥ औसत टैक्स मिला। यह १।)॥ यद्यपि सारे भारत की औसत के हिसाब से है, किन्तु प्रान्तों का औसत इससे भिन्न-भिन्न है। मद्रास में प्रति एकड़ उपजाऊ भूमि का औसत टैक्स २॥), बम्बई में १॥=) और बङ्गाल में १=) है। इनसे यह स्पष्ट है कि जहाँ रैय्यतों को खुद टैक्स देना पड़ता है अथवा जहाँ सरकार को लगान घटाने-बढ़ाने का अधिकार है वहाँ सरकार को उन प्रान्तों का दूना या ड्योढ़ा टैक्स प्रति एकड़ मिलता है जहाँ ज़मीदारों को टैक्स देना पड़ता है और "परमानेण्ट सेटलमेण्ट" है। बङ्गाल सरकार के 'लैंड रेवेन्यू' की आय आज भी वही ३ करोड़ है जो सन् १७९३ ई० में लार्ड कार्नवालिस के द्वारा निश्चित कर दी गई थी, यद्यपि रैय्यतों को उस समय से चौगुना लगान तथा अन्य कितने ही गैर क़ानूनी अबवाब ज़मीदारों को देने पड़ते हैं; जहाँ सन् १७९३ में ज़मीदारों को ४ करोड़ की आमदनी में से ३ करोड़ अर्थात् ७५ फ़ी सदी सरकार को दे देने पड़ते थे वहाँ अब सरकार को १६ करोड़ में से ३ करोड़ अर्थात् कुल १९ फ़ी सदी टैक्स मिलता है। मद्रास और बम्बई में जहाँ रैय्यतों को क्रमशः २॥) और १॥=) प्रति एकड़ देना पड़ता है सरकार को पूरा-पूरा मिल जाता है। पर बङ्गाल में जहाँ रैय्यतों को उसका चौगुना देना पड़ता है सरकार को केवल १=) ही प्रति एकड़ मिलता है।

उपरोक्त आँकड़ों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ज़मीदारी प्रथा सरकार की दृष्टि से भी हानिकारक है और किसानों की दृष्टि से भी, पर सरकार एक समुदाय होने के कारण इस हानि को उतना नहीं महसूस करती जितना किसान।

नये शासन-विधान के जारी होने के पहिले उन किसानों का शासन में कुछ भी अधिकार न था। मताधिकार लगान की एक निश्चित संख्या के आधार पर होने के कारण अत्यन्त ही सङ्कुचित था और यह संख्या अधिक होने के कारण केवल बड़े-बड़े ज़मीदार ही कौंसिलों में चुने जाते थे। कौंसिलों में जाकर वह अपने लाभ के मनमाने क़ानून बनाते थे और किसानों का प्रतिनिधित्व न होने के कारण, उनके स्वार्थों और हितों का उचित संरक्षण न हो पाता था। नये शासन-विधान द्वारा मताधिकार बढ़ा दिये जाने के कारण प्रान्तों में जनता की प्रतिनिधि सता क़ायम हो गई है और स्वभावतः ही ज़मीन और खेती की समस्या उनका प्रधान कार्य्यक्रम हो गया है। कॉङ्गरेसी मिनिस्ट्री क़ायम होने के पहिले किसानों की दयनीय दशा में सुधार न होने का एक कारण और भी था। शिक्षा के अभाव के कारण बहुत से ग़रीब किसान शासन के पेचीले यन्त्र को न समझ सकते थे। वे अपनी ग़रीबी को विधाता की मार समझ कर चुप बैठे रहते थे। आधुनिक साधनों द्वारा ज़मीन की पैदावार बढ़ाई जा सकती है, उन्नत उपायों द्वारा बाढ़ रोकी जा सकती है, सूखे दिनों में भिन्न-भिन्न तरीक़ों द्वारा सिंचाई की जा सकती है, ज़मीदारों के ग़ैर क़ानूनी वसूली तथा बेगारी आदि से नजात पाई जा सकती है आदि बातें वे जानते तक न थे। कॉङ्गरेस ने प्रचार-कार्य द्वारा उन्हें अपनी स्थिति समझा दी है और वे किसान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आन्दोलन द्वारा अपनी भलाई के लिये स्वयं कटिबद्ध हो गये हैं।

चूँकि ज़मीन और खेती की समस्या भारत की तीन चौथाई जन-संख्या की समस्या है, इसलिये कॉङ्गरेसी मिनिस्ट्री ने प्रायः सभी प्रान्तों में इसे ही पहिले अपना कार्य्यक्रम बनाया है।

बिहार, संयुक्त प्रदेश, मध्य प्रदेश और उड़ीसा इन सभी व्यवस्थापिकाओं में कृषि-सुधार सम्बन्धी बिलें पेश हो चुकी हैं जिसके कारण देश भर के ज़मीदारों में हल-चल मच गई है।

बिहार

बिहार में कृषि की आमदनी पर टैक्स लगाये जाने की नीति का प्रस्ताव पास हो चुका है। यह टैक्स ५००० से ऊपर की वार्षिक आमदनी पर लगाया जाने को है। इस प्रकार यह टैक्स बड़े-बड़े ज़मीदारों से ही सम्बन्ध रखता है छोटे-छोटे ज़मींदार इसके दायरे में नहीं आते। ज़मींदारों की ओर से इसका तीव्र विरोध हुआ है। उनके विरोध का आधार यह है :—

(१) परमानेएट सेटलमेएट की रू से सरकार ज़मींदारों से निश्चित टैक्स के अतिरिक्त और कोई कर नहीं वसूल कर सकती। (२) जिस वक़्त लार्ड कार्नवालिस के द्वारा परमानेएट सेटलमेएट किया गया था, उस वक़्त ज़मींदारों ने घाटा सह कर भी इस उम्मीद में यह बन्दोबस्त मञ्जूर किया था कि आगे चलकर वे ज़मीन में सुधार कर अपनी आय बढ़ा सकेंगे। (३) ज़मींदारों की आमदनी में जो वृद्धि हुई है वह उनके उद्योग और मिहनत का फल है। बहुत सी ज़मीन जो उपजाऊ नहीं थी उसे उन्होंने सिंचाई आदि का प्रबन्ध कर उपजाऊ बना लिया है (४) परमानेएट सेटलमेएट के समय से अब तक जायदाद और ज़मींदारी के मालिकों में बहुत परिवर्तन हुआ है। ज़मींदारियाँ उन्हीं के हाथों नहीं हैं जो परमानेएट सेटलमेएट के समय उसके मालिक थे, बल्कि ज़मींदारी की बढ़ी हुई आय के हिसाब से बढ़ी हुई क़ीमतों पर उन्होंने उसे पुराने मालिकों से खरीदा है। उनके इस तर्क में बहुत कुछ सार है जिन पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाना चाहिये। समय-समय पर पत्रों में उनके इन तर्कों पर प्रकाश डाला गया है तथा बिहार की ऐसेम्बली में भी माननीय प्रीमियर साहब ने अपने भाषण में इन तर्कों पर प्रकाश डाला था।

बिहार के ऐडवोकेट जेनरल बाबू बलदेवसहाय ने अपने भाषण में यह स्पष्ट कर दिया है कि कृषि-आय-कर ग़ैर क़ानूनी नहीं है। परमानेएट सेटलमेएट के अनुसार सरकार 'लैंडरेवेन्यू' अवश्य बढ़ा नहीं सकती, पर कृषि-आय-कर लगाने का सरकार को निश्चित अधिकार है। New Government of India Act 1935 में भी कृषि-आय-कर प्रान्तीय टैक्स की सूची में दर्ज है तथा सन् १८६० ई० में बङ्गाल के ज़मीदारों पर कृषि-आय-कर लगाया जा चुका है। (२) यद्यपि सन् १७९३ में ज़मीदारों को अपनी आमदनी का ९० फी सदी सरकार को दे देना पड़ता था, आज वे अपनी आमदनी का एक छोटा सा अंश ही सरकार को देते हैं (३) यह आमदनी उन्होंने ज़मीन में सुधार कर नहीं बढ़ाई है—कम से कम उनकी आमदनी, ज़मीन के सुधार के अनुपात से बहुत ज़्यादा बढ़ गई है। ज़मीन में जो कुछ सुधार हुआ भी है उसका श्रेय केवल ज़मीदारों को ही नहीं है, रैय्यतों ने अपनी मिहनत से जङ्गलों आदि को साफ कर उन्हें खेती के योग्य बनाया है, ज़मीदारों की तो सिर्फ पूजी रही है। अगर किसान इतनी मिहनत के बावजूद भी चौगुना लगान दे सकते हैं तो क्या कारण है कि ज़मीदार आय-कर न दे सकें। (४) यद्यपि ज़मीदारों ने ज़मीदारियाँ, अपनी मिहनत की कमाई से वर्तमान आमदनी के आधार पर बढ़ी हुई क़ीमत में ही खरीदी हैं, तथापि इस से कृषि-आय-कर के लगाने में कोई बाधा नहीं पड़ती। यह प्रश्न, ज़मीदारी प्रथा अगर कभी उठा देना उचित समझा गया तो उस समय विचारणीय हो सकता है, जब कि कृषि के सिवा अन्य सभी तरह के आय पर इनकम-टैक्स लागू है तो कृषि की आय पर इनकमटैक्स न लगाना अन्याय-पूर्ण और अतर्कसङ्गत है। इसका परिणाम उद्योग-धन्धों को निरुत्साहित कर खेती को प्रोत्साहन देना होता है।

कृषि-आय-कर के अलावा, किसानों की तकलीफें दूर करने के लिये एक Bihar Tenancy Amend-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ment Bill व्यवस्थापिका में पेश हो चुका है जो विचारार्थ Select Committee को सुपुर्द किया गया है। इसके द्वारा किसानों को जो रियायतें दी गई हैं उनमें से कुछ ये हैं :—

(१) सन् १९११ और १९३६ के बीच लगान में जो इज़ाफा हुआ है वह रद्द किया जाय (२) लगान के थोड़े से बकियौने में रैय्यतों की सारी जायदाद नीलाम करा लेने की अन्यायपूर्ण प्रथा बन्द हो और केवल उतनी ही ज़मीन नीलाम हो जितने से बकियौता सध सके या किसान की सारी ज़मीन ७ वर्ष तक ज़मीदार के यहाँ बन्धक रहे (३) गैर क़ानूनी वसूलियों और बेगार आदि का पता लगने पर कलक्टर ज़मीदारों को जुर्माने और क़ैद की सज़ा दें (४) भावली प्रथा, दानाबन्दी बटाई वग़ैरह उठा दी जाय आदि-आदि।

ज़मीदारों ने इस बिल की प्रत्येक धारा का आमूल विरोध किया है, क्योंकि वे किसानों को दी गई हुई इन थोड़ी सी रियायतों को भी बर्दाश्त नहीं कर सकते। उधर किसान-सभा बिना हर्जाना दिये ही ज़मीदारी प्रथा का अंत कर देने की ज़ोरदार माँग कर रही है। शासन के मौजूदा अधिकारों के अन्दर किसानों की ये क्रान्तिकारी माँगें पूरी नहीं की जा सकतीं। ज़मीदार और किसानों के इस संघर्ष का अन्तिम परिणाम क्या होगा यह अभी नहीं कहा जा सकता।

संयुक्त प्रदेश

युक्त प्रान्तीय ऐसेम्बली में भी लगान सम्बन्धी एक बिल पेश हो चुका है तथा Agriculturer's Relief Bill सेलेक्ट कमीटी को विचारार्थ सुपुर्द किया जा चुका है जिसकी रिपोर्ट भी प्रकाशित हो गई है। इसके अनुसार अदालत की वर्तमान फीस में कर्ज़दार किसानों के लिये अर्जी देने पर कमी की जा सकेगी। लगान बिल द्वारा किसानों की बेदखलियाँ रोकने तथा बक़ाया लगान में माफी देने की योजना की गई है।

इसके सिवा उड़ीसा, मध्य प्रदेश, तथा बङ्गाल में भी बेगारी और गैर क़ानूनी अबवाब रोकने के लिये क़ानून बनाये गये हैं। भिन्न-भिन्न प्रान्तों में इनके सिवा और कितने ही छोटे-मोटे क़ानून पास हुये हैं जिनसे किसानों को बहुत कुछ सुविधाएँ मिली हैं।

उपरोक्त रिपोर्ट से पता चलता है कि खेती और ज़मीन की समस्या में काङ्गरेसी सरकार ने मुख्यतया इन तीन बातों पर ही अधिक ध्यान दिया है अर्थात् लगान में कमी, बेदखली में रुकावट, गैर क़ानूनी वसूलियों पर बन्दिश तथा ज़मीदारों एवं उनके अमलों की बेईमानी और रसीदें न देना, थोड़े से बकियौने में सारी ज़ायदाद नीलाम करा लेना आदि पर प्रतिबन्ध। किन्तु केवल इनसे ही किसानों की दशा में सुधार नहीं हो सकता, और उनकी गरीबी दूर नहीं हो सकती।

किसानों की दर्दनाक ग़रीबी के कितने ही कारण हैं जिन्हें उङ्गलियों पर नहीं गिना जा सकता। उनकी ग़रीबी तो तभी दूर हो सकती है जब कि (१) किसानों को ऋण-मुक्त कर दिया जाय, जिससे उनकी सारी कमाई महाजनों के यहाँ सूद के रूप में न पहुँच जावे (२) ज़मींदारी प्रथा उठा दी जाय (३) होल्डिंग का बन्दोबस्त फिर से किया जाया (४) Collective Farming की प्रथा क़ायम की जाय (५) आबपाशी का उचित प्रबन्ध किया जाय (६) मद्य-निषेध की योजना को पूर्ण सफल बनाया जाय (७) सहायक धन्धों का प्रबन्ध हो (८) बाढ़ रोकने का यथेष्ट उपाय किया जाय (९) सरकारी कृषि विभाग की गवेषणाओं का व्यावहारिक रूप से किसानों में प्रचार किया जाय आदि-आदि।

इनमें से कुछ पर प्रान्तीय सरकारें अपनी-अपनी स्थिति और आवश्यकता के अनुसार विचार कर रही हैं। मद्रास में मद्य-निषेध की योजना पर काफ़ी ज़ोर दिया गया है तथा अन्य कॉङ्गरेसी प्रान्तों में भी परीक्षा की जा रही है। आबपाशी के लिये संयुक्त प्रान्त में Ganges Canal system का प्रबन्ध हो रहा है, बिहार में कुछ दिहातों में बिजली द्वारा आबपाशी के प्रबन्ध पर विचार हो रहा है। महाजनों की ज़्यादतियाँ रोकने के लिये Moneylenders' Bill बनने जा रहे हैं। किन्तु फिर भी किसानों की सारी माँगें तब तक पूरी नहीं हो सकतीं और उनकी स्थायी समृद्धि तब तक नहीं हो सकती जब तक देश में स्वायत्त-शासन न स्थापित हो जाय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१

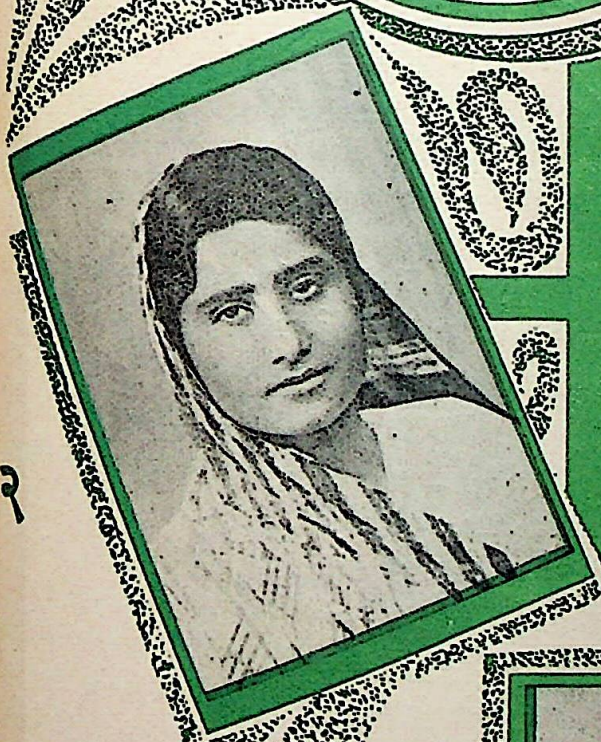

२

३

४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digi

(१) श्रीमती राजरानी देवी—आप बीकानेर रियासत की सर्व-प्रथम बैरिस्टर हैं।

(२) कु० राजकुमारी देवी—आप किला अमरगढ़ के ठाकुर श्री रामसिंह की कन्या हैं। मध्य-भारत की राजकुमारियों में सर्व-प्रथम ग्रेजुएट हैं।

(३) श्रीमती ई० वेंकोबाराव—आप ऑल इण्डिया वीमेन्स कॉन्फ्रेन्स की बेलारी ब्राञ्च की प्रेसीडेण्ट नियुक्त की गई हैं।

(४) श्रीमती बी० सत्यवती गोविन्दराज—आप गुण्टूर में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त की गई हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक मित्र के रोज़नामचे के कुछ पृष्ठ

[श्रीमती रामेश्वरी नेहरू]

मेरी स्त्री

मेरी स्त्री का संसार में बहुत मान है। वह कुछ बहुत पढ़ी-लिखी नहीं है। न बी० ए० है न एम० ए०; न किसी स्कूल-कॉलेज की शिक्षा पाई है। घर ही में थोड़ा-बहुत अपनी कोशिश से सीखा है। हिन्दी का अभ्यास अच्छा कर लिया है, थोड़ी संस्कृत और अङ्गरेज़ी भी जानती है, परन्तु उसे बुद्धि बहुत अच्छी मिली है। बात की तह तक पहुँचती है और हर चीज़ की जाँच-पड़ताल अच्छी करती है। उसका संसार, जिसमें उसका मान है, कुछ बहुत बड़ा नहीं है। वह न लीडर है न सार्वजनिक कार्यकर्त्री; इसलिये उसको जानने वाले बहुत नहीं हैं। अपने कुटुम्ब, बिरादरी के लोग या मेल-मुलाक़ाती मित्र ही उसको जानते हैं। परन्तु मालूम नहीं, उसमें क्या बात है कि जो उससे मिलता है उसका आदर करता है, और आदर ही नहीं, उससे प्रेम भी करने लगता है। मैं भी उससे प्रेम करता हूँ। परन्तु मेरे मन को उसके समान स्त्री पाकर संतोष नहीं है। मैं बहुत सोचता हूँ कि क्या कारण है कि जिसे सभी जानने वाले पसंद करते हैं, जिसके व्यवहार में सब लोग एक प्रकार की मिठास और प्रेम पाते हैं, उसका मेरे प्रति व्यवहार, मेरे हृदय को शान्ति नहीं देता; उससे और मुझसे कोई झगड़ा नहीं होता। वर्षों बीत गये, पर मैंने नहीं देखा कि उसने मेरी किसी बात पर क्रोध किया हो, मुझसे किसी बात पर अनुरोध किया हो, मेरी किसी बात के विरुद्ध भावना दिखलाई हो, परन्तु फिर भी मुझे संतोष नहीं; मुझे ऐसा लगता है कि वह सर्वथा मेरी नहीं है। मेरी नहीं है तो क्या इसका हृदय किसी दूसरे की ओर लगा है, सो भी मैं नहीं कह सकता। मैंने तो कभी उसको किसी पुरुष से खुल कर बात करते भी नहीं देखा। और फिर वह तो इतनी सच्ची और धर्म-परायण है कि उसके लिये मैं यह अनुमान भी नहीं कर सकता कि वह अपने पति के सिवा स्वप्न में भी किसी दूसरे का ध्यान करेगी। फिर क्या कारण है कि मैं सदा उसके और अपने बीच में एक पर्दा-सा पड़ा हुआ अनुभव करता हूँ। वह मेरे पास बैठी भी होती है तो मुझे ऐसा ही जान पड़ता है मानो वह मुझसे कहीं बहुत दूर है। उसमें और मुझमें कुछ बहुत बड़ा अन्तर है। क्या है, सो तो मैं बता नहीं सकता, परन्तु ऐसा लगता है जैसे मैं और वह दो अलग-अलग लोकों के रहने वाले हों, मैं चाहता हूँ, उसका ध्यान मुझमें रहे। जो बातें मुझको पसन्द हैं, वे उसको पसन्द हों। जो मुझे नापसन्द हैं, वे उसको भी नापसन्द हों। वह सारे हृदय से मेरे आमोद-प्रमोद में, मेरे काम-धन्धे में, मेरे अच्छे-बुरे में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीक रहे। वह मेरी शरीक नहीं रहती, सो भी मैं नहीं कह सकता, क्योंकि बहुधा वह मेरे साथ ही रहती है; परन्तु ऐसा लगता है कि वह देह से मेरी शरीक है, मन से नहीं। इस बात का मुझे दुःख रहता है, क्योंकि मेरी इच्छा तो यह रहती है कि जिस चाव और उत्साह से मैं किसी काम को करूँ उसी चाव और उत्साह से वह भी उसमें शरीक हो, और जो बात मुझे अरुचिकर हो वह उसी भाँति उसे भी अरुचिकर हो। परन्तु मेरी स्त्री जो कुछ करती है, उसमें एक प्रकार की उदासीनता, तटस्थता दिखलाई देती है। किसी बात के न करने अथवा किसी वस्तु के न मिलने से उसे दुःख नहीं और करने या मिलने से उसे विशेष सुख नहीं दिखाई देता। मुझे सैर-तमाशों और पिकनिक आदि का बहुत शौक़ है। परन्तु जब कभी मैं उसको अपने साथ ले जाता हूँ तो मुझे उसके साथ उतना आनन्द नहीं मिलता, जितना अन्य स्त्रियों के साथ मिलता है। खेल-तमाशे, सिनेमा-थियेटर देखकर उस पर वह प्रभाव नहीं पड़ता, जो मैं अन्य स्त्रियों पर पड़ता देखता हूँ। न उसमें वह हँसी है, न वह जान है, न वह यौवन और उमङ्ग है, जो मुझे अन्य स्त्रियों में अच्छी मालूम देती है। खेल-कूद में भी वह बहुधा निरुत्साह सी रहती है। भागना, दौड़ना, खेल में अपनी जान लड़ा देना, यह बात उसमें नहीं है। हिन्दुस्तानी स्त्रियों को यह सब सिखाया ही नहीं जाता। यदि वह स्कूल, कॉलेज गई होती और वहाँ सहपाठिनियों के साथ अङ्ग-रेज़ी ढङ्ग के खेल खेले होते, तो शायद यह सब बात उसमें आ जाती। इसीलिये मैं समझता हूँ कि स्त्रियों के लिये स्कूल, कॉलेज की शिक्षा पानी बहुत आवश्यक है। इसके बिना उनमें जीवन का रस लेने और उसका सुख भोगने की शक्ति नहीं आती। वे किसी पश्चिमी शिक्षा पाए हुए पुरुष के मन को लुभा नहीं सकतीं। इस कमी के कारण मेरी स्त्री मेरी सच्ची सहचरी नहीं बन पाई।

मैंने यह भी देखा है कि वह मुझसे कभी कुछ माँगती नहीं। मैं अपने घर में सोलहो आने मालिक हूँ। मेरा रुपया-पैसा सब मेरे ही हाथमें रहता है और मेरे ही हुक्म से खर्च होता है। कहीं-कहीं मैं देखता हूँ कि पुरुष रुपये-पैसे पर, अपनी जायदाद पर सब अधिकार स्त्रियों को दे देते हैं। मैं इस बात को ठीक नहीं समझता। कमाने-धमाने, मेहनत-परिश्रम करके अपनी दौलत को दूसरे के हाथ में सौंप देना, चाहे वह अपनी स्त्री ही क्यों न हो, मुझे ठीक नहीं जँचता। मैं अपने धन को अपनी ही मर्ज़ी के अनुसार खर्च करना चाहता हूँ, और खर्च करता भी हूँ। जिसको और जैसे उचित समझता हूँ, देता-लेता हूँ। मैं समझता हूँ कि मैं कृपण नहीं हूँ। धन सञ्चित करके रखते जाना मुझे अच्छा नहीं लगता। इसीलिये शायद धन मेरे पास रहता भी नहीं। जैसे आता है, वैसे ही हाथ से निकल जाता है। मेरी इच्छा होती है कि मैं अपनी स्त्री को भी कुछ दूँ, परन्तु क्या दूँ! वह तो कभी कुछ माँगती ही नहीं। केवल इतना ही नहीं, बल्कि मैं देखता हूँ कि उसको किसी वस्तु की इच्छा ही नहीं। देना उसको अच्छा लगता है, जो रुचि से ले को ले और हर्ष से उसका उपयोग करे। परन्तु जिसके लिये किसी वस्तु का मिलना न मिलना एक समान हो, उसको कोई क्या दे? मुझे याद नहीं कि आज तक मैंने उसको कोई ज़ेवर या कपड़ा बनवा कर दिया हो। परन्तु कभी उसने इसका बुरा माना हो, सो भी मुझे याद नहीं है। मेरा दिल चाहता है कि वह मुझसे इस बात का गिला करे, मुझसे कुछ माँगे, किसी वस्तु के लिये अपनी इच्छा प्रगट करे, जिसमें उसको कुछ देने का, उसकी किसी इच्छा को पूरी करने का मुझे अवसर मिले। परन्तु उसके मन में किसी अभिलाषा के न होने से मैं यह निश्चय ही नहीं कर पाता कि मैं उसकी खातिर क्या करूँ। उसका इतना उदासीन रहना मुझे बुरा लगता है और एक-दो बार मैंने उससे इस बात का गिला भी किया। मैंने कहा, तुम अहङ्कार के कारण मुझसे कभी कुछ माँगती नहीं। तुम बड़े पिता की पुत्री हो, तुम्हारे मन में यह अभिमान है कि तुम मुझसे क्यों कुछ लो। इसीसे तुम ऐसा करती हो, नहीं तो क्या यह सम्भव है कि कभी तुम्हारा किसी वस्तु को लेने को दिल न चाहता हो। इस गिले का उत्तर वह शान्ति के साथ बहुत मीठा देती है। परन्तु मेरे हृदय में उसका पूरा विश्वास नहीं होता। यह मुझे झुठला देती है। कहती है 'आप क्या बात करते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो? कभी किसी हिन्दू-स्त्री के मन में भी अपने पति के प्रति अभिमान या अहङ्कार आ सकता है? आप मेरे पति हो, भरतृ हो, मेरी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले हो। जो कुछ मुझे चाहिये, आप ही से तो मिलता है। खाती हूँ, पीती हूँ, आराम से रहती हूँ; और मुझे क्या चाहिये? आप और मैं क्या कोई अलग-अलग थोड़े ही हैं। आप जो खर्च करते हो वह सब मैं ही तो करती हूँ। एक हाथ से न हुआ दूसरे से हुआ। आपके हाथ को मैं अपना ही हाथ मानती हूँ और आप की मर्ज़ी को अपनी मर्ज़ी। मेरे आपके बीच में लेन-देन की चाल थोड़े ही चल सकती है कि मैं आपसे माग़ूँ और आप दें या आप मुझसे माँगें और मैं दूँ। मैं तो अपने आप को आप ही का एक भाग मानती हूँ। जो आप का है, सब मेरा ही है इसलिये जो कुछ आप जमा-खर्च करते हो, वह सब मैं ही कर रही हूँ। आप इसको निश्चित मानिये।' परन्तु उसके ऐसा कहने पर मैं विश्वास कैसे करूँ। मैं तो कभी खर्च करते हुए उससे पूछता नहीं और बहुधा तो उसको मालूम भी नहीं होता कि मैं कहाँ क्या खर्चता हूँ, फिर मैं यह कैसे मान लूँ कि जो कुछ मैं खर्चता हूँ, उसीकी मर्ज़ी से खर्चता हूँ। और वह अपने आप को मेरे साथ-साथ सम्पत्ति की मालकिन समझती है। ऐसे मालिक तो मैंने कहीं नहीं देखे, जिनको यह मालूम भी न हो कि उनका रुपया-पैसा किस तरह खर्च हो रहा है। यदि वह सचमुच ऐसा समझती तो अवश्य कभी मुझसे हिसाब माँगती, कभी मेरे खर्च के ढङ्ग की आलोचना करती, कभी अपनी मर्ज़ी से खर्च करना चाहती। यह सब वह नहीं करती, इसी से मुझे शङ्का होती है कि वह अपने मान में भरी बैठी रहती है, और मेरे पैसे का जितना कम हो सके, उतना कम उपयोग करती है। यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती। मुझे ऐसा लगता है कि उसकी कोई भी ऐसी आवश्यकता नहीं जिसकी केवल मैं ही पूर्ति कर सकूँ। इसलिये वह कहे या न कहे, एक प्रकार से वह मुझसे स्वतन्त्र है। मुझे उसकी यह स्वतन्त्रता कैसे भा सकती है? मैं तो यह चाहता हूँ कि वह मुझ पर ऐसे अवलम्बित रहे, जैसे लता वृक्ष के तने पर रहती है। शायद मेरा भी अहङ्कार ही हो, जिस के कारण मेरे हृदय में यह इच्छा है, परन्तु जो कुछ भी हो, उसका अहङ्कार हो, या मेरा अहङ्कार हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसका यह ढङ्ग मुझे रुचिकर नहीं। इस से तो मैं समझता हूँ, कि वह स्त्रियाँ अच्छी जो रात-दिन वस्त्राभूषणों के तक़ाज़ों से पति को दम नहीं लेने देतीं। इस से पति को उनकी सेवा करने का अवसर तो मिलता है।

वह मुझसे कभी लड़ती भी नहीं। मैं उचित, अनुचित बहुतेरी बातें ऐसी करता हूँ जिनके कारण देखता हूँ, दूसरे घरों में बड़े-बड़े युद्ध हो जाते हैं। बहुत बेर मैं उससे उलझ जाता हूँ। गृहस्थी के प्रबन्ध में राई भर त्रुटि हो जाने से उसका पहाड़ बना कर घण्टों का लेकचर दे डालता हूँ, 'तुम्हें घर का प्रबन्ध करना नहीं आता। देखो, अमुक स्त्री कैसी निपुणता से गृहस्थी चलाती है। तुम्हें चार आदमियों में बात करनी नहीं आती। देखो, अमुक स्त्री कैसे चटचट बातें करती है, दस आदमियों के मन को एक साथ अपनी बातों में लगाए रखती है; ड्राइंगरूम में, सभा-सोसायटी में बातें करना भी एक गहरी कला है, जिसे हर स्त्री को सीखना चाहिये। तुम तो बात करने का उद्योग ही नहीं करती हो।' वह यह सब शान्ति से सुनती है, और कोई उत्तर नहीं देती। एक बार मैं स्नान को जा रहा था। नियत स्थान पर मुझे अपना तौलिया नहीं मिला। इतने पर ही मैंने उसको अच्छी प्रकार डाँटा, परन्तु फिर भी वह चुप की चुप ही रही। मैं जानता हूँ कि बहुत बार मैं उससे अनुचित व्यवहार कर जाता हूँ, परन्तु उसकी इस अखंड शान्ति से मैं कभी-कभी खीझ उठता हूँ। इसी से उलझ कर मैं छोटी-छोटी बातों पर क्रोध करने लगा हूँ। किसी बात का उत्तर न मिलने से मुझे समझ में नहीं आता कि मैं हाड़-मांस की बनी स्त्री से व्यवहार कर रहा हूँ, अथवा किसी बेजान पुतली से; जिसे कोई बात न अच्छी न बुरी लगती है। जिससे टकरा कर कोई प्रतिध्वनि नहीं उठती, न जिससे कभी कोई प्रत्युत्तर ही मिलता है। मैंने सुना है और देखता भी हूँ कि स्त्रियों के स्वभाव में बड़ी ईर्ष्या होती है। वे अपने पति का किसी दूसरी स्त्री से हँसना, बोलना, प्रेमालाप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करना सहन नहीं कर सकतीं। तुरन्त ही तनिक-तनिक सी बातों में उनका हृदय जलने लगता है। मैंने सोचा कि अपनी स्त्री को समाधि से जगाने के लिये यह एक अच्छा उपाय होगा। मैंने सखी-सहेलियों से सङ्ग-साथ किया, स्त्रियों से ऐसा व्यवहार शुरू किया कि जिससे मेरी स्त्री के हृदय में जलन पैदा हो। उनके साथ हँसी-ठट्ठा, विहार नित दिन की बात हो गई। उन्हें सिनेमा-थियेटर में ले जाना, होटल में चाय पिलाना; ताश, शतरञ्ज और अन्य खेल खेलने में मेरा बहुत सा समय बीतने लगा। मैं समझता था कि अब तो यह देवी अवश्य रोष करेगी, मुझसे गिला करेगी, शायद कुछ रोना-धोना भी करे, परन्तु मेरा यह विचार भी ग़लत हो निकला। वह सब कुछ देखती, परन्तु उसकी शान्ति किसी प्रकार से भङ्ग न होती। इन्हीं बातों से मेरे मन में यह सन्देह होने लगता है कि यह मुझसे प्रेम नहीं करती, केवल मेरे साथ निर्वाह कर रही है। नहीं तो कौन सी स्त्री ऐसी होगी, जो अपने पति से प्रेम करती हो और उसे अन्य स्त्री की ओर जाते हुए देखकर दुःख न माने। अपने हृदय पर हाथ रख कर मैं इतना तो कह सकता हूँ कि यही मेरी स्त्री यदि किसी अन्य पुरुष के साथ वही बातें करे, जो मैं अन्य स्त्रियों के साथ करता हूँ, तो क्रोध और ग्लानि से शायद मैं अपने आपे में न रहूँ और कौन जाने क्या कर बैठूँ? फिर, वह भी तो आखिर मनुष्य ही है, उसके ऊपर इन बातों का यह स्वाभाविक प्रभाव क्यों नहीं पड़ता!

एक बार मैंने उससे पूछा—'तुम्हें क्या मेरी कोई बात बुरी नहीं लगती? क्यों तुम कभी मेरी किसी बात पर आपत्ति नहीं करतीं। स्त्रियाँ तो ज़रा-ज़रा सी बातों पर अपने पतियों से लड़ जाया करती हैं। प्रेममयी लड़ाई में भी तो रस है। लड़ाई के बाद मेल में जो आनन्द मिलता है, उसका तो हमें-तुम्हें अनुभव ही नहीं है?' उसने उत्तर दिया—'मुझे तुम्हारी कोई बात बुरी नहीं लग सकती। हिन्दू स्त्री अपने पति में भगवान को देखती है। वह कैसा है, क्या करता है क्या नहीं करता, इससे उसको कोई सरोकार नहीं है। उसके लिये इतना ही बस है कि वह उसका पति है। मैं तुम्हें अपने भगवान का रूप मानती हूँ। भगवान की रज़ा में राज़ी होना मेरा धर्म है, इसलिए तुम्हारी रज़ा में राज़ी होने में मुझे कुछ कठिनाई नहीं है। मैं अपना सर्वस्व तुम्हें अर्पण कर चुकी हूँ, जिसके ये अर्थ हैं कि मैंने अपनी मर्ज़ी, अपनी इच्छाएँ, सब भगवान को सौंप दी हैं। जब मैं सर्वस्व दे चुकी हूँ तब मुझे कुछ भी बुरा कैसे लग सकता है। अच्छा-बुरा तो तब लगता है जब मनुष्य अपने व्यक्तित्व को अलग बनाए रखे, जब अभिलाषाएँ और कामनाएँ बनी रहें परन्तु जब अपना पृथक व्यक्तित्व ही नहीं रहा तब कोई बात भी बुरी कैसे और क्यों लगे?'

'तो इसका तो यह अर्थ है कि मेरे साथ तुम्हारा विवाह हो गया है इसलिए तुमने मुझे अपना भगवान मान लिया है। तुम्हें मेरी ज़ात से प्रेम नहीं है। यदि मेरे स्थान में कोई और होता तो उसके साथ भी तुम ऐसा ही व्यवहार करतीं।'—मैंने उत्तर दिया।

उसने कहा—'ठीक ऐसा ही है। तुम्हारे स्थान पर मेरा कोई और पति होता तो वह भी मेरा पूज्यदेव होता। भगवान की खोज में, भवसागर से पार उतरने के उद्योग में मेरा पति मेरा एक साधन है। मन्दिर में जाकर मैंने पत्थर की मूर्ति का पूजन नहीं किया, घर में बैठकर अपने पति का पूजन किया। बस इतना ही मैं जानती हूँ, और इसी को अपना उद्देश्य मान कर मैंने अपने जीवन को सार्थक किया है। परन्तु ऐसा मत समझो कि मुझे तुमसे प्रेम नहीं है। प्रेम अवश्य है, सब से प्रेम है। प्रेम तो जितना भी हो कम है।' ऐसा वह कहती है, परन्तु मुझे उसके कहे पर विश्वास नहीं होता। वह प्रेम जो सबसे हो, मेरे लिये उसका कोई मूल्य नहीं है। मैं तो यह चाहता हूँ कि मेरे प्रेम में कोई शरीक न हो। उसकी मुक्ति का साधन बनने में मुझे कोई आनन्द नहीं है। मैं उसका देवता भी बन कर नहीं रहना चाहता। मैं तो उसका सहचर, साथी और मित्र बन कर रहा चाहता हूँ। मुझे इस संसार में रहने वाली, गुण-दोषों से भरी हुई मानवी स्त्री चाहिए, मुझे देवी स्त्री की आवश्यकता नहीं है। मुक्ति के लिये तपस्या करनी हो तो उसके लिये गृहस्थ की कौन आवश्यकता है? जब तुलसीदास जी को भगवान से प्रेम हुआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ने उन्होंने भगवान को अपनी स्त्री के रूप में तो नहीं देखा। जब कपिलवस्तु के राजपुत्र भगवान बुद्ध को मुक्ति की अभिलाषा हुई तो स्त्री-पुत्र को त्याग कर गृहस्थी छोड़ कर वे जङ्गलों में चले गये। शास्त्रों में कहीं भी किसी ऋषि-मुनि के सम्बन्ध में ऐसा नहीं लिखा है कि उन्होंने अपनी स्त्री को अपनी मुक्ति का साधन बनाया हो। तब हिन्दू धर्म्म ने स्त्री-पुरुष में अन्तर करके पुरुषों के साथ यह घोर अन्याय क्यों किया है? गृहस्थी और संन्यास साथ-साथ कैसे चल सकते हैं? फिर, मुमुक्षु के लिये तो चाहे चल भी सकें, जिसे मोक्ष की इच्छा नहीं है वह क्या करे? पति संसार में रह कर इसलोक का सांसारिक जीवन बिताना चाहे और पत्नी मोक्ष की खोज में रह कर उस लोक की तैयारी करती रहे, तो दोनों की कैसे बन सकती है? मोक्ष और दुनिया दोनों ही हाथ से जाते हैं। संसार का सुख सब मिट्टी में मिल जाता है, और मोक्ष-साधन में बाधा पड़ती है सो अलग। इसलिये मैं तो समझता हूँ कि मेरी स्त्री स्वार्थिन है, मेरे प्रति उसका आचरण अन्याय-पूर्ण है। मेरे सुख को उसने मिट्टी में मिला दिया। उसको यदि केवल भगवान से ही प्रेम करना था और मोक्ष की इतनी चाहना थी, तो गृहस्थी छोड़ जङ्गलों में जाकर तपस्या करनी चाहिये थी। वन, पर्वत, कुटी, गुफा इसीलिये हैं। यह घर में रह कर घर को तपोवन बनाना किसने बताया? उसकी सब प्रशंसा करें, उसे त्यागिन, निस्वार्थिन कहें, मैं तो यह सब कहने को तैयार नहीं हूँ, मुझे तो अपने ही समान अपूर्ण स्त्री चाहिये थी। मैं देवी को लेकर क्या करूँ? देवियों के लिये तो देवता चाहिये सो मैं नहीं हूँ।

सजल-गान

[परमानन्द शुक्ल]

दो मत अपनी तरल हँसी यह
जिसमें खुलकर बह न सकूँ मैं
नहीं चाहिये सङ्गिनि, वह सुख
दुर्बल मन जो सह न सकूँ मैं!

आज व्यथा के चिर पतझर में
वन करील-सा खिलता है मन
काँटेही प्राणों के धन हैं
जिनसे प्रतिपल बिंधता जीवन।
वर दो, सुमुखि उपेक्षित रहकर
अपना यह दुख कह न सकूँ मैं।

सीपी के हिय की वह कितनी
प्रिय अतृप्ति सुन्दर होती है
अनजाने कुछ बूँद मिला यदि
आह वही बनता मोती है!
कितना अरे, बढ़ावा देती
छाया वह जो गह न सकूँ मैं।

देखो सघन अमावस की निशि
कितना प्रिय लगता सूनापन
जलन लिये जब तारक हँसते
कुछ कहने को पर, न कभी मन!
चाह यही बस इन तारों-सा
हुआ प्रात फिर रह न सकूँ मैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जापान का स्त्री और बाल-समाज

[श्री० विष्णुदत्त शुक्ल]

थोड़े से समय के लिए जाने वाला जापान-यात्री भी वहाँ के स्त्री-समाज के व्यवहार और उनकी सेवाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। छोटे-बड़े प्रत्येक कार्य में स्त्रियों का हाथ है। बाज़ारों में दूकानदारी करती हुई स्त्रियाँ मिलेंगी, बसों और ट्रामों में कण्डक्टर का काम करती हुई स्त्रियाँ मिलेंगी। दफ़्तरों और गद्दियों में क्लर्कों का काम करती हुई स्त्रियाँ मिलेंगी, लिफ़्टमैनों का काम करती हुई स्त्रियाँ मिलेंगी, कल-कारखानों में मज़दूरी करती हुई स्त्रियाँ मिलेंगी, रास्ता बताने के लिए 'गाइड' का काय करती हुई स्त्रियाँ मिलेंगी और न जाने क्या-क्या करती हुई स्त्रियाँ मिलेंगी। घर-गृहस्थी, व्यापार-व्यवसाय, समाज-साहित्य आदि सब क्षेत्रों में स्त्रियों का बड़ा ज़बर्दस्त हाथ है। यदि यह कहा जाय कि जापान की वर्तमान उन्नति में कम से कम ८० प्रतिशत हाथ स्त्रियों का है तो शायद अत्युक्ति न होगी। यह कह कर हम पुरुषों के श्रेय को न्यून करना नहीं चाहते। वास्तव में उन्नति के उपाय सोचने का श्रेय अधिकांश में पुरुषों को ही है, परन्तु उन विचारों को कार्यान्वित करने में स्त्रियाँ पुरुषों से बहुत आगे हैं। यदि स्त्रियाँ पुरुषों द्वारा सोची गयी योजनाओं को कार्यान्वित करने में हाथ न बँटावें तो अकेले पुरुष इतनी उन्नति कदापि न कर सकें।

समाज में स्त्रियाँ क़ानूनन पुरुषों से निम्न श्रेणी की समझी जाती हैं। राजनैतिक अधिकार तो उन्हें दिये ही नहीं गये। फिर भी स्त्रियाँ पुरुषों की स्वामिनी हैं यह कहा जाय तो अनुचित न होगा। अपने परिवार में स्त्रियों का पूर्ण आधिपत्य है। परिवार का सब काम उन्हीं की इच्छा के अनुसार होता है। परिवार के कार्यों से तो पुरुषों का सरोकार ही नहीं होता। घर की सफ़ाई, रसोई-पानी का प्रबन्ध, लड़कों का लालन-पालन, घर के लिए आवश्यक वस्तुओं की खरीद-फ़रोख्त सब काम स्त्रियों के हैं—इनमें पुरुषों का कोई हाथ नहीं रहता। यदि किसी बात में मत-भेद हो जाय तो, यद्यपि पुरुष समाज में श्रेष्ठ माना जाता है तथापि, घर के मामले में स्त्री की ही बात को मान्य समझा जायगा।

जापान की स्त्रियों में बड़ा आकर्षण है। उनके रूप में कोई विशेष लावण्य नहीं है परन्तु उनके व्यवहार में इतनी मधुरता है कि उनसे बातें करते समय उनकी कुरूपता लक्ष्य में आती ही नहीं। स्त्रियों से बात-चीत करना वैसे ही आकर्षक होता है फिर जापान की सुशिक्षित, शिष्टाचार परायण, विनयशील और सेवा-व्रती स्त्रियों से बात-चीत करने की तो बात ही क्या। घण्टों बातचीत करते रहिए जी न ऊबेगा। उनमें स्वयं तो प्रसन्नता होती ही है वे दूसरों को भी सदा प्रसन्न रखने की चेष्टा करती हैं। दुनिया की झञ्झटों से थके-माँदे परेशान होकर पति वार के लोगों के घर पहुँचते ही स्त्रियों के प्रेम-पूर्ण व्यवहार के कारण उनकी सारी परेशानी दूर हो जाती है। घर की सत्-गृहिणियों की तो बात ही क्या, होटलों में काम करने वाली स्त्रियाँ तक बाहर से थके-हारे हुए यात्रियों को प्रसन्न करने में बड़ी पटु होती हैं। यात्री की परेशानी होटल आते ही दूर हो जाती है। उनके चेहरे पर मुस्कराहट, उनके व्यवहार में प्रेम, उनके हृदय में सेवा की भावना, उनकी आँखों में शील, उनके रूप में विनम्रता—सब कुछ इतनी आकर्षक मात्रा में विद्यमान है कि उनसे मिलकर मन मुग्ध हो जाता है।

उनका बाह्य आकर्षण भी कम नहीं है। जापानी स्त्री का चटकीला-भड़कीला "किमोनो" पहने हुए दूर से— इतनी दूर से जहाँ से उनके चेहरे की बारीकियाँ स्पष्ट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती हों, देखने पर वे इतनी आकर्षक लगती हैं जिसका ठिकाना नहीं। जापानी स्त्रियों में रङ्गों की परख बड़ी अच्छी मालूम होती है। ऐसे सुन्दर-सुन्दर रङ्ग के कपड़े वे अपने 'किमोनो' के लिए पसन्द करती हैं कि जिन्हें देखते ही बनता है। गठीले स्वस्थ शरीर पर इस प्रकार के रङ्ग-बिरङ्गे किमोनो अद्भुत शोभा पाते हैं। मालूम नहीं इस शोभा के कारण अथवा प्राचीनता के प्रेम के कारण उन्होंने अपनी पोशाक नहीं बदली। यद्यपि जापानी पुरुषों ने प्रायः शत प्रतिशत यूरोपियन ड्रेस अपना लिया है तथापि स्त्रियों में अब तक किमोनो का ही रिवाज है। कुछ स्त्रियों को छोड़ कर जिनकी संख्या बहुत कम है, अन्य सब स्त्रियाँ किमोनो ही पहनती हैं। इस प्रकार उन्होंने अपने प्राचीन वेश की रक्षा की है।

उनके पहनावे में एक विचित्रता और है। वे कमर में विचित्र ढङ्ग से एक पट्टा-सा बाँधती हैं। सुन्दर रेशमी और ज़री के काम का चौड़ा-सा पट्टा जो कमर से लेकर छाती तक चौड़ा होता है वे बाँधती हैं। पेट पर एक छोटी-सी तकिया रखती हैं और पीठ पर भी वैसी ही एक तकिया रखती हैं। ये तकिया रखकर वे ऊपर से पट्टा लपेटती हैं। पीठ की तकिया पेट वाली से अधिक मोटी होती है और उसके ऊपर पट्टा बाँधने के बाद भी पट्टे के छोर (किनारे) लटकते हुए से छोड़ दिये जाते हैं। पट्टा खूब कस कर बाँधा जाता है। सारी पोशाक पहनने पर वैसे तो बड़ी आकर्षक मालूम होती है परन्तु इस पट्टे की वजह से पीठ पर एक कूबड़-सा निकल आता है। इस प्रकार पेट, पीठ कस लेने के सम्बन्ध में वहाँ के लोग कहते हैं कि इससे स्त्रियों की कमर मज़बूत रहती है और उनका पेट बढ़ने नहीं पाता। पहली बात तो राम जाने, परन्तु दूसरी बात सत्य अवश्य प्रतीत होती है।

जापानी स्त्रियाँ लड़कों को गोद में नहीं लेतीं, वे उन्हें पीठ पर लादे रहती हैं। पीठ पर जो पट्टा बँधा हुआ होता है उसके ऊपर लड़कों को बैठा कर एक कपड़े से उन्हें लपेट कर फेरी वालों के बोझ की तरह पीठ पर लादे रहती हैं। इस प्रकार वे लड़कों को घण्टों लिये रहती हैं और अपना सब काम किया करती हैं। इस पद्धति से यद्यपि यह सुविधा होती है कि उनके दोनों हाथ खुले रहते हैं जिनसे वे अपना सब काम करती रहती हैं तथापि लड़कों को बड़ी तकलीफ होती है। छोटे-छोटे बच्चों के पैर फैला कर पीठ के दोनों किनारों पर रखने से उनको अवश्य असुविधा होती होगी। साथ ही कपड़े से बँधे रहने के कारण साँस लेने में भी उन्हें कठिनाई होती होगी। फिर भी यह प्रथा प्रचार में है और स्वास्थ्य एवं शरीर-निर्माण के जानकार भी इसका विरोध करते हुए नहीं पाये जाते।

वहाँ स्त्रियों में पर्दा बिलकुल नहीं है। वे स्वतन्त्रता-पूर्वक भीतर-बाहर आ जा सकती हैं। चाहे जिसके साथ घूम-फिर सकती और बातचीत कर सकती हैं। उनके इस काम में सामाजिक रीति-रिवाज बाधक नहीं होते। इस सम्बन्ध में उन्हें उतनी ही आज़ादी है जितनी पाश्चात्य देशों की स्त्रियों को; फिर भी पाश्चात्य स्त्रियों की और इनकी तुलना नहीं हो सकती। पाश्चात्य स्त्रियों में लज्जा और सङ्कोच का एक प्रकार से अभाव-सा हो गया है जब कि जापानी स्त्रियों में शील, लज्जा, सङ्कोच यथेष्ट मात्रा में विद्यमान है। इन गुणों के कारण जापानी स्त्रियों का आकर्षण पाश्चात्य स्त्रियों की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ जाता है।

जिस स्त्री-जाति में शिक्षा हो, स्वास्थ्य-सुधार की भावना हो, सफाई का खयाल हो, परदा न हो और संयम के साथ विधवा-विवाह और तलाक भी रायज हों उसमें समाज-सुधार की बहुत थोड़ी गुञ्जाइश रह जाती है। फिर भी वहाँ पर एक बड़ी घृणित प्रथा प्रचलित है। पिता के ऋण के परिशोध के लिए वहाँ पर कन्याओं को भी कष्ट उठाना पड़ता है। कहते हैं, जिस पर ऋण होता है वह पिता ऋण-दाता को अपनी कन्या दे देता है। यह कन्या उस समय तक ऋण-दाता की सेवा में रहती है जब तक उसका ऋण चुक नहीं जाता (अधिकांश में यह अवधि पहिले से ही तय कर ली जाती है)। प्रत्यक्षतः कन्याएँ दी जाती हैं ऋण-दाता की सम्मानित सेवाओं के लिए ही, परन्तु उनसे घृणित कार्य भी लिए जाते हैं और वे न जाने किस धार्मिक भावना के खयाल से उस प्रकार के घृणित व्यवहार का शिकार भी बन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाती हैं। इसी प्रकार की एक प्रथा और भी प्रचलित है। वह यह कि कुटुम्ब का कर्ज चुकाने के लिए कन्याएँ चाय-घर, नाच-घर और शराबखानों में काम कर लेती हैं जहाँ का वातावरण भी अधिकांश में दूषित होता है। कर्ज के सम्बन्ध में वहाँ पर न जाने कैसी धारणा है कि इस प्रकार के गर्हित कार्य करके भी उसका चुकाना श्रेयस्कर माना जाता है। इस प्रकार के कार्यों में अनेक युवतियाँ लगी हुई हैं। ये सब युवतियाँ अविवाहित ही होती हैं। उस अवस्था में जब किसी अनुचित सम्बन्ध से उनके गर्भ रह जाता है तब अधिकांश में तो कोशिश यह की जाती है कि जिस पुरुष से उनका सम्बन्ध हो गया है उन्हीं के साथ उनका विवाह कर दिया जाय। परन्तु यदि यह सम्भव न हुआ तो समाज में इस प्रकार गर्भ-धारण करने वाली कन्या का अनादर होता है और उस अनादर से अपनी रक्षा करने के लिए उस बेचारी को आत्मघात तक कर लेना पड़ता है। यह अवस्था कितनी भयङ्कर, कितनी घृणित और कितनी निन्दनीय है इस पर कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। पहिले समाज उन्हें उस प्रकार का गर्हित जीवन बिताने के लिए बाध्य करता है या सुविधा और प्रोत्साहन देता है और फिर जब वे विपथ में पड़ जाती हैं तब उनका अनादर करता है! जापान जैसे देश में भी, जहाँ शिक्षा की अवस्था इतनी समुन्नत है, जहाँ विचारवानों की कमी नहीं है, इस प्रकार के अत्याचार स्त्री-समाज पर होते हैं!

ऊपर जिस अवस्था का वर्णन किया गया है उस से यह आशङ्का होना स्वाभाविक है कि वहाँ की स्त्रियों का चरित्र दोषपूर्ण है। परन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है। अविवाहित अवस्था में इस प्रकार का जीवन बिता करके भी विवाह के बाद उनमें इतनी उच्च कोटि की पति-परायणता और सतीत्व की भावना आ जाती है जो आदर और सम्मान की वस्तु है। जो लोग यह समझते हैं कि एक बार पथच्युत हो जाने के बाद फिर स्त्री का जीवन कभी नहीं सुधर सकता उनके लिए जापान की इन कन्याओं का उदाहरण आश्चर्यजनक और आँखें खोल देने वाला है।

ऊपर कहा जा चुका है कि जापान में स्त्रियों में पर्दा नहीं है और उन्हें घूमने-फिरने की पूरी आजादी है। फिर भी उनका कार्य-क्षेत्र बहुत कुछ घर के भीतर रखा गया है, सार्वजनिक नहीं। सड़कों पर आते-जाते आपको दम्पति साथ-साथ बहुत कम मिलेंगे। स्त्रियाँ अलग और पुरुष अलग घूमें-फिरेंगे; परन्तु साथ-साथ नहीं। इसी प्रकार सभाओं, पार्टियों तथा अन्य सार्वजनिक ढङ्ग के आयोजनों में भी स्त्रियों का सर्वथा अभाव देखने को मिलेगा। इन स्थानों में यदि स्त्रियाँ दिखलायी पड़ेंगी तो सेविका के रूप में; सभासद के रूप में नहीं। सार्वजनिक कार्यों के लिए मानो स्त्रियों की योग्यता स्वीकार ही नहीं की जाती। राजनैतिक क्षेत्र में तो यह बात और भी अधिक सत्य है। जापान की स्त्रियों को कोई राजनैतिक अधिकार नहीं है। पार्लियामेण्ट, लोकलबोर्ड आदि की सदस्य बनना या मजिस्ट्रेटी आदि प्राप्त करना तो दूर की बात है, उन्हें कहीं वोट देने तक का अधिकार नहीं मिला। देश के शासन में स्त्रियों का कोई हाथ नहीं। इस जागृति के युग में स्त्रियों की इतनी दयनीय उपेक्षा और वह भी जापान जैसे सुशिक्षित और समुन्नत देश में वस्तुतः खेद-प्रद है। और आश्चर्य तो यह है कि स्त्रियाँ स्वयं इस अवस्था से असन्तुष्ट नहीं मालूम होतीं। यह अवस्था आज से नहीं, न जाने कब से चली आ रही है फिर भी वहाँ पर स्त्रियों की एक भी ऐसी संस्था नहीं है जो इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का आन्दोलन करती हो और स्त्रियों के अधिकारों के लिए लड़ती हो। इसके दो कारण प्रतीत होते हैं। एक तो यह कि अपनी घरेलू स्थिति में स्त्रियों का जो प्राधान्य है उसके सार्वजनिक स्थिति की न्यूनताओं का अनुभव नहीं करतीं और दूसरे यह कि उनमें लड़ाई-झगड़ा करने की आदत नहीं होती। शायद इसीलिए सब काम शान्ति के साथ चलता जा रहा है। अस्तु।

जापान का बाल-समुदाय एक विचित्र ढङ्ग का बाल-समुदाय है। उसमें सफ़ाई है, स्वास्थ्य है, अनुशासन है, प्रसन्नता है, स्फूर्ति है। वह चञ्चल है, परन्तु उसकी चाञ्चल्य से अत्यन्त निकट रह कर भी किसी को कोई हानि न पहुँचे इतना अनुशासन भी उसमें है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वतंत्र और स्वच्छंद है फिर भी समाज के शिष्टाचार और सभ्यता में उसकी स्वतंत्रता और स्वच्छंदता बाधक हो जाय इतनी निरङ्कुशता भी उसमें नहीं है। खुलकर खेलने की उसे पूर्ण स्वतंत्रता है। साथ ही सभ्य समाज के रीति-रिवाजों और संस्कारों की ऐसी गहरी छाप भी उस पर लगी हुई है कि वह अनियन्त्रित रूप से उच्छृंखलता की ओर बहक नहीं सकता। इस प्रकार एक सँकरी गली में दोनों ओर के खतरे बचाते हुए, चतुर खिलाड़ी की भाँति वहाँ के बालक निर्द्वन्द होकर उछलते-कूदते रहते हैं। उस प्रकार के जीवन का उन्हें अनजान में ही, अभ्यास करा दिया जाता है। घर में माता-पिता, विद्यालयों में शिक्षक और बाहर समाज के समस्त नर-नारी—सब के सब ऐसा शिक्षा-पूर्ण उदाहरण सामने उपस्थिति करते हैं कि वह जान भी नहीं पाता कि उस पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लग रहा है—अतः वह अपनी स्वाभाविक मस्ती के साथ खेलता भी रहता है और साथ ही साथ समाज के नियमों के प्रतिबन्ध का अभ्यासी भी बनता जाता है।

गन्दे कपड़े पहने, देह में मैल-मिट्टी लगाये, तथा नाक-थूक से मुँह पोते हुए भद्दे लड़के वहाँ ढूँढ़ने पर भी न मिलेंगे। उनके घर वाले उन्हें साफ़ रखने की कोशिश करते हैं और वे स्वयं भी अपने घर वालों से ही साफ़ रहना सीखते हैं। इसके अतिरिक्त जापानी बालक जितना अधिक अपनी माँ के पास रहता है उतने अधिक समय तक अन्य किसी देश का बालक शायद ही रहता हो। जापानी माता बँदरिया की तरह अपने बच्चे को पीठ पर लादे ही लादे घूमा करती है। इसलिए उनमें माता के सब गुण अनायास आ जाते हैं। माता की गोद से अलग होते-होते वे समाज की अनेक रीति-रिवाजों से, अनजान में ही परिचित हो जाते हैं और उसके बाद विद्यालयों में भेज दिये जाते हैं जहाँ उनकी शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबन्ध रहता है। वहाँ जाकर वे पूर्ण शिक्षा प्राप्त करते हैं।

उनमें काम करने की आदत भी पहिले ही से पड़ जाती है। जो लड़के काम करने योग्य हो जाते हैं उनको किसी न किसी काम में लगाये रहने का उनके माता-पिता यथेष्ट ध्यान रखते हैं। घर की सफ़ाई आदि जैसे कार्यों तक में वहाँ के लड़के माता-पिता या अभिभावकों की मदद करते हैं। जब इस प्रकार के कार्यों से फ़ुरसत रहती है तब घर के उद्योग-धन्धों से सम्बन्ध रखने वाले कार्यों में घर वालों का हाथ बटाते हैं। इन सब कार्यों में उन्हें अपने बड़ों का सहारा बराबर मिलता रहता है। इस प्रकार के अभ्यास से उनमें परिश्रम-शीलता और कार्य-पटुता—दोनों आते हैं जो आगे चलकर जीवन में उनके सहायक होते हैं। इस परिश्रम-शीलता और कार्य-पटुता की शिक्षा उन्हें विद्यालयों में भी बराबर मिलती रहती है। विद्यालयों की दर्शनीय वस्तुओं के देखने आदि की योजना से बालकों का मनोरञ्जन, ज्ञान-वर्धन, स्वास्थ्य-सुधार, आदि जो कुछ होता है वह तो होता ही है, उस के साथ ही उनमें परिश्रम-शीलता, कष्ट-सहिष्णुता, अनुशासन-प्रियता भी आती है।

अनुशासन पालन की बात तो बहुत अधिक मात्रा में उनमें मिलती है। जिस समय बालकों की मण्डलियाँ यात्रा आदि के लिए निकलती हैं उस समय उन्हें देखिए कितनी संयम-शीलता, कितनी मुस्तैदी, कितनी नियम-बद्धता के साथ वे चलते हैं। अपने संरक्षक का आदेश पालन करने में तथा उनकी बातों को ध्यान पूर्वक सुनने में वे सदा दत्त-चित्त रहते हैं। रोना-चिल्लाना तो वहाँ के लड़के मानों जानते ही नहीं हैं। मेलों-मजमों में जहाँ सैकड़ों बच्चे हों, वहाँ भी रोते-चिल्लाते या हो-हल्ला मचाते हुए लड़के नहीं मिलेंगे। इनकी शाइस्तगी पर कभी-कभी तो आश्चर्य होने लगता है।

लड़कों और लड़कियों के देखने के अनेक अवसर मुझे मिले। समय-समय पर मैं उनसे मिलने तथा बातचीत करने के प्रयत्न भी करता था। भाषा न जानने के कारण सयाने आदमियों से भी जो विचार-विनिमय न कर सकता हो वह लड़कों के साथ बातचीत तो क्या कर सकता, परन्तु उनको खिलाने या उनके साथ खेलने का कुछ आनन्द अवश्य मिल जाया करता था। इस प्रयत्न में मैंने देखा कि जब किसी लड़के की ओर बढ़ूँ और उसे बुलाऊँ तो वह सङ्कोच में पड़ जाता और भागने की कोशिश करता और बहुत देर बाद इतना ढाढ़स उसमें आ पाता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

था कि नज़दीक आये। क़रीब-क़रीब यही हाल लड़कियों का भी था। फिर भी तुलनात्मक दृष्टि से लड़कियाँ अधिक साहसी मालूम हुईं। वैसे देखने पर भी जितनी तेज़ी लड़कियों के चेहरों पर दिखलायी पड़ती थी उतनी लड़कों के चेहरों पर न थी। इन लड़कों से मिल कर बात करने में, जिसे वे समझते न हों, बड़ा मज़ा आता था। गोरा-गोरा बदन, गुलाबी गाल, मोटा-मोटा शरीर, प्रसन्न चित्त, साफ़-सुथरे कपड़े पहने जापान के ये खिलौने जापान की अपूर्व निधि हैं।

वास्तव में जापान के स्त्री-समाज और बाल-समाज दोनों में अपूर्व आकर्षण और एक विचित्र प्रकार की तेजस्विता है। जापान जाने वाला कोई व्यक्ति इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।*

* पिछली जापान-यात्रा के अवसर पर जिन कतिपय बातों का अनुभव हुआ था, उन्हीं के आधार पर ये पंक्तियाँ लिखी गई हैं।

—लेखक

मधुर-बेला

[श्री० ईश्वरलाल शर्मा 'रत्नाकर']

कोकिल ने पगली सी होकर स्नेहगान गाया कैसा ?।
अलसाई सी अरुण उषा में मधुर राग छाया कैसा ?
मेरी हृदय-विपञ्ची के क्यों कम्पित-कम्पित तार हुए ?
यह क्या, यह क्या, आज शूल भी सरस सुमन सुकुमार हुए !
"वह आता है, वह आता" ध्वनियाँ अन्तर से आती हैं,
पुलकित तन अलसित पलकें आँखें जल भर-भर लाती हैं !
मैं उन्मुक्त बनूँगी—जीवन-साध आज पूरी होगी,
अक्षय बन्धन में बाँधेगा आ मुझको वह रसयोगी !
मेरे गीत ! सजग हो जाओ पहन कल्पना के परिधान,
आज आ रहे हैं चिर निष्ठुर मेरे प्रिय – मेरे भगवान !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

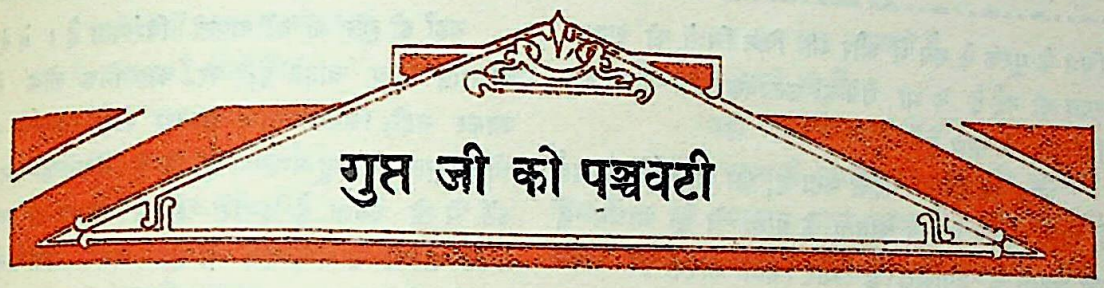

गुप्त जी की पञ्चवटी

[श्रीमती जयन्तीदेवी पाण्डेय]

पञ्चवटी राम-चरित्र के दो तृतीयांश की भूमिका है। क्योंकि साहित्य की सामग्री वे ही स्थान या घटनाएँ हो सकती हैं, जिनमें मनुष्य की भावनाएँ और वेदनाएँ सत्य को शिव एवं सुन्दर बनाकर महामानवता की ओर अग्रसर होती हैं। पञ्चवटी में राम की सत्य-निष्ठा, लक्ष्मण का भ्रातृ-प्रेम और सीता की स्वामिभक्ति पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर हुई है। सोना यों तो स्वभावतः ही सुन्दर और मूल्यवान वस्तु है; पर कसौटी पर जो खरा उतरे उसी की यथार्थ महत्ता है। पञ्चवटी के पहले के राम, सीता और लक्ष्मण ठीक वैसे ही थे जैसा कि हम इस संसार में औरों को भी पा सकते हैं। पर, यहाँ आकर हमने उनके उस जौहर को देखा, जिसके लिए वे हमारे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। यहीं से उनके जीवन का वह अध्याय प्रारम्भ होता है जिसमें आनन्द है, प्रेम है, संयोग है, वियोग है, तथा शोक और दुःख सभी कुछ है। इसीलिए तो लङ्का से लौटते समय कविगुरु कालिदास के राम कह उठते हैं—"आनन्दयत्युन्मुख कृष्णसारा दृष्टा चिरात् पञ्चवटी मनो मे।" कविवर भवभूति के 'उत्तर रामचरित' का दूसरा और तीसरा अङ्क पञ्चवटी की स्मृतियों से ही भरा पड़ा है। संक्षेप में महर्षि बालमीकि से लेकर अब तक के कितने ही कवियों ने उस पावन-भूमि के चित्रण से अपनी लेखनी को पवित्र किया है।

कविवर मैथिलीशरण जी भी उन्हीं में से एक हैं। श्रीयुत मैथिलीशरण जी की पञ्चवटी उनके कवि-हृदय का वह दर्पण है जिसमें समवेदना और परदुःखकातरता स्पष्ट प्रतिबिम्बित है। पञ्चवटी का आरम्भ होता है प्रकृति के मनोरम वर्णन से—

"चारुचन्द्र की चञ्चल किरणें
खेल रही हैं जल-थल में,
श्वेत वसन सा बिछा हुआ है
अवनि और अम्बर-तल में।"

पर, प्रकृति का यह वर्णन उस चित्र का केवल पेन्सिल-स्केच मात्र है, जिसमें त्याग, दया, प्रेम आदि दैवी आदर्शों का रङ्ग भरा जाने वाला है। कवि का मुख्य उद्देश्य तो उसकी ओर इशारा करना है, जिसने अपनी सारी अभिलाषाओं को भ्रातृ-प्रेम पर न्योछावर कर दिया, विकल अरमानों की टीस को मन में ही पी लिया; पर कर्तव्य पर धब्बा नहीं आने दिया। जो—

"भोगी कुसुमायुध योगी-सा
बना दृष्टिगत होता है।
जाग रहा यह कौन धनुर्धर
जब कि भुवन भर सोता है।"

जिनसे—"सीता बोलीं कि "ये पिता की
आज्ञा से सब छोड़ चले।
पर देवर तुम त्यागी बनकर
क्यों घर से मुँह मोड़ चले?"
"उत्तर मिला कि "आर्ये बरबस
बना न दो मुझको त्यागी,
आर्य-चरण-सेवा में समझो
मुझको भी अपना भागी।"

और जिन्होंने राम के "तुम कहाँ?" के उत्तर में सिर झुका कर केवल इतना ही कह दिया—"तुम मेरे सर्वस्व जहाँ।" उस लक्ष्मण को ही लेकर गुप्त जी की पञ्चवटी का आदि और अवसान है। बीच-बीच में उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्र के पूरक के रूप में और भी जिन चित्रों की अवतारणा की गई है वे भी वैसे ही उज्ज्वल और अपनी एक विशेषता के साथ हैं।

जैसा कि हमने पहले कहा है, गुप्त जी पहले हमदर्द हैं पीछे कवि। उनकी कविता के प्रायः वे ही आश्रय हैं जो त्यागी हैं, उपेक्षित हैं और किसी आदर्श पर अपने को मिटा देने वाले हैं। साकेत की उर्मिला, यशोधरा की गोपा और पञ्चवटी के लक्ष्मण इसके जीवन्त उदाहरण हैं।

यद्यपि लक्ष्मण को लेकर बहुत से कवियों ने अपनी कला एवं प्रतिभा का प्रदर्शन किया है; पर गुप्त जी की पञ्चवटी के लक्ष्मण औरों से कुछ भिन्न हैं। उनमें त्याग है, प्रेम है, तपस्या है, पर उसके साथ ही वे कोमल भावनाएँ भी हैं जो एक साधारण गृहस्थ के हृदय में अपने प्रिय-जनों से दूर होने पर हृदय में टीस पैदा करती हैं। जहाँ वह यह सोचते हैं—

"एक राज्य का मूढ़ जगत ने
कितना महामूल्य रक्खा,
हमको तो मानो वन में ही
है विश्वानुकूल्य रक्खा।"

वहाँ ही उनका हृदय वियोगिनी उर्मिला के लिए भी चिन्तित है।

"स्वजनों की चिन्ता है हमको,
होगा उन्हें हमारा सोच;
यही एक इस विपिन वास में
दोनों ओर रहा सङ्कोच।
सब सह सकता है परोक्ष ही
कभी नहीं सह सकता प्रेम,
बस, प्रत्यक्ष भाव में उसका
रक्षित सा रहता है क्षेम।
× × ×
बेचारी उर्मिला हमारे
लिए व्यर्थ रोती होगी।"

इतना सोचते ही—

"मग्न हुए सौमित्र चित्र-सम
नेत्र निमीलित एक निमेष।"

यहाँ ही गुप्त जी की अपनी विशेषता है। वे देवता की सृष्टि करना चाहते हैं; पर काल्पनिक लोक से ले आकर नहीं; जिनके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, जो जादूगर के छू-मन्तर हैं, जिन्हें देखते ही हम कह उठें 'ये तो देवता हैं हमारी इनकी समता ही क्या!' उनके चरित्रों के मनोभावों में हम अपने मनोभावों को पाते हैं और उस प्रकाश को भी, जिसका आश्रय लेकर हम अपने जीवन-संग्राम को सरल बना सकते हैं, अपना एक आदर्श स्थिर कर सकते हैं। इनके पहले के कवियों ने कहीं इस ओर इङ्गित भी नहीं किया है कि लक्ष्मण के हृदय में कभी, भूल से ही सही, उस बेचारी उर्मिला के लिए जिसके सब कुछ वे ही हैं, स्मृति भी हुई थी या नहीं। किन्तु, गुप्त जी उसे नहीं भूल सके हैं। साकेत का तो जन्म ही उर्मिला के लिए हुआ है; पर पञ्चवटी में भी प्रारम्भ में ही उसकी सुधि दिलाकर तब आगे बढ़ते हैं।

पञ्चवटी की सीता भी उनकी एक अपनी विशेषता सृष्टि हैं। देवी हैं, पर केवल कल्पना-लोक की नहीं; कठिनाइयों और बाधाओं को स्नेह में डुबा कर, इस दुनियाँ में मिल कर। मनुष्य की तो बात ही क्या—

"आ आ कर विचित्र पशु-पक्षी
यहाँ बिताते दोपहरी
भाभी भोजन देतीं उनको,
पंचवटी छाया गहरी।
चारु चपल बालक ज्यों मिलकर
माँ को घेर खिझाते हैं,
खेल खिझाकर भी आर्या को
वे सब यहाँ रिझाते हैं।"

लक्ष्मण के साथ उनकी शिष्ट-हास्यमिश्रित व्यङ्ग्य की मीठी चुटकी 'पंचवटी' को और भी सरस और सुन्दर बना देती है। 'पञ्चवटी' के आरम्भ में पूर्वाभास ही ये मीठी चुटकियाँ प्रारम्भ होती हैं "पर, देवर तुम त्यागी बनकर क्यों घर से मुँह मोड़ चले!" सूर्पणखा के साथ लक्ष्मण को तर्क-वितर्क करते देख वे मुस्कुरा पड़ीं—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"और कहा, "सब बातें मैंने
सुनी नहीं तुम रखना याद,
कब से चलता है बोलो यह,
नूतन शुक रम्भा सम्वाद ।
बोलीं फिर उस बाला से वे
सुस्मितपूर्वक वैसे ही ।
अजी, खिन्न तुम न हो, हमारे
ये देवर हैं ऐसे ही ।
घर में ब्याही बहू छोड़ कर
यहाँ भाग आए हैं ये,
इस वय में क्या कहूँ, कहाँ का
यह विराग लाए हैं ये ।"

और लक्ष्मण से कहती हैं—

"देवर तुम कैसे निर्दय हो,
घर आए जन का अपमान ।
किसके पर नर, तुम उसके जो
चाहे तुमको प्राण समान ?"

और जब लक्ष्मण—

"बोल उठे अब इन बातों में
क्या रक्खा है हे भाभी,
इस विनोद में नहीं दीखती
मुझे मोद की आभा भी ।"

तब कैसी मीठी झिड़की देती हैं—

"तो क्या मैं विनोद करती हूँ !
बोलीं उनसे वैदेही,
अपने लिए रूक्ष हो तुम क्यों ?
होकर भी भ्रातृ-स्नेही ?"

और—"आज उर्मिला की चिन्ता यदि
तुम्हें चित्त में होती है,
कि वह विरहिणी बैठी मेरे
लिए निरन्तर रोती है ।
तो मैं कहती हूँ, वह मेरी
बहन न देगी तुमको दोष,
तुम्हें सुखी सुनकर पीछे भी
पावेगी सच्चा सन्तोष ।
प्रिय से स्वयं प्रेम करके ही
हम सब कुछ भरपाती हैं,
वे सर्वस्व हमारे भी हैं,
यही ध्यान में लाती हैं ।"

इस छोटे से काव्य में स्थान-स्थान पर कवि के निजी विचारों का भी आभास पाया जाता है । कला की दृष्टि से वही काव्य या रचना उत्कृष्ट है, जहाँ कलाकार अपने अनुभूतिमूलक सत्य को सुन्दर और शिव करके दिखला सकता है । केवल कल्पना के हवाई क़िले स्थायी नहीं होते । जिस रचना में अपनी अनुभूति का स्पर्श नहीं है, वह हृदय को छूने वाली नहीं होती । इसीलिए साहित्य को विद्वानों ने साहित्यकार का जीवन-चरित्र कहा है । गुप्त जी की रचनाओं में ये विशेषताएँ बहुलता से पाई जाती हैं । पतित नर-पशुओं पर अपना असन्तोष प्रकट करते हुए वे कहते हैं—

"करते हैं हम पतित जनों में
बहुधा पशुता का आरोप,
करता है पशुवर्ग किन्तु क्या
निज निसर्ग नियमों का लोप ?
मैं मनुष्यता को सुरत्व की
जननी भी कह सकता हूँ,
किन्तु पतित को पशु कहना भी
कभी नहीं सह सकता हूँ ।"

दूसरी श्रेणी के वे अभागे हैं, जिनको समाज ने जबरदस्ती पतित, हेय बना रक्खा है । उनके सुख-दुःख से उसे कोई सम्बन्ध नहीं । क्योंकि वे सदियों के सताए हुए हैं, उनकी वाणी ऐसी नहीं रह गई है कि समाज के सिंहासन को हिला सके । उनके लिए कवि के हृदय में कैसी ममता है—

"इन्हें समाज नीच कहता है,
पर हैं ये भी तो प्राणी,
इनमें भी मन और भाव हैं,
किन्तु नहीं वैसी वाणी ।"

स्त्री-जाति के लिए तो इनके हृदय में बहुत ही उच्च भाव हैं । साकेत, यशोधरा, द्वापर आदि सभी रचनाओं में उनके इस भाव का प्रत्यक्ष दर्शन होता है । पुरुष होकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी इन्होंने पुरुषों के साथ पक्षपात नहीं किया है। कहते हैं—

"नर कृत शास्त्रों में सब बन्धन
हैं नारी ही को लेकर,
अपने लिए सभी सुविधाएँ
पहले ही कर बैठे नर!
नारी के जिस भव्यभाव का
साभिमान भाषी हूँ मैं,
उसे नरों में भी पाने का
उत्सुक अभिलाषी हूँ मैं।"

दया, क्षमा, ममता, जो मनुष्यत्व की जननी है, उसका तो सोलहों आना हक़दार स्त्री को ही मानते हैं—

"ममता तो महिलाओं में ही
होती है हे मञ्जुमुखी।"

पञ्चवटी में दो परस्पर विरोधी स्त्री-चरित्रों की अवतारणा करके वे भारतीय महिला का आदर्श स्पष्ट कर देते हैं। एक हैं सीता और दूसरी सूर्पणखा। एक जितनी ही उज्ज्वल, निर्मल, पवित्र और दयामयी है, दूसरी उतनी ही कलुषित, दूषित, भ्रष्ट और क्रूर। पर उसके हृदय में भी आदर्श के प्रति आदर है। जादू वही जो सिर पर चढ़कर बोले। सूर्पणखा ने यद्यपि अपने को त्रैलोक्य सुन्दरी बनाने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी थी; किन्तु—

"चौंक पड़ी प्रमदा भी सहसा
देख सामने सीता को,
कुमुद्वती सी दबी देख वह
उस पद्मिनी पुनीता को।
एक बार उषा की आभा
देखी उसने अम्बर में,
एक बार सीता की शोभा
देखी विगताडम्बर में।
एक बार अपने अङ्गों की
ओर दृष्टि उसने डाली,
उलझ गई वह किन्तु बीच में
थी विभूषणों की जाली।

गुप्त जी अपनी कोटि के अकेले कवि हैं। उनकी कविता की तरी भाव की तरङ्गिणी में धीर-मन्थर गति से आगे बढ़ती जाती है, वहाँ से सहृदय दोनों तटों के उद्यान-जङ्गल, पशु-पक्षी, नर-नारी और उनके सुख-दुख का परिदर्शन बड़ी सरलता और कोमल सुन्दरता के साथ कर सकता है; किन्तु जहाँ भावों का वेग है, अनुभूति की गहराई है और मानसिक घात-प्रतिघातों की उत्ताल तरङ्गें हैं, वहाँ कवि अपनी नौका ले नहीं ले जाता, क्योंकि वह उसका क्षेत्र नहीं है। जहाँ पारिवारिक जीवन के बीच में होकर कविता के क्षेत्र का प्रवाह है, जहाँ परिवार के बड़े-छोटे, समाज के ऊँच-नीच और देश के त्यागी-तपस्वी अपनी-अपनी समस्याओं को हल करते हैं, वहीं उनकी कविता आदर्श जान पड़ती है। थोड़े में उनकी कविता के लिए यही कहा जा सकता है कि वह प्रत्येक काया में नवीन प्राण है।

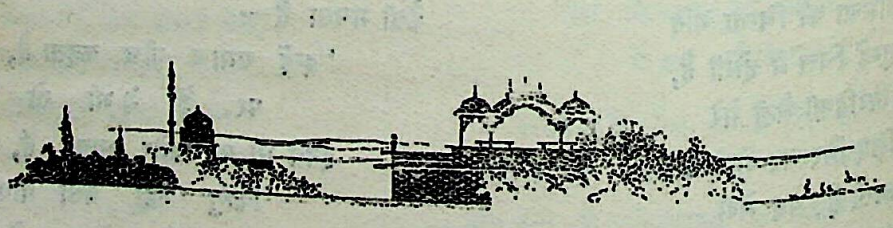

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पञ्जाब की जाग्रत महिलाएँ

श्री० मोहनसिंह सेंगर

आज या किसी आने वाले कल, जब भी भारतीय महिला-समाज के जागरण का इतिहास लिखा जायगा, मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि पञ्जाब-प्रांत का नाम सबसे पहले आयेगा। बाजारों में, मेलों और शादियों में शिक्षिता और सुन्दर पोशाक धारण किये पञ्जाबी बहनों को देखकर मेरा हृदय आनन्द से उछल पड़ता है। पर पञ्जाब की बहनों की जाग्रति केवल उनकी शिक्षा और पोशाक तक ही सीमित नहीं है; वह उनके जीवन में, उनके घर में, उनके प्रांत में बड़ी गहराई के साथ व्याप्त है। आज मैं संक्षेप में इसी विषय पर अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ।

पञ्जाब ही सर्व-प्रथम क्यों?

ऊपर मैं लिख आया हूँ कि भारतीय महिला-समाज के जागरण में पञ्जाब का स्थान सर्वप्रथम है। पर शायद इतना कह भर देने से बहनों को शान्ति न होगी। उन्हें इसका कारण जानने की भी उत्सुकता होगी। भारत के विभिन्न प्रांतों में नारी को ऊपर न उठने देने में मुख्य कठिनाइयाँ रही हैं, परम्परागत रूढ़िवाद और सामाजिक बन्धन। पर सौभाग्य से पञ्जाब में रूढ़िवाद और सामाजिक बन्धनों को अपनी जड़ गहराई तक पहुँचाने का अवसर नहीं मिला। इसका एक विशेष कारण है—जो भारत के किसी भी अन्य प्रांत के सम्बन्ध में लागू नहीं हो सकता—और वह यह कि भारत पर उत्तर-पश्चिम से हुई चढ़ाइयों ने पञ्जाब को सदा आबादी और बरबादी के सङ्घर्ष में जकड़े रक्खा। आत्म-रक्षा और पेट की चिन्ता ने उसे कभी रूढ़ियों और सामाजिक बन्धनों की ओर अधिक ध्यान देने ही नहीं दिया। दूसरा यवन-आक्रमणकारियों का बहुत-सा भाग पञ्जाब के पड़ोस में बस गया और प्रत्यक्ष या परोक्ष, इच्छा से या अनिच्छा से, पञ्जाब को उससे रोटी-बेटी का व्यवहार करना पड़ा। आक्रमणों का आतङ्क तो कालान्तर में शान्त हो गया, पर वह अपनी अमिट छाप पञ्जाब पर छोड़ गया। अपने नये पड़ोसियों के सम्पर्क और जीवन-संग्राम की कष्ट-साध्यता ने पञ्जाब के सामाजिक और धार्मिक बन्धनों को ढीला कर दिया। वह समय तो बीत गया, पर आज भी पञ्जाब में सामाजिक और धार्मिक बन्धन भारत के अन्य प्रान्तों की अपेक्षाकृत अधिक ढीले, लचीले और शिथिल हैं।

पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव

यवन-काल के बाद भारत में अङ्गरेज़ आये। यह लोग पूर्ववर्ती आक्रमणकारियों की भाँति उत्तर-पश्चिम से न आकर पश्चिम-दक्षिण से आये, पर इनसे पूर्व इनकी हवा पञ्जाब में पहुँच गई। यवन-राज्य के पतन और अङ्गरेज़ी-शासन की स्थापना से पूर्व पञ्जाब में सिक्खों का प्रभुत्व रहा। उनका कोई विशेष और स्थायी प्रभाव नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने अपना एक पृथक मत बना लिया। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके शासन ने पञ्जाब के धार्मिक और सामाजिक बन्धनों को ढीला करने में कुछ न कुछ सहायता ही पहुँचाई।

पर आधुनिक पञ्जाब के सामाजिक जीवन पर अगर सबसे अधिक असर किसी का हुआ है तो इसी पश्चिमी सभ्यता का। धार्मिक और सामाजिक बन्धनों की शिथिलता के कारण पञ्जाब ने पाश्चात्य सभ्यता को जिस शीघ्रता और सहूलियत के साथ अपना लिया; भारत के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसी दूसरे प्रान्त ने नहीं। कहीं-कहीं तो पाश्चात्य सभ्यता का रङ्ग इतना गहरा हो गया है कि विशुद्ध भारतीयता के प्रेमी चौंक भी उठे हैं। पर यह सर्वथा स्वाभाविक है, क्योंकि पाश्चात्य-सभ्यता में सब कुछ ऐसा नहीं है जिसे अपनाकर भारतीयता के मोह की रक्षा की जासके।

शिक्षा का बढ़ता हुआ प्रचार

पञ्जाब की बहनों को घर से बाहर लाने और समाज में आगे बढ़ाने का एकमात्र नहीं तो सब से अधिक श्रेय शिक्षा को है। पञ्जाब के हर नगर, क़स्बे और बड़े गाँव में कन्याओं की शिक्षा का प्रबन्ध है। पञ्जाब-सरकार ने स्वतः स्त्री-शिक्षा के प्रचार की ओर इतना ध्यान नहीं दिया, जितना कि महिलाओं ने चाहा और दिलवाया। आज पञ्जाब के साधारण से साधारण परिवार में भी कोई ऐसी कन्या न मिलेगी, जो निरक्षर हो। मैंने तो देखा है कि अब लड़कों की पढ़ाई पर उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा, जितना कि लड़कियों को। यही कारण है कि आज पञ्जाब में स्कूलों की संख्या असाधारण गति से बढ़ रही है। कॉलेजों में पढ़ने वाली बहनों की संख्या भी कम नहीं है, और कई बार उन्होंने अपनी प्रतिभा का ऐसा परिचय दिया कि पुरुष भी दङ्ग रह गये।

पर यह न समझना चाहिये कि पञ्जाब की बहनों की शिक्षा केवल पुस्तकीय-ज्ञान तक ही सीमित है। बहुत सी बहनों ने डॉक्टरी, नर्स, अध्यापन, सिलाई-बुनाई और दन्दौंसाज़ी में विशेष योग्यता प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का ख़ासा अच्छा परिचय दिया है। कई बहनें विदेश हो आई हैं। अब तो प्रति वर्ष कुछ न कुछ बहनें अध्यापन या डॉक्टरी की विशेष योग्यता प्राप्त करने विलायत जाती हैं। अभी थोड़े ही दिन हुए श्रीमती दत्त की अध्यक्षता में पञ्जाबी युवतियों का एक दल यूरोप की सैर करके लौटा है। मैं तो समझता हूँ कि इन बहनों का भ्रमण अन्य ज्ञान-पिपासु बहनों को भी विदेश में जाकर ज्ञानार्जन करने को उत्सुक बनायेगा और पञ्जाब के स्त्री-समाज में शिक्षा की लहर और भी प्रबलता के साथ आगे बढ़ेगी।

सामाजिक उन्नति और विकास

शिक्षा ने पञ्जाब की बहनों के जीवन को आमूल-चूल बदल दिया। पर्दा तो वे एक युग हुआ फाड़ चुकी थीं, अब जो थोड़ा-बहुत लोग-दिखाऊ पाखण्ड और झिझक थी, उसे भी बड़े साहस के साथ उन्होंने ठुकरा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज सामाजिक जीवन में यदि स्त्रियों का पलड़ा पुरुषों से भारी नहीं है तो हल्का भी नहीं है। वे समाज के हर क्षेत्र में पुरुष के समान भाग लेती हैं, सत्कार्य में उसे सहयोग देती हैं और अपनी इच्छा और अधिकारों के प्रतिकूल होने वाली जात का निर्भीक और दृढ़ता से विरोध करती हैं। शिक्षित महिला-समाज में पुरुषों के अत्याचार और ज्यादतियाँ एक प्रकार से अतीत की गाथाएँ हो गई हैं। बचपन की शादियाँ अपने आप उठ गई हैं, पुराने ढोंग-धतूरे लुप्त हो गये हैं, धर्म और जाति-पाँति की विडंबना मिट-सी गई है। अधिकांश विवाह जाति-पाँति तोड़ कर और प्रायः वर-कन्या की सहमति से होते हैं। इसका एकमात्र श्रेय पञ्जाब की बहनों को है, जिन्होंने कि पुरुष का हृदय और समाज का कलेवर ही बदल दिया है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि पञ्जाब की बहनों ने पुरुषों पर विजय पाई है।

मुस्लिम बहनें पिछड़ी हैं!

ऊपर मैं जो कुछ कह आया हूँ वह अधिकांशतः हिन्दू या सिक्ख बहनों के सम्बन्ध में ही लागू होता है। दुर्भाग्यवश पञ्जाब की मुस्लिम बहनें एक प्रकार से इस नारी-जागरण के युग का अपवाद बनी हुई हैं। उनमें से साधारण घरानों की बहनें तो प्रायः शिक्षा से दूर ही रहती या रखी जाती हैं। जो कुछ पढ़ती हैं, वे भी कॉलेज तक बुरक़ा नहीं छोड़तीं और फिर शिक्षा समाप्त करने के बाद बुरक़ा उनके जीवन के साथ ही चूसता है। अभी पिछले दिनों पञ्जाब-असेम्बली की मुस्लिम सदस्याएँ बुरक़े में ही एसेम्बली में आईं और बुरक़े में ही भाषण दिये! मैं तो समझ ही नहीं सका कि पढ़-लिखकर भी हमारी यह बहनें बुरक़े का मोह क्यों और कैसे नहीं त्याग सकीं? यही कारण है कि आज पञ्जाब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सार्वजनिक जीवन में केवल पुरुषों का प्राधान्य है और मुसलमानों में स्त्री-शिक्षा हिन्दुओं और सिखों की अपेक्षा शायद दशांश भी नहीं है।

कुछ मुस्लिम महिलाएँ भी ऐसी हैं कि जिन्होंने पर्दे को ठुकरा दिया है और जाति के मुल्ला-मौलवियों के शोशुल का ख़याल न कर आगे बढ़ रही हैं। सर अब्दुलक़ादिर की धर्मपत्नी लेडी अब्दुलक़ादिर शायद इनमें प्रमुख हैं। अपने व्यवहार और प्रतिभा से उन्होंने न केवल पञ्जाब या भारत में बल्कि विदेशों में भी ख्याति प्राप्त की है। मैं तो कहूँगा कि जब तुर्की, मिस्र, अरब, ईरान, ईराक, अल्बानिया आदि की मुस्लिम महिलाओं ने पर्दा त्याग दिया और आज सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन में आगे बढ़ रही हैं, तो पञ्जाब की भोली बहनें ग़ुलामी के इस चोले को उतार फेंकने में विलम्ब क्यों कर रही हैं? क्या उन्हें प्रकाश और स्वतन्त्रता प्रिय नहीं है?

फ़ैशन-परस्ती का रोग

मेरा यह लेख अधूरा ही समझा जायगा यदि मैं पञ्जाब में तीव्र गति से फैलने वाली एक संक्रामक महामारी का ज़िक्र न करूँ। वह महामारी है—'फ़ैशन परस्ती'। ख़ुशबूदार तेल, पाउडर, क्रीम, स्नो, सेंट, लिपस्टिक आदि का प्रचार बेहद बढ़ रहा है। कपड़ों और जूतों का फैशन तो इतना बढ़ रहा है कि वर्ष में शायद दो-एक डिज़ाइन नये आविष्कार किये जाते होंगे। विवाह उत्सव और मेलों आदि को जाने दीजिये, आमतौर पर बाज़ारों में से गुज़रने और प्रातः सायं वायु-सेवन को जाने वाली महिलाएँ ऐसे चटकीले-भड़कीले और बारीक कपड़े पहनती हैं कि जिससे उनकी 'लाज ढँकने' की मर्यादा का पालन की अपेक्षा उल्लङ्घन ही अधिक होता है। देश की दरिद्रता को ध्यान में रखते हुए यदि पञ्जाबी बहनें फैशन-परस्ती को कम कर बङ्गाल और गुजरात की भाँति सादगी को अपना सकें, तो शायद उनसे प्रान्त और देश को विशेष लाभ होगा। किसी अंश तक कुछ पञ्जाबी बहनों ने पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण करते हुए कई ऐसी बातों को भी अपनाना शुरू किया है, जो शायद भारतीय नारी के लिए शोभा और गौरव का कारण नहीं हैं। इस अप्रिय प्रसङ्ग को मैं अधिक न बढ़ाकर सिर्फ़ यही कहूँगा कि पञ्जाब की जाग्रत महिलाएँ इस फ़ैशन-परस्ती के कलङ्क को धो बहावें।

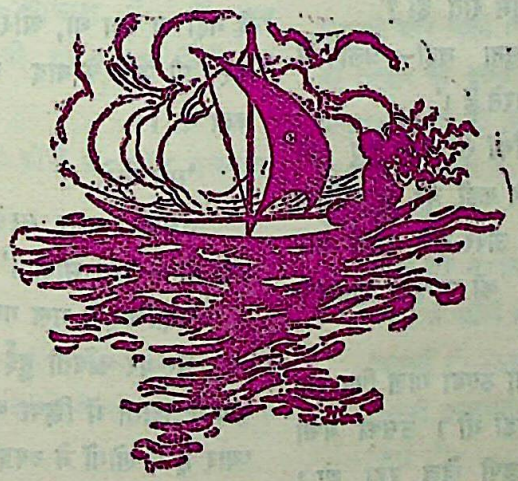

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

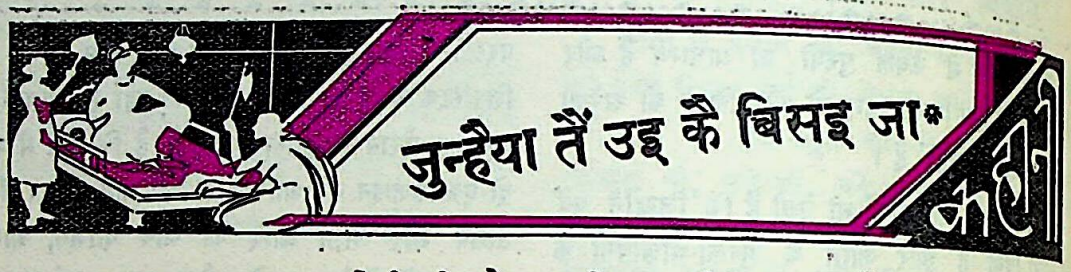

[श्रीमती वृजेशकुमारी लाल जी]

जेले पखवारे की नवमी को बारह बजे वह उठ बैठी। एकदम श्वेत साड़ी पहिने उसका दुबला-पतला सा शरीर कुछ लम्बा दिखाई दे रहा था—काँच की गिलसिया में एक द्रावक पदार्थ चमका उसने...। पास ही खाट पर कोई चीखा।

'अम्माँ।'

उसके हाथ की गिलसिया गिर पड़ी।

'शान्तिः शान्तिः।'

उसका काँपता गला जैसे सबको शान्त करने के लिए अनुरोध करके रो पड़ा हो।

'बेटा'—वह खाट के समीप गई।

'बेटा।'

उसने बहुत धीरे अपने उच्छ्वास को रोकते हुए फिर पुकारा। उसका गाल बहुत समीप बच्चे की श्वासों का अनुभव कर रहा था। उसके गाल पर अपना गाल रखते हुए उसने पूछा।—'बाबा तुम रोते हो?'

उसके 'बेटे' ने जैसे कुछ सुना नहीं—प्रलाप में वह बक रहा था—'अम्मा दादा मारते हैं।'

बड़े प्यार से उसने फूली आँखों से बहते हुए उन आँसुओं को चूमा। उनको बटोर कर कहीं वह चुरा-छिपा रख पाती। भावुक आँखों से उसने ऊपर-नीचे, चारों ओर देखा, उजेरे पखवारे की नवमी की जुन्हैया जुगजुगा रही थी।

बच्चे के गरम गाल पर अपना ठण्डा गाल फिर रख वह झपकी लेने लगी। वह देख रही थी। उसका बच्चा पड़ोस के बच्चों के सङ्ग लुका-छिपी खेल रहा था। उसने चुपके से झाँक कर देखा था, उसका बच्चा खेल रहा था। वह काम करने चली गई। इसके बहुत देर बाद जब वह अपनी नई शादी की सुखद बातों को अपनी सखी से कह रही थी, तभी सुनीता उसकी छोटी बहिन ने आकर कहा था—'दीदी बाबा तो कमरा बन्द करे है, खोलता भी नहीं न बोलता ही है।' तभी वह भागी, 'वे' भी दौड़े। न जाने क्या हुआ होगा उसके लाल को, सोच कर उसकी छाती काँप गई थी। तभी लोगों के तानों की परवाह न करके वह दौड़ी।

'बाबा दरवाज़ा खोल दे।'

उसने बहुत पुकारा, पर वह बोला नहीं। इधर से दरवाज़ा तोड़ डाला गया था। और सबों ने अन्दर झाँक कर देखा, वह खड़ा हुआ रो रहा था। उन्होंने क्रम-क्रम के उसे दो थप्पड़ मारे थे—'बोलता क्यों नहीं था रे!'

यही उनका प्रश्न था, जिसका उत्तर सिसकता बच्चा दे नहीं पा रहा था, और तभी हया और शरम को घोंट कर पी जाने के बाद उसने 'उनका' हाथ पकड़ कर कहा था।

'मत मारो।'

उसका सारा ग़ुस्सा उमड़-घुमड़ कर जैसे बिलख पड़ा हो—'मत मारो।'

कदाचित् वे भूल गए थे कि उसकी माँ नहीं थी।

थर-थर काँपती हुई 'वह' उस ६ साल के बच्चे को अपनी छाती में छिपा कर ले आई थी। 'ओहो! बड़ा प्यार है।' लोगों ने व्यङ्ग भी किया था।

उसी के बाद से वह बीमार पड़ा था। उसे बुखार था। उसके पूछने पर कि उसने दरवाजा खटखटाने पर जवाब क्यों नहीं दिया—बाबा ने बिलख-बिलख कर

---

* चाँदनी तू उदित होकर अस्त हो जा।

—लेखिका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोते हुए बताया था—कि उसे पैजामे में पेशाब हो गई थी। कारण सुनने के बाद वह उसे गुदगुदा कर कितनी जोर से हँसी थी ..।

झपकी में विमाता मुस्कराई।

'अम्माँ।' बच्चे ने पुकारा। वह एकाएक हड़बड़ा कर उठ बैठी।

'क्या है बेटा ?'

'पानी।'

वह उठी, उसने पानी पिलाया। सब सो रहे थे, पर उसका लाल अङ्गारे सी जलती आँखों को मींजते हुए तड़फड़ा रहा था।

'अम्माँ'—उसने पुकारा।

'हाँ बेटा...।'

'वहाँ क्या है ?'—आकाश की ओर उसने उँगली उठा कर पूछा।

'वहाँ ?'—उसने अलक्षित दृष्टि से देख कर पूछा—'वहाँ ?'

'हाँ अम्माँ—वहाँ।'

'वहाँ स्वर्ग है।' उसने जल्दी से कहा। उसका दिल धड़क रहा था।

'हाँ, दादा भी यही कहते थे। जब तुम गुस्सा हो कर चली गई थीं तो मैंने उनसे पूछा था कि अम्माँ कहाँ है ? तो उन्होंने कहा 'स्वर्ग में।' मैंने पूछा 'स्वर्ग कहाँ है ?' तो उन्होंने कहा—'आकाश में।' मैं खूब रोता था अम्मा, तुम भी रोई थीं तब ? इतने दिनों तक तुम्हें मेरी याद नहीं आई ?'

'आती थी बेटा।' उसकी कोरों में आँसू छल-छल छलक रहे थे...।

'और रोती भी थीं ?'

'हाँ बेटा...बहुत।'

'पहले तो तुम काली थीं अम्मा'.....उसने विमाता के हाथ को अपने क्षीण हाथों से पकड़ कर कहा। 'अब गोरी कैसे हो गईं ?'

'स्वर्ग से लौट कर बेटा। अब सो जाओ।'

'सो जाऊँ अम्मा ?'

'हाँ बेटा।' वह थपथपा कर उसे सुलाने लगी। उसने फिर अपना गाल उसके गाल पर रक्खा और धीरे से गाया।

'दीन दुखी जन की पुकार पर
जो नित क़दम बढ़ाता है...'

उसकी आँखें थोड़ी झँपीं—वह कुछ झूमीं—फिर सो गया। उसके ओंठ हिल रहे थे। साँस कुछ गरम सी थी...वह मुस्करा रहा था।

* * *

टन्—एक बजा।

विमाता बैठी थी...वह बच्चे को निहार रही थी। उसने देखा, उसके बच्चे का मुस्कराता चेहरा कुछ सिकुड़ा, फिर ओंठ हिले और हँसी गायब हो गई। वह चुप था, पर उसके आँसू बह रहे थे। अन्तर्द्वन्द के भाव उसके मुख पर स्पष्ट थे। मालूम देता था कि वह कुछ कहना चाहता है, पर कह नहीं पता।

विमाता के उठते-गिरते वक्षस्थल पर का आँचल आँसुओं से भीग उठा। उसने बच्चे के सिर पर हाथ रक्खा, जैसे उसके डर को एकदम भगा देगी।

माथा कुछ ठण्डा था, पसीने की बूँदें झलमला रही थीं। उसने देखा, बुखार तेजी से उतर रहा है। वह उठी, उसने बच्चे को फूल की तरह उठा लिया।

उसका आँचल नीचे गिर पड़ा। बेसुध सी वह पूजा-गृह की ओर चली। उसने वहीं उसे लिटा दिया। बुद्ध की तस्वीर को उसने बच्चे के माथे पर छुवाया। उसने अनुभव किया, जो छाया उसका पीछा कर रही थी, वह दरवाजे पर खड़ी है, पर अन्दर नहीं आ पाती है। उसने धीरे-धीरे गाया।

'सखे मेरे बन्धन मत खोल.....'

बच्चे ने आँखें खोलीं—

'अम्माँ!'—उसने पुकारा।

उसकी तन्मयता टूटी।

'बेटा।'

'अभी मुझे बड़ा डर लग रहा था।'

'कैसा डर बेटा ?'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसने कहने के लिये मुँह हिलाया, पर आवाज़ नहीं निकली। विवशता के आँसू टपक रहे थे—टप—टप। बाहर नवमी की जुन्हैया जुगजुगा रही थी।

'डर काहे का बेटा, मैं तो हूँ।'

'हाँ माँ, तुम तो हो। अच्छा अम्माँ मैं छोटा था तो क्या करता था?' तारम्य को तोड़ते हुए उसने एकाएक कहा। अपने बच्चे को बहलाने के लिए उसने कई घटनाएँ गढ़ रक्खी थीं। उसके रूठ जाने पर वह उन्हें कह कर उसे बहलाती थी, उसे याद आया।

'तुम?'—हड़बड़ा कर वह बोली।

'मैं जब कहती कि 'रोते नहीं' तब तुम सिर हिला कर कहते थे 'लोते एँ।'

बच्चा कुछ हँसा।

'छोटा था तब मैं कितना बड़ा था?'

'इतने'—उसने अपना बित्ता दिखाया।

'इतना?'—बच्चे ने अपने छोटे हाँथों की छोटी हथेली को भरसक चौड़ा करके कहा।

'हाँ बेटा।'

'और अम्मा पारसाल मैंने क्या किया था?'

'सत्तू मुझसे माँग ले गया था और बम्बे के नीचे तूने उसे खूब धोला.....।'

'अम्मा दर्द है।'—एकाएक वह चिल्लाया।

'कहाँ बेटा?'

'यहाँ-यहाँ।' उसने चारों ओर हाथ फेरा।

भयभीत हो विमाता ने देखा, छाया कुछ हिली।

'सुनीता मौसी को बुला दो अम्मा।'

बच्चे का गला घर्र-घर्र कर रहा था। उसने डर कर एक बार छाया की तरफ़ देखा, एक बार बच्चे की ओर।

दूर घण्टा बोला—टन् टन्न...

दो बजे थे।

× × ×

उसने बच्चे को फिर उठाया।

'कहाँ ले जा रही हो माँ?' उसने पूछा।

'चुप।'—उसने धीरे से कहा। वह सुनीता के कमरे की ओर जा रही थी। उसने सुनीता को जगाया।

'सुनीता।'—उसने कहा।

'हाँ।'

'जा गोबर ला।'

वह आश्चर्य से देख रही थी, पर बोली नहीं। वह गोबर ले आई थी। विमाता ने ज़मीन पुतवायी और बच्चे को उस पर लिटा दिया।

'बेटा, बता तुझे डर क्यों लग रहा था?'—उसने कोमल स्वर से पूछा।

'मुझे?' उसने घबड़ा कर चारों ओर देखा।

सुनीता कुछ-कुछ समझ रही थी, वह फूट-फूट कर रोने लगी।

'सुनीता।'—उसने पुकारा।

सुनीता ने देखा, दर्वाज़े की ओर उँगली किए हुए उसकी बहिन उसे घूर रही है।

'तुम जाओ, यह मन्दिर-गृह है, रोकर इसे अपवित्र न करो, अगर रोना है तो जाओ नहीं तो चुपचाप बैठो।'

उसका मुँह अज्ञात ज्योति से दीप्त हो रहा था। सुनीता उठी, पर ठिठक गई, उसके आँसू रुक गए।

'तुम्हें डर लगता है?' उसने बच्चे से फिर पूछा।

'हाँ!'—कष्ट से उसने कहा।

विमाता ने बिखरे मन को बटोरा—वह जानती थी जो बात दुनिया नहीं कर सकती वह उसका गाना कर सकता है। उसने गाया रुक-रुक कर, धीरे-धीरे, अपने गाने का प्रभाव देख-देख कर।

बच्चा सजग हो मुस्करा उठा। उसने गाना रोका—

'अब मुझे डर नहीं लगता अम्मा।' वह—बोला।

'मुझे ऐसा लगा कि आकाश से एक काली-काली लम्बी औरत उतरी। उसने तुमसे मुझे छीन लिया। मैं रो रहा था, पर उसने मुँह बन्द कर दिया और एक खूब ऊँचे जामुन के पेड़ पर धोती में बाँध कर लटका दिया। माँ, वह कौन थी?'

वह एकाएक हाँफने लगा, उसका पीला मुँह बोल पड़ने लगा—

'सीताराम अम्मा थीं।'—संयत शब्दों में विमाता ने कहा—

'वह देखो आ रही है, अम्मा मैं नहीं जाऊँगा—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह...।'—उसका गला घर्र-घर्र हो रहा था। साँस जल्दी चल रही थी।

'जाओ बेटा सीताराम अम्मा के पास जाओ। वह मुझसे अच्छी हैं—उनकी बड़ी गोद है, वे तुम्हें मारेंगी नहीं।' उसने बच्चे का माथा चूमा।

'अम्मा।' उसका गला रुँध गया था।

'जाओ बेटा सीताराम अम्मा के पास...।'

उसके बच्चे की खुली आँखें मुँद रही थीं।

'अम्मा तुम दिखाई नहीं देतीं।' फुस-फुस करके वह बोला, उसकी आँखें मुँदी जा रही थीं।

'जाओ बेटा सीताराम अम्मा के पास...।'

उसे लगा, छाया उसके पास आ गई है।

'जाओ बेटा...।' साहस से उसने कहा।

'अम्मा...।' और उसकी आँखें मुँद गईं। वह सुख की नींद सो रहा था।

सुनीता रो दी। 'बाबा, बाबा।' वह चीखी।

'चुप...' विमाता धीरे से बोली...। ...वह सो रहा है...।

टन्-टन्-टन् टन...चार बज गए।

नवमी की जुगजुगाती चाँदनी अस्त हो रही थी...

विमाता स्तम्भित सी अपने बाबा के गीतन की छिटकी चाँदनी का अस्त अर्थी की तैयारी में देख रही थी...निश्चल, निर्जीव, निर्वाक्...

दूर कोई भैरवी गा रहा था...'जुन्हैया तैं उइ कै विसइ जा...'

स्नेह-स्मृति

[श्री० बी० शर्मा]

मेरी दीन कुटी में किसने ये मुक्ता बिखराये री!
लुटता स्वर्ण-जगत मम पल-पल,
हुई हास की क्रीड़ा निष्फल,
इस निदाघ में उपवन के सब रम्य सुमन मुरझाये री!

इन अधरों में हास कहाँ अब,
जीवन में उल्लास कहाँ अब,
मुरझाता प्रसून इस जी को कैसे सजनि, रिझाये री!

आज विदा का कटु क्षण आया,
अनल शून्य अम्बर में छाया,
प्यार तुहिन बन व्यथित हृदय-कलिका पर ढल-ढल आये री!

निर्वासित का क्या धन आली,
सूखे तृण में क्या हरियाली,
स्नेह-मूर्ति पर दृग-मुक्ता ही मैंने आज चढ़ाये री!

अश्रु-उदधि यह भरने दे तू,
व्यथित-हृदय को झरने दे तू,
क्वचित अश्रु-सागर में स्मृति का 'कमल' नित्य मुसकाये री!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वराज्य और स्त्रियाँ

[श्री० गणेशदत्त "इन्द्र" आगर]

मैंने "स्वराज्य और स्त्रियाँ" शीर्षक से एक लेख सितम्बर के 'चाँद' में लिखा था, जिसे पढ़ कर बहिन कुमारी सुमित्रा भार्गव बी० ए०, डी० टी० के हृदय को ठेस लगी और बहुत संभव है दूसरी बहनों को भी कुछ भ्रम पैदा हो गया हो। कुमारी जी ने दिसम्बर के चाँद में "स्त्रियाँ और स्वराज्य" शीर्षक लेख लिख कर अपना रोष भी प्रकट किया है। जैसा कुमारी जी ने मेरे लेख को पढ़ कर अपने विचार बना लिये हैं, वैसा मेरा उद्देश्य नहीं था। लेख के आरम्भ में ही मैंने लिखा था—

"राजकारणों में प्राचीनकाल की स्त्रियाँ, कब और कैसे भाग लेती थीं; यह बात हमारे इतिहास अच्छी तरह बता रहे हैं। जब राजकार्यों में स्त्रियों की प्रधानता हुई, तब हमारा पतन आरम्भ हुआ। जहाँ-जहाँ और जब-जब स्त्रियों ने पुरुषों के पीछे लग कर, उनके कहने में आकर, राजनैतिक कामों में हाथ बँटाया तब-तब अघटित घटना हुए बिना नहीं रही। बिना किसी प्रेरणा के, जिन नारी-हृदयों में देश-सेवा की भावना का उदय हुआ, उन्हीं रमणी-रत्नों ने कुछ करके दिखाया भी। रानी कर्णावती और प्रातः स्मरणीया महारानी लक्ष्मीबाई हमारे इस कथन की पुष्टि कर रही हैं।"

इन वाक्यों के बाद मैंने महाराजा दशरथ की तृतीय पटरानी कैकेयी के सम्बन्ध में लिखते हुए, कैकेयी को राजा दशरथ की असामयिक मृत्यु का कारण बताया है। बस यही कैकेयी वाली बात श्रीमती कुमारी जी को बुरी मालूम हुई और इसी पर आपने अपना मत उक्त लेख में प्रकट किया है। आप मेरे लेख के कुछ वाक्यों को लेकर कैकेयी के लिये दुखी होकर कहती हैं :—

"हाय! कैकेयी निश्चय ही जन्म से ही अभागी थी, नहीं तो आज किसी को कहने का यह साहस न होता कि, स्वामी के प्राण बचाने का सफल प्रयत्न और उनकी विजय-प्राप्ति की मनोकामना भी उसका षड्यन्त्र था।... ....यह वही कैकेयी है, जिसके लिए हमारे पूज्य श्री सम्राट् मैथिलीशरण जी 'साकेत' में लिखते हैं—

पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई।
सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।"

दोनों लेखों के अंश यहाँ उद्धृत कर दिए गये हैं। लेखों में तो अधिक लिखा गया है, परन्तु वह बात जिस पर आपत्ति की गई है और जो उस पर विचार प्रकट किये गये हैं, वे ही यहाँ लिख दिए गए हैं। मैं स्त्री जाति को किस सम्मान से देखता हूँ और राजनैतिक क्षेत्र में उन्हें कहाँ पर प्रतिष्ठित देखने का उत्सुक हूँ, इसे मैं ही जानता हूँ और कुछ-कुछ वे भी जान सकती हैं, जिन्होंने मेरे लेख को ध्यानपूर्वक पढ़ा हो। मैंने रानी कैकेयी के सम्बन्ध में जो मैंने कटु-सत्य कह डाला, सम्भव है, कई लोगों को बुरा प्रतीत हुआ हो। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करते हुए किसी के प्रति श्रद्धा रख कर या पक्षपात करके विचार करने से हानि के सिवा कोई लाभ नहीं होता। मैंने कैकेयी के प्रति कटु-वाक्यों का प्रयोग किया हो, सो नहीं। मैं महर्षि बाल्मीकि प्रणीत काव्य में से ही कैकेयी के सम्बन्ध में तत्कालीन मान्य पुरुषों के वाक्यों को यहाँ उपस्थित

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करके कुमारी जी के दुःख, आश्चर्य, क्रोध और हास के मिश्रण के भ्रम को दूर कर देना चाहता हूँ।

जब राजा दशरथ से कैकेयी ने भरत को राज्याभिषेक और राम को वनवास अपने वरदानों के रूप में माँगे, तब राजा ने कैकेयी से कहा :—

"नृशंसे दुष्ट चारित्रे कुलस्यास्य विनाशिनि।
किंकृतं तव रामेण पापे पापं मयापिवा।"

हे क्रूरे, पापिनी! दुष्ट चरित्रे! कुल का नाश करने वाली, मैंने या राम ने तेरा क्या अपराध किया? इत्यादि कटु वचनों से उसे सम्बोधन किया। जब देखा कि कैकेयी अपने निश्चय से टस से मस नहीं होती तब बेचारा वृद्ध राजा दशरथ, इक्ष्वाकुवंशीय प्रतापी धर्मात्मा दशरथ कैकेयी से कहता है—

"अञ्जलिं कुर्मि कैकेयी पादौ चा पिस्पृशामिते।
शरणं भव रामस्य माऽधर्मो मामिहस्पृशेत्॥

अर्थात्—कैकेयि! मैं तेरे सामने हाथ जोड़ता हूँ, तेरे पाँव छूता हूँ। तू राम की रक्षक बन, इत्यादि पाषाण-हृदय को द्रवित कर देने वाले वचनों पर भी कैकेयी न पसीजी! राजा के जीवन-मरण का प्रश्न सामने है, परन्तु कैकेयी कुछ नहीं सोचती। देवताओं द्वारा सरस्वती को प्रेरित कर कैकेयी की मति भ्रष्ट कर देने का रूपक, भावुकजनों की वस्तु है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका कुछ भी मूल्य नहीं है। क्या कैकेयी का अपने पति के लिये यह निष्ठुर व्यवहार श्लाघ्य था? ऐसे दुःखसागर में डूबते हुए राजा को कैकेयी ने कोई आश्रय नहीं दिया। बल्कि उसे कटु वचनों द्वारा और भी मर्माहत किया। वह कैकेयी, जो अपने पुत्र के हितार्थ पति के प्राणों की चिन्ता नहीं करती, क्या समझी जा सकती है? दशरथ कहते हैं :—

रममाणस्त्वयासार्द्धं मृत्युंत्वांनाभिलक्षये।
बालो रहसि हस्ते न कृष्णसर्पमिवास्पृशम्॥

अर्थात्—तेरे साथ आनन्द मनाते हुए मुझे अपनी मृत्यु नहीं दिखाई दी। बालक की तरह एकान्त में काले नाग को मैंने खिलाया है। इतना कह कर वह कैकेयी के पैरों में गिर पड़ा, परन्तु कैकेयी ने ज़िद न छोड़ी। स्वयं वाल्मीकि ने कैकेयी के लिये "अनार्या" शब्द प्रयोग किया है। यह उस युग की कड़वी से कड़वी गाली है :—

"तदप्रियमनार्याया वचनं दारुणोदयम्।"
"कैकेय्याश्चाप्यनार्याया निष्पपात महाद्युति॥"

राम के वनगमन के समय दशरथ बेहोश होकर गिर पड़ा, सुमित्रा और कौशल्या रो पड़ीं, सुमंत्रादि धैर्य छोड़ कर पुकार उठे। महल में दुःख और करुणा का महासागर उमड़ पड़ा, परन्तु उस कैकेयी के मुख पर खेद की रेखा तक नहीं दीख पड़ी।

"देव्याः समस्ता रुरुदुः समेतास्तां वजयित्वा नरदेवपत्निम्। रुदन्सुमन्त्रोपि जगाममूर्च्छां हाहाकृतं तत्रबभूव सर्वम्।"

सुमंत्र ने कैकेयी को क्या-क्या नहीं कहा :—

"नह्यकार्यं तमंकिञ्चित्तव देवीहवियते।
पतिघ्नित्वामहं मन्ये कुलघ्नीमपि चान्ततः।
न चते विषये कश्चिद् ब्राह्मणो वस्तु मर्हति।"

× × ×

"आचरन्त्या न विदता सद्यो भवति मेदिनी।"

अर्थात्—"कैकेयी! तू अपने पति को मारने वाली और कुल का नाश करने वाली है। जहाँ तू बसेगी कोई ब्राह्मण नहीं रहेगा। आश्चर्य है कि तेरे रहते पृथ्वी फट क्यों नहीं जाती।" कितने परुष वचन हैं? ज़रा वशिष्ठ जी के वचन सुनिये। वे कहते हैं—

"न गन्तव्यं वनं देव्या सीतया शीलवर्जित।"

ऐ शीलशून्य कैकेयी, सीता वन-गमन के योग्य नहीं है। "शील रहित" शब्द का प्रयोग नारी के लिए कैसी गाली है; यह विचारणीय है। कैकेयी को सबने धिक्कारा, आबाल वृद्ध, नर नारी, सभी ने भर्त्सना की। राजा दशरथ ने पैरों गिर कर क्षमा चाही, परन्तु कैकेयी पर कुछ प्रभाव नहीं। बाल्मीकि ने लिखा है—

नैषाहि सा स्त्री भवति श्लाघनी येन धीमता।
उभयोर्लोक योर्लोक पत्याया संप्रसाद्यते।

वह स्त्री ही नहीं, जिससे पति क्षमा माँगे। अभी तक हमने ऐसे प्रमाण दिये जिनमें पुरुषों ने कैकेयी का धिक्कारा है। यह बात शायद कुमारी जी के लिए फिर कुछ लिखने का मौक़ा दे; अतएव कौशल्या जैसी सती-साध्वी के मुख से निकले वचन सुनिए :—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकामाभव कैकेयि मुङ्क्ष्वराजमकण्टकम् ।
त्यक्त राजानमेकाग्रा नृशंसे दुष्टचारिणी ॥
इच्छेज्जीवतुमन्यत्र कैकेय्यास्तक्त धर्मणः ।

कौशल्या ने कैकेयी को नृशंस, दुष्टाचरण वाली, धर्मशून्य कह कर सम्बोधन किया है । अब स्वयं भरत के शब्दों में कैकेयी के लिए सुनिए—

"राजानं प्रेतभावस्थं कृत्वारामंच तापसम् ।"
"उत्पन्नातुकथं बुद्धिस्तवेयं पापदर्शिनी ।
साधु चारित्र विभ्रष्टे पूर्वेषां नो विगर्हिता ।"
"कौसल्यां धर्म संयुक्तां वियुक्तां पापनिश्चये ।
कृत्वाकं प्राप्य से ह्यद्य लोकं निरय गामिनी ।"

अर्थात्—तू ही पिता जी की मृत्यु का कारण हुई है । पापिनी ! तुझे यह पाप-बुद्धि क्यों सूझी ? तू साधु-चरित्र से भ्रष्ट है । माता कौशल्या को पुत्र से वियुक्त कर तू किस लोक को प्राप्त होगी—तू अवश्य नरक-गामिनी होगी ।

कैकेयी के इस अधम कृत्य पर मैंने ही नहीं, तत्कालीन सभी लोगों ने कैकेयी को दोषी ठहराया है । गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी—

कैकय नन्दिनि मन्दमति, कठिन कुटिल पन कीन्ह ।
जेहि रघुनन्दन जानकिहिं, सुख अवसर दुख दीन्ह ॥

× × ×

सुनि सुत वचन सनेहमय, कपट नीर भरि नैन ।
भरत स्रवन मन सूल सम, पापिनि बोली बैन ॥

× × ×

जबते कुमति कुमत जिय ठयऊ ।
खंड खंड होई हृदय न गयऊ ॥
बर माँगत मन नहिं भइ पीरा ।
गरि न जीह मुँह परेउ न कीरा ॥

× × ×

जोहसि सोहसि मुँह मसिलाई ।
आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥

इत्यादि वचन भरत जी से कहलाए हैं । रघुवंश, अध्यात्म-रामायण आदि काव्य-ग्रन्थों में भी यही बात पाई जाती है । कैकेयी के क्रूरकृत्य का न कहकर, सत्य को छिपाने से ही तो स्त्रियाँ उन्नत नहीं हो जातीं । मैंने जो कुछ भी लिखा था, ऐतिहासिक तथ्य को लेकर ही । उससे बहन सुमित्रा जी के हृदय को दुःख हुआ, इसका मुझे खेद है ।

हमारे प्राचीन इतिहास-ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण और महाभारत ही कहे जाते हैं, अतएव उन्हीं में के दो प्रमाण देकर रघुवंश और कुरुवंश के राजकारणों में स्त्रियों की अज्ञता के कारण जो दोष आ गये थे उनका दिग्दर्शन कराया था । कैकेयी के अतिरिक्त दूसरे उदाहरणों पर कुमारी जी को कोई आपत्ति भी नहीं थी । अच्छा होता यदि कुमारी जी दो-चार ऐसे ऐतिहासिक प्रमाण पेश करतीं कि "राज-कारण में स्त्रियों के सम्मिलित होने पर अनेक लाभ हुए ।" ऐतिहासिक सत्य को स्त्री-जाति का अपमान नहीं समझना चाहिये । मैंने अपने लेख के आरम्भ में ही लिख दिया है कि "बिना पुरुषों की प्रेरणा के ही स्त्रियों को राजनैतिक क्षेत्र में क़दम बढ़ाना चाहिए । इसका यह अर्थ तो नहीं होता कि स्त्रियाँ राजनीति में हस्तक्षेप ही नहीं कर सकतीं । मैंने तो लेख में पुरुषों को ही दोषी ठहराया है कि उन्होंने जबरन् स्त्रियों को राजनीति में घसीट कर उन्हें मार्गच्युत किया है । इसमें स्त्री-जाति का कोई अप-मान नहीं । स्त्रियों के लिये जो मैंने ठीक समझा वही लिखा है । स्वराज्यान्दोलन में स्त्रियों को प्रवेश कराने में पुरुषों ने क्या-क्या अन्याय नहीं किये ? उन्हीं से बचने के लिए मैंने बहनों को कुछ सुझाया था । आशा है कैकेयी के प्रति मेरे विचारों की पुष्टि में दिए इन प्रमाणों से कुमारी जी को सन्तोष होगा ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समाजवाद

[श्री० उमाशङ्कर

कुछ समय पहले राजनैतिक कार्यकर्ताओं का यह आदर्श रहा है कि लोकतन्त्र शासन-प्रणाली ही सर्वोत्कृष्ट शासन-प्रणाली है। इस कारण इस आदर्श की प्राप्ति के लिये बहुत से राजनैतिक कार्यकर्ता बहुत यत्न करते थे, बहुत समय और शक्ति लगाते थे, बहुत त्याग करते थे तथा बहुत कष्ट और नाना प्रकार की यातनाएँ सहते थे। समझा यह जाता था कि दासता पाप है और लोकतन्त्र के आदर्श के आधार पर स्थापित स्वतन्त्रता पुण्य है। यह बात मान ली गयी थी कि लोकतन्त्र शासन-प्रणाली की स्थापना होने से स्वराज्य हो जायगा और सारा दुःख जाता रहेगा। इस प्रकार की स्वतन्त्रता के लिये बड़े-बड़े आन्दोलन हुए, बड़े-बड़े युद्ध हुए, बड़ी-बड़ी क्रान्तियाँ हुईं, ख़ून की नदियाँ बहीं, महापुरुषों को कारागार की यातनाएँ सहनीं पड़ीं और जान भी देनी पड़ी। यह सब होता रहा और संसार के कुछ भागों में लोकतन्त्र शासन-प्रणाली की स्थापना भी हो गयी। लेकिन इस बीच में यह भी अनुभव होने लगा कि समाज की समस्याओं को जो अधिकांश में आर्थिक होती हैं, हल करने के लिये लोकतन्त्र शासन-प्रणाली अपर्याप्त है। लोग यह सोचने लगे कि जिसे लोकतन्त्र शासन-प्रणाली कहा जाता है, उसके स्थापित होने से समाज की सब श्रेणियों का उद्धार नहीं हो सकता। यह भी अनुभव किया जाने लगा कि इस प्रकार के स्वराज्य का अर्थ केवल यह हो सकता है कि कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों और धनिकों का राज्य और उन्हीं का सुख। इसलिये ग़रीब और दलित श्रेणी के लोग, जिनके ही लिये विशेष कर स्वराज्य की आवश्यकता होती है, ऐसी दशा में भी ग़रीब और दलित ही बने रहेंगे। ऐसी स्थिति में प्रश्न उठता है कि दलित और ग़रीब लोग ऐसे स्वराज्य की प्राप्ति की आकांक्षा क्यों करें, जिसके स्थापित होने से उनका जीवन प्रायः उसी तरह दुखी रहेगा जैसा पर-राज्य में श्रमजीवी, दलित श्रेणी के लोग तो ऐसे ही स्वराज्य की आकांक्षा कर सकते हैं तथा उसके लिये यत्न कर सकते हैं, जिसके स्थापित होने से उनके दुःख दूर हो सकें और वे मनुष्य का जीवन बिता सकें। बस यहीं से समाजवाद के विचार का उदय होता है। समाजवाद के सिद्धान्तों के विषय में विचार करने के पहले वर्तमान सामाजिक दशा पर विचार कर लेना अच्छा होगा।

इस समय समाज में एक तरफ़ भीषण दारिद्र्य है। बहुत से लोगों को दिन-रात कठिन परिश्रम करने पर भी पेट भर खाने को अन्न, तन ढकने को वस्त्र और रहने को जगह नहीं प्राप्य है। बहुत से लोग बेकार हैं, काम करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें काम नहीं मिलता। एक तरफ़ तो ऐसे लोग हैं, जो क़ीमती से क़ीमती खाना खाते हैं, और भरपेट खाने के बाद थाली में भी छोड़ देते हैं और वह फेंक दिया जाता है। वे इतना अधिक खाते हैं कि बीमार पड़े रहते हैं, और दूसरी तरफ़ ऐसे लोगों की बहुत बड़ी संख्या है, जिन्हें खाने को सूखी रोटी ही नसीब होती है, अथवा जिन्हें सूखी रोटी भी नसीब नहीं होती। एक तरफ़ ऐसे लोग हैं जिनके रहने के लिये आलीशान मकान और बग़ीचे हैं; गरमी में खस की टट्टियों के अन्दर बिजली के पङ्खों के नीचे आराम से रहते हैं या पहाड़ों पर चले जाते हैं और जाड़े में गरम कमरों में सोते हैं। दूसरी तरफ़ बहुत से लोगों को सोने तक के लिये कोठरी नहीं है। वे गरमी में कड़ी धूप में परिश्रम करते हैं और जाड़े में शीत में ठिठुरते रहते हैं। एक तरफ़ तो तन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ढकने तक को वस्त्र नहीं मिलता और दूसरी तरफ़ लोग मखमल के फ़र्श पर जूता पहन कर चलते हैं और क़ीमती से क़ीमती रेशमी और पशमीने के वस्त्र धारण करते हैं। एक तरफ़ बीमारी में दवा और दूध भी प्राप्त नहीं होता और दूसरी तरफ़ डॉक्टरों की भीड़ लगी रहती है और क़ीमती से क़ीमती दवा दी जाती है। एक तरफ़ दुःख ही दुःख है और दूसरी तरफ़ सुख के सब साधन सुलभ हैं। एक तरफ़ बड़े-बड़े मकान और महल खाली पड़े हैं और दूसरी तरफ़ एक ही छोटी कोठरी में कई मनुष्य सोते हैं।

निश्चय ही इस विषमता का, जिसमें एक तरफ़ सारा दुःख और दूसरी तरफ़ सारा सुख है, प्रतिकार होना चाहिये। इस बात का यत्न होना चाहिये जिससे यह भीषण विषमता दूर हो और सब लोग सुखमय जीवन बितावें। इतना ही नहीं, अपितु जिनके हिस्से में इस समय सारा सुख है, उनका भी जीवन अधिक सुखमय हो सके।

समाज में इस समय जो भीषण विषमता है अर्थात् एक तरफ़ जो सारा दुःख है और दूसरी तरफ़ सारा सुख है—उसको दूर करने का उपाय समाजवाद है। समाजवाद का मतलब यह है कि उत्पादन, विनिमय और वितरण के मुख्य साधन समाज के हाथ में रहें। इसका स्पष्ट अर्थ यह होता है कि मशीन, कारखाने और भूमि आदि उत्पादन के मुख्य साधन सम्पूर्ण समाज या सम्पूर्ण राज्य के हाथ में रहेंगे। सम्पूर्ण-समाज लोकतन्त्र के आधार पर निर्वाचित अपने प्रतिनिधियों के द्वारा समाज की आवश्यकता के अनुसार वस्तुओं का उत्पादन करेगा, और इस बात का प्रबन्ध करेगा कि समाज के सब लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो अर्थात् उत्पादित वस्तुओं के वितरण और विनिमय के मुख्य साधनों पर भी समाज का नियन्त्रण रहे। रेल, जहाज़, बैङ्क आदि जो विनिमय के मुख्य साधन हैं, समाज की सम्पत्ति होंगे। इस प्रबन्ध का परिणाम यह होगा कि समाज की आवश्यकता के अनुसार ही वस्तुएँ तैयार होती रहेंगी और व्यक्तियों की आवश्यकता के अनुसार ही उन्हें मिलती रहेंगी। अगर ये साधन कुछ व्यक्तियों या कुछ व्यक्तियों के समूहों के हाथ में रहते हैं और उनकी सम्पत्ति हो जाते हैं, तो वे एक-मात्र अपने लाभ की दृष्टि से वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। साथ ही उन वस्तुओं से प्राप्त लाभ कुछ व्यक्तियों या कुछ व्यक्तियों के समूहों के पास इकट्ठा हो जाता है और ऐसा होने से समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रश्न हल नहीं होता। समाजवाद के सिद्धान्तों के आधार पर सङ्गठित समाज में उत्पादन, विनिमय और वितरण के मुख्य साधन समाज की सम्पत्ति होंगे; समाज की आवश्यकताओं के अनुसार वस्तुएँ तैयार होंगी; अशक्तों को छोड़कर अन्य सब काम करने की शक्ति रखने वालों को काम करना अनिवार्य होगा और शक्तों और अशक्तों, सब की आवश्यकताओं की पूर्ति की जायगी।

वर्तमान स्थिति में कारखाने वाले लाभ के लिये वस्तुएँ तैयार करते हैं। वे जिन वस्तुओं के तैयार होने में ज़्यादा लाभ देखते हैं, उन्हें ही तैयार करते हैं। समाज की आवश्यकताओं पर उनका ध्यान नहीं रहता। वे अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिये श्रमिकों को कम से कम मज़दूरी देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि मज़दूरों को इतनी कम मज़दूरी मिलती है कि वह उनके भरण-पोषण तक के लिये पर्याप्त नहीं होती, अन्य आवश्यकताओं की बात दूर रही। फलतः मज़दूरों में असन्तोष बना रहता है और कारखानेदारों और मज़दूरों में तनातनी बनी रहती है। यही कारण है कि बराबर हड़तालें होती रहती हैं। झगड़ों को सुलझाने की हज़ार कोशिशें होती हैं, लेकिन वे नहीं सुलझतीं। इसी प्रकार ज़मींदारों की सदा यह आकांक्षा रहती है कि वे किसानों से अधिक से अधिक धन खींच लें। इसका नतीजा भी यही होता है कि ज़मींदारों और किसानों का झगड़ा कभी तै ही नहीं होता। एक तरफ़ कारखाने वाले और ज़मींदार बिना कुछ परिश्रम किये ही सारी सुविधाएँ प्राप्त करते हैं, और सब तरह से सुखी और सम्पन्न रहते हैं और दूसरी तरफ़ किसान और मज़दूर बहुत परिश्रम करके भी अन्न-वस्त्र-विहीन रहते हैं और सब तरह से दुःखमय जीवन बिताते हैं।

समाजवादी सिद्धान्तों के आधार पर सङ्गठित समाज में ये सब झगड़े न रहेंगे; मशीनें, कारखाने और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भूमि समाज की सम्पत्ति होंगी। इस बात का प्रबन्ध रहेगा कि सब लोग अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार काम करें और सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो। इस प्रकार स्पष्ट है कि समाजवादी राज्य में श्रेणियाँ ही न रहेंगी, इसलिये श्रेणी-युद्ध भी न होंगे।

वैसे तो इस समय भी समाज के लिये जिन-जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वे प्रायः सभी तैयार होती हैं। लेकिन इस समय समाज की आवश्यकताओं का ख़याल करके वस्तुएँ तैयार नहीं होतीं, और इसके सिवाय कुछ व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह एकमात्र अपने लाभ की दृष्टि से वे वस्तुएँ तैयार करते हैं। समाजवादी समाज में ऐसा न होगा। समाजवादी समाज में समाज की आवश्यकताओं को ही ध्यान में रख कर वस्तुएँ तैयार होंगी, लाभ करने और समाज को चूसने की भावना से नहीं।

कहा जाता है कि समाजवाद ज़मींदारों और पूँजीपतियों का विनाश चाहता है। ये बातें ऐसे ढङ्ग से कही जाती हैं मानों इस समय जो लोग ज़मींदार या पूँजीपति हैं, समाजवादी व्यवस्था होने पर अपना जीवन ही न बिता पावेंगे, या बहुत कष्ट के साथ ज़िन्दगी काटेंगे। समाजवाद के सिद्धान्तों के आधार पर समाज का सङ्गठन होने का अर्थ यही होता है कि समाज में ज़मींदार और पूँजीपति नाम के मनुष्य न रह जायँगे, ज़मींदारी और पूँजीशाही प्रथा नष्ट हो जायगी, किसानों और मज़दूरों का शोषण बन्द हो जायगा। इस समय जो ज़मींदार और पूँजीपति हैं, वे समाजवादी राज्य में श्रमजीवी हो जायँगे; उन्हें अन्य श्रमजीवियों की तरह काम करना अनिवार्य हो जायगा और वे उन्हीं की तरह ही सुखी और सम्पन्न होंगे। इसका स्पष्ट अर्थ यह होता है कि इस समय जो लोग ज़मींदार या पूँजीपति हैं, वे समाजवादी राज्य में भी सुखी रहेंगे, उनकी सब आवश्यकताएँ पूरी होंगी। भेद केवल इतना ही होगा कि इस समय ज़मींदार और पूँजीपति कुछ काम नहीं करते और तिस पर भी सुखमय जीवन बिताते और सब तरह से सम्पन्न रहते हैं। काम करने से जो सुख होता है वह समाजवादी राज्य में ज़मींदारों और अन्य पूँजीपतियों को भी प्राप्त होगा और इस दृष्टि से वे अधिक सुखी होंगे। कहने का मतलब यह है कि ज़मींदारों और पूँजीपतियों को समाजवाद से घबराना नहीं चाहिये; इस समय किसानों और मज़दूरों के आन्दोलनों के कारण उन्हें जो चिन्ताएँ घेरे रहती हैं, वे समाजवादी राज्य में जाती रहेंगी।

हम लोग बहुत समय से एक विचित्र प्रकार के समाज में रहते आये हैं, इस कारण समाजवादी सिद्धान्तों के आधार पर सङ्गठित समाज का चित्र हमारे सामने स्पष्ट-रूप से दिखाई नहीं देता। जैसे-जैसे समाजवाद का विकास होता जायगा, वैसे-वैसे यह चित्र स्पष्ट होता जायगा और मालूम हो जायगा कि समाजवाद सर्वथा स्वाभाविक है। इस समय यही एक प्रणाली ऐसी दिखाई दे रही है, जिससे मनुष्य-समाज का दुःख दूर हो सकता है।

इस समय जो ज़मींदार या पूँजीपति हैं, उनको समाजवादी राज्य में खाने की आवश्यक सामग्री, पहनने के लिये आवश्यक वस्त्र और रहने के लिये काफ़ी अच्छा मकान उसी तरह प्राप्त होगा जिस तरह श्रमजीवियों को।

निजी सम्पत्ति का प्रश्न भी उठाया जाता है। समाजवाद का पूर्ण विकास होने पर निजी सम्पत्ति का प्रश्न उठेगा ही नहीं। बात यह है कि उस समय उससे अधिक वस्तु का कोई उपयोग ही न रह जायगा जितनी कि किसी व्यक्ति को आवश्यकता होगी। समाजवादी राज्य का सङ्गठन होने पर भी निजी सम्पत्ति इसी रूप में रह सकती है कि लोग अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ रख सकेंगे, लेकिन पूँजी न बढ़ा सकेंगे। लोग आवश्यकता के अनुसार घर, कपड़ा, खाने की सामग्री, पुस्तकें आदि रख सकेंगे, पर पूँजी न इकट्ठी कर सकेंगे। उस समय पूँजी बढ़ाने का उपयोग भी न रहेगा। बात यह है कि लोग पूँजी बढ़ाकर बड़े-बड़े व्यापार करते हैं, इससे लाभ उठाते हैं, समाज की आवश्यकता का ध्यान नहीं रखते और समाज के बहुत से लोगों को आर्थिक दासता में जकड़ देते हैं। समाजवादी राज्य में यह बात न हो सकेगी। मूल बात यह है कि समाजवादी राज्य में आर्थिक शोषण बन्द हो जायगा, सब लोग काम करेंगे। सब सशक्त व्यक्तियों के लिये काम करना अनिवार्य होगा और सब सशक्त और अशक्त व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रबन्ध रहेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहा जाता है कि जब लोगों को धन-सञ्चय करने का अवसर न मिलेगा और वे धन-सञ्चय न कर पावेंगे तो उन्हें अधिक से अधिक काम करने का, अपनी शक्तियों का अधिक से अधिक उपयोग करने का प्रोत्साहन न मिलेगा। यह बात वर्तमान अवस्था में कुछ अंश में सत्य अवश्य है, लेकिन वास्तव में ऐसी बात नहीं है। बात यह है कि मनुष्यों पर हज़ारों पीढ़ियों से बराबर ऐसा ख़राब संस्कार पड़ता आया है, उन्हें ऐसी अनुपयुक्त शिक्षा के प्रभाव में जीवन बिताना पड़ा है कि उनमें स्वार्थ और लोभ की भावना ने ज़ोर पकड़ लिया है और ऐसा मालूम होने लगा है कि यही मनुष्यों की प्रकृति के अनुकूल है। इस विषय पर थोड़ा ध्यान देकर विचार किया जाय तो मालूम होगा कि मनुष्य की प्रकृति लोभी और स्वार्थी नहीं है, और लोक-हित की भावना में उसे अधिक से अधिक प्रोत्साहन मिलता है। बड़े-बड़े वैज्ञानिक आविष्कार और उत्तम साहित्यिक रचनाएँ स्वार्थ की भावना और धन के लोभ से नहीं हुई हैं। जिन लोगों ने बड़े-बड़े वैज्ञानिक आविष्कार किये हैं, उन्हें उन आविष्कारों को करने की उत्कट प्रेरणा हुई है और ऐसा करने में उनका चित्त लग गया है, तभी उन्होंने किया है। सुन्दर साहित्यिक रचनाएँ भी भीतरी प्रेरणा और अपने सुख के लिये हुई हैं। इसी प्रकार सभी के विषय में समझना चाहिये। एतदर्थ यह विचार भ्रमात्मक है कि धन का लालच न होने से लोगों को उन्नति करने और कोई बड़ा काम करने के लिये कोई प्रोत्साहन की बात न रह जायगी। और किसी देश या संसार की उन्नति रुक जायगी। सच बात तो यह है कि लोक-हित की भावना में ही काम करने के लिये सच्चा प्रोत्साहन मिलता है।

समाजवाद के आन्दोलन के कारण श्रेणी-युद्ध ज़रूर होता है। सम्भवतः श्रेणी-युद्ध के बिना समाजवाद की स्थापना न हो सकेगी। बात यह है कि जब समाज में शोषक और शोषित मौजूद हैं, तब उनका झगड़ा रोकना बहुत कठिन और सम्भवतः असम्भव मालूम हो रहा है। समाजवाद की स्थापना होने पर न शोषक रह जायँगे और न शोषित, और इस कारण उस समय श्रेणी-युद्ध भी न रहेगा। उस समय सब श्रमजीवी रहेंगे; उस समय श्रमजीवियों की एक ही श्रेणी रह जायगी और झगड़े का कारण जाता रहेगा। वर्तमान दशा में जब एक तरह के लोग दूसरी तरह के लोगों को चूसते हैं और उन्हें दबाते हैं, तो इन दो प्रकार की श्रेणियों में झगड़ा रहेगा ही। वैसे यह झगड़ा कुछ दबा सा मालूम होता है, समाजवाद के प्रचार से ऐसे झगड़े ज़रा उभड़ आते हैं। समाजवाद की स्थापना होने पर ऐसे झगड़ों का बीज ही नष्ट हो जायगा और फिर ऐसे झगड़ों की सम्भावना जाती रहेगी।

इस लेख में सर्वत्र समाजवाद शब्द का प्रयोग किया गया है, साम्यवाद शब्द का नहीं। समाजवाद का मतलब यह है कि समाज का इस प्रकार सङ्गठन किया जाय कि सारा समाज एक कुटुम्ब सा हो जाय, सब की आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रबन्ध किया जाय और सब अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार काम करें। समाजवाद का कदापि यह मतलब नहीं है कि सब मनुष्य बराबर हैं और सब मनुष्यों की शक्तियाँ बराबर हैं। समाजवाद कोई अस्वाभाविक साम्य करना नहीं चाहता। समाजवाद अनुभव करता है कि समाज में सब लोग बराबर नहीं हैं, वरन् मनुष्यों की शक्तियों और योग्यताओं में भेद है। यह भेद है, इसी कारण समाजवाद की और भी आवश्यकता है। वर्तमान दशा में विशेष योग्यता रखने वालों को अपनी योग्यता का विकास करने का अवसर ही नहीं मिलता या बहुत मुश्किल से मिलता है। समाजवाद के सिद्धान्तों के आधार पर सङ्गठित समाज में सब को अपनी योग्यताओं और शक्तियों के अनुसार उन्नति करने का समान अवसर मिलेगा और समान सुविधाएँ मिलेंगी। सामान्यतः सब मनुष्यों की आवश्यकताएँ क़रीब-क़रीब समान होती हैं और इस दृष्टि से समाजवाद सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रबन्ध करना चाहता है। सबको खाना, कपड़ा और मकान चाहिये। यह आवश्यकताएँ सब मनुष्यों की प्रायः समान हैं। यह नहीं होना चाहिये कि एक मनुष्य तो इतना धन प्राप्त कर ले कि उसके पास खाने, पहनने के लिये ज़रूरत से कहीं अधिक सामान हो और रहने के लिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रेलवे-शिष्टाचार

(१)

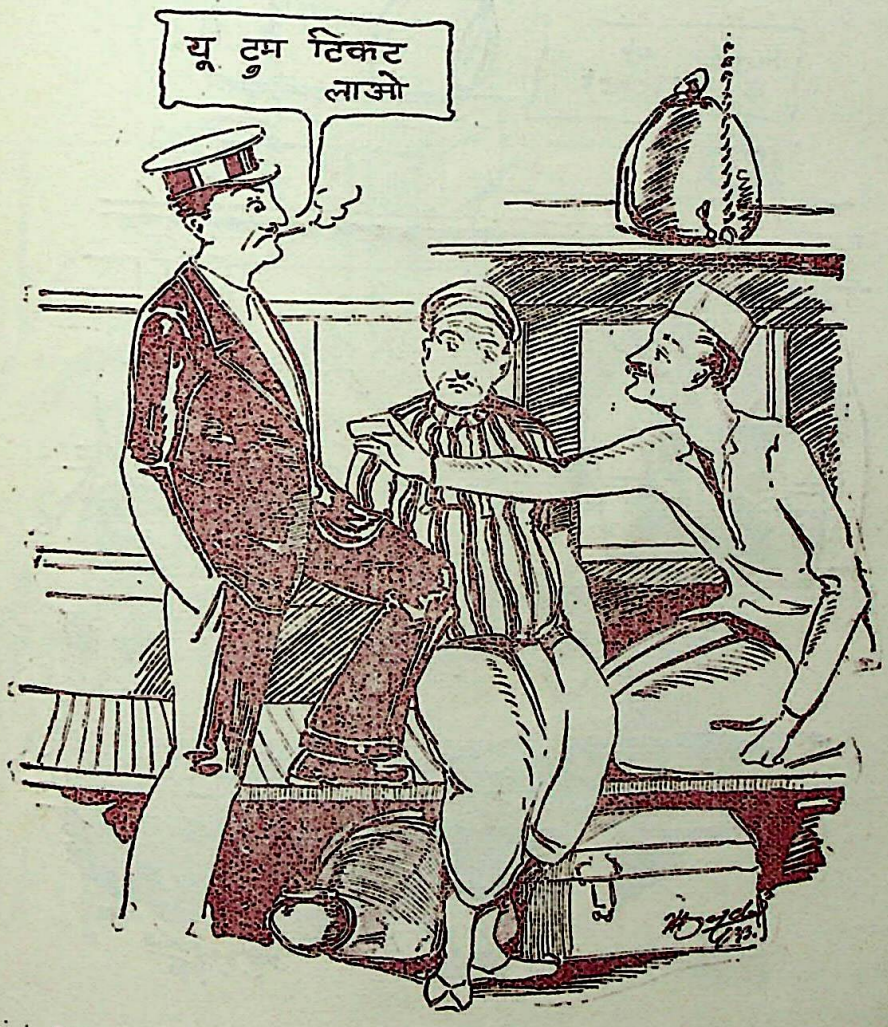

थर्ड क्लास में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रेलवे-शिष्टाचार

(२)

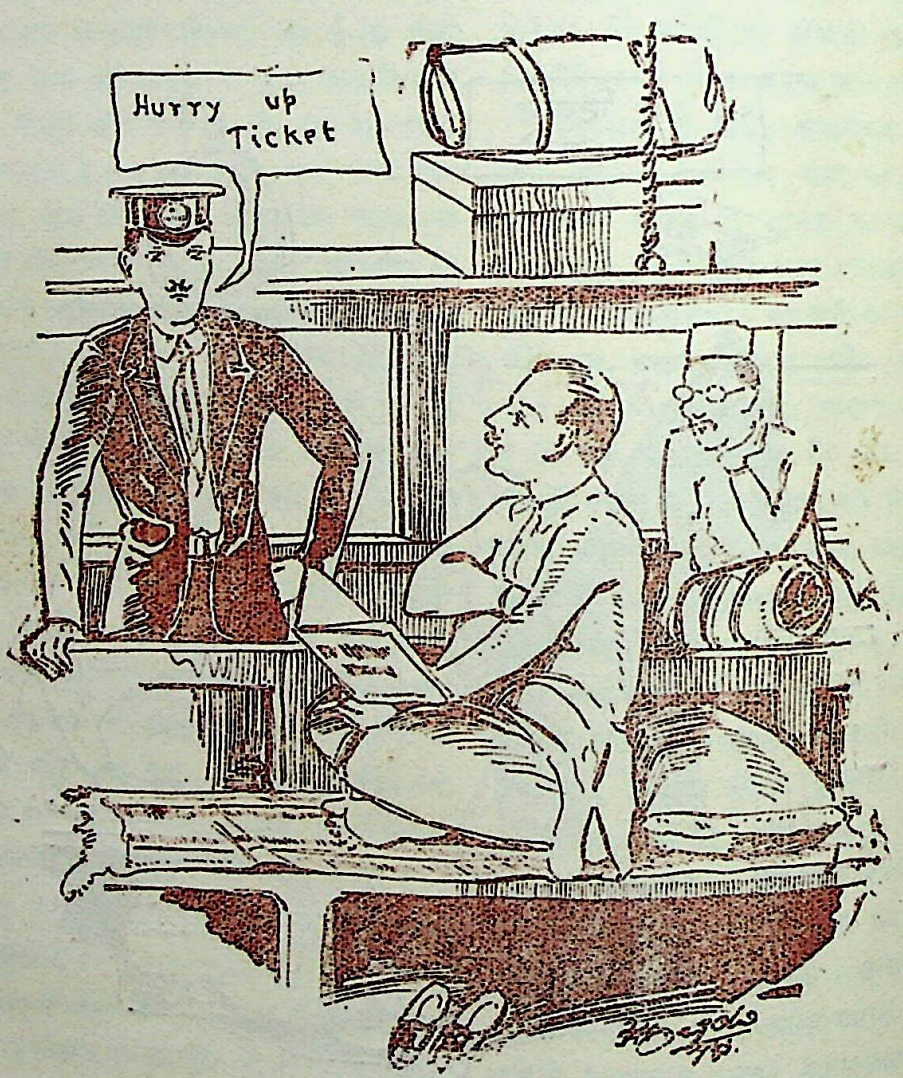

इन्टर क्लास में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रेलवे-शिष्टाचार

(३)

सेकिण्ड क्लास में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रेलवे-शिष्टाचार

(४)

फ़र्स्ट क्लास में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़रूरत से कहीं ज्यादा बड़ा मकान हो और एक मनुष्य भूखों मरे और जाड़े में ठिठुरता रहे और रहने के लिये एक कोठरी भी न हो। एक मनुष्य को हज़ारों रुपये की आमदनी हो और एक मनुष्य की कोई आमदनी ही न हो या बहुत कम हो। एक मनुष्य के लिये हज़ारों रुपया माहवार कम मालूम हो और एक मनुष्य के लिये दस रुपया माहवार ज्यादा कहा जाय। यह भीषण भेद है। समाजवाद कहता है कि सब मनुष्यों की आवश्यकताएँ क़रीब-क़रीब समान हैं और उन्हें क़रीब-क़रीब समान रूप से पूरी करने का प्रबन्ध होना चाहिए। समाजवाद सब मनुष्यों की योग्यताओं और शक्तियों के विकास के लिये पूरा अवसर और पूरी सुविधा देना चाहता है और उनकी योग्यताओं और शक्तियों से पूरा लाभ उठाना चाहता है।

समाजवाद लोगों को दरिद्र और असहाय नहीं बनाना चाहता। समाजवाद इस प्रकार के समाज की स्थापना चाहता है जिसमें कोई दरिद्र न रहेगा, कोई ग़रीब और असहाय न रहेगा, बेकारी न रहेगी। मशीनें और कारख़ानें रहेंगे, लेकिन ये सब समाज की सम्पत्ति रहेंगे और इनके द्वारा मनुष्य कुचले, पीसे या चूसे न जायँगे। समाजवाद ज़मींदारों और पूँजीपतियों का दुश्मन नहीं है, बल्कि उनका भी मित्र है और उनकी बेकार परेशानियाँ दूर करना चाहता है। जो इस समय ज़मींदार, कारख़ानेदार या अन्य पूँजीपति हैं, वे समाजवाद की स्थापना होने पर उतने ही सुखी रहेंगे जितने अन्य लोग।

ऊपर जो कुछ लिखा गया है वह समाजवाद के प्रचलित सिद्धान्तों के अनुसार व्यवस्थित समाज की दशा की झलक मात्र है। जैसे-जैसे समाजवाद का विकास होता जायगा, वैसे-वैसे उसकी विशेषताएँ प्रकट होती जायँगी। समाजवाद का पूर्ण विकास होने पर न साम्राज्य रह जायँगे, न फ़ौजें रह जायँगी और न राज्य ही रह जायँगे। उस समय कोई देश किसी दूसरे देश को जीतने की आवश्यकता ही अनुभव न करेगा, एक देश को दूसरा देश जीतने में कुछ लाभ ही न रह जायगा। न साम्राज्य बढ़ाने की आवश्यकता रह जायगी और न फ़ौज रखने की ज़रूरत रह जायगी। संसार के किसी भाग में आन्तरिक शान्ति की स्थापना के लिये फ़ौज और पुलिस रखने की ज़रूरत न रह जायगी, क्योंकि शान्ति भङ्ग के कारण ही न रहेंगे और न शान्ति भङ्ग होगी। लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार ही वस्तुएँ समाज के भण्डार से ले लेंगे और अपनी शक्ति तथा योग्यता के अनुसार समाज की सेवा करेंगे; लूट-खसोट की कोई बात ही न रह जायगी। इस समय तो यह स्वप्न सी बात मालूम होती है, लेकिन इस समय संसार में अनेक ऐसी वस्तुएँ दिखाई पड़ती हैं, जिनका पहले स्वप्न ही देखा गया था। आज हम संसार के सब भागों से अपने घर पर बैठे-बैठे ही टेलीफ़ोन से बात कर लेते हैं। यह पहले स्वप्न सी बात समझी जाती थी। आज हम संसार के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में हवाई जहाज़ में बैठकर बहुत अल्पकाल में चले जाते हैं। यह बात तो पहले स्वप्न सी ही थी। आज ऐसी न जाने कितनी ही बातें प्रचलित हैं, जो पहले स्वप्न सी मालूम होती थीं। अभी तो थोड़े ही समय की बात है कि लोग "स्वराज्य" और "वन्दे मातरम्" कहने से बहुत डरते थे। भारत में कभी "स्वराज्य" भी होगा, यह लोगों को स्वप्न सी बात मालूम होती थी। आज "स्वराज्य" की स्थापना स्वप्न सी बात नहीं मालूम होती। कौन जानता है कि इसी प्रकार एक समय ऐसा आवे जब समाजवाद का पूरा विकास हो और समाजवाद के विषय में जो बातें इस समय स्वप्न सी मालूम हो रही हैं, वे सामने देखने में आवें। उस समय लोगों की इतनी उन्नति हो जायगी, लोग इतने सुशिक्षित हो जायँगे, लोगों में एक दूसरे का अहित न करने, एक दूसरे की भलाई और सेवा करने की इतनी पर्याप्त भावना आ जायगी, संसार का सम्पूर्ण मनुष्य-समाज इस प्रकार एक कुटुम्ब की तरह जीवन बिताना सीख जायगा कि राज्य और सेना की आवश्यकता ही न रह जायगी, साम्राज्य बढ़ाने की भावना तो बहुत पहले ही नष्ट हो रहेगी। यह स्वप्न पूरा होगा या नहीं, और होगा तो कितनी पीढ़ियों बाद, इन प्रश्नों का उत्तर देना इस समय बहुत कठिन है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

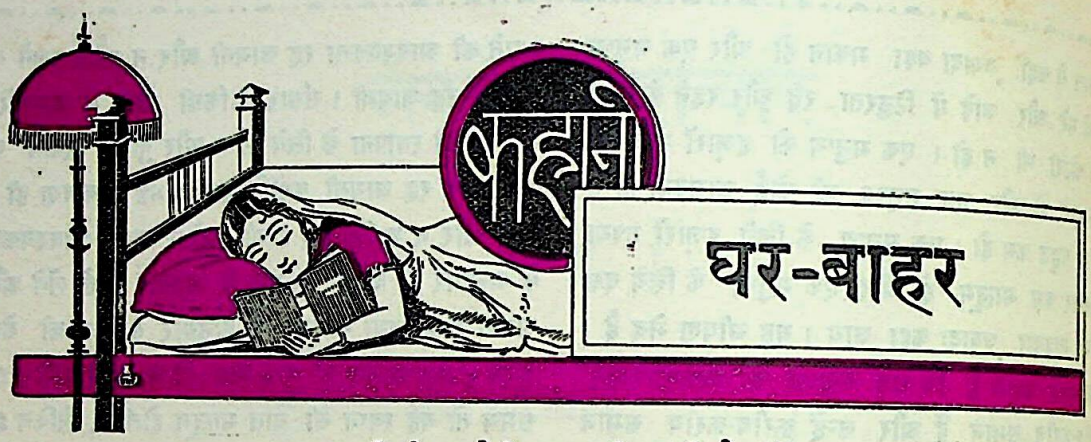

घर-बाहर

[श्री० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल']

(प्रहसन)

पहला दृश्य

[स्थान—पञ्चानन का मकान]

(पञ्चानन समाज-सुधारक हैं । अपनी कोठरी में चटाई पर बैठे हैं । कोठरी लिपी-पुती स्वच्छ है । पास उनके मित्र सदानन्द बैठे हैं)

सदानन्द—पण्डित जी ! आज टाउन हाल में स्त्रियों के सुधार पर आपका व्याख्यान होने वाला है न ?

पञ्चानन—(सँभल कर) हाँ भाई, शहर के कुछ लोगों का आग्रह है कि मैं एक ऐसा व्याख्यान दूँ, जिससे स्त्री-जाति के सुधार में एक नया युग उत्पन्न हो जाय ।

सदानन्द—(मुसकरा कर) अच्छा, यह तो बड़ी अच्छी बात है । आप से बढ़ कर इस नगर में समाज-सुधारक कौन है ? लेकिन महाराज ऐसी वक्तृता दीजिए कि कट्टर पन्थियों के दिलों में चूहे कूदने लगें ।

पञ्चानन—(गर्व से गर्दन ऊँची करके) हाँ-हाँ, क्यों नहीं, ऐसा तो होगा ही । तो क्या सचमुच मेरे व्याख्यान की बड़ी धूम है ?

सदानन्द—वाह, व्याख्यान के संयोजक ने तमाम नगर में डुग्गी पिटवा दी है । आर्य-समाज, सनातन-धर्म और अछूत सभा के लोगों को भी निमन्त्रित किया गया है । कॉलेज के विद्यार्थी भी अच्छी संख्या में आवेंगे ?

पञ्चानन—(कुछ सोच कर) हाँ, यह तो अच्छा ही है, लेकिन सभा में कोई गोल-माल तो न होगा ! भाई, कॉलेज के लड़कों से मैं बहुत डरता हूँ । बड़े तर्क-वादी होते हैं । व्यर्थ की बहस में पड़ना अपना समय नष्ट करना है ।

सदानन्द—(तनिक धीरे से) पण्डित जी, आप इतना घबराते क्यों हैं । कॉलेज के विद्यार्थी हौवा तो होते नहीं । आप समाज-सुधारक नेता हैं कि दिल्लगी ! (खाँस कर) आप ऐसी पुरजोश और धड़ल्ले की स्पीच दीजिये कि सब लोग ताकते रह जायँ । कोई बोलने लगे तो, उस पर ग़ौर ही न कीजिए । मानो आप सुन ही नहीं रहे हैं । फिर यदि गड़बड़ हो तो 'आर्डर' 'आर्डर' कह दीजिए, वे आप से आप चुप हो जायेंगे ?

पञ्चानन—(मित्र के कन्धे पर हाथ रख कर) अजी तुम हो बड़े बुद्धिमान् ! अक्ल से बात करना खूब जानते हो । लेकिन 'आर्डर' 'आर्डर' कहने से वे चुप क्यों हो जायँगे ?

सदानन्द—विद्यार्थियों को इस शब्द के सुनने की ऐसी की आदत है, और ज़रा दुनियादारी भी तो समझनी चाहिये । 'जहाँ आपने 'आर्डर' कहा तहाँ आपके प्रति उनकी श्रद्धा बढ़ जायगी । वे समझ जायेंगे कि आप लोगों को क़ाबू में करने की कला भली-भाँति जानते हैं ।

पञ्चानन—हाँ, जब मैं अपनी ही बात कहूँगा तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसी की सुनूँगा ही नहीं तो मेरा कोई क्या बिगाड़ सकता है ?

सदानन्द—हाँ-हाँ, और क्या ! संस्कृत साहित्य का प्राचीन पंडित चाणक्य भी अपने नीतिदर्पण में ऐसा ही कहता है। अपनी कहे दूसरों की न सुने। फिर स्त्रियों के मामले में आपके सामने किसी के कुछ कहने का क्या अधिकार है ?

पञ्चानन—(गरम होकर) हाँ-हाँ, किसी को बोलने का क्या अधिकार ? केवल विशेषज्ञ ही बोल सकता है। बिल्कुल ठीक ! (भावभङ्गी से) किसी को बोलने का क्या अधिकार ! सोलह आने की बात कही !

(पञ्चानन की पत्नी देवकी का घूँघट मारे हुए आना। उसकी धोती कुछ मैली है। हाथ-पैर में बुन्देलखण्डी कड़ा पहने है।)

देवकी—(धीरे से) चलिए खिचड़ी तैयार है।

पञ्चानन—(क्रोधित हो, वक्र दृष्टि से उसकी ओर देखकर) यहाँ क्यों घुसी आ रही है। देखती नहीं है, आदमी बैठे हैं। चल अभी आया। (मित्र की ओर देख कर) इन नौकरानियों से आजिज़ आ गया हूँ। अभी-अभी मेरी वाइफ़ के साथ बुन्देलखण्ड से आई है। भई, ऐसी ढीठ है कि क्या बताऊँ, कुछ कहना होता है तो सर पर चढ़कर बोलती है।

सदानन्द—अच्छा, तो यह नौकरानी है ? कुछ पूछिए न पण्डित जी, नौकरानियाँ अजीब होती हैं। सभ्यता का नाम नहीं होता। आपकी श्रीमती जी ऐसी ढीठ नौकरानी को कैसे पसन्द करती होंगी।

पञ्चानन—(कुछ सँभलकर) भई, हम लोग तो काफ़ी एडवांस हैं। देखिए न ! अभी तक मेरी श्रीमती टहल कर ही नहीं लौटी हैं। पर्दा-वर्दा के मैं सख्त खिलाफ़ हूँ। रही नौकरानी की बात, तो आप जानते हैं, ससुराल का मामला है। जल्दी निकाल देने में ज़रा हँसी होगी। लेकिन मैं इसको सभ्यता सिखाऊँगा, ज़रूर सिखाऊँगा।

सदानन्द—अवश्य ! अवश्य ! नहीं, आज तो खैर मैं बैठा हूँ, कल कोई भला आदमी आ जाय तब तो आप की नाक कट जायगी।

पञ्चानन—(नाक पर हाथ फेर कर) हाँ, ज़रूर-ज़रूर नाक कट जायगी, मैं इसे सभ्य बना कर ही रहूँगा।

सदानन्द—क्यों न हो, आप आदर्श स्थापित न करेंगे तो कौन करेगा। हाँ, पण्डित जी गुस्ताखी माफ़ कीजिएगा, कृपया खिचड़ी न खाया कीजिए। बड़ी वाहियात चीज़ है।

पञ्चानन—(ज़रा मुस्करा कर) नहीं भाई, तुम तो जानते हो, मैं पक्का शाकाहारी हूँ। यों तो सवेरे 'टोस्ट' और 'चाय' मेरा नित्य का कलेवा है। आज श्रीमती जी के बाहर चले जाने से सब गड़बड़ हो गया है। लेकिन, व्याख्यान देने जाना है, इससे सोचा कि कोई हलकी चीज़ खाकर चलना चाहिए, जिससे पेट हलका रहे।

सदानन्द—(भाव-भङ्गी से) बात तो आपने लाजवाब सोची। गर्मी का मौसम है। चाय के गरम कर देने का अन्देशा भी है। फिर मौक़ा भी गरमाहट का ही है। इससे खिचड़ी ही उत्तम होगी। वाक़ई, आप बड़े दूरन्देश हैं।

पञ्चानन—भाई, मैं अपना प्रोग्राम पहले ही ठीक कर लेता हूँ। क्योंकि मुझे तो भुगतना होता है।

(देवकी दरवाज़े से होकर दूसरी तरफ़ जाती है। पञ्चानन सदानन्द की आँख बचाकर उसकी ओर घूरते और दाँत पीसते हैं)

पञ्चानन—(मित्र की ओर देखकर) हाँ तो अब थोड़ा ही समय रह गया है। देखूँ, नौकरानी परेशान कर रही है। फिर वहाँ तो भेंट होगी ही।

सदानन्द—अच्छा तो मैं भी चलता हूँ, वहीं भेंट होगी।

पञ्चानन—(दरवाज़े की ओर घूरता है, फिर मित्र की ओर देखकर) हाँ-हाँ, वहाँ मुलाक़ात क्यों न होगी, मैं ठीक वक़्त पर आ जाऊँगा। लेकिन सदानन्द ! तुम मेरे गुरु भाई हो। मेरी इज़्ज़त-आबरू तुम्हारे हाथ में है। किसी तरह मेरी भद्द न हो।

सदानन्द—वाह, यह आप क्या कहते हैं। मेरे रहते हुए आपकी भद्द ! ज़बान काट लूँगा ज़बान ! आप मुझे समझते क्या हैं ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चानन—आपसे आशा ऐसी ही है।

(सदानन्द का प्रस्थान। पञ्चानन का उठ कर घर के भीतर जाना)।

दूसरा दृश्य

[स्थान-पञ्चानन के घर का आँगन]

(देवकी आधा घूँघट मारे चूल्हे के पास बैठी है। पञ्चानन क्रोधित होकर उसके पास जाता और बड़बड़ाता है।)

पञ्चानन—(घूँसा तान कर क्रोध में) क्यों री! देख कर नहीं चलती। जानती नहीं, कौन बैठा है, कौन नहीं। आँख में पट्टी बाँधे रहती है।

देवकी—(काँपती हुई धीरे से) मुझे क्या मालूम कौन बैठा था।

पञ्चानन—शर्म को घोल कर पी गई है! कौन था? (दाँत पीसता है)। ऐसी बेपर्दगी, ऐसी बेहयाई! जानती नहीं, बाहर मेरी इज्ज़त कैसी है। इज्ज़त लेना चाहती है। (धोती का छोर पकड़ कर) ऐसी गन्दी धोती! बाप रे, इसने तो आज मेरी इज्ज़त ले ली थी।

देवकी—क्या करूँ, आप मुझे ही बार-बार कहते हैं। कितनी बार कहा कि धोती धोबी को दे दीजिए। या साबुन ही मँगा दीजिए। किससे कहूँ, कोई सुनने वाला है!

पञ्चानन—(क्रोध में) धोबी! धोबी क्या पैसे नहीं लेता, मुफ़्त धोता है? तेरा कोई लगता है? चली है धोबी से कपड़ा धुलाने, हुँ!

देवकी—पैसे पाने पर कौन धोबी है जो कपड़ा न धो देगा? मैं बाहर निकलती होती तो तुम्हारी यह बातें मुझे क्यों सुनने को मिलतीं।

पञ्चानन—(दोनों हाथ कमर पर रख कर) अच्छा! अब धोबी के यहाँ जायगी। तुझे भी अब शहर की हवा लग रही है। तेरा क्या ठिकाना, जब मैं घर पर न रहता हूँगा तो कहीं ज़रूर जाती होगी। पैसा! पैसा! करके तूने मेरी ज़िन्दगी खराब कर दी है। पैसा क्या तेरे बाप का है। अब अगर पैसे का नाम लिया (गले की ओर हाथ बढ़ाता है) तो गला घोंट दूँगा।

देवकी—(सिसक कर रोती हुई) हे भगवान! अब किसी तरह छुटकारा नहीं। क्या करूँ, मेरी मौत भी नहीं आती। कलेजा पक गया है।

पञ्चानन—(ज़ोर से) फाँसी लगा ले फाँसी! बेवकूफ़ की बेटी! तुझे कितना समझाऊँ, तेरे दिमाग़ में तो भूसा भरा है। अक्ल तो तेरे भेजे में है ही नहीं। अरे, कपड़े रँग ले रँग! जरा अक्ल से काम ले। काले नीले रङ्ग से कपड़ा रङ्ग लेने से धोबी का दिवाला हो जायगा। अब ज़माना आ गया है, जब कि किफ़ायत से काम निकालना चाहिए। नहीं तो दाने-दाने को मोहताज हो जायगी।

देवकी—यह बात थी तो अब तक क्यों नहीं बताया। बाज़ार से रङ्ग ही ला देते।

पञ्चानन—अब तो सब कुछ मैं करूँगा ही। क्या भी कोई बतलाने की बात थी। लेकिन अक्ल के दुश्मन के लिए क्या चारा! इसकी इतनी हिम्मत! मेरे मित्र बैठे हैं और पैर में बेड़ी पहने चली आ रही है। बेहया कहीं की!

देवकी—बेड़ी! बेड़ी कैसी?

पञ्चानन (पैर की ओर इशारा करके) अरे यही मोटा कड़ा और क्या?

देवकी—हाय! यही तो मेरा सुहाग है। तुम्हारे जीते जो मैं कड़ा नहीं उतार सकती। मारो, काटो, चाहे दो, बको-झको, जो चाहे सो कहो, लेकिन कड़ा नहीं उतारूँगी।

पञ्चानन—(कुछ द्रवित होकर) हाँ-हाँ, पतिव्रता तो तुम ऐसी हो कि क्या कहना! तुम्हारी ही वजह से ज़िन्दा हूँ। (समझा कर) देखो आज फिर समझाए देता हूँ, यह दुनिया बड़ी विचित्र है। मैं एक समाज सुधारक हूँ। चारों तरफ़ देखकर चलता हूँ। लेकिन दुनिया कुएँ में कूदे, मैं तो अपने घर की मर्यादा नहीं तोड़ सकता। मेरे १५ पुश्त से धर्म का पालन होता आया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवकी—(घूँघट सर पर चढ़ाकर) आख़िर आप का मतलब क्या है ?

पञ्चानन—(बैठकर) यही कि आजकल की स्त्रियाँ न जाने किस ओर जा रही हैं। हाथ-पाँव में कुछ नहीं। विवाहिता भी विधवा का वेश बनाए हुए हैं। शर्म, हया, पर्दा का नाम नहीं रह गया। मेरे पिता जी कहते थे कि बेटा, बूढ़ा हो गया, मगर तुम्हारी माता जी का मुँह मैंने कभी नहीं देखा। (सर नीचा करके) हाय ! मेरी सती-साध्वी माता ! तुम जीवित होतीं तो क्यों आज मुझे घर में मगज़पच्ची करनी होती। देखो, यदि मैंने आज बात न बना दी होती तो न जाने क्या हो जाता।

देवकी—(ज़रा कुछ व्यग्रता से) बात क्या बना दी ?

पञ्चानन—(मुसकराकर) यही कि मैंने अपने मित्र से बहाना बना दिया कि यह मेरी नौकरानी है, बुन्देलखण्ड से आई है। तुम्ही बताओ, यदि ऐसा न होता तो आज 'टाउन हाल' में मुँह दिखाने लायक़ रहता ?

देवकी—(क्रुद्ध होकर) तो क्या मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ, नौकरानी हूँ। मैं सब सह सकती हूँ, दूसरों के सामने अपमान नहीं सह सकती। मैं कल भैया को बुला कर नैहर चली जाऊँगी।

पञ्चानन—अरे बाप रे बाप ! घोर कलियुग है। गुड़ खिलाना ज़हर हो रहा है। (विनम्रता से) देखो, इसमें अपमान क्या है ? वे यह तो जानते नहीं कि तुम पत्नी हो। अपना मतलब निकल गया। हम तुम राज़ी तो क्या करे क़ाज़ी। ग़लती तुम्हारी ही थी। न तुम सामने आतीं न ऐसा मुझे कहना पड़ता।

देवकी—नहीं, उन्होंने पहचान लिया होगा !

पञ्चानन—पहचान ! पहचान तो उनके फ़िरिश्ते भी नहीं सकते। मैंने कच्चे घाट का पानी नहीं पिया। मेरा नाम है पञ्चानन शास्त्रालङ्कार ! (व्याख्यान का स्मरण करके) अरे अब तो वक़्त हो गया है। मुझे अब जल्दी करनी चाहिए। देखो, मेरे जाने पर किवाड़े बन्द रखा करो, कोई लाख पुकारे, किवाड़ मत खोलना। मैं जब आऊँ तो मुझे भी भीतर से किवाड़ की दरारों से पहचान कर किवाड़ खोलना।

देवकी—आख़िर कहाँ जाना है ?

पञ्चानन—(उत्सुक होकर) अरे तुम नहीं जानती हो ? आज मेरा टाउन हाल में 'स्त्री-सुधार' पर व्याख्यान है। वहाँ बड़े-बड़े घर की महिलाएँ आएँगी, लोग आएँगे और कॉलेज के विद्यार्थी भी आवेंगे। आज काफ़ी मज़ा आएगा (उठकर चलता है)।

देवकी—अरे खिचड़ी ठण्डी हो गई, कुछ खा तो लो। पता नहीं वहाँ कितनी देर लगे।

पञ्चानन—मुझे देर हो रही है। तुम्हारी बकझक के मारे तो और नाक में दम रहता है। अच्छा लाओ, कुछ खा ही लूँ। (कपड़ा उतार कर हाथ-पाँव धोकर नङ्गे बदन भोजन करने बैठता है)।

तीसरा दृश्य

[स्थान—टाउन हाल का मैदान]

(मैदान में पञ्चानन का व्याख्यान। तालियों की गड़गड़ाहट। व्याख्यान की समाप्ति। विद्यार्थियों द्वारा परिडत जी की दावत। मेज़ के चारों ओर विद्यार्थी, सदानन्द और पञ्चानन बैठे हैं। मेज़ पर रसगुल्लों की तश्तरी। चाय का प्याला, छुरी-काँटा रखा है। लोग चाय पी रहे हैं।)

विद्यार्थी—परिडत जी, चाय पीजिए ! लाइये मैं बना दूँ।

पञ्चानन—(रसगुल्ले की ओर देखकर) नहीं, आज तो मेरा व्रत है। मैं चाय नहीं पीऊँगा।

विद्यार्थी—तो मिठाई ही खाइये। बढ़िया रसगुल्ले आपके लिए खास तौर से मँगाए गये हैं।

पञ्चानन—(सदानन्द की ओर देखकर फिर सोचकर) अच्छा (उङ्गली का इशारा करके) यह रसगुल्ले मेरे ही लिए मँगाए गये हैं। देखने में तो बड़े ख़ूबसूरत हैं, लेकिन भाई, इसमें विदेशी चीनी पड़ी होगी ? यों तो आप लोग जानते हैं, मैं परहेज़ या छुआछूत नहीं मानता, लेकिन आज व्रत के दिन शुद्ध भोजन करना चाहिए।

विद्यार्थी—क्यों नहीं, अवश्य, अवश्य ! लेकिन परिडत जी यह शुद्ध देशी चीनी का बना है। फलाहारी भी है। आपको एतराज़ न होना चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चानन—हाँ, तब तो ठीक है। मालूम होता है, आप लोग ज्योतिषी भी हैं। नहीं भला रसगुल्लों की इस वक़्त क्या ज़रूरत थी।

एक विद्यार्थी—(दूसरे विद्यार्थी की ओर इशारा करके) पण्डित जी यह जोतिष शास्तर के बड़े जानकार हैं।

पञ्चानन—(रसगुल्ले खाते हुए) मैं तो आप सभी को ज्योतिषी समझता हूँ।

दूसरा विद्यार्थी—यह सब आपकी कृपा है।

(पञ्चानन जी रसगुल्ले खाकर अपने दुपट्टे से हवा करते हैं। तीन-चार अन्य विद्यार्थी वहाँ आते हैं।)

पहला—पण्डित जी जयराम जी की।

दूसरा—पण्डित जी बन्दगी।

तीसरा—महाशय जी, नमो नमः।

चौथा—(हँसकर) पण्डित जी जय सियाराम की।

(पञ्चानन आश्चर्य और विस्मय से सबकी ओर देखते हैं, फिर नीचे की ओर देखने लगते हैं।)

पहला—पण्डित जी, हम लोगों ने आपको तकलीफ़ दी, क्षमा कीजिए। हम लोग आप से कुछ पूछना चाहते हैं।

सदानन्द—(उत्सुकता के साथ) हाँ-हाँ, आइए, बैठिए; पूछिए। पञ्चानन जी थक गये हैं, लेकिन आप को जो पूछना हो पूछिए।

तीसरा विद्यार्थी—(बैठे हुए लोगों को सम्बोधित करके) अरे साहब, पण्डित जी ने तो आज कमाल कर दिया। स्त्री-सुधार पर ऐसी पुरजोश स्पीच मैंने ज़िन्दगी में नहीं सुनी। वाह वाह! क्या तर्क थे, कैसे कथानक थे! सारी बातें हम लोगों के रोम-रोम में समा गई हैं।

(लड़के बैठते हैं, पण्डित जी बड़े ग़ौर से उनकी ओर देखते हैं।)

अन्य विद्यार्थी—हाँ, समा क्यों न जायँ। पण्डित जी व्याख्यान ही ऐसा देते हैं कि कलेजे में तीर की तरह जाकर चुभ जाता है।

(दो-तीन लड़के 'वाह' 'वाह' कह कर अपने वक्षःस्थल पर हाथ रखते हैं।)

पञ्चानन—(प्रसन्न होकर) आप लोग तो मुझे बनाने लगे।

दूसरा विद्यार्थी—पण्डित जी, भला आपको कौन बना सकता है। हम सभी लोगों को परमात्मा ने बनाया है।

पञ्चानन—हाँ-हाँ, क्यों नहीं, परमात्मा तो सब को बनाता ही है।

तीसरा—अच्छा पण्डित जी, पर्दे के सम्बन्ध में आपकी क्या राय है?

पञ्चानन—पर्दा, अरे पर्दा इस युग में! हर्गिज़ न होना चाहिये। स्त्री-जाति के लिये यह कलङ्क है। आप लोगों ने तो पढ़ा ही होगा कि हमारे यहाँ पुरुष कुछ पहनते ही नहीं थे। बाद को पेड़ की छाल पहनने लगे थे। अपना वही पूर्व गौरव प्राप्त कीजिए। पर्दे का बायकाट कीजिए। अख़बारों में लिखिए, और सत्याग्रह सम्भव हो तो इसका भी सहारा लिया जाय।

लड़के—(ताली पीट कर) क्या ठिकाने की बात कही है!

चौथा लड़का—पण्डित जी, गुस्ताख़ी माफ़ हो तो एक बात कहूँ, बुरा न मानिएगा।

पञ्चानन—(मुसकराकर) नहीं-नहीं, बुरा मानने की क्या बात है। जो कुछ कहना हो, कह डालो। दिल में न रहे। इस वक़्त सौ ख़ून माफ़।

विद्यार्थी—पण्डित जी, आपकी श्रीमती जी व्याख्यान में नहीं पधारीं! यदि वे व्याख्यान देतीं तो स्त्रियों पर अधिक प्रभाव पड़ता।

पञ्चानन—(गर्दन ऊँची करके) वाह! आप लोगों ने देखा ही नहीं, आई तो थीं। अभी-अभी गई हैं। क्या सुन्दर व्याख्यान देती हैं। हः हः हः हः! वे तो पर्दे की सख़्त ख़िलाफ़ हैं। बड़ी एडवांस हैं। आप लोगों को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि 'स्त्री-सुधार' का जो भाषण मैंने उठाया है, वह उन्हीं की प्रेरणा से।

('वाह' 'वाह' की आवाज़ होती है)

एक लड़का—(दूसरे लड़के के कान में चुपचाप कहता है, तब तो ख़ूबसूरत भी ख़ूब होंगी) (प्रकाश)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पण्डित जी, हम लोग एक दिन आपके घर आना चाहते हैं।

पञ्चानन—(आश्चर्य-चकित होकर) घर! भई घर में तो मुझे फ़ुर्सत नहीं। मेरे मिलने का कोई ठिकाना नहीं।

चौथा लड़का—ख़ैर, कभी न कभी तो आप से भेंट हो ही जायगी। लेकिन आपकी श्रीमती जी तो मिल ही जायँगी।

पञ्चानन—वे, वे तो और भी झञ्झटों में पड़ी रहती हैं। स्त्रियों की सभा में उन्हें व्याख्यान देने के लिए कलकत्ता और बम्बई तक जाना पड़ता है। फिर आप लोग तो पढ़े-लिखे हैं; बिना जान-पहचान के एडवांस से एडवांस स्त्री को पहले बोलने में सङ्कोच होता ही है।

दूसरा विद्यार्थी—हाँ, यह तो आपका कहना ठीक है। लेकिन सार्वजनिक सेवा-वृत्ति वाली स्त्रियों के लिए सङ्कोच की कोई बात नहीं। पण्डित जी, बात दरअसल यह है कि हम लोग अपने कॉलेज के एक डिबेट में उन्हें सभानेत्री बनाना चाहते हैं।

पञ्चानन—अवश्य बनाइये! इसमें क्या हर्ज है। लेकिन आजकल ज़रा वे अलील हैं। स्वस्थ होते ही मैं आप लोगों को सूचित करूँगा।

चौथा लड़का—पण्डित जी, 'तलाक़' के सम्बन्ध में आप क्या कहते हैं?

पञ्चानन—हाँ-हाँ, तलाक़ की प्रथा तो निहायत ज़रूरी है। अब तो मौक़ा भी अच्छा है। सुधारकों के हाथ में शासन आया है। क़ानून बदलवाइये, आन्दोलन कीजिए। यदि पुरुष स्वतन्त्र हैं तो स्त्रियों को स्वतन्त्रता मिलना बहुत ज़रूरी है।

एक लड़का—धर्मशास्त्र तो आज्ञा नहीं देते!

पञ्चानन—धर्म-शास्त्र, पुराने पड़ गये हैं। नये धर्म-शास्त्र बनवाइये। आजकल पण्डित एक से एक बढ़कर है। क़ानून बदल जायगा तो धर्म-शास्त्र को कौन पूछता है। यथा राजा तथा प्रजा।

सदानन्द—पञ्चानन जी ठीक कहते हैं। नवयुवकों के हाथ में समाज का कल्याण है।

(लड़के एक दूसरे की ओर देखकर प्रसन्न होते, मुस्कराते और पञ्चानन की प्रशंसा करते हैं और उन्हें नमस्कार कर वहाँ से प्रस्थान करते हैं।)

चौथा दृश्य

[स्थान—पञ्चानन जी के घर का दरवाज़ा]

(देवकी दरवाज़े के बाहर रङ्ग वाले से रङ्ग ख़रीद रही है। दो-तीन पड़ोस की स्त्रियाँ भी खड़ी हैं।)

देवकी—(भयभीत होकर) एक पैसे का मुझे नीला रङ्ग दे दो।

रङ्गवाला—(रङ्गों के डिब्बे खोलकर रङ्ग दिखाते हुए) लीजिए बहू जी, तरह-तरह के बढ़िया रङ्ग हैं—गुलाबी, बैजनी, अनारी, पीला, हरा—उम्दा रङ्ग लीजिए।

देवकी—नहीं, मुझे एक पैसे का नीला रङ्ग चाहिए।

दूसरी स्त्री—हाँ बहू जी, कुछ अच्छे रङ्ग चार-छः पैसे के ले लीजिए। एक पैसे के रङ्ग से क्या होगा?

देवकी—नहीं, नहीं, मुझे सिर्फ़ एक पैसे का नीला रङ्ग चाहिए। जल्दी दो, पता नहीं वे किस वक़्त आ जायँ।

रङ्गवाला—बहू जी, अच्छा गुलाबी रङ्ग भी ले लीजिए!

देवकी—मुझे जल्दी दो, नहीं मैं जाती हूँ, लो पैसा।

स्त्रियाँ—ले लो बहू जी, अभी पण्डित जी के आने का वक़्त नहीं हुआ।

देवकी—मैं जाती हूँ (वह जाना चाहती है)।

रङ्गवाला—अच्छा लीजिए एक पैसे का गुलाबी और एक पैसे का नीला।

देवकी—अच्छा लाओ।

(इतने में पण्डित जी आ जाते हैं। देवकी को घर के बाहर रङ्ग वाले को पैसे देते हुए देख लेते हैं। स्त्रियाँ भाग जाती हैं। देवकी भीतर भागती है और किवाड़ बन्द कर लेती है।)

पञ्चानन—(क्रोध से) क्यों वे रङ्ग वाले, मेरे दरवाज़े पर क्यों आया? औरतों को बहकाने आता है। ठहर, आज मैं तुझे मज़ा चखाता हूँ।

रङ्गवाला—नहीं बाबूजी, लो मैं जाता हूँ।

पंचानन—जाता कहाँ है, आज बैठ, देखूँगा तू कितनी देर मेरे दरवाज़े पर बैठता है। तुझे पुलिस में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूँगा। मुझे तूने समझ क्या रखा है। और उसे—उसे तो.....।

(पण्डित जी क्रोध में दरवाज़े की ओर बढ़ कर कुण्डी खड़खड़ाते हैं। रङ्ग वाला पोटली लेकर खिसक देता है।)

पंचानन—खोल किवाड़, जल्दी खोल, अभी तुझे बताता हूँ!

(देवकी चुपचाप किवाड़ खोल देती है)

पंचानन—(क्रोध से दाँत पीस कर) क्यों बाहर निकली! बोल जल्दी (देवकी का हाथ झटक कर), मैंने कहा था न कि मेरे न रहने पर किवाड़ न खोलना। क्यों खोला! बोल!!

देवकी—(सिसकती हुई) नीला रङ्ग लिया है, धोती रङ्गना था।

पंचानन—(ज़ोर से) एक दिन में तेरी धोती कहाँ फटी जा रही थी। दिखा कहाँ रङ्ग है? (देवकी नीला रङ्ग दिखाती है, गुलाबी पुड़िया भी पास पड़ी है, पञ्चानन उसे भी उठा कर देखते हैं।)

पंचानन—और इस रङ्ग को क्यों खरीदा? गुलाबी रङ्ग की क्या ज़रूरत थी। गुलाबी में कपड़े रङ्ग के किसे दिखावेगी? ठहर जा, कल से तुझे बताऊँगा। ताला बन्द करके जाऊँगा ताला! अब रङ्गरेज़ और रङ्ग-वाले से दिल्लगी-मज़ाक की सूझी है!

(देवकी ज़ोर से रोने लगती है। पड़ोस की स्त्रियाँ आकर मकान के दरवाज़े के बाहर खड़ी हो जाती हैं।)

पञ्चानन—स्त्री चरित्रं, पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः' यह शास्त्र-वाक्य झूठ नहीं हो सकता।

(देवकी फूट-फूट कर रोती है, बाहर खड़ी स्त्रियाँ आपस में कहती हैं—"बड़ा कसाई है।" पञ्चानन पीछे मुड़ कर स्त्रियों की बात सुन लेते हैं और उनकी ओर दौड़ते हैं)

पञ्चानन—(क्रोध में) मेरे दरवाज़े पर क्यों तुम लोग खड़ी हो, चली जाओ, अपना मुँह काला करो। यहाँ गाना, नाच, तमाशा या नाटक नहीं हो रहा है। तुम्हीं लोगों ने तो मेरी औरत को बिगाड़ दिया है। मेरे मामले में तुम लोग बोलने वाली कौन होती हो। मैं तो कसाई हूँ। जाओ, जाओ, मेरे मुँह से! (औरतों की ओर ज़ोर से दौड़ता है)।

(स्त्रियाँ बड़बड़ाती, पञ्चानन को बुरा-भला कहती और देवकी से सहानुभूति दिखाती हुई चली जाती हैं।)

पञ्चानन—(भीतर जाकर जलते हुए चूल्हे को देख कर, एक लोटा पानी लेकर बुझाता है) आज न खाऊँगा न तुझे खाने दूँगा। तूने मेरी इज़्ज़त ले ली। रङ्ग खरीदने चली है। जाती क्यों नहीं, बाज़ार से सौदा ला!

(देवकी रात्रि में ज़मीन में पड़ कर सो जाती है। पञ्चानन प्रातःकाल उठ कर दरवाज़े में ताला लगा कर चला जाता है। पड़ोस की स्त्रियाँ जुटी आती हैं।)

एक स्त्री—(दरवाज़े के बाहर से किवाड़ की साँस से देख कर) बहू जी उठो, खाना खाओ, क्या करोगी, ऐसा कसाई तो मैंने देखा नहीं!

देवकी—(उठ कर किवाड़ के पास आती है) क्या कहूँ बहिन! समझ में नहीं आता। नाक में दम हो गया है।

दूसरी स्त्री—कहाँ गए हैं बहू जी (ताले को देख कर) आज तो ताला लगा कर गये हैं!

देवकी—कहीं 'स्त्री-सुधार' पर लेक्चर देने गये होंगे।

पहली स्त्री—बहू जी, दुनिया ही उल्टी है। मसल है कि लोमड़ी दूसरे को सगुन बतलावे, कुत्तों से कटवावे।

दूसरी—हाँ बहू जी, क्या करोगी, आजकल घर-बाहर की ऐसी ही समस्या है।

(स्त्रियों का प्रस्थान)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुन्देलखण्ड की स्त्रियों की वेषभूषा

जलवायु का प्रभाव निवासियों पर पड़ता है यह निर्विवाद है और उसी के अनुसार लोगों की वेष-भूषा हुआ करती है। इसी कारण प्रत्येक जलवायु अपनी विभिन्नता रखती है। बुन्देलखण्ड एक पहाड़ी प्रान्त है, जहाँ अधिक पहाड़ी स्थल हैं। बहुत थोड़ा सा भाग ऐसा है, जो उपजाऊ कहा जा सकता है। यही कारण है कि यहाँ खेती बहुत कम होती है, जिसका फल है कि इस भू-भाग के किसान निर्धनता के साक्षात अवतार हैं। इस प्रान्त की भाषा अपनी ही है और वह है बुन्देलखण्डी, पर थोड़े से स्थल ऐसे हैं, जहाँ यह भाषा बघेलखण्डी और खड़ी बोली से मिश्रित हो गई है। इस प्रान्त का पहिनावा, पुरुष और स्त्रियों का, भारतवर्ष के और भागों से भिन्नता रखता है। यहाँ भी प्रति ५० मील के अन्तर पर स्त्रियों की वेष-भूषा बदली हुई पाई जाती है। बुन्देलखण्ड एक ऐसा प्रान्त है, जहाँ सुधार की भावनाएँ बहुत पीछे जाग्रत हुई हैं।

स्त्रियों की शिक्षा के सम्बन्ध में अब पुरुषों की धारणाएँ सीधे पथ पर आ रही हैं तथा वे स्त्री-शिक्षा का समर्थन भी करने लगे हैं, पर इस बात में यह प्रान्त अभी पीछे ही पड़ा है। आशा अवश्य हो रही है कि इसका नागरिक भाग थोड़े दिनों में सुशिक्षित हो जायगा, पर जहाँ शहर इने-गिने हों और उनका ही सुधार हो तो वह सुधार क्या कहा जा सकेगा। यहाँ क्या, पूरे भारतवर्ष में देहातों की संख्या अधिक है और वास्तविक सुधार यदि देश का कुछ हो सकता है तो तभी जब देहात उन्नति की ओर अग्रसर हों।

यों तो भारत के प्रत्येक गाँव में दरिद्रता देवी का साम्राज्य छाया है, पर यहाँ वह और अधिक है। यहाँ पर उन्नति के मार्ग में तीन प्रधान बाधाएँ हैं :—

१—देहातों की अतिशय निर्धनता

२—पुरुष-समाज में शिक्षा का अभाव

३—रूढ़वादिता तथा अन्ध-विश्वास का प्रगाढ़त्व

यहाँ पर कला-कौशल है ही नहीं कि लोग जिसके द्वारा अपनी जीविका निर्वाह कर सकें। क्योंकि मनुष्य जब जीविका की उलझन से निश्चिन्त होता है, तभी वह अपने सुधार की इच्छा कर सकता है। यहाँ जो कुछ व्यवसाय है वह श्रीमानों तक ही सीमित है। इस प्रान्त के बड़े व्यवसायी प्रायः बाहरी पुरुष हैं। खेती के सम्बन्ध में पहिले ही लिखा जा चुका है कि वह बहुत कम होती है। यदि किसी वर्ष ओला या और कोई ईश्वरीय प्रकोप हो गया तो और भीषण स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसे समय में पेट का प्रश्न प्रत्येक समय मनुष्यों के सम्मुख रहता है।

बुन्देलखण्ड में केवल चार जिले हैं और बाक़ी भाग इसका रियासतों में सम्मिलित है। सी० पी० का थोड़ा सा भाग भी इसी में शामिल है। इसमें नगर कोई नहीं है। झाँसी अवश्य इस पद को पाने के लिए प्रयत्नशील है। बाँदा भी कानपुर और इलाहाबाद के निकट होने के कारण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नगर-सौरभ सूँघा करता है। इसके अतिरिक्त और सब शहर क़स्बे या बड़े ग्राम के तुल्य हैं।

इस प्रान्त में स्त्रियों के दो पहिनावे पाये जाते हैं—

(१) घाँघरा

(२) साड़ी या धोती

घाँघरा इस प्रान्त ही का नहीं, अपितु भारत की अपनी वस्तु है, जिसकी बनावट में कला का अस्तित्व है। यह पहिनाव आज भी हमें हमारे राधा-कृष्ण के उच्च कला-प्रेम को प्रदर्शित करता है। घाँघरा यदि वस्तुतः पूछा जाय तो व्रज की वस्तु है। राधा-कृष्ण के जितने चित्र हमें मिलते हैं उनमें यही घाँघरा देखा जाता है। इसका पहिनावा कलापूर्ण है। इसकी महत्ता आज इस पेटीकोट व जाजेंट के युग में यद्यपि पूर्व की भाँति सर्व-मान्य नहीं है, पर फिर भी कला-प्रदर्शन व उच्चादर्शों के क्षेत्र में अब भी वह अकाट्य है। नर्तकियों को अपनी कला का अभिनय दिखाने में इसी का आश्रय लेना पड़ता है। शरीर को कला का रूप देने में इसकी आवश्यकता अनिवार्य रूप से पड़ती है। इस भाग में यह अधिकता से पहिना जाता है। यह कभी-कभी बड़ा खर्च करा कर तैयार कराये जाते हैं। विवाह आदि शुभ अवसरों पर बनाये गये लहँगे काफ़ी मूल्य खर्च करके ख़रीदे या बनवाए जाते हैं। इनकी सुन्दरता देखने योग्य रहती है। जब नई दुलहिन इसे पहिन लेती है तो यह उसकी सुन्दरता को बहुत बढ़ा देता है।

त्योहारों तथा शुभ कार्यों के प्रारम्भ में लहँगे की आवश्यकता अवश्य ही पड़ती है। बिना इसके कार्य-साफल्य नहीं होता। इसके ऊपर ओढ़ने के लिए एक ओढ़नी रहती है, जो प्रायः उसी रङ्ग में रङ्गी होती है जिसका लहँगा होता है। कोई साड़ी रङ्गी हुई, जो रङ्गरेज़ विशेष रूप से तैयार करते हैं, पहिनती हैं। इस ओढ़नी का नाम बुन्देलखण्डी में 'नुगरा' है। कोई रेशमी साड़ी या रेशमी कपड़े की धोती इसके ऊपर से ओढ़ती हैं। स्थिति तथा अपनी थैली के अनुसार यह तैय्यार कराई जाती है। यह तो हुआ ओढ़ना और पहिनना। शरीर में पहिनने के लिए इसके नीचे बण्डी पहिनी जाती है। यह बण्डी भी काफ़ी बेल-बूटेदार रहती है। इसका रङ्ग भी ओढ़नी के रङ्ग से मिलता-जुलता रहा करता है। यह बेश स्त्रियों को त्योहार के अवसरों पर ऐसा भला मालूम होता है कि वे साक्षात् लक्ष्मी-स्वरूपिणी प्रतीत होती हैं। लहँगे के पहिनने से शरीर में काफी स्फूर्ति रहती है, जो साड़ी में नहीं देखी जाती। लहँगा केवल मँहगा पड़ता है, यही इसका दोष कहा जा सकता है। सम्प्रति यह विज्ञान का युग है, इसमें कला का वास्तविक रूप विज्ञान से आच्छादित रहता है, अतः यह पहिनाव आज के वातावरण में पड़ी हुई कॉलेज-छात्राओं के लिए समालोचना का विषय अवश्य है, पर देहातों में इसका पहिनाव अब भी काफ़ी सर्वव्यापी है।

दूसरा पहिनावा साड़ी का है। साड़ी की उपयोगिता भी सिद्ध हो चुकी है। यह अपनी सादगी के लिए प्रसिद्ध है। इसकी मनोहरता पर मुग्ध होकर प्रायः मुसलिम महिलाएँ भी आज पैजामा को तिलाञ्जलि दे रही हैं। यूरोपीय महिलाएँ भी इसके पहिनने को लालायित रहा करती हैं। जब वस्तुतः इसे पहिन लेती हैं तब वे अपनी सुन्दरता तथा मनोहरता में विशेष अन्तर पाती हैं। साड़ी की कई क़िस्में हैं। इसके नये-नये Style आज बाज़ार में निकलते हैं, जिसका श्रेय मेरे विचार में पारसी महिलाओं को अधिक है। साड़ी से निम्नलिखित लाभ हैं—

(१) घाँघरे की अपेक्षा व्यय कम लगता है।

(२) साड़ी में सफ़ाई अधिक देखी जाती है।

(३) ओढ़ते हुए अच्छी तरह बनती है तथा देखने में सुन्दर मालूम होती है।

साड़ी के नीचे जम्पर या सादा बनियाइनुमा वस्त्र पहिना जाता है। यह पहिनाव जिलों में जहाँ शिक्षित समुदाय है, देखा जाता है। देहातों में भी अब कुछ घर ऐसे मिल जाते हैं, जहाँ यह पहिनाव प्रचलित हो गया है।

वस्त्रों के सम्बन्ध में तो उपर्युक्त दो पहिनावे देखे जाते हैं, पर ज़ेवरों में विभिन्नता है। शहराती स्त्रियों के ज़ेवर तो सीमित रहते हैं, साथ-साथ वह सुन्दर भी देखे जाते हैं, पर देहात की महिलाओं में ज़ेवरों का बड़ा भोंड़ा रूप दिखाई देता है। शहरों में स्त्रियाँ फ़ॉर्म, लच्छा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निम्न-लिखित ग्राहक-नम्बर के ग्राहकों के रुपये गत जनवरी मास में प्राप्त हुए हैं। ग्राहकों को चाहिये कि वे अपना ग्राहक-नम्बर स्मरण रक्खें और पत्र-व्यवहार के समय उसे अवश्य लिखा करें। बिना ग्राहक-नम्बर के उन्हीं उचित कार्यवाही करना किसी भी दशा में सम्भव नहीं है।

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त-रक़म
[illegible]	मिस्टर कृष्णकुमार वेदेहरा, जलन्धर कैन्ट	३॥)
[illegible]	श्रीयुत वेदप्रकाश गुप्त, मेरठ	,,
[illegible]	मिसेज़ आर० दुर्गासहाय, जयपुर	६॥)
[illegible]	मिसेज़ आई० देव, नवाबगञ्ज	,,
[illegible]	श्रीमनीलाल जी मानसिंह साह, मद्रास	,,
[illegible]	बाबू बलभद्र झा, पो० लोहना रोड	३॥)
[illegible]	स्वामी हरिशमानन्द जी, अमृतसर	६॥)
[illegible]	श्रीमती सुशीलादेवी जैन, कासगञ्ज	,,
[illegible]	श्रीयुत बैजनाथप्रसाद जी, पो० बागोदर	३)
[illegible]	लाला मुन्नीलाल सुन्दरलाल, फरुखाबाद	६॥)
[illegible]	श्रीयुत एल० एस० विस्ट, भीमताल	,,
[illegible]	श्री सत्यदेव प्रसाद, बहादुरगञ्ज	३॥)
[illegible]	सार्वजनिक पुस्तकालय, आइटोला	६॥)
[illegible]	सीतारामण सार्वजनिक पुस्तकालय, सिनोज	,,
[illegible]	सार्वजनिक पुस्तकालय, सिनोर	,,
[illegible]	ठाकुर रणजीतसिंह, पो० रायपुर	५)
[illegible]	श्रीयुत रीखचन्द्र चौरसिया, पो० भवई	३॥)
[illegible]	श्रीयुत कुन्तल जी, खानेवाल	६॥)

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त-रक़म
४०२७५	कुँवरानी रघुवीरसिंह, मनोरमागञ्ज	६॥)
४०२७६	दि फैक्टरी मैनेजर सुगर फैक्टरी, पो० विक्रमगञ्ज	,,
४०२७७	श्री हरिप्रसाद जी गुप्त, गोरखपुर	,,
४०२७८	पं० लक्ष्मीनारायण दुबे, बीकानेर	,,
४०२७९	प्रगतिशील पुस्तकालय, पो० नूरपुर	३)
४०२८०	श्रीयुत रामस्वरूप सिंह, बम्बई	६॥)
४०२८१	मिसेज़ एच० डी० श्रीवास्तव, सुलतानपुर	,,
४०२८२	हिन्दी प्रेमी सङ्घ, अङ्कोला	६)
४०२८३	महाराज कुमार बहादुर सिंह, जयपुर स्टेट	६॥)
४०२८४	श्रीयुत इन्द्रसेन वर्मा, भटगाँव	,,
४०२८५	श्रीयुत एस० के शर्मा, कानपुर	,,
४०२८६	मिस सुशीलकुमारी माथुर, लाहौर	,,
४०२८७	श्रीयुत कन्हैयालाल, पो० मेना	,,
४०२८८	जशपुर स्टेट क्लब, जशपुर	,,
४०२८९	श्री भाउलाल जी भान, लालपुर	,,
४०२९०	श्रीमती हजारीदेवी, टनकपुर	,,
४०२९२	श्रीयुत लक्ष्मीचन्द मोहनलाल, पीपार सिटी	६॥)
४०२९३	राजा विश्वेश्वरगिरी जी विरभान गिरी जी, हैदराबाद ...	६॥)
४०२९४	सारस्वत खत्री विद्यालय, कलकत्ता	५॥)
४०२९५	लाला हीरालाल जी गुप्त, न्यू दिल्ली	५)
४०२९६	श्रीयुत मेरुदास, चोमू	६।)
४०२९७	सम्मेलन वाचनालय, पो० बारी	,,
४०२९८	श्रीयुत गजानन्द गोविन्द तलवारे करज खोप	७)
४०२९९	हिन्दी विजय वाचनालय, पो० बावतमल	५)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त-रक़म
४०६००	पं० एस० आर० अग्निहोत्री, गोला गोकरननाथ	३॥)
४०६०१	श्री भरताग्रजशरण, बाँकीपुर	६॥)
४०६०२	मेसर्स बिहारीलाल मुन्नालाल, पो० गढ़वा	,,
४०६०३	मिसेज़ विद्यावती, गुंजरात	३॥)
४०६०४	मिसेज़ गिरीशप्रसाद माथुर, धुरी	,,
४०६०५	दि सिक्रेटरी वर्कर्स यूनियन, मोतिहारी	,,
४०६०६	श्री कुशलसिंह, थाना मदर	६॥)
४०६०७	श्री नायक जयन्तीप्रसाद, रीवा स्टेट	६॥)
४०६०८	पं० सुरेश्वर शर्मा मिश्र, देववन्द	६॥)
४०६०९	मिस्टर एम० डी० मारटीन, पो० चम्पा	,,
४०६१०	श्रीयुत अवधनारायण चौधरी, पो० रानू	,,
४०६११	श्रीयुत देवीचन्द शाह, सरदारपुरा	,,
४०६१२	श्रीयुत नारायणदास गुप्त, पो० उमरिया	५॥)
४०६१३	कुमारी सावित्री वर्मा, पो० गुड्डा	३॥)
४०६१४	हिन्दू पब्लिक रीडिङ्ग रूम एण्ड लाईब्रेरी, बहावल नगर	३)
४०६१५	मिसेज़ लेफ़्टीनेन्ट चरणजीतसिंह, पो० कठुआ	१३)
४०६१६	बाबू लोटनराम विश्वकर्मा, चिटागाँव	३॥)
४०६१७	श्रीयुत लछुमनदास मेहता, बहावलपुर	६॥)
४०६१८	श्रीयुत राजेन्द्रसिंह, वेलथरा रोड	,,
४०६१९	सिक्रेटरी, लाईब्रेरी लुनकरण सर ...	६॥)
४०६२१	श्रीमती कौशल्यादेवी, अटक ...	३)
४०६२२	मिस कैलाश चड्ढा, लाहौर ...	६॥)
४०६२३	श्रीयुत सूरजप्रकाश, नगीना.... ...	,,
४०६२४	बाबू अवधबिहारी प्रसाद, पो० नीथपर	५॥)
४०६२५	मेसर्स लक्ष्मीनारायण जगन्नाथ, कानपुर	३॥)
४०६२६	श्री दीवान मिन्सराज, पो० सराय आलम गिल	६॥)

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त-रक़म
४०६२७	श्रीहनुमान पुस्तकालय, रतनगढ़ ...	७)
४०६२८	श्री० एल० एस० हकरानी, पो० इलकल	,,
४०६२९	श्रीयुत अमरनाथ चौधरी, पो० बाराखुल्ला	,,
४०६३०	ठाकुर जयसिंह, बहरायच ...	७)
४०६३३	मकटपुर एम० ई० स्कूल, गिरिडिह	,,
४०६३४	श्री नारायण जानकीलाल, सेकसरिया पो० मलकापुर	७)
४०६३५	श्रीमती विद्यावती पांडे, गौहाटी ...	७)
४०६३६	मेसर्स आसकरन शङ्करलाल, मकराना	,,
४०६३७	श्री सोमदत्त टण्डन, कलकत्ता ...	,,
४०६३८	कुँअर निरंकारसिंह, पो० उमरगढ़	,,
४०६३९	श्रीयुत ए० पी० माथुर, दिल्ली	,,
४०६४०	बाबू अखिलेश्वरीप्रसाद, आरा ...	,,
४०६४१	मिसेज़ माथुर, लखनऊ ...	,,
४०६४२	मिसेज़ शान्ति सिनहा, हरदोई ...	,,
४०६४३	श्रीयुत जवाहरलाल जी, जबलपुर ...	,,
४०६४४	श्री० एन० दयाल, पो० अनीसाबाद	,,
४०६४५	श्रीमती चन्द्रावती जी, रुड़की ...	,,
४०६४६	श्री जैन बालोपदेसिनी सभा, कोशी कलां ...	४)
४०६४७	यङ्गमैन जैन एसोसियेशन, यालमपुर	,,
४०६४८	डाक्टर अमरचन्द जोशी, जबलपुर ...	७)
४०६४९	श्रीयुत कृष्ण मही, जम्मू	,,
४०६५०	मिसेज़ विद्यावती शर्मा, जलन्धर	,,
४०६५१	श्रीयुत कालकाप्रसाद सिनहा, पो० दिघा ...	५)
४०६५२	श्री नेमचन्दजी, पो० अलीपुर दुवार ...	७)
४०६५३	मिस्टर एम० डी० कपूर, पो० फ़तेहपुर सिकरी ...	७)
४०६५४	श्री हरिजन पुस्तकालय, कलकत्ता	७)
४०६५५	मुकुटधारीप्रसाद पो० गिरिडीह	,,
४०६५६	श्रीबेनीबहादुर श्रीवास्तव, टोंकराज	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त-रक़म
४०६५७	श्री नौरङ्गीलाल जी सेठ, विजयपरस्र	३॥)
४०६५८	श्रीदेवीलालजी, बीकानेर ...	६॥)
४०६५९	मिसेज़ लोकनाथ मेहता, बहावलपुर स्टेट	,,
४०६६०	श्रीयुत आर०एन० दसेला, लखनऊ	,,
४०६६१	श्री दिगम्बर जैन पुस्तकालय, कन्नौज	५॥)
४०६६२	जवाहर पुस्तकालय, पो० झनडाहा	२॥)
४०६६३	मिसेज इन्दु गोयनका, मोतिहारी	३॥)
४०६६४	श्रीयुत हरि ओमदयाल भटनागर, इन्दौर	६॥)
४०६६५	श्री स्वरूपकिशोर तैमिनी, पटियाला स्टेट	३॥)
४०६६६	कुँ० गोपालसिंह जु देव, पो० महरौनी	६॥)
४०६६७	श्री रामविलास दुबे, मिर्ज़ापुर ...	,,
४०६६८	श्री सतीशचन्द्र सक्सेना, मुरादाबाद	,,
४०६६९	श्रीमती मधुलता, भिवानी ...	,,
४०६७०	श्री ठाकुरदास अग्रवाल, राजगंगपुर	,,
४०६७१	श्री जी० एन० सिनहा, गया ...	,,
४०६७२	मिसेज़ मंजुलाबाई जी विजूट, हुबली	,,
४०६७३	श्री मुद्रिकाप्रसाद सिंह, डालटेनगंज	,,
४०६७४	कुमारी पुष्पादेवी जैन, मेरठ ...	,,
४०६७५	मिस्टर आई० पी० गुप्त, न्यू दिल्ली	३॥)
४०६७६	मास्टर ध्यानसिंह, कांगड़ा ...	६॥)
४०६७७	श्रीयुत मनसाराम, (मरदान) ...	,,
४०६७८	श्री राजेन्द्रप्रसादसिंह, बलिया ...	,,
४०६७९	धर्मपत्नी पं० प्यारेलाल शर्मा, पो० डिबाई	,,
४०६८०	श्री कुँवर रूपसिंह जी, फ़र्रुख़ाबाद	,,
४०६८१	ठाकुर सुखसिंह जी, पो० कारन ...	,,
४०६८२	मिस्टर देवजी गोगजी पटेल, काठियावाड़	,,
४०६८३	श्रीमती विद्यावती बाई, महू ...	,,
४०६८४	श्रीयुत चन्द्रिका प्रसाद, खिरी ...	६॥)
४०६८५	मेसर्स हीरालाल, रामदयाल अजमेर	६।=)
४०६८६	मिसेज सीतागुरहा, फैजाबाद ...	६॥)
४०६८७	श्रीमती जगेश्वरीदेवी, मुज़फ़्फ़रपुर	,,

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त-रक़म
४०६८८	युवक वाचनालय, सीतामढ़ी ...	६॥)
४०६८९	श्रीमती लक्ष्मीदेवी सक्सेना, बदायूँ	,,
४०६९०	श्रीमती लोगकुमारी देवी, बांदा ...	,,
४०६९१	श्री जगमोहनलाल जी, फ़तेहपुर ...	३॥)
४०६९२	पं० राजनारायण जी शुक्ल, कानपुर ...	,,

निम्न-लिखित पुराने ग्राहक नम्बर के ग्राहकों का चन्दा गत मास में प्राप्त हुआ है :—

३९७५	६॥)	४७६६	६॥)
५३१८	,,	५७१८	,,
७६२७	,,	७८२८	,,
८०३८	,,	८०४४	,,
८०६८	,,	१५७५३	,,
१६१२५	,,	१७३६२	,,
१७९८४	,,	२३३८४	,,
२३४२०	,,	२३८४४	,,
२४५३८	,,	२७१९६	,,
२७३०९	,,	३०७००	,,
३२००९	,,	३२०३५	,,
३२०३८	,,	३२१०९	,,
३२३०५	,,	३२७६०	,,
३३१०२	,,	३३१०८	,,
३३७०६	,,	३३८०५	५)
३४०५९	,,	३४१०३	६॥)
३४३३५	,,	३४४८१	,,
३४५९३	,,	३४६५१	,,
३९२३०	,,	३९२४१	,,
३९२४६	,,	३९२५९	,,
३९२६१	,,	३९२९८	,,
३९३०५	,,	३९३१६	,,
३९३३६	,,	३९३५८	,,
३९३७२	,,	३९३९६	,,
३९३९७	,,	३९४११	,,
३९४२३	,,	३९४२८	,,
३९४८६	,,	३९९५४	,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३९९६७	६॥)	३९९९४	६॥)	३२५५६	३३६१४	३४४२४	३४४२७
४००१९	,,	४००२९	,,	३४४९६	३४५२८	३४५५८	३४५६८
४००३५	,,	३६०३०	,,	३४६०७	३४६९०	३५३९९	३५५०१
३६१०८	,,	३६१५४	,,	३६३५८	३६४१९	३६४३१	३६४३९
३६१९२	,,	३६२१३	,,	३६४५५	३६४५६	३६४६३ए	३६४७०
३६३२३	,,	३८०१२	,,	३६५२२	३६५२३	३६५२४	३६५२६
३८०५०	,,	३८६२४	,,	३६५२८	३६५३०	३६५३२	३६५३३
३८८९२	,,	३९१७७	,,	३६५४९	३६६६१	३७३५४	३८०२५
३९१७९	,,	३९१८९	,,	३८०५५	३८०६१	३८०६७	३८०६८
३९२१२	,,	३९२१४	,,	३८०९९	३८१०२	३८१०५	३८१०७
३९२७३	५)	२९९६५	,,	३८११३	३८११७	३८१२२	३८१२५
२७३०४	८॥)	३६०७८	,,	३८१३२	३८१३३	३८१३९	३८१४०

निम्न-लिखित ग्राहक-नम्बर के ग्राहकों का चन्दा यह अङ्क (फ़रवरी १९३८ का) भेज कर समाप्त हो जाता है। अतः इन्हें मार्च मास का 'चाँद' वी० पी० द्वारा भेजा जावेगा। ग्राहकों को चाहिए कि वी० पी० भेजने के पहले ही अपना चन्दा मनीआर्डर द्वारा भेज दें अथवा वी० पी० पहुँचने पर उसे स्वीकार कर लेने की कृपा करें।

७८२	९८६	१०८८	११०६	११३४	३९५०८	३९५०९	३९५१२
११३८	१९६४	३५३३	३६१०	३६२७	३९५१५	३९५१९	३९५२७
३६४४	३६४८	४२६५	४०४९	४५५७	३९५३०	३९५३२	३९५३४
४५७७	८१५४	१२९३०	१२९६२	१३९८९	३९५३७	३९५४२	३९५४३
१६७०१	१६८२८	१६८३२	१६९३९	१६९६४	३९५४७	३९५४८	३९५४९
१७०१६	१७०५३	१७०७९	१७०८२	१७१६१	३९५५६	३९५६१	३९५६२
२२३५४	२४६४३	२४६९९	२४७२९	२४८७३	३९५६८	३९५७४	३९५७५
२४९४५	२५०७२	२५०९९	२५१६१	२५३१७	३९५८३	३९५८५	३९५९०
२५४२५	२५८४६	२७७०४	२७७४२	२७७७९	३९६३४	३९६९५	४००८६
२७८२४	२७८३८	२७९०१	२७९०९	२७९५६	४०१४६	४०१४७	४०१५३
२७९५७	२७९८६	२८०९०	२८०१२	२८०५७	४०१७९	४०१९५	४०१९६
२८२६९	२९१७५	२९१९३	३०११०	३०१७०	४०२१०	४०२११	४०२३०
३०१९५	३०२५२	३०२५९	३०२८२	३०३४६	४०२४४	४०२४७	४०२४८
३१००७	३१०७५	३१०८५	३२४०९	३२४२०	४०२५६	४०२६०	४०२७१
३२४३०	३२४३३	३२४५१	३२४६०	३२५३०	४०३४२	४०३४५	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विभिन्न विषयों की चुनी हुई पुस्तकें

साहित्य-सागर—(दो भाग) उच्च कोटि का काव्य ग्रंथ। हिन्दी-काव्य-प्रेमियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। लेखक—कविराज पं० बिहारीलाल भट्ट। मूल्य प्रत्येक भाग का २॥) सजिल्द ३।)

बिहारी-रत्नाकर—बिहारी सतसई की विस्तृत तथा मार्मिक टीका। टीकाकार—स्वर्गीय जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०। मूल्य ५)

विवाह-विज्ञापन—विज्ञापन द्वारा होने वाले विवाहों का भण्डाफोड़। अत्यन्त हास्यरस-पूर्ण नाटक है। मूल्य १) सजिल्द १॥)

अचलायतन—कवीन्द्र रवीन्द्र के नाटक का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक श्री० रूपनारायण पाण्डेय। मूल्य ॥) सजिल्द ॥=)

निठल्लू की रामकहानी—हास्य रस की चटपटी कहानी। लेखक—श्री० परिपूर्णानन्द वर्मा। मूल्य ॥) सजिल्द १)

सम्राट् चन्द्रगुप्त—इसमें सम्राट चन्द्रगुप्त का जीवन तथा मुख्य-मुख्य ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है। मूल्य ।) सजिल्द ।=)

निबन्ध निचय—चुने हुए साहित्यिक निबन्धों का संग्रह। लेखक—पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी। मूल्य १।) सजिल्द १।॥)

कृषि-मित्र—इसमें कृषि सम्बन्धी सभी बातों का वर्णन किया गया है। लेखक—पं० गंगाप्रसाद पाण्डेय। मूल्य ।=)

अद्भुत आलाप—आश्चर्यजनक एवं कौतूहल-वर्धक निबन्धों का संग्रह। लेखक—आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य १) सजिल्द १॥)

पिस्तौल का निशाना—चुनी हुई श्रेष्ठ रूसी कहानियों का संग्रह। मूल्य केवल ३)

नगद नारायण—उच्च कोटि का जासूसी उपन्यास। लेखक—श्री० गोपालराम गहमरी। मूल्य २)

स्त्री और सौन्दर्य—स्त्रियों के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक, लेखक—श्रीमती ज्योतिर्मयी ठाकुर। मूल्य ३)

आत्म-विद्या—दार्शनिक विचारों की उत्कृष्ट पुस्तक। मूल्य ३)

चरित्रहीन—शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास। मूल्य ३॥)

दूध ही अमृत है—दूध के सम्बन्ध में विद्वत्ता-पूर्ण विवेचन। लेखक—हनुमानप्रसाद गोयल। मूल्य २) सादी १॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विभिन्न विषयों की चुनी हुई पुस्तकें

अमर लालसा—शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास। लेखक—श्री० गिरीशचन्द्र जोशी। मूल्य २।)

नारी-धर्म-शिक्षा—स्त्रियों के लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक। लेखिका—श्रीमती मनव्रता देवी। मूल्य १।)

प्रवीन पथिक—शिक्षाप्रद मनोरञ्जक उपन्यास। मूल्य १॥), १॥)

मरीचिका—मनोरञ्जक तथा शिक्षाप्रद उपन्यास। लेखक—श्री० केशरीकिशोर शरण। मूल्य १।)

आयुर्वेदीय खनिज विज्ञान—चिकित्सा सम्बन्धी रस-ज्ञान की जानकारी के लिए यह बहुत उत्तम पुस्तक है। मूल्य ३), २॥)

यूरोप में सात मास—यूरोप की यात्रा का अत्यन्त मनोरञ्जक तथा शिक्षाप्रद भौगोलिक वर्णन। लेखक—श्री० धर्मचन्द सरावगी। मूल्य २॥)

चीन की राज्यक्रान्ति—चीन की राज्यक्रान्ति का अत्यन्त रोमाञ्चकारी इतिहास। लेखक—स्व० पूर्णानन्द वर्मा, बी० एस-सी०, एल टी०। मूल्य १॥)

चौबीस अवतार—परमात्मा के चौबीस अवतारों का वर्णन शब्दकोष सहित। ईश्वर-भक्तों के लिए उपयोगी पुस्तक है। मूल्य २)

प्राचीन भारत—प्राचीन भारत का बौद्धकालीन इतिहास। लेखक—श्री० वेदव्यास, एम० ए०, एल-एल० बी०। मूल्य २।=)

पत्नी-पथ-प्रदर्शक—गार्हस्थ्य जीवन में प्रविष्ट होने वाली युवतियों के लिए परमोपयोगी पुस्तक। मूल्य २)

अस्फुट कलियाँ—सामाजिक कहानियों का सुन्दर संग्रह। लेखक—श्री० बैजनाथ कपूर। मूल्य १)

प्रेम-पुजारिन—शिक्षाप्रद, मनोरञ्जक मौलिक उपन्यास। लेखक श्रीयुत सुदर्शन। मूल्य २)

ग्रामोफ़ोन मास्टर—प्रसिद्ध तथा चुने हुए गायकों के मनोहर गानों का संग्रह। मूल्य १॥)

प्रेम निर्वाह—मनोरञ्जक तथा शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास। लेखक—श्री० भगवतीप्रसाद वाजपेयी। मूल्य १।)

भटका साथी—बच्चों के लिए मनोहर तथा शिक्षापूर्ण पुस्तक। मूल्य ॥)

स्वयं सेवक—बच्चों के जीवन को आदर्श बनाने वाली उत्तम पुस्तक। लेखक—श्री० जयशंकर प्रसाद। मूल्य ।=)

सरिता—चुनी हुई उत्तमोत्तम कहानियों का संग्रह। लेखक—श्री० सूर्यदेव शास्त्री, श्रीवास्तव। मूल्य ॥=)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कड़े आदि पहनती हैं, पर देहात में यह बात नहीं है। हमीरपुर और झाँसी प्रान्त में छोटी जाति की स्त्रियों में पैर में एक विशेष भाँति का जेवर देखा जाता है, जिसे 'गूजरी' कहते हैं। राठ में तथा उसके इर्द-गिर्द इसका पहिनावा काफ़ी तादाद में देखा जाता है। इस जेवर का वज़न डेढ़-दो सेर से तीन-चार सेर तक प्रायः देखा जाता है। इसकी धातु काँसा मिश्रित रहती है। इसके अन्दर स्त्रियाँ कङ्कड़ डालती हैं या बेचने वाले स्वयं डाल देते हैं, जिसके कारण काफ़ी झनझनाहट इसमें हुआ करती है। जब चार-छः स्त्रियाँ झुण्ड में चलती हैं तो उन गूजरियों की झनझनाहट एक विचित्रता का संसार निर्माण किया करती है। दर्शक बिना हँसे हुए नहीं रह सकता। बाँदा प्रान्त में 'बहुटा' या 'बरा' की अधिकता है। यहाँ की देहात की स्त्रियाँ ९९ फ़ीसदी इसका व्यवहार करती हैं और अपनी सुन्दरता के लिए इसे एक कारण समझती हैं। यहाँ एक बात और विशेषतः देहातों में दिखाई पड़ती है और वह यह है कि नाक में एक जेवर कील के स्थान में पहिना जाता है, जो पुँगरिया कहलाती है। यह बुन्देलखण्ड भर में देखी जाती है। पर यहाँ यह काफ़ी मोटी पहिनी जाती है। उसी के ऊपर नाक के ऊपरी भाग में भी एक छोटी सी पुञ्जरी पहनी जाती है। दो पुञ्जरी का पहिनावा काफ़ी तादाद में देहातों में देखा जाता है। देहातों में स्त्रियों के पहिनावे में अल्हड़पन अधिक देखा जाता है, वे सर से पैर तक जेवर पहिनती हैं। देहाती मेलों के अवसरों पर जब स्त्रियाँ मेला देखने जाती हैं, तब जेवरों का व्यवहार देखा जाता है। बुन्देलखण्ड के अधिकांश भाग में स्त्रियाँ चूड़ियों के पीछे कड़े पहिनती हैं, पर बाँदा तथा हमीरपुर के थोड़े भाग में यह कड़े भी विचित्रता रखते हैं। यह कड़े पोले बनवाये जाते हैं, जो काफ़ी मोटे रहते हैं। उनके दोनों सिरों पर सिंह की आकृति बनाई जाती है। यह कड़े यहाँ स्त्रियाँ चूड़ियों के पीछे पहिनती हैं। गले में प्रायः सुतिया, लल्लरी, बिचौली पहिनी जाती है, जो प्रायः समान है।

इन स्त्रियों की इस प्रकार की वेष-भूषा दो बातों का परिणाम कही जा सकती है। एक तो निरक्षरता और दूसरी रूढ़िवादिता मिश्रित अन्ध-विश्वास। उनको इतनी शिक्षा ही नहीं मिलती कि वे उन्नति के उपाय सोच सकें। देहातों में अब जिला-बोर्डों ने यद्यपि स्कूल खोल रक्खे हैं पर वे वास्तविक आवश्यकता को पूर्ण नहीं करते। बहुत स्थलों पर लड़कों को कठिनाई पड़ती है। चार-पाँच मौज़ों में एक प्राइमरी स्कूल देखा जाता है। चार-पाँच मील के लड़के पढ़ने दूसरे मवाज़ियात में आते हैं। जब बरसात में नाले चढ़ते हैं या बारिश बड़े ज़ोर की होती है, तब ये दूर के गाँव वाले बच्चे अपनी इच्छा के विरुद्ध घर रह जाते हैं और पाठशाला नहीं जा पाते। देहातों में शिक्षा के मार्ग में छुआछूत का भूत भी रोड़ा अटकाता है। अछूत बच्चे इसके कारण भी नहीं पढ़ पाते। जब बालकों की ऐसी दशा है तब बालिकाओं को कौन पूछता है। अब देहाती पाठशालाओं में एकाध लड़की लड़कों के साथ अ, ब में पढ़ती हुई नज़र आने लगी है, जिससे प्रकट है कि देहातों में यदि समाज और राष्ट्र के सुधारक किञ्चित भी उद्योग करें तो यह कमी दूर हो सकती है। बुन्देलखण्ड की स्त्रियों का सुधार अभी प्रारम्भ नहीं हुआ है और न उस समय तक हो सकता है, जब तक कि यहाँ के देहातों का सुधार नहीं होता।

—गोवर्द्धनदास त्रिपाठी

* * *

तब के गाँव

भारतवर्ष तो सदा ही गाँवों का देश रहा है। श्रमिक क्रान्ति (Industrial Revolution) के पश्चात् थोड़ी ही अवधि में यूरोप की कायापलट हो गई। जहाँ सीधे-सादे ग्रामवासी रहते थे, वहाँ अब व्यापार, पूँजीवाद एवं कल-पुर्ज़ों के केन्द्रस्थल हो गये हैं। किन्तु भारत की दशा कुछ और ही है। पाश्चात्य सभ्यता एवं वर्तमान मशीन-युग के प्रभाव में पड़कर भी यहाँ के गाँव, गाँव ही रह गये। हाँ, इनकी हालत अवश्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर आचरण करना और स्वयं नवीन आदर्श स्थापित करना है।

हमारे समाज का क्या रूप है और वह किस ओर अग्रसर हो रहा है, यह सोचना, उसपर मनन करना, समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए आवश्यक है। केवल अपनी उन्नति ही उसका एकमात्र उद्देश्य नहीं, वरन् समस्त समाज के उत्थान के लिए उसे प्रयत्नशील होना चाहिए। पूर्व समाज ने जो-जो आदर्श स्थापित किये हैं, उन पर परिस्थितियों के अनुसार विवेचन कर उसे पग बढ़ाना है। समयानुसार जो आदर्श उसके लिए हितकर हैं, उन्हें अपनाना और समाज के कार्य-क्रम को सुचारु रूपेण चलाते रहना है।

प्रत्येक समाज किन्हीं नियमों द्वारा सञ्चालित होता है, स्वयं नहीं, परन्तु अपने सदस्यों द्वारा, जो अपने कर्त्तव्यों का परिपालन करते हुए कार्य-संलग्न रहते हैं, यदि कोई सदस्य उसके किसी नियम की अवहेलना करता है, तो समाज उसे दण्ड देने का अधिकारी है। दण्ड चाहे चेतावनी रूप में हो या किसी अन्य रूप में। यहाँ तक कि वह सदस्य विशेष का, जिसका अपराध गुरुतर है और जिसके कारण समाज को किसी प्रकार की हानि पहुँचने की सम्भावना हो सकती है, बहिष्कार कर सकता है। अतएव प्रत्येक सदस्य को समाज के नियमों का पालन करते हुए उसके प्रति कर्त्तव्य परायण बनना चाहिए।

समय एवं परिस्थितियों के अनुसार समाज के स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है। कभी-कभी परिस्थितियाँ इस प्रकार की आ जाती हैं कि समूचे समाज के स्वरूप में एक क्रान्ति की आवश्यकता आ पड़ती है। परन्तु ऐसा प्रायः नहीं हुआ करता। समयानुसार उसके जिस अङ्ग में सुधार तथा कुछ परिवर्त्तन नहीं किया जाता, तो उसमें बुराइयाँ आनी आरम्भ हो जाती हैं; परिणामतः दूसरे अङ्ग भी शिथिल पड़ने प्रारम्भ हो जाते हैं। समाज के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य है कि वह समाज को इस दुर्दशा से बचाने का यत्न करे और इस प्रकार अवनति से उसकी रक्षा करे।

आज हमारे हिन्दू-समाज की शोचनीय दशा का यही कारण है। अब हमारा और हमारे समाज का कल्याण इसी में है कि समयानुसार इसके विभिन्न में सुधार एवं आवश्यक परिवर्त्तन करें।

क्या हमारे समाज के सदस्य इस ओर ध्यान देने का कष्ट करेंगे?

—सुशील

* * *

विचार-प्रवाह

मानस मराल एवं हृद-विहङ्ग! कहाँ उड़े जा रहे हो? कल्पना की आँधी में, वसन्त की मस्त एवं मधुर मलय-मारुत के बीच में होकर कहाँ जाने का विचार है? आकांक्षाएँ, आलाप और आदतें चरित्र की चंचलता तथा पागलपन की मदिरा के सहारे कहाँ तक जीवन-ज्योति का अनुसरण कर भावनाओं और काव्य की ओर दौड़ चलेंगे? शान्तिमय सुरीले सद्भाव सिहर कर सुषमा-सुधा सुनाने की सफलता चाहते हैं। चारु-चेष्टायें चुम्बन कर चेतनाहीन चञ्चल चित्र खींच चैतन्यता, चमत्कार एवं चुपचाप चुम्बनों से जीवन-सहेली का मनोरञ्जन करती हैं। अरे यह कहाँ का खेल है। शब्दों के विभिन्न और विचित्र व्यवहार ने वाक् शक्ति पर भी प्रहार करने का प्रयास किया है। स्नेहसिञ्चित मानस! थोड़ा विश्राम लो, कल परीक्षा है।

२

मैं नहीं जानती, मुझे क्या हो गया है! हृदय की सारी कल्पनामयी विचित्र भावनाएँ न जाने क्यों सौन्दर्य एवं प्रेममयी यौवन-स्वरूप स्फूर्ति सँवारने में लगी हुई हैं। यौवन का यह आकर्षक स्वरूप न जाने किस ओर बहा जा रहा है। मन एवं वासना का विराट दर्शन कभी-कभी हृदय को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डोल कर देता है। सम्प्रति नाटकीय-स्वप्न-रेखा सम मूर्तियाँ हृदय-मन्दिर में अपना-अपना अस्तित्व छोड़ जाने की चेष्टाएँ किया करती हैं और उनकी स्मृति एवं दर्शन का मानसिक काव्य-कला पर अपूर्व प्रभाव पड़ कर उत्तेजना का काम किया करता है। × × स्वाभाविकता के सरल एवं सहृदय स्वरूप! ठहरो, अभी थोड़ी देर है।

३

जिसे हम आज सभ्यता कहते हैं—वह सामान्य-व्यवहार से परे एक अधिकाधिक गूढ़ होने वाली वस्तु है। संसार में आज दिन न मालूम कितने गूढ़ और दाँव-पेंचों से युक्त राजनीति तथा अर्थशास्त्र के प्रपञ्च भरे पड़े हैं। हरेक राष्ट्र सर्वमान्य बनना चाहता है और अपने अधिकार-बल की डींग हाँक कर आगे बढ़ कर राजनैतिक परिस्थितियों से मुठभेड़ लेना चाहता है। हिटलर, मुसोलिनी और जापान युद्ध-भूत से बचने का स्वाँग रचकर भी सामरिक-तैयारियों में जी-जान से तुले मालूम पड़ते हैं। अख़बार भी विश्व-व्यापक कठिनाइयाँ गा-गाकर वातावरण को और भी भयानक और नीरस बनाते जा रहे हैं। संसार का नया ढकोसला, नया दिखावा और प्रलोभन की दौड़ भी विचित्रता से हीन नहीं है। नवीन-नवीन समितियाँ उत्पन्न हो-हो कर कार्यक्षेत्र की वास्तविकता त्यागकर बाह्य-आडम्बर, झूठे उत्साह और करुण-क्रन्दन का सहारा लेकर नवीन सुधार-भावनाओं को प्रोत्साहन देती हैं। सेवा, सङ्गठन और प्रेम के नाम पर किस नये बाज़ार की तैयारियाँ हो रही हैं। पता नहीं, इनके पीछे कौन सा परिणाम चक्कर काट रहा है।

४

मेरे ग़रीब विचार--आकांक्षाओ और जीवन की ध्येयमयी लालसाओ! जाओ, दूर भाग जाओ, इतनी दूर चली जाओ, जिसमें मैं तुम्हें कभी भी स्मरण न कर सकूँ। लोगों ने मुझे बाँध दिया है, गहरे गढ़े में फेंक कर मोटी लौह-ज़ंजीर से जकड़ दिया है—दाम्पत्य-रज्जुओं से कस दिया है, जिसमें मैं उठ भी न सकूँ, हिल भी न सकूँ और विचारों के साथ उड़ भी न सकूँ। वासना, विरह और प्रेम मेरे सम्मुख आ-आकर मुझे भुलावा दें और मैं उनके पञ्जे में पड़ कर अपने कर्तव्य, अपनी स्पर्धा और निजी अस्तित्व को भूल जाऊँ।

५

वे क्या पसन्द करते हैं—यह प्रश्न मेरे मन में कई बार उठा—तूफ़ान मचाकर हृदय के उस कोने में विलीन हो गया, जहाँ स्मृति-रूप प्रेम और सेवा का निवास है। मैंने उन्हें कहते सुना था, पाउडर, लेवेंडर और स्नो के प्रति! मैंने हास्य-रेखाओं में पाया था उनकी रसिकता और दीवानापन। अधखिली ओष्ठ-पङ्खड़ियों पर मुझे उनमें व्यसनों से—सिगरेट के धुएँ से, चाय के कप और शराब के प्यालों से घृणा दीख पड़ी थी। × × × उस दिन कितनी ही विचित्र बातों पर और जीवन की समस्याओं पर उनके विचार प्रकट हुए थे—परन्तु विशेषता रखती है शरारती—तूफ़ानी दुष्ट स्त्री-जाति!

वे चाहते हैं—ज्ञान, नाम और जीवन का सर्वोत्तम-सफल पद जिसमें स्वतन्त्रता हो, व्यक्तिगत कार्योत्सुकता हो और हो सांसारिकता से परे मानव-जीवन का गहन और गूढ़तम दर्शन। परन्तु भारतीयता और स्वजनों के स्नेह से रक्षित वह पद जिसमें लालसा, कर्तव्य और उन्नत ध्येय हो, जो कृत्रिमता से परे निष्कपट, आचरण का पन्थ दिखलाने में सहायता दे। सुनती हूँ, उनकी इच्छा दीनता को लेकर अपने को देश-हितैषी बनाने की थी। परन्तु मेरा और पूँजीपति समागम उसे कुछ अंशों तक क्षत-विक्षिप्त कर गया। चलो अब यों रहा। हम दोनों एक दूसरे को अपने तईं योग्य बनाकर—एक दूसरे की पसन्दगी का मिलाप कर वर्तमान परिस्थितियों से लड़कर जीवन के विभिन्न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातावरणों में स्वच्छन्दता से विचरण कर सकें। हम दोनों का ऐसा सङ्गम बने, जिसमें जीवन की कठोरतायें, परिस्थितियों के साथ प्रयाग-रूप धारण कर हमें अपनी गोदी में विश्राम दें, और यह विश्राम हमारी शक्तियों को विकसित कर आगे जीवन-समुद्र के भीषण तूफ़ानों में मिल कर भी अपनी निर्मलता क़ायम रख सके। देखना है, जीवन के इन मनोहर पलों की स्मृतियाँ कैसा अन्तिम परिणाम उपस्थित करती हैं।

—निर्मला क० पण्ड्या

* * *

विधवा

प्रेमा अभी निरी बालिका ही थी। जब वह केवल दस ही वर्ष की थी तभी से समाज उसकी ओर अङ्गुली उठा रहा था। माँ-बाप की एकमात्र लड़की थी, फिर भी समाज की आँखों में वह काफ़ी उमर की हो चुकी थी। प्रेमा की माँ को स्त्री-समाज खाये डाल रहा था। जो भी स्त्री मिलती, वही दस बातें सुनाकर, प्रेमा की अविवाहित अवस्था पर ताना देती। अब इसी कारण माँ ने सोचा कि वह प्रेमा की शादी जल्दी ही कर डाले, परन्तु प्रेमा के पिता, अभी से शादी करने को तैयार न थे। उनका विचार प्रेमा को आगे और पढ़ाने का भी था, फिर उनकी प्यारी बेटी अब उनके पास न रहेगी, इसी बात को याद कर, वे शादी की बात को ही टाल देते थे, परन्तु आज माँ के काफ़ी अनुरोध करने पर वे राज़ी हो गये। दिन व्यतीत होते देर नहीं लगती। शुभ लग्न के अनुसार प्रेमा की शादी एक अच्छे कुटुम्ब में, सब तरह सम्पन्न सुयोग्य वर से हो गई। प्रेमा भी आखिर बालिका ही ठहरी, शादी के पहिले ही उसे शादी का अत्यन्त शौक़ था। वह कहा करती थी कि "दादी, तुम अम्माँ से कहकर मेरी शादी जल्दी करा दो"। प्रेमा की दादी भी प्रेम में मग्न हो उसे गोद में बैठाकर कहा करती—"देख प्रेमो, शादी बाद तुझे अच्छे-अच्छे जेवर, कपड़े मिलेंगे और सुन्दर से दूल्हे की तू रानी बनेगी"। प्रेमा कहती—"दादी, जभी तो तुमने और अम्माँ ने अपनी शादी जल्दी कर ली, तुम न मानो मेरा कहना, मैं बाबू जी से कहूँगी कि अम्माँ, दादी मेरी शादी नहीं करतीं।"

× × ×

सुसराल के सभी लोग प्रेमा को चाहते थे। सास, ससुर की वह एकमात्र पुत्रवधू थी। प्रेमा दिनभर नरेन्द्र के साथ खेल में ही व्यस्त रहती थी। कुछ दिन यों ही बीत गये। प्रकृति के नियम के अनुसार दुःख-सुख लगे ही रहते हैं। जिस प्रकार दिन के बाद रात्रि होती ही है उसी प्रकार दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख अवश्य ही आता है। इनके सुख के दिन धीरे-धीरे लोप हो गये। अचानक नरेन्द्र हैज़े से पीड़ित हो गया। अब तो प्रेमा बहुत दुखी हो रही थी। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया कि—"अब जीने की कोई आशा नहीं।" नरेन्द्र के माँ-बाप का प्राणाधार रत्न, और प्रेमा के प्राणों का जीवन आज वहाँ जाने वाला था, जहाँ से वह कभी भी लौट न सकेगा। सभी रोने में मग्न थे, सभी चाहते थे कि ईश्वर नरेन्द्र को स्वस्थ कर दे। परन्तु ईश्वर भी उसी को चाहता है जिसे सब चाहते हैं। नरेन्द्र की हालत गिरती जा रही थी। उसके हाथ-पाँव क्रमशः ठण्डे पड़ते जा रहे थे, वह अभागा अब सिर्फ़ आध घण्टे का मेहमान और था, बस अन्तिम बार यही वह प्रेमा को देख सका। उसने प्रेमा की ओर स्नेह भरे नयनों से देखा और पानी माँगा। प्रेमा ने गङ्गा-जल की एक घूँट पिलाई, उसके पाँच मिनट बाद ही वह प्रेमा को अकेली छोड़ गया।

माँ-बाप ने खाना-पीना सब कुछ छोड़ दिया, वे रात-दिन रोते-बिलपते रहते और नरेन्द्र की स्मृति में उसकी याद में पागल हो रहे थे। जब-जब वे प्रेमा को देखते, उनके हृदय जल उठते। वाह रे विधुर समाज! तेरे ही कारण भारतवर्ष में, आज दिन अनेकों बाल-विधवाएँ मिलेंगी जो प्रेमा जैसी अवस्था की हैं, जो जानतीं भी नहीं कि विवाहित जीवन क्या है! विवाह किसे कहते हैं। सास कहती, "प्रेमा, मुझे भी मृत्यु नहीं नहीं आ जाती, जो मेरे लाल को ले गई और मैं अभागिन अभी तक जीवित हूँ।" प्रेमा आखिर बच्चा ही थी, वह कुछ दिनों तक तो नरेन्द्र को याद कर लेती थी, पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाद में खेल-कूद में सब कुछ भूल गई। सास जब कहीं नये-नये कपड़े पहिन कर जाती, तो प्रेमा भी चमक-दमकदार कपड़े पहिनने के लिये ज़िद करने लगती। वह भी सास की तरह ही सब गहने-कपड़े पहिनती। सास कहती—"प्रेमा, तुम्हें सबके सामने ये सब वस्त्र-आभूषण नहीं पहिनने चाहिये, जाति वाले क्या कहेंगे।" प्रेमा कहती, "माँ, पहिले तो तुम रोज़ ही मुझसे लड़ा करती थीं कि मैं रङ्गीन कपड़े पहिने रहा करूँ और अब तुम्हें क्या हो गया है? अरे! तुम तो रो सी रही हो? बोलो माँ, मुझे आज ये नई चूड़ियाँ पहिनकर चलने दो, मेरे साथ वाली सभी ने ऐसी चूड़ियाँ पहिनी हैं।" सास सोचती—आह, ईश्वर! प्रेमा अभी बिल्कुल नादान है, उसमें बचपन भरा हुआ है, सभी को बचपन में नये-नये कपड़े, गहनों का शौक लगा ही करता है, पर मेरी प्रेमा! आज वह कुछ भी पहिनने की अधिकारी नहीं। प्रेमा जो कुछ भी कहती, उसके सास-ससुर कभी भी उस वस्तु को मना न करते; प्रेमा वैसे ही रहती, जैसे वह नरेन्द्र के सामने रहती थी।

पास-पड़ोसिन जब प्रेमा को देखतीं तो दाँतों तले अङ्गुली दबातीं। वे कहतीं, सास ने खुद ही प्रेमा को बिगाड़ रक्खा है, जब प्रेमा उनके घर खेलने जाती तो वे हजारों ताना दे-देकर प्रेमा से कहतीं—"अरी कुलटा, खुद ही नरेन्द्र को मारा है, अब तू शृङ्गार वग़ैरह करना छोड़ दे, विधवा ये सब नहीं किया करतीं।" तब प्रेमा सब हाल आकर सास से कहती कि—"माँ! सब क्यों मुझे विधवा, कुलटा कहकर पुकारते हैं?" माँ दो आँसू बहाकर कहती—"प्रेमा, हम तो तुझसे कुछ भी नहीं कहते, सबको कहने दे, अपना क्या बिगड़ता है। अब तू किसी के भी घर खेलने मत जाया कर, घर में ही रहा कर। धीरे-धीरे प्रेमा बढ़ने लगी; उसी प्रकार जिस प्रकार चन्द्र की कलाएँ क्रमशः पूर्णिमा तक बढ़ती जाती हैं। उसकी सुन्दरता और यौवन को देखकर किसका हृदय दो टूक न होगा! अब अवस्थानुसार प्रेमा समझदार होती जा रही थी, वह अब सबकी बातें सोचती और घण्टों सोचा करती। दिन व्यतीत होते देर नहीं लगती। उसे अब सोलहवाँ साल था। वह नरेन्द्र की याद कर-करके रोती रहती। अब उसे कुछ भी शृङ्गार सम्बन्धी चीजें अच्छी न लगतीं, उसका अधिक से अधिक समय अपने प्यारे नरेन्द्र की याद में बीतता, दिन काटने मुश्किल होने लगे। इसी दुखद समय से उसे मालूम हुआ कि मुझे कैसा जीवन व्यतीत करना चाहिये। सब मुझे विधवा कहते हैं, यह क्यों? हाँ, ठीक है, मुझ जैसी अभागिनों और सौभाग्यवती स्त्रियों में बड़ा अन्तर है। उसकी आत्मा मानो कह रही थी—"प्रेमा! तू ही अकेली अभागिन नहीं है, तेरी ही अवस्था की बाल-विधवाएँ अपने देश में बहुत हैं, तू फिर दुखी क्यों हो रही है।" उसके सास-ससुर अपार धन-राशि के मालिक थे। प्रेमा ने धन से विधवा-आश्रम बनवाने की सोची। उसने अपने विचार ससुर और सास को भी बताये। सबकी आज्ञानुसार, उसने अपने प्रिय नरेन्द्र की स्मृति में विधवा-आश्रम बनवा दिया। आज आश्रम में देश की अनेकों विधवाएँ और अन्य देवियाँ जिन्हें समाज अकारण ही ठुकरा देता है, आश्रय पा रही हैं। उसकी देख-रेख का प्रबन्ध अब प्रेमा ही करती है। आज प्रेमा का अधिकांश समय आश्रम के प्रबन्ध में और ईश्वरोपासना में व्यतीत होता है।

—सुशीला भार्गव

* * *

मोहेंजोदड़ो में कला और कौशल

मोहेंजोदड़ो की कला यथार्थवाद के अन्तर्गत है। यद्यपि बहुत प्राचीन होने के कारण मूर्तियाँ साफ़ मालूम नहीं होती हैं, फिर भी उनको देखकर यह विदित हो जाता है कि यहाँ के निवासियों ने प्रतिकृतियाँ उतारने में बड़ी कुशलता प्राप्त की थी। पौटरी को सजाने का यहाँ के निवासियों को बड़ा शौक था। किन्तु यह उनका कौशल है। मुद्राओं, तावीजों तथा ताम्र पत्रों पर अङ्कित चित्रों में शक्ति तथा जीवन मालूम होता है। सर जॉन मार्शल कहते हैं कि पशुओं का इतना सुन्दर चित्रण कोई पटु चित्रकार ही कर सकते थे। पक्षियों का बहुत कम चित्रण मोहेंजोदड़ो में हुआ है। केवल किसी-किसी चित्र पर बतख का चित्रण पाया जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हड़प्पा, मोहेंजोदड़ो तथा आमरी की कला में आडम्बर प्रलक्षित होता है। कुछ मूर्तियों में कमजोरी तथा इन्द्रीयणता का निरूपण बड़े सुन्दर ढङ्ग से हुआ है। ग्रीक कला ही की तरह यहाँ की कला भी भावी कला पर प्रकाश डालती है। लम्बे नेत्र तथा भोग की कुछ दशाओं का चित्रण भी कुछ मूर्तियों में पाया जाता है। पशुओं के चित्रण में एक अद्भुत अभिजातिमतता तथा पृथकता मालूम होती है। वृक्षों की टहनियों तथा पत्तों का चित्रण भी अनूठा हुआ है। प्रकृति तथा अलौकिकता के मिश्रण से मोहेंजोदड़ो की कला बहुत उच्चकोटि की हो गई है। मुद्राओं के इतने प्रचार का कारण अभी तक ज्ञात नहीं हुआ है। इनके प्रयोग का कारण शायद लौकिक या धार्मिक रहा हो। हिरोडोटस ने एक स्थान पर लिखा है कि उसके काल में प्रत्येक नेवीलोन निवासी अपने पास एक-एक मुद्रा रखता था।

भारतवर्ष में नृत्य अभी तक संस्कार पद्धति का अङ्ग माना जाता है। मोहेंजोदड़ो के निवासियों ने जिनका जीवन इतना धार्मिक था, अवश्य नृत्य को कुछ न कुछ स्थान दिया होगा। फेईन्स के एक टुकड़े में नृत्य का एक दृश्य अङ्कित है। मि० दयाराम साहनी को भी पीतल की एक नर्तकी की मूर्ति मिली थी। यह बतलाना अवश्य कठिन है कि नृत्य किस दृष्टि से यहाँ अपनाया जाता था।

सौंदर्य्य-साधनों में मोहेंजोदड़ो निवासी बहुत बढ़े-चढ़े थे। समस्त सिंध प्रान्त में स्वर्ण-मिश्रित धातु तथा ताम्र के गहने मिले हैं। सर जॉन मार्शल का कथन है कि उस काल में यहाँ ताम्र नहीं मिलता था, किन्तु यह धारणा निर्मूल है। चान्ह डेरो तथा रिजनोत की खुदाई में कई ताम्र वस्तुएँ मिल चुकी हैं। इन दोनों स्थानों में अमेरिका की पुरातत्व संस्थाओं की ओर से खुदाई हो रही है।

सिर के फीते तथा तावीजों का मोहेंजोदड़ो में बड़ा प्रचार था। कुछ फीते स्वर्ण के बने हैं। बाल गूँथने के पश्चात् इन्हें सिर पर लगाया जाता था। इन लोगों को केश-कलापों का भी बड़ा शौक था। यद्यपि वे अजन्ता के केश-कलापों की तरह सुन्दर नहीं हैं, फिर भी जमाने के अनुसार उनका सौन्दर्य-प्रेम ठीक ही था। स्त्री, पुरुष दोनों बाल सँवार कर पीछे की ओर गाँठ बाँधते थे। माथे पर फीता इसलिए बँधा रहता था कि बाल इधर-उधर न बिखरें। स्त्रियाँ कभी-कभी कङ्घियों को बालों में लगा लिया करती थीं। चेहरा देखने के तीन पीतल के शीशे भी वहाँ पर मिले हैं। शीशे का कुछ कार्बोनेट तथा काला पाउडर भी एक स्थान पर पाया गया है। सम्भवतः कार्बोनेट चेहरे पर व काला पाउडर नेत्रों पर लगाया जाता था। तावीज शायद धार्मिक प्रेरणा के कारण पहिने जाते थे। हाथों की अँगूठियों का भी विशेष प्रचलन था। आश्चर्य होता है कि कहीं पर भी सोने की अँगूठियाँ नहीं मिली हैं। सभी अँगूठियाँ या तो पीतल की और या ताँबे की बनी हैं। कानों की बालियाँ तथा नाक की कीलें स्त्रियों के प्रधान आभूषणों में से थे। कड़े तथा कण्ठहार भी बराबर पहिने जाते थे। कण्ठहारों में हड्डी, हाथी दाँत, क़ीमती पत्थर तथा सीपी की गुटियाँ गुँथी हैं। एक कङ्कण में ६ लड़ियाँ हैं। इन लड़ियों में प्रत्येक चपटी गुटी के बाद सोने की गुटी लगी है।

मोहेंजोदड़ो का मूर्ति का शिल्प बहुत बढ़ा-चढ़ा था। मूर्तियों में या तो साधारण मिट्टी को या फूल तथा मिट्टी के मिश्रण को महत्व दिया जाता था। कुछ मूर्तियाँ कुरूप तथा भद्दी हैं। इनकी रूप-रेखा शायद बच्चों द्वारा हुई है। ताँबे तथा पीतल में ढली मूर्तियाँ भी यहाँ पर बहुत पाई गई हैं। मोहेंजोदड़ो में प्राप्त ताँबे की दो तलवारों की तुलना क्रिलिस्तीन की तलवारों से की जा सकती है। भालों के फल भी जबरदस्त होते थे। एक फल १८ इञ्च लम्बा तथा ५ इञ्च चौड़ा है। समस्त खुदाई में ताँबे तथा पीतल के बर्तनों का अभाव है।

शीशे का केवल एक थाल अभी तक प्राप्त हो सकी है। बर्त्तनों को बनाने के औजार तथा हथियार बड़े सुन्दर होते थे। कितने ही हथियारों पर चित्र लिपियाँ तक अङ्कित हैं। उस्तरे, मछली मारने के काँटे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीरों के शिर, खुँकरियाँ तथा अन्य कई घरेलू प्रयोग की वस्तुएँ मोहेंजोदड़ो में मिली हैं। चाकुओं तथा छुरियों के बीच चित्रकारी दिखलाना ज़रा कठिन सा है।

मोहेंजोदड़ो के मिट्टी के बर्तन अपने ढङ्ग के एक ही होते थे। सभी वर्तन कुम्भ पर बनाये जाते थे। मार्शल कहता है कि फुट चक्र प्रयोग की प्रणाली केवल पञ्जाब, सिंध तथा बलूचिस्तान तक ही सीमित थी। बर्तनों पर पॉलिश भी की जाती थी। पॉलिश करने का ध्येय शायद छोटे-छोटे छेदों को बन्द करना रहा हो। कला और कौशल को एक करने का यहाँ के निवासियों ने प्रयत्न किया था। पौटरी के बर्तनों पर जो बेल-बूटे बनते थे, उनपर कई रङ्गों का प्रयोग होता था। श्वेत, पीतवर्ण, लाल, श्वेत रक्त तथा चीर-शर रङ्गों द्वारा बर्तनों पर पॉलिश की जाती थी।

कुछ छोटे-छोटे मिट्टी के बर्तन बड़ी कुशलता के साथ बनाये गये हैं। इनके अन्दर कोई पवित्र वस्तु तथा इत्र रक्खा जाता था। आकृति-आधार यहाँ के निवासियों की धार्मिकता का परिचय देते हैं। इन पर भी पॉलिश तथा सुन्दर कारीगरी की गई है। कितने ही बर्तनों के मध्य में ४, ५ रेखाएँ एक ओर से दूसरी ओर तक पहुँचती हैं। ये मिट्टी के बर्तन तथा घड़े अभी तक आर्द्रता से बचे हुए हैं। कुम्भकार की कला सिन्धु प्रान्त में खूब फली-फूली।

गीत

[श्री० ब्रह्मदेव]

सन्ध्या हो चली!
लौट कर चल री, तिमिर में
आशा की छली!

किरण आई उषा की जब,
डूबता था चाँद का शव,
जगा तेरा उर विरह-रव
तभी की निकली!

तीर सी तीखी दुपहरी,
रही पर तू स्तब्ध ठहरी,
हेरती प्रिय तरी, प्रहरी
युग-युग की जली!

जल गई री अरुण आशा,
चल घिरी नीली निराशा,
कूल पर फैली पिपासा
रजनी की पली!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नारी और प्रतिक्रिया

[श्री० सागरप्रसाद राय, विशारद]

मनुष्य-शरीर के अवयवों में जिस तरह एक के साथ दूसरे का सम्बन्ध है उसी तरह समाज में भी जीवन का जीवन के साथ सम्बन्ध है। शरीर के किसी अवयव पर चोट पहुँचने से केवल वही अवयव दर्द का अनुभव नहीं करता, प्रत्युत सम्पूर्ण शरीर उस दर्द का अनुभव करता है और उसे दूर करने का यत्न करता है। इसी रूप में स्त्री और पुरुष का समाज के साथ सम्बन्ध है।

समाज अपने प्रत्यङ्गों में किसी एक को उपेक्षित कर अपने लक्ष्य को स्थिर बनाये रखने में कभी समर्थ नहीं हुआ है। मनुष्य-शरीर के भिन्न-भिन्न अवयव की नाईं ये दो भी समाज के दो मुख्य अवयव हैं। जहाँ एक दूसरे में भिन्नता रहने पर समाज अपने अस्तित्व को क़ायम रख नहीं सकता, फिर वैयक्तिक उत्कर्ष की कल्पना भी उपहासास्पद ही होगी। नारी, समाज के उन अङ्गों में मुख्य है जिनके बिना समाज के अन्य उपाङ्ग नीरस, बेकाम और व्यर्थ हैं। जब नारी में जागृति का बादल गरजता है, तब समाज में शक्ति रूपी बिजली कौंध उठती है और मानव अपने उज्ज्वल कर्म में तल्लीन हो जाते हैं। ऐसी महान शक्ति को उपेक्षिता समझ कर समाज कभी भी सुदृढ़ता प्राप्त नहीं कर सकता, वह विशृंखल ही हो जायगा। वर्तमान युग क्रान्ति के साथ उत्कर्ष का है; इसमें कोई भी किसी के बंधन में रहना पसंद नहीं करता। बन्धन से विमुक्त होने के लिए वह कठोर से कठोर कर्म करने में भी नहीं हिचकता। ऐसी स्थिति में भी समाज प्राचीन रूढ़िगत सत्ताओं को क़ायम किये हुए है। इन्हीं सत्ताओं के ग्रहण करने का परिणाम है सृष्टि-निर्म्मात्री को कठपुतली समझ बैठना—यह कठपुतली नहीं समाज की समर्थ सूत्रधारिका है, जिसके बिना समाज चल नहीं सकता।

अतः समाज और नारी का सम्बन्ध अविच्छिन्न है, अविच्छिन्न क्या अटल है। समाज का कर्तव्य है कि वह वर्ग-स्थिति को कुचल कर उज्ज्वल पथ का निर्माण करे और नारी के महत्त्व को समझ कर उसकी शक्ति पर श्रद्धा रखे तथा नारी का कर्त्तव्य है समाज के प्रत्येक कर्म में हाथ बँटाये। एक के दर्द का अनुभव दूसरा करे और एक के अभाव का दूसरा। पुरुष-समाज की वैयक्तिक उन्नति भी सामूहिक उन्नति पर निर्भर करती है।

राष्ट्र व्यक्तिगत शक्ति पर ही निर्भर नहीं है, बल्कि मनुष्य-समाज के साथ-साथ इसके और भी भिन्न-भिन्न सहायक उपकरण हैं, इनमें वह किसी भी अङ्ग को छोड़ आगे नहीं बढ़ सकता। राष्ट्रीय-आकांक्षाएँ तभी सिद्ध हो सकती हैं जब हम इसके प्रधान और श्रेयस्कर तत्व को समझें और उन्हें राष्ट्र-कार्य में समाविष्ट करें। जिस तरह समाज नारी को उपेक्षिता समझ कर जीवित रहने में समर्थ सिद्ध नहीं हो सकता, ठीक उसी तरह राष्ट्र भी। दो शक्तियों के संयोग से एक प्रबल शक्ति आविर्भूत होती है और वह शक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र में ऐसा कार्य करती है जिससे राष्ट्र नाम की सार्थकता सिद्ध हो जाती है। राष्ट्र जब परतन्त्रता की बेड़ियों से पूर्णतया जकड़ा रहता है तब नारी ही ऐसी शक्ति दिखलाई पड़ती है जो बन्धन को ढीला कर उत्थित मार्ग का निर्माण करती है। किसी राष्ट्र के अर्द्धभाग के लिए असम्भव है कि वह अपने दूसरे अर्द्ध भाग की सहानुभूति और सहायता के बिना स्वतन्त्रता प्राप्त कर ले। प्रत्येक देश में स्त्री-संस्थाओं ने अमूल्य सेवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। इङ्गलैण्ड के मज़दूर दल में भी स्त्री-संस्था का समावेश है। स्त्री-संस्थाएँ बड़ी स्फूर्ति के साथ सामाजिक, राजनैतिक, बौद्धिक और नैतिक उन्नति कर सकती हैं। पुरुष चाहे आत्म-बलिदान करे, जीवन उत्सर्ग कर दे, लेकिन स्त्रियोचित तेज और कार्य-क्षमता का समावेश इसमें नहीं हो सकता, चूँकि वेही त्याग में सुखानुभव करने वाली हैं। त्याग राष्ट्र का आवश्यक उपादान है और यह स्त्रियों में अनादि काल से अवस्थित है। राष्ट्र में नारी का प्रमुख स्थान है और वह स्थान वैसा ही महत्त्वपूर्ण है जैसा अर्ध भाग की पूर्ति के लिए दूसरे अर्ध भाग की सहायता।

जीवन ही समस्यामय है, लेकिन इसके रहस्य को खोल कर समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करना तथा कर्त्तव्य-पथ का निर्माण करना प्रत्येक मानव का मानवोचित कर्म है। स्वार्थ-साधना इनमें बाधा पहुँचाती है। स्वार्थ को सर्वथा त्याज्य समझ निस्वार्थ भाव का रखना समाज या राष्ट्र में विशेष स्थिति की सृष्टि करने के समान है। हमारे बीच सब से महत्त्वपूर्ण समस्या है नारी-समस्या। यह एक ऐसी विकट समस्या है, जो हमें बिलकुल पङ्गु बनाये हुए है। स्त्री-पुरुष ईश्वर-प्रदत्त लीलामय क्षेत्र के दो श्रेष्ठ उपकरण हैं। दोनों का सम्बन्ध-सूत्र बड़ा ही मज़बूत है। प्रत्येक एक दूसरे का परिचायक स्वरूप है। लेकिन वर्तमान हमें दोनों के बीच भिन्नता दिखलाने में पूर्ण समर्थ है। पुरुष स्त्री को वासना और भोग-विलास की सामग्री समझे हुए है और स्वार्थ से वशीभूत होकर स्त्रियों की सत्ता को भी भिन्नता के रूप में समझ रखता है। ऐसा विचार उन्हें अवनति के विषम गर्त्त में गिराने के सिवाय और कर ही क्या सकता है। समाज नारियों के लिए अग्निकुण्ड बना हुआ है, इस कुण्ड में रूढ़िगत सत्ताएँ प्रज्वलित वह्नि में घी का काम कर रही हैं। बाल-विवाह, कन्या-विक्रय, अशिक्षा, पर्दाप्रथा आदि समस्याएँ उपस्थित हैं, जिसका अखंड ताण्डव हम अपनी आँखों से बराबर निहारा करते हैं। बेचारी अबोध बालिका, जिसे सांसारिकता का कर्म भी विदित नहीं, जिस पर भारत की आत्मा टिकी हुई है, वह आजीवन वैधव्य के भार को ढोते हुए कराल यन्त्रणाएँ सहा करती हैं, साथ ही सामाजिक दृष्टि में वह घृणिता ही है। विधवा-विवाह की चर्चा समाज के प्रति अन्याय के समान है। धन-लोलुपता में पले स्वार्थान्ध पुरुष बालिका को बेचकर उसके जीवन को मरण बना डालने में ज़रा भी सङ्कोच नहीं करते। बूढ़े बच्चों से अपनी शादी कर लेते हैं, इसका परिणाम दुखद ही नहीं विषम स्थिति का उत्पादक है। सामाजिक अवगुण्ठन को हम पर्दा-प्रथा की संज्ञा देते हैं। स्त्रियाँ समाज रूपी बन्द पिंजड़े की चिड़ियाँ हैं, उन्हें बाहर निकलने का समाज में कोई उपाय नहीं, वे भीतर ही भीतर पर्दे में सड़ा करती हैं। पर्दा-प्रथा क्या है, गोया जेल प्रथा है, जिसमें अत्याचार, नृशंसता, करालता ही का बोलबाला है। शिक्षा का पूर्ण अभाव दिखलाई पड़ता है। शिक्षा में समाज ने स्त्रियों का स्थान रखा ही नहीं, वह पुत्र-प्रसव और चूल्हे-रूपी जीवन-साधन में अपना कर्म करे।

परिस्थिति के अनुरोध से युग अपनी आकांक्षा, आवश्यकता तथा उपादेयता का निर्माता स्वयं बनता है। वर्त्तमान परिस्थिति कुछ और ही दिखलाई पड़ती है, सर्वत्र नारी-आन्दोलन, नारी-जागरण और नारी-सुधार की गूँज व्यापक बन गई है। सामाजिक बन्धनों से विमुख कर नारियाँ अपना कर्म-क्षेत्र स्वयं निर्माण करने को तत्पर हैं। परतन्त्रता के पाश से सर्वथा छूटकर स्वतंत्रता की ओर उन्मुख हैं। यह बड़ा ही महान और उच्चादर्श है। क्रांति के साथ उत्कर्ष की उपादेयता में जहाँ उपेक्षा के साथ उच्छृंखलता के भाव का सृजन होता है, वहाँ शीघ्र ही गति में ऐसी शिथिलता आ जाती है और सहयोग का भी ऐसा अभाव हो जाता है कि वह गति-रुद्ध होकर कठिन हो जाती है और वह चिरंतन रूप में टिक नहीं सकती। इसलिए कर्तव्य के साथ अधिकार को अपनाये रहने से ही आन्दोलन का रूप वट-बीज के सदृश छोटे रूप में ही विशाल रूप का परिचय संसार को शीघ्र दे सकेगा। इसमें सन्देह नहीं कि चन्द नारियाँ कर्त्तव्य और अधिकार को हाथ में लिए हुए अपने लक्ष्य को चिरंतन रूप प्रदान करने में सचेष्ट और तत्पर हैं।

अधिकारों की भूख उच्छृंखलता की प्रेरक तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिक्रिया का भाव इसे उद्दीप्त करने का एक साधन मात्र है। इस उद्दण्ड भावना से कभी किसी की उन्नति सम्भव नहीं। यह सच और मान्य है कि पुरुषों का जुल्म नारियों पर हुआ है, इनका व्यापक क्षेत्र संकुचित क्षेत्र में परिवर्तन किया गया। लेकिन इससे मुक्त होने के लिए उन्हें पुनीत और दिव्यादर्श सम्मुख रखना चाहिए, न कि प्रतिक्रिया की भावना। स्त्रियों के बीच प्रायः यह भावना दिखलाई पड़ती है कि पुरुष हमारा काम करे और हम उनका कार्य करें। ऐसी भावना स्त्रीत्व के लिए विनष्टकारी ही कही जायगी। कोमलाङ्गी का कर्म कठोर नहीं होता। इनका क्षेत्र भी कोमल है। इस मत को चाहे लोग मान्य न समझें, लेकिन यह सत्य है। और यह भी सत्य है कि वह बराबर कोमल नहीं रहता, समय पाकर कठोर भी हो जाता है। किन्तु अपनी भावना को संयत रूप में रखने से ही उन्नति सम्भव है। कर्त्तव्य और कथन दो भिन्न-भिन्न समाज के उपकरण हैं, दोनों के समन्वय से ही उचित पथ का निर्माण हो सकता है। कहना, करने से आसान है, जब तक कर्तव्य दिखा न दिया जाय तब तक कहने का कुछ मूल्य नहीं—स्त्रियाँ कहती मर हैं, किन्तु कर्तव्य-पथ का अनुसरण करती कतिपय ही दिखाई पड़ती हैं। होना तो यह चाहिए कि कर्त्तव्य उनका आगे रहे और कथन पीछे। प्रतिक्रिया से स्त्रियाँ उन्नति-पथ पर नहीं चल सकतीं, फिसलने की ही सम्भावना रहेगी। ऐसी परिस्थिति में प्रतिक्रिया की भावना जो आज व्यापक बन रही है, सर्वथा उपेक्षणीय है।

प्रतिक्रिया प्रकृति-प्रदत्त एक वस्तु है, लेकिन इसका रूप वहीं तक मान्य है, जहाँ तक वह उच्छृङ्खलता और अशिष्टता का रूप धारण न करे। पुरुष के स्वार्थ-मय व्यापार ऐसे हैं जिनके लिए इन्हें प्रतिक्रिया करनी पड़ती है। प्रतिक्रिया में स्पर्द्धा की भावना सम्मिलित रहनी चाहिए, श्रद्धा और प्रेम का पूर्ण समन्वय होना चाहिए। सुधार और स्वतन्त्रता ऐसी चीज है, जिसके लिए प्रत्येक मानव सब दिन से इच्छुक है और रहा है। नारियाँ इस ओर अग्रसर अवश्य हों, किन्तु वहीं तक जहाँ तक इनके कार्य और क्षमता हैं। पुरुषों के सहयोग में रह कर इन्हें कर्म-प्रवृत होना चाहिए। इसका अर्थ बन्धन नहीं, पुत्रोत्पत्ति की मशीन नहीं, बल्कि योगक्षेत्र है। प्रतिक्रिया को महत्त्वाकांक्षा और दुर्भावना के रूप में ग्रहण कर उन्हें अपने कर्म में समाविष्ट करना आवश्यक है। जब तक इसे प्रतिशोध की संज्ञा दी जायगी तब तक वह अनुन्नति की राह बनी रहेगी। प्रतिक्रिया वास्तव में योग-दान है, इसे योग-दान और योग क्षेत्र समझ इस ओर हाथ बढ़ाना आवश्यक है और यही प्रति-क्रिया वास्तव में प्रतिक्रिया है।

हमारे बीच प्राचीन भवितव्यताओं का पूर्ण अभाव दीख पड़ता है, जहाँ राष्ट्रीयता और एकता का प्रेम-सूत्र बँधा था, मानव उचित स्वातन्त्र्य को समझते हुए कर्म-प्रवृत होते थे, वहीं प्रेम-सूत्र आज छिन्न-भिन्न हो गया है। जिसे आज हम अबला समझते हैं, उसी की जागृति में भारत में शक्ति संचरित हुई थी। वर्त्तमान समय इसकी उपेक्षा कर जीवित रहने को असमर्थ है। इस युग में सर्वत्र स्वतन्त्रता की आवाज फैली हुई है—स्त्रियाँ स्वातन्त्र्य-पथ में बेधड़क बढ़ती जा रही हैं। यह बढ़ना राष्ट्र-धर्म के नाते उचित मार्ग का निर्माण करता है, लेकिन स्वतन्त्रता को 'हक़' समझ कर बदनाम या दूषित करना उचित नहीं। कार्य-विनिमयता इनमें डेरा डालकर इन्हें पुरुष और पुरुष को स्त्री बनाने में समर्थ सिद्ध हो रही है। ऐसी बातें स्वतन्त्रता का अवलम्बन नहीं कर सकतीं। समाज में स्त्री-पुरुष दोनों समान हैं, दोनों मानवता के प्रतीक हैं। लेकिन यह मानना ही पड़ेगा कि पुरुष पुरुष हैं, स्त्रियाँ स्त्रियाँ हैं, दोनों का व्यक्तित्व भिन्न है। वास्तविक स्वातन्त्र्य क्या है, उचित कर्त्तव्य-क्षेत्र का निर्माण है। दोनों को अपने व्यक्तित्व पर ध्यान रखते हुए अहम् और अहंकार का त्याग करते हुए, नवयुग निर्माण के लिए भगीरथ प्रयत्न ही स्वातन्त्र्य का मूल-क्षेत्र है। राष्ट्र-धर्म का विकास स्वातन्त्र्य-क्षेत्र के लिए आवश्यक है। राष्ट्र-धर्म सबसे बढ़कर धर्म है, इसी में वास्तविक स्वातन्त्र्य छिपा हुआ है। इसको ईश्वरदेय समझ मायाजन्य वस्तुओं को परित्याग कर इसे अपनाने की चेष्टा आवश्यक है। अर्थात् राष्ट्रीय उत्थान के लिए वास्तविक स्वातन्त्र्य और राष्ट्र-धर्म दोनों साथ-साथ चलते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

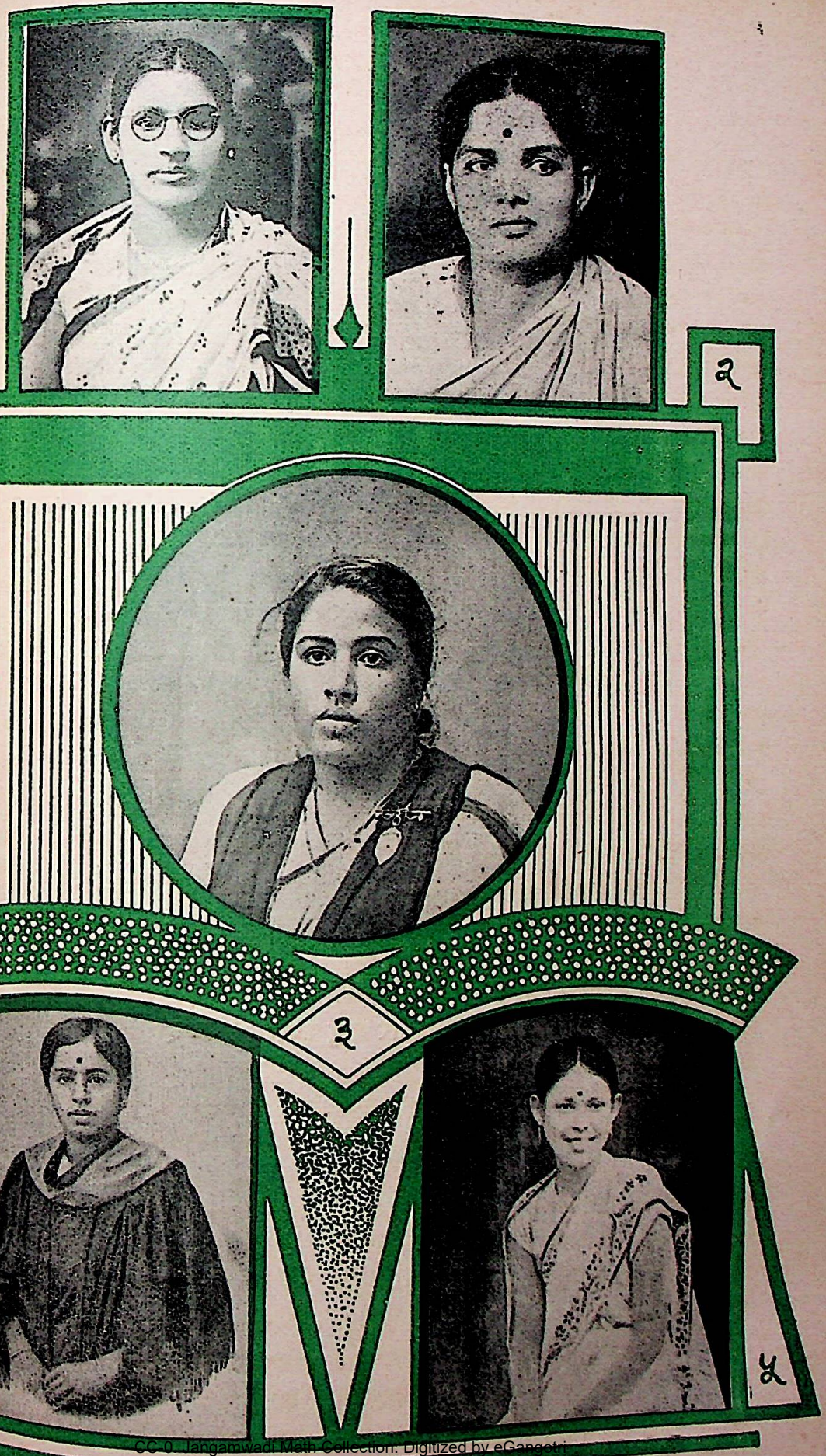

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) श्रीमती ई० एम० डेविड—आप नीलगिरि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की निर्विरोध सदस्या चुनी गई हैं।

(२) श्रीमती लक्ष्मी अम्मल, एम० एल० ए०—आप अन्नामलाई यूनिवर्सिटी के सीनेट की सदस्या चुनी गई हैं।

(३) श्रीमती अन्ना चण्डी—आप ट्रावनकोर की सीनियर डिस्ट्रिक्ट मुन्सिफ़ नियुक्त की गई हैं।

(४) मिस एम० एन० सीतम्मा बी० ए०—आपने इस वर्ष बी० ए० परीक्षा पास करके स्वर्णपदक और अन्नपूर्णम्मा पुरस्कार प्राप्त किया है।

(५) कु० अन्नपूर्णा मुकर्जी—आपने इस वर्ष हाईस्कूल और इण्टरमीजियट एक्ज़ामिनेशन बोर्ड से सङ्गीत का डिप्लोमा प्राप्त किया है। आप प्रयाग की निवासिनी हैं और आयु केवल १३ वर्ष है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसी महान वस्तु-स्थिति को प्राप्त करना प्रत्येक मानव-जीवन का लक्ष्य और धर्म होना चाहिए; लक्ष्य में वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय की गुंजाइश का अर्थ है लक्ष्य-भ्रष्ट होना। लक्ष्य यदि व्यापक और श्रेष्ठ है तो उसकी प्राप्ति में अनिवार्य अनौचित्य भावना में विकार का उद्रेक नहीं कर सकता। नारी का लक्ष्य नारी-जीवन को जीवन बनाये रखने में है, उसके लिए क्रिया का अनौचित्य भी किसी विकार को उत्पन्न नहीं कर सकेगा। सहयोगदान प्रकृति का नियम बन गया है। शारीरिक अवयवों में एक दूसरे की उन्नति से ही अपने अस्तित्व को टिकाऊ बना सकते हैं, किसी की उपेक्षा उसके लिए सम्भव नहीं है। समाज के लिए, जिसे अपने से ही केवल सम्बन्ध नहीं, रहा है, देश के उत्कर्ष के साथ संसार के लिए जिसका यत्न हो रहा है, उसके लिए यह सम्भव नहीं कि अपने अङ्ग विशेष की ही उपेक्षा कर जीवित रह सके। अर्थात् उसका यह कर्म है कि नारी का स्थान सङ्कुचित नहीं व्यापक रूप में ग्रहण करे। राष्ट्र का यह पुनीत कार्य है कि नारी को अपने अस्तित्व में ऐसा मिश्रण करे जिससे वह नई शक्ति में ढल जाय तथा अपने नाम की सार्थकता सिद्ध कर सके।

नारी-समस्याओं को हल करने के लिए शिक्षा की कितनी आवश्यकता होती है, यह सबको विदित ही है। शिक्षा का अर्थ किताबी कीड़ा नहीं, बल्कि मानवता की अभिवृद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति से है। गृह-सौंदर्य्य बनाये रखने के साथ-साथ राष्ट्र कार्य में हाथ बटाने की शिक्षा व्यावहारिक शिक्षा पर ही निर्भर है, अतः शिक्षा का रूप व्यावहारिक होना चाहिये। यहाँ पर हमें सहशिक्षा के बारे में यही ज्ञात करना है कि यह कोई बुरी नहीं है। लेकिन लोग इसे बुरी समझ रहे हैं। इसका कारण है तुल्य वातावरण का अभाव। जब तक सहशिक्षा में तुल्य वातावरण नहीं हो, तब तक इससे उन्नति नहीं हो सकती है और वैवाहिक कुप्रथाओं के लिए हिन्दू पत्नियों का सक्रिय आन्दोलन करना आवश्यक है। वे बाल-विवाह को रोकें और रोक कर इसके आवश्यक गुणों का प्रचार करें। इनका पत्नीत्व केवल पुरुष पर निर्भर नहीं है, वे स्वयं समाज-सञ्चालिका हैं। जब तक समाज ऐसी कुप्रथाओं को नहीं रोकेगा तब तक वह समाज नहीं कहला सकता। विधवा-विवाह, कन्या-विक्रय आदि बन्द हो जाना चाहिए। हमारी ग्रामीण नारियों में इसका प्रचार आवश्यक है। स्त्रीत्व गुणों में अपरिवर्तनीय गुण है प्रेमाकर्षण। यह गुण ईश्वर-प्रदत्त है। शारीरिक प्रेम कुत्सित अनाचार और वासना का दृढ़ प्रतीक है। शारीरिक प्रेम को तुच्छ समझ कर सर्वथा उपेक्षित कर वे ऐसे महान आदर्श की सृष्टि करें, जिसमें सदाचार, सौन्दर्य, मानवता की आभा प्रदीप्त और उद्भासित हो उठे। ऐसा होने से समाज में, देश में, राष्ट्र में शृंखलता, स्वतन्त्रता, आप से आप दास-वृत्ति धारण कर लेंगी, समस्याएँ स्वयं हल हो जायँगी।

समस्याओं को हल करने के लिए पुरुषों को त्याग, सहिष्णुता, प्रेम, सदाचार दृढ़-प्रतिज्ञ बनना चाहिए और यह बनना राष्ट्र या देश के प्रति कर्तव्य-पालन करने के सदृश है और यह नारियों के सदृश इनका पत्नीव्रत धर्म है। नारियों को चाहिए कि वे प्रतिक्रिया (विकृति) की भावना छोड़ कर अपने कर्त्तव्य-पथ का निर्माण करें, अपनी शक्तियों को उपयोग में लावें, पातिव्रत धर्म के साथ-साथ राष्ट्र-धर्म को निभाते चलें, तभी राष्ट्र, समाज और देश की उन्नति सम्भव है, अन्यथा कभी भी स्वातन्त्र्य-पथ का निर्माण नहीं हो सकता।

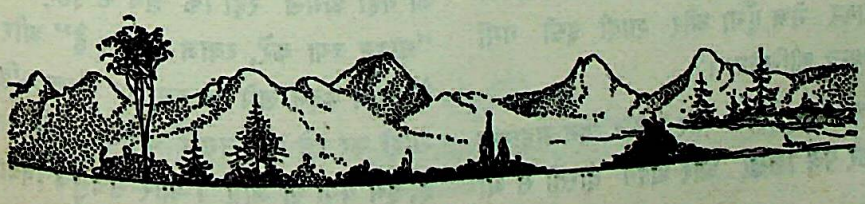

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

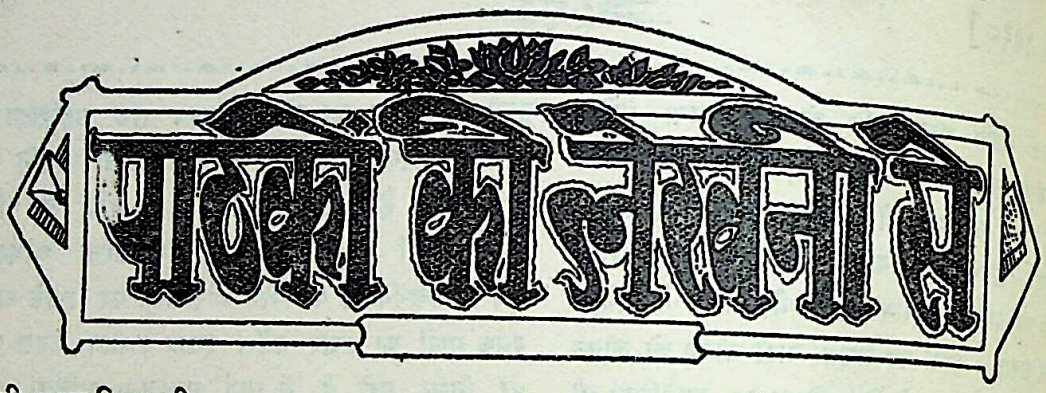

श्रीमती सम्पादिका जी,

कायस्थ जाति की क़रारदाद की रक्करजित प्रथा का ज़िक्र और उसके दुष्परिणाम आपने बहुत सुने होंगे। मैं आपका ध्यान एक ऐसी ही घटना की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। आशा है, आप इस पत्र को 'चाँद' में अवश्य प्रकाशित करके उपकार का कार्य करेंगी। आपका पत्र सदा से अन्याय और कुरीतियों का विरोधी रहा है अतः आपसे यह आशा करनी निर्मूल नहीं है कि आप स्वयं इस अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठायँगी।

यह घटना मेरी सखी से सम्बन्ध रखती है, जो एक एडवोकेट की कन्या हैं। इनका विवाह.....निवासी श्री.....के साथ पाँच वर्ष पूर्व सम्पन्न हुआ था। इस विवाह के पक्का होने में बड़ी कठिनाइयाँ पड़ीं। जब वर के पिता लड़की देखने आये थे तो बातचीत के दौरान में कहा था कि मैं दृढ़ आर्यसमाजी हूँ, अतः विवाह 'संस्कारविधि' के अनुसार वैदिक रीति से होगा। चूँकि कन्या के पिता स्वयं एक दृढ़ आर्यसमाजी हैं, अतः उन्होंने इस बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया। और आगत-स्वागत जितना वह कर सकते थे, किया। इन महाशय ने कन्या को पसन्द करके एक चैन अपनी ख़ुशी से भेंट की और बिदा हुए। वे शहर में ही अपने एक मित्र के घर पर ठहरे और दूसरे ही दिन फिर एडवोकेट साहब से आकर कहा कि "चैन मुझे वापस कर दीजिये, क्योंकि मैंने घर से चलते समय इसे जल्दी में तुलवाया नहीं था अतः मैं जल्द वहाँ जाकर इसका हिसाब ठीक कराकर भेज दूँगा और शादी इसी गर्मी में होगी—सब प्रबन्ध कीजियेगा।"

इन्होंने तुरन्त चैन वापस कर दी। इन महाशय ने अपने घर जाकर पत्र लिखा और अपने दोस्तों से भी कहलाया कि "चूँकि आपने मुझे नज़राना नहीं दिया और आप से शादी में भी अधिक ख़र्च करने की उम्मीद नहीं है, अतः यह विवाह न हो सकेगा।" उनसे बहुत लिखा गया कि चूँकि विवाह संस्कार-विधि और वैदिक रीति से हो रहा है, इसलिए नज़राना नहीं दिया गया, पर उन्होंने एक न सुनी। अन्त में एक भारी रक़म लेकर कन्या के पिता उनके यहाँ गये। इन महाशय ने ८०००) का तख़मीना बनाया और कहा कि यदि आप इतना दे सकें तो विवाह हो सकता है, अन्यथा नहीं। पर बीच में बहुत से आर्य-समाजी सज्जन पड़े और यह सौदा ४०००) पर तय हुआ। इस प्रकार यह विवाह पक्का हुआ।

अस्तु, किसी प्रकार विवाह हो गया। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि बीच-बीच में बहुत सी माँगें इनकी ओर से पेश की गईं और एडवोकेट साहब को पूर्ण करनी पड़ीं। इन महाशय ने १०००) का ज़ेवर भी माँगा जिसका सवाया एडवोकेट साहब ने उनको दे दिया और यह अधिकार दिया कि आप अपनी पसन्द का ज़ेवर बनवा लें। पर इन महाशय ने इस अधिकार का बेजा इस्तेमाल किया और १०००) की जगह और अधिक का ज़ेवर अपनी मर्ज़ी से जान-बूझ कर बनवा बैठे और अधिक रुपया जो ख़र्च हुआ उसकी माँग एडवोकेट साहब से की। विवाह हो गया था और मेरी सखी कुछ दिनों ससुराल रह कर चली आई थी। शादी भर इन महाशय का यही अमल रहा कि लेने के वक़्त तो कह देते थे कि "साहब क्या करें, रवाज ही यह है" और चढ़ावा वग़ैरह के समय कहने लगे कि हम तो संस्कार-विधि के अनुसार शादी कर रहे हैं, उसमें चढ़ावे वग़ैरह का ज़िक्र ही नहीं है, हम क्यों ले जाएँ। और सचमुच विवाह के अवसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर कुछ भी नहीं लाये । सम्पादिका जी, देखा आपने, अपने स्वार्थ के लिये लड़के वाले किस प्रकार होशियार हो जाते हैं। ऐसे स्वार्थियों को क्या कहा जावे। अस्तु ।

इसके बाद इन महाशय ने अपनी तबीयत का पूरा परिचय दिया अर्थात् एडवोकेट साहब को स्पष्ट लिखा कि "जेवर में जो अधिक रुपया खर्च हो गया है वह पहले भेजिये, तब रुखसत लड़की की कराई जायेगी।" मामला बहुत बढ़ा और कई सज्जनों ने इसे निबटाना चाहा, पर इन महाशय पर रुपयों का भूत इस प्रकार सवार था कि उन्होंने किसी की न सुनी । इस झगड़े का नतीजा यह हुआ कि मेरी सखी चिन्ता करके बीमार हो गई और टी० बी० के भयङ्कर रोग में ग्रसित हो गई । पर इन महाशय का लोभी हृदय न पसीजा । यह अपने पुत्र का दूसरा विवाह करने को तैयार हो गये । अन्त में एडवोकेट साहब रुपया देने को राजी हो गये । इन महाशय ने यह कह कर कि इस चीज में यह कमी है, उस चीज़ में यह कमी है, तुरन्त ५००) का बिल बनाकर भेज दिया और जब वह अदा कर दिया गया तब रुखसत मेरी सखी की हुई ।

इसके बाद पाँच वर्ष का समय व्यतीत हो गया, मेरी सखी आजकल फिर अपने पिता के घर गई हुई है। इन महाशय को उनके पुराने मिज़ाज ने फिर उभारा है और उन्होंने एक नया तरीक़ा रुपया ऐंठने का निकाला है। उन्होंने एडवोकेट साहब को लिखा है कि जो घड़ी और मेज़ आपने शादी के समय दी थी, सड़ी हुई निकली, अतः इनको बदलिये, अगर आप न बदलेंगे तो मैं अपने लड़के को लड़की लेने न भेजूँगा । छिः-छिः ! कितना निकृष्ट रूप है । सम्पादिका जी, इससे बढ़ कर और नीचता क्या हो सकती है । एडवोकेट साहब व मेरी सखी दोनों इस अपमान पूर्ण समझौते के लिये तैयार नहीं हैं । मेरी सखी पढ़ी-लिखी सुशील, और बहुत उच्च विचारों की है । वह इस समझौते से मरना लाख दर्जे अच्छा समझती है । आप कहेंगे कि लड़की के पति क्यों नहीं कुछ करते ! पर आजकल के नौजवानों को क्या कहा जावे । अन्तःकरण से वह और उनका सारा परिवार इन महाशय की इस बेजा हरकत पर शर्मिन्दा व विरुद्ध हैं, पर हृदय में इतना बल नहीं है कि कुछ कर दिखायें । दूसरे इन महाशय ने धमकी दी है कि यदि मेरे खिलाफ़ कुछ किया गया तो मैं आत्महत्या कर लूँगा । यह महाशय यह भी कहते हैं कि मैं ३-४ महीने बाद अपने पुत्र का दूसरा विवाह कर लूँगा । मैं नहीं समझती कि ऐसा कौन आँख का अन्धा होगा जो उनके पुत्र को अपनी कन्या देकर जन्म भर को दुख के जाल में फँसना पसन्द करेगा । अपनी सखी की चिन्ता का क्या हाल लिखूँ, अनुभव करने की बात है— इन महाशय ने अपने व्यवहार से आर्य-समाज को भी कलङ्कित कर दिया ।

कृपया आप बतलाइये इस मामले में क्या किया जावे । मेरी सखी को इस प्रकार अपमानित होकर जाना क़तई पसन्द नहीं है । वह और उसके पिता कहते हैं कि जिस प्रकार संसार में लड़कियों की रुखसत कराई जाती है, उस प्रकार करायें तो वह दोनों तैयार हैं, पर इन महाशय पर लोभ का जो भूत सवार है वह किसी प्रकार नहीं उतरता । आप ही बताइये, ऐसे व्यक्ति का क्या विश्वास । यदि यह माँग पूरी कर भी दी गई तो फिर कोई दूसरी माँग शुरू कर देंगे जिस प्रकार कि पाँच वर्ष बाद यह की है। समझ में नहीं आता कि क्या किया जावे !

—उक्त सखी की एक दुखी बहिन

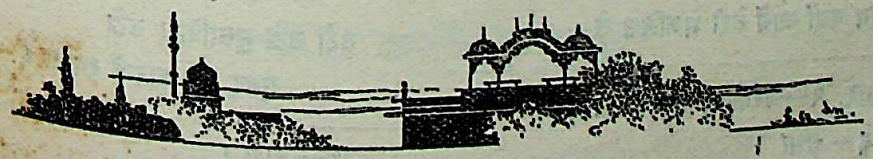

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

[संग्रहकर्ता – कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

हक़ीक़त में हो तुम दुनिया से अच्छे
हक़ीक़त में मगर दुनिया ही क्या है
हमारे दिल में है सारी ख़ुदाई[1]
ख़ुदा के घर में अब रक्खा ही क्या है
तुझे दुनिया में लूँ, उक़बा[2] में चाहूँ
बजुज़[3] इसके मेरा दावा ही क्या है
हमेशा देखती हैं दिल की आँखें
हमारा आपका परदा ही क्या है
अगर सुन लें वह हाले ज़ार ऐ 'दाग़'
तेरे कहने का फिर कहना ही क्या है

—'दाग़' देहलवी

* * *

था कभी दिल में हसरतों का हुजूम[4]
अब यहाँ दर्दो ग़म का डेरा है
दैरो[5] काबा में उसको ढूँढ़ चुके
सातवाँ आठवाँ यह फेरा है
दिल में रहता है दर्दो ग़म का हुजूम
एक को सैकड़ों ने घेरा है

* * *

कौन सी बज़्म[6] बढ़ के है इससे
हम कहाँ जायें तेरी मजलिस से
दुश्मनी उसने की हमारे साथ
दोस्ती की उमीद थी जिससे

—'नूह' नारवी

* * *

भुलाते हैं वह मुझको शाद[7] हूँ मैं
अजब सूरत से उनको याद हूँ मैं
वह मुझको क़ैद करके भूल जायें
न याद आकर कभी आज़ाद हूँ मैं
उमीद इसकी नहीं रक्खोगे खुश तुम
मुझे नाशाद रक्खो शाद हूँ मैं
निशाँ क्या पूछते हैं आप मेरा
बस एक आवारओ बरबाद हूँ मैं
मुझे दिल से भुलाते हैं वह क्या क्या
मगर कब भूलता हूँ याद हूँ मैं

—'कमाल' लखनवी

* * *

दाग़े हसरत से दिल हो मालामाल
यही दौलत यही ख़ज़ाना है
उठो उठो मुसाफ़िरो उठो
सुबह तक कारवाँ रवाना है

१—संसार, २—परलोक, ३—सिवाय, ४—भीड़, ५—मन्दिर, ६—सभा ।

७—ख़ुश ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्या कहें उड़ के जा नहीं सकते
वह चमन है, वह आशियाना[८] है

—'यास' लखनवी

* * *

दोस्त ही जब काम दुशमन का करे
फिर कोई दुशमन का क्या शिकवा करे
शौक़ उसके देखने का है अगर
पहले इनसाँ अपना नज़्ज़ारा[९] करे
लाख ईज़ाएँ[१०] कोइ दे ख़ुश रहे
हौसले को आदमी दरिया करे
पूछते हैं ख़्वाहिशे दिल आप क्या
यह तमन्ना है तुम्हें देखा करे
तुझको देखेगा वह ऐ परदा नशीं
जो कि इस दुनिया से ख़ुद परदा करे
क़तरा-क़तरा ही रहा तो लुत्फ़ क्या
आदमी इस क़तरे को दरिया करे

—'अकबर' दानापुरी

* * *

है ज़माना भी क्या तेरा बेताब
रात-दिन करवटें बदलता है
शमआ[११] कहती है यह पतिंगों से
कहो पहले से कौन जलता है

* * *

दिन मेरा रोता है मेरी रात को
रात रोती है मेरी दिन के लिए
सारी दुनिया के हैं वह मेरे सिवा
मैंने दुनिया छोड़ दी जिनके लिए
वाए क़िस्मत वह भी कहते हैं बुरा
हम बुरे सबसे हुए जिनके लिए
लाश पर इबरत[१२] यह कहती है 'अमीर'
आये थे दुनिया में इस दिन के लिए

—'अमीर' लखनवी

* * *

आह मेरी रसा नहीं होती
क्यों मुवाफ़िक़ हवा नहीं होती
हक़[१३] के जलवे नज़र नहीं आते
जब नज़र पारसा[१४] नहीं होती
जब्र की इन्तिहा तो होती है
सब्र की इन्तिहा नहीं होती
बन्दगी का ख़याल है नाहक़
बन्दगी जब अदा नहीं होती
पहले होती थी हर किसी से वफ़ा
अब किसी से वफ़ा नहीं होती
मैं तो दुनिया से हो भी जाऊँ जुदा
मुझसे दुनिया जुदा नहीं होती
कौन उसको नज़र से पहिचाने
अक़्ल जब रहनुमा[१५] नहीं होती
क्या कहें दिल की बात ए 'बिस्मिल'
शायरी में अदा नहीं होती

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

* * *

८—घोंसला, ९—देखना, १०—दुख, ११—दीपक, १२—नसीहत, १३—ईश्वर, १४—पाक, १५—रास्ता दिखाने वाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारत की नाविक-शक्ति

[श्री० नरसिंहराम शुक्ल]

एशिया के प्राचीन देशों में भारत प्राचीनतम देश माना जाता है। इसके गत तीन-चार सहस्र वर्ष के इतिहास को देखने से पता चलता है कि वह केवल स्वतन्त्र ही नहीं था, अपितु भू-मण्डल के कतिपय देशों में उसका आधिपत्य भी स्थापित था। आधिपत्य की बात में किसी को कुछ सन्देह भी हो सकता है परन्तु इतना तो अब सर्वमान्य बात हो चली है कि इस देश के निवासी प्राचीन काल में, संसार के सभी देशों में पहुँचे थे। कुछ व्यापार करने, कुछ धर्म-प्रचार करने, कुछेक ज्ञान और विद्या-प्रचार करने एवम् कुछेक विजयार्थ अन्य देशों की यात्रा किया करते थे। पूर्वीय द्वीप समूह, रोम, बैबीलोनिया, यूनान, मेक्सिको आदि देशों में भारतवासियों के पहुँचने के यथेष्ट प्रमाण मिल चुके हैं।

इनमें से अधिकांश यात्राएँ समुद्र मार्ग से ही होती थीं। उस समय भी लोग नाविक शक्ति के महत्व के क़ायल थे। कृष्ण ने मथुरा छोड़कर समुद्र के किनारे द्वारिका को क्यों राजधानी बनाया। द्वारिका में कौन सी बड़ी खूबी थी? जलवायु, प्राकृतिक सौन्दर्य, उपज आदि किसी भी बात में द्वारिका की श्रेष्ठता सिद्ध नहीं होती। ध्यान देने से यह प्रतीत होता है कि मथुरा से सब से निकट का समुद्री किनारा द्वारिका ही पड़ता है। उस समय भी पश्चिमीय राष्ट्र बल-शाली थे और आक्रमण-शील हुआ करते थे। उन्हीं आक्रमण-शील राष्ट्रों से रक्षा के लिए कृष्ण ने द्वारिका में अपना अड्डा बनाया और समूचे यदुवंशियों की फ़ौज का कैण्टोनमेण्ट द्वारिका में लाकर स्थापित किया।

इस घटना से भी महत्वपूर्ण घटना देवासुर-संग्राम की है। समुद्र से चौदह रत्न निकालने की दन्त-कथा केवल कपोल-कल्पित नहीं है। देवासुर-संग्राम, समुद्र पर अपना आधिपत्य एवम् प्रभुता क़ायम रखने के लिए भारतीयों एवम् असुरों में हुआ था। सामुद्रिक व्यापार उन दिनों भारतीयों के ही हाथ में था। इस देश के लोग सुदूर देशों में व्यापार करने जाते थे। मैसूर प्रान्त में खुदाई के समय प्राचीनतम् रोम साम्राज्य के सिक्के पाये गये हैं।

हमारे संस्कृत एवम् पाली साहित्य में इस सम्बन्ध में पर्याप्त उल्लेख पाये जाते हैं। अर्जुन का उलूपी से जो विवाह हुआ था, उसमें उन्हें समुद्र-मार्ग से ही यात्रा करनी पड़ी थी। कहा जाता है कि उलूपी अमेरिका के मेक्सिको प्रान्त की रहने वाली थी। मेक्सिको में भी सूर्य की मूर्तियाँ पाई गई हैं। प्रलय के समय मनु ने नाव पर ही बैठ कर उत्तर की ओर यात्रा कर अपनी रक्षा की थी।

सुप्रसिद्ध साँची स्तूप पर, जो ईसा से शताब्दियों पूर्व का बताया जाता है, जहाज़ों की चित्रकारी हुई है। मुसलमानी शासन-काल में भी भारत की अपनी एक नौ-सेना थी। शिवाजी भी नौ-सेना रखे हुए थे।

अङ्गरेज़ों के आगमन से इस देश के इतिहास का नया अध्याय आरम्भ होता है। अङ्गरेज़ों के पहिले जितने भी आक्रमणकारी आये, वे सब के सब अधिकांश थल मार्ग से ही आये थे, परन्तु अङ्गरेज़ जल-मार्ग से आये। अङ्गरेज़ों की नाविक शक्ति संसार में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। वे पक्के मामी माने जाते हैं। नाविक-शक्ति, थल-शक्ति से कहीं अधिक महत्व-पूर्ण है। नाविक-शक्ति के ही बल पर भारतवर्ष, किसी समय सारे विश्व में तपा हुआ था—सच पूछा जाय तो उसके पराजय का कारण, गुलामी का कारण, मुसलिम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

न्यू क्युटेक्स स्मोकी शेड

आपकी उँगलियों के सिरों को परम सुन्दर बना देगी

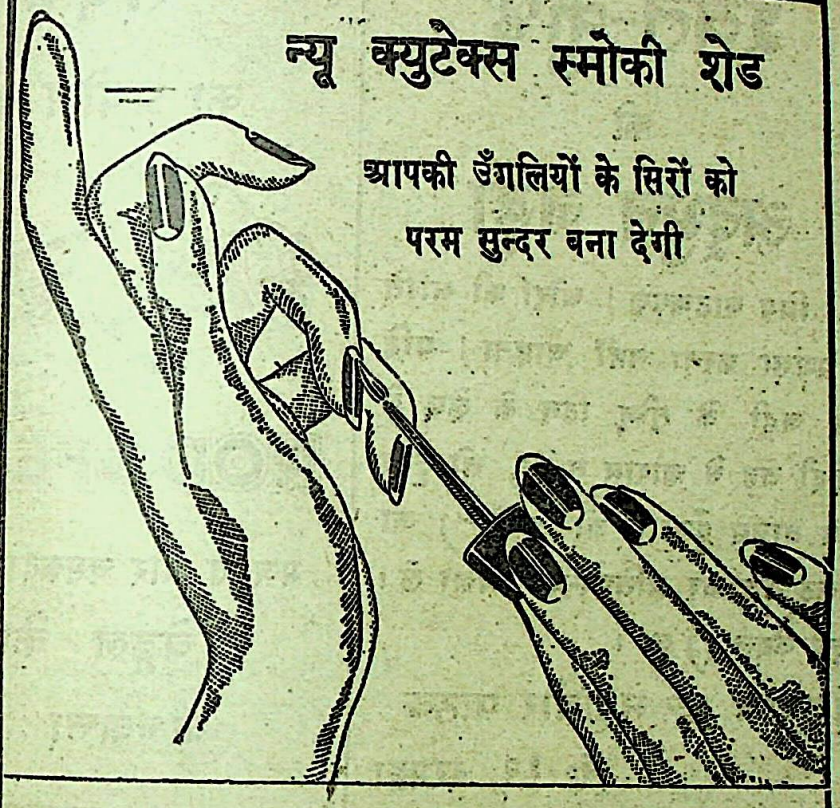

क्युटेक्स ने फिर सबसे पहले लिक्विड पॉलिश की ऐसी शेडें उपस्थित की हैं जिसे प्रत्येक पसन्द करता है। नई 'स्मोकी' शेडें बहुत ही कोमल, आनन्ददायक और आकर्षक हैं। वे भद्देपन से दूर रहकर आपकी उँगलियों के सिरों को सौन्दर्य प्रदान करेंगे। इन्हें अपनी विशेष दुकानों पर देखिये। नई क्युटेक्स की पॉलिश शीशी में गाढ़ी नहीं हो सकती और आख़ीर बूँद तक काम में लाई जा सकती है। ओल्डरोज़, मॉव, रस्ट, रोबिन रेड।

CUTEX

Send 2 annas in stamps for Cutex trial kit containing all the materials necessary for a complete manicure.

MULLER & PHIPPS (INDIA) Ltd.
Dept. 8 c-1 P. O. Box 773, Bombay

Name_____

Address_____

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्वेत-कुष्ठ

की

अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण ! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इस जड़ी के तीन दिन के लेप से सुफ़ेदी जड़ से आराम न हो, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें -) का टिकट भेज कर प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लें। मूल्य केवल ३) रु०।

वैद्यराज पं० महाबीर पाठक

नं० १२, दरभङ्गा

रोडैफीन

का प्रयोग कीजिये

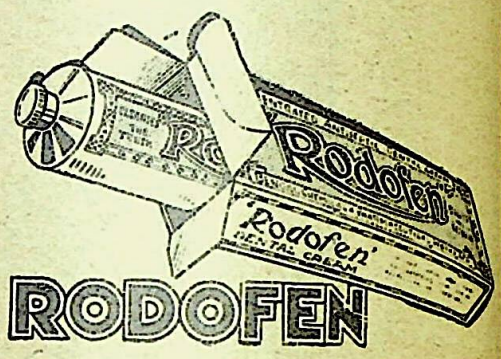

मज़बूत और चमकदार दाँतों के वास्ते

बेङ्गल कैमिकल

कलकत्ता :: बम्बई

शास्त्रीय हिन्दी हार्मोनियम गाईड

बाजे की पेटी बजाने को सिखलाने वाली पुस्तक ४० रागों के आरोह-अवरोह, लक्षण, स्वरूप, विस्तार, १०४ प्रसिद्ध गायनों का स्वर-तालयुक्त नोटेशन, सुरावर्त, तिल्लाने इत्यादि पूरी जानकारी सहित। द्वितीय आवृत्ति। पृष्ठ-संख्या २००, क़ीमत १॥) रुपया। डाक-खर्च ।≡); विषयों का और गायनों का सूची-पत्र मुफ़्त मँगाइए।

गोपाल सखाराम एण्ड कं०

कालबादेवी रोड बम्बई

आपका स्वस्थ लाल

आपकी दौलत है

सो उनको

डेंगरे का बालामृत

पिलाना चाहिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सबसे बड़ी बीमा कम्पनी

आग, जहाज, मोटर, दुर्घटना

जीवन

एवं दूसरे सब प्रकार के बीमे

के लिये

न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी लि०

९ क्लाइव स्ट्रीट

कलकत्ता

मूलधन	...	...	रु० ६००००००
वितरित मूलधन	...	...	रु० ३५६०५२७५
प्राप्त धन	...	...	रु० ७१२१०५५
कुल कोष	....	...	रु० १९४८४७७४

हेड ऑफ़िस बम्बई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकम्बर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम ज़िला सीतापूर
मुक़दमा नम्बर २५५ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी २ मार्च सन् १९३८ ई०

राजा बख़्शसिंह वल्द द्वारकासिंह साकिन बीहट बीरम परगना मछरेहटा, तहसील मिसरिख ज़िला सीतापूर (सायल)

बनाम

१—हरहरबख़्शसिंह वल्द जीतसिंह ठाकुर साकिन पुरवा चतरेहटा, २—शिवराम वल्द लालता ब्राह्मण साकिन बिक्रमपूर, ३—नरहरदत्त व ४—झनकारदत्त पिसरान अर्जुनसिंह साकिन सन्दला सिठौर, ५—अस्थानेश्वर व ६—रुद्रप्रताप पिसरान बद्रीसिंह, ७—गुनुवासिंह नाबालिग़ व विलायत मु० फूलकुँवरि, ८—जवाहिरसिंह वल्द लाला बख़्शसिंह साकिनान बीहट बीरम परगना मछरेहटा तहसील, मिसरिख ज़िला सीतापूर।

हरगाह कि जायदाद मुशर्रह ज़ैल दरख़्वास्त कुनिंदा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराहत क़र्ज़ में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुशर्रह ज़ैल हासिल हो अन्दर मीयाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाज़ा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

नम्बर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौवैयत की हकीयत	मालगुज़ारी	लोकल रेट
१	वारेपारा		२ बि० खा० नं० १	रहन दख़ली हरहरबख़्श व शिवराम		
२	वारेपारा		½ बि० खा० नं० १४			
३	दुभरा		१ बि० मिनजुमला २० बि० खा० नं० १	रहन दख़ली नरहरदत्त व झनकार दत्त		
४	बीहट बीरम		१ बि० खा० नं० ११			

भैंस १ रास, बरतन १ मन, साइकिल १, पलङ्ग २, चारपाई २

नोट—१ बीहट बीरम खाता खेवट नं० ११ में १ बि० बक़ब्ज़े सायल है।
२ दुभरा में १ बि० मिनजुमला ४ बि० बक़ब्ज़े सायल है।

दस्तख़त हाकिम
मुन्सरिम
अदालत मुन्सफ़ी सीतापूर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकम्बर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

ब अदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला सीतापूर

मुक़द्दमा नम्बर २६२ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी ४—२ सन् १९३८ ई०

१—दौलतसिंह व २—शिवदरशनसिंह पिसरान तिलोकसिंह ३—मु० महरानी कुँवर बेवा तिलोकसिंह कौम ठाकुर साकिन व जिमीदार मौजा बरगाँवा परगना चँडरा जिला सीतापूर .....सायलान

बनाम

१—डिल्लीपतिसिंह वल्द कुँवर रघुबरसिंह काम ठाकुर साकिन बरगाँवा परगना चँडरा, २—मु० बिटोली बेवा शिवनरायनलाल कौम ब्राह्मण साकिन महसुन्यागञ्ज परगना महोली, ३—जुगुलकिशोर वल्द टीकाराम कौम ब्राह्मण साकिन साँडा परगना बिसवा, ४—गुबरधनलाल वल्द रामदीन कौम बनिया व ५—कुँवर जगतसिंह वल्द कुँवर रूपसिंह कौम ठाकुर साकिनान बरगाँवा परगना चँडरा, जिला सीतापूर।

हरगाह कि जायदाद मुशर्रह जैल दरख्वास्त कुनिंदा व क़र्ज़ख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत क़र्ज़ा में हस्बदफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुशर्रह जैल हासिल हो अन्दर मीयाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाजा में पेश करे।

तफ़सील जायदाद

नम्बर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौवय्यत की हक़ीयत	मालगुज़ारी	लोकल रेट
१	देवकली पर० चँडरा ज़ि० सीतापुर		साइल नं० १ १/४ ,, ४/४ साइल नं० २,३ मि० ।)	ज़मीदारी	७०)	
२	मदनया पर० मिसरिख		१/४ ,, ४/४ ,,	,,	४०)	४)
३	चँडरा पर० मिसरिख		१/४ ,, ४/४ ,,	,,	२२।) ११पाई	२=) ८
४	पकरया पर० चँडरा	त्रिलोकसिंह	१/४ ,, ४/४ ,,	,,	१४५॥)	१४)
५	बरगाँवा पर० चँडरा		१/४ साइल नं० २	,,	८॥)।	॥=) ७ पाई

एक किता मकान खाम मसकूना दौलतसिंह
एक किता मकान खाम मसकूना शिवदरशनसिंह } वाक़ै बरगाँवा परगना चँडरा, जिला सीतापूर
भैंस १ रास

तफ़सील जायदाद मुन्दरजे बयान तहरीरी महाजनान कुछ नहीं।

दस्तख़त हाकिम
मुन्सरिम
अदालत मुन्सफ़ी सीतापुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digi

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकम्बड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०
बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम जिला सीतापूर
मुक़दमा नम्बर ३०१ सन् १९३६ ई०
तारीख़ पेशी ९-२-३८ ई०

१—रंजीतसिंह वल्द रघुनन्दनसिंह, २—दरबारीसिंह व ३—अर्जुनसिंह पिसरान रंजीतसिंह, ४—महराजसिंह, ५—गुरबख्शसिंह, ६—छोटेसिंह नाबालिग बविलायत महराजसिंह बादर हकीकी पिसरान गयाबख्शसिंह कौम ठाकुर साकिनान मौजा नवा गाँव परगना मनवा, डाकखाना गङ्गागञ्ज जिला सीतापूर.....सायलान

बनाम

१—बासदेव वल्द भवानीदीन कौम कलवार साकिन नवागाँव, परगना मनवा जिला सीतापूर, २—मु० बिट्टन जौजे बद्रीप्रसाद कौम कलवार साकिन अरजुनपूर परगना महोना तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ, ३—मनसादीन व ४—अजोध्या व ५—परागदत्त व ६—मुन्नूलाल पिसरान चक्कर कौम ब्राह्मण साकिन हाजीपूर मशमूले नवागाँव परगना मनवा जिला सीतापूर, ७—चन्द्रिकाप्रसाद व लल्लाप्रसाद नाबालिग ८ बविलायत मु० सुखरानी मादर खुद पिसरान बासदेव कौम ब्राह्मण, ९—मु० सुखरानी बेवा बासदेव, १०—देवीप्रसाद व ११—गयाप्रसाद पिसरान रामरतन कौम ब्राह्मण, १२—केदारनाथ व १३—गौरीशङ्कर पिसरान हजारी कौम ब्राह्मण, १४—बेनू व १५—रघुबर व १६—मुन्नू—पिसरान बराती कौम अहीर साकिनान मौजा खानीपूर मशमूले नवा गाँव परगना मनवा जिला सीतापूर डाकखाना गङ्गागञ्ज, १७—सत्यपालसिंह नाबालिग बविलायत दरशनसिंह चचा हकीकी व १८—दरशनसिंह वल्द शीतलसिंह कौम ठाकुर साकिन नवा गाँव परगना मनवा तहसील सिधौली जिला सीतापूर, १९—चन्दीप्रसाद वल्द बदलेराम कौम ब्राह्मण साकिन सुर्जपुर उर्फ सआदत नगर परगना महोना डाकखाना इटौजा तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ, २०—राजेन्द्रसिंह २१—भूपेन्द्रसिंह व २२—सुखदेवसिंह व २३—दिर्गजसिंह व २४—नरेशसिंह व २५—सुरेशसिंह नाबालिगान बविलायत राजेन्द्रसिंह बादर हकीकी पिसरान रायबहादुर रघुनाथसिंह साकिनान बाराबङ्की, डाकखाना व जिला बाराबङ्की, २६—वीरभद्रसिंह वल्द सर्वजीतसिंह कौम ठाकुर साकिन नवा गाँव, २७—जगन्नाथ वल्द कामता कौम ब्राह्मण साकिन खानीपूर मशमूले नवा गाँव परगना मनवा तहसील सिंधौली जिला सीतापूर, २८—बद्रीप्रसाद वल्द गुलाब कौम कलवार साकिन अरजुनपूर, परगना महोना तहसील मलिहाबाद जिला लखनऊ

हरगाह कि जायदाद मुशर्रह जैल दरख्वास्त कुनिंदा व क़र्ज़ख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत क़र्जा में हस्बदफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में जाहिर की है लिहाजा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुशर्रह जैल हासिल हो अन्दर मीयाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिफ़िकेशन गजट के अदालत हाजा में पेश करे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फेहरिस्त (ब)

तफ़सील जायदाद

नम्बर शुमार	मौजा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौवय्यत हकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
१—	नवा गाँव प० मनवा तहसील सिधौली, जि० सीतापूर		=) ८ पाई मि० १)	हकआला	२०६)	१०।=)

फेहरिस्त (स)

२—रहननामा दखली नविशते श्रीपालसिंह व मु० मानकुँवर बहक रंजीतसिंह तादादी ६६६॥=) ८ पाई मोर्खे ३० जून सन् २० ई०

३—पुरनोट नविशते गङ्गाबख्शसिंह बहक रंजीतसिंह वगैरह तादादी १५०) मोर्खे २१-५-३५

४—दस्तगर्दी याफ्तनी रजीतसिंह अज गङ्गाबख्शसिंह तादादी १००)

५—डिगरी दीवानी बमुकदमे रंजीतसिंह बनाम वीरभद्रसिंह वगैरा इजलासी मुन्सिफ बिसवा नं० १३८ सन् ३५ मोर्खे ९-१२-३५ तादादी ४४४)

६—डिगरी खफीफा बमुकदमे रंजीतसिंह बनाम मल्लर इजलासी मुन्सफी बिसवा नं० १३५३ सन् ३६ फैसला २ सितम्बर ३६ ई० तादादी २६)

७—हकीयत मुतफरिका खाता खेवट नं० १८ तादादी १ एकड़ ६१ डिसमल वाकै मौजा नवा गाँव परगना मनवा, जिला सीतापूर

८—मकान मसकूना वाकै मौजा नवा गाँव परगना मनवा जिला सीतापूर। यह मकान मय सामान वगरज बूदोबास व इस्तेमाल सायलान महफूज रक्खा जावे।

९—हकीयत जमीदारी तादादी २९ एकड़ ९४ डिसमल बहिस्सा मसावी रंजीतसिंह का कुल हि० मुस्तसना है और गङ्गाबख्शसिंह का ½ मुस्तसना है।

१०—गाड़ी एक मञ्जिल, गाय एक रास, बछिया एक रास

११—दो किता बागान वाकै नवा गाँव परगना मनवा जिला सीतापूर मय आराजी

दस्तखत हाकिम
मुन्सरिम
अदालत मुन्सफी सीतापूर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

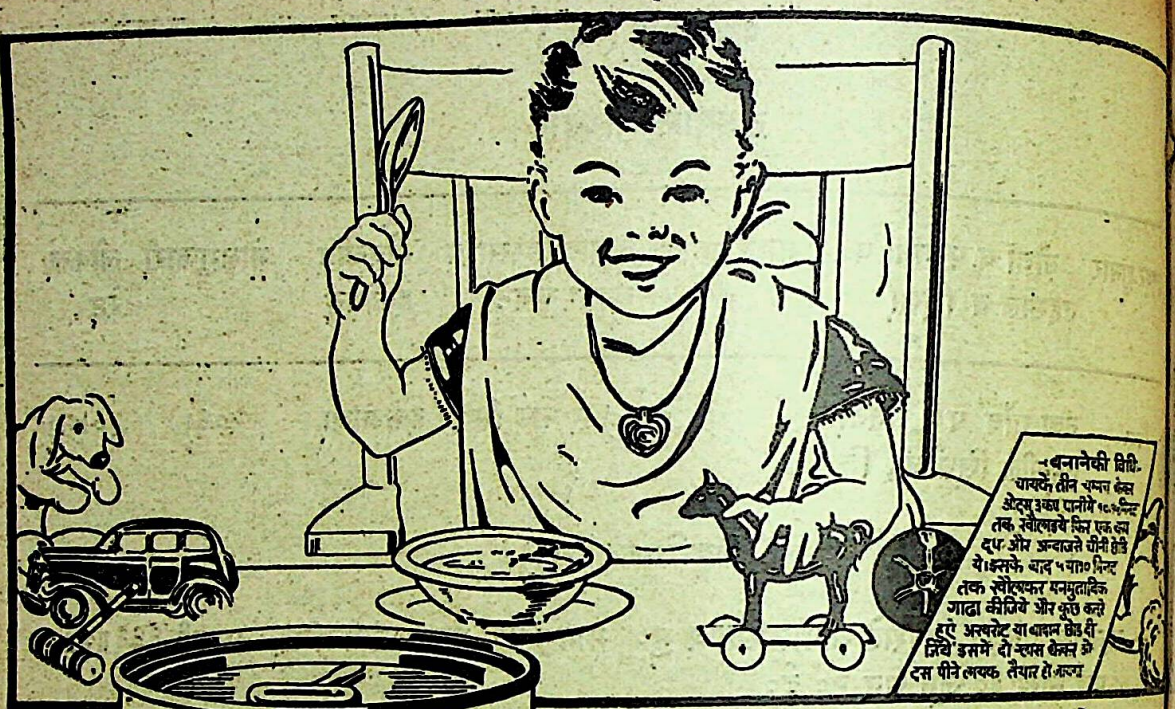

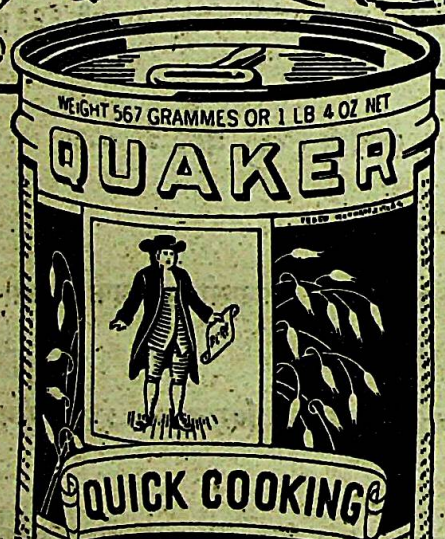

आपके शिशुओंके लिये उपयुक्तभोजन

दुनियामें प्रतिदिन लाखों बच्चे केकर ओटस खाते और लाखों माताएं जानती हैं कि केकर ओट्ससे बच्चोंका स्वास्थ्य कैसा सुन्दर बन जाता है।

क्या आप अपने बच्चेको स्वस्थ और सुदृढ बनाना नहीं चाहते? फिर क्यों न उसे केकर ओटस खिलायें? इधर उधरकी चीजोंपर प्रयोग न कीजिये। शक्ति और स्वास्थ्यके लिये संसारमें जो सर्वोत्तम प्रमाणित हो चुका है वही खिलाइये।

केकर ओटस कनाडाके पूरे पके हुए ओटोंसे तैयार किया जाता है और तैयार करते समय हाथसे एकदम छुआ नहीं जाता। इसमें सभी प्राकृतिक गुण वर्तमान रहते हैं जो हड्डियों और रगोंको पुष्ट बनाता तथा शरीरमें ताकत लाता है। इससे दांत और नाखून सुन्दर हो जाते और रक्त वृद्धि होकर क़ब्जियत दूर होती है।

बच्चे केकर ओटस बड़ी खुशीसे खाते हैं। विश्वास होकर आप उन्हें यह रोज ही खिलाइये। कोई ऐसी चीज इसमें नहीं मिलायी जाती जिससे इसकी शुद्धता या गुण कमी हो जाय। केकर ओट्स बहुत जल्दी पच भी जाता है।

आज ही एक डिब्बा केकर ओट्स खरीदिये।

केकर ओट्स

मुफ्त—मंगाइये 'खेल और भारतीय युवक' नामक पुस्तक जिसमें खिलाडियोंकी तस्वीरें और उनके कैफियतोंके सिवा और भी बहुत दिलचस्प बातें हैं। पता पो० ब० नम्बर ७७३ बम्बई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आक्रमण, जलवायु की विचित्रता, अथवा आपसी कलह आदि नहीं है। सूक्ष्म रूप से विचार करने से यही भान होता है कि यदि देश की नाविक-शक्ति क्षीण न हुई होती तो यह देश आज तक पराधीन ही न बना रहता।

अस्तु, आज के भारत की नाविक-शक्ति, नौ-सेना का इतिहास उसका अपना इतिहास नहीं है, वरन् अङ्गरेज जाति और ब्रिटानिया द्वीप का है, जिसका आरम्भ सोलहवीं शताब्दी के तृतीय चरण से हुआ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना से भारत की नाविक-शक्ति का अङ्गरेज-अध्याय आरम्भ होता है। पहिले-पहल अङ्गरेजों ने सूरत और बम्बई पर आधिपत्य जमा कर जहाजी अड्डा क़ायम किया। कभी, सूरत बम्बई से भी बड़ा बन्दरगाह समझा जाता था।

कोलम्बस भारत का पता लगाने चला था, वह अमेरिका पहुँच गया। वास्कोडिगामा सीधे १४९८ में कलीकट आ पहुँचे। अलबुकर्क ने सन् १५१० में पुर्तगीज राज्य स्थापित किया। पुर्तगीजों के नब्बे वर्ष बाद एडवर्ड बोनावेञ्चर नाम का अङ्गरेजी जहाज बङ्गाल की खाड़ी में पहिली बार पहुँचा। सन् १५९९ में डच व्यापारियों ने गरम मसाले की क़ीमत बढ़ा दी, फल-स्वरूप ब्रिटेन में "गवर्नर्स एण्ड कम्पनी आफ दी मर्चेन्ट्स ट्रेडिङ्ग अन्टू दी इस्ट ईन्डीज़" की स्थापना हुई, और कप्तान हाकिन की अध्यक्षता में 'हेक्टर' नाम का जहाज सूरत के बन्दरगाह में लगा। हाकिन को ज़मीन पर उतार कर 'हेक्टर' वापस चला गया। 'हाकिन' ही सबसे प्रथम अङ्गरेज़ थे जो सम्राट् जहाँगीर के पास गये और सूरत में व्यापार करने की उनसे आज्ञा ली।

हेक्टर के बाद ड्रेगन और ओसियेण्डर नाम के दो और अङ्गरेजी जहाज सन् १६१२ में आये। उनका आना सुनकर पुर्तगीज़ बहुत घबड़ाये और उन्होंने चार जहाज भेजकर अङ्गरेजी जहाज़ों पर धावा बोल दिया। अक्टूबर के महीने की २९ तारीख को दोनों में पहिला जहाजी युद्ध हुआ। तीन दिन के घमासान युद्ध के अनन्तर अङ्गरेजों की जीत रही। इस जीत के कारण अङ्गरेजों की धाक जम गई और मुग़लों की ओर से उन्हें सूरत में कारख़ाना आदि बनाने की भी अनुमति मिल गई।

यद्यपि सन् १६६० तक अङ्गरेजों ने नियमित रूप से अपनी थल-सेना भारत में नहीं रखी थी, तथापि सन् १६१२ की जहाजी लड़ाई के उपरान्त ही उन्हें छोटी-मोटी नौ-सेना रखनी पड़ी थी। इस नौ-सेना का नाम 'बम्बे-मेरिन' रखा गया। उस समय के जहाज़ अधिक से अधिक दो मस्तूल के होते थे। उनकी तौल भी डेढ़ सौ टन से लेकर तीन सौ टन के भीतर होती थी। उन पर दो डेकें होती थीं। प्रमुख डेक पर तोपें चढ़ा दी जाती थीं। उन जहाज़ों का नाम 'गार्ब' था जो अरबी भाषा के 'ग़ोराब' शब्द से निकला है। सन् १६१४ में विलायत से चार जहाज़ और आये। उस समय भी पुर्तगीजों ने आक्रमण किया, परन्तु तीन-चार दिन की मोरचाबन्दी के उपरान्त उन्हें भागना पड़ा। सन् १६८७ में बम्बई का द्वीप प्रेसीडेन्सी क़रार दिया गया तब से 'बम्बे मेरिन' का महत्व और भी बढ़ गया। सन् १७४२ तक बम्बे मेरिन में जहाज़ों की संख्या बढ़ कर ९ और उन पर सजी हुई तोपों की संख्या ढाई सौ तक पहुँच गई। बड़े जहाज़ों के अतिरिक्त बीस छोटे जहाज़ भी इकट्ठा कर लिये गये। इन जहाज़ों पर १०० अफ़सर और २००० सिपाही तैनात थे। परन्तु थोड़े ही दिनों में बम्बे मेरिन की शक्ति क्षीण कर दी गई, कारण कम्पनी उनका व्यय-भार वहन करने में असमर्थ सी हो चली।

'बम्बे मेरिन' की क्षीण दशा देख कर समुद्री-डाकुओं ने आक्रमण किया और केवल चौबीस घण्टे के युद्ध के अनन्तर आधे दर्जन अङ्गरेज़ी जहाज़ छिन-भिन्न होकर डाकुओं के हाथ लग गये।

सन् १७७४ में फ़्रान्स और अङ्गरेज़ों के मध्य लड़ाई छिड़ गई। भारत-स्थित फ़्रान्सीसियों की सहायता के लिए फ़्रान्स से जहाज़ चल पड़े। इसकी ख़बर पाकर ब्रिटेन ने भी हिन्द-महासागर में अपने जहाज़ भेजे। यह पहिला अवसर था जब कि हिन्द-महासागर में यूरोप के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रों के लड़ाकू जहाज़ों ने प्रवेश किया। यहीं से केवल भारतीय समुद्री किनारे का ही नहीं अपितु समूचे हिन्द-महासागर के इतिहास का दूसरा अध्याय आरम्भ होता है।

ब्रिटेन की सुशिक्षित जहाजी सेना ने आकर बम्बे मेरिन का पुनर्संगठन किया और दोनों ने मिलकर फ्रान्सीसी लड़ाकू जहाज़ों का मुक़ाबिला किया।

सन् १७६१ ई० में 'बम्बे मेरिन' को ब्रिटेन की सरकार ने अपनी खास वरदी पहिनने की आज्ञा प्रदान की। अफ़सर नीले और पीले रङ्ग का मिला हुआ फ्राक कोट व वेस्टकोट पहनते थे। बड़े-बड़े अफ़सर सोने के तार के फीते भी लगाते थे।

'बम्बे मेरिन' केवल अरब सागर के भारतीय तट में ही नहीं वरन् ईरानी तट पर भी देख-रेख रखता था। सन् १७७५ में बसरा का घेरा आरम्भ हुआ, जहाँ अङ्गरेज़ों की एक फ़ैक्टरी थी। घेरा डालने वाले ईरानी थे, और वह स्थान तुर्कों के अधिकार में था। फ़ैक्टरी के तीन आदमियों पर आक्रमणकारियों ने छापा मारा और उन्हें जान से मार डाला। फलस्वरूप लड़ाई आरम्भ हो गई। ईरानी जहाज़ों की संख्या पर्याप्त थी। इधर अङ्गरेज़ और तुर्क मिल गये। लगभग एक सप्ताह तक जल-युद्ध होता रहा। सातवें दिन ईरानी जहाज़ मोरचा छोड़ कर हट गये। तब से वहाँ भी इनका प्रभुत्व जमना आरम्भ हो गया।

सन् १७९९ ई० में बम्बई के गवर्नर ने फ्रान्सीसी नगर माही पर आक्रमण किया। बम्बई मेरिन का काम केवल जहाज़ी लड़ाई लड़ना ही नहीं था, वह व्यापार में सहायता करता था, परन्तु प्रमुख काम किनारों और द्वीपों का पता लगाना था। सन् १७७२ ई० में मेकरान, सिन्ध, करांची, काठियावाड़ आदि के समुद्री किनारों का पता लगाया गया। सन् १७७४ में अण्डमन द्वीप का पता लगाया गया। अण्डमन द्वीप को जहाज़ लेकर जाने वाले कप्तान का नाम लेफ्टेनेण्ट आरकीबाल्ड ब्लेयर था। उन्हीं के नाम पर अण्डमन के प्रमुख बन्दर का नाम पड़ा, जो आज दिन भी पोर्ट ब्लेयर के नाम से प्रसिद्ध है।

बम्बे-मेरिन की शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही और वह अफ्रीकन समुद्री तट तक का धावा मारता रहा। सन् १८०१-१८०२ में सर राल्फ अबर क्रोम्बी और लार्ड कीथ की देख-रेख में मिस्र देश के तट पर होने वाले समुद्री युद्ध में इसने भाग लिया।

सन् १८१२ में जावा की विजय में बम्बे-मेरिन ने प्रमुख भाग लिया। सन् १८२० में बम्बे-मेरिन की वरदी में फिर परिवर्तन किया गया। सन् १८४०-४२ में चीन से लड़ाई हुई। उस समय हिन्दुस्तानी नौ-सेना (बम्बे-मेरिन) ने भी काम किया। इसके पहिले सन् १८२४ में बरमा के युद्ध में भी बम्बे मेरिन सम्मिलित हुआ था। सन् १८२८ ईस्वी से बम्बे-मेरिन को यूनियन जैक लगाने की आज्ञा दी गई।

सन् १८३४ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी एक प्रकार से तोड़ सी दी गई। उस समय कम्पनी द्वारा जीते गये प्रान्त अङ्गरेज़ी राज्य क़रार दिये गये। उसके साथ-साथ बम्बे मेरिन भी 'इण्डियन नेवी' (हिन्दुस्तानी नौ-सेना) के रूप में परिणत हो गया। सन् १८३९ में अदन पर आक्रमण हुआ। इसमें सफलता पाने का पूरा श्रेय हिन्दुस्तानी नौ-सेना को ही है।

स्वेज़ की नहर के खुलने के पहिले बम्बई से लेकर स्वेज़ तक समुद्री रास्ते का सर्वे करने का काम हिन्दुस्तानी नौ-सेना को ही सौंपा गया था। स्वेज़ नहर खुल जाने के बाद डाक ले जाने ले आने का भी काम इन्हें ही सौंप दिया गया। मेल ढोने का काम सन् १८५५ तक होता रहा। सन् १८५५ में ओरियण्टल स्टीम नेवीगेशन कम्पनी की स्थापना हुई।

सन् १८५२ में बरमा का दूसरा युद्ध आरम्भ हुआ। कलकत्ता से सारी थल-सेना इन्हीं लड़ाकू जहाज़ों पर चढ़कर रङ्गून पहुँची। हिन्दुस्तानी जल-सेना की बदौलत बरमा पर अङ्गरेज़ों का आधिपत्य जमा। सन् १८५६-५७ के चीनी-युद्ध में फिर यहाँ का जहाज़ बेड़ा चीन गया। इन युद्धों के अतिरिक्त भारतीय तट की रक्षा करने का कार्य भी उसे ही करना पड़ता था.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह "इण्डियन नेवी" जो बम्बे मेरिन के स्थान पर क़ायम हुआ था, सन् १८९२ में तोड़ दिया गया और उसके स्थान पर रायल इण्डियन मेरिन की स्थापना हुई। सन् १९१४ में, इस सेना में छः विशालकाय सशस्त्र जहाज़ थे, जिन पर देख-रेख का काम ब्रिटिश सिपाहियों और अफ़सरों के हाथ में था। महायुद्ध के समय ये जहाज़ अरब सागर और लालसागर में रखवाली के लिए नियुक्त किये गये। सन् १९१६ तक मैसोपोटामियाँ के लिए फ़ौजें ले जाने का भी काम इन्हीं का था।

परन्तु अब तक इन जहाज़ों पर काम करने वालों में हिन्दुस्तानियों का नाम-निशान नहीं था। सन् १९१९ के सुधार के समय इस सम्बन्ध में काफ़ी आन्दोलन भारतवासियों ने किया। परन्तु सन् १९२८ तक इस सम्बन्ध में कोई महत्वपूर्ण बात नहीं हुई। सन् १९२८ में एक ब्रिटिश एडमिरल को इसलिए नियुक्ति की गई कि वह भारतीयों को इस सम्बन्ध में शिक्षा दे।

इस समय रायल इण्डियन मेरिन की देख-रेख में निम्न-लिखित कार्य होते हैं :—

१—हिन्दुस्तानियों को शिक्षा देना (युद्ध के समय के लिए)।

२—भारत-सरकार के अधिकार में रहने वाले बन्दरगाहों का संगठन और जलयुद्ध से बचाव का उपाय करना।

३—सर्वे का काम।

४—सेना का सामान और सैनिक लाने और भेजने का काम।

सन् १८६९ ई० से लेकर सन् १८९६-९७ तक भारत प्रति वर्ष पन्द्रह लाख रुपया ब्रिटेन को नौ-सेना के खर्च के रूप में देता रहा। भारत का कुल खर्च इस सम्बन्ध में इस समय क़रीब सत्तर लाख रुपया प्रति वर्ष है।

सन् १९२६ ई० के अक्टूबर और नवम्बर माह में लन्दन में एक इम्पीरियल कॉन्फ्रेंन्स हुई। उसमें इस बात पर विचार किया गया कि नये ढङ्ग से भारतीय नौ-सेना का प्रबन्ध किया जाय। परन्तु समस्या इतनी जटिल साबित हुई कि कुछ भी निर्णय नहीं किया जा सका।

रायल इण्डियन नेवी में इस समय एक गोदाम का जहाज़, ४ फौज़ी जहाज़, २ पेट्रोल और एक सर्वे के जहाज हैं। एक जहाज़ और तैयार होकर विलायत से आ रहा है।

निरन्तर आन्दोलन करते रहने पर भी जल-सेना का भारतीयकरण अभी तक नहीं हो पाया है। सन् १९२८ ई० में इस सम्बन्ध में एक बिल असेम्बली में उपस्थित हुआ था। परन्तु वह एक वोट से गिर गया। सन् १९३४ ई० में फिर बिल उपस्थित किया गया।

सन् १९३४ ई० की दूसरी अक्टूबर को "रायल इण्डियन नेवी" की बम्बई में नींव डाली गई। उस दिन से "रायल इण्डियन मेरिन" का नाम समाप्त हो गया। इस समय इसके सेनापति एक फ़्लैग-आफिसर हैं। 'इण्डियन मेरिन' के जो काम थे, वही इण्डियन नेवी के भी काम हैं, उनके अतिरिक्त बङ्गाल की खाड़ी के मछली-घाटों की रक्षा का भी भार इसी पर रखा गया है।

भारतीयों को जहाज़ सम्बन्धी शिक्षा 'डफ़रिन' जहाज़ पर दी जाती है, जिसमें प्रति वर्ष एक करोड़ पीछे एक विद्यार्थी लिया जाता है। गत तीन-चार वर्षों से जो विद्यार्थी पास करके निकल रहे हैं, उनमें से अधिकांश अभी तक बेकार हैं।

जन-साधारण से लेकर बड़े-बड़े विद्वान तक विश्व-व्यापी युद्ध की आशङ्का कर रहे हैं। हाँ, यह युद्ध कब और किस समय होगा, इस सम्बन्ध में कुछ ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता है। संसार के सभी देश अपनी-अपनी रक्षा के प्रबन्ध में संलग्न हैं। भारत की रक्षा का भार ब्रिटेन के हाथ में है। परन्तु परिस्थिति ने यदि ब्रिटेन को यूरोप के भूमध्यसागर के आगे न बढ़ने दिया तो उस समय निहत्थे भारत की क्या दशा होगी, इसके स्मरण मात्र से कलेजा दहल उठता है। अबीसीनिया ऐसा स्वतन्त्र देश, जिसके पास युद्ध का कुछ सामान भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मौजूद था तथा जिस देश की दुर्गम पर्वत-स्थलियों, घाटियों तथा विकट दर्रों में पहुँचना कोई साधारण खेल नहीं था, आज इटली का ग़ुलाम बन गया और शान्तिप्रेमी यूरोपीय राष्ट्र देखते रहे। कहाँ तो बेलजियम देश से होकर सेना जाने के प्रश्न को लेकर जर्मनी ऐसा शक्तिशाली राष्ट्र मटियामेट कर डाला गया, और कहाँ अबीसीनिया के भयङ्कर नर-संहार को देखकर भी विश्व-शान्तिप्रेमी राष्ट्रों के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगा। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि मौक़े से अङ्गरेज़ इस देश की रक्षा के लिए न पहुँच सके तो इसकी क्या दशा होगी ?

थल, जल और वायु, इन तीन प्रकार की शक्तियों में कोई भी शक्ति भारत के पास नहीं है—जो कुछ है, वह अङ्गरेज़ों की है। यद्यपि उनका व्यय-भार भारत को ही वहन करना पड़ रहा है, तथापि उसके गाढ़े दिनों में काम आने वाला कोई भी नहीं दीखता है। क्या भारतवर्ष अब भी अरुमण्य बने हुए आपस में ही छोटी-छोटी समस्यायों को लेकर लड़ते रहेंगे ?

निशा-निमंत्रण से

[श्री० 'बच्चन']

साथी नया वर्ष आया है !

वर्ष पुराना, ले, अब जाता,
कुछ प्रसन्न-सा, कुछ पछताता,
दे जी-भर आशीष बहुत ही इससे तूने दुख पाया है !
साथी, नया वर्ष आया है !

उठ इसका स्वागत करने को,
स्नेह-बाहुओं में भरने को,
नए साल के लिए, देख, यह नई वेदनाएँ लाया है !
साथी नया वर्ष आया है !

उठ, ओ पीड़ा के मतवाले,
ले ये तीक्ष्ण-तिक्त-कटु प्याले,
ऐसे ही प्यालों का गुण तो तूने जीवन भर गाया है !
साथी, नया वर्ष आया है !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फ़िल्म और समाज

[श्री० महेन्द्रकुमार]

संसार परिवर्तनशील है, और इसकी परिवर्तनशीलता के साथ मानव-जीवन का बहुत बड़ा सम्बन्ध है। इसकी प्रगति के साथ ही चलने में मनुष्य जाति का कल्याण है। किसी कवि ने कहा है—'जैसो बहे बयार, पीठ तब तैसी दीजै।' इस बीसवीं सदी ने तो अपने प्रथम चरण में ही अपने नये-नये आविष्कारों से संसार को चकित ही नहीं किया, वरन् इस तरह उलझा दिया है कि हर देश और मनुष्य का, उन आविष्कारों की प्रगति के साथ चल कर, अपनी समस्याओं को सुलझाना ही अनिवार्य कर्त्तव्य हो गया है। अन्य पाश्चात्य देश तो समयानुसार चलकर बहुत आगे बढ़ गये हैं। हम भारतवासी ही ऐसे हैं, जो अभी उन उन्नतिशील देशों से टक्कर लेने में बहुत ही पिछड़े हुए हैं। यदि हम अभी से अपने को न सँभाल सके तो हमारी जाति और समाज का ह्रास अवश्यम्भावी है।

इस बीसवीं सदी का सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार सिनेमा है। पिछले दस सालों के अन्दर सिनेमा संसार में आश्चर्यजनक उन्नति कर इस समय प्रगति के महान् साधनों में से एक गिना जाने लगा है। राष्ट्रनिर्माण के लिए इसका उपयोग प्रत्येक देश में होने लग गया है। उदाहरण-स्वरूप जापान, रूस, इटली और अन्य अनेक देश यह स्पष्ट रूप से साबित करते हैं कि इन देशों ने, जहाँ की जनता की अवस्था भारत के समान ही थी, सिनेमा के द्वारा ही कितनी आशातीत उन्नति की है। भारत में भी यह अपनी शक्ति दिखाने में पीछे नहीं रहा है। कुछ ही दिन पहले जहाँ लोग इसे केवल मनोरंजन की सामग्री समझते थे, और माता, पिता नेता, गुरुजन इत्यादि इसे समाज के नवयुवकों के चरित्र नष्ट करने का केन्द्र-स्थान मानते थे; उसे ही अब वे आदर की दृष्टि से देख रहे हैं। अभी हाल ही में एक सभा में पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—"आज की दुनियाँ में सिनेमा एक भारी ताक़त है। उसका बहुत अधिक प्रभाव है, जिसके निकट भविष्य में और भी अधिक बढ़ने की सम्भावना है। इसकी सहायता से हम लाखों व्यक्तियों को शिक्षा दे सकते हैं और उन्हें दूर-दूर के देशों की झाँकी दिखा सकते हैं।" इसके कुछ ही दिनों के बाद एक दूसरी सभा में भाषण देते हुए फिर आपने कहा था कि 'मैं उन लोगों में से नहीं हूँ, जो सिनेमा को बुरा समझते हैं। वास्तव में सिनेमा आज की दुनियाँ में एक बड़ी भारी ताक़त है; और जैसा कि होता है, यह बड़ी-बड़ी ताक़तें दोनों तरह के कामों में लाई जा सकती हैं—अच्छे कामों में भी, बुरे कामों में भी।' इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सिनेमा का महत्व हमारे राष्ट्रीय और सामाजिक नेता भी अब समझने लगे हैं।

अब यह पूर्ण रूप से निश्चित है कि सिनेमा समाज के लिए एक ऐसी महत्वपूर्ण वस्तु है, जिसका प्रयोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिमानी से किया जाना चाहिये, जिससे आश्चर्यजनक फल प्राप्त हो सके। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे देश में सिनेमा की महान् शक्ति को अभी तक उन कार्यों में नहीं लगाया गया है, जिनमें लगाया जाना चाहिए। हमारे फ़िल्म-निर्माताओं ने अब तक उसे एकमात्र रुपये कमाने का साधन ही बना रखा है। रुपये कमाना कोई बुरी बात नहीं, किन्तु प्रत्येक मनुष्य का अपने देश और समाज के प्रति कुछ कर्तव्य होता है; और फ़िल्म-निर्माताओं तथा साहित्यकारों आदि का उत्तर-दायित्व अपेक्षाकृत अधिक होता है। लेकिन हमारे भारत के फ़िल्म-निर्माताओं ने इस उत्तरदायित्व का अनुभव बिलकुल नहीं किया, और वे देश तथा समाज के हित के लिए किसी प्रकार भी बलिदान करने को तैयार नहीं दिखाई देते। यह कहते हुए हम उन दो-चार फ़िल्म-निर्माताओं पर लाञ्छन नहीं लगा रहे हैं, जिन्होंने अपवाद-स्वरूप वास्तव में इस प्रकार का बलिदान करने की चेष्टा की है। इन बातों को सोचते हुए राष्ट्रपति द्वारा दी गई धमकी कि 'एक अवसर आ सकता है, जब क़ानून उन्हें ठीक मार्ग पर चलने के लिये बाध्य कर दे' एक विशेष महत्व रखती है। यहाँ पर हमें यह भी कहना पड़ता है कि इसमें सारा दोष फ़िल्म-निर्माताओं का ही नहीं है, इस अपराध के दोषी हमारा समाज और हमारे सामाजिक नेता भी हैं; जिन्होंने दो साल पहले तक इस ओर ध्यान ही नहीं दिया था। लेकिन इधर दो साल से कुछ लोग अग्रसर हुए हैं, जिन्होंने भारतीय फ़िल्म-व्यवसाय की उन्नति में बहुत कुछ मदद पहुँचाई है। उनमें motion picture Society of Bombay का कार्य विशेष उल्लेख-नीय है। किन्तु उनका कार्य अभी तक व्यावसायिक दृष्टि से ही होता रहा है। सामाजिक समस्याओं की ओर अभी तक उन्होंने भी कुछ ध्यान नहीं दिया है। इसका मुख्य कारण यह भी हो सकता है कि हमारी सरकार ने इस बड़े आविष्कार को व्यावसायिक या सामाजिक, किसी भी दृष्टि से अभी तक नहीं अपनाया है। जब से हमारी काङ्गरेस ने ग्यारह में से सात प्रान्तों में बहुमत प्राप्त किया है, तब से इस नूतन चमत्कार से प्रेम रखने वाले सभी बड़ी आशाएँ रखते हैं कि अब जब हमारे सामाजिक और राजनैतिक नेता देश का शासन कर रहे हैं, तो इस फ़िल्म-निर्माण-कला की व्यावसायिक वृद्धि के साथ ही सामाजिक हित की दृष्टि से प्रचार भी अवश्यम्भावी होगा।

विशेष प्रसन्नता की बात है कि इधर कुछ फ़िल्म-निर्माताओं ने इस उत्तरदायित्व को समझा है, और मनोरञ्जन के साथ-साथ शिक्षाप्रद चित्रपट तैयार कर समाज की सेवा करने की आवश्यकता अनुभव करने लग गये हैं। ऐसे उदार फ़िल्म-निर्मातागण व्यावसायिक दृष्टि से उन लोगों की अपेक्षा, जो तीसरे दर्जे के असभ्य चित्र तैयार कर रहे हैं, घाटा सहकर भी समाज की समस्याओं को हल करने वाले शिक्षाप्रद अच्छे चित्र बनाकर समाज की बड़ी सेवा कर रहे हैं। अच्छा चित्र हम उसे ही कह सकते हैं, जोकि हमारे सामाजिक जीवन की त्रुटियों, उसकी अलग-अलग समस्याओं, तरह-तरह की कठिनाइयों को सुन्दर रूपेण एक दर्पण की तरह प्रतिबिम्बित करे। साथ ही मनोरञ्जन को भी पूरा स्थान मिलना चाहिए, ताकि दर्शक उन सामाजिक समस्याओं को देखकर उकता न जाएँ, वरन् उस मनोरञ्जन द्वारा उन्हें उन समस्याओं पर विचार करने का पूरा अवसर प्राप्त हो सके। यह सत्य है कि चित्रपटों द्वारा सामाजिक समस्याओं को हल नहीं किया जा सकता, किन्तु उसके द्वारा इतना निश्चय है कि समाज को किसी विशेष आवश्यक समस्या की ओर शीघ्रातिशीघ्र आकर्षित कर, दो-एक रास्ते दिखाकर उसके हल करने के लिए बाध्य किया जा सकता है। समाज का ऐसे फ़िल्म-निर्माताओं के चित्रपटों को क्रय कर तथा समय-समय पर अपने विचार प्रगट कर ठीक रास्ते पर चलने के लिए उत्साहित करना कर्त्तव्य है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेखक—
श्री० एस० डी० आपटे
सङ्गीत-प्रवीण

राग देश—
पंजाबी (बिलंबीत)

शब्दकार—
सूरदास

इस राग में दो निषाद लगते हैं।

वादी—पंचम, संवादी—रिषभ। जाति—सम्पूर्ण, समय—रात का दूसरा प्रहर।

आरोहावरोह

सा री म प, नी सा। सा नी ध प, ध, म ग री ग सा।

पकड़

रीमप, नी धप, पध, मगरीगसा।

गीत

मना रे माधव सौं करु प्रीति।
काम क्रोध मद लोभ मोह तू, छाँड़ि सबै विपरीति॥
भौंरा भोगी बन भ्रमै, मोद न मानै ताप।
सब कुसुमन मिलि रस करै, कमल बँधावै आप॥

स्थायी

प	नीसारीसा	नी	धप	मग	रीग	नीं	सा	री	म	प	नी	नी	सानी	सा	प
म	नाऽऽऽ	रे	ऽऽ	माऽ	ऽऽ	ध	व	सौं	ऽ	क	रु	प्री	ऽऽ	ति	ऽ
२								३				१			

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

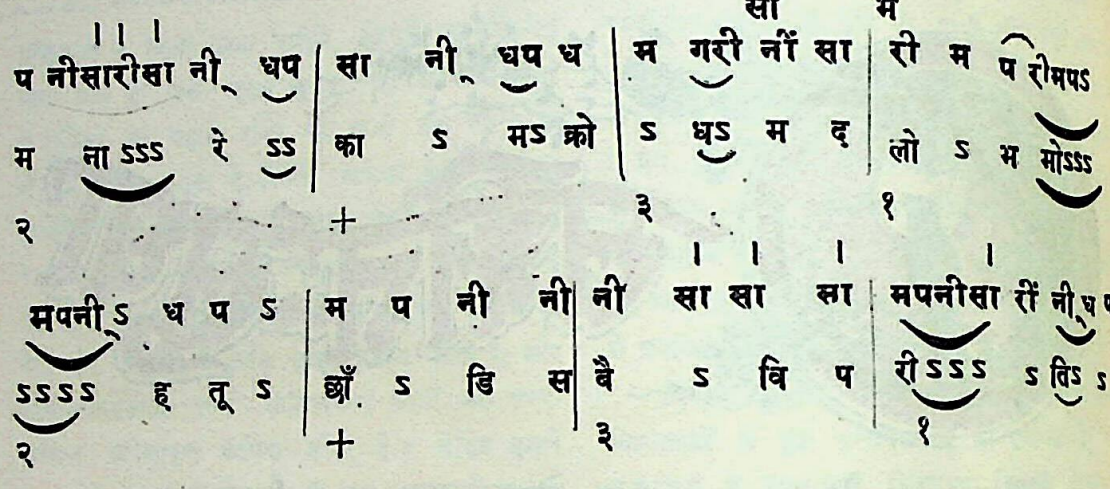

अन्तरा

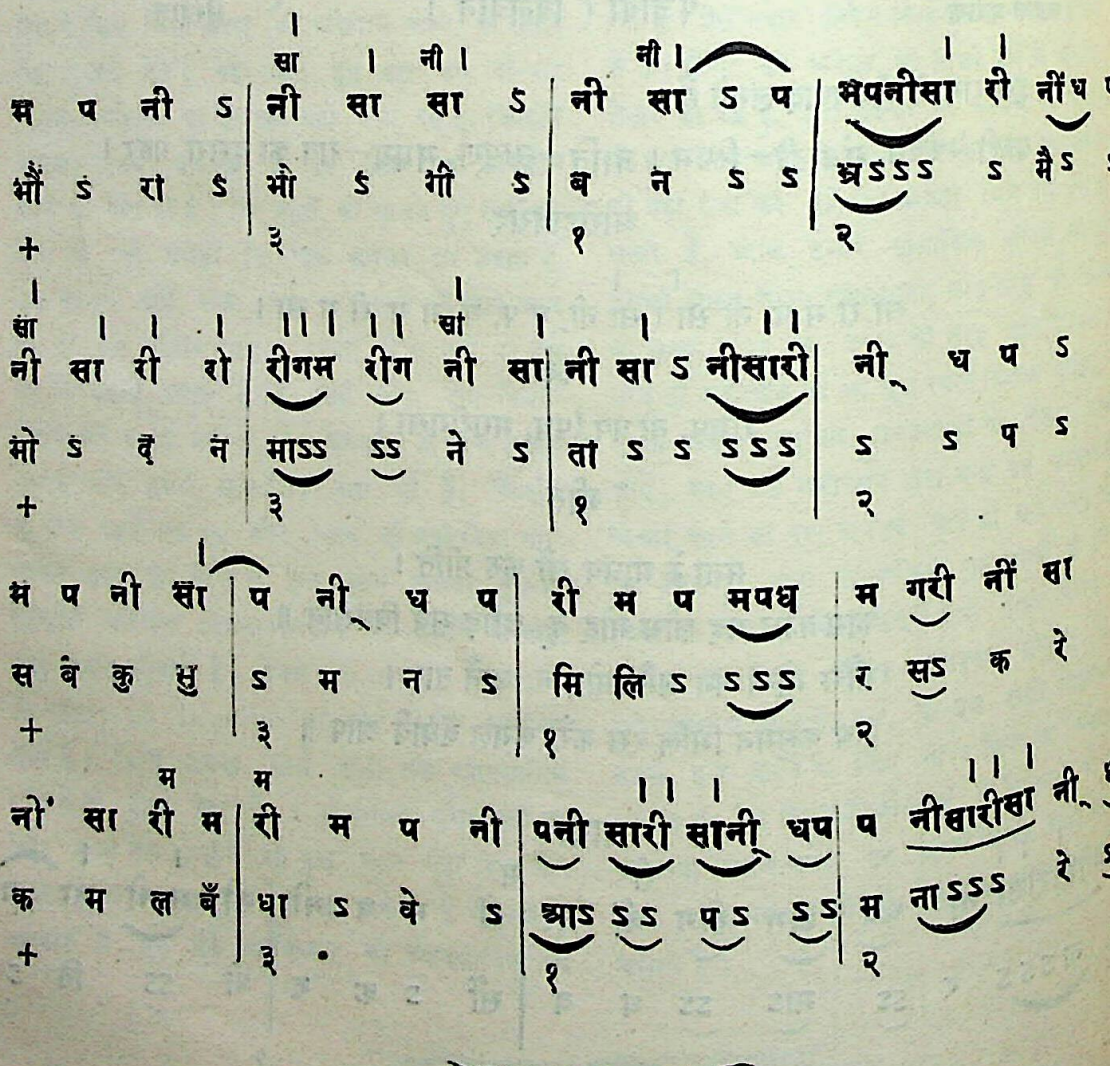

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्री सम्पादिका जी,

जय राम जी की !

आजकल किसी सभा-सोसायटी का सभापति बन जाना इतना सरल है कि पूछिये नहीं। अपनी स्त्री का पति बनना उससे कहीं अधिक कठिन है। पति बनने के लिए केवल जोरू होने भर से ही काम नहीं चलता। बहुतेरे व्यक्ति ऐसे हैं कि उनके स्त्री तो मौजूद है, लेकिन वे उसके पति नहीं हैं। पत्नी रहते हुए भी पति बनने का सौभाग्य प्राप्त न होना एक विचित्र सी बात है। परन्तु जब यह संसार ही विचित्र है तब विचित्रताओं का क्या घाटा है। केवल यही नहीं, इसका दूसरा पहलू भी विचित्र है, यानी पति रहते हुए भी बहुत सी स्त्रियाँ पत्नी नहीं हैं। इस प्रकार विचित्रताओं का पता लगाया जाय तो उनका सिलसिला नहीं टूट सकता।

हाँ तो, आजकल कमेटी, सभा, सङ्घ, समिति की इतनी भरमार है कि उनके लिये सभापति ढूँढ़े नहीं मिलते। आजकल जहाँ चार आदमी इकट्ठे हुए बस कोई न कोई सङ्घ या कमेटी बन गई। कुर्ता कमेटी, चप्पल सङ्घ, छाता यूनियन, दर्ज़ी सभा इत्यादि संस्थाएँ धड़ल्ले के साथ अपना काम कर रही हैं। जिस प्रकार बे माँ-बाप का बच्चा और बिना पति की स्त्री दयनीय समझी जाती है, उसी प्रकार वह समझा जाता है जो किसी सभा या सङ्घ का सदस्य नहीं है। लोग कहते हैं यह सङ्गठन का युग है, आजकल सबको सङ्गठित होकर रहना चाहिए, कोई अकेला न रहे। अस्तु।

अभी तक अपनेराम बिल्कुल तने तनहा रहे। अल्लाह मियाँ के सिवा और किसी का सहारा नहीं था, परन्तु आजकल अल्लाह मियाँ अपने सहारे बहुत कम लोगों को रहने देते हैं। इसलिए एक दिन चार-पाँच आदमी आ ही तो धमके। अपनेराम के एक परिचित उनके साथ थे, उन्होंने सबका परिचय दिया। एक साहब बोले—'बहुत दिनों से आपके दर्शनों की लालसा थी।'

अपनेराम ने सोचा, अच्छा ! अपनेराम भी इस क़ाबिल हुए कि लोगों को अपनेराम के दर्शनों की लालसा रहती है ! हे परमात्मा ख़ैर करना ! जान पड़ता है, ये कमबख़्त चन्दा माँगने आये हैं। उनसे अपनेराम बोले—'दर्शनों की लालसा ज़रूर रही होगी। उस दिन तीन-चार सज्जन अपनी संस्था के लिए चन्दा माँगने आये थे, वे भी यही कहते थे।'

'लेकिन हम लोग तो चन्दा माँगने नहीं आये।'

उफ ! बड़ी तसल्ली हुई ! तब तो ये लोग वाक़ई अपनेराम के दर्शन पाने के पात्र हैं।

'इसीलिए तो आपको दर्शन मिल भी गये।।'—अपनेराम बोले।

'लेकिन हम लोग कुछ माँगने अवश्य आये हैं।'

अपनेराम ने सोचा—चन्दा नहीं माँगेंगे तो क्या माँगेंगे—कोई लेख ? इन लोगों की सूरत तो ऐसी नहीं जान पड़ती कि इन्हें कभी लेख की ज़रूरत पड़ती होगी। उहँ, होगा भी ! जब चन्दा नहीं माँगेंगे तो फिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहे जान भी माँगें तो चिन्ता नहीं है। यह सोचकर अपनेराम परिचित से बोले—'तुम्हें तो मालूम होगा कि ये लोग किस लिए आये हैं, तुम्हीं जल्दी से बता दो।'

'ये लोग स्वयम् ही बतावेंगे'।- परिचित राम मुस्करा कर बोले।

अपनेराम भी सोंठ हो गये। जिस बात का भय था वह तो स्पष्ट ही हो गई, अब क्या परवाह है। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। अन्त को एक महाशय बोले—'आपको एक कष्ट देने आये हैं।'

अपनेराम जल्दी से बोले—'फ़र्माइये! फ़र्माइये।'

'हम लोग एक सभा बनाना चाहते हैं।'

'तो शौक़ से बनाइये।'

'हम चाहते हैं कि आप भी उसके सदस्य बनें।'

'ओहो! तो यह कहिये, आप मुझ अनाथ को सनाथ बनाने आये हैं।'

'इसका क्या मतलब?'

'इसका मतलब समझने में ज़रा देर लगेगी। हाँ तो उस सभा का उद्देश क्या है?'

'केवल सङ्गठन! आप जानिये, आजकल सङ्गठन में ही शक्ति है।'

'जी हाँ, आप बिलकुल बजा फ़र्माते हैं। मुझे सङ्गठन के लाभों का अनुभव है।'

'अवश्य होगा।'

'होगा नहीं, है! जिस समय अपनेराम तथा लल्ला सङ्गठित हो जाते हैं उस समय लल्ला की महतारी की एक नहीं चलती और जिस समय लल्ला तथा लल्ला की महतारी सङ्गठित हो जाते हैं उस समय.....अच्छा तो आप क्या चाहते हैं?'

'और हम यह चाहते हैं कि आप उस सभा के सभापति बन जायँ।'

'अजी नहीं! ऐसा मज़ाक़ न कीजिए।'

'मज़ाक़! मज़ाक़ किस चिड़िया का नाम है?'

'अच्छा! तो क्या आप सचमुच कह रहे हैं?'

'कह नहीं रहे हैं, हम आपको सभापति बना चुके—केवल आपकी स्वीकृति चाहिए।'

वाह रे परमात्मा! तेरी माया भी अपार है। अपनेराम सभापति बन चुके और अपनेराम को खबर तक नहीं। उनसे अपनेराम बोले—'देखिये जनाब! यदि तो मैं एक बार जिसका बनना था बन चुका।'

'बस एक बार और बन जाइये।'

अपनेराम के परिचित महोदय भी बोले—'इन्होंने आपको अपनी सभा का सभापति चुन लिया है। मेरे विचार से तो अब आपको स्वीकार कर लेना चाहिए।'

और सुनिए! कहते हैं, स्वीकार कर लेना चाहिए। अपनेराम बोले—'ख़ैर, आप लोगों की यदि यही इच्छा है तो मुझे स्वीकार है।'

इतना सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए। मानों बड़ा भारी क़िला फ़तह किया। अपनेराम ने पूछा—'सभापति की हैसियत से अपनेराम को क्या करना होगा, यह बता दीजियेगा।'

'वह सब आपको मालूम हो जायगा। कल हम लोग मीटिङ्ग करने जा रहे हैं, उसमें आपको सब पता चल जायगा।'

'कल किस समय मीटिङ्ग होगी।'

'यही शाम के सात बजे। ठीक रहेगा न?'

'हाँ, ठीक रहेगा।'

इसके पश्चात् वे लोग विदा हो गये। अपनेराम सोचने लगे कि आज सवेरे किसका मुँह देखा था जो यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। सोचते-सोचते याद आया कि सवेरे अपने बिल्ले मुट्ठू का मुँह देखा था। ओह! सवेरे अपने बिल्ले मुट्ठू का मुँह देखा था। ओह! ओह! उसके दर्शन इतने शुभ होंगे, यह किसे मालूम था। अब कभी-कभी प्रयत्न करके सवेरे उसका मुँह देख लिया करेंगे।

दूसरे दिन मीटिङ्ग हुई। अपनेराम नियत समय पर पहुँच गये थे।

पन्द्रह-सोलह आदमी इकट्ठा थे। अपनेराम के पहुँचते ही कार्यवाही आरम्भ हुई। एक महोदय बोले—'मैं प्रस्ताव करता हूँ कि हमारी आज की सभा के सभापति श्री० विजयानन्द दुबे जी बनाये जायँ।'

अपनेराम का कलेजा धक् से हुआ और बेतहाशा मुँह से निकल गया—'बस केवल आज की?'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रस्तावक ने हाथ के इशारे से चुप रहने के लिए कहा। अपनेराम चुप हो गये। परन्तु पेट में चूहे कूदने लगे कि अपनेराम से तो कमबख्तों ने परमानेण्ट सभापति बनाने का वादा किया और यहाँ मामला टेम्परेरी दिखाई पड़ रहा है। आख़िर बिल्ले का मुँह कहाँ तक गुम हो सकेगा, कुछ न कुछ मनहूसियत तो रहेगी ही।

इसके बाद एक महोदय बोले—'आज का कार्यक्रम पदाधिकारियों का चुनाव है। सब से पहले सभापति का चुनाव होना चाहिए।'

इतना सुनते ही एक महाशय बोल उठे—'मैं प्रस्ताव करता हूँ कि इस सभा के सभापति श्री० विजयानन्द दुबे जी बनाये जायँ।'

एक दूसरे सज्जन ने प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया और अपनेराम सर्वसम्मति से सभापति स्थापित हो गये। अब अपनेराम का चित्त ठिकाने आया, लेकिन साथ ही यह अफ़सोस हुआ कि मुट्ठ को मनहूस समझकर उसके प्रति बहुत बड़ा अन्याय किया गया।

इसी प्रकार उप-सभापति एक नहीं पूरे चार चुने गये। एक मन्त्री, दो सहायक मन्त्री, एक कोषाध्यक्ष। इस प्रकार सबको कोई न कोई पद देने का प्रयत्न किया गया; परन्तु फिर भी कुछ अभागे बाक़ी ही रह गये। उन्हें को केवल कार्य-कारिणी का सदस्य बनाकर उनके आँसू पोंछे गये।

सभा विसर्जन होने पर एक महाशय अपनेराम से बोले—'दुबे जी! आप से कुछ बातें करनी हैं। कोई समय दीजिए।'

'कल आ जाइये।'

दूसरे दिन वह महाशय अपनेराम से मिले। बोले—'दुबेजी, आप कहाँ जा फँसे।'

'जा फँसे'—यह बकता क्या है। फँसते कोई और होंगे, अपनेराम तो शान के साथ गये हैं।

अपनेराम ने पूछा—'क्यों? इसमें जा फँसने की क्या बात है?'

'बात यह है कि वहाँ कुछ होना-हुवाना नहीं है, केवल खोंग है।'

'अपनेराम सभापति बन गये, यह क्या कुछ कम हुआ? और आप चाहते क्या हैं?'

'आपको सभापति न बनना चाहिए था।'

'तो क्या बनना चाहिए था?'

'कुछ भी नहीं। यह संस्था चले चलावेगी नहीं।'

'आख़िर क्यों नहीं चलेगी?'

'इसमें दो-एक ऐसे आदमी आ गये हैं, जो इसे चलने नहीं देंगे।'

'वे कौन आदमी हैं?'

उन्होंने दो नाम बताये।

अपनेराम बोले—'इतने आदमी चलायँगे तब तो चलेगी नहीं और दो आदमी उसे रोक देंगे। अपनेराम यह वाहियात बात मानने के लिए तैयार नहीं हैं।'

'ख़ैर, आज आप न मानें, परन्तु एक दिन आपको मेरी बात माननी पड़ेगी।'

'हरगिज़ नहीं मानूँगा।'

'माननी पड़ेगी तब भी न मानेंगे?'

'माननी कैसे पड़ेगी, कोई ज़बरदस्ती है?'

'ख़ैर देख लीजिएगा।'

'सो तो अपनेराम न जाने क्या-क्या देख चुके हैं।'—वह चुप होकर चले गये।

इसके पश्चात् एक मास व्यतीत हो गया, परन्तु सभा की न कोई बैठक हुई और न अन्य कोई कार्य हुआ। अपनेराम सोचने लगे कि अच्छे सभापति बने, कोई टके तक को नहीं पूछता। क्या उस कमबख्त की बात सच्ची निकलेगी। एक दिन रास्ते में मन्त्री महोदय मिले। अपनेराम ने पूछा—क्यों जनाब! सभापति बनाकर तो बिठा दिया; परन्तु कोई कार्य नहीं होता, क्या बात है?

'एक दिन तो बैठक हुई थी; परन्तु आप आये ही नहीं।'

'बैठक हुई थी! और मुझे सूचना तक नहीं।'

'आपके पास सूचना भेजी तो गई थी।'

'मुझे तो नहीं मिली।'

'आप मिले न होंगे।'

'तो सभापतित्व किसने किया?'

'उप-सभापति ने।'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इतना सुनते ही अपनेराम बिगड़ उठे, बोले— देखिये जनाब ! अपनेराम के सिवा और कोई सभापतित्व नहीं कर सकता और यदि करेगा तो अपनेराम बहुत बुरी तरह पेश आवेंगे ।'

वह बोले—'परन्तु उपसभापति तो इसीलिए होता है कि जब सभापति न हो तो वह सभापति का कार्य करे ।'

'सभापति न हों तब न ? परन्तु सभापति बसुरा तो मौजूद था । सो यार लोगों ने उसे खबर भी की और सभा कर डाली ।'

'सूचना तो आपके पास भेजी गई थी ।'

'सभापति के पास और सूचना ! जी चाहता है सिर पीट लूँ । आपको सब काम सभापति की आज्ञा से करना चाहिए ? आप सभापति के पास सूचना भिजवाते हैं । इस न्धेर को तो देखिये !'

'सूचना निकालना, बैठक का आयोजन करना, यह काम मन्त्री का है । असल में सब काम तो मन्त्री ही करता है ।'

'जी नहीं, हमारे सभापतित्व में यह धाँधली नहीं चलेगी कि सब काम मन्त्री करे और सभापति मुँह ताका करे । भविष्य में सब काम अपनेराम करेंगे—आप केवल अपनेराम की आज्ञा पालन करते रहेंगे ।'

'यह तो बड़ी अच्छी बात है, मैं झञ्झटों से बच जाऊँगा । परन्तु यह नियम-विरुद्ध बात होगी ।'

'होने दीजिए ।'

'यदि आपको काम करने का इतना उत्साह है तो आप मन्त्री बनते तो बड़ा अच्छा होता ।'

'मन्त्री काहे को बनते ! अपनेराम तो सभापति ही बन सकते हैं ।'

'यही तो मैं भी कहता हूँ । आप मन्त्री का कार्य नहीं कर सकेंगे ।'

'करेंगे जनाब—कर न सकने के क्या अर्थ ? अब आयन्दा सूचना अपनेराम निकालेंगे और जिसको जी चाहेगा उसे बुलायँगे—कोई जरा भी चीं-चपड़ करेगा तो उसे सभा से निकाल देंगे ।'

'कार्यकारिणी के सदस्यों को तो बुलाना ही पड़ेगा ।'

' 'पड़ेगा' शब्द अपनेराम के सामने मत कहिये ।'

'कोरम तो पूरा करना ही पड़ेगा ।'

'जहाँ अपनेराम बैठ जायँगे वहीं कोरम अपने आप पूरा हो जायगा । चार आदमियों की जगह तो अकेले अपनेराम घेर लेते हैं—फिर भी कोरम पूरा न होगा ! और आयन्दा चुनाव में उपसभापति का पद तोड़ दिया जायगा । उपसभापति मामला खराब करते हैं । सभापति न हुआ तो खुद सभापति बन जाते हैं । यह बड़ी भारी गुस्ताखी है । अपनेराम इसे सहन नहीं कर सकते ।'

'ऐसा तो इसलिए किया जाता है कि यदि किसी कारणवश सभापति न आसके तो उप-सभापति कार्य चला ले—कार्य रुका न रहे ।'

'जी नहीं, ऐसा नहीं होने पायेगा । अब बिना सभापति के सभा स्थगित रहेगी ।'

'इससे तो कार्य में बाधा पड़ेगी ।'

'आपको कार्य की तो इतनी भारी चिन्ता है, परन्तु सभापति की ज़रा भी चिन्ता नहीं । अपनेराम का इतना अपमान !'

'इसमें अपमान की तो कोई बात नहीं !'

'है कैसे नहीं । मानो तो देव नहीं पत्थर !'

'इन बातों से तो मन्त्रिमण्डल और आप में बड़ा मतभेद हो जायगा ।'

'हाँ ! और यह आप जानते ही हैं कि मन्त्रियों और गवर्नर में मतभेद...।'

मन्त्री महदोय बोल उठे —'गवर्नर !'

'हाँ-हाँ, गवर्नर ! आप इतना चौंकते क्यों हैं ! केवल नाम का भेद है, वरना अपनेराम का भी वही दर्जा है जो गवर्नर का होता है—सभापति न कहा गवर्नर कहा, गवर्नर न कहा सभापति कहा । पद तो एक ही है !'

'तो यह कहिये, आप गवर्नरी की हवा में हैं ।'

'जान पड़ता है, अपनेराम को यह मन्त्रिमण्डल तोड़ना पड़ेगा !'

मन्त्री महोदय चुपचाप चले गये ।

तीन दिन बाद वही सदस्य अपने पास आकर बोले—'देखिये, मैंने क्या कहा था ।'

'तो क्या हुआ ?'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'सभा समाप्त हो गई।'

'अपनेराम ने तो समाप्त नहीं की।'

'तो इससे क्या होता है। सब खेल ख़त्म हो गया।'

'वह कैसे?'

'आपकी वैमनस्य के कारण।'

'लेकिन समाप्त कैसे हो गई?'

'जिन्होंने सभा के दफ़्तर के लिए अपना कमरा दिया था उन्होंने अब इन्कार कर दिया। दफ़्तर की जो जिन्होंने दी थी, वह अपनी दरी उठा ले गये। जिन्होंने अलमारी देने कही थी, वह अब देने से इन्कार करते हैं। स्टेशनरी का सामान मन्त्री जी दाब बैठे। वह कहते हैं, हमने अपने पास से ख़रीदा था—हम नहीं देते—हमारी इच्छा। कमरे के मालिक ने कमरे में अपना ताला डाल दिया।'

यह शुभ समाचार सुनकर अपनेराम को ज़रा भी ग़श नहीं आया—यह प्रसन्नता की बात है। अपनेराम का दिल इन बातों में बड़ा मज़बूत है। अब आयन्दा सभापति बहुत समझ-बूझ के बनेंगे।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

मेरा गान

[स्वर्गीया प्रभादेवी माथुर]

मैं न समझी सजनि अब तक
आह, अपने गान ही को!
नयन में है बस रहा प्रिय स्वप्न सा साकार होकर;
इस हृदय की बीन में वह छिप गया झङ्कार होकर;
हो जुदा कैसे अरे जो प्राण का कम्पन बना है,
श्वास-पलने पर हमेशा झूलता मधु-प्यार होकर!
आज इतने पास होकर दूर ही वह क्यों सदा से.....
यह नहीं हैं गीत सखि मैं तो पुकारूँ प्राण पी को!! मैं—
लुट रही है सजनि प्रतिक्षण विरह ही में अश्रु-शबनम;
मैं अचानक चौंकती होता जभी पदचाप का भ्रम;
ध्यान उनका ही मुझे हरदम रहा करता सखी री,
चल रहा है इस तरह ही ज़िन्दगी का शून्य सा क्रम!
आज रोकर ही अरे समझा रही मैं म्लान जी को!!
मैं न समझी सजनि अब तक आह, अपने गान ही को!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

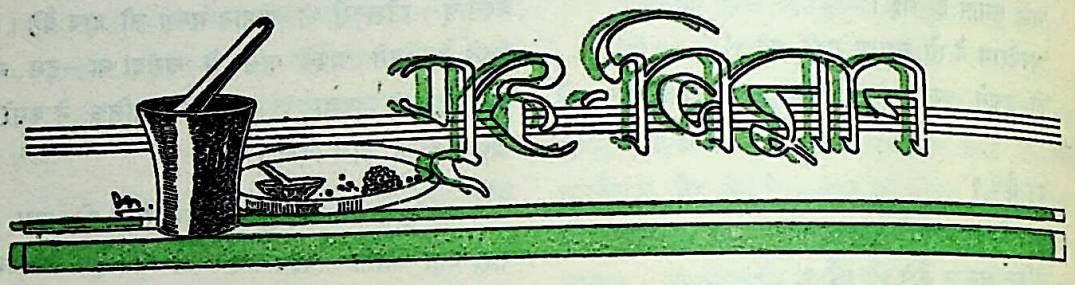

केले के गुण

केला हमारे देश का प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला फल है। यद्यपि भिन्न-भिन्न प्रदेशों के केलों की आकृति, वर्ण और स्वाद में भी काफ़ी अन्तर पाया जाता है, पर इसका उपयोग सब जगह समान रूप से होता है। लाभ की दृष्टि से भी इसका दर्जा बहुत ऊँचा है। इसमें मनुष्य के शरीर के लिये पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व पाया जाता है। केले के फल और पेड़ के सभी अवयव मनुष्यों के लिये हितकारी हैं। नीचे हम इन विभिन्न अवयवों के उपयोग के सम्बन्ध में कुछ चुने हुए नुस्खे देते हैं, जिनसे साधारण लोग भी काम ले सकते हैं :—

१—कच्चा केला और कच्ची गूलर सम भाग लेकर और सुखाकर चूर्ण कर ले। इस चूर्ण को सुबह-शाम १ तोला रोज देने से स्त्रिय के रक्त-प्रवाह और श्वेत प्रदर को लाभ होता है। केवल कच्चे केले की फली खाने से भी लाभ होता है।

२—रक्त-पित्त अर्थात् मुँह या नाक से ख़ून आने में पकी हुई केले की फली को शकर में मिलाकर दूध के साथ फेंट कर चाटने से लाभ होता है।

३—केले की फली हृदय के दर्द में शहद के साथ फेंट कर खाने से बड़ा लाभ करती है। मात्रा १ तोला शहद और दो फली। शहद से केले का भारीपन जाता रहता है।

४—आँत के विकारों में जैसे दस्तों का आना, पेचिश (प्रवाहिका), संग्रहणी आदि में दही और केला फेंट कर खाने से लाभ होता है। दही के साथ थोड़ी सी केसर भी डालनी चाहिये। दही की मात्रा थोड़ी हो और केला अधिक।

५—सुज़ाक के लिए केले का फूल बड़ा उपयोगी है। केवल पुष्प-दल को सुखा कर चूर्ण कर ले। १ तोला केला-पुष्प चूर्ण, १ तोला कल्मी शोरा, दो सेर दूध और दो सेर पानी लेकर सब को एक कलई घड़े में शाम को भर दे और सुबह कच्चा दूध मिला दे। एक-एक गिलास रोगी को पिलाना शुरू करे। उस दिन रोगी कोई अन्य भोजन न करे। दूसरे दिन केवल दूध पिये। अवश्य लाभ होगा।

६—केले का स्वरस अर्थात् डण्डी और पत्तों का रस और फली के ऊपर का पराग साँप के ज़हर में अथवा किसी प्रकार के विष में लाभ करता है।

७—केले की नीरस फली जो सफ़ेद होती है, वह उठी हुई आँखों में लगाने से लाभ करती है।

८—सुर्मे में केले के डण्ठल की २१ भावनाएँ दे और फिर १ भावना नीम के कोंपल के रस की दे। सुर्मे का ½ कपूर और ½ फिटकिरी मिलाकर तैयार कर लें। इससे आँखों की गर्मी और धुँधलापन दूर हो जाता है। यह सुर्मा बड़ा लाभदायक होता है।

९—केले के ऊपर की बाँझ फलियाँ, जो प्रायः गिर जाती हैं, पाँच-सात लेकर शिवलिङ्गी के पाँच-सात बीजों के साथ पीसकर रजोधर्म के तीसरे दिन वन्ध्या स्त्री को खिलाने से एक या दो मास में उसका वन्ध्यापन दूर हो जायेगा और सन्तानोत्पत्ति होगी। प्रत्येक मास पाँच-छः दिन तक खिलाना चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१०—मिश्री, गाय का घी और केला, तीनों वस्तु पाव भर लेकर मथ ले। इनमें दालचीनी १½ तोला, लौंग १ तोला, धाय के फूल, बड़ी इलायची प्रत्येक ६ माशे, सोंठ ८ माशे, माजूफल ३ माशे महीन पीसकर मिलाये। दो तोला सुबह-शाम खाने से रक्त और श्वेत दोनों प्रकार के प्रदर में बड़ा गुण करता है।

११—चोट या रगड़ लगने से केले के छिलके को बाँध देने से सूजन नहीं बढ़ती।

१२—केले में लोह होता है, इसलिए वह पाँडु रोग में बहुत लाभकारी होता है।

१३—पागल कुत्ते के विष पर पके हुए जङ्गली केले के बीज खाना और पीसकर लेप करना चाहिए।

१४—हिचकी पर जङ्गली केले की पत्तियों की राख एक माशा, एक तोला शहद के साथ मिलाकर चाटना चाहिए।

१५—शोथ पर पक्का केला और गेहूँ का आटा जल में घोलकर और गरम करके लेप करना चाहिए।

१६—सङ्खिया के विष पर केले की जड़ का रस पीना चाहिए।

१७—जीभ में छाले पड़ने पर पक्का केला गाय के दूध के साथ प्रातःकाल खाना चाहिए।

१८—कामला पर पक्का केला शहद के साथ खावे।

१९—भस्मक रोग पर केला घी के साथ खाना अथवा केले के पेड़ का रस पीना चाहिए।

२०—प्रदर, सोम और मूत्रातिसार पर पक्का केला और आँवला का रस, दो भाग शक्कर मिलाकर खाना चाहिए।

२१—प्रदर और धातु-विकार पर पका हुआ एक केला, छः माशे घी के साथ ८ दिन तक सुबह-शाम खाना चाहिए।

२२—पित्त रोग पर पक्का केला और घी खावे।

२३—केला से अजीर्ण होने पर बड़ी इलायची खाना चाहिए।

२४—प्रदर पर केला पीसकर और दूध में पकाकर दो दिन तक खाय।

२५—वमन पर केले की जड़ का रस और शहद पिये।

२६—क़ब्ज़ियत पर कच्चा केला उबाल कर खाय।

२७—त्रिदोष की शान्ति के लिए केला और शक्कर खाय।

२८—अतिसार में पक्के केले के भीतर दो सरसों बराबर अफ़ीम रखकर खाना चाहिये।

—नारायणप्रसाद अरोड़ा

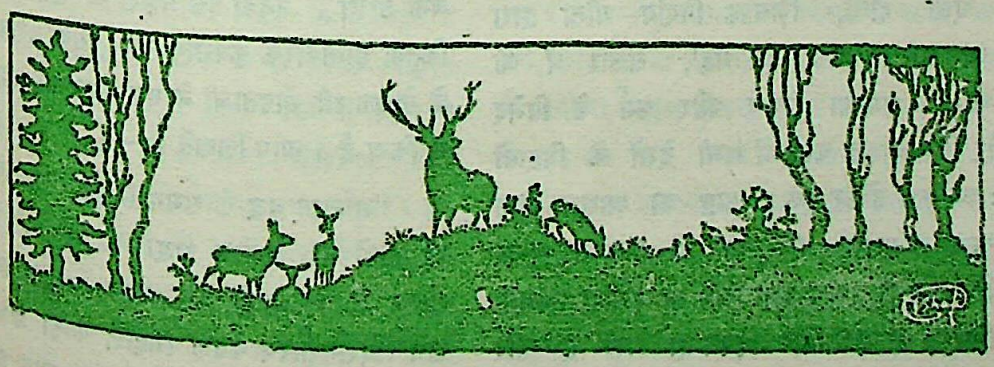

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गीता का व्यवहार-दर्शन

लेखक, श्रीयुत सेठ रामगोपालजी मोहता; प्रकाशक, श्रीसत्यनारायण प्रिण्टिङ्ग प्रेस, फ्यूर रोड, करांची; पृ०-सं० ६०० से ऊपर।

यह सिद्धान्त प्रायः सभी विद्वानों को मान्य है कि श्रीमद्भगवद्गीता संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में से है; अथवा संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक यही है। यद्यपि प्राचीन काल से आज तक विद्वानों ने ऐसे और भी ग्रन्थ-रत्नों का निर्माण किया है, जिनको करोड़ों व्यक्ति अपना मुक्तिदाता मानते हैं और जिनके परायण से शान्ति-लाभ करते हैं। पर गीता के समान 'गागर में सागर' वाली सूक्ति को चरितार्थ करने वाली रचना आज तक नहीं की गई, इससे कदाचित् ही किसी को मतभेद होगा। गीता के सात सौ श्लोकों में संसार के श्रेष्ठ तत्व-ज्ञान को मथ कर रख दिया गया है। दुनिया में कदाचित् ही कोई धार्मिक, आध्यात्मिक अथवा व्यावहारिक समस्या ऐसी होगी, जिसका निर्णय गीता द्वारा न किया जा सके। इतना ही नहीं, संसार में जो सबसे कठिन समस्या त्याग और कर्म के विभेद की है और जिसको हल करने में सभी देशों के विद्वानों को प्रायः असफल होकर एक ही अङ्ग का आश्रय लेना पड़ा है, उसका सामञ्जस्य भी गीता में अत्यन्त सुन्दर ढङ्ग से किया गया है। सच पूछा जाय तो हमारी सम्मति में गीता-निर्माण का वास्तविक उद्देश्य ही यही है और यही उसकी शिक्षा का मुख्य सारांश है।

गीता की इसी महानता तथा श्रेष्ठता को हृदयङ्गम करके प्राचीन काल से आधुनिक समय तक एक नहीं सैकड़ों विद्वानों ने उस पर टीकाएँ और भाष्य लिखे हैं। प्राचीन भारत के पूजनीय शङ्कराचार्य और रामानुजाचार्य से लगा कर वर्तमान काल में विद्वद्शिरोमणि लोकमान्य तिलक तक ने एक वाक्य से गीता के महत्व को स्वीकार करके उसका वास्तविक स्वरूप प्रकट करने की चेष्टा की है। इनमें से प्राचीन काल के अधिकांश विद्वान् त्याग-मार्ग के अनुयायी संन्यासी थे, इसलिये उन्होंने गीता की व्याख्या में त्यागभाव को ही प्रधानता दी। आरम्भ में तो यह त्याग-भाव अथवा निवृत्ति मार्ग किन्हीं अंशों में देश की परिस्थिति के अनुकूल था, इसलिये उससे सर्वसाधारण का कुछ हित भी साधन हुआ। पर बाद में देश की अवस्था दिन पर दिन बदलती गई और निवृत्ति मार्ग ने क्रमशः संसार से उदासीनता, नैराश्य, भाग्यवाद और अन्त में अकर्मण्यता का रूप धारण कर लिया। इस बीच में जनता में विद्वान माने गये लोगों की बुद्धि का भी विपर्यय होता रहा और धीरे-धीरे उन्होंने गीता को पूर्णतया सांसारिक व्यवहारों का विरोध करने वाला ग्रन्थ बना डाला। उनकी इस प्रवृत्ति का देश और समाज पर कितना हानिकारक कुप्रभाव पड़ा, इसका वर्णन इस ग्रन्थरत्न के लेखक श्री मोहताजी ने एक स्थान पर बड़े मार्मिक ढङ्ग से किया है। आप लिखते हैं:—

"भगवान् बुद्ध के समय से इस देश में निवृत्ति-मार्ग पर लोगों की अधिक श्रद्धा हो गई, और यहाँ के लोग संसार के व्यवहारों को सर्वथा बन्धन का हेतु मानने लगे। दर्शनशास्त्र केवल निवृत्ति के ही प्रतिपादक समझे जाने लगे। प्रवृत्ति में दार्शनिक तत्त्वज्ञान अनावश्यक ही नहीं, किन्तु उसका विरोधी ठहराया गया; फलतः दार्शनिक विषय, केवल पुस्तकीय ज्ञान (Theory)—कोरे शास्त्रार्थ करने के लिए ही रह गये। संसार के व्यवहार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से वेदान्त के सिद्धान्तों का उपयोग बिलकुल ही छूट गया और गृहस्थ छोड़कर संन्यास लेने वालों ही का दर्शनों पर अधिकार हो गया। दूसरे शब्दों में दार्शनिक तत्त्वज्ञान का उपयोग संसार के व्यवहारों से लुप्त होकर केवल संन्यास ही में होने लगा। यहाँ तक कि उपनिषद् और गीता जैसे ज्ञान-कर्म-समुच्चय अर्थात् व्यावहारिक वेदान्त के ग्रन्थों का भी निवृत्ति मार्ग की पुष्टि में ही उपयोग होने लगा और उसी के अनुकूल इनके अनेक भाष्य और टीकाएँ बन गईं। साम्प्रदायिक टीकाकारों ने अपने-अपने मत की पुष्टि और अपने अनुयायियों को अपने सिद्धान्त समझाने की स्वार्थ-सिद्धि के लिए उपनिषद् और गीता का आश्रय लेकर, इनके अर्थ की यहाँ तक खींचा-तानी की, और शास्त्रार्थ के वागाडम्बरों का तूल इतना बढ़ा दिया, कि इनके अर्थ में बहुत ही गड़बड़ हो गई और इनका असली तात्पर्य (व्यावहारिक वेदान्त) बिलकुल अज्ञात हो गया। गीता के विषय में तो कहीं-कहीं यहाँ तक कहा जाने लगा कि 'गीता का अर्थ कृष्ण ही जानें' जिसका भावार्थ यह निकलता है कि स्वयं कृष्ण के सिवाय दूसरा कोई उसका सच्चा तात्पर्य समझ ही नहीं सकता, अतः न अब इस युग में फिर से कृष्ण का अवतार हो और न गीता का वास्तविक अर्थ ही समझा जा सके। कैसे आश्चर्य की बात है कि जब अपने सिवाय दूसरा कोई उसको समझ ही न सके, तो गीता बनाने का परिश्रम भगवान् ने नाहक़ किया। तात्पर्य यह कि साधारण जनता भगवान् के सार्वजनिक उपदेश का यथार्थ लाभ उठाने से वंचित हो गई। बहुत से लोगों ने तो इसको निवृत्ति-मार्ग की पुस्तक समझ कर, इसके पढ़ने से संसार से वैराग्य हो जाने के डर से इसको पढ़ना छोड़ कर, केवल मृत्यु के समय सुनाने योग्य ही निश्चय कर लिया। इस तरह उपनिषदों और गीता में प्रतिपादित व्यावहारिक वेदान्त, भारतवर्ष में बिलकुल लुप्त हो गया, और ज्ञान के प्रकाश बिना अज्ञान के अन्धकार में संसार के व्यवहार होने लगे, जिसका परिणाम जैसा होना स्वाभाविक है, वैसा ही हुआ, अर्थात् आर्य-संस्कृति के व्यवहार-रूपी शरीर में से, आध्यात्मिक मूल-तत्त्वरूपी जीव निकल गया। तब, जिस तरह जीव-रहित शरीर में अनेक प्रकार के विकार और सड़ान-गलाव उत्पन्न हो जाते हैं, वही दशा इस संस्कृति की हुई। इस देश के अधिकांश लोग अपने व्यवहारों में आध्यात्मिकता को बिलकुल भूल कर, आधिभौतिकता में अत्यन्त आसक्त हो गये, जिससे जड़ता (तमोगुण) का इन पर साम्राज्य हो गया, और बुद्धि का विपर्यास होकर सत्य को झूठ और झूठ को सत्य मानने लगे; भौतिक शरीरों को ही सब कुछ मान कर, आपस में अनन्त प्रकार की भिन्नताएँ उत्पन्न करके, व्यक्तिगत अहङ्कार और व्यक्तिगत स्वार्थ पर ही प्रायः सबका लक्ष्य रह गया, जिससे एक दूसरे से घृणा और तिरस्कार के भाव उत्पन्न हो गये, और आपस की एकता का लोप होकर सारे देश में फूट फैल गई; अधिकांश लोग आपस में असत्य और छल-कपट का व्यवहार करके एक दूसरे को हानि पहुँचाने लगे, जिससे सम्मिलित शक्ति से काम करने की योग्यता प्रायः लुप्त हो गई; भौतिक शरीरों में इतना मोह बढ़ गया कि अधिकांश लोग मरने और कष्ट सहने से डरने लगे; बुद्धि से काम लेना छोड़ कर अन्धविश्वासों और रूढ़ियों के दास हो गये; मानसिक दुर्बलता के कारण बात-बात में वहम और शङ्काएँ खड़ी करके सदा सशङ्कित रहने लगे; आत्मिक निर्बलता बढ़ जाने से स्वावलम्बन का भाव बहुत कम रह गया; प्रत्येक कार्य में अपने से भिन्न देवी-देवता, भूत-प्रेत आदि अदृष्ट कल्पित शक्तियों, अथवा अपने से भिन्न लोगों का आश्रय लेकर, अधिक-तर परावलम्बी, उत्साहहीन, निरुद्यमी और आलसी बन गये, और आत्मा की स्वाभाविक स्वतन्त्रता एवं परिपूर्णता के भावों से विमुख होकर, दूसरी दृष्ट वा अदृष्ट शक्तियों के दास बन कर, उनके मोहताज हो गये; भूतकाल के अभिमान में शोचनीय वर्तमान और अन्धकारमय भविष्य पर ध्यान देना प्रायः भूल गये, और अपने अवगुणों एवं त्रुटियों को छिपाने एवं दबाये रखना ही अपने लिए हितकर मानने लगे। इन्हीं कारणों से इस देश का धार्मिक, नैतिक, सामाजिक और आर्थिक पतन हुआ और इन्हीं कारणों से राजनैतिक स्वतन्त्रता खोकर, इस देश के लोग, जिन लोगों में ये दुर्गुण, यहाँ के लोगों से कम थे, उनके अधीन हो गये।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार जब देश दुर्दशा के पङ्क में पूर्ण रूप से फँस गया और साधारण जनता अत्यन्त कष्ट की अवस्था में कालयापन करने लगी तो कुछ देश-हितैषियों की आँखें खुलीं और अन्यान्य सुधारों के साथ वे देश के आध्यात्मिक जीवन में उत्पन्न हो गये इस नाशकारी भाव का मूलोच्छेद करने की चेष्टा करने लगे। इनमें प्रमुख स्थान स्वर्गीय लोकमान्य तिलक का है, जिन्होंने बड़े से बड़े टीकाकारों से टक्कर लेते हुए गीता की 'कर्मयोग शास्त्र' नामक व्याख्या लिखी। लोकमान्य का यह ग्रन्थ-रत्न विद्वत्ता और आध्यात्मिक विषयों के विश्लेषण की दृष्टि से अभूतपूर्व और बन्दनीय है। यदि यह कहा जाय कि कई सौ वर्षों से हमारे देश में ऐसे विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ की रचना नहीं हुई थी तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। इस महान ग्रन्थ ने गीता रूपी अमूल्य रत्न पर पड़े मैल को दूर करके उसके वास्तविक तेजोमय स्वरूप को सर्व-साधारण के सम्मुख प्रकट कर दिया।

माननीय मोहता जी का 'गीता का व्यवहार-दर्शन' भी लोकमान्य का मार्गानुयायी है और इसमें गीता के व्यवहारानुकूल स्वरूप का भली प्रकार विवेचन किया गया है। इससे विदित हो जाता है कि गीता संसार अथवा गृहस्थाश्रम के त्याग का उपदेश नहीं देती, वरन् वह संसार में रहते हुए और सब कर्मों को यथाविधि करते हुये भी उनमें लिप्त न होने के राजमार्ग का रहस्य प्रकट करती है। इस दृष्टि से गीता का अध्ययन मनुष्य मात्र का कर्तव्य है। इसी के द्वारा वे अपने और विश्व के वास्तविक स्वरूप तथा पारस्परिक सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं।

इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि मोहता जी ने इसको सरल भाषा में लिखा है और विवेचन प्रणाली के क्लिष्ट न होने देने का भी पूर्ण ध्यान रखा है। इससे यह ग्रन्थ उन लोगों के काम का भी हो गया है, जो विशेष विद्याध्ययन के अभाव से इस उच्च कोटि के ग्रन्थ को समझ सकने में असमर्थ रहते थे।

दूसरी सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि ऐसे महान ग्रन्थ को मोहता जी ने बिना मूल्य ही अधिकारी जनता तक पहुँचाने की व्यवस्था की है। इस छः सौ से अधिक पृष्ठों के, उत्तम काग़ज़ पर स्वच्छ छपे तथा सुन्दर जिल्द-युक्त ग्रन्थ को कोई भी गीता-प्रेमी व्यक्ति लेखक (करौंदी) के पास से डाकव्यय के लिये दस आने के टिकट भेजकर मँगा सकता है। दुनिया में सभी प्रकार के दान प्रशंसनीय हैं, पर विद्या-दान की महिमा सबसे अधिक मानी गई है। इस ग्रन्थ को सर्वसाधारण के लिये इतना सुलभ बनाकर मोहता जी अक्षय कीर्ति के भागी हुए हैं। हमारा आन्तरिक विश्वास है कि गीता-प्रेमी सज्जन अवश्य ही इस सुविधा से पूर्ण लाभ उठाएँगे॥

—एन० जी०

सचित्र दरबार ग्वालियर अङ्क—सम्पादक अमृत-चरण जैन, सिविल लाइन्स दिल्ली; वार्षिक मूल्य २॥) (राज संस्करण) ७) (साधारण)।

ग्वालियर के विषय में ज्ञातव्य लेखों तथा अनेक रङ्गीन और सादे चित्रों से सुसज्जित यह अङ्क ३०० पृष्ठ का वृहद् ग्रन्थ है। सजावट और छपाई आदि की दृष्टि से भी सुन्दर निकला है। यदि इसमें ग्वालियर की साधारण जनता के जीवन का और विशेष परिचय मिल सकता तो अङ्क की उपयोगिता अधिक बढ़ जाती। अङ्क सम्पादक के अध्यवसाय का सूचक और संगृहणीय है।

विशाल-भारत—प्रवेशाङ्क; मूल्य ॥), सम्पादक सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन; विशाल-भारत कार्यालय १२०।२ अपर सरकुलर रोड, कलकत्ता।

सदा के समान 'विशाल-भारत' का प्रस्तुत अङ्क भी अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप ही निकला है। कम स्थान में अधिक उपयोगी सामग्री का समावेश कर देना उसकी अपनी विशेषता रही है। प्रस्तुत अङ्क अनेक सामयिक और साहित्यिक लेखों, उत्कृष्ट कहानियों तथा कविताओं से पूर्ण है। चित्रों का चुनाव और विषयों का सम्पादन सुरुचि का परिचायक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिक्षिता नवयुवती का अपहरण

कानपुर के पाँच प्रतिष्ठित व्यक्तियों, म्यूनिसिपल बोर्ड के मेम्बर पं० जयनारायण शुक्ल तथा स्काउट आर्गनाइज़र पं० लक्ष्मीनारायण वाजपेयी और डॉ० मथुराप्रसाद तथा उनकी दो लड़कियाँ—चन्द्रकला और ज्ञानवती गिरफ़्तार किये गये हैं। उपर्युक्त गिरफ़्तारियाँ एक पढ़ी-लिखी बाईस वर्षीय नवयुवती के बयानों के अनुसार हुई हैं। पाँचों अभियुक्त ज़मानत और मुचलकों पर छूटे हैं। उपर्युक्त मुक़दमे की पेशी सिटी मजिस्ट्रेट श्री पैग़म्बरबख़्श की अदालत में ता० २१ जनवरी को हुई। कचहरी में बहुत भारी जनसमुदाय उपस्थित था। भीड़ क़रीब २-२॥ हज़ार से अधिक होगी। अदालत से मजमे को हटाने के लिये पुलिस को कई बार बल-प्रयोग करना पड़ा, फिर भी शोर-गुल-गपाड़े से अदालत के कामों में विघ्न पड़ता ही रहा, तब विवश होकर पत्रों के सम्वाददाता और मुक़दमे के पैरोकारों के अतिरिक्त समस्त दर्शक कोर्ट कम्पाउण्ड से निकाल दिये गये। पुलिस के सख़्त पहरे में अपहरण की हुई नवयुवती ने बड़ा ही सनसनीपूर्ण बयान दिया है।

* * *

पुत्र की हत्या

पीलीभीत ज़िले के पूरनपुर गाँव के द्वारकाप्रसाद नामक एक व्यक्ति को पुलिस ने गिरफ़्तार किया है। कहते हैं, एक दिन संध्या हो जाने के बाद इसने अपने आठ वर्षीय पुत्र से पास के ही कुएँ से पानी लाने को कहा; पर लड़का चूँकि आठ साल का ही छोटा सा था अतः उसे अँधेरे में घर के बाहर जाने में भय लगता था। लड़के ने कुएँ से पानी लाने से इन्कार कर दिया इस पर बाप का पारा बेहद चढ़ गया। पहले तो लड़के को डाँटा; पर जब डाँट से काम न चला तो लड़के को उसने जला डालने की धमकी दी। छोटा सा बच्चा इस धमकी को 'धमकी' से अधिक और समझ ही क्या सकता था। वह आख़िर जब पानी भरने नहीं गया तब द्वारकाप्रसाद ने क्रोध से आग-बबूला होकर सचमुच लड़के के सिर पर एक बोतल मिट्टी का तेल डालकर दियासलाई से आग लगा दी। बेचारा लड़का मशाल की तरह जलने लगा। उसकी चीख़-चिल्लाहट सुनकर जब तक उसकी माता उसे बचाने दौड़ी तब तक वह इस दुनिया से कूच कर चुका था।

* * *

भाभी पर क़ातिलाना हमला

एटा ज़िला के सिउधुरा नामक गाँव में दुर्गा उर्फ़ नेकसा ब्राह्मण ने अपनी भाभी मुसम्मात पार्वती पर चाक़ू से क़ातिलाना हमला किया। शोर मचते ही पड़ोसियों ने जाकर देखा तो पार्वती को ज़मीन पर ख़ून से लथपथ पड़ा पाया और नेकसा को भागते हुये देखा। घायल को अस्पताल में लाकर दाख़िल किया गया है, जहाँ उसकी हालत चिन्ता-जनक है। पता चला है कि भाई-भाई की लड़ाई में ऐसा किया गया है।

* * *

पाँच लड़कियाँ बरामद हुईं

लाहौर की पुलिस ने हीरामण्डी मुहल्ले के एक घर पर धावा किया, और घर से पाँच लड़कियाँ बरामद कीं। कहा जाता है कि ये लड़कियाँ अमृतसर, जलन्धर और पटियाला से भगा कर लाई गई थीं। इन लड़कियों को भगाने के सम्बन्ध में एक औरत पकड़ी गई है।

* * *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुत्सित जीवन पर वाध्य किया

दिल्ली के बाज़ार सीताराम में एक व्यक्ति ने अपनी स्त्री के ऊपर इस वजह से चाकू द्वारा आक्रमण किया कि उसके कहने पर स्त्री ने अनैतिक जीवन व्यतीत करने से इन्कार किया। स्त्री का नाम मुसम्मात रामदेवी उर्फ़ प्रेमवती है। हौज़ काज़ी की पुलिस में उसने जो रिपोर्ट लिखाई है उसमें उसने कहा है कि मैं अपने पति लछमनसरूप कायस्थ के साथ गत ११ वर्ष से स्त्री की हैसियत से रहती थी। लछमनसरूप पहिले तार और डाक-विभाग में नौकर था, किन्तु बाद में वह बर-खास्त कर दिया गया। वह जुआड़ियों का सट्टा खोल रखे था और बेकार होने की वजह से वह मुझे अनैतिक जीवन व्यतीत करने के लिए वाध्य करता था।

* * *

कलियुगी भीम प्रो० राममूर्त्ति की मृत्यु

गत १६ जनवरी को बालनगिर (उड़ीसा) जनरल अस्पताल में कलियुगी भीम के नाम से सुविख्यात प्रोफेसर राममूर्ति का देहावसान हो गया।

एक विराट जलूस के साथ उनका शव स्मशान घाट पहुँचाया गया। जलूस में प्रधान मन्त्री, लाला राज-कनकर एम० ए०, बी० सी० एस० रेवेन्यू मिनिस्टर, मि० एल० साहनी एवं अन्य प्रमुख सरकारी और ग़ैर-सरकारी व्यक्ति शामिल थे।

प्रो० राममूर्ति ने शारीरिक शक्ति के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की थी। उन्होंने इङ्गलैण्ड, यूरोप एवं अन्यान्य देशों में जाकर अपने अद्भुत कौशल दिखा कर लोगों को चकित कर दिया था।

लड़की का खून

अवध की चीफ़ कोर्ट के माननीय जस्टिस ज़ियाउल हसन तथा माननीय जस्टिस हैमिल्टन ने हत्या के एक मामले की अपील पर फ़ैसला सुनाया और अपील नामञ्जूर करके अभियुक्त की फाँसी की सज़ा बहाल रक्खी। अपील भरोसे (जाति का पासी) नाम के एक व्यक्ति द्वारा पेश की गई थी। उसके ऊपर यह अभियोग चलाया गया था कि उसने मुसम्मात मुन्नी नाम की एक नौ वर्ष की लड़की पर अत्याचार किया और उसके बाद उसकी हत्या कर डाली। मामला सीतापुर के सेशन जज की अदालत में पेश किया गया था और सेशन जज ने उसके ऊपर ताजीरात हिन्द की दफ़ा ३०२ के अनुसार जुर्म लगा कर उसे फाँसी की सज़ा दी थी।

* * *

अविवाहितों पर टैक्स

संसार में आजकल आदमियों में कुँआरे रहने की बीमारी फैल रही है। इस कुप्रथा को रोकने के लिये मध्य यूरोप में तो कुछ पहले ही कुँआरों पर टैक्स लगा दिया गया था। दक्षिणी अमरीका के ब्रेज़ील नामक प्रदेश में भी पिछले वर्ष कुँआरों पर यह टैक्स चालू कर दिया गया है। ब्रेज़ील के रायो ग्रान्डो डोसुल नामक राज्य में कुँआरों से ५ शिलिङ्ग (२ रु० १२ आने) प्रति मास टैक्स वसूल किया जाता है। वहाँ कुँआरों की अन्त्येष्टि क्रिया पर भी टैक्स लगा हुआ है। मैक्सिको में कुछ स्त्रियों ने पार्लियामेण्ट में दरख्वास्त दी कि जो लोग शादी नहीं करते, उनपर टैक्स लगना चाहिये। अतः वहाँ पर ३० वर्ष से ऊँचे आयु के कुँआरों पर टैक्स लगाये जाने पर विचार हो रहा है।

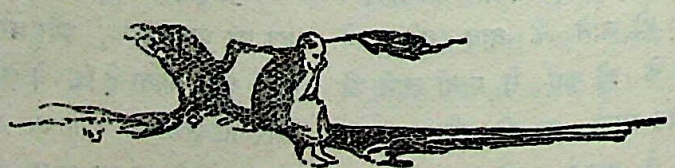

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

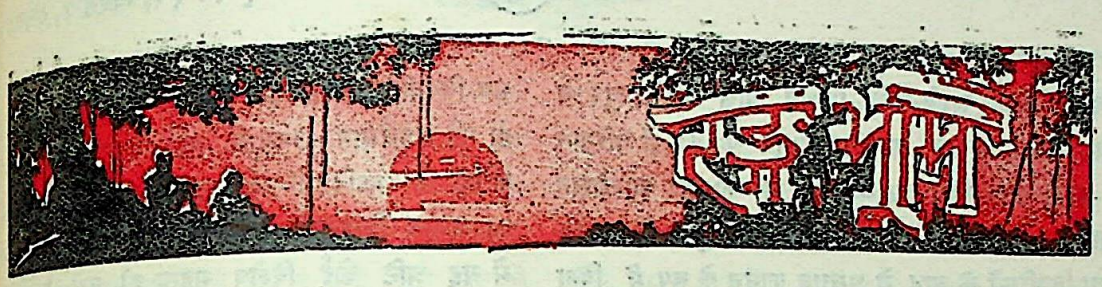

[सम्पादकीय]

मिश्र की नारियाँ

वर्तमान समय में समस्त संसार में नारी-जागरण की लहर आई हुई है। जिन देशों में नारियाँ पहले से ही स्वतन्त्र अस्तित्व रखती थीं, उनकी तो बात ही क्या, आजकल ऐसे देशों की नारियाँ भी उन्नति-पथ पर अग्रसर हो रही हैं, जहाँ वे सैकड़ों वर्षों से लगभग गुलामी की अवस्था में थीं। इनमें विशेष रूप से मुस्लिम देशों की गणना की जाती है। वैसे इस्लाम के सिद्धान्तानुसार स्त्रियों को कितने ही ऐसे अधिकार प्राप्त हैं, जो अन्य देशों की महिलाओं को उपलब्ध नहीं हैं, पर व्यावहारिक रूप से अधिकांश मुस्लिम महिलाओं की अवस्था अभी हाल तक अत्यन्त शोचनीय थी। पर्दे और अशिक्षा ने उन्हें सर्वथा असहाय और परावलम्बी बना रखा था। पर गत महायुद्ध के बाद से संसार में जो नव-जागरण की लहर आई है उसने मुस्लिम देशों की सामाजिक व्यवस्था पर विशेष रूप से प्रभाव डाला है, और वहाँ की स्त्रियों की अवस्था की कायापलट कर दी है। उदाहरण-स्वरूप हम मिश्र देश की नारियों के सम्बन्ध में सहयोगी 'भारत' के एक लेख के आधार पर कुछ बातें पाठकों को बतलाते हैं, जिनसे हमारे समाज-सुधारक सज्जन कितनी ही काम की बातें जान सकते हैं :—

"वर्तमान मिश्र में नारी की मानसिक और नैतिक उन्नति के लिए सर्व प्रकार की चेष्टाएँ की जा रही हैं। स्कूल खुले हुए हैं, बालिका और युवतियों को वैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार शिक्षा दी जा रही है। स्कूलों में पढ़ाई के अतिरिक्त रसोई बनाना, कपड़ा सीना, आदि विषय भी सिखाए जाते हैं। जीविका उपार्जन के लिए शारीरिक परिश्रम भी कराया जाता है। सिर्फ़ इतना ही नहीं, बल्कि एक विदेशी भाषा भी सिखायी जाती है। बहुत सी युवतियाँ विश्वविद्यालयों में प्रोफ़ेसर के पद पर नियुक्त हैं। जो प्रतिभाशाली छात्रा विदेश जाना चाहती है, उसे सरकार की ओर से पूरी सुविधा मिलती है। दस या बारह अध्यापिकाएँ एक दल बना कर इङ्गलैण्ड, फ्रान्स आदि देशों में शिक्षा-प्रणाली का अध्ययन करने जाती हैं। जब वे वहाँ से लौटती हैं, तो अपनी रिपोर्ट शिक्षा-मन्त्री के सामने पेश करती हैं। शिक्षा-मन्त्री इन अध्यापिकाओं की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा-प्रणाली में सुधार करता रहता है। गत महायुद्ध के पहले मिश्र के बालिका विद्यालयों में ३३०० छात्राएँ थीं। लेकिन शिक्षा-प्रचार के साथ-साथ आज छात्राओं की संख्या पूरी सवा तीन लाख है।

बहुत सी, नारी-समितियाँ स्थापित हुई हैं। सन् १९२३ में फेमीनिस्ट यूनियन नामक एक समिति स्थापित हुई थी। इस समिति की सदस्याएँ अपनी जाति की उन्नति करने का व्रत ग्रहण करती थीं। इस समिति के कुछ उद्देश्य इस प्रकार हैं :—

(१) मिश्र में सहशिक्षा हो।

(२) बहु-विवाह की प्रथा रोकना और तलाक़ क़ानून को और भी सरल बनाना।

(३) १६ वर्ष के पहले कोई भी माता-पिता अपनी लड़की की शादी न कर सके।

(४) स्त्री को पुरुष के समान ही अधिकार मिलें, और नौकरी योग्यता के हिसाब से दी जाय, पुरुष और स्त्री का भेदभाव न रक्खा जाय।

इसके अलावा और भी बहुत से उद्देश्य हैं। यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यूनियन सिर्फ़ लम्बे-चौड़े प्रस्ताव पास करके चुप न बैठा, बल्कि ये सब प्रस्ताव क़ानून के रूप में परिणत हो जायँ, इसके लिए इस यूनियन ने ज़ोरदार आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन का फल यह हुआ कि अनेक बाधा-विपत्तियों के बाद ये प्रस्ताव क़ानून के रूप में बिना दिये गये।

यहाँ की छात्राएँ राजनैतिक विप्लवों में पीछे नहीं हैं। दो-तीन वर्ष पूर्व कैरो में जो छात्र-विप्लव हुआ था, उसमें सैकड़ों छात्राओं ने भाग लिया था और अपने प्राणों को उत्सर्ग कर दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि आहत छात्रों की सेवा-सुश्रूषा भी उन्होंने की थी। इन सब घटनाओं से प्रमाणित होता है कि मिश्र की नारी दिन ब दिन आगे बढ़ती जा रही है, और पुरुषों से किसी भी हालत में वह पीछे नहीं रहना चाहती। मिश्र वालों ने अपनी मातृजाति को स्वाधीनता देकर प्रशंसनीय कार्य किया है।"

* * *

भारतीय गृह और सजावट

मनुष्य स्वभाव ही से सुन्दरता का प्रेमी है। वह प्रायः वस्तुओं के प्राकृतिक रूप से ही संतुष्ट न रह कर उनको अपनी रुचि के अनुसार भाँति-भाँति से अलंकृत करता रहता है। तरह-तरह के वस्त्र-आभूषण, सजावट की सामग्री, फ़ैशन आदि इसी प्रवृत्ति के परिणाम हैं। इसी प्रवृत्ति के प्रभाव से हम अपने शरीरों को ही अलंकृत नहीं करते, वरन् अपने निवास-स्थानों को भी सजाते हैं। घरों को तरह-तरह के रङ्गों से रँगना, तरह-तरह की चित्रकारी करना, तस्वीरें, गुलदस्ते और दूसरी सजावट की चीज़ें लगाना इसी प्रवृत्ति के अन्तर्गत है। किसी ज़माने में हमारे देश में यह प्रवृत्ति जन-साधारण में काफ़ी विकसित हुई थी, जिसका प्रमाण प्राचीन साहित्य में तथा पुरातत्त्ववेत्ताओं की खोज में प्राप्त वस्तुओं से भलीभाँति मिलता है। पर इधर जब से भारतवर्ष का पतन होने लगा, अन्य सब विषयों की तरह इस दृष्टि से भी यहाँ की दशा हीन हो गई। वर्तमान समय में यहाँ निर्धन और धनी सभी श्रेणी के व्यक्तियों के गृहों में सुरुचिपूर्ण सजावट का अभाव दिखलाई पड़ता है। अनेक लोगों के विचार में यह त्रुटि कोई विशेष महत्व की नहीं, क्योंकि जब विपरीत परिस्थितियों में पड़ कर हमारा जीवन-निर्वाह ही कठिन हो रहा है, तो सजावट और सुन्दरता की ओर कहाँ से ध्यान दिया जाय। पर यह तर्क सारयुक्त नहीं। अगर हम स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्तियों को, जिनसे कि मनुष्य का जीवन सार्थक कहा जा सकता है, इस प्रकार उपेक्षा करेंगे, तो हम जीवन के किसी भी विभाग में वास्तविक उन्नति कर सकने में असमर्थ होंगे। इस विषय में सुप्रसिद्ध भारतीय विदुषी श्रीमती हंसा मेहता ने एक लेख में कितने ही महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये हैं, जिसका कुछ अंश यहाँ दिया जाता है :—

"कुछ लोग तर्क करते हैं कि हिन्दुस्तान जैसे ग़रीब देश में जहाँ लोगों को शाम तक किसी तरह अपना पेट पालने की ही चिन्ता लगी रहती है, घर को अलंकृत बनाने का विचार उत्पन्न होना असम्भव है। किन्तु जहाँ तक घर की सजावट का सम्बन्ध है, यह तर्क ठीक नहीं मालूम होता। घर को सजाने में निर्धनता बाधक नहीं हो सकती। अगर लोगों में सजावट की रुचि हो तो किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है। धनवान व्यक्तियों में भी यह रुचि सदा नहीं दिखलाई पड़ती। अनेक मालदार आदमियों को यह नहीं मालूम रहता कि घर में किस-किस चीज़ की व्यवस्था होनी चाहिए, उसे किस तरह सजाना चाहिए कि वह सुन्दर दिखाई पड़े।

पश्चिम में घर को अलंकृत बनाने की कला पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। आधुनिक काल में घरों की सजावट कैसी होनी चाहिए, इसके सम्बन्ध में वहाँ अनेक पुस्तकें लिख डाली गई हैं। लोगों को घर की सजावट की शिक्षा देने के लिए वहाँ समय-समय पर आदर्श गृहों का प्रदर्शन किया जाता है। घरों को सजाना और अलंकृत बनाना कुछ लोगों का पेशा ही बन गया है। जो लोग यह पेशा करते हैं उनकी आजी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आमदनी होती है और वे सुख से रहते हैं। वहाँ यह व्यवसाय लाभजनक सिद्ध हो रहा है। वे सब तरह की युक्तियों और आविष्कारों का उपयोग कर घर को इस तरह सजाते हैं कि घर के लोगों को किसी तरह की असुविधा नहीं होती और न उन्हें किसी काम के लिए अधिक परिश्रम ही करना पड़ता है। इस प्रकार के सजाए हुए घर में गृहस्वामिनी को गृहस्थी का काम भारस्वरूप नहीं प्रतीत होता। पश्चिम के घरों से भारतीय गृहस्थ कई बातें सीख सकते हैं।

घर को उपयोगी और अलंकृत बनाने की पहली ज़िम्मेदारी मकान बनाने वाले पर होती है। भारतीय गृह-निर्माताओं का यह कर्तव्य है कि वे आधुनिक काल की नई परिस्थितियों तथा जलवायु का ख़याल करके मकान का नक्शा तैयार करें। घरों में सब तरह की सुविधाओं और आराम की व्यवस्था होनी चाहिए; चाहे वे घर मालदारों के लिए बनते हों और चाहे ग़रीबों के लिए। आज हम देखते हैं कि धनवान लोगों की कोठियों में सब तरह की सुविधाओं का इन्तज़ाम रक्खा जाता है, किन्तु ग़रीबों के लिए जो घर बनाये जाते हैं, वे मनुष्यों के रहने लायक़ नहीं होते। केवल एक कमरे वाले जो घर बनाये जाते हैं वे घर का खाका तैयार करने वालों अथवा घर का निर्माण करने वालों के गर्व की चीज़ नहीं हैं। लोग तर्क करते हैं, कि गाँवों में यही लोग एक कमरे वाले झोंपड़ों में रहते हैं अतः नगरों में उनके लिए अधिक सुविधाओं की व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु यह तर्क ठीक नहीं है। गाँवों में झोंपड़ों के बाहर काफ़ी खुली जगह सुलभ रहती है और गाँव वाले उसका उपयोग कर सकते हैं। नगरों में यह सुविधा नहीं रहती। उक्त तर्क से यह स्पष्ट होता है कि जिन सामाजिक परिस्थितियों में लोगों को रहना पड़ता है उन पर मकान बनाते समय ध्यान नहीं दिया जाता।

इसके बाद घर को अलंकृत बनाने की कला का नम्बर आता है। अलंकृत करने वाले का काम और ज़िम्मेदारी का होता है। उसे उन त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करना पड़ता है जो मकान बनाते समय रह जाती हैं। हमारे देश में ऐसे लोग नहीं पाये जाते जो घर सजाने का पेशा करते हों। अधिकांश लोगों की रुचियों का विकास भी नहीं होता। उपयुक्त रहनुमाई न होने से तथा कलापूर्ण रुचि के अभाव के कारण कुछ धनवान व्यक्ति भी जो बड़ी से बड़ी रक़म ख़र्च करने के लिए तैयार रहते हैं, अपने घरों को सर्वोत्तम रूप से सजा नहीं पाते। किन्तु घर सजाने की निपुणता की वास्तविक परीक्षा तब होती है जब कम हैसियत के लोगों के घर सजाने का प्रश्न आता है। अगर बुद्धिमानी से काम लिया जाय तो ऐसे घरों को भी इस तरह सजाया जा सकता है कि वे सुन्दर दिखाई पड़ने लगें।"

* * *

समान अधिकार की माँग

आजकल हमारे देश में समाज-सुधार के सम्बन्ध में बड़ी खींचा-तानी चल रही है और विशेष कर स्त्रियों के अधिकारों के सम्बन्ध में तो बहुत अधिक मतभेद देखने में आता है। हम यहाँ उन लोगों की बात नहीं कहते जो मनु महाराज के आदेशानुसार स्त्री का किसी भी दशा में स्वाधीन होना पाप समझते हैं, अथवा जो उनको केवल वंश-क्रम को स्थिर रखने का एक साधन मात्र समझते हैं, वरन् हम उन लोगों में भी, जो सार्वजनिक रूप से समाज-सुधारक स्वीकार किये जाते हैं, स्त्री-स्वाधीनता और स्त्रियों के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में ज़मीन-आसमान का अन्तर देखते हैं। जब कि एक सब कुछ सुधार करने पर भी स्त्रियों को गृहलक्ष्मी के रूप में ही देखना चाहते हैं, दूसरे उनको सार्वजनिक क्षेत्र में लाकर पुरुषों के बिल्कुल समकक्ष या उनसे भी चार क़दम आगे पहुँचा देना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में आजकल अनेक व्यक्ति प्रायः वाद-विवाद करते रहते हैं, पर यदि वे इस बात को स्मरण रखें कि इस समस्या का निर्णय स्त्रियाँ ही अधिक अच्छी तरह कर सकती हैं, तो उनका बहुत सा परिश्रम और समय बच जाय। इस विषय में महिलाओं में मतभेद न हो, यह बात नहीं है, तो भी वे जो कुछ कहती हैं, अपनी अवस्था

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और आवश्यकताओं को समझ कर कहती हैं, न कि कोरी भावुकता अथवा आदर्शवादिता के आधार पर। इस सम्बन्ध में हाल ही में बाँकुड़ा महिला सम्मेलन की सभानेत्री कुमारी लावण्यलता चन्दा ने जो उद्‌गार प्रकट किये हैं, वे वास्तव में विचारणीय हैं :—

"आज हम अपने घरों के संकीर्ण क्षेत्र में बन्द होकर रहना नहीं चाहतीं। हमारे राष्ट्र को जिन कठिनाइयों और कष्टों का सामना करना पड़ रहा है, वे परिमाण में बहुत अधिक हैं और दिन पर दिन वे जटिल होते जाते हैं। अगर हम इन समस्याओं को हल करना चाहते हैं, तो हमको इन पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करना चाहिये। इस समय संसार के विभिन्न राष्ट्रों में राजनैतिक, सामाजिक या आर्थिक क्रान्तियाँ हो रही हैं और उनका प्रभाव भारतवर्ष पर भी पड़ रहा है।"

इसमें सन्देह नहीं कि वर्तमान समय में समस्त संसार में जो राजनैतिक और सामाजिक उथल-पुथल मची है, उसका प्रभाव भारत पर पड़े बिना नहीं रह सकता। इसलिये हमारा कल्याण इसी में है कि हम रूढ़िवादिता को छोड़ कर परिवर्तन की इन शक्तियों को पहिचानें और उनके अनुसार मार्ग का अनुसरण करना सीखें।

* * *

माता स्वरूपरानी नेहरू का स्वर्गवास

गत १० जनवरी को राष्ट्र के प्रमुख नायक पं० जवाहरलाल नेहरू की माता पूजनीया स्वरूप रानी नेहरू का स्वर्गवास हो गया। इस सम्वाद को समस्त देश ने शोक के साथ सुना और प्रत्येक छोटे बड़े भारतीय ने उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। वास्तव में माता स्वरूप रानी ने अपने त्याग और तपस्या द्वारा जो गौरवान्वित पद प्राप्त किया था उसका उदाहरण सहज में मिल सकना कठिन है। वे वीर-पत्नी और वीर-जननी ही नहीं थीं, उन्होंने वृद्धावस्था में स्वयं भी असीम साहस और तेजस्विता का परिचय दिया था। उन्होंने देश की पुकार सुनकर राजा महाराजाओं के तुल्य ऐश्वर्य को ठुकरा दिया और अपने प्राणप्यारे पति और आँखों के तारे पुत्र को घोर सङ्कट के मार्ग पर बढ़ने की सहर्ष अनुमति दी। १९३२ के आन्दोलन में उन्होंने जिस प्रकार प्रयाग में जनसमूह का नेतृत्व किया और पुलिस की लाठियों से घायल हुईं वह कथा भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगी। हम पूज्य मृतात्मा के नाम पर सादर श्रद्धाञ्जलि देते हैं और कामना करते हैं कि उनका दिव्य आत्मबल सदा भारतवासियों को देश-सेवा के पवित्र मार्ग में अनुप्राणित करता रहे।

* * *

स्वर्गीय शरतचन्द्र चटर्जी

बङ्गाल के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्रीशरतचन्द्र चटर्जी के देहावसान से भारतवर्ष का एक ऐसा महान कलाकार उठ गया जिसने स्वदेश में ही नहीं, विदेशियों की दृष्टि में भी भारतीय साहित्य को गौरवान्वित बनाया था। उन्हें कहानी और उपन्यास लिखना आरम्भ किये ३० वर्ष से अधिक नहीं हुये थे, पर इसी बीच में उन्होंने अपने नाम को भारतीय साहित्य में अमर कर दिया। बङ्गभाषा-भाषी उनको अपने समय का सर्वोच्च कलाकार मानते हैं और इसमें सन्देह नहीं कि उनकी रचनाएँ आने वाले बहुसंख्यक वर्षों तक ऐसे ही सम्मान और उत्सुकता के साथ पढ़ी जायँगी जैसी कि उनके जीवन-काल में पढ़ी जाती थीं। वे वास्तविक अर्थ में साहित्यिक थे और अन्तिम समय तक उनके जीवन का एकमात्र ध्येय यही रहा। साहित्य की साधना में ही उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था, यहाँ तक कि इस मार्ग के अनुगामी बन कर वे आजन्म अविवाहित और गृहस्थी के बन्धनों से पृथक् रहे। आज भारतवासी सरस्वती के इस वरद पुत्र को याद करके शोक-संतप्त हैं और एक स्वर से उनकी कीर्ति गान कर रहे हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

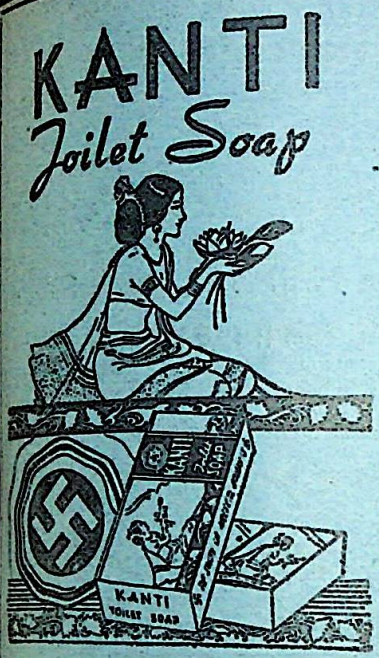

"स्वस्तिक" के चार रत्न

जिनकी धूम सारे हिन्दोस्तान में मची हुई है

"कान्ती"—नहाने के साबुन में एक अद्भुत सुगन्ध है, जो नहाने के बाद बहुत देर तक रहती है तथा शरीर कमल के समान नरम हो जाता है। क़ीमत कम तथा भारी टिक्की।

"शिकाकाई"—शिकाकाई एक चमत्कारिक फल है, जिसके रस से यह सुगन्धित साबुन बना है। इस से बाल धोकर प्रतिदिन स्वस्तिक का "परफ़्यूमर केस्टर आइल" लगाने से स्त्री या पुरुष के बाल शीघ्र बढ़कर रेशम के समान हो जायँगे। योरोपियन महिलाएँ व्यवहार करती हैं।

"परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल"—यूरोप, अमरीका, भारतवर्ष तथा अन्य-अन्य देशों के डॉक्टरों का मत है कि बालों को शीघ्र बढ़ाकर रेशम के समान करने में, माथा ठण्डा रखने में तथा माथे की ख़ुश्की दूर करने में 'परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल" से अधिक गुणकारी तथा Lubricating दूसरा तेल नहीं है। सुगन्धित मनमोहक तथा यह तेल बहुत ऊँचे दर्जे का बना हुआ है। एक बार इसे व्यवहार करके आप दूसरा तेल पसन्द न करेंगे।

"सुपरफ़ाइन"—स्वस्तिका "सुपरफ़ाइन" साबुन रेशमी, ऊनी, सूती तथा रोज़ व्यवहार के धोने के साबुनों में सबसे अच्छा है। यह साबुन कम घिसता है तथा क़ीमत भी कम है।

स्वस्तिक का सामान सब जगह बिकता है।

डिस्ट्रिब्यूटर्स :—

ओरिएन्टल ट्रेडिङ्ग कारपोरेशन, पुराना फीलख़ाना, कानपुर। मदन स्टोर जान्सटनगञ्ज इलाहाबाद। जे० सी० राय सुराना एण्ड सन्स, गोला गली, बनारस। रस्तोगी जनरल स्टोर्स, मुरादाबाद। रा० सा० प्यारेलाल एण्ड सन्स, अलमोड़ा। गर्ग एण्ड कं० मुज़फ़्फ़रनगर। मोर्डन मरकेन्ट्राइल हाउस, बेली बाज़ार, मेरठ। प्यारेलाल एण्ड सन्स, बदायूँ। वाल्मव ब्रदर्स, लशकर, ग्वालियर। अग्रवाल ट्रेडिङ्ग कं० तिकोनिया बाज़ार, आगरा। स्वस्तिक स्टोर्स मक़बूलगञ्ज, लखनऊ। स्टूडेन्ट्स स्टोर्स, फ़ैज़ाबाद। रामकुमार स्वदेशी स्टोर्स, सुलतानपुर। शुद्ध खादी भण्डार फ़िरोज़ाबाद। एस० डी० ब्रदर्स, इटावा। मुन्नालाल सुरेन्द्रनाथ, मथुरा। मेसर्स वासा एण्ड कं०, बरेली।

(P. C. DUTT.)

SWASTIK OIL MILLS LTD., BOMBAY 15.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफ़ा ११ यू० पी० इनकम्बर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दर्जा दोयम जिला सीतापूर

मुक़दमा नम्बर २८० सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी सन् १९३ ई०

१—भारतसिंह वल्द कोयलीसिंह, २—त्रिभुवनसिंह वल्द भारतसिंह, ३—हरहरबख़्शसिंह व ४—रंधीरसिंह व ५—राजेन्द्रसिंह पिसरान सूरजबरजनसिंह अक़वाम ठाकुर सा० कुचलाई परगना गोंदलामऊ तहसील मिसरिख, जिला सीतापूर.....मायलान

बनाम

—भीकमसिंह वल्द कुँवरसिंह कौम ठाकुर सा० मौ० कुचलाई परगना गोंदलामऊ त० मिसरिख जि० सीतापुर, २—लछमन वल्द दुरगा कौम ब्राह्मण सा० मौ० नरहरपुर प० गोंदलामऊ त० मिसरिख जि० सीतापुर, ३—रामसिंह व० उदयसिंह कौ० ठाकुर सा० बस्तीडीह परगना वादी त० सिधौली जि० सीतापुर, ४—गङ्गाबख़्शसिंह वल्द देवसिंह कौम ठाकुर सा० किंधौलिया परगना वादी त० सधौली जि० सीतापुर, ५—मुनेसरसिंह वल्द पृथीपालसिंह कौम ठाकुर सा० किंधौलिया प० वादी त० सिधौली जि० सीतापुर, ६—देवीसिंह वल्द पृथीपालसिंह कौम ठाकुर सा० किंधौलिया प० वादी त० सिधौली जि० सीतापुर, ७—बलदेव व केदार कौम ब्राह्मण सा० गड़ौल परगना गोंदलामऊ त० मिसरिख जि० सीतापुर

हरगाह कि जायदाद मुशर्रह जैल दरख़्वात कुनिन्दा व क़र्ज़ख़्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख़्वास्त सराहत क़र्ज़ा में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है। लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख़्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुशर्रह जैल हासिल हो, अन्दर मियाद तीन माह तारीख़ रायां होने नोटिस ग़ज़ट अदालत हाज़ा में पेश करे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तफ़सील जायदाद

नम्बर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व जिला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौवय्यत हकीयत	मालगुजारी	लोकल रेट
				मालिकान	रु० आ० पा०	रु० आ० पा०
१	कुचलाई, पर० गोंदलामऊ त० मिसरिख जि० सीतापुर	कुचलाई खास	½ मिन० १६ आ० तादादी १८-५० खा० खेवट नं० १३		३६-१४-०	२-११-०
२	,,	खानपुर	१ आ० मिनजुमले १६ आ०, तादादी ११-३१ खा० खे० नं० १	,,	१४-६-०	१-१-०
३	डकहा, पर० गोंदलामऊ त० मिसरिख जि० सीतापुर		१ आ० मिनजुमले १६ आ०, तादादी ६३-१६ खा० खे० नं० २	,,	५३-४-०	५-१-०
४	नरहरपुर, पर० गोंदलामऊ त० मिसरिख जि० सीतापुर		२ आ० मिनजुमले १६ आ०, तादादी ३५-५६ खा० खे० नं० १	,,	४२-२-०	४-३-६
५	मिसरापुर, पर० गोंदलामऊ त० मिसरिख जि० सीतापुर	थोक ठाकुरप्रसाद	½ मिन० १६ आ०, तादादी १०-८० खा० खे० नं० १	,,	७-८-०	०-१२-०
६	थरपन, पर० गोंदलामऊ, त० मिसरिख जि० सीतापुर		हकीयत मुतफ़रिका ½ मिनजुमले १६ आ०, तादादी १-४० खा० खे० नं० १०	,,	१-१४-०	०-३-०

दस्तखत हाकिम

मुन्सरिम

अदालत मुन्सफी सीतापुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकम्बर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला सीतापूर

मुक़दमा नम्बर २१९ सन् १९३७ ई०

तारीख पेशी १०—२ सन् १९३८ ई०

१—छुटकऊ वल्द दुलामी
२—गयाप्रसाद उर्फ बाँकेलाल वल्द व पिदर खुद } तेली सा० अछीपुर हाल रकाबगञ्ज लखनऊ

बनाम

१—पोले वल्द गौरीशङ्कर
२—बिन्दाप्रसाद वल्द रघुबर } ब्राह्मण सा० तड़ोया परगना गोंदलामऊ जि० सीतापूर
३—नरायन वल्द मतनू तेली सा० मैयापुर परगना जोडवा जिला हरदोई

हरगाह कि जायदाद मुशर्रह जैल दरख्वास्त कुर्निंदा व क़र्जख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत क़र्ज में हस्ब दफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई० में जाहिर की है लिहाजा हर खास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुशर्रह जैल हासिल हो अन्दर मीयाद तीन माह तारीख शाया होने नोटिस गजट के अदालत हाजा में पेश करे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तफ़सील जायदाद

नम्बर शुमार	नाम मौज़ा व परगना व तहसील व ज़िला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौवैयत की हक़ीयत	मालगुज़ारी	लोकल रेट
(१)	खाले गढ़ी प० गोंदला-मऊ त० मिसरिख ज़ि० सीतापुर		खा० नं० १६ थांक डालसिंह व नम्बरदारी दिग्विजयसिंह ता० ए० १७ २३ डि० हि० १६ मि० ३५	हक़ ज़मींदारी	२३।।।=)	
(२)	गोपालपुर ,,	जालपुर	खा० नं० १३ व नम्बरदारी दिग्विजैसिंह ता० ए० १ ८० डि० हि० १२४ महफूज रहन बक़ब्ज़ा मुरतहन व हि० ½	,,	२१।।।=)	
(३)	गोपालपुर ,,	पूरनपुर	खा० नं० ११ व नम्बरदारी भवानीप्रसाद ता० ए० ६६ ५१ डि० महफूज रहन व कब्ज़ा मुरतहन ब० हि० ½	,,	२।।।-)	

तफ़सील जायदाद हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी जो क़ाबिल कुर्क़ी नीलाम है।

१—प्रोनोट ता० ३०-४-३४ नविस्ता जङ्गी मौ० छुटकऊ तादादी १२०)
२—प्रोनोट ता० १-५-३४ नविस्ता लेखई मौ० छुटकऊ तादादी १५०)
३—प्रोनोट ता० २६-२-३२ नविस्ता लछमन वग़ैरा मौ० छुटकऊ तादादी १६।।)
४—एक क़िता बाग़ अम्बा वग़ैरा वाक़ै मौ० अलीपुर प० गोंदलामऊ तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुर महदूदा ज़ैल

पूरब खेत ला० गुरुप्रसाद, पच्छिम परती, दक्षिण गज़ियारा व कुवाँ, उत्तर परती

कोई फ़ाज़िल जायदाद मुन्दरजे बयान तहरीरी महाजनान नहीं है।

दस्तख़त हाकिम
मुन्सरिम
अदालत मुन्सफ़ी सीतापूर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोटिस हस्ब दफा ११ यू० पी० इनकम्बर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०

ब अदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम जिला सीतापूर

मुक़दमा नम्बर २०२ सन् १९३६ ई०

तारीख़ पेशी सन् १९३ ई०

१—प्रभुदयाल वल्द ठाकुरप्रसाद साकिन गोपलापूर परगना मछरेहटा तहसील मिसरिख, २—जैदयाल हेड टीचर मिडिल स्कूल गोरखपूर, ३—मु० राजेश्वरीदेवी, ४—मु० कौसिल्यादेवी, ५—श्रीकान्त वल्द जैदयाल बविलायत पिदर खुद गोरखपूर.....सायलान

बनाम

१—जौजे सूरजबख्शसिंह तालुकदार ओ० बी० आई० तालुकदार साकिन कमलापूर डा० कमलापूर जिला सीतापूर, २—लालजीसिंह व बलभद्रसिंह साकिन रामकोट तहसील सीतापूर, ३—जदुनाथसिंह वल्द पूरनसिंह असिस्टेण्ट मैनेजर रियासत रामनगर धमेडी जिला बाराबङ्की सा० सुर्जुनपुर सीतापूर, ४—महादेव बैङ्कर रस्तोगी साकिन रस्तोगी टोला नि० लखनऊ, ५—मनोहरलाल वल्द जोतसिंह साकिन सरफापूर परगना खैराबाद जिला सीतापूर

हरगाह कि जायदाद मुशर्रह ज़ैल दरख्वास्त कुनिंदा व क़र्ज़ख्वाहान ने अपने बयान तहरीरी व दरख्वास्त सराहत क़र्ज़ा में हस्बदफ़ात ८ व १० यू० पी० ऐक्ट २१ सन् १९३४ ई० में ज़ाहिर की है, लिहाज़ा हर ख़ास व आम को इत्तिला दी जाती है कि अगर किसी शख्स को कोई हक़ निस्बत जायदाद मुशर्रह ज़ैल हासिल हो अन्दर मीयाद तीन माह तारीख़ शाया होने नोटिस गज़ट के अदालत हाजा में पेश करे।

फिहरिस्त (ब) निस्बत हक़ीयत जमीदारी मुन्दरजह बयान तहरीरी सायल दरख्वास्त कुनिन्दा

तफ़सील जायदाद

नम्बर शुमार	नाम मौजा व परगना व तहसील व जिला	नाम मुहाल	तादाद हिस्सा व खाता खेवट	नौवय्यत की हक़ीयत	मालगुज़ारी लोकल रेट
१	मौजा कटिया प० मछरेहटा त० मिसरिख		हि० ½ पाई रहन बकब्जे जौजे सूरजबख्शसिंह तालुकदार कसमंडा	महफ़ूज़ुल रहन ६ पाई	
२	मौजा कटिया प० मछरेहटा त० मिसरिख		हि० ३½ मौजा कटिया खरीदकर्दा हि० सर्दारसिंह ताबेदार		
३	मौजा गोपलापूर प० मछरेहटा त० मिसरिख		४½ मौजा गोपलापूर तहसील मिसरिख		

फिहरिस्त (ज) निस्बत तफसील जायदाद

१—मकानात दो किता वाकै गोपलापूर, २—एक किता मकान वाकै गोपलापूर जिसका कब्जा बरअदायगी ८=) दीगर हिस्सेदारान से मिलेगा, ३—अश्व १, ४—गाय १, ५—गाड़ी १, ६—भैंस १, ७—पड़िया १

दस्तखत हाकिम
मुन्सरिम
अदालत मुन्सफ़ी सीतापुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुफ़्त!

❀ चाँद के इसी अंक का क्रोड़ पत्र ❀

एक दम मुफ़्त !!

H. O. नम्बर.....

H. O. तारीख़.....१९३

नक़द इनाम २५१)

गुप्त चित्र प्रतियोगिता नं० २ (चित्र नं० १)

आवश्यकता है।

हमें कुछ ऐसे आफ़ीसरों की ज़रूरत है जो किसी हमारा इन्श्योरेन्स कम्पनी में अच्छे पद पर काम कर चुके हों तथा हिन्दी अंग-रेज़ी की अच्छी योग्यता के साथ कुछ उर्दू भी जानते हों। टाइपिस्ट तथा एक शार्ट हैंड टाइ-पिस्ट की भी ज़रूरत है। वेतन योग्यतानुसार— जितनी भाषा जानते हों सब में अपने हाथ से दरख़्वास्त लिखकर भेजें। यदि कोई सार्टीफिकट हो, तो उसकी कापी भी भेजें।

अपना पूरा पता—

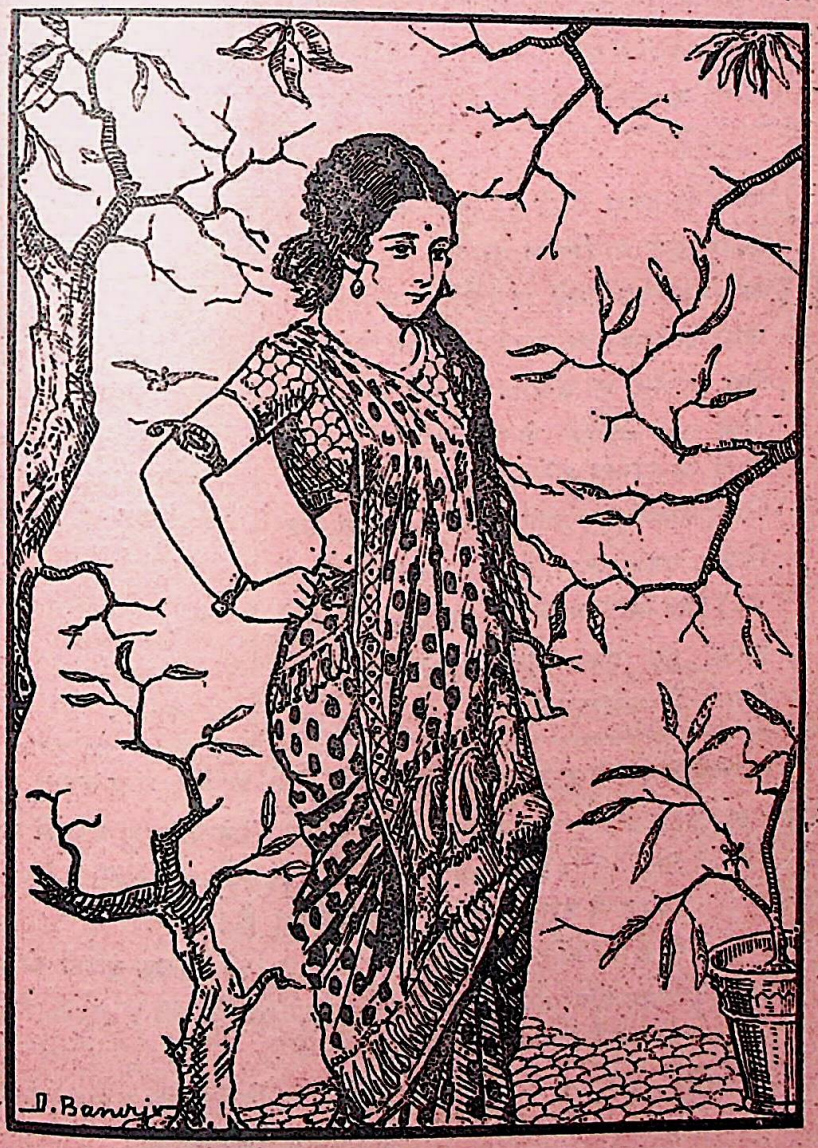

इस चित्र में स्त्री पुरुष मिलाकर कुल ७ चित्र छिपे हुए हैं। सातों खोजकर निशान कर दो, सही उत्तर मिलने पर एक सुन्दर पाकेट कलैण्डर मय नं० २ चित्र के मिलेगा। साथ साथ नक़द २५१) रु० जीतने के लिये नियम पीठ पर पढ़ें।

बजरंगदास गुप्त—जनरल मैनेजर

नवजीवन इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड,

जलपाईगुड़ी (बंगाल)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवजीवन पुरस्कार प्रतियोगिता भण्डार

(सब इनाम एकदम मुफ्त)

एजेण्टों एवं बीमादारों को इनाम—

जो चित्र पीठ पर छपा हुआ है— इस इनाम में हर आदमी भाग ले सकता है। इसके अलावा इसी तरह चित्र प्रतियोगिता के दो और इनाम बिलकुल मुफ्त सिर्फ एजेन्टों एवं बीमादारों को देने की गरज़ से अलाहदा २ निकालने का विचार होरहा है। यदि आप रुपया कमाने के इच्छुक हैं तो एजेन्सी के लिए दरख्वास्त करें और यदि बीमा नहीं कराया है तो बीमा करालें ताकि एक साथ तीन २ इनामों में भाग ले सकें।

लेखकों को इनाम:— १७७) रुपया

यदि आप बीमा विषय पर कुछ भी लिख सकते हैं तो नियम मंगालें। पहले यह प्रतियोगिता ३१ जनवरी को खतम करने की बात थी अब तारीख और बढ़ाई जारही है।

गुप्त चित्र प्रतियोगिता के नियम:—

[१] तस्वीर के अन्दर छिपे हुए चित्रों को खोजकर लकीर खींचो या निशान लगादो।

[२] नम्बर एक चित्र मिलने पर दूसरा चित्र मिलेगा। नम्बर दो मिलने पर नम्बर तीन चित्र मिलेगा।

[३] जिस आफ़िस की मारफ़त आपको यह चित्र मिले उसी आफ़िस से आप दूसरा चित्र लेने आदि का सम्बन्ध करें।

[४] जितने सज्जनों का तीनों चित्रों का उत्तर सही मिलेगा उनमें १५१) दो चित्र सही वालों में ७०) और सिर्फ़ प्रथम चित्र सही वालों में ३०) इनाम, इस प्रकार भाग्य परीक्षा (लाटरी) के हिसाब से बाँटा जायगा।

प्रथम १५१) इनाम का निर्णय होगा। जिस भाग्यशाली को यह मिल जायगा, उसका नाम निकाल कर, तीनों सही वाले व्यक्ति दो सही वालों के साथ मिला कर दूसरे इनाम का निर्णय होगा। इसी तरह बाक़ी सभी को इकट्ठा कर तीसरे इनाम का निर्णय होगा।

[५] कोई व्यक्ति अपने नाम में या अपने घर के फ़र्ज़ी कई नामों में चित्र भेजेंगे, वे एक ही लाभ उठा सकेंगे क्योंकि इसका निर्णय पूरी जाँच के साथ किया जाता है।

[६] जनरल मैनेजर का निर्णय इस प्रतियोगिता के सम्बन्ध में हर दशा में सही तथा क़ानूनी माना जायगा। उस पर कोई आपत्ति नहीं कर सकेगा।

नवजीवन ने शुरू से ही बीमादारों के हितों का जो ध्यान रक्खा है वही इसकी लगातार शानदार उन्नति का कारण है। साथ २ हमारी नई २ योजनाओं ने बीमा संसार में तहलका मचा दिया है जैसे—

[१] सिर्फ़ १), २) मासिक लेकर ५००) १०००) तक बच्चों के विवाह के समय तथा दुगना रुपया विवाह से पहले ही एडवांस दिया जाता है।

[२] सिर्फ़ १) प्रतिमास लेकर मृत्यु के बाद ५००) तक दर्जनों को ही प्रति मास मिल रहा है।

[३] जीवन बीमा की सुविधायें तो एक दम ही निराली हैं। इस विभाग में आप २५०) से हज़ारों का चाहे जितना बीमा करा सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिये हमारे एजेण्ट से मिलिये या हमारा साहित्य पढ़िये।

उन्नति का दिग्दर्शन:—

बीमा जारी संख्या १७००० से अधिक
जीवन-बीमा का नया काम (सिर्फ़ ६ मास में) ७०००००) से अधिक
क्लेम चुकाया ८००००) से अधिक
हिस्सेदारों को तीसरी बार लाभ दिया १२॥) प्रतिशत

२ लाख के स्केलानुसार गवर्नमेण्ट सिक्यूरिटी व रिज़र्वफ़ण्ड जमा है।

कम्पनी के आफ़िसेज़—देहली, भागलपुर, जुगसलाई, टाटानगर, गौहाटी (आसाम), कानपुर—बनारस इत्यादि जनरल मैनेजर

—नवजीवन इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड

जलपाईगुड़ी (बंगाल)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गल्प-संसार-माला' का आर्डर देते समय आप प्रकाशकों के प्रसिद्ध पत्र 'हंस' की एक प्रति देखने के लिए मँगा सकते हैं और उनका बड़ा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिचय: भारत में ६ प्रमुख जीवित भाषाएँ हैं जिनका अपना कहानी साहित्य है—हिन्दी, उर्दू, बंगाली, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ी, और मलयालम। इनके अतिरिक्त ४ और ज़बानें भी हैं—आसामी उड़िया, सिंधी, गुरुमुखी। हमारी योजना यह है कि पहली ६ भाषाओं में प्रत्येक से १० या अधिक सर्वश्रेष्ठ आधुनिक कहानियाँ एक-एक पुस्तक में संग्रहीत की जाँय और इन संग्रहों की यह माला 'गल्प-संसार-माला' के नाम से प्रसिद्ध हो। पहले इन ६ भाषाओं का संग्रह तैयार होगा। १० वें भाग में अंतिम चार ज़बानों की मिली हुई कहानियाँ पूरी की जायँगी। आरम्भ में भारत से, इस प्रकार, १० भाग हुए। इसके उपरान्त संसार की और भी भाषाओं से कहानियाँ इन पुस्तिकाओं में संग्रहीत की जायँगी जैसे अंग्रेज़ी, फ्रेंच, रूसी आदि और यह माला ३-४ वर्षों में संपूर्ण होगी। किन्तु प्रत्येक भाग अपने आप में पूर्ण होगा और इसलिए यह लम्बी अवधि भयकर न होनी चाहिये। प्रत्येक भाग में १५०-२०० पृष्ठों तक रहेंगे, काग़ज़ सुन्दर, सफ़ेद ग्लेज़ रहेगा; मूल्य बेहद सस्ता, यानी आठ आने प्रति भाग और स्थायी ग्राहकों को **छः आने** में मिलेगा। प्रत्येक भाग का नामकरण अलग-अलग केवल—'हिन्दी' 'गुजराती' आदि। प्रथम भाग, 'हिन्दी' तैयार है। दूसरा भाग 'गुजराती' प्रेस में है। और भागों की सूचना समय-समय पर पत्रों द्वारा मिलती रहेगी। भाग प्रतिमास निकलेंगे। इस माला की सबसे बड़ी विशेषता इसकी प्रामाणिकता है जिसके लिए प्रकाशकों ने सभी साहित्यकारों तथा संस्थाओं की मदद ली है और अथक परिश्रम किया है; जिसके लिए प्रकाशकों का नाम ही पर्याप्त है।

'गल्प-संसार-माला' के प्रथम भाग—'हिंदी का गल्प-संसार' की सूची

प्रेमचन्द	... ईदगाह	सियारामशरण गुप्त	... पथ में से
जयशंकर'प्रसाद'	... मधुआ	कमलादेवी चौधरी	... स्वप्न
विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'	... इक्केवाला	'अज्ञेय'	... शत्रु
'सुदर्शन'	... एथेंस का सत्यार्थी	चंद्रगुप्त विद्यालंकार	... एक सप्ताह
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	... झलमला	राधाकृष्ण	... मैना
जैनेन्द्रकुमार	... खेल	उषादेवी मित्रा	... प्यासी हूँ
भगवतीचरण वर्मा	... प्रायश्चित्त	कमलाकान्त वर्मा	... पगडण्डी
भगवतीप्रसाद वाजपेयी	... उपहार		

पृष्ठ-संख्या, २४०; मूल्य ॥) मात्र!

माला का हिसाब :

१० भागों का मूल्य ॥) प्रति भाग से	...	५)
पूरी माला के सदस्यों को कमीशन २५%	...	१।)
		३।॥)

पोस्टेज प्रति अंक के हिसाब से १।), जिसका आधा प्रकाशकों के ज़िम्मे रहेगा, यानी ग्राहकों के ज़िम्मे ...॥=)

पूरे सेट का मूल्य .... ४।=)

माला के नियम :

(१) पूरे सेट के खरीदारों को ही कमीशन मिलेगा।

(२) ४।=) अग्रिम मनीआर्डर से आना चाहिये, वी० पी० नहीं भेजी जायगी।

(३) फुटकर प्रतियों पर कोई रियायत नहीं की जा सकेगी।

आज ही अपना मूल्य मनीआर्डर से भेजिये—

सरस्वती-प्रेस, ['गल्प-संसार-माला' विभाग] बनारस।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी मुसीबत की ज़ञ्जीरें काट दीजिये

दैवी शक्ति का साक्षात प्रभाव दिखाने वाली पुस्तक ज्योतिषप्रकाश उपनाम "भाग्योदय" बिलकुल मुफ्त! आज ही मँगाइए। डाक-व्यय भी माफ़ है।

पता :—

त्रिपाठी अस्ट्रालोजिकल इन्स्टीट्यूट (रजिस्टर्ड)
कसमण्डा स्टेट पो० कमलापुर,
जिला सीतापुर

योगेन्द्र कवच

केवल इस यन्त्र को धारण करने मात्र से ही आप कठिन से कठिन कामों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यन्त्र के चमत्कारी प्रभाव से आप बुरे ग्रहों के फेरे से बचे रहेंगे, दुश्मनों पर विजय पायँगे तथा जिसको आप चाहते हैं वह आपसे मिलने के लिए व्याकुल हो उठेगी, इस यन्त्र से आपको परीक्षा, मुकदमें, 'लाटरी', नौकरी, रेस, तरक्की, सन्तान तथा व्यापार से अतुल धन की प्राप्ति होगी, ऋण तथा भयङ्कर बीमारियों से आप मुक्त रहेंगे, यानी इस यन्त्र से आपका भाग्योदय होगा। बेफायदा साबित करने पर १००) रु० इनाम। मूल्य ताम्र २) रु०, चाँदी का ३।), सोने का ९) रु०।

पता—श्री महाशक्ति आश्रम,
नं० २० पो० परवलपुर (पटना)

"गुप्त-दान"

क्या कोई उदार दयावान् सज्जन हैं, जो एक ऐसे व्यक्ति की, जिसने अपनी प्रायः सारी अवस्था प्रतिष्ठापूर्वक व्यतीत की हो, जिसने धर्म कार्यों और देश-सेवा में भी भाग लेकर उनमें अपना धन भी व्यय किया हो, परन्तु जो अब अपनी अन्तिम अवस्था में अकस्मात् परम आपदा में ग्रस्त हो गया हो, १५०००) पन्द्रह सहस्र रुपयों के गुप्त-दान से सहायता देकर उसको इस घोर आपत्ति से मुक्त करके इस लोक और परलोक में अखण्ड पुण्य का लाभ करें। ऐसे परम सात्विक दानवीर इस पते पर अपनी उदारता का एडार खोलने की कृपा करें।

"गुप्त-दान"
C/o पोस्ट मास्टर, दरभङ्गा

इण्डियन टेलरिङ्ग कालेज

होशियारपुर नं० ३२ (पञ्जाब)

याद रक्खो "धनी पुरुष धनी नहीं, हुनरमन्द पुरुष धनी है।" इस हुनर को सीख कर अपनी सूटिङ्ग शाप खोल लें। संसार में हर जगह ज़रूरत है। नियमावली आज ही मँगवायें।

अद्वितीय पुस्तकें:—'हिन्दुस्तान का दर्ज़ी'

आठ भागों में—सब परिवार, पाठशालाओं के वास्ते। इसके पहले चार भाग गवर्नमेण्ट बिहार-उड़ीसा ने अपनी पाठशालाओं के लिये स्वीकार किये हैं। पहला भाग—१६ कमीज़, २५८ प्रश्न, कपड़ा लगाने पर ५६ चित्र १); दूसरा भाग—५ कोट, १७२ प्रश्न, ४८ चित्र १॥); ८ पाजामें ॥); फ्राक पिनीफोर ॥); ३ अङ्गी, ४ जम्पर, २ ब्लाउज़, पेटीकोट ।॥); वास्कट ।॥); ८ पतलून, नीकर ब्रीचिस १); छत्री १९२ प्रश्न ।॥) यह आठ पुस्तकें ५) "दौलत दर्ज़ियाँ"—दर्ज़ियों के वास्ते, पहला भाग ५)

"दर्ज़ी की पहली पुस्तक"—इसमें ८ लिबास की कटाई सिलाई के तरीके, २१ जम्परों के फैशन १) नियमावली आज ही मंगवायें। पता नोट कर लें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारे बच्चे का सर्वोत्तम मित्र

शुद्ध और सूक्ष्म रूप से औषधि मिश्रित क्यूटीकुरा टैलकम बच्चे के कोमल चर्म को ठण्डा और आरामदेह रखता है और उसे प्रसन्न बनाता है। नहाने के बाद छिड़कने से यह खुजली, जलन आदि से बचाता है और चर्म को ठीक दशा में रखता है।

क्यूटीकुरा टैलकम बहुत ही उत्तम और शुद्ध है और इसलिए समस्त संसार के डॉक्टर और दाइयाँ बच्चे की कोमल खाल के लिए उसकी सिफारिश करती हैं। यही कारण है कि स्त्रियाँ स्नान के बाद या जब कभी चर्म में जलन या खुजली होती है, इसका प्रयोग आनन्ददायक मानती हैं। यह पसीने को सोख लेता है, चर्म को चमकीला बनाता है और समस्त देह को तरोताजा रखता है।

क्यूटीकुरा टैलकम क्यूटीकुरा टैलकम

सभी कैमिस्टों और बाजार के दुकानदारों के यहाँ मिलता है। आज ही क्यूटीकुरा टैलकम लीजिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदर्श चित्रावली

दूसरा भाग

यदि आप छपाई-सफाई की सुन्दरता तथा उच्चकोटि की चित्रकला का रसास्वादन करना चाहते हों तो इस चित्रावली को एक बार अवश्य देखिए। जो लोग इसके प्रथम भाग को देख चुके हैं, वे इसकी उत्तमता का अन्दाज़ा सहज ही में लगा सकते हैं।

Copy of the Opinion Received from the Personal Assistant to the Hon'ble Dr. N. B. Khare, The Prime Ministr of C. P. & Berar on ADARSH CHITRAWALI Secod Part.

'The Hon'ble the Prime Minister has asked me to acknowledge the receipt of your Album. He appreciates very much the getup and the contents of the Album.

चुने हुए २२ तिरङ्गे चित्रों के साथ ही उनका परिचय भी अत्यन्त सुन्दर पद्यमय पंक्तियों में दिया गया है। वास्तव में यह आपके अलमारी की शोभा तथा गृहचैटियों को उपहार देने योग्य अलभ्य सामग्री है। मू० ४), स्था० ग्रा० से ३)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. A—1154

स्त्रियों के लिए अत्यन्त दुर्लभ पुस्तक

गर्भ-विज्ञान

यह इस गुह्य विषय की बहुत विस्तारपूर्वक व्याख्या करने वाली पुस्तक है। इसमें स्त्रियों के प्रधान अङ्गों का पूरा परिचय और उनमें उत्पन्न होने वाले दोषों की चिकित्सा बहुत समझाकर लिखी गई है। गर्भ कैसे स्थापित होता है और किन उपायों से उसको सुरक्षित रख कर निर्विघ्न सन्तान उत्पन्न हो सकती है, इस सम्बन्ध में बहुमंख्यक सूचनाएँ दी गई हैं। गर्भावस्था में स्त्रियों को किन-किन नियमों का पालन करना चाहिए, तथा इस अवस्था में उन्हें किन-किन रोगों अथवा आपत्तियों का सामना करना पड़ता है, उनका विस्तार सहित वर्णन तथा उनसे बचने के अचूक उपाय भी इसमें अच्छी तरह लिखे हुए हैं। वास्तव में पुस्तक सभी गृहस्थियों के बड़े काम की है। विशेषकर अपना हित चाहने वाली महिलाओं को तो इसे अवश्य देखना चाहिए। मूल्य केवल २॥), स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

Printed and Published for and on behalf of the Chand Press, Limited, by Satya Bhakta at The Fine Art Printing Cottage, 28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशक :—

बालों को बढ़ाने वाले
३७ अमूल्य तत्त्वों द्वारा बने हुए
कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)
से
अपने बालों की रक्षा कीजिए!

सौ में निन्नानवे लोगों का ख्याल है कि बालों के लिए चाहे जैसा तेल लगाने से काम चल जाता है, पर यह भारी भूल है। इसे कम ही लोग जानते हैं कि जो तेल लगाया जाय, वह बालों को बढ़ाने वाला होना चाहिए। यदि उसमें बाल बढ़ाने वाले तत्त्व न हों, तो वह बिलकुल फ़ायदेमन्द नहीं होता, बल्कि ऐसा तेल लगाने से बालों को पोषण न मिलने के कारण बाल गिरने लगते हैं। परन्तु अभी भी यदि आपके बालों की जड़ें साबुत हैं तो कामिनिया आयल से बालों को नवजीवन प्राप्त हो सकता है। इस तेल के अमूल्य वनस्पतियुक्त तत्त्वों से बालों की निर्बल जड़ें सजीव बन जाती हैं और बाल गिरने बन्द हो जाते हैं। मू० प्रति शी० १), ३ शी० २॥=), डाक-व्यय अलग

कामिनिया आयल
बालों का जीवन है।

इसके नियमित उपयोग से सुन्दर बालों से सिर भर जाता है।

केवल दो पैसे का टिकट भेज कर नमूने की शीशी मुफ़्त मँगा लेवें।

—::०::—

.खुशबू का राजा **ओटो दिलबहार** (रजिस्टर्ड)

ओटो दिलबहार को खुशबू का राजा कहा जाता है, क्योंकि इसकी खुशबू के आगे दूसरे सेण्ट की खुशबू नहीं ठहरती। इसके दो-चार बूँद रूमाल या रुई में लगा देने से फूलों के गजरे की जैसी खुशबू फैल जाती है। एक बार इस्तेमाल करने से फिर हमेशा इसी को इस्तेमाल में लाते रहेंगे। मूल्य आधा औंस की शीशी २) रुपए, पाव औंस की शीशी १।), १ ड्राम की शीशी ।॥), डाक-व्यय पृथक्। नोट—दो आने के टिकट आने पर नमूना मुफ़्त भेजा जायगा।

कामिनिया स्नो (रजिस्टर्ड)

महासुगन्धित, अत्यन्त ठण्डा और शीतल करने वाला। मुख पर कान्ति लाता है। सो जाने के पूर्व या धूप में से आने के पश्चात् मुख पर लगाइए। मूल्य प्रति शीशी ।॥) बारह आने। डाक-व्यय पृथक्

नहाने के लिए खुशबूदार साबुन

कामिनिया ह्वाइट रोज़ सोप—(रजिस्टर्ड), गुलाब के फूलों की मीठी खुशबू का साबुन।

कामिनिया सण्डल सोप—(रजिस्टर्ड), चन्दन की सुगन्ध का मनपसन्द साबुन।

३ बट्टी के १ बॉक्स का ।॥), डाक-खर्च अलग।

दो पैसे का टिकट भेजने पर किसी एक साबुन या स्नो का नमूना मुफ़्त भेजा जायगा।

सोल एजेण्ट—दी ऐङ्गलो इण्डियन ड्रग एण्ड केमिकल कम्पनी, २८५ जुमा मसजिद, बम्बई नं० २

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आपका कर्त्तव्य

हर युवा पुरुष के, चाहे वह विवाहित हो या अविवाहित, धनी हो या निर्धन कोई न कोई आश्रित अवश्य होता है और इसलिए आपका यह कर्त्तव्य है कि आप इस बात का उचित प्रबन्ध कर दें कि आपके पश्चात् उन निराधीन आश्रितों का भली प्रकार जीवन-निर्वाह हो जावे।

इस कर्त्तव्य का पालन करने में ओरियन्टल को अपनी सहायता करने दीजिए।

क्योंकि ६४ वर्षों से 'ओरियन्टल की पालिसियाँ' सहस्रों ऐसे कुटुम्बों की सहायता करती आ रही हैं जबकि उनके धन उपार्जन करने वाले पुरुषों की असामयिक मृत्यु हो गई।

कभी न कभी हर पुरुष
बीमा कराने योग्य नहीं रहता अतः
आपको अपने कर्त्तव्य पालन में विलम्ब न करना चाहिए

अपने जीवन का बीमा 'ओरियन्टल' से कराइए और अपने आश्रितों के भविष्य का उचित प्रबन्ध कीजिए।

ओरियन्टल

गवर्नमेण्ट सिक्योरिटी लाइफ एश्यूरेन्स कम्पनी, लिमिटेड

हेड ऑफिस—बम्बई स्थापित १८७४

विशेष विवरण के लिए लिखिए :—आर० जे० पीमेण्टा,

ब्राञ्च सेक्रेटरी, संयुक्त-प्रान्त,

ओरियन्टल बिल्डिङ्ग, हजरतगञ्ज, लखनऊ

शाखाएँ तथा प्रतिनिधि भारत भर में हैं।

विषय-सूची

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	सङ्केत (कविता)	[श्री० रामकुमार वर्मा]	२१३
२	मैं (गद्य-काव्य)	[श्रीमती सज्जनदेवी अग्रवाल]	२१४
३	अपनी बात (सम्पादकीय)		२१५
४	शुभाशुभ	[कुँवर राजेन्द्रसिंह]	२१८
५	ग्रामोन्नति कार्य में स्त्रियों के सहयोग की आवश्यकता	[श्री० शङ्करदयालु श्रीवास्तव]	२२७
६	चीन के आंचल में (कहानी)	[श्री० 'पहाड़ी']	२३१
७	गीत (कविता)	[श्रीमती विद्यावती 'कोकिल']	२३८
८	भारत में सामाजिक प्रजातन्त्र	[श्री० रामनारायण 'यादवेन्दु' बी० ए०, एल-एल० बी०]	२३९
९	हिन्दू-समाज पर वैवाहिक सङ्कट	[श्री० सन्तराम, बी० ए०]	२४१
१०	युवक कब और किससे विवाह करें	[श्री० प्रेमनारायण अग्रवाल, एम० ए०]	२४७

समय का सदुपयोग और
बुद्धि का विकास
कैसे हो ?

?

केवल सरल, सुन्दर एवं सुबोध पुस्तकें पढ़ने से
दोनों समस्याएँ हल हो जायँगी !

ऐसी पुस्तकें कहाँ से मिलेंगी ?

इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं है।
नीचे लिखा पता याद रखिए :—

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
११	भयानक 'क्यों ?' (कहानी)	[श्री० 'अमृत']	२५१
१२	कवि का स्वप्न (गद्य-काव्य)	[प्रोफ़ेसर रवीन्द्रकुमार, एम० ए०]	२५४
१३	स्त्रियाँ क्यों न सोचें ?	[श्री० रामस्वरूप व्यास]	२५५
१४	नवयुवतियों और नवयुवकों के विवाह सम्बन्धी कर्तव्य	[श्री० आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव]	२५९
१५	निठुर श्याम (कविता)	[श्रीमती होमवती]	२६२
१६	भारतीय स्त्रियाँ और उद्योग-धन्धे	[श्रीमती ललिताप्रसाद]	२६३
१७	लोक-परलोक (नाटक)	[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल-एल० बी०] ...	२६६
१८	महाकवि विद्यापति तथा उनके पद	[श्री० हरेश्वरीप्रसाद, बी० ए०, विशारद] ...	२७३
१९	साधना (कविता)	[श्री० शिवनन्दन-प्रसाद]	२७६
२०	वर्तमान शिक्षा-प्रणाली और स्त्रियाँ	[श्री० ज्योतीन्द्रनाथ]	२७७
२१	कनौजिया-समाज	[श्री० त्रि० द० त्रिपाठी]	२८०
२२	कालिन्दी (कहानी)	[श्री० लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी 'चन्द्र']	२८३

* * *

बिखरे फूल

२३	देवनागरी लिपि में सुधार	[श्री० यदुनन्दन-लाल]	२८८
२४	गढ़वाल की समस्या	[श्री० शङ्करसिंह नेगी]	२९०

आसामी बङ्गाली तिलिस्मी राज़ से

मुक़दमा जीतने को खुशी में

चिकित्सा चन्द्रोदय

आधी कीमत में

दो सौ आदमियों को ७ भाग की सैट और पाँच सौ को तीसरा भाग छोड़कर ६ भाग की सैट दे सकेंगे। खूब जल्दी करें, ज्यादा पुस्तकें नहीं हैं। ५) पेशगी भेजो। मनीआर्डर कूपन पर पास के स्टेशन का नाम-पता साफ़ लिखो।

पता—हरिदास एण्ड कम्पनी, मथुरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
२५	श्रीमती रुकमणी लक्ष्मीपति	[श्री० राजेन्द्र-शङ्कर भट्ट]	२६१
२६	कुरीतियाँ तथा भारतीय-समाज में उनका स्थान	[श्री० अम्बिकासिंह]	२६२
२७	हमारी शिक्षा-प्रणाली का पुनर्निर्माण	[श्री० नन्दगोपालसिंह सहगल]	२६५
२८	पाठकों की लेखनी से		३००
२९	केसर की क्यारी	[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]	३०२
३०	गृह-विज्ञान	[श्री० एन० जी० सहगल]	३०४
३१	नव-पल्लव		३०६
३२	सङ्गीत-सुधा	[श्री० एस० डी० आपटे]	३०७
३३	वातायन		३१०
३४	बहु-विवाह निषेध-बिल	रङ्ग-भूमि	३११
३५	जापान की भर्त्सना		३१२
३६	देश में हड़तालों का ज़ोर		३१३
३७	हरिजनों के साथ अन्याय		३१६
३८	भारतवासियों का स्वास्थ्य		३१७
३९	शान्ति-सेना की स्थापना		३१७

चित्र-सूची

१—माँ (तिरङ्गा)

आर्ट पेपर पर रङ्गीन

२—अर्घ्य-दान

३—स्वर-साधन

सादे

४—११—भिन्न-भिन्न विषयों के (कार्टून) ८ चित्र

'एमॉयबिक' दस्तों के लिए

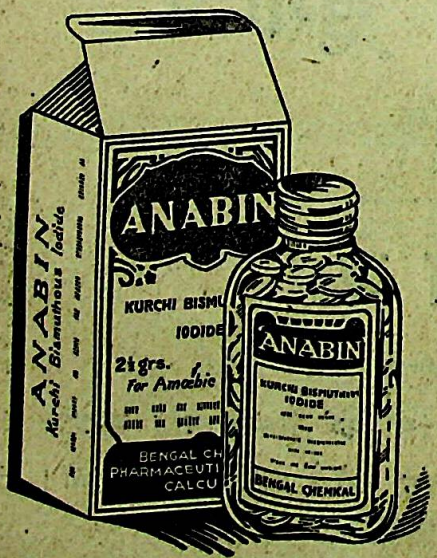

आनाबिन

कुर्चि, बिसमूथस आयोडाइड गोलियाँ

नई और पुरानी बीमारी के लिए अनमोल औषधि

इञ्जेक्शन की आवश्यकता नहीं।

बेंगल केमिकल :: कलकत्ता — बम्बई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी की चुनी हुई उत्कृष्ट पुस्तकें

पूर्णिमा—इस उपन्यास के सम्बन्ध में दैनिक 'लीडर' लिखता है—"गुजराती औपन्यासिकों में श्री० रमणलाल बसन्तलाल देसाई; एम० ए० का एक विशिष्ट स्थान है और पूर्णिमा उनकी एक उत्कृष्ट कृति है। पुस्तक का अनुवाद भी बहुत ही सुन्दर और प्रामाणिक हुआ है। प्रकाशकों ने इस पुस्तक को हिन्दी-संसार के सामने रखकर हिन्दी-जगत् की अमूल्य सेवा की है।" मू० २)

स्वाधीन विचार—प्रसिद्ध देशभक्त तथा निर्वासित लाला हरदयाल, एम० ए० के स्वतन्त्र विचार तथा भावमय निबन्धों का संग्रह। मू० १)

स्वामि-भक्ति—शिक्षापूर्ण सचित्र सामाजिक नाटक। लेखक—रामसिंह वर्मा। मू० १।)

सन्ध्या पर व्याख्यान—सन्ध्या के भिन्न-भिन्न अङ्गों तथा गूढ़ रहस्यों का विस्तृत विवेचन। ले० महात्मा हंसराज जी। मू० ।)

साहस सुन्दरी—मनोरञ्जक सचित्र जासूसी उपन्यास। लेखक—स्वर्गीय पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा। मू० रेशमी जिल्द २।); सादी १॥।)

अफ़लातून की सामाजिक व्यवस्था—अत्यन्त रोचक पुस्तक है। मू० १।=)

सचित्र दिल्ली—दिल्ली शहर के मुख्य-मुख्य दर्शनीय स्थानों तथा नगर का सचित्र व ऐतिहासिक वर्णन। मू० ॥।)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी की चुनी हुई उत्कृष्ट पुस्तकें

संजीवनी विद्या—इसमें वीर्य-रक्षण, वीर्य-विनिमय और ब्रह्मचर्य की अपूर्व संजीवनी शक्तियों का परिचय देने वाली विद्या का वर्णन किया गया है। मू० ॥।)

सभ्यता का शाप—महात्मा टाल्सटाय लिखित उच्चकोटि के नाटक का हिन्दी अनुवाद। मूल्य केवल १।)

सुयेनच्वांग—इस पुस्तक में प्रसिद्ध चीनी यात्री सुयेनच्वांग की भारत-यात्रा का मनोहर वर्णन है। इसके पढ़ने से ज्ञात होगा कि यह प्रसिद्ध यात्री किस तरह उत्कट विद्या-प्रेम से प्रेरित होकर भारत में आया था और उसने यहाँ की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक अवस्था का कैसा सुन्दर वर्णन किया है। मू० १।)

स्राम—काश्मीर में रचित एक मनोहर खण्ड-काव्य। ले०—पं० रामनरेश त्रिपाठी। मू० ॥)

संसार के प्रसिद्ध पुरुष—संसार के सुप्रसिद्ध महापुरुषों के मनोहर तथा शिक्षाप्रद जीवन-चरित्र। मू० १)

सभ्यता महारोग—मनुष्य जाति के विकास में सभ्यता नामक महारोग की उत्पत्ति, उसका निदान और इलाज। मू० २।)

स्वार्थी संसार—मनोरञ्जक सामाजिक नाटक। लेखक—श्री० शिवरामदास 'दास'। मू० १)

सुकवि-संकीर्तन—भारत के १३ प्रसिद्ध विद्वान् कवि तथा हिन्दी-प्रेमी व्यक्तियों के मनोरञ्जक तथा शिक्षापूर्ण जीवन-चरित्र। मू० सजिल्द का १॥।), सादी १।)

सप्तपुरी—भारतवर्ष के प्रसिद्ध सात तीर्थों का विस्तृत तथा सचित्र वर्णन। लेखक—श्री० दयाशङ्कर दुबे, एम० ए०, एल-एल० बी०। मू० १॥)

स्त्री-शिक्षा—हिन्दी पढ़ी-लिखी स्त्रियों के लिए सबसे सुन्दर और अनमोल पुस्तक। लेखिका—श्रीमती ज्योतिर्मयी ठाकुर। मू० २)

साहित्य-सुषमा—इस पुस्तक में साहित्य के भिन्न-भिन्न अङ्गों का प्रदर्शन किया गया है। लेखक—नन्ददुलारे वाजपेयी, एम० ए०। मू० १॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विभिन्न विषयों की चुनी हुई पुस्तकें

गल्प-रत्न—शिक्षापूर्ण मनोहर गल्पों का संग्रह। संग्रहकर्त्ता—स्वर्गीय प्रेमचन्द। मू० १)

चुने हुए हिन्दी-निबन्ध—हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ निबन्धों का संग्रह। सम्पादक—प्रोफ़ेसर श्री० राजारामजी। मू० १॥=)

संसार-दर्पण—इस पुस्तक में यह दिखलाया गया है कि आधुनिक शिक्षा प्राप्त लोग फ़ैशन के पीछे पड़कर अङ्गरेज़ी ढङ्ग को ग्रहण करके कैसी दुर्दशा भोगते तथा पश्चात्ताप करते हैं। मू० ३॥)

स्त्री-चरित्र-संग्रह—इसमें भारतवर्ष की ५१ प्रसिद्ध सती, पतिव्रता और धर्मपरायणा स्त्रियों के अनुपम चरित्र मनोरञ्जक ढङ्ग से लिखे गए हैं। मू० १)

क़िस्सा साढ़े तीन यार—रसिक व्यक्तियों के लिए यह अत्यन्त दिलचस्प क़िस्सा है। आठों भागों सहित। मू० ।॥)

सरफ़रोश—सरल व दिलचस्प शैली में लिखा हुआ अत्यन्त रोमाञ्चकारी क़िस्सा। मू० =)

मनस्-समर्पण—बंगला भाषा के श्रेष्ठ तथा मनोरञ्जक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक—स्वर्गीय ईश्वरीप्रसाद शर्मा। मू० ४), सजिल्द का ४॥)

सौभाग्यवती—विवाह के बाद युवतियों और स्त्रियों को सौभाग्यवती बनाने वाला अनमोल ग्रन्थ। मू० ३)

स्वर्ग का ख़ज़ाना—अत्यन्त शिक्षाप्रद तथा मनुष्य के चरित्र को बलवान बनाने वाली उत्कृष्ट पुस्तक। मू० ॥=)॥

सरला उपन्यास—यह मनोरञ्जक उपन्यास है। ले०—श्री० चक्रपाणि त्रिपाठी। मू० =)

सूरदासजी का जीवन-चरित्र—इसमें हिन्दी के प्रसिद्ध कवि महात्मा सूरदास जी का प्रामाणिक जीवन-चरित्र लिखा गया है। मू० =)

सद्गुरु रहस्य—अत्यन्त उपयोगी दार्शनिक पुस्तक है। ईश्वर, जीव और प्रकृति के परम गूढ़ तत्वों का बहुत सरल विवेचन किया गया। मू० २॥)

सचित्र गुप्त-रोग-चिकित्सा—इस पुस्तक में स्त्री-पुरुषों के सभी गुप्त अङ्गों के रोगों का निदान आदि का विस्तृत वर्णन तथा उनकी चिकित्सा लिखी है। मू० २)

सम्राट् अशोक—मराठी भाषा के एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक—पं० हरिभाऊ उपाध्याय। मू० सादी २॥), सजिल्द ३)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी की चुनी हुई उत्कृष्ट पुस्तकें

सोने की गाड़ी—संस्कृत के 'मृच्छकटिक' नाटक का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर। लेखक—श्री० रामाज्ञा द्विवेदी, एम० ए० 'समीर'। मू० ॥)

स्वाधीनता के सिद्धान्त—आयरलैण्ड के प्रसिद्ध आत्म-त्यागी वीर टेरेन्स मैकस्विनी की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद। मू० १)

सुधा-सरोवर—हिन्दी का उत्तम काव्य-ग्रन्थ। लेखक—श्री० दामोदरसहायसिंह, बी० ए०, एल० टी०। मू० १)

सती सुलोचना—शिक्षाप्रद सचित्र पौराणिक उपाख्यान। लेखक—श्री० तारणीप्रसाद शर्मा। मू० १।)

स्वप्नों के चित्र—चुनी हुई हास्यरस की कहानियाँ तथा प्रहसन। लेखक—पं० रामनरेश त्रिपाठी। मूल्य ॥।)

सीधे पण्डित—उच्चकोटि का दार्शनिक उपन्यास। लेखक—ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह, बी० ए०; मू० १॥)

सूर-संग्रह—सूरदास के चुने हुए पदों का संग्रह शब्दार्थ तथा भावार्थ सहित। लेखक—स्वर्गीय लाला भगवानदीन 'दीन'। मू० १)

शार्ङ्गधर संहिता—(हिन्दी-भाषा-टीका सहित) वैद्यक-शास्त्र का यह अत्यत महत्वपूर्ण तथा माननीय ग्रन्थ है। आरोग्य विद्या के प्रेमियों को इसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए। मू० ४)

सुश्रुत संहिता—(हिन्दी अनुवाद सहित) आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान् महामुनि सुश्रुत द्वारा रचा गया यह सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। शरीर का पूर्ण ज्ञान कराने वाला इससे बढ़ कर दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं है। मू० १॥)

स्वाधीनता के संग्राम—संसार के पराधीन राष्ट्रों ने समय-समय पर क्रान्ति करके किस प्रकार अपनी स्वाधीनता प्राप्त की है—इसका अत्यन्त रोमाञ्चकारी इतिहास इसमें पढ़िए। मू० १।)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विभिन्न विषयों की चुनी हुई पुस्तकें

चित्र भारत—भारतवर्ष के मुख्य-मुख्य शहरों का विस्तृत तथा सचित्र वर्णन। मू० १॥)

राट् अशोक—मराठी भाषा के एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक—पं० हरिभाऊ उपाध्याय। मू० सादी २॥), सजिल्द ३)

ियों के कर्तव्य—स्त्रियों के लिए उनके जीवन की सभी प्रकार की बातों का ज्ञान कराने वाली अमूल्य पुस्तक। मू० २)

ास्थ्य और व्यायाम—शरीर को स्वस्थ सुगठित और बलवान बनाने वाले देशी तथा विदेशी व्यायामों की उत्कृष्ट पुस्तक। मू० सादी १॥), सजिल्द २)

ा-सुमन—श्रेष्ठ विद्वानों के शिक्षापूर्ण जीवन-चरित्र। लेखक—पं० मोहनलाल महतो "वियोगी"। मू० १)

म्राट् हर्षवर्धन—भारत के अन्तिम आर्य-सम्राट् महाराज हर्षवर्धन का जीवन-वृत्तान्त। ले०—श्री० सम्पूर्णानन्द, बी० एस-सी०; एल० टी०। मू० ॥)

द्र की सैर—समुद्रों में रहने वाले अनेकों प्रकार के आश्चर्यजनक जीव-जन्तु तथा उनके द्वारा उत्पन्न होने वाली अनोखी वस्तुओं का मनोरञ्जक सचित्र वर्णन मू० ॥।-)

साहित्य की उपक्रमणिका—हिन्दी-साहित्य की नई उत्कृष्ट पुस्तक। लेखक—श्री० किशोरीदास वाजपेयी, शास्त्री। मू० ॥≈)

स्वास्थ्य-संलाप—इसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी आवश्यक बातों का बातचीत के रूप में अच्छा वर्णन किया गया है। बालकों के लिए बहुत लाभदायक पुस्तक है। मू० ॥=)

सुहाग की पहली रात—विवाहित स्त्री-पुरुषों के लिए अति उत्तम पुस्तक है। लेखक—मुन्शी गौहर सैलानी। मू० १), ॥।)

सुख तथा सफलता—शिक्षाप्रद निबन्धों का संग्रह। मू० ।)

स्त्री-कवि-संग्रह—हिन्दी की प्रसिद्ध स्त्री-कवियों की सुन्दर कविताएँ उनके जीवन-चरित्र सहित। मू० ॥)

साहित्य-रत्न-मञ्जूषा—शिक्षाप्रद निबन्धों तथा कविताओं का संग्रह। मू० ॥=)

सफलता की कुञ्जी—जीवन-संग्राम में सुख और जय की प्राप्ति करने के उपायों का वर्णन। मू० ॥)

आनन्दमयी रात्रि का स्वप्न—आध्यात्मिक और सामाजिक विचारों की एक महत्वपूर्ण तथा मनोरञ्जक कहानी। मूल्य =)

मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ उत्तमोत्तम नवीन पुस्तकें

स्त्री कवि-कौमुदी—आधुनिक स्त्रियों की कविता और परिचय। मूल्य ५)

सुई शिल्प-शिक्षा—सिलाई और बुनाई सीखने के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। स्त्रियों को इससे अवश्य लाभ उठाना चाहिए। मूल्य १)

सिद्धेश्वरी—मनोरञ्जक कहानियाँ। लेखक—श्री० दुर्गाप्रसाद खत्री। मूल्य ।)

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत यह प्रसिद्ध नाटक है, जो हिन्दी के नाटकों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। मूल्य ।=)

साहित्य-विहार—हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् श्री० वियोगी हरि के चुने हुए गद्य-पद्यात्मक निबन्धों का सुन्दर संग्रह। मूल्य १)

सोने की खान—रहस्यमय सचित्र उपन्यास। लेखक—श्री० रामाशीषसिंह। मूल्य १)

सिंहनाद—सचित्र ऐतिहासिक नाटक। इसमें वीर शिवाजी की वीरता तथा ओजस्विता की कथाएँ रोमाञ्चकारी ढङ्ग से वर्णन की गई हैं। मूल्य १।)

सत्याग्रही प्रह्लाद—सचित्र पौराणिक शिक्षाप्रद नाटक। परमभक्त प्रह्लाद की प्रबल ईश्वरभक्ति देखना चाहते हों तो इसे एक बार अवश्य पढ़ें। मूल्य १)

स्टॉक-एक्सचैञ्ज—व्यवसायी लोगों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। सभी श्रेणी के छोटे-बड़े व्यवसायी इससे लाभ उठा सकते हैं। लेखक—श्री० गौरीशङ्कर शुक्ल "पथिक"। मूल्य १॥)

सन्तान-शास्त्र—जो माता-पिता मनचाही सन्तान उत्पन्न करना चाहते हैं, उनके लिए हिन्दी में इससे अच्छी पुस्तक न मिलेगी। इसमें ब्रह्मचर्य से लेकर काम-विज्ञान तक की शिक्षा ऐसे ढङ्ग से दी गई है कि उसके अनुसार चलकर मनुष्य अपने जीवन को आदर्श बना सकता है। इसमें दाम्पत्य-जीवन सम्बन्धी प्रत्येक बात पर भरपूर प्रकाश डाला गया है। समस्त गुप्त रोगों का सविस्तर विवेचन किया गया है और उनके इलाज के लिए सैकड़ों परीक्षित नुस्खे दिए गए हैं। यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय सिद्ध हुई है कि कुछ ही समय में इसके दो-दो हज़ार कॉपियों के चार संस्करण हो चुके हैं। ५ तिरङ्गे चित्र भी हैं। मू० ४)

शिल्प-कुञ्ज—स्वेटर, गुलूबन्द, मोज़े, बनियाइन, बटुए आदि बिनने की विधि बतलाने वाली इससे उत्तम पुस्तक हिन्दी में दूसरी नहीं है। प्रत्येक बात चित्र देकर समझाई गई है। कपड़ों के काटने की विधि भी नक़्शे देकर समझाई गई है। तमाम पुस्तक आर्ट पेपर पर छापी गई है। मू० ३)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ उत्तमोत्तम नवीन पुस्तकें

पञ्चरत्न—जिन सती-शिरोमणि वीराङ्गनाओं के उज्ज्वल चरित्र ने भारत का मस्तक ऊँचा कर रक्खा है, उन्हीं में से पाँच पतिव्रता देवियों की जीवन-कथा अत्यन्त मनोरञ्जक उपाख्यानों के रूप में पुस्तक में वर्णित है। मूल्य १।)

दाम्पत्य-जीवन में स्त्रियों के अधि-—वर्तमान युग में शिक्षा, स्वास्थ्य, साहस और पुरुषार्थ आदि गुणों में संसार की स्त्रियों ने कैसी उन्नति की है, इस विषय पर लेखक ने बड़ी योग्यता से प्रकाश डाला है। साथ ही स्त्रियों के जीवन में अभी तक जो त्रुटियाँ बची हुई हैं, उनकी भी भली प्रकार आलोचना की गई है। मू० २॥)

लेडबरी—यह हास्यरस का मौलिक नाटक है, जिसे इसके लेखक ने विलायत में सैकड़ों नाटकों का व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त करने के बाद लिखा है। इसकी उत्तमता पर रीझ कर बम्बई की एक प्रसिद्ध कम्पनी ने इसका फ़िल्म भी तैयार कराया है। मू० ॥।)

दक्षिण अफ्रिका के मेरे अनुभव—यदि आप प्रवासी भारतवासियों की कष्ट-कहानी और उनकी सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थिति का दर्शन करना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को पढ़िए। इन अभागे भाइयों पर होने वाले गोरों के भीषण अत्याचारों का वर्णन पढ़कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। मू० २॥)

चुहल—इसमें हास्यरस के उत्तमोत्तम चुटकुलों का संग्रह किया गया है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी के काम की चीज़ है। मू० १)

गुदगुदी—पुस्तक क्या है, हँसी का ख़ज़ाना है। इसका एक-एक चुटकुला पढ़ने से हँसी के मारे पेट फूल जाता है। इसके संग्रह-कर्ता हास्यरस के मर्मज्ञ श्री० जी० पी० श्रीवास्तव हैं। हाल ही में इसका नया संस्करण प्रकाशित हुआ है। मू० ॥)

दिल की आग उर्फ़ दिल-जले की आह—यह श्री० जी० पी० श्रीवास्तव का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसका ढङ्ग अन्य उपन्यासों से सर्वथा निराला है। तभी तो दो हज़ार प्रतियाँ कुछ ही महीनों में ख़तम हो गईं। हाल ही में इसका नवीन संस्करण प्रकाशित हुआ है। शीघ्र ही मँगा लीजिए। मू० ४)

ईसाई-बाला—राष्ट्रीय भावों से भरा एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें बतलाया गया है कि सच्चे देशभक्त किस प्रकार जाति और धर्म के बन्धनों से ऊपर उठ कर अपनी मातृभूमि की सेवा में जीवन अर्पण करते हैं। मू० ।॥)

रहस्यमयी—समाज-सेवा और देशभक्ति का ढोंग रच कर जनता के पूजनीय बन जाने वाले ढोंगियों का कलुषित चरित्र इसमें देखिए। मू० १॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी की चुनी हुई उत्कृष्ट पुस्तकें

संवाद-संग्रह—स्त्री-पुरुषों एवं बालक-बालिकाओं के हृदयों में आत्माभिमान की भावना जाग्रत करने वाली उत्तम पुस्तक। मू० १)

सप्त-महाव्रत—सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, और अभय आदि विषयों पर महात्मा गाँधी के विचारपूर्ण निबन्ध। मू० —)

सन्तान-विक्रय—शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक। हिन्दू-समाज की विनाशक कुरीतियों का नग्न चित्रण। मू० ॥।)

संसार-सेवा—अत्यन्त मनोरञ्जक सामाजिक उपन्यास। लेखक—पं० मदन-मोहनलाल दीक्षित। मू० ।)

स्वदेशाभिमान—इसमें उन विदेशी वीरों की कीर्ति का वर्णन है, जिन्होंने अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया है। मू० ।—)

सत्यनारायण—शिक्षाप्रद सचित्र पौराणिक नाटक। लेखक—श्री० बलदेव-प्रसाद खरे। मू० रेशमी जिल्द १॥।), सादी १।)

सत्य निबन्धावली—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक के लिखे हुए उच्चकोटि के विचारपूर्ण निबन्धों का सुन्दर संग्रह। मू० ॥=)

सीताराम—स्वर्गीय बङ्किमचन्द्र के बँगला उपन्यास का हिन्दी अनुवाद। अत्यन्त रोमाञ्चकारी सामाजिक उपन्यास है। मू० १।)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc. No.....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

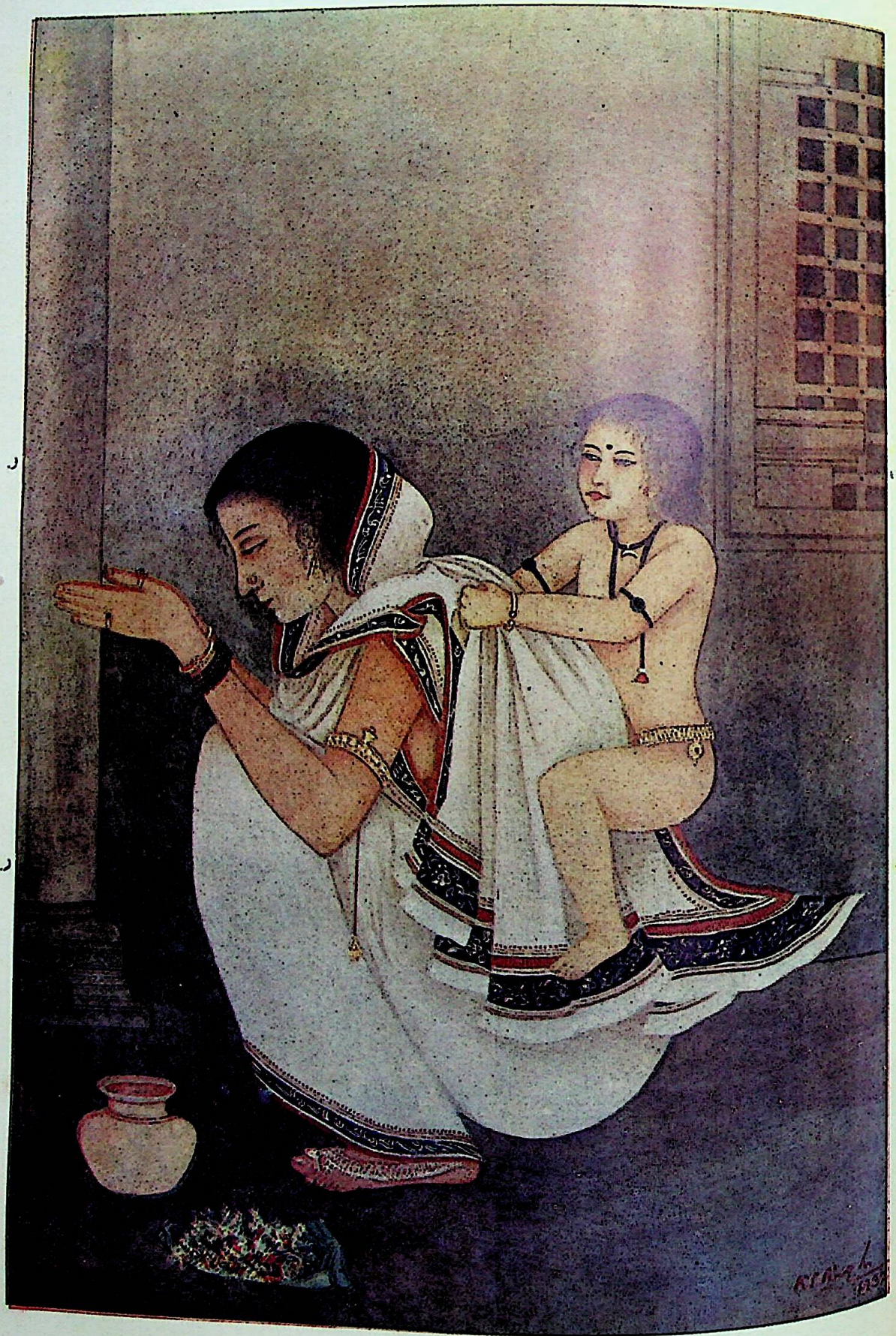

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

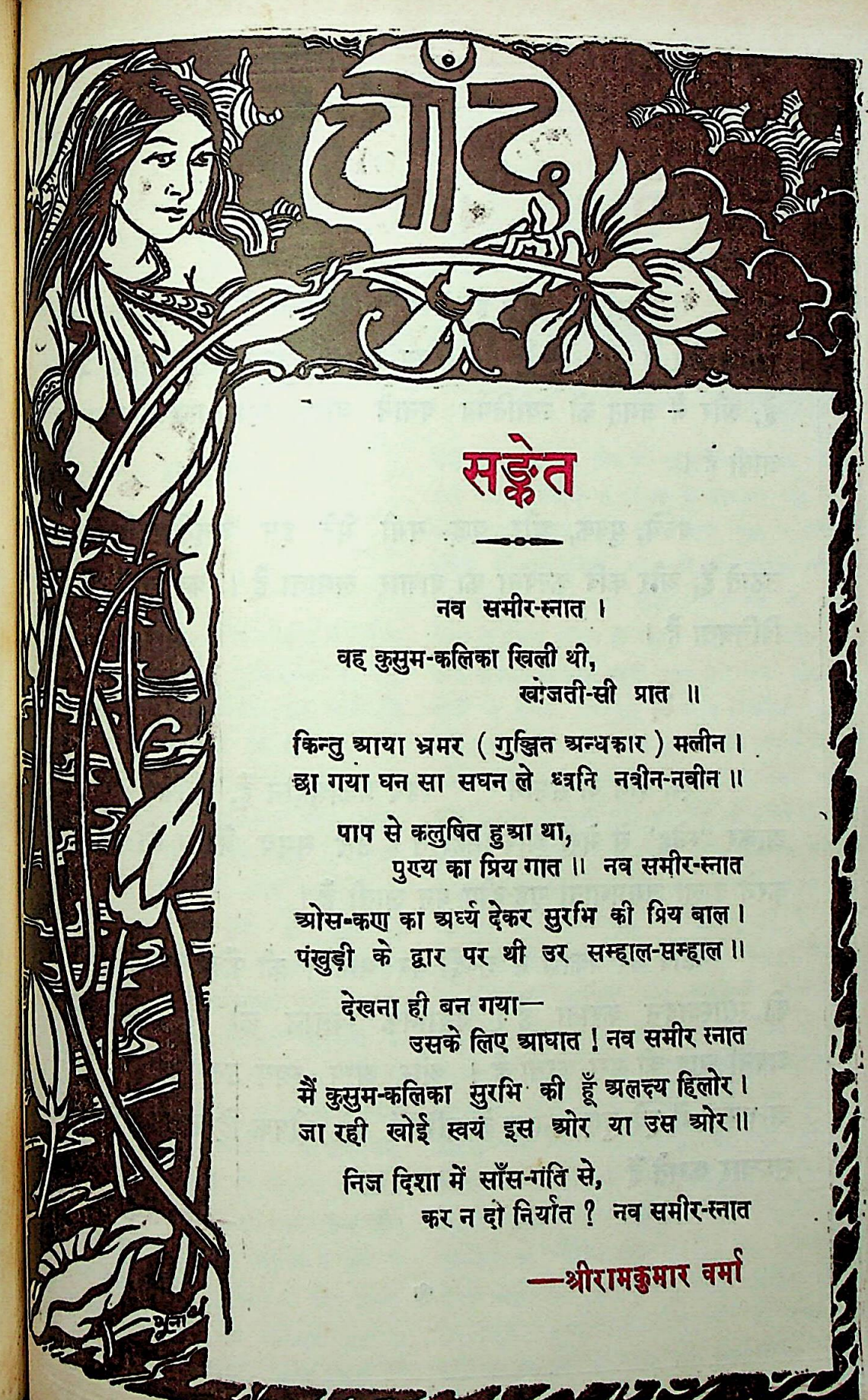

सङ्केत

नव समीर-स्नात ।

वह कुसुम-कलिका खिली थी,
खोजती-सी प्रात ॥

किन्तु आया भ्रमर (गुञ्जित अन्धकार) मलीन ।
छा गया घन सा सघन ले ध्वनि नवीन-नवीन ॥

पाप से कलुषित हुआ था,
पुण्य का प्रिय गात ॥ नव समीर-स्नात

ओस-कण का अर्घ्य देकर सुरभि की प्रिय बाल ।
पंखुड़ी के द्वार पर थी उर सम्हाल-सम्हाल ॥

देखना ही बन गया—
उसके लिए आघात ! नव समीर स्नात

मैं कुसुम-कलिका सुरभि की हूँ अलक्ष्य हिलोर ।
जा रही खोई स्वयं इस ओर या उस ओर ॥

निज दिशा में साँस-गति से,
कर न दो निर्यात ? नव समीर-स्नात

—श्रीरामकुमार वर्मा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैं

एक तारे के समान हूँ। स्वयं ज्योतिहीन हूँ। लेकिन जब आप आकर प्रेम से चूम लेते हैं, उस समय मेरा मुँह लज्जा से लाल हो जाता है, और मैं जगत् को ज्योतिर्मय बनाने वाला एक मङ्गल तारा बन जाती हूँ।

बच्चे, युवक, और वृद्ध सभी मेरे इस अनूठेपन से आनन्द उठाते हैं; और कवि कल्पना का बाज़ार लगाता है। कहो न यह कैसी विचित्रता है।

मैं

एक दीन के समान स्वयं प्रकाशहीन हूँ, लेकिन जब आप आकर "स्नेह" से मेरी ओर निहारते हैं उस समय मैं घर को प्रकाशित करने वाला जगमगाता गृह-दीप बन जाती हूँ।

कवि मेरे प्रकाश में शब्दों पर भावना की फूँक मार कर संसार को रसास्वादन कराता है। वैज्ञानिक विज्ञान की अनूठी खोज कर अपनी चाह को पूरा करता है। और आप स्वयं उन भोले-भाले गहरे अन्धकार में डूबे हुए अनन्त के पथिकों को दीपक दिखाकर आशा का सञ्चार कराते हैं।

—सज्जनदेवी अग्रवाल

❀ ❀ ❀

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

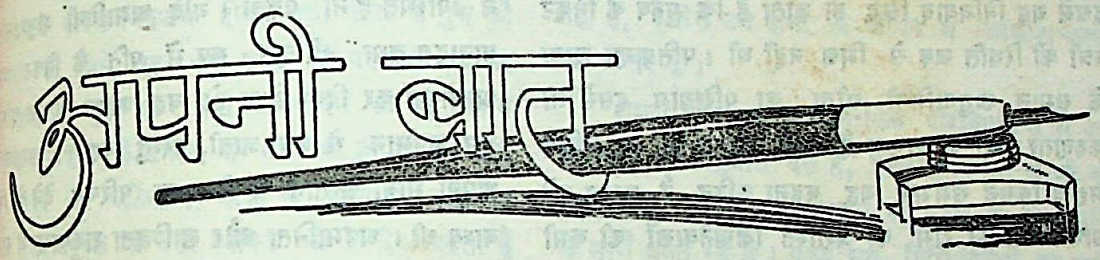

परित्यक्ता भारतीय नारी

(१)

स्त्री का परित्याग भारतीय इतिहास में विशेष महत्व रखता है। पुरुष-समाज ने उसे स्वेच्छानुसार अङ्गीकार और अस्वीकार कर असंख्यों बार यह प्रमाणित कर दिया है कि वह स्त्री को सुख के अन्य उपकरणों से अधिक ऊँचा स्थान नहीं देना चाहता। जिस प्रकार आवश्यकता और इच्छा न होने पर मनुष्य, क्या बहुमूल्य और क्या साधारण, सभी वस्तुओं को फेंक सकता है, उसी प्रकार पुरुष भी स्त्री के बन्धन से, इच्छा होते ही मुक्त हो सकता है। इस सम्बन्ध में स्त्री की इच्छा अनिच्छा जानने की कभी पुरुष ने आवश्यकता नहीं समझी, क्योंकि स्त्री को उसने कभी स्वतन्त्र सहयोगी के रूप में ग्रहण ही नहीं किया। इस प्रकार पुरुष के स्वच्छन्द बन्धन और मुक्ति से समाज ने भी अपनी कोई हानि नहीं समझी। यदि ऐसे परित्याग के पीछे कोई महान उद्देश्य छिपा रहा तो समाज ने क्रूरतम परित्याग को भी प्रशंसा से परिष्कृत कर उजला कर दिया और ऐसे अमानव से कोई भी ऊँचा लक्ष्य प्रशंसा के लिए न मिल सका तो या तो उसने इस सम्बन्ध में मौन धारण किया या अभिज्ञान शाकुन्तल की अभिशाप-कथा के समान कोई किम्बदन्ती ही गढ़ डाली, परन्तु किसी भी रूप में उसने पुरुष को दोषी ठहराना उचित न समझा। यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि सामाजिक न्याय-दण्ड सदा से पुरुष के हाथ में रहता चला आ रहा है। स्त्री के दृष्टिकोण से पुरुष के आचरण पर विचार करना उनके लिए कठिन था। यदि ऐसा न होता तो अनेक इतिहास-प्रसिद्ध परित्यागों पर प्रशंसा का सुनहला पानी न फेरा गया होता। चाहे स्त्री के आत्म-त्याग से संसार चकित हो गया, चाहे उसके बलिदान से स्वर्ग कम्पित हो उठा, परन्तु पुरुष ऐसे त्याग और बलिदानों से अपने निश्चित पथ पर न विचलित हुआ न विस्मित। जब कभी स्त्री द्वारा उसके स्वार्थ में किसी प्रकार की भी बाधा उपस्थित हुई तब वह उसके चारित्र्य और सतीत्व सम्बन्धी गुणों को गौण स्थान देने को प्रस्तुत हो गया। साधारण व्यक्तियों की साधारण कहानियों के विषय में तो कहना ही क्या, हमारे महान पुरुष भी स्त्री का अपने शरीर के वस्त्राभूषणों के समान ही परित्याग करते रहे हैं। प्रबुद्ध सिद्धार्थ ने क्या अपने राजसी परिधान और अलंकारों के समान ही सोती हुई यशोधरा का परित्याग नहीं किया था? ऐसी साध्वी स्त्री के लिए इससे बढ़कर और कौन सा अपमान हो सकता था कि उसका अभिन्न हृदय पति उसे अपने मन की बात बिना बताये हुए छिपकर चला जावे। कोई परित्याग इससे दारुण नहीं हो सकता, परन्तु आहत-हृदया यशोधरा के दृष्टिकोण से कितने व्यक्ति बुद्ध के आचरण की विवेचना कर सकेंगे! इस परित्याग का उद्देश्य महान था, परन्तु उसकी सारी महानता भी नारी की स्थिति को कुछ उन्नत सिद्ध नहीं कर सकती। स्त्री परित्यक्ता तो हुई ही, साथ ही गौरव-हीनता के साथ और ऐसे पुरुष के द्वारा जिसकी दृष्टि प्राणिमात्र के लिए समान थी। सिद्धार्थ ऐसे पुरुष को सहगा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिनी भी उस महान लक्ष्य का महत्व समझने में असमर्थ थी, यह मानने की इच्छा नहीं होती, परन्तु इससे यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि पुरुष के निकट स्त्री की स्थिति जड़ से भिन्न नहीं थी। पतिप्राणा छाया के समान अनुगामिनी सीता का परित्याग इससे भी करुणतर कहा जा सकता है। इस क्रूर त्याग का नैतिक महत्व किसने समझा, यह कहना कठिन है, परन्तु इसे साधन बना कर राम की प्रशस्ति लिखनेवालों की कमी कभी नहीं रही। सभी के विचार में प्रासाद में निवास करने वाले सुख-साधनों से घिरे मर्यादा पुरुषोत्तम राम की स्वेच्छा से अंगीकृत पत्नीहीनता सीता की बन में जीवन-निर्वाह की कठिनता के साथ ही विवशता से स्वीकृत विरह-व्यथा से अधिक भारी है। राम ने अपनी सुख-दुःख में एकान्तसङ्गिनी, भावी सन्तान का सुख-स्वप्न देखने में मग्न पत्नी के सम्मुख अपनी समस्या न रखकर उसे बालिका के समान बहका कर चिरनिर्वासन के लिए भेज दिया। सीता जैसी सहगामिनी किसी प्रकार भी अपने प्रजापालक पति की कर्तव्यपरायणता में बाधक बनने का हठ करती, यह अनुमान करना भी कठिन है। सम्भव है, वह साध्वी सब जानकर नारी-जीवन की सबसे कठिन परिस्थिति में भी स्वामी से बिदा ले लेती, परन्तु उस दशा में पुरुष के अधिकार का कोई उपयोग ही नहीं हो सकता था। यदि पुरुष स्त्री को भी ऐसे परित्याग का अधिकार देना उचित समझता तो कहानी कुछ और ही होती। स्त्री भी पुरुष का परित्याग कर सकती है, कदाचित इसकी कल्पना भी पुरुष के लिये दुरूह सी है और रहेगी।

हमारे प्राचीन आख्यानों ने जिन परित्यक्ता नारियों की गाथायें विस्मृत होने से बचा ली हैं, उनमें वन-वासिनी शकुन्तला एक विशेष स्थान रखती है। उस वन्य कुसुम के समान निर्जन में खिली हुई बनबाला पर, दुष्यन्त सा अनेक सुन्दरी राजरानियों का स्वामी इतना मुग्ध हो गया कि उसने उसे पत्नी-रूप में स्वीकार करने में संकोच नहीं किया। परन्तु राजधानी में लौट कर उस उन्माद के दूर होने पर जब उसने नर्तकी की भ्रामीण पुत्री से अपने विचार की विवेचना की, तब सम्भवतः उसे अपने कृत्य पर ग्लानि ही हुई, अन्यथा उसकी नवीन रानी को सभा में अपरिचित के समान न उपस्थित होना पड़ता। यदि अभागिनी शकुन्तला ने अनादृत तथा उपेक्षित रूप में पति के निकट जाना अस्वीकृत कर दिया होता तो वह जीवन के एक दारुण-तम अपमान से बच जाती, परन्तु वह तो समाज को अपनी भावी सन्तान के पिता का परिचय देने के लिये बाध्य थी। अपमानिता और लाञ्छिता शकुन्तला ने राज-सभा में भूलने का अभिनय करते हुये राजा से अपने पत्नीत्व की याचना कर स्त्री का जो करुण चित्र अङ्कित कर दिया है, उसकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं। वह प्रत्येक सहृदय को व्यथित और स्तम्भित किये बिना नहीं रहता। चाहे जितनी बार दुर्वासा के अभिशाप की कथा दुहराई जावे, चाहे जितनी बार अँगूठी के खोने की दुर्घटना पर खेद किया जावे, परन्तु शकुन्तला के त्याग को अनहोनी घटना नहीं कहा जा सकता। यदि स्त्री को भी ऐसे त्याग का अधिकार होता तो कदाचित् क्रोधी दुर्वासा उसे अपने पति और भावी पुत्र के पिता का नाम भूल जाने का ही शाप देते।

जब हम इन परित्यागों के परिणाम पर दृष्टि डालते हैं, तब स्त्री की स्थिति और भी दयनीय जान पड़ने लगती है। त्यागी तथागत चाहे यशोधरा के पति के रूप में नहीं लौटे हों, परन्तु राहुल को ले जाने के लिए उसके पिता होकर अवश्य लौटे, अन्यथा वह परित्यक्ता पत्नी इतनी उदारता से पुत्र का दान न कर देती। जिस पुत्र से उसने जीवन के सबसे बड़े अभाव को भरने का प्रयत्न किया था, उसे भी देकर उसने सौभाग्य-शून्य पत्नी और अङ्क-शून्य माता बने रहने का अभिशाप स्वीकार कर लिया। सीता के मातृत्व का भी यही परिणाम हुआ। उसके लंकानिवास ने चाहे उसे पति-गृह में रहने के अयोग्य प्रमाणित कर दिया, परन्तु यह अपवाद उसकी सन्तान को स्पर्श नहीं कर सका, इसे उसका सौभाग्य समझना चाहिए या दुर्भाग्य, यह कहना कठिन है। दूषित स्थान में पड़े हुए रत्न के समान जब पिता ने अपने पुत्रों को अङ्गीकार कर लिया तब भी माता का अञ्चल मणिहीन ही बना रहा। सम्भवतः उसका क्षतविक्षत हृदय इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आघात को सहने में असमर्थ होने के कारण ही विदीर्ण हो गया। चक्रवर्ती दुष्यन्त ने भी अन्त में उत्तराधिकारी न रहने के कारण निरुपाय होकर उसी पत्नी से पुत्र की याचना की, जिसे वह भरी सभा में पर-स्त्री कह कर तिरस्कृत कर चुका था। स्त्री के जीवन की यह विजय भी अन्त में हार के समान ही मन को क्लान्त कर देती है। जीवन की कठिनतम यात्रा के अन्त में उसे शेष रह हुआ सम्बल भी उसी व्यक्ति को दे देना पड़ता है जिसने साथ रहने का वचन देकर भी उसे दुर्गम पथ पर अकेला छोड़ दिया था।

इन पौराणिक गाथाओं के कुछ अंशों को चाहे कल्पित माना जावे चाहे सत्य, परन्तु इसमें तर्क का स्थान नहीं है कि यह नारी की स्थिति का प्रतिविम्ब हैं। अवश्य ही इन कथाओं का अस्तित्व न होता, यदि यह नारी जीवन का किसी न किसी रूप में परिचय न देतीं। भारतीय नारी, जीवन के अन्य क्षेत्रों में जितनी दयनीय है उससे कहीं अधिक अपने दाम्पत्य जीवन में कही जा सकती है। नारी धार्मिकता के आधार पर और देवता तथा रूढ़ियों के साक्षित्व पर स्थित बन्धन भी इतना सूक्ष्म है कि स्त्री उसके किसी छोर को पकड़ ही नहीं पाती। वह पुरुष के इङ्गित पर बँधता और टूटता रहता है। स्त्री के सारे गुण, समस्त बलिदान और सम्पूर्ण आत्म-निवेदन केवल पुरुष को अनुकूल बनाये रखने के लिए है, जिससे वह कोई विपरीत निश्चय न कर सके। यदि कभी ऐसा सम्भव हो सका तो पुरुष की इच्छा समाज के सारे नियन्त्रण और नैतिकता का अतिक्रमण कर भी अनिवार्य नहीं समझी जाती। स्त्री यदि स्वयं ही अपने आत्मनिवेदन की गरिमा को पुरुष की इच्छा का प्रति-रूप नहीं बना देती तो फिर और कोई प्रतिबन्ध सक्षम नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है। जीवन की जो जटिलता स्त्री के लिए आवश्यकता बन गई है उसे पुरुष के जीवन को स्पर्श करने का भी अधिकार नहीं है, इसीसे उन दोनों के जीवन में आकाश-पाताल का अन्तर है।

शास्त्र और समाज किन-किन परिस्थितियों में स्त्री-परित्याग की अनुमति देते हैं, इसकी विवेचना से भी कोई लाभ नहीं, क्योंकि उनके बन्धन भी पुरुष के लिए मुक्ति के मार्ग बनते रहे हैं। पुरुष सब विधि-निषेधों का अतिक्रमण करने के लिए प्रायः स्वतन्त्र रहता है, इसे प्रमाणित करने के लिए उदाहरणों की कमी नहीं है। यदि इस सम्बन्ध में हमारे सामाजिक न्याय और दण्ड का कोई महत्व होता तो अवश्य ही बहुत सी घटनायें अघटित रह जातीं। प्राचीनतम युग से आधुनिक काल तक समाज ने अपने पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता नहीं समझी, इसे स्त्री की अपात्रता ही कहा जायगा, क्योंकि यदि उसे अपनी स्थिति के प्रति असन्तोष होता तो जीवन का यह क्रम इतने दीर्घकाल तक किसी प्रकार भी न चलता और यदि चलता भी तो उसे इतना सम धरातल न मिल सकता। अन्याय को मूक निरीह भाव से सहन कर लेना उतना ही गुरु अपराध है जितना अन्याय में सहयोग देना।

इतने युगों में कभी स्त्री ने अपने दाम्पत्य जीवन की नींव की अस्थिरता नहीं देखी, यह समझना उसकी बुद्धि का तिरस्कार करना होगा, परन्तु यह कहना बहुत कुछ सत्य के निकट है कि उसने अपनी सहन शक्ति का परिचय देने के उत्साह में उस ओर ध्यान देने का अवकाश ही नहीं पाया। वह सोचती रही कि अपने असन्तोष को प्रकट करना अपनी हार स्वीकार करना होगा, इसी से अब तक उसकी अग्निपरीक्षा समाप्त न हो सकी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"शुभाशुभ"

[श्री० कुँवर राजेन्द्रसिंह]

यह जानते हुये भी कि शुभ और अशुभ केवल हृदय की भावनायें हैं, इनका बहुत बड़ा प्रभाव हम सब पर पड़ता है। यह हाल केवल हम भारतवासियों का ही नहीं है, जिन पर मौक़ा बे मौक़ा आक्षेप हुआ करते हैं बल्कि यही हाल उनका भी है जो अपने को सभ्यता के जन्मदाता समझते हैं। मनुष्य के मस्तिष्क का निर्माण कुछ विचित्र ढङ्ग का होता है, उसे प्रकट से अप्रकट पर अधिक विश्वास हो जाता है। कवि कीट्स की एक कविता का भावार्थ यह है कि सुना हुआ सङ्गीत मधुर और बेसुना हुआ अधिक मधुर होता है। देखना विश्वास करना है; जिसे देख लिया उसकी यथार्थता का पता चल गया। यथार्थता भ्रमान्तकारी और आशा भ्रमोत्पादक होती है। हर एक आदमी "बेवकूफ़ों के बैकुण्ठ" में रहा चाहता है, चाहे यही आक्षेप वह दूसरों पर करे। एक ने आशा को सम्बोधित करके कहा कि देख तू कहीं साथ न छोड़ देना, क्योंकि अब तेरा ही सहारा रह गया है। दूसरी बात यह भी है कि जब सब उद्योग और प्रयत्न विफल हो जाते हैं, तब एक तिनके ही का सहारा बहुत मालूम होता है। आशा पर संसार अवलम्बित है और आशा ही अन्धविश्वासों की और बेसर-पैर की बातों की बड़ी सहायक है। अपने लिये हम क्या आशा नहीं कर सकते हैं। टूटी चारपाई पर पड़े राजसिंहासन पर बैठने का स्वप्न देखते हैं। एक अङ्गरेज़ी लेखक ने लिखा है कि यदि मूर्खता शोक होती तो प्रत्येक घर रोता। उसी तरह से यदि आशा कोई अपराध होती तो प्रत्येक मनुष्य जेलखाने में चक्की पीसता होता।

गण्डे और तावीज़ों पर, पुरानी रस्मों और रवाजों पर और झाड़ और फूँक पर सब ही देश वालों को विश्वास होता है। शाहजहाँ के ज़माने में सुल्तान बीजापुर बीमार पड़े और जब दवाओं से कोई फ़ायदा नहीं हुआ तब एक फ़क़ीर बुलाया गया और उसने झाड़-फूँक की और अपनी उमर के कुछ साल सुल्तान को दिये, तब उनकी जान बची। कहने को तो लोग यही कहेंगे कि यह अन्धविश्वास है, परन्तु ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक मनुष्य यही करता। आज तक ऐसा कौन हुआ है जिसने आशा से मुँह मोड़ा हो। शिवाजी अपनी दूसरी रानी के व्यवहार से प्रसन्न नहीं थे और यहाँ तक कि रनिवास का आना-जाना छोड़ दिया और वह गण्डे-तावीज़ों के ज़ोर से उन्हें ख़ुश किया चाहती थीं। एक किम्वदन्ती है कि गाज़ीउद्दीन हैदर के ज़माने में कानपुर से लखनऊ नहर लाये जाने की कोशिश हुई थी। पानी चढ़ता नहीं था, समथल पर किसी की निगाह नहीं थी और सैकड़ों बकरों की क़ुरबानी कर डाली गई कि नहर ख़ुश हो जाय। इनका और ऐसी ही हज़ारों बातों का स्थान अन्धविश्वासों की सूची में है, परन्तु ऐसी ही बातें हमेशा से हो आई हैं और जब तक मनुष्य की प्रकृति में बड़ा परिवर्तन नहीं हो जायगा तब तक होती रहेंगी। हम लोग अपनी हिन्दी भाषा में "भाग्यचक्र" कहते हैं और अङ्गरेज़ी भाषा में उसे "क़िस्मत का हाथ" कहते हैं, परन्तु यह कभी नहीं ख्याल आता है कि गण्डे और तावीज़ किस तरह चक्र की गति को या क़िस्मत के हाथ को रोक सकते हैं।

संसार में आने के समय, विवाह के समय और संसार से जाने के बाद प्रत्येक देश में कुछ ऐसी रस्म और रवाजें हैं जो अन्धविश्वासों का प्रतिरूप हैं, यह सब ही जानते हैं और तब भी सब ही करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इङ्गलैण्ड में १५ वीं शताब्दी तक जन्मपत्र बनवाने की प्रथा थी। हम लोगों के यहाँ अब भी है, चाहे वही जन्मपत्र बनाने वाले हों, जो लखनऊ को "लषनऊ" लिखते हैं। उस देश में उस समय को जन्म-समय समझते थे, जब लड़का पैदा होने के बाद रोता था। इसके यहाँ कई मत हैं। प्रचलित मत यही है कि पैदा होते ही समय निश्चित किया जाता है। प्रायः देखा गया है कि बहुत से लड़के पैदा होते ही नहीं रोते हैं। अगर उनके रोने का रास्ता देखा जाय तो कम से नवाँसा तो बरबस ही जायगा। ज्योतिष के विषय में हम लोगों का अन्धविश्वास नहीं कहला सकता है, क्योंकि इस देश में इस शास्त्र के जानने वाले इतने बड़े हुये हैं कि जिनकी बनाई हुई जन्म-पत्रियाँ आदमियों के चरित्र को पूर्णरूप से प्रतिबिम्बित करती हैं। अब भी इस शास्त्र के अच्छे जानने वाले इस देश में हैं। खोज की कमी ने विज्ञान की इस प्रतिशाखा को भी चौपट कर दिया है। अस्तु। सभी देशों में नवोत्पन्न शिशु के नाल के विषय में अन्धविश्वास है। विदेशों में कहा जाता है कि यदि नाल सुरक्षित रहा तो शिशु सब तरह सुखी रहेगा और यदि उसे कोई हानि पहुँची तो लड़का जन्मपर्य्यन्त दुखी और भाग्यहीन रहेगा। कहीं-कहीं इसे जमीन में गाड़ करके इस पर एक दरख्त लगा देते हैं और उनके विश्वासानुसार इस दरख्त से लड़के के जीवन का घनिष्ट सम्बन्ध होता है। जर्मनी में इसकी रक्षा का भार पिता पर होता है। बहुत देशों में इसे मकान के दरवाजे पर दरवाजे के नीचे दबा कर गाड़ देते हैं और उनका यह विश्वास है कि इसकी वजह से प्रेतादि का घर में प्रवेश नहीं हो पाता है और लड़का सुरक्षित रहता है। अपने यहाँ भी इसे सुरक्षित रखने के लिये प्रसूतिगृह के दरवाजे पर या उससे थोड़ी दूर हट कर गाड़ देते हैं और उस पर आग जला देते हैं। आग जलाने की प्रथा शायद इस वजह से हो कि कुत्ते और बिल्ली उसे पञ्जों से खोद न डालें। हिन्दुस्तान में जितने बच्चे मरते हैं उनमें से अधिकांश इसके काटने को वेएहतियाती में मरते हैं। कहीं-कहीं यह भी कहा जाता है कि पैदा होने के समय बच्चे के सर पर एक झिल्ली सी लिपटी रहती है, वह बड़े भाग्यशाली होते हैं। अङ्गरेजी भाषा में उस झिल्ली को caul कहते हैं। अगर इसका रङ्ग लाल हुआ तो बहुत शुभ समझा जाता है और अगर काला हुआ तो अशुभ माना जाता है। इसके लिये भी उनका विश्वास यह है कि अगर यह किसी जादू जानने वाले के हाथ में पड़ जाय तो लड़के को नुक़सान पहुँचाया जा सकता है। यह भी उन्हीं के यहाँ का विश्वास है कि परियाँ लड़के को बदल लेती हैं। बदले में जो लड़का छोड़ जाती हैं, उसे अङ्गरेज़ी भाषा में changeling* कहते हैं। इस शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में शेक्सपियर ने अपने नाटक 'मिड समर नाइट्स ड्रीम' में किया है। इङ्गलैण्ड के कुछ स्थानों के रहने वालों का विश्वास है कि रविवार के दिन पैदा हुये बच्चों में चारुता होती है। सोमवार के दिन के बच्चों का चेहरा भरा होता है। मङ्गल के दिन की जिन बच्चों की पैदायश है, उनमें गम्भीरता और उदासीनता होती है। बुध के दिन जो पैदा हुये हैं वह प्रसन्न रहते हैं। बृहस्पति के दिन का जन्म चोरी करने का सूचक समझा जाता है। शुक्रवार वाले लड़के उदार और शनिवार को पैदा होने वाले कड़ी मेहनत करके रोटी कमाने वाले समझे जाते हैं। अपने यहाँ का कोई ऐसा विश्वास नहीं है। हाँ, हँसी में लोग कहते हैं, जब किसी को उदास देखते हैं, कि क्या मोहर्रम में पैदा हुये थे। दिन या महीने से कुछ नहीं होता है। बाज़ों की शक्ल ही कुछ ऐसी होती है कि उदासीनता बरसती मालूम होती है। एक ने एक से पूछा कि भाई, क्यों रो रहे हो। उसने जवाब दिया कि रोता नहीं हूँ, सूरत ही ऐसी है। किसी ने ख़ूब कहा है—'ज़िन्दगी ज़िन्दादिली का है नाम, मुर्दा दिल ख़ाक जिया करते हैं।' यह भी उनका विश्वास है। जो लड़के तीन बजे, छः बजे, नौ बजे और बारह बजे पैदा होते हैं वह मिस्मेरिज्म के अच्छे जानने वाले होते हैं। न मालूम किस वजह से इन अङ्कों

---

* आधुनिक भाषा में यह शब्द उनके लिये प्रयोग होता है जिनका मत स्थिर नहीं होता है। कभी कोई राय है और कभी कोई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर उनका विश्वास है। अपने देश में तीन का अङ्क शुभ समझा जाता है। इससे त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) का बोध होता है। नौ का अङ्क अपने यहाँ भी शुभ समझा जाता है। नौ ही अङ्क हैं, इन्हीं में सब गणना खतम है, और जो कुछ है वह नौ तक के अङ्कों का उलट-फेर है। इसके शुभ समझे जाने की एक वजह और भी है। यह एक पौराणिक कहावत है कि नन्द जी के पास नौ हज़ार गायें थीं। अब नन्द शब्द नौ के अर्थों में प्रयोग होने लगा है। अङ्गरेज़ी में नौ का अङ्क जादू का अङ्क कहलाता है। अपने देश की तरह इङ्गलैण्ड में भी बिल्ली से चिढ़ होती है। यहाँ प्रसूति गृह में यह नहीं जाने पाती है, इसका नाम तक नहीं लेते हैं—इसे नकटी कहते हैं। उनका यह कहना है कि जिस घर में नवोत्पन्न शिशु हो उसमें बिल्ली के बच्चे रहने देना अशुभ होता है। बच्चों को तौलने की प्रथा वहाँ और यहाँ भी बहुत पुरानी नहीं है। अपने यहाँ तो कभी थी ही नहीं और अब जो है वह वहीं की नक़ल है। पहले यहाँ सिर्फ़ तुलादान होता था। वही प्रथा मुसलमान बादशाहों के समय में भी प्रचलित रही और अब भी है।

इङ्गलैण्ड में बच्चे के पैदा होते ही उसके चारों तरफ़ आग घुमाते हैं और अपने यहाँ प्रसूति-गृह के दरवाज़े पर आग जलाते हैं। दोनों के लिए एक ही विश्वास है कि इससे भूत-बाधा से रक्षा होगी। अपने यहाँ की तरह बच्चे के 'दूध' के दाँतों को और देश वाले भी नहीं फेंकते हैं। उनका कहना है कि जो जानवर उस दाँत को खुतरेगा वैसा ही दाँत लड़के के निकलेगा। अपने यहाँ दाँत को घास में गाड़ देते हैं और कहते हैं कि ज्यों-ज्यों घास हरी होगी वैसे ही दाँत अच्छा और जल्दी निकलेगा। लङ्काशायर में दाँत को नमक के साथ रख कर आग में फेंक देते हैं। लड़के के नाखून काटने के विषय में भी उनके यहाँ की तरह अपने यहाँ भी अन्ध-विश्वास है। वेल्स की बहुत सी जगहों में कहा जाता है कि अगर तीन महीने के अन्दर लड़के के नाखून किसी धातु की बनी हुई चीज़ से काटे गये तो वह चोर होगा। इङ्गलैण्ड में यह प्रथा थी कि लड़के के नाखून एक साल तक नहीं काटते थे—दाँतों से काटने देना मना नहीं था। अङ्गरेज़ों में किसी उमर में भी अपने दाँतों से नाखून काटना सभ्यता समझी जाती है। यह भी उन्हीं लोगों का कहना है कि रविवार को प्रातःकाल नाखून नहीं काटने चाहिये। अपने यहाँ रविवार नहीं माना है, मङ्गल और शनिश्चर बचा देते हैं। वह लोग सोमवार को भी नाखून नहीं कटवाते हैं, जिनके बाल-बच्चे होते हैं। अपने यहाँ तब तक नहनी से पैर के नाखून नहीं कटवाते हैं जब तक ब्याह नहीं हो जाता है। अपने यहाँ हाथों और पैरों के सब नाखून एक ही साथ कटवाना अशुभ समझते हैं, क्योंकि दसवें और तेरहवीं के रोज़ यही करना पड़ता है। अब तो अपने देश के युवा पुरुष भी विदेशी नवजात शिशुओं से आगे बढ़े हुये हैं. वह अपने नाखून दाँत से भी नहीं काटते हैं। अब तो यह समझा जाने लगा है कि जितने नाखून बड़े होंगे, उतने ही ज़्यादा वह सभ्य समझे जायँगे। यह प्रथा अपने देश की समाज के दृष्टिकोण से प्रतिकूल है। ईश्वर की कृपा से यह अपने यहाँ की प्रथा नहीं है कि लड़के का दाहना हाथ न धोया जाय। यह उनके यहाँ की प्रथा है जो हमेशा हम लोगों को सफ़ाई पर लेक्चर दिया करते हैं। उनका विश्वास है कि दाहना हाथ न धोने से वह अपने जीवन में रुपया ख़ूब जमा कर सकेगा। अगर उनका यह विश्वास है तो क्या बुरा है, जब वह अमलता में पवित्रता समझते हैं। प्राचीन समय में साम्प्रदायिक मढ़ी में रहने वाली स्त्रियाँ नहाने नहीं पाती थीं। कहा जाता था कि शुचिता शैतान को आकर्षित करती है। अपने यहाँ की तरह इङ्गलैण्ड में भी यह अशुभ समझा जाता है कि पैदा होने के समय बच्चों के दाँत मौजूद हों।

इङ्गलैण्ड में कहीं-कहीं यह प्रथा थी कि लड़का जब बहुत दुबला हो जाता था तब कहा जाता था कि इसके नज़र लग गई है और उसे सूर्योदय के पहले उस लोहार की दूकान पर ले जाते थे, जिसका सात पुश्तों से यही पेशा रहा हो और उसे निहाई पर लेटा देते थे। लोहार हथौड़े को ऊँचा उठा करके ऐसा बल होता था कि जैसे लड़के की उससे जान ही ले लेगा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन धीरे से नीचे लाकर सिर्फ़ छुला देता था। यह तीन दफ़े करने से समझा जाता था कि नज़र का असर जाता रहा। लड़के को सूखे की बीमारी हो जाने पर अपने यहाँ भी एक ऐसा ही टोटका किया जाता है। उसे सूर्य्य निकलने के पहले धोबी के पाटा पर लेटा करके नहलाते हैं और गोबर से तौलते हैं। सिसेक्स में यह प्रथा थी कि जाति-कर्म के पहले किसी से यह नहीं कहा जाता था कि लड़के का क्या नाम रक्खा जायगा। अपने यहाँ भी पहले राशि का नाम कभी नहीं बतलाते थे। दोनों जगहों का विश्वास एक ही था कि इस नाम से नुक़सान पहुँचाया जा सकता है। वहाँ भी और यहाँ भी इसी उम्मीद से लड़के का नाम बड़े आदमियों के नाम पर रखते हैं कि नाम का कुछ ही प्रभाव पड़ जाय।

इङ्गलैंड की किसी-किसी जगह में बायें हाथ को अशुभ और दाहने को शुभ समझते हैं। अपने यहाँ भी बायें हाथ से न तो किसी का अभिवादन करते हैं और न कोई चीज़ किसी को देते हैं या लेते हैं। अगर अपने यहाँ बायाँ हाथ अपवित्र समझा जाय तो ठीक भी है, परन्तु इसकी वहाँ भी क़दर नहीं है, जहाँ शौचादि का झगड़ा ही नहीं है। यह जानने के लिये कि अमुक स्त्री या पुरुष अपने से प्रेम करता है, वह लोग घोंघे के कीड़े को राख पर बिठला देते हैं और उसके रेंगने से जिसके नाम का प्रथम अक्षर सा बन गया तो मान लेते हैं कि वह प्रेम करता है। अपने यहाँ किसी के मरने पर दसवें के दिन रात को एक जगह राख बिछा कर ऊपर से ढक देते हैं और कहते हैं कि उसने जो देह धारण की होगी, उसके पद-छाप बन जायँगे।

टोटके और टोने इस कहावत को प्रमाणित करते हैं कि प्रेम अन्धा होता है। सब ही देशों में इन पर बड़ा विश्वास होता है। मिश्र देश वाले इन कामों के लिये बाल, पर और साँप की खाल इस्तेमाल करते थे। बीड़ी की दुम के बाल, मेढक की बाँई पसुली की हड्डी, बीड़ों की खाई हुई कहीं पड़ी मिल जाय, नये पैदा हुए बछड़े के सर का गोश्त और कुछ जानवरों की आँतें भी काम में लाते थे। पहले रोम देश में प्रेम उत्पन्न करने वाली दवाओं का बड़ा चलन था। इन्हें बुड्ढी औरतें और दाइयाँ बेचा करती थीं। किसी-किसी में थोड़ा ज़हर होता था या किसी चीज़ के सड़ने से ज़हर पैदा हो जाता था। इन्हें खा करके बहुत से आदमी पागल हो जाते थे। तब वहाँ के बादशाहों ने इनका बेचना रोक दिया।

पाश्चात्य देशों में 'विवाह की अँगूठी' की प्रथा बहुत कुछ अन्धविश्वासों पर निर्भर है। यह प्रथा सन् ईस्वी के कुछ ही शताब्दियों के बाद से शुरू हुई थी। पहले यह दस्तूर था कि शादी तय होने पर सोने या चाँदी का एक टुकड़ा तोड़ा जाता था और आधा स्त्री के पास और आधा पुरुष के पास रहता था। फिर यह होने लगा कि एक कोई सिक्का झुका कर उसपर ईश्वर-प्रार्थना पढ़ी जाती थी और यह कहा जाता था कि यह दोनों के सच्चे हृदय की पहचान है और भूत-बाधा से रक्षा करेगा। उसके बाद अँगूठियों का नम्बर आया। पहले ब्याह की अँगूठियाँ लोहे की बनती थीं, फिर सोने की बनने लगीं। डीन काउलर ने सातवीं शताब्दी में लिखा था कि सोना शुद्ध प्रेम का सूचक होता है। अब विवाह की रस्मों में अँगूठी का होना अनिवार्य समझा जाने लगा। ज़रूरत अपना इन्तज़ाम कर लेती है। अँगूठी की अनुपस्थिति में परदे के छल्लों और गिरजे की कुञ्जी से काम लिया जाता है। कहा जाता है कि द्वितीय जार्ज के समय में जब ड्यूक आफ़ हैमिल्टन को अनुपम सुन्दरी मिस गनिंग से शादी जल्दी में तय हुई तो अँगूठी बनवाने का समय नहीं था। ड्यूक जल्दी से जल्दी शादी किया चाहते थे। पादरी डॉक्टर कीथ ने इनकार किया और कहा कि जब तक लायसेंस और अँगूठी नहीं होगी तब तक वह शादी नहीं करवायँगे। ड्यूक ने डाटा और फटकारा, फिर वह राज़ी हुये, लेकिन तब तक नहीं जब तक अँगूठी की जगह पर पर्दे के छल्ले से काम नहीं लिया गया। उनके यहाँ का विश्वास है कि ब्याह की अँगूठी को बिलनी पर रगड़ देने से तकलीफ़ जाती रहती है। इसको छोड़ कर और भी कितने ही अन्धविश्वास इसके सम्बन्ध में हैं। यह अँगूठी वधू के बायें हाथ में पहनाई जाती है; क्योंकि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाहिना हाथ पति का हाथ कहलाता है। दाहिने और बायें के सम्बन्ध में यही ख्याल अपने देश का भी है। बायाँ हाथ दाहिने हाथ की अपेक्षा कमज़ोर होता है और स्त्री को कमज़ोर ही दिखलाने की कोशिश हमेशा से इस देश में की गई है। स्त्रियों को बायें तरफ़ बिठलाने की प्रथा बहुत पुरानी अपने यहाँ की है। स्तुतियों में भी वही रङ्ग है, "वामांके च विभाति भूधर सुता"। स्त्रियों का एक नाम अबला भी है, जैसे क़ब्र में पैर लटकाये हुये सत्तर बरस के दूल्हे को लोग 'लड़का' ही कहते हैं। इसका भी ध्यान रक्खा जाता है कि अँगूठी पर कौन नग जड़ा हो। उनके मतानुसार जनवरी के लिये याकूत, सत्यता और दृढ़ भक्ति-सूचक, फ़रवरी के लिये फ़ीरोज़ा, निष्कपटता सूचक (अपने यहाँ कहा जाता है कि इसके पहनने से लकवे का डर जाता रहता है), मार्च के लिये माणिक, साहस-सूचक, अप्रेल के लिये हीरा, निर्दोषता सूचक, मई के लिये पन्ना, प्रेम में सफलता सूचक, जून के लिये सङ्ग सुलेमानी, स्वास्थ्य और दीर्घजीवन-दाता, जुलाई के लिये 'कार्नेलियन' (यह एक सुर्ख़ और सफ़ेद रङ्ग का पत्थर होता है जो प्रशिया और पर्शिया की नमक की खानों में मिलता है) सन्तोष सूचक, अगस्त के लिये गोमेद, दाम्पत्य सुख सूचक, सितम्बर के लिये क्रायसोलाइट (यह एक बादामी रङ्ग का पत्थर होता है) मनमलीनता नाशक, अक्टूबर के लिये दूधिया पत्थर, आशा सूचक, नवम्बर के लिये पुखराज, विश्वस्तता सूचक, दिसम्बर के लिये एक धुमले हल्के हरे और नीले रङ्ग का नग, समृद्धि सूचक। इन नगों का हिसाब उन नगों से पृथक् है, जो जन्म-मास को दृष्टि में रख कर पहने जाते हैं, जैसे जिनका जन्म जनवरी में हुआ है उन्हें लहसुनिया पहनना चाहिये, जून मास में पैदा होने वालों को मोती। अपने यहाँ ग्रहों के दुष्ट प्रभाव से बचने के लिये नग पहनने को बतलाया है, जैसे जब सूर्य के अरिष्ट हों तो माणिक, चन्द्रमा के अरिष्ट होने में मोती, मङ्गल के अरिष्ट होने में मूँगा, बुध के अरिष्ट होने में पन्ना, बृहस्पति के अरिष्ट होने में पुखराज, शुक्र के अरिष्ट होने में हीरा, शनिश्चर के अरिष्ट होने में नीलम, राहु के अरिष्ट होने में गोमेद और केतु के अरिष्ट होने में लहसुनिया पहनते हैं। वह लोग मई के महीना को विवाह के लिये अशुभ समझते हैं। जैसे अपने यहाँ अगहन का महीना (अपने यहाँ भी कभी-कभी इस महीने में शादी होती है)। यह इस वजह से वर्जित किया गया है कि इसी महीने में श्री महाराज रामचन्द्र की शादी हुई थी और कितना दुखमय जीवन दोनों का व्यतीत हुआ। उन लोगों के विश्वासानुसार यदि सोमवार को विवाह हुआ तो सम्पत्ति की वृद्धि होगी, मङ्गल के दिन विवाह होने से स्वास्थ्य के लिये अच्छा रहता है। बुध सबसे अच्छा दिन समझा जाता है। बृहस्पति के प्रभाव से चिड़चिड़ापन होगा। शुक्रवार हानिकारक है और शनिवार भाग्य-नाशक समझा जाता है। वहाँ भी अब इन बातों में पुरानापन आ गया है। अब विवाह शुक्रवार ही को ज्यादा होते हैं। अपने यहाँ दिनों का कोई विचार नहीं होता है। शुभाशुभ विचारने का और ही तरीक़ा है।

विवाह के समय वधू के हाथ में फूल लेने का पुराना दस्तूर है। उनका यह कहना है कि फूल प्रकृति की यौवनावस्था के सूचक होते हैं। यह बात कुछ समझ में आने वाली है। मिश्र देश में ऐसे समय में कमल का फूल हाथ में होना बहुत शुभ समझते थे। उनका यह कहना था कि यह संसार की जन्मदात्री का बोधक है। अपने यहाँ कमल के फूल से लक्ष्मी का बोध होता है। खैर, दोनों बातें मिलती जुलती हैं।

अङ्गरेज़ों में विवाह के बाद वर और वधू के पीछे पुराने जूते फेंकने का दस्तूर है। उनका कहना यह है कि यह प्रथा पूर्वीय देशों से शुरू हुई होगी, क्योंकि वहाँ जूता हुकूमत का चिन्ह समझा जाता है। ख़ूब सूझी, यद्यपि यह सही है कि हिन्दुस्तान में 'बाज़ियों' की धूम है, जैसे कनकौवाबाज़ी और बटेरबाज़ी, वैसे ही बीवी पर जूतेबाज़ी का भी शौक़ है। परन्तु इसका पता कहीं भी अपनी पुरानी किताबों से नहीं चलता है कि कभी भी इस देश में जूते पीछे फेंकने की प्रथा थी। हाँ, मज़ाक में जूते कपड़े में लपेट कर श्वसुरालय में रक्खे जाते हैं और दूल्हे से कहा जाता है कि इनके सामने मत्था टेको। शायद इस प्रथा का यह भी मतलब हो कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह कहावत न भूल जाना कि "कभी गाड़ी नाव पर और कभी नाव गाड़ी पर"। ऐसा न हो जो तुम्हारा अस्त्र समझा जाता है उसी से तुम्हारी स्त्री काम ले। फेंकने में बाँधा जूता फेंका जाता है। उन लोगों का यह विश्वास है कि यह प्रथा बड़ी शुभ है।

दुष्ट दृष्टि से सभी देश वाले डरते आये हैं और सब ही का यह विश्वास रहा है कि इसके पड़ते ही कुछ न कुछ अनिष्ट होता है। इसका डर अभी तक नहीं मिटा है। इससे बचने के सब ही देशों में सैकड़ों उपाय किये जाते हैं। तब भी लोगों को डर लगा रहता है। बेचारी मातायें टोटके और टोने करते, राई और लोन उतारते थक जाती हैं। लड़के को चाहे जो बीमारी हुई, बस नज़र का शक होता है। दवा-इलाज तो दूर रहा, झाड़-फूँक होने लगती है। झाड़ने-फूँकने वाला जितना कम पढ़ा-लिखा होगा, उसकी उतनी ही ज़्यादा क़दर होगी। सुनने वालों पर सत्यनारायण की कथा का तब तक प्रभाव नहीं पड़ेगा, जब तक अच्छी तरह हिन्दी तक न जानने वाले पण्डित जी हर एक बात को 'जो है सो' से न सम्पुटित करते जाँय। एक दफ़ा एक एम० ए० पास पण्डित जी एक जगह कथा बाँचने गये और नये ढङ्ग से अर्थ कहना शुरू किया। लोग नाक और भौं सिकोड़ने लगे और एक अध्याय के बाद कथा का सिलसिला रोक दिया गया और वही पण्डित जी बुलाये गये जिनका तकिया क़लाम 'जो है सो' था। लोग ख़ुश हो गये। झाड़ने-फूँकने वाले और देहात में पण्डित कहलाने वालों में विद्वत्ता की नहीं, वाक्पटुता की ज़रूरत होती है। एक पण्डित जी को अमर-कोष के दो-चार श्लोक याद थे और उन्हीं से विवाह करवा रहे थे। किसी ने टोका तो आपको सूझ गई और फ़ौरन जवाब दिया कि हम तो यही चाहते हैं कि वर और वधू अमर हों और अगर तुम यह नहीं चाहते हो तो मर से विवाह करवाओ। लोगों ने पैर पकड़ लिये और कहा कि नहीं आप ही अमर से विवाह करवाइये। एक लड़की को मेनिंगिया हो गई थी। झाड़-फूँक होने लगी। बतलाया गया था कि नज़र लग गई है। लड़की मर भी गई और झाड़-फूँक होती रही। यही क्यों, एक अस्पताल में एक रोगी को चीड़-फाड़ करने के लिये क्लोरोफ़ार्म दिया गया। वह महाशय मेज़ पर ही ठण्ढे हो गये, लेकिन चीड़-फाड़ होती रही और पट्टी भी बाँधी गई। जब उनकी तरफ़ ध्यान गया तब पता चला कि वह ऐसा सोये हैं कि जगना नामुमकिन है। अस्तु।

पुराने ज़माने के मिश्र देश वाले, ऐसेरिया के रहने वाले, बैबीलोनिया के रहने वाले, ग्रीस और रोम के रहने वाले सब ही दुष्ट दृष्टि से डरते थे। ग्रीस देश के एक लेखक हेलियो डोरस ने लिखा है कि किसी अच्छी चीज़ को जब कोई ईर्षा की दृष्टि से देखता है, तो समीप का वायुमण्डल ज़हरीला हो जाता है। यहूदियों में एक कहावत है कि उसका खाना न खाओ, जिसकी दृष्टि दुष्ट है। कहा जाता है कि बौने, कुबड़े, या जिनकी आँखें रङ्गीन होती हैं, उनकी दृष्टि अहितकर होती है। उनकी भी आँख अच्छी नहीं कहलाती हैं, जो देहात में 'ऐंचा-ताना' कहलाते हैं। जब दो-चार आदमी बैठे हों तब ऐसों से बातें करने में बड़ी दिक़्क़त होती है। एक महाशय अपने दो मित्रों से बातें कर रहे थे। एक आँख एक की तरफ़ थी और दूसरी दूसरे की तरफ़। उनके प्रश्न का उत्तर दोनों मित्रों में से किसी ने नहीं दिया। वह बहुत बिगड़े और कहने लगे कि कोई भी जवाब नहीं देता है। एक मित्र महोदय तो चुप रहे, परन्तु दूसरे हासप्रिय महाशय ने कहा कि अपराध आपकी आँखों का है, इस वजह से पता नहीं चला कि किससे आपने प्रश्न किया था। नज़र का ज़िक्र कविता में भी आया है। एक उर्दू का कवि कहता है—'लग गई किसकी नज़र जो हो गया यों मुजमहिल, था भला चङ्गा मेरा दिल हाय दिल अफ़सोस दिल'। एक अपनी भाषा का कवि कहता है—'स्वेद के बुन्द डिठौना लसै लट लागि रही जनु लोयन लोन।' अगर नज़र का डर नहीं था तो डिठौने की ज़रूरत क्या थी। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने कहा है—'बार बार पिय आरसी मत देखहु चित लाय, कोमल सुन्दर रूप पै दीठि न कहुँ लगि जाय।' हाईलैण्ड वालों का विश्वास है कि अनहितकर आँख का प्रभाव आधुनिक समय में भी वैसा ही है जैसा पहले था। यह उनका विश्वास अपने देश के ढङ्ग का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है कि नज़र लगते ही गायों का दूध कम पड़ जाता है। दूध की कमी चाहे दाने और चारे की वजह से हो, लेकिन दोष नज़र ही का होता है। विदेशों की तरह यह भी अपने यहाँ के किसी-किसी जगहों का दस्तूर है कि औरतें गिरे हुये बालों पर तीन दफ़े थूक देती हैं। कहा जाता है कि इससे नज़र नहीं लगती है। अगर वह बाल किसी के भी हाथ में पड़ जायँ।

हाथों के सम्बन्ध में भी विदेशियों के भी बहुत कुछ अन्धविश्वास हैं। उनका कहना है कि मोटा हाथ दृढ़तासूचक होता है, छोटा और पतला हाथ उनका होता है जो कमज़ोर और कातर होते हैं, लम्बा हाथ और लम्बी उङ्गलियाँ उनकी समझी जाती हैं, जो हाथ के काम में चतुर होते हैं। छोटे हाथ मूर्खता प्रकट करते हैं। सख्त हाथ उद्दंडता और मूढ़ता-सूचक समझे जाते हैं। मुलायम हाथ बुद्धि और स्त्रीत्व प्रकट करते हैं और वह हाथ जिस पर बाल अधिक हों, विलासिता प्रकट करते हैं। लम्बे उँगलियों के जोड़ लोभ प्रकट करते हैं। यह अपने यहाँ की तरह उनका भी विश्वास है कि अगर दाहिनी हथेली में खुजली होती हो तो रुपया मिलेगा और अगर बाईं हथेली खुजलाये तो रुपया देना पड़ेगा।

सब ही देशों में कवियों और लेखकों ने आँखों की तारीफ़ में क्या नहीं कह डाला है। सच भी है। अगर मनुष्य के शरीर में कहीं आकर्षण शक्ति है तो आँखों में है। कहा जाता है कि नेपोलियन की ऐसी निगाह रहती थी कि लोग थर्रा जाते थे और यही हाल शिवाजी का भी था और दोनों जब खुश होते थे तो निगाहों में वह आकर्षण आ जाता था कि लोग इनकी इच्छाओं पर नाचने के लिये तैयार हो जाते थे। उनके यहाँ का यह विश्वास है कि दाहिनी आँख का खुजलाना इस बात का सूचक होता है कि जिससे स्नेह करते हो उसे जल्दी देखोगे। अपने यहाँ दाहिनी आँख का फड़कना शुभ माना गया है। फड़कती हुई आँख को अङ्गरेज़ी में Jumping eye कहते हैं। उन्हीं के यहाँ पहले यह भी कहा जाता था कि दोनों भौंहों का मिलना कपटी हृदय का सूचक होता है। पतली भौंहों की तारीफ़ हमेशा रही है।

तीन सौ बरस से अधिक हुए जब माइकेल स्काट ने लिखा था कि जिनके कान असाधारण लम्बे होते हैं वह मिथ्याभिमानी, साहसी परन्तु बेवकूफ़ और किसी भी काम करने के योग्य नहीं होते हैं। गत शताब्दी के एक मस्तिष्क-विद्या-विशारद ने लिखा था कि छोटे और पतले कान चरित्र की विशुद्धता प्रकट करते हैं और मोटे और बड़े कान विलासिता और निकृष्टता-सूचक होते हैं। पतले और नोकीले कानों के सम्बन्ध में उसकी राय है कि स्वभाव की क्रूरता और निर्दयता प्रकट करते हैं और लम्बे और उठे हुये कान सङ्गीत से प्रेम प्रकट करते हैं। यह भी लोगों का विश्वास है कि नाक से चरित्र का पता चलता है, जैसे जिनको नाक की हड्डियाँ उठी होती हैं, उनमें दृढ़ता और बुद्धि होती है और वे विश्वास करने के योग्य होते हैं और इसके बिलकुल प्रतिकूल वह होते हैं जिनकी नाक की हड्डियाँ पीछे दबी होती हैं। पतली और नोकीली नाक वाले ईर्षालु होते हैं और जिनकी नाक की नोक ज़रा ऊपर उठी होती है वह प्रसन्न-चित्त होते हैं। कहा जाता है कि नेपोलियन और वेलिंग्टन दोनों नाक से चरित्र का पता लगाने में बड़े अभ्यस्त थे और फ़ौज में उन्हीं आदमियों को रखते थे जिनकी नाक उनको पसन्द आती थी। अपने यहाँ कोई ऐसा विश्वास नहीं है। यह अवश्य है कि यह इज्ज़त और आबरू की प्रतिनिधि समझी जाती है। एक प्रचलित कहावत अपने यहाँ की है कि "नाक कट गई" अर्थात् इज्जत और आबरू धूल में मिल गई। नाक से खून निकलने के सम्बन्ध में विदेशों में अन्धविश्वास है। उनका कहना है कि दाहिनी नाक से एक बूँद खून निकलना इस बात का सूचक है कि या तो वह स्वयं बहुत बीमार होगा या किसी निकटस्थ की मृत्यु होगी और तीन बूँद खून का निकलना और भी खराब है, परन्तु बाँई नाक से एक बूँद खून निकलना शुभ समझा जाता है। शेक्सपियर ने अपने नाटक 'मर्चेन्ट आफ़ वेनिस' में नाक से खून निकलने को अशुभ माना है। यह अपने यहाँ के किसी अन्धविश्वास से मिलता-जुलता नहीं है। अपने यहाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छींकने के सम्बन्ध में इतने अन्धविश्वास हैं कि और किसी देश में शायद ही हों। यहाँ किसी शुभ अवसर पर छींकना अशुभ समझा जाता है और फिर यह भी है कि कितनी दफ़े छींका, दाहिनी तरफ़ छींका या बायें तरफ़ छींका, सामने या पीछे छींका। स्काटलैण्ड में कहते हैं कि बच्चा जब तक पहली दफ़े छींक नहीं लेता है तब तक वह समझा जाता है, कि उसके परियों के फन्दे में पड़ने का डर नहीं गया है। किसी-किसी जगह के लोगों का तो यह कहना है कि वह बच्चे नहीं छींकते हैं, जिनमें विश्वास की कमी होती है और इसी वजह से जहाँ बच्चे छींकते तो बहुत खुश होते हैं। मिडलैंड्स में जब बच्चा छींकता है तब बड़े बूढ़े कहते हैं "ईश्वर तेरी सहायता करें"। अपने यहाँ भी आशीर्वादात्मक शब्द कहते हैं।

तिलों के भी सम्बन्ध में विदेशों में बहुत से अन्धविश्वास हैं। एक का कहना है कि किसी स्त्री के हाथों और पैरों पर तिलों का होना यह सूचित करता है कि उसके बहुत से लड़के होंगे और किसी मर्द के दाहिने हाथ और कंधे पर तिल का होना असाधारण बुद्धि प्रकट करता है और उसी जगह बायें हाथ पर तिल का होना झगड़े और बहस का सूचक होता है। पेट पर होना बल बतलाता है, किसी मर्द या औरत के मुँह पर होना चरित्र की हीनता बतलाता है। अगर होंठ या घुट्टे पर हो तो मर्दों में लज्जाशीलता और औरतों में साहस प्रकट करता है और यदि घुटनों पर या उसके नज़दीक हो तो दौलत और गुण, दाहिने के बाँये घुटने पर बहुत बच्चे और जाँघों पर विलासिता सूचक समझा जाता है। अपने यहाँ भी इन्हीं से मिलते-जुलते अन्धविश्वास हैं। अपने यहाँ यह भी कहा जाता है कि अच्छे दिनों में शुभ जगहों पर तिल निकल आते हैं और बुरे दिनों में वहाँ से ग़ायब हो जाते हैं। फ़ारसी और उर्दू के कवियों ने तिल पर ख़ूब लिखा है—ज़ुल्फ़ों को जाल, तिल को दाना और मुँह को चिड़िया माना है।

बालों के सम्बन्ध में भी शुभाशुभ की बहुत सी बातें कही जाती हैं। कहा जाता है कि बालों से कितने ही रोगों के और टोने हो सकते हैं और इसी वजह से औरतें अपने बाल नहीं फेंकती हैं। विदेशियों का विश्वास है कि अगर उन बालों से मैंने ने घोंसला बना लिया तो जिसके बाल हैं उसकी एक साल और एक दिन के अन्दर मौत हो जायगी। बहुत जगह यह दस्तूर है कि बालों को आग में फेंक देते हैं और उनके जलने से शकुन विचारते हैं। जैसे कि अगर बाल धीरे-धीरे जलें तो समझते हैं कि जल्दी मौत होगी और अगर जलने में ज्वाला निकली तो यह समझते हैं कि बड़ी उमर होगी। अपने यहाँ शकुन और अपशकुन का सवाल नहीं है—यहाँ बाल जलाते ही नहीं हैं। उनके यहाँ यह भी कहते हैं कि जिस मर्द के सर पर बाल ज्यादा होंगे, उसमें बुद्धि की कमी होगी। अपने यहाँ यह कहते हैं कि जिसके सर के सामने के बाल गिर गये होंगे वह निर्धन नहीं होगा। अपने यहाँ बालों के रङ्ग का झगड़ा नहीं है—सबके बाल काले ही होते हैं। उनके यहाँ काले और गहरे बादामी रङ्ग के बाल, बल और दृढ़ता-सूचक समझे जाते हैं और घुँघराले बाल अच्छे स्वभाव की पहिचान हैं और यहाँ इसकी पहिचान हैं 'कि जो की हज़रते इश्क़ ने रहनुमाई, तो कर दी भरे घर की दम में सफ़ाई।' अपने देश में तो लाल बाल होते ही नहीं हैं, परन्तु विदेशी इन्हें क्रोधी स्वभाव का सूचक समझते हैं। प्रखरता, क्रूरता, उद्दंडता और क्रोध लाल ही रङ्ग से तो प्रकट किया जाता है। वह लोग भी लाल बालों को सुन्दरता का बाधक समझते हैं। संसार का कोई ऐसा नियम नहीं है, जिसका विवर्जन न हो। अद्वितीय सुन्दरी क्लोपैटरा और हेलीन ऑफ़ ट्रूवाय के लाल ही बाल थे और जो उन लोगों पर जान देते थे उनकी निगाहों में वही ख़ूबसूरत होगी। ख़ूबसूरती की अभी तक व्याख्या नहीं हो पाई है और न कभी शायद हो पायेगी। कुइन एलीज़बेथ, रूस की कैथरीन, आस्ट्रिया की ऐन और और भी ऐतिहासिक महिलाओं के बाल लाल थे और यह सब अपने-अपने समय में अपने सौंदर्य्य के लिये प्रसिद्ध थीं।

विदेशियों का यह विश्वास है कि शीशे का टूटना अशुभ-सूचक है। और की तो कौन कहे, जब नेपोलियन का ऐसा आदमी भी इस पर दृढ़ विश्वास करता था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक दफ़े इटली में वह युद्ध कर रहा था। न मालूम किस तरह से उसका शीशा उसकी स्त्री जोज़फ़ीन की तस्वीर पर गिर करके टूट गया। नेपोलियन पर इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि तब तक वह खिन्न-चित्त रहा जब तक खबर आ नहीं ली कि जोज़फ़ीन सकुशल है। यह कहना ठीक नहीं मालूम होता है कि अन्धविश्वासों का प्रभाव उन पर पड़ता है जो साहसी नहीं होते हैं। यदि नेपोलियन में साहस की कमी थी तो शायद संसार में साहस का नाम व्यर्थ है। बात तो यह है कि अन्धविश्वासों के लिये वही कहा जा सकता है जैसा हाली साहब ने पुराने नुस्खों के लिये कहा है—'चले आते हैं जो कि सीना ब सीना'।

नज़र झाड़ने में, टोटके टोने करने में या इनके बुरे असर को हटाने के लिये सब ही जगह नमक काम में लाया जाता है। नमक के बग़ैर वास्तव में सब फीका है। जब जीवन से प्रेम जाता रहता है और कोई उत्साह नहीं रह जाता है, तब अङ्गरेज़ी में कहते हैं कि जीवन का नमक जाता रहा 'the salt of life is gone'—मीठे की पहचान ही क्या हो जो नमक न हो। परिवर्तन संसार का नियम है। एक के बाद दूसरे की इच्छा होती है। रहीम जी ने ख़ूब कहा है—'नैन सलोने अधर मधु कहु रहीम घटि कौन, मीठो भावत लोन पै औ मीठे पर लोन।'

जैसे अपने यहाँ रास्ता काट करके सियार के निकल जाने पर लोग अपशकुन समझते हैं, वैसे ही इङ्गलैण्ड में चौगड़े का रास्ता काटना अशुभ समझते हैं। उनके यहाँ बिल्लियों के सम्बन्ध में बहुत से अन्धविश्वास हैं। उनके यहाँ कहते हैं कि काली बिल्लियों का चुम्बन करने से लोग मोटे होते हैं और सफ़ेद बिल्ली के चुम्बन से दुबले हो जाते हैं। अपने देश में बिल्ली बुरी ही समझी जाती है। अपने यहाँ कहते हैं कि इसका पालना ठीक नहीं होता है, क्योंकि इसकी यह इच्छा रहती है कि मालिक अन्धा हो जाय तो यह थाली से खाना चुरा करके उठा ले। अपने यहाँ चोरी के सम्बन्ध में बिल्ली का नाम आता है। फ़ारसी की एक कहावत है कि बिल्ली को पहले ही दिन मार डालो। भावार्थ यह है कि बुरों को पहले ही रोक देना चाहिये। अपने यहाँ बिल्ली को मार डालना पाप समझते हैं। अब तो खोज करके डॉक्टरों ने यह पता लगाया है कि बच्चों को बिल्ली के साथ खेलने से 'डिप्थेरिया' नामक बीमारी हो जाती है। शायद इसी वजह से हमारे यहाँ बिल्ली से दूर ही रहने को लिखा है कि कहीं एक बाल भी उसका मुँह के अन्दर न चला जाय। ऐसी ही किसी बीमारी का डर होगा। खोज बन्द हो जाने से अब तो मालूम होता है कि हम कभी कुछ नहीं जानते थे। पता लगा करके जब विदेशी यह कहते हैं कि अमुक बात उन्होंने भारतवर्ष से सीखा था तो हम चकित हो जाते हैं और उससे भी बड़ा दुःख यह है कि तब भी हमें विश्वास नहीं आता है कि यह बात अपने ही यहाँ की थी। अगर यह कहा जाय कि यह दूसरों ने पता लगाया है तो बहुत जल्दी और बहुत प्रसन्नतापूर्वक उसे मानने के लिये हम लोग तैयार हो जाते हैं।

इङ्गलैण्ड के पुराने लोगों का यह विश्वास था कि रात को कुत्ते का गुर्राना अशुभसूचक होता है, यह भी विश्वास था कि कुत्ते अपने मालिक की मृत्यु के आने के पहले ही जान जाते थे और उस कमरे के दरवाज़े पर आर्तनाद करने लगते थे। अपने यहाँ यह नहीं मानते हैं। यहाँ कुत्ते और घोड़े बड़े स्वामिभक्त जानवर कहलाते हैं। 'चहार दरवेश' में शुरू से आख़िर तक कुत्ते की ही तारीफ़ है। अपने यहाँ यह कहा जाता है कि मालिक पर जब कोई मुसीबत आने वाली होती है तब कुत्ते पर उसका असर पड़ता है और वह पहले मर जाता है। जैसे कहा जाता है कि तबेले को बला बन्दर पर आती है।

अगर विश्वास का नाम संसार में सार्थक है तो यह अन्धविश्वास ही है।*

* इस लेख के लिखने में मुझे सी० जे० एच० टाम्सन की पुस्तक "सुपरस्टीशन इन एवरी डे लाइफ़" से बड़ी सहायता मिली है, जो धन्यवादपूर्वक स्वीकार की जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रामोन्नति कार्य में स्त्रियों के सहयोग की आवश्यकता

[श्री० शङ्करदयालु श्रीवास्तव]

इस बात को साधारणतः सभी स्वीकार करेंगे कि गाँव के समुचित सुधार और पुनर्संगठन के बिना भारत की वास्तविक उन्नति नहीं हो सकती। गाँवों के सुधार और संगठन का कार्य यों तो पिछले कई वर्षों से कतिपय प्रान्तों में प्रारम्भ हो गया था, किन्तु जब से नया विधान कार्यान्वित हुआ है और सात प्रान्तों में कॉंग्रेसी मन्त्रिमण्डलों की स्थापना हुई है, तब से इसकी ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। पुरानी पञ्चायतों को फिर से स्थापित करने की आवश्यकता भी लोग बहुत पहले ही से स्वीकार कर चुके थे और अनेक प्रान्तों में पञ्चायतों के संगठन के लिए क़ानून पास हो चुके हैं। पञ्चायतें स्थापित की जा चुकी हैं और भी की जा रही हैं। यदि उनका संगठन लोकसत्ता के सिद्धान्तों के आधार पर किया गया और उन्हें उत्तरोत्तर समुचित अधिकार प्रदान कर दिये गए तो ग्रामीणों की मुक़दमेबाज़ी बहुत कम हो जायगी और उनका बहुत सा धन बरबाद होने से बच जायगा। लेकिन पञ्चायतों की स्थापना कर गाँव वालों के आपसी झगड़ों के निपटारे की व्यवस्था कर देने मात्र से ग्रामोन्नति नहीं होगी। इसके लिए हमें शिक्षा-प्रचार, स्वास्थ्य-रक्षा, आर्थिक उन्नति, घरेलू उद्योग-धन्धों के विकास, मितव्ययता तथा शिक्षा आदि अनेक बातों की ओर ध्यान देना होगा।

सहयोग क्यों आवश्यक है ?

इन प्रश्नों पर एक-एक करके हम आगे चल कर अपने कुछ विचार प्रकट करेंगे। यहाँ हम यह बतला देना चाहते हैं कि ग्रामोन्नति का कार्य महिलाओं के सहयोग बिना सुचारु रूप से सम्पादित नहीं हो सकता। इस बात को हमारे नेता, ग्राम-सुधार से सम्बन्ध रखने वाले अफ़सर तथा महिलाओं की कुछ संस्थाएँ और सभाएँ—सभी स्वीकार कर चुके हैं। प्रश्न किया जा सकता है कि ग्राम-सुधार के लिए स्त्रियों के सहयोग की क्या आवश्यकता है ? इसका उत्तर संक्षेप में इस प्रकार दिया जा सकता है, पहली बात तो यह है कि कोई भी योजना तब तक कार्यान्वित नहीं हो सकती, जब तक कि सब आदमी उसके साथ सहयोग न करें। ग्रामोन्नति योजना भी इसी प्रकार सभी ग्राम-निवासियों के—चाहे वे स्त्री हों या पुरुष—सहयोग की अपेक्षा रखती है। यदि स्त्रियाँ इस योजना के प्रति उदासीन बनी रहें और सुधार कार्य में योग न दें तो स्पष्ट है कि ग्राम-सुधार, जिसमें पुरुषों और स्त्रियों दोनों का सुधार सम्मिलित है, पूरे तौर पर नहीं हो सकेगा। जब तक स्त्रियाँ चहारदीवारी के अन्दर बन्द रहेंगी, परम्परागत रूढ़ियों तथा अन्धविश्वास के बन्धनों से जकड़ी रहेंगी, स्वास्थ्य और सफ़ाई के महत्व को न समझेंगी, परदे, लम्बे घूँघट तथा भद्दे गहनों के शौक़ को न छोड़ेंगी, अशिक्षा और अज्ञान के अन्धकार से आच्छन्न रहेंगी, तब तक चाहे कितने भी सुधार कर दिए जायँ, ग्राम-सुधार पूर्ण नहीं कहा जा सकेगा।

दूसरी बात यह है कि बच्चों का लालन-पालन मुख्यतया स्त्रियों के ही हाथ में रहता है। बचपन में बच्चों को जैसी शिक्षा दी जायगी, उनका आचरण जैसा बनाया जायगा, जैसी आदतें डाली जायँगी, वैसे ही उनका विकास होगा। इन भावी नागरिकों को सभ्य और शिक्षित बनाने का बहुत कुछ उत्तरदायित्व उनकी माताओं पर ही है। अतः जब तक स्त्रियों को अनेक आवश्यक बातों की शिक्षा नहीं दी जायगी, तब तक वे अपने इस पवित्र कर्त्तव्य का पालन ठीक से नहीं कर सकेंगी। इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार सिद्ध होता है कि ग्राम-सुधार के आन्दोलन में स्त्रियों का सम्मिलित होना और सक्रिय सहयोग प्रदान करना बहुत आवश्यक है।

तीसरी बात यह है कि हमारी पुरानी सभ्यता और परिपाटी के अनुसार स्त्रियाँ गृहस्वामिनी बनी हुई हैं। घर की आन्तरिक व्यवस्था की सारी ज़िम्मेदारी उन्हीं के ऊपर है। घर को किस प्रकार साफ़-सुथरा रखना चाहिए, चीज़ों को कैसे सँभाल कर रक्खा जाय कि घर आरास्ता दिखाई पड़े, घर का हिसाब-किताब कैसे रखना चाहिए, आदि बहुत सी बातें ऐसी हैं, जिनका ज्ञान प्रत्येक स्त्री को होना चाहिए। गृह-विज्ञान की शिक्षा न मिलने के कारण गाँवों में बहुत से घर कितने गन्दे और अस्वास्थ्यकर अवस्था में रक्खे जाते हैं, इसका पता उन लोगों को अवश्य होगा जो देहात में रह चुके हैं या जिनका गाँवों से सम्पर्क है। जब तक गृहविज्ञान और स्वास्थ्य-विज्ञान की मुख्य-मुख्य बातों का ज्ञान स्त्रियों को नहीं करा दिया जायगा और वे अपने घरों की आन्तरिक व्यवस्था ठीक से नहीं करने लगेंगी, तब तक ग्राम-सुधार का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकेगा।

चौथी बात यह है कि भूत-प्रेत, टोना-टोटका, बाल-विवाह, दहेज, मङ्गलोत्सव पर गन्दे व अश्लील गाने, झगड़ा-प्रपंच आदि जो बुराइयाँ और कुरीतियाँ देहातों में फैली हुई हैं उनका दूर होना आवश्यक है। ये सब बातें नारी समाज में अधिक पाई जाती हैं। और भी बहुत से रस्म-रिवाज ऐसे हैं, जो प्रायः स्त्रियों के ही हाथ में हैं और जिनमें परिवर्तन करने की आवश्यकता है। स्पष्ट है कि ये सब काम महिलाओं के सहयोग के बिना नहीं हो सकते।

पाँचवीं बात यह है कि जीवन के रहन-सहन का मान गृह पर निर्भर करता है और ग्रामोन्नति की योजना घरों की आर्थिक स्थिति को सुधार कर उन्हें अच्छी अवस्था में लाने का प्रयत्न करती है। चूँकि घर की अधिकांश व्यवस्था के लिए स्त्रियाँ ही ज़िम्मेदार हैं, अतः यह बिलकुल स्पष्ट है कि उनकी सहायता और सहयोग के बिना यह योजना कभी सफल नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त एक बात यह भी है कि जब तक स्त्रियाँ ग्राम-सुधार तथा ग्रामोन्नति की आवश्यकता व महत्व नहीं समझेंगी, तब तक वे इस कार्य में सहायक होने के बदले बाधक ही सिद्ध होंगी। इसलिये ग्रामोन्नति का वास्तविक आधार बालिकाओं की शिक्षा तथा नारी-आन्दोलन है। जब तक स्त्रियों को अपनी अधोवस्था तथा संसार की प्रगति का ज्ञान नहीं होगा, तब तक वे आगे नहीं बढ़ सकेंगी।

शिक्षा का प्रचार

अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि ग्रामोन्नति के पुण्य-कार्य में भाग लेने वाली महिलाओं को क्या काम करना चाहिए। सब से अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य है शिक्षा का प्रचार करना। गाँवों में अशिक्षा का जो अन्धकार छाया हुआ है, वह किसी से छिपा नहीं है। तभी तो समाज में यह अन्धकार और भयानक रूप धारण किए हुए है। इस अशिक्षा को दूर करने के लिए न केवल लड़कियों को पढ़ाने-लिखाने का प्रबन्ध करना होगा, बल्कि विवाहिता और प्रौढ़ा स्त्रियों को भी अक्षर-ज्ञान कराना होगा। इस काम को शिक्षित महिलाएँ ही अधिक योग्यता व सफलता के साथ सम्पादित कर सकेंगी। प्रत्येक बड़े गाँव में अथवा दो-तीन छोटे-छोटे गाँवों के बीच एक कन्या-पाठशाला खोलना चाहिए, जहाँ प्रत्येक घर की लड़कियाँ पढ़ने के लिए एकत्रित हो सकें। घर-घर जा-जाकर लोगों को समझाया जाय कि वे अपनी लड़कियों को पढ़ने के लिए स्कूल भेजा करें और अगर वे स्वयं अपढ़ हैं तो साक्षर बनाने का प्रयत्न करें। अगर स्कूल दूसरे गाँव में हो तो लड़कियों को पहुँचाने के लिए नगरों की तरह बैलगाड़ी का प्रबन्ध आसानी से किया जा सकता है।

लड़कियों को पढ़ाने के लिए एक योग्य, उत्साही, शिक्षित तथा सच्चरित्र महिला की आवश्यकता है, जो न केवल लड़कियों की बल्कि उनके माता-पिता तथा गाँव के अन्य लोगों की श्रद्धापात्र बन सके, जो सेवा-भाव से प्रेरित हो और जिसे स्त्री-शिक्षा-प्रचार को पूरी लगन हो। देहात में रहने के लिए उसे सब प्रकार की सुविधाएँ मिलनी चाहिए। खर्च की किफ़ायत के लिए छोटी-छोटी लड़कियों तथा लड़कों की सहशिक्षा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की व्यवस्था की जा सकती है. किन्तु इस व्यवस्था के होने पर भी कम से कम एक महिला शिक्षक का होना अनिवार्य है। स्कूल का इमारत गाँव से बाहर होनी चाहिए, ताकि लड़कियों के खेलने-कूदने और फल, फूल एवं तरकारी की खेती करने के लिए काफ़ी स्थान और शुद्ध जलवायु प्राप्त हो सके। लड़कियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर यथेष्ट ध्यान देना चाहिए। बालकों की भाँति उनके लिए भी खेल तथा व्यायाम का समुचित प्रबन्ध होना चाहिए।

अब प्रश्न यह उठता है कि लड़कियों को किन-किन विषयों की शिक्षा देनी चाहिए। मेरे ख़्याल में मातृभाषा के अतिरिक्त इतिहास, भूगोल, सरल गणित, स्वास्थ्य-विज्ञान, शिशु-पालन तथा पाकशास्त्र की शिक्षा सब से अधिक उपयुक्त होगी। इतिहास पढ़ाने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उन्हें भिन्न-भिन्न वंशों के राजाओं के नाम, उनके सिंहासनारोहण तथा शासन-काल की तिथियाँ, युद्धों का वर्णन तथा अन्य साधारण घटनाओं का हाल कण्ठ कराया जाय। इतिहास के नीरस अंशों का कण्ठाग्र करना वास्तव में बच्चों के लिए रोचक विषय न होगा। उन्हें एक मनोरञ्जक कथा के रूप में यह बतलाना चाहिए कि किस काल में समाज की स्थिति कैसी थी और उसके आर्थिक, राष्ट्रीय तथा नैतिक विकास में कैसे-कैसे योग मिला। समाज में किन कैसे रीति-रिवाज प्रचलित हुए और जनता पर उनका क्या प्रभाव पड़ा। इतिहास के महापुरुषों के जीवन का ज्ञान भी कराना चाहिए। इसी प्रकार भूगोल का साधारण ज्ञान भी लड़कियों का कराना चाहिए।

नागरिकता की शिक्षा की हमारे देश में अभी तक बहुत ही उपेक्षा होती आई है। प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा के पाठ्य-क्रम में इस आवश्यक विषय को कोई स्थान ही नहीं प्राप्त हुआ है। नागरिकता के सिद्धान्तों को बचपन से ही बतलाना चाहिए, ताकि बच्चे समझ सकें कि देश या समाज में वे रहते हैं, उसके प्रति उनका क्या कर्तव्य है। नागरिकता की शिक्षा मिलने से वे हर प्रकार के भेदभावों को भूल जाँयगे और सारे भारत को एक राष्ट्र समझने लगेंगे। उनका दृष्टिकोण उदार तथा विस्तृत बन जायगा। वे नागरिक के कर्त्तव्यों का ठीक से पालन कर सकेंगे।

लड़कियों की शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण लाभ यह होगा कि समाज से अन्धविश्वास तथा रूढ़िवाद धीरे-धीरे उठ जायगा और अनेक कुरीतियाँ जो इस समय प्रचलित हैं, दूर हो जाँयगी। ये सब चीज़ें समाज में तभी तक टिक सकती हैं जब तक कि अशिक्षा का राज्य हो। शिक्षा-रूपी प्रकाश के विकीर्ण होते ही सारा अज्ञान-अन्धकार लोप हो जायगा। पुरुष-समाज में शिक्षा का कुछ प्रचार हुआ है, अतः वहाँ अन्धविश्वास कम होने लगा है, किन्तु महिला-समाज में वह काफ़ी मात्रा में मौजूद है।

स्वास्थ्य और सफ़ाई

शिक्षा के पश्चात् स्वास्थ्य और सफ़ाई का सवाल आता है। इस विषय का ज्ञान प्रत्येक गृहस्थ पुरुष तथा स्त्री को होना चाहिए। इस विषय का किञ्चित ज्ञान न होने के कारण हमारे गाँवों की आज जो दुर्दशा हो रही है, उसे हम सभी जानते हैं। किसी समय देहात के लोग—पुरुष और स्त्रियाँ—इतने स्वस्थ होते थे कि उनका उदाहरण उपस्थित किया जाता था। किन्तु आज परिस्थिति बिलकुल उलटी हो गई है। मेरा ख़्याल है कि आज देहात में रहने वाली स्त्रियों का स्वास्थ्य नगर की स्त्रियों से भी अधिक ख़राब हो गया है। स्वयं किस तरह सफ़ाई से रहना चाहिए, अपने घर में कैसे सफ़ाई रखनी चाहिए, अस्वास्थ्यकर चीज़ों से कैसे बचना चाहिए—इन सब बातों का उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है। उन्हें भद्दे गहनों का शौक़ है, किन्तु शरीर को साफ़ रखने और साफ़ वस्त्र पहनने का कुछ ध्यान नहीं है। स्कूल की लड़कियों को स्वास्थ्य और सफ़ाई की मुख्य-मुख्य बातें तो सिखानी ही चाहिए। किन्तु इसके अलावा प्रत्येक परगना या तहसील में एक ऐसा स्कूल या केन्द्र स्थापित करना चाहिए, जहाँ पढ़ी-लिखी स्त्रियों को नियमित तथा वैज्ञानिक विधि से प्रथम उपचार की शिक्षा दी जाय, स्वास्थ्य-सफ़ाई से सम्बन्ध रखने वाली सभी बातें विस्तार के साथ बतलाई जायँ, उन्हें सूतिका-गृह के लिए आवश्यक ज्ञान कराया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाय और उन बहुत सी बातों की शिक्षा दी जाय जो एक होशियार नर्स के लिए ज़रूरी हैं। इन केन्द्रों में शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाएँ गाँवों में स्वतन्त्र रूप से अपना व्यवसाय कर सकती हैं। ऐसी स्त्रियों का यदि एक दल सङ्गठित होकर गाँव-गाँव घूमे और स्त्रियों को एकत्रित कर स्वास्थ्य, सफ़ाई, शिशु-पालन, प्रथम उपचार, सूतिका-गृह आदि के सम्बन्ध में उपदेश करे और प्रकाश की सहायता से परदे पर चित्रों का प्रदर्शन करके समझाए कि गन्दगी से किस तरह बीमारी फैलती है और रोग के कीड़े उसे फैलाने में किस प्रकार सहायक होते हैं, तो निश्चय ही स्त्री-समाज का बड़ा हित हो सकता है। इस प्रकार यदि प्रत्येक गाँव में महीने में एक या दो बार इस दल का दौरा हो जाय तो स्त्रियों का बहुत कुछ अज्ञान दूर हो सकता है। यूरोप के कतिपय उन्नतिशील देशों में ऐसे स्कूल खोले गए हैं, जहाँ विवाह की अवस्था की कन्याओं तथा नव-विवाहित वधुओं को नर्सिङ्ग, और शिशु-पालन की शिक्षा दी जाती है और उन्हें बतलाया जाता है कि बच्चों को माँ का दूध कब तक देना चाहिए, उन्हें शुरू-शुरू में कैसे नहलाना चाहिए, दूध किस नियम से और कितने अन्तर पर पिलाना चाहिए आदि, ऐसे स्कूल या दर्जे हमारे यहाँ भी खोले जा सकते हैं।

एक बात और है। जहाँ तक स्वास्थ्य और सफाई का सम्बन्ध है, सरकार, सार्वजनिक संस्थाओं तथा ज़िला बोर्डों को चाहिए कि देहात में चिकित्सा का समुचित प्रबन्ध करें। गाँवों में चिकित्सा का प्रबन्ध न होने से बहुत सी स्त्रियाँ असमय काल के मुख में पड़ जाती हैं और सैकड़ों जीवन भर रोगी बनी रहती हैं। देहातों में महिला चिकित्सक अथवा ज़नाना अस्पताल का होना भी आवश्यक है, क्योंकि स्त्रियों के अनेक रोग ऐसे होते हैं जिन्हें स्त्रियाँ ही ठीक से समझ सकती और उनका इलाज कर सकती हैं। महिला चिकित्सकों तथा ज़नाना अस्पतालों के अभाव में स्त्रियाँ अपने इन रोगों को छिपाए रहती हैं और उनकी अवस्था उत्तरोत्तर खराब होती जाती है। इस दिशा में शिक्षित महिलाओं को अब ध्यान देना चाहिए और उन्हें अपनी ग्रामीण बहिनों को हर प्रकार से सहायता पहुँचाना चाहिए। उन्हें नर्स, डॉक्टर तथा उपदेशक बनकर देहातों में प्रवेश करना चाहिए। यह काम स्त्रियों का ही है और जब तक इसकी व्यवस्था न हो जायगी, ग्रामोन्नति का काम पूरा नहीं हो सकेगा।

सूत-कताई और सिलाई

ग्रामोन्नति के लिए यह भी आवश्यक है कि आर्थिक अवस्था सुधारी जाय। हमारे देश में विशेषतः गाँवों के अन्दर उपार्जन करने का भार पुरुषों पर ही रहता है। स्त्रियाँ घर के अन्दर का इन्तज़ाम करती हैं। किसी समय में हमारे घर की स्त्रियाँ रोटी बनाने, बच्चों का लालन-पालन करने के अतिरिक्त नियमित रूप से चरखा चलाती थीं और इस प्रकार जो सूत तैयार होता था उससे गाँव के अथवा गाँव के पास के जुलाहे को कुछ अन्न या पैसा देकर घर भर के इस्तेमाल के लिए कपड़ा तैयार करा लिया जाता था। अब घर पर सूत कात कर कपड़ा बुनवा लेने का रिवाज उठ गया है। हमें वस्त्र के लिए अब पूर्णतया बाज़ार पर निर्भर करना पड़ता है। एक ओर तो हमारी आर्थिक अवस्था खराब हो गई है, दूसरी ओर हमारी आवश्यकताएँ और हमारे खर्च बढ़ गये हैं। ऐसी अवस्था में अगर हम आए दिन कष्ट सहते हैं तो फिर आश्चर्य करने की क्या बात है? कपड़े के लिए ही नहीं, बल्कि उसकी सिलाई के लिए भी दूसरे पर निर्भर होना पड़ता है। सीने-पिरोने का बहुत कुछ काम नियमित रूप से पहले घर ही पर हो जाता था। अब जितना दाम कपड़े के लिए देना पड़ता है, क़रीब-क़रीब उतना ही कभी-कभी तो उससे भी ज्यादा सिलाई के लिए खर्च कर देना पड़ता है। अगर हमें अपनी आर्थिक अवस्था को सुधारना है तो सूत कताई का तथा घर के कपड़ों की सिलाई का काम फिर शुरू कर देना चाहिए। इसके अलावा छोटे-मोटे घरेलू उद्योग-धन्धों का भी प्रचार होना चाहिए, ताकि स्त्रियाँ अवकाश के समय में कुछ काम करके पैसा पैदा कर सकें। ऐसे अनेक उद्योग-धन्धे हैं, जिन्हें स्त्रियाँ आसानी से कर सकती हैं। उदाहरणार्थ, खिलौनों का रोज़गार है। हमारे देश में खिलौनों की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत कम नहीं है। प्रत्येक माता अपने बच्चे को प्यार करती है और उसके लिए बाज़ार से खिलौना ख़रीद लाती है। अधिकांश खिलौने हमारे यहाँ जापान, चीन, अमेरिका तथा ब्रिटेन से आते हैं। इसमें देश का बहुत सा धन बाहर खिंच जाता है। घर पर खिलौने तैयार करके भारतीय स्त्रियाँ अपने देश का बहुत सा पैसा बचा सकती हैं। खिलौनों की बदौलत वे अपने परिवार की आमदनी में भी कुछ वृद्धि कर सकती हैं। इसी प्रकार साबुन, रोशनाई आदि अन्य उद्योग-धन्धे भी किए जा सकते हैं। सरकार छोटे-मोटे उद्योग-धन्धों का प्रचार स्त्रियों में कर सकती है। इन चीज़ों को बनाने का तरीक़ा सिखाने के लिए शुरू में ज़िले-ज़िले में एक स्कूल खोलना चाहिए, जहाँ लड़कियाँ तथा सयानी स्त्रियाँ जाकर काम सीख सकती हैं। महिलाएँ इस प्रकार उद्योग-धन्धा में कुछ समय लगा कर अपने घर की अवस्था अच्छी बना सकती हैं और ग्रामोन्नति के कार्य में योग दे सकती हैं। अतः यह कहना असङ्गत नहीं है कि स्त्रियों के सहयोग के बिना ग्रामोन्नति का कार्य पूरा नहीं हो सकता।

भोजन बनाना

पाक-शास्त्र हमारे यहाँ स्त्रियों का मुख्य विषय माना जाता था। किन्तु अब महिला-समाज उसके महत्व को भी भूलता जा रहा है। यह बात सच है कि हमारा भोजन अधिकांशतः स्त्रियाँ ही तैयार करती हैं, किन्तु अब इस कार्य बहुत सी स्त्रियों को भार प्रतीत हो रहा है। बहुत सी स्त्रियाँ अपने इस कर्त्तव्य का पालन बड़ी लापरवाही के साथ करती हैं। वे रुचि और लगन के साथ भोजन नहीं बनातीं, वरन् ज्यों-त्यों करके किसी प्रकार भोजन प्रस्तुत कर देती हैं। भोजन पकाने में यह उदासीनता, लापरवाही तथा आलस्य हमारे अज्ञान का परिचायक है। हम भूल गए हैं कि मनुष्य का स्वास्थ्य, बल, सौन्दर्य तथा जीवन मुख्यतः भोजन पर ही निर्भर करता है। अतः उसे बड़ी रुचि, लगन तथा सावधानी के साथ तैयार करना चाहिए। भोजन बनाने वाली स्त्रियों को यह ज्ञान होना चाहिए कि किस खाद्य पदार्थ का क्या गुण है और उससे क्या हानि हो सकती है, उसे भोजन के लिए किस तरह तैयार करना चाहिए, अधिक गरम मसाले के प्रयोग से क्या नुक़सान हो सकता है, सरल और स्वास्थ्यकर भोजन कैसे बनाना चाहिए, रसोई में कितनी सफ़ाई रखने की ज़रूरत है, बच्चों तथा बीमार आदमियों का कैसा भोजन देना चाहिए—इन सभी बातों का ज्ञान स्त्रियों को होना चाहिए। पाकशास्त्र का कुछ ज्ञान न होने का ही यह फल है कि रोग और बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। हम खाद्य और अखाद्य में कुछ भेद नहीं कर पाते और जीभ की चाट बुझाने के लिए हानिकर चीज़ें खा लेते हैं। स्त्रियाँ अपने अज्ञान में खाद्य वस्तु को भी अखाद्य रूप में परिणत कर देती हैं और हम जीभ के स्वाद के लिए उसे ग्रहण कर लेते हैं। ऐसी अवस्था में यह आवश्यक है कि लड़कियों तथा स्त्रियों को पाकशास्त्र का ज्ञान कराया जाय और उन्हें चतुर पाचिका बनाया जाय।

लड़कियों को सङ्गीत की शिक्षा भी मिलनी चाहिए। सङ्गीत मनोविनोद का एक अति उत्तम साधन है। मनोविनोद का जीवन में क्या स्थान है, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है। यदि पुरुष अथवा स्त्रियाँ दिन-रात परिश्रम ही किया करें और कभी अपना दिल-बहलाव न करें तो उन्हें अपना जीवन दूभर हो जाय और उनका स्वास्थ्य खराब हो जाय। सङ्गीत का ज्ञान प्राप्त कर स्त्रियाँ अपना तथा घर के अन्य लोगों का मनोविनोद कर सकती हैं। सङ्गीत से चित्त को शान्ति मिलती और थकावट दूर होती है। सङ्गीत का प्रचार स्त्रियों में घर-घर होना चाहिए

प्रौढ़ा स्त्रियाँ

एक बात यहाँ हम और भी कह देना चाहते हैं। शिक्षा-प्रचार आदि का कार्य स्कूल की लड़कियों तक ही सीमित रखना ठीक नहीं है। सयानी तथा प्रौढ़ा स्त्रियों को भी शिक्षित बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। रूस तथा टर्की ने अपने यहाँ आन्दोलन करके ऐसी स्त्रियों को भी साक्षर बना दिया है। साक्षर बनाने के इस आन्दोलन में हज़ारों शिक्षित महिलाओं ने भाग लिया है। देश-सेवा के भाव से प्रेरित होकर इन महिलाओं ने बिना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पैसा लिए देहातों में जा-जाकर ४५-५० वर्ष की स्त्रियों तक को अक्षर-ज्ञान कराया है। हमारे देश की शिक्षित महिलाओं को भी इसी तरह अपनी सयानी अपढ़ बहिनों को साक्षर बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रौढ़ा स्त्रियों के लिए घण्टा दो घण्टा के लिए अलग कक्षा खोलनी चाहिए। उनके पढ़ने-लिखने के लिए दोपहर के बाद का समय—जब उन्हें घर के कामों से फ़ुरसत रहती है, अधिक उपयुक्त होगा। इङ्गलैण्ड में भी प्रौढ़ा स्त्रियों को शिक्षित बनाने के लिए तीसरे पहर के स्कूल खोले गए हैं और वे सफल सिद्ध हुए हैं। पढ़ने-लिखने के अतिरिक्त उन्हें भी स्वास्थ्य-सफ़ाई, सिलाई, कताई आदि की शिक्षा देनी चाहिए और अपने देश के सम्बन्ध में आवश्यक ज्ञान कराना चाहिए।

उपसंहार

ऊपर जो कुछ बतलाया गया है, वह ग्रामोन्नति के लिए बहुत आवश्यक है और मुख्यतः स्त्रियों से ही सम्बन्ध रखता है। जब तक महिलाएँ इन सब बातों के लिए अग्रसर नहीं होंगी, हमारे गाँव कभी उन्नत नहीं बन सकेंगे। गाँवों के सुधार तथा पुनर्संगठन में महिलाओं का सक्रिय सहयोग अनिवार्य है। स्त्रियों के लिए गाँव में, या दो-तीन गाँव के बीच एक छोटा सा पुस्तकालय होना चाहिए, जहाँ से उन्हें पढ़ने के लिए चुनी हुई किताबें मिल सकें। गाँवों में दो एक समाचार-पत्र या पत्रिकाएँ भी आनी चाहिए, ताकि स्त्रियाँ उन्हें पढ़ कर देश-विदेश की प्रगति से अपने को परिचित रख सकें, अन्धकार में न पड़ी रहें। सरकार का कर्तव्य है कि वह अपनी ग्रामोन्नति योजना में महिला कार्यकर्त्रियों का भी सहयोग प्राप्त करे और ग्रामीण स्त्रियों को जाग्रत बनाने में उतना ही ध्यान दे जितना कि ग्राम-सुधार के अन्य कामों में। ग्रामीण समाज के आधे अङ्ग को अन्धकार में रख कर, कोई वास्तविक उन्नति नहीं की जा सकती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चीन के आंचल में

[श्री० 'पहाड़ी']

'आप बच गए। हमें बड़ी ख़ुशी हुई।' शोया पास घोड़े को ला चीनी भाषा में बोली।

'आप लोगों की वजह से।'—जनरल ने जवाब दिया।

'चोट ज्यादह लगी है?'

'नहीं।'

'पीड़ा ज्यादह है क्या?

'अब नहीं, मगर आप लोगों का अहसान क्या कभी भूल सकूँगा।'

रेगिस्तान में उन अजनबी लोगों के 'काफ़ले' के बीच जापानी जनरल सोनो ने अपने को पाया। यह शोया कितनी हमदर्द है। अभी-अभी इसने सब घावों पर धोकर, पट्टी बाँधी थी। वह पहचान कर कितने नज़दीक सहजता में आई। पहचान, जैसे इस गुण की वह अवहेलना नहीं कर सकी। बिलकुल जापानी लड़की सी लगती थी। काले-काले कटे सुन्दर बाल, रंगीले फीते से बँधे, बड़ी-बड़ी बादाम सी आँखें, लापरवाही से बच्चों की तरह कपड़े पहिने थी। ऊनी खाकी ब्रिचेज़, जापानी अफ़सरों के से लम्बे बूट। एक ओर चमड़े के 'केस' में 'रिवालवर' लटक रहा था। चीन के भीतर किसी पर्वतीय देश की वह रहने वाली थी।

डेरे उखड़ चुके थे। शोर-गुल हल्ला बन्द हो चुका। सब सामान खच्चरों पर लद चुका था। पचास-पचास के क़रीब आदमी, कुछ गधे, कुछ घोड़े, कुछ ऊँट पर सवार थे। सबके चेहरों से निष्ठुरता टपक रही थी। इन लोगों का काम लूट-मार करना था। शायद हमला कर जो कुछ हाथ लगे उसी में सन्तुष्ट होने के अलावा मनुष्य की क़ीमत का ज्ञान भी इनको नहीं होगा।

शोया इनके बीच एक दया की पुतली थी। सरदार की बहिन होने से उसका मान था। उसकी आज्ञा का उल्लङ्घन न होता, वह उनकी क्रूरता के बीच सारी माया, ममता सिमेटे, परदेशी को पसरने, जगह दिल में दे देने में कंजूस नहीं थी। अपने नारी-आँचल के आश्रय में दुखी को देख-भाल तत्पर हो वह करती। कोई उसे जान न पाता, वह उसे अनजान न मानती, उसके व्यवहार में अपने को खो वहीं रह जाती। ऐसी थी शोया जिसको पास पाकर जनरल अपने को एकाएक बिराना अब नहीं मान लेना चाहता था। वह कोशिश कर रहा था कि कमज़ोरी की वजह से कहीं बेहोश न हो जावे। बार-बार आँखों के आगे धूम का काला परदा पड़ता। वह चुपचाप सावधानी से आँखें मूँद लेता। घाव में पीड़ा थी। दिल भारी था। कन्धे के पास से गोली आरपार निकली थी। पाँव पर भी गहरे घाव थे। हाथ उठता न था। बिलकुल फीका लग रहा था। शोया ने सब जान लिया। वह समझ गई। एक ओर लटकती बोतल उठाई और सौंप दी। जनरल ने कुछ 'आसव' पी लिया। ज़रा जीवन आया। शोया ने एक सजीवता बिखेर सीमा बाँध दी। वह इस सीमा को लाँघ न सकता था। जनरल की पीड़ा मिट गई। शोया और पास आकर बोली—'थक तो नहीं गए।'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'नहीं'। उस खेल को ज़िन्दगी का आख़िरी खेल समझा था। लेकिन...?'

'खे...।' शोया ने आश्चर्य में बात काट आँखें उठा देख, नीचे झुका लीं।

'खेल ही तो वह लगता है। मौत आई। निशाना चूक जाने पर भाग गई। अच्छा, ख़ैर तुमको किस नाम से पुकारूँ?'

'शो...या—।' धीमे स्वर में वह बोली।

'क्या कहा—शोया, मैं यह कह सकता हूँ।' शोया ने सिर हिलाया।

'शोया...!' जनरल फिर बोला।

शोया ने जनरल की ओर कुतूहल से देखा।

'तुम इस गिरोह की देवी हो।'

कुछ घण्टे में ही अथाह दुःख के बाद, सहारा पाकर वह भावुकता में बह गया।

और शोया बात ठीक न पकड़ हँस दी। वह उस गिरोह के अपने गिने-चुने साथियों से बाहर इसे पाती। जो कहीं भी उनसे मेल नहीं खाता था। उनसे उठा लगता। इसके नज़दीक एक अज्ञात गुदगुदी क्यों उठती थी?

'शोया...।' जनरल ने रुक कर धीमे स्वर में पुकारा। शोया नज़दीक आई। जनरल चुप रहा। कुछ कहना चाह कर भी न कह सका। आगे कोई बात नहीं हुई। सब चुपचाप आगे बढ़ रहे थे।

सिर्फ़ 'तीन दिन' जनरल के दिल में बात उठी और खो गई। वह तीन दिन गहरा घाव बना चुके थे। अब घाव मुलायम पड़ गया था। दुखता नहीं था। लड़ाई की याद आती थी। धुँधली-धुँधली बातें, चलचित्र के समान आगे आ, ओझल हो जातीं। आहें, कहरना, विषाद का करुण गीत, वेदनापूर्ण गुञ्जन—अब तक साथ थी। जीवन की धुँधली रेखा फिर चमक उठती। वह जीवित था। वह मौत को धोखा न दे, ख़ुद धोखा बन अब इस नारी की छाया का सहारा पा चल रहा था। अपने से ख़ुद अविश्वास होता। अन्यथा यही नारी तो कहती है—चल। कहीं उसकी ज़रूरत है क्या। वह तो बिलकुल कोरा था। सब कुछ जीवन में इकट्ठा की बातों को भुलाकर, चीन की उस टुकड़ी के आगे खड़ा था। वह उसे मौत का हुक्म सुना चुके थे। फिर अपने विश्वास को ठीक मान वे चले क्यों गए। उसके जीवन के प्रति घृणा के अलावा और कुछ भी उन लोगों के पास नहीं था। असहाय तनी राइफ़लों के आगे उसने न सोचा था, आगे वह फिर 'गुन-गुन' करेगा। वह मौक़ा भूल सा अब लगता। जिसको याद प्यारी-प्यारी लगती है, मौत वास्तव न थी। नहीं उसे साथ ले लेती। इस तरह उपेक्षा कर न चल देती। इसी मौत पर वह सब कुछ सोच चुका था। कहीं कुछ भी डर बाक़ी न था। अपने प्रति सारे खोए विचार एकाएक वह बटोर-बटोर नहीं अब पाता था। सब विचार तो चूक गए थे। एक अन्तिम काला धब्बा मात्र बाक़ी बचा था। सोचा था कि वह घना उसे ढक लेगा। वहीं वह सो जावेगा, गोलों के साथ जीवन बँध जावेगा। किन्तु वह धब्बा सुफ़ेद चिट्टी एक लकीर बना ओझल हो गया। उसे पसरने जगह मिल गई थी। अब सब फिर से सोच लेने को काफ़ी खाली वक़्त पास पड़ा था।

घटना भी आई थी, सिलसिलेवार। उनके भीतर वह था। वहीं वह रह गया। छुटकारा नहीं मिला। उस बन्धन का तत्व उसने पा लिया। परिस्थितियों ने उलझन आगे रख दी। वहाँ एक ठिकाना पा, वह ख़ुद तर्क करता, राय देता, सोचता और अन्त में चुप रह जाता था। वास्तव कुछ भी नहीं लगता था। सन्देह ने उसे ख़ूब ढक लिया था।

पिछली सन्ध्या को वह क़ैदी था। चीन की उस टुकड़ी के नायक ने फ़ैसला सुनाया था—अगली सुबह सब गोलों से उड़ा दिए जावें। झोपड़ी में बिलकुल अँधियारा था। बीच-बीच में कहीं-कहीं सूराख़ थे। वहाँ से बाहर बारीक नज़र पड़ती थी। अन्दर ज़रा रोशनी भी आती। काले-काले कमरे के अन्धकार में उस ज़रा रोशनी का एक सहारा था। एक ज़रा बड़े सूराख़ से बाहर उसने देखा; चारों ओर बड़ा रेगिस्तान, सिर्फ़ झोपड़ों से ज़रा हटे कुछ डेरे पड़े थे। दूर तक सिर्फ़ रेत ही रेत नज़र पड़ती थी। कहीं आँखें टिकती न थीं। रेत की कणों की उस बड़ी ढेरी में आँखें खिल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आती। ख़याल कुछ आता कि उसकी आँखों की ओट में ही कहीं और पड़ाव भी तो दुबके होंगे। कौन जाने वहाँ क्या हो रहा हो। यह सब वह जान नहीं सकता। वह तो एक साध्य सा अब जीवित था। जिसका जीवन कोई महत्व नहीं रखता। जिसकी मौत पर भी एक मसौल कल चीनी सिपाही उड़ावेंगे। कौन जाने उसके ख़ाक को भी वे कुचल मानवता की गहरी पहेली को कुछ सुलझा दें। जहाँ युद्ध के लिए दिमाग़ आपस में विद्रोह पैदा करते हैं; अपने को सभ्य कहला निरे असभ्य बर्ताव को सब ही मान लेने तैयार हैं। जहाँ किसी का आदर नहीं। एक दूसरे के प्रति बनाई घृणा से मुँह बिचका चुपचाप चले जाते हैं। एक दूसरे का हाल पूछ लेने की किसी को फ़ुर्सत नहीं है।

सन्तरी बाहर घूम रहा था। इस क़ैदी की रक्षा उसे करनी थी। उसकी लापरवाही पर रक्षा ज़रूरी थी। यह सब सिर्फ़ तमाशा लगता। दूसरे के जीवन का मोल आज जान, हिफ़ाज़त कर, कल उसी को ठुकराना नई बात उसे लगती। स्वार्थ भी कहीं छूता नहीं मिलता था। फिर वह सन्तरी बार-बार आँखों के आगे आता। चुपचाप कुछ क़दम आगे बढ़ा 'मिलिटरी' के बनाए क़ायदे से फिर लौट आता। सामने कुछ दूरी पर एक चीन का बूढ़ा, ऊँट के बालों से अपना थैला सी रहा था। अजीब गँवारी हँसी हँसता। वह गन्दे-गन्दे गीत गा रहा था। वह पागल सा लगता। क्यों वह हँसता था। अपने आप हँस जाना यह आदत सबको नहीं पड़ती। और वह बूढ़ा आँखें बोरे पर टिकाए, पास उसे ला फिर सुई और तागे में रह जाता। एक बड़ा लुण्डैरू कुत्ता पास आ भू-भू-भू करता, फिर भाग-भाग जाता। कुत्ता उस सिलाई की क्रिया से परे, देखता उस बूढ़े पर, उससे कुछ भी सुनकार न पा 'भू-भू-भू' कर डरता दूर हट जाता।

धूल से भरी फ़र्श, पाँव उसमें डूबते लगते। चुपचाप इधर-उधर टहलता रहा। नींद आती। चाहता ही आये। कहाँ की समस्या न हटती थी। फ़र्श पर आँसू चल रही थी, मजबूरी थी। वहीं रहना था उसे, उसकी इस शुद्धता से स्पर्धा होती थी। मैल में जगह थी, हिचक क्यों अब थी, संतरी के पाँवों की आवाज़ उस सुनसान में साफ़-साफ़ सुनाई पड़ती थी। बीच में कभी-कभी कुत्तों का स्वर, रुदन नया, प्रतिध्वनि में फैल जाता। ठण्ड पड़ने लगी। वह जानता था कि रात्रि इसी प्रकार इधर-उधर चल फिर कर काटनी पड़ेगी। नङ्गी धरती पर क्या आज ही उसे सोना बदा था। कल तो फिर यह एक सनातन बात लगेगी। आज उस धूल से भरी धरती से डर वह क्यों रहा है। हल्के पाँव किसी जन्तु से छू गये। उसके खड़े बाल पाँव से लगे, वह हट गया। चूँ-चूँ-चूँ करता वह भाग गया। उसे बड़ी हँसी आई। वह अन्धकार में खिलखिलाया। ठण्ड बढ़ती लगी। कँपकँपी लगने लगी। एक कोने में चुपचाप दुबक कर वह बैठ गया। धीरे-धीरे नींद ने उसे घेर लिया था।

नींद टूटी, दूर कहीं गोलियों की धाँय-धाँय सुनाई पड़ी। उसने बाहर देखा। बिलकुल सन्नाटा था। लगा वह भी ऐसी ही कुछ गोलियों के बीच सुबह को खो जावेगा। ज़मीन पर पड़ा रहेगा। चींटिया इस शरीर पर लगी खेलेंगी। फिर बाहर सन्नाटा चीरती गोलियों की आवाज़ दूर कहीं हल्की चमकीली रेखा उठती, अस्त हो जाती, वह चुप रहा। गोलियों की आवाज़ थम गई थी। फिर……

किसी ने ठोकर लगाई। नींद उचट गई। चीनी सिपाही खड़ा था। वह उसे ले गया। उसने देखा, पाँच क़ैदी—एक दो, तीन, चार……

बीस सिपाही, एक, दो, तीन……

बीस गज़ का फ़ासला……

धाँय—धाँय—धाँय…पहली फ़ायर।

धाँय—धाँय—धाँय…दूसरी फ़ायर।

धाँय—धाँय—धाँय…तीसरी फ़ायर।

अब उनका अफ़सर आगे बढ़ा। एक-एक क़ैदी को उसने जूते से ठुकराया। एक हिलता-डुलता लगा। उसने पिस्टल निकाली, माथे पर निशाना साध कर गोली दाग दी।

पाँच और क़ैदी……

फिर……

फिर……

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धाँय—धाँय—धाँय……

धाँय……

धाँय……

अब जनरल…

सामने छै सिपाही तैयार खड़े।

फ़ासला—बीस गज़।

'फ़ायर!'

धाँय, धाँय, धाँय……

बहुत गरम। उसने आँखें खोलीं। पाया अपने को एक काफ़ले से घिरा।

जनरल अब थक गया था। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। उनके साथी काफ़ी आगे बढ़ गए थे। कुछ सुस्ता कर जनरल ने घोड़ा आगे बढ़ाया। बोला—'आप लोगों ने मुझे कैसे पाया?'

'हमें देख कर वे भाग गए।'

'और मेरे साथी?'

'……' एक चुप्पी।

'सब मर गए।'

कोई जवाब नहीं।

'केप्टिन भी।'

शोया ने आँखें उठा कुछ समझ लेना चाहा। वह नहीं बोली।

'कल तक हम साथ-साथ थे। पिछले महीने उसकी शादी हुई थी। लड़ाई शुरू होने पर……।'

जनरल रुक पड़ा। उसने शोया की ओर देख कर पूछा—'बोतल!'

शोया ने बोतल दे दी। जनरल ने कुछ घूँट 'आसव' पी लिया, फिर बोला—'उसकी बीवी हमें दूर तक पहुँचाने आई थी। उसकी छोटी बहिन……।' वह चुप हो गया। कुछ याद आई, पूछा—'आप लोग मुझे क्यों ले आए?'

यह सवाल कर वह अपने उस वायदे को याद करने लगा, जो उन दोस्तों ने किया था। साथ जिएँगे और मरेंगे भी, लेकिन बात ठीक साबित नहीं हुई। एकाएक दिल में विद्रोह उठा। अपने घोड़े का मुँह फेरते उसने कहा—'मैं लौट कर उसके पास हो आऊँ। उसे बिना देखे मन नहीं मानता।'

शोया आगे बढ़ कर बोली—'तुम बहुत थक गए हो।' वहाँ अब क्या मिलेगा। जानवरों से बची कुछ हड्डियाँ……।'

जनरल रुक पड़ा। यह नारी झगड़ कर केप्टिन के आगे क्यों खड़ी हो रही है। और केप्टिन की उन हड्डियों का वह क्या करेगा। उन हड्डियों को जापान से दूर क्या इस रेत में रखना बदा था। वहीं वे पड़ी हैं। जिन पर कभी मांस था। मांस में जीवन भी था। उसी मांस को कपड़े से ढकना लाज़िम लगता। व्यक्ति से ऊपर था एक देश। जिस देश की ज़रूरतों के लिए उन हड्डियों को वहीं पड़ा रहना पड़ा। जो अब अहसास न थीं। न उनकी कोई ज़रूरत व्यवहार में थी। यह आपस की लड़ाई। इतनी ढेर सी हड्डियों के बीच आज दुनिया की सभ्यता को चलना है। जहाँ एक दूसरे को धोखा देकर, इसी तरह दूर-दूर कोनों में हड्डियाँ पड़ी रहेंगी। उन हड्डियों के अस्तित्व में कहीं सभ्यता 'भूल' जाना न चाहे। पीछे दूर उसने देखा—कुछ नहीं—'भरा, भारी रेत का मैदान, लगा, वे पड़ी लाशें कुछ उठतीं, दूर हटीं। भ्रम में वह बोला—'तुमने भी देखा शोया।'

'क्या?' शोया नज़दीक आई।

'वह देखो'—उसने उँगली उठाई।

शोया उससे टिकी, सिर मिलाए बोली—'कुछ नहीं।'

'वह केप्टिन की 'लाश!'

शोया ने जनरल का हाथ अपने में ले कहा—'नामुमकिन के फेर में पड़ना उचित नहीं, अपने अधीन बात न थी।'

उसके स्पर्श से एक गुदगुदी जनरल के दिल में हुई। शोया उसके दिल में पहुँच चुकी थी।

'आज डेरे पर पहुँच कर तुमको 'अफ़ीम' बना कर खिलाऊँगी।'

'अफ़ीम……।'—जनरल चौंका।

'हाँ'…

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'तुम क्या करती हो ?'

'अफ़ीम का व्यापार। क़ानून को हम नहीं मानते।'

'क़ानून को.....।'

एकएक दूर उन्होंने देखा कि कुछ सवार आ रहे हैं। शोया बोली—'यहाँ सब एक दूसरे के दुश्मन हैं। हर वक़्त खतरा रहता है। भागो—भागो ?'

दोनों ने अपना-अपना घोड़ा बढ़ाया। तेज़ी से घोड़े जा रहे थे।

दूर गड़गड़ाहट सुनाई दी। दूर कुछ हवाई जहाज़ देख पड़े। गड़गड़ाहट और नज़दीक आती लगी। फिर वही आवाज़। हवाई जहाज चक्कर लगा रहे थे।

'तुम आगे बढ़ो।'—शोया बोली—'मैं इनको इधर-उधर बहका दूँगी। तुम आगे भागो।'

शोया जानती थी कि अब छुटकारा नहीं। वह खुद ख़तरे में पड़ सकती थी।

'शोया!'—जनरल बोला।

शोया सारी परिस्थितियों से परिचित थी। भागना बेकार लगा। वह चुपचाप जनरल के नज़दीक लग कर खड़ी हो गई।

सामने एक बम गिरा। रेत ऊपर उठी। चारों ओर फैल गई।

फिर एक जहाज़ उनके ऊपर मँडराया। काफ़िले के सरदार ने पास आ घबरा कर कहा—'भागो, वक़्त नहीं है।'

शोया निश्चित खड़ी थी।

सरदार ने फिर कहा—'पगली न बन।' खुद आगे घोड़ा दौड़ाया।

शोया स्थिर थी। उसने अपनी 'पिस्टल' उठाई और घोड़े की टक्कों पर निशाना साधा।

जनरल ने कहा—'यह क्या शोया ?'

शोया बोली—'छोड़ दो, चुप रहो। हमारे साथ इनको आने का क्या हक़ है। क्यों ये हमारी स्वतंत्रता छीनना चाहें ?'

शोया समझदार और जानकार उसे लगी। जहाज़ दूर और हटा। फिर कुछ बम बरसाए। चारों ओर रेत का गुबार। शोया और जनरल उस रेत में छुप गए।

'शोया।' जनरल ने पुकारा।

देखा, सामने जहाज़ खड़ा था। दो अफ़सर उसपर से उतरे। शोया ने अपनी 'पिस्टल' उनकी ओर की।

जनरल चौंक कर बोला—'शोया।'

धाँय—धाँय—धाँय—गोली चली। एक उनमें गिर पड़ा। शोया ने देखा, 'पिस्टल' खाली थी। उसने गले से तावीज़ निकाल खोला, एक गोली निकाल, मुँह में डालने को थी कि जनरल ने टोका—'शोया, ख़ुदकशी!'

शोया ने गोली फेंक दी।

इसी बीच दूसरा अफ़सर नज़दीक आकर बोला—'आधीनता।' शोया ने अपनी खाली पिस्टल देते घूरते कहा—'खाली है।'

'आगे बढ़ो।' अफ़सर बोला।

दोनों चुपचाप आगे बढ़े। जहाज़ में चलते एक बार शोया ने रेगिस्तान के चारों ओर देखा। एक सूनी दृष्टि उस पर डाली।

दो घण्टे बाद वह जापानी सेना में पहुँच गए। साँझ होने को थी। जनरल का सारा बदन दुःख रहा था। वह उठ नहीं सका। वह उतारा गया। शोया साथ थी, शोया को दो सिपाही ले गए। जनरल आगे बढ़ने को था कि कमांडिंग ने रोक लिया।

कमांडिङ्ग ने अपने मोटे हार्न के चश्मे को अलग हटाते कहा—'बैठ जाओ।'

जनरल बैठ गया।

'तुम दुश्मनों के हाथ पड़ गए थे ?'

'हाँ'

'कितने आदमी ?'

'चालीस'

'और सब ?'

'मर गए। मुझे शोया ने बचाया। मैं उम्मीद करता हूँ कि उसके प्रति ठीक बर्ताव होगा।'

'तुमको अभी यहाँ रहना होगा। कुछ दिन मेडिकल बोर्ड में रहना ज़रूरी है।'

'एक बात...'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'क्या...'

'शोया...?'

'तुम अब जा सकते हो।'

पन्द्रह रोज बाद।'

शोया के ऊपर कमांडिंग हिरोंग, जनरल और एक अफ़सर के 'ट्रिब्यूनल' ने कुछ चार्ज लगाए।

पहला—

जापान के प्रति उसकी घृणा।

दूसरा—

जापानी वायुयान के अफ़सर की हत्या।

❀

तीसरा—

भागने की कोशिश करते दो चौकीदारों की छुरी से हत्या।

एक मत से सब ने मौत की सज़ा दी।

जिस टोली ने उसे गोली से उड़ाया, उसका नायक जनरल था।

शोया की लाश भी रेत के खुले मैदान में पड़ी रही।

और उसी रात जनरल कहीं चला गया। आज तक वह लौटा नहीं है।

❀ ❀

गीत

[श्रीमती विद्यावती 'कोकिल']

प्रति पल चढ़ता बढ़ता क्यों ?
मैं भूल गई थी पथ अपना
था प्रश्न कि जाऊँ किधर ? उधर ?
महलों में ?
हाँ, पत्थर की मूक दीवारों में

अति कोमल मानव हृदय लिए
धन के पट देकर बन्दी-सम
मृदु-जग से नाता दूर किए
सोने का पिंजड़ा औ' नभचर।
मैं भूल.....
था.....किधर ? उधर !

यश के गौरव के पर्वत पर
चढ़ जाऊँ या नेतृत्व लिए
इन रूढ़ि-घनों से टकराऊँ
क्या रोषित, उन्नत भाल किए
हो जाय व्यवस्था तितर-बितर।
या इधर.....

वह गृह, शैय्या, हीन शीत को रातें जहाँ बिताता है
कुहरे की चादर ढक कोई सो जाने को कह आता है
ओसों का सुघर गलीचा नव बुनता बिछता सा जाता है
पर कोई उस दुखियारे का प्रातः संदेशा लाता है
या जाड़ा मैं प्रस्तुर सत्वर !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारत में सामाजिक प्रजातन्त्र

[श्री० रामनारायण 'यादवेन्दु' बी० ए०; एल-एल० बी०]

आज अखिल विश्व के अधिकांश राष्ट्रों में प्रजातन्त्र प्रणाली का अन्त हो चुका है और उसके स्थान पर रूस, जर्मनी, इटली, आस्ट्रिया आदि राष्ट्रों में अधिनायक-तन्त्र की स्थापना हो गई है। परन्तु विश्व की वर्तमान परिस्थिति में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और इङ्गलैण्ड की प्रजातन्त्र-पद्धति में अविचल श्रद्धा है। इसका प्रमुख और एकमात्र कारण यह है कि अङ्गरेज़ प्रजातन्त्र को केवल मात्र राजनैतिक सिद्धान्त के रूप में ही ग्रहण नहीं करते, उसे सामाजिक जीवन का एक पथ-प्रदर्शक सिद्धान्त स्वीकार करते हैं।

वास्तव में प्रजातन्त्र का सिद्धान्त केवल मात्र राजनैतिक सिद्धान्त नहीं है, अपितु वह समाज का एक आदर्श सिद्धान्त है। यदि आप संसार के राष्ट्रों की शासन-पद्धतियों का अध्ययन करें तो आपको यह ज्ञात हो जायगा कि प्रजातन्त्र-प्रणाली उन राष्ट्रों में ही सफलीभूत हुई है, जिनके समाज ने उसे सामाजिक जीवन का आदर्श स्वीकार किया। प्रजातन्त्र का अर्थ है बहुमत का शासन। जो शासन प्रजा का हो, प्रजा द्वारा हो और प्रजा के लिए हो, वह प्रजातन्त्र कहलाता है। प्रजातन्त्र के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति को अपने सर्वतोमुखी विकास एवं उत्कर्ष के लिए समान साधन, समान अवसर, और समान सुविधाएँ प्राप्त होने की व्यवस्था होती है। प्रत्येक व्यक्ति के समानता के अधिकार के आधार पर ही प्रजातन्त्र का जीवन निर्भर है। एकतन्त्र, अधिनायक-तन्त्र और कुलीन शासन-प्रणाली अथवा पूँजीवादी प्रजातन्त्र के अन्तर्गत राज्य का लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति के सुख और आनन्द की उपलब्धि नहीं होता। प्रजातन्त्र राज्य बिना किसी प्रकार के भेद-भाव के अपने नागरिकों के आनन्द और सुख के लिए समान अवसर और सुविधाएँ प्रदान करता है।

अमेरिका की क्रान्ति के समय पाश्चात्य जगत में यथार्थ प्रजातन्त्र का जन्म हुआ। क्रान्ति के समर्थकों ने सर्वप्रथम प्रजातन्त्र के सिद्धान्त को अपनाया। स्वाधीनता की घोषणा में उन्होंने यह स्पष्टतः घोषित किया कि आनन्द-प्राप्ति सब व्यक्तियों का जन्मसिद्ध अधिकार है। और राज्य का यह ध्येय है कि वह अपनी प्रजा के लिए उपर्युक्त अधिकार को सुरक्षित रखे। वैसे देखने में यह सिद्धान्त सीधा और सरल-सा प्रतीत होता है, परन्तु विचार करने पर यह ज्ञात होगा कि यह सिद्धान्त क्रान्तिकारी होने के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन में अत्यन्त कठिन है। आज हमारे देश में जो सामाजिक विषमता, असमानता और जातिगत भेदभाव दृष्टिगत होता है, उसका प्रमुख कारण है उपर्युक्त सिद्धान्त की समाज द्वारा अवहेलना। हिन्दुओं के वर्तमान सामाजिक सङ्गठन से यह प्रगट होता है कि वह चाहे जो कुछ हो, परन्तु प्रजातन्त्रवादी नहीं। आज के हिन्दू-समाज का सङ्गठन ऐसा है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का बिना किसी भेद-भाव के आध्यात्मिक, सांसारिक अथवा भौतिक सुख-प्राप्ति के लिए समान साधन, अवसर और सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। हिन्दू-समाज में ५ करोड़ से अधिक व्यक्तियों के समुदाय को 'दलित' या 'हरिजन' स्वीकार कर उनके साथ भेद-भाव-पूर्ण व्यवहार करना यह सिद्ध करता है कि समाज में जन्म-मूलक कृत्रिम विषमता की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रबलता है और व्यक्ति के लिए आत्म-साधन द्वारा समाज में गौरव-पूर्ण पद प्राप्त करना सम्भव नहीं।

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि वर्तमान समय में प्राचीन वैदिक वर्ण-व्यवस्था का अन्त हो चुका है और यह भी सूर्य के समान स्पष्ट है कि वर्तमान सामाजिक परिस्थिति में प्राचीन वैदिक वर्ण-व्यवस्था के पुनरुद्धार का प्रयत्न व्यर्थ है। वैदिक वर्णव्यवस्था वास्तव में प्रजातन्त्रात्मक संस्था थी। आर्य-समाज के संस्थापक, धार्मिक क्रान्ति के अग्रदूत, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस वर्ण-व्यवस्था के पुनरुत्थान के लिए अथक प्रयास किया। परन्तु उन्हें उस दिशा में सफलता नहीं मिली। आज महात्मा गाँधी भी वर्ण-व्यवस्था की पुनर्स्थापना का स्वप्न देख रहे हैं। परन्तु वह इस स्वप्न को सत्य सिद्ध कर सकेंगे, इसमें सन्देह है।

जात-पाँत की कुप्रथा ने हिन्दू-समाज के सङ्गठन को अत्यन्त विषैला बना दिया है। जात-पाँत की प्रथा समाज के लिए अनेक विधि हानिप्रद तो है ही, पर साथ-साथ वह प्रजातन्त्र के विरुद्ध भी है। जिस समाज में जात-पाँत की उग्रता इस सीमा तक पहुँच जाय कि जाति ही धर्म, जाति ही राजनीति, जाति ही पुण्य और दया, जाति ही लोकमत, जाति ही मानवता, जाति ही देश-भक्ति और जाति ही समाज का आदर्श हो, तो उस समाज में प्रजातन्त्र कदापि सफल नहीं हो सकता। सच्चे प्रजातन्त्र शासन का विकास एवं उत्कर्ष सच्चे प्रजातन्त्र-वादी समाज में ही होता है। जो समाज प्रजातन्त्र के मूल सिद्धान्तों की अवहेलना करता है, वह राजनैतिक प्रजातन्त्र को अपनी शासन-प्रणाली में स्थान दे सकेगा, इसमें सन्देह है।

यद्यपि आज पर्यन्त कॉङ्गरेस ने भारतवासियों के लिए 'स्वराज्य' अथवा 'पूर्ण स्वराज्य' की रूप-रेखा निर्धारित नहीं की और न स्पष्ट रूप से यही बतलाया कि भारत के स्वराज्य का वास्तविक स्वरूप क्या होगा, तथापि कॉङ्गरेस ने अपने फ़ैजपुर के अधिवेशन में यह तो घोषित कर ही दिया है कि कॉङ्गरेस भारत में पूर्ण प्रजातन्त्रवादी राज्य की स्थापना करना चाहती है।* जब राष्ट्रीय महासभा का लक्ष्य भारत में 'पूर्ण प्रजातन्त्र' की स्थापना करना है, तब यह अत्यन्त वांछनीय ही नहीं, प्रत्युत आवश्यक है कि भारतीय समाज प्रजातन्त्र के समाज का एक जीवित सिद्धान्त स्वीकार करे। समाज का सङ्गठन प्रजातन्त्रवादी बनाया जाय। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह किसी धर्म, मत, जाति या सम्प्रदाय का क्यों न हो, आत्मोन्नति और आनन्द-प्राप्ति के लिए पूर्ण सुयोग मिलना चाहिए।

समानता

प्रजातन्त्र के तीन मूल तत्व हैं—समानता, स्वाधीनता और बन्धुत्व। समानता से यह अभिप्राय नहीं है कि किसी समाज के सब व्यक्ति समान हैं। सब व्यक्तियों का समान होना तो सम्भव नहीं। आप चाहे जिस दृष्टिकोण से विचार करें, समाज के सब व्यक्ति हर दशा में समान हो ही नहीं सकते। तब समानता का क्या अर्थ है। प्रजातन्त्र व्यक्तियों को कुछ विशेष राजनैतिक एवं सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समान स्वीकार करता है। इसका अधिक स्पष्ट अर्थ यह है कि प्रजातन्त्र के अन्तर्गत समाज के सब व्यक्तियों को समान सामाजिक और राजनैतिक अधिकार एवं सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, जिनके उपयोग से वे सुख प्राप्त कर सकते हैं। सामाजिक अथवा राजनैतिक क्षेत्र में व्यक्तियों को केवल 'व्यक्ति' के रूप में माना जाना चाहिये, उन्हें किसी वर्ग विशेष के सदस्य के रूप में नहीं।

यदि राजनैतिक दृष्टि में शासन, व्यक्तियों को पूँजीवादी और सर्वहारा के वर्गों में विभाजित कर

---

* पं० जवाहरलाल नेहरू ने अध्यक्ष-पद से फ़ैजपुर कॉङ्गरेस में जो अभिभाषण दिया था, उसमें यह स्पष्ट रूप से कहा था कि—"आज कॉङ्गरेस भारत में पूर्ण प्रजातन्त्र की स्थापना चाहती है और प्रजातन्त्रवादी राज्य की स्थापना के लिए युद्ध करेगी।..... समाजवाद के लिए नहीं।..... आज हमारे लिए आवश्यक समस्या है राजनैतिक स्वाधीनता और प्रजातन्त्रवादी राज्य की स्थापना।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूँजीवादी वर्ग को अधिक विशेषाधिकार, सुविधाएँ और अवसर प्रदान करे और दूसरी ओर सर्वहारा-वर्ग—धन-हीन वर्ग—के लिए वैसे विशेषाधिकार और सुविधाएँ प्रदान न की जायँ, तो यह नहीं कहा जा सकता कि राज्य सब व्यक्तियों को समान अवसर, समान साधन और समान सुविधाएँ प्रदान करता है। यही बात समाज के सम्बन्ध में लागू होती है। जिस समाज में केवल जन्म और जाति के कारण ही कोई व्यक्ति श्रेष्ठ, उच्च और गौरव-पूर्ण पद प्राप्त कर सके और उस कारण समाज उसे विशेषाधिकार, विशेष सुविधाएँ और विशेष साधन प्रदान करे और दूसरी ओर धन-हीन व्यक्तियों एवं तथाकथित 'दलित-वर्ग' के व्यक्तियों से केवल निर्धन कुल या जन्म-जाति के कारण समाज में श्रेष्ठ और उच्च पद प्राप्त करने की सुविधाएँ न दी जायँ, तो ऐसी समाज-व्यवस्था प्रजातन्त्रवादी नहीं हो सकती। यह ध्रुव सत्य है कि जब-जब राज्य या समाज व्यक्तियों को, व्यक्तियों के रूप में न मान कर, वर्ग-विशेष के रूप में मानता है, तब ही राज्य या समाज में सामाजिक या राजनैतिक विषमता का प्रादुर्भाव होता है।

एक पाश्चात्य लेखक ने लिखा है :—

"यह बात विचारणीय है कि जहाँ राज्य या समाज प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में मानता है—किसी वर्ग-विशेष के सदस्य के रूप में नहीं—वहाँ प्रजातन्त्र और समानता होती है। जहाँ राज्य या समाज व्यक्तियों को व्यक्तियों के रूप में न मान कर किसी वर्ग-विशेष के सदस्य के रूप में मानता है, वहाँ असमानता उत्पन्न होती है और उसके साथ एक ऐसी प्रणाली का जन्म होता है जो प्रजातन्त्र की विरोधिनी होती है।"

प्रजातन्त्र का उद्देश केवल इसीसे पूरा नहीं हो जाता कि सरकार प्रत्येक व्यक्ति को वयस्क मताधिकार प्रदान कर देती है। प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को मताधिकार मिल जाना इस बात का प्रमाण नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति को राजनैतिक क्षेत्र में समानता प्राप्त होगई। जब तक मतदाताओं को अपने देश की समाज-नीति और राज-नीति का प्राथमिक ज्ञान न हो, जब तक उन्हें राजनैतिक समस्याओं में रस और दिलचस्पी न आवे, तब तक यह सम्भव नहीं कि वे मताधिकार द्वारा युक्त समानाधिकार से लाभ उठा सकेंगे। अतः वयस्क मताधिकार से लाभ उठाने के लिए यह अनिवार्य है कि जन-शिक्षा का व्यापक प्रसार व प्रचार हो। प्रजातन्त्र की सफलता का रहस्य जाग्रत और चेतनाशील शिक्षित लोकमत में है। अमेरिका और ब्रिटेन में प्रजातन्त्र को जो सफलता मिली है, उसका कारण है वहाँ का जाग्रत और शिक्षित लोकमत। यद्यपि नवीन शासन विधान के अन्तर्गत भारत में मतदाताओं की संख्या ३½ करोड़ हो गई है, तथापि भारत में घोर निरक्षरता और शिक्षा के अभाव के कारण इस संकुचित मताधिकार का व्यक्तियों द्वारा सदुपयोग नहीं होता।

विगत वर्ष (१९३७) के प्रारम्भ में भारत के ११ प्रान्तों में प्रान्तीय व्यवस्थापिका परिषदों के लिए सामान्य निर्वाचन हुये थे। इन निर्वाचनों की गति-विधि से यह स्पष्टतः प्रगट होता है कि भारतीय मतदाता भारत के राजनैतिक प्रश्नों से कितने अनभिज्ञ हैं। वे इतने अज्ञान हैं कि उन्हें कोई भी राजनैतिक दल अपने अनुचित प्रभाव, आतंक और प्रलोभन के बल से आसानी से मत प्राप्त कर सकता है। गरीबी और निरक्षरता के कारण भारतवर्ष में राजनैतिक विषमता अत्यधिक उग्रता से समाज की दुर्दशा कर रही है। ज़मींदार, पूँजीपति और व्यापारियों के मुक़ाबिले दीन-हीन किसानों, मज़दूरों और शोषित वर्ग को सुविधाएँ और सुयोग कम दिए जाते हैं। हमारे देश में सरकार को सबसे अधिक आमदनी ग़रीब जनता पर लादे गये करों से प्राप्त होती है, परन्तु उनको सुख-सुविधा में सबसे कम धन व्यय किया जाता है।

सामाजिक समानता के मार्ग में एक सबसे बड़ी बाधा है। वह है समाज में आर्थिक विभाजन की व्यवस्था। आर्थिक विभाजन की समस्या को प्रजातन्त्र बड़ी उत्तमता से सुलझाता है, परन्तु प्रजातन्त्रवादी राष्ट्र पूँजीपतियों से मिल कर, षड्यन्त्र रच कर आर्थिक व्यवस्था में घोर असमानता पैदा कर रहे हैं, यही कारण है कि वैभवशाली संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और ब्रिटेन में आज हमें आर्थिक विषमता का नग्न नृत्य दिखलाई दे रहा है। वहाँ के पूँजीपति मज़दूरों और निर्धन श्रेणी का कैसा शोषण ता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से शोषण कर रहे हैं तथा वहाँ बेकारी कैसे भयंकर रूप में मौजूद है, इसे सभी जानते हैं। इस युग में भी कुछेक प्रजातन्त्रवादियों की यह धारणा है कि देश में आर्थिक व्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रहने पर भी राजनैतिक एवं सामाजिक समानता की स्थापना हो सकती है। इन प्रजातन्त्रवादियों का यह विचार है कि मताधिकार देशव्यापी कर दिया जाय। शिक्षा के क्षेत्र में एवं अन्य क्षेत्रों में सामाजिक सुविधाएँ प्रदान कर दी जायँ और पूँजीपतियों एवं धनी वर्ग पर गरीबों की अपेक्षा अधिक टैक्स लगा दिया जाय तो प्रजातन्त्र की स्थापना हो सकती है। उद्योगों और व्यापारों की दशा जैसी इस समय है, वैसी ही बनी रहे। जमींदारों की स्थिति जैसी आज है, वैसी ही भविष्य में बनी रहे। किसान अपनी पसीने की कमाई जमींदार को सौंपता रहे। ऐसी स्थिति में सच्चा प्रजातन्त्र पनप नहीं सकता। उपर्युक्त प्रजातन्त्रवादियों का विचार मूलतः गलत है।

आज प्रजातन्त्रवादी अमेरिका और ब्रिटेन में आर्थिक विषमता, भयङ्कर बेकारी, और गरीबी का जो तांडव नृत्य हो रहा है उसका एकमात्र कारण यह है कि इन देशों की सरकारों ने सामाजिक समानता की उपेक्षा करके प्रजातन्त्र का पूँजीवाद से सम्बन्ध स्थापित कर दिया है। फलतः आज का प्रजातन्त्र पूँजीवाद के पापों से पीड़ित है। आज यूरोप में और प्रजातन्त्रवादी देशों में प्रजातन्त्र के विरुद्ध जो भावना विद्रोह का रूप धारण कर चुकी है, उसका कारण यह है कि प्रजातन्त्र की पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था से जनता या प्रजा सन्तुष्ट नहीं है। एक विद्वान अङ्गरेज लेखक का यह कथन सत्य है कि :—

"आय या सम्पत्ति-विभाजन में यह असमानता स्पष्टतः प्रजातन्त्रवादी समानता की किसी भी प्रणाली की स्थापना को कठिन बना देती है।"

नागरिक स्वाधीनता

प्रजातन्त्र का दूसरा तत्व है नागरिक स्वाधीनता। प्रजातन्त्र नागरिक स्वाधीनता की रक्षा के लिए सदैव सजग रहता है। ऐतिहासिक दृष्टि से प्रजातन्त्र और नागरिक स्वाधीनता का विकास साथ-साथ हुआ है। इङ्गलैण्ड में पहले सुधार-क़ानून से पूर्व सिद्धान्त रूप में समग्र नागरिक अधिकारों का आदर किया जाता था। विशुद्ध सिद्धान्त की दृष्टि से प्रजातन्त्र और नागरिक स्वाधीनता दोनों सर्वथा भिन्न हैं, परन्तु व्यवहार में ये दोनों अभिन्न हैं। भाषण-स्वातन्त्र्य, लेखन-स्वातन्त्र्य, सम्मेलन-स्वातन्त्र्य, मत-स्वातन्त्र्य, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य, सम्पत्याधिकार, आदि प्रमुख नागरिक अधिकार हैं, जो राज्य द्वारा नागरिकों के लिए सुरक्षित होते हैं। प्रजातन्त्र-वादी को नागरिक स्वाधीनता की भावना अति सरल और सीधी-सी है। परन्तु व्यवहार में नागरिक स्वाधीनता की भावना कई असाधारण कठिनाइयाँ प्रस्तुत करती है। प्रजातन्त्रवादी का यह विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति को, जहाँ तक सम्भव हो, स्वेच्छानुसार कार्य करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये। इसका तात्पर्य यह हुआ कि सरकार या समाज को व्यक्ति के कामों में, जहाँ तक सम्भव हो, बहुत कम हस्तक्षेप करना चाहिये। यह तो हुई एक विचारधारा। दूसरी विचारधारा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की इच्छानुसार कार्य करने के अधिकार का आदर करना चाहिए और इसलिए उसे दूसरे व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसे व्यवहार की वह उससे आशा करता है। प्रजातन्त्रवादी की यह धारणा है कि नागरिक उस समाज में अधिक सुखी, अधिक विवेकशील और अधिक चेतन एवं सभ्य होंगे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समाज एवं राष्ट्र-निर्माण में योग देने के लिए समान अवसर दिया जाता है और उन्हें राज्य द्वारा यथासम्भव अपने भाग्य-निर्माण के लिए स्वतन्त्रता दे दी जाती है। जिस समाज या राज्य में स्वभाग्य-निर्माण या जीवन में आनन्द-प्राप्ति के लिए स्वतन्त्रता नहीं मिलती, उसके नागरिकों में सर्वश्रेष्ठ मानवी सभ्यता, तेजस्वी व्यक्तित्व और विचार-स्वातन्त्र्य का विकास नहीं होता।

प्रजातन्त्र में नागरिकों की स्वाधीनता के लिए क्या संरक्षण है? वह कौनसी सत्ता है जो नागरिकों को यह आश्वासन देती है कि वे निर्भयतापूर्वक अपनी स्वाधीनता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का भोग कर सकेंगे, अपने गृह को अपना गृह कह सकेंगे। जो चाहेंगे, सो समाचार-पत्र में छाप सकेंगे अथवा अपने इष्ट-मित्रों और बन्धुओं से स्वतन्त्रता से मिल सकेंगे। उन कट्टरपंथियों एवं हिंसावादियों से, जो हमारे विचारों से सहमत नहीं, हमारी कौन रक्षा करता है? हमारे लेखन एवं साहित्य की रक्षा कौन करता है? हमें बन्दी-गृह में ज़बरदस्ती ठूँस दिए जाने से कौन रोकता है? पुराने युग के विचारों के समर्थक यह तुरन्त कह देंगे—बल और शस्त्र। परन्तु आज के युग का प्रजातन्त्रवादी, जो स्वदेश के क़ानून तथा अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून में श्रद्धा रखता है, ऐसा कदापि विचार नहीं कर सकता। प्रजातन्त्रवादी का यह विश्वास है कि क़ानून उसकी रक्षा करता है—शस्त्र नहीं। कहने को यह कहा जा सकता है कि शस्त्र और शक्ति का राज्य बीत गया। आज तो देश में और विश्व में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून का राज्य है। परन्तु यह कथन अधिकांश में, व्यवहार में, असत्य सिद्ध हो रहा है। यदि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में क़ानून का राज्य होता तो क्या इटली अबीसीनिया को क्रूरतापूर्वक शस्त्र-बल से ग़ुलाम बना लेता? क्या जापान चीन के प्रान्तों पर अपने साम्राज्यवाद का आतङ्क जमाने का दुःसाहस करता? आज राष्ट्रसङ्घ के प्रति विश्व के राष्ट्रों में इतनी अश्रद्धा पैदा न हो जाती?

देशों के अन्तर्गत भी क़ानून का राज्य नहीं है—बल और सम्पत्ति का राज्य है। दूसरे देशों की बात जाने दीजिये। अपने देश की न्याय-प्रणाली पर ही दृष्टिपात करें। भारत में न्यायालय नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए स्थापित हैं, यह कहा जाता है। परन्तु आज के न्यायालय ऐसे स्थान हैं, जहाँ न्याय का व्यापार होता है। जिसके पास धन है, बल है, जिसका राज्य में कोई गौरव है, उसके लिए न्यायालय में न्याय है। परन्तु ग़रीबों, मज़दूरों, एवं किसानों के लिए न्यायालयों में न्याय बड़ी कठिनाई से मिल सकता है।

बन्धुत्व

प्रजातन्त्र का तीसरा तत्व है बन्धुत्व। समाज में सच्चे बन्धुत्व की स्थापना उसी समय हो सकती है, जब कि नागरिक समानता और स्वतंत्रता का भोग करते हों। जिस समाज या राज्य में नागरिकों में समानता की भावना नहीं; जिस राज्य या समाज में नागरिक अधिकार सुरक्षित नहीं, उसमें बन्धुत्व की स्थापना सम्भव नहीं हो सकती। बन्धुत्व समानता एवं स्वतंत्रता से पैदा होता है। शोषक और शोषित वर्ग में बन्धुत्व पैदा नहीं हो सकता। बन्धुत्व समान विचार, समान संस्कृति, सामान्य भावना और सहानुभूति के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। जब तक समाज आर्थिक दृष्टि से पूँजीवादी और निर्धन वर्गों के रूप में विभाजित रहेगा, जब तक प्रत्येक वर्ग के हित और स्वार्थ एक दूसरे के विरोधी रहेंगे, तब तक उनमें बन्धुत्व का भाव सम्भव नहीं।

इसमें सन्देह नहीं कि प्रजातन्त्र एक श्रेष्ठ राजनैतिक और सामाजिक आदर्श है। परन्तु आज प्रजातन्त्र का जीवन सङ्कट में है। कॉङ्गरेस ने, ऐसी स्थिति में, भारत में प्रजातन्त्रवादी राज्य की स्थापना को अपना लक्ष्य घोषित करके भारतवासियों और विशेष रूप से हिन्दू समाज के कन्धों पर एक बड़ा उत्तरदायित्व लाद दिया है। अतः प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य है कि वह भारतीय समाज को प्रजातन्त्रवादी बनाने के लिए यथाशक्ति चेष्टा करे। जब तक समाज प्रजातन्त्रवादी न बनेगा, तब तक राज्य प्रजातन्त्रवादी नहीं बन सकता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दू-समाज पर वैवाहिक सङ्कट

[श्री० सन्तराम, बी० ए०]

हमदगढ़ डकैती अभियोग में दण्डित राजनैतिक क़ैदी श्रीयुत शेरजङ्ग ने जेल से निकलते ही लाहौर के श्रीयुत फकीरसिंह एडवोकेट की पुत्री कुमारी निर्मला एम० ए० से विवाह करके पञ्जाब के सुशिक्षित नारी-समाज में एक बड़ा भारी तहलक़ा मचा दिया है। कहते हैं कि श्रीयुत शेरजङ्ग की पहले से दो पत्नियाँ मौजूद हैं, इस पर भी आपने कुमारी निर्मला से तीसरा ब्याह किया है। इसी से नारी-समाज उनसे रुष्ट और क्षुब्ध हो उठा है। कई सुशिक्षित देवियों ने लाहौर के हिन्दी दैनिक पत्रों में लेख लिखकर शेरजङ्ग और निर्मला के इस कर्म की घोर निन्दा की है। और जो कॉङ्गरेसी नेता इनके विवाह में सम्मिलित हुए थे, उनको भी आड़े हाथों लिया है। कॉङ्गरेसी नेताओं ने तो यह कह कर कि हमें शेरजङ्ग महाशय के पहले विवाहों का कुछ भी ज्ञान न था, यदि हमें पहले से ज्ञान रहता तो हम कभी सम्मिलित न होते, अपने को बरी कराने का प्रयत्न किया है, परन्तु वर और वधू पर अभी तक भी स्त्रियों की ओर से बाण-वर्षा हो रही है। देशभक्त समझ कर जो कॉङ्गरेसी लड़कियाँ पहले श्री शेरजङ्ग के प्रति पूज्यबुद्धि रखती थीं वही अब उनसे अतीव घृणा करने लगी हैं। मेरे पड़ोस में एक सुशिक्षिता देवी रहती हैं। उन्होंने श्री० शेरजङ्ग का फ़ोटो चौखट में जड़वाकर अपने सिङ्गार-भवन में रख छोड़ा था। कुमारी निर्मला का पाणि-ग्रहण करने का समाचार पाते ही उन्होंने उस फ़ोटो और चौखट को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला है।

श्री० शेरजङ्ग और श्रीमती निर्मला का उत्पन्न किया हुआ संक्षोभ अभी शान्त नहीं होने पाया था कि वैसा ही एक और संवाद सुनने को मिला। पत्रों में यह बात प्रकाशित हुई है कि लाहौर के मिशन कॉलेज के कोई प्रोफ़ेसर जिनकी पहली पत्नी जीती है, अपनी एक ग्रेजुएट शिष्या से विवाह करने जा रहे हैं। इस पर सत्याग्रह करके उनके विवाह को रोकने के उपाय सोचे जा रहे हैं। स्त्रियाँ मारे क्रोध के पत्रों में प्रोफ़ेसर महोदय और उस लड़की के विरुद्ध विष-वमन कर रही हैं।

भारत में यह नारी-स्वातन्त्र्य का समय है। नारियों के अधिकारों की रक्षा के लिए सब कहीं आन्दोलन चल रहे हैं। स्त्रियों पर पुरुषों के अत्याचारों का वर्णन करके उनको पुरुषों के विरुद्ध भड़काया जा रहा है। पुरुष को उत्पीड़क और स्त्री को उत्पीड़ित प्रकट किया जा रहा है। नारी के प्राचीन भारतीय आदर्श को निन्दित ठहरा कर नवीन योरोपीय आदर्श उसके सामने रखा जा रहा है। बहुपत्नीत्व की निन्दा करके एक पत्नीत्व का बखान किया जा रहा है। ऐसी दशा में श्री० शेरजङ्ग और उक्त प्रोफ़ेसर महोदय के प्रति नारी-समाज का रोष-प्रदर्शन स्वाभाविक ही है।

परन्तु पुरुषों की निन्दा या उनके प्रति रोष प्रकट कर देने से ही काम नहीं चल सकता। हिन्दू-समाज पर जो इस समय वैवाहिक सङ्कट आया है उसको दूर करने के लिए उसके मूल कारण पर विचार करना होगा। उपर्युक्त दो केस तो नमूना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मात्र हैं, जो ज़ोर के साथ जनता के सामने आ गये हैं, अन्यथा ऐसी घटनाएँ तो आए-दिन होती ही रहती हैं।

पहले हम श्रीयुत शेरजङ्ग के केस को लेते हैं। जहाँ तक मैंने सुना है, उनकी शिक्षा मेट्रिकुलेशन से अधिक नहीं और न उन्हें कुँवर-कन्हैया ही कहा जा सकता है कि स्त्रियाँ उन पर गोपियों की तरह लट्टू हों। दर्शन-शास्त्र की परीक्षा में पञ्जाब-विश्वविद्यालय के एम० ए० के समस्त परीक्षार्थियों में प्रथम आने वाली लड़की का, उनकी पहली दो स्त्रियों के रहते हुए भी स्वेच्छा से तीसरी पत्नी बनने के लिए लालायित हो उठना विशेष कारण के बिना नहीं हो सकता। बात यह है कि स्त्रियों को, विशेषतः पढ़ी-लिखी स्त्रियों को, पुरुष का केवल शारीरिक सौन्दर्य ही नहीं, वरन् उससे भी बढ़ कर उसकी वीरता और ख्याति आकर्षित करती है। जिन दिनों फ्रान्स का मराक्को के साथ युद्ध हो रहा था, मराक्को के विद्रोही नेता अब्दुल करीम की वीरता और रण-कौशल के समाचार बड़े आकर्षक और सुन्दर शब्दों में फ्रान्सीसी संवाद-पत्रों में छपा करते थे। उन वर्णनों को पढ़ कर बीसियों फ्रेञ्च सुन्दरियों ने अब्दुल करीम को पत्र लिखे थे और अपने से विवाह करने की प्रार्थना की थी, यद्यपि वह फ्रान्स का कट्टर शत्रु था। इसी प्रकार, जान पड़ता है, श्रीमती निर्मला देवी को भी श्री० शेरजङ्ग की उस ख्याति ने, जो उन्हें राजनैतिक कैदी बनने से प्राप्त हुई है, आकर्षित किया है। एक बार मन में कामना उत्पन्न हो जाने पर स्त्री के लिए अपने को सँभालना कठिन हो जाता है। वह जाति, कुल, राष्ट्र, धर्म और मर्यादा को ठुकरा कर, वरन् अपने सारे भविष्य को सङ्कट में डाल कर अवाञ्छनीय पुरुष का भी पाणिग्रहण कर लेती है। निर्मला और शेरजङ्ग की जैसी अवस्थाओं को एकदम रोक देना सम्भव नहीं। ऐसी घटनाएँ थोड़ी बहुत होती ही रहेंगी। आवश्यकता केवल इस बात की है कि ऐसे लोगों को नेता के पद पर प्रतिष्ठित नहीं होने देना चाहिए। ऐसे लोग समाज में सदा रहते ही हैं। परन्तु अनिष्ट का कारण ये तब बनते हैं, जब इनकी नेता के रूप में पूजा होने लगती है। हम लोगों की भूल यह है कि जो व्यक्ति एक बात में नेता या निपुण होता है, हम उसे दूसरी सभी बातों में भी नेता और निपुण मान लेते हैं। श्री० जवाहरलाल जी राजनीति के पण्डित हैं, इसलिए वे विज्ञानाचार्य और वेद के पारङ्गत पण्डित भी हैं, ऐसा मान लेना जितना हास्यजनक है, उतना ही श्री० शेरजङ्ग जैसे व्यक्तियों को, केवल जेल चले जाने के कारण, नेता मान लेना भी है। इससे समाज की घोर हानि होती है।

अब दूसरा प्रोफ़ेसर महोदय का केस लीजिए। एक स्त्री के रहते दूसरी स्त्री करना इसलिए बुरा है कि इससे सामाजिक जीवन में गड़बड़ फैलने का डर रहता है, अन्यथा यह धर्म-शास्त्र की दृष्टि से कोई पाप नहीं। प्राचीन इतिहास में हमें अनेक ऋषि-महर्षियों और राजा-महाराजों के ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिनके एकाधिक पत्नियाँ थीं और जो समाज में प्रतिष्ठित माने जाते थे। याज्ञवल्क्य और दशरथ का कभी इसलिए अपमान नहीं हुआ कि उनकी एक से अधिक पत्नियाँ थीं। यह ठीक है कि सामान्य नियम एकपत्नीत्व का ही था, परन्तु इसके अपवाद भी बहुत थे। उद्देश्य यह था कि कोई ऐसा कर्म न होने पाये जिससे समाज की शान्ति और व्यवस्था भङ्ग होने का डर हो। इसलिए किसी स्त्री का बलात् या उसकी इच्छा के विरुद्ध किसी पुरुष से विवाह कर देना सामाजिक पाप है। यदि स्त्री-पुरुष परस्पर सहमत हों और किसी दूसरे की हानि भी न होती हो तो उनका विवाह, चाहे वे युवा हों चाहे वृद्ध, कभी पाप नहीं कहला सकता। योरप में बुड्ढे-बुड्ढियों से वरन् बालाओं तक से विवाह कर लेते हैं और आनन्द से रहते हैं। इससे उनके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समाज को भी कोई हानि नहीं होती। हम लोगों ने ईसाइयों की एकपत्नीत्व की प्रथा तो लेली, परन्तु उसके साथ 'तलाक़' लेने को तैयार नहीं हुए। 'तलाक़' की प्रथा प्रचलित किए बिना एक-पत्नीत्व प्रथा कभी चल ही नहीं सकती। ईसाइयों में यदि पति-पत्नी की नहीं पटती, तो वे तलाक़ द्वारा विवाह-सम्बन्ध विच्छेद करके नये साथी ढूँढ़ लेते हैं। परन्तु हिन्दू-समाज में ऐसा नहीं हो सकता। इसका स्वभावतः परिणाम यह होता है कि परस्पर कलह के कारण दोनों का वैवाहिक जीवन दुःखमय हो जाता है, या वे एक दूसरे की मृत्यु की कामना करने लगते हैं, या व्यभिचार आरम्भ हो जाता है। रोग के कारण अशक्य स्त्री की अवस्था में सब पुरुषों से हम आजन्म ब्रह्मचारी रहने या पुत्रदर्शन का मोह संवरण करने की आशा नहीं कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति से इतने संयम और त्याग की आशा करना बुद्धिमत्ता नहीं। इसलिए सब लोगों को एक ही लाठी से न हाँक कर प्रत्येक मनुष्य की अवस्था पर अलग-अलग विचार होना चाहिए। फिर जो अवस्थाएँ ऐसी हों कि उनको दूसरी पत्नी करने की अनुमति देने में समाज की कोई हानि न हो, उन्हें अनुमति देने में कोई आपत्ति न होनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया जायगा तो समाज में घोर अनाचार और अत्याचार फैलेगा। अवस्था और समय के अनुसार सामाजिक नियमों में संशोधन और परिवर्तन होता रहना आवश्यक है, तभी समाज स्वस्थ रह सकता है। वैवाहिक जीवन की अशान्ति का 'तलाक़' कोई राम-बाण औषधि नहीं। इसमें भी बहुत सी ख़राबियाँ हैं। इसमें भी पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को ही अधिक हानि है। इसलिए यदि हिन्दू-समाज अभी 'तलाक़' को स्वीकार करने को उद्यत न हो तो अच्छा यही है कि सामाजिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए, व्यक्तिगत अवस्था पर पृथक् पृथक् विचार करके, सच्ची दशाओं में बहुपत्नीत्व की भी अनुमति दे दी जाय। इससे समाज में उतनी ख़राबी नहीं फैलेगी जितनी कि 'तलाक़' को स्वीकार न कर के एकपत्नीत्व पर ज़ोर देने से हो रही है। योरप या किसी दूसरे का अंधानुकरण करने से लाभ नहीं हो सकता। लाभ इसी में है कि हम दूसरों की अच्छी बातों को अपनी आवश्यकताओं और अवस्थाओं के अनुसार ढाल लें। न एक-पत्नीत्व प्रत्येक अवस्था में अमृत है और न बहुपत्नीत्व प्रत्येक अवस्था में हलाहल। शिमला के पहाड़ी प्रान्त में मैंने एक स्त्री के पाँच-पाँच पति देखे हैं, और उनके घर में इस प्रथा के कारण किसी प्रकार अशान्ति नहीं। इसलिए किसी बात को अच्छा या बुरा ठहराने के लिए अवस्थाओं पर विचार करना परमावश्यक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

युवक कब और किससे विवाह करें ?

[श्री० प्रेमनारायण अग्रवाल, एम० ए०]

इन दोनों प्रश्नों पर सलाह देना ज़रा कठिन कार्य है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिये एक ही बात ठीक उपयुक्त और उपयोगी नहीं हो सकती। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी निजी समस्यायें होती हैं, निजी दिक्कतें और सुविधायें। दो व्यक्तियों की स्थिति एक सी होना बड़ी कठिन बात है। अतएव प्रत्येक व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत बातों के हिसाब से प्रत्येक बात पर विचार करना चाहिये। जो बात एक के लिये लाभदायक है, दूसरे के लिये उतनी उपयोगी नहीं हो सकती और तीसरे के लिये वही बात बहुत ख़तरनाक साबित हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में हम कुछ जनरल बातें लिखने का प्रयत्न करेंगे, जो ज़्यादातर लोगों के मामले में लागू हो सकें।

हमारा निश्चित विचार है कि युवकों को शादी करने के पहिले शादी के लिये तैयारी करने का मौक़ा मिलना चाहिये। इस मौक़े में वह अपने विवाहिक जीवन की ज़िम्मेदारियों को समझने का यत्न करें और उनको निभाने के लिये तैयारी करें। बिना इनके जाने इस जीवन में प्रवेश करने से शायद उनको कुछ परेशानियाँ उठानी पड़ें। जब वह इनके लिये अपने को तैयार कर चुके होंगे तब इनको विवाहिक-जीवन की दिक़तों से हतोत्साह नहीं होना पड़ेगा। वह बातें एकाएक न होंगी, वरन् उनको वह जानते होंगे और उनको निभाने के लिये तैयार। तब इनको अपने कार्यों के लिये पश्चात्ताप करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि वह तो इस सम्बन्ध में आने से पूर्व ही उनके बारे में सब कुछ जान चुके थे। वह उनकी उम्मीद में ही थे। अधिक से अधिक उन घटनाओं के होने में समय का अन्तर पड़ सकता है। यदि इस जीवन में दिक़तें आईं तो उनसे वह विचलित न होकर उनका बहादुरी से मुक़ाबिला करेंगे और यदि वह न आईं तो इसकी उनको चिन्ता भी न होगी।

तैयारी के इस समय में वह अपने को भी प्रेमी समझ सकते हैं। उनको अपनी शक्तियों, कार्य-शैली पर भरोसा हो सकता है। अपनी रुचि का पता चल सकता है कि कौन सी चीज़ उन्हें पसन्द है या नापसन्द। अपनी समस्त परिस्थिति को वह इस समय समझ सकते हैं और इसके अनुकूल अपने भावी जीवन की कल्पना कर सकते हैं। अपनी इन बातों को जानकर वह यह भी निश्चय कर सकते हैं कि वह अपने लिये कैसी स्त्री चुनें, उसमें क्या-क्या गुण, विशेषतायें होनी चाहिये, और क्या-क्या बातें उसमें बिल्कुल न होनी चाहिये, जिससे उनका विवाहिक जीवन अधिक सफल तथा सुखी हो सके।

जिन प्रश्नों पर उन्हें इस समय विचार करना चाहिये वह प्रत्येक की परिस्थिति के अनुसार कम-ज़्यादा, थोड़े-बहुत हो सकते हैं। पर उनको अपनी अवस्था, आर्थिक परिस्थिति, महत्वाकांक्षाओं, स्वास्थ्य आदि बातों पर अवश्य ही विचार कर लेना चाहिये। इन सब बातों को ध्यान में रखकर उनको अपनी शादी के प्रश्न पर विचार करना चाहिये। इन पर ख़ूब विचार कर ही उन्हें यह तय करना चाहिये कि वह कब शादी करेंगे, कैसी लड़की से करेंगे, आदि अनेक बातें हैं। इन पर विचार करते समय उन्हें यह भी न भूलना चाहिये कि उनके इन कार्यों का प्रभाव समाज पर कैसा पड़ेगा, क्योंकि वह समाज के एक अङ्ग हैं। उनका समाज से घना सम्बन्ध है, बिना उनके समाज को हानि होगी और बिना समाज के वह रह नहीं सकते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हम यह नहीं चाहते हैं कि स्कूल-कालिज से निकलते ही किसी युवक की शादी कर दी जाय, या उसी समय जब वह पढ़ रहा हो। इस हालत में शादी होने से वह इनकी ज़िम्मेदारी से अपरिचित रहता है, और इनको सम्हालने के लिये अपने को तैयार नहीं कर पाता। इस समय युवक अपने सम्बन्ध में कुछ नहीं सोच सकते हैं। यदि सोचते भी हैं तो दुनिया में आकर। कालिज के वातावरण में सोची हुई बातों में भारी अन्तर का अनुभव करते हैं। उनको संसार का अनुभव हो, उसकी बातें समझें, इसके लिये भी कुछ समय चाहिये। स्कूल-कालिज में या इससे निकलने पर तुरन्त ही शादी हो जाने से इनके ऊपर यह नवीन ज़िम्मेदारी आने लगती है और यह प्रायः उनसे परेशान होकर ज़िन्दगी की लड़ाई में उतने सफलता-पूर्वक नहीं टिक पाते। आजकल के अनिश्चित संसार में उन्हें ज़िम्मेदारियों से लाद कर तैरने के लिये भेजना ख़तरा से ख़ाली नहीं है। जब वह कुछ तैरना सीख लें, तब लादने से शायद पार लग भी जायँ। अतएव हम इस बात के पक्षपाती हैं कि युवकों को अपने अध्ययन के वातावरण को छोड़ने के बाद, दो-एक साल तक संसार के रुख़ को परख कर ही विवाह की ज़िम्मेदारियों के बोझ को सँभालने के लिए आगे बढ़ना चाहिये। जो लोग ख़ूब तैरना सीख कर इसे सँभालते हैं, अन्यों की अपेक्षा अवश्य अच्छे रहते हैं। बीतती तो उनपर है जो तैरना सीखने से पहिले ही इसकी ज़िम्मेदारी के बोझ से दबने लगते हैं और बाहर आते-आते ख़ूब दब जाते हैं। इस समय इनकी सहायता धैर्य के सिवाय कोई नहीं कर सकता। यदि तक़दीर चेत गई तो वह सँभल गये, नहीं तो पिसेंगे तो अवश्य ही।

इस प्रश्न के बाद दूसरा प्रश्न है कि शादी किससे की जाय। इस सम्बन्ध में भी हम अपनी वही बात दुहरायेंगे जिसे हम इस लेख के प्रारम्भ में कह आये हैं कि प्रत्येक मामले पर अलग से विचार होने की ज़रूरत है। युवकों को अपनी परिस्थिति, रुचि के अनुकूल इस बात पर निर्णय करना चाहिये। यह प्रश्न प्रथम प्रश्न से कम महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि कुछ अधिक ही महत्वपूर्ण है। सब बात ठीक होने पर भी यदि पत्नी का चुनाव ठीक नहीं हुआ है तो जीवन भर इसके लिये सबको भुगतना होगा।

युवक लोग उसी से विवाह करना चाहते हैं, जो बहुत ख़ूबसूरत हो। सभी चाहते हैं कि उनकी पत्नियाँ परी के समान हों। पर यह नहीं सोचते कि दुनिया में सभी तो परी नहीं बन सकतीं। बहुत ख़ूबसूरत तो थोड़े ही युवक-युवती होते हैं, बाक़ी सब मामूली तरह के होते हैं। फिर उनको अपनी शक्ल भी तो देखनी चाहिये कि वह स्वयं कैसे हैं। यदि स्वयं अच्छे हैं तो एक अच्छी लड़की उनको अवश्य मिल जायगी। पर यह सम्भव तथा क्रियात्मक नहीं मालूम पड़ता कि एक बदसूरत लड़के को इन्द्र की अप्सराएँ मिल जायँ। ख़ूबसूरत, बदसूरत सभी लड़कों की शादी होती है और उसी तरह युवतियों की भी। जैसी जिसे मिल जाय उसी से उसे सन्तुष्ट रहना चाहिये। यह अवश्य है कि उसे अच्छी की तलाश करनी चाहिये, पर अच्छी न मिलने पर यह ठीक नहीं है कि वह उससे विरक्त बन जाएँ। ख़ूबसूरत लड़कियों की भी तो बदसूरत लड़कों से शादी हो जाती है, पर वह प्रायः निभा ले जाती हैं। ख़ूबसूरती के प्रश्न पर विवाद उठाना उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना अन्य बातों पर। सौंदर्य का नशा विवाह के बाद दम्पतियों पर थोड़े दिनों ही रहता है, वह स्थायी चीज़ नहीं होती। उन्हें तो स्थायी चीज़ों पर अधिक ध्यान देना चाहिये, जिनपर उनको वैवाहिक जीवन की सफलता मिलती है। इस प्रश्न ने इस समय युवक-समाज में जो रूप धारण कर लिया है, हमारी राय में, वह इतना आवश्यक नहीं है। रूपवती स्त्रियों को पाकर भी युवकों के वैवाहिक जीवन असफल ही हैं, और कुरूपों को पाकर सफल। वास्तव में इस प्रश्न पर साधारण तौर पर विचार करने की ज़रूरत है। शादी करने, न करने, या अमुक से करने न करने का प्रश्न सिर्फ़ इसी बात पर तय नहीं होना चाहिए। कितनी ही अन्य अधिक आवश्यक बातें हैं, हमें तो उनपर पहिले विचार करने की आवश्यकता है। सबसे पहिले उनपर विचार होना चाहिये और उन्हीं के आधार पर यह निर्णय होना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिए कि अमुक लड़की से अमुक व्यक्ति विवाह करे या न करे। इसके बाद उसके सौंदर्य पर भी विचार कर ले। यदि वह कुरूप है, प्रायः लड़कियाँ कुरूप नहीं होतीं, तो भले ही वह उससे शादी न करे। पर उसमें इन्द्र की अप्सराओं का सौंदर्य भी न ढूँढ़े।

हमारा ख्याल है पत्नी में सबसे आवश्यक वस्तु है उसका स्वस्थ होना। इसी बात पर सबका सबसे पहिले ध्यान जाना चाहिये। बिना स्त्री के स्वस्थ हुये, पति का सारा जीवन निरानन्द हो जायगा। बीमार रह कर वह भार-स्वरूप बनी रहेगी। घर का काम-काज आदि ठीक तरह से न करके पति का साथ न दे सकेगी। उसके अच्छे स्वास्थ्य के बिना वैवाहिक जीवन का मज़ा किरकिरा हो जायगा। जब शरीर ही चुस्त, स्वस्थ नहीं है तो उसे मनुष्य-जीवन का क्या आनन्द आ सकता है। स्वस्थ मनुष्य ही संसार के मजे उठा सकता है।

स्वस्थ से हमारा मतलब पत्नी के मोटे या पतलेपन से नहीं है, वरन् इससे कि वह किसी बीमारी के चंगुल में तो नहीं फँसी है और अक्सर अस्वस्थ तो नहीं रहती। अच्छे स्वास्थ्य के मानी हैं कि अपने काम को करने में तबियत लगना, चित्त सदैव प्रसन्न रहे, देह में फुर्ती और चुस्ती हो।

इसके बाद दूसरी बात है उसके स्वभाव की, कि वह कटु वा, मृदुल, सहनशील अथवा कैसा है। चिड़-चिड़े स्वभाव की लड़कियाँ घर में कोलाहल मचाये रहती हैं। वह न पति की बात सहन कर सकती हैं और न घर के अन्य किसी व्यक्ति की। लड़की के लिये ज़रूरी है कि उसका स्वभाव सीधा, सरल और सहनशील हो, ज़रा-ज़रा सी बात पर भभक न उठे, वह अपनी ज़िम्मेदारी को समझे, उसके अनुकूल कार्य करे, अपने स्वभाव पर नियन्त्रण हो। उसका स्वभाव एक दूसरे को समझने का, दूसरों की कमज़ोरियों के प्रति सहानुभूति दिखाने का और उनकी ग़लती को क्षमा करने का होना चाहिये। जीवन में सफलतापूर्वक आगे चलने के लिये अपने घर वालों, अड़ोसी-पड़ोसी के स्वभाव को समझ कर उनसे मिल कर चलना होता है। लड़ाई-झगड़े करके उल्टा नुक़सान होता है। घर की शान्ति, कलह, आदि का दारोमदार पत्नियों के स्वभाव पर निर्भर करता है। उनको घर में रह कर घर के व्यक्तियों आदि से ही वर्तना पड़ता है, जिनसे बिगाड़ करना उचित नहीं होता। बाहर वालों से बिगाड़ होना इतना हानि-कारक नहीं होता, जितना अपने निकट के सम्बन्धियों से या रोज़ काम आने वाले व्यक्तियों से।

तीसरी बात में हम उसका घर के कार्यों से परिचय होना, उनको सफलता तथा परिश्रमपूर्वक करना आदि बातें शामिल कर सकते हैं। घर के समस्त कार्यों को करने का भार उसी के ऊपर होता है। स्त्रियों का प्रधान कार्यक्षेत्र घर के अन्दर है। जब वह घर के काम-काज नहीं कर सकतीं तो वह एक ज़बरदस्त कमी है, जिस पर विचार करने की आवश्यकता होती है। उनको स्वयं करना या नौकरों से उन्हें करवाना ही पड़ेगा। यदि वह इसे नहीं जानती तो वह कुछ नहीं जानती। वह अपने कार्य-क्षेत्र में कैसे सफल होगी। क्या पति महाशय को उन कामों को स्वयं करना या कराना होगा? यदि ऐसा हुआ तो स्त्रियाँ फिर किस मर्ज़ की दवा होंगी?

इन बातों के बाद लड़कियों की शिक्षा का तथा सुन्दरता का प्रश्न आना चाहिये। शिक्षित लड़कियाँ अपने कार्यों को अधिक उत्तमता से कर सकती हैं, संसार का उनको ज्ञान अच्छा होता है। उनकी आदतें सम्हली होती हैं और उनका out Look प्रायः विस्तृत होता है। वह अपढ़ स्त्रियों की तरह कूप-मण्डूक नहीं होतीं और उनमें समझ भी होती है। वह अच्छी-बुरी बात को समझ सकती हैं, उनके अनुकूल अपने कार्य चला सकती हैं, समय पर वह अपने पतियों की अच्छी सलाहकार बन सकती हैं और उनके कार्यों को भी समझ कर उनमें कभी-कभी सहायक सकती हैं। बिना पढ़ी-लिखी लड़कियाँ प्रायः बड़ी मूर्ख होती हैं, न तो उनकी समझ में कोई बात आसानी से आती है और न वह इसके लिये प्रयत्न ही करती हैं। संसार की वर्तमान परिस्थिति में शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है। जहाँ तक हो युवकों को शिक्षित लड़कियों से शादी करना चाहिये। वह अधिक सफल पत्नियाँ साबित होती हैं। इसका मतलब यह नहीं कि सभी अपढ़ लड़कियाँ बेवक़ूफ़ या त्याज्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनमें भी कोई-कोई लड़कियाँ बड़ी होशियार, व्यवहार-कुशल होती हैं। उनको पाकर भी बहुतेरे पति अपने को धन्य समझते हैं। पर प्रायः कुपढ़ लड़कियाँ पतियों की परेशानियों को बढ़ाती हैं और पढ़ी-लिखी उनको कम करती हैं। शिक्षा के प्रश्न पर विचार करते समय यह भी विचार करना है कि युवक कितनी पढ़ी-लिखी लड़की से शादी करें। इसे वह अपनी परिस्थिति, रुचि के अनुकूल स्वयं तय कर सकता है और करना चाहिये।

उनकी सुन्दरता के सम्बन्ध में हम ऊपर काफ़ी लिख चुके हैं कि यह सर्वप्रथम स्थान पाने योग्य चीज नहीं है। इसे अपने स्थान पर रख कर ही विचार करना उपयुक्त होता है।

इन बातों के अतिरिक्त कितनी ही अन्य बातें भी हैं, जिन पर विचार करना प्रत्येक युवक के लिये आवश्यक है। और फिर हर एक की हालत के अनुसार उसकी अपनी बातें कम या ज्यादा होती ही हैं। हम एक बात और लिख कर इसे समाप्त करना चाहेंगे। वह है लड़कियों के माता-पिता की सभ्यता, खानदान, रहने-सहने का रङ्ग-ढङ्ग से सम्बन्ध रखने वाली बातें। जैसे जिसके माता-पिता होंगे, वैसी ही उनकी सन्तान होगी। ज्यादातर यही बात होती है, इक्के-दुक्के अपवादों से हमें मतलब नहीं है। यदि उनको पालने में उन्होंने दिलचस्पी ली है, तो वह लड़कियाँ अच्छी साबित होंगी। उनकी अन्य आदतें, जीवन का दृष्टिकोण आदि सुधरा हुआ होगा अथवा उनमें न सभ्यता होगी और न वह व्यवहार-कुशलता ही। समय तथा परिस्थिति के अनुसार वह अपने को मोड़ सकती हैं। उनके बात-चीत के ढङ्ग में, चलने-फिरने में, उनके खानदान की सभ्यता टपकेगी। उनमें एक अजीब तरह की मलमल-साहत होगी। इन बातों का गार्हस्थ्य-जीवन में विशेष स्थान होता है। अच्छे खानदानी घरों की लड़कियाँ गम्भीर, समझदार, चतुर स्वभावतः होती हैं। इनको इन बातों के समझाने की जरूरत नहीं पड़ती। तुच्छ और ऐसे-वैसे खानदानों की लड़कियों में अनेक नीचता की आदतें पाई जाती हैं, जो उनके जीवन में कितनी ही दिक्कतें अनायास ही उत्पन्न कर देती हैं। उनमें न तो वह Dignity और न वह gracefulness होती है। उनकी छुद्रता उनकी बाहरी आदतों से ही प्रकट हो जाती है। समय-कुसमय में अच्छे खानदान की लड़कियाँ प्रायः खरी उतरती हैं, उन्हें अपने खानदान की मर्यादा का नाज होता है, छोटी-छोटी बातों में वह प्रकट होती मालूम देती है। और वह अपने इस मर्यादा की रक्षा करने के लिये प्रयत्नशील होती हैं।

हमारी राय में युवकों को कब और किससे शादी करें—इस प्रश्न पर विचार करते समय उपर्युक्त बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिये। और सम्भवतः उनको वह अपने लिये अधिक लाभदायक हो पावेंगे। हो सकता है कि शुरू में वह इनकी परवाह न करके शादी-विवाह के पवित्र सूत्र में बँध जायँ, पर जब उनका यौवन का उष्ण रक्त ठण्डा होगा, दुनियाँ का अनुभव होगा, तब इनको शायद वह अवश्य पसन्द करेंगे। और शायद इनका ख्याल न करने के लिये पश्चात्ताप भी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक सभ्यता

पितृ-सम्मान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक सभ्यता

सभ्यता की साख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक सभ्यता

सभ्यता का आदर्श

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक सभ्यता

आदर्श वात्सल्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विवाह के पूर्व

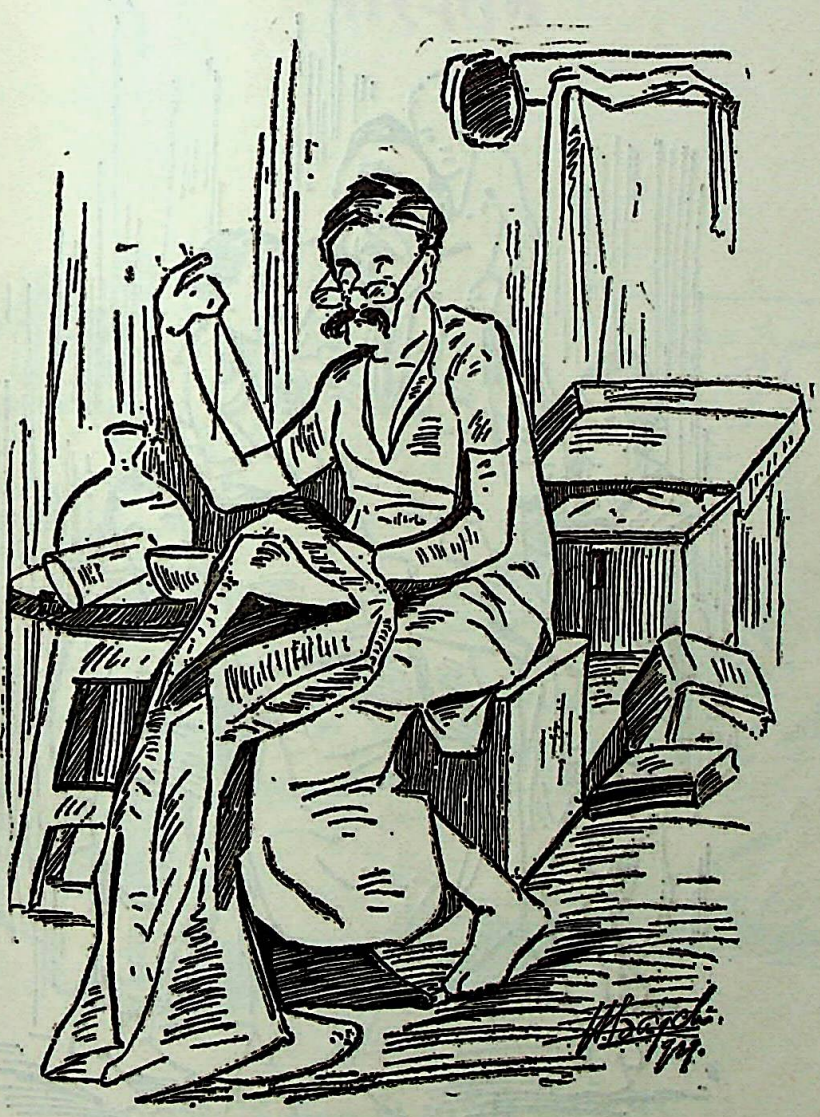

अविवाहित अवस्था में गृह-कार्यों के झञ्झट में
व्यस्त-जीवन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विवाह के पश्चात्

विवाह के पश्चात् गृहस्थी के भार से व्याकुल जीवन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिवर्तन

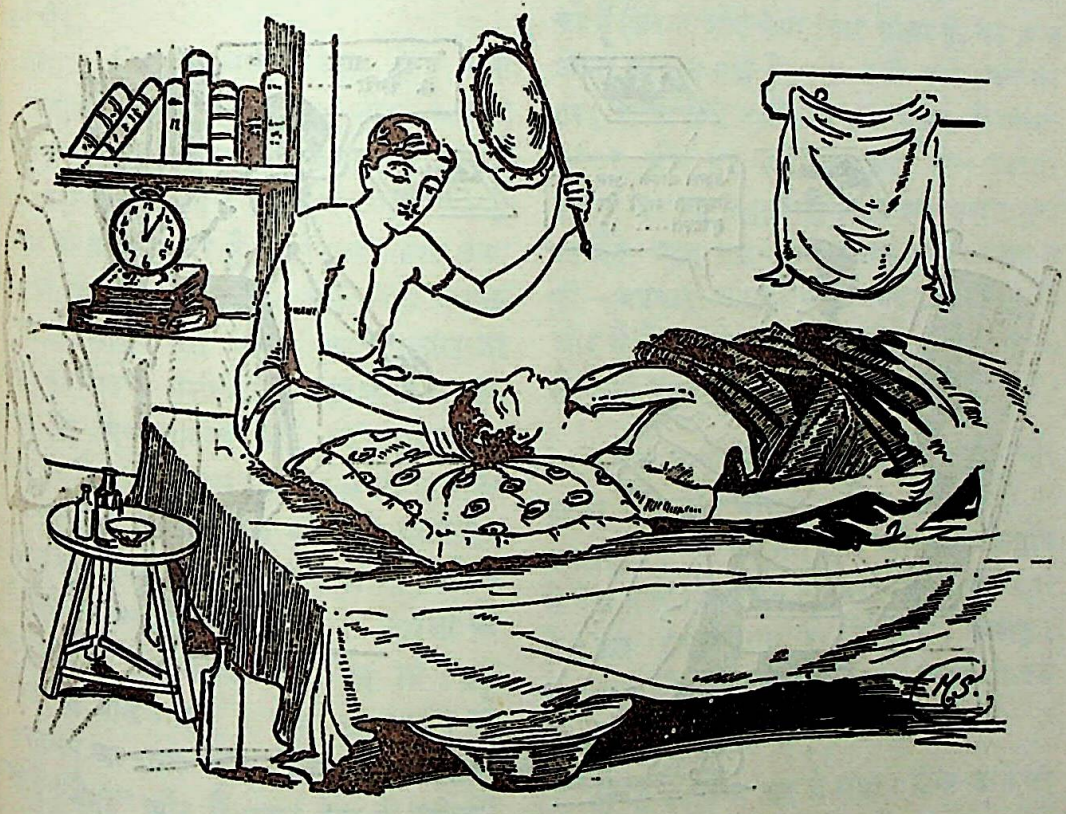

होस्टल में मित्र के बीमार पड़ने पर—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिवर्तन

डिप्टी-कलेक्टर होने पर—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

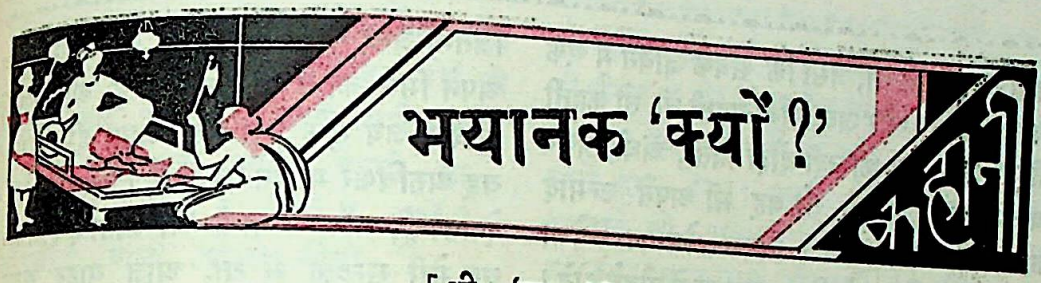

[श्री० 'अमृत']

हाँ बालज़क की एक कहानी थी। मैं उस वक्त अपने में नहीं बालज़क में था। मैं अपने को क्यों भूल गया था, यही मेरी उलझन थी।

नीना.....कितना प्यारा नाम है। नीना के.....आप जानना चाहते हैं यह नीना आख़िर है कौन। नीना बारह साल की लड़की है। बड़ी भोली। बड़ी-बड़ी आँखें हैं। अपने नाम की ही तरह वह भी बहुत प्यारी है। आपने मेमना देखा है न? हाँ, तो बस वैसी ही। उसे बात बनाना नहीं आता, इसलिए उसे सभ्य नहीं पुकारा जा सकता। वह बात में झूठी शकर नहीं घोल सकती, इसलिए वह मिष्टवादिनी भी नहीं पुकारी जा सकती। पर फिर भी...उसकी बात में अगर शकर नहीं तो कुछ ऐसा है जो उससे भी कहीं मीठा है। वह बरबस मन अपनी ओर खींच लेती है, क्योंकि उसमें कोई छिपाव-दुराव नहीं है। पड़ोसी की लड़की है। मैं भी सोलन आया हूँ, वह भी। कुछ दिनों तब से बीत गये हैं। हम साथ-साथ रहे हैं। अपनापन आ गया है। वह मुझे स्नेह से बुलाती है "भैया" और मैं उत्तर देता हूँ "नीना"

हाँ, तो नीना ने दबे पैरों आकर धीमे से कहा—भैया, तुम भी कितने बुरे हो। जब देखो, किताब के उन्हीं सड़े पन्नों में आँख गड़ाये रहते हो। यह भी कोई बात है। बाहर आओ।

यह आदेश कुछ योंही न था और शायद मैं इसकी अवहेलना भी न कर सकता। पर मैंने कहा—"नहीं नीना, तुम जाओ खेलो"। इस नहीं के भीतर कितनी उमस, कितना दैन्य, कितनी कठोरता, कितना अवसाद और कितनी निर्ममता छिपी हुई है, इसे आप योंही न समझेंगे। नीना को मैं कितना और कैसा प्यार करता हूँ, यह प्रश्न उतना आसान नहीं है, और न मैं छोटे बच्चे की तरह अपने दोनों हाथों को एक दूसरे से अलग दूर-दूर और दूर करके बताऊँगा ही—उपहास होगा। यह उदास सुख है, और इस उदास सुख को मैंने आज तक कभी मापने की कोशिश न की—अवकाश न था। यदि अवकाश मिलता भी और मैं चेष्टा भी करता तो कोई नहीं जानता, मैं अपने उस प्रयास में सफल भी होता या नहीं।

इतना आप जान लें कि उसकी माँग और इच्छा, मेरी माँग और इच्छा है। मैं चैन नहीं पा सकता, जब तक वह मेरी ओर प्यार और सन्तोष से देख न ले। मेरा मन न जाने कैसा होता रहता है—कुछ अनमना-सा हो पड़ता हूँ, बिलकुल अनायास और मूर्खतापूर्वक। एक तूफ़ान सा उठ पड़ता है जो मेरे किये शान्त नहीं होता।

पर मैं यह क्या कह ले गया। नीना जाने को हुई, पर जाने के पहले, उसकी दृष्टि कमरे के कोने में रखे हुए एक सङ्गमर्मर के हंस के जोड़े पर पड़ी। आज, जब मैं अपने को अधेड़ हो जाने से नहीं रोक सका हूँ और मेरी दाढ़ी भी आधी सफ़ेद और आधी काली हो पड़ी है, सोचता हूँ कि मैं वे अपने तुच्छ हंस नीना को क्यों नहीं दे सका, तो उनका अलग का इतिहास मेरे सामने आ खड़ा होता है। मेरा एक मित्र था—अभिन्न-मित्र हमारा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिवर्तन

डिप्टी-कलेक्टर होने पर—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

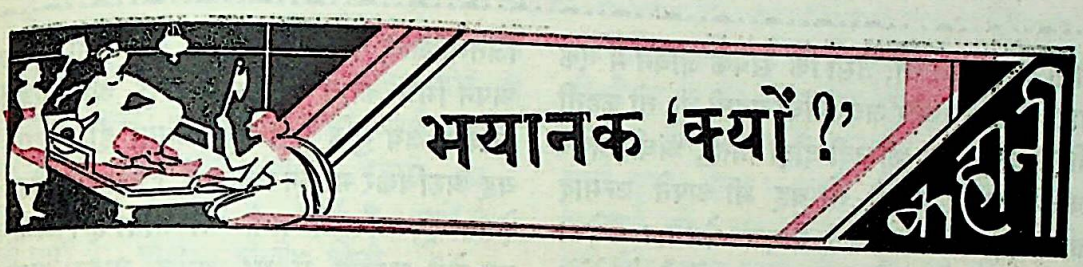

[श्री० 'अमृत']

हाँ बालज़क की एक कहानी थी। मैं उस वक़्त अपने में नहीं बालज़क में था। मैं अपने को क्यों भूल गया था, यही मेरी ग़लती थी।

नीना.....कितना प्यारा नाम है। नीना ने.....आप जानना चाहते हैं यह नीना आख़िर है कौन। नीना बारह साल की लड़की है। बड़ी भोली। बड़ी-बड़ी आँखें हैं। अपने नाम की ही तरह वह भी बहुत प्यारी है। आपने मेमना देखा है न ? हाँ, तो बस वैसी ही। उसे बात बनाना नहीं आता, इसलिए उसे सभ्य नहीं पुकारा जा सकता। वह बात में झूठी शकर नहीं घोल सकती, इसलिए वह मिष्टवादिनी भी नहीं पुकारी जा सकती। पर फिर भी...उसकी बात में अगर शकर नहीं तो कुछ ऐसा है जो उससे भी कहीं मीठा है। वह बरबस मन अपनी ओर खींच लेती है, क्योंकि उसमें कोई छिपाव-दुराव नहीं है। पड़ोसी की लड़की है। मैं भी सोलन आया हूँ, वह भी। कुछ महीने तब से बीत गये हैं। हम साथ-साथ रहे हैं। अपनापन आ गया है। वह मुझे स्नेह से पुकारती है "भैया" और मैं उत्तर देता हूँ "नीना" बस।

हाँ, तो नीना ने दबे पैरों आकर धीमे से पुकारा—भैया, तुम भी कितने बुरे हो। जब देखो, किताब के उन्हीं सड़े पन्नों में आँख गड़ाये रहते हो। यह भी कोई बात है। बाहर आओ।

यह आदेश कुछ योंही न था और शायद मैं कभी इसकी अवहेलना भी न कर सकता। पर मैंने कह दिया—"नहीं नीना, तुम जाओ खेलो"। इस नहीं के भीतर कितनी उमस, कितना दैन्य, कितनी कठोरता, कितना अवसाद और कितनी निर्ममता छिपी हुई है, इसे आप योंही न समझेंगे। नीना को मैं कितना और कैसा प्यार करता हूँ, यह प्रश्न उतना आसान नहीं है, और न मैं छोटे बच्चे की तरह अपने दोनों हाथों को एक दूसरे से अलग दूर-दूर और दूर करके बताऊँगा ही—उपहास होगा। यह उदास सुख है, और इस उदास सुख को मैंने आज तक कभी मापने की कोशिश न की—अवकाश न था। यदि अवकाश मिलता भी और मैं चेष्टा भी करता तो कोई नहीं जानता, मैं अपने उस प्रयास में सफल भी होता या नहीं।

इतना आप जान लें कि उसकी माँग और इच्छा, मेरी माँग और इच्छा है। मैं चैन नहीं पा सकता, जब तक वह मेरी ओर प्यार और सन्तोष से देख न ले। मेरा मन न जाने कैसा होता रहता है—कुछ अनमना-सा हो पड़ता हूँ, बिलकुल अनायास और मूर्खतापूर्वक। एक तूफ़ान सा उठ पड़ता है जो मेरे किये शान्त नहीं होता।

पर मैं यह क्या कह ले गया। नीना जाने को हुई, पर जाने के पहले, उसकी दृष्टि कमरे के कोने में रखे हुए एक सङ्गमर्मर के हंस के जोड़े पर पड़ी। आज, जब मैं अपने को अधेड़ हो जाने से नहीं रोक सका हूँ और मेरी दाढ़ी भी आधी सफ़ेद और आधी काली हो पड़ी है, सोचता हूँ कि मैं वे अपने तुच्छ हंस नीना को क्यों नहीं दे सका, तो उनका अलग का इतिहास मेरे सामने आ खड़ा होता है। मेरा एक मित्र था—अभिन्न-मित्र हमारा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोनों का यौवन था, जैसा कि सबके जीवन में एक बार आता है। और जब आँधी बहती थी, तो कहती थी प्रेम, बरसात की नदी दौड़ी जाती, अंधी, ठोकर खाती, गिरती पड़ती, तो वह भी अपने उन्माद का कारण गिनती प्रेम। बादल प्रेम का संदेसा लिए हुए सिर्फ़ हमारे लिए आकाश में दौड़ते होते। हमें जो कुछ भी दीख पड़ता, वह प्रेम का गीत गाता। जब दिन भर का थका-माँदा किसान अपनी बैलगाड़ी पर अपने थके-माँदे बैलों के थके कन्धों पर लौटता और अपने विस्मृत प्रिय के लिए विरहा अलापता तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते और हम अपने को और सबको भूल जाया करते। हम लोगों ने प्रेम करना शुरू किया। पर प्रेयसी एक थी। ज्यादा दिन बात न चल सकी और हमारी दोस्ती पर जङ्ग लगने लगा। मैं अपने उस मित्र की ओर से उदासीन हो ही रहा था, कि एक दिन वह आया और बोला—देखो, मैं जाता हूँ, तुम्हारा कौर नहीं छीन सकता। यदि पूनो तुम्हें कभी मिले और तुमसे सच्चा प्रेम कर सके, तो लो यह हंस का जोड़ा है। उसे यह मेरी धरोहर दोगे, तो शायद उसके किसी पुराने, बीत-चले कोने की याद दिला दोगे।

मेरे कान में यह बातें आईं, क्योंकि मैं बहरा नहीं हूँ। पर इसके पूर्व कि मैं या और कोई कुछ निर्णय कर सके, वह अपने भारी पैर उठाकर थप-थप करता हुआ चला गया। मैंने सुना उसके आखिरी शब्द रुँधे हुए गले से घुटकर निकले हैं, और मैंने देखा, उसकी आँखों में आँसू छलके आ रहे हैं।

...तो ये हंस उसकी धरोहर थे, जिसे पूनो को दे देने का आदेश था। समय की कसौटी ने परखा कि वह ओछी वेश्या है, जिसके लिए प्रेम का अर्थ चाँदी के दो निर्जीव सिक्कों में समा जाता है। आज मैं पूनो को भूल-सा गया हूँ और उसे और भी भूल जाने की कोशिश कर रहा हूँ। सोचता हूँ, उस काली, भयावनी तसवीर पर जितनी जल्द पर्दा पड़ जाय उतना ही अच्छा। अपने मित्र को न मैं भूल पाया हूँ, और एक दिन आवेगा जब मुझे उसे भूल जाना ही पड़ेगा, तो यह अरुचिकर मालूम पड़ता है। उसकी धरोहर को देखता हूँ, आँख में पानी आ जाता है। अभी तक वह मेरी सन्दूक़ में था, आज बाहर आया है कि शायद उस जोड़े को सदा आँख के सामने पाकर मैं कुछ ऊँचा हो सकूँ।

नीना ने उस जोड़े को हसरत की निगाह से देखा और पूछा—भैय्या, मैं इसे ले लूँ? अपने कमरे में हिफ़ाज़त के साथ रक्खूँगी, दोगे?

मैं इस 'दोगे?' का ठीक उत्तर न दे सका। हमारा प्यार, किसी की नहीं पूनों और कुछ एक भूली बात, सब एक भयावना पिशाच बन कर मेरी आँख के सामने नाचने लगा। पहले मैं सिहर उठा, फिर वह सिहरन पानी हो गई और मेरी आँखें उमड़ आईं। पर मैं नीना को आँसू नहीं दिखला सकता। मैंने उन्हें, कमीज़ की आस्तीन से दूसरी ओर मुँह करके पोंछ दिया। मैं जानता हूँ कि यह माँग नीना की है। पर उस वक्त उस पिशाच ने मेरी ओर से बोल दिया—'नहीं।' मैं सब कुछ जानकर भी इस 'नहीं' को निकल जाने से न रोक सका।

नीना चली गई। वह रोई नहीं, उसने मुझे कुछ बुरा-भला भी नहीं कहा। पर आज मुझे मालूम हो रहा है कि कुछ न कह सुनकर ही तो उसने वज्रपात किया है और सब कुछ कह डाला है। कुछ न कह कर ही उसने सब कुछ कह डाला है, और कुछ न समझकर भी मैं सब कुछ समझ रहा हूँ।

वह चली गई और मैं बैठा ही था। फिर मैं अपनी कहानी में तनिक भी आँख न डाल सका। किताब एक ओर थी, आँख कहीं और मन कहीं और। बार-बार मैं चेष्टा करूँ और बार-बार मैं खिंच जाऊँ उन हंस की ओर। किताब रखी रह जाय, एक बूँद ढुलक-ढुलक पड़े।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैं कब तक उस हालत में कमरे में बैठा रहा, मैं नहीं जानता। पर हाँ, जब भी मैं उस जोड़े की ओर आँख करूँ, वे मुझसे कहने लगते—क्यों, तुमने हमें न देकर एक...भोली...बच्ची का... दिल...दुखाया ? क्यों ?...क्यों ?...क्यों ?... बोली क्यों ?...बोली...बोली...बोली...।

इन आवाज़ों से कमरा गूँजने लगा। और जिस किसी को मैं देखता, वही मुझे उलाहना देता—ऐसा क्यों...सब मुझे चिल्ला-चिल्ला कर गाली देने लगीं—पापी...पापी...एक निरीह प्राणी की उससे भी निरीह इच्छा का घातक...निर्मम... पापी।

मेरा दम घुटने लगा। मुझे लगा कमरा धुएँ से भरा हुआ है। आज मुझे लग रहा है कि वह धुआँ 'क्यों···पापी···बोलो ?···' का था। मेरे ही पाप का प्रतिशोध। मुझे याद है, मैं भाग निकला था जहाँ मुझे ये क्रूर 'पापी... 'क्यों ?' राक्षस बनकर न घूर सकें। रास्ते में मेरे कान फट रहे थे···ओफ़, क्यों ?...क्यों ? मैं दौड़ा। दौड़ा-दौड़ा। दौड़ता गया। पर वे पिशाच मुझसे भी तेज़ मेरा पीछा कर रहे थे। और वे मुझे मुक्ति देना न चाहते थे। मैं दौड़ता ही गया। मालूम नहीं मैं कितना सफ़र दौड़ गया हूँगा। पर मैं लस्त होकर क़रीब के एक बाग़ में घास पर गिर पड़ा, और कुछ समय बेहोशी की हालत में पड़ा रहा, क्योंकि उस समय का मुझे कुछ भी याद नहीं है। जब उठा तब भी गले में फाँसी थी। कुछ समझ न पड़ता था। हँसते बेले की कली को मैंने देखा—आशा की एक चितवन थी। मेरे दिन बिगड़े थे। उसने भी अपनी सहज, स्वाभाविक, सरल हँसी छोड़ दी और मुझे चिढ़ाने की नीयत से ज़ोर से, आँख मटका कर, उँगलियाँ नचाकर हँस पड़ी। मैं रो पड़ा। फिर मैंने अपने चारों तरफ़ देखा। प्रकृति के हर एक पदार्थ-अपदार्थ को। सब की आँखें गुस्से से चढ़ी हुई थीं और लाल-लाल थीं, माथे पर शिकन थी, चेहरा तमतमाया हुआ। सबके मुँह से आग की बौछारें हो रही थीं और सब मुझपर थू-थू कर रहे थे। 'पाप' 'निर्मम' 'धिक्कार' आदि कुत्र शब्द कितनी बार मेरे कान में आये और गये, इसका लेखा मेरे पास नहीं है। पर मैं पसीना-पसीना हो रहा था, घबड़ा उठा था और मेरी शकल पागलों-सी हो रही थी। मुझे सिवाय 'क्यों ?' के और कुछ याद नहीं है।

मैं घर लौट कर आ गया हूँ। मेरा मस्तिष्क भी ख़ाली है और पेट भी ख़ाली है, पर भूख नहीं मालूम पड़ रही है। मैं खाने पर बैठा हूँ। फिर 'क्यों ?' का तूफ़ान उठ रहा है और मैं दो एक कौर तोड़ने के बाद ही कमरे की ओर बेतहाशा भागता हूँ। मेरी माँ शायद मुझे रोकती ही रह जाती है—तूने आज क्या खाया रे ? मुझे लगता है, कोई उसका जवाब दे रहा है—'बहुत खा लिया है, अब न खायेगा।'

'क्यों-क्यों ?···क्यों ?···क्यों ?···।' तूफ़ान। अर्द्ध-विच्छिन्नावस्था। मेरा हाथ बढ़ा वेग से। हंस मेरे हाथ में उड़े। और ऊपर से उठकर गिरे तड़ाक् से और चकनाचूर हो गये।

अब 'क्यों ?' का तूफ़ान बन्द हो गया। मेरा घुटा दम खुला और मुझे योंही हँसी आ गई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कवि का स्वप्न

यामिनी नीरव है। नील नीरव गगन में नक्षत्रगण रुपहले नीहार वन में मन्दार पुष्प से जगमगा कर मधुर-मधुर सौरभ-सुषमा बरसा रहे हैं। प्रभंजन मर्मर गीत गाता हुआ बह रहा है। छाया सघन वृक्षों या प्राचीर तले विश्राम कर रही है।

कवि की स्वप्निल पलकें सरसिज सी मुँदी जा रही हैं। मधुर सुनहले स्वप्न रिम-झिम का मधुर शब्द करते हुए प्रवालों से पलकों पर बरस रहे हैं। गुलाब की पंखुरियों से कवि के गुलाबी सुकुमार अधरों पर इस गीत की गीति ध्वनि आनन्दमयी लहर सी लहरा रही है :—

तुम हिम अधरों से झुक कर
भर देना चुम्बन मृदुतर
अयि प्राण गगन जीवन में
तुम मधुर ज्योति बन आना

बादल भीषण गर्जन कर अट्टहास कर उठे। कवि ने देखा, कक्ष का दीपक बुझ चुका है, केवल दीपक की अभिलाषाएँ धूम बनकर अदृष्ट को जा रही हैं।

सरिता के उस पार एक समाधि पर एक दीपक झलमला कर जल रहा है। कवि को कोई भूली बात याद आ गई। उसकी स्वप्निल पलकों के सम्मुख अङ्गूरी सारी वाली रजनी गन्धा सी रमणीक, तुहिन कण सी मधुर एक सुषमा आकर अश्रु वर्षण करने लगी। कवि कम्पित कंठ से अस्फुट स्वर में बोला उठा—"मेरे मानस मन्दिर की सौन्दर्य-मयी प्रतिमे इन्दि तुम ?" कहकर मूर्छित भी हो गया। नक्षत्र रजनी को सारी की आँचल से ताकने लगे उस विहग से कवि को। रजनी नीरव होकर अश्रु बरसाने लगी।

कवि की खुली आँखें कोई मधुर स्वप्न देखने में तल्लीन थीं। हृदय स्पन्दनहीन तथा नीरव था। समाधि पर का दीपक झलमला कर बुझ चुका था। जूही की सुरभित सुमन-पंखुरियाँ झर-झर कर समाधि पर बरस पड़ीं और कवि की कल्पना सौरभ के साथ-साथ समाधि पर उड़ने लगी।

[प्रो० रवीन्द्रकुमार, एम० ए०]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्री० रामस्वरूप उपाध्याय

स्त्रियाँ क्यों न सोचें?

वर्तमान समय भारतीय नारी के जीवन में संक्रान्ति का काल है। समाज अपनी प्राचीनता को छोड़ नवीनता की ओर अग्रसर हो रहा है। उसका प्राचीन रूढ़ियों पर स्थित जीवन का ढर्रा धीरे-धीरे बदल रहा है और इसके साथ ही स्त्रियों के जीवन में भी जाग्रति आ रही है। शताब्दियों पुराने आदर्शों पर स्थित समाज, जिसके निर्माण करने में मुख्यतः पुरुषों का ही हाथ था, अब आधुनिक विचारों के धक्के खाकर नींव तक हिल उठा है। वह आदर्श और विचार जिन्हें हम शताब्दियों से मानते चले आये थे अब हमें अपूर्ण जान पड़ते हैं और कभी तो अपनी प्रगति के अवरोधक।

इस जागृति का मुख्य कारण हमारा पश्चिमी सभ्यता के संसर्ग में आना है। प्रथम जब हम इस सभ्यता के संसर्ग में आये तो यह हमें भयानक लगी और इसी कारण एक संघर्ष पैदा हो गया जो १८५७ के विप्लव के रूप में अवतरित हुआ। इसके पश्चात् हमारा पश्चिमी सभ्यता से कुछ निकट का सम्बन्ध हुआ और हमने वहाँ की बहुत सी बातें अपनाईं। यहाँ तक कि हमारी वर्तमान राजनैतिक हलचल भी वहाँ के जन-सत्तात्मक विचारों तथा राष्ट्रीयता के कारण उपजी है। परन्तु वर्तमान युग में अब फिर पश्चिमी विचारों के प्रति एक प्रतिक्रिया की भावना उपजी है, जिसे हम गाँधीवाद के रूप में देख रहे हैं।

इन सब अवस्थाओं और विचारों ने हमारे समाज पर गहरी छाप डाली। हमने अपनी अवस्था की वहाँ की दशा से तुलना की। वहाँ को स्वतंत्रता, समानता ने हमारा ध्यान आकर्षित किया। और उन्हें हमने अपने जीवन में स्थान देने का प्रयत्न किया। भारतीय नारी भी इस लहर के साथ-साथ बहने लगी। कुछ अग्रगण्य स्त्रियों ने पश्चिमी शिक्षा और विचारों को पाकर दूसरों में फैलाया। परन्तु इस क्षेत्र में स्त्रियों का आगमन बहुत देर से हुआ।

भारतीय नारी की अङ्गरेज़ी के आगमन-काल से पहले क्या स्थिति थी, यह किसी से छुपी नहीं है। वह सन्तानोत्पत्ति का यन्त्र तथा पुरुष की परछाहीं से अधिक कुछ न थी। यहाँ तक कि पति की मृत्यु हो जाने पर उन्हें जीवित रहने का भी अधिकार नहीं रहता था। यह दशा उस समय एक आदर्श अवस्था के रूप में देखी जाती थी, और पतिपरायणा साध्वी स्त्री उस समय समाज की एक उच्चतम विभूति मानी जाती थी। पर हमने जब इस पर से भावना का आवरण उठा कर देखा तो हमें वास्तविकता का ज्ञान हो गया। यह कहना ठीक ही है कि पश्चिम के विचारों ने आकर स्त्री की अवस्था में परिवर्तन शुरू कर दिये। सबसे प्रथम लार्ड विलियम बैंटिक ने सती प्रथा क़ानूनन बन्द करा दी। यह पश्चिमी सभ्यता का सीधा प्रभाव हुआ। परन्तु इसका प्रभाव दूसरे रूप में भी पहुँचा। पुरुषों ने जब पश्चिमी शिक्षा ग्रहण की तथा वहाँ के आदर्श अपनाये तब उन्होंने इन्हें अपने सामाजिक जीवन में भी ढालने का प्रयत्न किया। चाहे प्राचीन काल में पुरुषों के गढ़े हुये नियमों के ही कारण स्त्री को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्याय और अत्याचार सहना पड़ता था, परन्तु आधुनिक युग में तो स्त्रियों की जागृति का अधिक श्रेय पुरुषों को ही है। सबसे पहले उन्होंने ही स्त्रियों के ऊपर होने वाले अन्यायों पर जनता का ध्यान खींचा तथा विधवाओं के पुनर्विवाह के लिये प्रयत्न किया। राजा राममोहन राय तथा स्वामी दयानन्द ऐसे ही अग्रगण्य व्यक्तियों में से थे।

इसके उपरांत जिस तत्व ने स्त्रियों की जागृति में भारी काम किया वह पुरुषों की पश्चिमी ढंग की शिक्षा थी। इसका प्रभाव धीरे-धीरे स्त्रियों पर भी पड़ने लगा। पढ़े-लिखे लड़के अपढ़ स्त्रियों से विवाह करके संतुष्ट न होते थे और इसलिए शिक्षित लड़कियों की माँग बढ़ने लगी। आरंभ में स्त्री शिक्षा इसलिए नहीं शुरू हुई थी कि स्त्रियाँ समझदार बन सकें, या अपने स्वत्वों को समझें, वरन् इसलिए कि उनके विवाह में आसानी हो। पर इस शिक्षा के बढ़ने पर कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी निकलीं जिनकी ज्ञान-पिपासा बढ़ी और जिन्होंने अपने स्वत्वों को जानना चाहा। जब उन्होंने खुली आँखों से समाज को देखा तो उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो इस समाज में उनके लिए कोई स्वतंत्र स्थान ही नहीं है। ऐसी स्त्रियों ने अपने स्वत्वों की चर्चा चलाई, परन्तु वह इस क्षेत्र में पुरुषों से ५० वर्ष पीछे आई तथा वह अपने स्वत्वों की चर्चा चलाने योग्य भी इसी कारण बन सकी कि पुरुषों को शिक्षित स्त्री की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस समय भी स्त्रियों के स्वत्वों के पोषक तथा उनकी जागृति के प्रेरक पुरुष ही हैं। कौन स्त्री, श्रीयुत कर्वे की, सर हरीसिंह गौड़ की तथा ऐसी ही दूसरे स्त्री-हलचल के नेताओं की सेवाओं के सामने नतमस्तक न होगी? स्त्रियों का तो इस क्षेत्र में आना हाल की बात है, और इसे एक युग भी न हुआ होगा। परन्तु चाहे स्त्रियाँ इस क्षेत्र में आ गई हों, परन्तु न तो उनकी कोई अपनी विचार-धारा है और न कोई विशेष कार्यक्रम ही है। अभी तक की विचार-धारा तथा कार्यक्रम तो पुरुषों की देन है।

परन्तु कब तक स्त्री दूसरों की पूँजी से, दूसरों की दया और सहायता के बल पर अपना व्यापार चलायेगी? यहाँ कोई वर्ग-विग्रह की ओर संकेत करने की मंशा नहीं है और न यही है कि जिस समाज को स्वतः स्त्री अपने अनुकूल समझे उसके निर्माण में पुरुष का सहयोग प्राप्त न करे। परन्तु यदि वास्तव में उसे किसी ऐसे समाज की रचना करनी है जिसमें वह पुरुष की प्रगति के साथ अपनी प्रगति भी साध सके, तब उसे भी पुरुष के साथ ऐसे समाज के निर्माण करने वाले सिद्धांतों की खोज करनी पड़ेगी। परन्तु अभी तक स्त्रियाँ अपनी भीरु वृत्ति को नहीं छोड़ सकी हैं, वह नेता नहीं बन सकी हैं, पीछे चलने वाली परछाहीं के समान ही रही हैं। यदि कमला देवी चट्टोपाध्याय या सरोजिनी नायडू जैसी एक-दो स्त्रियाँ नेतृत्व ग्रहण कर सकी हैं तो इसका कारण यह है कि उनकी विद्वत्ता और क्षमता साधारण स्त्रियों को नहीं है। और न उनका जीवन ही भारतीय नारी के जीवन से कोई सम्बन्ध रखता है। वह तो भारतीय स्त्री के रूप में अमेरिकन या यूरोपियन पढ़ी-लिखी महिला की एक प्रतिलिपि हैं।

साधारण पढ़ी-लिखी स्त्रियों में अपने भविष्य के विषय में विचार करने की कितनी क्षमता है, यह लेखक का अनेक बार का अनुभव है। चाहे वह किन्हीं भी कारणों से अपने भविष्य के निर्माण के विषय में न सोचना चाहती हों, परन्तु इसमें तो सन्देह नहीं कि भारतीय नारी ने अपने भविष्य के विषय में नहीं के बराबर सोचा है। और यदि कुछ सोचा भी होगा तो उसने कभी प्रकट करने का साहस नहीं दिखाया। इस विषय में एक-दो उदाहरण दे देने अनुचित न होंगे। १९३६ में दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में इस विषय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर एक विवाद चल रहा था कि शिक्षित स्त्रियाँ सिनेमा-पात्री बनें या नहीं। यह विवाद पुरुषों में ही था। एक पक्ष इस बात का समर्थन करता था कि सिनेमा में काम करने में कोई दोष नहीं है, और दूसरा पक्ष इसका विरोध करता था। इस विरोध का मुख्य कारण यह था कि सिनेमा कम्पनी के दूषित वातावरण में स्त्रियाँ अपने सतीत्व को नहीं बचा सकेंगी, जो कि भारतीय नारी के जीवन का अनमोल रत्न है। इस सम्बन्ध में लेखक ने भी लिखा और इस बात का प्रतिपादन किया कि यह बात केवल पुरुषों के निश्चय करने की नहीं, है, क्योंकि वास्तव में सारा विवाद तो इस प्रश्न पर केंद्रित था, कि 'स्त्रियों का समाज में क्या स्थान हो।' और इस प्रश्न के निकास का केवल पुरुषों को क्या अधिकार है? इसके साथ ही लेखक ने महिलाओं, को इस विषय पर अपने विचार प्रकाशित कराने की सलाह दी। परन्तु इस विषय पर एक भी महिला ने अपने विचार भेजने की कृपा नहीं की। और बाद में जब उस पत्र के संपादक ने इस विवाद को समाप्त करते हुए अग्रलेख लिखा तब उन्होंने स्त्रियों की इस अभिरुचि पर कटाक्ष किया। इस सब पर से जो निष्कर्ष निकलता है वह यह है कि प्रथम तो स्त्रियों ने अपने प्रश्नों के विषय में भली प्रकार सोचा नहीं, और यदि कुछ सोचा भी है तो उन्हें समाज में आगे बढ़ कर कहने में संकोच होता है। अपने प्रश्नों पर निर्भीकता से विचार करने में सङ्कोच का सामना करते हुए तो लेखक ने ऐसी स्त्रियों को देखा है, जो बड़ी-बड़ी संस्थाओं का सञ्चालन करती हैं।

साधारणतः स्त्री सम्पत्ति, क़ानूनी अधिकार और अब तो जीविका के विषय में कभी-कभी कुछ कहने का साहस कर जाती है। परन्तु सबसे अधिक सङ्कोच तो उन्हें विवाह तथा जातीय सम्बन्ध के विषय में विचार प्रगट करने में होता है। आज तक लेखक ने एक भी स्त्री का लिखा हुआ कोई ऐसा लेख नहीं पढ़ा जिसमें विवाह पर स्वतंत्रता से विचार प्रकट किये गये हों। एक बार एक लेख पढ़ा भी था, परन्तु बाद में पता लगा कि यह कि वह किसी स्त्री नामधारी पुरुष का लिखा हुआ ही था। परन्तु शिक्षित स्त्री सामाजिक जीवन में विवाह का महत्व जाने बिना अपने जीवन की स्थिति नहीं समझ सकेगी, क्योंकि मुख्यतः हमारे समाज की नींव तो विवाह संस्था पर ही पड़ी है। इसी संस्था के द्वारा उन्हें सम्पत्ति के रूप में पुरुष को सौंप दिया जाता है और फिर उसका स्वतंत्र व्यक्ति का रूप लुप्त हो जाता है। इसी संस्था द्वारा उसे सिखाया जाता है कि पुरुष से अलग उसका मूल्य शून्य के समान है। इसी संस्था के कारण उसे उतने पर ही सन्तोष कर लेना पड़ता है जो उसे मिल जाय। इसी संस्था द्वारा उसे सिखाया जाता है कि सतीत्व उसके जीवन का अनमोल रत्न है और जीवन देकर भी इसकी रक्षा करनी चाहिए।

अब शिक्षित स्त्री इस विवाह संस्था को किस दृष्टि से देखती है। पुरुष (लेखक) कैसे कह सकता है? कई बार उनके जानने के लिए प्रयत्न किया भी गया, परन्तु इसमें सफलता मिलना दुष्कर था। हाँ, अशिक्षित स्त्रियों का मत इस विषय में मिल सकता है, परन्तु उनका मत तो वही है जो पुरुषों का। उनके विचार से तो विवाह करना स्त्री का धर्म है और उन्हें विवाह में कुछ ख़राबी भी नहीं दिखाई देती। परन्तु अशिक्षित स्त्रियों के इस मत का कितना मूल्य है? यह मत तो शताब्दियों से उन्हें पुरुषों द्वारा सिखाया गया है। पुरुषों का आधुनिक विवाह के विषय में क्या मत है, यह तो हमें अनेक जगह जानने को मिल जायगा, इसलिए उसके ऊपर कुछ कहने की तो कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

शिक्षित स्त्रियों का विवाह के विषय में क्या मत है, यह तो लेखक नहीं जानता, परन्तु इतना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवश्य जानता है कि उनके मत में तथा साधारण स्त्रियों के मत में कोई भारी अन्तर न होगा। और इसका मुख्य कारण यह है कि न तो साधारण स्त्री ही विवाह के ऊपर कुछ विचार करती है और न शिक्षित स्त्री ही। अब भी समस्त भारतीय स्त्रियों में से ९९·९ प्रतिशत स्त्रियाँ विवाह को जीवन का लक्ष्य समझती हैं। और स्त्रियों की शिक्षा में भी अभी तक कोई ऐसा परिवर्तन नहीं हुआ जिससे वह विवाह के अतिरिक्त किसी दूसरी बात को जीविका का साधन बना सकें। अर्थस्वातन्त्र्य की भावना स्त्री में जगी आवश्य है, परन्तु उसका श्रीगणेश हुये अभी अधिक वर्ष नहीं हुये।

यह ठीक है कि प्रत्येक समाज में अधिकतर स्त्रियों को विवाह कर ही जीवन बिताना पड़ेगा, फिर चाहे उस समाज में विवाह का कोई भी रूप क्यों न हो। माता बनने के कार्य को तो हम स्त्री से अलग नहीं कर सकते, और इसके लिये किसी न किसी रूप में विवाह आवश्यक है, चाहे वह धार्मिक विवाह हो या रूस जैसा 'रजिस्टर्ड' विवाह। स्त्री-पुरुष का यह सम्बन्ध तो हर हालत में ही रहेगा। केवल प्रश्न यह है कि समाज में इसका क्या रूप हो? जातीय सम्बन्ध को नियमित बना देना तथा सन्तान के लालन-पालन के लिये उपयोगी हो सकना यही विवाह के दो मुख्य काम हैं। परन्तु धार्मिक विवाह के विरुद्ध भी बहुत आवाज़ें उठ रही हैं और सदा से उठती आई हैं। स्त्री की दृष्टि में तो पुरुष की अपेक्षा इस विवाह में और भी कमज़ोरियाँ हो सकती हैं। विवाहित स्त्री का कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं होता, एक तरह से वह पुरुष की सम्पत्ति होती है। अर्थ-विभाजन में उसके साथ अन्याय होता है। उसके कोई क़ानूनी स्वत्व नहीं, और इसके अतिरिक्त कुछ मनोविज्ञान के विद्यार्थियों का विचार है कि आजकल का विवाह कोई स्वास्थ्यकर सम्बन्ध नहीं है। कुछ भी हो, परन्तु ऊपर के कथन में कहाँ तक सत्यता है, यह सब स्त्री को अपनी आँखों से देखना होगा, पुरुष की आँखों से नहीं। आजकल की व्यवस्था पुरुष के तो अनुकूल ही है और उसी के द्वारा गढ़ी गई है। अब स्त्री को स्वतंत्र रूप से विचार कर देखना होगा कि यह उसके अनुकूल है या नहीं।

इन बातों पर स्वतंत्र रूप से विचार करने में भारी कठिनता होगी। स्त्री का सङ्कोच, जिसे हमने गुण मान लिया है, उसे ऐसा न करने देगा। फिर वह हमारे वर्तमान नैतिक बन्धनों के तारों को कहाँ तक सुलझायेगी और समझेगी कि वास्तव में पाप-पुण्य की खरी परिभाषा क्या है? क्या वह अपने अनमोल रत्न सतीत्व को किसी ऐसी कसौटी पर परख सकेगी, जो यह बता सके कि वास्तव में यह अनमोल रत्न ही है, या पुरुषों द्वारा रचा हुआ एक भ्रमजाल? ऐसे ही अनेक प्रश्नों पर उसे अपनी बुद्धि की विषमता के उजाले में विचार करना होगा।

इन सब तथा ऐसे ही अनेक प्रश्नों का उत्तर पा लेना स्त्रियों के लिये आवश्यक है। क्योंकि जब नये समाज की नींव रखी जायगी और उस समय वह विचारने बैठेंगी तब तो यह आग लगने पर कुआँ खोदने के समान होगा। उस समय तो जो विचार-धारा तैयार होगी उसी पर कार्यक्रम बनाया जायगा और उसी के अनुसार समाज का निर्माण होगा। क्या सदा के संकोच और भीरुता के कारण इस बार भी स्त्री, पुरुष के साथ एक ऐसे समाज का निर्माण करने में सहयोग न देगी जिसमें दोनों का विकास हो सके, और दोनों सुखी होकर उस समाज रूपी नौका को अनंत काल तक खे सकें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवयुवतियों और नवयुवकों के विवाह-सम्बन्धी कर्तव्य

[श्री० आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव]

भारतवर्ष की नवयुवतियाँ और नवयुवक राजनैतिक कार्य में अधिक भाग लेना चाहते हैं और सामाजिक कार्यों में कम। क्या इसका यह कारण है कि राजनैतिक क्षेत्र में यश प्राप्त करने की अधिक सम्भावना रहती है और सामाजिक क्षेत्र में कम। बहुधा समाज-सेवा मौन सेवा हुआ करती है, क्या इसीलिये हमारी नवयुवतियाँ और हमारे नवयुवक समाज-सेवा से विरक्त रहते हैं? कारण चाहे जो हो, हमें तो उपरोक्त कारण ही सत्य जान पड़ता है। हम आज अपनी नवयुवतियों और अपने नवयुवकों के विवाह-सम्बन्धी सामाजिक कर्तव्यों के बारे में कह कर उनसे समाज-सेवा में अधिक भाग लेने का अनुरोध करेंगे।

पहले हम नवयुवतियों के कर्तव्य के बारे में विचार करेंगे। हमारा पहला ध्येय है कि भारत की प्रत्येक नवयुवती सुशिक्षित हो। पर शिक्षा के बाद वे क्या करती हैं, यह देखना चाहिये। हमारा जहाँ तक अनुभव है, शिक्षा के पश्चात् भी हमारी नवयुवतियों में सच्ची सेवा का भाव नहीं रहता। वे लोग अधिकतर विलासिता की ओर झुकती हैं। बढ़िया भोजन (चाहे वह हानिकर ही क्यों न हो), अप-टु-डेट पहनाव (चाहे वह उनकी हैसियत से अधिक ही हो), अपनी सङ्गिनियों के साथ मनोविनोद, सिनेमा देखना आदि उनको प्रिय होते हैं। संयत होने पर ये बातें बुरी नहीं हैं, परन्तु उनके साथ जीवन में कोई ऊँचा आदर्श होना चाहिये। इन बातों के अतिरिक्त वे व्याख्यान देने की, लेखादि लिखने की रुचि रखती हैं। कहना नहीं होगा कि ये दोनों बातें भी समाज की सच्ची सेवाएँ नहीं हैं। इनसे कुछ समाज-सेवा होती भी है, तो वह सेवा के उद्देश्य से नहीं की जाती, वरन् नाम कमाने के उद्देश्य से की जाती है। हम जहाँ तक देखते हैं, यदि नवयुवती इण्टरमीजियट पास हुई तो वह बी० ए० या एम० ए० पति चाहती है और बी० ए० या एम० ए० पास हुई तो उसे आई० सी० एस० से कम वर पसन्द नहीं आता। यह भी कोई बुरी बात नहीं है। यदि वे बहिनें जो धनहीन हैं, जिनकी आय पर्याप्त नहीं है, ऐसा चाहें तो कोई हानि नहीं है, परन्तु वे बहिनें जो धनवान घरानों की हैं, जिन्हें अपने पिता के घर से विवाह में पर्याप्त धन मिलने वाला है, यदि ऐसा न चाहें तो अच्छा है। उनके लिये हम विशेष मार्ग दिखलाना चाहते हैं, जो आशा है, उन्हें भी पसन्द आवेगा।

बड़े या धनवान घरानों की सुशिक्षित या सुशिक्षा प्राप्त करती हुई बहिनों से हमारा अनुरोध है कि वे धनवान घरानों के नवयुवकों को छोड़ कर ग़रीब घरानों के नवयुवकों से विवाह करें। हम यह नहीं कहते कि वे कुरूप और ग़रीब मूर्खों के साथ विवाह करें! हमारा कहना यह है कि कालिज-जीवन में ही अत्यन्त तीक्ष्ण-बुद्धि एवं सुन्दर विद्यार्थी चुन के उससे विवाह करें और उसे आगे पढ़ा लें। उसे आई० सी० एस०, आई० एम० एस० या चाहे जो बना लें या वैसा विद्यार्थी चुन कर उसे शिक्षा दिला कर तब उससे विवाह करलें। हमें ज्ञात है कि कुछ विचारशील धनी पिताओं ने ऐसा किया है। उन्होंने ग़रीब घराने के तीक्ष्ण-बुद्धि सुन्दर विद्यार्थियों को चुना है। पर हम यह अनुरोध करेंगे कि हमारी सभी सम्पन्न शिक्षार्थिनियाँ अपने पिताओं से ऐसा ही करने का हठ करें, वे धनवान घरानों के लड़कों से विवाह करने से दृढ़तापूर्वक इनकार कर दें। ऐसा करने से ग़रीब किन्तु योग्य विद्यार्थियों का भला होगा, अनेक व्यक्ति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी वर्तमान या भावी पत्नियों द्वारा उन्नति के मार्ग पर ले जाये जायँगे, धन धनवानों में ही न रह कर ग़रीबों में जायगा और बहुत से ग़रीब अधिक धनार्जन के योग्य बनेंगे या यों कहिये कि अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार उचित धन-वितरण होगा—समाज में समता उत्पन्न होगी। जो ग़रीब से अमीर होते हैं उनको ग़रीबों के प्रति सहानुभूति होती है, वे दीनों की सेवा करते हैं। ऐसे विवाह होने से सम्भव है, ऐसे दम्पति पैदा हों, जो आगे चल कर ग़रीबों की सेवा करें, ऐश्वर्य का भोग करते हुये भी दीन जनों पर कृपा रक्खें।

इसके विपरीत जब अमीर घरानों की लड़कियाँ अमीर ही घराने के लड़कों के साथ विवाह करती हैं, तो उनको अधिकतर घमण्डी और विलासी पति मिलता है और दम्पति का जीवन विलास में ही बीतता है, धन अमीरों में ही रह जाता है। उनके पतियों को उनके धन की परवाह न होने से, उससे उनका कोई हित नहीं होता और धन का अपव्यय मात्र होता है।

हमारी धनिक घरानों की बहनें कह सकती हैं कि कदाचित् उनके पिता इससे सहमत न हों कि वे ग़रीबों के साथ ब्याह करें। हम कहते हैं कि वे सहमत होंगे क्यों नहीं, केवल हमारी बहनों में सत्य आग्रह का भाव होना चाहिये, समाज-सेवा की लगन होनी चाहिये।

हमारा दूसरा अनुरोध अपनी ग़रीब और सम्पन्न दोनों प्रकार की बहनों से यह है कि उनको चाहे क्वाँरी रह जाना पड़े, परन्तु वे उनसे विवाह न करें जो उनके पिताओं से दहेज माँगे। यदि इस बात में उन्हें अपने पिताओं के विरुद्ध भी चलना पड़े तो चलें।

हमने 'सरस्वती' के किसी पिछले अङ्क में एक घटना पढ़ी थी। एक बहन की एक साड़ी में स्याही का छोटा सा धब्बा पड़ गया था। उनके पास दो साड़ियाँ और थीं, परन्तु वह उन्हें पिछले दिनों पहन कर गई थीं, अतएव उन्हें पहनना नहीं चाहती थीं। बस उन्होंने कालिज जाने से इनकार कर दिया। उनकी माता जी उनसे अनुरोध करके हार गईं, परन्तु वे नई साड़ी न मिलने से कालिज नहीं गईं। जब ऐसी छोटी सी बात पर माता-पिता की आज्ञा का उल्लङ्घन हो सकता है तो विवाह के मामले में आज्ञा भङ्ग करने में कौन हानि है? जहाँ आज्ञा भङ्ग नहीं करनी चाहिये वहाँ वे करती हैं और जहाँ करनी चाहिये वहाँ नहीं। विवाह के मामले में ऐसा करना समाज-सेवा एवं गौरव का विषय है।

उनके इस हठ के कारण विवाह न हो तो भी कोई हानि नहीं है। विवाह करने से जन्म भर अविवाहित रह कर किसी ऊँचे उद्देश्य के लिये काम करना बहुत अच्छा है। यदि नवयुवतियाँ प्रण करलें कि चाहे उनका विवाह न हो, वे दहेज माँगने वालों या उनके लड़कों के साथ विवाह न करेंगी तो दहेज की प्रथा टूट जावेगी। इस प्रथा से कितनी हानि है, यह बताने की आवश्यकता नहीं। न जाने कितनी स्नेहलताएँ इस प्रथा पर बलिदान हो चुकी और हो रही हैं। इस प्रथा के कारण भारत-वासियों का गृहस्थ-जीवन स्मशान हो रहा है। इसका तोड़ना नवयुवतियों से ही हो सकता है। नवयुवतियों—विशेषकर शिक्षित नवयुवतियों का दहेज माँगने वालों के विरुद्ध प्रण बहुत कारगर होगा। शीघ्र ही शिक्षित नवयुवक बिना दहेज माँगे विवाह करने पर विवश होंगे और उनके दहेज माँगने वाले अभिभावक लज्जावनत होंगे।

हमारी ग़रीब शिक्षित नवयुवतियों को स्नेहलता की भाँति मरने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें केवल विवाह करने से इनकार करके किसी कार्य में लग कर कमाने का भार लेना चाहिये और अपने पिताओं को अपने भार से मुक्त कर देना चाहिये। वे सम्भव है, थोड़ा ही कमा सकें, पर जितना कमावें उतने ही में अपनी गुज़र करें। विलासिता से दूर रहें, मितव्ययिता से काम लें। उनकी यह दृढ़ता समाज में जादू का सा परिवर्तन ला देगी, वह कुछ का कुछ हो जावेगा।

अब लीजिये नवयुवकों को। शिक्षित होने के पश्चात् उन्हें यश-प्राप्ति की आकांक्षा होती है। इस आकांक्षा को पूर्ण करने के लिये वे राजनैतिक क्षेत्र में काम करना चाहते हैं। इस कार्य को वे अपने कालिज के जीवन में हड़ताल आदि से आरम्भ कर चुकते हैं। वे सामाजिक क्षेत्र में काम करने की कम इच्छा करते हैं, या बिलकुल नहीं। वे देश-सेवा को महान कार्य समझ कर उसको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो करना चाहते हैं, पर समाज-सेवा की ओर कम ध्यान देते हैं। यदि वे समाज-सेवा की ओर ध्यान देते तो दहेज़ की प्रथा भारत में अब तक बनी न रहती। जब उनके पिता दहेज़ माँगते हैं, तब वे चुपचाप देखा करते हैं। ग़रीब कन्यायें अविवाहित रह जाती हैं, उन्हें दुष्ट लोग बहका ले जाते हैं, पर उनके कानों में जूँ तक नहीं रेंगती। क्या कारण है कि वे समाज-सेवा से उदासीन रहते हैं? क्या वे समाज-सेवा को छोटा कार्य समझते हैं और देश-सेवा को बड़ा कार्य। यदि वे ऐसा समझते हैं तो उनकी भूल है। जिनसे समाज-सेवा नहीं हो सकती, वे देश-सेवा क्या करेंगे? वे देश-सेवा का ढोंग रचकर नाम प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे और कुछ नहीं।

नवयुवतियों के समान हमारे नवयुवकों का भी कर्त्तव्य निश्चित है। हमारे अमीर घराने के शिक्षित नवयुवकों का पहला कर्तव्य है कि ग़रीब कन्याओं से विवाह करके उनकी रक्षा करें। वे कन्यायें शिक्षित न हों तो विवाह के बाद ऊँची से ऊँची शिक्षा दें। सच्ची सेवा का अर्थ है एक या अनेक व्यक्तियों को उन्नति के पथ पर चलाना। एक कन्या को, जो अल्प शिक्षित है, अर्धांगनी बना कर उसको उच्च शिक्षा देना सच्ची सेवा का कार्य है और संसार के किसी कार्य से भी कम नहीं। यदि वह अल्प-शिक्षित कन्या या अशिक्षित कन्या ही बहुत ग़रीब है तो बहुत अच्छा है। उन्हें चाहिये कि वे अपने पिता के धनी परिवार में ब्याह करके धन प्राप्त करने के विचार के विरुद्ध सत्याग्रह कर दें।

हमारे नवयुवक धनिक परिवार में विवाह करके विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने के और कुछ नहीं करते हैं। विलासी होकर वे देश-सेवा का ढोंग रचते हैं और नाम कमाने का प्रयत्न करते हैं। उनकी स्थिति विषयक झूठे विचार, और धन-प्राप्ति का लोभ उन्हें समाज-सेवा से पराङ्मुख रखता है।

हम यह नहीं कहते कि वे कुरूप तथा गँवार लड़की से विवाह कर लें। वे कन्या सुन्दर और तीक्ष्ण बुद्धि की चुनें, पर हो वह ग़रीब घराने की। कहना न होगा कि ग़रीब घरानों में ऐसी कन्याओं की कमी नहीं है। इससे एक ग़रीब कन्या का भला होगा, धन अमीर से ग़रीब के यहाँ जायगा अर्थात् समाज में समता उत्पन्न होगी।

सुना है कि आजकल के नवयुवक सत्याग्रह और त्याग करने को उत्सुक रहते हैं—कम से कम वे कहते ऐसा ही हैं। यदि वे सत्याग्रह करने के लिये तैय्यार हैं तो वे तब क्यों नहीं सत्याग्रह करते जब उनके पिता उनके विवाह में दहेज़ माँगते हैं? वे तब त्याग क्यों नहीं करते जब उनके पिता विवाह की आड़ में उन्हें बेचते हैं? वे इस गृहस्थ-जीवन-संहारिनी दहेज़-प्रथा के विरुद्ध सत्याग्रह क्यों नहीं करते? स्पष्ट है कि ऐसा करने से जीवन सङ्कट में पड़ने की सम्भावना है, जो वे नहीं चाहते। यदि उनमें कुछ भी साहस होता और ग़रीब कन्याओं पर तनिक भी दया होती तो भारत में यह प्रथा आज तक न रह जाती। यह जो सच्ची समाज-सेवा और वास्तविक देश-सेवा है उससे वे दूर भागते हैं।

यदि हमारे नवयुवक अपने पिताओं से स्पष्ट कहें कि हम ग़रीब घरानों की कन्याओं से विवाह करेंगे और विवाह में दहेज़ कदापि न लेंगे, तो उनके पिता क्या करेंगे? यही करेंगे न कि उन्हें घर से निकाल देंगे। इसके लिये उन्हें तैयार रहना चाहिये। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उनकी सेवा करने की उत्सुकता ढोंग के सिवाय और कुछ नहीं है। उन्हें अपने ऊपर निर्भर होना चाहिये और पिताओं को दिखा देना चाहिये कि समाज की ग़रीब कन्याओं का दुख दूर करके चैन लेंगे।

समाज की यह सेवा व्याख्यान देते फिरने से कहीं बढ़ कर है। यह मौन-त्याग पहले कष्टकर होगा, पर अन्त में उनके नाम को अमर कर देगा, जो इस कार्य में अग्रसर होंगे। यही तो सच्ची देश-सेवा है।

भारत को जितना दुख परतन्त्रता से है, कम से कम उतना दुख सामाजिक बुराइयों से भी है। भारत स्वतन्त्र भी हो जाय और इन बुराइयों के विरुद्ध राज-नियम भी बन जावें, तो भी ये बुराइयाँ बनी ही रहेंगी। बाल-विवाह के विरुद्ध शारदा एक्ट ने क्या काम किया। न ये सामाजिक बुराइयाँ सामाजिक सभाओं के प्रस्तावों से ही दूर हो सकती हैं। इन बुराइयों का दूर होना केवल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारी नवयुवतियों और हमारे नवयुवकों की दृढ़ता पर निर्भर है। सामाजिक बुराइयों के रहते हुये किसी भी कोटि की राजनैतिक उन्नति से देश सुखी नहीं हो सकता।

समाज-सेवा देश-सेवा का एक मुख्य अङ्ग है। इसको कम समझना भारी भूल है। आशा है, हमारी नवयुवतियों—विशेषकर शिक्षित नवयुवतियों और हमारे नवयुवक—विशेषकर शिक्षित नवयुवक समाज-सेवा को अपना ध्येय निश्चित करके दहेज़ की राक्षसी प्रथा का अन्त करने की ओर अग्रसर होंगे। उन्हीं के किये यह कार्य हो सकता है, इसीलिये उनसे हमारा अनुरोध है कि अपूर्व त्याग-भाव धारण करके, अपने जीवनों को सङ्कट में डालते हुये भी, दुर्दम्य उत्साह से वे दहेज़ प्रथा को तोड़ने पर उद्यत हो जावें।

❀ ❀ ❀ ❀

निठुर श्याम

[श्रीमती होमवती]

हृदय में क्यों उठता तूफ़ान,
न होता मान किये से शान्त
विकल कर देती किसकी याद
कलेजे को तिल-तिल कर क्लांत।

सुहाता क्यों नहिं कुछ भी हाय,
स्मृति का है क्या यही स्वभाव
पिये लेती अन्तर का रक्त
मसल कर उर के दुखते घाव।

चैन क्यों क्षण भर को भी नहीं
उसी का रहता प्रतिपल ध्यान
निमिष में याचक बन बैठे
लुटा कर सरबस भोले प्रान।

अरे फिर मन क्यों लगता नहीं ?
व्यथा का क्यों फिर ओर न छोर ?
दृगों से दूर रहा तो रहे
बसा मन-मन्दिर में चित-चोर।

लगा कर पल में उड़ जाती
पङ्ख यदि दे देता विधि बाम
मना कर उनको ले आती
अरी ! कहिं मिल जाते घनश्याम।

सुनाती रो-रो कर सब हाल
पूछती उनसे यह आली !
दुखाया कभी किसी ने कहो
तुम्हारा उर यों बनमाली।

रुला कर कभी किसी ने श्याम,
तुम्हें यों दर-दर भटकाया
बहाते अश्रुकणों की धार
हमें ज्यों तुमने ठुकराया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय स्त्रियाँ और उद्योग-धन्धे

[श्रीमती ललिताप्रसाद]

भारतवर्ष की नारियों के जीवन में इस समय दो विकट और अत्यन्त ही जटिल समस्याएँ आ उपस्थित हुई हैं—एक तो समाज में एक सबल एवं विशिष्ट स्थान प्राप्त कर अपने स्वत्वों एवं मानुषिक अधिकारों को प्राप्त करना और दूसरा, आर्थिक स्वतन्त्रता के द्वारा अपनी बिगड़ी हुई दशा को सुधारना। वस्तुतः बड़े-बड़े और कठिन प्रश्न हैं ये, पर इनके सुलझने पर ही उनके भविष्य जीवन का समस्त सुख, विकास, उन्नति और पूर्णत्व निर्भर करते हैं। अस्तु, इन्हें तो मैं स्त्रियों के लिए जीवन-मरण की समस्या कहूँगी। मेरा तो क्या, यह आधुनिक जगत् के सभी भावुक तथा दूरदर्शी नेताओं का भी मत है कि जब तक स्त्री जाति स्वतंत्र हो अपने जीवन को अपनी ही इच्छानुसार निर्मित न कर सकेगी और दूसरों की—चाहे वह पति की हो या पुत्र की—अधीनता से अलग अपनी सत्ता स्वयं क़ायम न कर सकेगी, तब तक न तो स्वयं वे कुछ अपनी उन्नति कर सकती हैं और न अपनी जाति अथवा मातृ-भूमि की ही। किन्तु ये समस्यायें सुलझायी जाँय किस प्रकार? मेरा तो विश्वास है कि इन दोनों में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है आर्थिक स्वातंत्र्य की। आर्थिक स्वतंत्रता होते ही समाज में अपना अधिकार पाना किसी तरह भी असम्भव नहीं है। धन की प्राप्ति के साथ ही साथ एक ऐसी शक्ति का संग्रह होता है, जिसके द्वारा हमें आज़ादी के युद्ध में भाग लेने में कोई कठिनाई नहीं होती। अस्तु, यदि स्त्रियाँ सर्वप्रथम आर्थिक आज़ादी हासिल कर सकें तो उनके लिए सामाजिक स्वत्वों को प्राप्त करना एकदम सहज होगा।

किन्तु विश्व के वर्त्तमान वातावरण में और पूँजीवाद, साम्राज्यवाद एवं राष्ट्रीय झञ्झटों से जकड़ी हुई जीवन-प्रणाली में दुर्बल अबलाओं को नसों में इतनी शक्ति आवे कहाँ से, जिसके द्वारा वे आर्थिक सङ्कटों पर विजय प्राप्त कर सकें? हममें से बहुत तो ऐसी निराश हैं जो केवल यही कहा करतीं कि इस समय तो अर्थ सम्बन्धी आज़ादी का प्रश्न उठाना ही फ़िज़ूल है। पर मेरी दृष्टि में यह धारणा बिलकुल ही निरर्थक है। दुनिया में कुछ अपना हो या नहीं, पर आत्म-शक्ति और आत्म-विश्वास तो ज़रूर ही अपने हैं। अपनी ही मदद और दृढ़ता के भरोसे हम आश्चर्यजनक काम कर दिखा सकती हैं। तब अशेष बाधाओं के रहते हुए भी स्त्रियों के लिए आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना उतना कठिन नहीं। हाँ, यदि यह बात हमारे हृदय-पटल पर अङ्कित हो तो शीघ्र ही यह सहज भी दीख पड़ने लगेगा। अतएव यदि वे कुछ पैसे कमाने लगीं, अथवा यदि अपने परिश्रम से परिवार के या अपने खर्च के लिए कुछ मदद पहुँचा सकीं तो अवश्य उनके हृदय से दासत्व का भाव तो ज़रूर ही मिट जायगा और हिन्दू अथवा मुसलिम समाज में जो उन्हें एक अत्यन्त निम्न स्थान प्राप्त है, उसमें तरक्की होगी। इतना ही नहीं, वे स्वयं स्वाधीनतापूर्वक जीवन व्यतीत कर धर्म तथा नीति के द्वारा, आदर्श की प्राप्ति के द्वारा समाज और देश की बड़ी सेवा कर सकेंगी।

इस प्रकार का भाव यदि भारतवर्ष की समस्त स्त्री-जाति में जाग उठे और इसे कार्यरूप में परिणत करने को वे मज़बूती से आगे बढ़ें, तो अवश्य है कि इस देश की १५ करोड़ स्त्रियों की एकत्रित शक्ति और प्रबलता के सम्मुख समाज के ठेकेदारों की अत्याचार-भरी रीतियाँ तो क्या, कोई भी बाधाएँ कदापि नहीं टिक सकेंगी। यदि ऐसा हो तो हमारे मृतप्रायः समाज की धमनियों में पुनः तेजपूर्ण रक्त का प्रवाह होगा और राष्ट्रीय जीवन के अङ्ग-अङ्ग पुष्ट हो उठेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर स्त्रियों के लिए धनोपार्जन के कौन से उपाय हैं ? आजकल की बेकारी की बढ़ती बीमारी के युग में स्त्रियों को कहाँ से काम-धन्धे मिल जायँगे, जिनके द्वारा वे कुछ पैसे अपने परिश्रम से पैदा कर सकें ?

इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है—एक ही मार्ग है, और वह है उद्योग-धन्धों में लग जाना। मेरा तो विश्वास है कि भारत की नारियाँ यदि तन-मन-धन से इस कार्य में जुट जायँ तो अवश्य ही उनकी बहुत कठिनाइयाँ शीघ्र ही दूर हो जायँगी और उनका जीवन उज्ज्वल और सुखमय हो जायगा।

उद्योग-धन्धों से कौन से लाभ हैं, यह बताना मेरा ध्येय यहाँ नहीं है। मैं तो इतना ही कह देना चाहती हूँ कि भारतवर्ष के अग्रगण्य सूत्रधार गाँधी जी के कथन के अनुसार भारत का उद्धार जितना शीघ्र इसके द्वारा हो सकता है, उतना न तो व्याख्यान देने से न राजनैतिक क्षेत्र में भाग लेने से। यही मत इस देश के और-और नेताओं और विद्वानों का भी है। अस्तु, भारतीय स्त्रियों को बिना हिचकिचाहट के इस ओर झुक जाना चाहिए।

हिन्दुस्थान की निम्न श्रेणी की औरतों के लिए यह कठिन काम नहीं, पर भले घर की स्त्रियों को भी ज़रूर ही बेखटके इस कार्य में लग जाना चाहिए। मिल, फ़ैक्टरियों में तो नीच जाति की स्त्रियाँ बहुत नज़र आयेंगी, परन्तु वहाँ शायद ही प्रतिष्ठित घराने की नारियाँ काम करें। कारण यह है कि हज़ारों की संख्या में काम करने वाले अनपढ़, शराबी, और गँवार मज़दूरों के बीच अथवा कारख़ानों के मालिकों के साथ कुछ पैसे कमाने के ख़याल से वे शायद कभी काम न कर सकें। अस्तु, भले घरों के लिए एक ही मार्ग खुला हुआ है, या तो उद्योग-धन्धों का अवलम्बन करना या पढ़े-लिखे लोगों के उपयुक्त कहीं नौकरियाँ करना, जो वस्तुतः बड़ी कठिनाई से मिलती हैं।

इस समय इस देश में ऐसी करोड़ों स्त्रियाँ हैं जो किसी कार्य में अपना-अपना समय बिता अपनी आत्मा या जीवन को विकसित कर पाती हैं। उनमें से अधिकांश तो घर की चहारदिवारी में पर्दे की ओट अपने बहुमूल्य समय को नष्ट करती हैं। कुछ ऐसी भाग्यवती अवश्य हैं, जिनको ज़िन्दगी पैसे की तङ्गी के नहीं रहने के कारण आराम से कट जाती है, पर इससे अधिक वे और कुछ न कर पातीं। पर शेष ग़रीब बहनों का पूछना ही क्या ? उनके सामने कोई उपाय नहीं दीख पड़ता, जिसके द्वारा वे अपनी आर्थिक समस्याओं को हल कर सकें। यहाँ की स्त्रियों में प्रतिशत १५·५ विधवाएँ हैं, जिनकी अवस्था और भी दर्दनाक है। पति-हीन हों, दूसरों की मुहताज हो दाने-दाने को तरसने वाली, इन्हें नरक की भीषण से भी भीषण यातनाएँ सहनी पड़ती हैं। जीवन की घड़ियाँ उन्हें ख़ून का घूँट पी-पी कर बितानी पड़ती हैं। ऐसी ही औरतों के लिए घरेलू उद्योग-धन्धों की विशेष आवश्यकता है। इनके द्वारा इन्हें कुछ रुपये ज़रूर ही मिल जायँगे और जीवन में कुछ न कुछ आराम अवश्य ही मिलेगा।

घरेलू धन्धों के विषय में बहुत लिखा और कहा जा चुका है। और अब तो भारत के सात प्रान्तों की कॉङ्गरेसी सरकारों का यह एक प्रधान कर्तव्य ही हो गया है कि वे इनकी वृद्धि के लिए जनता को अधिक से अधिक उत्साह, ज्ञान और सहायता प्रदान करें।

इन धन्धों में सबसे प्रमुख हैं—खद्दर का कातना और बुनना, रस्सी बनाना, कपड़ा सीना और पिरोना, फल फूलों की खेती करना, लच्छे बनाना, दरी बनाना, कम्बल, परदे आदि तैय्यार करना, टोकरियाँ और तरह-तरह की ज़रूरी चीज़ें बनाना, मधुमक्खियाँ, मुर्ग़ी, सुअर, भेड़, बकरी और गायें पालना।

पर ये काम एकदम ही सहज नहीं हैं। सरकार अथवा जनता के सहयोग के बिना स्त्रियाँ पूर्णरूप से इन धन्धों को चलाने में सफल नहीं हो सकतीं। अतएव भारतवर्ष की सभी प्रान्तीय सरकारों को इस ओर समुचित ध्यान देकर स्त्रियों को विशेष रूप से उत्साहित करना अत्यावश्यक है। यदि प्रत्येक प्रान्त की गवर्नमेन्ट निम्नलिखित उपायों का अवलम्बन करे तो वस्तुतः स्त्री जाति एवं समस्त देश का महान् उपकार होगा, क्योंकि इनके द्वारा केवल दरिद्रता ही बहुत कुछ दूर न हो जायगी, वरन् अबलाओं के रोगग्रस्त अङ्गों में सजीवता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और शक्ति का संचार होगा और राष्ट्रीय जीवन उन्नत। अस्तु, इन उपायों को शीघ्र ही कार्य-रूप में परिणत करना ज़रूरी है, जैसे :—

(१) स्त्रियों के लिए श्रमिक विभाग खोलना।

(२) उद्योग-धन्धों को सिखाने और चलाने के निमित्त श्रमिक शिक्षा कैम्प का स्थापित करना।

(३) सस्ते दर पर उधार रुपया देकर स्त्रियों की पूँजी की कमी को दूर करना।

(४) स्त्रियों के श्रमिक सहयोग समिति की व्यवस्था करना।

(५) ज़रूरी ट्रेनिङ्ग के लिये, यात्रा पार्टियों के लिए इन्तज़ाम करना।

परन्तु केवल ये ही युक्तियाँ यथेष्ट नहीं हैं। आज-कल के मैशीनों युग में घरेलू वस्तुओं को बेच कर उचित मूल्य पाना कठिन है; क्योंकि यन्त्र द्वारा पूँजीपति थोड़े ही समय और थोड़े आदमियों से बहुत अधिक वस्तुएँ प्रस्तुत कर लेते हैं, पर यह घरेलू उद्योग-धन्धों के क्रम में सम्भव नहीं। अतएव देश और सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि स्त्री या पुरुष द्वारा बनाई हुई हस्त की चीजें बाज़ार में अनुचित या कम दाम पर न बिकें, बल्कि उनकी खपत इस प्रकार हो कि उनके बनाने वालों को किसी प्रकार घाटा न लगे। अस्तु।

बाज़ार में खरीद-बिक्री के लिए भी उचित प्रबन्ध की बड़ी आवश्यकता है : गवर्नमेन्ट को ऐसे इन्सपेक्टर और आफ़िसरों को नियुक्त करना चाहिये जो स्वयं इस कार्य में काफ़ी दिलचस्पी रख इसे उत्साहित कर सकें।

यदि ऐसी ही बात हो तो मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक भारतीय स्त्री की निजी आमदनी अवश्य ही कुछ अच्छी होगी और वे स्वावलम्बन की अमूल्य शिक्षा आप ही आप सीख लेंगी।

यह तो हुई उन लोगों की बात, जो घर पर ही तरह-तरह की वस्तुएँ बना कर पैसे कमा सकें। पर वे स्त्रियाँ जो मिलों अथवा कारखानों या अन्य स्थानों में मज़दूरी करती हैं, उनके आराम के लिये भी सरकार को काफ़ी इन्तज़ाम करना उचित है।

पर इतने ही से क्या हमारी सभी बहनों की विकट आर्थिक समस्याएँ हल हो जायँगी? हममें से बहुत ऐसी हैं, जिन्होंने स्कूल-कालिजों में उच्च शिक्षा पाई है और जो कोई भी ऐसा काम पसन्द नहीं करतीं जो उनकी उन्नत संस्कृति के उपयुक्त न हो। ऐसी स्त्रियों के लिए दो कार्य बहुत ही उत्तम हैं—(१) शिक्षण का और (२) डाक्टरी का। हमारे देश में स्त्रीशिक्षक और स्त्री डाक्टर इतनी कम संख्या में हैं कि यह अभाव हमें बड़ा ही अखरता है।

इन कार्यों में स्त्रियाँ बहुत मदद कर सकती हैं और अपने परिश्रम के अनुसार कुछ धनोपार्जन भी कर सकती हैं। प्राइमरी शिक्षा के प्रचार के लिये एवं नर्सों के लिये तो बहुत स्त्रियों की ज़रूरत पड़ेगी, जिसके लिये स्त्रियों को अभी से प्रस्तुत होना चाहिए। प्रारम्भिक शिक्षा के प्रचार के लिये सबसे उपयुक्त स्त्रियाँ ही हो सकती हैं। अतएव सरकार को उन्हीं को नियुक्त करना उचित है।

रोज़गार के द्वार और भी अनेक हैं, जैसे सरकारी आफ़िस में किरानी का काम, वकालत, स्कूल कालिजों की नौकरी, पुलिस का काम आदि, पर वे सभी के लिए नहीं। कुछ खास-खास स्त्रियाँ ही इनके योग्य हो सकती हैं। पर जिनमें इन कामों की योग्यता हो तो उन्हें मौक़ा मिलने पर अपने मस्तिष्क और जीवन के विकास के निमित्त अवश्य ही उनमें जुट जाना चाहिए।

यदि उपर्युक्त सभी मार्गों का अनुसरण कर हमारी बहनें अपनी-अपनी आर्थिक कठिनाइयाँ हल कर सकें तो अवश्य ही उनमें एक नूतन शक्ति का प्रादुर्भाव होगा, जिससे वे केवल अपनी ही पराधीनता की शृङ्खला न तोड़ सकेंगी, बल्कि अपने भाइयों की और अपने देश की भी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोक-परलोक

सिनेमा-नाटक

[श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल-एल० बी०]

[तीसरी धारा]

दृश्य ३२

यमलोक का एक स्थान

[दो यमदूत दो मृत आत्माओं को, उनकी टाँगों में अलग-अलग बँधी हुई रस्सियों को अपने-अपने कन्धों पर रखे हुए खींचते जा रहे हैं। जिनमें से एक भगुआ भङ्गी है और दूसरा ढबढब पाण्डे। दोनों अचेत दशा में हैं। मगर बजाय ज़मीन पर घसिटने के हवा में लहराते हुए खिंचते जाते हैं।]

यमदूत नम्बर १—(रास्ता चलते)—'जब दुनिया वाले जीते ही आप से आप यमलोक में पहुँचने लगे तो जो न हो जाए वही थोड़ा है।'

यमदूत नम्बर २—(रास्ता चलते)—'मुझे तो उसके मनुष्य होने में सन्देह है। मनुष्यों में भला कहाँ ऐसी शक्ति हो सकती है?'

यमदूत नम्बर १—'अरे भाई, वह मनुष्य काहे को. मनुष्यों का गुरुघण्टाल है गुरुघण्टाल। अवश्य ही कोई बड़ा ही बेढब महापुरुष है तभी तो उसकी शक्ति देवताओं से भी बढ़ कर है।'

दृश्य ३३

यमलोक का एक ऊँचा टीला

क़ानूनीमल—[टीले पर अकेले मौज में बैठे हुए]—'अब ज़रा अपनी जीती हुई ताक़त की आज़माइश करनी चाहिये। मगर किस पर!.....[इधर-उधर देख कर एक तरफ़ ध्यान से देखते हुए]—मोहोहो! क्या मजे में वह दोनों यमदूत अपने-अपने मुर्दे खींचे लिये जा रहे हैं। अच्छा।'—[अपनी जेब से रूमाल निकाल कर झटकता है।]

दृश्य ३४

फिर बत्तिसवाँ दृश्य दूसरी बार

[दोनों मुर्दों के पैरों से आप से आप रस्सी खुल कर गिर जाती है और दोनों यमदूत खाली अपनी रस्सियाँ ज्यों की त्यों खींचते आगे बढ़ते जाते हैं]

यमदूत नंबर १—'और सुना? हमारे सरदार का कहीं पता नहीं है।'

यमदूत नंबर २—'आश्चर्य्य तो मुझे भी है परन्तु...।'

[बातें करते दोनों दृश्य से बाहर चले जाते हैं]

[दृश्य फिर पिछली तरफ़ हट जाता है, जहाँ भगुआ और ढबढब पाँडे हैं]

भगुआ—(आँखें मलकर ग़ौर से देखते हुए) 'के आये? ढबढब पाँडे? अरे! तूहूँ मर गयो? बाप-किरिया?'

ढबढब—'कौन, भगुआ भङ्गी?'

भगुआ—'हाँ, पांडे जी हम ही होई। तू मर गयो यू बड़ा नीक भवा, जाने गुसइयाँ।'

ढबढब—'हाँ हाँ, अबे दूर हट। घुसा क्यों पड़ता है?'

भगुआ—'का करी पाँड़े जी। हम नहाते में डूब गएन। गउदान तक करे के मौका नहीं मिला। तब्बे तो तोहरे मरे से हम निहाल होए गएन निहाल। जाने गुसइयाँ। अब हमार बेड़ा पार होए जाई।'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

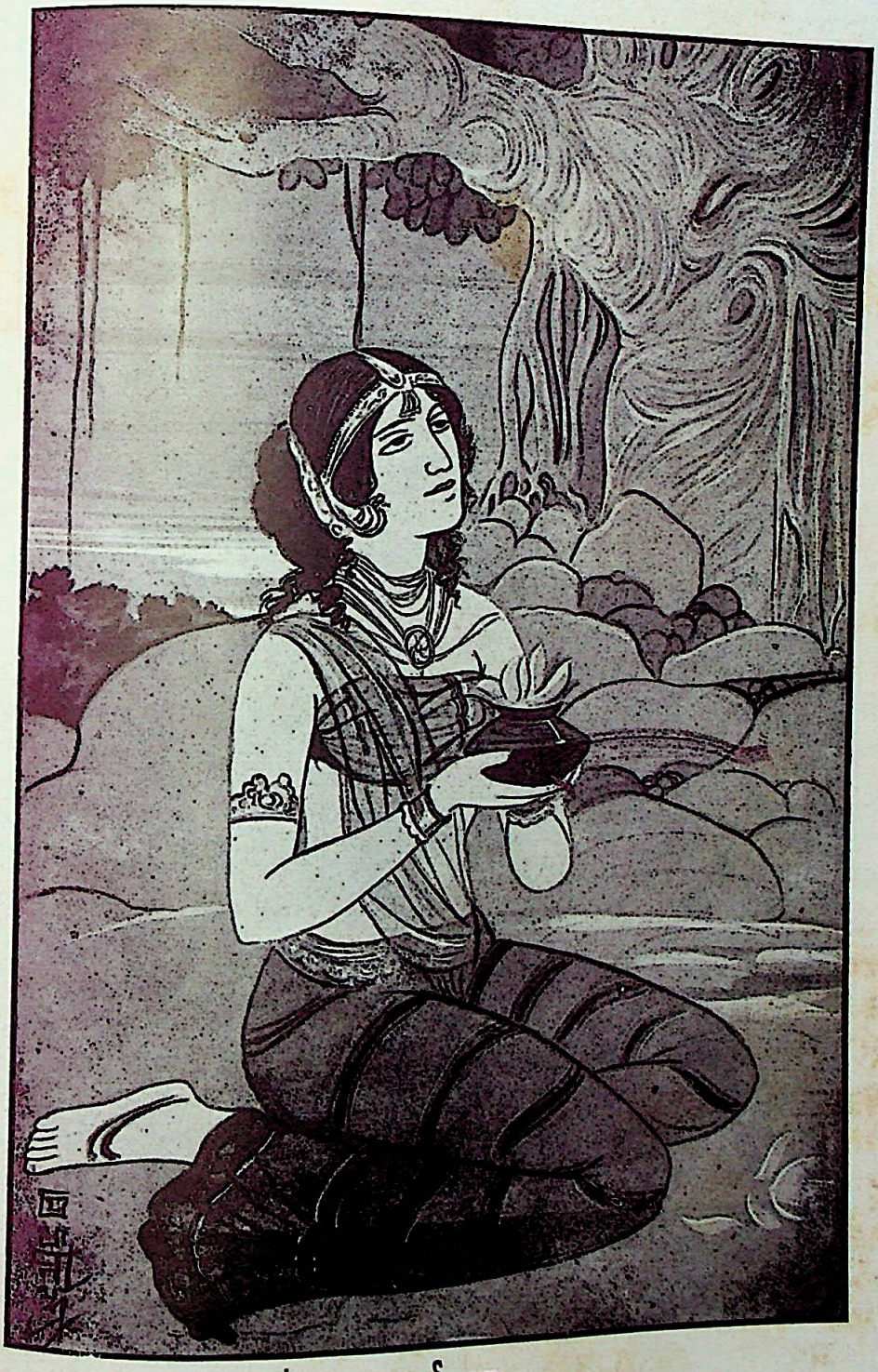

अर्घ्य-दान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ढबढब—'तो क्या हमसे यहाँ गउदान कराना चाहता है ?'

भगुआ—'का बताई हीयाँ कहूँ गाय दिखाई नाहीं पड़त है। मुल...हाँ तूहीं एक बाजी कहेयो रहा कि गऊमाता और बामन देवता का एक समझे के चाही।'

ढबढब—'अच्छा।...परन्तु तनिक दूर रह।'

भगुआ—'तो हमरे करम में गऊ माता नाहीं हैं नाहीं सही। बामन देवता तो मिल गये। तू ही आपन पूँछ पकड़ाय के हमें वैतरनी नदी पार कराय दो। बस अब तोहरे भरोसा है। नाहीं हमार मुक्ति न हुई।'

ढबढब—(चौंक कर) 'पूँछ ? तू भङ्गी होकर हमारी पूँछ पकड़ेगा ? इतना साहस ? परन्तु...ओहोहो ! हमारे तो पूँछ ही नहीं। तू पकड़ेगा क्या, अपना सर ? भाग यहाँ से चाण्डाल।'

भगुआ—'अरे भूल गएन। 'पूँछ नाहीं गोड़। हाँ तोहार गोड़ पकड़ के हम वैतरनी पवर जावे। बस तनिके सहारा चाही। दोहाई पाँड़े जी। भागो न। देखो जनम भर तोहार मैला साफ़ कोन है। अब तनि तुहूँ हम पर दया करो। बड़े भाग से और बड़े जून पर मिले हो। अब तोहें पाय के हम कहूँ छोड़ सकित है ?'

[पाँड़े जी पीछे हटकर एकबारगी प्राण लेकर भागते हैं और भगुआ भी जी छोड़कर उनके पीछे दौड़ता है।]

दृश्य ३५

यमलोक का दूसरा स्थान

[दोनों यमदूत उसी तरह अपनी-अपनी रस्सी खींचते हुये आ रहे हैं।]

यमदूत नम्बर १—'अब तो यार यहाँ कुछ दम ले लेना चाहिये।'

यमदूत नम्बर २—'वाह ! दोस्त, क्या बात कही है। यही तो मैं भी कहने वाला था।...मगर भाई, हमारी रस्सी न जाने क्यों कुछ ढीली मालूम होती है। [घूम कर] अरे ! यह क्या ? मुर्दा ग़ायब ?'

यमदूत नम्बर १—(घूम कर)—'अरे ! हमारा मुर्दा लापता है ! हाय ! भगवान यह कैसा ...?'

यमदूत नम्बर २—'रस्सी खुल जाने से कहीं रास्ते में टपक पड़ा।'

[दोनों लौट कर दौड़ते हुए इधर उधर ढूँढ़ते हैं।]

यमदूत नम्बर १—'कहीं पता नहीं।'

यमदूत नम्बर २—'ऐसा अंधेर ? अब क्या करें ?...अच्छा तुम उधर देखो और मैं इधर।'

दृश्य ३६

यमलोक का एक मैदान

[ढबढब पाँड़े प्राण लिये भागते चले आते हैं और भगुआ 'दोहाई, पाँड़े जी दोहाई, पाँड़े जी' चिल्लाता हुआ बेतहाशा पीछा कर रहा है।]

दृश्य ३७

यमलोक का एक अँधेरा स्थान

[दोनों यमदूत अपने-अपने मुर्दों को ढूँढ़ते हुए अलग-अलग रास्तों से आकर अँधेरे में टकराते हैं। और दोनों एक दूसरे को अपना-अपना मुर्दा समझ कर पकड़ लेते हैं और चिल्लाते हैं।]

दोनों यमदूत—'पकड़ लिया। पकड़ लिया। हत तेरे मुर्दे की ऐसी-तैसी ! अब कहाँ जाता है ?'

[दोनों यमदूत आपस में गुथे हुए खड़े रहते हैं, वैसे ही ढबढब पाँड़े दौड़ते हुए आकर ऐसी छलाँग मारते हैं कि एकदम दोनों की गर्दन पर सवार हो जाते हैं।]

दोनों यमदूत—'हाय बाप ! यह सर पर कैसा पहाड़ फट पड़ा ?'

[ढबढब पाँड़े को अपनी गर्दनों पर लिये हुए दोनों यमदूत घबड़ा कर एक साथ सरपट भागते हैं और खुले हुए मैदान में निकल आते हैं। वहाँ भगुआ बड़े ज़ोरों से दौड़ता हुआ आकर पीछा करता है।]

भगुआ—(पीछा करता हुआ)—'वह लो, वह तो जोड़ी हाँके निकसा जात है। हाय ! दादा ! अब का करी ?...जै हनुमान सामी की !'

[भगुआ इस ज़ोरों से छलाँग मारता है कि उचक कर एकदम ढबढब पाँड़े की गर्दन पर सवार हो जाता है। दोनों यमदूत चिल्ला कर और तेज़ भागते हैं।]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दृश्य ३८

फिर तैंतीसवाँ दृश्य दूसरी बार

कानूनीमल—(ताली बजाकर हँसते हुए) 'भाई वाह ! यह ख़ूब रहा ! वाहरी ! मेरी ताक़त !'

दृश्य ३९

कलयुग महाराज का विलास-भवन

[कलयुग महाराज सुन्दरियों के बीच में मख़मली गद्दे पर, तकिये की जगह पर एक सुन्दरी के सहारे एक हाथ में शराब का गिलास लिये लेटे-लेटे दूसरे हाथ से जुआ खेल रहे हैं। दो सुन्दरियाँ उनके पैर दबा रही हैं। एक चँवर हिला रही है और एक पङ्खा झल रही है।]

एक सुन्दरी—'देखिये कलयुग महाराज, यह मेरा दाँव है।'

दूसरी सुन्दरी—'चल झुटूठी, यह मेरा दाँव है।'

तीसरी सुन्दरी—'तुम दोनो शराब के नशे में अन्धी हो रही हो। यह मेरा दाँव है। देख सात पड़े हैं सात।

पहली—'झूठ उसपर बेईमानी ? छै के दाँव को बदल कर अभी तूने सात कर दिया।'

कलयुग—'यह किसी का नहीं मेरा दाँव है।'

[दाँव पर की बाज़ी के साथ सबके सामने के रुपये समेट लेता है]

सब सुन्दरियाँ—'हाय ! हाय ! आप मेरे रुपये क्यों समेट ले गये ?'

कलियुग—'चुप रह। जिसकी लाठी उसकी भैंस।'

सब सुन्दरियाँ—'ऐसी बेईमानी ?'

कलयुग—'तो कलयुग के पास सिवाय झूठ, मक्कारी, चोरी, बेईमानी, शराब, जुआ, और व्यभिचार के और क्या धरा है ?'

[रेडियो के समान एक विचित्र रूप के यन्त्र का आप से आप घनघना उठना]

कई सुन्दरियाँ—अरे ! चुप-चुप ! आकाशवाणी।'

यन्त्र की घनघनाहट के बाद उसमें से आवाज़—'जै ! कलयुगीनाथ की ! जैकलयुगीनाथ की !'

कलयुग—'यह कौन मेरा जै-जैकार कर रहा है। [यन्त्र के पास जाकर] तुम कौन हो ? कहाँ से बोल रहे हो ?'

यन्त्र की आवाज़—'मृत आत्माओं के पड़ाव से यमदूतों का सरदार नम्बर २। आपने संसार में पाप का बोझ बढ़ाने का ठेका लिया था।'

कलयुग—'अच्छा तुम अपना मतलब तो कहो।'

यन्त्र की आवाज़—'परन्तु जान पड़ता है, आपने अपने काम की ओर उचित ध्यान नहीं दिया।'

कलयुग—'अजी यह भूमिका रहने दो। साफ़-साफ़ बताओ मामला क्या है।'

यन्त्र की आवाज़—'संसार का एक आदमी जो अपने को वहाँ का गुरुघण्टाल बताता है, न जाने किस पुण्य-प्रताप से जीता हो यहाँ पहुँच कर ऐसा ऊधम मचाए हुए है कि नाक में दम है। आप फ़ौरन उसको अपने पाप-जाल में फँसा कर ऐसा जकड़िये कि उसकी शक्तियाँ सब नष्ट होकर वह मुर्दा हो जाए। नहीं तो आपको इस बात की जवाबदेही देनी पड़ेगी कि आपके होते हुए मृत्युलोक पुण्य-प्रताप में इतना कैसे बढ़ गया।'

कलयुग—'हूँ ! यह बात ? अच्छा (सुन्दरियों से) मेरी कलयुगी अप्सराओ आज अपनी-अपनी कलाओं के इम्तहान के लिये तैयार हो जाओ।'

दृश्य ४०

एक खुला स्थान

[हर तरफ़ दूर पर कई यमदूत अपने-अपने मुर्दे रस्सियों में बाँध कर खींचते हुए लिए जा रहे हैं। और एक तरफ़ से यमदूत नम्बर १ और २ एक साथ अपनी गर्दनों पर ढबढब पाँडे को और उसकी गर्दन पर अपना को लादे चिल्लाते हुए आते हैं।]

दोनों यमदूत—'दोहाई है, दोहाई है ! कोई हमें इस सङ्कट से उद्धार करो।'

[अन्य यमदूत अपने-अपने मुर्दों को खींचते हुए इन दोनों के पास दौड़ आते हैं]

अन्य यमदूत—'क्या है भाई ? यह कैसा अन्धेर !'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोनों यमदूत—'अरे भाई, पहिले हमारे सर से यह पहाड़ उतारो, तब कोई बात करो।'

भगुआ—(ऊपर से) 'नाहीं दादा। हम बड़े मजे में हन। हमका न उतारो। नाहीं बाभन देवता हमका फिर न मिलिहैं। हम बिलाय जाब।'

अन्य यमदूतों में से एक—'अरे भाई, आप कौन महात्मा है जो इतने ऊँचे आसन पर विराजमान हैं?'

भगुआ—'हमका महात्मा कहत हो? बाप किरिया? आहाहाहा!—'

ढबढब—'अरे! यह.....अरे! हाय! हाय! मेरा मुँह भी भ्रष्ट.....'

भगुआ—(ढबढब पाँडे का मुँह अपने हाथ से बन्द करता हुआ ढबढब पाँडे से) 'अरे! चुपान रहो। यह धाइत आवरू न लेयो, नहीं हमार का? तूही बिलाय जायो, तोहार छुआ फिर कोई पानी न पीहे।'

अन्य यमदूतों में से दूसरा—'हाँ महात्मा जी, बताइए, आप कौन हैं।'

भगुआ—'मने हमीं से पूछत हो न? आहाहाहा! अब जाने न फुरे हम महात्मा होई, बाप किरिया। काहे रखते कि हम होई गाँधी महात्मा के हरीजौन।'

एक यमदूत—'हरीजान कौन?'

दूसरा यमदूत—'गुलाबजान के बड़े माँमू तो नहीं?'

दो-तीन यमदूत—'ओहो? तब तो यह महताबजान के सगे नाना हैं नाना।'

[भगुआ मारे शेखी के ढबढब पाँड़े के मुँह पर से अपना हाथ हटा कर अपनी मूँछें ऐंठता है, वैसे ही ढबढब पाँडे बोल उठता है।]

ढबढब पाँडे—'अरे! यह चाण्डाल भगुआ भङ्गी है भङ्गी।'

भगुआ—'और यह महराज ढबढब पाँडे हैं। ब्राह्मण देवता। (ढबढब से) अब कहो। हमहू ब्राह्मण हीन।'

दोनों यमदूतों में से एक—'भगुआ कौन मेरा मुर्दा?'

दोनों यमदूतों में से दूसरा—'और ढबढब पाँडे मेरा मुर्दा?'

अन्य यमदूत लोग—'अरे! यह मुर्दे हैं? तब तो भई यह अच्छा तमाशा है। आहाहाहा?'

दोनों यमदूतों में से एक—'खी खी खी खी पीछे करना, पहिले इन दुष्टों को मार कर हमारे सर से उतारो तो।'

अन्य यमदूतों में से एक—(हँसते हुए) 'आहाहा! अरे भई तुम लोगों को अपने-अपने मुर्दों को अपनी खोपड़ियों पर सवार कराने का कब से शौक़ पैदा हुआ, यह तो बताओ। आहाहाहा!..... ..'

[वैसे ही सब मुर्दे सचेत और बन्धन-मुक्त होकर अपने-अपने यमदूतों पर चढ़ढो गाँठ लेते हैं। और तब सब यमदूत अपने-अपने मुर्दों को अपनी गर्दनों पर सवार कराये चिल्ला कर इधर-उधर भागते हैं]

दृश्य १

फिर पैंतिसवाँ दृश्य तीसरी बार।

क़ानूनीमल—(अकेले हँसते)—'आहाहाहा! Good! अब यहाँ Noncoopration भी करा दूँ तब मज़ा आए।'

[एक लिफ़ाफ़ा हवा में तैरता हुआ आकर क़ानूनीमल के सामने रुक जाता है।]

क़ानूनीमल—'यह क्या? [लिफ़ाफ़ा लेकर उसमें से निमन्त्रण कार्ड निकाल कर पढ़ने के बाद] ओहो! मिस्टर कलयुगीनाथ का Invitation! समझा!' ख़ैर, यह भी अच्छा है। वह कलयुग तो मैं कलयुग का गुरुघंटाल, ठेर-ठेर अच्छी बदलाई होगी।'

[चार परियाँ उड़ती हुई आकर सामने हाथ जोड़े खड़ी हो जाती हैं।]

एक परी—'श्रीमान को ख़ातिर से लाने के लिये कलयुग महाराज ने हम लोगों को भेजा है।'

क़ानूनीमल—'बड़ी मिहरबानी की। बड़ी मिहरबानी की।'

दृश्य ४२

आकाश

[कुर्सी के समान एक विचित्र आसन पर क़ानूनीमल को बिठा कर चारों परियाँ उड़ाए लिये जा रही हैं।]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दृश्य ४३

फिर उन्तालिसवाँ दृश्य दूसरी बार

कलयुग—(बड़े तपाक से क़ानूनीमल की आव-भगत करते हुए) 'आइए आइए, आपने, हमारा निमन्त्रण स्वीकार करके सचमुच बड़ी कृपा की।'

क़ानूनीमल—'सच पूछिये तो आपने मुझ पर मिहरबानी की ; क्योंकि मुझे तो आप से मिलना ज़रूरी था ही।'

कलयुग—'सच कहिये मिस्टर गुरुघन्टाल।'

क़ानूनीमल—'बिल्कुल सच है मिस्टर शैतान।'

कलयुग—'शैतान।'

क़ानूनीमल—'क्यों, आप इस नाम पर चौंके क्यों ? यह विलायती और अप-टु-डेट टाइटिल तो हम लोगों ने आपको दे रखा है। क्यों, कलयुगीनाथ का नाम बिल्कुल हिन्दुस्तानी था और पुराना भी बहुत हो गया था। और यह शैतान का नाम दुनिया में इतना मशहूर है कि घर-घर आप इसी नाम से पूजे जाते हैं। वहाँ ईश्वर का नाम तो खाली ज़बान पर होता है, मगर दिल में बसते हैं आप।'

कलयुग—'हाँ ? आहाहाहाहा !'

[अप्सराओं का दृश्य में यकायक आकर नाचना और गाना]

गाना और नाच

सुन्दरियाँ—'चढ़ीं भउवें कमान,
चले नयनों का बान,
बचे रहियो जवान ॥
रङ्गीले रसीले अलबेले जवान ॥
नजरियों में मोरी है स्वर्गो नरक।
चितवन में अमृत व विष को छलक।
जिसे चाहूँ जिलाऊँ मैं मारूँ, निगाहों को तान ॥
चढ़ीं भउवें कमान।'

× × ×

[दृश्य छोटा होकर केवल कलयुगी नाथ और क़ानूनीमल दिखलाई पड़ते हैं]

कलयुग—'परन्तु ऐसे आनन्द की घड़ी में आप इतने चिन्तित क्यों हैं ?'

क़ानूनीमल—'नहीं तो।'

[दृश्य बड़ा होकर नाचने वालियों के साथ दिखाई पड़ता है। नाच ज्यों का त्यों जारी है, मगर बिना गाने के और सबके हाथ में शराब का गिलास है।]

कलयुग—'तो फिर यह दौलत की चकाचौंध, यह शराब का दौर, यह परियों का नाच आपको पसन्द क्यों नहीं आता ?'

क़ानूनीमल—'आता क्यों नहीं। खूब है। क्या कहना है। मौज से रहना और मज़े करना तो सिर्फ़ आप ही जानते हैं। इसीलिये तो दुनिया में सौ में सवा सौ आपके पुजारी हैं और ऐसे कि आपके आगे ईश्वर तक को भूले हुए हैं।

नाच के साथ फिर गाना

सुन्दरियाँ—'लाई सुधा रस भर भर प्याला।
दुख सन्ताप को हरने वाला।
पीले जी भर बन मतवाला।
पाप पुण्य सबका मुँह काला।
मौज से रहना, कुढ़-कुढ़ मरना,
यही स्वर्ग नरक है जान।
चढ़ीं भउवें कमान ॥'

[दृश्य फिर छोटा हो जाता है]

कलयुग—'आखिर बात क्या है कि आपकी सुस्ती दूर नहीं होती। कुछ न कुछ इसकी वजह होगी ज़रूर।'

क़ानूनीमल—'यही कि राजा की ताक़त प्रजा से और देवता की ताक़त उसके पूजनेवालों से। मगर आप-के इतने पुजारी होने पर भी आपकी यहाँ ऐसी बेइज्ज़ती ?'

कलयुग—'कैसे ?'

क़ानूनीमल—'आपका यहाँ कुछ भी अख्तियार नहीं। धर्मराज की कचहरी में आपकी पैठ तक नहीं। आपको यह भी पता नहीं कि धर्मराज आपके पूजनेवाले और वालियों को कैसी ज़लील निगाहों से देखते हैं।'

कलयुग—'सच ?'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क़ानूनीमल—'यही दिखाने के लिए तो मैं दुनिया से ७१ करोड़ ७५ लाख ७२ हज़ार ७८ मील का सफ़र इसके यहाँ आया हूँ।'

[दृश्य फिर बड़ा हो जाता है और नाच बिला गाने के जारी है]

क़ानूनीमल—'आपकी भक्ति कैसी प्यारी और कितनी ख़ूबसूरत है। आहाहा। एक-एक चितवन एक-एक अदा पर लाखों दिल निसार हो रहे हैं। फिर भी जिसके हाथ में यहाँ अख़्तियार और हुकूमत है, अफ़सोस! वह इन्हें क्या समझते हैं और किन निगाहों से देखते हैं, आप ख़ुद देख लीजिये।'

[क़ानूनीमल रूमाल झटकता है और वैसे ही सब इन्द्रियाँ यकायक चुड़ैलें बन जाती हैं।]

कलयुग—'अयँ! एकदम चुड़ैल!'

[फिर दृश्य छोटा हो जाता है]

क़ानूनीमल—'और आपके पुजारी जो आपको पूजने के बाते सब आप ही की तरह रँगीले रसीले छैल छबीले हैं, मगर उनकी नज़र में क्या है, ज़रा शीशे में अपनी सूरत अपनी आँखों से देख लीजिये।'

[क़ानूनीमल रूमाल झटकता है और कलयुगीनाथ यकायक घृणित रूप में बदल जाता है।]

कलयुग—'हाय! ग़ज़ब! यह क्या, साक्षात् कंकाल!'

क़ानूनीमल—'तभी तो वह बेचारे आँख मूँदे सीधे स्वर्गलोक को ढकेल दिये जाते हैं।'

कलयुग—'उफ़! सचमुच यह मेरी बड़ी बेइज़्ज़ती है।'

क़ानूनीमल—'तभी तो दुनिया वालों ने आपको धर्मराज की कुर्सी दिलवाने के लिये मुझे यहाँ भेजा है। जिससे आपके पूजने वालों पर धाँधली न होने पावे और आपकी शान में बट्टा न लगे। अख़्तियार है मान, इज़्ज़त, क़दर, सब कुछ है, वरना कोई कम्बख़्त इसे आँख से भी नहीं देखता।'

कलयुग—'सच है, बिल्कुल सच है। अब याद आया। अख़्तियार ही न होने की वजह से तो एक मामूली यमदूत सरदार ने भी मुझे जवाबदेही देने की धमकी दी थी। बस अब यह अपमान नहीं सह सकता। आज मेरी आँखें खुलीं। मगर हाँ, क्या मुझे धर्मराज की कुर्सी मिल सकती है?'

क़ानूनीमल—'जिसके नाम पर सौ में सवा सौ पर्चा डालने वाले हों, उसके लिये क्या मुश्किल है? आप किसी बहाने सिर्फ़ चित्रगुप्त बाबा को धर्मराज से अलग अटकाए रखिये, फिर देखिये, मैं आपके लिये क्या कर दिखाता हूँ।'

कलयुग—'मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। मगर मेरी सूरत.....'

क़ानूनीमल—'अभी ठीक हुई जाती है।'

[क़ानूनीमल रूमाल झटकता है और कलयुग अपने असली रूप में बदल जाता है।]

दृश्य ४४

धर्मराज की कचहरी

[धर्मराज अपने इजलास पर विराजमान हैं और कई यमदूत अरदली की वर्दी में मौजूद हैं।]

धर्मराज—'आज अभी तक चित्रगुप्त महाराज नहीं पधारे।'

एक अरदली—'धर्मावतार, आज उनको त्रिलोकदर्शी ऐनक गुम हो गई है। उसी के ढूँढ़ने में लगे हैं।'

धर्मराज—'यह तो बड़ा अनर्थ हुआ। जाओ सब लोग मिलकर जल्दी उसे ढूँढ़ निकालो, नहीं सब काम बन्द हो जायेगा।.....परन्तु हाँ, सुनो, क्या सचमुच संसार का गुरूघण्टाल यहाँ आप से आप जीता ही आ गया है?'

[वैसे ही यकायक क़ानूनीमल आकर मौजूद हो जाते हैं]

क़ानूनीमल—'जी हाँ your honour! ख़िदमत में हाज़िर हूँ।'

धर्मराज—'आप? आप? अरे! आपही गुरू-घण्टाल हैं? कैसे-कैसे...यहाँ कैसे पधारे?'

क़ानूनीमल—'रेडियो के ज़रिये से।'

धर्मराज—'अयँ! रेडियो से? मृत्युलोक ने यहाँ तक उन्नति करली। समाचार और चित्र भेजने के अति-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रिक्त समूचा आदमी भी भेजने लगे और यहाँ तक ? तब सचमुच वह देवलोक के बराबर होगया ।'

क़ानूनीमल—'बल्कि उससे भी बढ़ गया ।'

धर्मराज—'यह कैसे ?'

क़ानूनीमल—(एक काग़ज़ देकर), 'इसीसे सब मालूम हो जायेगा और मेरे यहाँ आने का भेद भी खुल जायेगा ।'

धर्मराज—(काग़ज़ पढ़ते हुए) हम दुनिया वाले एकमत होकर मिस्टर गुरुघण्टाल को परलोक के लिये अपना मुखिया चुनते हैं । ताकि वह वहाँ जाकर श्री धर्मराज और चित्रगुप्त महाराज को पचपन-साले के क़ानून के मुताबिक़ अब पेनशन लेकर आराम करने को कहें, क्योंकि उनकी अक़्ल का वह हिस्सा, जिससे हिन्दुस्तान का सरोकार है, करोड़ों बरस से लगातार इन्साफ़ करते-करते अब बिलकुल घिस गया है । अगर न मन्जूर करें तो अच्छी तरह जाँच करके उनकी ग़लतियाँ उन्हें दिखावें । इस पर भी न मानें तो अपने मुआअने की रिपोर्ट ईश्वर के सामने पेश करके धर्मराज जी की कुर्सी श्रीमान कलयुग महाराज उर्फ़ बाबू कलयुगीनाथ उर्फ़ मिस्टर शैतान को, जिनका उस पर इस कलयुग के ज़माने में पूरा हक़ हासिल है, दिलवावें और चित्रगुप्त जी के सगे वारिस होने के नाते उनकी कुर्सी ख़ुद लें..... [काग़ज़ फेंक कर] यह क्या ? ऐसी धृष्टता ? बेशक तुम्हारा संसार घमण्ड में बहुत बढ़ गया है । उसके गर्व को शीघ्र नाश करना चाहिये ।'

क़ानूनीमल—(अपने पाकेट-बुक पर कुछ नोट करते हुए) 'yes ! और कुछ ?'

धर्मराज—'यह क्या लिख रहे हो ?'

क़ानूनीमल—'आपकी बात । मैं पहिले ही बता चुका हूँ कि मैं यहाँ मुलज़िम नहीं, बल्कि Inspector की हैसियत में मौजूद हूँ । जो कुछ आप कहेंगे या करेंगे, वह सब मेरी रिपोर्ट में शामिल होकर ईश्वर के सामने पेश होगा ।'

दृश्य ४५

एक विचित्र स्थान

कलयुग—(अकेले ऐनक लगाए हुए) 'वाह भई ! यह चित्रगुप्त जी की ऐनक तो ख़ूब है । यहीं से बैठे कचहरी के भीतर का हाल सब दिखाई दे रहा है । ओहोहो ! धर्मराज जी कैसे दबसट में पड़ गए । शाबाश मिस्टर गुरुघण्टाल शाबाश ।'*

(क्रमशः)

(Copyright)

---

* आगामी अङ्क में देखिये क़ानूनीमल नर्क और स्वर्ग की जाँच-पड़ताल करके धर्मराज जी के फ़ैसलों पर कैसे झाड़ू फेरते हैं कि धर्मराज जी स्वयं ही अपना पद त्यागने को तैयार हो जाते हैं । नई विचार-धारा और अत्यन्त ही मनोरञ्जक ।

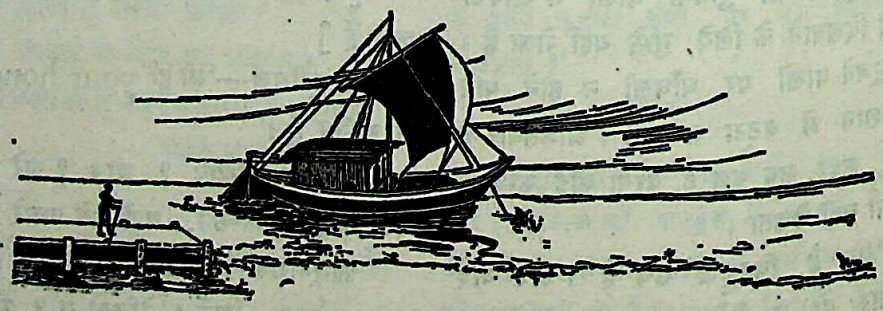

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाकवि विद्यापति तथा उनके पद

[श्री० हरेश्वरीप्रसाद, बी० ए०, विशारद]

मैथिल-कोकिल, कवि-कण्ठहार, विद्यापति हिन्दी के महान् कवियों में से हैं। यह शोक की बात है कि हम लोगों ने बहुत दिनों तक हिन्दी साहित्य के क्षेत्रों में इन्हें समझा ही नहीं और अभी हाल तक इन्हें बङ्गला भाषा-भाषी ही जाना। वास्तव में विद्यापति ने ऐसे मधुर और कोमल पदों में अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं कि यह निर्णय करना बहुत ही कठिन है कि आपने मैथिली भाषा का व्यवहार किया है अथवा बङ्ला का, लेकिन यह बात सिद्ध हो चुकी है और इसके बहुत से प्रमाण भी पाये जाते हैं कि कवि-कुल-कुमुद-दिवाकर विद्यापति का जन्म दरभङ्गा जिला-अन्तर्गत बिसपी गाँव में सन् १३५० ईस्वी में हुआ था। आप कौशिल ब्राह्मण थे। आपके पिता पण्डित गणपति ठाकुर तथा माता हंसिनी देवी सरस्वती के कृपा-पात्रों में से थे।

सुगौंव राजघराने के राजा शिवसिंह तथा उनकी पत्नी लखिमा देवी इनके प्रधान आश्रयदाताओं में से थे। इन धनवान गुण-ग्राहकों ने कवि को प्रचुर सम्पत्ति देकर इन्हें सरस्वती की आराधना में अधिक संलग्न रहने का सुअवसर दिया और बदले में कवि ने अपनी कविताओं में उनका नाम देकर उन्हें अमर बना दिया है।

विद्यापति की भाषा, वर्णन-प्रणाली, और भाव स्वयं निराले हैं। उनकी कविता अपना परिचय आप देती है। ऐसे पदों का आदर अमीर-ग़रीब सब करते हैं। विद्यापति की अधिकांश रचनाएँ शृङ्गार रस से ओत-प्रोत हैं। प्रसाद और माधुर्य इनके पद-पद से टपकते हैं। स्वाभाविकता उनका प्रधान गुण है। मनोविज्ञान के पण्डित विद्यापति ने मनुष्य-प्रकृति का इतना सूक्ष्म अध्ययन किया था कि आपका हृदय उस दर्पण के समान हो गया था, जिसमें मनुष्य मात्र के भाव प्रतिबिम्बित होते थे। शैशव और यौवन का मनुष्य शरीर में जब मिलन तथा वियोग होने लगता है, तो भावों में भी एक अभूतपूर्व परिवर्तन होता है।

वयःसन्धि का वर्णन करते हुए आपने लिखा है—

सुनइत रस कथा थापए चीत।
जइसे कुरंगिनी सुनए सङ्गीत।

अर्थात् नव-यौवना शृङ्गार-सम्बन्धी बातें इतना तन्मय होकर सुनती है, मानों कुरङ्गिनी सङ्गीत सुन रही हो।

हिरदय-मुकुल टेरि हेरि थोर।
खने आँचर दुए खने होय भोर।

नव-उदित वक्षस्थल पर कभी आँचर देना और कभी भूल जाना बहुत ही स्वाभाविक वर्णन है। शारीरिक सौन्दर्य वर्णन में भी अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है। विद्यापति की नायिका की आँखें :—

लोचन-जुगल भृङ्ग अकारे।
मधुक मातल उडए न पारे।

अर्थात्—भौंरे के समान हैं, जो मुख-कमल का मधु पीकर मस्त होने से उड़ नहीं सकते।

मुख का वर्णन करते हुए आपने लिखा है :—

चाँद सारलए मुख घटना करु
लोचन चकित चकोर।
अमिय धाये आँचर धनि पोंछली
दह दिसि भेल उँजोरे।

अर्थात् चन्द्रमा का सार-भाग लेकर विधाता ने चकोरों के लोचन चकित करने वाले मुख की रचना की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सुन्दरी ने अपना मुख जब आँचल से पोंछ कर अमृत धो बहाया तो दशो दिशाओं में शुभ्र ज्योत्स्नाएँ खिल पड़ीं। कितना सुन्दर वर्णन है। कवि ठाकुर की "सोने सो सुरङ्ग लै, सवाद लै सुधा को, वसुधा को सुख लूट के, बनायो मुख तेरो है" वाली कविता इसके सामने फीकी पड़ जाती है।

भला उन नयनों का मारा हुआ कैसे कोई बच सकता है, जिन्हें :—

तिन बान मदन तेजल तिन भुवने
अवधि रहल दओ बाने।
विधि बड दारुन बधए रसिक जन
सोपल तोहर बचाने।

निष्ठुर ब्रह्मा ने कामदेव के पाँच बाणों में से दो बाण सौंप दिया है।

परस्पर-विरोधी पदार्थों को एक स्थान पर बसाने में आप अद्वितीय हैं :—

चिकुर-निकर तम सम
पुनु आनन पुनिम ससी।
नयन पङ्कज के पतिआ आते
एक ठाम रहु बसी।

अन्धकार के समान केश, राकेश के समान मुख और कमल के समान नेत्रों का एक जगह रहना वास्तव में गजब ढाने वाला है। किसी को उसके गुण तथा विक्रम की याद दिलाकर प्रोत्साहित करने का तरीक़ा विद्यापति को अच्छी प्रकार विदित था। आप कहते हैं कि 'ऐ सुन्दरी, तुम क्यों नहीं मुझसे बातें कर जाती हो? तुम किससे डरती हो?'

अरे,

कवरी भय चामरि गिरि कन्दर
मुख भय चाद अकासे।
हरिन नचन भय, सर-भय कोकिल
गति-भय गज बनवासे।

अर्थात—तेरे केश के भय से चँवर वाली गौ पहाड़ के कन्दरा में, मुख के भय के चाँद आकाश में, नयन के भय से हरिन, स्वर के भय से कोकिल और गति के भय से हाथी जंगल में निवास करते हैं। भला जिससे संसार डरे, उसे भय से वास्ता? महाकवि कालिदास की शकुन्तला काँटों में आँचल फँस जाने से दुष्यन्त को देखने के लिये ठहर गयी थी और विद्यापति की राधा—

तहीं पुन मोति-हार तोरि फेकल
कहइत हार टुटि गेल।
सब गन एक-एक चुनि सचरूँ
श्याम दरस धनि लेल।

हार तोड़ के फेंक डालना, सबों की दृष्टि उधर लगा कर श्याम को निरखना, यह निश्चय राधा का ही काम है।

आपके सारे विचार सूक्ष्म अध्ययन पर निर्धारित हैं।

आध आँचर खसि आध वदन हसि
आधहि नयन तरङ्ग।
आध उर जहेरि आध आँचर भरि
तब धरि दगधे अनङ्ग।

किसी उर्दू कवि ने भी क्या ठीक ही कहा है :—
ज़माना हो गया बिस्मिल तेरी सीधी निगाहों से
खुदा नाख़ास्ता तिरछी नजर होती तो क्या होता।

'आड़ बदन कए मधुर हासदए
सुन्दरि रहु सिर नाई।

विद्यापति के विचार 'अकबर' साहब से बहुत पहले के हैं।

कानु हेरब छल मन बड़ साध।
कानु हेरइत भेल अत परमाद।

कृष्ण को एक बार देखने के बाद पागलपन हो गया। वह मतलब नहीं है 'कि तमन्ना निकल गई।'

पुनु फिरि सोइ नयन जदि हेरवि
पाओब चेतन नाह।
भुजगिनि दंस पुनहि जदि दंसए
तबही समय बिष जाह।'

कितनी सुन्दर सूझ है। फिर उन्हीं नयनों से देखने पर ही नयनों का मारा जीवित होगा। साँप अगर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काटने के बाद उस स्थान पर फिर काटे तो विष अवश्य उतर जायेगा। प्रकृति-निरीक्षण में भी आप सर्वदा तन्मय रहते थे। आपका वसन्त-वर्णन मानो एक चित्र है, जिससे वसन्त-कालीन मिथिला-भूमि अङ्कित है।

नव वृन्दावन नव नव तरुगन
नव नव विकसित फूल ॥
नवल वसन्त नवल मलयानिल
मातल नव अति फूल ॥

के साथ झूमते रहने में वास्तव में वसन्त की मस्ती आ जाती है। विरह-वर्णन में ही कवि की अलौकिक प्रतिभा, गाढ़ अनुराग और व्यथित हृदय का पता लगता है। शङ्का है कि :—

बन ही गमन करु होयेति दोसर मति
बिसरि जाअब पति मोरा।

शोक है कि :—

जखन गमन करु नयन नीर भरु
देखहुँ न भेल पहु ओरा।

और भय है कि :—

पहुँ संग कामिनी बहुत सोहागिनी
चन्द्र निकट गइसे तारा ॥

भला यह जवानी किस काम की—

सरसिज बिनु सर सर बिनु सरसिज
कि सरसिज बिनु सूरे।
जौवन बिनु तन तन बिनु जौबन
की जौवन पिय दूरे ॥

वह तालाब क्या जिसमें कमल नहीं, वह कमल क्या जो तालाब में नहीं है और जो सूर्य्य की अनुपस्थिति में मुर्झाया सा है। वह शरीर क्या, जो बिना जवानी के है और वह जवानी किस काम की, जब प्रिय दूर बसे हों। कितने अछूते विचार हैं।

मगर प्रेम किस गहराई तक पहुँचा हुआ है :—

जत ओ तरनि जल सोखए सजनी
कमलन ते अए पाक
जे अन रतल गाहीसौ सजनी
कि करती बहिभए बाँक ॥

ब्रह्मा भी अलग नहीं कर सकते, शिकायत करने वालों की क्या हस्ती? तालाब कितना भी सूख क्यों न जाए, कमल उसे नहीं छोड़ सकता। कैसी शुभ कामना है :—

जुग-जुग जीवथु बसथु लाख कोस।
हमर अभाग कुनक नहि दोस ॥

जो निम्न-लिखित संदेशा कृष्ण के पास भेजा है वह एक ऐसे व्यथित हृदय की आह है, जिसे सुन पत्थर का भी कलेजा पानी हो जाता है।

सजनी कानुक कहब बुझाई।
रोपिपेभक विज अंकुर भूडलि
वाचव को न उपाई ॥
तेल बिनु जैसे पानि पसारिए
ऐसन मोर अनुराग।
सिकता जल जैसे छनहि सूखए
तैसन मोर सुहाग ॥
कुल कामिनी छलों कुलटा भए गैलों
तिनकर वचन लोभाई।
अपने कर हम मूँड मुडाएल
का तुसे प्रेम बढ़ाई ॥
चोर रमनि गनि मन मन रोअई
अम्बर बदन छिपाई।
दीपक लोभ सलभ जनि धायल
सेफल भुजइत चाई ॥
भनइ विद्यापति इहकल जुगरित
चिन्ता करह न कोइ।
अपना करम दोष आँपहि भुनइ
जे जन परबस होई ॥

अर्थात्—हे सखी, जरा कृष्ण को समझा कर कहना कि प्रेम का बीज रोप कर अगर उन्होंने अङ्कुर ही काट दिया तो कौन उपाय से बच सकती हूँ?

पानी पर फैले हुए तेल के समान मेरा प्रेम विस्तृत और मिला हुआ है, परन्तु गरम बालू पर शीघ्रातिशीघ्र सूख जाने वाले जल के समान मेरा सौभाग्य है।

पहले मैं कुलवती थी। परन्तु उनसे प्रेम करके कुलटा हो गई। हाय! उनसे प्रेम करके अपने पैरों में कुल्हाड़ी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारा। अब यह हाल है कि चोर की स्त्री के समान कपड़े में मुख छिपा कर रोती हूँ। दीपक पर दौड़ने वाले पतङ्ग स्वयं ही जलकर खाक हो जाते हैं। विद्यापति क्या खूब ही कहते हैं कि जो अपना दिल दूसरों को दे देते हैं, उनकी ऐसी ही हालत होती है। इससे चिन्ता की कोई बात नहीं है। यह भी लिख दिया है कि—

सखी अनकर दुख दारुन रे जग के पतिआय

सच ही है—

घायल की गति घायल जाने
और न जाने कोय।

धीरज देने वाले उनकी नायिका के इस उत्तर से चुप हो जाते हैं—

अङ्कुर तपन ताप जदि जारब
किकरब वारिद मेहे।

इहनव जौवन विरह गमाआव
किकरब से पिया गेहे।

हाय! इस सुन्दर वसन्त में भी नयनों को—

विपत अपत तरु पाओल रे
पुन नव-नव पात।
बिरहिन नयन विहल विहरे
अविरल बरसात॥

बरसात ही है। और बरसात की उन भीगी रातों में भी विरहियों का हृदय जलता रहता है। अपने इन गुणों के ही कारण कवि को अभिनव-जयदेव, कविरञ्जन, कविशेखर इत्यादि उपाधियाँ मिली थीं।

आशा है, आपके पद युगान्त तक प्रेमियों को शान्ति प्रदान करते रहेंगे?

❀ ❀ ❀

साधना

[श्री० शिवनन्दनप्रसाद]

जल रे जल रे जीवन प्रतिपल!
धधक-धधक बन प्राण समुज्ज्वल॥

गहन निशा है—इंगित पर चल!
जग के चकाचौंध से अविचल!
नक्षत्रों की ओर प्रगति पथ,
पथिक! चलो पर बढ़ते अविरल!
पाने को संसृति-स्नेहाञ्चल!
जल रे जल रे जीवन प्रतिपल॥

ले वेदना-भार उर अन्तर,
अश्रु-हार ले सजल मृदुल कर,
खोजो-खोजो निज प्रियतम को
निज प्राणों का दीप जलाकर,
यौवन-मन्दिर में, ओ पागल!
जल रे जल रे जीवन प्रतिपल॥

साधक कर ले आत्म-समर्पण,
पाओगे तबही जीवन-धन!
तप-ज्वाला में जलकर तेरे
हो जाए निर्मल जग जीवन!
रे उन्मादी मन! हो न विकल!
जल रे जल रे जीवन प्रतिपल॥

सीमित! तेरे आज विरह में
विश्व-साधना हो प्रतिविम्बित!
तेरे उच्छ्वासों में होवे
विश्व-हृदय का कम्पन विलसित॥
उस असीम के इंगित पर चल
जल रे जल रे जीवन प्रतिपल॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली और स्त्रियाँ

[श्री० ज्योतीन्द्रनाथ]

इस पुनर्जागृति के समय में भारतीय नारी-समाज की जैसी दशा है उसे हम आश्चर्यजनक कह सकते हैं। भारतीय नारियाँ, एक ऐसे युग से गुजर रही हैं, जब उनके सामने अपने भविष्य के लिए न कोई निश्चित मार्ग दीख पड़ता है, न उपयुक्त आदर्श। आज देश के चारों ओर से आवाज़ उठती है कि स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहन मिलना चाहिये। आज इस बात के हिमायतियों की कमी नहीं है कि लड़के और लड़कियों में किसी प्रकार का भेद न मान कर माता-पिता को दोनों की शिक्षा में समान रूप से ध्यान देना चाहिये और तभी देश की यथार्थ उन्नति होगी। लेकिन स्कूल-कॉलेज की शिक्षा प्राप्त लड़कियों को दूसरी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। कितने लोगों की राय में वे अच्छी पत्नी नहीं बन सकतीं और यही कारण है कि मध्य श्रेणी के दूरदर्शी नवयुवक डिग्री-धारी पत्नियाँ नहीं पसन्द करते। ऐसा करना उनका उचित भी है। पाश्चात्य ढंग से शिक्षा प्राप्त लड़कियाँ सच्चे अर्थ में सहधर्मिणी और अर्द्धाङ्गिनी नहीं बन सकतीं। जीवन-नौका के खेने में पति की सहायता करने की अपेक्षा वे भारस्वरूप बन जाती हैं। और आजकल जब तूफान और मँझधार के बीच नवयुवकों के लिये नौका को सुचारु रूप से चलाना ही अत्यन्त मुश्किल है, तब इस भार को सँभालना तो उनके लिए असम्भव सा हो जाता है। ऐसी दशा में विवाह के बाद जब दूसरे ही क्षण के सपने देखने वाली शिक्षित नवयुवतियों को यथार्थता का ज्ञान होता है, तो उन्हें अपना भविष्य अंधकारमय मालूम होता है। परिस्थितियों से अनुकूल बनने की कोशिश में उन्हें अधिकतर असफलता ही मिलती है और इसका परिणाम यह होता है कि उनका गार्हस्थ्य जीवन दुखमय हो जाता है। वे ही युवक ऐसी युवतियों के संग सफल जीवन बिता सकते हैं जिन्हें उच्च सरकारी पद अथवा किसी अन्य रूप से काफी रुपये मिलते हों, पर वर्तमान भारत में ऐसे बहुत कम लोग हैं। कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो सजी-धजी, पढ़ी-लिखी और फ़ैशनेबुल पत्नियाँ पाना सौभाग्य की बात समझते हैं। उन्हें तो बाद के जीवन में गहरी असफलता मिलती है।

लेकिन इसमें दोष लड़कियों का नहीं, वरन् वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का है। जिस ढङ्ग से आजकल शिक्षा दी जाती है, लड़कियों का घरेलू काम-काज के अयोग्य और फ़ैशन तथा पाश्चात्य सभ्यता की पुजारिन होना स्वाभाविक है। पाश्चात्य देशों की महिलाओं के लिये वैसी शिक्षा हानिप्रद नहीं, वे स्वयं कमाती हैं और अपने पतियों को मदद देती हैं। फिर यदि वे देखती हैं कि पति के साथ ठीक निभ नहीं रही है तो सम्बन्ध-विच्छेद कर देती हैं और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि वे अधिक सम्पन्न, साहसी और परिश्रमी हैं।

पर देश के कोने-कोने से आवाज़ आती है कि भारतीय स्त्रियाँ बहुत अवनत हैं, उन्हें शिक्षा देने की आवश्यकता है, जिससे वे उन्नति कर सकें। ऊँचे विचार वाले माता-पिता भी महसूस करते हैं कि यह उनका धर्म है कि लड़कियों की ओर भी उतना ही ध्यान दें जितना लड़कों की ओर देते हैं, क्योंकि सन्तान के प्रति उनके कर्त्तव्य की इति श्री केवल लड़कों पर ही नहीं हो जाती। पर ज़रूरत है इस बात को महसूस करने की कि स्त्री तथा पुरुष का कार्यक्षेत्र भिन्न-भिन्न है, इसलिये दोनों की शिक्षा-प्रणाली का एक होना भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हानिप्रद है। नवीन भारत अभी उन्नति की उस सीमा पर नहीं पहुँचा है, जब स्त्री और पुरुष अपने-अपने कार्यक्षेत्र में प्रवीणतापूर्ण पूरी दक्षता दिखलाने के बाद एक दूसरे के कार्यक्षेत्र की ओर झुकें और आपस में विभिन्न क्षेत्र के कार्यों में हाथ बटाने की कोशिश करें।

इसलिये पहले यह आवश्यक है कि भारत के पुरुष और भारत की महिलायें अपना-अपना कर्त्तव्य पहचान लें और उसके बाद एक निश्चित आदर्श सम्मुख रख कर कार्य आरम्भ करें।

वर्त्तमान प्रचलित प्रणाली के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का ध्येय नवयुवकों को अधिकार रूप में कमाना ही होता है। साथ-साथ उनके मस्तिष्क और बुद्धि का विकास अवश्य होता है। और इस प्रकार अवसर मिलने पर और संस्कार रहने पर भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति कर सकते हैं।

पर स्त्रियों के लिये केवल इतना ही आवश्यक नहीं हैं। सब से अधिक ज़रूरी गुण जो भारतीय नारियों को चाहिये उससे आजकल की प्रणाली द्वारा शिक्षा पाकर वे वंचित रह जाती हैं। वह है एक आदर्श माता बनाने का गुण। इस वक़्त हिन्दुस्तान को आदर्श माताओं की सबसे ज्यादा जरूरत है। स्त्रियाँ स्कूल तथा कालेजों में जो शिक्षा पाती हैं, उसके द्वारा उनके मस्तिष्क का विकास होता है ज़रूर, उनके ज्ञानक्षेत्र की व्यापकता बढ़ती है अवश्य, और इसमें भी सन्देह नहीं कि उन्हें देश की सच्ची परिस्थितियों का यथार्थ ज्ञान होता है, यह भी सम्भव है कि देश की ज़रूरतें और कमियों को वे महसूस करती हों, पर सब से अधिक महत्वपूर्ण बात कि उन ज़रूरतों और कमियों की पूर्त्ति का जहाँ तक उनका सम्बन्ध है वह किस तरह से की जा सकती है, यह वे न जान सकती हैं और अगर जानती भी हैं तो उन ज़रूरतों की पूर्त्ति करने में वे अपने को असमर्थ पाती हैं। इसका कारण हो सकता है कि उन जरूरतों को पूरी और कमियों को दूर करने का मार्ग वे जान ही न पाती हों। अगर इन बातों से वे अभिज्ञ भी रहीं तो शिक्षा प्राप्त करने के समय जिस प्रकार उनके दिन बीतते थे उसके बिल्कुल प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच से होकर जिन्दगी बिताना उन्हें असम्भव सा मालूम होता है। और कितनी इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती हैं कि वैसा जीवन वे बिता सकेंगी। वैसे जीवन से मेरा मतलब महान त्यागपूर्ण और घोर दुःखमय जीवन नहीं है। भारतीय नारी समाज का एक बड़ा भाग आज जिस रूप से जीवन व्यतीत कर रहा है उसमें तनिक सुधार की आवश्यकता है। उसके बाद उनमें कुछ कमी रह जाती है, उसी के लिये शिक्षा की ज़रूरत है। शिक्षा उन्हें इसीलिये दी जाये कि वे सफल और योग्य गृहिणी बन सकें। पर यह उचित नहीं है कि स्त्रियों का कार्यक्षेत्र संकुचित रखा जाये और अन्य दिशाओं में उन्नति करने का मार्ग रोक दिया जाय। देश का यह अभाग्य है कि आज कितनी ही संस्कारित आत्माओं की महान भावनायें केवल अनुकूल परिस्थितियों और अवसर न मिलने के कारण दब कर रह जाती हैं और देश उसके लाभ से वञ्चित रह जाता है। मस्तिष्क का यथोचित विकास न होने के कारण अनेकों मनुष्यों की प्रतिभा विकसित नहीं होती है। इसलिये यह ज़रूरी है कि स्त्रियों के मस्तिष्क का इतना विकास हो जाय जिससे उनकी प्रतिभा को प्रस्फुटित होने का मौक़ा मिले। पर इससे हमारी बात में कोई फर्क नहीं होता है और न वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का समर्थन होता है, जिसके द्वारा शिक्षा-प्राप्ति का एकमात्र ध्येय रुपये कमाना और नौकरी करने के लायक़ बनना है।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली के समर्थक एक तर्क दे सकते हैं कि उस रूप से शिक्षा प्राप्त महिलायें स्वावलम्बी बनकर रह सकती हैं। यह बात कुछ अंशों में हो सकता है ठीक हो, पर सामूहिक रूप से कोई जातीय लाभ हमें है या नहीं, इस प्रश्न पर विचार करने से निराशा होती है। स्वावलम्बी होना उसी अर्थ में हो सकता है कि वे इस योग्य हो जाती हैं कि खुद नौकरी कर जीविका निर्वाह कर सकें। पर एक तो सभी जगह नौकरी का मार्ग उनके लिये खुला हुआ नहीं है और अगर रहे भी तो उनमें इतना साहस और बल नहीं है कि अत्यधिक संख्या में इस ओर अग्रसर हों। इस विषय में मर्दों के साथ उनकी प्रतियोगिता का परिणाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी दोनों के लिये बुरा होगा, क्योंकि इस बेकारी के ज़माने में नौकरी इतनी सस्ती नहीं है। हाँ, लड़कियों के स्कूल और कॉलिजों में उनके अनुकूल स्थान अवश्य है। किन्तु अगर शिक्षा-प्रणाली में कोई परिवर्तन हुआ तो लड़कियों के शिक्षा-केन्द्र अवश्य रहेंगे, अतः यह सुविधा तब भी वर्तमान रहेगी।

अब यह तो स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली स्त्रियों के लिये केवल व्यर्थ नहीं, बल्कि हानिप्रद भी है। कुछ लोग पाश्चात्य देशों की दुहाई देते हैं, जहाँ परिस्थितियाँ बिल्कुल यहाँ से भिन्न हैं। पाश्चात्य देशों में स्त्रियाँ सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ी हैं, यह बात यहाँ के लोगों में उत्तेजना पैदा करता है। उन लोगों ने घर के बाहर भी अपना क्षेत्र विस्तृत किया, पर घर के भीतर के अपने प्रधान कार्यक्षेत्र को बिसार कर उन्होंने ऐसा नहीं किया। पहले वे एक आदर्श माता हैं, फिर और कुछ। यह ठीक है कि वहाँ का सामाजिक बन्धन बहुत ढीला है, फिर भी एक आदर्श गृहिणी और पत्नीत्व के भाव का उनमें वर्तमान रहने से इनकार करना भूल होगी। जो खुद इंग्लैण्ड से हो आये हैं, उन्हें मालूम होगा कि सामान्य श्रेणी के मध्यम वर्ग के लोगों की स्त्रियों को यहाँ की अपेक्षा कितना कठिन काम करना पड़ता है। रसोई बनाना, बर्तन साफ़ करना, कपड़े धोना, उनमें इस्तरी देना, घर साफ़ करना आदि वहाँ की स्त्रियों का काम है। पर हम तो यहाँ भारत में रहने वाले अङ्गरेज़ों की नक़ल करना चाहते हैं, जो यहाँ शासक बने हुये हैं।

इसलिये वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन होना आवश्यक है। नई शिक्षा-प्रणाली का रूप क्या हो, यह तो अलग विषय है, पर इतना ज़रूर हो कि भारतीय स्त्रियाँ फ़ैशन की पुतारिनी न हो राष्ट्रीयता की पुतली बनें, वे फलानी और ढिकानी मिसों का रूपक बाँधने में अपना गौरव न समझें, वरन् जीजाबाई के समान आदर्श माता, रानी दुर्गावती के समान वीर, लक्ष्मीबाई के समान साहसी और देवी मैना के समान कष्ट-सहिष्णु होने में गौरव और अभिमान का अनुभव करें। पति के ऊपर भारस्वरूप नहीं, उनकी सबसे बड़ी सहायक सिद्ध हों, और अवसर मिलने पर तथा प्रतिभा रहने पर विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता दिखला देश का मुखोज्ज्वल करें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कनौजिया समाज

[श्री० त्रि० द० त्रिपाठी

प्रत्येक वस्तु जन्म के समय सुन्दर उत्पन्न होती है, अनन्तर क्रमिक ह्रास को प्राप्त होती हुई असुन्दर बन जाती है। यह प्रकृति का प्रायः नियम है। अतएव किसी वस्तु को अनावश्यक या उसके निर्माता को बुरा कहना भूल है। किन्तु मनुष्य की एक वह भी अवस्था होती है, जिसमें वह औचित्यानौचित्य का ज्ञान खो बैठता है। यह अवस्था प्रायः तब होती है, जब उसपर आपत्ति के घन घिर आते हैं। इसके अतिरिक्त असुन्दर वस्तु को नष्ट करने के लिये उसके निर्माता के प्रति द्वेष एवं अनादर का भाव आवश्यक हो जाता है। आधुनिक सामाजिक ढाँचे के परिवर्तन के लिये जो प्रयत्न किया जा रहा है, उसके मूल में भी यही भावना है।

अपने सम्बन्ध में कुछ कहना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। कनौजिया समाज से मेरा आशय उस ब्राह्मण समुदाय से है, जिसमें ऊँच और नीच का मापदण्ड विश्वा प्रथा है। अस्तु।

नाम

प्राचीन इतिहास में पञ्चगौड़ एवं पञ्च-द्राविड़ नाम से ब्राह्मणों के दश भेदों का उल्लेख मिलता है। कदाचित् पञ्चगौड़ आर्यकुल में एवं पञ्च द्राविड़ द्राविड़ों में से सम्मिलित ब्राह्मण जाति का नाम पड़ा है।

आर्य लोग जब भारत में आये तो कार्य-संचालन के लिये अपने को चार भागों में बाँटा जिसमें ब्राह्मण जाति भी एक है। विजित जाति का सर्वांश में नाश तो किया नहीं जा सकता वह अपने में मिलाई अवश्य जा सकती, है। अस्तु। पञ्च द्राविड़ विजित द्राविड़ जाति की ही यादगार हैं। यहाँ पर इस ऐतिहासिक विवाद को अधिक बढ़ाने की आवश्यकता नहीं। अस्तु। वही दशभेद विभिन्न देशों में रहने से विभिन्न नामों से याद किये जाने लगे। कनौजिया समाज भी 'कान्यकुब्ज' देश में रहने के कारण कान्यकुब्ज या कनौजिया कहलाने लगा।

विश्वा प्रथा

जाति की उच्चता और नीचता उसके सद्गुणों और सत्कर्मों पर निर्भर है। प्रत्येक जाति में कुछ ऐसे व्यक्ति उत्पन्न हुआ करते हैं, जो समयोचित सद्गुणों एवं सत्कार्यों से विशेष प्रतिष्ठा पैदा कर लेते हैं। इसी प्रकार यह विश्वा प्रथा भी तत्कालीन सत्कार्यों की सूचिका मात्र है। इसके पूर्व गोत्र प्रवर आदि ही जाति-चिह्न थे। त्रिपाठी, त्रिवेदी, शुक्ल आदि उपाधियाँ विश्वा प्रथा के पूर्व भी थीं, जिसका निदर्शन कान्यकुब्जेतर ब्राह्मणों में प्राप्त ऐसी ही उपाधियाँ हैं। इन सत्कार्यों के स्थान, करने वाले पुरुषों के नाम आदि भी सम्बद्ध किये जाते हैं। जैसे लखनऊ के बाजपेयी, खाले के टीका चूरा वाले। इसका आशय यह हुआ कि टीकाराम एवं चूड़ामणि नामक एक सत्पुरुष के पिता ने लखनऊ में वाजपेय यज्ञ किया था, और वह खाले (नीचे) रहते थे। इस प्रकार जब इस प्रथा का जन्म हुआ था, तब इसकी उपयोगिता निःसन्दिग्ध थी। अतएव इस प्रथा का उत्पादक निन्दनीय नहीं अपितु प्रशंसनीय था। किन्तु आज यह अनुपयोगी एवं अनावश्यक है। यदि सत्य कहा जाय तो इसे हानिकर ही नहीं, अपितु घातक भी कहा जा सकता है। किन्तु स्वार्थों से अभिभूत होने के कारण हम इसे छोड़ना नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहते, यह है गर्व्व। क्या एक वकील का लड़का केवल इसलिए वकील कहा जायगा कि उसका पिता वकील था। किसी को भी उच्चता जिन बातों से पैदा होती है, उनके नष्ट हो जाने से नष्ट हो जाती है। पर इसमें न जाने कौन सी शक्ति है कि यह मिटाने से भी नहीं मिटती। यद्यपि इससे पैदा हुई बुराइयों की सूची एक बड़ी सी पुस्तक के आकार की हो सकती है, पर हम लोग उससे ऐसे चिपके हुये हैं कि इसे छोड़ने या इसमें सुधार करने में जरा भी दिलचस्पी नहीं लेते। जो लोग इसके द्वारा बड़े बनकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं वे तो हैं ही, किन्तु आश्चर्य तो यह है कि जिन्हें यह प्रताड़ित बनाती है, वे भी इसे छोड़ना तो दूर, उलटे प्रश्रय दे रहे हैं। मेरा आशय यह नहीं कि लोग पूर्वजों की स्मृतियाँ भुला दें, किन्तु उच्चता का मापदण्ड यही नहीं हो सकता कि इसकी मर्यादा बीस विश्वा है। इस उच्चता से लोग अनुचित लाभ उठाते जरा भी नहीं हिचकते। इस समाज में केवल इस प्रथा के आशीर्वाद से एक ही व्यक्ति १०-१२ विवाह करने का अधिकारी माना जाता है। ऐसे व्यक्तियों की कमी भी नहीं है, जो अधिकारों से अपने को खोना पसन्द नहीं करते। उनके जीवन का व्यवसाय यही होता है कि वे विवाह करना अपनी जीविका का साधन मानें।

दहेज

पिता की उपार्जित सम्पत्ति में पुत्र और कन्या दोनों का समप्राप्य ही न्याय्य है। किन्तु पुत्र से कुछ अधिक आशाएँ होने के कारण एवं कन्या से कम, सम्पत्ति-विभाजन में भी पक्षपात किया जाता है। अतएव कन्या को दहेज रूप में कुछ देना ही पर्याप्त समझा जाता है। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल में ब्रह्मचर्याश्रम को समाप्त करने के बाद समावर्तन संस्कार होता था, जो उपनयन का ही एक अङ्ग था। आज भी इस विकृत आविष्कृत रूप उपनयन संस्कार के अन्त में 'कहाँ जाते हो?' पूछने पर 'विवाह करने' कह कर ब्रह्मचारी उत्तर देता है। प्राचीन काल में प्रत्येक पुरुष के लिये गृहस्थी बनना अनिवार्य था। अतएव विवाहोपरान्त गृहस्थ-कार्य-सञ्चालनार्थ कुछ वस्तुओं की आवश्यकता होती ही है, उसके लिये दहेज देना आवश्यक समझा जाता था। इसकी कोई मिति न थी। किन्तु उक्त विश्वा-प्रथा के प्रादुर्भाव-काल में ही इसके भी कुछ नियम स्थिर कर दिये गये थे। जो कि बराबर में बीस विश्वा वाले के यहाँ बीस विश्वा वाले को ३, ४, ५ सौ रुपयों के रूप में ही दिया जाता था। इसमें भी ६० फ़ीसदी नक़द एवं ४० फ़ीसदी असबाब दिया जाता था। इन रुपयों में भी नियम है कि किस कार्य में कितने दिये जायँ। जैसे कलेवा में ५) रु० फ़ीसदी, टीका में ६) रु० मात्र। प्रति आगत व्यक्ति को भेंट में २) रु० मात्र, आदि-आदि। यह नियम इसलिये कायम किये गये थे, ताकि किसी क़िस्म की झंझट न हो और सभी कार्य सुचारु रूप से चले। परन्तु आगे चल कर इसमें अनेक खराबियाँ आ गईं। अब तो कन्या-पक्ष वालों के सामने लड़के की शिक्षा-दीक्षा में व्यय हुये रुपयों का बिल भी पेश कर दिया जाता है, गोया लड़के के प्रति इनका कोई कर्त्तव्य ही नहीं था। बधुओं का वध मात्र इसलिये कि आगामी विवाह में पुनः दहेज मिलेगा तो आये-दिन की बात हो गई है। कन्याओं के लालन-पालन में जो उदासीनता दिखाई जाती है, उसे जितना उपेक्ष्य समझा जाता है, उनके प्रति जो दुर्व्यवहार किये जाते हैं, उनका वर्णन करते निर्जीव लेखनी भी दहल उठती है। संक्षेप में इस प्रथा की वेदी पर जितने मूक बलिदान हुये, हो रहे एवं होंगे, उनके संस्मरण मात्र से ही हृदय काँप उठता है। किन्तु खेद इस बात का है कि इस प्रथा के नष्ट होने के निकट भविष्य में कोई भी लक्षण दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं। यही नहीं कि इसके द्वारा स्त्रियों का ही सर्वनाश किया जा रहा है, पुरुषों का भी महान अपकार इसी के द्वारा किया जा रहा है। बच्चे स्कूल भेजे जाते हैं, किन्तु तभी तक जब तक उनका विवाह नहीं होता। बाद में उनसे स्पष्ट तो नहीं कहा जाता कि स्कूल छोड़ दो, पर उन्हें व्यय नहीं दिया जाता और जब वे पढ़ना छोड़ देते हैं, तो उन्हें बधू में आसक्त होने का दोष दिया जाता है। जिससे वे बेचारे अशिक्षित, लाञ्छित एवं अप-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानित होकर अपने जीवन को नष्ट-प्राय बना डालते हैं।

खान-पान

खान-पान की सख्त पायन्दी में वैज्ञानिक कारणों के साथ ही साथ कुछ ऐतिहासिक कारण भी हैं। यों तो यदि एक स्वस्थ व्यक्ति एक संक्रामक रोग के रोगी के सङ्ग भोजन करता है, तो उसके शरीर में उस रोगी के रोग वाले कीटाणुओं का संक्रमण अनिवार्य हो जाता है। अतएव सर्वोत्तम यही है कि स्वपाकी हो बना जाय। पर यह अधिक सहज नहीं है। अतएव स्वच्छ व्यक्तियों के साथ भोजन-व्यवहार में क्षति नहीं। भारत का प्राचीन इतिहास पढ़ने से ज्ञात होता है कि प्राचीन युग में खान-पान में इतनी कठोरता कभी नहीं थी। शास्त्रीय प्रमाण मानने वाले निम्न स्मृति-वाक्य को न जाने क्यों भूल जाते हैं—

"ब्राह्मणस्यसदाश्नीयात् क्षत्रियस्यचपर्वसु,
प्रकृतेष्वेव वैश्येषुनशूद्रस्य कदाचन।"

इसके अतिरिक्त कश्यप, विश्वामित्र आदि ऋषियों के कार्यों से भी स्पष्ट है कि द्विजाति मात्र में रोटी-बेटी का सम्बन्ध था। इतना ही नहीं, आवश्यकता पड़ने पर शूद्र और अन्त्यज भी ग्राह्य माने जाते थे। किन्तु आज तो ब्राह्मण, ब्राह्मण के ही घर पर खाना धर्म-भ्रष्ट हो जाना मानता है। संसार की ब्राह्मण मानी जाने वाली जातियों के गोत्र-प्रवर आदि का मिलान करने से सभी एक ही श्रेणी में आ जाती हैं। फिर न जाने क्यों हम एक दूसरे को गैर समझे बैठे हैं। मुस्लिम-काल से हिन्दुओं में खान-पान की सख्ती का प्रचार, परदा प्रथा आदि कुप्रथाएँ प्रविष्ट हुईं, पर आधुनिक युग में इन बातों की चर्चा, जो कि एकदम अशास्त्रीय, अनावश्यक एवं असामयिक है, करना अपने को अल्पज्ञ सिद्ध करने के साथ ही साथ हानिकर भी है। किन्तु आधुनिक शिक्षा प्राप्त युवकों में इसके प्रति द्रोह की भावना अनुदिन उग्र होती जा रही है। यह सुलक्षण है।

उपसंहार

इसके अतिरिक्त परदा प्रथा, अशिक्षा आदि तो सार्वत्रिक हैं, अतएव उनका जिक्र अनावश्यक है। अस्तु। अन्त में हमें इतना ही कहना है कि यदि संसार में हमें रहना है तो कुछ करना होगा। इस प्रकार अन्धकार के गहरे गर्त में पड़ कर कब तक रह सकेंगे, यह विचारणीय है। जो समाज में एकदम प्रतिगामी हैं, उनकी उन्नति त्रिकाल में भी सम्भव नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc. No.....

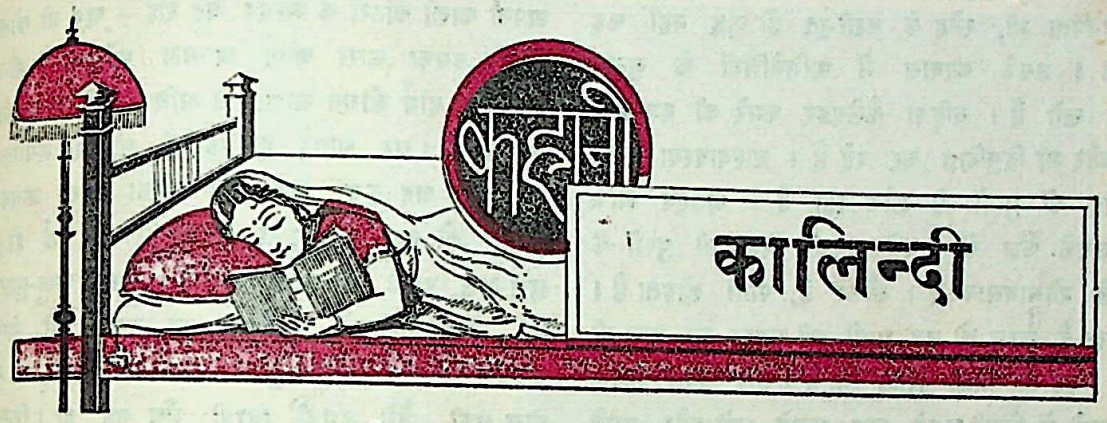

कालिन्दी

[श्री० लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी, "चन्द्र"]

क्या कालिन्दी गृहलक्ष्मी है ? हाँ, गृहकार्य में दक्ष, कुशल स्त्री को हिन्दू-समाज में गृहलक्ष्मी ही कहा जाता है। परन्तु ऐसा भी क्या ? वह गृहलक्ष्मी कैसे हो सकती है ? वह तो विधवा है—विधवा ! इस समाज में उसके लिये कहीं भी स्थान नहीं है। तो क्या वह वेश्या हो जाय—नर्तकी ? अपने जीवन—तीर्थ रेणु-से पवित्र जीवन को कलुषित कर डाले ? मैं नित्यप्रति दिन-रात देखता हूँ, वह शान्तचित्त एक स्थान पर खड़ी भी नहीं होने पाती। ये समाज-सुधारक, लम्पट, कुत्ते उसके विपुल सौन्दर्य-स्रोत से अपनी काम-पिपासा सन्तुष्ट करना चाहते हैं। उसके मुखरित जीवन-उद्यान में प्रवेश कर, थोड़ी देर के लिये, उसकी कोमल गोद में सुखनिंदिया लेने की अनधिकार चेष्टा कर रहे हैं। आँखें फाड़-फाड़ कर उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग से फूट-फूट कर बह रहे सौन्दर्य को देखते हैं। नीच, दुष्ट सभी के माँ-बहिनें होती हैं। किन्तु क्या कालिन्दी इनमें से एक भी नहीं है—न माँ है, न बहिन ? माना, आज वह विधवा है। समाज की अतिशय क्षुद्र वस्तु है—उपेक्षित अङ्ग ! समाज और देश का उससे किसी प्रकार का, कोई भी, सम्बन्ध नहीं है और यह भी माना, वह हेय है, निन्द्य है, किन्तु ऐसा भी क्या कि ये समाज के विषैले कीटाणु चुपके-चुपके, छुप-छिप कर उसके कमनीय कलेवर पर पदाघात करें, उसके सौन्दर्य से अपनी पिपासा शान्त करें ? अब तो उसके हाथ में काँच की चूड़ियाँ भी नहीं हैं और न उसके उन्नत मस्तक के बीच में, सघन केश-राशि को चीरती हुई सौभाग्य-सिन्दूर की रेखा ! उस कालिन्दी का मुख-मण्डल, जो सदैव ही प्रातःकाल की शेफालिका की तरह शुभ्र था, कान्ति की आभा से उद्दीप्त था, म्लान हो गया है—कान्तिहीन ! फिर ये इन्द्रिय-लोलुप निशा-चर उसकी ओर क्यों आकृष्ट होते हैं ? वह किसी पर अपनी दृष्टि भी नहीं डालती और यदि संयोगवश उसकी दृष्टि किसी पर जा टिकती है, तो वह शीघ्र ही उसी समय अपना मस्तक नत कर, दूसरी ओर घूम जाती है। क्योंकि आज उसे विदित हुआ है, वह एक विधवा हिन्दू-नारी है। उसे तो यावज्जीवन तपश्चर्या ही करनी है। उसके लिये मनोरम प्रकृति की रङ्गस्थली एक मरुस्थल है। वह अन्धकाराच्छन्न है और उसे विश्व की विभूति पर आँख नहीं उठानी चाहिये। उसे हँसना नहीं चाहिये, अपितु रोना चाहिये खूब जी भर कर, अच्छी तरह रोना चाहिये। यही उसकी अपनी निधि है—वह किसी पुरुष से हँस कर बात नहीं कर सकती। अपने जीवन की अनन्त वेदनाओं को दूसरों से नहीं कह सकती। ऐसा करने से उसके दुःख का बोझ कुछ हलका जो हो जाता है।

हाँ, उस दिन की बात है। कालिन्दी के शिशु शरत् ने खेलते-खेलते विनोद के फूस के गमले को छू भर दिया था। विनोद उसी मकान में, जिसमें कालिन्दी रहती है, तीसरी मञ्जिल पर रहता है। कॉलेज का विद्यार्थी, धनी माँ-बाप का बेटा। आवश्यकता से अधिक खर्च पाता है। सिनेमा, सिगरेट और शराब में पानी की तरह पैसा बहाता है। एकमात्र पुत्र को,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माता-पिता भी, स्नेह के वशीभूत हो कुछ नहीं कह सकते। उसके आवास में अभिनेत्रियों के सुन्दर चित्र लगे हैं। बढ़िया कैलेण्डर कमरे की रूप-छटा को और भी द्विगुणित कर रहे हैं। बाल्यावस्था से ही विनोद को पुष्पों से शौक रहा है। अतएव आज भी उसके कक्ष के सामने सकड़ों विलायती पुष्पों के गमले शोभायमान हैं। नौकर है, पानी छोड़ता है। सींचता है, शरत् को उन पुष्पों की महत्ता का ज्ञान ही क्या? वह तो अभी शिशु जो है। उसे अपने निकट के गमले में हिलते-डुलते पुष्प अच्छे लगे और उसने अपने अतिशय सलोने हाथों से उन्हें छू लिया। बस, यही बहुत था। हल्दी घाटी का रणक्षेत्र बनने के लिये। विनोद बड़बड़ाता, अशिष्ट गाली बकता, कमरे से बाहर आ गया। त्योरियाँ चढ़ा कर उसने शरत् के नन्हें, कोमल शरीर पर तड़ाक् से बेंत रसीद कर दिये। उसमें इतनी शक्ति कहाँ, जो विनोद के वज्र प्रहार सहन करता। वह बेहोश होकर गिर गया—धड़ाम्! उसके शरीर पर बेत के लम्बे-लम्बे निशान छलछला आये थे। कालिन्दी शरत् की चीख सुन कर ऊपर गई। देखा, शरत् संज्ञाहीन पड़ा है। उसकी हृदय-वीणा के एक-एक तार, बारी-बारी से, झंकृत हो गये। विद्रोहाग्नि हृदय के अन्दर प्रज्ज्वलित होकर निमेष मात्र में शान्त हो गई। वह अपलक दृष्टि से विनोद की ओर देखती रही, जैसे क्षुब्ध सिंहनी अभी उसे निगलने को समुद्यत हो। किन्तु दूसरे ही क्षण उसे स्मरण हो आया, अरे! वह तो विधवा है। गरीब विधवा कहीं लड़-झगड़ भी सकती है? उसे ऐसा करने का कोई भी अधिकार नहीं! यदि वह झगड़ती है, चिल्ला कर शोर मचाती है और अपने निर्दोष बालक के पीटने का कारण विनोद से पूछती है, तो समाज उसे 'डायन' कहेगा और वह अपने स्त्रियोचित आदर्श से गिर जायगी। हिन्दू-समाज में विधवायें एक शब्द भी नहीं बोल सकतीं, भले ही उन्हें कोई काट डाले, उनका सर्वस्व अपहरण कर ले। कालिन्दी ने अपने शरत् को छाती से लगा लिया। क्रोध के वेग को उसने अपने आँसुओं के घाट से निकाल दिया। अपनी काली कोठरी के अन्दर वह रोई—खूब जी खोल कर! उसका सारा जीर्ण अञ्चल आँसुओं से भीग गया था। दीर्घ लोचन आशा से अधिक रोने के कारण सूज गये थे। वह सताई हुई हिरणी की तरह भयभीत थी। और जब दूसरे दिन मैंने इसका रहस्य जानना चाहा, तो वह जैसे दुःख से अधीर हो गई हो। छल-छल, उसके नेत्र तरल हो गये। सैकड़ों अश्रु-मुक्ता, मेरे देखते-ही-देखते, टप्-टप् कर उसके फटे गन्दे अञ्चल में जा विलीन हुये। वह एक शब्द भी न बोल सकी, जैसे उसकी विरुदी बँध गई हो। किन्तु उसके अन्दर चल रहे द्वन्द्व की अभिव्यक्ति नेत्रों में थी। उसने और न कुछ कह, अपने शरत् की पीठ मेरे सामने बढ़ा दी और उसी बेत की लाल-लाल लकीर की ओर संकेत किया, जिसके कारण आज भी बालक बेहोश था। खून छलछला आया था और बेत का आघात कुछ श्याम वर्ण धारण किये हुये था। कालिन्दी सतत् चेष्टा करने पर भी न बोल सकती थी और न रो ही सकती थी। उसके समक्ष दुख का अथाह सागर उमड़ा रहा था। उसी की उत्तुङ्ग लहरियों में वह डूबती-उतराती थी।

लेकिन क्या कालिन्दी एक स्त्री के अन्दर जो पिपासा होती है, उसे शान्त कर सकी है? बारह वर्ष की आयु में उसका विवाह कर दिया गया था। तत्पश्चात् वह चार वर्ष तक अपने माँ-बाप के घर में ही क्रीड़ा करती रही। क्योंकि उसके घर को ऐसी ही प्रथा है। सत्रहवें वर्ष वह अपने पति के घर आई। यहाँ यद्यपि वह दो वर्ष रही, तथापि उसे अपने पतिदेव के पादपद्मों की सेवा करने का एक वर्ष का ही समय प्राप्त हुआ। एक वर्ष में वह अपने पति को अच्छी तरह, भली-भाँति समझ भी नहीं पाई कि किसी कारण-वश उन्हें एक वर्ष के लिये बाहर जाना पड़ा और वहीं उनकी मृत्यु हो गई। उसका सौभाग्य-सिन्दूर सदैव के लिये लुट गया। उसके जीवन का प्रचण्ड मार्तण्ड सदैव के लिये अस्तमित हो गया। एक साल का समय भी कितना होता है? रङ्ग-बिरङ्गे पंखों को लगा कर दिन आये और चले गये। उस पर वज्रपात हुआ। वह विधवा हो गई। कुन्दन सा रङ्ग, काली केशराशि, यौवनपूर्ण शरीर और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

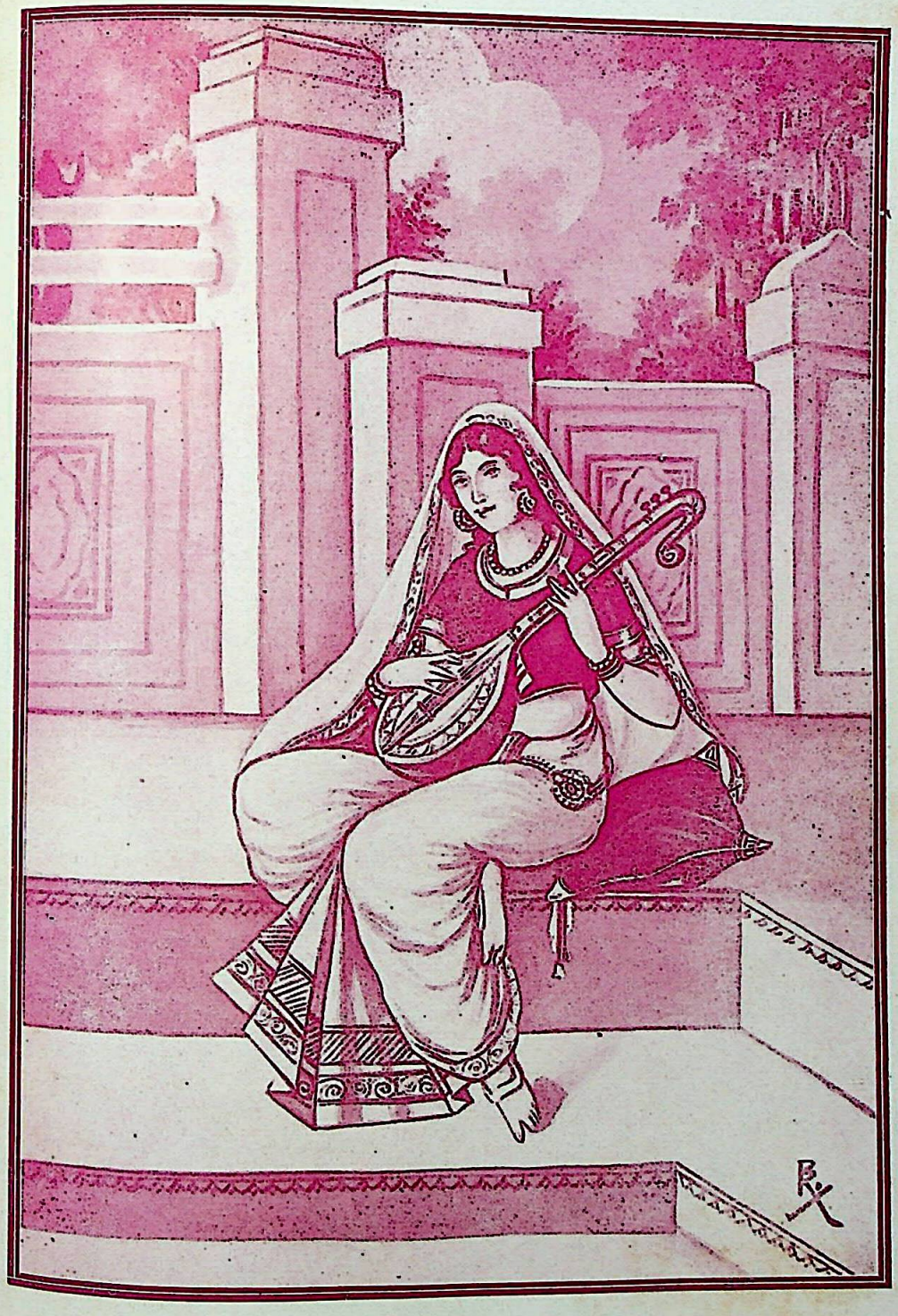

स्वर-साधन

इन तारों में आज जगेगा, सोया हुआ सरस गाना।
जिस प्रकार मेरे प्राणों में होगा प्रिय का आ जाना ॥—'कुमार'

NEW ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मदपूर्ण आँखें, प्रखर नाखून बनकर, उसी के हृदय को विदीर्ण कर रही थीं। उसका रूप-यौवन उसी को खाये जा जाता था। उसकी सभी आशायें, अभिलाषायें उसी में, उसी के हृदय के अन्दर, केन्द्रीभूत थीं।

* * *

जेठ की कड़ाके की धूप! मनहूस बयार हू हू करती, चीत्कार छोड़ती, अज्ञात दिशा की ओर बह जाती थी। सड़क पर कोई भी, चलता-फिरता, दृष्टिगोचर नहीं होता था। बैङ्क से लौटा, तो प्यास से व्याकुल हो उठा। कण्ठ सूख रहा था। एक पग भी आगे बढ़ना दुश्वार था। एक परिचित मकान को देखकर रुक गया, इस भावना से कि यहीं कालिन्दी के घर में पानी पी लूँ। अन्दर गया! देखा, कालिन्दी अपने नवजात शिशु शरत् को बार-बार चूमती, पुचकारती है। तोतली बोली में बातें भी करती है। सहसा मुझे देखकर, सारी आत्मीयता बिखेरते हुये उसने कहा—"आइये-आइये; बैठिये!" मुझे जल्दी थी। अतएव पानी पीकर मैं चलने लगा; किन्तु उसने मुझे पुकारा; मैं मुड़कर उसकी ओर आगे बढ़ा। देखा, जैसे कालिन्दी को विषैली, काली नागिन ने डस लिया हो, जिसके फलस्वरूप उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग में कालिमा छा गई हो। मेरे हृदय में धक्का लगा। मैंने पूछा—"कालिन्दी कहो क्या है?" और बस, उसके नेत्रों से गङ्गा-जमुना उमड़ चलीं। सिसकियाँ लेती बोली—"देखिये, यदि आप भी इस विधवा की सहायता नहीं करेंगे, तो मेरी क्या दशा होगी? मुझे तो शान्त चित्त से कहीं बैठने का स्थान भी नहीं मिलता। मैं तो भिखारिन हूँ गरीब! मुझमें सौंदर्य नहीं है। पर थोड़े समय के लिये मैं मान लेती हूँ कि ईश्वर ने तो मुझे सौंदर्य दिया है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि समाज मेरी ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देखे, मुझे पथ-भ्रष्ट करने की चेष्टा करे। मैं विधवा हूँ। मेरा पति ही मेरे लिये सब कुछ है। उनकी मृत्यु के बाद यावज्जीवन मैं अपने हृदय-मन्दिर में किसी और भी व्यक्ति की मूर्ति प्रतिष्ठित नहीं कर सकती। मैं समाज के कड़े अनुशासनों पर चलती हूँ—अपना कर्तव्य समझती हूँ। यह भी जानती हूँ, इस विधवा का जीवन तमश्छन्न है, वहाँ प्रकाश की एक किरण भी नहीं पहुँच सकती। अब मैं अपने इसी शरत् में निखिल विश्व को पा लेती हूँ। इसी पर जीती हूँ। यही मेरी एकमात्र आशा-वल्लरी है। किन्तु आप से कहती हूँ, यदि अब मैं भविष्य में अधिक सताई गई, तो आत्महत्या.....।" इसके आगे शायद वह यह कहने वाली थी—'तो आत्महत्या कर लूँगी।' लेकिन अपनी विषम परिस्थिति से वह इतनी जकड़ गई थी कि इसके आगे और कुछ भी नहीं बोल सकी।

"आत्महत्या? क्या कहती हो कालिन्दी, आत्म-हत्या कर लोगी? नहीं, ऐसे कैसे हो सकता है? जब तक मैं हूँ,.....।" सान्त्वना देते हुये मैंने कहा।

टप्-टप्-टप्-टप्!

और मैंने देखा, उसके नेत्रों से आँसुओं की निर्झर धारा प्रवाहित है। मैं सोचने लगा, एक विधवा नारी अपने नियम-संयम को कितनी पक्की है! मान-मर्यादा के लिये, समाज की वेदी पर, अपनी आत्म-हत्या करने को तैयार है। कितना विशाल, कितना शान्त और कितना गम्भीर है समाज की इस विधवा देवी का हृदय। इसके हृदय में कलुषित भावना का प्रवेश ही नहीं और इसके विपरीत वे इन्द्रिय लोलुप पुरुष इसे सताते हैं—पथभ्रष्ट करते हैं। मैंने कहा—'कालिन्दी, तुम मेरी हो। हाँ, मेरी ही बहिन। रोने की बात ही क्या? मैं देख लूँगा सबको। भगवान् इस शरत् को बनाये रक्खें, बस! चलो, आज ही चलो। मेरे ही साथ रहो। जो रूखी-सूखी मैं खाता हूँ, सो तुम भी खाना। किन्तु रोने की कोई बात नहीं।'

"नहीं भइया, बस इतनी कृपा बहुत है। मुझे तो भय है कि यदि मैं आपके भी घर चल दूँ, रहने लगूँ, तो.....।"

* * *

रात्रि को अपनी खुली छत पर लेटा था। चाँदनी थी, हवा थी और मेरी पत्नी! मैं आज शीघ्र ही, अन्य दिनों की तरह, जैसी मेरी आदत है, न सो सका। चुपचाप, स्थिर गति से कालिन्दी की जटिल समस्या को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रन्थि को सुलझाने लगा। मेरा क्या कर्तव्य है, मुझे क्या करना चाहिये, यही दो प्रश्न मेरे हृदय-तल में तरङ्गित हो रहे थे। फिर मेरा ध्यान यकायक कालिन्दी के चरित्र की ओर चला गया। सोचने लगा, आज उसका समाज में कोई भी मानवगत स्थान नहीं है। एक पुरुष जब चाहे तब अपने प्रेम का प्रस्ताव किसी भी स्त्री से कर सकता है—चोरी से। किन्तु एक विधवा स्त्री, जब उसे दो बातें करने की आवश्यकता है, वार्तालाप करना तो दूर रहा, उसकी ओर देख भी नहीं सकती। पति की मृत्यु के पश्चात् साफ़-सुथरे वस्त्र भी अपने शरीर पर नहीं धारण कर सकती। और यदि वह ऐसा करती है, तो यह उसका नैतिक पतन है। वह दुष्ट और व्यभिचारिणी क़रार दी जाती है। यह भी न्याय है? आज कालिन्दी के पति नहीं रहे, उसके भोजन-वस्त्र का प्रबन्ध कौन करे? कौन ऐसा समाज-सुधारक है, जो उसके बेटे को शिक्षा दे? उस शरत् को—अभागिनी विधवा के बेटे को—सभी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। आज जब कि उसकी जर्जरित जीवन-नौका दुःख के अपार-पारावार की ओर द्रुत गति से प्रवाहित है, कोई सान्त्वना भी नहीं देता। उसके सहायतार्थ कोई भी निकट नहीं जाता, अपितु सभी उसे देख-देख कर हँसते हैं, उसका उपहास करते हैं। हाँ, ठीक है, मुर्दे पर सभी प्रहार कर सकते हैं; किन्तु क्षुधित सिंहनी के सामने आने वाले बिरले ही होते हैं। यदि वे कालिन्दी की सहायता नहीं कर सकते, तो हँस भी नहीं सकते—उसे देख कर। वे इसके अधिकारी भी कैसे हो सकते हैं? न कोई उसका अपना है और न वह स्वयं किसी की है। वह कालिन्दी आज, अपने हृदय में कितनी वेदना, कसक छिपाये है, इसे कौन जान सकता है? और सच तो यह है कि सभी हँसने की, उपहास करने की चेष्टा करते हैं, परन्तु वस्तुस्थिति समझने की कोई भी चेष्टा नहीं करते। किसी को यह बात जानने की आवश्यकता ही क्या? ऐसी दशा में बड़े से बड़ा धैर्यवान् पुरुष भी किंकर्तव्यविमूढ़ हुये बिना नहीं रह सकता। परन्तु कालिन्दी इतप्रभ हो-होकर भी अपने को निरा तमसाच्छन्न नहीं देखती। कर्तव्यनिष्ठा ही में उसका स्वरूप जाग्रत है। उसको आज की दुनिया कंटकाकीर्ण है, किन्तु जैसे उस पर चलने का उसे अभ्यास हो। वह अपने पथ से विचलित नहीं होती—चलती है और बराबर चलती रहती है। आँधी-पानी और समाज के प्रलयङ्कर झञ्झावातों से डटकर लोहा लेना उसके जीवन का मुख्य विषय बन गया है।

उफ़! उस नीच विनोद ने उसके शिशु पर उसके गुलाब-पुष्प जैसे कोमल शरीर पर बेतों की वर्षा की! नीच कहीं के, पशु होता तो अच्छा होता।..... तू और पढ़ा-लिखा पशु! तूने उस कोमलाङ्ग शिशु पर अपनी पशुता, बबरता और उद्दण्डता का प्रहार किया। माना, तू धनी है। तेरे लिये सभी क्षम्य है और सभी तुझे क्षमा कर सकते हैं, किन्तु वह भगवान् तुझे क्षमा नहीं कर सकता। ग़रीबों, दीन-दुखियों को सताना तुझे शोभा नहीं देता। कभी यदि तूने उस बच्चे के हाथ एक पैसा धरा होता, तो मैं भी जानता कि हाँ, तेरे हृदय है, तू भी कुछ है। उस नारी को, जो अनाथ है, निष्कपट है और गऊ है, तूने सताया? जिस अपने बच्चे के बल पर वह जीवित है, उसी पर तूने आक्रमण किया? अरे, तुझे पता है कि उस बच्चे की क्या दशा है? उसका सारा शरीर लाल-लाल होकर सूज गया है। वह ज्वराक्रान्त हो-होकर विकराल काल के गाल में जाने को उद्यत है। और विनोद! क्या तू यह भी जानता है कि यदि वह बालक न रहा, तो उस अभागिनी विधवा की क्या गति होगी?

आज उसकी सहायता के लिये, उसके बच्चे के दवा-पानी के लिये कोई भी निकट नहीं फटकता!

इसी बीच मेरी पत्नी ने कह दिया—"सुनते हो, कालिन्दी क्या से क्या हो रही है!" इस वाक्य को सुनकर मैं उबल पड़ा। मेरे क्रोध का पारा ऊँचा हो गया। मेरे हृदय में अपनी पत्नी के प्रति घृणा-भाव उत्पन्न होने लगे। मैं सोचने लगा, जो विधवा अपने आत्म-सम्मान की रक्षा के निमित्त आत्महत्या तक करने को उद्यत है, पथ-भ्रष्ट होने की अपेक्षा विषपान कर मर जाना श्रेयस्कर समझती है, अपनी कल्पना में अपने पति की मूर्ति के अतिरिक्त और किसी पुरुष को देखना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन समझती है, उसी के चरित्र पर ऐसी आशङ्का ! उसके क्रोध को दबा कर मैंने पूछा—"क्या बात है ?"

"अरे ! तुम्हें इस सम्बन्ध में इतना भी ज्ञान नहीं !"

"दिन भर काम में जो लगा रहता हूँ ।"

"वह कालिन्दी, जिसे तुम अपने यहाँ लाने की बात सोच रहे थे और जिसके चरित्र पर तुम्हें पूर्ण विश्वास था, चरित्रहीन है ?"

"चरित्रहीन ?" जैसे मेरे ऊपर तुषार-पात हुआ हो। लेकिन फिर भी मैं दृढ़ बना रहा ।

"हाँ, हाँ, क्यों ?" उसने अपने प्रस्ताव की पुष्टि की।

मैं कालिन्दी के चरित्र के सम्बन्ध में, इसके आगे एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता था । क्योंकि मैंने उस देवि प्रतिमा को अच्छी तरह पहचान लिया था । मैं जानता था उसके चरित्र को । मुझे अपनी पत्नी पर सन्देहित भी विश्वास नहीं हुआ । कारण, उसने जिस उड़ती खबर को पड़ोसिन से सुन लिया था ।

मन-ही-मन मैंने कहा—जिस कालिन्दी का चरित्र कन्या खेत, गङ्गाजल-सा पवित्र और धर्मग्रन्थ-सा पूत है, उसे सम्भवतः मेरी पत्नी ही क्या, कोई भी समझ नहीं सका है । उत्तर देते हुये मैंने अपनी पत्नी से कह दिया—'अच्छा होगा, जाने भी दो। यह तो दुनिया है ।' और इस सम्बन्ध में मेरी उदासीनता देख कर वह शान्त हो गई ।

* * *

तीसरे दिन—

मैंने देखा, कालिन्दी के घर के सामने भीड़ लगी है । लोग उसकी विकृत मुद्रा को बड़े ध्यान से देख रहे हैं । फूँक-फूँक कर समाज के पथ पर चलने वाली कालिन्दी अर्धनग्नावस्था में पड़ी थी । लज्जा, भय और समाज का डर आज उससे कोसों दूर जा चुका था । उसका जीर्ण अञ्चल अस्त-व्यस्त दशा में था । कालिन्दी का शरत् मर चुका था । अपने शरत्—निर्जीव शरत्—के शरीर को पकड़-पकड़ कर, ताक़त के साथ झकझोरती थी, हिलाती थी । कहती थी—'ले, इसे ले जा ! मार डाला न ? अब तो खुश है ? ह...ह...ह, यह देखो, यह मेरा शरत् मर गया । ऐं ! हँसता है—हँसता है । शरत् ! शरत् ! मेरे बेटा, मेरे लाल शरत् ! तू मर गया ? नहीं, नहीं, ले ना इसे नोच ! यह मर गया है ..ह...ह...ह । समाज ले इसे मैं.....तेरी भेंट करती हूँ...ह...ह...ह भेंट ! और क्या चाहिये...ह...ह...ह ।

शायद कालिन्दी पागल हो गई थी !

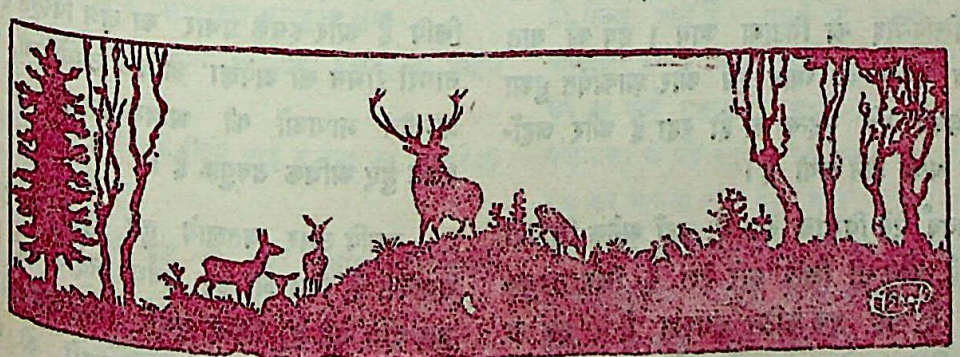

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवनागरी लिपि में सुधार

इस देश को एक सर्वसाधारण लिपि और एक सर्वसाधारण भाषा की कितनी आवश्यकता है, यह किसी से छिपी नहीं है। भारत पूर्णतया एक राष्ट्र नहीं, जब तक उसे एक सर्वसाधारण भाषा नहीं, एक सर्वसाधारण लिपि नहीं। देश की यह कमी बहुत ज़माने से राष्ट्रीयता को धक्का देती आ रही है और समय-समय पर इसके परिणाम अति भयानक सिद्ध हो चुके हैं। भाषा की विभिन्नता तो हममें भेद उत्पन्न किये ही हुये है, लिपि-भेद तो उसे और बढ़ा रहा है। इसकी गहरी खाई जो कई प्रान्तीय सीमाओं पर पड़ी हुई है, हमें एक दूसरे से पृथक् कर रही है। इसलिये यह आवश्यक है कि पहले इस लिपि-भेद को मिटाया जाय। हर्ष की बात है कि अब लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। यह विषय बड़े महत्व का हो रहा है और जहाँ-तहाँ इसकी चर्चा होने लगी है।

भारतवर्ष ऐसे विशाल देश में, जहाँ अनेक लिपियों का प्रचार है, कौन सी लिपि सारे देश के लिये उपयुक्त हो सकती है, यह एक कठिन समस्या है। इस पर बहुत वाद-विवाद हो चुका है और प्रायः सबकी नज़रों में देवनागरी ही इसके उपयुक्त जँच रही है। परन्तु कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनका झुकाव रोमन लिपि की तरफ़ है और जो उसके गुणों के क़ायल हैं।

यह बात ठीक है कि रोमन लिपि को अपनी कुछ ख़ास विशेषतायें हैं, पर यह कहना पक्षपात नहीं है कि देवनागरी ही राष्ट्रलिपि के पद को सुशोभित कर सकती है। रोमन लिपि जिस रूप में है, अगर वैसी ही रखी जाय तो हिन्दुस्तानी भाषा उसमें शुद्धतापूर्वक नहीं लिखी जा सकती। इस कमी की पूर्ति के लिये इसमें अनेकों संशोधन करने पड़ेंगे। उस हालत में यह इतनी जटिल हो जायगी कि उसके प्रचार की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। इसमें लिखने और छापने के अक्षरों में विभिन्नता है, जिसके फलस्वरूप हर एक अक्षर के तीन-चार रूप हो जाते हैं। इसके विपरीत नागरी वर्णमाला रोमन वर्णमाला की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक और सरल है। जैसी बोली जाती है, प्रायः वैसी ही लिखी भी जाती है और जैसी लिखी जाती है वैसी ही पढ़ी जाती है। नागरी इस देश की व्यापक लिपि है और इसके प्रचार का क्षेत्र विस्तृत है। अतएव नागरी रोमन की अपेक्षा अधिक उपयोगिनी, सरल तथा प्रान्तीय भाषाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अधिक उपयुक्त है।

यद्यपि ऊपर बतलाये हुये गुणों का देवनागरी में समावेश है, फिर भी यह सर्वथा निर्दोष नहीं है। इसमें कुछ दोष ऐसे हैं, जिन्हें सुधारे बिना हम इसे आगे नहीं बढ़ा सकते। ये दोष कुछ अक्षरों की बनावट में, मात्राओं को लगाने की पद्धति में, संयुक्ताक्षर बनाने में और अक्षरों की ज्यादा संख्या होने में है।

इस कल-पुर्जे के ज़माने में लिखने-पढ़ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की सुविधा के साथ ही प्रेस और टाइपराइटर की सुविधा का भी ख्याल करना होगा। रोमन लिपि के विश्व-व्यापी प्रचार का एक जबरदस्त कारण उसका ज़माने के अनुकूल होना ही है। अतएव नागरी लिपि में इतना सुधार अवश्य होना चाहिये जिससे वह प्रेस और टाइपराइटर के उपयुक्त हो जाय। परन्तु यह सुधार कैसे किया जाय, इस पर अब तक पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला गया है। यद्यपि यह काम शीघ्र होने का नहीं, फिर भी यह जितने महत्व का विषय है उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा है। मैंने इस तरफ़ जो प्रयत्न किया है और जिस नतीजे पर पहुँचा हूँ, आपके सामने रखता हूँ। आप इस पर विचार करें और अपनी मूल्यवान सम्मति दें, जिससे यह ज्यादा से ज्यादा उपयोगिनी बनाई जा सके।

सुधार-योजना

मेरी इस प्रस्तावित योजना में निम्नाङ्कित बातों पर ध्यान दिया गया है :—

(१) प्रेस और टाइपराइटर की सुविधा के ख्याल से अक्षरों की संख्या में यथासम्भव कमी करना।

(२) कुछ अक्षरों को बनावट में कुछ ऐसे सरल परिवर्तन करना, जिस से वे अधिक सुन्दर, सुगम और सुडौल हो सकें।

(३) बगल में लगने योग्य नवीन स्वर-चिन्हों का निर्माण करना।

(४) अक्षरों से शिरोरेखा का हटा लेना।

(५) संयुक्ताक्षर बनाने के लिये हलन्त् का प्रयोग करना।

(६) पूर्णविराम के लिये पाई न रख कर अङ्गरेजी की तरह बिन्दु रखना।

(७) अङ्कों के रूप में भी यथासम्भव सुधार करना।

अक्षरों में कमी

पहले यह कहा जा चुका है कि अक्षरों में कमी की आवश्यकता है। अब यह देखना चाहिये कि यह कमी कैसे की जाय और कहाँ तक बिना हानि के सम्भव है। देवनागरी के कुल अक्षरों की संख्या मात्राओं को लेकर ६२ है। इसमें क्ष, त्र, ज्ञ और श्र संयुक्ताक्षर हैं। वर्णमाला में इनका कोई स्थान नहीं। इनको निकाल देने से इनका काम संयोग द्वारा चल जायगा। बाक़ी ५८ में से ऋ को निकाल दीजिये, क्योंकि इसका काम री से चल जायगा; भेद क्या है जान नहीं पड़ता। अब बचे ५७, इनमें १० स्वर और ९ मात्रायें हैं। अ में मात्रा लगा कर बाक़ी सब स्वरों को बना लेने से उनके स्वतन्त्र रूप की कोई आवश्यकता ही नहीं रहती। इस प्रणाली को जारी करने से ९ अक्षरों की कमी होती है। अब रहे ४७ अक्षर। इनमें च, छ, ख इत्यादि १० अक्षर महाप्राण हैं। अगर इनका भी स्वतन्त्र रूप हटा दिया जाय और इनका काम किसी तरह के सङ्केत द्वारा लिया जाय तो ९ और अक्षरों की कमी होकर ३७ रह जायँगे।

पर इतनी ही कमी काफ़ी नहीं है। सफल टाइपराइटर बनाने के लिये और भी कमी की आवश्यकता है। यह इस तरह हो सकती है—प्रचलित वर्णमाला में ड़ और ढ़ क्रमशः ड और ढ के नीचे बिन्दु लगाकर बनाये गये हैं। इसी सिद्धान्त पर यदि कुछ और अक्षरों का निर्माण किया जाय तो कोई हर्ज नहीं होगा, वरन् अभीष्ट सिद्ध होगा। जिन अक्षरों के साथ ऐसा करना सम्भव हो सका है, उनके बारे में कुछ उल्लेखनीय बातें दी जाती हैं—(१) ञ और ङ हिन्दी में सदा संयुक्त ही लिखे जाते हैं। उसमें भी इनका काम अधिकतर अनुस्वार ही से निकल जाता है। इसलिये इनके स्वतंत्र रूप का कोई महत्व ही नहीं है। सिर्फ़ नाम के लिये वर्णमाला में पड़े रहेंगे। प्रचलित ञ, ङ के आगे बिन्दु रख कर बनाया गया है। ऐसा न कर यदि हम च के नीचे बिन्दु लगा कर बना लें तो यह काम उसी बिन्दु से चल जायगा जिससे ड से ड़ बना है। (२) इसी तरह य के नीचे बिन्दु लगा कर ञ बना लिया जाय। (३) अब ढ़ को देखिये। यह ढ से बनाया जाता है, पर अब तो इस योजना में ढ खुद ड में महाप्राण का संकेत लगा कर बनाया गया है। इसलिये ढ़, ट के नीचे बिन्दु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगाकर बना लिया जाय (४) इसी तरह न से ण और ब से व बना लिया जाय। ब और व का यह सम्बन्ध तो कैथी में चलता भी है। (५) अब श, ष और स, को देखिये। इन तीनों का काम भी एक ही अक्षर से चल सकता है। स में महाप्राण का संकेत लगा कर श और नीचे विन्दु लगाकर ष बना लिया जाय। मगर स का जो प्रचलित रूप है वह नहीं रखा जाय। श को ही स समझा जाय, क्योंकि जब इन तीनों में दो अपने रूप को खो रहे हैं तो जो सरल है उसी को क्यों न रखा जाय। इस तरह इस विन्दु-प्रयोग द्वारा ८ अक्षर और कम हुए और बढ़ा एक विन्दु का टाइप।

अक्षरों में कमी की समस्या इस तरह हल हो जाने से अब केवल ३१ अक्षर रह जाते हैं। नागरी लिपि को जो कार्य्य सम्पादन करना है उसे ध्यान में रखते हुए यह कोई बड़ी संख्या नहीं है। इस कमी से और लाभ भी हुए हैं। पहला तो यह कि ख, घ, ण, झ और भ का वर्तमान रूप जो बहुत ही असंतोषजनक था और जिनमें सुधार की माँग थी, वह आप से आप पूरी हो गई। दूसरा यह कि विन्दु का जो टाइप इन अक्षरों को बनाने का काम करेगा वही क, ख, ग, ज और फ आदि अक्षरों के नीचे लगा कर उन्हें, फ़ारसी के शब्दों के उच्चारण योग्य बना देगा।

—यदुनन्दनलाल

* * *

गढ़वाल की एक समस्या

भारतवर्ष के उत्तरीय पार्श्व में नागाधिराज हिमालय का लगभग पन्द्रह सौ मील का विस्तार है। उसकी विभिन्न पर्वतमालाओं में प्रकृति ने अपने यौवन की होली खेली है। उन्हीं की कन्दराओं में बैठ कर सृष्टि के प्रथम स्वर्ण-विहान में कपिल, कणाद आदि महानुभावों ने प्रकृति के ऊपर आत्मा की विजय का शङ्खनाद सुनाया था। उसी हिमालय के एक कोने में गढ़वाल का ज़िला स्थित है, जहाँ पाँच लाख आबादी में से एक लाख डोम (अछूत) हैं, जो कि कोली, लुहार, औजी, रुड़िया, तमोटा, भूल आदि उपजातियों में बँटे हुए हैं। सारे ज़िले में उन सबको "डूम" नाम से पुकारा जाता है। लगभग ढाई लाख क्षत्रिय जाति के लोग हैं। वे विष्ट, भण्डारी, नेगी, रावत, गुसाईं, ठाकुर आदि जातियों में विभक्त हैं। डेढ़ लाख के क़रीब ब्राह्मण जाति के हैं, वे सरोला, गङ्गाड़ी आदि में बँटे हैं। किन्तु गढ़वाल प्रदेश के पाँच हज़ार गाँवों की संख्या में से कुछ गाँवों में एक विचित्र जाति निवास करती है। प्रकृति के शक्तिशाली प्रभाव ने इन जातियों पर इतना आधिपत्य स्थापित कर रखा है कि वे अपने आपको किसी एक निश्चित स्थान का न कह सकें। इनके विषय में किञ्चित् भी परिचय रखना महान् दुष्कर है। इनको नाथ, जोगी, डलिया, ओलिया आदि के नाम से पुकारते हैं। इनके जीवन का संक्षिप्त वर्णन आज हम अपने पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं।

नाथ लोग भिक्षा माँगने के लिये देश-देशान्तरों में भ्रमण करते हैं। कुछ नाथ लोगों के लिये पूर्वजों की अन्धपरम्परागत नाली की प्रथा अभी तक क़ायम है। इसका खास उद्देश्य यह है कि प्रत्येक फ़सल पर इनको एक नाली मवासी के हिसाब से नाज दिया जाता है, इससे इनको आलिया भी कहते हैं। जोगी इसलिये कहते हैं कि भिक्षाटन के अवसर पर यह जाति वेष-भूषा बदल देती है और जटूठा, लँगोटी, चिमटा हाथ में रख कर तमाम शरीर पर विभूति मल देते हैं। काश्तकारी का काम भी करते रहते हैं। यहाँ की प्राकृतिक दशाओं ने इनको विवश कर दिया है कि वे स्थायी जीवन को त्याग दें। इसका कारण पाठकों को आगे चल कर स्वयं ज्ञात हो जायेगा। ग्रीष्म-काल में यह लोग गढ़वाल के उत्तर भाग की ओर चले जाते हैं और महर्षि शङ्कराचार्य द्वारा स्थापित हिन्दुओं के चतुर्धामों में एक महान प्रसिद्ध स्थान बदरीनाथ के निकट एवं टिहरी राजधानी के ग्रामों में भिक्षाटन कर पुनः अपने-अपने निवास-स्थानों में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] हैं। इस जाति में रीति-रस्म वैसी है जैसे उच्च वर्णीय [illegible] में है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की तरह यह [illegible] अपने को उच्च मानते हैं और गढ़वाल के एक लाख [illegible] (डोमों) में भी इनकी गणना नहीं होती, [illegible] यहाँ के उच्चाभिमानी जाति विठ लोग (ब्राह्मण-[illegible]) इस जाति को अछूत मानते हैं। और इनका [illegible] पानी नहीं पीते तथा इनको मकानों तक नहीं [illegible] देते हैं। ये लोग विठों की भाँति षोडश संस्कार [illegible] करते हैं। गढ़वाल के पुरोहित ब्राह्मण लोग इनके घरों [illegible] पूजा, पाठ गोदान आदि शुभ संस्कार करते रहते हैं [illegible] इनके मरने पर भी दशकर्म संस्कार उसी भाँति [illegible] है जैसे विठों के यहाँ। इतना होने पर भी [illegible] के विठों ने इन्हें अछूत मान कर इनका उत्साह [illegible] दिया है। ये लोग अपने को नीच समझकर विद्या-[illegible] करने में भी संकुचित रहते हैं। सन् १९३० की [illegible] है कि पट्टी खाटली के मौजा काँडा में नाथों की [illegible] कुछ स्वार्थी लोगों ने की थी, किन्तु कुछ दिन [illegible] ही ब्राह्मण-क्षत्रिय जो शुद्धि करने गये थे उनका [illegible] जनता में जातीय वहिष्कार होने लगा और उन [illegible] ने हरिद्वार और बदरिकाश्रम स्थानों की तीर्थयात्रा [illegible] अपना प्रायश्चित्त किया, तब विठ लोगों के समाज में [illegible] हुए हैं। अतः हिन्दू महासभा तथा सनातन-[illegible] महामण्डल से प्रार्थना है कि वर्तमान देश-सुधार [illegible] अवसर पर इन दो हज़ार अल्प-संख्यक जाति की [illegible] कर उच्च वर्णीय हिन्दुओं के साथ मिला देने की [illegible] की जाय। यदि दिन प्रतिदिन इनको अछूत ही [illegible] जायेगा तो यह जाति शीघ्र ही दूसरे धर्म में [illegible] हो जायगी। यहाँ की पाठशालाओं में इनके बालक [illegible] प्राप्त करने आते हैं, तो उनके नाम दर्ज करने में [illegible] को असमंजस हो जाता है कि इनको डोम जोगी [illegible] जाय तो यह मान-हानि का दावा करेंगे और [illegible] जोगी लिखा जाय तो उच्च वर्णीय ब्राह्मण-क्षत्रियों [illegible] ओर से जातीय वहिष्कार का भय प्रतीत होता है। [illegible] स्कूलों के अध्यापकों को कौनसा मार्ग ग्रहण करना [illegible]। इनके विषय में गढ़वाल नवयुवक-समाज शीघ्र [illegible] ओर ध्यान आकर्षित कर इस कठिन जातिभेद-समस्या को सुलझाने की कृपा कर, नाथ-सम्प्रदाय के लोगों को अछूतपन से शीघ्र मुक्त करेंगे।

—शंकरसिंह नेगी

* * *

श्रीमती रुकमणी लक्ष्मीपति

मुझे बड़े लोगों के हस्ताक्षर एकत्रित करने का शौक है। उन दिनों, जब पं० जवाहरलाल नेहरू के निवास-स्थान, आनन्द-भवन में राष्ट्रीय काँग्रेस की कार्यकारिणी समिति की बैठक हो रही थी, मैं भी घण्टों आनन्द-भवन के दरवाज़े के चक्कर काटा करता था। इतना अच्छा मौक़ा बार-बार तो मिलता नहीं। पं० जवाहरलाल जी के प्राइवेट सेक्रेटरी, श्री उपाध्याय, मुझे कुछ पहचान से गये थे। मैं उनके पास ही खड़ा था, उन्होंने बुलाकर नाटे क़द की, दक्षिणी तर्ज की सादी धोती पहने एक महिला की तरफ़ इशारा करके मुझसे कहा—'इनके दस्तखत क्यों नहीं ले लेते?' इतना सुनते ही वे तो अन्दर चली गईं, और मैं उपाध्याय जी की तरफ़ देखने लगा। उन्होंने बताया, वे श्री रुकमणी लक्ष्मीपति थीं। दो बार और प्रयास करने पर मुझे उनके हस्ताक्षर मिल गये। हस्ताक्षर देते वक्त उन्होंने मुझसे कहा—'मेरे हस्ताक्षर लेकर क्या करोगे, किसी बड़े आदमी के लो।' दो-चार मिनट उनके पास खड़े रह कर ही मैं उनको बड़ों की श्रेणी में रखने को तैयार हो गया। उनकी सादगी, सरलता और ज्यादा चर्चा में न आने की इच्छा ने मुझे उनमें श्रद्धा करने के लिये तैयार कर लिया।

श्रीमती जी आज मद्रास एसेम्बली के डिप्टी-स्पीकर के पद को सुशोभित कर रही हैं, और वे इस बात का जीता-जागता प्रमाण हैं कि अवसर मिलने से भारतीय स्त्रियाँ भी ऊँचे से ऊँचा काम कर सकती हैं। आपके जीवन पर एक दृष्टि डालने से मालूम होगा कि आपकी इतनी अधिक सर्वप्रियता का कारण आपकी सरलता, त्याग-शीलता, विशाल हृदयता,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और आपकी धुन है। आप महात्मा गाँधी और मद्रास-सरकार के प्रधान-मन्त्री, माननीय श्री राजगोपालाचार्य की सच्ची और दृढ़ अनुयायिनी हैं।

श्रीमती लक्ष्मीपति तैलगु-ब्राह्मण घराने की महिला-रत्न हैं। आपके चाचा, श्री पट्टाभी रामाराव कोचीन-सरकार के दीवान थे और वे सदा अपने बच्चों को ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलाने के पक्षपाती थे। इसीलिये उन्होंने श्री रुक्मणी को भी उच्च शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध कर दिया। इसके पहले कि श्री रुक्मणी ने अपनी कालेज-शिक्षा समाप्त की, उनकी शादी मद्रास के प्रसिद्ध आयुर्वेदिक चिकित्सक, डा० लक्ष्मीपति से हो गई। आप डाक्टर साहब की द्वितीय पत्नी हैं और आपकी सौतेली-पुत्री भी योग्य डा० हैं। आपके भी कई सन्तान हैं। आपके पति आपको सदा ही हर तरह का प्रोत्साहन दिया करते हैं, कदाचित इसीलिये आप बी० ए० की डिग्री पाने वाली प्रथम आन्ध्र-प्रदेश-निवासिनी हैं।

आपको इतिहास और अङ्गरेजी साहित्य से विशेष प्रेम रहा है और इसीलिये आपको राजनीति की ओर आकृष्ट होते देर न लगी। आपने Women's Indian Association की सदस्या होकर स्त्रियों के लिये भारतीय एसेम्बलियों के चुनावों में वोट देने का अधिकार प्राप्त करने के लिये प्रबल और सफल आन्दोलन किया था। लाहौर-काँग्रेस के अवसर पर हुई स्त्री-महासभा की आप ही अध्यक्षा थीं। आप वीणा बजाने में प्रवीण हैं।

सन् १९२९ में आप भारतीय स्त्रियों की प्रतिनिधि होकर पेरिस में हुई International women's Sufferage Alliance में गईं। यहाँ पर आपका परिचय अनेक स्वतन्त्र राष्ट्रों की स्त्रियों से हुआ, जिसका प्रभाव यह हुआ कि आप स्वतन्त्र-भारत का स्वप्न देखने लगीं। वैसे तो आप यूरोप जाने के पहले ही कोई संकुचित विचारों की न थीं, पर वहाँ से लौटने पर तो आप पीड़ितों और नीची श्रेणी वालों के लिये अत्यधिक उदार और सहानुभूति-पूर्ण हो गईं। कहा जाता है कि आपका परिवार उन प्रथम ब्राह्मण परिवारों में से है, जिसने अपने गृहकार्य के लिये अछूत सेवकों की सेवायें स्वीकार कीं।

आप मद्रास की यूथलीग की मंत्राणी और उसकी ओर से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र की सम्पादिका भी रही हैं। १९२९ से आप काँग्रेस-कार्य में जी-जान से जुट गई हैं। आप नमक क़ानून तोड़ कर नमक बनाने के कारण एक साल के लिये कारावास का दण्ड पाने वाली प्रथम भारतीय महिला हैं। आप ही काँग्रेस की ओर से खड़ी होने वाली प्रथम महिला हैं, जिसे मद्रास लेजिस्लेटिव काउन्सिल के लिये चुना गया था। यह चुनाव अप्रेल १९३१ में हुआ था और आप भारी बहुमत से जीती थीं। आपकी इस विजय ने यह सिद्ध कर दिया था कि स्त्रियाँ भी, पुरुषों के समान ही, ऊँचे और जिम्मेदारी के पदों पर योग्यता से कार्य कर सकती हैं।

ऐसा लगता है कि श्री रुक्मणी लक्ष्मीपति के हिस्से में सभी काम सर्वप्रथम करना पड़ा है, पर इस सबसे यह समझने की ग़लती न होना चाहिये कि आप कोई बहुत अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व रखती हैं, या कोई चोटी की वक्ता हैं। जैसा मैंने कहा, आप चर्चा में आने से परहेज़-सा करती हैं। पर आपके विचार सुलझे हुए होते हैं, और उनको लोगों के सामने रखने का ढङ्ग भी आपका बहुत अच्छा होता है। इसीलिये ऐसी आशा की जा सकती है कि जब आप को भाषण देने ही पड़ेंगे, तब आप किसी से पीछे नहीं रहेंगी।

—राजेन्द्रशंकर भट्ट

* * *

कुरीतियाँ तथा भारतीय समाज में उनका स्थान

प्रायः हम देखते हैं कि भारतीय समाज कुरीतियों से भरा पड़ा है। कहीं भी हमें कोई सुरीति दृष्टिगोचर नहीं होती। जब कोई इनका सुधार करना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करता है तो उसके सामने ऐसे-ऐसे विघ्न उपस्थित होते हैं कि उसकी बुद्धि चक्कर में पड़ जाती है। कभी-कभी तो उसे अपनी सद् इच्छायें मन ही मन में दबा लेनी पड़ती हैं। भारतीय समाज तथा यहाँ के साम्प्रदायिक बन्धन इसने बहुत से सुधारों को स्थान ही नहीं लेने देने। इसने से कुछ लोग जब अपना पद सुधारों की ओर बढ़ाते हैं तो उनके पीछे असंख्यों आदमी पड़ जाते हैं। इस कारण कभी-कभी उन्हें अपनी सभी इच्छायें धूल में मिला देनी पड़ती हैं। इधर तो यह हालत है उधर संसार के दूसरे देश एक दूसरी ही ओर जाते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। वे उन्नति के शिखर पर चढ़ रहे हैं। हमारा समाज आज अवनति के कूप में गिरा चला जा रहा है।

"यथा राजा तथा प्रजा" यह एक हिन्दी की प्रचलित कहावत है। अर्थात् जिस देश में जैसा राजा होगा वैसी ही वहाँ की प्रजा भी होगी। यदि राजा नेक, होशियार, बुद्धिमान है, यदि उसमें राज्य को सुचारु रूप से सञ्चालन करने की शक्ति है, तो निश्चय ही उसके राज्य की प्रजा नेक, सदाचारी और बुद्धिमान होगी। इसके विपरीत यदि वही राजा नीच, कुकर्मी और मूर्ख है; यदि उसमें राज्य-सञ्चालन की शक्ति नहीं है, तो वहाँ की प्रजा भी अराजकता के रङ्ग में रञ्जित हो जाएगी। उसके राज्य के प्रत्येक प्रान्त में उपद्रव मच जाएगा। राज्य विद्रोहियों का घर हो जायेगा और धीरे-धीरे राज्य विध्वंस हो जायेगा।

इस प्रकार जब जैसे राजा हुये तब वैसी उनकी प्रजा हुई और वैसे ही क़ानून भी बने। जब राजा ख़राब हुये तो सभ्य प्रजा ने अपना हक़ क़ायम रखने के लिये, अपनी आन-मर्यादा की रक्षा के लिये तथा अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये कुछ ढङ्ग निकाले। वे ही ढङ्ग कुछ समय के बाद स्वभाव में परिणत हो गये। वे ही आदतें पीढ़ियों के बाद रीति-रिवाज के नाम से पुकारी जाने लगीं। आजकल के क़ानून ही जो हम अपने लिये बनाते हैं; आजकल के ही ढङ्ग जो हम अपनी रक्षा के लिये निकालते हैं, शायद हमारी आदत बन जायँ और हमारी आगामी इन्हें पुश्तें रीति-रिवाज कह कर पुकारने लगें।

अब सवाल यह उत्पन्न होता है कि क्या हमारे पुराने रीत-रिवाज बिल्कुल बुरे थे? अथवा क्या वे रीत-रिवाज बिलकुल बुरे हैं? हम कदापि ऐसा नहीं कह सकते, क्योंकि उनमें से कई तो अब भी जनता को अत्यन्त आवश्यक हैं तथा उनके बिना अब भी हमारी सभ्यता में धब्बा लग सकता है, पर सभी रीति-रिवाज हमारे लिये कदापि आवश्यक नहीं हैं।

जिस समय वे रीति-रिवाज बनाये गये थे, उस समय सचमुच उनकी बड़ी आवश्यकता थी। जिस प्रकार आजकल के प्रचलित किसी भी रीति-रिवाज को ले लीजिये। आप अपने समय में उसे समझते हैं कि वह रीति-रिवाज बहुत ही अच्छा है। कारण यह है कि आपको इस समय वे बहुत ही लाभदायक प्रतीत होते हैं। पर यह सम्भव है कि ऐसा समय आवे जब कि ये रिवाज उसके लिये उपयुक्त न हों और लोग कहने लगें कि ये रीत-रिवाज ख़राब हैं। यह भी सम्भव है कि उस समय भी कुछ लोग ऐसे हों जो कहने लगें कि हमारे पूर्वजों ने तो इसे बनाया है। ये ख़राब कैसे? यदि ख़राब होता तो वे बनाते ही क्यों? वे बेवक़ूफ़ नहीं थे, आदि। उस समय वे कितनी बड़ी ग़लती करेंगे तथा अपने सहबन्धुओं के उन्नति के मार्ग में किस प्रकार रोड़ा होंगे, आप स्वयं सोच सकते हैं।

जिस समय रीति-रिवाज बने वह समय आजकल के समय से अवश्य बहुत भिन्न रहा होगा। संसार के परिवर्तन ने आपको इस सूरत में परिवर्तित कर दिया है। आज से कई हजार वर्ष पहले आदमी वृक्षों पर रहते थे, छालें पहनते थे। धीरे-धीरे उनको ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने लाभ के लिये अनेकों उपायों से काम लिया, जिसके कारण आज हम संसार को फले-फूले रूप में देखते हैं। बाल ही बनवाने को लीजिये। पहला मनुष्य जिसने बाल बनाने का आविष्कार किया होगा अवश्य जनता में उपहासास्पद हुआ होगा। पर जब उन्होंने देखा कि इससे हमें लाभ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है तो बाल बनवाना तथा बनाना रीति-रिवाज में दाखिल हो गये। और उसके बाद जो मनुष्य बाल बनवाना नहीं चाहता रहा होगा, अवश्य ही हँसी का पात्र बना रहा होगा। अतएव वही रीतियाँ जो एक समय सुरीतियाँ थीं तथा जिनकी उस समय एक बहुत बड़ी आवश्यकता थी, आजकल कलचक्र के कारण कुरीतियाँ मालूम होती हैं।

जब लोगों ने देखा कि ये कुरीतियाँ हमें अधिक हानि पहुँचा रही हैं, तो हम लोगों में से बहुतों ने उनको दूर करने का प्रयत्न किया। कुछ को तो वे आसानी से दूर कर सके, पर कुछ को तोड़ने में कई ऐसी रुकावटें पड़ जाती हैं कि उनका हटाना बड़ा कठिन है। आधुनिक बहुत सी कुरीतियों के दूर करने में हमें प्रायः निम्नलिखित चार बड़ी रुकावटें मिलती हैं।

१—हमारी अज्ञानता तथा शिक्षा का अभाव
२—हमारी साम्प्रदायिक तथा धार्मिक अन्धाधुन्धी।
३—पुरानी लकीर का फकीर होना। ४—हमारे पुरोहित महाराज।

भारत में जब से धीरे-धीरे विद्या का प्रचार बढ़ने लगा है, तब से लोगों को अपनी कुरीतियाँ दृष्टिगोचर होने लगीं। वे कुरीतियों के नष्ट करने में लग से गये। राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, रानडे, गोपालकृष्ण गोखले आदि देश के उद्धारक पैदा हुये। उन्होंने एक अद्भुत क्रान्ति देश में पैदा कर दी। आर्य-समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी ने लोगों को एक दूसरे ही ढाँचे में ढाल दिया। काँग्रेस ने लोगों की बुद्धि को बदल सा दिया। लोग अपनी बुराइयाँ समझने लगे हैं और अब उनके नाश करने में आगे बढ़ रहे हैं। अब लोग कुरीतियों को नाश कर रहे हैं, पर उपर्युक्त कारणों से कभी-कभी असफल भी हो रहे हैं।

—अम्बिकासिंह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ोंको बहुत दिनोंतक नये जैसे रखिये
उन्हें घरपर ही

सनलाइट साबुन

से धुलवाइये।

सनलाइट साबुनसे
चर्मको हानि नहीं
पहुंचती।

जिन घटिया और कड़े साबुनोंसे अच्छी तरह फेन नहीं निकलती, उनसे कपड़े धोनेपर मैल निकालनेके लिये कपड़ोंको पीटना और रगड़ना पड़ता है। सनलाइट साबुन सर्वोत्तम वनस्पति तैलोंसे बना होता है, इसलिये यह बिना हानिकर रगड़ने और पीटनेके कपड़ोंसे मैल निकाल देता है। इसलिये सनलाइट साबुनसे धोये जानेवाले कपड़े बहुत दिन तक टिकते हैं और धोनेपर बहुत साफ रहते हैं। सनलाइट साबुनका असर इतना हलका होता है कि यह बारीक तथा धोये जाने योग्य रङ्गीन कपडोंके लिये सर्वथा निरापद है।

रोजाना धुलाईके लिये सनलाइट साबुन व्यवहार कीजिये।

जिन कपड़ोंको रोज धोनेकी जरूरत पड़ती है वे सनलाइट साबुनसे धोनेपर नये जैसे रहते हैं और उनसे सुगंध आती रहती है।

नये बक्समें असग अलग हो बड़ी टिकियां रहती हैं।

सनलाइट साबुन

भारतवर्षमें
विशुद्ध वनस्पति तैलोंसे भारतीय श्रम द्वारा प्रस्तुत

X-S 1287-50

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

HINDI

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सबसे बड़ी बीमा कम्पनी

आग, जहाज, मोटर, दुर्घटना

जीवन

एवं दूसरे सब प्रकार के बीमे

के लिये

न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी लि०

९ क्लाइव स्ट्रीट

कलकत्ता

मूलधन	...	...	रु० ६०००००००)
वितरित मूलधन	...	...	रु० ३५६०५२७५)
प्राप्त धन	...	...	रु० ७१२१०५५)
कुल कोष	....	...	रु० १९४८४७७४)

हेड ऑफ़िस बम्बई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्वेत-कुष्ठ

की

अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण ! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता ! यदि इस जड़ी के तीन दिन के लेप से सुफ़ेदी जड़ से आराम न हो, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें -) का टिकट भेज कर प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लें। मूल्य केवल ३) रु०।

वैद्यराज पं० महाबीर पाठक

नं० १२, दरभङ्गा

सफेद बाल काला

विवलिन केश तेल

उसे प्राकृतिक रङ्ग में ला देगा। खिज़ाब को फेंक दीजिए। मूल्य १।।।), छोटी शीशी उन लोगों के लिए जिनका बाल हाल ही में पकना आरम्भ हुआ है। ३) रु० बड़ी शीशी उन लोगों के लिए, जिनका बाल ज्यादा पक गया हो। ३ शीशी लेने से डाक-महसूल माफ़।

इलाहाबाद स्टाकिस्ट :—
किङ्ग एण्ड कं०, केमिस्ट,
२६, कैनिङ्ग रोड

नई देहली के एजेण्ट—डॉ० चुन्नीलाल एण्ड सन (एजंसीज़) २९ बेयर्ड रोड

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स :—साइण्टेफ़िक पब्लिशिङ्ग कं०, (मेडिकल डिपा०) भवानीपुर, कलकत्ता

शास्त्रीय हिन्दी हार्मोनियम गाईड

बाजे की पेटी बजाने को सिखलाने वाली पुस्तक ४० रागों के आरोह-अवरोह, लक्षण, स्वरूप, विस्तार, १०४ प्रसिद्ध गायनों का स्वर-तालयुक्त नोटेशन, सुरावर्त, तिल्लाने इत्यादि पूरी जानकारी सहित। द्वितीय आवृत्ति। पृष्ठ-संख्या २००, क़ीमत १।।) रुपया। डाक-खर्च ।=); विषयों का और गायनों का सूची-पत्र मुफ़्त मँगाइए।

गोपाल सखाराम कं

कालबादेवी रोड बम्बई

सुखसंचारक कम्पनी मथुरा की दवाइयां

सुधासिन्धु

कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार आदि की सादिष्ट सुगंधित दवा की० ।।)

दद्रुगजकेसरी

दाद की सबसे अच्छी दवा. की० ।)

बालसुधा

दुबले और कमज़ोर बच्चों को ताक़त वर बनानेवाली मीठी दवा. की० ।।।)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जगन्मान्य चिकित्सक डॉ० नैश-लिखित
Leaders in Homeo Therapeutics
का भाषान्तर

होमियोपैथिक मेषज रत्नाकर

अति सरल हिन्दी में, मेटिरिया-मेडिका तथा सटीक दवा का चुनाव बतलाने वाला ग्रन्थ छप गया। पृष्ठ ८११, सजिल्द मू० ४); विवरण-पत्र मुफ़्त।

पता—माडर्न इकानमिक फ़ार्मेसी,
४२।४ (C.) क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

उस्तरे को बिदा करो !

हमारे 'लोमनाशक' से जन्म भर बाल पैदा नहीं होते। मू० १) तीन लेने से ख़र्च माफ़।

पता—शर्मा एण्ड को०,
नं० ३, पो० कनखल, यू० पी०

मुफ़्त ! सर्वोत्तम अवसर !!

एच० एल० एम० एस०; एच० एम० डी० आदि होमियो-आयुर्, यूनानी डिगरियाँ, नियमित पोस्टल ट्यूशन और परीक्षाओं द्वारा। डिगरी की कोई फ़ीस नहीं। होमियो मेटेरिया मेडिका ५) रु०, होमियो प्रेक्टिस ४) रु०। दो आने का टिकिट भेजिए। इण्डियन होमियोपैथिक इन्स्टीट्यूट एण्ड सोसायटी (गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड) पो० महुवा (काठियावाड़, इण्डिया)

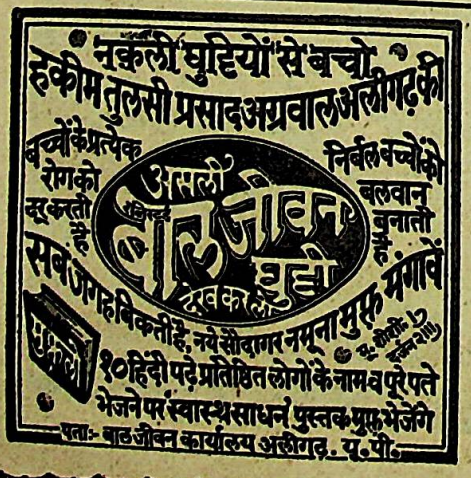

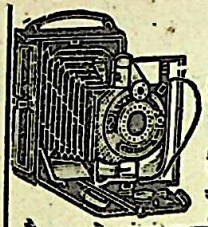

१) में फ़ोटो कैमेरा

सिर्फ़ 'चाँद' के ग्राहक ही ले सकते हैं इस कैमरे से हर एक आदमी बग़ैर किसी तरह के झञ्झट के किसी भी चीज़ का सुन्दर फ़ोटो खींच सकता है, इससे फ़ोटोग्राफ़ी सीखकर रोज़ाना ५) रु० कमाना कोई बात नहीं। क़ीमत बक्स कैमेरा १), बढ़िया नं० १ का २।), फ़ोल्डिङ्ग कैमेरा (चित्र जैसा) ३), और सुपिरियर क्वालिटी ४॥)। हर कैमेरा के साथ १ दर्जन प्रिन्टिङ्ग पेपर, फिल्म, फ़ोटो धोने के कुल सामान और फ़ोटो खींचने की तरकीब पत्र मुफ़्त। डाक-ख़र्च ॥=)

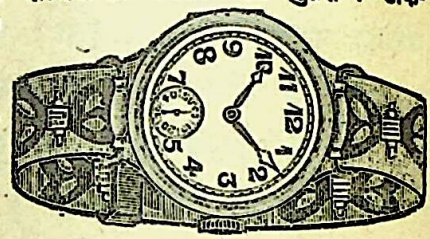

२।) रु० में सुन्दर कलाई की घड़ी। कलपुरजे मज़बूत और बिलकुल ठीक टाइम देने वाली यानी सुन्दरता में ५०) की घड़ी को मात करने वाली। गारंटी प्रत्येक की ३ साल। क़ीमत—गोल्ड निकेल की २।) बढ़िया सेकंड सूई वाली ३।), रेडियम (अंधेरे में दिखने वाली) ४) सोनहली ४॥) रेक्टेंगुलर (लम्बे) शेप निकेल की ६॥) और सुनहली ७)। डा० ख़र्च ॥=)। एक साथ ३ लेने से डा० ख़र्च माफ़।

पता—यंग इंडिया वाच कं० (सी)
नं० १ मछुआ बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता।

अमृताञ्जन

सर्वश्रेष्ठ दर्द-नाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, बात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डङ्क आदि सभी वेदनाओं में "अमृताञ्जन" आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृताञ्जन लिमिटेड

पो० बॉक्स नं० ६८२५, कलकत्ता
बम्बई : : मद्रास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

OVER 30 PRIZES in LALIMLI KNITTING CONTEST

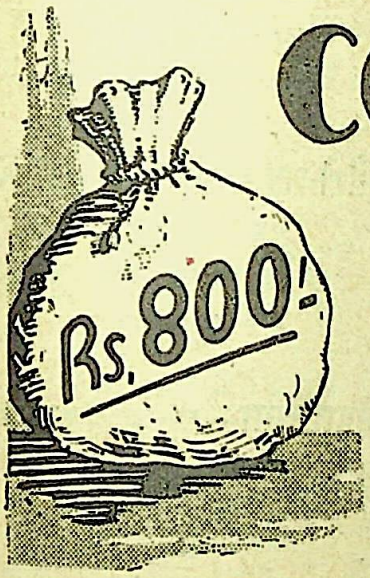

लाल इमली
बुनाई प्रतियोगिता

२ प्रथम पुरस्कार प्रत्येक १००) रु० के
२ द्वितीय पुरस्कार प्रत्येक ७५) रु० के
२ तृतीय पुरस्कार प्रत्येक ५०) के
एक विशेष पुरस्कार १००) रु० का, बुने हुए (Knitted or woven) शाल या कम्बल के लिए।
२० 'कांसोलेशन' पुरस्कार प्रत्येक १०) रु० के
५ बच्चों के पुरस्कार प्रत्येक १०) रु० के

कोई चीज़ लाल इमली की शुद्ध वृक्ष-मार्का ऊन से बुनकर ऊन के लेबलों के साथ ३१ जनवरी १९३९ से पहिले भेज दीजिए।

ऊन के मुफ़्त नमूने के लिए विभाग नं० १०० को लिखिए।

दि कानपुर ऊलन मिल्स,
कानपुर, यू० पी०

TREE BRAND

The CAWNPORE WOOLLEN MILLS ESTD 1876,
(BRANCH OF THE BRITISH INDIA CORPORATION LTD.)
CAWNPORE. U.P

498 I.P.B.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवश्यकता

है एक ४८ वर्ष के ब्राह्मण के लिए एक विधवा ब्राह्मणी की, जिसकी अवस्था ३० वर्ष से अधिक न हो, सुशील, सुन्दर सेवा-कार्य व गृह-कार्य में कुशल, आज्ञाकारी, शान्त स्वभाव, बिला किसी झमेले की हो। निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

पं० नागेश्वरनाथ,
११।२ बाँस का फाटक,
बनारस सिटी

मुसीबत की ज़ंजीरें काट दीजिये

जगद्-प्रसिद्ध सिद्ध यन्त्रों के द्वारा अपनी चिन्ताओं का अन्त कीजिए, प्रत्येक मनोरथ पूरा कीजिए और अधिक से अधिक धन पैदा कीजिए। पूर्ण विवरण के लिए हमारी अनमोल पुस्तक "ज्योतिष-प्रकाश उपनाम भाग्योदय" डाक-ख़र्च के लिए एक आना का टिकट भेजकर मुफ़्त मँगाकर लाभ उठाइए। पता :—

पं० वचानप्रसाद त्रिपाठी,
तान्त्रिक रमलाचार्य्य,
पो० कमलापुर, जिला सीतापुर

सखाराम—इसमें सामाजिक कुरीतियों के कारण होने वाले स्त्रियों के पतन और उनके सुधार का मार्ग बतलाया गया है। बड़ा रोचक उपन्यास है। मू० १)

ग्रह का फेर—लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसी का दिग्दर्शन इस उपन्यास में कराया गया है। मू० ॥)

गौरी-शङ्कर—आदर्श भावों से भरा हुआ यह एक सामाजिक उपन्यास है, जो लोगों के सामने एक नया आदर्श उपस्थित करता है। मू० ॥=)

मेहरुन्निसा—प्रसिद्ध मुग़ल-सम्राट् जहाँगीर की सम्राज्ञी मेहरुन्निसा (नूरजहाँ) का जीवन-चरित्र उपाख्यान के रूप में। मू० ॥)

आदर्श लीला—यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें दिखलाया गया है कि सती स्त्रियाँ किस प्रकार बड़े से बड़े प्रलोभनों और आपत्तियों में पड़ कर भी सतीत्व की रक्षा करती हैं। मू० १॥)

जनरल मैनेजर—

चाँद प्रेस, लिमिटेड

चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

WANTED!

500 DIABETICS

TO APPLY IMMEDIATELY!

Within the reach of 500 Diabetics, who apply immediately using the Coupon below, is the most amazing discovery of our time—A NEW THEORY OF TREATMENT which often brings noticeable relief almost overnight. Our FREE BOOK—a most valuable treatise on Diabetes and its treatment—explains why all other remedies fail, and why, too, this LATEST NEW DISCOVERY must succeed in every case.

NO DIETING! NO FASTING! NO INJECTIONS!

VALUABLE FREE BOOK

DON'T DELAY, APPLY TO-DAY!

A rapid cure awaits you. All the abnormities which cause the Diabetic condition will be removed—your whole system revived—and your lost powers restored. There cannot be any harmful reaction, nor any risk of dangerous complications arising, as is the case with other remedies.

VENUS RESEARCH LABORATORY,

Post Box No. 587, CALCUTTA.

A SUFFERER WRITES: "Before treatment I was passing the amazing amount of 32 grs. Sugar per oz. The Specific Gravity was 1042. After 6 weeks the Specific Gravity is 1020 and Sugar not measurable."

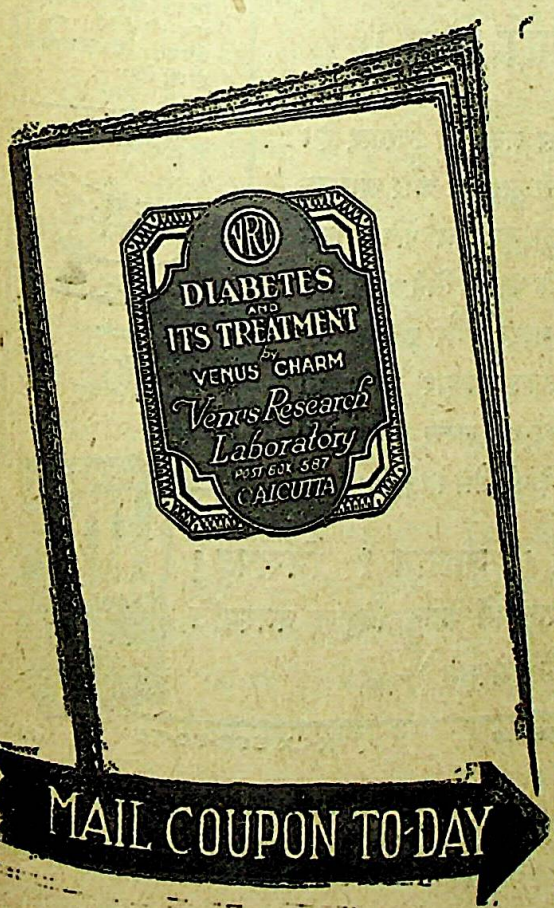

MAIL COUPON TO-DAY

CUT ALONG DOTTED LINE

COUPON

Please forward immediately a FREE Copy of your VALUABLE TREATISE, explaining your Modern New Theory of Treatment, and telling how I may CURE myself of DIABETES without Dieting, Fasting and Injection.

NAME.....

ADDRESS.....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

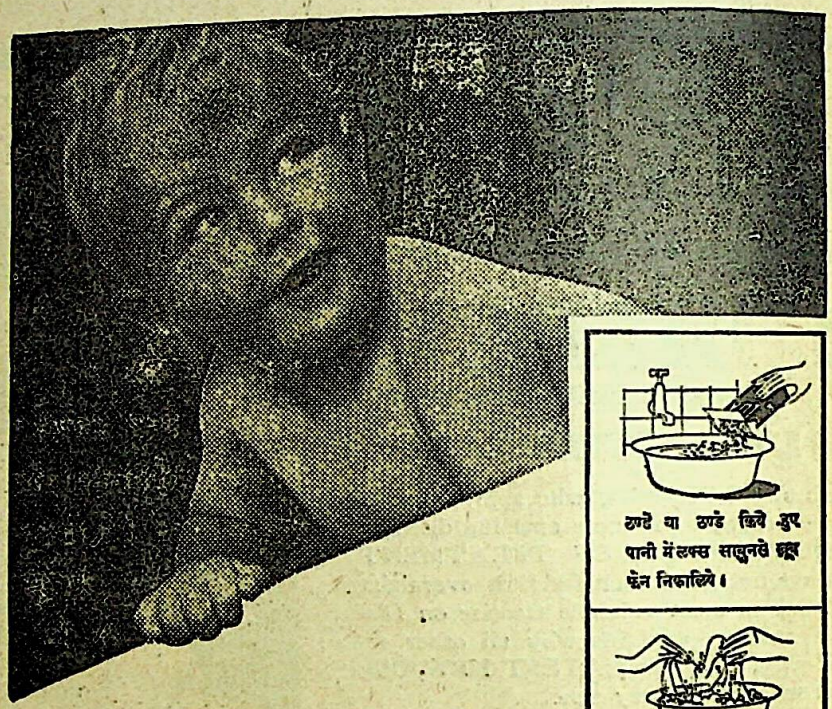

ठण्डे या ठण्डे किये हुए पानी में लक्स साबुनसे खूब फेन निकालिये।

लक्सकी फेनमें कपड़ेको भिगोइये और मुलायमीके साथ उसे सौंदिये। रगड़िये मत। जितनी जल्दी हो सके धोइये।

अच्छी तरह फींचिये। जोरसे दबाकर पानी मत निचोड़िये। कमजोर कपड़ोंको मुलायमीसे लपेट कर और आहिस्तेसे दबा कर पानी निकालिये। सुखाते समय धूप और तापसे बचाइये।

मांने मेरे कपड़ोंको लक्स से साफ किया।

बच्चोंके कपड़ोंके लिये केवल लक्स ही निरापद है। क्योंकि वे केवल लक्स हीसे मुलायम और आराम-देह रह सकते हैं। लक्सकी मातदिल फेन आपके फ्राकों और अन्दर पहननेके वस्त्रोंके लिये भी अच्छी है। इससे कपड़ा बहुत जल्दी और अच्छी तरह साफ होता है और इसका व्यवहार करना भी आसान है। सबसे बढ़कर तो लक्स निरापद है। लक्ससे धोये जानेपर कपड़े नये जैसे रहते हैं।

लक्स तेज ! आसान ! निरापद !
भारतवर्षमें केवल विशुद्ध वनस्पति तैलोंसे प्रस्तुत।

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED X-LX 568-50-55 HINDI

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारी शिक्षा-प्रणाली का पुनर्निर्माण

[श्री० नन्दगोपालसिंह सहगल]

जब से भारतवर्ष के सात प्रमुख प्रान्तों में कॉङ्गरेसी मन्त्रिमण्डलों की स्थापना हुई है, देश के सामने राष्ट्रीय-पुनर्निर्माण का प्रश्न एक नये ही रूप में उपस्थित हुआ है। अब तक हम इस सम्बन्ध में कोई विस्तृत योजना कार्य रूप में परिणत कर सकने में असमर्थ थे, इसलिये हमारी शक्ति अधिकांश में प्रचलित प्रणाली की त्रुटियों का उद्घाटन करने और उसके लिये उत्तरदायी शासकों की आलोचना में ही व्यय होता था। पर अब यह अवस्था बदल गई है और शासन-सत्ता वास्तविक रूप में नहीं तो कम से कम प्रकट रूप में हमारे हाथ में आ गई है और हमारी प्रतिनिधि-सभा कॉङ्गरेस द्वारा नियुक्त कार्यकर्ता उसका सञ्चालन कर रहे हैं। इस परिवर्तन ने हमारे दृष्टिकोण में महान अन्तर पैदा कर दिया है और अब हम केवल आलोचना को छोड़कर रचनात्मक स्कीमों की ओर अधिक ध्यान देने लगे हैं। इन योजनाओं में शिक्षा की योजना प्रमुख है।

शिक्षा का स्मरण आते ही एक काला सा चित्र हमारे नेत्रों के सामने खिंच जाता है और हमारा मस्तक किस प्रकार की लज्जा से झुकने लगता है। हमको स्मरण आता है कि हमारा देश, जिसे जगद्गुरु होने का दावा है, इस समय ऐसे अज्ञानान्धकार में पतित है कि उसकी तुलना संसार के छोटे से छोटे सभ्य देश से नहीं की जा सकती। जिस देश के निवासियों में से ९० प्रति सैकड़ा से अधिक अपना हस्ताक्षर कर सकने में भी असमर्थ हों, जिन्होंने अपने जीवन भर यह भी न जाना हो कि काला अक्षर कैसा होता है, वे लोग शिक्षा का प्रश्न उठाये जाने पर किस मुँह से सभ्य देशों की पंक्ति में बैठने का साहस कर सकते हैं।

इस दुरवस्था का कारण कुछ अंशों में तो हमारी अपनी और कुछ अंशों में विदेशियों द्वारा प्रचारित शिक्षा-प्रणाली की सदोषता ही कहा जा सकता है। इसमें अब किसी को सन्देह करने की गुंजायश नहीं है कि इस शिक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य सरकारी कार्य के सञ्चालन करने के लिये छोटे और बड़े क्लर्क तैयार करना था। राष्ट्रीय प्रगति और देशोत्थान न उसका उद्देश्य कभी था और न अब तक हो पाया है। उसके द्वारा हम लोग केवल चिट्ठी-पत्री करने, हिसाब-किताब रखने और आफ़िसों का कार्य-सञ्चालन की योग्यता से अधिक सीखने की आशा नहीं कर सकते। यह सच है कि वर्तमान समय में हमारे जो माननीय नेता देशोद्धार के कार्य में संलग्न हैं वे भी इन्हीं स्कूलों और कालेजों से सम्बन्धित रहे हैं, पर करोड़ों अन्य देशवासियों की स्थिति को देखते हुये ये थोड़े से व्यक्ति अपवाद स्वरूप ही समझने चाहिए,। उन्होंने जो उन्नति की है वह उनकी प्रकृतिदत्त असाधारण योग्यता और मानसिक शक्ति का ही परिणाम है। इतना ही नहीं, यह भी कहना अत्युक्ति नहीं है कि यदि उनको आरम्भिक अवस्था से ही किसी सुधरी हुई प्रणाली के अनुसार शिक्षा दी जाती तो वे इससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण कार्य करके दिखला सकते थे।

इन कारणों से हमारी राष्ट्रीय कॉङ्गरेस आरम्भ से इस शिक्षा-प्रणाली को बदलने पर ज़ोर देती रहती थी और ज्योंही उसको शासन सम्बन्धी कुछ शक्ति प्राप्त हुई, उसने अपने कार्य-क्रम को व्यावहारिक रूप देना आरम्भ कर दिया। अभी कॉङ्गरेसी मन्त्रिगण अपने कार्यालयों में बैठने के अभ्यस्त भी नहीं हुए थे कि वर्धा में महात्मा गाँधी ने शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन का प्रश्न उठाकर एक सर्वथा नवीन प्रणाली का निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया। उनकी प्रेरणा से देश के विभिन्न शिक्षा-विशारदों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ और उन सब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में परस्पर विचार-विनिमय होने लगा। इस मार्ग में जो अनेकों महान बाधायें हैं, उन पर भली-भाँति विचार किया गया। अन्त में महात्मा जी ने कुछ ऐसे सिद्धान्त प्रकट किये, जो समग्र देश के लिये लागू हो सकते हैं। उनका सारांश नीचे दिया जाता है :—

(१) किसी न किसी राष्ट्रोपयोगी उद्योग को केन्द्र में रख कर ही सारी शिक्षा का प्रबन्ध किया जाय।

(२) प्राथमिक शिक्षा को ही राष्ट्र की सर्वसामान्य और सम्पूर्ण शिक्षा का रूप दिया जाय।

(३) विद्यार्थियों के उद्योग से शिक्षकों के वेतन का खर्च निकालने का प्रयत्न किया जाय, अर्थात् उद्योग द्वारा अपनी पढ़ाई की गुरु-दक्षिणा देने का मार्ग राष्ट्र के युवकों और युवतियों को सुझाया जाय।

(४) प्राथमिक शिक्षा का माध्यम शुरू से आख़ीर तक विद्यार्थी की मातृ-भाषा या प्रान्तीय भाषा ही रहे। इस प्राथमिक शिक्षा में अङ्गरेज़ी को कहीं भी स्थान न दिया जाय।

(५) प्राथमिक शिक्षा के अन्त में राष्ट्रभाषा हिन्दी, हिन्दुस्तानी नागरी या उर्दू लिपि के द्वारा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाय।

(६) यदि पाठशाला में बनने वाली चीजें स्थानीय बाज़ार में न बिक सकें तो उन्हें उचित क़ीमत देकर खरीद लेने की ज़िम्मेदारी सरकार की मानी जाय।

(७) सरकार की दूसरी ज़िम्मेदारी यह हो कि जो नवयुवक प्राथमिक शिक्षा पूरी करके निकलें, उन्हें कम से कम १५) मासिक का काम वह दे।

महात्मा जी की उपर्युक्त योजना दो बातों को प्रधानतया दृष्टि में रख कर प्रस्तुत की गई है। प्रथम है हमारे देश की दरिद्रता और दूसरे शिक्षित नवयुवकों की बेकारी की समस्या। अगर इस देश की ३५ करोड़ की जनसंख्या को शिक्षित बनाने का भार पूर्णतया सरकार पर छोड़ दिया जाय और वह वर्तमान प्रणाली के अनुसार ही काम करती रहे तो इसकी पूर्ति किसी भी काल में हो सकनी असम्भव सी है। इस देश की दरिद्र जनता के लिये टैक्सों का वर्तमान बोझा ही असहनीय है, अगर उस पर शिक्षा-विस्तार की इस नई व्यवस्था का बोझा भी डाल दिया जाय तो उसका कचूमर ही निकल जायगा। धनवान श्रेणी के लोगों पर टैक्स लगा सकने की थोड़ी बहुत गुंजायश अवश्य है और उससे काफ़ी रुपया प्राप्त किया जा सकता है, पर इसमें भी दो बाधायें हैं। एक तो अभी तक लगाये गये कुछ टैक्स ऐसे अनीतिपूर्ण और देश के लिये घातक हैं कि उनका बन्द करना अनिवार्य है। उदाहरण के लिये शराब और अन्य नशे की चीजों के टैक्स का नाम लिया जा सकता है। अभी तक की सरकारी नीति के अनुसार इसी टैक्स की आय से शिक्षा का खर्च चलाया जाता था। कांग्रेस के प्रोग्राम में शराबख़ोरी और नशेबाज़ी को बन्द करने का प्रमुख स्थान है। इस प्रकार शिक्षा-प्रचार के लिये आय के वर्तमान साधन का समाप्त हो जाना बनी बनाई बात है और इस कमी को पूरी करने के लिये सरकार का कोई नया मार्ग ढूँढ़ना अनिवार्य है। दूसरी बाधा सरकार के सम्मुख यह भी है कि उसे और भी बहुसंख्यक सुधार-कार्यों को साथ ही साथ करना है, जैसे किसानों की दुरवस्था का सुधार; देश के स्वास्थ्य की सार्वजनिक रूप से उन्नति; मज़दूरों की स्थिति को उच्च करना आदि। इसलिये अगर वह नये टैक्सों से कुछ धन प्राप्त कर भी सके, तो उसे सबका सब शिक्षा-विभाग में ही खर्च नहीं कर सकती।

इस अवस्था को हृदयंगम करके महात्मा जी ने सब से अधिक ज़ोर शिक्षा-प्रणाली के पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से स्वावलम्बी बनाने पर दिया है। उनका मत है कि जिस प्रकार प्राचीन भारत के गुरु लोग शिष्यों को निःशुल्क शिक्षा देते थे, अनेक समय उनको अपने पास से भोजन-वस्त्र भी देते थे और अपनी संस्था का सञ्चालन शिष्यों से शारीरिक श्रम कराके पूरा करते थे, वही प्रणाली सुधरे रूप में फिर से स्वीकार की जाय। प्राथमिक शिक्षालयों में विद्यार्थियों का कुछ समय साधारण पढ़ाई-लिखाई के लिये खर्च किया जाय और शेष समय में किसी उद्योग की शिक्षा के रूप में उनसे शारीरिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अम कराया जाय। इस उपाय से दोहरा लाभ होगा, विद्यार्थीगण अपना व्यय स्वयम् उत्पन्न करके समाज और राज्य पर भार-स्वरूप न बनेंगे और साथ ही किसी विषय की ऐसी कार्यकरी शिक्षा प्राप्त कर लेंगे, जिससे शिक्षालय से निकलने के पश्चात् कम से कम अपना पेट भर सकने में समर्थ हो सकें।

ये ही दो मुख्य उद्देश्य महात्मा जी की शिक्षा-योजना के आधार हैं, और हम कह सकते हैं कि अगर इसे उपयुक्त व्यावहारिक विधि से कार्य रूप में परिणत किया जाय तो इससे देश का अमित उपकार हो सकता है। आलोचकगण इसमें बहुत सी त्रुटियाँ ढूँढ कर निकाल सकते हैं, वे कह सकते हैं कि इस मशीन के युग में इस तरह की हाथ की दस्तकारी व्यावसायिक दृष्टि से कैसे सफल हो सकती है? सीखने वाले विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई मामूली दर्जे की चीजें अच्छे कारीगरों की चीजों के मुक़ाबले में बाज़ार में कैसे बिक सकती हैं? इस योजना को देश भर में सार्वजनिक रूप से प्रचलित करने का खर्च कहाँ से मिलेगा, आदि और भी बहुत सी कठिनाइयाँ इसमें बतलाई जा सकती हैं, तो भी हमको कहना पड़ता है कि वर्तमान स्थिति को देखते हुये इसके सिवा दूसरा मार्ग बतला सकना प्रायः ही सम्भव हो। हम इसको मध्ययुग की चीज़ कह सकते हैं, आगे बढ़ने के बजाय पीछे की ओर लौटने के नाम से पुकार सकते हैं, पर इसके मुक़ाबले में अधिक व्यवहारिक और फलदायक प्रणाली बतला सकना कठिन तो नहीं, असम्भव सा है।

इस सम्बन्ध में एक बहुत खास बात हमको यह भी ध्यान में रखनी चाहिये कि महात्मा जी ने यह शिक्षा-प्रणाली विशेष रूप से भारत के देहातों को दृष्टि में रख कर तैयार की है। क्योंकि शहरों में तो शिक्षा का प्रचार थोड़ा बहुत हो चुका है, और वैसे गाँवों की अपेक्षा उनका परिमाण भी कम है। इसलिये किसी सार्वजनिक शिक्षा देने वाली प्रणाली में प्रथम स्थान यदि गाँवों को दिया जाय तो कुछ भी अनुचित नहीं। अगर हमारे देहातों का सुधार नहीं होता, हम उनको किसी उपाय से उपयोगी नहीं बना सकते, तो हमारा देशोन्नति का प्रयास व्यर्थ का एक स्वप्न मात्र है। वर्तमान शिक्षा देहात की दृष्टि से कैसी निरर्थक है, इस सम्बन्ध में महात्मा जी का कथन है :—

"मेरा खयाल है कि आजकल देहाती मदरसों में लड़कों को जो कुछ पढ़ाया जाता है, उससे देहात वालों का नुक़सान ही होता है। लड़के कुछ समय के लिये मदरसे जाते हैं, मगर वहाँ जाकर भी उन्हें असन्तोष रहता है। उनमें से अधिकतर या तो शहरी बन जाते हैं, या गाँव के प्रति अपना कर्तव्य भूल जाते हैं, और कुछ तो बदमाशी वगैरह भी सीख लेते हैं। इसलिये अपने अब तक के अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि हमारी मौजूदा प्रायमरी तालीम से गाँव वालों को कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता।"

आगे चलकर अपनी प्रस्तावित प्रणाली के स्वरूप के विषय में आपने इस प्रकार खुलासा किया है :—

"तो सवाल होता है कि इस प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप क्या हो? मेरा जवाब यह है कि किसी उद्योग या दस्तकारी को बीच में रख कर उसके जरिये ही यह सारी शिक्षा दी जानी चाहिये।.....लड़कों को जो कुछ सिखाया जाय किसी उद्योग या दस्तकारी के जरिये ही सिखाया जाय। आप कह सकते हैं कि मध्ययुग में हमारे यहाँ लड़कों को सिर्फ़ धन्धे ही सिखाये जाते थे। मैं मानता हूँ। लेकिन इन दिनों धन्धों के जरिये सारी तालीम देने की बात लोगों के सामने न थी। धन्धा सिर्फ़ धन्धे के खयाल से सिखाया जाता था। हम तो धन्धे या दस्तकारी की मदद से दिमाग़ को भी आला बनाना चाहते हैं। आज हालत यह है कि लुहार का लड़का लुहारी नहीं जानता और सुनार का सुनारी छोड़ बैठा है। उन्होंने किताबी तालीम तो पाई, पर अपने पेशे को भूल गये, उससे मुँह फेर लिया, अब गाँव छोड़ कर शहर में बसते हैं और मुहर्ररिरी करते हैं। अगर वे पढ़-लिख कर भी अपने पुश्तैनी धन्धे को न छोड़ते और उनमें तरक्की करके दिखलाते, तो आज हिन्दुस्तान की जैसी बुरी हालत हो गई है, न हो पाती। आज देहात में कहीं भी चले जाइये, अच्छे बढ़ई, लुहार या कारीगर के दर्शन नहीं होते। मेरे जो साथी गाँवों में बैठ कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काम कर रहे हैं, उनका भी यह तजरबा है कि वहाँ जो बढ़ई वगैरह हैं, वे अपने धन्धे के लिहाज़ से नाकामयाब से हैं। दूर क्यों जाइये, इस चर्खे को ही ले लीजिये, जो सारे हिन्दुस्तान में फैला हुआ था। मगर अङ्गरेज़ इसे इङ्गलैण्ड में ले गये और इतनी तरक़्क़ी कर दी कि बड़ी-बड़ी मिलें खड़ी हो गईं।"

अपनी उद्योग-धन्धे द्वारा शिक्षा देने की प्रणाली के सम्बन्ध में महात्मा जी ने तकली की मनोरञ्जक मिसाल पेश की है :—

"तकली को ही ले लीजिये। इस तकली का सबक़ हमारे विद्यार्थी का पहला सबक़ होगा, जिसके जरिये वह कपास का, लङ्काशायर का, और अङ्गरेज़ी सल्तनत का बहुत कुछ इतिहास सीख सकेगा। मैं ख़ुद भी यही कर रहा हूँ। मेरा पोता छः साल का है। वह लिखता तो बहुत मामूली है और लिखना मैं अभी उसके लिये ज़रूरी समझता भी नहीं, पर वह ज़्यादातर मेरे साथ हवाख़ोरी को जाता-आता है, और घर पर तकली चलाना भी सीखता है। इस तकली में आज उसे जो दिलचस्पी है और इसके जरिये वह जो इल्म हासिल कर रहा है, वैसा हमारे पुरखा शायद नहीं करते थे। यह तकली कैसे चलती है, इसका क्या उपयोग है और इसके अन्दर क्या-क्या ताक़त भरी पड़ी है, सो सब खेल ही खेल में बालक जान लेता है। इसी के जरिये थोड़ा गणित का ज्ञान भी उसे मिल जाता है। क्योंकि तकली पर जो सूत वह कातता है, अगर उस सूत के तार उससे गिनवाये जायँ और पूछा जाय कि कितने तार कते तो धीमे-धीमे इसके अन्दर से उसे गणित का भी काफ़ी ज्ञान कराया जा सकता है। और ख़ूबी यह है कि उसके दिमाग़ पर इस सबका ज़रा भी बोझ नहीं पड़ता। सीखने वाले को तो पता भी नहीं चलता कि वह कुछ सीख रहा है। वह अपने आप खेलता-कूदता और गाता रहता है, तकली चलाता रहता है और इसी में बहुत कुछ सीख लेता है।"

जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं, देश के शिक्षा-विशारद इस योजना को सर्वसम्मत से स्वीकार नहीं कर सकते। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। हमने आज तक शिक्षा-प्रणालियों के सम्बन्ध में जो कुछ सुना और सीखा है, यह उससे इतनी अधिक, अद्भुत और क्रान्तिकारी है कि हमारा चौंक पड़ना और तरह-तरह की शंकायें करना स्वाभाविक ही है। इस सम्बन्ध में कुछ शंकाओं का ज़िक्र हम ऊपर कर चुके हैं। अन्य शंकाओं का सारांश इन शब्दों में दिया जा सकता है :—

(१) इस योजना को हम कहाँ तक स्वावलम्बी कह सकते हैं ?

(२) विद्यार्थियों के परिश्रम से सात साल में भी अध्यापकों का खर्च निकल सकता है या नहीं ?

(३) जब देश के करोड़ों बालक एक आदर्श स्थिति में काम करेंगे तो देश के दूसरे कारीगर उनकी होड़ में कहाँ तक ठहर सकेंगे ?

(४) मदरसों में तैयार होनेवाले माल को सरकार कहाँ तक ख़रीद सकेगी ?

(५) बाज़ार भाव से ज़्यादा मज़दूरी देने की ताक़त राज्य में कैसे आयेगी ?

(६) किसी एक 'उद्योग' को बीच में रख कर शिक्षा के सब विषयों को उसके इर्द-गिर्द बैठाया जा सकेगा या नहीं ?

(७) विद्यार्थियों की मज़दूरी के साथ शिक्षक के वेतन को जोड़ देना कहाँ तक ठीक होगा ?

(८) अगर अपना पूरा वेतन निकलवाने के लिए शिक्षक विद्यार्थी से सिर्फ़ मज़दूरी ही मज़दूरी करायें तो उसका प्रतिकार कैसे किया जा सकेगा ?

(९) भूखे छात्रों से कोई काम नहीं लिया जा सकता। उनकी इस भूख का इलाज हम कहाँ तक कर सकेंगे ?

(१०) सात वर्ष से छोटे बालकों को अर्थात् शिशुओं की शिक्षा का क्या प्रबन्ध किया जायेगा ?

इस तरह के बहुत से ऐतराज़ और शङ्काएँ इस सम्बन्ध में लोगों ने प्रकट की हैं और कर रहे हैं। हम यह कहना नहीं चाहते कि वे सब निस्सार हैं अथवा उनके उठाने वाले अनजान व्यक्ति हैं। पर हम इतना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकते हैं कि हमारी वर्तमान स्थिति में कोई ऐसी प्रणाली व्यवहारिक नहीं हो सकती, जो विशेष तो क्या साधारण रूप से भी व्ययसाध्य है। इसलिये कुछ भी हो, यदि समस्त देश को थोड़े समय में शिक्षित बनाना चाहते हैं तो हमको किसी न किसी प्रकार की स्वावलम्बी शिक्षा का ही आश्रय लेना पड़ेगा। हमारे देश और विदेशों में भी ऐसी कुछ शिक्षा-संस्थाएँ आजकल चल रही हैं और पहले भी चलाई जा चुकी हैं। अन्तर केवल यही है कि वे एक छोटे रूप में थीं और यह प्रस्ताव इस प्रणाली को देशव्यापी तथा राष्ट्रीय रूप देने के लिये है। हम यह भी नहीं कहते कि प्रस्तावित प्रणाली में कहीं भी सुधार या वृद्धि न की जाय। पर इसके मूल सिद्धान्त हमारे देश के लिये व्यवहारिक और तत्काल उपयोगी हैं, ऐसा हमारा विश्वास है। भारत के परम हितैषी और शिक्षा-प्रचार के एकान्त भक्त वैज्ञानिक-प्रवर आचार्य प्रफुल्लचन्द राय ने भी इस योजना को इसी दृष्टि से देखा है। उन्होंने कहा था :—

"स्कूलों और कॉलेजों की डिग्रियाँ तो आजकल बेकारी की पर्यायवाची बन गई हैं। एम० एस-सी० और बी० एल० डी० की उपाधियाँ प्राप्त करने के बाद भी हमारे नवयुवक आज बेकार घूम रहे हैं, उनकी विद्या का कोई उपयोग नहीं हो रहा है। फिर भी वे उपाधियों का मोह छोड़ नहीं सकते, क्योंकि अभी तक उनका ख्याल है कि उपाधियों से उनका 'कैरियर' बनता है। किन्तु वे नहीं सोचते कि कितना ग़लत उनका यह ख्याल है। रामजे मैकडोनल्ड ने, जो बाद में इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री बने, किस विश्वविद्यालय की डिग्री पाई थी? बेचारे कोयले को खानों में काम करते थे। रूस का अधिनायक स्टैलिन मोची का काम करता था। जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने कभी किसी यूनीवर्सिटी की देहली पर क़दम नहीं रखा। बेचारा कूड़ा-कर्कट ढोया करता था। इस तरह दुनिया के बड़े से बड़े आदमी सब ग़रीबी से निकल कर अपने पुरुषार्थ और अपनी मेहनत से आगे बढ़े हैं। लेकिन हमारे नौजवान आज मेहनत-मज़दूरी से दिल चुराते हैं, काम को वे अपनी शान से हलका समझते हैं।.....हमारे नवयुवकों की इस सुकुमारता का परिणाम उनके स्वास्थ्य पर भी हो रहा है। बेकारी अलग से सवार है। पेट कैसे पाला जाय, यह भी एक विकट समस्या है।"

निस्सन्देह महात्मा जी ने जो प्रणाली स्थिर की है, वह हमारे देश के लिये कल्याणजनक है। चाहे हममें से कुछ उसे नापसन्द करें या अन्य मुल्कों के मुक़ाबले में घटिया दर्जे की समझें, पर अपनी परिस्थिति से विवश होकर हमको उसके अनुसार ही चलना पड़ेगा। अन्त में एक बात स्मरण रखनी आवश्यक है कि महात्मा जी ने उक्त योजना प्राथमिक शिक्षा को दृष्टिगोचर रखकर ही तैयार की है। ऊँचे कामों के लिये—जैसे इञ्जिनियर, डॉक्टर, यन्त्र-विद्या-विशारद, वैज्ञानिक—देश को कुछ कॉलेज में शिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होगी और उसकी व्यवस्था पृथक् से की जायगी।

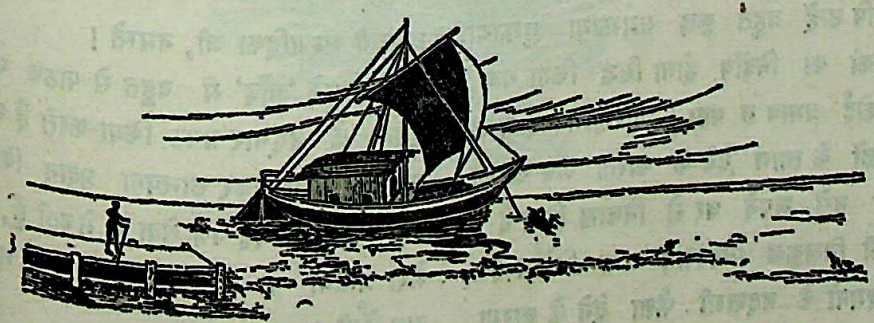

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

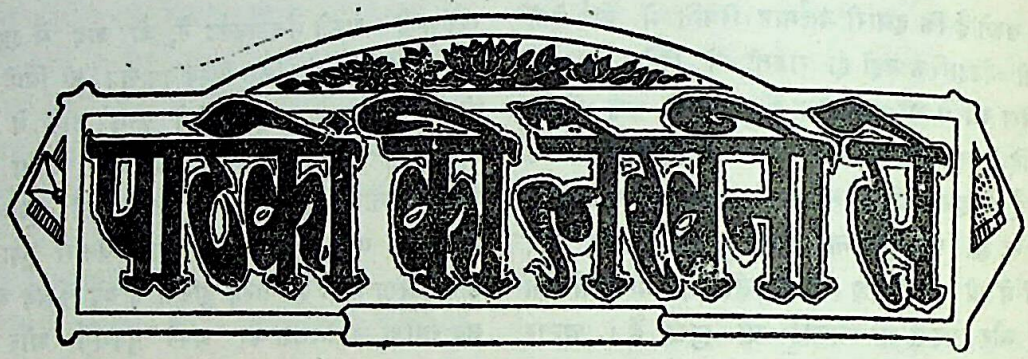

१

श्रीमती सम्पादिका जी,

आप अपने प्रसिद्ध पत्र 'चाँद' में सदैव दीन-दुखी स्त्री-पुरुषों के पत्र छाप कर तथा उन्हें सद्परामर्श देकर सान्त्वना प्रदान किया करती हैं। इसी कारण मैं भी यह पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। आशा है, आप इसे स्थान देने की कृपा करेंगी।

इस पत्र के द्वारा मैं आपको सरयूपारीण ब्राह्मण-समाज की एक अबोध बालिका की दयनीय तथा हृदय-वेधक कहानी सुनाना चाहता हूँ। इस लड़की के माता-पिता.....ज़िले के रहने वाले हैं। इसका विवाह हो चुका है। परन्तु गौना नहीं हुआ। विवाह के कुछ समय पश्चात् जब लड़की वयस्क हुई और उसके गौने का समय आया, तो गाँव के कुछ दुश्मनों ने झूठ-मूठ ही लड़की की आचरण सम्बन्धी बुराई करना शुरू किया। उन्होंने उसे चारों तरफ़ बदनाम कर दिया और यहाँ तक कि लड़की की ससुराल वालों को भी इसकी ख़बर कर दी। बदनामी की बात सुन कर ससुराल वालों ने लड़की को अपने यहाँ ले जाने से साफ़ इनकार कर दिया। यद्यपि उन्हें बहुत कुछ समझाया बुझाया गया और लड़की का निर्दोष होना सिद्ध किया गया, परन्तु उन पर कोई प्रभाव न पड़ा। परिणाम यह हुआ कि ससुराल वालों के त्याग देने के कारण अब लड़की के पिता ने भी उसे अपने घर से निकाल दिया है। वास्तव में लड़की बिलकुल निरपराध तथा निर्दोष है। व्यर्थ ही में दुश्मनों के बदनामी फैला देने के कारण, उसके ऊपर यह भीषण अत्याचार किया गया है। आज जब सब जातियाँ उन्नति की ओर बढ़ रही हैं, तब हमारे सरयूपारीण ब्राह्मण समाज की यह दशा है!

अब प्रश्न है लड़की के जीवन का। माता-पिता से बहिष्कृत कर दिये जाने पर वह एक प्रतिष्ठित सज्जन के यहाँ रहती है, जो कि अपनी पुत्री की भाँति उसका भरण-पोषण कर रहे हैं। यदि सरयूपारीण ब्राह्मण समाज का कोई स्वावलम्बी, सुशिक्षित तथा उदार युवक साहसपूर्वक इस लड़की को अपना कर, उसका जीवन सुधार सके तो उसकी बड़ी कृपा होगी। लड़की भी इसके लिए तैयार है। उसकी आयु इस समय १५ वर्ष, सुन्दर, स्वस्थ तथा सुशील है। जो सज्जन इस सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार करना चाहें, उन्हें पूरे विवरण के साथ "श्री० द्विवेदी, clo चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद" के पते से पत्र भेजना चाहिये।

—एक सरयूपारी

❀ ❀ ❀

२

श्रीमती सम्पादिका जी, नमस्ते!

आपके 'चाँद' में बहुत से पाठक पत्र द्वारा अपने हृदय के उद्गार प्रगट किया करते हैं और आप उन्हें यथोचित उत्तर देकर सान्त्वना प्रदान किया करती हैं। इसलिये मैं भी यह पत्र सेवा में भेजती हूँ, आशा है, आप मेरी त्रुटियों को न ख़्याल कर इसे छाप कर उचित राय देंगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैं केशरवानी वैश्य जाति की लड़की हूँ। जब मैं ... उम्र की थी, तभी मेरी माता का स्वर्गवास हो गया। ... पिता मेरी कुछ देख-भाल न करते थे, क्योंकि वे अपने ... के मशहूर गुण्डों तथा शराबियों में से थे। इस ... बात के कारण वे जल्दी ही प्रकृति के शिकार हुये। ... तरह मैं बचपन में असहाय हो गई। पिता की ... के बाद चाचा मेरी देख-भाल करने लगे। तेरह ... की उम्र में मैं एक आर्य युवक के शुद्ध प्रेम में ... गई। उस युवक ने मेरे बाबा से मुझसे शादी ... की इच्छा जाहिर की, किन्तु उसको फटकार ... पड़ी। इस बात से मुझे बड़ा रंज हुआ; खास ... यह सुन कर कि मेरी शादी एक वृद्ध महाशय से ... जाती है। इस तरह १४ साल की उम्र में मेरी ... ५८ साल के वृद्ध के साथ मेरे बाबा और चाचा ने, ... २५० रु० मास की आमदनी सिर्फ मकान किराये ... रुपयों के लोभ से वृद्ध महाशय से २५०० रुपये लेकर जबरदस्ती कर दी। यह वृद्ध देहात के रहनेवाले हैं, शहर में रोज़गार करते हैं। जब मैं इनके घर पर आई तब घर में इनके सिवा और कोई स्त्री-पुरुष नहीं था। मैंने इन्हें बहुतेरा समझाने की कोशिश की, कि हिन्दू बालिका एक दफ़े वर चुनती है, जिसे मैं चुन चुकी हूँ। आप मेरे पिता तुल्य हैं, मुझ पर अत्याचार न करें। किन्तु इन्होंने कुछ भी न माना और अपनी इच्छाओं की दासी समझ कर मुझ पर मनमाना अत्याचार किया, जिसके कारण मुझे बहुत से रोग हो गये हैं। यह महाशय कट्टर सनातनधर्मी हैं। मैं इनके अत्याचारों को दुखित हृदय से सहती आती हूँ। मेरा स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता जाता है। अगर मेरा छुटकारा इन वृद्ध महाशय से न हुआ तो वह दिन बहुत दूर नहीं है कि मेरा अन्त हो जावेगा।

—समाज की ठुकरायी हुई एक दुखिया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

[संग्रहकर्ता--"बिस्मिल" इलाहाबादी]

मुझको निदाएँ[1] आती हैं कुछ माँगता नहीं,
अल्लाह का है घर, किसी मुहताज का नहीं।
पहले तो पूछता था ज़माना हमारी बात,
अब है यह हाल कोई हमें पूछता नहीं।

* * *

तमाम उम्र बसर यूँ ही ज़िन्दगी होगी,
ख़ुशी में रंज, कहीं रंज में ख़ुशी होगी।
किसी की सई[2] से मिलता है फल किसी को कभी,
कोई नसीब से खाता है, कोई बोता है।

* * *

न करते ही बन आती है न रखते ही बन आती है,
हमारे दिल ही दिल में फिर रही हैं आरज़ू क्या-क्या।

—'दाग़' देहलवी

* * *

अगर नहीं मिला मिलने का आसरा तो है,
हमें इसी में है तस्कीने[3] दिल ख़ुदा तो है।
अजल[4] को देख के जेरे फ़लक[5] क़रार आया,
मुसीबतों की बिलाखिर एक इन्तहा तो है।

* * *

दिन गुज़रते ही चले जाते हैं,
लोग मरते ही चले जाते हैं।
जानते हैं कि यह ग़फ़लत के हैं काम,
फिर भी करते ही चले जाते हैं।

* * *

हँस के दुनिया में मरा कोई, कोई रो के मरा,
ज़िन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ हो के मरा।
जी उठा मरने से वह जिसकी ख़ुदा पर थी नज़र,
जिसने दुनिया ही को पाया था वह सब खो के मरा।

—'अकबर' इलाहाबादी

* * *

क्या रङ्ग जहाँ में हो रहे हैं,
दो हँसते हैं चार रो रहे हैं।
पहुँची है हमारी अब यह हालत,
जो हँसते थे वह भी रो रहे हैं।

* * *

रोएँगे हमें रुलाने वाले,
डूबेंगे वह जो डुबो रहे हैं।
दुनिया का यह रङ्ग और हमको,
कुछ होश नहीं है, सो रहे हैं।

—'अमीर' लखनवी

* *

यह इज्जत कोई कम है शेख साहब जिसपे मरते हैं
'कलक्टर' भी जब उनसे मिलते हैं 'शेकहैंड' करते हैं।

* * *

पढ़के अङ्गरेज़ी दिमाग़ उसका फ़लक[6] पर हो गया
जानता है ख़ुद को बावरची कि 'बटलर' हो गया।
अगर गोरे का हमसर[7] एक काला हो नहीं सकता
तो ज़ाहिर है कि इन्साफ़ आदमी का हो नहीं सकता

१—आकाशवाणी, २—कोशिश, ३—तसल्ली, ४—मौत, ५—आकाश के नीचे।

६—आकाश, ७—बराबर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

...ने इन मदरसों से जो मिलेगा हम समझते हैं,
मगर यह है तुम्हें कुलियों का टूटा हो नहीं सकता।

* * *

...ब बहादुरों से बहुत भागता है दिल
सब इसको 'डैम फूल' का खूमर[८] बनाएँगे
...ज़ीब[९] मग़रबी[१०] का इशारा यह मुझसे है
हम आदमी से अब तुझे बन्दर बनाएँगे

—'अहमक' फफूँदवी

* * *

...रे[११] आह से उड़ते हैं जब आँसू निकलते हैं,
इधर बरसात होती है, उधर जुगनू निकलते हैं।
...ओ तालियाँ हमसे नई तहज़ीब कहती है,
जहाँ 'स्पीच' देने रात को उल्लू निकलते हैं!

—'ज़रीफ़' लखनवी

* * *

...शिनासी नाम उसी का है कि दिल भर आए जब
दैर[१२] को बर्बाद या मसजिद को वीराँ देखिए।

—'शफ़ी' लखनवी

* * *

...को तड़पाती है आकर आशियाँ[१३] की याद भी
क्या क़फ़स[१४] में आके फिर सूए गुलिस्ताँ[१५] देखिए।

—'तबीब' इलाहाबादी

तुझे जिसने कुछ समझा उसी पर बेखुदी छाई
करिश्मा[१६] है तेरा हर बाख़बर को बेख़बर करना।
वह इन बातों को क्या जानें कि यह सब किसको कहते हैं
ख़बर लेना, ख़बर देना, ख़बर रखना, ख़बर करना

* * *

मिटता नहीं नसीब का लिखा मिटाने से
होगा जो होने को है जो होने को था हुआ।

* * *

ज़माने से निराले तुम ज़माने में नज़र आए
नहीं तो साथ देता है ज़माना भी ज़माने का।

—'कुशता' गयावी

* * *

अहले बातिन[१७] की निगाहों से तो मस्तूर[१८] नहीं
वह रगे जाँ से भी नज़दीक है कुछ दूर नहीं।
मैं हमेशा रहूँ दुनिया का यह दस्तूर नहीं
ऐसा जीना है, तो जीना मुझे मञ्जूर नहीं।
क़ाबिले क़द्र ज़माने में है उसकी हस्ती[१९]
अपनी हसतिये दो रोज़ा पे जो मग़रूर नहीं।
सबको हसरत है कि मिल जाय हयाते अबदी[२०]
आपके हाथ से मरना किसे मञ्जूर नहीं।
हज़रते 'नूह' ने 'बिस्मिल' को बनाया शायर
कौन कहता है ज़माने में यह मशहूर नहीं।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

८—आदी, ९—सभ्यता, १०—पश्चिमी, ११—...गारियाँ, १२—मन्दिर, १३—घोंसला, १४—...ड़ा, १५—बाग़ की तरफ़,

१६—तमाशा, १७—देखने वाले, १८—छुपा हुआ, १९—जीवन, २०—अमर होना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री-शिक्षा कैसी हो ?

इस समय हमारे देश में स्त्री-शिक्षा के अधिकाधिक प्रचार की माँग बड़े ज़ोरों से उठायी गई है। क्या पुराने और क्या नये, सभी तरह के विचार वालों ने इसकी आवश्यकता और उपयोगिता को स्वीकार कर लिया है। अब ऐसे लोग, जो सर्वथा स्त्री-शिक्षा का विरोध करते हैं और उसे एकदम त्याज्य अथवा हानि-कारक बतलाने का साहस करते हैं, ढूँढ़ने पर भी कठिनता से मिलेंगे।

पर जितना ही अधिक लोग स्त्री-शिक्षा की आवश्य-कता का अनुभव करने लगे हैं, उतना ही अधिक इस विषय में मतभेद बढ़ता जाता है कि यह शिक्षा किस प्रकार की हो। सच पूछा जाय तो अभी तक लोग इस विषय में किसी निर्णय पर पहुँच ही नहीं सके हैं और एक विचित्र प्रकार की उलझन में पड़े हैं। इसका मुख्य कारण योरोपियन और अमरीकन महिलाओं के सम्बन्ध में हमारी धारणा है। एक तरफ़ हम उन देशों को संसार भर का अगुआ, समृद्धिशाली और उन्नति की चोटी पर विराजमान देखते हैं, जिससे हमको यह अभिलाषा होती है कि हम भी उनका अनुकरण करें। दूसरी तरफ़ उनके यहाँ पाये जाने वाले, कम से कम हमारे विचारानुसार सामाजिक दोषों पर दृष्टि जाती है और हम डरने लगते हैं कि स्त्री-शिक्षा के प्रभाव से कहीं हमारे देश की भी ऐसी गति न हो। इस तरह हम यह निश्चय नहीं कर पाते कि हम इस विषय में पश्चिमीय देशों के अनुभव के आधार पर आगे बढ़ें अथवा अपने लिए कोई स्वतंत्र मार्ग ही खोज निकालें।

पाठकों को शायद यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह समस्या केवल हमारे ही देश में नहीं है। जापान, चीन, ईरान आदि और भी अनेक देशों की ऐसी ही स्थिति है। जापान के विद्वानों ने कुछ समय पहले इस विषय में काफी विचार और जाँच-पड़ताल की थी। वहाँ की महिला यूनीवर्सिटी के निर्माताओं ने आरम्भ में जो घोषणा की थी उससे इस अवस्था का पूरा आभास मिलता है। उसका एक अंश नीचे दिया जाता है।

"न तो हमारा उद्देश्य अमेरिका और योरोप की उच्च शिक्षा-संस्थाओं की नकल करना है और न अपने देश की पुरुषों की यूनीवर्सिटियों का मुक़ाबला करना। हमारा उद्देश्य ऐसा पाठ्य-क्रम प्रस्तुत करना है जो वर्तमान काल में स्त्रियों की मानसिक और शारीरिक दशा के अनुकूल हो। इससे उनकी उन्नति होगी और धीरे-धीरे उनका दर्जा भी ऊँचा हो जायगा।

बहुतेरे लोग स्त्री को केवल घर का काम करने वाली अथवा वंश-परम्परा को स्थिर रखने वाली एक मशीन अथवा यन्त्र ही समझते हैं। इस प्रकार की अनुचित भावना के विरुद्ध हम स्त्रियों को मनुष्यों के समान शिक्षा देने की आवश्यकता अनुभव करते हैं, जिससे उनमें भी अपने व्यक्तित्व की भावना जागृत हो।

पर हम उस आन्दोलन का समर्थन कर सकने में असमर्थ हैं, जो आजकल स्त्रियों के उद्धार के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बजाय हम इस बात पर ज़ोर देना चाहते हैं कि स्त्रियों के जीवन का प्रमुख अङ्ग गृहस्थ-आश्रम ही है। वही पत्नी और माता के रूप में उनका उपयुक्त स्थान है। यह सच है कि घर में स्त्रियों को एक यन्त्र अथवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हजार सदृश नहीं समझा जा सकता। उसे मानवीय और राष्ट्रीय भावना से युक्त समझना चाहिये। हमारा उद्देश स्त्रियों को इस प्रकार की शिक्षा देना है, जिससे वे अपने को जापानी-साम्राज्य की स्वतन्त्र सदस्य समझें और इस रूप में अपने जीवन का एक विशेष उद्देश्य अनुभव करें। ऐसा होने से वे अपने पत्नी और माता के कर्तव्यों का अधिक उत्तम रीति से पालन कर सकेंगी।

पर इसके साथ ही हमको यह भी समझना आवश्यक है कि कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी अवश्य होंगी, जो किन्हीं कारणों से अविवाहित ही रह जायँगी। इनके लिये हमको ऐसी व्यवस्था करनी पड़ेगी कि अपने जीवन के उद्देश्य को समझ सकें और अपनी शक्ति का अपनी रुचि के अनुकूल उपयोग कर सकें। हमको उनके कार्य-क्षेत्र को वैध मानना होगा। उनका जीवन भी राष्ट्र और समाज के लिये महत्वपूर्ण है।"

उपर्युक्त यूनीवर्सिटी के निर्माताओं की सम्मति एकांश में भारत पर भी लागू हो सकती है। यद्यपि जापान आज राजनैतिक दृष्टि से पश्चिमीय राष्ट्रों की समानता कर रहा है, पर सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से अब भी वह एक पूर्वीय देश ही कहा जा सकता है। यह तो स्पष्ट ही है कि पश्चिमीय स्त्री-शिक्षा प्रणाली में सद्गुणों के साथ अनेक त्रुटियाँ भी हैं, जो हमारी सामाजिक अवस्था की दृष्टि से अव्यवहार्य हैं। इसके सिवा यह भी स्मरण रखना चाहिये कि भिन्न-भिन्न देशों की शिक्षा-प्रणाली पर देश-काल का प्रभाव पड़ना भी अनिवार्य है। योरोप और अमरीका वालों की कुछ बातें प्राकृतिक रूप से हमसे भिन्न हैं और इसलिये हमारी और उनकी आवश्यकताओं में भेद होना भी स्वाभाविक है। इसलिये हमको किसी के पीछे पड़ कर अपनी जातीय विशेषताओं को भी खो देना बुद्धिमानी न होगी। ऐसा करने से हम न इधर के रहेंगे न उधर के। हमारा कल्याण इसी में है कि हम पक्षपात-शून्य होकर नये और पुराने का ख्याल छोड़ कर अपनी वर्तमान स्थिति और देश-काल का ख्याल रखते हुये अपने लिये उपयुक्त शिक्षा-प्रणाली का निर्माण स्वयं ही करें।

—एन० जी०

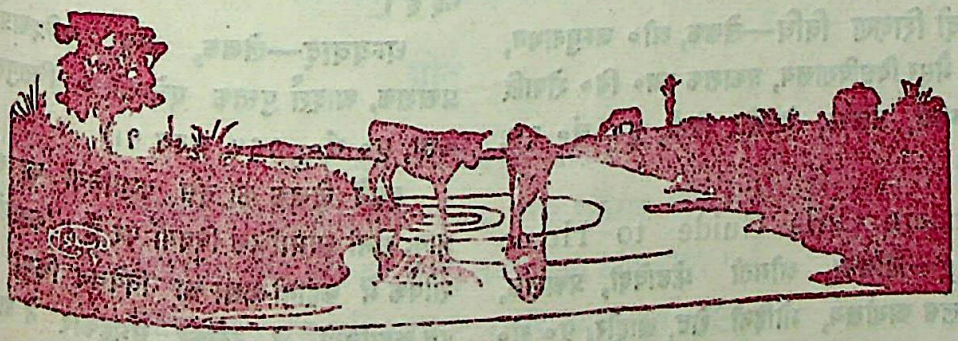

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

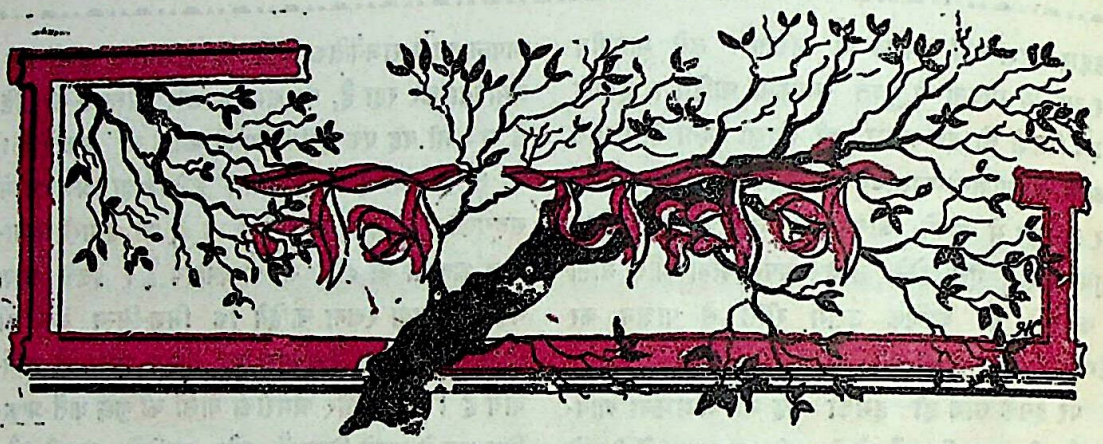

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास ने निम्न-लिखित दो पुस्तकें समालोचनार्थ भेजी हैं :—

(१) चुने हुये फूल—पृ० सं० १०३; मूल्य ॥)

(२) सच्ची कहानियाँ—पृ० सं० १०३; मूल्य ।=)

पहली पुस्तक में हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवियों की १६ कविताओं का संग्रह है। कुछ उर्दू कवितायें और कबीर, तुलसी आदि के कुछ दोहे भी संग्रह किये गये हैं। पुस्तक दक्षिण के विद्यार्थियों के उपयोग के लिये प्रस्तुत की गई है। दूसरी पुस्तक में विभिन्न पुस्तकों से ऐतिहासिक घटनायें एकत्रित की गई हैं। भाषा की दृष्टि से सब कहानियाँ अत्यन्त सरल चुनी गई हैं, और जहाँ पर मूल में कुछ स्थल कठिन थे, उनको सुगम कर दिया गया है।

हिन्दी शिक्षण विधि—लेखक, श्री० जम्मुनाथन, अध्यापक मैसूर विश्वविद्यालय, प्रकाशक एम० वि० शेषाद्रि एण्ड कम्पनी, बलेपेठ, बेङ्गलोर सिटी, पृ० सं० २८, मूल्य ≡)

Modern Girls Guide to Home making—लेखिका, श्रीमती फ्रेडावेदी, प्रकाशक, मार्डन गर्लस कार्यालय, मोहिनी रोड, लाहौर, पृ० सं० १५०, मूल्य ३)

इस पुस्तक में पश्चिमीय गृह-व्यवस्था का वर्णन भारतीय नवयुवतियों के दृष्टिकोण से किया गया है। इस कार्य के लिये इस पुस्तक की लेखिका सर्वथा उपयुक्त है। वह जन्म से योरोपियन हैं, पर इस समय एक भारतीय से विवाह करके इस देश के अनुकूल रहन-सहन रखती हैं। इसलिये उन्होंने उन्हीं पश्चिमीय बातों को इस पुस्तक में सन्निवेशित किया है, जो यहाँ के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। पुस्तक के पहले भाग में घर की सजावट का वर्णन किया गया है। दूसरे में स्वच्छता और सफ़ाई के सम्बन्ध में तथा अन्य उपयोगी बातों के विषय में उपयोगी बातें बतलाई गई हैं, तीसरे में भोजन के सम्बन्ध में आवश्यक बातों को समझाया गया है। प्रत्येक विषय चित्रों द्वारा समझाया गया है, जिससे पुस्तक की रोचकता और उपयोगिता बढ़ गई है।

धन्यवाद—लेखक, बाबू चन्द्रिकाप्रसाद वर्मा; प्रकाशक, आदर्श पुस्तक एजेन्सी ७ चितपुर स्पर, कलकत्ता, पृ० सं०, १६५ मूल्य १।)

इसमें लेखक की दस कहानियों का संग्रह है, जो प्रायः सभी सामाजिक विषयों पर हैं। 'कहानी का कहानी' शीर्षक में कहानी-कला का विवेचन किया गया है, उसे इन कहानियों में रखकर संग्रहकार ने अपनी अद्भुत रुचि का परिचय दिया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वरकार—
पं० डी० आपटे
संगीत-प्रवीण

खमाज—तीनताल

शब्दकार—
श्री सूरदास

इस राग में दो निषाद और आरोह में ऋषभ वर्जित है। वादी—गंधार, संवादी—निषाद। जाति—षाडव संपूर्ण, समय—रात का दूसरा प्रहर।

आरोहावरोह

सा ग म प ध नी सां। सां नी ध प म ग री सा।

पकड़

गमपधनीध, मपध, मग।

गीत

सब जग तजे प्रेम के नाते।
चातक स्वाति बूँद नहिं छाँड़त, प्रगट पुकारत ताते॥
समुझत मीन नीर की बातैं, तजत प्रान हठि हारत।
जानि कुरंग प्रेम नहिं त्यागत, जदपि व्याध सर मारत॥
निमिष चकोर नैन नहिं लावत, ससि जोवत जुग बीते।
ज्योति पतङ्ग देखि बपु जारत, भये न प्रेम-घट रीते॥
कहि अलि, क्यों बिसरति बातैं, सङ्ग जो करि ब्रजराजैं।
कैसे सूर श्याम हमैं छाँड़ैं, एक देह के काजैं॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थायी

प	ध	सां	नी	ध	प	ध	म	ग	म	प	ध	पध	सांनी	ध	—
स	ब	ज	ग	त	जे	ऽ	प्रे	ऽ	म	के	ऽ	नाऽ	ऽऽ	ते	ऽ
२				०				३				×			
—	—	—	—	म	नी	ध	नी	प	ध	म	ग	—	म	ग	म
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चा	ऽ	त	क	स्वा	ऽ	ति	बूँ	ऽ	द	न	हिं
२				०				३				×			
री	ग	नी	सा	सा	म	ग	म	प	ध	नी	सां	नीसां	रींसां	धनी	पध
छां	ऽ	व	त	प्र	ग	ट		का	ऽ	र	त	ताऽ	ऽऽ	तेऽ	ऽऽ
२				०				३				×			

अन्तरा

म	म	ध	नो	सां	—	सां	नी	—	नो	सां	—	ध सां	नो	ध	—
स	मु	ख	त	मी	ऽ	न	नी	ऽ	र	की	ऽ	बा	ऽ	तें	ऽ
०				३				×				२			
ध	नी	ध	प	ध	म	ग	म	गम	पध	नीसां	नी	सां	—	—	—
त	ज	त	प्रा	ऽ	न	ह	ठी	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	र	त	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
सां	मं	नं	मं	रीं	गं	सां	नी	—	नी	सां	रीं	नी	रीं सां	नी	ध
जा	ऽ	नि	कु	रं	ऽ	ग	प्रे	ऽ	म	न	हिं	स्वा	ऽ	ग	त
०				३				×				१			

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सां	नी	ध	नी	ध	प	ग	म	गम	पध	नीसां	नीध	प	ध	सां	नी
ज	द	पि	व्या	ऽ	ध	स	र	मा ऽ	ऽऽ	रऽ	तऽ	स	व	ज	ग
०				३				×				२			

तानें

(१)	स	ब	ज	ग	त	जे	ऽ	ऽ	सागम	पगम	पध	नीध	पम	गरी	सा
	२				०				३			×			
(२)	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गम	पध	नीध	पध	सांनी	धप	मग	रीसा
	२				०				३				×			
(३)	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गम	पध	नीसां	नीध	पम	धप	मग	रीसा
	२				०				३				×			
(४)	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सांनी	धप	मग	नीध	पम	धप	मग	रीसा
	२				०				३				×			
(५)	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सागम	पध	मग		गम	पध	नीध	पम	सांनी	धप	मग	रीसा
	२				०				३				×			
(६)	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सांगं	मंगं	रींसां	नीध	पम	गम	पध	नीध	सांनी	धप	मग	रीसा
	२				०				३				×			

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुत्ते ने बच्चे की जान बचाई

उन्नाव में एक कुत्ते के भूँकने से ६ महीने का एक बच्चा एक बन्दर के हाथ से बच गया। माता बच्चे को घर के बरामदे में छोड़ कर उसे नहलाने का टब लाने नीचे गयी। घर का कुत्ता वहाँ बैठा था। इतने में एक बड़ा बन्दर वहाँ आया और बच्चे को उठा ले जाना चाहा। कुत्ते ने बन्दर की पूँछ में काटा, मगर बन्दर के पञ्जा मारने से वह दूर हट गया और वहीं से भूँकने लगा। इस पर माता दौड़ी हुई आई और बच्चा बच गया।

* * *

तलाक़ का अधिकार मुसलमान स्त्रियों को हो

लखनऊ में बुधवार की शाम को अमीनाबाद के ज़नाना पार्क में मुसलमान स्त्रियों की एक बड़ी सभा हुई, जिसमें यह निश्चय हुआ कि मुसलमान स्त्रियों को 'खाली' (तलाक) का अधिकार हो जाना चाहिये और इसके लिये एक क़ानून बनना चाहिये। यह सभा अंजुमने इत्तिहाद मुसलमीन के उद्योग से हुई थी और बेगम ए० हाफ़िज़ ने अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया था।

* * *

विज्ञान के करिश्मे

लन्दन का समाचार है कि भविष्य में रोगी के विषाक्त पैर को काट कर अच्छा कर पुनः रोगी के शरीर में सिलाई कर देना कठिन न होगा। विश्वविख्यात उड़ाके कर्नल लिंडबर्ग तथा फ्रेञ्च वैज्ञानिक डॉक्टर अलेक्सिस केरल वर्षों से इस सम्बन्ध में अनुसन्धान कर रहे थे। उनके सफल होने में विशेष विलम्ब नहीं मालूम होता है। कर्नल लिंडबर्ग के कृत्रिम हृदय ने इस अनुसन्धान में बहुत सहायता दी है। लिंडबर्ग से भेंट होने से वर्षों पूर्व डाक्टर केरल पशुओं तथा मनुष्यों की पेशियों को शरीर से पृथक् रख रक्त द्वारा प्रस्तुत तरल खाद्य द्वारा पोषण कर रहे थे।

* * *

बालक गड्ढे में फेंका गया

झरिया में एक अति कौतूहलपूर्ण घटना हो गयी है। बारह वर्ष का एक बालक उठा कर बहुत दूर तक ले जाया गया और बाद में कोयले की एक पुरानी खान में फेंक दिया गया। गत सोमवार के सवेरे बलिहारी खान के कर्मचारी का बालक हाथ-मुँह धोने के लिये तालाब के निकट गया था। अचानक दो व्यक्ति जो काले कलूटे प्रतीत होते थे, पीछे से निकल आये। बालक की आँखें बाँध दी गयीं और उसे उठा कर लगभग पौन मील के फ़ासले पर ८० फ़ीट गहरी एक खान में फेंक दिया गया।

साधारण जनता की धारणा है कि यह भूतों की करतूत है।

* * *

साठ व्यक्ति डूबे

चौबीस परगना के बरुल गाँव के पास हुगली नदी में एक नाव के उलट जाने से ६० व्यक्ति डूब कर मर गये, जिनमें कितने ही स्त्रियाँ और बच्चे थे। नाव में क़रीब १०० व्यक्ति सवार होकर नदी को पार कर रहे थे कि बीच में ही तूफान आ जाने से यह दुर्घटना हुई।

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरकारी कर्मचारियों की पोशाक

बिहार असेम्बली में प्रश्नोत्तर के समय श्रीकृष्ण-वल्लभ सहाय ने सूचित किया कि दफ़्तरों में कुर्त्ता और धोती पहनकर आने का निषेध नहीं है। किन्तु यह उत्सव की पोशाक नहीं है, अर्थात् समारोहों के अवसर पर पहनने के लिये निर्दिष्ट पोशाकों में से यह नहीं है। सरकारी अफ़सरों को गवर्नर द्वारा निर्दिष्ट समारोह पोशाक सम्राट के प्रतिनिधि की हैसियत से पहननी होती है, स्थानीय सरकार के रूप में नहीं। जो अफ़सर इसके अधिकारी नहीं हैं, उनसे आशा की जाती है कि वे अचकन अथवा काले पाजामे पर काली अचकन पहनेंगे और शिर पर चोगा या झब्बा धारण करेंगे।

* * *

२६ इञ्च का बौना

नाहन (पञ्जाब) के एक बाज़ार में एक दूकानदार के रूप में एक बालखिल्य ढूँढ़ निकाला गया है। इस दूकानदार की आयु लगभग ३२ साल है और क़द केवल ३ फ़ीट २ इंच। वह अपने इस बौने शरीर को ईश्वर की देन और अपना सौभाग्य समझता है, क्योंकि उसको देखने ही के लिये एक बहुत बड़ी भीड़ लगी रहती और इससे उसका व्यापार बहुत ज़ोरों पर चल रहा है। वह अभी अविवाहित है और अपने जैसी बौनी स्त्री ढूँढ़ कर उससे शादी कर लेने की उसे आशा है।

* * *

ईरान में जवाहरात का ख़ज़ाना

कुछ समय पूर्व ईरान से ख़बर मिली थी कि वहाँ के बादशाह रजाशाह पहलवी उन जवाहरातों को बेंच डालेंगे, जो उनके पास निकले हुये पड़े हैं और उनकी बिक्री से प्राप्त धन का उपयोग राष्ट्र-निर्माण में करेंगे। ईरान के शाह के पास जवाहरातों का संसार में सब से बड़ा ख़ज़ाना बतलाया जाता है। ईरान के भूतपूर्व शाह मुज़फ़्फ़रउद्दीन जब यूरोप गये थे, तो लन्दन के एक मशहूर जौहरी ने उनकी पोशाक को देख कर कहा था कि यदि यह पोशाक ८ लाख गिन्नियों में भी बेची जाये तो सस्ती होगी। ईरान के ख़ज़ाने में अमूल्य हीरे, लाल, पुखराज, जमुर्द, मोती बदख़शानी और याक़ूत हैं और उनकी संख्या समय के साथ-साथ बढ़ती ही जाती है। इन्हें रखने का विशेष प्रबन्ध है।

* * *

अश्लील चित्र लगाने पर सज़ा

क़सूर (पंजाब) में दूकान में स्त्री पुरुष की नङ्गी तसवीर लगाने के अपराध में अदालत ने एक सिख को एक महीना क़ैद और दूसरे को १०) रुपये जुर्माने की सज़ा दी है।

* * *

सात साल की क़ैद से बच गया

रावलपिंडी में योगराज नामक एक हिन्दू युवक को स्थानीय मैजिस्ट्रेट ने इस अपराध में सात साल सख़्त क़ैद की सज़ा दी थी कि उसने भामादेवी नामक एक नर्स पर हमला किया। अपील पर हाईकोर्ट ने योगराज को बरी कर दिया।

* * *

हाथ का बना काग़ज़

मालूम हुआ है कि युक्तप्रान्तीय सरकार के उद्योग विभाग ने निश्चय किया है कि मन्त्रियों, पार्लामेण्टरी सेक्रेटरियों और असेम्बली तथा कौंसिल के अध्यक्षों को भविष्य में लिखने के लिये सिर्फ़ हाथ का बना काग़ज़ दिया जाय और सरकार के दूसरे अफ़सर हिन्दुस्तानी मिलों में बना काग़ज़ इस्तेमाल करें। गवर्नर की मर्ज़ी पर यह बात छोड़ दी गयी है कि वे चाहे जो काग़ज़ इस्तेमाल करें।

* * *

जनवासे से बारात लौटी

काशी के सिटी मजिस्ट्रेट श्री चाँदमल के इजलास में काशी आर्यकुमार सभा के मन्त्री श्री ज्वालाप्रसाद की सूचना पर चेतगञ्ज के श्री कन्हैया ने हाजिर होकर बयान दिया कि मेरी लड़की शान्ती की उम्र ११ वर्ष की है। मैं शादी नहीं करना चाहता, लेकिन मेरे ससुर नरोत्तम और मेरी सास उसकी शादी कर रहे हैं। शादी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आज ही होनेवाली है। इसपर मजिस्ट्रेट ने श्री नरोत्तम को नोटिस दी कि शादी रोक दो और कल अदालत में हाज़िर हो। रात को करीब ७ बजे जब नोटिस श्री नरोत्तम के घर पर पहुँची, उस समय द्वार-पूजा होकर बारात जनवासे में थी और शादी होने जा रही थी। श्री नरोत्तम ने कहा कि मैं शादी रोक देता हूँ और बारात लौटा देता हूँ।

* * *

घर में कान्स्टेबल घुसा

कटनी में एक मुसलमान हेड कान्स्टेबिल एक हिन्दू विधवा स्त्री के घर में घुसा। स्त्री को यह पता लगते ही कि कोई उसके घर में घुसा है, उसने बाहर से ज़ंजीर चढ़ा कर मुहल्ला वालों को आवाज दी और पुलिस में रिपोर्ट की। पुलिस कर्मचारियों ने आकर घटनास्थल की जाँच की और हवलदार साहब को बाहर निकाला। स्त्री की वीरता सराहनीय है।

* * *

स्त्रियों का व्यापार

जबलपुर में स्त्रियों के अपहरण और अवैध व्यवसाय सम्बन्धी एक मामले में मुंशीसिंह जाट और सूरज-नारायण को चार वर्ष सश्रम कारावास तथा विश्वनाथ नामक अभियुक्त को नौ मास सश्रम कारावास का दण्ड दिया गया है। अभियुक्तों के विरुद्ध यह अभियोग था कि वे रामकली और रामप्यारी नामक स्त्रियों को बहका कर उड़ा ले गये और उन्हें पञ्जाब में बेच दिया। कई दिन बाद रामकली उस व्यक्ति के यहाँ से, जिसके हाथ वह बेंची गयी थी, भागकर जबलपुर चली गयी।

* * *

हरिजनों का वाचनालय-प्रवेश

इन्दौर में महाशय खण्डेलवाला ५-६ मेहतरों को साथ लेकर महेश वाचनालय में घुस गये, जिससे कढ़िवा-दियों में बड़ी सनसनी फैल गई। कहा जाता है कि छोटे सराफ़े के वैष्णव भी कुछ महाजन बहुत दकियानूसी ख्याल रखते हैं। इन्दौर आर्य-समाज की स्वर्ण जयन्ती के समय जुलूस, जिसमें मेहतर भी थे, जब छोटे सराफ़े से गुज़र रहा था, तब इन दकियानूसों ने गाली-गलौज की थी और पत्थर फेंके थे। तभी से महेश वाचनालय के दर्वाज़े पर मन्दिर का बोर्ड लगा दिया गया और ज़ाहिर किया गया कि कोई भी अछूत अन्दर न आये। कुछ सुधारक विचार वाले महाजन भाई इसे सहन न कर सके। उन्होंने इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई तो उन्हें जाति से बाहर करने की धमकी दी गयी।

* * *

दहेज पर कन्या की बलि

पाली (राजपूताना) में घुस्करणा जाति में अत्यन्त निन्दनीय विवाह हुआ है। वर की उम्र इस समय पचास साल है और कन्या की उम्र केवल ६ साल। लड़की की मँगनी एक युवक के साथ की गई थी, परन्तु गरीबी के कारण लड़की का पिता अपने समधी की इच्छा पूरी नहीं कर सका।

* * *

सीतामऊ के राजकुमार की शुद्धि

जोधपुर की खबर है कि राजपूताना और मध्य-भारत के कुछ नरेशों में इस आशय का गुप्त पत्र-व्यवहार चल रहा है कि सीतामऊ के द्वितीय राजकुमार गोविन्दसिंह को फिर से शुद्ध करके हिन्दू बना लिया जाय। शायद राजकुमार की शुद्धि किसी राजपूताने के राठौर वंश की राजधानी में होगी और शुद्धि कार्य का सम्पादन हिन्दू महासभा का एक प्रमुख ब्राह्मण नेता करेगा। यह स्मरण रहे कि यह राजकुमार सन् १९३६ की अगस्त में ईसाई बनाये गये थे।

* * *

इङ्गलैण्ड में बेकारी

ब्रिटेन में इस समय बेकारों की कुल संख्या १७,७६,००० है। यह ४ मई की संख्या से ३१,००० ज्यादा है। यह कुछ कोयले और आयोगिक कारखानों के बन्द हो जाने के कारण हुई बताई जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डेनमार्क की महारानी को कुत्ते ने काट खाया

कोपेनहेगेन का समाचार है कि समुद्र-तट पर घूमते हुये डेनमार्क की महारानी अलेक्जड्रिना को एक कुत्ते ने बुरी तरह काट खाया। स्थानीय अस्पताल में मरहम-पट्टी करने के बाद महारानी को बिलटगार्डन के राज-प्रासाद में भेज दिया गया।

* * *

कराची की रक्षा के उपाय

पता चला है कि कराची में सैनिक, नागरिक तथा बन्दरगाह विभाग के अफ़सरों की एक महत्वपूर्ण बैठक होने वाली है। पेश किये जाने वाले विषय अत्यन्त गुप्त रक्खे गये हैं। किन्तु पता चला है कि बैठक में यह भी विचार किया जायगा कि यूरोप में युद्ध छिड़ जाने पर कराची में कौन से उपाय ग्रहण करना उचित होगा। कराची की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए अधिक सतर्कतापूर्ण व्यवस्था करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

* * *

हिन्दू माली को हटाया जाय

कलकत्ता की शाहजमी मस्जिद में मुसलमानों की एक सभा हुई, जिसमें इस बात की माँग की गई कि मुसलमानों की क़ब्रगाह में से हिन्दू माली तथा अन्य ग़ैर-मुस्लिम नौकरों को फ़ौरन हटा दिया जाय। क़ब्रगाह बोर्ड के मन्त्री को बरख़ास्त करने और ग़ैर-मुस्लिम प्रधान की जगह मुस्लिम प्रधान नियत किए जाने की माँग की गई।

* * *

मिस्र-सम्राट की बहिन की शादी

मिस्र के सम्राट फ़ारूक़ की बड़ी बहिन फौजिया का विवाह ईरान के राजकुमार मुहम्मद रिजा से होना तय हुआ है। राजकुमारी की आयु इस समय १७ और उक्त राजकुमार की १९ साल है। लगभग २०० साल के पश्चात् यह पहला अवसर है कि दो मुस्लिम सम्राटों में परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया जा रहा है। सबसे आखिरी मिसाल नादिरशाह के पुत्र और दिल्ली के उस समय के सम्राट की पुत्री के विवाह की थी।

* * *

अमरीका का युद्ध-प्रबन्ध

अमरीका में समुद्री-शक्ति-बल निर्माण के लिये ३५८०२००० डालर से कार्य प्रारम्भ किया जायगा। फिलहाल १९ नये जहाज और दो बड़े जहाज ३५००० टन के वजन के बनेंगे।

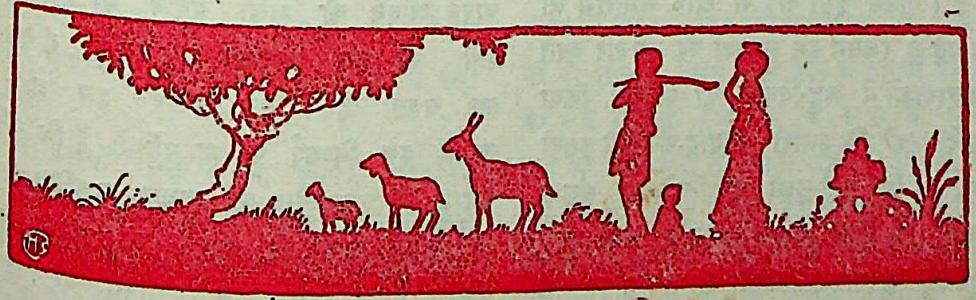

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

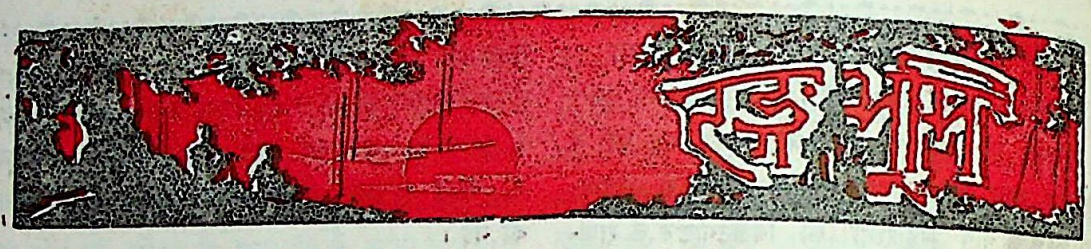

[सम्पादकीय]

बहु-विवाह निषेध बिल

श्रीमती सुब्बरायन भारतीय महिला-आन्दोलन की एक सुप्रसिद्ध नेत्री हैं। आप बहुत समय से भारतीय स्त्रियों की उन्नति के लिये चेष्टा कर रही हैं। कुछ महीने पूर्व आप केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा की सदस्या चुनी गई थीं और तभी से आपने स्त्रियों की भलाई की चेष्टा के लिये प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया है। आपने हिन्दू बहु-विवाह-विरोधी बिल को पेश करने की सूचना दी है, जिसके अनुसार कोई हिन्दू पुरुष एक स्त्री के रहते दूसरी स्त्री से शादी नहीं कर सकेगा। इस बिल के प्रस्ताव में आपने कहा है कि बहु-विवाह से पारिवारिक जीवन अत्यन्त दुखमय हो जाता है, और ऐसे विवाह के फलस्वरूप पहली स्त्री के साथ प्रायः अत्यन्त क्रूर और असभ्य व्यवहार होने लगता है। इसमें सन्देह नहीं कि उपर्युक्त बिल हिन्दू-समाज की वर्तमान स्थिति और धार्मिक विश्वासों की दृष्टि से अत्यन्त विवाद-ग्रस्त है। पाठक इसी अङ्क में श्री० सन्तराम जी का एक लेख पढ़ेंगे, जिसमें इस समस्या पर विचार करते हुये विशेष अवस्थाओं में बहु-विवाह का समर्थन किया है। इसमें सन्देह नहीं कि हमारी विवाह-परिपाटी इतनी खराब हो गई है कि पूर्ण-सुखी दम्पतियों की संख्या पाँच प्रति सैकड़ा भी मिल सकना कठिन है। शेष लोग किसी न किसी कारणवश अपने दाम्पत्य-जीवन से असन्तुष्ट और दुखी ही देखने में आते हैं। इसके सिवा सन्तानोत्पत्ति का भी एक बड़ा सवाल हिन्दुओं के सामने रहता है। उनके हृदय में सन्तान द्वारा पितरों को पानी-पिण्डा देने का अन्धविश्वास इतना ठूँस कर भर दिया गया है कि जब तक उनके एक पुत्र उत्पन्न नहीं हो जाता, उनके हृदय को शान्ति ही प्राप्त नहीं होती। अब कुछ लोग अपनी स्त्रियों के अशिक्षित, कुरूप अथवा अन्य प्रकार से अयोग्य होने का कारण पेश करके भी दूसरा विवाह करने लगे हैं। फिर ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जिनके दूसरा विवाह करने का कारण केवल विलासिता का भाव है। इस तरह दूसरा विवाह करने वाले व्यक्ति अपने कार्य का कोई न कोई कारण बतला सकते हैं, और कुछ बुद्धिमान कहलाने वाले लोग तर्क और क़ानून से उनका समर्थन भी कर सकते हैं, पर हम यह कहने को बाध्य हैं कि उनका कार्य किसी भी तरह न्यायपूर्ण अथवा प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। इस बात का समर्थन कौन पक्षपातहीन व्यक्ति कर सकता है कि पुरुष तो दूसरा विवाह करके अपने कष्टों अथवा असुविधाओं को दूर करने का मार्ग खोज निकाले और स्त्री पूर्ववत् दुर्दशा में ही पड़ी रहे। यदि पुरुष को इस बात का अधिकार है कि वह अपनी पहली पत्नी से किसी भी कारण-वश असंतुष्ट होने पर दूसरा विवाह करके अपने जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करे तो स्त्री को इस अधिकार से कैसे वंचित किया जा सकता है। इस प्रकार हम श्री संतराम जी के इस निष्कर्ष पर जा पहुँचते हैं कि यदि हिन्दू-समाज में एकपत्नीत्व का विधान प्रचलित किया जाय तो उसके साथ ही तलाक़ का क़ानून होना भी ज़रूरी है। हम इस युक्ति की सचाई को स्वीकार करते हैं और हिन्दू-समाज की वर्तमान अवस्था में उपयुक्त दोनों नियमों को आवश्यक समझते हैं। पर साथ ही हमारा यह भी मत है कि अगर तलाक़ के क़ानून बनने में कुछ देर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगती है तो उसके लिये बहु-विवाह-निषेधक क़ानून को रोकना उचित नहीं, क्योंकि यदि पुरुषों को उसके कारण किसी तरह की असुविधा प्रतीत होगी, तो वे स्वयं ही तलाक़ के क़ानून को प्रचलित कराने की चेष्टा करेंगे। हमको पूर्ण आशा है कि पुरानी स्मृतियों के जीर्ण-शीर्ण नियमों की ओर ध्यान न देकर व्यवस्थापिका सभा के सदस्य वर्तमान स्थिति को आँखें खोल कर देखेंगे और उसीके अनुसार उक्त बिल के सम्बन्ध में निर्णय करेंगे। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि बहु-विवाह की प्रथा के कारण इस समय बहुसंख्यक स्त्रियों को नारकीय जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है, जिनमें अधिकांश अवस्थाओं में तो उनका कुछ दोष भी नहीं होता। ऐसी घोर अन्यायपूर्ण प्रथा का जल्दी से जल्दी अन्त करना ही श्रेयस्कर है।

* * *

जापान की भर्त्सना

जापान ने इस समय अपने पड़ोसी और प्राचीन काल के गुरु चीन पर आक्रमण करके जिस कृतघ्नता और निम्नकोटि की स्वार्थपरता का परिचय दिया है, उससे उदार विचार वालों को दुःख हुआ है। इस सम्बन्ध में महाकवि रवीन्द्रनाथ ने एक आशा और उत्साहपूर्ण सन्देश चीन-निवासियों के पास भेजा है, जिसमें जापान के इस कृत्य की निन्दा की गयी है और उसे गहरी फटकार बतलाई गई है। चीन के अधिनायक चौंक काई शेक ने इस सन्देश को समस्त देश में तेलार के तार द्वारा प्रचारित करा दिया है। सन्देश में कहा गया है :—

"आपके पड़ोसी राष्ट्र ने, जो आपके सांस्कृतिक सम्पत्ति के दान का विशेष रूप से ऋणी है और अपने ही कल्याण के लिये आपके साथ बन्धुत्व स्थापित करना जिसका कर्तव्य था, आज अचानक पश्चिम से आयी हुई साम्राज्य-लोलुपता के वशीभूत होकर पूर्व के भाग्य को क्रूरता से गठित करने के विशेष अवसर को नष्ट कर दिया है। उन लोगों के मदमत्त गर्जन-तर्जन, निष्ठुर और निर्विचार नरमेध, शिक्षा-केन्द्रों के मटियामेट करने और मानव-सभ्यता के साधारण नियमों के प्रति उदासीनता और अवज्ञा दिखाने में एशिया का आधुनिक भाव कलंकित हो गया है। एशिया आज नये युग का अग्रदूत होने के लिये प्रयत्नशील है। अधिक दुःख की बात यह है कि पश्चिम का कोई-कोई गर्वित राष्ट्र बढ़ी हुई सम्पत्ति के बोझ से पतनोन्मुख होकर अपनी सुप्रसिद्ध सभ्यता के वाहकों के रक्त से कलंकित राजनीति की निन्दा डरते-डरते कर रहे हैं। मनुष्यों के बहुत से पवित्र अधिकार जहाँ निरापद थे, उसको नष्ट करने की कलंकमय सफलता के सामने वे घुटना टेक रहे हैं। इस समय को इस गम्भीर नैतिक विशृंखलता में हमारे लिये यही आशा करना स्वाभाविक है कि मनुष्य के इस ऐतिहासिक काल में जिस महादेश में बुद्ध और ईसा मसीह जैसे दो महापुरुषों ने जन्म लिया था, वही महादेश विज्ञ मनुष्यों की वैज्ञानिक उद्दण्डता में भी चरित्र के निर्मल विकास के सम्बन्ध में अपने दायित्व का पालन करेगा। सदियों की अवज्ञा के इतिहास में गाँधी का आविर्भाव क्या हमारी इस आशा की पूर्ति की पहली उज्ज्वल रेखा नहीं है। जो हो, जापान ने अपने विराट भविष्य को बिगाड़ दिया है।

जापान ने अपने 'बुशिदो' के इतिहास को कलंकित किया है। उसकी निन्दनीय युद्ध-यात्रा ने जिस प्रकार हमारे स्वप्न को तोड़ा है, वह बड़ा ही कष्टदायक है। जापान ने इस समय जो विजय पायी है, वह पराजय के रूप में अवश्य ही पलटेगी।

हम सिर्फ़ इसी आशा से ढाढ़स पा सकते हैं कि हिंसा से प्रेरित होकर जो आक्रमण आप लोगों के देश पर हो रहा है, उसमें आप लोग वीरता से दुःख को सहन कर लेंगे। उसी दुःख-कष्ट में राष्ट्र में नवजीवन प्राप्त होने की सम्भावना है। आप लोग ही पृथिवी के एकमात्र ऐसे महान् राष्ट्र वाले हैं, जिन्होंने सैनिक शक्ति की प्रशंसा किसी दिन राष्ट्र की गौरव-सूचक विशेषता मानकर नहीं की। वही सैनिक पशुशक्ति आज जब आप लोगों का देश दखल कर रही है तब हमारी यही हार्दिक प्रार्थना है कि आप लोग इस शक्ति-परीक्षा में विजयी हों और यही प्रमाणित कर दें कि जहाँ दुर्बल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृथिवी उच्च आदर्श का त्याग कर रही है, वहाँ आप लोग श्रेष्ठ मानवता की वास्तविक श्रेष्ठता को मानते हैं। अगर आप लोग इस समय बाहरी विजय न भी पा सकें तो भी आप लोगों की नैतिक विजय मलिन नहीं होगी। इस संग्राम द्वारा विजय का जो बीज आप लोगों के हृदय-क्षेत्र में बिखरेगा वह बार-बार अमर प्रमाणित होगा।"

* * *

देश में हड़तालों का ज़ोर

इस समय अन्य परिवर्तनों के साथ देश का आर्थिक वातावरण भी अत्यन्त क्षुब्ध हो रहा है और बेकारी तथा व्यापार की मन्दी के साथ श्रमजीवियों और मालिकों के झगड़े भी दिन पर दिन बढ़ते जाते हैं। श्रमजीवी मानवीय अधिकारों की माँग पेश करते हैं, अपने श्रम का न्यायोचित बदला चाहते हैं, मालिकों की कृपा पर जीवित न रह कर स्वावलम्बन की शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। इसके विरोध में मालिक अपने स्वत्वों का दावा करते हैं, जायदाद के 'पवित्र नियम' की दुहाई देते हैं, और विरोध किये जाने पर कारबार को स्थगित करके देश और सरकार को संकट में डालने की धमकी देते हैं। यह कलह अब दिन पर दिन उग्र रूप धारण कर रहा है। इस सम्बन्ध में सरकार द्वारा सन्-१९३७ का जो हिसाब प्रकाशित हुआ है, उससे विदित होता है कि उस वर्ष करीब ६॥ लाख मज़दूरों ने हड़तालों में भाग लिया, जिससे ९० लाख दिन का नुकसान हुआ था। इस समय भी कानपुर में जो भीषण हड़ताल महीनों से जारी है, उससे देश की अपार क्षति हो रही है। चालीस-पचास हज़ार व्यक्तियों का इतने समय तक बेकार बैठे रहना और करोड़ों की लागत के कारखानों का किसी उपयोग में न आना थोड़ी हानि नहीं है। हम समझते हैं कि इस प्रश्न का निपटारा सहज नहीं है। इसमें दोनों पक्षों का हित प्रायः परस्पर विरोधी जान पड़ता है, पर तो भी अगर देश में व्यवस्था कायम रखना है और आर्थिक उन्नति की गति को रुद्ध नहीं करना है, तो इस समस्या को हल करना ही होगा। हम विशेष रूप से मालिकों से ही अनुरोध करेंगे कि वे पुराने ख़यालात को छोड़ कर परिवर्तन की लहर के रहस्य को समझने और तदनुसार आचरण करने की चेष्टा करें। सदैव अपने स्वार्थ पर ही निगाह रखने से मनुष्य का काम नहीं चल सकता, देश-कालानुसार उसे उदारता का व्यवहार भी करना पड़ता है।

* * *

हरिजनों के साथ अन्याय

यद्यपि हरिजनों के उद्धार का आन्दोलन काफ़ी समय से चल रहा है और महात्मा गाँधी ने उसके लिये अपार परिश्रम किया है, पर अब भी उनकी वास्तविक स्थिति में बहुत थोड़ा अन्तर हुआ है। शिक्षा के सम्बन्ध में शायद उन्हें बहुत थोड़ी सी सुविधायें प्राप्त हुई हों, पर आर्थिक दृष्टि से उनकी अवस्था में कुछ भी अन्तर नहीं पड़ा है। वे लोग प्रायः पहले के समान ही गन्दे वातावरण में रहते हैं और उनकी आय पहले के समान ही आवश्यकता से कम बनी हुई है। इसका मुख्य कारण यह है कि सवर्ण कहलाने वाले हिन्दुओं के दृष्टिकोण में, जो वास्तव में हरिजनों की दुरवस्था के लिये अधिकांश में उत्तरदायी हैं, कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है। वे लोग उनको अब भी पददलित अवस्था में रखना चाहते हैं, जिससे वे मूकभाव से कम से कम लेकर उनकी सेवा करते रहें। इस नीच उद्देश्य की पूर्ति के लिये कुछ सवर्ण कहाँ तक नीचे उतर आते हैं, इसका कुछ आभास बिहार के हरिजन नेता डॉ० रघुनन्दन प्रसाद एम० एल० ए० के उस पत्र से लगता है, जो उन्होंने इस अवस्था का सुधार करने के सम्बन्ध में कॉङ्गरेसी मन्त्रि-मण्डल के सामने पेश किया है। उनका कथन है :—

"अछूतों के लिये स्थानीय संस्थाओं में जगहें सुरक्षित न रखी जाने के कारण उनके लिये अपने प्रतिनिधि भेजना असम्भव हो गया है। आगे आकर अछूतों के लिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थान सुरक्षित करने का यह अच्छा अवसर है। सरकारी कार्यों के सम्बन्ध में दलित जातियों को थोड़ी रियायत मिलने के कारण कुछ सवर्ण हिन्दुओं में ईर्ष्या का सञ्चार हो गया है। अक्सर वे अछूत होने का ढोंग कर अछूतों को दी गयी सुविधाएँ हड़पने की चेष्टा करते हैं। एक सर्कुलर जारी कर अछूत समझी जाने वाली जातियों का नाम घोषित कर देने से यह प्रश्न हल हो सकता है। कॉङ्गरेस द्वारा पद ग्रहण करने पर भी अछूतों की दशा में विशेष सुधार नहीं हुआ है।"

एक ओर तो सवर्ण लोग हरिजनों को लाभ न पहुँचने देने के लिये इस प्रकार नीचता का कार्य करते हैं कि स्वयं हरिजन कहलाने को तैयार हो जाते हैं, और दूसरी तरफ़ वे हरिजनों को नीच तथा अस्पृश्य बतला कर उन कामों के करने से भी रोकते हैं जिनको वे स्वयं कर सकने में सर्वथा असमर्थ हैं। इस सम्बन्ध में अभी भागलपुर से आये एक समाचार से विदित हुआ है कि वहाँ के मीट-मार्केट (बकरे मारे जाने के स्थान) में मार्क लगाने का एक स्थान खाली हुआ, जिसके लिये एक हरिजन ने प्रार्थना-पत्र भेजा। उसे आश्वासन भी दिया गया था कि वह काम उसे मिल जायगा। पर अन्त में उस जगह पर एक मुसलमान को नियुक्त कर दिया गया। जाँच करने पर मालूम हुआ कि हरिजन की नियुक्ति पर सवर्णों ने यह एतराज़ किया कि हम अस्पृश्य का छुआ माँस नहीं खा सकते। सवर्णों का यह दृष्टिकोण कितना संकुचित, हीनता का द्योतक और अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने वाला है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

* * *

भारतवासियों का स्वास्थ्य

हमारे देश में अन्य समस्याओं की भाँति सार्वजनिक स्वास्थ्य की समस्या भी विशेष महत्व की है। इसमें तो सन्देह नहीं कि हमारे अस्वास्थ्य का मुख्य कारण पौष्टिक पदार्थों का अभाव और हमारे यहाँ पाई जाने वाली कुछ विशेष कुरीतियाँ हैं। तो भी कितने ही रोग ऐसे हैं जिनमें हम अपने रहन-सहन को बदल कर तथा बाहरी उपायों का आश्रय लेकर काफ़ी कमी कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में जाँच करने के लिये कुछ समय से सरकार की तरफ़ से इण्डियन रिसर्च फ़ण्ड एसोसियेशन नामक संस्था की स्थापना की गई है, जो विभिन्न रोगों के मूल कारणों का पता लगाती है और उनसे बच सकने के कारगर उपायों की खोज करती है। गत वर्ष इसने मलेरिया ज्वर के सम्बन्ध में खोज-पड़ताल की, और उसे फैलाने वाले मच्छरों को पैदा होने से रोकने का उपाय निकाला। दिल्ली के पास परीक्षार्थ दो गाँवों को मलेरिया से मुक्त करने के लिये प्रयोग किये गये। कोढ़ के सम्बन्ध में कई स्थानों में अन्वेषण कार्य किया गया। इससे ज्ञात हुआ कि इस रोग की चिकित्सा में मक्खन निकले हुये दूध का व्यवहार विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध होता है। प्रसूता स्त्रियों के सम्बन्ध में भी जाँच की गई। इससे विदित हुआ कि इस देश में प्रति १००० ज़च्चाओं में २० मरीं, जब कि इङ्गलैण्ड में यह परिमाण केवल ३·८ है। यह भी पता चला कि इसका प्रधान कारण रक्त की कमी और गर्भावस्था में हानिकारक ढङ्ग का रहन-सहन है। एक नई बात एसोसियेशन की रिपोर्ट में यह बतलाई गई है कि पान खाने से कैंसर (दुष्ट-व्रण) की बीमारी होती है। जिस प्रदेश के लोग जितना अधिक पान का व्यवहार करते हैं, वहाँ उतना ही ज़्यादा यह रोग पाया जाता है। हम आशा करते हैं कि हमारे देशवासी इन खोजों के परिणाम से अवश्य लाभ उठायेंगे और उन तमाम हानिकारक आदतों का वे परित्याग करने की चेष्टा करेंगे, जिनके फलस्वरूप स्वस्थ-जीवन जैसे अमूल्य-रत्न को गँवा बैठते हैं।

* * *

शान्ति-सेना की स्थापना

कुछ समय पहले जब कि भारत के विभिन्न भागों में साम्प्रदायिक उपद्रवों का आधिक्य हो गया था, महात्मा गाँधी ने एक ऐसी शान्ति सेना की स्थापना का विचार प्रकट किया था, जो ऐसे अवसरों पर अपने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राणों को सङ्कट में डाल कर झगड़े को मिटाने का प्रयत्न करे। अब उसके अनुसार कई स्थानों में कार्य आरम्भ हो गया है। बम्बई में कुमारी नरीमैन ने इस कार्य को उठाया है और २५ स्वयंसेवक उक्त सेना में भरती किये हैं। अन्य स्थानों में भी कुछ आत्मत्यागी व्यक्ति इसमें भाग ले रहे हैं। महात्मा जी के इस प्रस्ताव की उच्चता और पवित्रता स्वयं सिद्ध है। इस प्रकार बिना हाथ उठाये निरीह व्यक्तियों के रक्षार्थ आत्मोसर्ग के लिये प्रस्तुत हो जाना साधारण व्यक्तियों का काम नहीं है। जो लोग वास्तविक अर्थ में त्यागी और तपस्वी होंगे वे ही इस कार्य का बीड़ा उठा सकते हैं। कुछ लोगों को इस उपाय की व्यवहारिकता में सन्देह भी है। उनका ख्याल है कि जो लोग इस प्रकार के उपद्रवों में भाग लेते हैं, वे उस समय ऐसे क्रूर बन जाते हैं कि निर्दोष व्यक्तियों का बलिदान भी उन पर कोई तात्कालिक प्रभाव नहीं डालता। इसके विपरीत वे ऐसे ही व्यक्तियों को अपना शिकार बनाने का मौक़ा ढूँढ़ा करते हैं, जो उनका मुक़ाबला न कर सकें। उपर्युक्त आशङ्का सर्वथा निस्सार है, यह तो हम नहीं कह सकते, पर इसके कारण शान्ति-कामियों का हतोत्साह होना आवश्यक नहीं। अब तक जो लोग इन आततायियों के हाथों मारे जाते या घायल होते हैं वे कायरों की भाँति जान बचाने को भागते अथवा अन्य प्रकार से ऐसा भाव प्रकट करते हैं। पर जो लोग वीरों की भाँति डटे रह कर अहिंसा का उच्च आदर्श प्रकट करेंगे, उनका प्रभाव कुछ भिन्न ही पड़ेगा। इसलिये शान्ति-सेना के सैनिकों के कार्य को तलवार की धार पर चलने से भी अधिक दुस्साध्य समझते हुये भी हम उसके पवित्र उद्देश्य की सफलता की कामना करते हैं।

हैज़े से बचना

आसान है

जिन्हें इस अद्भुत औषधि की शक्तियों का अनुभव है वे जानते हैं कि आमाशय की सब प्रकार की ख़राबियों :—कै, मतली, दस्त, अफ़ारा, पेट-दर्द, अम्ल पित्त, अपच हैजा, इत्यादि के लिए **अमृतधारा** एक रामबाण औषधि है। भोजन के बाद २-३ बूँद खा छोड़ना आमाशय के विकारों से और हैज़े से सुरक्षित रखता है। हैज़े के रोगी को आरम्भ में २-३ बूँद अर्क़ गुलाब में बार-बार देने से हैज़े के रोगी की ईश्वर रक्षा कर देता है। यदि बीमारी बढ़ चुकी हो तो साथ एक गोली प्राणदाता की भी दे दें।

आजकल इसका सेवन अमृत तुल्य

अमृतधारा—मूल्य बड़ी शीशी का २॥), आधी १।), नमूना ।।)

प्राणदाता—मूल्य १५ गोली १)

इलाहाबाद में एजेण्ट :—यूनानी मेडिकल हाल, रानी मण्डी

पता :—**अमृतधारा ३, लाहौर**

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निम्न-लिखित नए ग्राहकों के रुपये हमें जून तथा जुलाई माह में प्राप्त हुए हैं। ग्राहकों के स्मरण के लिए ग्राहक नम्बर व प्राप्त रक़म की सूचना दी जाती है। कृपया अपना-अपना ग्राहक नम्बर नोट कर लें और भविष्य में जब कभी किसी तरह का पत्र-व्यवहार इस संस्था से करना हो तो पत्र में ग्राहक नम्बर अवश्य लिख दिया करें, अन्यथा भूल होने की सम्भावना रहती है।

ग्राहक-नम्बर	नाम	प्राप्त-रक़म
४१०१८	डी० सी० एम० जैन हाई स्कूल, फ़िरोज़पुर	६॥)
४१०२०	श्रीयुत मदनलाल गलेडा, मद्रास ...	,,
४१०२१	श्रीमती प्रकाशवती श्रीवास्तव, नाथनगर	३॥)
४१०२२	श्रीमती चमेली देवी, अजमेर ...	६॥)
४१०२४	मिस चन्द्रकान्ता शर्मा कोटली, कश्मीर स्टेट	३॥)
४१०२४ ए	मिस कुसुम सिनहा, पो० बाँकीपुर	२)
४१०२५	प्रेम पुस्तकालय, पटना ...	६॥)
४१०२६	मिसेज़ गौर भटनागर, जयपुर ...	३॥)
४१०२८	मेसर्स गङ्गाधर बंशीलाल, औरङ्गाबाद	६॥)
४१०५९	ठाकुर जयगोपालसिंह, पो० वारटाल	,,
४१०६०	बाबू उमरावसिंह, कामदार, शेखावटी	,,
४१०६१	श्रीयुत रामकिशन अवस्थी, अजमेर	,,
४१०६२	ग्राम सुधार लायब्रेरी, डोहरीघाट ...	५॥)

निम्नलिखित ग्राहक-नम्बर के ग्राहकों का चन्दा यह अङ्क (जुलाई १९३८ का) भेज कर समाप्त हो जाता है, अतएव अगस्त १९३८ का अङ्क इनकी सेवा में वी० पी० द्वारा भेजा जायगा। ग्राहकों को चाहिए कि वे अपना चन्दा मनीआर्डर द्वारा भेज दें अथवा वी० पी० पहुँचने पर उसे छुड़ाने की कृपा करें।

९१२	१५५५	१६०४	१९८४	२५०२	४०२५	९९६७	९९७०	१०००७	१३८६२	१३८९४	१३९३१
४११५	४१७४	५१५१	६१५७	६४२१	६५०२	१४२०३	१८६६२	१८७९७	१८९९३	१९०२२	
						१९१९१	१९२१०	१९२२१	१९२४४	१९३५४	
						२६४१२	२६५३४	२८६११	२८८६४	३०१११	
						३०९३२	३०९३३	३०९५४	३०९९२	३१०३९	
						३१०४५	३१०७६	३१४३१	३३२४८	३३३१५	
						३३३१९	३३३२६	३३३२७	३३३४८	३३४५२	
						३३४६२	३३६६९	३४२२४	३५१४९	३५२३०	
						३५२५०	३५२७१	३५२७२	३५२८७	३५२९७	
						३५३११	३५३७२	३५३८७	३५३९१	३५४४०	
						३५४४९	३५४७७	३६३९८	३७०७८	३७०८२	
						३७०९७	३७११९	३७१४८	३७१६१	३७१६३	
						३७१८९	३७१९६	३७२११	३७२७३	३७२७९	
						३७२९७	३७७४५	३७९२३	३७९७६	३८०७९	
						३८५८३	३८६०६	३८६७९	३८६८२	३८६८६	
						३८६९४	३८६९८	३८७०६	३८७२४	३८७३२	
						३८७४५	३८७५३	३८७६४	३८७६८	३८७७३	
						३८७८०	३८८३२	३९२९७	३९३४७	३९३८९	
						३९४०७	३९४४७	३९४७१	३९७२२	३९९८१	
						४००४७	४००५२	४००५३	४००५८	४००८५	
						४००८७	४००८९	४००९१	४००९२	४००९३	
						४००९५	४०१००	४०१०१	४०१०५	४०१०६	
						४०१०७	४०१०८	४०११२	४०११४	४०११५	
						४०११६	४०११७	४०११८	४०१२१	४०१२२	
						४०१२३	४०१२४	४०१२५	४०१२८	४०१३०	
						४०१३१	४०१३२	४०१३४	४०१३६	४०१३७	
						४०१४३	४०१४४	४०१४९	४०१५५	४०१५६	
						४०१५७	४०९०४	४०१५८	४०१५९	४०१६१	
						४०१६२	४०१७४	४०१७५	४०१७६	४०१७७	
						४०१७८	४०१८६	४०१८७	४०१८८	४०१८९	
						४०१९१	४०१९२	४०१९३	४०१९४	४०१९५	
						४०१९६	४०१९७	४०१९८	४०२१५	४०२१७	
						४०२२२	४०२२८	४०२२९	४०३४३	४०४०८	
						४०४१७	४०५२६	४०५७९	४०७८५	४०७८६	
						४०७९९	४०८११	४०८१६	४०८१७	४०८२२	
						४०८३५	४०८३७	४०८६७	४०८६९	४०८९९	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रमणी कर्तव्य ॥=)
रानी जयमती १)
रमणी-रहस्य ॥-)
रानी सुन्दरी १।)
ललना बुद्धि प्रकाशिनी ।=)
लक्ष्मी देवी ॥=)
विवाह-कुसुम १॥)
सती सतीत्व १।)
सती वृत्तान्त १॥)
सीता बनवास ॥), ॥=), ।॥), १)
सती सीता ॥=), १)
सती पद्मिनी ।=), ॥=)
सावित्री १॥)
सती सावित्री ।=), ॥), ॥=)
सर्वस्व समर्पण ४)
स्वास्थ्य साधन २॥=), ३)
स्वास्थ्य और व्यायाम १॥) २)
स्वास्थ्य और योगासन १)
महिला हारमोनियम गाइड ॥), १)
रागिणी ४)
राजदुलारी १)
सुभद्रा ॥), १), ॥=) २), २।)
सहधर्मिणी ॥।)
स्त्री-दर्पण ॥)
सती सुलक्षणा ॥)
सावित्री देवी ॥)
सौभाग्य सुन्दरी ॥।)
स्त्री-समस्या २)
शर्मिष्ठा ॥=)
हिन्दू विधवा ।), ।=)
हिन्दू ललना ॥।)
सती ऊषा ॥)
सती सुनीति ॥।)
सुघड़ चमेली =)
सुई शिल्प शिक्षा १)
सुकन्या १।)
हिन्दू-स्त्री ॥।)
सत्य हरिश्चन्द्र =), =), ।-), ।=), ॥=)
स्त्री-कवि-कौमुदी ५)
सुलोचना सती ॥)
सीता की अग्नि-परीक्षा ।-)
सुर सुन्दरी १)
शर्मिष्ठा देवयानी ॥), २)
शाही पतिपरायण ॥=)
हिन्दू-कन्या १)
स्त्री और पुरुष (स० सा० म०) ॥)

नवयुवकोपयोगी

मणिमाला ३)
वल्लरी २॥)
मृदुदल २॥)
देवताओं के गुलाम ३)
अञ्जलि ॥।)
संक्षिप्त शरीर-विज्ञान ॥=)
हिन्दी अङ्गरेज़ी शिक्षा (५ भागों में) ९)
सन् ५७ के गदर का इतिहास १ सेट ८)
अङ्गरेज़ शिक्षावली १।)
गुदगुदी ॥)
विश्व-विहार ३)
आस्तिकवाद १)
धर्मपद १)
लम्बी-दाढ़ी २॥)
अपना सुधार ॥=)
आरोग्य-विधान ।-) ।=)
उद्योगी पुरुष ।=)
कर्मयोग ॥)
टॉल्स्टॉय की कहानियाँ १।)
टॉल्स्टॉय की डायरी ३)
दिव्य-जीवन (स० सा०) ।=)
पहेली-बुझव्वल ॥)
प्रवेशिका व्याकरणबोध १।)
प्रवेशिका हिन्दी रचना १।)
पृथ्वी के अन्वेषण की कथाएँ १)
ब्रह्मचर्य-विज्ञान ॥।=)
आहुतियाँ ॥।)
अङ्गरेज़ी शिष्टाचार २)
आकाश की सैर ॥)
इच्छाशक्ति के चमत्कार (त० भा०) ।-)
ईश्वरी बोध १)
सदाचार और नीति (त० भा०) ॥।)
संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा ॥=)
स्वास्थ्य की कुञ्जी १।)
हिन्दू-सङ्गठन १)
स्वदेश ॥=)
हिन्दी-करीमा ।-)
स्वास्थ्य साधन ३)
साहित्य-रत्न-मञ्जूषा १।=)
स्वाधीन-भारत ॥।)
सफलता की कुञ्जी ।), ॥)
समुद्र की सैर ॥।=)
हिन्दी-अङ्गरेज़ी शिक्षा १॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवीन पत्र-प्रकाश १।)
बाल-रामायण ॥-)
वायु पर विजय १)
मनुष्य जीवन की उपयोगिता ॥=)
मानसिक शक्तियों के बढ़ाने के उपाय =)
सदाचार-दर्पण २)
वक्तृत्व-कला १।)
विवेक वचनावली ।)
व्यावहारिक पत्र-बोध ॥=)
नीति रत्नमाला ।)
फीजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष ॥=)
फीजी में प्रतिज्ञाबद्ध कुलीप्रथा १)
बच्चों को सुधारने के उपाय ॥=)
ब्रह्मचर्य ही जीवन है ।॥)
भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे रीति-रिवाज ॥=)
मानव-जीवन १।)
शिक्षा-प्रणाली १)
आत्मोत्सर्ग ॥=)

बालकोपयोगी

गुदगुदी ॥)
चुहल १)
नानी की कहानी ४ भाग २)
आदर्श कथा-मञ्जरी २॥)
बताओ तो सही ।)
टूमल ।)
तीन तिकड़मी ।)
जवातीसमार खाँ ।-)
नटखट नत्थू ।)
राजा राममोहन केशवचन्द और दयानन्द ॥=)
बाल-कथा-मञ्जरी ।-)
खेल की तानें ।)
नन्दू का झोंपड़ा ।)
नाक कटाई ≡)
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ २)
आकाश की सैर ॥)
अदलू-बदलू ≡)
अद्भुत कहानियाँ ॥)
इलबिल की कहानी ≡)
टीपू सुल्तान ।)
गज्जू और गप्पू ≡)
जयमाल ।)
चेतसिंह और काशी-विद्रोह ।=)
नटखटी रीछू ≡)
नवेली कहानियाँ ।=)
सफाई और स्वास्थ्य ।)
बाल-शिक्षा -)
ब्रह्मचर्य पर महात्मा गाँधी के अनुभव ।)
विद्यार्थियों का स्वास्थ्य ।=)
बालबोध रामायण ॥)
बाल कथा कहानी (१५ भाग) प्रति भाग ।=)
मनोहर कहानियाँ ।)
युद्ध की कहानियाँ ।)
यूरोप की कहानियाँ ॥)
विश्व-विहार (सा० म०) ३)
स्वप्नों के चित्र ।॥)
सप्तसरोज ॥)
चित्रशाला)।॥
जासूसी कहानियाँ १), ।॥=)
चित्रशाला (दो भाग) ३।)
चित्रावली ॥=)
नवीन चाँदतारा १)
धूपदीप ।॥)
नई कहानियाँ ॥)
नवनिकुञ्ज १।)
सच्ची कहानियाँ ॥)
शाहज़ादा और फ़कीर ।॥)
श्रेष्ठ कहानियाँ १॥)
हिन्दी इन थर्टी डेज़ (Hindi in thirty days) १।)
बाल व्यायाम और खेल १॥)
आनन्द उपदेशमाला ॥=)
उसकी कहानी ॥)
खेल-खिलौना ।≡)
ब्रह्मचर्य-जीवन ।॥)
विद्यार्थी-उपदेश १॥)

काम-विज्ञान और शिशुपालन

सन्तानशास्त्र ४)
कामदर्शन ३)
दाम्पत्य शिक्षक ॥)
रतिरहस्यम् (संस्कृत हिन्दी) ३)
कामिनी कर्णधार १।=)
संतति निरोध रहस्य ॥=)
संतति-रहस्य ॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक-इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद प्रेस, लिमिटेड

चन्द्रलोक — इलाहाबाद

द्वारा प्रकाशित :: श्रेष्ठ साहित्य

यौवन के आँसू	४)
दिल की आग उर्फ़ दिलजले की आह ...	४)
मालिका (कहानी)	४)
सन्तान-शास्त्र	४)
आदर्श-चित्रावली (दूसरा भाग) ...	४)
चित्र-रेखा	३॥)
मालती	३)
भारत का धार्मिक इतिहास ...	३)
शिल्प-कुञ्ज	३)
स्त्री-रोग-विज्ञानम्	३)
देवताओं के गुलाम (कहानियाँ) ...	३)
मणिमाला (कहानियाँ) ...	३)
स्वामी चौखटानन्द	२॥)
बल्लरी (कहानियाँ)... ...	२॥)
मृदुदल (,,)	२॥)
स्फुलिङ्ग (,,)	२॥)
लम्बी दाढ़ी (विनोद) ...	२॥)
नवीन दाम्पत्य-जीवन में स्त्रियों के अधिकार	२॥)
दक्षिण अफ्रिका के मेरे अनुभव ...	२॥)
सती विपुला	२।)
नीति-निबन्धावली	२)
हवाई कहानियाँ	२)
शरीर और व्यायाम	२)
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ ...	२)
शैलकुमारी (उपन्यास) ...	२)
विवाह और प्रेम	२)
सङ्गीत-सौरभ	२)
पार्वती (चरित्र)	२)
सती रुक्मिणी	२)
सूर्यकान्त	२)
गुब्बारे की सैर	२)
शैतानी माया (उपन्यास) ...	१॥)
सती मदालसा	१॥)
व्रतकथा	१॥)
मोरध्वज (पौराणिक नाटक) ...	१॥)
सती चिन्ता (,,) ...	१॥)
चन्द्रकला (पौराणिक उपन्यास) ...	१॥)
सती पञ्चरत्न	१।)
चुहल (विनोद)	१)
सखाराम (उपन्यास) ...	१)
नीच (नाटक)	१)
देवयानी (पौराणिक नाटक) ...	१)
राजा शिवि (,,) ...	१)
विश्वामित्र (,,) ...	१)
विपद की कसौटी या मान्धाता ...	१)
अञ्जलि (कहानी)	॥)
ईसाई बाला (उपन्यास) ...	॥)
ग्रह का फेर (,,) ...	॥)
घरेलू चिकित्सा	॥)
प्राणेश्वरी (नाटक)	॥)
वीराङ्गना पन्ना (नाटक) ...	॥=)
गौरी-शङ्कर (उपन्यास) ...	॥)
गुदगुदी (विनोद)	॥)
मेहरुन्निसा (उपन्यास) ...	।)
शिशु-हत्या और नरमेध-प्रथा ...	

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी-साहित्य की उत्तमोत्तम पुस्तकें

स्त्रियोपयोगी

सन्तान-शास्त्र ४)
सती रुक्मिणी २)
स्त्री और सौन्दर्य ३)
स्त्री-शिक्षा २)
सङ्गीत-गायन-संग्रह १।)
तबला, हारमोनियम, बाँसुरी मास्टर १)
नवीन दाम्पत्य-जीवन में स्त्रियों के अधिकार २॥)
सती सीमन्तिनी ॥।)
दो विधवाएँ १॥।)
विधवा की आत्म-कथा २)
स्त्री-शिक्षा-सार ३)
प्रेम-पत्र १)
आदर्श पत्नी २)
आरोग्य-विधान ।–)
आदर्श चाची १॥)
अनुराग-वाटिका ।–)
आरोग्य साधन ।=)
अञ्जना देवी ॥।)
गृह-धर्म ॥।)
दम्पति-सुहृद १।)
सती सुकन्या १।), १॥), १॥।)
अवलोन्नति पद्यमाला ≡)॥
अन्योक्ति-कल्पद्रुम ।=)
संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ २॥)
प्राचीन हिन्दू माताएँ १)
भारत के स्त्री-रत्न (दो भाग) १॥।–)
माता और पुत्र १॥।=)
शैव्या-हरिश्चन्द्र २॥)
सती सीता ॥=)
सीता देवी ॥=)
सुभद्रा २)
शिल्पकुञ्ज ३)
सङ्गीत-सौरभ २)
सती पञ्चरत्न १।)
कल्याण-मार्ग का पथिक १॥)
कामनीक जीवन ॥)
कृष्ण-सुदामा १)
कमला कुसुम १)
कामिनी कर्णधार १।=)
गृहणी-गीताञ्जलि ।)
मृणमयी १।)
गृहलक्ष्मी १।)
जया ।–)
देवी सती ॥=)
देवी वीरा १॥)
देवी चौधरानी ॥), २)
दर्जी २)
नारी-महत्व ॥)
पार्वती २)
सती रुक्मिणी २)
चन्द्रकला १॥)
कामिनी कुसुम ।=)
कन्या-बोधिनी (चार भाग) ॥।=)॥
कामदर्शन ३)
गृहिणी भूषण ॥।=)
जेवनार ।=)
जनकनन्दिनी २)
दुर्गावती १), ॥)
तात्कालिक चिकित्सा १।), १॥।)
द्रौपदी और सत्यभामा सम्वाद ≡)
दुर्गा ।=)
प्रेम-पूर्णिमा २)
पतिव्रता रुक्मिणी ॥=)
प्राचीन हिन्दू माताएँ १)
पति मन्दिर १॥=)
बदरुन्निसा की मुसीबत ॥=)
भजन पुष्पाञ्जलि ॥=)
भारतीय स्त्रियों की योग्यता ॥=)
भारत रमणी-रत्न ॥।), ॥।=), १)
भारत रमणी-रत्न ॥।=)
मीरा, दया और सहजो ।–)
मधुमती ≡)॥
मीराबाई =)
माधुरी १)
नारी चरित माला ॥)
नारी रहस्य ॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक-इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रमणी कर्त्तव्य ॥=)
रानी जयमती १)
रमणी-रहस्य ॥-)
रानी सुन्दरी १।)
ललना बुद्धि प्रकाशिनी ।=)
लक्ष्मी देवी ॥=)
विवाह-कुसुम १॥)
सती सतीत्व १।)
सती वृत्तान्त १॥)
सीता वनवास ॥), ॥=), ।॥), १)
सती सीता ॥=), १)
सती पद्मिनी ।=), ॥=)
सावित्री १॥)
सती सावित्री ।=), ॥), ॥=)
सर्वस्व समर्पण ४)
स्वास्थ्य साधन २॥=), ३)
स्वास्थ्य और व्यायाम १॥) २)
स्वास्थ्य और योगासन १)
महिला हारमोनियम गाइड ॥।), १)
रागिणी ४)
राजदुलारी १)
सुभद्रा ॥), १), ॥=), २), २।)
सहधर्मिणी ॥।)
स्त्री-दर्पण ॥)
सती सुलक्षणा ॥)
माँवल देवी ॥)
सौभाग्य सुन्दरी ॥।)
स्त्री-समस्या २)
शर्मिष्ठा ॥=)
हिन्दू विधवा ।), ।=)
हिन्दू ललना ॥।)
सती ऊषा ॥)
सती सुनीति ॥।)
सुघड़ चमेली =)
सुई शिल्प शिक्षा १)
सुकन्या १।)
हिन्दू-स्त्री ॥।)
सत्य हरिश्चन्द्र =), =), ।-), ।=), ॥=)
स्त्री-कवि-कौमुदी ५)
सुलोचना सती ॥)
सीता की अग्नि-परीक्षा ।-)
सुर सुन्दरी १)
शर्मिष्ठा देवयानी ॥), २।)
शाही पतिपरायण ॥=)
हिन्दू-कन्या १)
स्त्री और पुरुष (स० सा० म०) ॥)

नवयुवकोपयोगी

मणिमाला ३)
वल्लरी २॥)
मृदुदल २॥)
देवताओं के गुलाम ३)
अञ्जलि ॥।)
संक्षिप्त शरीर-विज्ञान ॥=)
हिन्दी अङ्गरेज़ी शिक्षा (५ भागों में) ९)
सन् ५७ के ग़दर का इतिहास १ सेट ८)
अङ्गरेज़ शिक्षावली १।)
गुदगुदी ॥)
विश्व-विहार ३)
आस्तिकवाद १)
धर्मपद १)
लम्बी-दाढ़ी २॥)
अपना सुधार ॥=)
आरोग्य-विधान ।-) ।=)
उद्योगी पुरुष ।=)
कर्मयोग ॥)
टॉल्स्टॉय की कहानियाँ १।)
टॉल्स्टॉय की डायरी ३)
दिव्य-जीवन (स० सा०) ।=)
पहेली-बुझव्वल ॥)
प्रवेशिका व्याकरणबोध १।)
प्रवेशिका हिन्दी रचना १।)
पृथ्वी के अन्वेषण की कथाएँ १)
ब्रह्मचर्य-विज्ञान ॥।=)
आहुतियाँ ॥।)
अङ्गरेज़ी शिष्टाचार २)
आकाश की सैर ॥)
इच्छाशक्ति के चमत्कार (त० भा०) ।-)
ईश्वरी बोध १)
सदाचार और नीति (त० भा०) ॥।)
संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा ॥=)
स्वास्थ्य की कुञ्जी १।)
हिन्दू-सङ्गठन १)
स्वदेश ॥=)
हिन्दी-करीमा ।-)
स्वास्थ्य साधन ३)
साहित्य-रत्न-मञ्जूषा १॥=)
स्वाधीन-भारत ॥।)
सफलता की कुञ्जी ।), ॥)
समुद्र की सैर ॥।=)
हिन्दी-अङ्गरेज़ी शिक्षा १॥।)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवीन पत्र-प्रकाश १।)
बाल-रामायण ।।-)
यमु पर विजय १)
मनुष्य जीवन की उपयोगिता ।।=)
मानसिक शक्तियों के बढ़ाने के उपाय =)
सदाचार-दर्पण २)
वक्तृत्व-कला १।)
विवेक वचनावली ।)
व्यावहारिक पत्र-बोध ।।=)
नीति रत्नमाला ।)
फीजीद्वीप में मेरे २१ वर्ष ।।=)
फीजी में प्रतिज्ञाबद्ध कुलीप्रथा १)
बच्चों को सुधारने के उपाय ।।=)
ब्रह्मचर्य ही जीवन है ।।।)
भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे रीति-रिवाज ।।=)
मानव-जीवन १।)
शिक्षा-प्रणाली १)
आत्मोत्सर्ग ।।=)

बालकोपयोगी

गुदगुदी ।।)
चुहल १)
नानी की कहानी ४ भाग २)
आदर्श कथा-मञ्जरी २।।)
कलाओ तो सही ।)
चटमल ।)
तीन तिकड़मी ।)
पचासीसमार खाँ ।-)
नटखट नत्थू ।)
राजा राममोहन केशवचन्द्र और दयानन्द ।।=)
बाल-कथा-मञ्जरी ।-)
खेल की तानें ।)
नन्दू का झोंपड़ा ।)
नाक कटाई =)
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ २)
आकाश की सैर ।।)
अदलू-बदलू =)
अद्भुत कहानियाँ ।।)
इलबिल की कहानी =)
टीपू सुल्तान ।)
गज्जू और गप्पू =)
जयमाल ।)
चेतसिंह और काशी-विद्रोह ।=)
नटखटी रीछू =)
नवेली कहानियाँ ।=)
सफाई और स्वास्थ्य ।)
बाल-शिक्षा -)
ब्रह्मचर्य पर महात्मा गाँधी के अनुभव ।)
विद्यार्थियों का स्वास्थ्य ।=)
बालबोध रामायण ।।)
बाल कथा कहानी (१५ भाग) प्रति भाग ।=)
मनोहर कहानियाँ ।)
युद्ध की कहानियाँ ।)
यूरोप की कहानियाँ ।।)
विश्व-विहार (सा० म०) ३)
स्वप्नों के चित्र ।।।)
सप्तसरोज ।।)
चित्रशाला ।।।।
जासूसी कहानियाँ १), ।।।=)
चित्रशाला (दो भाग) २।)
चित्रावली ।।=)
नवीन चाँदतारा १)
धूपदीप ।।।)
नई कहानियाँ ।।)
नवनिकुञ्ज १।)
सच्ची कहानियाँ ।।)
शाहज़ादा और फ़कीर ।।।)
श्रेष्ठ कहानियाँ १।।)
हिन्दी इन थर्टी डेज (Hindi in thirty days) १।)
बाल व्यायाम और खेल १।।)
आनन्द उपदेशमाला ।।=)
उसकी कहानी ।।)
खेल-खिलौना ।=)
ब्रह्मचर्य-जीवन ।।।)
विद्यार्थी-उपदेश १।।)

काम-विज्ञान और शिशुपालन

सन्तानशास्त्र ४)
कामदर्शन ३)
दाम्पत्य शिक्षक ।।)
रतिरहस्यम् (संस्कृत हिन्दी) ३)
कामिनी कर्णधार १।=)
संतति निरोध रहस्य ।।=)
संतति-रहस्य ।।)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक-इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपन्यास और कहानी

दिल की आग उर्फ़ दिलजले की आह ४)
ईसाई बाला ।।।)
शैलकुमारी २)
रहस्यमयी १।।)
सखाराम १)
गौरीशङ्कर ।।=)
मेहरुन्निसा ।।)
आदर्श लीला १।।।)
शैतानी माया १।।।)
समाज-कण्टक या मामा २।।)
मणिमाला ३)
वल्लरी २।।)
मृदुदल २।।)
देवताओं के ग़ुलाम ३)
अञ्जलि ।।।)
ग्रह का फेर ।।।)
अनोखा जासूस २)
अमर अभिलाषा ३)
अफ़ीम का अड्डा ।।।)
आफ़त की पुड़िया १।।)
काजर की कोठरी ।।)
कृष्णवसना-सुन्दरी १।।।), २।)
ख़ूनी औरत १।)
गङ्गाजमुनी ५)
चतुर जासूस ।-)
जासूस के घर ख़ून १।।), २)
चन्द्रकान्ता सन्तति २४ भाग ७।।)
अमर अभिलाषा (श्री० चतुरसेन शास्त्री) ३)
भूतनाथ २१ भाग १६)
जादूगरनी १।)
डॉक्टर साहब १।।), २)
धनकुबेर १।।।) २।)
नराधम १=), १।।=)
बोलशेविक रहस्य १।।।), २।)
भीषण डकैती १।।), २।)
विचित्र बूढ़ा १।।।)
शैतानी करामात १।।), २।)
जर्मन जासूस १।।), २)
महापाप १।।)
रामप्यारी १।)
रूस में अङ्गरेज़ जासूस ।।=)
राजसिंह १।।), २)
रजनी ।।), ।।।=)
रागिणी ४)
रोहिणी ।=)
रणभूमि का रिपोर्टर १।।।)
रतिरानी १।।।)
रमणी-रहस्य ४।।)
राजदुलारी १।)
रामरखा का ख़ून =), ।)
श्यामा ।)
शैतान की शैतानी २)
हवाई डाकू १।।)
बसुमती =)
विचित्र ख़ून ।)
विजया १।।)
भागवन्ती २।)
भयानक विपत्ति ।)
भारतीय वीरता १।।।)
भीषण डकैती १।।)
भीषण सन्देह ।।)
मायाविनी ।)
माया १।।।)
माधवी
मृणमयी =)
मोहिनी ।।।)
मायारानी ।।=), ।।।)
महामाया =)
प्रतिशोध (सेट) ।।=), १)
प्रेम-पुजारी ३।।।)
षड्यन्त्रकारी १)
विचित्र चोर १।।)
पुष्पलता ।)
पाप की पहेली १)
प्रणवीर १)
प्रमकान्त १)
पगली १।।)
विद्रोही राज १), १।)
महाराज नन्दकुमार की फाँसी २)
स्त्रियों-बच्चियों का व्यापार २)
प्रेम-पिचकारी १।।)
हृदय की ताप ३)
गल्प-समुच्चय २)
वसीयतनामा २।।)
बङ्गाल की बुलबुल १)
बिहारी सतसई १)
बैर का बदला २।)
बिजली का पङ्खा ३)
बड़े बाबू २)
बुढ़ापा, उसके कारण और निवारण २)
वर्तमान भारत १।।)
फूलों का हार १।।)
बिस्मिल की शायरी १।।)
वीर-अभिमन्यु १)

जनरल मैनेजर—चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ चुनी हुई उत्कृष्ट पुस्तकें !

विश्वामित्र—इस नाटक में विश्वामित्र और वशिष्ठ का विवाद, विश्वामित्र की तपस्या, मेनका द्वारा उनकी तपस्या का भङ्ग होना, त्रिशङ्कु का सदेह स्वर्ग भेजा जाना, नई सृष्टि की रचना आदि अनेक अद्भुत विषय दिए गए हैं। गाने और कविताएँ भी बड़ी सुन्दर हैं। मू० १)

विवाद की कसौटी या मान्धाता—इस नाटक में अयोध्या के राजा मान्धाता की अद्भुत कार्य-दक्षता और सत्य-प्रियता दिखलाई गई है। नाटक के गाने और कॉमिक भी बड़े मनमोहक हैं। मू० १)

हिन्दू-त्योहारों का इतिहास—हिन्दू-त्योहारों के अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हुए भी लोग उनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इनको मानती हैं, वे भी इनकी वास्तविक उत्पत्ति से अनभिज्ञ हैं। इस त्रुटि की पूर्ति के लिए बड़ी छान-बीन के बाद यह पुस्तक तैयार की गई है। मू० १॥)

व्रत-कथा—जिस प्रकार सीप में मोती छिपा रहता है, उसी प्रकार हिन्दुओं के व्रतों में कितनी ही लाभदायक बातें भरी हुई हैं। यद्यपि उनका ऊपरी स्वरूप धार्मिक है, पर उन सबका आधार शरीर-विज्ञान पर है। इस पुस्तक में इसी बात को दृष्टिगोचर कर समस्त व्रतों का मर्म सरल भाषा में समझाया गया है। मू० १॥)

शैतानी माया—दैवी माया की बात बहुत सुनी गई है, लेकिन ज़रा इस शैतानी माया का मज़ा देखिए। इसमें घटनाओं की छटा, लोमहर्षक काण्डों, अद्भुत रहस्यों और भीषण व्यापारों का जाल बिछा हुआ है। मू० १॥)

समाज-कण्टक या मामा—यह उड़ीसा के श्रेष्ठ उपन्यास-लेखक श्री० फ़क़ीरमोहन सेनापति की सर्वोत्कृष्ट रचना है। यदि आप उच्चश्रेणी के सामाजिक उपन्यास पढ़ना चाहते हैं, तो इसे अवश्य मँगाइए। मूल्य २॥)

स्त्री-रोग-विज्ञानम्—इस पुस्तक में प्रत्येक स्त्री-रोगों का वर्णन, निदान तथा उसके दूर करने की औषधि विस्तृत रूप से लिखी गई है। स्त्रियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य निधि है। इसकी एक प्रति घर में रहने पर आपको डॉक्टर और वैद्यों की मिन्नतें न करनी होंगी। स्त्रियाँ अपनी औषधि स्वयं तैयार कर लेंगी। देखते-देखते इसकी ४,००० प्रतियाँ समाप्त हो चुकी हैं। तीसरा संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है। मू० ३)

दीर्घायु—इस पुस्तक में दीर्घ जीवन प्राप्त करने के जो उपाय बतलाए गए हैं, उनके अनुसार चलने से साधारण मनुष्य भी सब प्रकार के रोगों से मुक्त रह कर पूर्ण आयु प्राप्त कर सकता है। मू० २॥)

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारे बच्चे का सर्वोत्तम मित्र

शुद्ध और सूक्ष्म रूप से औषधि मिश्रित क्यूटीकुरा टैलकम बच्चे के कोमल चर्म को ठण्डा और आरामदेह रखता है और उसे प्रसन्न बनाता है। नहाने के बाद छिड़कने से यह खुजली, जलन आदि से बचाता है और चर्म को ठीक दशा में रखता है।

क्यूटीकुरा टैलकम बहुत ही उत्तम और शुद्ध है और इसलिए समस्त संसार के डॉक्टर और दाइयाँ बच्चे की कोमल खाल के लिए उसकी सिफ़ारिश करती हैं। यही कारण है कि स्त्रियाँ स्नान के बाद या जब कभी चर्म में जलन या खुजली होती है, इसका प्रयोग आनन्ददायक मानती हैं। यह पसीने को सोख लेता है, चर्म को चमकीला बनाता है और समस्त देह को तरोताज़ा रखता है।

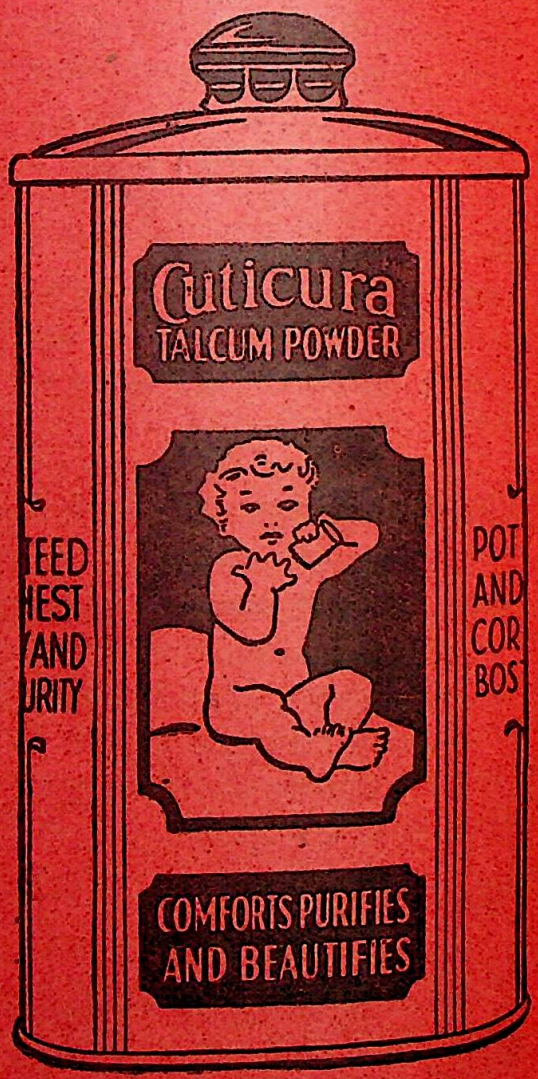

क्यूटीकुरा टैलकम क्यूटीकुरा टैलकम

सभी कैमिस्टों और बाज़ार के दुकानदारों के यहाँ मिलता है। आज ही क्यूटीकुरा टैलकम लीजिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ चुनी हुई उत्तम पुस्तकों का नया सेट

शीघ्र मँगाइए !

इस नए सेट में चुनी हुई ६ मनोहर पुस्तकें हैं, जो पाठकों के लिए बहुत उपयोगी, रुचिकर तथा ज्ञान-वर्द्धक हैं। सेट की पूरी पुस्तकें एक साथ मँगाने वाले पाठकों को २५) प्रतिशत कमीशन मिलेगा और साथ ही डाक-व्यय भी माफ़ रहेगा।

गुब्बारे की सैर

शिक्षाप्रद तथा मनोरञ्जक साहसिक उपन्यास। मूल्य २)

❀

कलियुगी कुबेर

संसार के अत्यन्त प्रसिद्ध धनाढ्यों तथा व्यवसायियों का जीवन-चरित्र। मू० १॥)

मालकोस

दाम्पत्य-जीवन सम्बन्धी विवेचनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक उपन्यास। मू० २)

❀

चार दिन

उपन्यास रूप में ग्रामीण-समाज का अत्यन्त सजीव तथा शिक्षाप्रद चित्रण। मूल्य केवल १)

गर्भ-विज्ञान

विवाहित स्त्री-पुरुषों के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक। मूल्य २॥)

❀

आदर्श चित्रावली

(दूसरा भाग)

अत्यन्त मनोहर तथा चुने हुए कलापूर्ण तिरङ्गे चित्रों का संग्रह। मू० ४)

इन छहों पुस्तकों का मूल्य कुल १३) रु० होता है। फुटकर पुस्तकें लेने पर केवल २५) रु० प्रतिशत कमीशन ही दिया जावेगा, डाक-व्यय माफ़ नहीं रहेगा।

जनरल मैनेजर, चाँद प्रेस लि०. चन्द्रलोक—इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. A—1154

वह राह दिखाती है

मसल मशहूर है कि स्त्री ही गृहस्थी को बनाती है। चाय पीकर राह दिखाना तो उसका स्वाभाविक महत् कार्य है, क्योंकि चाय तो वास्तव में स्त्री के अधिकार की ही चीज़ है। वही इसे बनाती और पिलाती है। स्त्री का हाथ लगकर इस पारिवारिक पेय में और भी ज्यादा मज़ा आ जाता है।

चाय तैयार करनेका तरीका

ताजा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन जरा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही, चाय पर ढाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिये, इसके बाद प्यालों में ढाल कर दूध और चीनी मिलाइये।

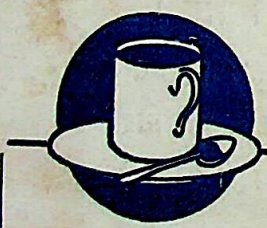

एकमात्र पारिवारिक पेय—भारतीय चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 94

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Printed and Published for and on behalf of the Chand Press Limited by Satya Bhakta

भारतीय साहित्य परिषद्, वर्धा (मध्य प्रांत)

पत्रिका—१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय साहित्य परिषद् के सदस्य

सभापति : महात्मा गांधी, वर्धा

उपसभापति : बाबू राजेन्द्रप्रसाद
सभापति, हिं. सा. सम्मेलन पटना

मंत्री : कन्हैयालाल मुन्शी, बम्बई

,, काका कालेलकर
अध्यक्ष, लिपि-समिति, वर्धा

खजानची : श्री सेठ जमनालाल बजाज, वर्धा

सदस्य : ,, पं० जवाहरलाल नेहरू, इलाहाबाद

,, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य
तिरुचेंगोडु (सेलम)

,, सरदार माधवराव कीबे
सभापति, मराठी सा० परिषद्, इंदौर

,, पुरुषोत्तमदास टंडन
उपसभापति हिं० सा० सम्मेलन, प्रयाग

,, एस० एन० सुब्बाराव
सभापति, कन्नड सा० प० बेंगलोर

,, सरदार पणिक्कर, पटियाला स्टेट

,, डाक्टर कालिदास नाग, कलकत्ता

,, कालेश्वर राव, बेजवाडा

,, देवशर्मा 'अभय' आचार्य गुरुकुल, कांगड़ी

,, पं० रामनरेश त्रिपाठी
हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

,, पं० माखनलालजी चतुर्वेदी
कर्मवीर सम्पादक, खंडवा

,, ब्रजलाल बियाणी, अकोला

,, जयचन्द्र विद्यालंकार, प्रयाग

,, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, सारनाथ

,, प्रो० बनहट्टी, भा० सा० परिषद्,
महाराष्ट्र शाखा, नागपुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय साहित्य परिषद्, वर्धा (मध्य प्रांत)

पत्रिका—१

बैठक की सूचना

३१-१०-३६ को अहमदाबाद में, बारहवें गुजराती साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर, दिन के १ बजे गांधीजी के निवास-स्थान पर, भारतीय साहित्य-परिषद् की दूसरी बैठक होगी।

'हंस' के ग्राहकों से

अप्रैल, १९३४ में, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने अपने इन्दौर वाले अधिवेशन में तमाम प्रान्तीय भाषाओं और उनके साहित्यकारों के साथ आपसी सम्बन्ध क़ायम करने के लिए एक समिति बनाई थी, और श्री कन्हैयालाल मुन्शी को उसका संयोजक बनाया था। श्री मुन्शी ने अपने इस उद्देश पूरा करने के लिए कुछ मित्रों की मदद से 'हंस-लिमिटेड' नाम की एक कम्पनी खड़ी की। इस कम्पनी ने स्व० श्री प्रेमचन्द्रजी के मासिक पत्र 'हंस' को ख़रीद लिया और उसे भारतीय साहित्य का मुखपत्र बनाया। यह पूरी उम्मीद थी कि 'हंस' भारतीय साहित्य-परिषद् को अपना मुखपत्र बना लेने के लिए सौंप दिया जायगा।

यह पत्र पिछले अगस्त तक इस लिमिटेड कं० की ओर से निकलता रहा। लेकिन जून-जुलाई के अंकों में बीकानेर के सेठ गोविन्ददासजी का 'सिद्धान्त-स्वातंत्र्य' नाम का एकांकी नाटक छपा। वह सरकार को काबिल-ए-ज़ब्ती मालूम हुआ और १०००) रु० की नक़द ज़मानत तलब की है।

साहित्य के ऊपर भी इस तरह की सरकारी रुकावट की बात क़बूल न होने से 'हंस-लिमिटेड' ने 'हंस' का प्रकाशन बंद कर दिया।

परिषद् का नया कार्य-क्रम

भारतीय साहित्य-परिषद् ने, अपने नागपुर के जलसे के बाद, भारतीय साहित्य के संगठन का काम नियमित रूप से शुरू कर दिया था। इस बीच में सरकार ने 'हंस' से ज़मानत माँग ली और इसीसे उसे परिषद् का मुखपत्र बना लेने की बात जहाँ की तहाँ रह गई। तब परिषद् ने अलग ही अपना एक नया मासिक निकालने का इरादा किया। यह भी आशा की जाती थी, कि परिषद् का यह मुखपत्र 'हंस' की कमी पूरी करेगा और जिन पाठकों को 'हंस' मिलता था, उन्हें यह नया मासिक पहुँचाने का इंतज़ाम किया जायगा।

मगर परिषद् का मुखपत्र निकालना ईश्वर को शायद मंज़ूर नहीं था। दिल्ली से इस पत्र के निकालने की तैयारियाँ हो रही थीं; मगर इसके लिए भी सरकार ने नक़द १०००) रु० की ज़मानत तलब की। साहित्य के प्रकाशन पर इस तरह ज़मानतों का अंकुश लगा रहे, यह बात अपने सिद्धान्त के खिलाफ़ होने से हमें इस नये मुखपत्र के प्रकाशन का भी इरादा मुल्तवी करदेना पड़ा।

पर जिन सहृदय सज्जनों को भारतीय साहित्य-संगठन का काम बहुत प्रिय है, और जिन्होंने 'हंस लिमिटेड' के "हंस" का दिल से स्वागत किया था, उन्हें निराश होने की ज़रूरत नहीं। इस उद्देश को पूरा करनें के लिए हमने प्रकाशन की एक नई योजना तैयार की है, जिसे हम इस पत्रिका में ज़ाहिर कर रहे हैं। आशा है, हमारी इस नई स्कीम पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जायगा।

इस आयोजना के मुताबिक परिषद् हर साल जुदी-जुदी प्रान्तीय भाषाओं की बहुत ऊंचे दर्जे की सुन्दर रचनाओं का दर्शन करानेवाली छोटी-छोटी पुस्तकें निकालेगी। यह पुस्तक-माला 'हंस लिमिटेड' के "हंस" के पुराने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्राहकों को भेजी जायगी और जो परिषद् के सदस्य बनेंगे उन नये ग्राहकों को भी इसका साहित्य भेजा जायगा।

हम यह आशा करते हैं, कि पुराने 'हंस' के पिछले अगस्त तक बने हुए ग्राहक ७) रु० सालाना चन्दा भेजकर भा० सा० परिषद् के सदस्य बन जायँगे। इस चन्दे के बदले में, जिसका ज़िक्र ऊपर हम कर चुके हैं, उक्त पुस्तकमाला की पुस्तकें सदस्यों को मुफ्त में दी जायँगी। 'हंस' के ग्राहकों ने ही आजतक भारतीय साहित्य के संगठन में दिलचस्पी लेकर इस प्रवृत्ति को उत्साह दिलाया है; इसलिए उनका यह फ़र्ज़ है कि जब अचानक आनेवाली विघ्न-बाधाओं ने इस काम में रुकावट डाली है, तब परिषद् को इसका कार्य-क्रम सफल बनाने में हर तरह से मदद पहुँचायें।

मासिक पत्र के ज़रिये तो सिर्फ इधर-उधर बिखरा हुआ साहित्य ही हम प्रकाश में ला सकते थे। पर हम अपनी इस स्कीम के द्वारा तो प्रान्तीय साहित्यों की सुन्दर चीज़ों को संक्षिप्त रूप अपने सदस्यों तक पहुँचा सकेंगे। अक्सर मानी हुई आपत्ति सुख देनेवाली होती है, इसका यह ताज़ा उदाहरण है। इससे और भी ऊंचे दर्जे के सुन्दर साहित्य के प्रकाशन का मौका हमारे हाथ लगा है। इसके लिए हम अपने साहित्य-संगठन के प्रेमियों को बधाई देते हैं।

❀ ❀ ❀

भारतीय साहित्य-परिषद् के सहायक सदस्य बनने की ख्वाहिश रखनेवाले सज्जन, एक बरस के लिए, ७) रु० मनीआर्डर से कृपाकर नीचेलिखे परिषद् के प्रधान कार्यालय में या शाखा-कार्यालय में भेज दें।

(१) मंत्री, भारतीय साहित्य-परिषद्,
वर्धा, (मध्य प्रांत)

(२) ,, साहित्य-संसद कार्यालय,
१११, एस्प्लेनेड रोड, बंबई,

(३) ,, सस्ता-साहित्य-मण्डल,
नया बाज़ार, दिल्ली

❀ ❀

भा० सा० परिषद् की प्रस्तावित पुस्तकमाला की फेहरिस्त

(माध्यम—हिन्दी-हिन्दुस्तानी भाषा और देवनागरी लिपि)

परिषद् की तरफ से किस किस्म का साहित्य निकलेगा, इसकी एक छोटी-सी नमूने की फेहरिस्त नीचे दी जाती है, जिसे शुरू करके हम भारतीय साहित्य के संगठन का काम करना चाहते हैं—

(१) भारतीय भाषा और साहित्य (गुजराती से)
कन्हैयालाल मुन्शी

(२) विशिष्ट व्यक्ति (मराठी से)
काका कालेलकर

(२) गांधीजी का पत्र-लेखन (गुजराती से)
महादेव देशाई

(४) कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चुनी हुई कवितायें (बंगला से)

(५) कविवर मैथिलीशरण की चुनी हुई कवितायें (हिन्दी से)

(६) ,, वल्लतोळ की ,, (मलयाळम से)

(७) ,, सर इकबाल की ,, (उर्दू से)

(८) महात्मा बसवेश्वर के वचन (कन्नड़ से)

(९) कविवर तिरुवल्लुवर की चुनी हुई कवितायें (तमिल से)

(१०) सिंहल-साहित्य के रत्न (सिंहाली से)

(३१) पंजाबी लोक-साहित्य के रत्न
श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन

(१२) आंध्र देश का काव्य-साहित्य (तेलुगु से)

(१३) हिन्दी-काव्य-साहित्य (हिन्दी से)

(१४) सिन्धी काव्य-साहित्य (सिन्धी से)

(१५) केरल-साहित्य की सुन्दर कृतियाँ (मलयाळम से)

(१६) सुशीला का परमेश्वर (मराठी)
वामन मल्हार जोशी

(१७) सरस्वतीचन्द्र (गुजराती)
गोवर्धन राम त्रिपाठी

(उड़िया)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१९) स्वप्न-द्रष्टा (गुजराती)
कन्हैयालाल मुन्शी

(२०) गंगा-यमुना आदि लोकमातायें और स्मरणयात्रा
काका कालेलकर (गुजराती)

१. इस पुस्तक-माला में हिन्दुस्तान की तमाम भाषाओं की ऊंचे दर्जे की सुन्दर रचनाओं के संक्षिप्त परिचय और संग्रह प्रकाशित किये जायँगे।

२. इस माला की हरेक पुस्तक एक ही आकार में प्रकाशित की जायगी।

३. हरेक पुस्तक डबल क्राउन आकार के १६ पृष्ठों की होगी, और क़ीमत =) आना होगी।

४. भारतीय साहित्य-परिषद् के सभी सदस्यों को सालभर में प्रकाशित होनेवाली ऐसी सभी पुस्तकें और पत्रिकायें विना मूल्य मिलेंगी।

❀ ❀ ❀

भारतीय साहित्य-परिषद् की नियमावलि

[४ जुलाई १९३६ के कार्यकारी अधिवेशन में मंजूर]

उद्देश

१. इस संस्था का नाम "भारतीय साहित्य-परिषद" होगा।

२. इस संस्था के नीचे लिखे उद्देश होंगे:—

[अ] हिन्दुस्तान के तमाम प्रान्तों की भाषाओं और उनके साहित्यकारों के बीच आपसी परिचय बढ़ाने, और इस तरह भारतीय साहित्य के विकास और प्रसार में सहायक होने का प्रयत्न करना।

[आ] लोकजीवन के जीवित और प्रत्यक्ष प्रश्नों को हल करनेवाले साहित्य के निर्माण को प्रोत्साहन देना।

[इ] ऐसे साहित्य को, जो जीवन के ऊंचे आदर्शों का विरोधी हो, सुरुचि को बिगाड़ता हो या सांप्रदायिक सद्भावना और सहयोग (जातीय एकता) में बाधा डालता हो, प्रोत्साहन न देना।

३. इस परिषद् का सारा काम हिन्दी याने हिंदुस्तानी में होगा।

४. अपने उद्देशों की पूर्ति के लिए परिषद् सब प्रकार के उचित साधनों को काम में लायगी, खासकर [अ] इस परिषद् को सहयोग देनेवाली प्रान्तीय साहित्य-संस्थाओं के सहयोग से परिषद् की प्रान्तीय शाखायें स्थापित करना; [आ] समय-समय पर (कम-से-कम साल में एकबार तो अवश्य ही) निमंत्रित व्यक्तियों के सम्मेलनों का आयोजन करना, जिनमें भाषा, लिपि, साहित्य और संस्कृति की चर्चा हुआ करेगी।

५. परिषद् सम्बन्धी आयोजना को अमल में लाने के लिए, ज़रूरत पड़ने पर, परिषद् समय-समय पर उपनियमों को बनायगी।

६. परिषद् के सदस्य

[अ] नागपुर के पहले अधिवेशन में मनोनीत सदस्य परिषद् के प्रथम सदस्य होंगे

[आ] सदस्यों की संख्या ५० से ज्यादा न होगी।

[इ] सदस्यों की संख्या नामज़दगी से ५० तक बढ़ाने का अधिकार परिषद् के सदस्यों को ही होगा।

[ई] जिस वर्ष में सदस्यों की संख्या ५० हो जायगी उस वर्ष के अन्त से, प्रतिवर्ष परिषद् के सदस्यों का पंचमांश अर्थात् १० सदस्य सदस्यता से निवृत्त हो जाया करेंगे। पहले वर्ष के अन्त में ५० सदस्यों में से १० चिट्ठी चुनकर अलग होंगे। इसी तरह तीसरे और चौथे वर्ष में चिट्ठी डालनी होगी। पाँच बरस में १०।१० करके सभी सदस्य निवृत्त हो जायँगे। ऐसे निवृत्त हुए सदस्यों को अधिकार होगा कि वे फिर भी मनोनीत किये जायँ और इस प्रकार मनोनीत सदस्य पाँच बरस के लिए सदस्य रहेंगे। अवधि पूरी होने पर कोई भी सदस्य फिर भी मनोनीत किया जा सकता है।

[उ] परिषद् हर साल अपने सदस्यों में से एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष, दो मंत्री और एक खजानची चुना करेगी।

[ऊ] परिषद् के सब सदस्यों को परिशिष्ट [अ] वाले प्रतिज्ञा-पत्र पर दस्तखत करने होंगे।

[ए] परिषद् का कोरम (गणसंख्या) ७ का होगा।

७. परिषद् के सहायक सदस्य

[अ] वार्षिक ७) या एक मुश्त ३०) देनेवाले सज्जन परिषद् के सहायक सदस्य माने जायँगे।

[आ] प्रत्येक सहायक सदस्य को परिषद् का "मुखपत्र" विना मूल्य मिलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

८. **स्थानीय समिति**—एक स्थान में रहनेवाले [१] परिषद् के सदस्य; [२] प्रांतीय समिति के सदस्य; और [३] सहायक सदस्य मिलकर स्थानीय समिति का संगठन चाहें तो कर सकेंगे।

९. प्रान्तीय समितियां, स्थानीय समितियां और सम्मेलन परिषद् के कार्यों में सहयोग देंगे।

१०. परिषद् की इस नियमावलि में सदस्यों के ⅔ बहुमत से ही परिवर्तन हो सकेगा।

परिशिष्ट [अ]

भारतीय साहित्य-परिषद् का प्रतिज्ञा-पत्र

१. मैं मानता हूँ कि संस्कृति और साहित्य की हैसियत से हिन्दुस्तान एक और अविभाज्य है।

२. लोकजीवन के जीवित और प्रत्यक्ष प्रश्नों को हल करनेवाले साहित्य के निर्माण में मैं हमेशा प्रोत्साहन देता रहूँगा।

३. जो साहित्य जीवन के ऊँचे आदर्शों के विरुद्ध हो, सुरुचि को बिगाड़ता हो या साम्प्रदायिक सद्भावना (जातीय एकता और सहयोग) में विरोध पैदा करता हो उसे हरगिज़ प्रोत्साहन नहीं दूंगा।

४. मैं मानता हूँ कि, भाषा की दृष्टि से यह एकता हिन्दी याने हिन्दुस्तानी द्वारा ही दृढ़ हो सकती है।

५. इस परिषद् के उद्देशों की पूर्ति के लिए मैं यथाशक्ति सहायता देता रहूँगा।

पता

हस्ताक्षर

तारीख

भेजने का पता—**मंत्री**
भारतीय साहित्य-परिषद्,
वर्धा, (मध्य प्रांत)

हमारा भ्रमण

अच्छे काम में कभी-कभी बहुत-से विघ्न या रुकावटें आ जाती हैं, और उनकी वजह से काम भी अच्छा और पुख्ता हो जाता है। इन्दौर के हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रस्ताव पर श्री मुन्शीजी ने भारतीय-साहित्य परिषद् बनाने का प्रयत्न शुरू किया और उसकी स्थापना के पहले ही से स्व० श्री प्रेमचन्दजी का 'हंस' लेकर उन्हींके सम्पादकीय सहयोग से उसे भारतीय साहित्य का मुखपत्र बनाया। 'हंस' लोकप्रिय बन रहा था। उन्होंने उसके लिए एक अन्तर्प्रान्तीय सहायक-मण्डल भी कायम किया था। सम्मेलन के प्रस्ताव के अनुसार परिषद् की स्थापना भी होनेवाली थी। इसलिए उसका पहला जलसा नागपुर में होना स्वाभाविक था; लेकिन नागपुर के अधिवेशन तक राह न देखकर उसके पहले ही, वर्धा में इसका पहला अधिवेशन करना निश्चित हुआ। पर कई अनिवार्य असुविधाओं के कारण वर्धा में हम सब मिल नहीं सके। इसलिए नागपुर में हि० सा० सम्मेलन के जलसे के दिनों में भा० सा० परिषद् बुलाई गई। इस ग़रीब देश में, लोग देश के एक छोर से दूसरे छोर तक एक ही महीने में दो-चार बार सफ़र करें, ऐसी अनुकूल स्थिति हमारे यहाँ नहीं है। फिर भी वर्धा से नागपुर जाने में हमारी कुछ चालबाज़ी समझी गई!

इन्दौर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने राष्ट्रभाषा की परिभाषा फिर एक बार साफ़-साफ़ ज़ाहिर की थी और उसमें तमाम आमफ़हम शब्द ले लेने की, और किसी भी भाषा का बहिष्कार न करने की अपनी नीति का ऐलान भी किया था। नागपुर में थोड़ी-सी बहस के बाद इसी नीति को पक्का किया गया था। फिर भी देश में भाषा के बेमानी झगड़े ने बहुत ज़ोर पकड़ा। हमने सोचा कि यह ग़लत-फ़हमी कुछ अमली काम को शुरू करने से ही दूर हो सकती है। सचमुच 'हंस' में हमारी भाषा-शैली उतनी सरल नहीं थी, जितनी कि उसे होना चाहिए थी। स्व० श्री प्रेमचन्दजी जैसे हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं के पूरे माहिर के होते हुए भी 'हंस' की भाषा कुछ कठिन-सी ही रही। इसमें कुसूर तो किसीका भी नहीं था। जिस लेखक को जैसी भाषा आती है उसीमें वह लिख सकता है। आम लोगों की समझ में आनेलायक भाषा और शिष्ट साहित्य की भाषा की खींचतान हिन्दुस्तानी भाषा में ही नहीं; बल्कि हरेक प्रान्तीय भाषा में है, और हरेक भाषा को इसमें से अपना कुछ-न-कुछ रास्ता निकालना ही पड़ा है। जो लोग बड़े-बड़े पंडिताऊ शब्दों का अपनी भाषा में इस्तेमाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं, वे साहित्य का कोई हित नहीं कर रहे हैं। साहित्यकारों को शब्दों की शक्ति की तरफ़ और उनके लोक में रूढ़ होने की ओर ध्यान देना ज़रूरी है। शब्द किस भाषा से आया है और वह किस खानदान का है, इसकी ही छानबीन करते रहने की नीति अच्छी नहीं।

नागपुर की बैठक के बाद, जहाँतक संभव हो कई प्रांतों में परिषद् की प्रवृत्ति को बढ़ाने के मतलब से भ्रमण करने का हम विचार कर ही रहे थे; लेकिन 'हंस' को परिषद् का मुखपत्र बनाने की बातचीत में ही हमारा बहुत-सा वक्त चला गया। गांधीजी के साथ हमें नंदीपर्वत (मैसूर) पर जाना पड़ा। उस यात्रा में बेंगलोर और नंदी हिल के आसपास, एक-दो जगह, हमने परिषद् के उद्देशों का कुछ प्रचार किया। श्री मुन्शीजी ने भी ऊटी से आकर बेंगलोर में, एक बहुत बड़ी सभा में, नेकनामदार श्रीनिवास शास्त्री के सभापतित्व में, परिषद् की नीति और उसके ध्येय को समझाते हुए एक पुरअसर भाषण दिया। बेंगलोर में कर्णाटक के लगभग बहुत-से साहित्य-सेवी सज्जनों से हमारी भेंट हुई और उन सबने इस काम में कुछ-न-कुछ हमारा हाथ बँटाना स्वीकार किया। अपनी ऊँचे दरजे की साहित्यिक चीज़ हिन्दुस्तानी भाषा के द्वारा सारे हिन्दुस्तान के सामने रखी जाय, यह बात हरेक साहित्य-सेवी को बहुत प्रिय लगी।

श्री राजगोपालाचार्यजी ने भी परिषद् के काम में बहुत-कुछ दिलचस्पी दिखाई। वह नियमित रूप से परिषद् के कामों में समय-समय पर सहायता पहुँचाते रहेंगे। दक्षिण भारत-हिन्दी-प्रचार-सभा की इस दिशा में दी हुई सहायता कुछ कम क़ीमती नहीं है। इस समय दक्षिण भारत के चारों प्रांतों से हमें जैसी सहायता मिल रही है और हिन्दी के सामयिक पत्रों में दक्षिणी साहित्य की कृतियों के जैसे सुंदर नमूने प्रकाशित हो रहे हैं, यह सब इस सभा की प्रवृत्तियों का ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष फल है

बेलगाँव कर्णाटक प्रांत के उत्तर में है, इसलिए इसका ध्यान अपनी कन्नड़ी और उत्तर की मराठी, इन दोनों भाषाओं की ओर रहता है। यहाँ भी हम वर्धा लौटते हुए ठहरे और कई भारतीय साहित्य के प्रेमियों से चर्चा चलाकर परिषद् के कार्य के प्रति उनकी सहानुभूति प्राप्त की।

इसके बाद हमने जुलाई–अगस्त में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की प्रचार-समिति की ओर से महाराष्ट्र में दौरा किया। इस मौक़े पर जगह-जगह भा० सा० परिषद् के उद्देशों और कार्यक्रम के बारे में फैली हुई ग़लतफ़हमियों को दूर करने की भरसक कोशिश की गई। हिन्दी-हिन्दुस्तानी के झगड़े को लेकर बहुत-कुछ भ्रम लोगों में फैला हुआ था। जहाँ एक तरफ़ मुसलमान भाई हमारी इस प्रवृत्ति को हिन्दुओं की तरफ़ से शुरू की गई चालबाज़ी समझते थे, वहाँ दूसरी ओर महाराष्ट्र के लोग भी इसे मुसलमानों की शरण में जानेवाली प्रवृत्ति बताकर अपनी शंका प्रकट करते थे। सब जगह असली बात समझा देने से आम जनता को विश्वास हो गया कि इस प्रवृत्ति के भीतर सिर्फ़ राष्ट्रीय, साहित्यिक और सांस्कृतिक या तहज़ीबी संगठन रखनेवाले ही हैं। कहते हैं, जब एक दूसरे से विरोधी दोनों संकुचित पक्षों को कोई हलचल शक से भरी हुई मालूम होती है तब राष्ट्रीय हित के खयाल से वह प्रवृत्ति बड़ी ही उपयोगी ठहरती है। भा० सा० परिषद् की प्रवृत्ति ऐसी ही एक प्रवृत्ति है, यह हमारा विश्वास है।

अगर इस अर्से में परिषद् के मुखपत्र का प्रकाशन ठीक हो जाता, तो महाराष्ट्र में परिषद् के उद्देशों का प्रचार करने में कुछ और भी सफलता मिलती। अब मुखपत्र के न होने से हमें पत्रिका, पुस्तक-माला और व्याख्यानों के द्वारा ही परिषद् का काम आगे बढ़ाना होगा।

प्रान्तीय संगठन

भा० सा० परिषद् की स्थापना में शुरू से ही महाराष्ट्र प्रान्त ने ख़ूब दिलचस्पी दिखाई है। इन्दौर के मराठी साहित्य-सम्मेलन ने प्रयाग-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के साथ लिखा-पढ़ी करके इस प्रवृत्ति को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया और अपने इंदौरवाले जलसे में इसके लिए एक समिति भी बनाई। भा० सा० परिषद् की स्थापना में इस समितिने अच्छी सहायता दी है। अब परिषद् की ओर से नागपुर के प्रोफेसर बनहट्टीजी महाराष्ट्र के लिए संयोजक बनाये गये हैं। उनकी कोशिश से परिषद् की एक महाराष्ट्र-शाखा समिति स्थापित हो गई है, जिस की ओर से "विहंगम" नाम का मुखपत्र विजय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दशमी से निकलना प्रारम्भ हो जायगा।

इसी तरह सिंध, उड़ीसा आन्ध्र, बंगाल, केरल आदि प्रान्तों में भी संगठन करने के लिए संयोजकों को नियुक्त करने की कोशिश हो रही है।

पत्र-सञ्चालकों से प्रार्थना

प्रान्तीय भाषाओं में प्रकाशित होनेवाले पत्रों के संचालकों से प्रार्थना है, कि वे अपने-अपने पत्रों में भारतीय सा० परिषद् की प्रवृत्ति के लिए हर माह कुछ पृष्ठ देने और अपने पत्र और अन्य प्रकाशन भी भा० सा० परिषद् के कार्यालय में भेजते रहने की कृपा करें।

वर्धा, २३ अक्तूबर १९३६

कन्हैयालाल मुन्शी
काका कालेलकर

प्रकाशक—मार्तण्ड उपाध्याय, व्यवस्थापक सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।
मुद्रक—हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, दिल्ली।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय साहित्य परिषद, वर्धा (मध्यप्रांत)

पत्रिका—२

अहमदाबाद और जलगाँव

पहली पत्रिका में (२३ अक्तूबर, १९३६) हम परिषद की शुरुआत की बातें दे चुके हैं। अुसके बाद, ३१ अक्तूबर और १, २ नवम्बर को अहमदाबाद में महात्मा गांधी के सभापतित्व में, गुजराती साहित्य-सम्मेलन का १२वाँ अधिवेशन, और जलगाँव में, प्रोफेसर माधवराव पटवर्धन की अध्यक्षता में १०, ११ नवम्बर को, मराठी साहित्य-सम्मेलन का २५वाँ अधिवेशन दोनों बड़ी सफलता के साथ पूरे हुअे। अहमदाबाद के प्रस्तावों में अेक प्रस्ताव द्वारा श्री प्रेमचंदजी की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक दुःख और अुनके दुःखी परिवार के साथ सहानुभूति ज़ाहिर की गयी।

तीसरे और चौथे प्रस्ताव, भारतीय साहित्य-परिषद की दृष्टि में बड़े महत्व के हैं:—

हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के साहित्य की ऊँची-ऊँची कृतियों का प्रामाणिक उल्था गुजराती में कराया जाय; और यह काम व्यवस्था के साथ हो, अिसके लिअे यह सम्मेलन साहित्य-परिषद को सूचित करता है कि वह लेखकों और प्रकाशकों की रहनुमाई करनेवाली कुछ पुस्तकों की अेक फेहरिस्त तैयार करावे; और ज़रूरत पड़ने पर परिषद स्वयं अुसके प्रकाशन का भी काम अपने हाथ में ले।

गुजरात में और अुसके बाहर, जहाँ-जहाँ गुजराती भाषा वाकायदा पढ़ायी जाती हैं, वहाँ गुजराती का अध्ययन-क्रम और पाठ्य-पुस्तकों की जाँच करके अुचित सलाह और सूचनायें देने का काम गुजराती साहित्य-परिषद को अपने अधिकार में लेना चाहिअे।

नौवें प्रस्ताव में भारत के अहिन्दी-भाषी प्रान्तों में राष्ट्रभाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी के प्रचार के प्रयत्नों के लिअे हिन्दी साहित्य-सम्मेलन को धन्यवाद दिया गया।

दसवाँ प्रस्ताव हरेक देशप्रेमी और साहित्यसेवी को हमेशा अपनी नज़रों के सामने रखना चाहिअे:—

सामयिक पत्रों में, सिनेमा और नाटकों में व पुस्तकों द्वारा मनोविकारों को भड़कानेवाला जो अश्लील साहित्य कुछ समय से प्रकाशित हो रहा है, वह जनता को कुराह पर लेजानेवाला और घातकरूप है; इसलिअे यह सम्मेलन अैसे साहित्य के प्रति अत्यंत घृणा ज़ाहिर करता है और अुसका विरोध करने के लिअे ज़बर्दस्त लोकमत तैयार करने के लिअे साहित्य-परिषद् का ध्यान अिस बात की ओर खींचता है।

गुजराती-साहित्य-सम्मेलन के ऊपर बताये हुअे दूसरे प्रस्ताव से बिलकुल मिलता-जुलता अेक प्रस्ताव जलगाँव में भी पास हुआ। और अुसे कार्यरूप में लाने के लिअे अेक स्थायी समिति बनाने की कल्पना दोनों ही सम्मेलनों में मौजूद है।

अगर हरेक प्रांत की साहित्य-संस्था अपनी प्रांतीय भाषा की तरक्की करने के लिअे साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में राय देने का अपना हक अिस तरह अखतियार करने लगे तो देश के शिक्षा-विधान में स्वयं-निर्णय (Self-determination) को फलने-फूलने का मौक़ा शीघ्र हाथ आजायगा।

भा० सा० परिषद के साहित्य-सेवी सदस्य अपने-अपने प्रांत में अिस तरह से संगठित आन्दोलन करना प्रारंभ करदें तो अुसका नतीजा अच्छा ही निकलेगा।

देश के राजनैतिक वायुमंडल में नये 'शासन-विधान' की चर्चा ज़ोरों से चल रही है। हमारे साहित्य-सम्मेलनों में भी वही वातावरण चारों तरफ़ फैला हुआ दिखाई देता है। अन्त में जाकर हमारा सामाजिक जीवन भी अेकरूप होने जारहा है। राजनैतिक बातों का असर साहित्यिक प्रवृत्ति पर पड़े बिना नहीं रहेगा और हमें यह भी विश्वास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रखना चाहिअे कि हमारी साहित्यिक हलचल का असर देश के राजनैतिक जीवन पर पड़े बिना नहीं रहेगा।

× × ×

राष्ट्रीय युग का नया मंदिर

अिन सम्मेलनों के चंद दिन पहले, बनारस में भारत-माता के मन्दिर का उद्घाटन हुआ। देश की संस्कृति के जीवन में यह घटना बड़े ही महत्व की है। अब हमारे धर्म ने प्राचीन कर्मकाण्ड की प्रधानता को छोड़कर संस्कृतियों के मेल-मिलाप का रूप ग्रहण किया है। बनारस का यह बहुत बड़ा राष्ट्रहितकारी अुत्सव अिस बात का अेक बड़ा अच्छा नमूना है।

अिस मंदिर की स्थापना के साथ सभी जातियों और मज़हबों का आपस में मेल-मिलाप करानेवाले साहित्य की रचना होना भी स्वाभाविक है, जो किसी क़दर छोड़ी नहीं जासकती।

साहित्य की दुनिया के लिअे सुखदायी काशी के अेक और उत्सव का ज़िक्र करना यहाँ ज़रूरी है। भारत भारती के राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की 'स्वर्णजयन्ती' के अवसर पर उन्हें 'मैथिली-मान' नाम का अेक 'सम्मानग्रन्थ' अर्पण किया गया। अुस समय का अुनका हृदय से निकला भाषण और अुस समारोह के सभापति गांधीजी का भाषण-दोनों ही, अपने ढंग के बड़े सुन्दर थे।

× × ×

परिषद की महाराष्ट्र शाखा का मुखपत्र

पिछली विजयादशमी से, भा० सा० परिषद की महाराष्ट्र-शाखाने अपना काम व्यवस्थित और तेज़ प्रगति से शुरू कर दिया है। अुसके मासिक मुखपत्र 'मराठी-विहंगम' के अबतक दो अंक निकल चुके हैं। दूसरे प्रांतों के साहित्य सेवियों और समाज-सेवकों से मिलकर अुनकी मुलाकात प्रकाशित करने का 'विहंगम' का अेक अनोखा प्रशंसनीय ढंग है। अुसके दूसरे अंक में देशरत्न बाबू राजेन्द्रप्रसाद की मुलाकात प्रकाशित हुई है। हम अुसका हिन्दी-रूप अिसी पत्रिका में अन्यत्र दे रहे हैं।

× × ×

महाराष्ट्र साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर पटवर्धन ने अपने सारे ही भाषण में 'भाषा-शुद्धि' की आड़ में मराठी में प्रचलित अरबी-फ़ारसी आदि भाषाओं के शब्दों का 'बायकाट' करने का बड़े ज़ोरों से अैलान किया है। हमने अिस नीति की अुसी सम्मेलन में कड़ाई के साथ मुखालिफत की और अिस बात पर ज़ोर दिया कि दूसरी भाषाओं के जो शब्द किसी भाषा में आमफ़हम हो गये हैं अुन्हें विदेशी या ग़ैरबिरादरी का नहीं माना जाना चाहिअे।

अहमदाबाद में सम्मेलन के अध्यक्ष की हैसियत से महात्माजीने जो भाषण दिये अुनके खास अंश अिसी पत्रिका में दूसरी जगह दिये गये हैं। देश के सबके सब साहित्यसेवी अिन्हें ग़ौर से पढ़ेंगे और अिससे बहुत-से साहित्य-सेवकों का रुख़ बदल जायगा, अैसी पूरी आशा है।

× × ×

पंजाब की साहित्यिक यात्रा

भारतीय साहित्य परिषद् के कार्य की दृष्टि से अिस महीने की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है—मेरा पंजाब का दौरा। पहले तो अैसा अिरादा था कि मैं आठ-दस दिन के लिए पंजाब के कई स्थानों में घूमूं; लेकिन लाहौर पहुँचते ही मित्रों की राय हुई कि पंजाब के खास तौर पर साहित्यिक जीवन के केन्द्र लाहौर व अमृतसर हैं। पंजाब के अिन दो बड़े-बड़े शहरों का असर सारे सूबे में फैला हुआ है। मेरा अपना भी यही तजरबा है।

गुजरानवाले की अेक सभा को छोड़कर मैं और कहीं नहीं गया। गुजरानवाले में जिन सज्जनों से मैं मिला, अुन्हें अनेक भाषाओं का शौकीन पाया और अुनमें भिन्न-भिन्न प्रान्तों के साहित्यों के प्रति अभिरुचि देखकर तो मुझे बेहद खुशी हुअी।

पंजाब—वैदिक आर्यों का पंजाब आज मुसलमान, सिक्ख, आर्यसमाजी और सनातनी, अिन चार फिरकों में बँटा हुआ है। यहाँ की भूमि को हिमालय की पवित्र नदियोंने खूब अुपजाअू बना दिया है। अिससे पंजाब बहुत हृष्ट-पुष्ट है। कुदरतने अिसपर अपने सारे आशीर्वाद बरसा दिये हैं; फिर भी न जाने क्यों मनुष्यने अिस भूमि को शापदग्ध-सा बना रखा है। सेमी रामिस रानी के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिनों से लेकर या सिकन्दर से लेकर अहमदशाह दुर्रानी तक जितने भी विदेशी लोग प्रचंड अुत्साह और लोगों के दल-बल को लेकर यहाँ आये, अुन सबका आतंक व ज्यादती बेचारे पंजाब को ही झेलनी पड़ी। हालांकि शान्ति का सच्चा सुख पंजाब को बहुत कम मिला है; फिर भी यहाँ के भोलेभाले धर्मप्राण किसानोंने अपनी जीवन-निष्ठा किसी कदर कम नहीं होने दी है।

जहाँ अिस प्रान्तने भयंकर आक्रमणकारी विजेताओं के दल-के-दल देखे हैं, तहाँ अुसने बड़े-बड़े उद्धारक संतों की दिव्य-वाणी भी अखंड रूप में सुनी है। मौके-मौके पर त्याग, शूरवीरता, क़ुर्बानी और प्रेम की पराकाष्ठा अिस प्रांतने खूब दिखायी है। अगर पंजाब को सच्ची शान्ति मिल जाय तो सारे हिन्दुस्तान को शांति का साम्राज्य मिला हुआ ही समझिअे।

पंजाब के निवासी तन्दुरुस्त, तगड़े, हट्टे-कट्टे, बलवान और पूरे कद्दावर होते हैं। अुनकी शारीरिक गठन देखकर पहले तो मुझे खयाल आया कि अिन्हीं की जैसी अिनकी भाषा भी कठोर और बहुत कर्णकटु होगी; लेकिन अुनके मुंह से मृदु, महीन, मीठी और संस्कारयुक्त वर्णोच्चारण सुनते ही मेरे कानों को आनन्द के साथ ही अचरज भी हुआ। पंजाबी भाषा अेकदम घरेलू (Homely) है। जब कोअी बोलता है तो अैसा लगता है मानों कोअी पुराना मित्र बड़े प्यार से अपने दिल की बातें समझा रहा है। पंजाबी भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी का अेक जरूरी और काम का अंग है। पंजाबी, राजस्थानी और बिहारी, ये हिन्दी के व्यापक अंग हैं। अगर हिन्दीने अिन तीनों को बराबर नहीं पाला-पोसा और न आगे बढ़ाया, तो हिन्दी की महिमा बहुत-कुछ कम हो जायगी।

हिन्दी-हिन्दुस्तानी का सवाल जैसा दिल्ली-मेरठ के आसपास विकट रूप धारण किये हुअे हैं, वही हाल पंजाब में भी है। यहाँ आमतौर पर तीन लिपियाँ काम में लायी जा रही हैं—नागरी, गुरुमुखी और अुर्दू यानी अरबी।

मैंने दिल्ली तरफ़ देखा था कि लोग घर के अन्दर अेक ही भाषा बोलते हैं, फिर चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान। जनता की बोली में साम्प्रदायिकता—फ़िरका-परस्ती—नहीं दीखती। जो फ़र्क़ और फ़साद है, वह तो साहित्य और किताबों की भाषा के बीच में, सरकारी महकमों और शिक्षा-विभाग में है। भाषा का झगड़ा हमारी मौजूदा शिक्षा-प्रणाली की देन है। पंजाब में बाजार और घर में अेक ही बोली बोली जाती है। और दूसरा हो भी क्या सकता है? दिन-रात जिनको अेक-दूसरे के साथ लेन-देन और कारोबार चलाना पड़ता है, वे अपनी अलग दो जबानें कहाँतक बनाये रख सकते हैं!

पंजाब में भी यही बात है। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, आर्यसमाजी और सनातनी—सभी अेक पंजाबी भाषा बोलते हैं; लेकिन जब लिखने लगते हैं तब मुसलमान जटिल अुर्दू को आगे रखता है और हिन्दू अपनी संस्कृतमयी हिन्दी को अुसके आगे रख देता है! सिक्ख भाई बोलते और लिखते तो हैं पंजाबी ही; लेकिन अुन्होंने अपनी लिपि अलग ही बनाली है, अिसलिअे अुनका सारा साहित्य बाकी के देशवासियों के लिअे परदानशीन-सा बन गया है।

सौभाग्य की बात है, कि अब सिक्खों ने भी अपना धार्मिक साहित्य नागरी अक्षरों में छपवाना प्रारंभ कर दिया है। अबतक गुरुओं द्वारा चलायी हुई गुरुमुखी लिपि का ही हठ पकड़कर अुन्होंने गुरुमुखी वाणी और अुनके अुपदेशों का प्रचार रोक रक्खा था। अब अुन्होंने नागरी लिपि का महत्व समझ लिया है।

सिक्खधर्म हमारे आदर और अध्ययन की चीज़ है। वह हमारा 'संतमत' है। वेदांत का तात्त्वज्ञान, संतों की भक्ति, आस्तिकों का सदाचार और वीरों का बलिदान, ये सब बातें अिस धर्म में भरी हुअी हैं। जैसी धर्मनिष्ठा और स्वतंत्रता की भावना महाराष्ट्रों के अितिहास में मिलती है, वैसी ही सिक्खों के अितिहास में अच्छी और बड़ी मिकदार में पायी जाती है। गुरुग्रन्थ साहब में सिर्फ़ सिक्ख-गुरुओं के ही वचनों का संग्रह नहीं है, बल्कि उदार सिक्खधर्म में सभी संतों की बानियों को समान भाव से आदर के साथ स्थान दिया गया है। जब ग्रंथसाहब की रचना हुअी तो वहाँ की भूमि में जिस संतवाणी का लोगों में प्रचार था या जो मिल सकती थी, अुसे अिकट्ठा करके गुरुओंने अपने धर्म-सिद्धान्त के अनुसार अच्छी तरह जाँच-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पड़ताल करने के बाद, जो अनुकूल पड़ी, ग्रंथसाहब में अुसे जगह देदी। अुदार गुरुओं का हृदय किसी का बहिष्कार और अिनकार करने के पक्ष में नहीं था, बल्कि जो कुछ अुत्तम संग्रह करनेलायक है अुसे स्वीकारने के पक्ष में ही था। ग्रंथसाहब के अिस तरह सर्वसंग्राहक होने से अुसमें पंजाबी के साथ-साथ हिन्दी की अन्य शैलियाँ भी आगयी हैं। भाषा की दृष्टि से भी यह महाग्रंथ खासा धार्मिक राष्ट्रीय सम्मेलन है।

महाराष्ट्र के पुराने संत नामदेव की वाणी भी ग्रंथसाहब में मिलती है, अिसे मैं पहले से ही जानता था। पंजाब के घुमान नामक गाँव में नामदेव का स्वर्गवास हुआ था, यह बात भी मैं जानता था। ग्रंथसाहब में नामदेव के जितने भी अभंग आये हैं वे तो महाराष्ट्र में पाये ही जाते हैं; पर मैंने सुना है कि अुनके अलावा और भी कअी नामदेव महाराज के वचन पंजाबी लोक-साहित्य में मौजूद हैं। अेक महाराष्ट्री और सन्तवाणी के अनुरागी की हैसियत से मैंने सिक्ख साहित्यिकों से प्रार्थना की है कि वे पंजाब में फैली हुअी नामदेव की वाणी का संग्रह करके नागरी अक्षरों में छाप दें, तो सारा महाराष्ट्र सदा के लिअे सिक्खों का ऋणी बन जायगा। सुनने में आया है कि नामदेव की दो जीवनियाँ पंजाबी भाषा में प्रकाशित भी हो चुकी हैं। अगर वे दोनों पुस्तकें आजकल की सरल हिन्दी और नागरी अक्षरों में छपवा दी जायँ तो महाराष्ट्र का आभारी हृदय अपने आप पंजाब की तरफ़ खिंच आयगा। चक्रधर नाम के गुजरात के अेक वैष्णव संतने महाराष्ट्र में जाकर 'महानुभावी पंथ' की स्थापना की थी। अिस पंथ के अनुयायी पंजाब में भी पाये जाते हैं। अगर 'महानुभावी' साहित्य भी पंजाब में मिल गया तो मराठी साहित्य का अेक बहुत पुराना और बड़ा हिस्सा हमें मिला हुआ ही समझिअे।

पंजाब के साहित्यसेवी भारत की सेवा में अेक काम और करें तो क्या ही अच्छा हो! सरहद के पठानों की पश्तो और पुरानी प्राकृत भाषा पैशाची का आपसी संबन्ध बतलाया जाता है। अगर हिन्दी और फ़ारसी जाननेवाले कोअी भाषा-पण्डित पश्तो का पुराना और नया साहित्य—लोकगीतों और लोककथाओं—को, जो सरहदी प्रदेश में फैला हुआ है, भाषा-शास्त्र की दृष्टि से नागरी अक्षरों में सम्पादित करदें और अुसका व्याकरण तथा धातुकोश बना डालें तो अिन्डो-आर्यन भाषाओं का कौटुम्बिक अितिहास समृद्ध हो जायगा। धर्म-मज़हब की लड़ाइयाँ लड़ते-लड़ते हम लोग सांस्कृतिक अेकता को भूले-से जा रहे हैं। भाषा की दृष्टि से अुर्दू को जितना महत्व मिला है अुतना ही पश्तो को दिया जाना चाहिअे।

आजकल श्री देवेन्द्रजी सत्यार्थी, जो अपनी धुन के पक्के और सच्चे साहित्यसेवी हैं, पंजाबी लोक-साहित्य का संग्रह कर रहे हैं। सत्यार्थीजी भारतीय साहित्य की यह अनमोल सेवा कर रहे हैं, और हमें आगे भी अुनसे अिस क्षेत्र में बड़ी-बड़ी अुम्मीदें हैं। 'जातपाँत तोड़क मंडल' वाले श्री संतरामजी ने भी पंजाबी लोकगीतों का अेक अच्छा संग्रह निकाला है। अेडवोकेट रामशरणजी के पास हज़ारों पंजाबी लोकगीतों का संग्रह है। यह तमाम साहित्य शुद्ध पंजाबी रूप में और नागरी अक्षरों में प्रकाशित हो जाना चाहिअे, और पंजाब यूनिवर्सिटी की तरफ़ से अुसका भाषा-शास्त्र और मनुष्यवंश-शास्त्र (Anthropology) की दृष्टि से अध्ययन करने की व्यवस्था चलाअी जानी चाहिअे। पंजाबी साहित्य का अितिहास लिखनेवाले मोहन-सिंहजी जैसे विद्वान अिस दिशा में बहुत-कुछ कर सकते हैं। पंजाब में सिक्ख, आर्यसमाजी और सनातनी लोगों के कौमी स्कूल और कालेज हज़ारों की तादाद में हैं। गुजरात में लोकगीतों का जो पहला संग्रह किया गया, अुसमें कस्बों और देहातों के प्राइमरी मदरसों के अध्यापकों का बहुत-कुछ हाथ था। प्राइमरी स्कूलों के शिक्षक कितने ही ग़रीब और नम्र क्यों न हों, हमें यह नहीं भूल जाना चाहिअे कि वे ही जनता तक पहुँचनेवाले हमारी संस्कृति के सच्चे मिश्नरी हैं। अगर अुनकी सेवा की क़द्र हम करें और सांस्कृतिक सर्वे (Survey) करने में अुनसे सहायता ली जाय तो कम-से-कम खर्चे में हम अेक बहुत बड़ा राष्ट्रीय काम कर सकेंगे। और प्राथमिक शिक्षकों को अेक नयी दृष्टि और नया अुत्साह मिल जाने से अुनकी भी जिन्दगी हरी-भरी हो जायगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाहौर ही में क्यों, सारे पंजाब में विश्वबंधुजी शास्त्री अपने ढंग के अेक ही व्यक्ति हैं। शास्त्रीजीने वैदिक साहित्य की जो सेवा की है, सचमुच वह बहुत क़ीमती है। अपनी लिपि-सुधार समिति के सदस्य डाक्टर लक्ष्मणस्वरूपजी की साहित्य-सेवा को देखकर मेरा चित्त प्रसन्न हो अुठा।

लाहौर के हिन्दी-अखबार नागरी अक्षरों में छपते हैं। यह प्रयोग नया ही है। जहाँ स्वामी श्रद्धानन्दजी कामयाब नहीं हो सके, वहाँ से आजकल ३ दैनिक, २ साप्ताहिक और १ मासिक पत्र नागरी लिपि में निकल रहे हैं। लोकजागृति और भारतीय दृष्टिकोण की यह साफ़ और सुंदर निशानी है। फिर भी मुझे यह तो कहना ही पड़ेगा कि अिन पत्रों का प्रूफ़-संशोधन बड़ा बेढंगा, सुस्ती के साथ और अूटपटाँग-सा होता है। अगर अिन पत्रों के संचालक और पाठक अपने अखबारनवीसों और टाइप-नवीसों पर काफ़ी ध्यान देने लगें तो थोड़े ही अर्से में यह खटकने वाली कमी दूर हो सकती है। पंजाब के पत्र बड़े जोश के साथ निकाले जाते हैं। नागरी लिपि के हिमायतियों को चाहिए कि अिनकी कद्र करें और अिन्हें तरजीह दें।

मुझे बड़ी उम्मीद थी कि अबकी बार लाहौर के विद्यार्थियों से परिचय प्राप्त करने का काफ़ी मौक़ा हाथ लगेगा; मगर ज़रूरी कामों में लगे रहने से, न तो मैं अुनकी कान्फरेन्स में ही जा सका और न उनके साथ जी खोलकर बातें ही कर सका। वहाँ दो-तीन कालेजों में खुद जाकर भारतीय साहित्य-परिषद और साहित्य-संगठन का सन्देश विद्यार्थियों को सुनाने का मुझे सुअवसर मिला। पंजाबी युवकों का जोश, अुनकी अुमंगें और क़ुर-बानी की बातों का काफ़ी नाम है। अगर वे साहित्य-संगठन और नागरी-प्रचार की ओर ध्यान दें तो भारतीय साहित्य और भाषा के संगठन में काफ़ी सफलता मिल सकती है।

जहाँ-जहाँ मैं गया, वहाँ अेक ही शिकायत मेरे सुनने में आयी, कि पंजाब के नौजवान और लड़कियाँ दिन-पर-दिन फैशनपरस्त होती जा रही हैं और अिनकी ज़िन्दगी दिन खर्चीली व तड़क-भड़कदार बनती जा रही है। शायद फैशनपरस्ती का यह मर्ज़ पंजाब में नया-ही-नया फैला है। अिसीलिअे वहाँ के नौजवान अिसके पंजे में फँसे हुअे हैं। बम्बई की तरफ़ भी विद्यार्थी किफ़ायती नहीं होते; फिर भी अुनकी अपेक्षा पंजाबी विद्यार्थियों का जीवन खर्चीला बहुत है और मुमकिन है अुनकी यह आदत आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ी होगी।

पंजाब में परदे की प्रथा संयुक्तप्रान्त की जितनी नहीं हैं। फिर भी गुजरात, महाराष्ट्र और मद्रास प्रान्त में सह-शिक्षण (Co-education) के जैसे प्रयोग हाईस्कूलों में हो रहे हैं, पंजाब में शायद ही अैसा हो। सिर्फ अमृतसर के "रामाश्रम-विद्यालय" में लड़कों और लड़कियों को अेक-साथ पढ़ते हुअे मैंने देखा। और भी अैसे कअी स्थान होंगे लेकिन मेरे देखने में तो यह अेक ही संस्था आअी।

अपने भविष्य के कार्य की दिशा पहले से ही सूझ जाती है; लेकिन काल के अनुकूल होंने से जिन्हें कुछ अर्सेतक राह देखनी पड़ती है, अैसों में लाहौर की "फुलवारी" के सुयोग्य संपादक ज्ञानी हीरासिंहजी 'दर्द' का नाम पहले याद आ जाता है। दर्दजी ने अबतक बहुत बड़ी साहित्य-सेवा की है और वे अच्छे कवि भी हैं।

अमृतसर में अितिहास-प्रसिद्ध स्थान सिक्खों का खालसा कालेज देखकर मन में संतोष और अभिमान के भाव पैदा हुअे। धर्म के नाम पर मनुष्यजाति कितनी संगठित हो सकती है अुसका यह कालेज जीता-जागता नमूना है। दो मील के मैदान में अिस कालेज की सुन्दर अिमारतें खड़ हुअी हैं। सिर्फ खेलने के लिअे ही २४ क्रीड़ांगण (प्लेग्राउण्ड) बने हुअे हैं। अिस कालेज के आचार्य प्रिंसिपल जोधासिंह और अध्यापक तेजासिंहजी से भी मैं मिला।

लाहौर छोड़ने के दिन मैं वहाँ का अजायबघर भी देख आया। सारा म्यूजियम देखने को मुझे वक़्त कहाँ था! सिर्फ प्राचीन बौद्ध मूर्त्तियाँ ही देख सका। संग्रहालय के अधिष्ठाता डाक्टर सीतारामजी ने अिसमें मेरी बड़ी सहायता की थी।

मैं अित्तफ़ाक़न अेक पंजाबी विवाह देखने भी चला गया। यह प्रौढ़ विवाह ही था; फिर भी पिताने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी बेटी का "कन्यादान" किया ! अिसमें मुझे आश्चर्य-सा लगा। आर्यसमाजियों की विवाह-विधि में प्रौढ़-कन्या के विवाह में कन्यादान-विधि की क्या आवश्यकता है ? प्रौढ़ कन्या स्वतंत्र है, शिक्षित है। पिता की अनुमति लेकर वधू वर का पाणिग्रहण करे। अितना ही काफ़ी होगा। वह अपनी तक़दीर का फैसला आप क्यों न करे ?

जिस दिन मैंने लाहौर छोड़ा, अुस दिन साहित्य-सम्मेलन और साहित्य-गोष्ठी के सदस्यों के सामने भा०सा० परिषद् के कार्यक्रम और अुसके अुद्देश्यों को अच्छी तरह रक्खा। दोनों जगह नागरी-सुधार का स्वरूप और अुसके प्रचार की मर्यादा मैंने समझाकर बतलाअी। यहाँ के अिस समारोह के अध्यक्ष डा० सर गोकुलचन्द नारंग थे। अुन्होंने मेरी भूमिका को पूरी तरह पसन्द किया। पंजाब का वातावरण मुझे तो कअी दृष्टियों से अनुकूल मालूम हुआ है। अगर रायबहादुर रामशरणदास, परमानन्दजी, मास्टर तारासिंहजी और महात्मा हंसराजजी व लोकसेवा-समिति के सदस्य मिल-जुलकर काम करें तो पंजाबी साहित्य की बहुत-कुछ तरक्की हो सकती है। भारतीय साहित्य के संगठन में पंजाब का हिस्सा किसी क़दर कम नहीं है, अिसी विश्वास को लेकर बहुत मीठी स्मृतियों के साथ मैं लाहौर से वापस आया हूँ।

काका कालेलकर

श्री बाबू राजेन्द्रप्रसाद से भेंट

[जब श्री राजेन्द्रबाबू नागपुरवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति चुने गये तो अखबारों में हंगामा मच अुठा कि 'साहित्य-सम्मेलन' का सभापति तो कोअी महान् साहित्यिक व्यक्ति होना चाहिअे। लोगों ने क्या समझ रक्खा है कि अगर किसीने देश के राजनैतिक या सामाजिक क्षेत्र में अपना जीवन अर्पण कर दिया तो वह साहित्यिक नहीं रहा ? तब तो अिटली के उद्धारक मेज़िनी को भी हम साहित्यिक नहीं कह सकेंगे। शायद लोगों की यह मंशा है कि जो लोग राजनीति की बातों से अपनेको दूर रक्खें और समाज-सेवा में भी अपना अधिक समय खर्च न करें अुन्हींको 'साहित्यिक' कहा जाय, दूसरों को नहीं।

अेक सच्चे भारतीय विद्यार्थी की हैसियत से राजेन्द्रबाबूने बहुत ऊँची प्रतिष्ठा पायी थी। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रारंभ से ही अुनका सम्मेलन के साथ सम्बन्ध रहा है।

यह भी चर्चा चल पड़ी है कि गाँधीजी भी साहित्यिक नहीं हैं और न अुनका साहित्यिक क्षेत्र में कोअी स्थान ही है ! अुन्होंने साहित्य के अूपर काफ़ी असर डाला है और अेक नअी मार्मिक शैली को जन्म दिया है। लेकिन क्योंकि वे छायालोक, रहस्यमय जगत् और अतीत की साहित्यिक बातें नहीं करते; अिसलिअे लोग कहते हैं—गाँधीजी साहित्यकार नहीं हैं। बेशक अुन्होंने कोअी साहित्य-चर्चा नहीं की है और साहित्य की ओर तो वे सिर्फ़ मनुष्य-हित की दृष्टि से ही देखते हैं।

अभी कुछ दिन पहिले, भा० सा० प० के मराठी मुखपत्र 'विहंगम' के सम्पादकने श्री राजेन्द्रबाबू से कअी मार्के के सवाल पूछे थे। जवाब में अुन्होंने जो कुछ कहा है अुसमें हरेक चीज़ की तह तक पहुँचने की व्यापक दृष्टि भरी हुअी है।—का० का०]

१. प्रश्न—कालेज में पढ़ते समय कौन-सा विषय आपको सबसे ज्यादा प्रिय था ?

अुत्तर—अेण्ट्रेंस परीक्षा पास करके मैं कालेज में भर्ती हुआ और जब भौतिक विज्ञान (Science) पहलेपहल पढ़ने लगा तब अुसीमें अधिक जी लगा—विशेष करके रसायनशास्त्र (Chemistry) में। बी० ए० में मैंने गणित में कमज़ोर होने के कारण, और यह मानकर कि अुच्च विज्ञान में गणित विषय प्रधान हो जाता है, विज्ञान छोड़ दिया और मैं अर्थशास्त्र (Economics) की ओर झुका और अुसीमें मेरा जी अधिक लगा।

२. प्र०—आपके जीवन में, किस ग्रंथ का असर आपके मन पर ज्यादा पड़ा ?

अु०—यह कहना कठिन है; पर शायद लड़कपन में तुलसी-रामायणने और पीछे गीताने सबसे अधिक प्रभाव डाला है।

३. प्र०—बिहारी साहित्य की क्या विशेषता है ?

अु०—बिहार का कोअी अपना साहित्य नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हूँ, मिथिला में मैथिली भाषा का साहित्य है; पर मैं उनसे वाकिफ़ नहीं हूँ। विहार में हिन्दी का जो साहित्य रचा है वह कुछ विहार का नहीं है, वह तो भारत के हिन्दी-साहित्य का अेक अंशमात्र है।

४. प्र०—क्या विहार में लोक-साहित्य को संग्रह करने का कुछ प्रयत्न किया जा रहा है?

अु०—मेरे जानते विहार में अिस सम्बन्ध में कोअी खास प्रयत्न नहीं हो रहा है।

५. प्र०—आजकल के नौजवान कामुकता बढ़ानेवाला साहित्य (Sex-literature) ज्यादा मात्रा में पढ़ते हैं। अिस सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?

अु०—मेरी राय में, काम-साहित्य की ओर रुचि बढ़ना अच्छा नहीं है—विशेष करके, अिस वजह से कि अैसा साहित्य अिन्द्रिय-निरोध की ओर नहीं, बल्कि उत्तेजन की ओर हमें ले जाता है। मैं सारे संतति-निग्रह (Birth Control) सम्बन्धी साहित्य को हानिकर मानता हूँ और खासकर अिस देश के लिअे तो घातक ही समझता हूँ। यह हमारी समूची संस्कृति और जीवन के प्रवाह के विरुद्ध है।

६. प्र०—पिछले साल आपने महाराष्ट्र प्रांत में दौरा किया था। वहाँ के प्राकृतिक दृश्य, लोगों की रहन-सहन, स्वभाव वग़ैरा के बारे में आप कुछ अपने संस्मरण देंगे?

अु०—महाराष्ट्र में कहीं-कहीं प्राकृतिक दृश्य अत्यंत सुन्दर हैं। मुझे सह्याद्रि को पार करके कअी दफ़ा अिस-प्रदेश से अुसपार जाना पड़ा था। वे दृश्य बड़े ही सुन्दर हैं। साधारणतः लोगों का रहन-सहन अन्य कअी प्रांतों के मुकाबले अधिक व्यवस्थित (Disciplined) पाया। सभाओं में अक्सर शोरगुल या गोलमाल नहीं मचता था। समय की पाबंदी भी होती थी। यों तो भारतवर्ष भर में अतिथि-सत्कार की प्रथा है ही। महाराष्ट्र में, विशेषकर वहाँ की महिलाओं के अुस अतिथि सत्कार में भाग लेने से, वह अधिक महत्वपूर्ण मालूम होता है। मेरे जैसे अुत्तर-प्रदेश के निवासी के लिअे वह अत्यंत मधुर मालूम होता है। शिक्षितवर्ग सभी बातों की बहुत बारीकी से छानबीन करता है। और कअी स्थानों पर मुझसे कुछ प्रश्न भी पूछे गये थे; पर जहाँपर मतभेद होता वहाँ भी मेरे साथ बहुत आदरपूर्ण व्यवहार किया जाता था। मैंने यह भी देखा कि महाराष्ट्र विहार के मुकाबले अधिक सुखी प्रांत है; यद्यपि ज़मीन अुतनी अुर्वरा नहीं है। यहाँ का मध्यमवर्ग सार्वजनिक कामों में अधिक भाग लेता है और पैसे से मदद करता है। थोड़े में सुख से रहने और अच्छे काम में अपनी औक़ात—समय और सामर्थ्य—के अनुसार कुछ देने की कला भी यहाँ के लोग अच्छी तरह जानते हैं।

७. प्र०—भारत के भ्रमण में आपको सबसे अच्छा रमणीय स्थान कौन-सा लगा?

अु०—जितनी जगहों में मैं गतवर्ष गया अुनमें प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से मैं सबसे अूँचा स्थान कर्नाटक प्रान्त के अुत्तर कन्नरा ज़िले और कुर्ग को देता हूँ। दृश्य अैसा मनोहर था कि वहाँ से चलने को जी नहीं चाहता था। हृदय पर सबसे अधिक प्रभाव तो कन्याकुमारी का पड़ा। वहाँ जाकर मनुष्य अेकसाथ तीन समुद्रों का संगम देख सकता है और जब यह स्मरण होता है कि अुस स्थान से दक्खिन में दक्खिन ध्रुव तक ज़मीन का कहीं पता नहीं है और अुसके अुत्तर में, प्रायः अुत्तर ध्रुव तक समुद्र नहीं है तब यह प्रभाव और भी गहरा हो जाता है। भारतवर्ष की चोटी अगर हिमालय है तो यह स्थल सचमुच अुसका पादपद्म है। अिन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर जब स्वामी विवेकानंद वहाँ पहुँचे तो अुन्होंने भारतमाता को साष्टांग दंडवत् किया। यही भावना मेरे हृदय में भी उठी थी।

८. प्र०—महाराष्ट्र के सामयिक पत्रों में आजकल फलित-ज्योतिष छापकर पाठकों का ध्यान खींचते हैं; इस सम्बन्ध में आपकी क्या राय है?

अु०—फलित-ज्योतिष ग्रहों और नक्षत्रों की गति और मनुष्य पर तथा पृथ्वी पर अुनकी किरणों के असर पर निर्भर है। कहीं-कहीं अुसकी भविष्यद्वाणी ठीक-ठीक निकलती है और अुस कारण अिसपर कुछ विश्वास होने लगता है। पर अभी आजकल के विज्ञान के अनुसार अिस बात का अनुसंधान नहीं हुआ; यद्यपि अब विज्ञान विविध प्रकार की किरणों का विविध फल मनुष्य की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चिकित्सा में भी देखने में आता है। जब वैज्ञानिक रूप से यह अनुसंधान हो जायगा तभी अुसपर विश्वास जमेगा। जबतक वसा नहीं होता, फलित-ज्योतिष भी अनेकानेक अंधविश्वासों के ही दर्जे में पड़ा रहेगा।

९. प्र०—महात्मा गांधी व पं० जवाहरलाल नेहरू ने आत्मकथा लिखी है, आपकी दृष्टि और अनुभव भी मौलिक हैं। तब आप भी क्यों अपनी आत्मकथा न लिखें?

अु०—मैं नहीं जानता कि मेरे जीवन में लोगों को कोअी अैसी बात मिलेगी जिसका जानना लाभकारी हो। अगर कभी अैसा विचार हुआ तो कुछ लिख भी दूं तो आश्चर्य नहीं; पर आज कोअी अैसी प्रेरणा नहीं होती।

१०. प्र०—भगवान बुद्ध आपके प्रान्त में पैदा हुअे। संसार के बुद्ध धर्मावलंबी अिस पवित्र स्थान के दर्शन करने आपके ही प्रान्त की यात्रा करते हैं। बौद्ध संस्कृति के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?

अु०—आज की बौद्ध संस्कृति का ज्ञान मुझे अुतना ही है जितना किसी अैसे आदमी को हो सकता है जिसने चार-पाँच दिन लंका में और आठ-दस दिन बर्मा में बिताये हों—और वह भी वहाँ की भाषा न जानते हुअे। कुछ ज्ञान पुस्तकों से मिला है जो आज से नहीं पर बुद्धदेव के प्रारंभिक अुपदेशों से सम्बन्ध रखता है। अिस ज्ञान का असर मेरे अूपर बहुत अच्छा पड़ता है और मैं मानता हूँ कि मानव चरित्र को उच्च बनाने में वह बहुत ही लाभदायक हो सकता है। आश्चर्य की बात है कि जहाँ बुद्धदेव का जन्म हुआ, अुन्होंने तपस्या की और ज्ञान लाभ किया—जहाँ अपने जीवन के अस्सी वर्ष बिताये और जहाँ प्रायः ५०-६० वर्षों तक लगातार भ्रमण करते रहे और अुपदेश देते रहे, वहाँ आज अुनके प्रचारित धर्म का अेक भी माननेवाला नहीं है। जो साम्राज्य चन्द्रगुप्त और अशोक ने स्थापित किया, जिसने अुस समय बिहार को ही भारतवर्ष में और अुसके बाहर सभ्यता, साम्राज्य और बौद्ध-धर्म का केन्द्रस्थान बना दिया—जिसके धार्मिक संन्यासियों ने तिब्बत, चीन, जापान, बर्मा, सिंहल वगैरा देश-विदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया—अुस काल की स्मृति आज कुछ स्तूपों, खंडहरों और अप्रचलित ग्रन्थों में ही मिलती है। देखने में, मानव-समाज और जीवन में अुसका पता नहीं चलता। पर अिसका कारण मुझे तो यही मालूम होता है कि अुस धर्म के मूल सिद्धान्त समाज के जीवन में कार्य-रूप से स्वीकृत हो गये और अुनका अलग अस्तित्व नहीं रह गया। अिस दृष्टि से बौद्ध-धर्म जैसे अपने जन्म के समय सनातन हिन्दू-धर्म का रूपान्तर मात्र था अुसी प्रकार आज अलग न रहकर अुसीमें सम्मिलित हो गया है।

११. प्र०—चम्पारन-सत्याग्रह पर आपने अेक पुस्तक लिखी है। अिस समय वहाँ के किसानों की हालत कैसी है? क्या आप अिसपर भी कोअी पुस्तक लिखेंगे?

अु०—चम्पारन के किसानों की हालत बहुत कुछ सुधर गअी है। सत्याग्रह के पहले जो बोझ नील की खेती का था वह तो हट ही गया है। जिस प्रकार वे भयभीत रहा करते थे वह भी बहुत अंशों में दूर हो गया है, पर वे बिहार के अन्य किसानों की तरह अभी भी अत्यन्त ग़रीब हैं। यद्यपि वहाँ की ज़मीन बहुत अुर्वरा (अुपजाऊ) है, यह अेक अुन प्रश्नों में है जिनका अुत्तर अभी मुझे नहीं मिला है। ज़मीन अुपजाअू—आबादी भी बहुत ज्यादा नहीं—ज़मींदार की मालगुजारी भी कम, और फिरभी अितनी ग़रीबी! अिस प्रश्न के अुत्तर के लिअे वहाँ रहकर गहरे अध्ययन की ज़रूरत है, पर अिसके लिअे समय नहीं मिला। अगर कभी अिसका मौक़ा मिलेगा और कुछ अैसी बातें मालूम होंगी जिनको दूसरों को बता देना आवश्यक प्रतीत होगा तो दूसरी पुस्तक भी लिख सकता हूँ।

११. प्र०—आजकल राष्ट्रभाषा की शैली के बारे में काफी चर्चा हो रही है। आपके मत में राष्ट्रभाषा की शैली कैसी होनी चाहिअे? क्या रोमन लिपि राष्ट्रभाषा के लिअे स्वीकार करने लायक है?

अु०—राष्ट्रभाषा की शैली, और विशेषकर शब्दावली के सम्बन्ध में मैंने नागपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अपने भाषण में काफी चर्चा की है। मेरा विचार है कि राष्ट्रभाषा को संस्कृत न बनाकर, केवल संस्कृत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

...ही मौलिक भाषा न मानकर फारसी, अरबी व भारत ...प्रान्तीय भाषाओं के भी अच्छे और प्रचलित—आम-...—शब्दों को अुसमें मिला लेना चाहिअे। अिससे ...भाषा का गौरव बढ़ेगा, और अुसके प्रचार में भी ...ता मिलेगी। बाहर के शब्दों के विरुद्ध द्वार बन्द करना ...की अुन्नति—तरक्की—के मार्ग को बन्द करना है। ...मैं मानता हूँ कि वह राष्ट्रभाषा के लिअे घातक ...होगा। अैसा करने से ही हिन्दी-अुर्दू का झगड़ा भी ...हो जायगा और हिन्दू-मुसलमान दोनों ही अुसे राष्ट्र-...मान लेंगे।

मैं नहीं जानता कि नागरी लिपि के रहते अवैज्ञानिक ...लिपि को स्वीकार करने की कोई भी आवश्यकता ...साथ ही हम यह नहीं भूल सकते कि हमारी सारी ...ति और साहित्य जो प्राचीन काल से हमने निर्माण ...है वह हमसे अेक प्रकार से अिस लिपि को स्वीकार ...पर बिछुड़ जायगा और कोअी लाभ नहीं होगा।

महात्माजी का भाषण

[गुजराती साहित्य सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन ...सभापति की हैसियत से गांधीजी ने जो भाषण किया ...अुसका कुछ अुपयोगी अंश नीचे दिया जाता है]

डेमाक्रेसी की व्याख्या और व्याप्ति

अखबारों में मेरे बारे में जो कुछ लिखा गया है, ...अुनकी जो कतरनें मेरे पास आअी हैं, उन सबको ...नहीं पाया हूँ। लेकिन जो चिट्ठियाँ मेरे नाम ...हैं वे तो पढ़नी ही पड़ती हैं। लोग मुझे 'डेमाक्रेट' ...हैं, और मैं हूं भी; अिसलिअे लोगों ने मुझसे ...रक्खी है। अुनकी शिकायत है, परिषद का ...मुनशीजी का बनाया हुआ है, अुसपर अुन्हींका ...है; वे कानून के पण्डित हैं, अिसलिअे अुन्होंने ...विधान को बनाया ही अिस तरह है कि अुसकी अेक ...भी कोअी नहीं खिसका सकता। हां, अगर आप ...अींट खिसका दें, तो कुछ हो सकता है। अिच्छा ...अनिच्छा से, या दबाव डालकर कैसी भी कुछ ...कराअी जा सके तो ज़रूर कराअिअे। अिसके ...और भी कअी सूचनाअें मेरे पास आअी हैं।

मैं अपनेको डेमाक्रेट—प्रजातंत्रवादी मानता हूं, और जो अिस अर्थ में सच्चा डेमाक्रेट है, वह तो अेक अिशारे में समझ जायगा कि प्रजा का अधिकार क्या चीज़ है, और डेमाक्रेसी कहाँ चलती है और कहाँ नहीं। जब पहले-पहल राष्ट्रीय महासभा का विधान बना तो कअियों ने कहा कि हम महासभा को चार आने भी क्यों दें? जिन्होंने चार आने नहीं देने का निश्चय कर लिया था, मैंने अुनसे पूछा—फिर आप लोग महासभा में क्यों आते हैं? मान लीजिअे, देश की खिदमत के अिरादे से अेक सच्चा 'पीपुल्स बैंक' खोला जाय—वैसा बैंक नहीं जिसमें बड़े-बड़े सेठों के हिस्से (शेयर) होते हैं; बल्कि सच्चा लोक-हितकारी बैंक—तो, अुसमें आप लोकहित की दृष्टि से भी अुन्हीं आदमियों को न रखना चाहेंगे, जो अीमानदार हों, क़ाबिल हों, और खुदग़रज़ न हों व लोगों की भलाअी करना चाहते हों? अगर अिसमें भी प्रजातंत्र के सिद्धान्त के अनुसार लोगों को आप चुनेंगे तो आपका काम न चलेगा। अब अेक दूसरा अुदाहरण लीजिअे। मान लीजिअे कि हमें अेक बड़ी अदालत कायम करनी है, तो क्या अिस अदालत का विधान हम प्रजा-तंत्र मय रक्खेंगे? अदालत या न्यायमंदिर तो प्रजातंत्र में होंगे। लेकिन शुद्ध से शुद्ध प्रजातंत्र में भी अैसी संस्थाअें होंगी, जिनमें प्रजातंत्र के हित के लिअे ही प्रजातंत्र के नियमों से विरुद्ध, दूसरे ही नियमों द्वारा, काम चलाना होगा। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि कहां प्रजातंत्र चलेगा और कहां नहीं। अिसीलिअे मैं कहता हूं कि साहित्य-परिषद के सभी नियम प्रजातंत्रात्मक नहीं हो सकते।

मैं डेमाक्रेट हूँ, फिर भी कहता हूँ कि अैसी परिषदें प्रजातंत्र की प्रणाली पर नहीं चल सकतीं। अुनमें प्रजा-तंत्र का तत्त्व होगा, नियम नहीं। जब अिस देश के अपढ़ से अपढ़ कहे जानेवाले बच्चे, स्त्रियाँ और बूढ़े प्रजातंत्र को समझने लगेंगे तबतक शायद मैं मर चुका होअूंगा; लेकिन जो जिन्दा रहेंगे, वे याद रक्खें कि अैसी संस्थाओं का काम डेमाक्रेसी के ढंग पर नहीं चल सकता। अगर चलाया भी जाय तो वह डेमाक्रेसी नहीं, 'मोबीक्रेसी'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होगी। अिसलिअे जिन्होंने डेमाक्रेसी के नाम पर मुझसे कुछ भी फेर-फार कराने को कहा है अुनसे मेरी यही प्रार्थना है। मगर अिसका यह मतलब नहीं कि अिस विधान पर मुनशी का ही पूरा अधिकार है। मैंने अिस विधान को पढ़ा है। और मेरे लिअे तो यह बात मशहूर ही है कि मैं बहुत जल्दी नये-नये विधान बना सकता हूं। मैं कानून का पण्डित तो हूं नहीं, अिसलिअे मेरी भाषा गँवारू ज़रूर होती है, लेकिन मैं अुसे अिस तरह लिख सकता हूँ कि कानून के पण्डित भी समझ सके और आम जनता भी समझ सके। अपनी बुद्धि को अभी मैंने गिरा नहीं दिया है, अिसलिअे कहता हूँ कि अिस विधान पर मुनशी का कोअी अेकाधिकार नहीं है।

विधान में परिवर्तन के विषय

दूसरे, आजतक कोई अैसा पैदा नहीं हुआ कि जिसके बनाअे विधान में से मोटर, चार घोड़ों की बग्घी और मेरे जैसे की बैलगाड़ी भी न निकल सकी हो। विधान कैसा ही क्यों न हो, अुसमें त्रुटि तो रहती ही है। पूर्णता, सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता का अधिकारी तो अेक अीश्वर ही है। और अीश्वर भी तो अेक ज़बरदस्त 'डेमाक्रेसी' ही न है? वह क्या-क्या नहीं सहता? हम, अुसकी संतान, क्या-क्या अूधम नहीं मचाते? हम अुससे पूछते हैं कि अीश्वर को हमें दिखाओ। वह सर्वव्यापी है, हमारी आँखों में और हमारी रग-रग में मौजूद है; फिर भी हम पूछते हैं। लेकिन अीश्वर को देखने की शक्ति अीश्वर ने किसीको दी नहीं है। जिस पर अुसकी दया होती है, वही अुसे देख सकता है, तब और तभी देख सकता है, जब वह दिखाना चाहता है। अुसके न मुँह है, न आँख, नाक और कान हैं; मगर जिसे वह साक्षात्कार की शक्ति देता है, अुसीके सामने वह प्रकट होता है, वही अुसे देख सकता है। लेकिन यह शक्ति भी अुसने अपने पास ही रक्खी है।

मुनशी की क्या कही? वे तो हमीमें से अेक हैं, और हम लोग गुलाम हैं। लेकिन रूस में, अिटली में या कहीं और भी कोअी अैसा विधान है, कि जिसमें कोअी परिवर्तन कराना चाहे और न करा सके? हाँ, जो विधान और घटनाअें बन्दूक के बल पर निर्भर हैं वे अैसी हो सकती हैं। लेकिन वह कौन है, जो अैसा विधान बनाये कि अुसमें फिर कोअी हेरफेर ही न किया जा सके?

जो चाहते हैं कि अिस परिषद के विधान में कुछ परिवर्तन न हो अुनसे मेरा एक निवेदन है, वह यह कि अच्छे परिवर्तन अेक-दो दिन में नहीं किये जासकते। कितनी ही अनिच्छा लेकर मैं क्यों न आया होअूँ, आखिर हूँ तो सभापति ही। सभापति के अधिकारों को मैं जानता हूँ और अुसकी जिम्मेदारियों को भी ठीक तरह समझ चुका हूँ। विधान दो दिन में नहीं बदला जा सकता। अिस खयाल से कि मेरे अपने सभापतित्व में अिस परिषद की अन्त्येष्टि न हो, मुझे जैसा कुछ सूझेगा, और जो कुछ मैं कौशलपूर्वक कर सकूँगा, करके, विधान में परिवर्तन कराने की चेष्टा करूँगा—लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि परिवर्तन करा ही लूँगा। मैं जो कुछ सुझाअूँगा, विधान के अनुसार सुझाअूँगा। कभी भी किसी आदमी के साथ मैं प्रपंच की बातें न करूँगा। सीधी सच्ची बातें सीधे ढंग से सुना देने की शक्ति मेरे अन्दर है, बिलकुल सादे ढंग से जो परिवर्तन मैं कर सकूँगा कराअूँगा।

साहित्य-परिषद क्या करे?

अब परिषद की बात लीजिअे। परिषद क्या करे? परिषद से मैं क्या आशा रक्खूँ?

इस समय जो कुछ कहूँगा, मेरी नज़र में अुसका मूल्य कम नहीं होगा। क्योंकि मैं वही कहूँगा, जो मेरे दिल में है, और जिसपर मैं कोई रंग नहीं चढ़ा रहा हूँ।

स्वागताध्यक्ष ने मेरा बहुत-सा बोझ हलका कर दिया है। पहले साहित्य-परिषद के सामने मैंने जो कुछ कहा था, सो सब अुन्होंने आपको दुबारा सुना दिया है, अिस आशंका से कि कहीं मुझे फिर आपको खरी-खोटी न सुनानी पड़े। पर अहिंसा का पुजारी खरी-खोटी क्यों सुनाये? मुझे खरी-खोटी से क्या मतलब? मैंने तो तब भी विनय ही बतलाया था और आज भी श्री नरसिंह-राव भाअी की बेरुखी मुझे बहुत खटक रही है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के साथ मेरा सम्बन्ध उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया है। आज यहाँ होते, तो मैं खूब खुश होता। और रमण भी तो आज हमारे बीच में हैं ही नहीं। अुनसे मैंने कहा था कि मेरे पड़ोस के कुंअे पर जो आदमी चड़स चलाता है, वह बेचारा जानता भी नहीं कि वह कैसी भाषा बोलता है। गालियाँ बककर भी वह नहीं समझता कि वह गाली बक रहा है। मैं अुससे क्या कहूँ? कोई कवि अुसके पास जा सकता है? मुनशीजी तो नामकार ठहरे, वह अुसके पास नहीं जा सकते। कोई प्रसूत कालाकार ही अुसके पास जाकर अुसे समझा सकता है। दो शब्द अुधर के और दो अिधर के लेकर अुसके पास जाकर कोई अैसी बात कहे, कि जिसे वह समझ सके।

मैं पूछता हूँ, हम साहित्य किसके लिअे लिखेंगे? अंबुभाअी एण्ड कंपनी के लिअे? अंबालाल भाअी के लिअे? या सर चिनुभाअी के लिअे? अिनके पास तो पैसे हैं, ये मनचाहे साहित्यकार अपने पास रख सकते हैं और मनमाने पुस्तकालय बना सकते हैं; लेकिन वह बेचारा क्या करे? अुस समय तो वह अकेला ही मेरे सामने था। वह कोई सच्चा देहाती भी नहीं था। कोचरब में रहनेवाला था। कोचरब भी कोअी गाँव है? वह तो अहमदाबाद की जूठन है। लेकिन आज तो अुस मोटवाले के सैकड़ों आदमी मेरी आँखों के सामने खड़े हैं। आजकल सेगाँव में रहता हूँ। ६०० आदमियों की बस्तीवाला यह गाँव है। अिन ६०० में मुश्किल से ५० आदमी अैसे हैं जो पढ़ सकते हैं। अगर दस कम हों तो मैं कहीं और दूर जाता। वहां मलेरिया का दौरा-दौरा है। लेकिन मलेरिया के साथ यह समझौता हो चुका है कि जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ टिक नहीं सकता। गाँव में अनेक पोखर हैं, लेकिन यहाँ अेक धनिक अैसा मिल गया है जिसने अेक सड़क बनवादी है। छः महीने पहले वहाँ की जैसी हालत थी अुसमें तो आनंदशंकर भाअी जैसों के लिअे वहाँ आना ही मुश्किल था।

मैं कह चुका हूँ, कि मैंने वहाँ अेक नवीन पुस्तकालय स्थापन किया है। लेकिन अुसमें साहित्यिक पुस्तकें हो सकती हैं? कुछ लड़कियों की पुरानी किताबें मँगाकर रखी हैं। इन रद्दी-सद्दी पाठ्य-पुस्तकों के रचयिताओं के विषय में यदि मैं कुछ कहूँ, तो घण्टों कह सकता हूँ और आपको खूब हँसा सकता हूँ। लेकिन अितना समय मेरे पास नहीं है।

सेगांव मराठी-मध्यप्रान्त में है। वहाँ अितनी निरक्षरता नहीं है, जितनी गुजरात में है। मगर सेगाँव में तो निरक्षरों की ही संख्या ज्यादा है। वहाँ मेरे पास अेक अेल.-अेल० बी० हैं जो कानून भूल गये हैं। वह बेचारे भूल में अेल-अेल० बी० बन गये थे। असल गुजराती हैं, लेकिन थोड़ी मराठी जानते हैं। अुनसे मैंने कह रक्खा है कि वे लोगों को अैसी ही पुस्तकें पढ़ावें जो अुनकी समझ में आसकें और बाकी के लिअे अपने ज्ञान का अुपयोग करें और अुन्हें सिखावें। अखबार आते हैं, लेकिन वहाँवाले अुन्हें क्या समझ सकते हैं? अुन्हें तो भूगोल सिखाने की ज़रूरत है। वे क्या जानें, रूस क्या है? स्पेन कहाँ है, और वहाँ क्या हो रहा है? साढ़े तीन रुपयों की कीमतवाली पुस्तकों के अिस पुस्तकालय के लिअे जो घर मिला है, वह अैसा है कि बरसात में वहाँ बैठना मुश्किल है। अुसे अगर कोई अेक दियासलाई छुआ दे, तो वह धांय-धांय जल उठे। असल में तो वह मीराबहिन की अेक झोपड़ी थी। मीराबहिन त्यागी हैं, मगर मूर्ख हैं। मैंने अुनसे कहा था, जहाँ लोग पाखाना फिरते हैं, वहाँ तुम रह नहीं सकती। मैं तो गांव की सीमा पर ही रहता हूँ। गाँव में बसने के लिअे मेरी शर्त है कि शुद्ध हवा, शुद्ध पानी और शुद्ध भोजन मिले।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सौभाग्य से जहाँ मैं रहता हूँ, अुसके आसपास की जगह को लोग पाखाने के काम में नहीं लाते हैं। तो भी मीरा-बहिनवाली अुस झोंपड़ी में मैंने पुस्तकालय बनाया है। अब आपसे पूछता हूँ, अिन देहातियों को मैं क्या पढ़कर सुनाअूं ? मुनशी (कन्हैयालाल मुनशी) के अुपन्यास पढ़ूं ? कृष्णलाल भाअी का कृष्ण-चरित्र पढ़ूँ ? अुनका कृष्ण-चरित्र यद्यपि मौलिक नहीं है, तरजुमा है, फिर भी जब मैंने उसे पढ़ा तो मुझे वह रुचा—मीठा लगा था। उसे पढ़कर मैं खुश हुआ। लेकिन हमारी यह कमनसीबी है कि मैं सेगाँव में इस पुस्तक का उपयोग कुछ भी नहीं कर सकता। यह बात विद्वानों से मैं न कहूँ, तो और किससे कहूँ ? बिना मांगे और बिना चुने मैं अुनका प्रतिनिधि। और गाँव के गँवारों का आर्तनाद आपको सुनाता हूँ, यह सच्ची डेमाक्रेसी। अुन लोगों से कुछ सीख-साखकर मैं आप सबसे कहता हूँ, अगर आप सच्चा स्वराज्य चाहते हैं, तो वहाँ चलिअे। आपके लिअे रास्ता साफ़ कर रहा हूँ। काँटें तो वहाँ बिखरे ही पड़े हैं, लेकिन थोड़े गुलाब भी मैं वहाँ उगा दूँगा।

आपसे ये बातें कहते हुअे, अिस समय मुझे डीन फेरर की याद आ रही है। वह अेक जबर्दस्त विद्वान था। मैं मानता हूँ कि अँग्रेज़ी में अेक से अेक बढ़कर विद्वान पड़े हुअे हैं। अंग्रेज़ों के साथ मैं लड़ता हूँ, तो क्या हुआ, मैं गुणग्राहक भी तो हूँ। मुझे अंग्रेज़ों से या अंग्रेज़ी भाषा से कोअी द्वेष नहीं है। हाँ तो डीन फेरर ने सोचा, मुझे जनसाधारण के लिअे अीसामसीह का एक अच्छा-सा जीवन-चरित लिखना चाहिअे। लेकिन वह कैसे लिखे ? पहले तो वह उन सभी पुस्तकों को पढ़ गया, जो अंग्रेज़ी में अीसामसीह पर मौजूद थीं, लेकिन अुसे संतोष न हुआ। तब वह पेलेस्टाअिन गया और हाथ में बाइबिल लेकर सारे प्रदेश में घूमा—बाइबिल के वर्णन के अनुसार सब जगहें अपनी आँखों से देखीं और फिर श्रद्धायुक्त मन से अुसने अपनी पुस्तक लिखी। अिस पुस्तक के लिअे अुसने कितनी सामग्री अिकट्ठी की, कितना परिश्रम अुठाया और कितने वर्षों की मेहनत के बाद वह पुस्तक लिखी गअी ! अंग्रेज़ी की वह अनोखी पुस्तक है। जब मैं नेटाल से रवाना हो रहा था, तब एक पादरी ने वह पुस्तक मुझे पढ़ने को दी थी। अंग्रेज़ी की वह एक सुंदर और सर्वमान्य पुस्तक है। उसमें जानसन की अंग्रेज़ी नहीं है। डिकन्सन की-सी सरस और सरल अंग्रेज़ी में सर्वसाधारण के लिअे वह पुस्तक लिखी गअी है। तो अब मैं पूछता हूँ, हमारे विद्वान क्या करेंगे ? क्या कालिदास और भवभूति को पढ़कर या अंग्रेज़ी पुस्तकें पढ़कर गाँवों में जायेंगे ? ये पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते अुन्हें तपेदिक हो जाय, संग्रहणी हो जाय और ब्लड प्रेशर भी हो जाय, तो भी अिनका पढ़ना अुनसे न छूटेगा। और फिर अगर कोअी विद्वान गाँवों के लिअे कोअी पुस्तक लिखेगा तो वह भी अुसीकी तरह अेक रोगिष्ट पुस्तक होगी। गाँवों में अैसे आदमी की जरूरत नहीं है। ज़रूरत है अुन आदमियों की जो सब तरह लायक हैं। गाँवों में मेरी तरह 'थर्मास' लेकर जानेवालों की अपेक्षा अुनकी ज्यादा ज़रूरत है, जो वहाँ गाँववालों की तरह रह सकें। अैसे लोग ही वहाँवालों को सजीव साहित्य दे सकेंगे।

सच्ची कला

रविशंकर रावल जैसे हमारे कलाकार अहमदाबाद में बैठे-बैठे ब्रुश (पींछी गु०, कूंची हिं०) चलाया करते हैं; लेकिन वह गाँवों में जाकर क्या करेंगे ? आज मैंने उनकी प्रदर्शिनी देखी और देखकर मेरी छाती फूल उठी, क्योंकि अिससे पहले अैसे चित्र यहाँ नहीं थे। पहले भी डॉ० हरिप्रसाद मुझे कुछ दिखाने ले गये थे; लेकिन तबसे अबतक में खूब प्रगति—तरक्की—हुअी है। चित्रों द्वारा भी साहित्य-निर्माण हो सकता है। लेकिन वे चित्र ही अलग होते हैं। यहाँ तो रविशंकर रावल शब्दों द्वारा चित्रों का परिचय करा रहे थे। लेकिन सच्ची कला तो वह है कि जिसे अुनके न कहने पर भी मैं समझ सकूँ। वह कला ही क्या कि जिसके लिअे मुझे सुनना पड़े, रस्किन के ग्रंथ पढ़ने पड़ें, या जिसे समझाने पर मैं समझ सकूँ ! मैं तो एक देहाती की आँखों से देखना चाहता हूँ। फिर भी कहता हूँ कि अुनके चित्र देखकर मेरी छाती फूल अुठी। पर मैंने यह भी सोचा कि चित्रों को तो मुझसे बातें करनी चाहिअें, मेरे सामने नाच अुठना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिअे, अेसे चित्र तो दुनिया में बहुत ही थोड़े हैं। रोम के पोप के संग्रह में मैंने अेक मूर्ति देखी थी, जिसे देखते ही मैं स्तंभित हो गया था। और वह मूर्ति थी सूली पर लटके हुअे ईसामसीह की। अुसे देखकर आदमी दंग रह जाता है, पागल बन जाता है। अुसकी कला समझाने के लिअे रविशंकर रावल मेरे पास नहीं थे, फिर भी अुसे देखकर मैं स्तब्ध रह गया था। लेकिन वह तो परदेश की बात हुई। कुछ ही बरस पहले मैं बेलूर गया था। बेलूर मैसोर में हैं। वहाँ के अेक पुराने मंदिर में मैंने स्त्री की अेक प्रतिमा—बुत—देखी, जो नग्नावस्था में खड़ी थी। अुसे किसीने मुझे दिखाया नहीं; बल्कि मेरा ही ध्यान अेकाअेक अुस तरफ़ चला गया और मैं ठिठक गया—खिंचा गया। मैं यहाँ नग्नदशा में खड़ी हुई स्त्री का वर्णन नहीं करना चाहता, लेकिन अुस चित्र का जो भाव मैं समझ सका हूँ, वही सुनाता हूँ। अुसके पैरों के पास एक बिच्छू पड़ा हुआ है। अुसका शिल्प-कवि अश्लीलता का अुपासक नहीं था। इसलिअे अुसने अपनी प्रतिमा को कपड़े से कुछ ढँक रक्खा है। काले संगमरमर की वह अेक काली मूर्ति है जिसे देखते ही अेसा मालूम होता है, मानो रंभा-सी कोई अप्सरा खड़ी छटपटा रही है।

यहाँ तो मैं अुसका गँवारू वर्णन कर रहा हूँ। मैं बड़ी देर तक तो उसे देखता ही रहा। वह अपनी देह पर पड़े हुए कपड़ों को झटकार रही है। कला को जीभ की जरूरत नहीं होती। मैंने सोचा, साक्षात् कामदेव बिच्छू बनकर बैठा है, और उस बाला की देह से आग-सी झड़ रही है। कवि ने काम की विजय दिखाअी है, लेकिन उस स्त्री ने आखिर अपने कपड़ों में से उसे झटकार ही डाला है और अुसे अपने अूपर विजयी नहीं होने दिया है। अुस स्त्री के अेक-अेक अंग पर अुसकी वेदना लिखी हुई है। रविशंकर अुसका कैसा भी अर्थ क्यों न करें, उनका वह अर्थ झूठा है और मेरा गँवारू अर्थ सच्चा है।

मैं कह चुका, मैं आपसे क्या चाहता हूँ। दिल में तो आता है कि इस चित्र को और सजीव बनाअूँ। लेकिन सोचता हूँ, जो अितने पर भी न समझे, वह कलारसिक ही कैसा?

मैं जो यह अितनी सारी बकवास कर गया हूँ, अिसके लिअे आप मुझे माफ़ करेंगे। मेरे हृदय में आग जल रही है। दिल में तो आता है कि जो धुँधला चित्र अभी खड़ा किया है, अुसे पूरा करूँ; पर लाचार हूँ। और अिसलिअे अुसे यहीं समेट लेता हूँ। मुझे जो कुछ कहना था, अुसमें से कुछ ही मैंने आपसे कहा है। अिस समय मेरा दिल रो रहा है। लेकिन यहाँ बैठे-बैठे आँखों से आँसू कैसे बहाअूँ? भयंकर वेदना से छटपटाते हुअे भी मेरा धर्म है, कि मैं हँसूँ। रोने के कई मौक़े आते हैं, पर मैं रोता नहीं हूँ, दिल को कड़ा कर लेता हूँ; लेकिन जब मैं सेगाँव का और वहाँ के अस्थिपंजर लोगों का ख़याल करता हूँ (यहाँ गाँधीजी का गला भर आया। कुछ देर रुककर वे बोले), तो मुझे आपका साहित्य निरर्थक-सा मालूम होता है। मैंने आनंदशंकर भाअी से १०० पुस्तकें माँगीं। अुन्होंने मेहनत करके भेजी थीं। लेकिन अुन पुस्तकों को मैं क्या करूँ? कैसे अुन्हें वहाँ लेजाअूँ?

वहां की स्त्रियों को देखता हूँ, तो मन में आता है, अिन स्त्रियों का अहमदाबाद की स्त्रियों के साथ क्या सम्बन्ध है? वे क्या जानें, साहित्य किसे कहते हैं? अरे 'रामधुन' भी तो वे ठीक से गा नहीं पातीं। साँप और बिच्छू की, बारिश की और सर्दी-गर्मी की परवाह किये बिना वे हैं, जो मेरे लिअे पानी भर लाती हैं, घास काटकर लाती हैं अींधन ले आती हैं; और जब मैं उन्हें पाँच पैसे देता हूँ, तो समझती हैं, मैं उनका अन्नदाता हूँ। वहाँ कोअी अंबालाल नहीं हैं, जो उन्हें पाँच पैसे दें और हिन्दुस्तान अहमदाबाद में नहीं, सात लाख गांवों में है। मैं पूछता हूँ, आप अुन्हें क्या दीजिअेगा? अुनमें सिर्फ़ सौ में पाँच अैसे हैं, जो लिख-पढ़ सकते हैं। मुश्किल से सौ-दोसौ शब्दों का भंडार अुनके पास है। मैं जानता हूँ, अुनको मैं क्या दे सकता हूँ? लेकिन मैं वह सब आपसे कहकर क्या करूँ? कहकर बताना मेरी आदत में नहीं है। क़लम मैंने ज़बरदस्ती पकड़ी है। बेबसी की हालत में क़लम चलाता हूँ। आज कुछ बोल भी लेता हूँ, लेकिन सोभी परिस्थिति विशेष के कारण। मैं बरसों तक बोला नहीं हूँ। मित्रों ने मुझे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धू समझा है। छोटी-सी सभा में भी मैं बोल नहीं सका था। जब अदालत में गया तो मुझे यह भी नहीं सूझा कि 'माअी लार्ड' कहूँ या क्या कहूँ ? मैं बोलना जानता ही नहीं। बैरिस्टरी पास की, पर गँवार बैरिस्टर बना—अिसलिअे बोलना छोड़ दिया। मेरा तो सूत्र ही यह है कि जितना हो सके, करता रहूँ। मैं जानता हूँ कि स्वराज्य की कुंजी मजूरों के पास भी नहीं है। स्वराज्य की कुंजी तो गाँवों में है। गाँव भी मैं ढूँढने नहीं गया। सत्याग्रह की भी शोध मैंने नहीं की। दोनों बातें अकस्मात् मुझे मिल गअीं। गाँवों की अनेक स्त्रियाँ मेरे पास आती हैं। माता के रूप में ही मैं अुन्हें पहचानता हूँ, अुसी रूप में मैं अुनकी आराधना करता हूँ, और माता के अिस मंदिर में आने के लिअे आप सबको भी निमंत्रण देता हूँ।

अुपसंहार

पहले तो मैं आप सब का आभार मानता हूँ। .....अबकी मेरे साथ बलात्कार किया गया था, लेकिन यह प्रेम का बलात्कार था। और यह बलात्कार पठान के डंडे से भी बढ़कर था। पठान के डंडों से मैं कभी नहीं डरा हूँ; पर प्रेम के डंडे ने सदा मेरा सिर नीचा ही पाया है। मैं बोझ से लदा हुआ यहाँ आया हूँ, अिसी कारण पहले दिन मैंने केवल मौखिक भाषण किया था। आज फिर वैसा ही भाषण करने बैठा हूँ। अिसके लिअे मैं आपसे माफ़ी माँगता हूँ। यह बात नहीं है कि मैं तरह-तरह के निबंध समझ नहीं सकता, और यह भी नहीं कि मैं सुनना नहीं चाहता। वैसे तो न जाने कितनें रस मेरे हृदय में भरे हैं जिन्हें मैं तृप्त नहीं कर पाता हूँ और वे पड़े हुअे हैं। अुन्हें जब मिटना होगा तब मिट जायंगे। लेकिन जब अुनके प्रसंग आते हैं तो वे खिल अुठते हैं। अिसलिअे मैं कहता हूँ कि मैं हर बात में रस ले सकता हूँ।

दान के साथ शर्त क्यों ?

समस्यापूर्ति के लिअे और अुपन्यासों के लिअे यहाँ पुरस्कारों की जो घोषणा हुअी थी, उसपर मुझे अमेरिका का करोड़पति कारनेगी याद आरहा था। याद आया कि अुसने साहित्य को बड़े-बड़े पुस्तकालय भेंट में दिये हैं। स्काटलैंड तो व्यवहार-कुशल लोगों का देश है, और वहाँ वालों को अपने अिस गुण पर अभिमान भी है। आप स्काटलैंड जाअिअे, आपको मालूम होगा, मानो आप किसी नये प्रदेश में आगअे हैं। हमारी नज़र में अिंग्लैंड और स्काटलैंड अेक हैं, लेकिन वहाँ स्कॉच-बैंकर और अंग्रेज़-बैंकर के बीच लड़ाअी भी होती है। जब पुस्तकालयों की भेंट के सिलसिले में शर्त का सवाल खड़ा हुआ तो हमारे साहित्यिकों की भांति स्कॉच-प्रोफ़ेसरों ने साफ़ कह दिया, कि जब दान देते हो, तब शर्त क्यों रखते हो ? और क्यों पुस्तकालय का दान करते हो ? हम जैसा चाहेंगे वैसा अिसका अुपयोग करेंगे। साहित्य की दुनिया को तुम क्या जानो ? अगर कुछ मदद करते हो, तो बिला शर्त करो। अिसी तरह मैं यहाँ भी साहित्य के क्षेत्र में दान देने के अिच्छुक सज्जनों को यह सलाह देना चाहता हूँ कि अगर वे दान देना चाहते हैं तो परिषद को दें, अुसके किसी अंग को, दें, या जिसपर अुनका ममत्व हो अुसे दें। प्रामाणिकता देखें। दान लेने से पहले हमें जानना चाहिअे कि अुस दान का हम क्या अुपयोग करनेवाले हैं। जब समस्या-पूर्ति के पुरस्कार की बात हुअी तो मैंने सोचा, कि पुरस्कार औरों के लिअे क्यों नहीं ? अगर थोड़े समय में अच्छी समस्यापूर्ति न मिले, तो वह रकम परिषद को दे देनी चाहिए; या मुझसे कहना चाहिए कि तुम्हारे अच्छे भाषण के लिअे तुम्हें यह अितनी रकम 'हरिजन-सेवा' में खर्च करने को दी जाती है। जो काम कर रहे हैं, दान की रकम भी अुन्हीं के हाथ में पहुँचनी चाहिअे। दानियों से मैं प्रार्थना करूँगा कि आप दान दीजिअे, मगर दान की शर्त न रखिअे। यकीन हो तो दीजिअे, न हो गाँठ ढीली न छोड़िअे।

अुपन्यासों की बीमारी ?

श्री रामजी भाअी ने अुपन्यासों पर पुरस्कार की घोषणा की है। अुपन्यासों को पढ़ना अेक बीमारी है। संसार में यह घर-घर फैल चुकी है। अिसीका परिणाम है कि आज 'शिलिंग शोकर' जैसी मशीनें चल पड़ी हैं। अुनमें अेक शिलिंग डालिअे, और अेक किताब निकाल लीजिअे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और वह किताब कैसी होती है ? वह घर तक या पुस्तकालय तक पहुँचती भी है ? नहीं, ट्रेन में आप उसे खोलते हैं, कुछ पन्ने अिधर-अुधर अुलटते हैं, कुछ चित्र देखते हैं, और फिर फेंककर चलते बनते हैं। पुस्तकालयों में भी अुपन्यासों का ही लेन-देन ज्यादा होता है। बरसाती कुकुरमुत्तों की तरह आजकल अुपन्यासों की बाढ़ आ रही है। पुरस्कार दीजिअे या न दीजिअे, वे तो छपते ही रहेंगे। अुनमें कल्पना की तरंगों के सिवा और होता ही क्या है ? अिस समय मैं आपसे यह नहीं कहूँगा कि अुपन्यास कैसे लिखे जाते हैं ? लेकिन टालस्टॉय ने अिनका चित्र खींचा है और दिखाया है कि अुसके आसपास कैसी सामग्री अेकत्र की जाती है। जो हवाअी-जहाज पर चढ़कर देखते हैं और अुतरकर लिखते हैं, अुनपर क्या कोई अंकुश रक्खें ? मेरा तो खयाल है कि अगर गुजराती में अुपन्यास न लिखे गये तो अुससे गुजराती को कोअी रंडापा न आ जायगा। अिसलिअे मैंने सोचा था कि टेलर के गुजराती व्याकरण में से कुछ बातें आपको सुनाअूँगा। जब मैं दक्षिण आफ्रिका गया, तो अपने साथ टेलर का व्याकरण ले गया था। मैं गुजराती का पंडित तो नहीं हूँ; लेकिन अुसका प्रेमी अवश्य हूँ। टेलर का यह व्याकरण अेक सुन्दर चीज है। परिषद् के सभापति के नाते कल की रात मेरे लिअे कतल की रात थी। अिस रात को मैंने यह व्याकरण पढ़ने के लिअे निकाला, और सुबह भी खोलकर देखा; लेकिन विचार करने का मौक़ा मिले तब न ? चार बजे तक मेरा मौन था, लेकिन कौन अुसकी परवाह करता है ? खैर ! अपने व्याकरण के अंत में टेलर ने अेक निबंध लिखा है। मेरे विचार में वह अेक अुपग्रंथ ही है। जो साहित्य में नहीं जीता, वह भाषा की पूर्णता और अपूर्णता को भी नहीं जानता। हम अंग्रेजी जानते हैं, लैटिन जानते हैं, और अिनके शब्द गुजराती में नहीं मिलते तो गुजराती को अधूरी कहते हैं। टेलर कहता है—गुजराती संस्कृत की बेटी है, वह अधूरी कैसे ? अुसने लिखा है—'यथा मातृकस्तथा भाषा'। किसीसे पूछिअे कि गुजराती में क्या है, तो कहेगा अुपन्यास ही हैं। श्यामल भट्ट की नंदबत्तीसी को ही ले लीजिअे। वह क्या है ? अेक अुपन्यास ही न ?

गाँववालों के लिअे लिखिअे

मुझे तो गाँववालों के लिअे कई तरह की पुस्तकों की आवश्यकता है। मेरी इस भूख को आप लोग—साहित्यकार—बुझाइअे। अगर अैसी कुछ पुस्तकें तैयार हों, तो मेरे पास भेजिअे। बहुतेरे लोग मेरे पास पुस्तकें भेजा करते हैं। अेक लेखक ने खगोल-विद्या की दो प्रतियाँ मेरे पास भेजी हैं। मैं पूछता हूँ, अुसमें क्या है ? लेखक ने कभी आकाश देखा है ? मुझे मेरे शिक्षक ने सप्तर्षि और ध्रुवतारे के नाम सिखाये थे; पृथ्वी क्यों गोल है, अिसके कोअी ७–८ कारण भी पढ़ाये थे; और यह भी बताया था कि चन्द्रग्रहण क्यों होता है। मुझे अिन सबमें बड़ी दिलचस्पी है। अिनके लिअे मैं काकासाहब से पूछता हूँ, क्योंकि वे अिन बातों के रसिक हैं। वे रोज आकाश की ओर देखते हैं और मुझे अुनसे अीर्षा होती है। अुन्होंने मेरे अन्दर भी अिसका रस पैदा किया और मेरे कहने से अुन्होंने अिस विषय की पुस्तकें भी मेरे लिअे मँगा दीं; मगर वे अँग्रेजी में थीं। मैंने काकासाहब से कहा कि गुजराती में कोअी मौलिक पुस्तक लिखो। लेकिन वे न लिख सके, क्योंकि अुसमें निरी कामना से काम नहीं चलता। आजकल शहरवालों को खगोल-विद्या का प्राथमिक ज्ञान भी नहीं होता। अुनसे ज्यादा तो गाँवों के किसान जानते हैं। वे सप्तर्षि-मंडल और ध्रुव आदि को अच्छी तरह पहचानते हैं। मैं किसी अैसी पुस्तक की तलाश में हूँ जो गाँववालों के अिस ज्ञान को बढ़ाअे। शहरों में रहकर हम आज मौज मजा अुड़ा रहे हैं; लेकिन हमारे सच्चे आश्रयदाता तो गाँववाले हैं। गेहूँ, चावल, दाल वग़ैरा शहरों में पैदा नहीं होते। ये सब गाँवों से आते हैं। हम अुनके आश्रित हैं; फिर भी समय का फेर है कि ये गाँव आज परबस हैं। अिन गाँववालों के लिअे खगोल-विद्या पर अेक पुस्तक की मुझे ज़रूरत है। भूगोल की पुस्तकें भी ज़रूरी हैं—इस विषय की कई पुस्तकें हमारे यहां हैं; मगर अैसी नहीं जो गाँववालों की समझ में आ सकें। आप भले ही शहर वालों के लिअे लिखें, वे अितने नाक़द्र नहीं हैं कि आपकी चीज़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छोड़कर अंग्रेज़ी पढ़ेंगे। आज हमारे पास क्या है? अनुवाद आप करते हैं, लेकिन पढ़नेवाले कहाँ हैं? अंग्रेज़ों का तो यह हाल है कि किसी भी विदेशी भाषा में कोअी अच्छी पुस्तक छपी नहीं कि आठ दिन में ही अुन्होंने अुसका अनुवाद किया नहीं और छापा नहीं। यही क्यों? वे तो अपने छोटे बच्चों को भी नहीं भूलते, अुनके लिअे भी अुसमें से अैसी चीज़ तैयार कर लेते हैं कि जिससे बच्चे लाभ अुठा सकें। क्या डिकन्स की रचनाओं को बालक पढ़ सकते हैं? फिर भी वहाँ तो बच्चों के लिअे डिकन्स के ग्रथों से सरल भाषा में सरल चीज़ें तैयार की जाती हैं, जिससे बचपन ही से वे भाषा के रस को समझ सकें—भाषा-रसिक बन सकें। मैं पूछता हूँ, कहिअे, गुजराती में अिस तरह की चीज़ क्या है? ९० लाख गुजरातियों में अगर दो-चार आदमी अिस तरह के निकल भी आअे, तो अुससे कौन गुजरात का दलिद्दर छूटनेवाला है? मेरा अिरादा था कि अिस विषय का कोअी प्रस्ताव यहाँ रक्खूँ; लेकिन बाद में यह विचार ही छोड़ दिआ। मैंने जो कुछ कहा है, वह यदि किसी साहित्य-रसिक के हृदय में तीर की तरह पैठ गया है तो मैं समझता हूँ कि वह कुछ न कुछ करेगा ही। मैं आप लोगों को अेक सलाह देना चाहता हूँ—अिसलिअे कि जो भाअी या बहिन, या विद्यार्थी या विद्यार्थिनी साहित्य के क्षेत्र में कूदना चाहे वह अैसा साहित्य लिखे, जो शहरवालों के लिअे नहीं; बल्कि गाँवों की मूक जनता के काम का हो। शहरों में गड़कर बैठजाने से बुद्धि का विकास न होगा। मनोरंजक कहानियाँ या पाठ्य-पुस्तकें लिखने से भी बुद्धि का विकास न होगा। मेरे पास आने की किसी को रुकावट नहीं है जो चाहें आ सकते हैं। लेकिन जो रट-रटकर टटूू बन गया है, वह अगर पढ़कर सुनता है, तो अुससे क्या? जो चीज़ अुसकी अपनी नहीं है, वह अुसके दिल में कैसे रम सकती है? जिसका दिमाग़ ताज़गी से भरा है, वह यदि मेरे पास आअे, तो मैं अुसे दिखा दूँगा कि मौलिकता के लिअे शहर का क्षेत्र अच्छा नहीं है; वह तो उसे गाँवों में ही मिलेगी।

स्त्री-सौन्दर्य के वर्णन क्यों?

आज अन्त में अेक बात आपसे कहनी है। शायद, वह आपको रुचिकर न लगे। मेरे पास श्री लीलावती बहिन का अेक पत्र आया है। विषय-निर्वाचिनी समिति में अिस पत्र पर चर्चा हो चुकी है। संस्कृत-प्रधान और आडम्बरपूर्ण होने के कारण पत्र की भाषा अैसी थी कि वह मुझे अच्छी न लगी, लेकिन अिसमें उनका क्या दोष? जैसा वे लिख सकती थीं, वैसा ही तो लिखा है। ज्योति-संघ अनपढ़ बहिनों को गुजराती लिखना-पढ़ना सिखाता है, और सिखाते समय बहिनों को कुछ पढ़कर बताना और गुजराती में कुछ समझाना भी पड़ता है। और जो कुछ पढ़ना पड़ता है अुसमें स्त्रियों के जो वर्णन आते हैं अुन्हें पढ़कर ही यह पत्र लिखा गया है। अुन्हें ये पाठ्य-पुस्तकें निर्मल नहीं मालूम हुईं। स्त्रियां साहित्यकार से पूछती हैं—आपने स्त्री का सौन्दर्य कहाँ देखा है? अुसकी देह की सुन्दरता से आपका क्या सम्बन्ध है? कभी आपने माता का और पत्नी का सौन्दर्य निहारने का कष्ट किया है? मेरे मर जाने के बाद क्या आप मेरी सुन्दर देह में मसाला भरकर अुसे घर में रखे रहेंगे? और जब वे अैसा पूछेंगी, तो ज़रूर वह लेखक शर्मिन्दा हो जायगा।

"न रमा हैं, न कुब्जा हैं"

अेक सज्जन ने स्त्रियों के सम्बन्ध में मनुस्मृति की कुछ सूक्तियाँ मेरे पास यह दिखाने को भेजी हैं कि अुस काल में स्त्रियों का कितना सम्मान होता था। लेकिन स्मृतियों में रत्न भी हैं और कंकर-पत्थर भी हैं। मिस मेयो ने जिस प्रकार हिन्दुस्तान की गटरों को ही हिन्दुस्तान कहा, अुसी प्रकार स्मृतियों में भी स्त्री-जाति के विषय में गन्दी से गन्दी बहुतेरी बातें लिखी मिलती हैं। स्त्रियाँ स्वयं भी अपनेको असहाय समझने लगी हैं। वे कहती हैं—हम अबला हैं, ढोर हैं, पति हमारा परमेश्वर है, अुसकी सेवा के लिअे ही हमारा जन्म है। शास्त्रों में यही सब पढ़ने के बाद स्त्री सोचती है—जो साहित्यकार हमारे लिअे अैसी बातें कह गये हैं वे ही दूसरी तरफ़ हमारा सुन्दर से सुन्दर वर्णन करके हमें धोखा क्यों देते हैं? जैसी हम हैं वैसा ही हमें क्यों नहीं दिखाते? न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

र्ख रंभा के जैसा अपनेको चितरवाना है न कुब्जा के
ैसा। क्या आपने कहीं देखा है कि किसी कानी, चेचक
के दाग़ोंवाली बदसूरत और बीमार स्त्री को पति नहीं
चाहा। और या क्या यह सारा वर्णन परलोक की स्त्रियों
के संबंध में है ?

गुड़िया नहीं, माता

स्त्रियों के विषय में मुझे हमदर्दी है। मैंने अुनके
सम्बन्ध में सोचा है। आज कल की पुस्तकों में अेक भी
ऐसी नहीं है जिसमें सच्ची स्त्री का वर्णन हो। मैं
समझ नहीं सकता कि स्त्री के देह के वर्णनों से आपका
क्या ताल्लुक है ? और जब विद्वान लोग स्त्रियों की
लावीनता और सुन्दरता के बारे में लिखते हैं, और
स्त्रियाँ अुस लिखे को पढ़ती हैं तो अुनके दिल पर क्या
असर होता है, यह सोचने की बात है। मैं पूछता हूं,
साहित्य में स्त्री को गुड़िया क्यों कहा जाता है ? अुसके
सच्चे-रूप का वर्णन क्यों नहीं किया जाता ? मैं तो अुन
लोगों में हूँ जो स्त्रियों के बीच में रहे हैं। अेक समय था
जब मेरे पास स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ थीं। दक्षिण अफ्रीका
की बात है। भाअी सब जेल में बैठे थे और कोअी साठ
परिवारों की बहिनें मेरे साथ थीं। मैं अिन परिवारों का
सगा बन बैठा था। अुस समय मैं ६९ वर्ष का बूढ़ा न
था। बहिनों के अुस दल में अप्सरायें भी थीं, और कुरूपायें
भी। नौजवानों में छैल छबीले भी थे लेकिन किसी की
हिम्मत न थी कि किसी स्त्री को बुरी निगाह से देखें। मेरा
यह मतलब नहीं, कि अुन दिनों कोअी अनुचित घटना
हुअी नहीं घटी। अेक किस्से का ज़िक्र तो मैंने अपनी
आत्मकथा में किया ही है, लेकिन साधारणतया किसी
को छेड़खानी करने या किसीकी ओर पाप की दृष्टि से
देखने का साहस किसीने नहीं किया और वे स्त्रियाँ तो
निरक्षर थीं, अपढ़ थीं, लेकिन वे भी जेल जाना सीख
गयी थीं। पर अनपढ़ होने के कारण किसीके बहकाने
में आकर वे जेल नहीं गअी थीं।

स्त्री के हृदय पर आजकल के साहित्य का प्रभाव

अिसलिअे नम्रतापूर्वक मैं आपसे यह कहना चाहता
हूं कि आप श्री लीलावती बहिन के पत्र को व्यर्थ समझ
अुसकी अुपेक्षा न करें। अुनकी चिट्ठी में काफ़ी गम्भीर
बातें लिखी हैं। जो कुछ लिखा गया है अुसे शायद बहनें
समझ भी न पाअी हों; लेकिन अिसका यह मतलब नहीं
कि आप अुसकी अुपेक्षा कर दें। स्त्रियों को अशिक्षित
समझ कर आप अुनकी आवाज़ का निरादर न कीजिअे।
अहमदाबाद की बस्ती में रहनेवाली बहनों को मैं नहीं पह-
चानता पर मैं साधारण स्त्री-जीवन की बात कर रहा हूँ।
यह विचारने योग्य बात है कि साधारण स्त्री के हृदय पर
अैसे साहित्य का क्या प्रभाव पड़ता है ? मैं ज्योति-संघ
की १००–५० बहनों के विचार से नहीं कह रहा हूँ;
बल्कि स्त्री के हृदय की थाह लेकर बोल रहा हूं। अगर
आप अिसे सुन सकते हैं तो अिस पर विचार कीजिअेगा।
साहित्य के लिअे जब आप क़लम अुठायें तो यही सोचकर
अुठाअिअे कि स्त्री मेरी माता है। अिस विचार से जब
आप लिखेंगे तो आपकी क़लम से स्त्री के बारे में जो कुछ
निकलेगा वह अुतना ही सुन्दर और फलप्रद होगा, जितने
कि सुहावने आकाश से बरसनेवाले बादल, जो पृथ्वी
रूपी स्त्री को अुपजाअू बनाते हैं। आप स्त्री को अुभाड़ते
क्यों हैं ? क्यों अुसके अन्दर अुन विकारों को पैदा करने
की चेष्टा करते हैं जो अुसमें नहीं हैं ? आप तो अुसे
बार-बार आअिनें में देखने को ललचाते हैं, अिस विचार
से कि साहित्य के वर्णनों में जैसे नाक, कान और आँख
बताये जाते हैं, वैसे अुसके हैं या नहीं ?

चौबीसों घण्टे वह अुसी धुन में रहती है और जेब
में आअिना लिये घूमती है। क्यों अुसके दिल में यह विचार
ही पैदा हो कि जैसा मेरे बारे में लिखा गया है, वैसी
मैं हूँ या नहीं ? आप अुसके बारे में लिखना चाहें
लिखें—लेकिन अुसे विकारों की पुतली समझकर न लिखें।
अुपनिषदों में, बाअिबल में, क्या यही लिखा है ? तुलसीदास
के रामचरितमानस में क्या यह सब है कि जिससे आप
विदेशी पुस्तकों का अनुवाद करते हैं और अुनमें दिये
गये स्त्री के रूप-वर्णनों का अनुकरण ! क्या अिस तरह
पुरानी शराब को नअी बोतल में ढालना चाहते हैं ?
क्या पुराने लोग मूर्ख थे ? लेकिन मैं कहता हूं, आप फिर
विचार कीजिये और विचार करने पर बात सच्ची लगे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और कुछ सूझे तो फिर सोचिअे और फिर सोचिअे और सोचकर अपने विचारों को बदलने की चेष्टा कीजिअे; लेकिन मेरी बात निरर्थक लगे तो मुझे माफ़ कीजिअे। करोड़ों लोग कुरान की पूजा करते हैं, तुलसी का मानस भी अुसी-तरह पूजा जाता है। मेरे पिता रामायण सुनते थे—गिरिधर कृत नहीं, अलबत्ता वह भी कोअी बुरी चीज़ नहीं, पर रामायण तो रामायण ही है। जो हिन्दी नहीं जानता वह भी रामायण को कुछ कुछ जानता है। अंग्रेज़ीवाले कहते हैं, अुनकी भाषा का तीन चौथाअी सार बाअिबल में और अेक चौथाअी शैक्सपीयर में है, बाकी जो कुछ है, सब कूड़ा करकट है। आप विदेशी पुस्तकों के अनुवाद करें और अुनमें पाये जानेवाले स्त्री सौन्दर्य के वर्णनों को सराहें तो सम्भव है कुछ स्त्रियाँ भी आपकी पीठ ठोकें और कहें—शाबाश है! लेकिन मैं आपको शाबासी न दूँगा।

ज्योति-संघ का पत्र

ज्योति-संघ की कार्यकारिणी-समिति ने एक पत्र के साथ नीचे लिखे अपने दो प्रस्ताव साहित्य-परिषद के लिअे भेजे थे—

(१) साहित्य समाज-संगठन का एक प्रबल साधन है। परन्तु संघ की ओर से चलाये जानेवाले पुस्तकालय के अनुभव पर से और स्त्रियों के साथ के सीधे परिचय पर से संघ की कार्य-समिति इस परिणाम पर पहुँची है कि हमारे आधुनिक साहित्य में स्त्रियों के सम्बन्ध में अवांछनीय आदर्श उपस्थित किये जाते हैं और इस तरह का साहित्य स्त्रियों की प्रगति और अुनके विकास में बाधक हो रहा है। साहित्य के द्वारा सेवापरायणता, त्याग-तत्परता, नम्रता, कोमलता आदि गुणों का झूठे तौर पर वर्णन करके यह सिद्ध करने की चेष्टा की जाती है कि स्त्रियों के लिअे पुरुषों की लालसातृप्ति का साधन बनना, पराधीन रहना, डरपोक बनना, अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व न रखना, स्वावलम्बी न बनना, यही सब आदर्श हैं, जो साधना करने योग्य हैं और यह दुनिया के सब अनिष्टों का कारण स्त्री ही है। ज्योति-संघ की कार्यकारिणी-समिति साहित्य की इस प्रवृत्ति का घोर विरोध करती है, और इस हानिकारक प्रवृत्ति की ओर गुजराती साहित्य-सम्मेलन का ध्यान आकर्षित करती है।

(२) आजकल के गुजराती साहित्य में स्त्री-शिक्षा और समाजोन्नति की दृष्टि से नीचे लिखी त्रुटियों की ओर, जो तुरन्त ही दूर करने योग्य प्रतीत होती हैं, ज्योति-संघ की कार्यकारिणी-समिति, गुजराती साहित्य-सम्मेलन का ध्यान आकर्षित करती है और सम्मेलन से साग्रह अनुरोध करती है कि वह अिसका अुचित प्रबन्ध करे—

(क) विरह, शृंगार और भावुकता से पूर्ण रास और गीतों के बदले नअी दिशा सुझाने और प्रेरणा देनेवाले रासों और गीतों की आवश्यकता है।

(ख) बालकों पर पुराने समाज की रूढ़ियों, रिवाजों संस्कारों का प्रभाव डालने से बालकों म नअे संस्कार और नअी प्रेरणा जगानेवाले सरल लोक-गीतों और लोरियों की रचना होनी चाहिअे।

(ग) प्रौढ़ शिक्षा के लिअे नअी दृष्टि से लिखी हुअी और ज्ञातव्य बातों से भी भरी हुअी उपयोगी पाठ्य-पुस्तकें तैयार होना चाहिअे।

ज्योति-संघ के कुछ प्रस्ताव मेरे पास आये हैं। अुनका मर्म यह है कि आजकल का साहित्य स्त्री को ऊँचा उठाने वाला नहीं बल्कि नीचे गिराने वाला है। मैं साहित्य का पढ़नेवाला नहीं कह जा सकता—हालांकि मैंने साहित्य पढ़ा है, लेकिन बहुत कम। मतलब यह है कि मैंने बहुत ज़्यादा हज़म करने की शक्ति पाअी अिसलिअे कुछ-कुछ मैं यह जानता हूँ कि हमारी पुस्तकें और हमारे समाचार-पत्रों में क्या-क्या छपता होगा। मेरा ख़याल है कि पुराने साहित्य की अपेक्षा आजकल के साहित्य में स्त्री का अधिक अच्छा चित्रण होता है। स्व० गोवर्धनरामभाई का तो मैं पुजारी ही हूँ; अुन्होंने स्त्री-जाति का बड़ा सम्मान किया है; फिर भी मेरा कुछ अैसा ख़याल है कि पुरान ज़माने में स्त्री को जो गौरव प्राप्त हुआ था, अुससे कुछ अधिक गौरव अुन्होंने स्त्री को नहीं दिया। लेकिन श्री मुनशीजी के कथनानुसार आजकल जैसी स्त्री की पूजा हो रही है, वह मुझे तो झूठी पूजा मालूम होती है। आजकल के लेखक स्त्रियों की अच्छी-से-अच्छी भावना को व्यक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

...करते। मैं इस बात को जानने का दावा करता हूँ ...स्त्रियों की भावनाओं क्या हैं और कैसी हैं। क्योंकि ...बपन से स्त्रियों के साथ मेरा बहुत सम्बन्ध रहा है, ...और वह भी यहाँ तक कि मेरे पास नीला नागिनी जैसी ...भी आगई और मैं अुसका बाप भी बन बैठा। यद्यपि ...तब वह व्यभिचारिणी है, फिर भी मैं अैसा हूँ कि अुसके ...लिअे अपने प्राण न्यौछावर कर सकता हूँ। अिसलिअे यहाँ ...स्थित साहित्यकारों से मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप ...ओं की अुतनी ही पूजा कीजिअे, जितनी वह चाहती है। ...अपने ढंग से अुसकी पूजा न कीजिअे। मैं तो अुन ...लोगों में से हूँ, जो अपने विकारों को दबाना जानते हैं, ...सभी अप्सराओं और कुब्जा-सी कुरूप स्त्रियों का ...करना जानता हूँ, और दोनों को अपनी माँ या बेटी ...समझनेवालों में हूँ। मैं अपने अनुभव से कहता हूँ कि ...इस ढंग से आज आप स्त्री का वर्णन अपने साहित्य में ...कर रहे हैं अुसमें न स्त्री की पूजा है, न अुसका सम्मान ...। मुझसे कहा जाता है कि स्त्रियाँ पुरुषों के बहुत ...चित्र खींच रही हैं। मैं कहता हूँ, हाँ खींच रही ...क्यों न खींचे ? पुरुषों ने कौन कसर रक्खी है, अुनकी ...हतोत्साहित करने में ? अेम० अे० पास पुरुष भी किस ...तरह अपनी स्त्रियों से पेश आते हैं, अिस पर ...प्रकाश डालनेवाले अनेक दयनीय पत्र मेरे पास पड़े हुअे ...हैं। अिसलिअे मैं तो कहूँगा कि अगर स्त्री पुरुष का ...द्वेष करती है, तो कोअी बात नहीं है। पुरुष के ...अत्याचार से घबराकर अगर स्त्री अुसे कच्चा चबाने को ...तैयार हो जाय, तब भी मैं तो अुसे अहिंसा मानूँगा।

कला और पवित्रता

...अेक चित्रकार ने अभी-अभी मुझसे पूछा कि वे कौन-...सी ललित कलायें हैं, जिनमें स्त्रियाँ भी भाग ले सकती ...हैं। अुनका दूसरा सवाल है, क्या नृत्य-कला से अधःपतन ...की संभावना नहीं ? अिन दोनों प्रश्नों के पीछे जो ...भय है, मेरे खयाल से अुनमें थोड़ी भूल है। स्त्री-...जाति ने पवित्रता की अुपासना अुत्कट प्रकार से की है। ...यह जरूरी है कि अुनकी अिस अुपासना में सहायता पहुँचाने का प्रयत्न पुरुष भी करे। लेकिन पवित्रता के सम्बन्ध में स्त्रियों और पुरुषों के आदर्श भिन्न क्यों हों ? क्या यह हमारे लिअे गौरव की बात होगी, कि स्त्रियों के अुदर से जन्म लेकर हम अुनसे कम पवित्र रहें ? पवित्रता का जो आदर्श स्त्रियों के लिअे है, हमें पुरुषों के लिअे भी अुसीकी रक्षा करनी चाहिअे। अपवित्र पुरुषों के साथ रहकर स्त्रियाँ अपनी पवित्रता की रक्षा नहीं कर सकतीं। दोनों मनुष्य हैं और एक-दूसरे का सहयोग छोड़ नहीं सकते।

अिसलिअे हमें तो अिस निश्चय पर आना चाहिअे कि जो ललित-कला या अन्य किसी प्रकार की कला स्त्रियों के लिअे त्याज्य है, वह पुरुषों के लिअे भी त्याज्य होनी चाहिअे, जिस स्वतन्त्रता में हम अपने आपको सुरक्षित समझते हैं, वही स्वतन्त्रता यदि स्त्री चाहे, तो हमें कोअी अधिकार नहीं कि हम अुसे वैसा करने से रोकें।

एक बात तो हमें स्वीकार कर ही लेनी चाहिअे और वह यह कि कुछ ऐसे अवसर होते हैं, जो स्त्री-पुरुष दोनों के लिअे खतरनाक हैं। मनुष्य पतनशील है। अपने-आपको सर्व-समर्थ और विकारों से परे समझकर या वैसा आडम्बर रचकर अपनेको अवांछनीय परिस्थिति में रखना अुसके लिअे कभी उचित नहीं है। अपनी और समाज की रक्षा के लिअे मनुष्य को अपनी कुछ मर्यादायें तो ठहरा ही लेनी चाहिअे, और वे स्त्री-पुरुष दोनों के लिअे समान होनी चाहिअें।

लेकिन पवित्रता बाहर से लादीजानेवाली चीज नहीं है। पुरुषों ने स्त्रियों पर जो नियम और संयम लादे हैं, वे उनके अविश्वास के सूचक हैं। यह तो कभी सिद्ध नहीं हुआ कि पुरुष की अपेक्षा स्त्री अधिक पतनशील है। फिर स्त्रियों पर ही बाहर का अितना अंकुश क्यों ? अुचित तो यह है कि स्त्रियाँ स्वयं अपनी रक्षा करें और अपने आदर्शों पर स्थिर रहें।

ललित-कला ही क्यों, जीवन की कोअी भी वस्तु खतरे से खाली नहीं है। जिसमें कुछ भी महत्व है, वहाँ खतरा जरूर है। खतरों को न्यौता देना जरूरी नहीं है लेकिन जब खतरा आ पड़े, तो कूद पड़ना जरूरी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर हम कला के नाम पर विलासिता बढ़ायेंगे, विकारों का पोषण करेंगे, मर्यादा तोड़कर मन को अुत्तेजित होने देंगे, तो अवश्य ही अधःपतन का मार्ग हमारे लिअे खुल जायगा। लेकिन मैं यह न कहूँगा कि चूंकि कला में जोखिम है, अिसलिअे शुद्ध कला का भी त्याग किया जाय!

जो भय नृत्य-कला में है, वही देव-दर्शन के लिअे मन्दिर में जाने में भी है। जब तक व्यक्ति और समाज गिरने के मौकों की तलाश में रहते हैं, तब तक कोअी वस्तु सुरक्षित नहीं है। नृत्य-कला में भय अवश्य है, लेकिन पहचानकर अुसका निवारण होना चाहिअे। नृत्य-कला स्वयं अपने में अनिष्ट नहीं है। जब अुसके अन्दर से और अुसके द्वारा विकारों को पुष्ट करने के मौक़े ढूंढे जाते हैं, तभी वह भयानक बनती है। अिससे बचने की कोशिश व्यक्ति को भी करनी चाहिअे, और समाज को भी करनी चाहिअे।

ललित-कलायें विकारों के पोषण के लिअे नहीं हैं। मनुष्य विकारों का ग़ुलाम रहा है। विकारों पर अंकुश रखने के लिअे समाज-शास्त्र ने अपना एक स्वतन्त्र व्याकरण रच लिया है; अुसकी रक्षा करते हुअे मनुष्य भले ही भोग भोगे, और मौज अुड़ाये। लेकिन कला में यह बात न आनी चाहिअे।

मन और हृदय में विकार जगाये बिना जिस तरीके से मनुष्य की भावनाओं का विकास होता हो, और हृदय अुन्नत बनता हो, अुस कला में जीवन से दूर भागनेवाली विरक्ति नहीं होती और न कामुकता को अुकसानेंवाली विकृति ही होती है—न होनी चाहिअे। दोनों से बचने का प्रयत्न एकसे आग्रह के साथ किया जाना चाहिअे।*

बीजापुर में श्री मुनशी का व्याख्यान

ता० ११–११–३६ को, बीजापुर की एक सार्वजनिक सभा में श्री कन्हैयालाल मुनशी ने भारतीय सा० परिषद के संबंध में व्याख्यान दिया। कर्णाटक के नेता और साहित्यिक श्रीयुत श्रीनिवासरावजी कौजलगी उस सभा के अध्यक्ष थे।

*कला-परिषद (अहमदाबाद) के अध्यक्ष पद से दिया गया श्री० काका कालेलकर के भाषण का अंश।

राष्ट्रभाषा सम्मेलन का जलसा

फैजपुर, तिलकनगर में श्री० बाबू राजेन्द्रप्रसाद की सदारत में राष्ट्रभाषा सम्मेलन का छठवाँ जलसा २८-१२-३६ को दिन के दो बजे, काँग्रेस के मण्डप में हुआ। काँग्रेसी कार्यकर्त्ताओं और दर्शकों की बड़ी भीड़ थी। माहात्मा गाँधी भी सम्मेलन में पधारे थे। अुन्होंने अपना लिखा हुआ एक संदेश अिस अधिवेशन में पढ़ने के लिअे श्री जमनालाल बजाज को दिया, क्योंकि अुस रोज़ अुनका मौन-दिन था।

श्री० जमनालालजी ने महात्मा गाँधी का नीचे लिखा संदेश पढ़कर सुनाया—

"मुझे दुख है कि आज मेरा मौन होने के कारण मैं बोल नहीं सकता हूँ। मेरे मन में शंका नहीं है कि भारतवर्ष के लिअे एक सामान्य भाषा की आवश्यकता है। न मेरे मन में यह शंका है कि यह भाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी हो सकती है। बाकअी में यह वही भाषा है, जिसे अुत्तर में हिन्दू और मुसलमान दोनों एक समान समझ सकते हैं। अिसके स्थान में अंग्रेज़ी कभी नहीं हो सकती।"

बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने बाबू राजेन्द्रप्रसादजी से सभापति का स्थान ग्रहण करने की प्रार्थना करते हुअे भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न प्रांतों में हिन्दी-प्रचार के कार्यों का संक्षेप में वर्णन किया और अन्तरप्रांतीय व्यवहार के के लिअे हिन्दी के व्यवहार करने पर अधिक ज़ोर दिया। अुसके बाद बाबू राजेन्द्रप्रसादजी ने अपना भाषण किया। अपने भाषण में अुन्होंने कहा कि अहिन्दी भाषी प्रांतों में हिन्दी का प्रचार करने के लिअे प्रयाग-साहित्य-सम्मेलन जिम्मेदार है। अिसकी कोशिशों के परिणाम स्वरूप दक्षिण-भारत हिन्दी-प्रचार-सभा दक्षिण में हिन्दी-प्रचार कार्य का संचालन कर रही है। सभा की प्रवृत्तियों से ६ लाख लोगों ने हिन्दी सीखी, जिनमें में ५५ हज़ार लोगों ने हिन्दी की परीक्षायें पासकर प्रमाण-पात्र भी प्राप्त कर लिये। यह बड़े हर्ष की बात है कि दक्षिण भारत में बहिनों ने हिन्दी को ज्यादा अपनाया। अुत्तर के आसाम, महाराष्ट्र गुजरात और अुत्कल प्रांतों में भी हिन्दी का प्रचार हो रहा है। अुन्होंने सम्मेलन की तरफ़ से हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा की स्थापना के बारे में कहा और यह भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहा कि यह भिन्न-भिन्न प्रांतों की भिन्न-भिन्न संस्थाओं को जोड़ने की कड़ी का काम करेगी और जहाँ कहीं जरूरत होगी, संस्थायें कायम करने का भी प्रयत्न करेगी।

नीचे लिखा प्रस्ताव सर्व-सम्मति से सम्मेलन में पास किया गया :—

"अिस राष्ट्रभाषा सम्मेलन का दृढ़ विश्वास है कि हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में राष्ट्र-भाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी जाननेवालों की इतनी बड़ी संख्या है कि देश का अन्तरप्रांतीय काम राष्ट्र-भाषा द्वारा ही होना अुचित और हितकर है। और अन्तरप्रान्तीय कार्यों में अंग्रेज़ी भाषा का व्यवहार हमारे राष्ट्रीय गौरव के विपरीत और राष्ट्रीय भावों की जागृति और उनके प्रचार के लिअे हानिकर है।

"अुन सब संस्थाओं से जो राजनैतिक, सामाजिक, व्यापारिक व धार्मिक अैसे कार्यों में लगी हैं और जो देश ही में व्यापक है, यह सम्मेलन अनुरोध करता है कि राष्ट्रीयता तथा स्थायित्व की दृष्टि से वे अपने-अपने मुख्य प्रान्तीय कार्य प्रान्तीय भाषा में, और सार्वदेशिक काम राष्ट्रभाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी के जरिये ही किया करें।"

अिस प्रस्ताव की ताअीद करते हुअे श्री० काका-कालेलकर नें प्रान्तीय भाषा और राष्ट्रभाषा के बीच का सम्बन्ध स्पष्ट कर दिया और श्रोताओं से आग्रह करते हुअे कहा कि अुनको अिस प्रश्न को अुतना ही महत्व देना चाहिअे जितना कि वे अन्य राष्ट्रीय बातों पर देते हैं। श्रीयुत गंगाधरराव देशपांडे ने अिस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। डॉ० पट्टाभि सीतारामैया ने शुद्ध हिन्दुस्तानी में प्रस्ताव का समर्थन करते हुअे कहा, कि यह आवश्यक है कि राष्ट्रभाषा की अैसी उन्नति हो कि सभी प्रान्तों के सभी कौमों के लोग अुसे भली भाँति समझ सक। अिसके लिअे अुन्होंने फारसी और अरबी के बहिष्कार न करने की सलाह दी। श्री वेदरत्न पिल्ले (तामिल प्रान्त) नें भी अिस प्रस्ताव का समर्थनकिया।

अपने पाठकों से—

पिछली पत्रिका [भा० सा० प० पत्रिका—१ तारीख़ २३-अक्तूबर-१९३६] में हम अपनी नअी योजना (स्कीम) को अपने प्रेमी पाठकों के सामने रख चुके हैं। अुसके अनुसार काम शुरू कर दिया गया है। एक पुस्तिका भी, जिसमें १. भाषा का सवाल, २. भारतीय साहित्य और भाषा, ३. परिषद की नीति—ये तीन लेख थे, आपकी सेवा में भेजी जा चुकी है। दूसरी पुस्तिका अिसके साथ आपके पास भेजी जा रही है। परिषद् जिस तरह की पुस्तक माला निकालना चाहती है और अनेक कठिनाइयों का सामन कर भारती साहित्य के प्रेमी पाठकों की जिस रीति से सेवा किया चाहती है, अुसका नमूना आपको भेजा जा चुका है। जिन उदार सहृदय सज्जनों ने अपना ७) रु० सालाना चंदा भेज दिया है, अुनका आभार मानते हुअे हम अपने पुराने और नअे, सभी, भारतीय साहित्य के प्रेमियों व हिमायतियों से प्रार्थना करते हैं कि वे शीघ्र ही परिषद के सहायक-सदस्य बन जायँ। साथ ही, दो शब्द प्रार्थना के ग्राहक महानुभावों से भी हैं। वे कृपाकर अेक-अेक, दो-दो नअे ग्राहक बनाने भर का कष्ट उठावें, जिससे परिषद की प्रवृत्ति अुत्साह के साथ आगे बढ़े। अपना सालाना चंदा ७) रु० मनीआर्डर से नीचे लिखे पते पर भेजें।

१. मंत्री, भारतीय साहित्य परिषद, वर्धा (मध्य प्रांत) या
२. व्यवस्थापक, सस्ता-साहित्य मण्डल, नया बाज़ार, दिल्ली।

वर्धा, (मध्य प्रांत)
२०-१-३७

मंत्री { कन्हैयालाल मुनशी
काका कालेलकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय साहित्य परिषद

सभापति : महात्मा गांधी, वर्धा
उपसभापति : बाबू राजेन्द्रप्रसाद, पटना
मंत्री : श्री कन्हैयालाल मुनशी, बम्बई
,, : आचार्य काका कालेलकर, वर्धा
खजानची : सेठ जमनालाल बजाज, वर्धा
सदस्य : पं० जवाहरलाल नेहरू, अिलाहाबाद
: चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य तिरुचेंगोडु (सेलम)
: सरदार माधवराव कीबे, इंदौर
: बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, प्रयाग
: श्री अेस० अेन० सुब्बाराव, बेंगलोर
सदस्य : सरदार पणिक्कर, पटियाला स्टेट
: डाक्टर कालिदास नाग, कलकत्ता
: श्री कालेश्वर राव, बेजवाड़ा
: आचार्य देवशर्मा 'अभय' गुरुकुल, कांगड़ी
: पं० रामनरेश त्रिपाठी, प्रयाग
: पं० माखनलाल चतुर्वेदी, खंडवा
: श्री व्रजलाल बियाणी, अकोला
: श्री जयचन्द्र विद्यालंकार, प्रयाग
: भदन्त आनन्द कौसल्यान, सारनाथ
: प्रो० बनहट्टी, संयोजक, भा० सा० परिषद, महाराष्ट्र-शाखा, नागपुर

—०—

भारतीय साहित्य परिषद की ओर से
मार्तण्ड अुपाध्याय, व्यवस्थापक, सस्ता साहित्य मण्डल द्वारा प्रकाशित

मुद्रक—हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नया बाजार, दिल्ली।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आयुर्वेद-संसार

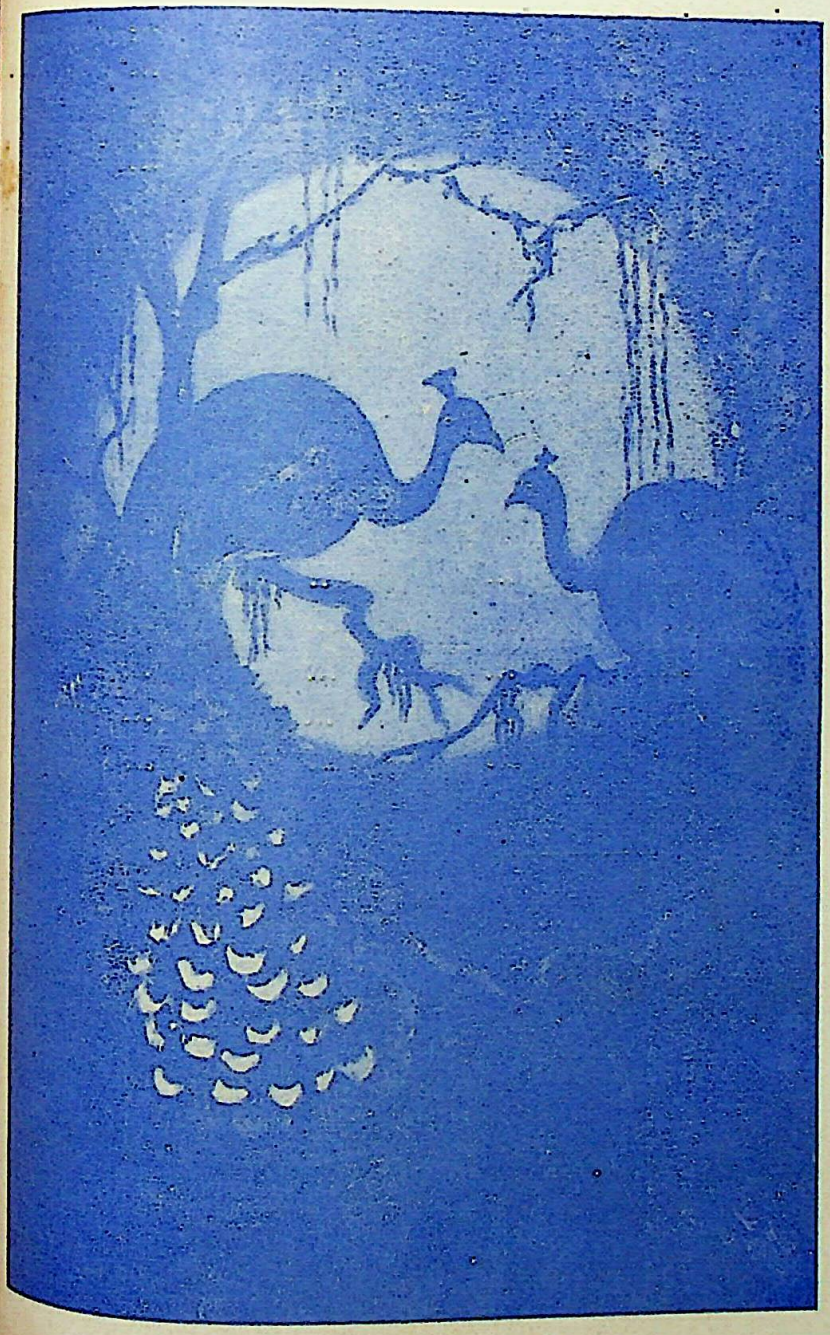

सम्पादक

राजवैद्य श्रीकृष्णदयाल

वैद्यशास्त्री

डा० रमाशंकर मिश्र

साहित्यरत्न

वार्षिक २॥) नवम्बर एक प्रति =)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	वैद्य (गद्यकाव्य)	श्री उदयशङ्कर भट्ट	१
२.	आयुर्वेद संसार (कविता)	श्री स्वामी सत्यानन्द	२
३.	खाद्य मीमांसा	आचार्य सर प्रफुल्लचन्द्रराय, श्री हरगोपाल विश्वास एम०एस०सी०	३
४.	हृदय और उसके रोग	डा७ श्री त्रिलोचन	८
५.	सुज़ाक पर आधुनिक प्रयोग	श्री कविराज हरिकृष्ण सहगल	११
६.	उपवास और उसकी उपयोगिता	श्री बालमुकुन्द द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य ...	१४
७.	परिवर्तन (कविता)	कुमारी उर्मिला बी० ए०	१७
८.	उठना बैठना सीखिये	श्री श्याम शर्मा बी० ए०	१८
९.	हमारा चिकित्सालय	राजवैद्य श्रीकृष्ण दयाल वैद्य शास्त्री ...	२०
१०.	श्रवणशक्ति और कामेच्छा	श्री 'वात्सायन'	२३
११.	स्वर्णक्षीरी	प्रो० श्री अवधनारायणलाल एम० एससी० बी० टी०	२५
१२.	निमोनिया (कहानी)	श्री जयदेव लाल	२७
१३.	त्रिदोष प्रत्यालोचन	श्री योगेन्द्रपाल आयुर्वेदालङ्कार ...	३१
१४.	सौन्दर्य साधना	डा० श्री रमाशङ्कर मिश्र	३४
१५.	बालशोष	साहित्य रत्न श्री देवकरण वाजपेयी वैद्य शास्त्री ...	३६
१६.	१८. मधुकोष (चयन)	... ...	३८
१७.	आधुनिक गवेषणाएँ	... ...	४३
१८.	परीक्षित प्रयोग	... ...	४४
१९.	सम्पादकीय	... ...	४५
२०.	समाचार ...	... ...	४८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

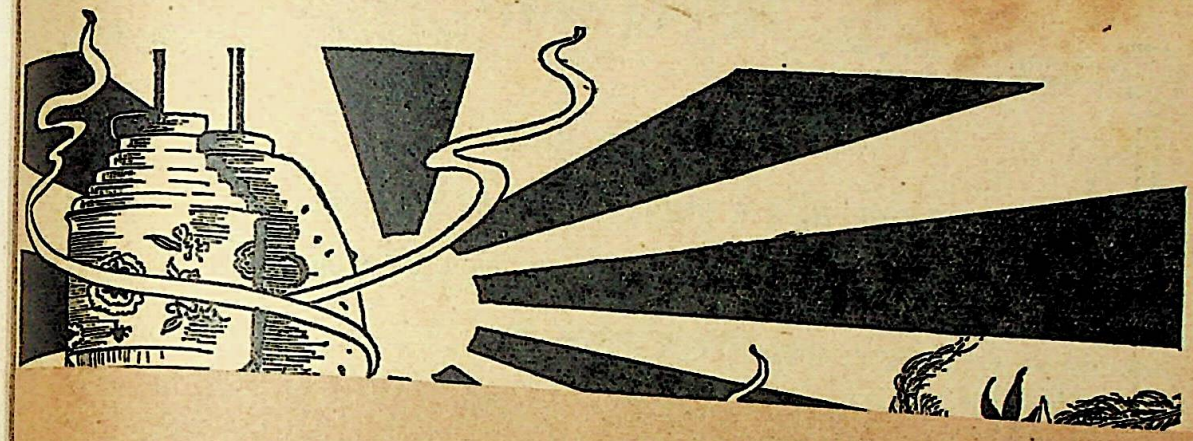

प्रकाशनार्थ

आयुर्वेद-संसार
अमृतसर

प्रिय महोदय,

निम्नलिखित सूचना को अपने प्रतिष्ठित पत्र में स्थान देने की कृपा करें।

--मैनेजर

काम-विज्ञानांक

'आयुर्वेद-संसार' का एक विशेषाङ्क शीघ्र ही काम-विज्ञानाङ्क के नाम से निकलने वाला है। इस अङ्क में भारत के प्रायः सभी काम-विज्ञानवेत्ता एवं विदेशी विदूषियां लिखेंगी। इस सम्बन्ध में केवल इतना ही कहना बहुत है कि 'कामविज्ञान' की इतनी सुन्दर और सुरुचिपूर्ण सामग्री आपको कहीं न मिली होगी। इसका मूल्य १) रु० होगा। १५ दिसम्बर तक ग्राहक बन जाने वालों को यह अङ्क मुफ्त मिल जायगा?

.....हे वैद्य, तूने क्या किया। चमक उठा आकाश! सरसराकर बिजलियाँ बिना मेघ के दौड़ने लगीं। चिनगारियाँ ज्योति बन गईं। प्राण सुख के घूंट पीकर हृदय से बातें करने लगे। शरीर और आत्मा किसी शराब के सरूर में डूबकर झपकियाँ लेने लगे। चारों ओर सुख था। हे वैद्य, तू मेरे आनन्द की स्रोतस्विनी का अद्भुत प्रवाह पार कर बोल उठा जीवन! संसार ने सुना, मैंने भी सुना जीवन जीवन जीवन!!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

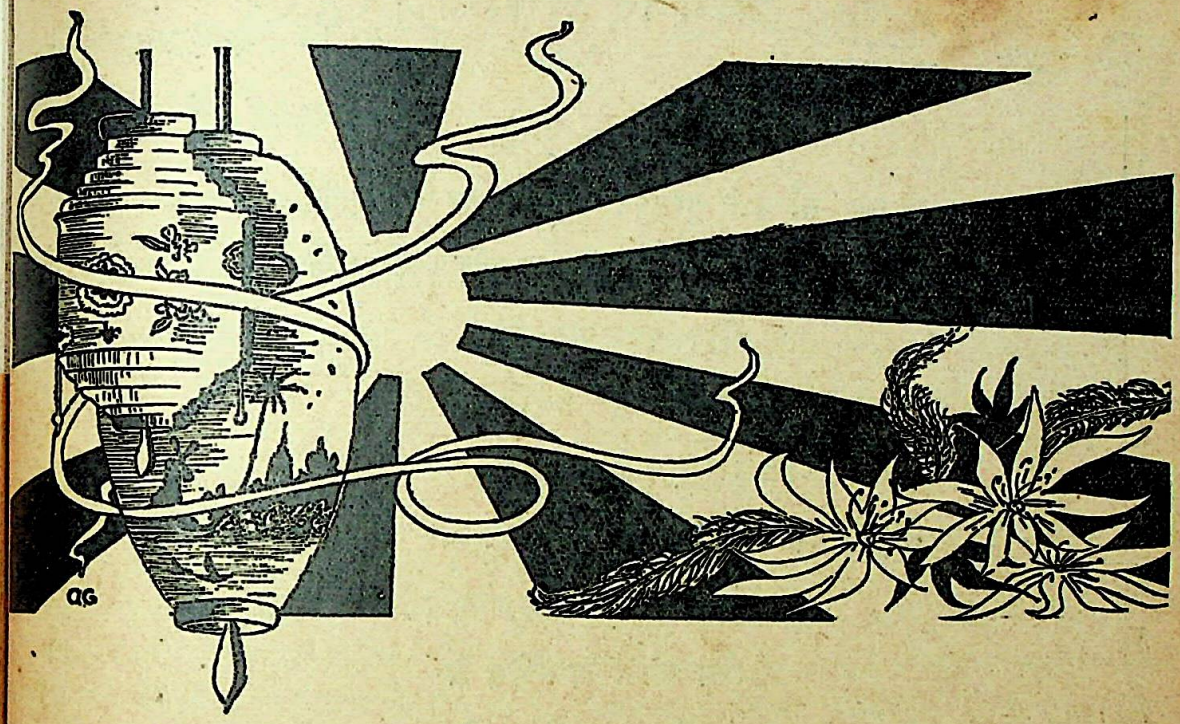

भूत जिया, भावी शिशु जनमा, वर्तमान ने यौवन पाया।
आयुर्वेद विश्व को फिर से नव-जीवन देने है आया॥

दिसम्बर
१९३६

अमृतसर

वर्ष १
अङ्क ६

वैद्य !

आँखों से आग की चिनगारियाँ निकल रहीं थीं झर झर। प्राण दुख की उत्ताल वृष्टि में डूब चुके थे, हृदय सुन्न था, शरीर में रोंगटे खड़े होकर किसी की प्रतीक्षा कर रहे थे, आत्मा पीड़ा का परिधान पहन कर बेहोशी में सो चुका था। आशा जल-बुद्बुद् की तरह उफन कर बैठ चुकी थी। सब ओर अँधेरा था। तमिस्रा मानो अपने कराल पहलू में मृत्यु को दबाये नाचती आ रही थी धीरे धीरे। सब कुछ अशान्त था, अशान्ति के उच्छृङ्खल उत्क्रमण में जीवन शून्य की ओर दौड़ रहा था।

.....हे वैद्य, तूने क्या किया। चमक उठा आकाश! सरसराकर बिजलियाँ बिना मेघ के दौड़ने लगीं। चिनगारियाँ ज्योति बन गईं। प्राण सुख के घूंट पीकर हृदय से बातें करने लगे। शरीर और आत्मा किसी शराब के सरूर में डूबकर झपकियाँ लेने लगे। चारों ओर सुख था। हे वैद्य, तू मेरे आनन्द की स्रोतस्विनी का अद्भुत प्रवाह पार कर बोल उठा जीवन! संसार ने सुना, मैंने भी सुना जीवन जीवन जीवन!!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आयुर्वेद संसार

आयुर्वेद संसार आया,
स्वास्थ्य सौरभ से सुवासित सोम-रस का सार लाया ।
आयुर्वेद संसार आया ॥

विश्व के कल्याण हित
संतप्त आतुर प्राणहित
दुख-द्वन्द से जग त्राणहित
लेकर कलश नव क्रान्ति-रस भर मुक्ति हित उपहार लाया ।
आयुर्वेद संसार आया ॥

प्रिय शान्ति का सन्देश ले
संजीवनी अवशेष ले
फिर वह पुरातनवेश ले
सौन्दर्य का अभिषेक करने विश्व का शृंगार आया ।
आयुर्वेद संसार आया ॥

उर में अमर-अरमान शुभ
अमरत्व का वरदान शुभ
देने जगत को दान शुभ
स्फूर्ति सत्साहस-सुधा बल-बुद्धि का भण्डार लाया ।
आयुर्वेद संसार आया ॥

निर्वाण हित सब रोग के
ले शक्ति-नूतन योग के
सुख, स्वास्थ्य-जीवन भोग के
हित आयुर्वैदिक तत्व का ले सार झट ललकार आया ।
आयुर्वेद संसार आया ॥

श्रीस्वामी सदानन्द

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाद्य समस्या

आचार्य सर प्रफुल्लचन्द्रराय
श्री हरगोपालविश्वास एम. एस सी.

प्रस्तुत लेख भारत के विख्यात वैज्ञानिक आचार्य श्री प्रफुल्लचन्द्रराय और श्री हरगोपाल विश्वास की शीघ्र अप्रकाशित बङ्गला पुस्तक खाद्य-समस्या का एक अंश है। इसे हम बङ्गवाणी साप्ताहिक 'देश' के सौजन्य से पाठकों की भेंट करने में समर्थ हो रहे हैं। —सं०

ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के साथ ही साथ खाद्य-तत्त्व में अद्भुत परिवर्तन हो रहे हैं। पश्चिम में इस परिवर्तन का प्रथम दर्शन रसायनिक लिबिग के जैव पदार्थ विश्लेषण एवं कैलरीवाद के समय में हुआ था। शरीर के स्थूल उपादानों की क्रिया एवं शक्ति (कैलरी) उत्पादन की क्षमता जब स्थिर हो गई, तब विभिन्न प्रकार के परिश्रम करने वाले, विभिन्न वयस के लोगों के लिए उपयुक्त भोजन के आवश्यक उपादानों का भी निर्णय हो गया। फल स्वरूप पश्चिम के अनेक परिवारों में इसी हिसाब से चर्बी, कार्बोहाइड्रेड, प्रोटीन आदि खाद्योपादान तौल में तौल कर व्यवहृत होने लगे। लिबिग के समय जर्मनी में प्रचलित एक कहावत इसका प्रमाण देती है—Fur warmebildner markc, Fett, Zuckerstoff und starke, Blutbildner Sindim ganzen die Eiweissen Substanzen. अर्थात् —चर्बी, चीनी, श्वेतसार, प्रोटीनादक जानो चार। रक्त-वृद्धि यदि चाहो तो प्रोटीन खाओ।

हमारे देश में युग-संचित अभिज्ञता के आधार पर देश और काल के अनुसार विभिन्न खाद्य ग्रहण किये जाते थे। फिर इस देश में समस्त कार्यों की भित्ति धर्म पर प्रतिष्ठित थी, अतएव अधिकारी भेद से खाद्य का पार्थक्य भी रक्षित होता था। किसी ज़माने में दूध और फल मूलादि की अधिकता वश हमारे देश का भोजन अनुपयुक्त न था—इस प्राचीन भारत की विभिन्न जातियों के इतिहास की आलोचना द्वारा अच्छी तरह समझ सकते हैं।

पश्चिम में अनभिव रासायनिक उन्नति के साथ उन्नत विश्लेषण-प्रणाली के आविष्कृत होने से रासायनिकों ने यह ज्ञान प्राप्त किया कि खाद्य के चिरपरिचित उपादानों की विशुद्धता ही हमारे शरीर की सर्वाङ्गीण सुस्थता की रक्षा नहीं कर सकती। जीव जगत् की क्रमोन्नति के साथ ऊंचे स्तर के स्तनपायी प्राणियों के खाद्य के उल्लिखित स्थूल उपादानों के साथ अन्य अनेक उपादान (थोड़ी मात्रा वाले भी) न हों तो वह पूर्ण स्वास्थ्य का अधिकारी नहीं हो सकता। लूनिन, पेकेलहेरिङ्ग और हापकिनस की गवेषणा से यह विचार सुदृढ़ आधार पर स्थापित हो गया है। अतएव आज कल खाद्य को केवल शक्ति की दृष्टि से ठीक रखने पर ही नहीं, प्रत्युत उस में विभिन्न परिचित और अपरिचित उपादानों की उचित मात्रा रखने की ओर भी ध्यान दिया जाता है – और अधिक दिया जाता है।

'पुष्टि और जनहित' नामक लेख में १९२९ में विटामिन के अन्वेषण पर नोवल प्राइज़ पाने वाले अध्यापक हापकिनस कहते हैं:—"We now know that the satisfaction of appetites by mere bulk consumption is no final proof that a food supply is adequate. Quality in food is at least as importantat quantity, details are of the utmost significance; this absence of factors which add almost nothing to the bulk of a dietary may make the whole entirely in adequate.

अर्थात्—अब हमें मालूम हुआ है कि अच्छा भोजन ग्रहण कर भूख शान्त कर लेने से ही वह भोजन उपयुक्त नहीं हो जाता, खाद्य का उत्कर्ष उसके परिमाण की भांति ही आवश्यक है और उसका खुलासा (details) हैं सर्वापेक्षा मूल्यवान्, भोजन में कुछ ऐसे उपादानों का अभाव हो सकता है जिनकी मात्रा कहा जा सकता है कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ भी नहीं होती, परन्तु जिनका अभाव राशि-राशि भोजनों को व्यर्थ बना देता है।

जिस तरह समस्त अङ्ग-प्रत्यङ्गों के होते हुए भी प्राण के अभाव से शरीर विफल हो जाता है, उसी तरह भोजन छोटे उपादानों के अभाव में क्रियाहीन हो जाता है। इसी लिये कुछ लोग विटामिन को भोजन का प्राण कहते हैं। परन्तु उन्हें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि आयवीक्षणिक परिणाम में अनेक लवण पदार्थों का अभाव भी खाद्य को पूर्वोक्त रूप से व्यर्थ सिद्ध कर देता है। अतएव केवल विटामिन को ही खाद्य का प्राण नहीं कहा जा सकता।

खाद्य के सम्बन्ध में वैज्ञानिक अब तक की गवेषणा से जिस निश्चय पर पहुंचे हैं, उसका सारांश यह है:—"खाद्य के सम्बन्ध में बहादुरी दिखाना बेकार है, खुदा के ऊपर खुदाई करना बेवकूफी है—विज्ञान के बल पर खाद्य का सारांश हुलास की भांति सूंघ कर पूर्ण स्वास्थ्य भोग करने के दिन अभी नहीं आये—पूर्वजों की तरह शाक, आम, दूध आदि खाओ और मस्त रहो।" बहुत से व्यक्ति पूंछ सकते हैं, फिर खाद्य के सम्बन्ध में इतनी गवेषणा इतनी आलोचना करने की आवश्यकता क्या? इसका उत्तर, स्थान, काल और पात्र के भेद से खाद्य की विभिन्नता शिक्षणीय है। इसके अतिरिक्त जहाँ कहीं खाद्य के किसी उपकरण का अभाव हो वहां दूसरे उपकरण से उसको पूरा करना भी मालूम होना चाहिये। खाद्य-उपकरणों की अधिकता में उपयुक्त खाद्य का निर्वाचन और ग्रहण करना भी विचारणीय विषय है।

अनेक खाद्य विशेषज्ञों ने बहुत सी परीक्षाओं के परिणामस्वरूप यह निष्कर्ष निकाला है कि शैशवावस्था से ही यदि पर्याप्त परिमाण में भोजन दिया जाय तो प्राणी दीर्घजीवी नहीं होता। परन्तु यदि खाद्य के समस्त उपादान एकत्रित कर उनको पहिले से ही कम परिमाण में (कैलरी की दृष्टि से) दिया जाय, जिससे पूर्णाङ्ग होने में देरी लगती है—तो पूर्वोक्त प्राणियों की अपेक्षा अधिक जीवित रहेगा। यह भी देखा गया है कि साधारण खाद्य के साथ प्राणियों को प्रतिशत १०-२० अंश आंश जातीय द्रव्य (सेलूलोज) देने से वे केवल साधारण भोजन करने वालों की अपेक्षा अधिक दीर्घजीवी होते हैं। इन सब परीक्षाओं से मालूम होता है कि परिणत अवस्था जितनी देर में आती है परमायु भी उतनी ही अधिक होती है। (It thu appears that the life span can be prolonged by prooning the grouth period) चर्बी और कार्बोहाइड्रेड अधिक खाने से आयुष्काल कम हो जाता है। यह भी पता चला है।

दूसरी ओर शेरमैन की परीक्षा से मालूम हुआ है कि भोजन में १ तिहाई मक्खन, नौ तोला दूध चूर्ण और दो तिहाई भीगे गेहूं देने से कुछ चूहे ८ पुरुषों तक और कुछ, जिनके भोजन में ६हिस्सा मक्खन, नौ तोला दूध चूर्ण और ५हिस्से भीगे गेहूँ थे—अपेक्षा कृत अधिक दिन और अधिक सतेज रूप से ज़िन्दा रहे हैं। शेरमैन की निम्न लिखित तालिका मैके के मत—जल्दी वृद्धि जल्दी क्षय—का ठीक ठीक समर्थन नहीं करती। हाँ छठा हिस्सा मक्खन, नौ तोला दूध, चूर्ण पर्याप्त भोजन में नहीं भी हो सकता।

चूहों का वज़न मासों में—

	२८ दिन का वज़न,	दूध छोड़ने के २८ दिन बाद	जीवनकाल औसतन दिन
	चूहा चूही	चूहा चूही	चूहा चूही
१ नं० भोजन	४१·८ ४०·१	८१·१	६२·३ ६३५ ६६६
२ नं० भोजन	३४·३ ३३·८	४३·२	३७·६ ५७१ ५०३

१ नं० भोजन एक तिहाई मक्खन ६ तोला दूध चूर्ण एक तिहाई भीगे गेहूं।

२ नं० भोजन $\frac{1}{6}$ „ „ „ „

इस परीक्षा से पता चलता है कि भोजन में दूध की मात्रा बढ़ाने से—

१. बाढ़ की उम्र में प्राणियों की वृद्धि की औसत का उत्कर्ष,

२. सब वयसों में साधारण अवस्था की अपेक्षा आकार और अवयव की वृद्धि,

३. पूर्णाङ्ग (Maturity) की शीघ्र प्राप्ति.

४. दीर्घ स्थायी यौवन-लाभ और जरा का विलम्ब से आक्रमण,

५. बहुसंख्यक शावकों का अपेक्षाकृत सुष्ठ रूप से प्रतिपालन,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

६. शावकों का अधिक सतेज भाव एवं
७. प्राणियों को दीर्घ जीवन लाभ और मृत्यु-संख्या ह्रास प्रतीत होता है।

अमेरिका के ओसबर्ण और मेण्डेल ने २० वर्ष तक क्रमिक रूप से केवल खाद्य का नियंत्रण कर कुछ की वृद्धि की औसत तिगुनी और वज़न उसी जाति साधारण चूहों की अपेक्षा दुगना कर लिया। फलतः उनके वर्धितकाय और सुपुष्ट चूहे अपनी ही जाति के चूहों वर्ण भिन्न प्रतीत होने लगे।

खाद्य की गवेषणा में चूहों ने दधीच की भान्ति बलिदान देकर हमारे ज्ञान भण्डार को भरा है। जल्दी बड़े होते हैं और जल्दी बच्चे पैदा करते हैं—इन इनके ऊपर प्रयोग करने से खाद्य की वर्तमान योगिता ही नहीं मालूम होती प्रत्युत् भावी वंशजों के भी उसका कैसा प्रभाव पड़ता है—यह भी ज्ञात हो है।

खाद्य की उन्नति करने से उसका फल लगे हाथों मिल है यह शेरमैन की परीक्षा से सिद्ध होगया है। वे ठीक कहते हैं:—"We now have ample justification setting our nutritional aim higher than e adequacy and for anticpating that her improvement in food habits will g about still higher degrees of health increased efficieney and power to resist tious disease."

अर्थात्—पुष्टि के सम्बन्ध में हमें अपनी धारणाओं को खाद्य की उपयुक्तता तक ही सीमा-बद्ध रखने से न चलेगा। हम अब यथार्थ रूप से आशा करते हैं खाद्य के सम्बन्ध में और भी उन्नति करने से हम उन्नत और वैसी ही कार्य-क्षमता प्राप्त कर सकेंगे, साथ हमारी व्याधि रोकने वाली क्षमता भी उत्तरोत्तर ।

शैशवावस्था से ही खाद्य की अत्यधिक अधिकता से ति की जिस संभावना की आशंका प्रकट की है उसकी में यथेष्ट सत्य निहित प्रतीत होता है। साथ ही साथ युक्त खाद्य के अभाव में भी भारी हानि की सम्भावना है। बहुत दिन तक उपयुक्त खाद्य के न मिलने से उसकी आकांक्षा कम हो जाती है और फिर प्राप्त होने पर भी उसे ग्रहण या परिपाक करने की शक्ति का लोप होते देखा जाता है।

हमारे यहां 'आउस' नामक एक प्रकार के धान का पौदा जब कुछ दिन धूप में सूख जाता है और फिर उसे पानी मिलता है तब उसकी डण्डी कठिन और मज़बूत हो जाती है एवं फ़सल भी अच्छी होती है। परन्तु जिस वर्ष पहले से ही वृष्टि का अभाव नहीं होता उस वर्ष वह उपरोक्त प्रकार से फल प्रसू नहीं होता और यह देखा गया है कि धूप में अधिक सूख जाने एवं देर से पानी मिलने पर फिर वह ठीक नहीं होता। उद्भिदों और प्राणियों में पर्याप्त अन्तर होते हुए भी यह उदाहरण हमारे पूर्वोक्त विषय का बहुत कुछ समर्थन करता है।

बहुत से व्यक्तियों की धारणा है कि हमारा संस्कार और खाद्य की आकांक्षा (appetite) ही खाद्य-निर्वाचन के लिए काफी है। संस्कार से यदि यह काम चल जाता तो अफ्रीका आदि देशों की असभ्य जातियां खाद्य की अनुपयुक्तता वश ध्वंस न हो जातीं। खाद्य की आकांक्षा यदि मनुष्य को ठीक मार्ग पर चला सकती तो यव आदि देशों में बेरी बेरी का जन्म न होता।

परीक्षागारों में खाद्य के विभिन्न उपादानों को भिन्न भिन्न पात्रों में रख कर देखा गया है कि प्राणी कौन सा खाद्य कितना खायें यह स्थिर नहीं कर पाते। कैमब्रिज में इस तरह की परीक्षा से मालूम हुआ है कि बहुत बार चूहे आवश्यक प्रोटीन न खाने के कारण मर गये हैं। अतएव संस्कार खाद्य-निर्वाचन में पूरे नहीं पड़ते—यह प्रमाण सिद्ध है। पता नहीं इस विश्वास का पालन करने वाले कितने व्यक्ति हैं कि बच्चे को अनेक प्रकार के खाद्य उपादान दिए जायं तो वह उन में से अपने लिए उपयोगी उपादान चुन लेगा। जिस तरह सर्दी लगने पर हम गरम कपड़ा पहन लेते हैं उसी तरह भूख लगने पर पेट भर कर खा भी सकते हैं; परन्तु किस तरह का खाद्य ग्रहण करना चाहिए इस का ज्ञान बड़ी अभिज्ञता और पारदर्शिता पर निर्भर करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यहां संक्षेप में मध्यम श्रेणी वाले परिवारों के लिये उपयुक्त खाद्य का वर्णन किया जाता है।

१. खाद्य एकांगी न होना चाहिये।

२. उसमें प्रतिदिन मछली, मांस, अण्डे या छेना होना चाहिये।

३. प्रतिदिन ताज़े फल-मूल और स्यालड होना चाहिये।

४. रोज़ थोड़ा बहुत दूध भी अनिवार्य है।

खाद्य सम्बन्धी अधिकांश परीक्षाएं। चूहों पर हुई हैं। नीचे मनुष्यों पर की गई परीक्षाओं के भी दो-एक उदाहरण दिए जाते हैं।

डा० कैरिमेन ने बालकों के साधारण उपयुक्त आहार के साथ अतिरिक्त दूध की व्यवस्था कर उनके सर्वाङ्गीण स्वास्थ्य की उन्नति होती देखी है।

कुछ वर्षों में खाद्य-सम्बन्धी उन्नति होने के फलस्वरूप लंकाशायर के वारिंगटन नामक शहर के स्कूल के १३ वर्षीय बालक-बालिकों की ऊंचाई और वज़न में कितना अन्तर हो गया है, यह इस विवरण से मालूम होगा:—

	वजन				ऊंचाई	
	बालक		बालिका		बालक	बालिका
सन्	पौं०	आ०	पौं०	आ०	इञ्च	इञ्च
१९१३	६८	५	७०	४	५३.७	५४'८
१९३३	८०	२	८७	५	५६'६	५८'२
वृद्धि	११	१३	१७	१	३'१	३'४*

* शिमला म्यूनिसिपैलिटी ने कुछ स्कूली लड़कों को दूध देने की परिपाटी का प्रचलन किया है। सरकारी स्वास्थ्य-विभाग की ताज़ी रिपोट से पता चला है कि जिन लड़के-लड़कियों को रोज़ १ पौण्ड दूध दिया गया है उन में से तीन महीने में लड़कियों के वजन की औसत में ५'३५ पौण्ड और ऊंचाई में ०'७८ वृद्धि हुई है। इसी तरह लड़कों का वजन औसतन ३'९२ पौण्ड और ऊंचाई ०'८ इञ्च बढ़ा है। इसके अतिरिक्त उनमें चेतनता और चेहरे की रौनक बढ़गई है एवं छोटे-छोटे रोगों से स्वयं छुटकारा मिल गया है।

—सं० आयुर्वेद संसार।

हवाई द्वीप के चीनियों और सान-फ्रांसिसको के जापानियों ने अपने देशवासियों की तुलना में दैर्घ्य-विस्तार में जो श्रेष्ठता लाभ की है, वह खाद्य-परिवर्तन के साथ दैहिक उन्नति के साक्षात सम्बन्ध का प्रबल निर्दशन है। इनसब प्रत्यक्ष व्यापारों में हम खाद्य- सम्बन्धी परिवर्तन द्वारा स्वास्थ्य, अवयव और शरीर की आश्चर्यजनक उन्नति का अकाट्य प्रमाण पा रहे हैं। हमारे देश को कठिन अन्न-समस्या के अवसान और खाद्य-समस्या का सम्यक् समाधान सम्भव हो जाय तो निकट भविष्य में 'बूढ़ोरस्क वृषस्कन्धः शालपांशु-महाभुज' जाति का समुद्भव होगा—इस में कोई सन्देह ही नहीं रह जाता।

मैक लेस्टर (meclester) कहते हैं:—Adequate and optimum are not synonymous, and it may be possible, through improved nutrition alone, to bring mankind to a higheer level of physical development—to a large stature,greater vigour, incereased longevity and high level of cultural attainment* अर्थात्-(खाद्यके सम्बन्ध में)उपयुक्त और आदर्श का एक ही अर्थ नहीं। केवल मात्र उन्नत प्रकार की पुष्टि की सहायता से ही मानव जाति उन्नत प्रकार की शारीरिक उन्नति, वृहत्तर अवयव, अधिकतर शक्ति, दीर्घतर परमायु एवं उन्नतस्तर की संस्कृति की अधिकारिणी हो सकती है।

विषयीभूत न होते हुए भी यहां यह कह देना आवश्यक है, कि केवल उपयुक्त खाद्य की प्राप्ति से बालकों के सर्वाङ्गीण स्वास्थ-लाभ की आशा नहीं की जा सकती। खुले स्थानों में उनके खेलने की व्यवस्था न करने से, अत्यधिक पढ़ने-लिखने का बोझ डालने से, और जन-बहुल स्थानों में रहने से उत्पन्न होने वाली स्नायुविक उत्तेजना (Nervous wear and tear) के फलस्वरूप उनकी भूख की तेज़ी कम हो जाती है। इन कारणों से उपयुक्त खाद्य की उपस्थिति में भी उनका आशानुरूप उपकार नहीं होता। फलतः पुष्टि के लिए उपयुक्त खाद्य जितना आवश्यक है, स्वास्थ्य चर्चा की भी उतनी ही ज़रूरत है, गत २१ जनवरी सन् १९३५ की लैनसेट पत्रिका में लिखा है—

* The Lancet Jan. 4. 1936, P.32.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Physical education, wisely used, has an ...tensely important contribution to make to...ds a state of postive good health, which ...mething much better than the west pre...tion of disease. अर्थात् वास्तविक शारीरिक शिक्षा ...स्वास्थोन्नति की परम सहायक है। यह केवल व्याधि ...षेध की अपेक्षा बहुत श्रेष्ठ है।

एक बात और, हमारे स्कूलों और कालेजों के होस्टलों ...ले लड़के जरा कुछ अधिक भोजन करते हैं, दूसरे लड़के ...गँवार और देहाती कहते हैं फलतः वे परिपाक ...के प्रखर होते हुए भी लज्जावश कम खाने लगते हैं ...अन्त में सचमुच अपनी परिपाक एवं शारीरिक शक्ति ...खो बैठते हैं।

लड़कियों के होस्टलों में यह व्यापार और भी ...नीय बन जाता है। वे उल्लखित कारणों के अतिरिक्त ...बनने की आशा में भी कम खाती हैं। फलतः ...मध्या न होकर वे वक्र-मध्या और क्षीणायु हो ...हैं।

...हाल ही में विलायत में सर जान ओहर, के तत्वाव...में आय के साथ मनुष्यों के स्वास्थ्य और खाद्य के ...मनुष्यों के स्वास्थ्य और खाद्य का कितना सम्बन्ध ...इस विषय का विस्तृत अनुसन्धान (Survey) किया ...था। अनुसन्धान से पुष्टि के सम्बन्ध में बहुत सी ...जान बातों का पता चला है। आय की मात्रा के ...आ-समस्त जाति को दो भागों में बांटा गया। सब ...ऊंची और सब से नीची श्रेणी में समस्त जनसंख्या ...अर्थात् १० व्यक्ति एवं बीच की चार श्रेणियों में से ...में जन संख्या के प्रतिशत २० व्यक्ति पड़े हैं। *

...प्रायः सब श्रेणियों में आलू और रोटी का खर्च समान ...। आय की वृद्धि के साथ दूध, अण्डा, फल शाक ...मछली और मांस का खरचा बढ़ता देखा गया है। ...अण्डे, और फल सब से ऊंची और सब से नीची ...में किस मात्रा में व्यवहृत होते हैं—यह इस विवरण ...से होता है:—प्रति व्यक्ति का साप्ताहिक खर्च

	ऊंची श्रेणी	नीची श्रेणी
दूध	५५ छटांक	१८ छटांक
अण्डे	४·५ ,,	१·५ ,,
फल	२० पेन मूल्य के	२·४ पेनी के

इस विवरण से आ कीय वृद्धि के साथ स्वास्थ्य रक्षा के लिए उपयोगी खाद्य का व्यवहार भी बढ़ता मालूम होता है।

विभिन्न श्रेणियों की स्वास्थ्य परीक्षा से मालूम हुआ है कि आय की वृद्धि के साथ मृत्यु की औसत घट जाती है, शिशु जल्दी बढ़ते हैं, परिणत वयस वालों के अवयव अधिकतर उन्नत होते हैं। एवं साधारण स्वास्थ्य और चेहरे का उत्कर्ष होता है। परीक्षा से यह भी पता चला है कि दरिद्र श्रेणियों के खाद्य को स्वास्थ्य सम्पन्न धनी सम्प्रदाय के खाद्य के समान करने के लिए दूध, अण्डे, मक्खन, फल, शाक सब्जी और मांस की मात्रा स्थलानुसार प्रतिशत १२ से २० अंश तक बढ़ानी आवश्यक है।

हमारे देश में जहां अनशन और अर्धाशन से अधिकांश व्यक्ति मौत की गोद में चले जाते हैं, वहां विलायत के अनुसन्धान की बातें सोचने में भी संकोच होता है। महात्मा ह्यूम (A. C.) ने आज से ५० वर्ष पूर्व साधारण भारतवासियों के सम्बन्ध में कहा था। – Toil, toil, toil hunger, hunger hunger sickness suffering, sorrow; these, alas! alas! are the keynotes of their shortand sad existence. अर्थात्—परिश्रम पर परिश्रम, भूख पर भूख की मार, आधि-व्याधि, दुःख-दर्द-यही है, उनके दुःखमय और स्वल्पायु जीवन की जड़।

आज इतने दिन बाद भी इस अवस्था में कोई विशेष परिवतन नहीं हुआ – यह हम अनेक स्थानों पर पड़ने वाले दुर्भिक्षों की कराल छाया से ही जान सकते हैं। अतएव खाद्य के विषय में परिवर्तन और उन्नित के विधान एवं पुष्टि प्रसंग में सदुपदेश प्रदान करना हमारे अधिकांश देशवासियों को अरण्यरोदन ही मालूम होग। अन्न समस्या ही जहां गम्भीर हैं वहां खाद्य समस्या के समाधान की चेष्टा विडम्बना मात्र है।

(शेष पृष्ट १३ पर)

*Food, Health and Incom,—The Lencet ...21, 1936. p. 919

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदय और उसके रोग

डाक्टर श्री 'त्रिलोचन'

हृदयको उर्दू वाले दिल, फ़ार्सीदां क़ल्ब और आङ्गल भाषाविद् Heart की उपाधि देकर बात-बात में जितना रगड़ते हैं, कदाचित ही शरीर के किसी अन्य अवयव पर इतना अत्याचार ढाया जाता हो! आधुनिक नौजवान शिक्षित मण्डली में तो मिनट-मिनट पर कंघे और शीशे की भांति इसकी तलबी होती है। कभी कमल बनाकर इसे प्रफुल्लित करने की खुशियां मनाई जाती हैं, दिल की आबादी के शादियाने बजते हैं तो कभी इसके स्मशान बनने और मुर्झाने की मर्सियाख़ानी होती है। कोई अपने भट्टी की तरह जलने वाले हृदय पर आंसू बहाता है तो कोई बर्फ़ की भांति इसकी शीतलता का अनुभव कर आपे से बाहर हो जाता है। एक नन्हें से नाज़ुक, हृदय को पांच फ़ीट लम्बी प्रियतमा का प्रेम मन्दिर बना कर लुका-चोरी खेलता है तो दूसरा इसकी तंगी और तारीकी का ही रोना रोया करता है।

रवि से अधिक तीव्रगामी कवियों का तो कहना ही क्या! उन्होंने तो अपनी ओजस्विनी भाषा की लाल तूलिका लेकर इसके अगणित चित्र खींच डाले हैं। सब की रूप-रेखा जुदा-जुदा है। एक महाशय फ़र्माते हैं——

दिल तो शीशे से भी नाज़ुक है संभालो इसको;
गेंद की तरह न ऐ जान, उछालो इसको।

अब ज़रा, 'रफ़ी' साहब की भी फ़रियाद सुन लीजिये—

ख़ुदा ने क़ल्ब देकर क़ल्ब में यादे बुतां रखदी;
ग़ज़ब है ये खटकने वाली शै उसने कहां रखदी!

कवि 'सुहृद' के हृदय की दयनीय दुर्दशा को देख कर आप भी सहानुभूति में दो आंसू टपका दीलियेः—

पिघल रहा सुकुमार हृदय, हा इधर किसी का ध्यान नहीं
हृदय थाम कर कोई भी सुनता आहों का गान नहीं!

पाठक! जिस हृदय के पीछे इतना रगड़ा-झगड़ा है, जिस हृदय के लिए ही दुनिया में उथल-पथल मची हुई है। कविश्रेष्ठ 'Emily Bronte' के शब्दों में उसे बदल देने का हम आप से अनुरोध करते हैं। सलाह अच्छी है, मानें, न मानें—आप को अधिकार है।

And if I pray the only prazer
That moves my lips for me
Is, 'Leave the heart that now I bear',
And give me liberty.

इतना गा गए, हृदय की माला फेरते-फेरते जबान घिस गई किन्तु वास्तविक अर्थों में कितने व्यक्ति ऐसे हैं जो दिल की दुनिया को जानते हैं? बहुत कम! हृदय है क्या? शारीरिक कल की मशीन को चलाने वाला ड्राइवर! अपनी बाईं मुट्ठी को बायें स्तन से १½ इञ्च नीचे छाती पर इस प्रकार रक्खें, कि सब से बड़े पोर्वे उपर की ओर दाहिने कन्धे की तरफ़ को रहें। बस, आप को हृदय का ठीक स्थान मालूम हो जायगा! कान लगा कर सुनें, लब-डुप की आवाज़ भी सुनाई पड़ेगी!

यह आवाज़ कहां से आती है? हृदय एक प्रकार का कोष्ट है जो सौत्रिक तन्तुओं की बनी हुई एक थैली में बन्द रहता है। इस कोष्ट की बनावट ठीक एक दो मंजिले मकान जैसी है जिस में ऊपर नीचे मिला कर कुल चार कमरे या खाने हों! शरीर का समस्त रक्त बाल जैसी बारीक नसों से, शरीर के रद्दियात, मृतक देहाणुओं और अन्य निष्फल द्रव्यों को बटोरता हुआ ऊपर वाले कोष्ठों में प्रवेश करता है और वे फैलते हैं। वहां से निचले खाने में जब उतरने से वे सिकुड़ते हैं, जब हृदय सङ्कुचित होता है तो रक्त को बड़े वेग से बाहर धमनियों में धकेलता है! बस, हृदय के इसी सङ्कोच और प्रसार से आवाज़ पैदा होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदय एक मिनट में लगभग ७८ बार रक्त ग्रहण करता और इतने ही बार नीचे धकेलता है। अस्तु प्रौढ़ मनुष्य का हृदय प्रति मिनट लगभग ७०–७५ बार धड़कता है। जवान आदमी के दिल की लम्बाई ४½ इञ्च, चौड़ाई ३½ इञ्च, ऊंचाई २½ इञ्च होती है और भार होता है केवल साढ़े तीन छटांक! बस, इतनी सी बात का ही इतना बड़ा अफ़साना बनता है। इस नन्हें से गोश्त के लोथड़े पर ही दीन दुनियां का सौदा किया जाता है। हम आये दिन देखते और अनुभव करते हैं कि जितना अधिक लोगों के हृदय की प्यास बढ़ती जाती है, उतना ही यह बेचारा बनता जाता है कमज़ोर! देखिये न, हृदय की धड़कन बन्द होने और अन्य हृदय रोगों की तालिका औषधि-विज्ञान की सूची में बिल्कुल नई है। यही नहीं इन व्याधियों का शिकार बनने वालों की संख्या भी दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। अभी हाल में अमरीका मेडीकल एसोसियशन क्लीवलैण्ड में डाक्टर Fred. M. Smith, डाक्टर W.D. Paul और डाक्टर H.W. Rathe ने घोषित किया है— The Number of deaths from heart disease is much grater to day and has increased much faster in to the last twelve years than the numbers from either Cancer, pneumonia or tuberculosis.

यों तो हृदय व्याधि के बहुत से कारण हो सकते हैं किन्तु कुछ मुख्य उपादानोंका हम यहां पर उल्लेख करते हैं। इसका वाह्य कारण है उदर! उदर जब वायु आदि विकारों से फूलता है। उस समय यह हृदय पर दबाव डाल कर उसकी स्वाभाविक गति में बाधा पहुंचाता है। उस समय रोगी को ऐसी प्रतीत होता है मानों हृदय की धड़कन बन्द होने वाली है। यह कारण अर्जीण और पेट बद्धता को दूर करने से मिट सकता है।

२—परम्परागत हृदय की दुबलता इसका दूसरा कारण है इसमें स्वतः हृदय और उसकी मांस पेशियां कुछ किञ्चित वाह्य व्यतिक्रम से प्रसारित कर देती हैं। जैसे में इनफ्लूयेंजा (Infiuenza) ज्वर जिसकी दुर्बलता महीनों बाद तक पीछा नहीं छोड़ती, हृदय दुर्बल बनाने में एक बहुत बड़ा कारण है। ४० वर्ष से ऊपर अवस्था वालों के हृदय को फुफ्फुस शोथ और जाड़ों की खांसी कम हानि नहीं पहुंचाती।

३—हृदय दौर्बल्य का तीसरा कारण श्वास रोग (Asthma) है। इस में भी बार-बार 'खों-खों' करने से हृदय पर धक्का और ज़ोर पहुंचता हैं।

४. हस्त मैथुन और अप्राकृतिक मैथुन, कभी कभी स्वप्नदोष की पुरानी व्याधि भी हृदय को रोग ग्रस्त कर देती है।

५. आवा (Iowa) के प्रसिद्ध डाक्टर एफ० एम० स्मिथ का कहना है कि हृदय रोग से होने वाली आधी मृत्युओं का कारण Arterioscle rotic व्याधि है। इस रोग में हृदय की धमानियां शनैः शनैः इतना तंग हो जाती हैं कि रक्त बड़ी कठिनता से गुजर पाता है। इस तरह पर्याप्त रक्त के अभाव में हृदय की पेशियां खराब हो जाती हैं।

ऐसी अवस्था में रोगी की छाती में दर्द कई घण्टों से लेकर कई सप्ताह तक निरन्तर रहता है, स्वांस लेने में भी तकलीफ होती है।

विशेष—हृदय की एक दूसरी व्याधि को अंग्रेजी में Angina कहते हैं। इन दोनों में अन्तर यह है कि Angina में व्यायाम, उत्तेजना, थकावट आदि के समय वेदना आरम्भ होती है किन्तु इस व्याधि में विश्राम और सो कर उठने पर भी दर्द शुरू होता है।

इस रोग में आराम की बहुत आवश्यकता है। पूर्ण विश्राम से हृदय का काम कुछ हल्का हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में उसे कम रक्त की भी आवश्यकता पड़ती है। औषधियों द्वारा हृदय की क्रियाशील पेशियों की गति बढ़ा कर रक्त पर्याप्त मात्रा में पहुंचाया जा सकता है और सङ्कुचित धमनियां भी फैल सकती हैं।

६. भय, अति हर्ष, अधिक उष्णता (ज्वर), चित्तवृत्ति विकार, मैथुनेच्छा, क्रोध, व्यायाम, तैल मर्दन, दौड़, भोजन आदि के पश्चात हृदय की स्वाभाविक गति बढ़ जाती है।

७. क्लेश, मानसिक अशान्ति, निर्बलता और उपवास आदि से हृदय की गति मन्द पड़ जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह तो हुई हृदय के साथ खेल खेलने वालों और दिल के दुकानदारों की व्याधियां। साधारण लोग इसका अनुमान किस भांति लगावें कि उनका हृदय स्वस्थ है अथवा रोगी! उसके भी लक्षण आप को जान लेना चाहिये—

१. आप देखिये कि साधारण श्रम के पश्चात आप के श्वांस में कुछ अस्वाभाविक परिवर्तन तो नहीं हुआ। आप यदि ४० से ऊपर हैं और ऐसा अनुभव करते हैं तो तुरन्त किसी सुयोग्य चिकित्सक से परामर्श कीजिये। हृदय को पुष्ट करने वाली औषधियों का (Tonic) सेवन कीजिये।

२. अधिक व्यायाम के पश्चात हृदय में एक प्रकार की बेचैनी से भरी सनसनी पैदा होना।

३. साधारण बोझ उठाने अथवा खड़े होने पर हृदय प्रदेश में मामूली चिकोटी काटने की सी वेदना का अनुभव करना।

४. शरीर में आकस्मिक गर्मी मालूम होकर पसीने का आना, मुखमण्डल पर भरभराहट और पैरों में सूजन हृदय व्याधि के लक्षण हैं।

अब देखना यह है कि जिस हृदय को लोगों ने आनन्द तरङ्ग का केन्द्र समझ रक्खा है, जिस हृदय को समस्त सुकोमल भावनाओं का उद्गम-स्थल माना है—उसमें कुछ वैज्ञानिकता का भी अंश है अथवा सब कवि कल्पना ही का चमत्कार है। इस सम्बन्ध में न्यूयार्क के डाक्टर उल्फ (Wolf) महोदय ने बहुत छान बीन की है। आपका अनुभव है—'जब हम आनन्दानुभव करते हैं, उस समय समस्त शरीर में खून की रवानी बढ़ जाती है और पाचक यत्रों की ओर कम हो जाती है इसके प्रतिकूल ग्लानि का अनुभव करने से प्रभाव उल्टा होता है।

भावनाओं और रक्त सञ्चरण का घनिष्ट सम्बन्ध है। डाक्टर महोदय का कहना है कि यदि आप अपना हाथ ऊंचा करें तो रक्त की गति तीव्र हो जायगी। आपका यदि हाथ उठाने की ओर ध्यान भी न हो और कोई दूसरा व्यक्ति आपका हाथ उठा दे तो रक्त की गति में कोई विशेष अन्तर न पड़ेगा।

मधुर स्मृति और सुखानुभव इस विषय में एक दूसरी विचारणीय चीज़ है। लोग अपने अतीत-जीवन-अध्याय के किसी पृष्ठ को खोल लेते हैं और घण्टों आनन्द की अथाह तरंङ्गों में अवगाहन किया करते हैं। कोई मित्र-मिलन की मधुर कल्पना को लेकर हृदय को पुलकित किया करता है। किसी कवि कोविद की अनुभूति सुनिये—

तसव्वर में चले आते, तुम्हारा क्या बिगड़ जाता?
तुम्हारा पर्दा रह जाता हमें दीदार हो जाता!

वास्तव में दमाग़ और दिल का बहुत गहरा सम्बन्ध है। मस्तिष्क की भावनाऐं हृदय से टकरा कर ही दम लेती हैं। Science News letter पत्र लिखता है कि इस बात की काफ़ी जांच-पड़ताल न्यूयार्क नगर के Presbyterian अस्पताल में गई है। सैकड़ों हृदय रोगियों के निकट-तम परीक्षणों द्वारा मस्तिष्क और हृदय की घनिष्टता का सम्बन्ध ढूंढा गया है। उन में से बहुत से रोग ऐसे मिले हैं। जिहें स्वप्न में जीवन के विरुद्ध धर्मकथां दी गई हैं, ये स्वप्न उसी समय दिखलाई पड़े हैं जब वे हृदय-व्याधि के दौरे में फंसे थे।

अस्तु हृदय के वास्तविक रूप का परिचय प्राप्त करना, इस के महत्व को समझना, हर समय दुःख शोक, चिन्ता, ग्लानि, उत्तेजना आदि से इसे दबाते रहना, हृदय-रोगों का आह्वान कर मृत्यु को बुलाना हैं। आज हृदय धड़कन की व्याधियाँ देश के अधिकांश शिक्षित नौजवानों में पाई जाती हैं और वह भी नागारिकों में! इस प्रमाण से यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि हृदय रोगों का एकमात्र कारण हमारा कृत्रिम और विलासमय जीवन है। पाठकों! हृदय रोग, राष्ट्र का वह भयानक शत्रु है जो अन्दर ही अन्दर उस की जड़ों को खोखला कर डालता है। कोई भी समाज अथवा देश इसे अपने दामन में पाल कर फूलने-फलने की आशा नहीं रख सकता। आप इस से बचें, बार-बार बचें; लेखक का यही अनुरोध है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुज़ाक पर आधुनिक प्रयोग

श्री कविराज हरिकृष्ण सहगल

सुज़ाक नहीं जुकाम !

आज कल सुज़ाक का भयङ्कर रोग बहुत शीघ्रता से बढ़ रहा है। अमरीका और फ्रांस इस रोग के अड्डे हैं। सुज़ाक नहीं जुकाम ! अमरीका में सूज़ाक इतना भयंकर है, कि इसे सुज़ाक न कह कह कर, लोग अब जुकाम कहने लगे हैं। सूज़ाक में पीप आती हैं और मूत्रक्रम में भी रेशा चलता है। ईश्वर ने कुकर्मों की सज़ा के लिये आतशक और सुज़ाक को पैदा किया था। मगर लोग तो इसे ऐसा नहीं समझते। जो सुज़ाक को जुकाम समझते हैं, क्या वे इसे ईश्वर की ओर से सज़ा समझते हैं ? नहीं मेरी तुच्छ सम्मति में वे ऐसा नहीं ख्याल करते वे जो चाहे समझें मुझे इस पर कुछ नहीं कहना है, मगर आज मैं सुज़ाक रोग की चिकित्सा के सम्बन्ध में आपके सामने कुछ कहूंगा।

इस व्याधि पर आजकल बीरोज़ा, कबाब चीनी और चन्दन के तैल प्रचुरता से प्रयोग में लाये जाते हैं।

बिरोज़ा—

(१) गन्दा बिरोजा १ छ० लेकर वस्त्र की पोटली में बांधें। एक सेर दूध हांडी में भर कर उस हांडी में शीशा यंत्र की विधि से उस पोटली को लटकावें और हांडी को चूल्हे पर रख कर नीचे आग जलावें, जब सब दूध जल जावे तो बिरोज़ा श्वेत वर्ण धारण कर लेगा। शीतल होने पर बिरोज़ा को निकाल लें और तीन तीन रत्ती की पुड़िया दिन में तीन बार खावें, एक ही दिन में दर्द अथवा जलन को शान्त करेगा।

(२) शुद्ध बिरोज़ा और निशास्ता सम भाग लेकर दोनों बराबर गोली बनावें। पहले रोज ७ गोली इसबगोल के खुशाब के साथ प्रयोग करें। प्रति दिन एक गोली बढ़ाते जावें।

(३) मेरे स्वर्गीय ताऊ ला० बागुमल की पुस्तकों से निम्नलिखित योग प्राप्त हुए हैं—गन्दा बिरोज़ा आध सेर लेकर, नीचे बेरी की लकड़ी तीस सेर जला कर शुद्ध कर लें। फिर तवाशीर, इलायची दाना २–२ तोला, मिश्री देशी ३ तोला मिला कर इसमें से ६ माशा लेकर सम भाग उल्लिखित शुद्ध बिरोज़ा मिलाकर गाय के दूध के साथ व्यवहार करावें।

(४) शुद्ध बिरोज़ा २ रती गुड़ में मिला कर खावें, उसके पीछे दही की लस्सी पीवें।

कबाब चीनी—

(५) कबाब चीनी, कल्मी शोरा, यवक्षार १–१ तो० सफेद जीरा, फिटकरी, रेवन्द चीनी, गेरु, इलायची ६–६ माशा, इनका चूर्ण बना कर ६ माशा की मात्रा दुग्ध के साथ व्यवहार करें।

(६) कर्पूर ३ माशे, शुद्ध गेरु ४ माशे, फिटकरी ६ माशे, कल्मी शोरा १॥ तोला, सेलखड़ी २॥ तोला, शीतल चीनी १० तो०, कपड़ छान कर चूर्ण बना लें। मात्रा ३ माशे अनुपान दूध की लस्सी।

तेल चन्दन—

(७) चन्दन का तैल अस्ली एक तोला, बबूल का गोंद एक तोला, अर्क गुलाब बढ़िया २० तोला; बबूल के गोंद को तेल के साथ खरल में डाल कर घोटें, जब दोनों एक रस हो जायें, तब थोड़ा २ गुलाब जल डालकर खरल करें और तैयार होने पर बोतल में भर कर रख लें। मात्रा एक से तीन तोले तक, दिन में २ या ३ बार पीना चाहिये। परन्तु पीते समय हर बार बोतल हिला लेना आवश्यक है।

(८) सन्दल का तेल ६ माशा लेकर उसमें लुबान कौड़िया ६ माशा मिला कर, भोजन के ६ घन्टे पश्चात दिया जाता है, उसके पश्चात २४ घन्टे तक पान और शर्बत कमोड़े के सिवा और कुछ नहीं दिया जाता, यह सुज़ाक की एक दिन की चिकित्सा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निमीलित प्रयोग—

(१) खस—गदहपुदीना की जड़ और छोटी इलायची के दाने दो-दो तोला, श्वेत चन्दन का बुरादा ५ तोला चारों औषधियों को अधकुट करके, साढ़े चार पाव पानी में पकावे, जब पाव भर जल रह जावे तब नीचे उतार वस्त्र से छान कर बोतल में रख लें। उसमें चन्दन का तेल, बिरोजे का तेल और शीतल चीनी का तेल २०-२० बूंद डाल दें। मात्रा—३ तो० तक दिन में तीन चार बार।

(१०) सन्दल का तेल १ तोला, कबाब चीनी का तेल १ तोला, बिरोजा का तेल २ तोला। सब को मिला लें ३६ बूंद तक बताशे में देकर ऊपर से पतली और भर पेट कच्चे दूध की लस्सी मिलावें।

आपके सामने मैंने पहले केवल बरोजा का प्रयोग और फिर कबाब चीनी, उसके बाद केवल सन्दल तेल प्रयोग और उसके बाद तीनों से मिलित योग रखे हैं। यह रखने का अभिप्राय यह था कि आपको यह बताया जायगा कि ये तीनों तेल सुजाक में अत्याधिक व्यवहृत होते हैं। प्रत्येक चिकित्सक यह जानता है। किन्तु मैं यह बात दावे से कह सकता हूं कि चिकित्सकों में अधिकांश इन तेलों के प्रयोग का परिणाम जानते हैं, प्रभाव नहीं जानते। अगर मेरे इस कथन पर आशंका हो तो नीचे लिखे प्रभाव को पढ़ कर फिर चिकित्सक विचार करें कि वह कहां तक इसके विषय में कम जानते थे।

कबाब चीनी (cubebo) सन्दल (sandal) बरोंजा (copaiba) यह तीनों ही एक दूसरे से कुछ मिलते जुलते हैं। कबाब चीनी के तेल में अधिक मात्रा में सैसक्विटरपेन (sesquiterpene) होता है। सन्दल की लकड़ी के तेल में दो द्रव्य होते हैं एक सैन्टेलोल (santalol) और दूसरे सैन्टेलाल (santalol) जिन्हें इतर की तरह उड़ाते जाने से सेसक्विटरपेन जैसी ही वस्तु बाकी रह जाती है। बरोजे में एक से अधिक गहरे अम्ल (resinous acids) होते हैं। कबाब चीनी में इन गहरे अम्लों से अलग एक कसैता पदार्थ क्यूबेबीन (cubebin) होता है। यह पदार्थ आमाशय से अन्दर प्रविष्ठ नहीं होता और न हो सकता है। आन्तों में यह बिलकुल गतिशील नहीं होता।

बरोजे का तैल और कबाब चीनी का तैल, यह बहुत काल से मूत्रनाली के व्रणों को शुद्ध रखने और भरने के लिये प्रयुक्त होते रहे हैं और इन दो में तीसरे सन्दल तैल की वृद्धि बहुत थोड़े काल से हुई है। सन्दल के तेल का स्वाद इतना बुरा नहीं और न यह आमाशय को खराब करता है। सुजाक की अधिकांश औषधियां आमाशय और यकृत को खराब कर देती हैं।

यह तेल त्वचा आमाशय आन्तों पर चोषक प्रभाव डालते हैं, (इनका प्रभाव राई अथवा मिर्च के प्लास्टर के तुल्य होता है) इनके उड़नशील तैलों का आत्मीकरण शीघ्र हो जाता है। और इनका कुछ भाग तो फुफ्फुसों द्वारा और अधिक वृक्कों के द्वारा ग्लाइकोर यूनिक अम्ल (glycuronic acid) के साथ मिला हुआ निकल जाता हैं। कुछ तेल तो बिना किसी भी परिवर्तन के ज्यों के त्यों निकल जाते हैं और कुछ सूत्रों (tissues) में ध्वंस क्रिया (oxidation) की प्राप्त होते हैं।

तैल का वह भाग जो मूत्र के रास्ते बाहिर को आता है कृमिघ्न प्रतीत होता है। क्योंकि एक तो वह आप मूत्र की अपेक्षा धीरे २ चलता है और दूसरे बहुधा मिलने वाले कृमियों की बढ़ती भी इससे रुक जाती है। इसीलिए मि० जौरडन (gordon) ने कहा है कि सन्दल तैल खाने के पश्चात मूत्र सूजाक के कीटाणुओं को मारने में अधिक शक्तिशाली होता है। मूत्र की यह शक्ति तब भी बनी रहती है जब कि वह क्षारीय हो जाता है। सन्दल तेल का आन्तों के किटाणुओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। डा० विन्टरनिटी (wintrenity) का ख्याल है कि इन तैलों का जो कृमिघ्न प्रभाव सुजाक के कीटाणुओं पर पड़ता है वह इसलिए कि यह ग्लाइक्युरोनिक अम्ल से मिल कर निकलता है। निकलते हुए एक तो इसके कृमिघ्न और दूसरे संकोचक (rstringent) होने से सुजाक में लाभ होता हैं।

अधिक मात्रा में इन तैलों के प्रयोग स मूत्राशय और मूत्र नाली में खुजला या तोद (Irritation) हो जाती है उससे बार बार पेशाब करने की इच्छा है और पेशाब करते हुए बहुत पीड़ा और कष्ट होता है। कभी कभी तो पीड़ा इतनी अधिक होती है कि पूरी तरह से मूत्र का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रुक जाता है (ऐसी अवस्था में कैथेटर से मूत्र निकालना चाहिए।) जब मूत्राशय और मूत्र नाली में सूजन हो तो उपरोक्त लक्षण बहुत कम मात्रा से भी उत्पन्न हो जाते हैं। इसीलिए सूज़ाक की आरम्भावस्था में जब सूजन होती है तब यह तेल नहीं दिए जाते। और केवल रोग की पुरातन अवस्था (chronic stage) में ही दिए जाते हैं।

तेल बिरोजा और कबाब चीनी उड़नशील तैलों से अपने में कुछ गहरे अम्ल (Resinouscaids) रखते हैं इनमें कुछ तैल ऐसे होते हैं जिनका वक्ष की झिल्ली पर प्रभाव पड़ता है। इस लिये इन्हें उन में मिलाया जाता है जिनको इस श्लेष्मिक कला के स्राव को कम करने के लिये प्रयुक्त करना होता है। गहरे अम्ल मूत्र मार्ग से निकल जाते हैं।

कबाब चीनी और बिरोजा के तेल आमाशय पर क्षोभ (Irritation) प्रभाव कम डालते हैं, परन्तु देर तक के व्यवहार होते रहने से आमाशयिक विकृति के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। जिन में अधिकतर भूख कम हो जाना और आमाशय की बेचैनी होती है। चन्दल का तैल कम क्षोभ वाला है। इन तेलों के प्रयोग के पश्चात त्वचा पर फफोले से उठ आते हैं वह फफोले अर्टीकेरिया (Urticaria) एरीथीमा नोडोस्म (Erythema Nodosum) और बहुत कम दाद की शक्ल के किस्म होते हैं। इन फफोलों का कारण ज्ञात नहीं हो सकता। सम्भव है आमाशयिक विकृति से हो जाते हों।

(पृष्ठ ७ का शेष)

खाद्य के सम्बन्ध में हमारी उदासीनता और शिक्षा का अभाव भी बहुत स्थलों में निन्दनीय है। हमारे शिक्षित नगर निवासियों की आय वृद्धि से मोटर के तेल का खर्च और आमोद-प्रमोद का व्यय जितना बढ़ जाता है. घर में घी, दूध की मात्रा उतनी नहीं बढ़ती—यह नितान्त आक्षेप की बात है। अच्छी परिस्थिति वाले व्यक्तियों में ग्रहिणी के गात्र में अलंकार लाद देने का आग्रह जितना अधिक होता है, गृहिणी या बच्चों के बदन में मांस या स्वास्थ्य जनित लावण्य वृद्धि की ओर उसका आधा भी अनुराग नहीं होता। पुष्टि के अभाव से जिस देश में क्षय रोग बढ़ रहा है—उस देश के लिए यह मनोवृत्ति गौरव की चीज नहीं। इसीलिए जरा अप्रितकर होते हुए भी इसका उल्लेख किए बिना रह नहीं सका।

(आगामी अङ्क में समाप्त)

विज्ञान और नस्य

नाक द्वारा अत्यन्त बारीक चीजों की सूंघने की प्रणाली को आयुर्वेद में नस्य लेना कहते हैं और जो चीज़ सूंघी जाती है उसे नस्य कहते हैं। मस्तिष्क नाक तथा स्नायु व्याधियों को दूर करने के लिए यह तरीक़ा आयुर्वेद शास्त्र में अत्यन्त प्राचीन काल से बर्ता जा रहा है। कुछ दिन पूर्व आधुनिक वैज्ञानिक और डाक्टर इसे अवैज्ञानिक कह कर स्वास्थ्य घातक ठहराते थे। आज योरोप में फिर इसका प्रचार बढ़ रहा है। कुछ दिन पहले सर बक्सटन ब्राडन ने कतिपय परीक्षणों के पश्चात यह सिद्ध किया था कि नस्य लेने से सिर में सर्दी से उत्पन्न होने वाली व्याधियां बहुत घटती जा रही हैं। अब वैज्ञानिकों ने काली खांसी, खसरा और मलेरिया को रोकने के साधनों में नस्य को प्रथम स्थान दे दिया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपवास और उसकी उपयोगिता

श्री बालमुकुन्द द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य

प्रायः सभी धर्म किसी न किसी रूप से किसी न किसी समय उपवास करने की व्यवस्था देते हैं, किन्तु हिन्दू धर्म इस बात में सब से चढ़ा बढ़ा है। हिन्दू धर्म ही क्यों, हिन्दू चिकित्सा शास्त्र भी उपवास को जितना महत्वपूर्ण तथा उपयोगी बताता है, शायद ही अन्य चिकित्सा प्रणालियों में से कोई उसको उतना श्रेयस्कर समझता हो। कुछ दिन पूर्व इस बात को भी लेकर अन्य चिकित्सा पद्धतियों के विद्वान आयुर्वेद की खिल्ली उड़ाया करते थे, और कहते थे कि यह तो भूखों मारने वाली कंगाली चिकित्सा प्रणाली है—न केवल विदेशी डाक्टरों के अपितु देशी डाक्टरों के दिमाग में भी यही बात घुसी पड़ी थी। किन्तु जब से चिकित्सा विज्ञान के तत्ववेत्ता श्री मैकफेडन ने उन संकुचित मस्तिष्क वाले डाक्टरों के सामने उपवास की उपयोगिता बतलाना प्रारम्भ किया, तब से विदेशी डाक्टरों के साथ ही हमारे देशी डाक्टरों ने भी उपवास की उपयोगिता स्वीकार कर ली है। सच पूछो तो इसमें उनका कोई दोष नहीं, वे विदेशी शिक्षा से शिक्षित हैं, विदेशी औषधियों का व्यवहार करते हैं, विदेशी पद्धति द्वारा चिकित्सा करते हैं, हर एक बात में विदेशियों की शरण लेते हैं, अतः उनके विचार भी विदेशी हो गये हैं। नहीं तो क्या कारण है कि भारत के सैकड़ों उद्भट विद्वानों द्वारा सहस्रों बार उपवास की प्रशंसा होते हुए भी वे उसकी उपयोगिता न मानें, अपितु उसकी खिल्ली उड़ावें, और एक पाश्चात्य विद्वान के उपवास की प्रशंसा करते ही वे उसके भक्त बन बैठें? अस्तु—

हमारे धर्मशास्त्र एवं हमारी चिकित्सा प्रणाली ने उपवास से अधिक लाभ देख कर ही उसका अधिक महात्म्य गाया है। असल बात यह है कि हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार प्रायः जितने भी धार्मिक नियम हैं; उनका स्वास्थ्य विज्ञान अर्थात चिकित्सा शास्त्र से निकटतम सम्बन्ध है। धर्मशास्त्र उपवास की जो आज्ञा देता है, उसका भी बहुत कुछ सम्बन्ध स्वास्थ्य विज्ञान से है। अन्यथा वह धर्मशास्त्र की आज्ञा है, अतः धार्मिक विषय तो है ही। धर्मशास्त्र इन उपवासों का करना अत्यन्त पुण्यप्रद बतलाता है।

लाभ—उपवास करने से शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के लाभ होते हैं। शरीर के रोग नष्ट होते हैं और मन की शुद्धि होती है। महात्मा गांधी के इतिहास प्रसिद्ध उपवास भी मनोशुद्धि जन्य उपवासों में से हैं। भोजन न करने पर मन की चंचलता कम हो जाती है, यही कारण है कि सभी प्रकार के पूजनों का खाली पेट—वगैर भोजन किये—करने का विधान है, क्योंकि एकाग्र चित्त से किये हुवे पूजन ही पूजन हैं। जब मन की चंचलता कम हो जाती है, तब वह अयोग्य और नीच विषयों की ओर कम दौड़ता है। हां, उस समय आत्मचिन्तन और ईश्वरोपासना अच्छी प्रकार करते बनती है। और यही कारण है कि धर्म शास्त्रों ने समस्त व्रतोपवासों के साथ किसी न किसी प्रकार से ईश पूजा अवश्य विधेय कर दी है, क्योंकि उस समय वह अन्य समयों से अच्छी तरह की जा सकती है। जिस प्रकार शारीरिक दोष वात, पित्त, कफ हैं, उसी प्रकार मानसिक दोष रज और तम हैं :—

वायुः पित्तं कफश्चोक्तः शारीरो दोष संग्रहः।
मानसः पुनरुद्दिष्टो रजश्च तम एव च॥

चरक, सूत्र, (१)।

वात, पित्त और कफ की विकृति से शारीरिक रोग उत्पन्न होते हैं, रज और तम की बहुलता से मन की अशुद्धि होती है। जब आहार सतोगुणी होता है, तब मन भी सत्वगुण युक्त होता है, किन्तु आहार के रजो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

या तमोगुणी होने पर मन भी उन गुणों का ही वर्तन करता है। इसी बात को मूल में रख कर योग-का वचन है :—

"आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः"

अर्थात् जब आहार शुद्ध यानी सत्त्वगुणी होता है, मन भी शुद्ध—सत्त्वगुणी—रज और तम रूपी दोषों से रहित—हो जाता है। इसके विरुद्धार्थ में भी मतलब होता है, कि आहार के अशुद्ध—युक्त—होने पर मन भी अशुद्ध—रजो या तमो हो जाता है।

चन्दन अत्यन्त शीतल है, किन्तु उसका भी अति लेप दाह को उत्पन्न करता है, अमृत भी अति पान करने से अजीर्ण उत्पन्न कर मारक हो जाता है, सत्त्व पदार्थ भी अति सेवन करने से शरीर को भारी बना कर में रज और तम के ही प्रवर्त्तक बन जाते हैं। एकान्ततः सात्विक आहार करने वाले के पक्ष में उपवास मानसिक शुद्धि करेगा ही। जब कभी मन अनुचित का विचार छोड़ कर अनुचित मार्गों की दौड़ने लगे, तब झटपट मनुष्य को मनोशुद्धि के उपवास कर डालना चाहिये। ऐसे उपवासों को समय मनुष्य को बराबर विचारते रहना चाहिये कि उपवास द्वारा मन की समस्त अशुद्धियां दूर देता हूँ, वे कभी भूल कर भी मेरे पास फटकने गी। ईश्वर से उनसे बचाने के लिए विशेष रूप से भी करनी चाहिये। अपने दृढ़ संकल्प के साथ भरोसा रखना चाहिये, केवल उसी पर आश्रित अपने को कमजोर बनाना भी ठीक नहीं। ऐसा रखना चाहिये कि मैंने जो संकल्प किया है, उसे पूर्ण करने में सहायक होगा। उपवास के जो प्रार्थनायें की जाती हैं, वे अन्न की उष्णता उत्तेजना शून्य शान्त-मन द्वारा होती हैं, और तथा एकाग्र चित्त द्वारा की हुई प्रार्थनाओं को ही सुनता है, अतः ऐसी प्रार्थनायें अधिकांश में सफल , और यही कारण है कि उपवास द्वारा मन और को शान्ति मिलती है।

शास्त्रानुसार हिन्दू विधवाओं को मास में २ दिन उपवास रहने की व्यवस्था बतलाई गई है। बहुत लोग इसे कठोरता तथा अन्याय बतलाते हैं, किन्तु कहना पड़ता है कि ऐसा कहने वाले लोग उपवास की उपयोगिता तथा विधवाओं के कर्त्तव्यादि पूर्ण रूपेण नहीं जानते। उपवास करने से शारीरिक एवम् मानसिक संयम तथा सहिष्णुता की योग्यता उत्पन्न होती है, मन शान्त रहता है, और मन की शान्ति से और भी इन्द्रियां शान्त रहती हैं।

आज कल की कुछ विधि व्यवस्था ही ऐसी चल रही है कि शायद ही ऐसा कोई मनुष्य हो जो नियमानुसार, शास्त्रानुकूल भोजन करता हो। असमय, अल्प या अधिक भोजन करने की एक प्रकार से हम लोगों की आदत सी पड़ गई है। जो कुछ भी खाया पिया जाता है, उस का यदि सम्यक् प्रकार परिपाचन हो जाता है, तो उस में से अधिकांश उपयोगी पदार्थ रस रूप से निकल कर रक्त में मिल जाते हैं, और इस प्रकार शरीर की पुष्टि में साधक होते हैं। असमय अल्पाधिक आदि अनियमित आहार करने से भोजन का पाचन सुन्दर रूप से नहीं होने पाता और इस से होता यह है कि भोजन का रस भी ठीक तरह नहीं बनता, और न मल भाग का ही गति विधान ठीक तरह होता है। वे दोनों पेट के अन्दर सड़ने लगते हैं। यह बात कोई एक दिन की नहीं होती, सप्ताहों इसका उपक्रम चालू रहता है। इस प्रकार का जो रस रक्त में जा कर मिलता है, रक्त को दूषित कर देता है, क्योंकि अनियमित गति विधान से जो सड़ावट उस में उत्पन्न होजाती है, वह एक प्रकार की जहरीली गैस को उत्पन्न कर देती है, और उसके सम्पर्क से रक्त दूषित हो जाता है। मल भाग भी आंतों में पड़ा पड़ा सड़ा करता है, और अनेकों अन्य विकार तथा पाचन विकारों को उत्पन्न करने वाला बनता है, और यह एक प्रसिद्ध बात है, कि पेट की खराबी ही सकल रोग समूहों को बुलाने वाली है। ऐसे समय जो कुछ भी भोज्य रूपेण ग्रहण किया जाता है, उससे शरीर का कुछ लाभ भी नहीं होता, क्योंकि समस्त भोजन पेट के अन्दर पहुंचने से उस विषैले पदार्थ से सम्पर्क कर स्वयं भी विषाक्त बन जाता है। औषधियां भी कारगुजार नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपवास और उसकी उपयोगिता

श्री बालमुकुन्द द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य

प्रायः सभी धर्म किसी न किसी रूप से किसी न किसी समय उपवास करने की व्यवस्था देते हैं, किन्तु हिन्दू धर्म इस बात में सब से चढ़ा बढ़ा है। हिन्दू धर्म ही क्यों, हिन्दू चिकित्सा शास्त्र भी उपवास को जितना महत्वपूर्ण तथा उपयोगी बताता है, शायद ही अन्य चिकित्सा प्रणालियों में से कोई उसको उतना श्रेयस्कर समझता हो। कुछ दिन पूर्व इस बात को भी लेकर अन्य चिकित्सा पद्धतियों के विद्वान आयुर्वेद की खिल्ली उड़ाया करते थे, और कहते थे कि यह तो भूखों मारने वाली कंगाली चिकित्सा प्रणाली है—न केवल विदेशी डाक्टरों के अपितु देशी डाक्टरों के दिमाग में भी यही बात घुसी पड़ी थी। किन्तु जब से चिकित्सा विज्ञान के तत्ववेता श्री मैकफेडन ने उन संकुचित मस्तिष्क वाले डाक्टरों के सामने उपवास की उपयोगिता बतलाना प्रारम्भ किया, तब से विदेशी डाक्टरों के साथ ही हमारे देशी डाक्टरों ने भी उपवास की उपयोगिता स्वीकार कर ली है। सच पूछो तो इसमें उनका कोई दोष नहीं, वे विदेशी शिक्षा से शिक्षित हैं, विदेशी औषधियों का व्यवहार करते हैं, विदेशी पद्धति द्वारा चिकित्सा करते हैं, हर एक बात में विदेशियों की शरण लेते हैं, अतः उनके विचार भी विदेशी हो गये हैं। नहीं तो क्या कारण है कि भारत के सैकड़ों उद्भट विद्वानों द्वारा सहस्रों बार उपवास की प्रशंसा होते हुए भी वे उसकी उपयोगिता न मानें, अपितु उसकी खिल्ली उड़ावें, और एक पाश्चात्य विद्वान के उपवास की प्रशंसा करते ही वे उसके भक्त बन बैठें? अस्तु—

हमारे धर्मशास्त्र एवं हमारी चिकित्सा प्रणाली ने उपवास से अधिक लाभ देख कर ही उसका अधिक महात्म्य गाया है। अटल बात यह है कि हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार प्रायः जितने भी धार्मिक नियम हैं; उनका स्वास्थ्य विज्ञान अर्थात चिकित्सा शास्त्र से निकटतम सम्बन्ध है। धर्मशास्त्र उपवास की जो आज्ञा देता है, उसका भी बहुत कुछ सम्बन्ध स्वास्थ्य विज्ञान से है। अन्यथा वह धर्मशास्त्र की आज्ञा है, अतः धार्मिक विषय तो है ही। धर्मशास्त्र इन उपवासों का करना अत्यन्त पुण्यप्रद बतलाता है।

लाभ—उपवास करने से शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के लाभ होते हैं। शरीर के रोग नष्ट होते हैं और मन की शुद्धि होती है। महात्मा गांधी के इतिहास प्रसिद्ध उपवास भी मनोशुद्धि जन्य उपवासों में से हैं। भोजन न करने पर मन की चंचलता कम हो जाती है, यही कारण है कि सभी प्रकार के पूजनों का खाली पेट—वगैर भोजन किये—करने का विधान है, क्योंकि एकाग्र चित्त से किये हुवे पूजन ही पूजन हैं। जब मन की चंचलता कम हो जाती है, तब वह अयोग्य और नीच विषयों की ओर कम दौड़ता है। हां, उस समय आत्मचिन्तन और ईश्वरोपासना अच्छी प्रकार करते बनती है। और यही कारण है कि धर्म शास्त्रों ने समस्त व्रतोपवासों के साथ किसी न किसी प्रकार से ईश पूजा अवश्य विधेय कर दी है, क्योंकि उस समय वह अन्य समयों से अच्छी तरह की जा सकती है। जिस प्रकार शारीरिक दोष वात, पित्त, कफ हैं, उसी प्रकार मानसिक दोष रज और तम हैं :—

वायुः पित्तं कफश्चोक्तः शारीरो दोष संग्रहः।
मानसः पुनरुद्दिष्टो रजश्च तम एव च॥

चरक, सूत्र, (१)।

वात, पित्त और कफ की विकृति से शारीरिक रोग उत्पन्न होते हैं, रज और तम की बहुलता से मन की अशुद्धि होती है। जब आहार सतोगुणी होता है, तब मन भी सत्वगुण युक्त होता है, किन्तु आहार के रजो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिन उपवास रहने की व्यवस्था बतलाई गई है। बहुत लोग इसे कठोरता तथा अन्याय बतलाते हैं, किन्तु कहना पड़ता है कि ऐसा कहने वाले लोग उपवास की उपयोगिता तथा विधवाओं के कर्त्तव्यादि पूर्ण रूपेण नहीं जानते। उपवास करने से शारीरिक एवम् मानसिक संयम तथा सहिष्णुता की योग्यता उत्पन्न होती है, मन शान्त रहता है, और मन की शान्ति से और भी इन्द्रियां शान्त रहती हैं।

आज कल की कुछ विधि व्यवस्था ही ऐसी चल रही है कि शायद ही ऐसा कोई मनुष्य हो जो नियमानुसार, शास्त्रानुकूल भोजन करता हो। असमय, अल्प या अधिक भोजन करने की एक प्रकार से हम लोगों की आदत सी पड़ गई है। जो कुछ भी खाया पिया जाता है, उस का यदि सम्यक् प्रकार परिपाचन हो जाता है, तो उस में से अधिकांश उपयोगी पदार्थ रस रूप से निकल कर रक्त में मिल जाते हैं, और इस प्रकार शरीर की पुष्टि में साधक होते हैं। असमय अल्पाधिक आदि अनियमित आहार करने से भोजन का पाचन सुन्दर रूप से नहीं होने पाता और इस से होता यह है कि भोजन का रस भी ठीक तरह नहीं बनता, और न मल भाग का ही गति विधान ठीक तरह होता है। वे दोनों पेट के अन्दर सड़ने लगते हैं। यह बात कोई एक दिन की नहीं होती, सप्ताहों इसका उपक्रम चालू रहता है। इस प्रकार का जो रस रक्त में जा कर मिलता है, रक्त को दूषित कर देता है, क्योंकि अनियमित गति विधान से जो सड़ावट उस में उत्पन्न होजाती है, वह एक प्रकार की जहरीली गैस को उत्पन्न कर देती है, और उसके सम्पर्क से रक्त दूषित हो जाता है। मल भाग भी आंतों में पड़ा पड़ा सड़ा करता है, और अनेकों अन्य विकार तथा पाचन विकारों को उत्पन्न करने वाला बनता है, और यह एक प्रसिद्ध बात है, कि पेट की खराबी ही सकल रोग समूहों को बुलाने वाली है। ऐसे समय जो कुछ भी भोज्य रूपेण ग्रहण किया जाता है, उससे शरीर का कुछ लाभ भी नहीं होता, क्योंकि समस्त भोजन पेट के अन्दर पहुंचने से उस विषैले पदार्थ से सम्पर्क कर स्वयं भी विषाक्त बन जाता है। औषधियां भी कारगुजार नहीं

या तमोगुणी होने पर मन भी उन गुणों का ही वर्त्तन करता है। इसी बात को मूल में रख कर योग-का वचन है :—

"आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः"

अर्थात् जब आहार शुद्ध यानी सत्वगुणी होता है, मन भी शुद्ध—सत्वगुणी—रज और तम रूपी दुर्गुणों से रहित—हो जाता है। इसके विरुद्धार्थ में भी मतलब होता है, कि आहार के अशुद्ध—तम युक्त—होने पर मन भी अशुद्ध—रजो या तमो गुण—हो जाता है।

चन्दन अत्यन्त शीतल है, किन्तु उसका भी अति सेवन दाह को उत्पन्न करता है, अमृत भी अति पान करने से अजीर्ण उत्पन्न कर मारक हो जाता है, सत्व गुण पदार्थ भी अति सेवन करने से शरीर को भारी बना कर मन में रज और तम के ही प्रवर्त्तक बन जाते हैं। एकान्ततः सात्विक आहार करने वाले के पक्ष में उपवास मानसिक शुद्धि करेगा ही। जब कभी मन अनुचित का विचार छोड़ कर अनुचित मार्गों की ओर दौड़ने लगे, तब झटपट मनुष्य को मनोशुद्धि के लिए उपवास कर डालना चाहिये। ऐसे उपवासों को समय मनुष्य को बराबर विचारते रहना चाहिये कि इन उपवास द्वारा मन की समस्त अशुद्धियां दूर कर देता हूँ, वे कभी भूल कर भी मेरे पास फटकने पावेंगी। ईश्वर से उनसे बचाने के लिए विशेष रूप से प्रार्थना भी करनी चाहिये। अपने दृढ़ संकल्प के साथ ही भरोसा रखना चाहिये, केवल उसी पर आश्रित अपने को कमजोर बनाना भी ठीक नहीं। ऐसा ध्यान रखना चाहिये कि मैंने जो संकल्प किया है, वह उसे पूर्ण करने में सहायक होगा। उपवास के दिन जो प्रार्थनायें की जाती हैं, वे अन्न की उष्णता उत्तेजना शून्य शान्त-मन द्वारा होती हैं, और एकाग्र तथा एकाग्र चित्त द्वारा की हुई प्रार्थनाओं को ही सुनता है, अतः ऐसी प्रार्थनायें अधिकांश में सफल होती हैं, और यही कारण है कि उपवास द्वारा मन और आत्मा को शान्ति मिलती है।

शास्त्रानुसार हिन्दू विधवाओं को मास में २

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होतीं, उनके ऊपर भी तो उदरस्थ विष अपना अधिकार जमा लेता है। ऐसी अवस्था में यदि कोई भी सफल चिकित्सा है, तो वह है उपवास। जब भोजन पेट में नहीं पहुंचता, तो उदर के पाचन यन्त्र बाहरी काम से फुर्सत पा जाते हैं, और झट घर के अन्दर घुसे हुए शत्रु का मुकाबला कर उसका काम तमाम कर देते हैं। पाचक अंगों का काम है पाचक रसों का तैय्यार करना प्रत्येक काम किसी न किसी दशा तक सीमित हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पाचक अंग अलग अलग तादाद में रसों को तैय्यार करते हैं। जिस के अंग जितनी अधिक तादाद में रस को तैय्यार करते हैं, उसको उतनी ही अधिक भूख लगती है, या यों कह सकते हैं, कि पाचक अंग रस उतनी ही तादाद में तैयार करते हैं, जितनी उस मनुष्य की साधारण भोजनमात्रा है। अधिक भोजन कर लेने पर वे उसे पचाने में उस समय असमर्थ हो जाते हैं, जब शीघ्र ही उन्हें और भोजन प्राप्त हो जाता है। ठीक इसी प्रकार वे भोजन के उस अवशिष्टांश को भी, जो विष के रूप में परिणत हो रहा है, उस समय नहीं पचाने पाते जबकि बाहर से उनके लिये दनादन काम पहुंचता जा रहा है, क्योंकि आखिर को वह भी तो अपनी सीमा से काम करते हैं। इस लिये मनुष्य को यह जरूरी होता है, कि यदि वह उस विषाक्त द्रव्य से अपने शरीर की रक्षा करना चाहते हैं, तो उसे नष्ट करने के लिये कम से कम माह में दो बार तो पाचक अंगों को बाहिरी काम से फुर्सत दिया करे। पाचन अंगों का काम है कि पाचन रसों को उत्पन्न कर पेट में जो कुछ भी हो ठीक ठिकाने लगा दें। बाहिरी भोजन न पहुंचने पर वे अवशिष्टांश को ही ठीक ठिकाने लगायेंगे।

बहुत लोग कह सकते हैं, कि इस प्रकार अनियमित आहार करने वालों के लिये उपवास आवश्यक है, किन्तु जो व्यक्ति सदा नियम से पथ्य ही सेवन करते हैं, उन्हें उपवास करने की क्या आवश्यकता? किन्तु उन्हें यह विचारना चाहिये कि प्रथम तो यह निश्चित होना ही बड़ा मुश्किल है, कि मैं जो कुछ भी जिस प्रकार कर रहा है, जिस भोजन को जिस प्रकार जिस समय जितनी मात्रा में ग्रहण कर रहा हूं, यह सब एकान्ततः पथ्य तम ही होगा। यदि यह साधारण बात ही होती, तो भगवान आत्रेय क्यों कहते हैं—

सूक्ष्माणि हि दोष, भेषज, देश, काल बल, शरीराहार सात्म्य, सत्व, प्रकृति, वय सामवस्थान्तराणि, यान्युचिन्त्यमानानि विमल विपुल बुद्धे रपि बुद्धिमाकुली कुर्युः किं पुनरन्य बुद्धे। चरक. सूत्र. १५

दूसरे यदि ऐसा मान भी लिया जाये तो भी उपवास करना आवश्यक है और वह आवश्यक है पाचक अंगों को आराम देने के लिए। जब मनुष्य सप्ताह में एक दिन छुट्टी पाता है तो क्या कोमल पाचक अंगों को माह में दो बार भी छुट्टी न दी जाये? ऐसा करने से यदि उन में किसी प्रकार से भी जरासी भी कमजोरी आये भी तो वह ठीक हो जायेगी।

यह ठीक है कि उपवास लाभप्रद है किन्तु वह सभी को सभी अवस्थाओं में एक सा करने पर एकसा लाभप्रद हो सो बात नहीं। जिस प्रकार चिकित्सा के अन्य कर्मों में प्रकृति, अवस्था, वय आदि को देख कर व्यवस्था दी जा सकती है।। उसी प्रकार उपवास की व्यवस्था देने में भी इन के ज्ञान की आवश्यकता है। उपवास के नवीन भक्तों में आज कल यह भी एक बड़ी चिक चिक मच हुई है कि उपवास लम्बे करना लाभदायक है, या छोटे छोटे। देखिये आयुर्वेद दूसरे ही प्रकार के शब्दों में इस प्रश्न को किस सुन्दरता से हल करता है। भगवान अग्निवेश लिखते हैं:—

हृदयोद्गार कण्ठास्य शुद्धौ तन्द्राक्लमे गते।
स्वेदे जाते रुचौ चैव क्षुत्पिपासा सा सहोदये॥
कृतम् लंघन यादेश्यम् निर्व्यथे चान्तरात्मनि।
चरक, सूत्र,

यदि लङ्घन करने पर ये लक्षण उत्पन्न हो गये हैं वह लङ्घन चाहे कुछ घण्टे ही किया गया हो, ठीक गया। किन्तु यदि यह लक्षण चार दिन लङ्घन करने उत्पन्न हों तो वह लङ्घन तभी ठीक हुआ। ठीक ल हो जाने पर ये लक्षण उत्पन्न हो चाहिये, फिर ये चा दिन में हों, या आठ दिन में हों। जब ये लक्षण उ हो जाये, लङ्घन को तभी ठीक समझना चाहिये। लङ्घन अधिक हो कर उससे शरीर को हानि न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आये, इस लिये भगवान वहीं पर अति लङ्घन से उत्पन्न लक्षण भी लिखते हैं।

"पूर्व भेदोऽङ्गपर्वश्वकास शोषो मुखस्य च।
हृत्प्रणाशोऽरुचिस्तृष्णा दौर्बल्यम् श्रोत्रनेत्रयोः॥
मनसः संभृयोऽभीक्ष्ण सूर्ध्व वातस्यो हृदि।
देहाग्नि बल नाशश्च लंघनेऽति कृतेभवेता॥

चरक, सूत्र, २२

उपवास करने पर यदि ये लक्षण प्रकट होने लगें तो तुरन्त उपवास बन्द कर देना चाहिये। अन्यथा वह शरीर को हानि पहुंचाने लगेगा। उपवास करते हुए उतनी सावधानी की आवश्यकता नहीं, जितनी उस के अन्त में होती है। जिस समय उपवास को तोड़ा जाये किसी भी प्रकार की गरिष्ठ या गुरु वस्तु न खाई जाये अन्यथा हानि पहुंचने की सम्भावना रहती है। उपवास को हितकर फलों के रस से तोड़ना अच्छा होता है। आज कल धर्म की दुहाई देकर उपवास करने वाले दिन भर तो करते हैं उपवास और सायंकाल छानते हैं मालपुवा—एक से एक गरिष्ठ पदार्थ। भला बताइये उन्हें उपवास से हानि नहीं होगी तो क्या लाभ होगा? इस के अतिरिक्त बहुत से ऐसे लोग भी हैं, जो बिलकुल निर्जला उपवास करते हैं, यह भी आदत खराब है। अवस्था विशेष में निर्जला उपवास भी किया जा सकता है, किन्तु साधारणतया ऐसा करना हानिकर होता है, अस्तु उपवास के दिन जल खूब अच्छी प्रकार पीना चाहिये, ऐसा करने से पेट साफ हो जाता है।

परिवर्तन

मैं बदल रही हूं क्षण क्षण
यह कैसा है परिवर्तन!
चल-चित्र चारु मनमोहन
करते हैं नर्तन-नर्तन!

कुमारी उर्मिला बी०ए०

कृश-कृश होता दिन-दिन तन,
उन्मन-उन्मन चिंतित मन,
अनजाने घिर आए घन
जीवन में घोर गहन घन!

कुछ प्यास-प्यास-सी उर में
कुछ चुभन-चुभन अन्तर में।
है चमक रही अंबर में
बिजली, जीवन-अंबर में।

संध्या-सी सजल उदासी,
आंखों में है छाया-सी
प्राणों में है इच्छा-सी
कुछ अनजानी इच्छा-सी।

लोहित गुलाब निर्मल से
मानस में, लाल कमल से
खुलते हैं, नव-नव दल से
कुछ भाव, नवल कोमल से।

पलकों में छल-छल छल-छल
भर आता जल क्यों पल-पल!
अंतस्तल चंचल-जंचल,
सखि, किसके छल का यह फल।

मैं बदल रही हूं क्षण-क्षण
यह कैसा है परिवर्तन?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उठना-बैठना सीखिये !

श्री श्यामशर्मा बी० ए०

पाठक ! आप हमारे इस शीर्षक का मखौल न उड़ाइये ! हमारे आधुनिक शिक्षितों में ५० प्रतिशत ऐसे हैं जिन्हें ठीक उठना बैठना नहीं आता ! फलतः उन का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता ! हमारा शरीर एक मशीन के समान है, उस मशीनरी की गति-विधि से जब तक हम भली भांति परिचय न प्राप्त करलें, उस का ठीक सञ्चालन कैसे कर सकते हैं ? हमारा शरीर एक जीवित मशीन है। हम यदि इस के कल पुर्जे अर्थात् पाचक यंत्र, फेफड़े, पेशियों आदि को ठीक व्यवहार में लावें तो मशीन अधिक काल तक चलेगी। यदि उसे ग़लत तरीके पर चलाते हैं तो वह बिगड़ती बनती रहेगी। यही कारण है कि उठने बैठने के ग़लत तरीके हमारी शारीरिक गठन का सत्यानाश कर देते हैं।

बैठना—छाती, गर्दन और सिर ये तीनों अङ्ग सीधे रहना चाहिये। बस, इसी आधारभूत सिद्धान्त को सामने रखकर हमें काम करना चाहिये। इस स्थिति में शरीर को रखने से रक्त सञ्चरण और श्वास-प्रश्वास क्रिया स्वाभाविक रूप से होती रहती है। इन दो पर ही स्वास्थ्य निर्भर करता है। इस के विपरीत जिन्हें झुक कर बैठने की आदत है उनका मेरुदण्ड ख़राब हो जाता है। काम-केन्द्रों से सम्बन्धित स्नायु शिथिल पड़ जाते हैं। सुषुम्ना नाड़ी के कार्य में बाधा पहुंचती है। फलस्वरूप दृष्टि नाड़ियां ख़राब हो जाती हैं। आधुनिक डाक्टरों ने हमेशा झुक कर बैठने वाले विद्यार्थियों की परीक्षा की है। उन की सम्मति है कि अधिक दिनों तक इस स्थिति में बैठने वालों के पेट का ख़ून जिगर में आकर रुकने लगता है। फलस्वरूप कोष्ठबद्धता घेर लेती है। स्नायु दुर्बल हो जाते हैं। मन मलीन और चेहरा फीका रहता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः एक प्रकार की थकावट का हमेशा ही अनुभव किया करते हैं। अस्तु, झुक कर बैठने की आदत को स्वास्थ्य के लिये एक प्रकार का अभिशाप ही समझना चाहिये। सदैव शेर की भाँति सीधे बैठ कर सामने निगाह रखने का अभ्यास करना चाहिये।

चलना—सामने दृष्टि रख कर सीधे होकर चलना स्वाभाविक है। कधों को ऊपर की ओर उठाना अथवा छाती और कंधो को तान कर चलना ठीक नहीं। कंधे हमेशा पीछे की ओर हों, ढीले हों और नीचे की ओर हों। चलने और खड़े होने में छाती की स्थिति स्वाभाविक और आराम देह होनी चाहिये। चलतें समय आप को गहरी और लम्बी स्वांस खीचने में यदि किञ्चित भी अस्वाभाविकता का अनुभव हुआ तो समझ लीजिये आप की पोजीशन (position) ठीक नहीं।

चलने में टांगों, पेट, पेड़ू और पीठ की पेशियों में सामञ्जस्य-विधान होना बहुत आवश्यक है। प्रत्येक पैर उठाते समय टांगें खिची हुईं, ऊपर उठाकर झटके के साथ आगे रखना चाहिये ताकि कूले के पुट्ठों पर जोर पड़े। चलते समय, पैरों को आगे पीछे उठाते समय उन में समय अन्तर का अवश्य विचार रखना चाहिये। चलते और क़दम उठाते समय पेड़ू सदैव सीधा रहना चाहिये। और टांगों के फैलने के साथ कूले (Buttocks) और उदर की पेशियों का खिचाव होना आवश्यक है।

दिन में किसी समय कुछ दूर तक पञ्जों पर भी चलना चाहिये किन्तु पैर की गांठ को झुकाते हुए। टहलने की चाल तीन मील प्रति घण्टा से आगे न बढ़ना चाहिये। टहलते समय अपनी किसी चेष्टा पर भी जोर देना अथवा मस्तिक पर भार डालना अच्छा नहीं। खूब प्रसन्न बदन मुस्कराते और गुनगुनाते हुए चलना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत से स्त्री पुरुषों को गर्दन नीची कर, सिमट कर, झुका कर चलने की आदत होती है। यह स्वास्थ्य के लिये एकान्त अहितकर है। शारीरिक विकास में भी इस से बहुत हानि होती है। इस आदत से सीना सिकुड़ जाता है, पेट की मांस पेशियां शिथिल पड़ जाती हैं। रीढ़ के झुकाने से खून के दौरान में बाधा पहुंचती है। कभी कभी तो स्त्रियों में इस से गुर्दा, जिगर और पेट के नीचे का भाग अपने स्थान से हटकर नीचे की ओर खिसक आता है। मल द्वार की निचली नालिका खिंच पड़ जाती है। इस से स्वास्थ्य को गहरा धक्का पहुंचता है।

उठने, बैठने और चलने फिरने में शरीर के अङ्गों को काम करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि यह क्रियायें ही हमारे व्यायाम का श्री गणेश हैं। यदि हम प्रारम्भ से इन छोटी २ बातों पर ध्यान रक्खें तो हमारे शारीरिक विकास में कभी अणुमात्र का अन्तर भी न पड़े। पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वे इस लेख को पढ़कर अपने उठने, बैठने, चलने फिरने की गति में सुधार प्रारम्भ कर दें, और देखें कि एक मास के अन्दर, उन की शारीरिक छोटी मोटी तकलीफ़ें किस सरलता से दूर हो जाती हैं।

प्रकृति-प्रपंच

—बहुत से विद्यार्थी अपने लम्प पर पीला काग़ज़ ढक कर पढ़ा करते हैं। यह आदत आंखों के लिए हानिकर है। पीली रोशनी आंखों की ही दृष्टि को क्षीण नहीं करती प्रत्युत साधारण स्वास्थ्य के लिए भी अहितकर है।

—आलू और मांस साथ साथ कभी न खाना चाहिये। इन दोनों पदार्थों में प्रोटीन (Protein) और स्टाच (Starch) की प्रधानता है। इन दोनों तत्वों को एक साथ खाकर पचाना कठिन है।

—बहुत से व्यक्ति दूसरों की नक़ल करने में बड़े कुशल होते हैं। एक वैज्ञानिक का कहना है कि दूसरों की चाल-ढाल की नक़ल करने से सांस लेने में अड़चन पड़ती है, मस्तिष्क को हानि पहुंचती है और शारीरिक विकास को बहुत बड़ा धक्का लगता है।

—अनिद्रा की शिकायत करने वाले को अपने तकिये में सुश्क काफ़ूर और सोया बूटी का पंचांग रख कर सोना चाहिये।

—डाक्टर केनेडी (Kennedy) ने अपनी हाल की तहक़ीकात द्वारा सिद्ध किया है कि अच्छी बियर (Bear) नामक शराब कीटाणु नाशक होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारा चिकित्सालय

राजवैद्य श्रीकृष्णदयाल वैद्यशास्त्री

आयुर्वैदिक चिकित्सा और मुझ पर पूर्ण श्रद्धा रखते हुए भी अमृतसर के प्रसिद्ध बाबू मोहनलाल जैन एडवोकेट अपने घर में कोई रोग होने पर शहर के कई डाक्टरों से चिकित्सा कराने के पश्चात् मुझे बुलाया करते हैं। हाल में उनकी धर्म-पत्नी एक ऐसे जटिल रोग में ग्रसित हुईं जिनकी चिकित्सा के लिये उन्होंने नगर के कई डाक्टरों से परामर्श किया। रोग के विषय में डाक्टरों में मतभेदों रहने पर भी वह डाक्टरी चिकित्सा करवाते गये। अन्त में जब रुग्णा की अवस्था शोचनीय हो गई तो मुझे भी बुलाकर दिखलाया। मैंने रुग्णा को देख कर बाबू जी से पूछा कि मुझसे पूर्व डाक्टरों ने रोग के सम्बन्ध में क्या निश्चय किया है? बाबू साहब बोले, वैद्य जी डाक्टरों का रोग के विषय में काफी मतभेद है। किसी की सम्मति है कि रुग्णा को हिस्टीरिया है और कोई कहता है अपस्मार और कुछ एक डाक्टरों के विचार से उन्माद का दौरा है। आज ६ मास से बड़े बड़े डाक्टर चिकित्सा कर रहे हैं परन्तु रत्ती भर भी लाभ नहीं हुवा! अब आप अपनी स्वतन्त्र राय दीजिए कि वास्तव में क्या व्याधि है। मैंने कहा:—

"मैं एक बा.फिर परीक्षण कर के अपना मत प्रकट करूँगा।"

परीक्षा:—मैंने नाड़ी देखने के पश्चात् रोगिणी को लिटाकर उसके उदर का निरीक्षण किया। जब मैं आमाशय, यकृत, अन्त्रि आदि को देखने के बाद प्लीहा स्थान को दबाया तो वह बोल उठी—"बाबू जी अब मुझे दौरा पड़ेगा।" मैंने जब प्लीहा स्थान को कुछ अधिक ज़ोर से दबाया तो उसे दौरा आरम्भ हो गया जैसा कि पहले हुआ करता था। दौरे की अवस्था में रुग्णा की मुखाकृति विकराल होगई। आँखें लाल, और बड़े वेग से हाथ पांवों मारने लगी साथ ही दान्तों से अपने कपड़ों को फाड़ने और खाट पर से उठ कर दौड़ने की चेष्टा करती थी। बाबू साहब के भतीजे मोतीराम, मैंने और बाबू साहब ने बड़ी कठिनता से संभाला। तीन आदमियों के संभालने पर अब वह निश्चेष्ट होकर खाट पर पड़ गई और अण्ड बण्ड बकने लगी। ५-७ मिनट के बाद उसे मूर्च्छा भी हो जाती थी। मैंने बाबू साहब से कहा—"बाबू जी अब आप की धर्मपत्नी के रोग का निदान हो गया। वास्तव में डाक्टर जिस रोग की चिकित्सा कर रहे हैं वह मूल रोग नहीं, प्रत्युत् रोग का उपद्रव है। रुग्णा को न तो हिस्टीरिया है, न ही उन्माद अथवा अपस्मार। यह तो चिरकाल से अजीर्ण रोग से ग्रस्त है। और मूर्च्छा अलाप, आदि अजीर्ण के उपद्रव हैं शास्त्र में कहा है:—

मूर्च्छा प्रलापो वमथुः प्रसेकः सदनं भ्रमः।
उपद्रवा भवन्त्येते मरणांचाप्यजीर्णतः॥

अर्थात् मूर्च्छा (बेहोशी), प्रलाप मुख में पानी आना अथवा वमन की इच्छा होना, भ्रम इत्यादि अजीर्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होते हैं। कहीं कहीं इस अजीर्ण के उपद्रव से
क भी हो जाती है। वकील साहब बोले:—"वैद्य
जीर्ण जिस को आप असल रोग फरमाते हैं रोगी
इतना कष्टदायक नहीं और नहीं हमारी दृष्टि में
ई चिह्न स्पष्ट प्रतीत होते हैं, जिसे आप उपद्रव
हैं। कुछ भी हो इसे प्रति दिन दो २ तीन २
से बहुत दुर्बलता आ गई है। इसलिये आप
उपद्रव की शांति का उपाय करें।"

कालीन चिकित्सा—मैंने कहा:—"बाबू साहब!
द्रव को आप और आपके डाक्टर इतना भयंकर
ते हैं। मेरी दृष्टि में वह एक साधारण बात है।
पद्रव का एक छोटा सा उपाय अभी आपके
ता हूं और यदि फिर कभी दौरा हो तो आप
उपाय से दूर कर सकते हैं।" इस दौरे के
के लिये आप को न तो किसी वैद्य तथा डाक्टर
की आवश्यकता पड़ेगी और न ही किसी बड़ी
की। औषधि भी वह बतलाता हूं जो हर समय
मिल सके। आप थोड़ी हींग मगवायें।

साहब ने नौकर से हींग मंगाई। मैंने ४ रत्ती
चमच पानी में घोल कर रुग्णा के मुंह में डाल
पंखा बन्द कर दी। हींग के गले से उतरते ही
होश आने लगा। ४ रत्ती हींग सुलगते हुये
पर डाल कर उस की धूनी दी गई। इन दो उप-
१ मिनट के अन्दर २ ही रोगिणी सचेत होगई।

खया—हिंग्वादि चूर्ण १ माशा, बज्रक्षार ४ रत्ती
तीन बार।

पान—सञ्जीवनी सुरा ६ मा०, अर्कसोंफ ५ तो०
प्रातः मध्याह्न भोजन और सायं भोजनोत्तर।
करने का आदेश दिया। जिस का यह फल
इस दिन के पश्चात् रोगिणी को कभी दौरा
ा।

कारण—एक सप्ताह औषधि सेवन के बाद
साहब ने मुझे फिर घर पर बुलाया और पूछने
जी, आपने जो चिकित्सा की है वह तो सोला
है क्योंकि उससे पूर्ण लाभ हुआ है। सप्ताह में
दिन में कई दौरे पड़ते थे, अब कोई भी दौरा
नहीं पड़ा। परन्तु आपका निदान हमारी समझ में नहीं आया। डाक्टर लोग जिस प्रकार सांयिटिफिक रीति से रोगी के अङ्ग प्रत्यङ्गों का निरीक्षण कर रोगी और घर वालों की तसल्ली कर देते है इस प्रकार हमारे देसी चिकित्सक निदान के सम्बन्ध में पूर्ण प्रकाश नहीं डालते। क्या आप कृपा करके मुझे बतला सकते हैं कि आपने यह निदान कैसे किया? मैंने कहा—वकील साहब आप को इस बहस से क्या? आपका रोगी अच्छा होरहा है, आप को आम खाने से प्रयोजन है अथवा पेड़ गिगने से? वकील साहब कहने लगे - वैद्य जी, इसमें सन्देह नहीं कि आपका निदान और चिकित्सा दोनों ठीक हैं, परन्तु यदि आप मेरी तसल्ली के लिये आयुर्वैदिक सिद्धान्त-नुसार प्रकाश डालें तो मैं आपका कृतज्ञ हूंगा। मैंने कहा बाबू जी "अजीर्ण रोग प्रायः अग्निमान्द्य से होता है और जो लोग मन्दाग्नि की अवस्था में भी अपनी जिह्वा पर काबू नहीं रखते उन्हीं को अजीर्ण, विसूचिका, अलवतक, अहिणी, अर्श आदि अनेक रोग हो जाते है।

जैसा कि कहा भी है—

अनात्मवत्तः पशुवद्भुजन्ते योप्रमाणातः।
रोगानीकस्य ते मूलं अजीर्णं प्राप्नुवन्तिहि॥

अर्थात् जो मूर्ख मनुष्य पशुओं की भांति अन्धाधुन्ध अपरिमाण भोजन करते हैं, उनके विसूचिका आदि अनेक रोगों का मूल कारण अजीर्ण उत्पन्न होना है।

आपको स्मरण होगा कि आज दो वर्ष व्यतीत हुये जब कि आपने मुझे अपनी धर्मपत्नी को दिखलाया था। उस समय इनको अजीर्ण के कारण उदर में अत्यन्त शूल हुआ करता था। मैंने आपको उसी समय सचेत कर दिया था कि इसे साधारण बदहजमी समझ कर आप को लापरवाह न होना चाहिये। यह किसी समय उपद्रवों सहित भयङ्कर रूप धारण करेगी। आपने उस समय थोड़े दिन चिकित्सा करवाने के बाद यह समझ लिया कि व्याधि निर्मूल हो चुकी है। वास्तव में उस समय व्याधि निर्मूल न हुई थी किन्तु औषधियों के प्रभाव से थोड़े काल के लिये शमन हो गई थी और आपकी धर्मपत्नी के निरन्तर कुपथ्य से आज यह अवस्था हुई। चिरकाल अजीर्ण के कारण उदर में वायु का इतना प्रबल प्रकोप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो चुका है कि जब कुछ थोड़ा सा भी कुपथ्य करती हैं, अथवा वद्धकोष्ठ के कारण अपान वायु रुक कर उर्ध्वगति को प्राप्त होता है तो उस समय तुरन्त दौरा हो जाता है। उदर को देखते समय जब मैंने उस दिन अन्त्रिस्थान और प्लीहा स्थान को दबाया तो रुक हुआ प्रकुपित वायु रोगिणी के हृदय और मस्तिष्क की ओर बढ़ा जिससे रोगा को तुरन्त दौरा हो गया। मैंने उस उर्ध्वगत वात को शमन करने के लिये हींग का प्रयोग किया, जो कि वात विकार के लिये आयुर्वेद की एक मानी हुई औषधि है और प्रत्येक भारतीय दाल भाजी में वात विकार शमनार्थ व्यवहार करता है। मैंने उपद्रव की चिकित्सा करने के स्थान में मूल व्याधि अजीर्ण की चिकित्सा करना ही उचित समझा। क्यों कि शास्त्र में कहा है—

"व्याधि जयेत्पूर्व पश्चादुपद्रवान"

बछड़ों का इलाज

१—गाय और भैंस के दूध पीते हुए बछड़ों का स्वभाव होता है कि वे प्रायः मिट्टी चाटा करते हैं। यह मिट्टी उन के पेट में जम कर सड़ जाती है और उस में कीड़े पड़ जाते हैं, जिसे लोग केचुआ पड़ जाना कहते हैं। पेट में कीड़ा पड़ते ही बच्चे निर्बल हो जाते हैं और इस रोग की उपेक्षा करने पर मर जाया करते हैं। इस रोग में आधी छटांक कबीला पीस कर आध पाव दही में मिला कर देना बड़ा गुणकारी होता है।

२—कभी कभी बछड़ों के पेट में दूध जम जाता है जिस से उन को दूध पचता ही नहीं और वे दुर्गन्धयुक्त पतला गोबर करते हैं। इस रोग में छाछ (मट्ठा) एक पाव, सरसों का तेल आधा पाव और आधी छटांक नमक मिला कर बछड़ों को पिलाना चाहिये। इस रोग में एक छटांक आम की सूखी खटाई को पानी में भिगो कर आधा पाव सरसों के तेल में मिलाकर पिला देना बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

३—छोटे बछड़े कभी कभी गर्म और सड़े गले गन्दे पानी पी लेते हैं अथवा कोई सड़ा गला चारा या दाना खा लेते हैं, जिस से उन्हें पेचिश हो जाती है। गोबर के साथ लोहू आने लगता है। ऐसी दशा में आधा पाव लिसोड़े के पत्ते पानी में पीसकर तथा छानकर पिलाना चाहिये अथवा आधा छटांक हंसकगोल को एक छटांक आंवले के पानी के साथ देने से बहुत लाभ होता है।

४—जब बछड़े खांसें और रुक रुक कर सांस लें या हांफने लगें तब समझ लो कि उन्हें खांसी की बीमारी हो गई है। इस रोग में केले के सूखे पत्ते लेकर उन की राख बना लें। दो पैसे भर आधी छटांक घृत के साथ मिला कर एक पाव कच्चे दूध में मिला दें। बहुत लाभ होगा।

५ बहुधा बछड़ों को मूत्र के साथ लोहू आते देखा है। यदि ऐसा रोगी हो तो निम्नलिखित औषधि देनी चाहियेः—कलमी शोरा पाव छटांक से लेकर आधा छटांक तक बछड़े की आयु के अनुसार लेकर उस में एक पाव कच्चा दूध और उतना ही पानी डाल कर पिला देना चाहिये।

६—पेट में दर्द हो जावे तो आध छटांक पीने तम्बाकू पानी में घोलकर छान कर पिला देना चाहिये।

७—खुजली की बीमारी होने पर एक तोला लहसुन, आधा पाव चना (बूट) अथवा जव का आटा मिला कर देना चाहिये अथवा सूखे नीम के पत्तों का चूर्ण नमक के साथ इसी विधि से देना चाहिये।

८—एक और हानिकारक रोग बछड़ों को होता है जिस में उन के मसूड़े फूल जाते हैं और उन में घाव होकर उन का मुंह सूज जाता है, ओठ लटक जाते हैं, मुंह से लार टपकती है। वे दूध तक पीना छोड़ देते हैं और दस्त भी होने लगता है। इस रोग में बछड़े और उस की मां को अलग कर देना चाहिये। इस रोग में एक पाव घी और एक छटांक एरण्ड साल्ट मिला कर पिलाना चाहिये।

—'नवयुग'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षणशक्ति और कामेच्छा

श्री 'वात्सायन'

...नजनक, कटु, तीखे और कड़े शब्दों को सुन...के तन-बदन में आग लग जाती है; क्रोध से ...तन कांपने लगता है; प्रतिशोध की ज्वाला धधकने ...। इसके विपरीति मीठे, कोमल और रसीले ...कर मनुष्य प्रसन्न और गद्‌गद हो उठता है। ...वि ने इसी भाव को कितने सुन्दर ढंग से ...किया है :—

...किल काको देत है; कागा कासों लेत।
...वचन सुनाय कै, जग अपनो कर लेत॥

...शब्द कानों के लिये सुखदायक और आकर्षक है, ...हृदय को आनन्द प्रदान करने के लिये वाक्य ...एक विद्यमान्य बात है। संगीत साधना में ...यों इतना अधिक रत हो जाता है? इसी लिए ...उसके हृदय को एक अभूतपूर्व आनन्द प्रदान ...होता, मैना, कोकिल और भी न जाने कितने ...मनुष्य अपने निकट रखने के लिये पिंजड़ों में ...। कारण? कवि के मुंह से सुनिये :—

...चों का शिकवा, बुलबुले नाशाद न कर;
...गिरफ्तार हुई, अपनी सदा के बायस।

...Neville लिखते हैं—The 'Colour tone' ...oice, the intonation of a single word, ...e an extra ordinary sexual influence: ...ular manner in which a woman says— ...be sufficent to arouse the deepest ...a man," वास्तव में प्रियतमा का दुलार, ...विचित्र टोन में निकला हुआ 'प्रियतम' का ...ों के वासना सिन्धु को आन्दोलित करने के ...है। किसी आंग्ल कवि की अनुभूति है :—
...gtone of the Lover begets Love.

...ान—प्रकृति अत्यन्त सूक्ष्म परमाणुओं से ...घिरी है। जब आप के मुंह से कोई शब्द निकलता है तो कम्पन के साथ निकलता है और वायुमण्डल में भी कम्पन उत्पन्न हो जाता है। परमाणुओं द्वारा धक्के खाता हुआ वायु का यह कम्पन दूसरे व्यक्ति के पास तक पहुंच जाता है। समीप पहुंच कर प्रकम्पित वायु कान के पर्दे पर आघात करती है। इस आघात से कान के धमनी वितान में कम्पन उत्पन्न हो जाता है। वहां से स्नायु के द्वारा मस्तिष्क तक खबर पहुंचती है। बस, मन और कान के एक समय के संयोग से शब्द ज्ञान होता है।

कामशक्ति और स्वर परिवर्तन—शरीर में ज्यों ज्यों कामशक्ति का विकास होता है; शरीर की अन्तःस्त्री शुक्रिका, उपवृक्क, थाइमस, प्रोस्टेट आदि ग्रन्थियों में परिवर्तन होता है। इसे ही हम यौवन या जवानी कहते हैं। ग्रन्थियों की क्रियाशीलता एवं परिवर्तन के साथ हमारे बाह्य शरीर में भी परिवर्तन होते हैं जिन्हें हम जवानी की सूचना समझते हैं। इन परिवर्तनों के साथ स्त्री पुरुषों में स्वर परिवर्तन भी है। यह तबदीली केवल मनुष्यों में ही नहीं पशु-पक्षियों में भी एक विशेष समय पर होती है पक्षियों में अधिकांश में यह परिवर्तन वसन्त ऋतु में होता है। यही कारण है कि उस समय कोकिला का कल-कूजन आपके अन्तस्तल को स्पर्श करता है। इन उदाहरणों से यह बात सिद्ध होती है कि काम और शब्द का पारस्परिक घनिष्ट सम्बन्ध है।

स्वर और उत्तेजना—स्वर परिवर्तन उस समय होता है जब कामवासना विकसित होती है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि काम भावना ही स्वर परिवर्तन का कारण है। तरुणियों के हृदय से निकले हुये शब्दों का स्वर इस भावना से लचीला और लोल लोल होता है, इसी लिए वह नौजवानों के हृदय में हलचल मचा देता है। समान गुण वाली चीजें अपना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही प्रभाव विस्तृत करती हैं। यही कारण है कि प्रेमियों के कुछ शब्द ही हमारे काम केन्द्रों को उत्तेजित करने में हाजा के सौ सौ प्यालों का काम करते हैं। इसी लिए शैक्सपीयर सम्बोधनों को Food of Love अर्थात् प्रेमाहार के नाम से सम्बोधित करता है। डाक्टर वर्घ भी प्रेमियों के रस भरे शब्दों में वासना के उत्तेजित करने की पर्याप्त सामग्री पाते हैं। आपके शब्दों में—Cooing and armorus tone of a Love does excile-Love and passon. एक हिन्दी कवि सुरत व्यापाररत प्रेमियों के स्नेह सने शब्दों में स्वर्गसुख का आभास बतलाते हैं—

जाके सी-सी करिबे में...।

मैडम ब्ल्यू स्काई का कहना है कि प्रेम-प्रसंग के गीत मनुष्य में दीवानगी पैदा करने की अद्भुत शक्ति रखते हैं। प्यार भरे, मृदुल, मधुर और सुहावने शब्दों में हमारे स्नायु-केन्द्रों को उत्तेजित कर शक्तिशाली बनाने की अद्भुत शक्ति है हमें प्रसन्नता प्रदान कर स्वस्थ और दीर्घजीवी बनाने का अभूतपूर्व सामर्थ्य है। इसीलिए हिन्दू शास्त्रकारों का आदेश है—

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

पाठक इन प्रिय शब्दों द्वारा श्रवणशक्ति और कामेच्छा के घनिष्टतम सम्बन्ध को बहुत कुछ समझ गये होंगे। आशा है वे प्रत्येक प्रिय शब्द द्वारा मस्तिष्क और कामोत्तेजना का प्रयास न करेंगे। नतरु मैडम ब्ल्यू स्काई के पागलपन के आक्रमण की आशङ्का हर समय उन्हें व्याकुल करती रहेगी।

अति सर्वत्र वर्जयेत!

जीवन और मृत्यु का खेल

सन् १६३४ में भारत के विभिन्न प्रान्तों में जीवन और मृत्यु का खेल किस तरह हुआ है, प्रतिशत कितने बच्चे पैदा हुए हैं और कितने व्यक्ति मर गये हैं, प्राकृतिक उन्नति कितनी हुई है—इन अङ्कों में देखिये!

प्रान्त	जन्म औसत	मृत्यु औसत	प्रा० उन्नति
बंगाल	२६·३	२३·६	५·७
मद्रास	३६·१७	२४·६५	११·२२
बम्बई	३५·७६	२५· २	१०·३७
संयुक्त प्रान्त	३६·७४	२६·७५	६·६६
पंजाब	४ ·०१	२७·७०	१२·३१
मध्य प्रान्त	४४·८०	३७·२२	७·५८
बिहार-उड़ीसा	३३·७	२६·०	७·७
सीमा प्रान्त	३०·८३	२१·६	६·६६
बर्मा	३०·२२	२०·६२	६·६
आसाम	३०·६२	१६·६४	१०·६८

यह अङ्क जहां भारत के सार्वजनिक स्वास्थ्य की गिरी हालत बताते हैं वहीं मरे भी, कहते हैं कि जितने पैदा हुए उतने ही प्रायः मर गये—फिर भी लोग सन्तति विरोध के लिए हल्ला मचाते हैं!

पालन-पोषण

भारत के विभिन्न प्रान्तों में जो बच्चे पैदा होते हैं उन में से सौ में से कितनों का पालन पोषण अच्छी तरह होता है, कितनों का साधारणतया और कितनों का बुरी तरह—यह इन अङ्कों में देखिये!

प्रान्त	अच्छी तरह	साधारणतया	बुरी तरह
आसाम	५३	३८	
मद्रास	३२	५०	
बम्बई	४५	४४	
बिहार उड़ीसा	४२	४०	
पंजाब	४२	३८	
संयुक्त प्रान्त	४०	३६	
मध्य प्रान्त	३२	५०	
बंगाल	२२	४७	

इन अङ्कों का निष्कर्ष यह है कि सौ में से औसत एक तिहाई बच्चे अच्छी तरह पाले जाते हैं शेष साधारण तथा और बुरी तरह!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्ण-क्षीरी

प्रो० श्री अवधनारायणलाल एम०एससी०बी०टी०

भारत वसुन्धरा पृथ्वीतल पर अपना सानी नहीं रखती। महर्षि और ऋषियों ने इस के अगणित गुणों पर मुग्ध होकर ही अपनी इस जन्मभूमि को 'स्वर्गादपि' बतलाया था। आज भी वही ज़मीन है और वही आसमान है। आज भी हिमालय के गगनचुम्बी तुषार मण्डित शिखर हैं और उनकी गोद से हर-हर का सन्देश लेकर बहने वाली गङ्गा ! हैं नहीं तो केवल उसके मंत्र को जपने वाले प्राचीन भारतनिवासी ! आज भी इसके रज-कण में कमला का घर है और इसकी सनसनाती समीर में प्राणों के अन्दर स्फूर्ति भरने वाली अलौकिक शक्ति। दुःख है दूरदेशी उसको परखते और मालामाल होते हैं। हम उसे ठुकराते और कङ्गाली के बीच में तड़पते हैं। क्या आपको विश्वास नहीं ? आइये ! देखिये ! आपके पैरों तले रौंदी जाने वाली, भारत के कोने कोने में प्रचुरता से पाई जाने वाली बूटी में कितने जीवन के मसीहाई करिश्मे मौजूद हैं। अनुभव कर आज ही देख लीजिये—

पर्यायः—संस्कृत—कटुपर्णी, स्वर्ण-क्षीरी, हिन्दी—सत्यानाशी, कटुआ, बङ्गला—चोक, मराठी—काँटे धोत्रा, गुजराती—किकणि के, अंग्रेज़ी—Gamboge Thistle बंगीनी—Argemone Maxicana.

रूप-रेखा—पौधा १॥-२ फीट लम्बा कटीला, पत्ते लम्बे और कांटेदार, पुष्प पीले और कोमल, फल एक काटेदार डोडरी के अन्दर काले रङ्ग के राई की भाँति होते हैं। डंठल तोड़ने से पीले रङ्ग का चेप सा निकलता है।

गुण—शीतल, कड़वी, दस्तावर; कृमि, पित्त, कफ़, विषूचिका, पथरी, वात रक्त, शोथ, ज्वर और कुष्ठ नाशक है।

उपयोग—१. इसके बीजों का तैल त्वचा सम्बन्धी व्याधियों की अचूक औषधि है।

२. गलित कुष्ठ को भी इसका तैल आगे बढ़ने नहीं देता।

३. अर्क विरेचक, वमनकारक और कण्डूरोग नाशक है।

४. इसके दूध की एक बूंद घी में मिला कर आँखों में लगाने से शुक्ल नेत्ररोग तथा नेत्रांध्य रोग को लाभ पहुंचता है।

५. मूत्रनाली की दाह मिटाने के लिये इसका फाण्ट पिलाते हैं।

६. रगड़ से छिली हुई चमड़ी पर इस का हिम लगाने से घाव भर जाते हैं।

७. इसके बीच अहिफेन की अपेक्षा अधिक मादक नींद लाने वाले, अचेत करने वाले और वामक तत्व हैं।

८. आमाशय या अन्तड़ियों के शूल को मिटाने के लिये इसका तैल ३० से ६० बूंदें तक खाण्ड में डाल कर देना चाहिये। इससे शूल बन्द हो कर रोगी को निद्रा आ जाती है।

९. इसके तैल की २० बून्दों को कच्ची खाण्ड में मिला कर व्यवहार करने से कोष्टबद्धता को अपूर्व लाभ होता है।

१०. आमातिसार में रेचन के लिये इसके तैल की ३० से ६० तक बून्दें खाण्ड में डाल कर फंका देते हैं।

११. पंचाग का कूट कर निकाला हुआ अर्क सारक है।

१२. इस का दूध या अर्क जीर्ण व्रणों को अच्छा करता है।

१३. तिलों के तैल में सत्यानाशी का तैल मिला कर उस से बनाये हुये पदार्थों का भोजन करने से विसूचिका के जैसे वमन और विरेचन होने लग जाते हैं। इसके बीजों की ४ माशे से ९ माशे तक फंकी देने से श्वांस का रोग रुक जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१५. श्वासरोग मिटाने के लिये इसके तैल की कुछ बूंदें साबूदे में डाल कर प्रयोग करना हितकर है।

१६. इसके असली ताज़े तैल की २५ बूंदों से और पुराने की ३५ बूंदों से विरेचन के ५ से १०-१२ वेग हो जाते हैं। रेवंदचीनी और साबूदे के तैल से अच्छा है क्योंकि उसकी मात्रा अपेक्षाकृत कम होती है। जमालगोटे के तैल से भी अच्छा है क्योंकि उसका स्वाद चटपटा, जी मचलाने वाला और बुरा होता है। इसके स्वाद में यह दोष नहीं है। विरेचन के लिये इस का तैल देने में दो दोष हैं। पहला यह है कि इस से सब मनुष्यों को विरेचन के वेग बराबर नहीं होते हैं। किसी को १-४ ही होते हैं। किसी को १५-१६ हो जाते हैं। इस का दूसरा दोष यह है कि इसके प्रभाव से प्रारम्भ में ही वमन हो जाती है, परन्तु बहुत भारी नहीं होती। जैसे जमालगोटे के तैल अथवा और किसी विरेचन से।

१७. इसके पीले रस को घी के साथ पिलाने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

१८. इसके तैल की ३० बूंदें आधे भर सोंठ के साथ देने से शूल का शमन होता है।

१९. इसका अर्क लगाने से उपदंश की डाकियां, दाद और खुजली आदि रोग मिटते हैं।

२०. बिना अग्नि से निकले हुये इस के तैल और इस के पीले अर्क का मुख खुजली में समान रूप से लाभ करता है।

२१. इस का तैल लगाने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

२२. सांभर नमक में इसके तैल की कुछ बूंदें डाल कर देना अतिसार रोगी के लिए हितकर है।

२३. गिलोय के रस में इसके तैल की बूंदें डाल कर पिलाने से कामला रोग को लाभ होता है।

आपको अब यह विश्वास करने में अनाकानी न होना चाहिये कि अकेली स्वर्ण-क्षीरी बूटी में वह जादू का असर मौजूद है जिस का मुक़ाबला सर्जन-डाक्टर का विदेशी औषधियों से सजा-सजाया छोटा बक्स भी ज़रा कठिनता से कर सकता है।

स्वर्णक्षीरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निम्बोलिया

श्री जयदेवलाल

"भाई मनोहर ! लेट क्यों गए ? कहो क्या बात है ?" इन शब्दों के साथ मनोहर के मित्र वैद्य जैदेव ने उसे सम्बोधित किया।

मनोहरः—नहीं यों ही लेट गया हूं ! कोई खास बात नहीं।

जैदेवः—नहीं, कोई विशेष बात क्यों नहीं ! तुम्हारे प्राणहीन मुख से स्पष्ट प्रकट होता है कि कोई न कोई बात अवश्य है। बताओ न !

मनोहरः—मित्र वक्षस्थल में हल्की-सी पीड़ा का अनुभव होता है।

जैदेवः—पीड़ा निरन्तर हो रही है या ठहर ठहर कर होती है ?

मनोहरः—तीन चार दिनों से निरन्तर हो रही है। परन्तु कोई बात नहीं। कुछ खाने पीने की कुव्यवस्था हो गया है। उसके ठीक होने से यह स्वतः ही ठीक हो जायेगी।

जैदेवः—क्या ज्वर भी है ?

मनोहरः—तीन चार दिनों से बराबर ज्वर और खांसी है।

जयदेवः—खांसी शुष्क है अथवा तर ?

मनोहरः—खांसी तो शुष्क है, परन्तु साथ में पीड़ा होती है।

जयदेवः—श्वास लेने पर भी पीड़ा होती है ?

मनोहरः—हां, श्वास लेने पर भी पीड़ा होती है। पहले तो केवल दाईं ओर ही थी परन्तु अब तो बाईं ओर भी हो रही है।

जयदेवः—अच्छा तो चिकित्सा क्या हो रही है ?

मनोहरः—कुछ नहीं, आज भी प्रातः पीड़ा हो रही थी, मगर फिर भी आदिवासी २ पचास दण्ड लगा लिये थे। मैं उष्ण जल से बस्ति भी ले रहा हूं। परन्तु अब तो रात्रि में निद्रा नहीं आती।

जयदेवः—तो स्पष्ट हुआ कि आप ने अभी तक कोई औषधि नहीं खाई !

मनोहरः—नहीं, कल गीली मिट्टी का लेप लगा कर दरिया पर नहा लिया था, परन्तु तैरना तो कल से बन्द कर दिया है।

जयदेवः—अच्छा तो इस मिट्टी के लेप करने से पीड़ा पर क्या प्रभाव पड़ा ?

मनोहरः—प्रथम तो पीड़ा कुछ शान्त हो रही थी, मगर इस लेप के पश्चात् तो इतनी अधिक बढ़ गई है कि मैं रात में लेट भी नहीं सका। आज यह बादाम ले आया हूं, सोचा है इसका प्रयोग आरम्भ कर दूं।

जयदेवः—यह तो ठीक है, अच्छी बात है। परन्तु तुम तो औषध नहीं खाते, नहीं तो बहुत शीघ्र आरोग्य लाभ हो सकता है।

मनोहरः—परन्तु वैद्य जी, मुझे व्याधि क्या है ?

जयदेवः—कुछ नहीं, सब ठीक हो जायगा। मगर तुम औषधि खाओ ना, खाओगे ?

मनोहरः—खा लूंगा

जयदेवः—तो फिर दवाई दूं ?

मनोहरः—हां, दे दो।

जयदेवः—अच्छा तो लो, यह शृंग भस्म की तीन पुड़ियां हैं। इन में से एक तो अब चाय के साथ पीना एक रात को चाय के साथ लेना और तीसरी कल प्रातः इसी तरह से खाना। और फिर मेरे पास आना, तुम्हें कल तक बहुत आराम आ चुका होगा।

मनोहरः—परन्तु वैद्य जी एक बात और भी है, कुछ दिन हुए, मैं ने विचार किया कि बादाम रोगन पीना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिये, दो चार दिन पीने के पश्चात् मेरी यह धारणा हुई, कि यह बहुत महंगा है, क्यों न बादाम रोगन के स्था पर कड़वा तैल पिया जाये ? इस विचार के साथ ही मैं ने कड़वा तैल पीना आरम्भ किया और लगभग अढ़ाई पाव तीन चार दिनों में ही पी गया और यह अब जो पीड़ा हो रही है, उसी के पश्चात् होनी आरम्भ हुई है।

जयदेवः—चरक ने कहा हैः—

पाण्डुता गौरवं जाड्यं पुरीषस्याविपक्वता।
तन्द्रीरुचिरुत्क्लेशः स्यादतिस्निग्धलक्षणम्॥

भाई! मनोहरलाल कोई विशेष बात नहीं, जैसे मैंने बताया है, पुड़ियां दबा लो और ध्यान रखना कोई भी ठण्डी चीज़ नहीं प्रयोग करना।

मनोहरः—क्यों ? इस में क्या होता है ? मैं तो दूध सोडा बरफ डाल कर पीता रहा हूं।

जयदेवः—तब तो आप बहुत भूल करते रहे हैं। अब इसे छोड़ दो और जब भी तृष्णा लगे उष्ण जल और उष्ण दुग्ध अथवा चाय का प्रयोग करो। भोजन में दुग्ध अथवा चनक रस रखना या फिर अंगूर आदि भी हो सकते हैं।

मनोहरः—अच्छा तो अब फिर मैं चलता हूं कल फिर जैसे होगा।

जयदेवः—हां, हां, जैसे भी होगा फिर कल आकर हाल बताना।

× × × ×

दूसरे दिन मनोहरलाल वैद्य जयदेव के पास पुनः पहुंचा और बोला "वैद्य जी! मुझे आज बहुत आराम है। देखो ना दरद तो बहुत ही कम हो गया है और ज्वर तो रहा ही नहीं।"

जयदेवः—हां यह तो सब ठीक हो जायेगा मगर बताओ निद्रा भी रात्रि को आई या नहीं ?

मनोहरः—आपकी आज्ञानुसार मैं रात को बरसाती में ही सोया था, रात को एनीमा भी लिया था। और पसीना भी आया था। फिर रात दो बजे के करीब नींद भी आ गई थी। मगर वैद्य जी! मुझे वास्तव में था क्या ?

जयदेव—तुम्हें हवा लग गई थी और निमोनिया के लक्षण उत्पन्न हो गए थे।

मनोहर—समझा तो मैं भी कुछ ऐसा ही था, परन्तु आप ने कल क्यों नहीं बताया ?

जयदेव—आप अकेले रहते हैं इस में तुम्हारे ध्यान से रोग के भयङ्कर रूप धारण करने की आशंका थी।

मनोहर—अच्छा तो अब मैं और कितने दिनों में स्वस्थ हो जाऊंगा ?

जयदेव—यही, दो चार दिन में।

मनोहर—अच्छा तो ठीक है वैद्य जी आपने मुझे ठीक समय पर सम्भाल लिया। नहीं सो मृत्यु एक निश्चित बात थी।

जयदेव—नहीं सब बातें अपने समय पर ही हों जाया करती हैं।

मनोहर—वैद्य जी मैं एक बात कहूँ ? मेरी भूल से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई।

जयदेव—वह कैसे ?

मनोहरलाल—यह संवत् १९२१ की बात है, तब कांग्रेस का प्रचार ज़ोरों पर था, उन्हीं दिनों एक नैशनल स्कूल भी लाहौर में बना था। यह वही स्कूल था, जहां रामचन्द नैशनल वी० ए०, सरदार भगतसिंह और दूसरे युवकों का शिक्षण कार्य हुवा था। उसी स्कूल में एक मास्टर थे। बेचारे बहुत विद्वान् अच्छे आदमी थे। देश सेवा की इच्छा और जाति की उन्नति का विचार उन्हें एक अच्छी सरकारी नौकरी से छुड़ा कर इस स्कूल में ले आया था। वह युवकों से बहुत प्रेम करते थे स्कूल में हर एक उन से सन्तुष्ट था। एक दिन उन्हें भी मेरी तरह निमोनिया हो गया। ज़ोर का बुखार चढ़ आया। वह बुखार की अधिकता से अर्द्ध मूर्च्छित से हो गए थे। इसी मूर्छितावस्था में वह जब भी जल मांगते रहे मैं शीतल जल ही देता रहा। अगर मैं ऐसे न करता तो एक ऐसे अच्छे व्यक्ति से लोग वञ्चित न हो जाते!

बात असल में यह थी कि मास्टर साहब स्कूल से अपने लिये बहुत खर्चा लेते थे और मेरे पास भी कुछ न था। इस लिये हम स्वयं ही चिकित्सा करते रहे,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैद्य अथवा दूसरे चिकित्सक को बुला न सके। पश्चात् उसी रात को मास्टर जी का देहान्त ।

दूसरे दिन उनके घर वालों को हम ने एक तार और मा० साहिब का अन्तिम संस्कार कर दिया। दूसरे तीसरे दिन एक नौजवान औरत जो कि साहिब की धर्मपत्नी थी मैले कपड़ों में मेरे मकान ; उसके मुख पर अश्रुओं के काले चिह्न पड़ आंखों से व्यथा और निराशा बरस रही थी। एक एक शब्द में तड़प थी और था करुण जो भी उसके रुदन को सुनता, चार आंसू बहाये रहता!

निराशा से इधर-उधर देखती थी, मा० साहिब एक चीज़ को उठा उठा कर हृदय से लगाती थी कहती थी:—मास्टर जी आप कहां चले गये, इन चीजों को इस्तैमाल करेगा! वह हर एक मास्टर साहिब कहां हैं! मेरे से कहती, मुझे भूल तो अन्तिम बार देख लेने दिया होता! कहती, अगर आप ने उनके बीमार होने की होती, तो मैं उन की सेवा तो कर लेती! पूछती वह अन्तिम समय में क्या कह रहे थे? कहने लगती, काश, कि वह गवर्नमेंट स्कूल नौकरी छोड़ कर यहां न आते। फिर, सम्बोधित कर कहती, ऐ लाहौर की दीवारों! मेरे प्राणनाथ को मेरे से छीन लिया है। कहीं पहुंचा दो, जहां तुम ने मेरे प्राणनाथ रखा है, और फिर उन्मादित हो कर के लिये भागती। वह दो तीन दिन तक करती रही और उस के बाद रोती धोती अपने गई।

के पश्चात् मैंने पुनः उस स्त्री को नहीं देखा। व्याधि ने मुझे बता दिया है, कि मा० साहिब मेरी भूल के कारण से हुई! जब उस स्त्री का आंखों के सामने आता है तो मैं कांप जाता को विधवा बनाने वाला मैं ही हूं अब मैं और तक इस विषय पर विचार नहीं कर सकता। मेरा हृदय एक भारी पाप के बोझ से दबा जा रहा है, मुझे शान्ति नहीं। मैं चाहता हूँ कि उस मास्टर की स्त्री की तलाश कर के, उसकी सहायता कर के अपने हृदय के बोझ को कम करूं, वैद्य जी आप भी मेरी सहायता कीजिये!

जयदेव—अच्छी बात है, मेरे से जितनी सहायता हो सकती है करने को तयार हूं। तुम इतना शोक न करो, मैं सब ठीक कर दूंगा। मगर एक बात है, अपना इलाज ठीक जारी रखो। यह लो तीन पुड़िया!

मनोहर—मगर खांसी कैसे है, कल की तरह?

जयदेव—हां, कल की तरह। देखो तुम कषाय औषध नहीं खाते अगर इन पुड़ियों में कुचला शुद्ध और ऐस्पीन मिला दी जावे, तो इन पुड़ियों की शक्ति बहुत बढ़ सकती है।

मनोहर—नहीं, मैं कषाय औषध खाना नहीं चाहता।

जयदेव—यही तो बात है, नहीं तो वैद्य जो महा-योगराज गुग्गुल और शृङ्ग भस्म निमोनिया में दश मूल काथ से देते हैं यह उस से भी बढ़िया है और भाई देखो जो चाय बनाने का काम कर सको तो यह योग बहुत अच्छा है:—गुल बनफशा १ तोला, अडूसा पत्र, तुलसी पत्र, सूखे महोबा पान पत्र, १—१ तोला, त्रिकुटा १॥तोला लौंग, जायफल, जावित्री १ तोला इनको जब कूट कर के मिला कर उस में से २ तोले कर, आध सेर खौलते जल में डाल कर एक पाव भर रहने पर उतार कर दुग्ध पाव भर मिला कर रात को सोते समय गरम गरम पीने से, प्रतिश्याय, पसलियों का दर्द, श्वास कष्ट ज्वर और निमोनिया में बहुत लाभ होता है।

मनोहर—वैद्य जी! आप मुझे तो जानते हैं कहां यह चाय बन सकेगी।

जयदेव—अच्छा, तो छाती पर भी कुछ मला है. या नहीं!

मनोहर—मला तो कुछ नहीं हां, यह एक वास्कट और पहन ली है।

जयदेव—अच्छा तो अगर तुम नारायण तैल या मीठे तैल में जायफल जला कर उस में मोम मिला कर मलो तो बहुत.....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मनोहर—वैद्य जी मेरे से यह टण्टा नहीं होने का।

जयदेव—अच्छा तो जैसे तुम्हारी मरजी।

❀ ❀ ❀ ❀

इस के कुछ मास पश्चात् रियासत कपूरथला के किसी एक गांव में किसी गरीब विधवा के पास पोस्टमैन एक दो सौ रुपया का मनीआर्डर लिये जा रहा था। विधवा की लड़की जवान हो चुकी थी, बेचारी ने चक्की पीस पीस कर और लोगों के घरों में मेहनत मजदूरी करते करते उसे बड़ा तो कर दिया था, मगर उस के हाथ पीले करने के लिये घर में कौड़ी न थी। बेचारी इसी चिन्ता में घुली जा रही थी। प्रति दिन वह पूजा पाठ करते हुवे भगवान् के आगे सहायता के लिये हाथ फैलाती, भगवान् से कहती, तुम्हीं ने द्रोपदी की लाज बचाई थी! तुम्हीं ने सावलशाह की हुण्डी तारी थी। धन्ने भगत को दर्शन दिये थे। भगवान् जब सदना कसाई जैसे तेरी कृपा से तर गए तो फिर मैं ही अभागिन वञ्चित क्यों? भगवान् मेरी सहायता को भी आओ! आप ही आकर मेरी लड़की का भी ब्याह कर जाओ!

एक दिन उसकी पुकार को सचमुच भगवान् ने सुन लिया। वह अभी पूजा से उठी ही थी कि कुन्ती ने आ कर कहा, मां! डाकिया तुम्हें बुलाता है।

वह हैरान थी, कि डाकिया उसे क्यों बुलाता है। बेचारी को कहीं से भी चिट्ठी लिखने वाला कोई न था। जब मास्टर साहिब जीवित थे, तो वह लिखा करते थे। उसके पश्चात् अन्तिम बार १९२१ में एक तार आया था, उस के बाद आज तक डाकिये ने उसे कभी भी न बुलाया था। मगर वह फिर भी उठी और डाकिये के पास चली आई। डाकिये ने खुशी से हाथ बढ़ाते हुवे कहा यह लो दो सौ रुपया का एक मनीआर्डर तुम्हारे नाम का लाहौर से आया है, किसी मनोहर ने भेजा है। यहां पर अपना नाम लिखो और नहीं तो अंगूठा लगा दो, और यह लो, दस दस के दस नोट हैं, गिन लो और यह हैं, पांच पांच के बीस। लो अब हमें भी कुछ दो सीधा ही तुम्हारे पास आया हूँ!

कुन्ती की मां—कहीं भूल से तो यह मनीआर्डर मुझे नहीं दे रहे? अच्छी तरह से देख लो! मेरा तो कोई भेजने वाला है नहीं, कुन्ती! जरा पदम बाबू को तो बुलाओ!

पदम बाबू—नहीं बहन यह तो तुम्हारा ही है, साफ लिखा.....धर्मपत्नी मां.....तुम निश्चित हो कर ले लो।

कुन्ती की मां—अच्छा तो यह लो इकन्नी।

डाकिया—राम तुम्हारा भला करे।

कुन्ती की मां—राम तुम्हारा भी भला करें। (हृदय में) भगवान् कितने दयालु हैं! मैं जानती थी वही मेरी पुकार को एक दिन सुनेंगे, आज उन्होने ही यह रुपया कुन्ती के ब्याह के लिये भिजवाया है। भगवान् के बिना दुनिया में और है ही किसी का कोई कौन!

पाठकों को ज्ञात होना चाहिये कि मि० मनोहर से अन्य और कोई दूसरा मनीआर्डर भेजने वाला न था इस के बाद प्रतिमास की तीन तारीख को १० रुपये का मनीआर्डर मास्टर की धर्मपत्नी को मिलने लगा। यह मनोहर का पश्चाताप था और था हृदय के बोझ हलका करने का तरीका।

आकाश और पाताल!

सिराको अमेरिका का एक शहर है, आबादी है इस की लगभग २५ लाख। इस नगर में प्रतिवर्ष विभिन्न रोगों से मरने वालों की संख्या की भारत के १२ लाख की आबादी वाले कलकत्ते से तुलना तो कीजिये!

रोग	सिराको	कलकत्ता	रोग	सिराको	कलकत्ता
चेचक	०	४०.०	यक्ष्मा	१०५	३०००
टाइफाइड	२	१०००	बच्चे (१ वर्ष से कम)	५७	७१४४
डिफथिरिया	३	१०२	,, (१ मास से ,,)	३७	१२३१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्रिदोष-प्रत्यालोचन

श्री योगेन्द्रपाल आयुर्वेदालंकार

पृ१०—१७ तक वात, पित्त, कफ सम्बन्धी शास्त्री पूर्ण रूप से उद्धत की गई है। उस पर कोई प्रकाश नहीं डाला गया। तत्पश्चात् पंचतत्वविषय मीमांसा की गई।

पृ १६—विचारणीय बातें—शीर्षक के नीचे है, उक्त गुणों में से मृदुता आकाश का गुण नहीं गई है और जल का गुण भी, इसी तरह लघुता आकाश का गुण माना है, वायु का गुण भी और का गुण भी। यही हाल सूक्ष्मता का है। इसी एक ओर शीतलता वायु का धर्म माना है तो और जल का भी माना है। ऐसे ही रूक्षता वायु अग्नि दोनों का गुण मानी गई है। खरत्व के में भी कहा है कि खर वायु है और पृथ्वी भी है। वायु भी है अग्नि भी है और पृथ्वी भी। पाठक ही तरह देख लें कि तत्व भिन्न २ हैं पर उनके भिन्न हैं खैर जो कुछ हो, चाहे यह निरे अनुमान शास्त्र सम्मत माने जाते हैं।

दोष मीमांसा के लेखक के मत में यह पंचतत्व तत्व नहीं—मनचलों के तर्कना के घोड़े हैं। द्वारा प्रतिपादित जिन ६२ तत्वों पर नाज़ उनकी भी तो पड़ताल कर लें। उन ६२ तत्वों में जो गुण या सांइटीफिक प्रौपरटीज़ वर्णित के दूसरे तत्व के गुणों से तो नहीं मिलते। अम्ल-क्सीजन), उदजन (हाइड्रोजन) इत्यादि ११ तत्व में से प्रत्येक निराकार है। प्रत्येक ऊपर की होता है। जिस भी प्रकार के वर्तन में भर दो उस की आकृति प्रत्येक की हो जावेगी। प्रत्येक जाने पर आयतन में बढ़ता है, ठण्ड के प्रभाव से में आकर अपेक्षाकृत घनी (Condenced) हो जाती है। यह जो गैस रूप ११ तत्व हैं गैस तत्वों में भी लोह, ताम इत्यादि सामान्य ताप मिलने पर फैल जाते हैं और ठंड पर सुकड़ जाते हैं। द्रव तत्वों की भी गैस तत्वों की तरह कोई अपनी आकृति नहीं, जिस प्रकार के वर्तन में भर दें वैसी ही आकृति हो जाती है। कई गैस तत्व जलनशील हैं तो कई ठोस तत्व भी जलनशील हैं। तो सिर्फ परस्पर कई गुण मिलने से वे तत्व कोटि के बाहर आ जाते हैं। क्या आप उन्हें तत्व न कहेंगे? इस लिये गुण मिश्रत होना आप की युक्ति पंच तत्वों के तत्वभाव को दूर करने में नितान्त असमर्थ तथा लचर है।

पृ० १६—"इन में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध यह पांच गुण अवश्य जुदे २ माने गये हैं। यह पांच तन्मात्रायें भी कहाती हैं। तन्मात्रा का अर्थ है पंचभूतों की सूक्ष्मावस्था जिसका प्रादुर्भाव या प्रत्यक्ष निदान प्राणियों में होता है अर्थात् पांच भूतों का ज्ञान इन पंच मात्राओं से होता है। हम अपनी नासा गंध के गन्धवती पृथिवी को जानते हैं। इसी तरह स्पर्श से रूप रहित स्पर्श वान् वायु को जानते है। यदि हमारे पास यह ज्ञानेन्द्रिय ना हों या किसी कारण से खराब हो जावें हम तत्वों को को नहीं जान सकते।"

विचारे दार्शनिकों से एक बड़ी भारी भूल हो गई कि जुदे २ पांच गुण लिख कर स्वामी जी से अवश्य शब्द लिखवा लिया। जुदे २ गुणों द्वरा पांचोंको पृथक सत्ता प्रतिपादित करने की गल्त कोशिश दार्शनिकों ने कर ही डाली। पर अवश्य, लिख दिया तो क्याहुआ यदि हमारे पास ज्ञानेन्द्रिय नहीं तो दार्शनिकों के पंच तत्वों को कैसे जानेंगे? उस दशा में हमारे पास जानने के साधन ही नहीं हैं। बेशक बड़ी निकट तथा बेतहाशा समस्या है। आखिर बिचारे मनचले ही ठहरे, केवल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तर्कना के घोड़े ही दौड़ाते रहे। इतना भी न सोचा कि ज्ञानेन्द्रिय खराब होने पर क्या करेंगे ? उन्हें शायद इतनी समझ भी न हो कि ज्ञानेन्द्रिय कभी खराब भी हो सकती हैं। उन्होंने तो सोचा होगा कि परमात्मा ने जन्म के साथ दी हैं तो खराब क्यों होगी। पर तु हमारे साइंटिस्टों ने इस त्रुट को भांप लिया और कसोटी पर पर परख डाला। बस दार्शनिक मुंह ताकते रह गये।

साइंस वालों ने इस प्रकार के साधन उत्पन्न किये कि चाहे हमारे शरीर में ज्ञानेन्द्रिय ईश्वर या प्रकृति न भी दे तो भी साइंस द्वारा प्रतिपादित तत्व अवश्य साइंस की मदद द्वारा जान सकते हैं। ज़रा ग़ौर से तथा होशो-हवास कायम करके पढ़ें कि ज्ञानेन्द्रिय खराब हो जाने की दशा साधन उत्पन्न करना तो साईंस वालों के लिये बायें हाथ का करतब है किन्तु ज्ञानेन्द्रिय न होने की दशा में भी साइंस के ज़ोर से स्वप्रतिपादित तत्वों का ज्ञान करा देंगे। देखा बाज़ी मार ले गये ! इसी का नाम खूबी है !! इसी का नाम है करामात !!!

अच्छा आइये साहब साइंस वालों ने बड़ी २ कुर्बानी करके, अपने प्राणों की आहुति देकर कई चीजों के गुणों का पता लगाया है। कइयों ने तो पोटाशियम साइनाइड का स्वाद देखने की खातिर ही अपनी जान दे दी है। लेकिन हम आप से कुछ अधिक नहीं मांगते, आपकी जान नहीं चाहते, सिर्फ आप की ज्ञानेन्द्रिय ही आप के शरीर से पृथक् कर देंगे क्योंकि आप साईंसदां हैं और वगैर ज्ञानेन्द्रियों के भी स्वप्रतिपादित तत्वों को अपने साइंस के साधनों से जान ही लेंगे। डरिये नहीं ! ज्ञानेन्द्रियों के अतिरिक्त कुछ न लेंगे। आपकी तसल्ली के लिये गिना देता हूं—आंख, नाक, कान, रसना, त्वचा तथा इन सब से सम्बन्ध रखने वाले दिमाग़ के अंश लूंगा और कुछ नहीं। न न डरिये नहीं—पीछे क्यों हटते हैं ? क्या कहा कि आंख न होगी तो देखूंगा कैसे ? कान न होंगे तो सुनूंगा कैसे ? रसना न होगी तो स्वाद कैसे चख सकूंगा ? अच्छा तो क्या आप की साइंस भी ज्ञानेन्द्रिय की सहायता से ही तत्वों को समझ पाती है ? अब समझ में आया—तब आपको ऐसा दावा करना भी मुनासिब न था।

पृष्ठ—२० २५ तक साइंस के मुताबिक तत्व का लक्षण तथा मीमांसा की गई है। "हमारी गंधवती पृथिवी में कम से कम १२ तत्व ऐसे मिले जिन में तत्वों के लक्षण घटते थे। जल भी उदजन, ऊष्मजन नामक दो तत्वों का यौगिक निकला। वायु भी समीरन और ऊष्मजन नामक दो तत्वों का मिश्रण निकला। अग्नि भी शक्ति का एक विवर्धित रूप सिद्ध हुआ। और आकाश की तो कुछ न पूछिये ! यह तो विचारा मारे लज्जा के ऐसा शून्य में विलीन हुआ कि आज तक उस का कहीं भी पता नहीं लगता। तत्वों के लक्षण भूतों की माया बन गई।"

तत्व किसे कहते हैं ? क्या प्राचीन विद्वानों ने तत्व शब्द का प्रयोग उन्हीं अर्थों में किया था, जिन अर्थों में त्रिदोष मीमांसा का लेखक ले रहा है ? क्या पूर्व तथा पश्चिम की विचारशैली एक ही है ? इत्यादि विचारणीय तथा महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अंग्रजी में (Element) ऐलीमेंट शब्द जहां भी व्यवहृत होता है उस का अर्थ बहुत से अर्धशिक्षित मनुष्य तत्व करते हैं। लेकिन सुशिक्षित तथा बुद्धिमान् व्यक्ति जैसा प्रकरण या विषय हो उसके मुताबिक ही अर्थ करते हैं। अन्यथा ठीक अभिप्राय समझने में भूल हो जाने में कुछ भी आश्चर्य नहीं है।

ज्यामिति विषयक प्रारम्भिक ज्ञान (Elimentery Knowledge) अलहदा है—बीजगणित (algebra) का प्रारम्भिक ज्ञान (elements) उस से भिन्न है। भूगोल, भौतिकी, अङ्कगणित (Arithmetic) प्रभृति सभी वैज्ञानिक विषयों का प्रारम्भ (Elements) अलहदा २ हैं—इस प्रकार स्पष्ट है कि विज्ञानवाद में भी प्रारम्भिक ज्ञान (Elements) का सब जगह आंख मीच कर उन वैज्ञानिक अर्थों में अभिप्राय समझना भूल है।

अब पाठकों ने वैज्ञानिक प्रारम्भ (Element) का असली अभिप्राय समझ लिया। पूर्व के विद्वानों के तत्व शब्द की भी विवेचना आवश्यक है। विशुद्ध शब्द तत्त्व। यह दो शब्दों से मिल कर बना है। तत्+त्व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ है वह । अर्थात् अंगुली (Finger or लकड़ी या किसी भी चीज से निर्देश करने तत् शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'त्व' शब्द है योग्यता या गुण। मनुष्य का गुण मनुष्यत्व है। सामान्यतः इसका प्रयोग इस प्रकार होता —'यह तो मनुष्यत्व से गिरा हुआ काम है' नृप का गुण नृपत्व, प्रभुत्व देवत्व इत्यादि उदाहरण की पुष्टि के लिये पर्याप्त हैं । सामान्यतः तत्त्व का प्रयोग प्रायः निचोड़ या सारांश के रूढ़ि अर्थों है। आम तौर पर हमेशा सुनते रहते हैं कि का तत्त्व यह है कि हमें उस से सावधान रहना । इस में भी वस्तुतः अर्थ निर्देश करना है। वाले का लक्ष्य किसी खास बात पर निर्देश करने ा है। किसी विषय या ग्रन्थ का निचोड़ संक्षेप में marize) करते समय कहते हैं कि सारे ग्रन्थ का यह है इत्यादि। वहां पर भी विशेष बातों को लक्ष्य कर निर्देश करते समय तत्त्व शब्द का प्रयोग । यह भाव ही सृष्टि का संक्षेप में निर्देश करते अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी आदि में तत्व ारा किया गया है । पूर्व (East) और पश्चिम) की विचार शैली भिन्न २ है। इसीलिये द्वित्व आवश्यक है। अन्यथा दोनों एक ही में शुमार होती। हमारे सामने सृष्टि में जिस रूप में दृष्टिगोचर वस्तुतः उसकी रचना में कौन-कौन से पदार्थ काम । यह विषय उपस्थित होने पर पूर्वीय विद्वानों ने पांच सूक्ष्म चीजों का निर्देश किया, वे पांच तत्त्व या सृष्टि रचना का निचोड़ कहलाये।

पूर्व और पश्चिम की विचारशैली में फर्क यह है कि पूर्व जो कुछ कहता रहा है उसका निर्देश-मात्र करता रहा है—अर्थात् सूत्र रूप में कहता रहा है। अष्टाध्यायी के सूत्र, महाभाष्य के सूत्र, दर्शनों के सूत्र, इत्यादि ज्वलन्त उदाहरण हैं। इन सूत्रों की रचना तथा विद्वत्ता पर पश्चिमी विद्वान् भी मुग्ध हैं। यह सूत्रात्मक या संक्षेप में कहने या लिखने की शैली पूर्व की अपनी खूबी है।

पश्चिम की विचार या लेख शैली इस से भिन्न है। वहां हरेक चीज़ का विस्तार मौजूद है। पूर्व का समष्टि-वाद कहाता है और पश्चिम का व्यष्टिवाद—अर्थात् पूर्व के विद्वान् विचार करते हुए सामूहिक रूप से वर्णन करते हैं और पश्चिमीय विद्वान हरेक चीज़ का अलहदा २ वर्णन करते हैं। इतना निवेदन करने के बाद पाठकों को कुछ न कुछ अगले लेखों के समझने में आसानी होगी।

पंचतत्त्वों के विषय में पृष्ठ २०-२५ का "हमारी गंधवती पृथिवी" से लेकर "तत्त्वों के लक्षण भूतों की माया बन गई" तक के उद्धरण की प्रत्यालोचना तथा उत्तर इस समय इस लिये नहीं दिया गया क्योंकि त्रिदोष मीमांसा लेखक ने सिर्फ यही पांच छः पंक्तियां लिख दी हैं, जिनकी पुष्टि नहीं की गई। उनकी मीमांसा में २६ पृष्ठ के बाद पंचतत्वों की विवेचना शुरू होती है। वहीं पर प्रत्यालोचना उपयुक्त रहेगी।

भस्म—मस्तक और शरीर पर भस्म (यज्ञ-हवन की राख) मलने की प्रथा हिन्दुओं में पुरानी है। अधिकांश साधू लोग आज भी शरीर पर भस्म रमाते हैं। भस्म के अन्दर सहस्रों के पौष्टिक पदार्थों के लवण और तत्व मौजूद रहते हैं; जिनके त्वचा द्वारा शरीर के अन्दर ष्ट करने से स्वास्थ्य की वृद्धि होती है। भस्म को आधुनिक डाटकर कृमिनाशक सिद्ध करते हैं अस्तु प्रयोग से त्वचा सम्बन्धी रोग नहीं होते। प्राचीन ऋषि मुनि जंगलों में रहा करते थे। वहां र, पिस्सू आदि भांति भांति के जीव प्रचुरता के साथ पाए जाते हैं। वे लोग इनसे बचने के भस्म का व्यवहार करते थे। आप आज भी इनका अनुमान कर सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सौन्दर्य-साधना

डा० रमाशङ्कर मिश्र

अबला-जीवन, हाय ! तुम्हारी यही कहानी—
आंचल में है दूध और आंखों में पानी !
—मैथिलीशरण गुप्त

मानसिक दास्त्व के पाप ने हमारे मस्तिष्क को इतना अधिक बिगाड़ दिया है कि उसमें नक्काली के बीज के अतिरिक्त दूसरा पौदा सरलता से पनपता ही नहीं। इस महान पातक के सुलगते हुये सन्ताप ने स्वाभिमानी भीम भयङ्कर भारतीयों को हवा के झोकों में उड़ने वाले नज़ाकत पसन्द बाबू बना दिया है। आज समानता का सौदा करने वाली भारतीय ललनाएं भी इस का शिकार बन रही हैं। इस भाँति यह गुनाह देवियों का दामन पकड़ कर बाहरी दुनिया से हमारे अन्तःपुर में प्रवेश कर रहा है।

हमारी ललनाओं के मस्तिष्क में यह सौदा इतना अधिक घर कर चुका है कि वे आँख मूंद कर पाश्चात्य महिलाओं के चरण चिह्नों पर चलने लगी हैं। आगुल्फ चरण चुम्बित केशपाश; ब्रह्मचर्य और प्रेम की भावनाओं से जगमगाता मुखमण्डल, सात्विक स्नेह छलकते रक्त और यौवन की स्वाभाविक मस्ती से मतवाली चाल के सौन्दर्य को उन्होंने बहिष्कृत कर रक्खा है। कटे छुटे-केश पिचके, दबे सिमटे गालों पर पाऊडर का सीमेन्ट, होंठों पर लाल अस्वाभाविक रोगन, और पांव में ऊंची ऐड़ी का जूता डाटकर दुबक-दुबक कर पैर रखना भारतीय महिलाओं के आधुनिक सौन्दर्य शास्त्र का पहला पाठ है। मलाया द्वीप के स्वास्थ्य विभागने आधुनिक ५४ प्रकार के पाऊडरों की परीक्षा की है और उनमें से अधिकांश में स्वास्थ्य संहारक सीसे के मिश्रण को पाकर कानूनन ऐसे पाउडरों का निषेध कर दिया है। योरोप के अन्य देशों में भी विश्लेषण के पश्चात् इन में पारे के तत्व पाये गये हैं। अभी हाल की ही एक घटना है। एक अभिनेत्री बीमार पड़ गई और रोग ने उसे ऐसा जकड़ा कि छूटना मोहाल हो गया। डाक्टरों ने इस का कारण खोला, वह था मुंह पर मलने वाला रोग़न जिस में ३२-४२ प्रतिशत लीड आक्सआइड (Oxide) मिला था। भारत में इस वर्ष भी बन्दरगाहों पर लाखों की ऐसी प्रसाधन सामग्री उतरी है जिसे आये दिन भारतीय महिलाएं अपनी सौन्दर्य मृग मरीचा परितप्त में व्यवहार कर अर्थ, समय और स्वास्थ्य का श्राद्ध करती हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक हेगगार्ड महोदय ने अपनी वेदनापूर्ण वाणी में कहा है कि आधुनिक रमणियों की इस कृत्रिम सौन्दर्य साधना द्वारा, भावी सन्तति के लिये हमें जितनी आशङ्का है उतनी प्राण घातक प्रचलित व्याधियों से नहीं। यही कारण है कि पाश्चात्य महिलाएं इस घातक वातावरण से भाग निकलने के लिए विवेक-बुद्धि के साथ, प्रकृति की ओर वापस आ रही है।

हम भारतीय महिलाओं से अनुरोध करते हैं कि वे अपने छोटे से जीवन में संसार के सभी कड़वे पदार्थों को आंख मूद कर अनुभव करने का प्रयत्न न करें! दूसरों के अनुभव से भी कुछ लाभ उठाकर जीवन संघर्ष को सरल बनाने की चेष्टा करें! इसी सद्भावना से प्रेरित होकर आज हम विश्व की कुछ इनीगिनी सुन्दरियों के अनुभव उपस्थित करने का प्रयास करते हैं। आशा है भारतीय देवियां गम्भीरता पूर्वक विचार करने का साधु प्रयास करेंगी!

इस अङ्क में मिस हेलन गाहगन का चित्र प्रकाशित कर रहे हैं, आप दुनियां की सात सर्व श्रेष्ठ सुन्दरियों में से एक हैं। आप से एक बार लोगों ने प्रश्न किय—'आप के इतना अधिक सुन्दर होने का रहस्य क्या है?' अपने जो कुछ उतर दिया है उसे अविकल रूप में हम अपनी पाठिकाओं के सामने पेश करते हैं।

"मैं न तो दूध से स्नान करती हूं और न शैमपियन (शराब) का ही व्यवहार करती हूं। कृत्रिम चमक दमक पैदा करने वाली वस्तुओं का इस्तेमाल कर कोई स्त्री सुन्दर नहीं हो सकती। मैं स्वाभाविक सौन्दर्य की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस हलन गाह्गन

आप विश्व की सात सुन्दरियों में से एक हैं। आपने अपने सौन्दर्य का रहस्य बतलाते हुए कहा है—'बनावटी चमक दमक वाली चीज़ों से कोई स्त्री सुन्दर नहीं बन सकती। सौन्दर्य प्राप्ति के लिये साफ़ वायु और सूर्य रश्मिमों का स्नान दूध और गुलाब जल के स्नान से बढ़ कर है। हल्का भोजन, क़ाफ़ी नींद, खुली वायु में व्यायाम और मादकद्रव्यों से दूर रहना—यही स्वास्थ्य और सौन्दर्य की कुंजी है।'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ं हूं। मेरे विचार में साफ़ ताजी हवा सौन्दर्य
ए एकान्त आवश्यक है। इस के बिना त्वचा का
ीकी है। बिना वायु में स्वच्छन्दता पूर्वक स्नान
चा मैली, मोटी और फटी फटी सी प्रतीत
ती है। यही कारण है कि ग्रामीण लड़कियों के
जो लावण्य रहता है वह नागरिक महिलाओं
ीब नहीं होता! यही स्त्रियां यदि गांव में जाकर
र्यों और पर्याप्त मात्रा में आक्सीजन वायु को प्राप्त
खिल उठें! सौन्दर्य प्राप्ति के उत्कृष्ट साधनों में
किरणें और वायु का स्नान दूध और गुलाब जल
न से भी बढ़कर है।

सौन्दर्य प्राप्ति का द्वितीय साधन निद्रा है! काफ़ी
के बिना, सिर भारी हो जाता है, चेहरे पर झुर्रियां
ाई पड़ने लगती हैं, मस्तिष्क काम करने से जवाब
ता है। मैं कितनी ही स्त्रियों को जानती हूं जो काफ़ी
न लेने कारण सुन्दर नहीं बन पातीं। काफ़ी आराम
से आप की नसों में कोमलता और खिचाव तथा
में कोमलता आजावेगी और लावण्य छिटक पड़ेगा।
ीसरा साधन स्नान है। मैं तीन चार बार ठण्ढे या
जी से स्नान करती हूं। गर्म जल के स्नान से थकावट
ती है और ठण्ढे जल से शरीर में शक्ति उत्पन्न होती
स्नान त्वचा के लिए अत्यन्त आवश्यक है। देर तक
में पड़े रहना, मेरा मन बहलाव है। मैं जब शहर से
गांव जाती हूं तब दरिया में खूब तैरती और खेलती
हूं। तैरना सौन्दर्य प्राप्ति का उत्तम व्यायाम है।

"सुन्दर बनाने की आकांक्षा रखने वाली महिलाओं
अपने भोजन पर ध्यान देना अतीव आवश्यक है।
ना सादा, हल्का और सुपाच्य होना चाहिये। पानी
काफ़ी पीना चाहिये। मैं सिगरेट और तम्बाकू का
योग नहीं करती। तम्बाकू पाचन शक्ति को खराब
ती है। सौन्दर्य का सब से बड़ा शत्रु कब्जियत है।"

मिस्टर ऐडिना केन्ट बहुत चुस्त और सुन्दर महिला
आप का कहना हैं कि खूब हंसो, खूब काम करो,
और कृत्रिम सौन्दर्य साधनों से दूर रहो—वह
बिना पाउडर के ही तुम्हारे मुख मण्डल को
लावण्यमय बना देगा।

मिस Judy Kelly का सुरीला स्वर और आकर्षक लावण्य दर्शक के हृदय पर अग्नि-मयी रेखाएं खींचे बिना नहीं रहता। आपने अपने सौन्दर्य का रहस्य बतलाते हुए कहा है कि स्वच्छ वायु और बाल सूर्य की किरणों में अधिक समय तक नंगे बदन अथवा झीने वस्त्र धारण कर रहना, हरे शाक सब्जियों और फलों का अधिक व्यवहार करना और ७ घण्टे सोना यही सुंदरता की कुंजी है।

ग्रेटागार्बो—आप एक विख्यात स्वीडन सुन्दरी हैं जो आज कल अमरीका में निवास करती हैं। आप की सुन्दरता का मूल मंत्र आपकी ही ज़बानी सुनिये—मैं भोजन के साथ नींबू या संतरे का रस, मक्खन और एक गिलास दूध पीती हूं। बिना मसालेकी साग सब्जियां खाती हूं। भूख से अधिक खाना सबसे बड़ा पाप समझती हूं। हरे साग, फल, सादा आहार और थोड़ा किन्तु नियमित व्यायाम यही सौन्दर्य का एकमात्र रक्षक है।

विश्व की मानी हुई सुन्दरियों की जीवन चर्या पर विचार करने से पता चलता है कि सादा भोजन, ताजी हवा, सूर्य का प्रकाश, शीतल जल का स्नान, पूरी नींद और व्यायाम यही उनकी विश्वमोहनी रूप-रेखा का एकमात्र कारण है। हमारी भारतीय महिलाओं को यह न भूलना चाहिये कि बाहरी चमक दमक, सल्मे सितारों से आंखों को चौंधियाने वाली पोशाक और शीशी एवं बोतलों के बल बूते पर उधार लिया गया रूप लावण्य स्थायी सौन्दर्य पैदा करने में एकान्त असमर्थ है। सौन्दर्य पैसों से खरीदा नहीं जा सकता। स्नेह प्रेम और कोमलता नारी को महिमान्वित करने वाला आंतरिक सौन्दर्य है। वाह्य सौन्दर्य समस्त शरीर और प्रत्येक अंग सौष्ठव में है। देह का अंग प्रत्यंग दैहिक पारस्पर्श की रक्षा करते हुये सुडौल एवं सुन्दर दिखलाई पड़े यही नारी का वास्तविक सौन्दर्य है। बाजारी दुकानों से संचित किया हुआ सौन्दर्य सौन्दर्य नहीं क्षणिक आकर्षण है। हृदय और आंख रखने वालों की निगाह में उसका मूल्य कुछ भी नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बालशोष

साहित्यरत्न श्रीदेवकरण वाजपेई वैद्यशास्त्री

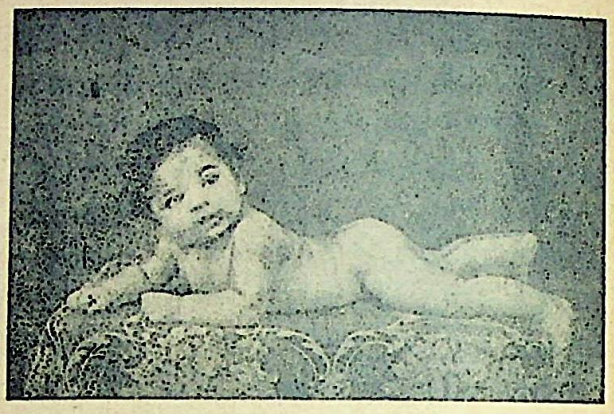

सूखा रोग नाशक बटी—मूंगाभस्म, घोंघे (क्षुद्रशंख) की भस्म, पीली कौड़ी भस्म, मुक्ताशक्ति की सीप का भस्म फिटकीरी खील, चौकिया सुहागा अस्म, शुद्ध रसौत भुनी हुई हल्दी, ६, ६ माशे, छोटी पीपल ६ माशे, तुलसी पत्र ७॥ तोला, अपामार्ग पत्र ७॥ तोले लेकर सब को एकत्र खरल करके झड़ बेरी के समान गोलियां बना कर छाया में सुखा शीशी में भर कर रख लो। मात्रा १ बटी या न्यूनाधिक। समय–प्रातः सायं। अनुपान–जाड़े के दिनों में शहद के साथ, बरसात में शर्बत अनार या मिश्री के जलाब में दें। मिश्री के १० तोले जलाब में १ तोला भुना जीरा मिला देना चाहिये। गर्मी के दिनों में शरबत कासनी के साथ औषधि का प्रयोग करना चाहिये।

गुण—बालकों का सूखा रोग, ज्वर, दूध डालना अनेक प्रकार के दस्तों का आना आदि २ सम्पूर्ण विकार २१ दिन में अवश्य नष्ट हो जाते हैं। यदि यह औषधि ४० दिन सेवन करा दी जाय तो बालक पहले से दूना मोटा ताजा हो जाता है।

विशेष अनुभव—श्यामा गौ का १ बोतल गौ मूत्र लेकर उस में से थोड़े से मूत्र में १ तोला असली कश्मीरी केशर घोंट कर उसे सम्पूर्ण बोतल में मिला दे और कार्क लगा कर ३ दिन तक रख छोड़े। फिर इस में से ६ माशे तक लेकर उसके साथ उपरोक्त बटी प्रातः दोपहर और शाम को खलावे। इससे ३ दिन में ही बालक की हालत बदल जाती है और १०, १२ दिन में बालक चंगा हो जाता है। फिर भी हम तो इसी अनुपात से सुबह शाम ४० दिन तक दवा अवश्य देते हैं। मुझे आज तक इससे बढ़ कर कोई योग नहीं मिला और न किसी रोगी ने आराम न होने की शिकायत की। मैंने इससे असाध्यावस्था तक के रोगियों को भी अच्छा किया है। आप भी बरतें और कृपया फलाफल अवश्य ही प्रकाशित करें।

आज कल बाल शोष रोग बहुत ही बढ़ चला है, हमारे यहां इस रोगग्रस्त बालक के सिर में गढ़े के स्थान पर विशेषतः रबिवार या मंगलबार को लोहे की सलाई से दाग देते हैं, यह क्रिया केवल एक बार करने ही से रोगी रोग मुक्त हो जाता है। इस उपाय से आज तक लाखों जानें बचाई जा चुकी हैं। मेरे ग्राम के निकटवर्ती एक ग्राम में एक नाई के यहां कोई ५० वर्ष से यह क्रिया की जाती है। यहाँ पर इस रोग के रोगी सैकड़ों कोस से आते हैं और लाभ उठा कर जाते हैं। यद्यपि यह क्रिया उत्तम है, पर इसे सिद्धहस्त अभ्यासी ही कर सकता है।

आज हम इस रोग पर एक ऐसा अत्युत्तम और सरल योग सहस्रों बार का अनुभूत प्रगट करते हैं, जो शत प्रति शत लाभकारी सिद्ध होगा।

बालशोष के कारण—माता के अशुद्ध भोजन, दिन में सोने, शोक तथा चिन्ता करने, प्रति वर्ष गर्भ धारण का स्वभाव पड़ जाने, प्रसूतावस्था में अधिक मैथुन करने, विरुद्ध भोजन करने, दूध का दूषित होने, बालक को अधिक मीठा खिलाने आदि कारणों से माता के स्तनों पर प्रभाव पड़ता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का दूध दूषित हो जाता है, यह दूषित दूध की क्रिया को बिगाड़ता है। इससे आंतों में और बहुत छोटी २ ग्रंथियां भी उत्पन्न हो हैं और बालक को दस्त आने लगते हैं; शारीरिक धातुओं का यथोचित पाचन नहीं —बालक क्षीण होता जाता है।

लक्षण—यह रोग धीरे २ प्रगट होता है। बालक २ दस्त आते हैं और ज्वर रहता है। पैरों के गरम और कान ठंडे रहते हैं, पेशाब कम है, मुख सूखता है, तालू दब जाता है। शिर में के स्थान पर गढ़ा पड़ जाता है और वहाँ धकारा होता है।

विशेष सूचना—(१) माता का दूध पिलाना बिलकुल बंद कर दें। केवल स्वस्थ गधी के दूध का पथ्य रूप में सेवन कराते रहने से आश्चर्यजनक लाभ होता है।

(२) मीठा खिलाने से रोग प्रबल होता है अतः उसे सर्वथा बंद कर दे।

(३) रोगी के वस्त्रों को साबुन से साफ करके धूप में भली भांति सुखाते रहना चाहिये, क्योंकि उन में बहुत दुर्गन्ध आया करती है।

चिकित्सा—इस रोग की बहुत सी औषधियां हैं, परंतु हम आज पाठकों को एक अलभ्य योग भेंट करते हैं। इसे केवल ७ दिन सेवन करने से सूखे हुये बालक को भी आश्चर्य जनक लाभ होता है।

प्रसिद्ध देशीय औषधियों के अंग्रेज डाक्टर द्वारा परीक्षित प्रयोग

श्रीमान् डाक्टर जी० टी० वर्डवुर्ड एम० ए० एम० डी० (केनटिब) एम०आर०सी एस०आई० ए० सी० पी० डी० पी० एच० लेफ्टिनेण्ट कर्नल आई० एम० एस० लेट सिविल सजन लखनऊ, लेट प्रिंसिपल आगरा मेडीकल स्कूल ने देसी दवाइयों की परीक्षा कर २०० से अधिक अनुभूत नुसखे लिखे थे उन का यह हिन्दी अनुवाद है पुस्तक बड़े काम की है, ऐसी उपयोगी पुस्तक के दाम १)

एलोपैथिक डाक्टरी पुस्तकें

डाक्टर महेन्दुलाल जी गर्ग लिखित

डाक्टरी शिक्षा—डाक्टरी मत से रोगों के लक्षण निदान और चिकित्सा का पूरा वर्णन संख्या ७०० विलायती जिल्द दाम ६) डा० खर्च १-)

मेटेरिया मेडिका—इ में डाक्टरी मत से औषधियों के गुण, दोष, मात्रा, नुसखे बनाने के नियम दे हैं। की० ६०० पृष्ठ की विलायती जिल्द की पुस्तक का ६) रु० डाक खर्च ।॥-)

डाक्टरी नुसखे—इस में प्रसिद्ध २ डाक्टरों के परीक्षित एक ही रोग पर अनेक नुसखे लिखे हैं। १॥) रु० डाक खर्च ।॥-)

शक्ति संचय—डाक्टरी मतानुसार कमजोरी नपुंसकता आदि पर परीक्षित नुसखे लिखे हैं।) रु० डाक खर्च ॥-) आना

इन्जेक्शन चिकित्सा—इसमें सुई लगाने की रीतियां लिखी हैं। कीमत १।) डाक खर्च अलग।

सचित्र कम्पाउण्डरी शिक्षा

इसमें प्रत्येक अंग्रेजी दवा का उपयोग मात्रा टिंक्चरालिनीमेंट मिक्सचर आदि बनाना, कौन सी की क्या मात्रा है और उसे किस के साथ कैसे मिलानी चाहिये आदि का पूरा वर्णन लिखा है। मूल्य २॥) रुपया डाक खर्च ॥-)

सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

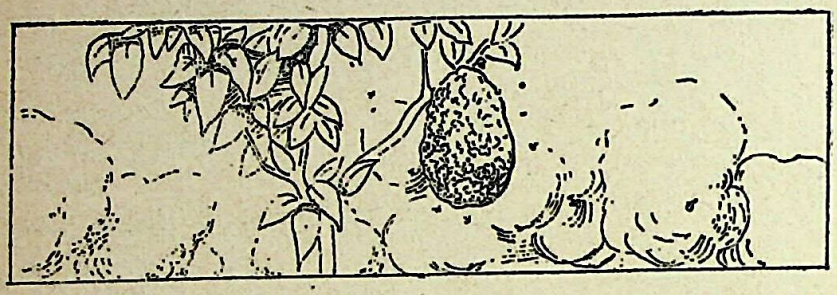

मधुकोष

संचित कर वन-उपवन से मधु,
भर लाई मधुकोष निराला।
खूब पियो पी-पी कर झूमो,
कहती है हंस कर मधुवाला

हिन्दी

सोने का सही तरीका—एक चतुर आयुर्वेद विशारद का कथन है कि बिल्कुल चित या पट सोना ठीक नहीं है। चित सोने से रीढ़ पर ज़ोर पड़ता है जिस से आराम नहीं मिलता, सांस लेने की रफ़्तार बिगड़ जाती है। भोजन का पेट की रगों पर दबाव पड़ कर रक्त संचालन में रुकावट पड़ती है जिस से बुरे-बुरे स्वप्न दिखते हैं। इस से खूनी कै, पीठ-दर्द, नज़ला और जुकाम होजाने का खतरा है।

औंधा अर्थात् पेट के बल सोने से आँखें बिगड़ जाती हैं लेकिन एक प्रोफेसर का कथन है कि जो आदमी बचपन से ही पेट के बल सोता रहा है वह कभी भी बहरा नहीं होवेगा। असल बात यह है कि करवट के बल सोना ही सब से अच्छा है। दांये करवट सोने से मेदा व जिगर स्वतन्त्रता से अपना अपना काम करते हैं। रीढ़ के ऊपर कोई दबाव नहीं पड़ता और मेदा ठीक अवस्था में रहता है। बांए करवट सोने से भोजन मेदा में (जोकि बांई ओर रहता है) देर तक पचता रहता है क्योंकि नाभि की बांई ओर अग्नि रहती है और साफ़ खून बनता रहता है। लेकिन इस करवट अधिक सोने से रीढ़ के ऊपर असर पड़ता है और हृदय के कार्य में रुकावट पड़ती है।

पहिले पहिले चित लेट कर ८ बार गहरी सांस लेवे फिर दांए करवट लेट कर १६ सांस ले और बांए करवट लेट कर ३२ बार सांस ले। बाद में इच्छानुसार जिस करवट चाहे सो जावे। यदि भोजन किये थोड़ी ही देर हुई हो और भोजन मेदे के मुंह पर ही होवे तो दांए करवट २० मिनट तक लेटे रहो। इस प्रकार से जो कुछ खाया-पीया है सब मेदे में चला जावेगा। जब भोजन मेदे में चला जावे तब बांई करवट सो जाओ। बांए करवट सोने से पाचन शक्ति तेज होती है। कई लोगों का कहना है कि पुरुषों को दांए कर ट तथा स्त्रियों को बांए करवट सोना चाहिये। —'दीपक'

बङ्गला

चाय और स्वास्थ्य नाश—आचार्य सर प्रफुल्लचन्द्र राय एक लेख में लिखते हैं—"चाय और काफी स्वास्थ्य के लिए कितनी हानिकर है, इस विषय में विज्ञचिकित्सकों के मत स्पष्ट हैं। यहां कुछ महानुभावों के विचार दिए जा रहे हैं। इन में से भिषक्शिरोमणि नलिनीरंजन सेनगुप्त एम० डी० के विचार विशेष ध्यान देने योग्य है। आप कहते हैं—"चिरन्तन काल से हमारे देश प्रातः काल गुड़-चना, भीगा चाना, भुना चना, फेन भात (मांड) या दूध—शक्ति अनुसार—कलेवे रूप में व्यवहार होते थे। "शारीरिक शक्ति साधन दृष्टि से और विटामिन की निगाह से भी इन सा खाद्य पदार्थों की तुलना नहीं हो सकती। इनके सा थोड़ा मक्खन-मिश्री या छेना मिल जाय तो सोने सुहागे का संयोग समझिये। ३० वर्ष पूर्व इण्डिय टी एसोशियेशन ने अपना मतलब गांठने के लि भारतीयों में चाय-पान को प्रचलित करने के लि चढ़ाई शुरू की। फल यह हुआ कि पानीय के पर्याय निकल चाय खाद्य के पर्याय में पहुंच गई। देशवासि को, चिरन्तन प्रथा और अभ्यास से स्खलित करने के लि जब यह षड़यन्त्र हो रहा था तब उनको सतर्क करने वा कोई न था। देश का स्वास्थ्य विभाग भी इस समय स उदासीन था। चाय में खाद्य की दृष्टि से यदि कोई च

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करती है तो वह है उस में पड़ हुआ थोड़ा सा दूध, की विशुद्धता की कोई गारण्टी नहीं। इस तरह टी एसोसियेशन ३० वर्ष से देश की चिरन्तन खाद्य निर्वाचन के विरुद्ध स्वार्थ-दुष्ट चेष्टा कर रहा है और निरीह जनता बड़ी प्रसन्नता के साथ इस विष क्त पानीय का पान कर स्वास्थ्य और सुख को जलाञ्जलि दे रहे हैं।"

डा० एस० वाल्टर कार, एम० डी० एफ० आर० सी० एस० लण्डन कहते हैं—"चाय और काफी हृदय और स्नायु मण्डल को उत्तेजित करती है। अच्छी से अच्छी चाय भी यदि अधिक मात्रा में पी जाय तो अनिद्रा, स्नायुविकार, हृदय कम्प, सिर घूमना एवं वमन आदि अनेक उपद्रव उत्पन्न हो जाते है। खाद्य रूप में चाय का व्यवहार करना, अत्यन्त परिश्रम जन्य ग्लानि को नष्ट करने के लिए चाय पीना या जब शरीर को विश्राम की आवश्यकता का अनुभव कर रहा हो तब चाय पी कर उसे कृत्रिम रूप से उत्तेजित करना—अत्यन्त नाशक अभ्यास हैं।'

ब्रिटिश मेडिकल एसोसियेशन के अधिवेशन में भाग लेते हुए कैम्ब्रिज के डा० डब्ल्यू एफ़० डिक्सन कहते हैं—'स्नायु विकार के समस्त कारणों में 'कैफ़िन' नामक मादक द्रव्य का नियमित व्यवहार प्रधान है। चाय और काफी में यह 'कैफ़िन' रहता है। एक प्याला काफी में एक ग्रेन से भी अधिक कैफ़िन रहती है। अतः जो चाय पीने वाला व्यक्ति दिन भर में पांच से छः प्याले तक कैफ़िन ग्रहण करता है। चाय पीने से पाचन शक्ति निस्तेज हो जाती है। इसे 'टी (Tea) डिस्पेप्सिया' कहते हैं। अधिक चाय पान से अम्ल, पेट में काठिन्य, अनिन्द्रा, क्षुधामांद्य और हृदय रोग हो जाता है।'

डा० जानफिसर के मत में पहले उत्तेजना होते हुए चाय पान के परिणाम में अवसाद आवेगा ही; उस अवसाद को दूर करने के लिये फिर चाय पीनी पड़ेगी। इस उत्तेजना और अवसाद के चक्कर में पड़ कर पीने वाले की हालत शोचनीय हो जाती है। अजीर्ण, शिथिलता, कोष्ठबद्धता और मस्तिक विकृति हो जाती है। डा० जेवेटिउड के कथनानुसार ह्विस्की की बोतल और चाय के प्याले में से कौन अधिक मारात्मक है, यह बताना बहुत कठिन है। —'देश'

गुजराती

लहसन—

उपयोग—लहसन के अन्दर खट्टे रस के अतिरिक्त पांच रस होते हैं। इसलिये इसको रसोन कहते हैं। इस के कन्द में तीखा, पत्तों में कड़वा, बच में तीता और बीज में मधुर रस होता है। मुख्य रस इस का तीक्ष्ण होता है और विपाक कडुवा। लहसन में अस्थिसंधान के अतिरिक्त हृदय-रोग, जीर्णज्वर, शूल, अफ़ारा, गोला, शोथ, अर्श, कुष्ट, अग्निमांद्य, कृमि, वायु, श्वास तथा कफ़ रोगों को नष्ट करने की अभूतपूर्व शक्ति है।

गुण—लहसन पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, दस्तावर पाक और रस में मधुर है। नेत्रों के लिए हितकारी, बुद्धिवर्धक है। इसका अधिक काल तक निरन्तर सेवन करने से रक्त में उष्णता उत्पन्न हो जाती है और कभी २ रक्त पित्त भी पैदा हो जाता है। अस्तु दीर्घ काल तक निरन्तर इस का सेवन करने वालों को पित्त शान्ति के लिए कुछ काल के अनन्तर से विरेचन लेते रहना चाहिये।

प्रयोग—१—आधे तोला लहसन को घी अथवा तेल में तल कर व्यवहार करने से पक्षाघात अजीर्ण और वायु-व्याधियों को अत्यन्त लाभ होता है।

२—लहसन, सोंठ, नमोड़ना पत्र के क्वाथ का सेवन आमवात के लिये गुणकारी है।

३—तेल में तल कर लहसन का प्रयोग करने से अर्दित रोग दूर हो जाता है।

लहसन का व्यवहर करने वाले व्यक्ति को धूप, क्रोध दूध और गुड़ आदि पदार्थों से परहेज़ करना चाहिये।

—'आरोग्यसिन्धु'

मराठी

स्वास्थ्य और वस्त्र परिधान—अधिक वस्त्र पहनना केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं प्रत्युत स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है।

१—अधिक वस्त्र परिधान से शरीर की त्वचा पर्याप्त प्रकाश और वायु के सम्पर्क से वञ्चित रह जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२—इसके कारण त्वचा अपना स्वाभाविक कार्य स्वतन्त्रता पूर्वक नहीं कर पाती।

३—इससे रोग-प्रतिकारात्मक शक्ति क्षीण हो जाती है।

४—इससे शारीरिक उत्ताप भली भान्ति शरीर से बाहर नहीं निकल पाता।

५—इस से सूर्याभिघात जन्य मूर्च्छा (Sun stroke) और उत्ताप जन्य व्याधियों के आक्रमण की सम्भावना है।

६—इस से मांस पेशियों को अपना कार्य करने में बाधा उपस्थित होती है।

७—यह गले और पेट के लिए बन्धन स्वरूप बन जाता है।

८—इससे शरीर के स्वाभाविक विकास में असुविधा होती है।

९—इस से शीघ्र सर्दी लगने का अन्देशा रहता है।

१०—इस से शरीर को असुविधा होती है और वह नाजुक बन जाता है।

श्री पी० आर०, सोमण्ड 'यशवन्त'

मलयालम

आकाश धूलि—भूमि के ऊपरी भाग से धूलि हवा में उड़ कर फिर भूमि पर गिरती है। इस धूलि के अलावा आसमान से प्रत्येक पल में धूलि भूमि पर गिरती रहती है। शास्त्रवेता प्रोफसर निनिगडर के कथनानुसार प्रति दिन ५०००० टप धूलि भूमि पर गिरती है। यह धूलि वही है जो पुरातन काल से छिन्न भिन्न हुए भूभाग से अनन्त आकाश में उड़ती रहती है। कभी ऐसे ही भूभाग चमकते हुए भूशायी होते हमें दिखाई देते हैं। गिरने वाले ये पत्थर वजन में करीब सेर भर के होते हैं। द्रतिगति के कारण इनका एक बड़ा भारी हिस्सा चूर चूर हो जाता है। सन् १९३३ की २४ मार्च को सेर भर वजन का एक पत्थर गिरा था। लेकिन उस के आये हुए रास्ते में ६० मील की दूरी पर एक भारी धूलि पटल बचा हुआ था बादल के बराबर का यह धूलि पटल १००० मील लम्बा और चौड़ा मापा गया है। उस में कितने ही हजार नक्षत्र कण मिले होंगे। इस का हिसाब नहीं लग सकता। यह धूलि पटल क्रमशः आकर भूमि पर गिरते हैं। शास्त्रज्ञों के कथनानुसार इस प्रकार आकाश मण्डल से सारे वायु-मण्डल द्वारा प्रतिदिन २ करोड़ नक्षत्र कण पृथ्वी में समा जाते है।

श्री जी० एच० क्याट्रिल —'मातृभूमि'

तेलगु

नेत्र-व्यायाम—न्यूयार्क (अमरीका) निवासी एक विचित्र डाक्टर थे। आपने अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग नेत्र व्याधि ग्रस्त रोगियों को चङ्गा करने में बिताया है। सैकड़ों ऐसे व्यक्ति जो एक दो नहीं अनेकों वर्षों से ऐनक लगाया करते थे और जिन्हें यह विश्वास होगया था कि बिना ऐनक के वे देख ही नहीं सकते, वे अल्प समय में आश्चर्य जनक रूप से बिना ऐनक लगाते ही हर प्रकार की पुस्तकें पढ़ने लग गये। उदारमना डाक्टर ने अपने बहुत से स्वदेशवासियों को मरण पर्यन्त इस अद्भुत चिकित्सा प्रणाली में दीक्षित कर दिया। आज हम भी उस नेत्र व्यायाम प्रणाली का एक महत्व-पूर्ण अङ्ग पाठकों की सेवा में पेश करते हैं—

ये व्यायाम प्रात सायं और जब भी समय मिले सुविधानुसार किये जा सकते हैं। ये नेत्रों को दृढ़ और स्वस्थ बनाने के लिए है और साधारणत सभी नेत्र विकारों में उपयोगी सिद्ध होंगे। "आंखों के पट्ठों को भी शरीर के अन्य भागों की भाति व्यायाम की अवश्यकता है। वे मजबूत बनते हैं यदि उचित व्यायाम करें।" यही सिद्धान्त इस प्रणाली का मूल है।

(१) खड़े होकर अथवा बैठकर, बिना शिर हिलाये, आंखें घुमाकर बाईं ओर देखिये, और फिर दाईं ओर जहां तक देख सकते हैं। इस क्रिया को १२ बार दोहराइये।

(२) आंखें ऊपर की ओर उठाकर बाईं ओर और नीचे दाईं ओर दूर तक देखने का प्रयास कीजिये फिर नीचे बाईं और उपर दाईं ओर देखिये। इसका अभ्यास भी १२ महीने कीजिये।

इसके साथ ही यह बतला देना आवश्यक है कि इस व्यायाम के लिए किसी दीवार का नैकट्य उत्तम होगा। वहां खड़े होकर पहले दाईं, और तब बाईं और फर्श की ओर देखिये। इसके पश्चात ऊपरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और फिर निचले कोने की तरफ दृष्टि डालिये।
अनेक बार अभ्यास कीजिये!
प्रारम्भ में आप को नेत्र पट्टों की लचक पर
होगा, कुछ दिनों तक कुछ मीठी वेदना का
अनुभव होगा किन्तु फलस्वरूप आंखें बहुत कुछ
लाभ करेंगी।

—'कृष्ण'

कर्णाटकी

कैंसर (Cancer) चिकित्सोपाय—महाव्रण उत्पन्न होने वाली मुसीबतों को दूर करने के बहुत से डाक्टर उपाय ढूंढने में तल्लीन है। इस में अब तक की रिसर्चों से यह मालूम किया गया रोग आहार दोष से अन्तड़ियों में पैदा होने वाले उत्पन्न होता है। एक बार जब यह उत्पन्न हो जाय निवारण कष्टसाध्य हो जाता है। यदि इस समय चिकित्सा करें तो उससे केवल कुछ देर के लिए जा सकता है। लेकिन थोड़े दिनों के बाद ही बढ़ जाता है। इस का मूल कारण रक्त और ड़ियों में होने के कारण शस्त्र चिकित्साओं से दूर होता बाद में इस से मरण भी हो जाता है।

उपाय—रोग की बढ़ी हुई दशा में और जब कि सी औषधें सेवन कर निराश हो गए हों तब नवला' नामक जड़ी काम में लाने से जल्दी आ जाता है। यह निरुत्तेजक और विषरहित है। इसका वर्णन ईसा से १००० वर्ष पूर्व के लिखे हिन्दुओं के वैद्यक ग्रन्थों में मिलता है। इसके ईसा से ५०३वर्ष पूर्व संस्कृत में लिखे हुए ग्रन्थ (यह आज कल यूनाइटेड स्टेटस आफ अमेरिका के संग्रहालय में है) भी वर्णन मिलता है। वैद्य ग्रन्थों व्रण पर 'नागवला' का ही वर्णन आता है।

रोज दिन में फलों के रस के साथ एक चम्मच भर रस निकाल कर दोनों मिला कर चार बार पीना चाहिये। पहले के तीन दिनों में स्वच्छ पानी के सिवा कुछ आहार नहीं लेना चाहिये।

श्री. शङ्करानन्द शास्त्री विद्यावाचस्पति, —'प्रजामत'

अंग्रेज़ी

वैज्ञानिक दूध—

डा० कैश्वुसरू के० दादाचान जी ने दूध पर एक विचारपूर्ण लेख लिखा है। लेख में आपने यह सिद्ध किया है कि सर्वसाधारण को शुद्ध और सस्ता दूध आज कल प्राप्त करना सरल नहीं। अधिकांश जनता अशुद्ध दूध का व्यवहार करने ही के कारण भांति भांति के रोगों का शिकार बनती है। ऐसी परिस्थित में लोगों को सोयाबीन के दूध (Soya-bean milk) का व्यवहार करना चाहिये। सोया बीन गुणों में यू० पी० में उत्पन्न होने वाले 'लोबिया' नामक अन्न से बहुत कुछ मिलती है। हम उस लेख के कुछ उपयोगी अंशों का अनुवाद पाठकों की भेंट करते हैं।

बनाने की विधि—सोयाबीन का आटा—१ भाग, पानी—७ भाग। पानी को आग पर चढ़ा दीजिये, खौलने पर थोड़ा-थोड़ा आटा जल्दी-जल्दी उस में डालते जाइये और चम्मच से मिलाते जाइये। फिर १०-१२ मिनट तक उसे खौलाने के बाद उतार कर अलग रख दीजिये। आवश्यकतानुसार शकर मिला कर व्यवहार कीजिये। इस दूध को घर पर तैयार करने में एक पैसा प्रति सेर अधिक लागत न लगेगी।

तत्व—इस दूध में गाय और भैंस के सभी तत्व मौजूद है। विशेषता यह कि इन दूधों की भांति शीघ्र आक्रमणकारी कीटाणु इस पर अपना प्रभाव नहीं जमा सकते और नहीं यह दूषित रूप धारण कर आँतों को हानि ही पहुँचाता है। इस में ए० बी० डी० तीनों प्रकार के विटामिन मौजूद हैं, जिन की प्रत्येक मनुष्य के आहार में एकान्त आवश्यकता है।

यह सभी अवस्था में स्त्री पुरुषों और शिशुओं को सेवन कराया जा सकता है और साधारण दूध की अपेक्षा कहीं अधिक गुणकारी सिद्ध होगा। दुनिया के अधिकांश भागों में इस दूध की पोषण शक्ति का विश्लेषण करके परीक्षा भी हो चुकी है। चीन, जापान और कोरिया आदि देशों में यह दूध हज़ारों वर्ष से बनाया और व्यवहार में लाया जा रहा है।

—'बाम्बे क्रानिकल'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उर्दू

हैलत्थ आफ़िसरों का कर्तव्य—दूध मनुष्य का एक उत्तम आहार है। इसका ९७-९८ प्रतिशत शीघ्र पचकर शारीरक पोषण में काम आ जाता है। यह दान्त और अस्थियों को सुदृढ़ कर विकसित करता है क्योंकि चूने की मात्रा दूध में काफ़ी होता है। प्रोटीन—चर्बी पर्याप्त परिणाम में होने के कारण शरीर पोषण के लिये भी उत्तम है। अमरीका के प्रसिद्ध डाक्टर मेज़म्बी की गवेषणानुसार दूध प्रसूता स्त्रियों के लिए एकान्त आवश्यक है क्योंकि उनके लिये विटामिन डी की अपेक्षा ए की अधिक आवश्यकता है और इस में प्रचुरता के साथ मिलते हैं।

दूध मानव जीवन के लिए इतना आवश्यक है, फिर भी जैसा दूध आधुनिक काल में हमारे शहरों और गलियों में मिलता है: अधिकांश में उनके पीने से न पीना ही अच्छा है। दूध में बीसियों प्रकार के कीटाणु आक्रमण कर पोषित होते हैं। दूध वाले घोड़ी उसे गन्दे वर्तनों में लाकर शहर के दूकानदारों के हाथ बेचते है। वे इसे खुली और गन्दी कड़ाहियों में रखकर घण्टों मन्द आंच में खुला रखकर गर्म करते हैं। कितनी ही मक्खियां और सड़क की धूल इस में पड़ती है। टाइफ़ाइड ज्वर और यक्ष्मा के कीटाणुओं की सृष्टि इसमें एकत्र होकर स्वास्थ्य को नष्ट करती है। शहर निवासियों से रुपये ऐंठ कर उनके प्रबन्ध का ठेका लेनेवाली कमेटियां उनके लम्बे वेतन भोगी हेल्थ अफ़सर इस ओर जरा भी ध्यान नहीं देते। अगर ये कमेटियां ऐसे हेल्थ अफ़सरों को नहीं नियुक्त कर सकतीं जो ग़रीबों के घरों, हलवाइयों और दूध बेचने वालों के घर जाकर उन्हें स्वास्थ्य के सबक़ पढ़ा सकें तो उन्हें पशुशालाएं खोलकर नगर निवासियों के लिए उत्तम दूध ही का प्रबन्ध करना चाहिये। इस से म्यूनीसिपैलटी की आर्थिक अवस्था भी सुधर जायेगी और नागरिकों का स्वास्थ्य भी। —'हमदर्द सेहत'

गुरुमुखी

फूली नाशक योग—भुनी हुई फिटकरी ६ माशा, छोटी हड़ एक तोला, अर्क गुलाब १६ तोला। अर्क गुलाब में हड़ों को भिगोकर घोंट लें। इसके बाद फिटकरी खरल कर आंखों में अञ्जन की भांति लगावें। —'प्रीतम'

अब अमृतसर आने की ज़रूरत नहीं !

विज्ञापन, ट्रैक्ट, किताबें, परीक्षा के परचे, लेटर फार्म, लिफ़ाफे, बिलबुक, रसीद बुक, सब तरह के रजिस्टर, सब तरह के नोटिस—मतलब यह कि किसी किस्म की भी छपाई के काम के लिये आपको अमृतसर आने की ज़रूरत नहीं! आप घर बैठे एक पोस्टकार्ड पर आर्डर लिख कर नीचे लिखे पते पर भेज दें। आपका काम सुविधा के साथ हो जायगा।

दी खालसा प्रिंटिंग एजेंसी

कोट मुहम्मदशाह नं० ६

अमृतसर।

क्या यह सच नहीं है ? कि—

हरिद्वार का गंगाजल

सब प्रकार के रोगों (हैजा, तपेदिक, संग्रहणी दमा आदि) को अत्यन्त लाभकारी और सब प्रकार के महान् से महान् पापों से मुक्त कर, मोक्ष देने वाला सिद्ध हो चुका है। यदि आप को सन्देह है तो आजही, धार्मिक आयुर्वैदिक एलोपेथिक, योग और साहित्य के प्रमाणों सहित जिसमें आप देखेंगे किस प्रकार से केवल गंगा जल ६३ दिन सेवन कर तपेदिक को आराम हुआ भिन्न २ पश्चिमी डाक्टरों और भारतवर्षीय चिकित्सकों वैद्यों और डाक्टरों की सम्मतियां और परीक्षण, ऋषि मुनियों की प्रमाणों सहित गंगा जल की महत्ता, योगी जनों के विचार, शेक्सपियर जैसे साहित्यकों के मनोभाव

सचित्र गंगाजल पुस्तक में पढ़िये

लेखक—एम० पी० द्विवेदी

भूतपूर्व अध्यापक गुरुकुल यूनीवर्सिटी काङ्गड़ी

प्रकाशक—गङ्गाजल एजेन्सी हरिद्वार

P. O. Kankhal (Saharanpur)

मुफ्त मंगावें पोस्टेज के लिये) ।।। पैसे के टिकट भेजें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

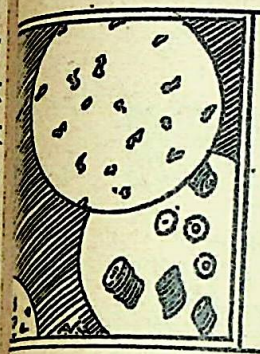

आधुनिक गवेषणाएँ

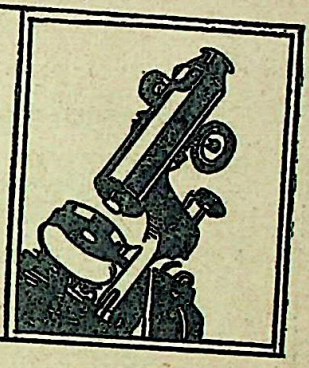

नक़ली रेशम का वैज्ञानिक महत्व

रेशम स्वास्थ्य के लिए कितनी हितकर है, शायद बात हिन्दुओं से छिपी नहीं। हिन्दू लोग काल से इसे शुद्ध और उपयोगी मानते चले हैं। रेशम का वस्त्र शरीर की विद्युत शक्ति सुरक्षित रखता है। आप ने देखा होगा कि लोग और ख़राब हुए बिजली के तारों पर इस को देते हैं। किन्तु आधुनिक काल में नकली का व्यवहार ज़ोरों से बढ़ता जा रहा है। योरोप विज्ञान वेत्ताओं ने इसे भी काफ़ी महत्वपूर्ण पाया है। एक महाशय ने कतिपय परीक्षणों आधार पर यह घोषित कर दिया है कि सूर्य की द रश्मियां बड़ी सरलता के साथ नक़ली के वस्त्रों को भेद कर शरीर को स्वस्थ रखने सहायता करती हैं। आप के ही शब्दों में—

ultra-violet rays of the Sun do not pene-Cottn, Woollen, Linen or real Silk Clo-, but fifty percent of them go through ial Silk.'

गठिया—

गठिया वात की व्याधि जीर्ण होने पर कठिनता होती है। एलोपैथी के अन्दर तो इस के प्रयोगों का अभाव ही है। इस पर चिरकाल विवाद चल रहे हैं। कुछ वैज्ञानिकों ने इस पुटेशियम (Potassiam) तत्व के कारण व्यवस्था की किन्तु अन्य डाक्टर ने अम्ल तत्व (acidity) के कारण इस का निषेध कर दिया। अधिकाँश चिकित्सक आज भी इस रोग के लिये आलू के प्रयोग को अचूक समझते हैं। कुछ लोग गठिया वात के रोगी को मधु मक्खी के डंक द्वारा कटा कर अच्छा करने की उक्ति में विश्वास रखते हैं। अभी हाल ही में एक अमरीकन डाक्टर ने सब प्रकार के गठिया वात को चंगा करने की घोषणा की है। वह केवल टखनों Ankles की मालिश द्वारा ही इसका इलाज करते हैं। ह्विसकी (Whiskey) आर सेब आदि अन्य औषधियों द्वारा तैयार किये गये पेय (Cider) का नुस्खा पुराना हो चुका है।

इन विलक्षण चिकित्सा साधनों में हमें डाक्टर B. Ray और डाक्टर Matthew का नूतन आविष्कृत साधन कुछ महत्वपूर्ण जंचता है। यह सरल भी है। डाक्टर Ray का कहना है कि दो ईंटों (Brickts) को आग में डाल कर बिल्कुल सुर्ख कर लीजिये। फिर उन्हें गम-गर्म निकाल कर किसी पुरानी बाल्टी में डाल दीजिये। बस जिस अङ्ग को सेंकना है, बाल्टी के मुंह पर रख दीजिये और कम्बल से ढक दीजिये! इसकी रश्मियां (Infrared rays) उन विद्युत-रश्मियों से बहुत बेहतर हैं जो बड़े बड़े यन्त्रों द्वारा प्रचुर धन व्यय कर प्राप्त की जाती हैं—यह डाक्टर साहब का विश्वास है। ईंट को गर्म कर सेंकने की व्यवस्था भारतीय दिहातों में अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित है। पाठकों को डाक्टर महोदय की इस उक्ति का अनुभव कर लाभ उठाना चाहिये!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

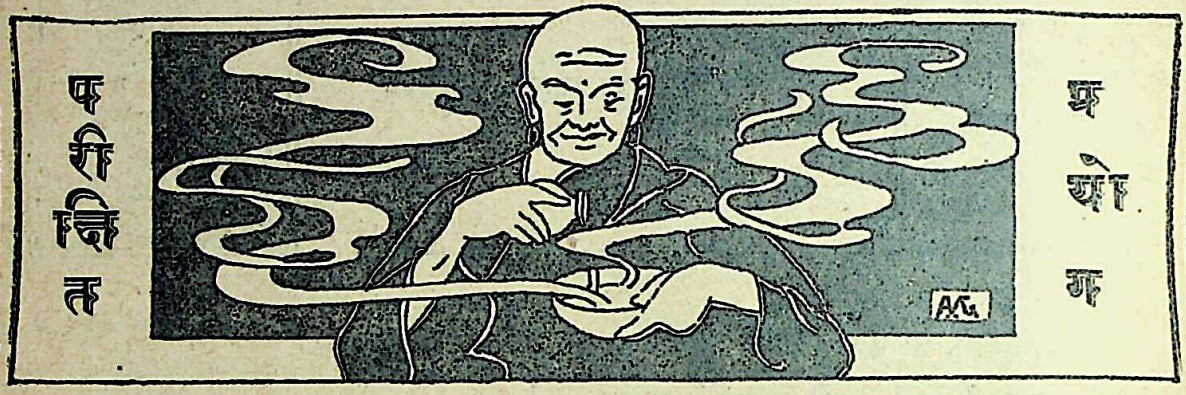

व्रण भरने वाला मरहम—

मीठा तैल ३ छ०, सिंदूर १ छ० मिला कर अग्नि पर चढ़ाओ, जब यह काला हो जाये, तब इस में एक छटांक सफेदा काशगरी मिला दें और नीम के पत्ते एक छटांक जला कर मिला दें यह मरहम व्रण भरने में बहुत उपयोगी है।

शिर के पाका के लिये—

सिर में जो छोटी २ फुन्सियां होती हैं और उन से सफेद रंग का अथवा पीले रंग का पानी निकलता है वह पानी जहां पर लगे फुन्सियां उत्पन्न करता है और चेपदार होता है। उसके लिये योग—

मुश्ककाफूर, छोटी इलायची, तवाशीर, सफेद चंदन, कत्था, कौलडोडे, गंधक यह सम भाग और बाबची मिला कर माखन में हल्ल करके लेप करो। ३ दिन के अन्दर ही लाभ होगा। प्रातः सायं नीम के काथ से धो कर साफ करो।

—हकीम वागुमल

काली खांसी—

छीछड़ा का पत्ता, काला नमक, भांग, अजवायन यह सब लेकर तवे पर भून लें और पीस कर शीशी में रखें। उचित मात्रा में देने से अधिकांश रोगियों को लाभ करती है।

—सुमेत्रा देवी वैद्या

तिला—

मीठा तैल पाव भर मिलावा १ छ०, अकरकराह १ तो०, लौं० ३ मा०, दालचीनी ३ मा०। तैल पिस्ता ३ मा० (संखिया भी मिला लें तो बढ़िया रहे।)

शूल तथा गुड़गुड़ नाशक बटी—

गंधक आमलासार २ तो०, दालचीनी २ तो०, जीरा सफेद ५ तो०, नवसादर १ तो० इन सब को कुमारी का रस डालकर घोटें। १ या २ चना बराबर गोली बना वर सेवन करें। शूल पेट की गुड़गुड़ तथा पेट विकार दूर होते हैं।

अजीर्ण नाशक

गंधक का तेजाव १ तो० शोरा २ तो० लें। दोनों को एक चीनी की प्यालो में डाल कर धूप में रख दें। जब तेजाब सूख जावे तो सूखे शोरा को निकाल लें और शीशी में रखें आवश्यकता पर २-३ रत्ती भर लें जल में मिला कर भोजन करने के बाद पिला दें बहुत अच्छा दीपन पाचन है। तज़र्बा करें।

—मेहरचन्द हकीम

फोड़ों के लिये

जंगाल २॥ तोला गन्दा बीरोजा ॥५

दोनों को मिलाकर कपड़े पर चुपड़ कर फोड़े पर चिपका दें। ५—६ बार लगाने से फोड़ा फूट कर बहने लगेगा। —किवराज श्री बालकृष्ण शर्मा शास्त्री

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाश्चात्य सभ्यता के रोग-२

गतांङ्क में हम पाठकों के सामने सिनेमा संसार की अभिनेत्रियों और अभिनेताओं के नैतिक पतन को दारुण दशा का उल्लेख कर चुके हैं। प्रस्तुत लेख में दर्शकों पर इस के संक्रमण और सत्यानाशी प्रभाव के सम्बन्ध में विवेचन करेंगे। आप आये दिन के व्यवहारिक जीवन में दुःख-सुख, घृणा-तिरस्कार आदि का अनुभव करते होंगे। यह भाव आप के अन्दर कैसे उत्पन्न होते हैं ज्ञानेन्द्रियों द्वारा! जब आप आंख द्वारा कोई वस्तु देखते अथवा कान द्वारा कोई दुखद सम्वाद सुनते हैं, उसी समय उक्त स्थानों के स्नायु तुरन्त अपने टेलीफून के द्वारा मस्तिष्क को सूचना देते हैं। मस्तिष्क उस ज्ञान प्राप्त कर तत्सम्बन्धी स्थानों को आगाह करता है और वे अपना २ काम प्रारम्भ कर देते हैं। आप ने किसी प्रियजन की मृत्यु का दुःख सम्बाद सुना। कानों के स्नायुओं ने मस्तिष्क को सूचना दी; मस्तिष्क ने आंसुओं को देख कर आनन्द का अनुभव करने वाली ग्रन्थियों को आकस्मिक वियोग से सूचित किया, वे आकुल हो उठीं। अश्रुजनक ग्रन्थियों पर दबाव पड़ा, वे अपना रस उबालने लगीं—दर्शकों ने देखा, चीख पड़े कि अरे वे तो रो रहे हैं! यह रोने का स्वाभाविक कार्य है। कभी कभी यह दबाव पड़ा करता है उस अवस्था में वे अपना रस बहाने के लिये विवश हो जाती हैं। आप किसी प्रकाश पुञ्ज पर दृष्टि जमावें. आंखों में पानी आ जावेंगे; आप की आंखों में कोई बाह्य पदार्थ धूलि आदि प्रवेश कर जाय, आँसू छलक पड़ेंगे! यही हुई बात है कि जब किसी वस्तु से अप्राकृतिक रूप से अधिक काम लिया जायगा, उस की शक्ति का अधिक व्यय होगा और वह दुर्बल हो जावेगी। इसी लिये भारतीय धर्मशास्त्रों ने उदय होते हुए बाल सूर्य को देखने का आदेश किया है। आप भी धूल और घाम से आत्मरक्षण में आंखें बन्द कर लेते हैं।

ढरका दो अपनी कुछ बूंदें मेरी सूखी स्याही में;
कुछ कम्पन पैदा कर दो तुम मम गाथा मन चाही में।

ठीक यही नियम हमारे समस्त शरीर में जहां भी ग्रन्थियां हैं लागू होता है। काम-केन्द्रों में ग्रन्थियां हैं अस्तु वहां भी यही सिद्धान्त काम करता है। जब हम किसी आकर्षक दृश्य को देखते हैं, किसी हल-चल पैदा करने वाले सङ्गीत को सुनते हैं अथवा सुरभित सुमन को सूंघते हैं तो मस्तिष्क काम ग्रन्थियों पर दबाव डालता है और वे अपने स्राव खारज कर वीर्य बनाने लगती हैं। हम सिनेमा में बैठ कर लोच भरी, चोज भरी, सुरीली रागिनियां सुनते हैं। लावण्यमयी ललाओं की अदाओं; उन के हाव भाव; और प्रेमालाप देखते हैं; उन के प्रेमियों की मद भरी आंखों का द्वन्द युद्ध निहारते हैं—उस अवस्था में हमारे कामाङ्गों पर दबाव पड़ता है। पुरुषों की शिश्न मूल, ग्रन्थियां (Cowper's gland) प्रास्टेट ग्रन्थि, शुक्राशय (was defeerens) और अण्ड (serticle) आदि अपनी रतूबत (Secretcon) खारिज कर वीर्य बनाने लग जाते हैं। स्त्रियों की योनि, योनिग्रन्थियां (Bartholnisglands) आदि भी स्रवित होती तथा कामाद्रि (bilitoris), डिम्बाशय (Oyaries) आदि के स्नायु उत्तेजित हो उठते हैं। स्वाभाविक रूप से यह उत्तेजना और वीर्योपादन उस समय होना चाहिये था जब स्त्री पुरुष गर्भाधान के लिए प्रस्तुत प्रतीक्षा पथ पर डटे हों! ऐसी अवस्था में होता क्या है? ग्रन्थियों द्वारा तैयार किया हुआ वीर्य शुक्राशय में पहुंच जाता है और वहीं वह एकत्रित होता रहता है। आपने अनुभव किया होगा कि जब आपका मसाना मूत्र से भर जाता है उस समय मूत्र त्यागे बिना आप को कितनी बेचैनी होती है। यही अवस्था वीर्य से भरे हुये शुक्राशय के समय भी होती है। वीर्य बाहर निकलने की कोशिश करता है, काम केन्द्रों में उत्तेजना होती है। आठों याम वही भूत सिर पर सवार रहता है। परिणाम स्वरूप कुछ लोग विवश होकर दुराचारी बन जाते हैं, कुछ अप्राकृतिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैथुन और हस्तक्रिया का शिकार बनते हैं और कुछ स्वप्नदोष की बेदी पर अपना सत्यानाश कर लेते हैं। कला के नाम पर कामुकता का शिकार बनकर इस भान्ति भारत का भावी राष्ट्र सिनेमा के पुण्य-तीर्थ पर अपने सदाचार, स्वास्थ्य और सौन्दर्य की भेंट समर्पित करता है। राष्ट्र की भावी निर्माण कर्त्रियों का भी यही हाल समझिये!

युवक और युवतियां दर्शक रूप में जो कुछ सिनेमा में देख कर जाते हैं। रात में घर पर कल्पना लोक में उसी का अभ्यास करते हैं। एक अनुभवी काम-विज्ञान वेत्ता के ही शब्दों में सुनिये —In the natura: course of things; the young man, especially if he is of an imaginative nature is Sure to call every night before his mental eyes the image of his partner and to contemplate the pleasures that are in Store for him. This works him up to a state of great Sexual excitement Causes an Undue frequency of night pollutions..... In some of the evorts cases the end is insanity or even Incide. भावार्थ यह है कि इस मानसिक व्यभिचार द्वारा नवयुवक स्वप्नदोष का शिकार बन कर अपने पुरुषत्व का मार्सिया पढ़ने लग जाते हैं। पुरुषत्व गवांकर जब वे भावी जीवन में अपनी पत्नी के सामने आते हैं तो असफलता और निराशा का धक्का खाकर कभी २ आत्मघात पर भी उतारू हो जाते हैं।

सिनेमा के दर्शक नौजवान और नवयुवतियों के मस्तिष्क में सदैव वही दृश्य चक्कर लगाया करते हैं। परिणाम स्वरूप वे अपने भावी जीवन को भी इसी औपन्यासक आधार पर चलाने की दृढ़ कल्पना कर लेते हैं। समय आता है, वे वैवाहिक बन्धन में बन्ध कर गार्हस्थ्य जीवन में प्रवेश करते हैं। यहां का दृश्य उससे बहुत हल्का और नीचा होता है। कल्पना और सत्य में आकाश पाताल का अनन्तर है। फलस्वरूप उनकी आशा निराशा में बदल जाती है, काल्पनिक धारणा सुख-स्वप्न की भान्ति टूट जाती है। और वे जीवन से विरक्त से हो जाते हैं। गार्हस्थ्य जीवन का समस्त सुख शान्ति जर्मन-समरस्थली में बदल जाता है; तलाक़, आत्मघात, क्षय, हिस्टीरिया पागलपन आदि अनेक उपद्रव उठकर जीवन को नष्ट कर देते हैं।

सिनेमा दर्शक प्रायः इसका आनन्द रात में (2nd show) में ही लेना पसन्द करते हैं. जब कि हाल में तिल डालने की जगह न हो। हाल की बनावट ऐसी होती है कि उस में खुली हवा का स्वच्छन्दता-पूर्वक आगमन बन्द रहता है। बाहर की झांकियां सिनेमा वाले बाहरी प्रकाश को रोकने के लिये बन्द कर देते हैं। परिणाम यह होता है कि उस नपे तुले हाल में हज़ारों व्यक्ति सांस छोड़ते हैं और इसी दूषित वायु को पुनः ग्रहण करते हैं। इतना ही नहीं लोग सिगार और सिगरेट के धुएं से इसे विषाक्त बनाने में कोई कसर नहीं रखते। यही कारण है कि सिनेमा के शौक़ीन प्रायः कब्ज़ी, शिर दर्द और रक्त विकार से पीड़ित रहते हैं।

आयुर्वेद शास्त्र बतलाता है कि रात्रि जागरण से वायु कुपित होता है और दिवाशयन से दूषित होता है कफ़! आधुनिक विज्ञान भी रात्रि के प्रथम प्रहर की नींद को अधिक ताज़गी बख्श और स्वास्थ्य सुधारक बतलाता है। किन्तु सिनेमा प्रेमी करते हैं इस के एकान्त विपरीति। फलतः स्वास्थ्य का सत्यानाश हो जाता है।

व्यसन उन्नति का घातक है और जीवन की अनियमितता का ऐजन्ट! वेश्यागमन और सुरापान की भांति इसका भी चस्का एक बार दामन पकड़ कर छोड़ने का नाम नहीं लेता। हमारे आधुनिक कालेज और स्कूल के विद्यार्थी बहुत बुरी तरह से इस बला में फंस चुके हैं। इन सेनेमाओं ने अपने विष का संक्रमण जितना भारत राष्ट्र के नर्म विद्यार्थियों में किया है कदाचित अन्यत्र नहीं। यह कारण है कि वे एक क्लास में दो दो बार फेल होते हैं। उनके चेहरे की चमक भरी जवानी में ही चलती फिरती नज़र आती है। मां बाप समझते हैं विद्याध्यन के कठोर परिश्रम से बेटा कमज़ोर होता जारहा है। उन विचारों को क्या पता कि बेटे की जड़ में सिनेमा व्याधि का वह विषाक्त घुन घर कर गया है जो उन का सर्वस्व छीन कर ही पीछा छोड़ेगा!

हम आये दिन देखते हैं कि हमारे समाज के गण्यमान्य महाशय और समाज सुधारक सभी समान रूप से अपने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क बच्चों; मर्म-प्राण महिलाओं और लड़कियों नोरञ्जन के लिए एक दो बार अवश्य इस पुण्य-पावन ा दर्शन कराते हैं वे वे अपने साथ किसी उच्च आदर्श वे के बजाय अपना मास्तिष्क और हृदय गन्दा कर ेती हैं। मनुष्य की यह प्रवृत्ति होती है कि वह ी अपेक्षा बुराई की ओर जल्दी झुकता है और उसे भी जल्दी करता है। फिर आधुनिक दासता के युग ज प्रियता की तंग तारीक गलियों से गुजरने वाला ञ्जल की कोठरी में पैठकर किस भांति कोरा निकल ा-समझ में नहीं आता। हमारे सभी कार्य कलाप ेट हैं। वायुमण्डल भी दिनों दिन विषाक्त बनता ा है। हम भी उसे छोड़ने के लिये प्रस्तुत नहीं। हम चाहते हैं कि हमारे लड़के राम और लक्ष्मण की बनें और पुत्रियां सीता के चरण चिह्नों का ण करें! सोचिये कैसी निकम्मी आशा है और विचित्र धारणा है। काक मण्डली में बैठ कर हंस की भांति नीर-क्षीर को विवेक शक्ति प्राप्त करना दुराशा नहीं तो और क्या है?

आप यदि भारत भाग्य को बदलना चाहते हैं, समाज की अधोमुखी गति को पलटना चाहते हैं तो उसकी भावनाओं का परिष्कार कीजिये! वातावरण की कामुक अग्नि को विवेक जल से शान्ति कीजिये, कला के नाम पर कामुकता की ढोल पीटने वाले सिनेमा घरों को कुछ दिन के लिए मल्लशालाओं में बदल दीजिये। भारत को इस महंगी पेंचीदा शिक्षा की जरूरत नहीं। यह अय्याशी के चोचले हैं, वैभव सम्पन्न राष्ट्रों के मनोरञ्जन हैं, निठल्ले अमीरों के समय काटने के साधन हैं। जहां की जन संख्या का एक बड़ा भाग रोटी-रोटी चिल्ला रहा हो, जहां के प्रतिभाशाली ग्रेज्युयेट कुलीगीरी और पोस्टमैनी की उम्मीद वारी करते हों उस अभागे भारत के लिये सिनेमा कला नहीं कलङ्क है—काल है!

योजना! सनसनी पूर्ण साहित्य!! ज्ञानवर्धक सामग्री!!!

काम-विज्ञानांक

'आयुर्वेद संसार' का यह अङ्क बड़ी सज धज के साथ प्रकाशित होगा।

इस अंक में क्या होगा?

रक्त में गर्मी पैदा करने वाले नयनाभिराम चित्र! हृदय म गुद गुदी पैदा करने वाली कविताएं! पैर में हलचल मचा देने वाले लेख! इस अकेले अङ्क में आपको वह अभूतपूर्व सुपाठ्य सामग्री मिलेगी जिसे आज तक आप काम शास्त्रों में नहीं पा सके!

इस अंक का मू० १)

इस अंक में

भारत के प्रायः सभी काम-विज्ञानवेत्ता और विदेशी विदुषियां अपनी जादू भरी लेखनी के जौहर दिखायेंगी।

इस अंक का मू० १)

१५ दिसम्बर तक ग्राहक बनने वालों को यह अङ्क मुफ्त भेंट किया जायगा। जो महाशय केवल अङ्क लेना चाहते हैं उन्हें एक कार्ड कार्यालय में भेज कर तुरन्त अपना नाम लिखा देना चाहिये।

विज्ञापन दाताओं को स्थान और एजन्टों को कापियों की संख्या अभी से रिज़र्व करा लेना चाहिये।

मैनेजर—'आयुर्वेद संसार' अमृतसर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रदर्शिनी

इस वर्ष अखिल भारतवर्षीय सम्मेलन का २६ वां अधिवेशन ता० १८-१९-२० दिसम्बर को हिन्दू विश्वविद्यालय काशी में होगा। यह नगर अत्यन्त प्राचीन काल से हिन्दू संस्कृति का केन्द्र रहा है। आयुर्वेद के विख्यात महर्षि काशिराज दिवोदास धन्वन्तरि ने यहीं से आयुर्वेद की दुन्दुभि बजाई थी जिस ने सारे संसार को इस ज्ञान में दीक्षित किया है। इस पुण्यतम नगरी में प्रति वर्ष सहस्रों श्रद्धालु गङ्गा स्नान तथा श्री विश्वनाथ जी के दर्शनार्थ आते हैं। अतएव यह आशा की जाती है कि इस वर्ष सम्मेलन में दूर दूर से विद्वान् लोग पधारेंगे।

इस अवसर पर आयुर्वेदीय प्रदर्शिनी का भी आयोजन किया गया है। प्रदर्शिनी का मुख्य उद्देश्य वनौषधियों, खनिज पदार्थादि का संग्रह कर विद्वानों के निर्णयार्थ उपस्थित करना है। हस्तलिखित ग्रन्थ, विशेष औषधि तथा निर्माण पद्धतियों के प्रदर्शन का भी प्रबन्ध किया गया है। अतएव जो व्यक्ति तथा औषधनिर्माण शाला अपनी वस्तुओं, ग्रन्थ, निर्माण क्रम इत्यादि का प्रदर्शन करना चाहें वे "मन्त्री प्रदर्शन विभाग, अथवा प्रिंसिपल आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दूविश्व-विद्यालय, काशी" से पत्र-व्यवहार करें तथा पूरी जानकारी के लिये एक आने का टिकट भेज कर हमारे आफिस से नियमावली मंगा लें।

निवेदक—डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा,
B. Sc. M. B. B. S.
प्रदर्शन—मन्त्री।

मूत्र विज्ञान

श्रीयुत आशानन्द पञ्चरत्न जी के नाम से वैद्य संसार में कौन अनभिज्ञ है। इन की पूर्व कृतियां [व्याधि विज्ञान, सूची वैद्य चिकित्सा आदि] की प्रशंसा साधारण वैद्यों से ले कर श्रीयुत महामहोपाध्याय गणनाथ सेन, श्री लक्ष्मी नारायण जी स्वामी, श्री यादव जी त्रिकम जी आचार्य जैसे उच्च कोटी के वैद्यों द्वारा एक स्वर तथा मुक्त कण्ठ से की गई है। उन की यह नूतन कृति [मूत्र विज्ञान] पूर्व कृतियों से भी उत्तम और श्रेष्ठ है। इस में उन की पाश्चात्य और प्रतीच्य दोनों विज्ञानों की विद्वत्ता का पूरा २ परिचय मिलता है। इस में दोनों [प्राचीन और अर्वाचीन] विधियों से मूत्र परीक्षा का वर्णन किया गया है। हिन्दी भाषा में, मूत्र परीक्षा पर आज तक ऐसी अनुपम और उपयोगी पुस्तक नहीं लिखी गई। आधुनिक विधि से भौतिक रासायनिक और अणुवीक्ष्य परीक्षा का वर्णन बड़ी सरलता और सुन्दरता से किया गया है। अद्यावधि जितनी भी मूत्र सम्बन्धी परीक्षाएं, जो साधारण और सुलभ्य सामग्री से की जा सकती है, उन का वर्णन सुगम्य और सुचारु रूप से किया गया है। मधुमेह के लिए मूत्र में शर्करा की साधारण व मान परीक्षा वृक्क रोगों में एलब्युमिन परीक्षा वा यूरिया की मान परीक्षा, विषम ज्वर (Malaria) टाइफाइड की मूत्र द्वारा सिद्ध करने की परीक्षा, और गर्भिणी की परीक्षा आदि २ अनेक विषयों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। यह भी बता दिया गया है कि अणुवीक्षण-यन्त्र द्वारा मूत्र परीक्षा कैसे की जाती है तथा इस विधि से मूत्र में उपस्थित भिन्न २ पदार्थों की परस्पर पहिचान कैसे की जाती है। वैद्यक विधियों के अनुसार वर्ण परीक्षा से तथा तैल परीक्षा से सन्निपात ज्वर तथा अरिष्ट लक्षणों की पहचान कैसे की जाती है इन को भी पूर्णतया दर्शाया गया है। पुस्तक को सर्वाङ्ग पूर्ण करने के लिए तथा विद्यार्थियों और वैद्यों के लिये अतीव उपयोगी और लाभप्रद बनाने के लिये पुस्तक में स्थान २ पर रंगीन और साधारण तीस के लग भग ब्लाक दिये गये हैं। इतनी विशेषताएं होने पर भी इस का मूल्य केवल १) रुपया रक्खा गया है।

मिलने का पता—सूरी ब्रदर्स, अदर मोरीगेट, लाहौर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अ० भा० वैद्य सम्मेलन

अखिल भारतीय वैद्य-सम्मेलन का २६ वाँ अधिवेशन ता० १८, १९, २० दिसम्बर १९३६ को हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी में होगा। स्वागत कारिणी-समिति इसकी सफलता के लिये सतत प्रयत्नशील है। गत ता० २१ अक्तूबर को उस की कार्य्य कारिणी-समिति का अधिवेशन श्रीमान् राजा ज्वालाप्रसाद के सभापतित्व में हुआ, जिस में सम्मेलन के पण्डाल, प्रदर्शिनी तथा प्रतिनिधियों के ठहराने की व्यवस्था और निबन्ध-समिति की रिपोर्ट पर विचार हुआ। निबन्ध के लिये निम्नलिखित विषय सर्वसम्मति से निश्चित हुये।

(१) त्रिदोष-विज्ञानं, पञ्च महाभूत विज्ञान सहितम्।

(२) धात्री विद्या प्रसव विज्ञान विशिष्टा।

(३) सचिकित्सितं नेत्र रोग-विज्ञानम्।

(४) पञ्च कर्म्म।

(५) जन पदोध्द्वंसः (बेरिबेरी, कालरा, प्लेग, इन्फ्लुएञ्जप्रभृत्यङ्ग चिकित्सक प्रणिगदिता गदा आस्मानं तन्त्रे कैः कैः नामभि रुपात्ताः इत्यादि सहित) प्रमाणः सचिकित्सितः।

विद्वानों से सादर निवेदन है कि उक्त विषयों पर अपने विद्वत्ता-पूर्ण लेख लिख कर अनुगृहीत करें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में सहायक हों। निबन्ध ता० १० दिसम्बर तक कार्य्यालय में पहुंच जाना चाहिये।

आयुर्वेदीय-प्रदर्शिनी की सफलता भी आप लोगों के साहाय्य पर ही निर्भर है। उस के लिये विशिष्ट द्रव्य ता० १८ नवम्बर के पहिले ही भेज देना चाहिये। प्रदर्शिनी के नियम तथा द्रव्य भेजने के फार्म महामण्डल के समस्त सदस्यों तथा फ़ोरेस्ट डिपार्टमेन्टस (Foves Departments) एवं औषध निर्माण शालाओं के अधिकारियों के पास भेजे जा रहे हैं। जिन के यह फ़ार्म हों वह वह कृपया आफ़िस से मंगा लें।

जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी
मन्त्री।

स्नातक मंडल के प्रस्ताव

श्री दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज लाहौर के स्नातक मंडल की अतरङ्ग सभा की एक बैठक ता० ४-११-३२ को प्रो० हरदयाल जी वैद्य वाचस्पति की सभापतित्व में हुई। कविराज ज्ञानचन्द जी पठानकोट की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास हुवा। (कविराज जी आयुर्वेद के प्रसिद्ध लेखक थे, वह आयुर्वेद के अधिकांश पत्रों में लिखा करते थे, इस के पश्चात् भाई रामरखा छात्र प्रथम वर्ष द० आ० कालेज की वैश्नोदेवी विद्युत दुर्घटना के कारण आसामयिक मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास हुवा। (यह दुर्घटना वैश्नों देवी के रास्ते में छात्रों को बूटियां देखते हुवे। नवम्बर १३ को हुई)।

(१) सर्व सम्मति से पास हुवा कि आयुर्वेद के प्रचार के लिये समाज मन्दिर में जन साधारण के लिये व्याख्यान हों और विषय 'दीर्घ जीवन के उपाय" निश्चित हुवा।

(२) निश्चय हुवा कि स्नातकों की एक डायरैक्टरी बनाई जावे। जो स्नातक ब्लाक छपाना चाहें उन्हें ब्लाक और ५) रुपया भेज देने चाहिये।

(३) निश्चय हुआ कि गत मीटिंग में पास प्रस्ताओं (वह लोग जो चिकित्सक न होते हुवे भी औषधियां बांटने व बेचते हैं न बेचें और सरकारी नौकरी प्रावेट प्रैक्टस न करें) कोई क्रियात्मक रूप में लाने के लिये निम्न लिखित स्नातकों का डैपुटेशन मिनिस्टर लोकल सैल्फ गवर्नमेंट से मिले। आचार्य सुरेन्द्रमोहन जी, प्रो० हरदयाल जी, डा० थापर साहिब, क० हरनामदास जी, क० बालकृष्ण जी अमृतसर, क० सत्यदेव जी जालंधर, क० मेराश्वरसिंह, क० हरिकृष्ण मन्त्री।

(४) मण्डल के लिये आम अपील करके धन संग्रह करने का निश्चय हुआ।

(५) डी० ए० वी० कालेज से प्रार्थना की जावे कि वह ऐलोपैथिक चिकित्सा के साथ साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा का प्रबंध करे।

—मन्त्री कविराज हरिकृष्ण सहगल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदय पर निबन्ध

श्री दयानन्द आयुर्वैदिक कालेज स्नातक मंडल ने इस वर्ष हृदय पर एक निबन्ध लिखाने का निश्चय किय है। प्रथम आने वाले को एक स्वर्ण पदक दिया जावेगा निबन्ध हिन्दी में हो ने चाहियें। रजिष्ट्री द्वारा आचार्य जी को आने चाहियें। नाम निबन्ध के केवल टाइटल पेज पर रहना चाहिये। निबन्ध ३१ दिसम्बर १९३६ तक आ जाने चाहियें। केवल स्नातकों को लिखने का अधिकार है।

मंत्री
कविराज हरिकृष्ण सहगल लाहौर

जल्दी करने वालों को विशेष मौका—

गैरंटीड बंटवारा १०००) रुपया

दाखिला बन्द की तारीख १०-११-३६ और नतीजा १७-११-३६ को

पन्द्रह वर्ष से निकलने वाली 'इन्दु-गल्प-माला'—विद्वान-विज्ञ, राजा-प्रजा, सब की प्रिय—एक प्रतिष्ठित मासिक-पत्रिका है। अग्रिम वार्षिक मूल्य सिर्फ ३) रु० है, छ मास का १।।।) और तीन मास का १) प्रचारार्थ इसके १६ वें साल के उपलक्ष में १) भेज 'तीन मास' के ग्राहक होने वाले नये ग्राहकों में, इस बार १०००) रु० इनाम बाँटा जायगा। बहुत सम्भव है कि सब से बड़ा इनाम ५०००) या छोटा १०००), ५००) आदि का कोई इनाम आप ही के शुभ भाग्य में निकल आवे। सो, अपना नाम-पता साफ़ लिख १) रुपया मनीआर्डर से शीघ्र भेजें, दोनों हाथ लाभ लें। छ महीना के ग्राहक होने वाले, जो १।।।) भेजेंगे, बटवारा में दो नाम-इनाम के हकदार होंगे। वी० पी० नहीं जायगी। मैनेजर के आखिरी निर्णय के साथ नतीजा इसी पत्रिका द्वारा सब ग्राहकों को मालूम होगा। आप भी जल्दी करें।

पता—मैनेजर 'इंदु-गल्प-माला'—कार्यालय, नई सड़क, बनारस सिटी

१५००) रुपया का गैरंटी इनाम

दाखिला फीस २), बंद होने की तारीख २५-१०-३६, नतीजा—ता० ३१-१०-३६

×	×	प	र	मराठी नगर
×	×	पु	र	देशी राज्य
	×	क	×	प्रमुख नगर
ब	×	×		तीर्थ स्थान

बगल में चार स्टेशन हैं, इनमें × वाले छूटे अक्षरों को भर कर भेजो। ठीक जवाब, सील बन्द कवर में हमारे आफिस में रखा है। उत्तर उससे मिलना चाहिये। दाखिला-फीस प्रति १) के साथ चाहे जितने जवाब मनिआर्डर से भेज सकते हैं। जवाब कूपन में भी लिख सकते हैं। सही जवाब वाले को १०००) रु० इनाम मिलेगा। एक से अधिक सही जवाब वाले को २५०) इनाम। एक से अधिक सही जवाब आने पर, उनमें ये इनाम बराबर बाँट दिये जायँगे। पर यह गैरंटीड है कि सही जवाब वाला १००) से कम न पावेगा। सबसे अधिक दाखिला भेजने वाले ५ जनों को ५०), ५०) का अलग इनाम भी मिलेगा। इनाम प्रवेश-संख्या के अनुसार खर्च बाद कर बटेगा। मैनेजर का निर्णय हर मामले में कानूनन मान्य होगा। यह इनाम हमारे प्रसिद्ध 'पुष्पराज-नेत्रामृत' के प्रचारार्थ दिया जायगा। जिसकी १ पुड़िया, प्रत्येक दाखिला-फीस भेजने वाले को नतीजा के साथ भेजी जायगी।

पता—मैनेजर, 'पुष्पराज-कार्यालय' गोंबर्द्धन स्ट्रीट, बनारस सिटी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सस्ती, सुन्दर और शास्त्रोक्त औषधियों, पुस्तकों वनौषधियां
एवं लाइसेंस की चीजें बेचने वाली भारत की
सब से बड़ी और प्रमाणिक संस्था—

श्री प्रताप आयुर्वैदिक फार्मेसी लिमिटेड

अमृतसर 'पंजाब'

कुछ परिचयात्मक चित्र

हमारे कुछ कृपालु प्रेमी प्रायः पूछा करते हैं कि फार्मेसी इतनी सस्ती औषधियां कैसे दे पाती है। उनकी उत्सुकता को शान्त करने लिए हम यहां फार्मेसी के कतिपय विभागों के चित्र प्रकाशित कर रहे हैं। हमारे कार्य की विशालता, क्रियाशीलता और तत्परता का ठीक प्रमाण देने वाले यह चित्र आपको बता देंगे कि हमारा कार्य कितना नियमित और कितने बड़े पैमाने पर होता है। फार्मेसी के प्रत्येक विभाग के पृथक् पृथक् अध्यक्ष हैं—और वे सदा आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए तत्पर रहते हैं।

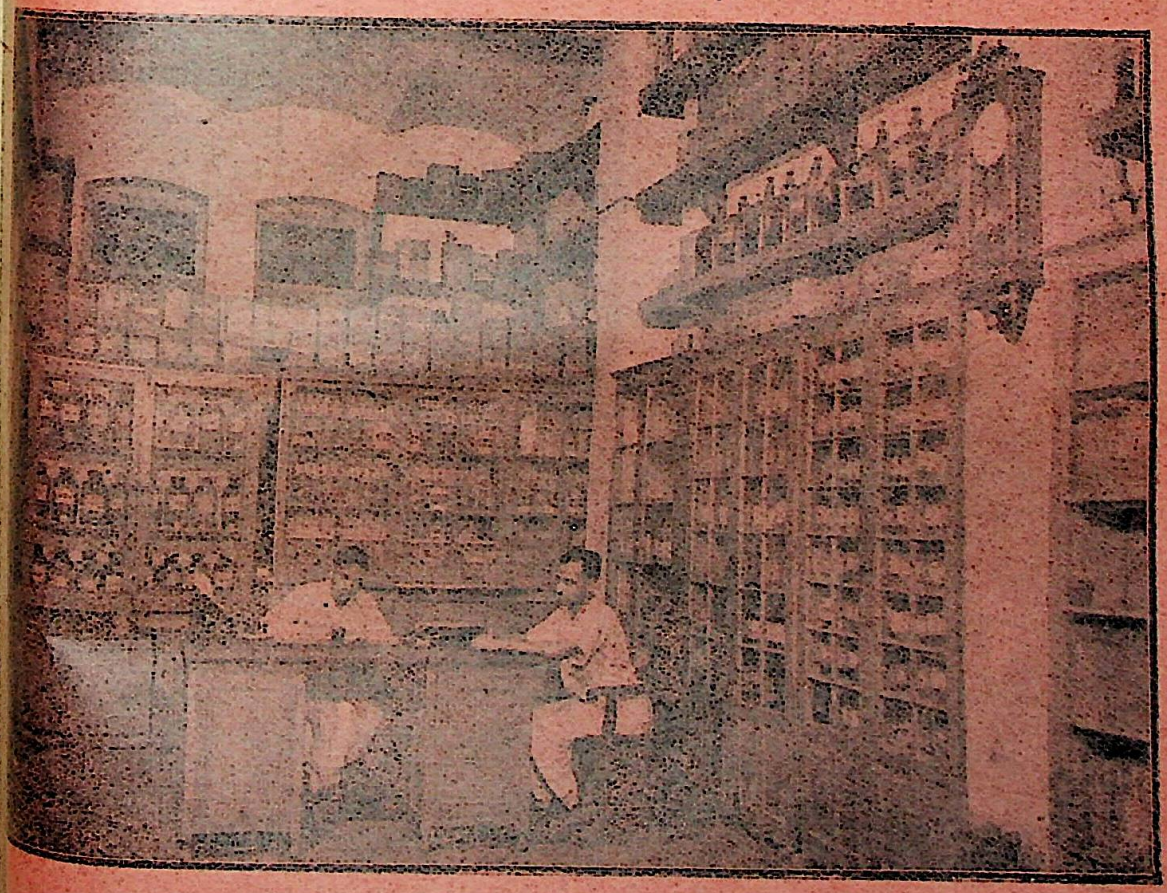

कार्यालय की एक झांकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैद्य महानुभावों से—

आज भारत में कितने ही ऐसे यशस्वी आयुर्वेद चिकित्सक मौजूद हैं, जो बड़े बड़े दुःसाध्य रोगों को अपने चुटकलों से ही चङ्गा कर देते हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों और डाक्टरों की बुद्धि जहां चकरा जाती है, वहां उनकी दो चार गोलियां ही सारे गोलमाल को दुरुस्त कर देती हैं। फिर भी हमारे देशवासी उनसे समुचित लाभ नहीं उठा पाते! कारण आधुनिक डाक्टरों की भांति जनसाधारण तक उनके सम्बाद को पहुंचाने के लिए, विपद्-ग्रस्त लोगों से उनका परिचय कराने के लिए बेचारे वैद्य समाज के पास कोई साधन सुलभ नहीं।

इसके अतिरिक्त कितने ही प्रान्तों में आयुर्वेद शास्त्र की अनेकों रामबाण बूटियां प्रचुरता से पैदा होती हैं, अनेकों वैद्य भांति भांति के शोध और अचूक औषधियों का अन्वेषण करते हैं, परन्तु पारस्परिक परिचय न होने के कारण वे वैद्यसमाज तक ही नहीं पहुंच पाती फिर जनसाधारण का तो कहना ही क्या!

इन्हीं समस्त त्रुटियों को दूर कर परस्पर निकटवर्ती सम्बन्ध स्थापित करने के लिए, वैद्यों को जन साधारण से परिचित कराके, भारत के कोने-कोने में आयुर्वेद सन्देश सुनाने के लिए, हमने कई एक वैद्यों की वृहद् डायरेक्टरी प्रकाशित करने का विशाल आयोजन किया है! इसमें हम प्रत्येक वैद्य के जीवन का संक्षिप्त विवरण, पता, चित्र और उनका एक अनुभूतयोग प्रकाशित करना चाहते हैं। समस्त वैद्य महानुभावों से प्रार्थना है कि वे शीघ्र अपने संक्षिप्त परिचय के साथ एक अनुभूत प्रयोग और चित्र हमारे पास शीघ्र भेजने की कृपा करें।

मैनेजर--श्री प्रताप आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी लिमिटेड, अमृतसर

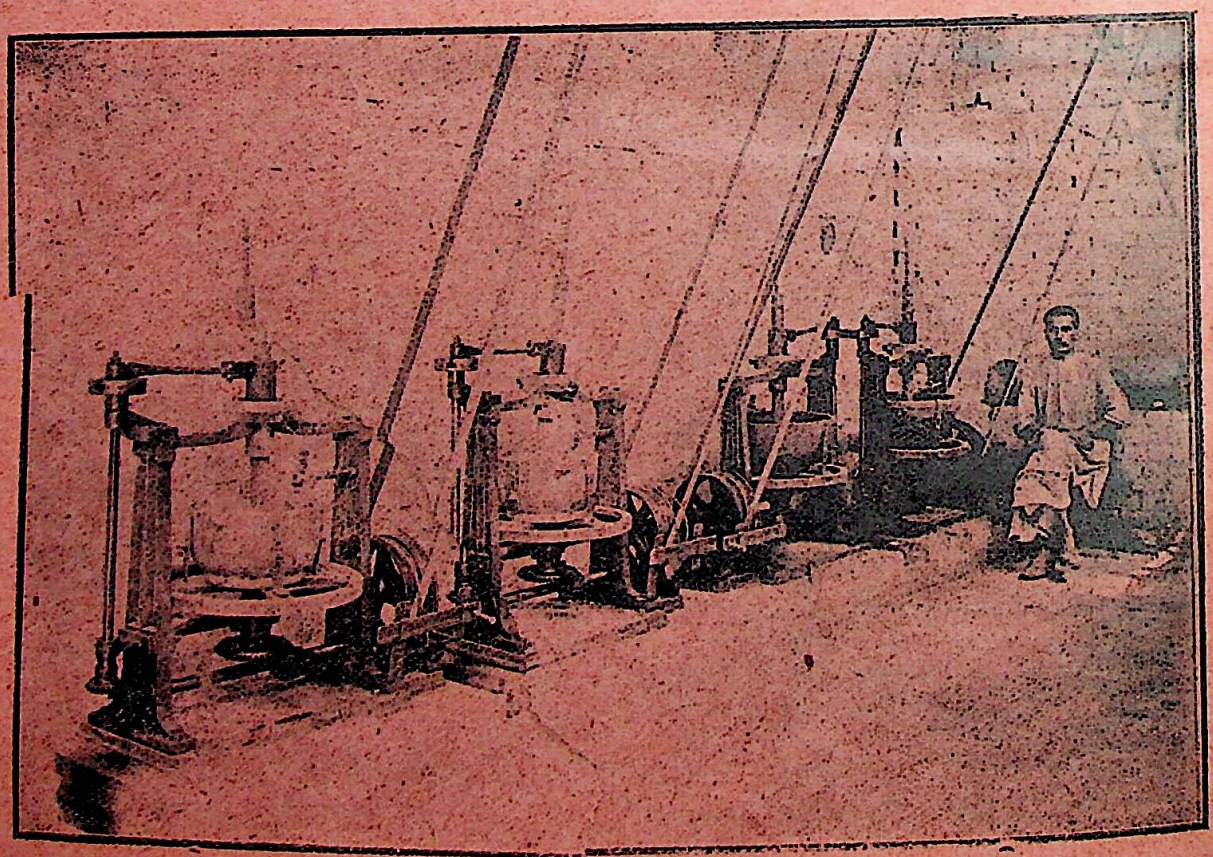

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

औषधियां कूटने, पीसने, खरल करने रस निकालने और गोली बनाने वाली आदि मशीन सैकड़ोंमनुष्यों के मासिक कार्य को एक दिन में कर डालती है। इनकी एक बड़ी विशेषता यह है कि औषधियों की विशुद्धता की गारण्टी मनुष्यों से अधिक दे सकती हैं।

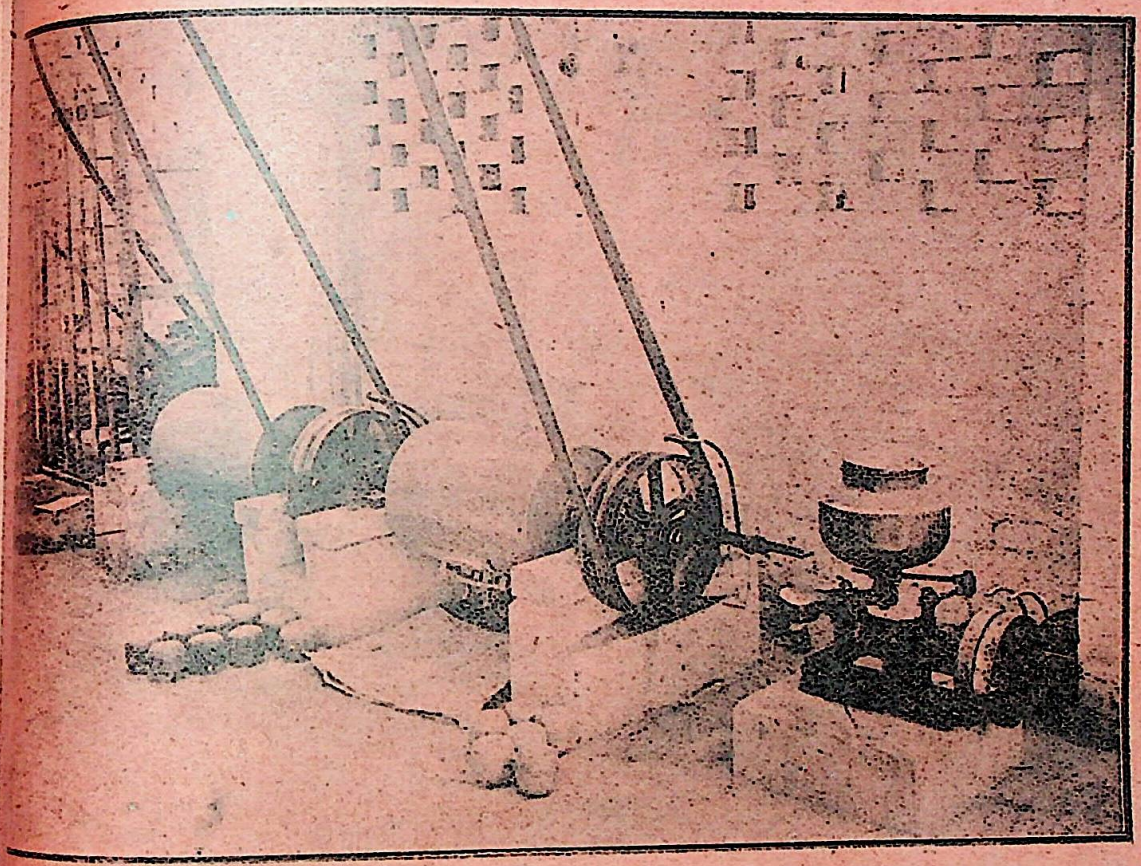

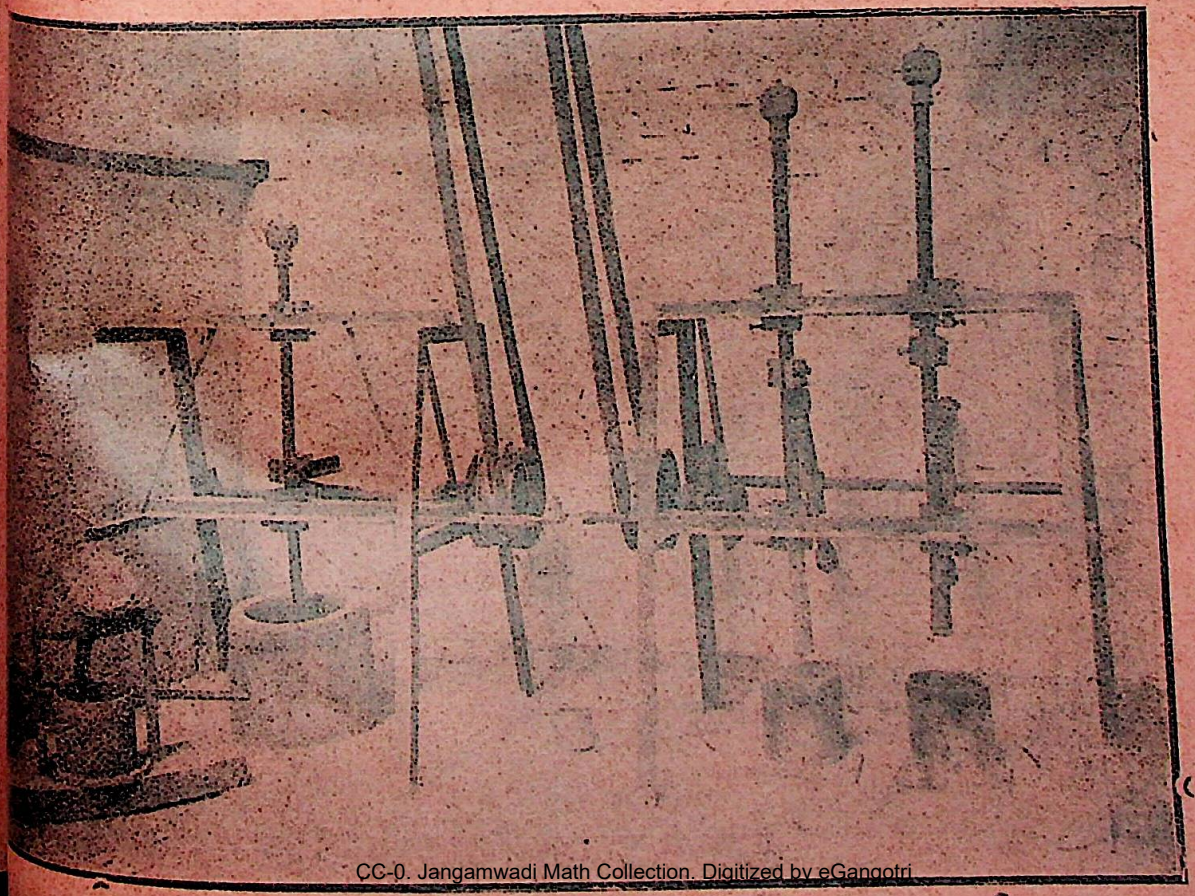

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गिराने वाले नामधारी वैद्यों ने आयुर्वेद में इतनी गड़बड़ी पैदा कर दी है कि साधारण जनता के लिए उत्तम शास्त्रीय औषधि पर विश्वास करना एक अत्यन्त कठिन समस्या बन गई है। एक वैद्य मकरध्वज को १५) रु० तोला बेचता है तो दूसरा उसके साथ "सिद्ध" का विशेषण जोड़ कर ५०) रुपये ऐंठता और तीसरा "राज मकरध्वज" कह कर ६० रुपये, तोला लागत मूल्य बतलाता है। बोलिये, ऐसी विषम परिस्थित में आयुर्वेद का प्रचार और उद्धार कैसे हो ? शताब्दियों से कराल काल की चक्की में पिलने वाला उपेक्षित तिरस्कृत जीर्ण शीर्ण आयुर्वेद एलोपेथि, होम्योपेथी, आदि के सम्मुख सिर ऊंचा कर किस भांति खड़ा रहे !

एक नहीं, दो नहीं, सौ नहीं, हजार नहीं,
हमारे सीने में दागों का कुछ शुमार नहीं !

बोलिये ! इतनी अड़चनों के होने पर, अर्थ सङ्कट के इस काल में सस्तेपन का प्रश्न ऐसा विकट है, जो औषधि के बाज़ार में हमारे पैर जमने नहीं देता। मशीनरी के इस युग में जब कि अन्य चिकित्सा प्रणालियां मशीनों और कलों का आश्रय ग्रहण कर महीनों में कुट-पिस कर तैयार होने वाली औषधियां अत्यन्त अल्पकाल में एक दो व्यक्तियों की सहायता से घण्टों में तैयार कर देती हैं; हम खरल,हावन दस्ता और हाथों के बल पर प्रचुर धन और जन के सहारे वही मंजिल महीनों में तय कर पाते हैं ! फिर प्रतियोगिता, सस्तेपन और सुन्दरता के मैदान में हम उनके मुकाबिले का दम कैसे भरें ? असहाय,निरीह,जीर्ण-शीर्ण, दीन-दुखिया आयुर्वेद राजकीय प्रोत्सहित और पृष्ट पोषित पैथियों का सामना कैसे करे ?

हमारा प्रयास

बस, इन समस्त न्यूनताओं की पूर्ति के लिए, महर्षियों की रक्त सिञ्चित आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली को लोक प्रिय बनाने के लिए, देश की आर्थिक और शारीरिक अवस्था को ऊंचा उठाने के लिए, आयुर्वेद के प्रकाण्ड पण्डित, पञ्जाब प्रान्त के अग्रणी सुप्रसिद्ध वैद्य श्री कृष्ण दयाल जी ने प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड अमृतसर के संस्थापन का विशाल आयोजन किया है। यहां पर यह उल्लेख करना अनुचित न होगा कि चौथाई शताब्दी के अथक परिश्रम, साधारण जनता और देशी नरेशों की गुण ग्राहकता ने ही हमारे राजवैद्य महोदय को सुअवसर प्रदान किया है कि आज उनका,उनकी चिकित्सा प्रणालीका, और औषधियों का चारों ओर बोल-बाला है। यही कारण है कि उन्होंने नगर के जन-कोलाहल से दूर ५००००)रुपये लगा कर 'दयाल भवन' का निर्माण कराया है। जिसकी आधार शिला स्वयं हिज़ हाईनेस महाराजा नालागढ़ नरेश ने रखी थी। उद्घाटन समय पर अनेक देशी नरेश और श्रीयादवजी त्रीकम जी जैसे स्वनामधन्य आयुर्वेदसवियों ने समुपस्थित हो कर इस वृहद् आयोजन में योगदान दिया था।

इस विशाल भवन में प्रताप आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी की औषधि निर्माण शाला का एक भाग है, उसका एक विभाग विशेष उल्लेख-खनीय है। इस विभाग का निर्माण कांच और पत्थर से दयाल भवन के प्रकोष्ट पर किया गया है। यहाँ पर सुन्दर शैलाशिखर से मंगाई हुई बनौषधियाँ और जड़ी बूटियाँ बड़ी सतर्कता के साथ सुखाई और सुरक्षित रखी जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड, अमृतसर

की

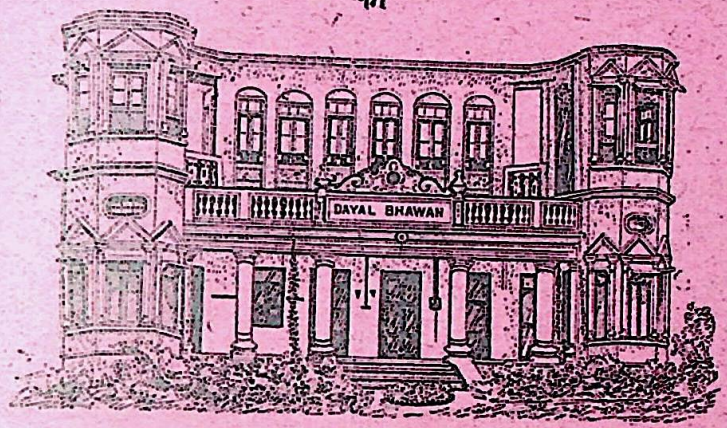

विशेषताएँ

प्रताप फार्मेसी की सम्पूर्ण औषधियाँ स्वयं ख्यातनामा चिकित्सक चूड़ामणि श्रीकृष्णदयाल वैद्य की देख-रेख में तैयार की जाती हैं। इस के प्रत्येक विभाग का अध्यक्ष अपने विषय का विशेष विद्वान है। फार्मेसी की ओर से संदिग्ध और दुष्प्राप्य आयुर्वेदिक औषधियों के निश्चय और अन्वेषण के लिए प्रति वर्ष सैकड़ों रुपये व्यय किये जाते हैं।

जहाँ हमारे अन्य वैद्य महोदय सस्तेपन के लोभ में पड़ कर बाज़ारों से सड़ी-गली औषधियाँ कम कीमत पर ख़रीद लेते हैं, वहाँ इस फ़ार्मेसी में केवल उत्तम चुनी हुई औषधियों के ही खरीदने की व्यवस्था है। फार्मेसी में औषधि-निर्माण और सञ्चय के विभाग बिलकुल अलग हैं। इस कारण औषधियों में किञ्चित व्यतिक्रम की संभावना नहीं इसके अतिरिक्त प्रत्येक विभाग के कर्मचारी अपने-अपने विभाग को उत्तम बनाने में प्रयत्नशील रहते हैं। फार्मेसी की निर्माण-शाला और रसायन-शाला विशेष रूप से दर्शनीय है। इसमें आधुनिक युग की उत्तमोत्तम मशीनों का संग्रह किया गया है। मशीनों की गतिक्रम और बनावट में विशेषता है। उन की गति-विधि और प्रयोग का ढंग ऐसा प्रशंसनीय है कि हाथ की रगड़ से मशीन की रगड़ में किंचित भी अधिक ऊष्मा उत्पन्न होने की संभावना नहीं। हाँ महीनों का काम घण्टों में अवश्य पूरा होजाता है। हमारी औषधियों के सस्ता तैयार होने का एक कारण मैशीनरी की यह आधुनिक सुबिधा है।

(६) जो औषधियाँ जिस स्थान पर प्रचुरता से उत्पन्न होती हैं हम ने उनके वहीं से मँगाने का प्रबन्ध कर रखा है। अस्तु हमारी औषधियों के सस्ते होने का दूसरा कारण यह भी है।

(७) हम फ़ार्मेसी में उत्तम और ताज़ी औषधियों का व्यवहार करते हैं। उन्हें शास्त्रोक्त रीति से तैयार करते हैं; अस्तु वे रामबाण की भाँति अपना काम करती हैं। यही कारण है कि उनकी लोकप्रियता बढ़ती जाती है।

(८) औषधियों की उत्तमता और तात्कालिक गुण के कारण उनकी माँग और खपत नित्य प्रति बढ़ती जाती है, अस्तु हम भी उन्हें सस्ते मूल्य पर बेचने के लिये बाध्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९) हम नापसन्द माल को बदल कर दूसरा देते हैं; या तुरन्त मूल्य वापस कर देते हैं। यह हमारी औषधियों की उत्तमता, लोकप्रियता और सत्यता का ज्वलन्त प्रणाम है।

(१०) प्रताप फ़ार्मेसी लिमिटेड का एक अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण विभाग उसका प्रकाशन-विभाग है। इससे समय समय पर महत्वपूर्ण अमूल्य और उपयोगी साहित्य उर्दू और हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित होता है। हमारी कई पुस्तकों की सर्वप्रियता का प्रमाण है—अल्प काल में उनके अनेक अडीशन। इस के अतिरिक्त फ़ार्मेसी की ओर से उर्दू में 'घर का वैद्य' और हिन्दी में 'आयुर्वेद-संसार' दो मासिक पत्र प्रकाशित होते हैं।

(११) हम ने अपनी समस्त औषधियों की पैकिंग का आधुनिक और अप-टू-डेट प्रबन्ध किया है। हमारी पैकिंग किसी भी फ़ोरेनिंग फर्म का मुकाबला कर सकती है। प्रत्येक वस्तु इतनी सुरक्षित और सुव्यवस्थित दशा में ग्राहकों के पास पहुँचती है कि उन्हें शिकायत का कोई अवसर भी नहीं मिल सकता।

सम्मतियां

प्रताप फार्मेसी के सम्बन्ध में जनसाधारण का क्या अनुभव है? सहस्रों में से एक आध की जबानी आप भी सुनिए :—

हिज़ हाइनेस राजा जोगेन्द्र सिंह साहब बहादुर लिखते हैं—

"इस फार्मेसी की समस्त औषधियाँ आयुर्वेदशास्त्रानुसार वैज्ञानिक सिद्धान्तों को समक्ष रख कर तैयार की जाती हैं।"

पं० लायकराम साहब प्रधान मन्त्री नालागढ़ कहते हैं—

"यह फार्मेसी अपनी औषधियों की पवित्रता, सुन्दरता और अचूक प्रभाव के लिये प्रसिद्ध है .....साधारण जनता को इस की औषधियों पर विश्वास है।"

मिस्टर इ० राय साहब भूतपूर्व डिप्टी कमिश्नर अमृतसर अपने अनुभव के आधार पर लिखते हैं—

"इस फार्मेसी की यह विशेषता है कि शुद्ध-खालिस और जड़ी-बूटी आदि की औषधियां प्रचुरधन और परिश्रम से एकत्रित की जाती है। और उन्हें शुद्ध, साफ, वजन और स्टैन्डर्ड के अनुसार तैयार किया जाता है।"

पं० ज्ञानचन्द साहब एम० ए० एडवोकेट—"इस फार्मेसी को परिचय की आवश्यकता नहीं। यहां आयुर्वेदिक औषधियों को बहुत बड़े पैमाने पर तैयार करने वाला शानदार कारखाना है। यहां बड़े परिश्रम और अध्यवसाय के साथ शास्त्रोक्त रीति से औषधियां तैयार की जाती हैं। किसी औषधि पर यहां का लेबुल या मोहर ही उनकी शुद्धता और उत्तमता की गारन्टी है।"

श्री के० एल० भाटिया प्रिंसपल हिन्दू सभा कालेज—"इस फार्मेसी ने अपनी गौरव-पूर्ण सेवाओं और उत्तम औषधियों के कारण समस्त देश में ख्याति और सफलता प्राप्त की है। यही कारण है कि स्थानीय फ्री हास्पिटल और म्यूनिसिपल डिस्पेन्सरी यहां से औषधियाँ खरीदती हैं।"

मिलने का पता—आयुर्वैदिक फार्मेसी लिमिटेड अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारी कुछ औषधियां

कूपी पक्व रस

नाम	५ तोला	१ तोला
हृदय सिद्ध मकरध्वज स्वर्ण सहित	...	१५)
हृदय [मकरध्वज] स्वर्ण घटित (षड्गुणबलिजारित)	...	६)
सिन्दूर समगुण बलिजारित	२॥)	॥=)
,, द्विगुण बलिजारित	३)	॥।)
,, चतुर्गुण बलिजारित	५)	१)
,, षड्गुण बलिजारित	७॥)	१॥।)
सिंदुर	५)	१)
,,	६)	१॥)
,,	६)	१॥)
,,	५)	१॥)
माणिक्य [रसेन्द्र सारोक्त]	४)	१)
माणिक्य [रस राजोक्त]	५)	१)
र पन्नग	६)	१॥)
निधि रस कपूर	७)	१॥)
विद्ध नम्बर १	५)	१)
विद्ध नम्बर २	३)	॥।)
र संखिया	३)	॥।)
त्रिविष	७)	१॥)

बहुमूल्य भस्में

नाम	१ तोला	१ माशा
मणि भस्म	२०)	२)
क्य भस्म	२०)	२)
भस्म	१२)	१)
ज भस्म	१६)	२)
भस्म श्वेत (उपदंश के वास्ते)	३)	।=)
गोमेद भस्म	१२)	१॥)
मुक्ता भस्म नम्बर १	३४)	३)
,, ,, २	३०)	२॥।)
,, चन्द्रपिष्टि	२५)	२।)
स्वर्ण भस्म नम्बर १	६०)	५।)
,, ,, २	५५)	५)
रौप्य भस्म श्वेत	३)	।—)
,, ताल योगेन	३)	।—)
हरताल वर्की भस्म श्वेत	४)	॥)
हिंगुल भस्म लाल	१)	=)
फौलाद भस्म (विशेष पौष्टिक)	८)	॥।)
वज्राभ्रक भस्म १०० पुटि	२)	≡)

अल्प मूल्य भस्में

नाम	१ सेर	५ तोले	१ तोला
वज्राभ्रक भस्म अर्क दुग्ध वट जटा ५० पुटि	७०)	४)	१)
वज्राभ्रक भस्म वनस्पति योगेन २५ पुटि	२०)	२॥)	॥=)
अभ्रक भस्म श्वेत	)	॥।)	≡)
अकीक ,, कमल जलेन नं० १	४०)	३)	॥।)
कांस्य भस्म	१२)	१)	।)
कुकुटाण्ड वल्कल भस्म	७०)	२)	॥)
खपर भस्म	३५)	२॥)	॥=)
जहर मोहरा भस्म चन्द्रपिष्टी	४)	।=)	=)
ताम्र भस्म	४५)	३)	॥।)
तुत्थ ,,	६)	॥)	=)
त्रिवंग ,,	३२)	२॥)	॥=)

मिलने का पता—प्रताप आयुर्वैदिक फार्मेसी लिमिटेड अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाम	१ सेर	५ तोले	१ तोला
नाग भस्म कृष्ण शिला योगेन	२०)	१।)	।=)
,, ,, पीत	८)	।।।)	≡)
पीत कपर्दिक भस्म कुमारी स्वरसेन	५।।)	≡)	
प्रबाल भस्म कुमारी स्वरसेन	६)	।।)	=)
,, ,, चन्द्रपिष्टि गुलाब जलेन	६)	।।)	=)
शृङ्गराज भस्म (बारा सिंगा,	८)	॥=)	=)॥
पित्तल भस्म	८)	।।।)	≡)
मण्डूर भस्म त्रिफलागोमूत्रेन	८)	।।)	≡)
यशद भस्म खास	८)	॥=)	=)॥
रौप्य माक्षिक भस्म	१२)	१)	।)
लोह भस्म हिंगुल योगेन खास नम्बर १	४०)	३।।)	।।।)
लोह भस्म नं० २	२०)	१।।)	।=)
,, ,, ३	१०)	१।)	।=)
,, ,, मल्ल योगेन खास			४)
वङ्ग भस्म श्वेत	१२)	१)	।)
,, ,, ताल योगेन	२८)	२)	।।)
शङ्ख भस्म (कुमारी रसेन)	४)	।=)	-)॥
शुक्ति मुक्ता (कुमारी रसेन)	६)	॥=)	≡)
स्वर्णमाक्षिक भस्म(लवणेन)	१०)	।।।)	≡)
हरताल गोदन्ति भस्म(कु०र०)	३)	।)	-)
संगयशद भस्म चन्द्रपिष्टि	१४)	१)	।)
संगयहूद ,, वेर पत्थर	१४)	१)	।)
शंभूक ,,	१५)	१)	।)

रस रसायन गुटका

नाम	ग्रंथनाम	५ तोले	१ तोला
अम्ल पित्तांतक लोह		३)	॥=)
अहिफेन वटी		७)	१॥)
आनन्द भैरव रस शार्ङ्ग		।।।)	≡)
,, ,, रस		१)	।=)
,, वृहद् ,,		३)	॥=)
अश्वकञ्चुकी (घोड़ाचोली)	रसेन्द्र	१।)	।=)
अजीर्ण कंटक	शार्ङ्ग	१।)	।=)
अग्नितुण्डी	रसेन्द्र	१)	।)
अर्शकुठार रस	,,	१।)	।=)
आमवातारि वटी	,,	१॥)	≡)
अष्टांग रस	,,	१।)	।=)
इच्छाभेदी	,,	१)	।)
इन्द्र वटी	भैषज्य	३)	।।।)
उन्माद गजांकुश रस		४॥)	३)
एलादि वटी	चक्रदत्त	।)	।)
कनक सुन्दर रस	रसराज	१)	।)
कफकेतु	रसेन्द्र	१)	।)
कस्तूरी भूषण	भैषज्यरत्नावली	२५)	६)
कस्तूरी भैरव	,,	२५)	६)
कस्तूरी भैरव वृहद्	भैषज्य र०	४३)	६)
कृमिमुदगर रस	रसयोग	।।।)	=)
क्रव्याद रस	रसराज	२॥)	॥=)
कर्पूर रस	भैषज्य	२।।)	।।।)
कामिनी विद्रावण	रस	६)	१।)
कल्याण गुटिका		।=)	-)॥
कृष्ण वटी		२)	॥)
कैशोर गुग्गुल	चक्र	॥=)	≡)
कांचनार ,,	शार्ङ्ग	॥)	=)
कल्पतरु रस		१॥)	।=)
गौडुरादि गुग्गुल	शार्ङ्ग	॥=)	≡)
गदमुरारी	रसराज	२)	॥)
गन्धक वटी (राजवटी) रस		॥=)	≡)
गङ्गाधर रस	रसराज	२।)	।।।)
गर्भविनोद	रसेन्द्र	१।)	।-)
गर्भचिन्तामणि	रसे	३)	।।।)
गगन सुन्दर रस वृहद्		६)	२)
गुल्म कालानल रस	भैषज्य र०	२)	॥)
गर्भपाल रस	रसे	२।)	।।।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाम	नामग्रन्थ	५ तोले	१ तोला
...ी कपाट रस	भैष	३)	।।।)
...क रसायन	रसेन्द्र	३)	।।)
...र्भुज	भैष	७५)	२०)
...मुख	,,	४५)	१०)
...र्थिकारि रस	,,	४।।)	१)
...प्रभावटी	शार्ङ्ग	१)	।)
...कलावटी	योग	३)	।।।)
...शेखर रस	,,	२)	।।)
...मृत	रसयोग	१)	।)
...दय रस	रसेन्द्र	१८)	४)
...मणि रस	,,	२)	।।)
...कादि वटी	चक्रदत्त	२)	।।)
...मगल रस	भैष	४२)	९)
...गल रस	रसेन्द्र	४)	१)
...केसरी	,,	१।)	।)
...मुरारी	रसेन्द्र	१)	।)
...वटी	योग	१)	।)
...रि अभ्रक	रसे	१।)	।=)
धूमकेतु रस	,,	१।।)	।=)
...टी अहिफेन युक्त नं० १	भैष	५)	१।)
...टी धतूरयुक्त नं. २		१।)	।=)
...रांकुश	,,	२)	।।)
...वल्लभ	रसे	२)	।=)
...दित	,,	३)	।।।)
...नाकेश्वर	योगरत्नाकर	१।।)	।=)
...पञ्चामृत	,,	,,	८)
...ल्लभ	रसे	२।।)	।।=)
...णुटिका	चक्र	।।)	=)
...चक रस	रसे	२।।)	।।=)
...नृ बृहद्	,,	२०)	५)
...त्र	,,	३)	।।।)
...क रस		१।।)	।=)

नाम	नामग्रन्थ	५ तोले	१ तोला
पंचानन वटी		२)	।।)
भूतभैरव रस		४)	१)
पीयूषवल्ली रस	रसे	१।)	।)
वड़वानल रस		१)	।)
बाल रस	रसे	२)	।।)
बसन्त कुसुमाकर	शार्ङ्ग	...	२५)
स्वर्ण वसन्तमालती	खर्परयुक्त	...	५)
मृत्युजय	रसे	१।)	।)
मूर्च्छान्तक रस			२५)
महाशंख वटी	भैषज्य	१)	।)
मरिचादि वटी	शार्ङ्ग	।)	।)
महाज्वरांकुश	रसे	१)	।)
महानाराच रस		१।।)	।=)
मन्मथाभ्र रस	भैषज्य	५)	१)
मृतसंजीवनी रस	रसेन्द्र	१।।)	।=)
मृगांग पोटली रस	शार्ङ्ग	...	४२)
योगराज गुग्गुल			
सप्त धातु युक्त	शार्ङ्ग	२।।)	।।।)
योगराज	चरक	।।)	।=)
यकृदारि लोह		१)	।)
रोगविजय रस		२।।)	।।।)
रामबाण रस	रसे	१)	।)
रसचन्द्रिका वटी	,,	२)	।।)
रसामृत रस	,,	।।)	।=)
रक्तपित्तान्तक रस	,,	२।।)	।।=)
राजमृगांग	शार्ङ्ग	५५)	२२)
लोकनाथ बृहद्	,,	१)	।)
लघु लोकनाथ	,,	।।।)	=)
लक्ष्मीविलास नारदीय	भैष	३)	।।।)
महालक्ष्मीविलासस्वर्णयुक्त	रसे	१५)	३)
महाश्वासारि लोह		४।।)	१)
लवङ्गादि वटी		।।।)	=)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाम	ग्रन्थ	५तोला	१ तोला
लुशनादि वटी	वैद्यजीवन	।)	-)
व्योषादि वटी	चक्रदत्त	।)	-)
वातगजांकुश	रसे	१॥)	।=)
वंगेश्वर बृहद्	भैष	४०)	८)
वंगेश्वर	रसे	३)	॥।)
विषूचिका विध्वंसन	,,	२)	॥)
वातरक्तांतक	,,	२॥)	॥=)
शूलवज्रणी		१)	।)
स्तम्भन वटी	योग	५)	१।)
श्वासकुठार बृहद्	रसे	१।)	।-)
शूलगज केसरी	शार्ङ्ग	५)	१)
श्वासचिन्तामणि	रसे	४०)	८)
शुक्रमातृका वटी	भैष	२)	॥)
शंखवटी	,,	॥)	=)
शम्बुकादि वटी		१)	।)
सिद्ध प्राणेश्वर	रसे	२)	॥)
सर्वांग सुन्दर	रसे	।)	।)
सूर्यशेखर रस	फा.	२)	॥)
सुधावती वटी	,,	२॥)	॥)
सुखरेचनी वटी	,,	१)	।)
बृ० सौभाग्यवती	भैष	१।)	।-)
स्वरभंगादि वटी	फा.	१)	।)
समीर गज केसरी	रसे	५)	१।)
संजीवन वटी	शार्ङ्ग	॥)	=)
सुधानिधि रस	रसे	२)	॥)
हिंगुलेश्वर	रसेन्द्र	१॥)	।=)
हुताशन	,,	१)	।)
हंस पोटली	,,	१।)	।-)
त्रिभुवन कीर्ति	योग.	१।)	।-)
त्रिफला गुग्गुल	शार्ङ्ग	॥)	=)
त्रैलोक्य सुन्दर रस		७)	१॥)
हृदयार्णव रस	फा.	२।)	॥)

प्रसिद्ध लोह मण्डूर

नाम	ग्रन्थ	५ तोला	१ तोला
आमलक्यादि लोह	भैष.	४)	१)
चन्दनादि लोह	,,	२)	॥)
प्रद्वारि लोह	,,	३)	॥।)
विषमज्वरांतक लोह	,,	१५)	३॥)
विषमज्वरांतक पुटपक्व लोह		२५)	८)
सर्वज्वरहर लोह	रसेन्द्र	३)	॥)
बृहद् सर्वज्वरहर लोह	,,	५०)	१०)
पुनर्नवादि मण्डूर	भैष०	१॥)	।=)

पर्पटी

नाम	५ तोले	१ तोला	५ तोला	१ तोला
ताम्र पर्पटी	३)	॥।)	बोल पर्पटी ३)	॥।)
पंचामृत ,,	५)	१।)	विजय ,, २८)	६)
लोह पर्पटी	३)	॥।)	स्वर्ण ,, ३०)	७)
विशुद्धरस,,	५)	१।)	हिङ्गुलोत्थ	
रसामृत ,,	३)	॥।)	रस पर्पटी २॥)	॥=)

बर्ति तथा लवण

नाम	अधिकार	५ तोला	१ तोला
अभया लवण	यकृत्	॥=)	=)
नारिकेल ,,	अग्निमांद्ये	॥)	।)
अर्क लवण,,	,,	।)	-)
सुखदा वर्ति	नेत्ररोगे	१।)	।-)
दृष्टिप्रदा ,,	,,	१।)	।-)
त्रिफला ,,	,,	॥।)	=)
चन्द्रोदय ,,	,,	१)	-)

चूर्ण

नाम चूर्ण	ग्रन्थ	१ सेर	१० तो
अश्वगन्धादि चूर्ण	भैष.	३)	
अग्निमुख चूर्ण	चक्र.	५)	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाम	ग्रन्थ	१ सेर	१० तोले
वपत्तिकर	चूर्ण बृ० योग	५)	॥=)
त्योग	,, योग.	५)	॥।)
फलादि	,, शा.	५)	॥।)
सादि	,, ,,	३)	॥)
ङ्माष्टक	,, ,,	२॥)	।=)
सिंह	,, चक्र	६)	१)
यण	चूर्ण शा.	२॥)	।=)
न्तक	,, चक्र	३)	॥)
नुग	,,नं० १ भै.र.	८)	१)
नुग	,, ,, २ भै.	४)	॥=)
द् गङ्गाधर	,, शा.	२॥)	।=)
वंगादि	,,	४)	॥=)
दर्शन	,,	२॥)	।=)
खांडव	,,	२॥)	।=)
	,,	६)	१)
त्वत	,,	५)	॥।)
पलादि	चूर्ण	५)	॥।)
ाष्टक	,, शा०	२॥)	।=)
ादि	,, ,,	३)	॥)
लेप	,,	५)	॥।)
भास्कर	,,	२)	।=)
क्कादि	,,	५)	॥।)
ानल	,,	५)	॥।)
ादि	,,	५)	॥।)
ार	,,	११)	१॥)
हर लेप		१०)	१॥)

नाम	ग्रन्थ	५ सेर	१ सेर
अश्वगन्धारिष्ट	,,	८)	२)
अशोकारिष्ट	,,	५)	१)
उशीरासव	,,	५)	१)
कुमारी आसव	शार्ङ्ग	८)	२)
कनकासव	भैष.	४)	१)
खदिरारिष्ट	,,	७)	१॥)
चन्दनासव	,,	४)	१)
द्राक्षासव	भैष.	४)	१)
द्राक्षारिष्ट	शार्ङ्ग	४)	१)
दशमूलारिष्ट कस्तूरी सहित	भेष.	१०)	२॥)
,, कस्तूरी रहित		७॥)	१॥॥)
पर्पटारिष्ट	,,	५)	१।)
पुनर्नवासव	,,	५)	१)
रोहितकारिष्ट	,,	५)	१)
लोहासव	शार्ङ्ग	४)	१)
विडंगारिष्ट	भैष.	७)	१॥)
सारिवाद्यारिष्ट	,,	७)	१॥)
सारस्वतारिष्ट	,,	१०)	२॥)
पिप्पल्यासव	,,	७)	१॥)
लोध्रासव	,,	७)	१॥)
बबूलारिष्ट	,,	६)	२)
जीरकारिष्ट	,,	११)	२॥)
कुटजारिष्ट	,,	६)	२)

आसवारिष्ट

ग्रन्थ	५ सेर	१ सेर
भैष	९)	२)
,,	४)	१)
भैष	६)	१॥)

बहुमूल्य आसव

नाम	ग्रन्थ	५ तो०	१ तो०
अहिफेनासव	भैष	२)	॥)
कर्पूरासव	,,	१)	।)
मृगमदासव	,,	१०)	२)
शंखद्राव	,,	२)	॥)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रसिद्ध घृत तैल

नाम	१ सेर	२० तोले
कामदेव घृत	१२)	३॥)
अशोक ,,	८)	२॥)
जात्यादि ,	६)	१॥)
फल ,,	८)	२)
चांगेरी घृत	६॥)	२)
ब्राह्मी ,,	७)	२)
महात्रिफला घृत	८)	२।)
त्रिफला ,,	६)	१॥)
अर्कपत्र तेल	३)	१)
इरिमेदादि ,,	४॥)	१।)
कासीसादि ,,	८)	२॥)
चन्दनादि ,,	८)	२।)
नारायण तैल	८)	२।)
महामाषादि ,,	७)	२)
बृ०मरिचादि,,	५)	१॥)
मरिचादि ,,	४)	१।)
विषगर्भ ,,	७)	२
लाक्षादि ,,	४)	१।)
महालाक्षादि ,	८)	२)
षड्विन्दु ,,	४)	१।)
सूर्यसिद्ध कासीसादि घृत त्वचा रोगे	१०)	२॥)
गुंजादि तेल	८)	२)

प्रसिद्ध अवलेह पाक

नाम	५ सेर	१ सेर	२० तो०
च्यवन प्राशावलेह नं० १ च.सं.नूतन	१२)	३)	१)
,, ,, ,, २ गत वर्षीय	१०)	२॥)	॥)
कूष्माण्डावलेह	१०)	२॥)	॥)
वासावलेह	१०)	२॥)	॥)
मदनानन्दमोदक	१५)	४)	१।)

नाम	५ सेर	१ सेर	२० तो०
मूसली पाक	२५)	६)	२)
कसेरू पाक	१४)	४)	१।)
सुपारी पाक	१०)	२॥)	॥)
सौभाग्यशुन्ठीपाक	१०)	२॥)	॥)
कंटकार्यावलेह (वं.से)	१०)	२॥)	॥)

क्षार और सत्व

नाम	१ सेर	१तो०
अद्रक सत्व	८)	॥=)
अमलतास धन सत्व	१)	।)
कुटीघन सत्व	३)	।=)
गिलो सत्व	५)	।=)
चोक घन सत्व	२)	।)
नीबू सत्व	२।)	।)
त्रिवृत्ताघन ,,	६)	॥)
मुलट्ठीघन सत्व	३।)	।)
रसौंतघन ,,	२॥)	।)
हरीतकी घन सत्व	२॥)	।)
अपामार्ग क्षार	६)	॥)
अर्क क्षार	६)	॥)
सज्जी क्षर	॥)	।=)
कदली क्षार	६)	॥)
कटेरी क्षार	६)	॥)
गोमूत्र ,,	५)	।=)
तिल ,,	६)	॥)
मूली ,,	६)	॥)
यव ,,	८)	॥=)
वांसा ,,	६)	॥)
स्नूही ,,	८)	॥)
गोक्षरु ,,	१०)	॥)
इमली क्षार	१८)	१।)
चणक क्षार	१२)	१)
पुनर्नवा क्षार	१०)	॥)
सत्यानाशी क्षार	१८)	१।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फार्मेसी द्वारा प्रस्तुत शुद्ध वस्तुएं

शुद्ध वस्तु नाम	१ सेर	५ तो०
कज्जली शुद्ध पारद से	११)	॥)
कपर्दिका शुद्ध	३)	≡)॥
कुचला चूर्ण शुद्ध	३)	।)
खर्पर शुद्ध	१८)	१।)
गन्धक आमलासार शुद्ध	१॥)	=)
गुग्गुलु शुद्ध	२)	=)॥
जमालगोटा शुद्ध	१०)	॥।)
ताम्र चूर्ण शुद्ध	२)	=)॥
तुत्थ शुद्ध	१)	-)।
धतूर बीज श्याम शुद्ध	१)	-)।
नाग शुद्ध	१॥)	=)
पारद शुद्ध	१५)	१)
पारद अष्ट संस्कार पूर्ण शुद्ध	३६)	२॥)
पारद हिंगुलोत्थ	१६)	१।)
पीतल बुरादा शुद्ध	१॥)	=)
रंग शुद्ध	५)	।=)
वज्राभ्रक (धान्याभ्रक) शुद्ध	४)	।-)
वज्रलातक शुद्ध	१)	-)।
वण्डूर शुद्ध	२)	=)॥
वनसिल शुद्ध	४)	।-)
शंख शुद्ध	२)	=)॥
शिल्पमाक्षिक शुद्ध	३)	।)
शिल्प चाँदी) शुद्ध	७५)	५)
लोह चूर्ण (मुण्ड लोह) शुद्ध	२)	=)॥
लोह चूर्ण रेती का शुद्ध	४)	।-)
लिंगरफ शुद्ध	१०)	॥।)
शृंगिक शुद्ध (मीठा तेलिया काला)	२)	≡)
" " " चूर्ण	६)	।≡)
संखिया शुद्ध	४)	।-)
स्वर्णमाक्षिक शुद्ध	५)	।=)
हरतालवर्की शुद्ध	२०)	१॥)

क्वाथ

नाम वस्तु	१ सेर का मू०	२० तो० का मू०
गोक्षुरादि क्वाथ (शा०) मूत्रकृच्छ्रे	१।)	।=)
देवदार्व्यादि क्वाथ, (शा० ध०) ज्वर कासे	१।)	।=)
लघुमंजिष्ठादि क्वाथ " रक्तरोगे	१।)	।=)
महामजिष्ठादि क्वाथ " कुष्ठे	२)	॥=)
रास्नाद क्वाथ " वातरोगे	१॥)	॥)
महारास्नादि क्वाथ " वातरोगे	२)	॥=)

थोक लाइसेन्स विषोपविष

निम्नलिखित विष मँगाते समय लाइसेन्सदार अपना नम्बर और वैद्य पूरा-पूरा पता डिवीजन के साथ दें तथा डाक्टर व वैद्य समुदाय पत्र में यह शब्द अवश्य लिखें कि "हम व्यवहार के लिये मँगाते हैं" तभी माल भेजा जायगा।

नाम विषोपविष	१ सेर	५ तोले
संखिया श्वेत	१॥)	≡)
संखिया पीला	२)	≡)
सखिया लाल	४)	।-)
हरताल वर्की चूरा	८)	॥=)
हरताल वर्की छोटे पत्रकी	२०)	१।=)
हरताल वर्की छोटे पत्र नं० २	१२)	॥।=)
हरताल वर्की बड़े पत्रकी	२५)	१॥=)
रसकपूर	६॥)	॥≡)
दालचिकना	९)	॥=)
शृङ्गगिक श्वेत	१॥)	=)
मीठा तेलिया (काला)	२)	≡)
धतूर बीज श्याम	।=)	)॥।
धतूर बीज सफेद	१)	-)।
कुचला	॥)	)॥।

(यह सामान ग्राहक की जिम्मेवारी पर भेजा जायगा

मिलने का पता—दी प्रताप आयुर्वैदिक फार्मेसी लिमिटेड, अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुलकन्द मुरब्बे

नाम वस्तु	१ मनका भाव	१ सेरका भाव
मुरब्बा अद्रक	१५)	।≡)
मुरब्बा आम	१६)	।≡)
मुरब्बा आँवला बरेली नं० १, २	१६) १३)	।≡) ।=)
मुरब्बा आँवला बनारसी ,, ,,	३०) २४)	।।≡) ।।=)
मुरब्बा आँवला नं० ३	२०)	।।–)
,, ,, ,, ४	१५)	।≡)
गुलकन्द नकली फूल	९)	।–)
गुलकन्द असली फूल	१२)	।=)
मुरब्बा गाजर	१३)	।=)
मुरब्बा निबू	३०)	।।।=)
मुरब्बा बिल्व	१६)	।।)
मुरब्बा बीह	१६)	।।)
मुरब्बा सेव	१८)	।।–)
मुरब्बा हरड़ नं० १	३५)	।।।=)
,, ,, ,, २	२०)	।।–)
,, ,, ,, ३	१६)	।≡)
,, ,, ,, ४	१२)	।=)
,, ,, ,, ५	१०)	।–)

वानस्पतिक रोगन और प्राणिज तेल

	१ सेरका भाव	५ तोलेका भाव
तेल अजवायन	३।।)	।)
तेल अलसी	।।)	
तेल इलायची जापानी	१।।।)	=)
तेल इलायची (विलायती) असली	२०)	१।=)
रोगन कद्दू, पेठा	२।।।)	≡)
तेल कुष्ठ	४)	।–)
कास्ट्रायल (विलायती) ४।।) गैलन	१)	–)।।
कास्ट्रायल (आगरा) ३) ,,	१)	–)।
कास्ट्रायल (कलकत्ता) २।।) ,,	।।।)	–)
रोगन खसखस	१।)	–)।।

१ सेर का भाव ५तोले का भाव

रोगन वीरबहूटी	२।।)	
गुलरोगन	१)	–)
रोगन तरबूज	२)	=)।।
तेल चावल मोगरा	४)	।–)
तेल जैतून	२)	≡)
तेल जमालगोटा असली	१५)	१।)
तेल जायफल	२०)	१।।)
तेल दालचीनी	४)	।–)
तेल नारियल	।≡)	
तेल नीम	।।)	
तेल पिपरमेण्ट (पोदीना)	१२।)	।।=)
तेल बाबूना	१)	–)।।
तेल सांडे का		३।।।)
रोगन बादाम मीठा मशीन का	४।।।)	।–)
रोगन बादाम मीठा हाथका	६)	।≡)
तेल भिलावा	१२)	१)
तेल मालकंगनी	५।।)	।=)
तेल युक्लिप्टिस (आँइल)	३।।)	।)
तेल लौंग	४।।)	।–)
तेल बिरोजा (विलायती)	४।)	।–)
तेल सौंफ	४।।)	।–)
तेल सन्दल (चन्दन) असली	३०)	२।)
तेल शीतलचीनी	३६)	२।।)
तेल धतूरा	८) छटांक २) तो०	

प्राणिज व खनिज द्रव्य

	१ मनका	१ सेरका	१ तोलेका
अम्बर असहब नं० १ (अग्निजार)		२०)	
अम्बर असहब ,, २		१६)	
अभ्रक वस्त्र बड़े कणका श्याम	२०)	।।।)	
अभ्रक काला उत्तम पत्र	४०)	१।)	
अभ्रक उत्तम श्वेत	१२)	।=)	
,, ,, बड़े पत्र			५)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

	१ मनका	१ सेर का	१ तोलेका
पत्थर नं० १		२२)	।–)
„ २		१४)	।)
„ ३		८)	
खरड़		३)	
लाल	४०)	१–)	
हरा (विलायती)	३०)	।।।=)	
नैपाली उत्तम			१८)
काश्मीरी			१२)
खोपड़ी		१=)	
लोह नं० १ (अमेरिका)			।।)
„ „ २ (ग्वालियर)		२)	
बुरादा	४५)	१।)	
धुले साफ		३।।)	
पीली छोटी	३७)	१।)	
पीली बड़ी मोटी		३)	
असली नं० १		१६)	।)
„ „ २		८)	=)
डंडा	९)	।)	
आंवलासा		५) गुत्थी	
आंवलासार (खुला)		।।।)	
अरमनी		।=)	
नखतूम		।।=)	
तन नकली			१)
तन असली नं० १			१२)
साधारण	२।।)	–।।	
सोहरा नं० १	३६)	१)	
सोहर „ २	१०)	।–)	
सोहरा खताई नं० १		७५)	१)
सोहरा खताई नं० २		२५)	।=)
		२।।)	
घुला हुआ आँख में डालनेका		४)	
मीठा पटड़ी का	१३)	।=)	

	१ मनका	१ सेरका	१ तोलेका
जुंद विदस्तर १० तोलेकी डब्बी			१।)
जुंद विदस्तर बिना खाल का नं० १			२)
जोंक		५।।)	
ताम्र बुरादा	३२)	।।।=)	
नख		१५।।)	
नाग (सिक्का)	१२)	।=)	
नमक सैन्धव	३)	–।।।	
नमक काला (सोंचर)	५)	=)।।	
नमक बिड़ (कांच)	७)	।)	
नमक गूमा (पांगा)	५।)	=)	
नमक समुद्र (साँभर)	६)	=)	
नीला थोथा	१७)	।।)	
नीलम			१२)
नीलम खड़			२)
नौसादर देशी	३२)	।।।=)	
नौसादर डंडा (विलायती	२०)	।।।–)	
नौसादर टिकिया	१६)	।=)	
पन्ना			४)
प्रवालशाखा		२।)	
प्रवाल मूल	१८)	।।)	
पारद		६)	
पीतल चूर्ण बुरादा	२५)	।।।)	
फादजहरहैवानी			।।)
फिटकरी लाल	६।)	=)	
फिटकरी श्वेत	६।)	=)	
बंग (ईंटकी)		३।।)	
बंग (थाली की)		३।।)	
बराहकी चर्बी (सूअर)	६)	=)	
बीर बहूटी	४)	–)	
मुर्दासंग	१६)	।=)	
मण्डूर पुराना	८)	।)	
मैनसिल नं० १		३)	
मैनसिल नं० २		१।=)	

मिलने का पता—दी प्रताप आयुर्वैदिक फार्मेसी लिमिटेड, अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

	१ मन का	१ सेर का	१ तोले का
माणक्य "चूनी" नं० १			६)
माणिक्य ,, ,, २			४)
,, ,, ,, ३			३॥)
,, ,, ,, ४			१॥)
,, खरड			।=)
मायेशुतर आवी असली			॥)
मोतीबसरई नं० १			२२)
,, ,, २			१८)
मोती आस्ट्रेलिया नं० १			१५)
,, ,, ,, २			१४)
मोती बेडौल बड़ा दाना			४)
मोमदेशी साफ			१॥)
मधुश्वेत नं० १		२५)	॥)
मधुलाल नं० १		२०)	॥=)
,, ,, २		१५)	॥)
रीछ (भालू) की इन्द्री			३)
रीछ (भालू) का पित्ता			२)
रीछ की चर्बी			६) =)
रुपामक्खी (गोलदाना)		२०)	॥=)
,, ड़लियां चौरस		५६)	१॥)
रेगमाह			५) —)
लोह चूर्ण मुंड		१०)	।—)
लोहचुण रेतीका		३५)	१)
लाख पीपल		२५)	१)
लाख बेरी		२२)	॥।=)
बारासिंगा (मृगशृङ्ग)		१५)	।=)
बेर पत्थर			१।=)
वैकान्त नं० १			३)
,, ,, २			१)
शिलाजीत पत्थर		१५)	॥)

	१ मनका	१ सेरका	१तोलेका
शिलाजीत (सूर्य्यतापी))	अल्मोड़ा	१६)	
,, सूर्य्यतापी		१२)	
,, (अग्नितापी)		८)	
शंखनाभि	१५)	।=)	
शंख टुकड़े	१२)	।—)	
शंख कीट			
शोरा कल्मी	८)	।)	
शेर की चर्बी		१६)	
संगजराहत	३॥)	—॥।	
संग सरमाही		१०)	
संगयशब नं० १-२		३) ३)	
संगदानामुगे		१०)	
संग्रासक		१।=)	
सज्जीलोटा	५।)	=॥।	
सज्जीकाली	४)	=)	
सफेदा काशगरी	११)	।—)	
समुद्रफेन	१६)	।=)	
सरतान		२॥)	
सिन्दूर	१६)	॥—)	
सिंगरफ रूमी (डली)		६॥)	
सीप मोती असली	६०)	१॥=)	
सिपयाँ	८)	।)	
सुरमा श्वेत	३)	=)	
सुरमा काला	२१)	॥—)	
सुहागा	१३)	।=)	
सेलखड़ी	२॥)	—॥।	
सोनामक्खी गोलदाना)	२२)	॥=)	
सोनागेरू	८)	।)	
हरतालगोदन्ती	९)	।)	
हाथी का नख		१२)	
हाँथी दांतका बुरादा		३)	

मिलने का पता—दी प्रताप आयुर्वैदिक फार्मेसी लिमिटेड, अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैदिक यूनानी वनस्पतियाँ

	१ मनका	१ सेरका
		२॥)
		३॥)
ाल नं० १	२०)	॥=)
फल	१५)	≡)
गिरी		॥=)
ड़े)	१७)	॥)
दा	२५)	॥≡)
	४)	=)
देशी	६)	≡)
खुरासानी	१६)	≡)
दाना	६)	≡)
ीज	१८)	॥)
ाल	१४)	।=)
	५)	=॥
	१)	=॥
	१५)	।≡)
वेत) नं० १		४)
वेत) नं० २		३)
ली		३॥)
ठ	३५)	१)
ग	२२)	॥=)
ाश्वाङ्ग (कंघी)	१०)	।–)
ीज (कंघी बीज)	३०)	॥।=)
	१२)	।=)
विज्ञाल) सारिवा	२०)	॥≡)
(देशी) सारिवा	१०)	।–)
नं० १	९)	।)
नं० २	७)	≡॥
	८)	≡॥
		१)
ाँग	१०)	।–)

	१ मनका	१ सेरका
अपामार्ग बीज	३५)	१)
अफतीमून (विलायती)	३०)	॥।=)
अफतीमून (देशी)	१०)	।–)
अफसनतीन	७॥)	।)
अम्लबेद गुच्छी (चूका)	२२)	॥=)
अमलतासगूदा	६)	≡)
अमलतास फली	४)	=)
अमर बेल	१०)	।–)
अर्क मूल	१२)	।=)
अर्क पुष्प	१५)	॥)
अर्क दुग्ध		३)
अर्जुन त्वक्	१०)	।–)
अरणी मूल	७॥)	।)
अरणी छाल	१२)	।=)
अलसी		≡)
अशोक त्वक् (बंगाल)	१६)	।≡)
असगंध नागौरी	१४॥)	।≡)
आंवले सूखे	३)	–॥
आम की गुठली	८)	।)
आम्बा हल्दी	१२)	।=)
आबनूस बुरादा	३५)	१)
आवरेशम		२॥)
आलूबुखारा	२०)	॥–)
इन्द्रयव	१२)	।=)
इन्द्रायणमूल	१४)	।=)
इन्द्रायणफल	१२)	।=)
इमली	४॥)	=)
इलायची छोटी नं० १		५॥)
इलायची छोटी नं० २		४॥)
,, ,, ,, ३		४)
,, बड़ी	२५)	॥≡)॥
,, दाना		१)
इश्कपेचा (कालादाना)	८)	।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

	१ मनका	१ सेरका
इरिमेद छाल	१०)	।–)
ईसबगोल	८॥)	।)
ईसबगोल भूसी	३६)	१)
उटंगनबीज	२३)	॥=)
उन्नाव	२२)	॥=)
उशवामगरबी नं० १,२		२॥) २)
उशक	३०)	॥।–)
उस्तेखद्दूस		१॥।)
ऊद बिलसाँ		१।)
ऊद सलीब		१७॥)
ऊंट कटेरा	१०)	।–)
एरण्ड मूल	१०)	।–)
एलवालुक फल	५०)	१।=)
एरण्ड बीज	१०)	।–)
एलुवा (मुसब्बर)		॥।=)
ऋषभक (बहमन स्वेत)	१५)	।≡)
ऋद्ध (चिड़ियाकन्द)	३६)	१)
कचूर	९)	।)
कंकोलदाना	१७)	॥)
कंटकारी फल वृहत्	२०)	॥–)
कंटकारी फल लघु	१५)	।≡)
कंटकारी लघु पंचांग	७)	≡)
कंटकारी वृहद् पंचांग	७॥)	।)
कत्था नं० १–२		२) १॥)
कदम्बत्वक्	१२)	।=)
कपित्थ फल	१२॥)	।=)
कपूर देशी		४)
कपूर भीमसेनी असली		५) तोला
कपूर भीमसेनी बाजारी		४) पौं०
कपूर कचरी	९)	।) सेर
कम्पिल (छना) नं० १–२	४५) २२)	१।) ॥=)
कमरकस	१७)	।=)
कमलगट्टे	१३)	।=)

	१ मनका	१ सेरका
कमल फूल	३५)	
कमल केसर		
कचनार छाल	७॥)	
कचनार फूल		
करंज बीज	१२)	
करफस	१६)	
कनेर मूल (श्वेत)		
कलौंजी	१५)	
कसौंदी बीज	२६)	
कलिहारी (लांगली)		
कहरवाशमई		
काकजंघा पञ्चांग	१०)	
काकनासा पंचांग	१०)	
काकनासा फल (काकनज)		
काकोली (बंगाल)		
काकड़ासिंगी	२०)	
कामराज	४५)	
कायफल	८)	
कालीजीरी	१०)	
काहीमूल (कास)	१६)	
काहू	२३)	
किसमिस हरी	१६)	
कुटकी (कौड)	१७)	
कुठ मीठी	१३)	
कुठ उत्तम (कूठ) नं० १		
कुठ उत्तम नं० २		
कुठ चूर्ण मोटा अच्छा		
कुटज (कूड़ा) छाल	६)	
कुकुन्द्रक (कुकरौंधा)	१०)	
कुलंजन	११)	
कुशामूल	१६)	
कुसुम्भ बीज	९)	
कुल्फा (खुरफा)	९)	

मिलने का पता—दी प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१ मनका भाव	१ सेरका भाव		१ मनका भाव	१ सेरका भाव
६)	)	गुल सुपारी (मोचरस)	२२)	॥=)
	३)	गुल सेवती		३)
११)	।–)	गूलर छाल		॥)
१८)	॥)	गूलर फल		॥)
१०)	।–)	गोंद कतीरा	३३)	।॥≡)
१२)	।–)	गोंद छुहारा		१॥)
१३)	।=)	गोंद कुंदरू	२२॥]	॥=)
७)	।)	गोंद भीमरी	४=)	१)
१०)	।–)	गोंद बबूल	२२)	॥=)
१३)	।=)	गोरखमुण्डी	७)	≡)
१०)	।–)	गोरख पान	१५	॥)
७॥)	≡)॥	गोखरू पंचांग	६)	≡)
१३)	।=)	गोखरू फल लघु	६)	)
१३)	।=)	गोखरू फल बृहद्	२५)	॥≡)
१३)	।=)	गौरीसर	१२)	।=)
१३)	।=)	चन्द्रसूर (हालौं)	१०)	।–)
७)	≡)॥	चक्रमर्द बीज	८)	)
७॥)	)	चन्दनकाष्ट श्वेत		१॥)
२२)	॥=)	चन्दनबूराश्वेत		२=)
	५)	चन्दन काष्ठलाल	१६)	।≡)
५॥)	≡)	चन्दन बूरालाल	२४)	॥=)
९)	॥	चव्य (कृष्ण मिर्चमूल)	२६)	॥)
४५)	१)	चाकसू	१६)	।≡)
२०)	॥–)	चित्रकमूल	१०)	।–)
	१॥)	चित्रकमूलत्वक	३०)	॥।=)
९)	।)	चिरायता मीठा	१२)	।=)
४५)	१।)	चिरायता कडुआ	२०)	॥–)
	२॥)	चिलगोजा	२८)	॥।–)
४७)	१)	चिरौंजी		१॥)
	१)	चोक (सत्यानाशीमूल)	१२)	।=)
	॥)	चोपचीनी	३५)	॥।≡)
१८)	।)	चांगेरी	२०)	॥=)
२५)	॥।)			

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

	१ मनका भाव	१ सेरका भाव		१ मनका भाव	१ सेरका भाव
छरीला (शिलापुष्प)	८)	।)	तुख्म खिरनी		२॥)
छुहारा	८॥)	।)	तुख्म गंदना	१४)	।=)
जलनिम्ब	१८)	॥)	तुख्म गाजर		।=)
जलपिप्पली	२५)	॥।)	तुख्म सरनूज	३॥)	=)
जलापा नं० १–२		२॥) २॥)	तुख्म मालंग	११)	।–)
जवासापंचांग	८)	।)	तुख्मरेहां	७)	≡)
जरावन्दसदहर्रज	१२॥)	।–)	तुख्म शरजन		॥)
जरिश्क मीठा	२८)	॥।)	तुरंजबीन असली नं० १		२)
जरिश्क खट्टा	१८॥)	।–)	तेज पत्र	७॥)	≡)॥
जामुन गुठली	१०)	।–)	तेजबलत्वक्	१६)	॥)
जायफल		१॥)	तोदरीलाल	२२)	॥≡)
जावित्री		४)	तोदरी श्वेत	३२)	॥≡)
जिमीकंद	१५)	॥)	तोदरी पीली	३२)	॥≡)
जियापोता	१६)	॥)	दंतीमूल	१६)	॥)
जीराश्वेत नं० १–२	२२) १८)	॥=) ॥)	दरुनज अकरबी	३७)	१)
जीरा काला नं० १–२–३		२) १॥) १॥)	दरियाई नारियल	४०)	१=)
जीवक (लम्बासालब)	७५)	२)	दशमूल चूर्ण	१०)	।–)
जीवन्ती (बंगाल)	४०)	१)	दशमूल बिना कूटा	७॥)	।)
जूफा	१०)	।–)	दालचीनी	१८)	॥)
जैपालबीज (जमालगोटा)	३१)	॥।–)	दारुहल्दी (लकड़ी)	५॥)	=)॥
जख्म हयात	१०)	।–)	दारुहल्दी बुरादा (चूर्ण)	१८)	॥)
तज	११)	।–)	देवदारु असली बुरादा	८)	।)
तगर (सुगन्धबालामूल)	१३)	।=)	देवदालीफल (बन्दाली)	१६)	॥)
तालमखाना	१५)	।≡)	द्रोण पुष्पी	१०)	।–)
तालीसपत्र बाजारी	७)	≡)	दमउलखवीन असली		७॥)
तालीसपत्र असली	१२)	।=)	धतूरा पंचांग	१२)	।=)
तिन्तडीक (समाकूदाना)	१२)	।=)	धनियाँ	८)	।)
तुगाक्षीर	३५)	१)	धमासा	१०)	।–)
तुख्म कसूस	११)	।–)	धवल बरुआ (चान्दबरुआ)		४)
तुख्म कद्दू	१४)	।=)	धातकी (धावेके) फूल	९)	।)
तुख्म कलौंचा	२०)	॥–)	नकछिकनी	१२)	।–)
तुख्म खीरा	१४)	।=)	नगन्द बावरी	२८)	॥)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का भा	१ मनका भाव	१ सेरका भाव		१ मनका भाव	१ सेरका भाव
२॥)	मोथा	८)	।)	पित्त पापड़ा (शाहतरा)	४)	=)
।=)	सर असली		१०)	पीपल जटा		२)
।=)	सर बाजारी	२६)	॥≡)	पिया रांगा		२)
=)	ला	१२)	।=)	पिया वांसा	१६)	॥)
।–)	ला बीज	१८)	॥)	प्रियंगू फल (गोंदनी)	२५)	॥)
≡)	ाल	५)	=)॥	प्रियंगू (बङ्गाल) असली		७)
॥	वक्	१२)	।=)	पिस्ता न० १–२	२।)	१॥=)
२	ली	१०)	।–)	पुनर्नवा श्वेत मूल	३०)	॥।=)
=)।	डी (सम्भालू) पंचाँग	६)	≡)	पुनर्नवा रक्तमूल	१८)	॥–)
॥	डी बीज	१२)	।=)	पुदीना सूखा देशी	७)	।)
॥≡	ी	२०)	॥=)	,, जंगली	७)	।)
॥।≡	ी (जदवरा)		८)	पंचतृण मूल	२५)	॥।)
॥।≡	(त्रिवृत्त) नं० १–२	२॥)	१॥।)	पुष्कर मूल		६)
॥	ण्ठी	२०)	॥)	पृष्टपर्णी बड़ेपत्र	१२)	।=)
१	र फूल	२२)	॥=)	फरफीऊन विलायती		१॥)
१=	पत्र	९)	।–)	फालसा छाल	१२)	।=)
।–	र्ण	२६)	॥।)	फाद जहर हैवानी		७०)
।–	ष्ट	६)	≡)	फिन्दक	६॥)	।–)
=)			२)	बट जटा	१२)	।=)
।–	शां (हंसराज)	७॥)	।)	बकापन फल	७॥)	।)
।–	पुष्प	४)	=)	बर्ग सदाव		।=)
।–	पापड़ा	७)	≡)	बच तीक्ष्ण	७)	≡)
।–	णी	१२)	।=)	बच मधुर		२)
७॥	त्वक्	७॥)	।)	बन तुलसी	१०)	।–)
।–	फली	१५)	।=)	बला पंचांग	१०)	।–)
	चांग	१२)	।=)	बबूक त्वक्	८)	।)
।–	ी	२८)	॥।)	बबूल फली	७॥)	॥)
६	भेद	७)	≡)॥	बहमन सफेद	१५)	।≡)
	जंगली	२५)	॥।)	बहमन लाल	१३)	।=)
।–	ी लघु		३)	बहुफली	१५)	॥)
॥	ृहद् (मूंगा)	३०)	॥।=)	बहेड़ा फल	३)	=)
	ी मूल नं० १–२	२॥)	१॥)	बहेड़ा छाल	८)	।)
				बालछड़ (जटामांसी)	१६)	॥)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

	१ मन का भाव	१ सेर का भाव
वराहीकंद	१०)	।–)
टादरजंबूया	६)	=)
बादावरद	२०)	॥=)
बादयान खताई	२३)	॥=)
बारतंग	१७)	॥)
बादाम कागजी नं० १-२		१।=)१–)
बादाम पिशौरी		॥।–)
बादाम काश्मीरी काठा		॥=)
बाकला	१२)	।=)
बाबची	१०)	।–)
बासा पत्र	८)	।)
बाँसा (पंचांग)	३॥)	=)
बाँसा मूल	१२)	।=)
बिजयाबीज (भांग)	२३)	॥=)
बिहीदाना		१॥)
बिस्फायज	२२)	॥=)
बिदारी कन्द	१२)	।=)
बिधारा बीज		२)
बिधारा मूल	१२)	।=)
बीजाबोल (मुरमकी)		१।=)
बिडग (बायबिडग)	५)	=)
बिडग असली	१०)	।–)
बिल्वत्वक्	७॥)	।)
बिजयसार छाल	२२)	॥=)
बीजबन्द काले	१८)	॥)
बीजाबन्द लाल	१०)	।–)
ब्रह्मी	१७)	॥)
ब्रह्मदण्डी	७॥)	।)
वरुणत्वक्	१०)	।–)
वंशलोचन (तवासीर) नं० १-२		६॥) ७।)
बूरा अरमनी	१३॥)	।=)
बेख कासनी	६)	।)।।

	१ मनका भाव	१ सेरका भाव
बेख बादयान	७)	=)॥।
बेख बाबूना	१२)	।–)।
बेख सोसन	३२)	॥।=)
भल्लातक (भिलावा)	५)	=)
भारंगी	१३)	।=)
भू आँवला	७॥)	।)
भोजपत्र	८)	)
मछेछी (मत्स्याक्षी)	१०)	।–)
मकोयदाना	२२)	॥=)
मकोयपंचांग	६)	।–)
मखाना	२२)	१)
मगज कद्दू	३२)	॥।–)
मगज खरबूजा	३२)	॥।=)
मगज खीरा	३२)	॥।=)
मगज तरबूज	२३)	॥=)
मगज बादाम	५६)	२॥=)
मरोड़ फली	१०)	।–)
मयूर शिखा	६५)	१॥।)
ममीरी मूल		६)
मंजीठ	१७)	॥)
महावला (सहदेवी)	१२॥)	।=
महुआ फूल	१८)	॥)
महुआ छाल	१०)	।–)
माजू फल		१॥।)
मालकंगनी	११)	।–)
माषपर्णी	१२॥)	।=
मांई	५)	=)
मिर्च श्वेत		१॥।
मिर्च काली	२०)	॥–
मुनक्का काला	२८)	॥।
मुनक्का लाल (अवजोश)	२३)	॥=
मुद्गपर्णी	१६)	॥

मिलने का पता - दी प्रताप आयुर्वैदिक फार्मेसी लिमिटिड, अमृतसर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

	१ मनका भाव	सेर का भाव		१ मनका भाव	१ सेरका भाव
...ती नं० १-२	१३) १०)	।≡) ।–)	लाँगुली मूल		५)
...ती चूर्ण	१२)	।=)	लोध्र पठानी	८)	।)
...रामसी	२२)	॥=)	लोबान कौड़िया नं० १-२		१॥=) १)
...ी श्वेत नं० १-२		४) ३)	शकर तेग़ाल		१)
...बीज	१५)	॥)	शंख पुष्पी	१२)	।=)
...ी श्याम	२०)	॥=)	शाल पर्णी	७॥)	।)
...मगी	१६)	॥)	शिलारस		२)
...पत्र	१०)	।–)	शिवलिंगी बीज		३॥)
...पीसी हुई नं० १-२	१३) ११)	।=)।–)	शीरखिस्त देसी		२०)
...ल	६)	।)	शीरखिस्त (विलायती)		८)
...लकड़ी छाल	५)	=)॥	श्योनाक छाल	७॥)	।)
...स असली (फूल सुपारी)	२२)	॥=	श्योनाक बीज		॥।)
...ी त्वक	२८)	।॥)	सपस्तान (लसूड़ियां)	५)	≡)
...(शकाकल छोटी)	२०)	॥=)	सतावर	१८)	॥)
...दा (शकाकल बड़ी)	२०)	॥=)	सातला	१२)	।=)
...ोत	७)	।)	सकमूनिया		३) पौंड
...न (रसौंत) नं० १	१८)	॥)	समुद्रशोष	७)	≡)
...पत्र असली	१८)	॥)	सत्यानाशी बीज		॥।–)
...मूल (बंगाल)	१५)	॥)	सत्यानाशी पञ्चाङ्ग	१०)	।–)
॥)	२०)	॥–)	समुद्र फल	१०)	।–)
।=	७)	≡)॥	सप्तपर्णत्वक्	२५)	॥।)
॥)	५)	=)॥	सनाक	१३)	।=)
।–)	बीज गोल ३५)	१)	सरसों	१४)	।=)
।॥)	चीनी १२)	।=)	सरफुका	६)	≡)
।–)	खताई नं० १	५।) १॥।)।	सालव मिश्री नं० १-२-३	६) ५॥)	४)
।=	...त्मी २३)	॥=)	सालव पंजा (वृद्धि) नं० १-२		५।) ४)
=)।	...ी ३५)	१)	सालव लहसुनी	३५)	१)
५॥।	...मूस (असली)	३।)	सालव (गण्डा)	२८)	॥।)
॥–	...क छाल १२)	।=)	सिंघाड़ा	८)	।)
॥।	...स्तूरी	२)	सिरस छाल	१०)	।–)
॥=	...ती बीज १०)	।=)	सिरस बीज	१०)	।–)
॥	(लौंग)	१॥)	सिम्बल मूसली	१७)	॥)

मिलने का पता—दी प्रताप आयुर्वैदिक फार्मेसी लिमिटेड अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

	१ मनका भाव	१ सेरका भाव
सिम्बल फूल		॥=)
सीतल चीदी (सर्द चीनी)		१।)
सुपारी काठा	१५)	।≡)
सुपारी दक्षिणी		१।=)
सुगन्ध वाला	७॥)	।)
सुन्दरस	२७)	॥।)
सुरंजशीरी (मीठी)		३)
सुरंजातलख (कड़वी)	२३)	॥=)
सोंठ देसी	४५)	१।)
सहदेवी	१२॥)	।=)
समाक दाना	१२)	।=)
सोंठ पूर्वी (बम्बई)	४५)	१।)
सोया	६)	≡)
सौंफ नं० १–२	१३) ८)	।=) ।)
सौभांजन छाल	७॥)	।)
सौभांजन बीज		१)
साबूदाना		।=)
स्वेत कनेर,पुष्प		२)
सम्भालू बीज	१२)	।=)
स्वेत कनेर मूल		१॥)
सम्भालू पंचांग	६)	≡)
हब्बुल्लास	१५)	।≡)
हरमल	३॥)	=)
हल्दी देसी	६)	।–)
हाउबेर	६)	।–)
हाल्यून		२)
हाथी सुण्डी	७॥)	।)
हिंगुपत्री		३)

	१ मनका भाव	१ सेर का भा
हींग अंगुरी नं० १–२		८)१)
हींग तालाब		३॥)
हींग हीरा		४)
हुब्बविलसाँ		१।–)
क्षीर काकोली (बंगाल)		२)

हरीतकी सेट

हरड़ जीवन्ती नं० १, ५ अंगुल लम्बी		२०)
,, ,, ,, २, ४ ,, ,,		८)
हरड़ विजया		५)
हरड़ अमृता (काबली)		२॥)
हरड़ साधारण नं० १	३५) मन	१)
,, ,, ,, २	१८) ,,	॥)
,, ,, ,, ३	८) ,,	।)
,, हरड़जंग (काली हरड़)	६) ,,	।–)

	तोल भरी या तोलाका प्रतिनग	
हरीतकी अभया	३।)	२०)
,, ,,	३)	१५)
,, ,,	३=)	१२)
,, ,,	२॥=)	१०)
,, ,,	२॥–)	६)
,, ,,	२॥)	८)
,, ,,	२।=)	६॥)
,, ,,	२।=)	४॥)
,, ,,	१॥≡)	१)
हरीतकी अभया १ तो० ११ मा० भरकी		१॥=)
हरीतकी अभया	१॥)	॥।)

मिलने का पता—दी प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

...ों और हकीमों के नित्य

...व्यवहार की आवश्यक वस्तुएं

थर्मामीटर

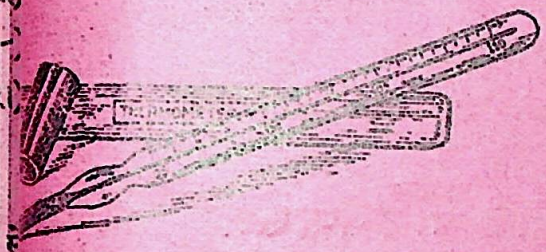

...का १=) साधारण ।।।≡), ॥)

...तोलने का कांटा

...ट के १।।।)

पिचकारी

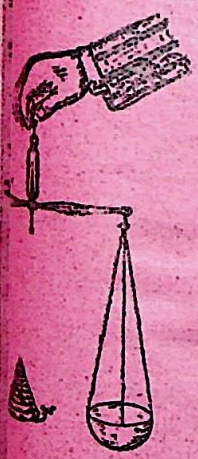

IRRIGATOR

वस्ती यंत्र रबड़ की नाली टूटी सहित अनेमल का १।।) रुपया कांच का २।।) रुपया

...काँटे के साथ ४ रत्ती से लेकर ५ तो० तक ...बाट होते हैं।

फुफ्फुस परीक्षण यन्त्र
(STETHSCOPE)

...रु० नं० २ ७) रु० नं० ३ २।।) रु०

सूचिका भरण पिचकारी
INJECTION SYRINGE

मूल्य २ सी० सा० की १।।) ४ सी० सी० की २।।)
६ सी० सी० की ३), ६)

औषधी मिलाने की छुरी ।-) ॥-) ।।।)

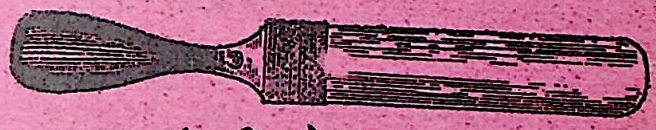

ड्रापर-आंख में औषधि डालने के लिये

फी दर्जन ≡)

कांच का खरल

नं० १ ।।) नं० २ १।।)

प्रताप फार्मेसी में खाली शीशियों के विक्रय के लिये प्रबन्ध

शीशियों के लिये आधी कीमत पेशगी आनी जरूरी है।

शीशी टेबलिट

६	माशा	३)	प्रति गुर्स
१	तोला	४।।)	,,
२।।	,,	६)	,,
५	,,	७)	,,

मिलने का पता— दी प्रताप आयुर्वेदिक फारमेसी लिमिटेड अमृतसर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छोटे कार्क

प्रति गुर्स -)॥, =), =)॥, ≡), ।=)

बड़े कार्क

प्रति गुर्स ≡), ≡)॥, ।-), ।=); ॥)

कार्क नं० १०, ११, १२, १३, १४ वाले १॥) गुर्स

अवलेह पाक आदि शीशियों वाले १॥), २) २॥), ३॥) प्रति गुर्स

कैपसूल रबड के श्वेत वा रंगदार ३ माशा से ५ तोले वाली शीशी के लिये २) रुपया गुर्स।

१० „ „ „ „ २।) „ „

शीशी होम्योपैथिक

शीशी १ ड्राम	१॥॥) गुर्स
„ २ „	२) „
„ ४ „	४।) „
„ ८ „	६॥॥) „

कलमी शीशी जापानी

१॥ माशा ३ माशा	॥=) गुर्स
६ „	१≡) „
१। तोला	१॥) „
२॥ तोला	२) „
५ तोला	३) „
१० तोला	६) „

शीशा मैन्थल पेचदार ढकन वाली

६ माशा	२) प्रति गुर्स
१। तोला	२॥) „
२॥ „	४॥) „
५ „	५॥॥) „
१० „	१२) „
२० „	१८) „
४० „	३६) „

चीनी का खरल

नं० २ २।) नं० ४ २॥) नं० ५ ६ नं० १० १२)

लोह खरल

हमारे यहाँ लोहे के उत्तम किश्ती नुमा, और गोल खरल भी तैयार रहते हैं, जिन सज्जनों को आवश्यकता हो, मंगा सकते हैं।

गोल खरल तप्त खलादि क्रिया के लिये

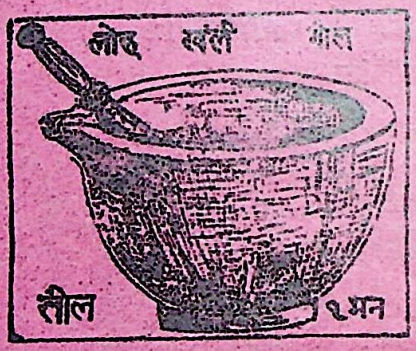

साइज
१३ इंच चौड़ा
६ इंच गहरा
१ मन
वजनी।
मूल्य ७)

"तामड़े पत्थर के उत्तम खरल"

यह तामड़े पत्थर के उत्तम खरल हैं। जो बड़े परिश्रम से मंगाए जाते हैं और प्रतिवर्ष सैकड़ों की संख्या में देश भर में वैद्यों तथा हकीमों भेजे जाते हैं।

इनके साइज़ इस प्रकार हैं—

नं० १ लंबा १० इंच मू० ८), नं० २ लंबा ११ इंच मू०
„ ३ „ १२ „ „ १२), „ ४ „ १३ „ „
„ ५ „ १४ „ „ १८) „ ६ „ १६ „ „
„ ७ „ १८ „ „ ३२), „ ८ „ २० „ „
„ ९ „ २४ „ „ ६०)

नोट-(१) पत्थर; लोहे आदि के खरल मंगाते आधा मूल्य पेशगी भेजना आवश्यक

(२) खरल मंगाते समय अपने रेलवे स्टेशन नाम अवश्य लिखिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

—प्रवास पेटिका—

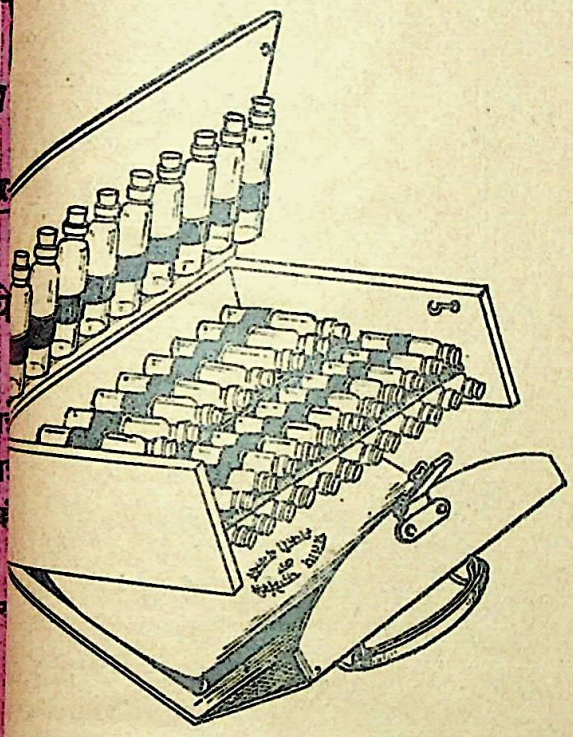

[या सफरी बक्स]

हमारी फार्मेसी के निर्माण विभाग में औषधियां ने के लिए अनेक प्रकार की प्रवास पेटिकाएं।

साइज इस प्रकार है—

(१) १ फुट लम्बे; ७॥ इंच चौड़ा—मूल्य ५) रु०
(२) ६॥ इंच लम्बा, ६॥ इंच चौड़ा—मूल्य ४) रु०
(३) ७॥ इंच लम्बा, ४॥ इंच चौड़ा मूल्य ३) रु०

ाए का जाती हैं। वैद्य लोग बाहर जाते समय औषधियां डाल कर ले जा सकते हैं, यह बक्स शालय की शोभा बढ़ाते और वैद्यों के भूषण क्सों को ऐसा सुन्दर बनाया गया है, कि देख चित्त प्रसन्न हो जाता है। यह बक्स अति मजबूत लकड़ी से बनाये जाते हैं। इनकी विशेषता यह है कि—बन्द करने पर शीशियों के मुख ऊपर की ओर रहते हैं, जिसे (प्रवाही) पतली औषधियों के गिरने का भय नहीं रहता और औषधियाँ सुरक्षित रहती हैं।

(१) जो लकड़ी का बक्स सब से बड़े आकार का है। उसमें १ औंस वाली ८ (आठ) बड़ी शीशियां गोल ढकने वाली, २६ शीशियां जापानी कार्क वाली आधे औंस की, ३२ शीशियां होमियोपैथिक २ ड्राम वाली डाली जाती हैं। इस तरह इस बक्स में सब ६६ शीशियां होती हैं। इस में एक खाना खाली रक्खा जाता है, जिसमें स्टेथिस्कोप आदि यन्त्र रक्खे जा सकते हैं। मूल्य केवल ७)

(२) ऊपर लिखे डिज़ाइन का ही यह एक छोटा बक्स है, जिस में सात शीशियां गोल ढकनेदार १ औंस वाली १६ शीशियां आधे औंस की गोल ढकनेदार तथा दो ड्राम वाली १६ शीशियां होमियोपैथिक होती हैं, इस तरह यह बक्स कुल ४६ शीशियों का है। मूल्य केवल—५)

३) यह अति सुन्दर बक्स है, जिस में अन्दर लकड़ी और बाहर सुन्दर काले रङ्ग का चमड़ा लगा है तथा इसका भार सेर से अधिक नहीं है। इसमें १औंस की होमियोपैथिक ६शीशियां, १८ शीशियां आधे औंस वाली जापानी कार्क सहित तथा २ ड्राम वाली होमियोपैथिक २४ शीशियां हैं। इसमें कुल ५१ शीशियां होती हैं। मूल्य केवल ६)

(४) यह बक्स उपरोक्त नम्बर ३ बक्स के समान ही है। इस में २ ड्राम वाली होमियोपैथिक ७२ शीशिया होती हैं। मूल्य केवल ६)

नियम जानने के लिए मैनेजर श्री प्रताप आयु वैदिक फार्मेसी लिमिटेड अमृतसर को लिखिए

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीजिये !

ताजे अंगूर के के रस, शहद आदि
अनेकों आयुर्वैदिक औषधियों
से विधिवत् तैयार
किया हुआ

प्रताप द्राक्षासव

यह
मांसपेशियों और मस्तिष्क को पुष्ट करने वाला,
रक्त पैदा करने वाला, आमाशय के
रोगों को दूर कर शरीर को
हृष्ट पुष्ट बनाने वाला
उत्तम पौष्टिक
है ।
स्त्री, पुरुष, बालक, बूढे, जवान सभी प्रत्येक
ऋतुकाल में समान रूप से इसका व्यवहार
कर सकते हैं । यह स्वाद में
मीठा, गुण में शक्ति-
दायक और मूल्य
में सस्ता है ।
डाकखर्च अलग ।

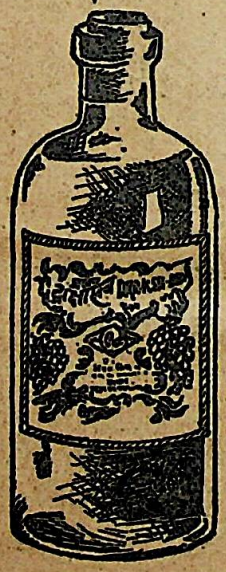

"च्यवन प्राश रसायन"

शास्त्र विधि अनुसार
पुष्ट और परिपक्व
आमलों द्वारा
तैयार किया हुआ
मूल्य
१ मन ८०) रु०

२० और १० सेर खरीदने पर भी
यही भाव रहेगा,
हां,
जो सज्जन सेर-दो-सेर लेंगे
उन से
प्रति सेर ३) रु०
५ सेर लेने पर १२)

हर प्रकार की आयुर्वैदिक औषधियां, बनस्पति, खनिज द्रव्य और लाईसन्स वाले विष
मिलने का एक मात्र विश्वस्त स्थान ।

श्रीप्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड,

अमृतसर, पंजाब ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१००० अनुभूत
प्रयोगों का

मुजर्रिबात कृष्ण (उर्दू)

अपूर्व संगह

चिकित्सा में संसार में राजवैद्य श्रीकृष्णदयाल अमृतसरी के परिचय की आवश्यकता नहीं। आयुर्वेद की सेवा आपके जीवन का एक मात्र लक्ष्य है। यही कारण है कि आपके 'मखजन आयुर्वेद' जैसे मूल्यवान ग्रन्थ की अल्पकाल में ही तीन तीन आवृत्तियां हो चुकि हैं। आधुनिक काल में जबकि अधिकांश वैद्य, हकीम और डाक्टर अपने अनुभूत योगों को कारूँ के खजाने की भांति सत्तर तालों में बंद रखते हैं। राजवैद्य महोदय ने वर्षों के परिश्रम, ख्याति और अपनी सफलता के रहस्य को बड़ी उदारता के साथ अपने इन रामबाण प्रयोगों को सर्व साधारण के सामने रखदिया है। इसमें एक ही रोग पर उसकी अवस्थानुसार अनेक योग दिये ये हैं। चिकित्सक और साधारण जनता इस से समान लाभ उठा सकती हैं। अद्वितय संग्रह को अपने पास रखने पर आप को साधारण व्याधियों के लिये वैद्य डाक्टरों की दरवाजा न खड़खड़ाना पड़ेगा। छपाई, सफाई, सुन्दर, जिल्द सुनहरी पृष्ठ संख्या ५१२ मूल्य केवल १) डाकव्यय अलावा।

पता—श्री प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड [प्रकाशन विभाग] अमृतसर

राजयक्ष्मा

[ले० हवेली खरगपुर, मुंगेर के अनुभवी चिकित्सक वैद्य पं० मुरारीलाल शर्मा वैद्य शास्त्री]

इस पुस्तक में किताबों की नकल कर के नहीं रख दिया गया, बल्कि एक एक बात को लेखक ने अपने अनुभव द्वारा-खूब समझाया है। राजयक्ष्मा का निदान जितना अच्छा और जितना समझाकर इस पुस्तक में लिखा गया है दूसरी किसी पुस्तक में मिलता ही नहीं। हृदय, फुफ्फुस, गुरदे आदि जिन अंगों का वर्णन इसके निदान भाग में आया है, उन सब के सुन्दर छित्र आर्ट पेपर पर दिये गये हैं।

चिकित्सा विभाग में राजयक्ष्मा की हर हालत के लिये चिकित्सा विधि बड़ी उत्तमता से बता कर चुनिन्दा अनुभूत प्रयोग लिखते है राजयक्ष्मा पर अपना अनुभव लिखते हुए लेखक ने अपने पचास साल के अनुभूत प्रयोगों को उदारता से लिख दिया है। पुस्तक बढ़िया सफेद कागज पर छपी है, सुनहरे अक्षरों से सुशोभित कपड़े की मनोहर जिल्द है २।) रु०

अमृतसर के सुविख्यात चिकित्सक राजवैद्य श्रीकृष्णदया जी कहते हैं:—

'श्री पण्डित मुरारीलाल शर्मा वैद्यराज लिखित राजयक्ष्मा पुस्तक को मैंने पढ़ा है' लेखक महोदय ने कैसे भङ्कर रोग पर यह पुस्तक लिखकर वैद्य समाज और रोगियों पर भारी उपकार किया है। इस में आयुर्वेद मतानुसार निदान तथा चिकित्सा अति सुन्दर वा सरल भाषा में लिखने के अतिरिक्त वैद्य जी महोदय ने अपने अपने वर्षों के अनुभूत योग देकर सोने पर सुहागा का काम किया है। शैली इतनी सरल है कि विद्वान् और सर्वसाधारण सब ही एक सा लाभ उठा सकते हैं। पुस्तक अपने विषय और अनुभयी प्रयोगों की दृष्टि से सराहनीय है वहां सुन्दर सुनहरी जिल्द आदि बाह्य रूप भी उत्तम है। ऐसी सुन्दर और उपयोगी पुस्तक के लिखने में जो परिश्रम और व्यय किया गया है मैं उस के लिये हार्दिक धन्यवाद देता हुँ। इस अमूल्य पुस्तक की एक २ प्रति हर घर और हर औषधालय में रहना आश्यक है।

पुस्तक मंगाने का पता—मैनेजर 'बूटी दर्पण' लाहौर।

'भारती प्रिंटिंग प्रेस' हास्पिटल रोड, लाहौर से राजवैद्यकृष्णदयाल प्रिंटर, संपादक तथा पब्लिशर द्वारा
'आयुर्वेद संसार' कार्यालय अमृतसर से प्रकाशित हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गागर में सागर

? आयुर्वेद-चिकित्सा-प्रणाली का प्रचार क्यों कम है ?
डाक्टरों की भांति वैद्य चिकित्सा में सफल क्यों नहीं हो पाते ?
एक ही रोग में चूर्ण, चटनी, आसव, अरिष्ट. अवलेह, शर्बत, गोली, क्वाथ, रस भस्म का विधान होने पर भी यथेष्ट लाभ क्यों नहीं होता ? ?

आयुर्वेद में व्याधियों का मूल शरीर और मन की विकृति ही माना है। अस्तु औषधि व्यवस्था के समय प्रकृति और मानसिक अवस्था पर विचार करना आवश्यक है। इसीलिए एक रोग पर अनेक प्रकार की औषधियों का विधान है। किन्तु निश्चयात्मक रूप से इसका ज्ञान प्राप्त करना कठिन है।

फिर निश्चय कैसे हो ?

पढ़िये--

चिकित्सा-पद्धति

कतिपय मित्रों और वैद्यों की प्रेरणा पर रावैद्यश्री कृष्णदयल जी ने जो कि भारत के प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सकों में से एक हैं और जिनके वृहद् उर्दू ग्रन्थों के एक दो नहीं अनेक एडिशन प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी भाषा भाषियों के हितार्थ इस पुस्तक के लिखने का कष्ट उठाया है। अकेली इस एक पुस्तक में आयुर्वेद शास्त्र का सार मौजूद है। चिकित्सा पद्धति की कठिन गुत्थियों को बड़ी सरलता से सुलझाया गया है। कौनसी औषधि रोग की किस अवस्था में रामवाण का काम करेगी, रसों में पड़ने वाली भस्में कौन और कैसे बनती है; ज्वर रोग में काम देने वाली लौह भस्म कैसे तैयार हो और यक्ष्मा तथा आर्शाद रोगों में किस योग द्वारा तैयार की हुई कौन सी भस्म रामवाण का काम करती है — विद्वान वैद्य ने बड़ी विद्वता से इसका विवेचन किया है। यह अभुतपूर्व ग्रन्थों वैद्य का सखा और सर्व साधारण का मित्र है। इसकी पाण्डुलिप का कुछ अंश पढ़ कर ही एक स्थानीय सुप्रसिद्ध डाक्टर तुरन्त कह उठे थे आपने गागर में सागर भर दिया है।" पुस्तक की पृष्ठ संख्या लगभग ८००, छपाई सफाई बढ़िया, जिल्द सुन्दर सुनहरी फ़िर भी मूल्य ४)

पुस्तक प्रकाशित होरही है, नित्यप्रति आर्डर भेजकर लोग अपना नाम दर्ज करारहे हैं।

आप भी आज ही एक कार्ड लिख दीजिये; ताकि फिर न पछताना पड़े।

श्रीप्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड

[प्रकाशन विभाग], अमृतसर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

GADGU U.VISHWARADHYA
SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY,
wadi Math, VARANASI.
o. No. 2968
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri